श्रीहरिः

महाभारतकी नामानुक्रमणिका

[महाभारतमें आये हुए लोक, द्वीप, देश, नगर, जनपद, समुद्र, नद, नदी, सरोवर, कुण्ड, तीर्थ, वन, पर्वत, देवता, देवी, मातृका, यक्ष, गन्धर्व, नाग, नक्षत्र, अप्सरा, राक्षस, असुर, दैत्य-दानव, ऋषि-मुनि, राजा, अन्यान्य मनुष्य, स्थान, वस्तु, पर्व आदिके नाम तथा कौन नाम कहाँ किस प्रसङ्गमें आया है इसके उल्लेखसहित सबकी अनुक्रमणिका]

गीताप्रेस, गोरखपुर

श्रीहरिः

महाभारतकी नामानुक्रमणिका

[महाभारतमें आये हुए लोक, द्वीप, देश, नगर, जनपद, समुद्र, नद, नदी, सरोवर, कुण्ड, तीर्थ, वन, पर्वत, देवता, देवी, मातृका, यक्ष, गन्धर्व, नाग, नक्षत्र, अप्सरा, राक्षस, असुर, दैत्य-दानव, ऋषि-मुनि, राजा, अन्यान्य मनुष्य, स्थान, वस्तु, पर्व आदिके नाम तथा कौन नाम कहाँ किस प्रसङ्गमें आया है इसके उल्लेखसहित सबकी अनुक्रमणिका]

गीताप्रेस, गोरखपुर

मुद्रक तथा प्रकाशक
हनुमानप्रसाद पोद्दार
गीताप्रेस, गोरखपुर

सं० २०१६

मूल्य अजिल्द २॥) सजिल्द ३॥)

गीताप्रेस, गोरखपुर, पो० गीताप्रेस (गोरखपुर)

निवेदन

इस नामानुक्रमणिकाको देखकर एक विद्वान्‌ने तो इसको 'महाभारतका कल्पवृक्ष' बतलाया था। इसमें यथासाध्य पूरे नाम देनेका प्रयत्न किया गया है। इसकी रचनामें सम्मान्य पं० श्रीरामनारायणदत्तजी शास्त्री, पं० रामाधारजी शास्त्री आदि महानुभावोंने बड़ा परिश्रम किया है। इसके लिये हम उनके कृतज्ञ हैं। इसकी भूमिका प्रसिद्ध दार्शनिक तथा साहित्यिक विद्वान् आदरणीय डा० श्रीवासुदेवशरणजी अग्रवाल एम्० ए, डी० लिट् महोदयने लिख देनेकी कृपा की है। अतः उनके भी हम हृदयसे कृतज्ञ हैं। महाभारतके अनुसन्धानकर्त्ता विद्वानोंको तथा कौन कथा किस प्रसङ्गमें कहाँ है, यह जाननेकी इच्छावालोंको इससे विशेष सुविधा होगी। महाभारतके प्रेमी पाठकगण इससे लाभ उठावें--यह निवेदन है।

प्रकाशक
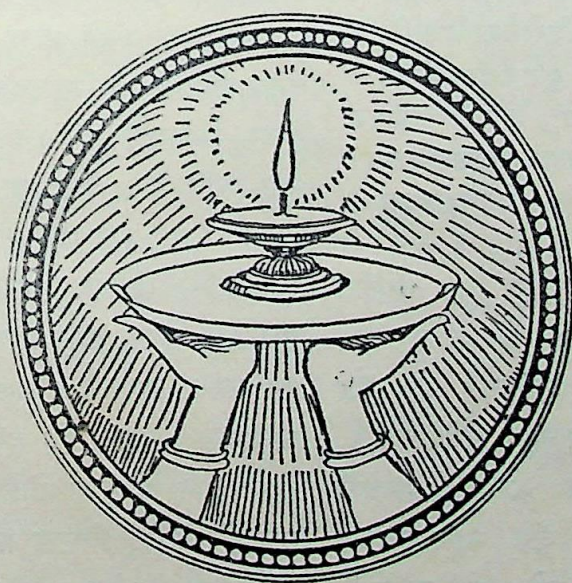
भूमिका

महाभारतकी शतसाहस्री संहिता भारतीय ज्ञान, धर्म और संस्कृतिकी अक्षय्य निधि है। भगवान् कृष्ण-द्वैपायन व्यासने कुरु-पाण्डवोंके चरितको निमित्त बनाकर जिस भारताख्यानकी रचना की थी, वही नाना शास्त्रोंके समुच्चयसे महाभारतके रूपमें इस समय उपलब्ध है, जैसा मार्कण्डेयपुराणमें कहा है—

भगवन् भारताख्यानं व्यासेनोक्तं महात्मना।
पूर्णमस्तमलैः शुभ्रैर्नानाशास्त्रसमुच्चयैः॥
जातिशुद्धिसमायुक्तं साधुशब्दोपशोभितम्।
पूर्वपक्षोक्तिसिद्धान्तपरिनिष्ठासमन्वितम्॥
त्रिदशानां यथा विष्णुर्द्विपदां ब्राह्मणो यथा।
भूषणानां च सर्वेषां यथा चूडामणिर्वरः॥
यथाऽऽयुधानां कुलिशमिन्द्रियाणां यथा मनः।
तथेह सर्वशास्त्राणां महाभारतमुत्तमम्॥
अत्रार्थश्चैव धर्मश्च कामो मोक्षश्च वर्ण्यते।
परस्परानुबन्धाश्च सानुबन्धाश्च ते पृथक्॥
धर्मशास्त्रमिदं श्रेष्ठमर्थशास्त्रमिदं परम्।
कामशास्त्रमिदं चाग्र्यं मोक्षशास्त्रं तथोत्तमम्॥
चतुराश्रमधर्माणामाचारस्थितिसाधनम्।
प्रोक्तमेतन्महाभाग वेदव्यासेन धीमता॥
तथा तात कृतं ह्येतद् व्यासेनोदारकर्मणा।
यथा व्याप्तं महाशास्त्रं विरोधैर्नाभिभूयते॥
व्यासवाक्यजलौघेन कुतर्कतरुहारिणा।
वेदशैलावतीर्णेन नीरजस्का मही कृता॥
कलशब्दमहाहंसं महाख्यानपराम्बुजम्।
कथाविस्तीर्णसलिलं कार्ष्णं वेदमहाह्रदम्॥
(१।२—११)

अर्थात् इस महाभारतमें अनेक ऐसे शास्त्र संगृहीत हैं, जो सब दोषोंसे रहित हैं और जिनका तेज शुभ्र है। इसके जन्मका स्रोत शुद्ध है एवं इसमें लोक और वेदके असंख्य उदात्त शब्द यथास्थान पिरोये गये हैं, इसमें पूर्वपक्ष और उत्तरपक्षके क्रमसे सिद्धान्तोंकी प्रतिष्ठा की गयी है। देवोंमें जैसे महासामर्थ्यवान् भगवान् नारायण हैं, मनुष्योंमें जैसे तपस्वी ब्राह्मण हैं, आभूषणोंमें जैसे चूड़ामणि शोभाशालिनी होती है, आयुधोंमें जैसे वज्र दुर्धर्ष है और सब इन्द्रियोंमें महिमाशाली जैसे मन है, वैसे ही सब शास्त्रोंके ऊपर महाभारतका स्थान जानना चाहिये। इस महान् ग्रन्थमें धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष—इस प्रकार कहे गये हैं कि वे एक दूसरेसे संतुलित रहें और परस्पर सहायक हों। यह महाभारत ऐसा ग्रन्थ है, जिसे श्रेष्ठ धर्मशास्त्र, परम अर्थ-शास्त्र, अग्रणी कामशास्त्र और उत्तम मोक्षशास्त्र मानकर उन-उन अर्थोंका दोहन किया जा सकता है। वेदव्यासके इस वाङ्मयमें चारों आश्रमोंके धर्मोंका वर्णन पाया जाता है, जिसके द्वारा उनके शिष्ट सदाचार और उनकी दृढ़ सामाजिक स्थितिका साधन किया जा सकता है। व्यास-का चिन्तनकर्म अत्यन्त उदार था। उससे यह महाशास्त्र भरा हुआ है। इसमें विरोधकी कहीं सम्भावना नहीं है। व्यासके वाक्योंकी यह महती जलधारा वैदिक ज्ञान-विज्ञानरूपी पर्वतोंके ऊँचे शिखरोंसे बहकर आयी है और इसने समस्त त्रिलोकीमें रजोगुणसे उत्पन्न दोषोंका प्रक्षालन किया है। इसके प्रभावशाली प्रवचनके सामने कुतर्करूप वृक्ष नहीं ठहर पाते। भगवान् वेदव्यासने इतिहास-पुराणकी पाँचवीं संहिताके रूपमें वेदोंका ही एक महागम्भीर सरोवर महाभारतके रूपमें विरचित किया है, कुरु-पाण्डवोंकी विस्तीर्ण कथाका जल इसमें भरा है। उस स्वच्छ जलमें वैदिक और लौकिक आख्यानोंके अनेक शतदल और सहस्रदल कमल खिले हैं। इसकी सुन्दर शब्दावली उस जलमें क्रीडा करनेवाले हंसोंकी मधुर ध्वनि है। ऐसा यह बह्वर्थशाली एवं श्रुतियोंसे विस्तारको प्राप्त हुआ महाभारतशास्त्र है।

वेदनिधि द्वैपायन कृष्णने महाभारतके द्वारा अपना लोकपावन रूप प्रकट किया है। व्यासकी महिमाका पूरा वर्णन दुष्कर है। भगवान् विष्णु एक ऐसे महान् कल्पवृक्षके समान हैं, धर्म जिसकी जड़ है, वेद जिसका तना है, पुराण जिसकी शाखाएँ हैं, यज्ञ जिसके पुष्प हैं और मोक्ष जिसका फल है। ऐसे उन नारायणके एक अंशसे ही श्रीकृष्ण द्वैपायनका जन्म हुआ है।

निस्संदेह महाभारत अत्यन्त महिमाशाली शास्त्र है। वह भारतकी पुरातन राष्ट्रिय संहिता है। प्राचीन ऋषियोंके ज्ञानचक्षुओंमें जिस अर्थका आविर्भाव हुआ था,

वही महाभारतमें पाया जाता है। इस प्रकारके महनीय ग्रन्थका व्यवस्थित प्रकाशन समाज और राष्ट्रकी महती सेवा माननी चाहिये। इस दृष्टिसे गीताप्रेसद्वारा प्रकाशित हिंदी-अनुवादसहित मूल महाभारतका नूतन संस्करण सार्वजनिक अभिनन्दनके योग्य है।

प्रकाशकोंने इस संस्करणके अन्तमें व्यक्तिनाम और स्थाननामोंकी एक अनुक्रमणिका प्रकाशित की है, जिसमें उस-उस व्यक्ति या स्थानका संक्षिप्त परिचय भी दिया गया है। प्रत्येक नामके आगे पर्व, अध्याय और श्लोकका संकेत देते हुए महाभारतमें उसके उल्लेखोंका पूरा पता दिया गया है। हिंदी अथवा किसी अन्य भारतीय भाषामें महाभारतके विषयमें इस प्रकारकी उपयोगी अनुक्रमणी पहले नहीं छपी थी। चार सौ पृष्ठोंकी यह बड़ी सूची महाभारत-सम्बन्धी शोधकार्य करनेवालोंके लिये कल्पलताका काम देगी। अंग्रेजी भाषाके माध्यमसे डेन्मार्क देशके विद्वान् श्री डॉ० सोरेन्सेनने १९०२ ई० में 'ऍन इण्डेक्स टू दी नेम्स ऑव दी महाभारत' इस नामसे एक बड़े ग्रन्थका निर्माण किया था, जो १९०४ में लंदनसे प्रकाशित हुआ। इसमें लगभग आठ सौ पृष्ठोंमें महाभारतमें आये हुए समस्त स्थान-नाम और मनुष्य-नामोंका बहुत ही सुन्दर विवरण पाया जाता है और यह ग्रन्थ भारतीय विद्याके शोधकर्ताओंके लिये आज भी कामधेनुके समान है। जैसा स्वाभाविक था, इस नामानुक्रमणीके निर्माणमें कुछ अंशतक उस बृहत् महाभारतकोशकी शैलीका आश्रय लिया गया है। सोरेन्सेनका ग्रन्थ इस समय सर्वथा दुर्लभ और दुष्प्राप्य हो गया है और उसका मूल्य भी साधारण पहुँचके बाहर है। इसलिये भी गीताप्रेसका यह सुलभ प्रकाशन विशेष स्वागतके योग्य है।

जैसा ऊपर कहा गया है, महाभारत एक आकर ग्रन्थ है। उसमें भारतीय भूगोल, इतिहास, संस्कृति, गाथाशास्त्र, आख्यान, लोकधर्म, दर्शन और अध्यात्मकी अतुलित सामग्री भरी हुई है। इस ग्रन्थका जो जितना पारायण करेगा, वह उतना ही लाभान्वित हो सकेगा। जिसके मानसचक्षुओंमें जितनी देखनेकी शक्ति होगी, वह उतना ही गम्भीर अर्थ महाभारतमें ढूँढ़ पानेमें सफल होगा। राष्ट्रीय अभ्युत्थानके इस क्षणमें, जब सब ओरसे भारतीय संस्कृतिके पुनः उत्थान, व्याख्या और प्रचारका आन्दोलन सशक्त बन रहा है, इस बातकी नितान्त आवश्यकता है कि महाभारतसम्बन्धी सब प्रकारके साहित्यका अधिकाधिक प्रकाशन हो और विशेषतः ऐसे साहित्यका, जिससे महाभारतके पाण्डित्य-पूर्ण अनुशीलनको नयी दिशा और प्रोत्साहन प्राप्त हो सके। इस दृष्टिसे गीताप्रेसके अभिनव महाभारत-प्रकाशन और इस नामानुक्रमणीकी श्लाघा करते हुए हम यह आशा करते हैं कि महाभारतकी प्राचीन व्याख्याओं-के प्रकाशनकी ओर भी ध्यान दिया जायगा। देवबोध, विमलबोध, सर्वज्ञनारायण, अर्जुनमिश्र, रत्नगर्भ, नीलकण्ठ और वादिराज आदि आचार्योंने महाभारतविषयक जो टीकात्मक विवेचन किया है, उसका उचित मुद्रण होना चाहिये। अभी कोई ऐसा एक केन्द्र नहीं है, जो इस ज्ञानराशिका प्रकाशन करे। अवश्य ही संस्कृतके वर्द्धमान नवजागरणमें इस प्रकारके प्रकाशन युगकी आवश्यकताकी पूर्ति करेंगे। महाभारतकी बहुत-सी शब्दावली उस युगकी देन है, जो आजसे कई सहस्र वर्ष पूर्व विद्यमान था। उस समय अनेक आचार्योंने दर्शन और अध्यात्मके अनेक दृष्टिकोण रखे थे—जैसे कालवाद, स्वभाववाद, नियतिवाद, यदृच्छावाद, भूतवाद और योनिवाद आदि। महाभारतके ओजायमान प्रवाहमें अनेक स्थलोंपर, विशेषतः शान्तिपर्वमें इन दार्शनिक मतों या दृष्टियोंका उल्लेख आया है—जैसे मङ्कि ऋषिके दिष्टिवाद या नियतिवादका अत्यन्त प्रौढ़ विवेचन शान्तिपर्व अध्याय १७७ में उपलब्ध है, जिसे महाभारतमें मङ्किगीता कहा गया है। ये आचार्य मङ्कि वही हैं, जिन्हें श्रमणपरम्परामें 'मङ्खलिगोसाल' कहा जाता है, और जो कर्मापवाद-सिद्धान्तका या पुरुषकारके विरोधमें दैववादका प्रतिपादन करनेवाले थे—

शुद्धं हि दैवमेवेदं हठे नैवास्ति पौरुषम्।

अर्थात् केवल दैव ही बलवान् है; कितनी भी हठ करो, पुरुषार्थ काम नहीं देता—इस प्रकार महाभारतमें

मङ्खिगीताके रूपमें नियतिवादका जो विवेचन है, वह बौद्ध और जैन-ग्रन्थोंमें उल्लिखित मङ्खलिगोसालके सिद्धान्तोंसे भी अधिक विस्तृत जानकारी प्रदान करता है। महाभारतकी इस प्राचीन सामग्रीका जो शान्ति-पर्वके कितने ही अध्यायोंमें उपनिबद्ध है, अभीतक कोई सुन्दर विवेचन नहीं हुआ। प्राचीन कालमें मङ्खिऋषिके नियतिवाद और बृहस्पतिके लोकायत दर्शन या प्रत्यक्षवादका—जिसे विदुरनीतिके अनुसार तादात्विक दृष्टि भी कहते थे—बहुत प्रचार था। ययाति और धृतराष्ट्र-जैसे राजर्षियोंको महाभारतमें ही नियतिवादी कहा गया है। इसी प्रकार महात्मा विदुर और भगवान् श्रीकृष्ण प्रज्ञावादी दर्शनके, जिसे 'बुद्धियोग' भी कहा गया है, प्रतिपादनकर्ता थे। महाभारतकी यह सामग्री उसकी भंडार-कोठरियोंमें छिपे हुए ज्ञान-रत्न हैं। आशा है, कालान्तरमें इनका विवेचन करनेवाले ग्रन्थोंकी रचना होगी। नारद-राजनीति, कणिक-नीति, विदुर-नीति आदि प्रकरण राजशास्त्र एवं लोकके व्यावहारिक नीतिशास्त्रके अद्भुत ग्रन्थ हैं। इसी प्रकार महर्षि सनत्सुजातद्वारा कथित सनत्सुजातीय नामक अध्यात्मप्रकरण महाभारतका अत्यन्त उज्ज्वल और मूल्यवान् रत्न है, जो किसी वैदिक चरणमें विकसित अध्यात्मशास्त्रका ही अवशिष्ट रूप है और जिसमें वैदिक निगद या बाह्य शब्दोंकी अपेक्षा वेदके गूढ़ अध्यात्म रहस्यका आत्मसात् करनेपर ही अधिक बल दिया गया है। इन सबसे अधिक प्रभास्वर श्रीमद्भगवद्गीता प्रसिद्ध ही है, जिसके ज्ञानमय आलोक-का वस्तुतः वारापार नहीं है। महाभारतका अनुशीलन उस सर्वेक्षणके समान है, जिसमें मणिरत्न, सुवर्ण आदिकी खानोंके लिये भूमिको शोधा जाता है। जिनके ज्ञाननेत्रोंमें इस प्रकारका अञ्जन लगा हो, उन्हें महाभारतमें क्या कुछ देखनेको न मिलेगा? जिन्हें धर्म और संस्कृतिके मणिरत्नोंकी पहचान हो, उनके लिये जो निधि महाभारतमें है, वह अन्यत्र कहीं नहीं है। इस प्रकारके अतिविशिष्ट ग्रन्थका स्मरण करके हृदय गद्गद हो जाता है। जैसा वायुपुराणके कर्ताने कहा है—

'भगवान् व्यासने वेदोंके समुद्रको अपनी बुद्धिरूपी मथानीसे मथकर ऐसे महाभारतरूपी चन्द्रमाको जन्म दिया, जिसके प्रकाशसे यह सारा लोक प्रकाशित है'—

मतिं मन्थानमाविध्य येनासौ श्रुतिसागरात्।
प्रकाशं जनितो लोके महाभारतचन्द्रमाः॥
(वायु० १।४४-४५)

भारतीय लोकमानस व्यासके प्रति अपनी बढ़ी हुई कृतज्ञताको प्रकट करनेके लिये इससे अच्छे और कौन-से शब्द प्राप्त कर सकता था? जैसा आचार्य दण्डीने बुद्धिवादियोंकी ओरसे व्यासको श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए लिखा है—महामुनि व्यासने महाभारतके रूपमें जो विद्या इस राष्ट्रको समर्पित की, वह मानवरूपी मर्त्य यन्त्रोंमें चैतन्य-मन्त्र फूँकनेका साधन है—

मर्त्ययन्त्रेषु चैतन्यं महाभारतविद्यया।
अर्पयामास तत्पूर्वं यस्तस्मै मुनये नमः॥
(अवन्तिसुन्दरीकथा श्लोक ४)

भगवान् व्यासके रूपमें उस महासागरकी जय हो, जिससे महाभारतरूपी अमृतका जन्म हुआ।

काशी विश्वविद्यालय,
फाल्गुन शुक्ला ९, सं० २०१५ } वासुदेवशरण अग्रवाल
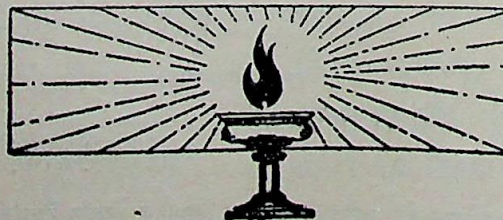
महाभारतकी नामानुक्रमणिका संक्षिप्त परिचयसहित

अ

अंश–कश्यपके द्वारा अदितिके गर्भसे उत्पन्न बारह आदित्यों-मेंसे एक (आदि० ६५ । १५) । ये अर्जुनके जन्मोत्सवमें पधारे थे (आदि० १२३ । ६६) । खाण्डव-वन-दाहके युद्धमें इन्द्रकी ओरसे युद्धके लिये इनका आगमन (आदि० २२६ । ३५) । इनके द्वारा स्कन्दको पाँच पार्षद प्रदान किये गये (शल्य० ४५ । ३४) । शान्तिपर्वके २०८ वें अध्यायमें तथा अनुशासनपर्वके ८६ और १५१ वें अध्यायोंमें भी इनका नाम आया है ।

अंशावतरणपर्व–आदिपर्वके अध्याय ५९ से ६४ तकके विषयका नाम ।

अंशुमाली–सूर्यका एक नाम (सभा० ११ । १८) ।

अंशुमान् (१) सगरके पौत्र तथा असमञ्जसके पुत्र । इनके प्रयत्नसे यज्ञकी पूर्ति (अनु० १०७ । ६१) । इनपर महात्मा कपिलकी कृपा (अनु० १०७ । ५६–५८) । इनका राज्याभिषेक (अनु० १०७ । ६४) । इनका अपने पुत्र दिलीपको राज्य देकर स्वर्गगमन (अनु० १०७ । ६६) । (२) द्रौपदीके स्वयंवरमें पधारे हुए एक राजाका नाम (आदि० १८५ । ११) । (३) एक विश्वेदेवका नाम (अनु० ९१ । ३२) । (४) भोजराज अंशुमान्, जो द्रोणाचार्यद्वारा मारे गये थे । इनकी चर्चा कर्णपर्व अध्याय ६ श्लोक १४ में आयी है ।

अकम्पन–सत्ययुगका एक राजा । नारदजीके साथ उसका संवाद (द्रोण० ५२ । २६) । नारदजीके उपदेशसे उसका शोकरहित होना (द्रोण० ५४ । ५२; शान्ति० २५६ । ७ से २५८ अ० तक) ।

अकर्कर–एक नागका नाम (आदि० ३५ । १६) ।

अकूपार–इन्द्रद्युम्न सरोवरमें रहनेवाला एक चिरजीवी कच्छप (वन० १९९ । ८) । इसने इन्द्रद्युम्नकी लुप्त कीर्तिका भूमिपर प्रसार किया था ।

अकृतव्रण–परशुरामजीके प्रिय शिष्य और सखा । इनके द्वारा युधिष्ठिरसे परशुरामोपाख्यानका वर्णन (वन० ११५ से ११७ अ० तक) । इनका श्रीकृष्णके हस्तिनापुर जाते समय मार्गमें उनसे भेंट करना (उद्योग० ८३ । ६४ के बाद) । होत्रवाहनको परशुरामजीके आगमनकी सूचना देना और अम्बाका परिचय पूछना (उद्योग० १७६ । ४१—४३) । अम्बाको भीष्मसे ही बदला लेनेकी सलाह देना (उद्योग० १७७ । १२) । परशुरामजीको भीष्मके साथ युद्ध करनेके लिये कहना (उद्योग० १७८ । १५) । भीष्मके साथ युद्धमें परशुरामजीका सारथ्य करना (उद्योग० १७९ । ९) । बाणशय्यापर पड़े हुए भीष्मजीके पास आये हुए ऋषियोंमें एक ये भी थे (अनु० २६ । ८) ।

अकृतश्रम–वानप्रस्थ-धर्मका पालन करनेवाले एक मुनि (शान्ति० २४४ । १७) ।

अक्रूर–यदुवंशान्तर्गत सात्वतवंशीय श्वफल्कके पुत्र, जिन्हें दानपति भी कहते हैं । ये वृष्णिवीरोंके सेनापति थे (आदि० २२० । २९) । (इनकी माताका नाम 'गान्दिनी' और पत्नीका नाम 'सुतनु' था, वह आहुककी पुत्री थी—पुराणान्तरसे) द्रौपदीके स्वयंवरमें इनका आगमन (आदि० १८५ । १८) । सुभद्राहरणके समय रैवतक पर्वतपर होनेवाले उत्सवमें ये भी थे (आदि० २१८ । १०) । सुभद्राके लिये श्रीकृष्णके साथ दहेज लेकर गये थे (आदि० २२० । २९) । ये उपप्लव्य नगरमें अभिमन्युके विवाहके अवसरपर आये थे (विराट० ७२ । २२) । अक्रूर और आहुकमें बड़ा वैर था और ये दोनों श्रीकृष्ण-को अपने विरोधीका पक्षपाती समझकर उनसे मन-ही-मन असंतुष्ट रहते थे । इससे श्रीकृष्णको बड़ी चिन्ता थी (शान्ति० ८१ । ९–११) । सभापर्वके ४, वनपर्व-के १८, ५१; मौसलपर्वके ६ तथा स्वर्गारोहणपर्वके ५ वें अध्यायोंमें भी इनका नाम आया है । ये विश्वेदेवोंमें मिल गये थे ।

अक्रोधन–पूरुवंशी अयुतनायीके पुत्र । इनकी माता थी पृथुश्रवाकी पुत्री कामा । इनकी पत्नी थी कलिङ्गराजकुमारी करम्भा । इनके पुत्रका नाम 'देवातिथि' था (आदि० ९५ । २१) ।

अक्ष–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ५८) ।

अक्षप्रपतन–आनर्त देशके अन्तर्गत एक स्थान, जहाँ श्री-कृष्णने गोपति और तालकेतु नामक असुरोंको मारा था (सभा० ३८ । २९ के बाद दा० पाठ पृष्ठ ८२४) ।

अक्षमाला (**अरुन्धती**)–वसिष्ठकी पत्नी (उद्योग० ११७ । ११) । (देखिये अरुन्धती)

अक्षयवट–गयाके अन्तर्गत एक त्रिभुवनविख्यात तीर्थ । (वन० ८४ । ८३; ९५ । १४) । (कहते हैं, यहाँ अक्षय-वटवृक्ष है, जिसका प्रलयकालमें क्षय नहीं होता ।)

अक्षर–अक्षर पुरुष (**भीष्म० ३९ । १६**)।

अक्षीण–महर्षि विश्वामित्रके पुत्रोंमेंसे एक (**अनु० ४।५०**)।

अक्षौहिणी–परिगणित संख्यावाले रथों, घोड़ों, हाथियों और पैदलोंसे युक्त चतुरङ्गिणी सेनाका नाम (**विशेष परिचय देखिये आदि० २ । २२ से २६ तक**)।

अगस्त्य–मित्रावरुणके पुत्र एक ब्रह्मर्षि, जिन्हें 'कुम्भज' भी कहते हैं (**शान्ति० ३४२ । ५१**)। इन्होंने यज्ञविघ्नकारी पशुओंपर आक्रमण करके उन्हें मार भगाया था (**आदि० ११७ । १४**)। इनके द्वारा अग्निवेशको धनुर्वेदकी शिक्षा प्राप्त हुई थी (**आदि० १३८ । ९**)। इनका पितरोंके उद्धारार्थ विवाह करनेका विचार (**वन० ९६ । १९**)। इन्होंने अपनी पत्नी बनानेकी इच्छासे अपने ही द्वारा रची गयी एक दिव्य स्त्रीको तपस्वी विदर्भराजके यहाँ उनकी पुत्री-रूपसे दे दिया था (**वन० ९६ । २१**)। विदर्भ-राजकुमारी लोपामुद्रासे इनका विवाह (**वन० ९७।७**)। इनकी गङ्गाद्वारमें पत्नीसहित तपस्या (**वन० ९७।११**)। लोपामुद्रासे प्रेरित होकर इनका धन-संग्रहके लिये प्रस्थान (**वन० ९७ । २५**)। इनका श्रुतर्वा, ब्रध्नश्व तथा त्रसदस्युसे धन माँगना (**वन० ९८।४, ९, १५**)। इनके द्वारा वातापिका भक्षण (**वन० ९९ । ६**)। इनकी इल्वलसे धनकी याचना (**वन० ९९ । १२**)। इनका लोपामुद्राके गर्भसे पुत्र उत्पन्न करना (**वन० ९९।२५**)। देवताओंद्वारा इनकी स्तुति (**वन० १०३।१५–१८**)। इनका विन्ध्यपर्वतको बढ़नेसे रोकना (**वन० १०४। १२-१३**)। इनके द्वारा समुद्रका शोषण (**वन० १०५। ३–६**)। इनसे राक्षस मणिमान् तथा कुबेरको शाप प्राप्त होना (**वन० १६१।६०–६२**)। इनका इन्द्रसे नहुषके पतनका वृत्तान्त सुनाना (**उद्योग० अध्याय १७**)। इनके द्वारा वानप्रस्थाश्रमका पालन (**शान्ति० २४४। १६**)। इनके शापसे नहुषका पतन (**शान्ति० ३४२।५१**)। कमलोंकी चोरी हो जानेपर इनका सारगर्भित प्रवचन (**अनु० ९४ । ९–१३**)। नहुषके अत्याचारके विषयमें भृगुजीसे इनका वार्तालाप (**अनु० ९९ । १६–२१**)। नहुषके द्वारा इनका रथमें जोता जाना (**अनु० १००। १८-१९**)। वायुद्वारा इनके प्रभावका वर्णन—इनके क्रोधसे दग्ध होकर दानवोंका अन्तरिक्षसे गिरना (**अनु० ११५। १–१३**)। अगस्त्यजीके द्वारा द्वादशवार्षिक यज्ञका अनुष्ठान और उसमें इनकी तपस्याका अद्भुत प्रभाव (**आश्व० अ० ९२**)।

अगस्त्यतीर्थ–दक्षिण समुद्रके समीपवर्ती तीर्थ। पाँच नारी-तीर्थोंमें एक (**आदि० २१५ । ३**)। यहाँ तीर्थयात्राके अवसरपर अर्जुनका आगमन और ब्राह्मणके शापसे ग्राह बनकर रहनेवाली अप्सरा (वर्गाकी सखी) का अर्जुन-द्वारा उद्धार (**आदि० २१६ । २१**)। (वन० ८८ । १३ तथा ११८ । ४) में भी इस तीर्थका नाम आया है।

अगस्त्यपर्वत–(१) मद्रास प्रान्तके तिनेवली जिलेका अगस्त्यकूट नामक पर्वत, जो ताम्रपर्णी नदीका उद्गमस्थान है (—हिंदी महाभारतका परिशिष्ट पृष्ठ १)। (२) किसी-किसीके मतमें यह कालंजर पर्वतका उपपर्वत है।

अगस्त्यवट–हिमालयके पासका एक पुण्यक्षेत्र। तीर्थयात्राके अवसरपर यहाँ अर्जुनका आगमन हुआ था (**आदि० २१४ । २**)।

अगस्त्यसरोवर (आगस्त्यसर)—पूर्वोक्त अगस्त्यतीर्थका ही नाम अगस्त्यसरोवर है (**वन० ८२।४४**) तथा (**वन० ८८। १३**)। विशेष परिचयके लिये देखिये अगस्त्यतीर्थ।

अगस्त्याश्रम–(१) पञ्चवटीके पासका एक पुण्यक्षेत्र, जो नासिकसे २४ मील दक्षिणपूर्वकी ओर है। इसे आजकल 'अगस्तिपुरी' कहते हैं (**वन० ८७ । २०; ९६ । १**) (२) प्रयागके अन्तर्गत एक तीर्थविशेष 'अगस्त्याश्रम' है। महाभारत, वनपर्वमें इसीका वर्णन जान पड़ता है। यहीं लोमशके साथ युधिष्ठिर पधारे थे (**वन० ८७ ।२०; ९६ । १**)।

अग्नि–पाँच महाभूतोंमेंसे एक तथा उसके अभिमानी देवता। ये भगवान्‌के मुखसे उत्पन्न हैं। भृगुपत्नी पुलोमाके सम्बन्धमें इनका निर्णय देना (**वन० ५। ३१–३४**)। महर्षि भृगुने इनको सर्वभक्षी होनेका शाप दिया (**वन० ६ । १४**)। झूठी गवाही देने तथा सत्य बात न बोलनेपर सात पीढ़ियों-तकके नाश होनेके सम्बन्धमें इनका वचन (**वन० ७। ३-४**)। भृगुके शापसे कुपित होकर इनका अन्तर्धान होना एवं ब्रह्माजीका इनको आश्वासन देना (**वन० ७ । १२–२५**)। राजा श्वेतकिके द्वादशवर्षीय यज्ञमें निरन्तर घृतपान करनेसे इनको अजीर्णताका रोग होना (**वन० २२२। ६७**)। अपने अजीर्णको मिटानेके लिये इनकी ब्रह्माजीसे प्रार्थना (**वन० २२२ । ६९**)। खाण्डववन जलानेके लिये इनको ब्रह्माका आदेश (**वन० २२२ । ७७**)। खाण्डववनको जलानेके कार्यमें श्रीकृष्ण और अर्जुनसे प्रार्थना करनेके लिये इनको ब्रह्माजीकी प्रेरणा (**वन० २२३ । १०**)। खाण्डववनको दग्ध करनेमें सहायताके लिये इनकी श्रीकृष्ण और अर्जुनसे प्रार्थना (**वन० २२२ । १०**)। गाण्डीव धनुष, चक्र एवं दिव्यरथके लिये इनकी वरुणसे प्रार्थना (**वन० २२४ । ४**)। इन्होंने अर्जुनको गाण्डीव धनुष, अक्षय तरकस तथा दिव्य रथ प्रदान किये और श्रीकृष्णको सुदर्शनचक्र दिया (**आदि० २२४ । १४**)। इनके द्वारा खाण्डववनका

दाह (आदि० २२४ । ३४–३७)। मन्दपालद्वारा इनकी स्तुति (आदि० २२८ । २३) । शार्ङ्गकोंद्वारा इनकी स्तुति (आदि० २३१ में) । इनके द्वारा सहदेवके विरुद्ध राजा नीलकी सहायता तथा सहदेवसैनिकोंका जलना (सभा० ३१ । २३-२४)। माहिष्मतीनरेश नीलकी पुत्री सुदर्शनाकी ओर इनका आकृष्ट होना (सभा० ३१ । २७)। इनका ब्राह्मणरूपसे जाकर सुदर्शनाके प्रति कामभाव प्रकट करना और राजा नीलद्वारा इनपर शासन (सभा० ३१ । ३१)। नीलद्वारा इनको अपनी कन्या सुदर्शनाका दान (सभा० ३१ । ३३)। राजा नीलपर अग्निकी कृपा । राजाको वर माँगनेके लिये प्रेरित करना । राजाका अग्निदेवसे अपनी सेनाके लिये अभयदान माँगना (वन० ३१ । ३४-३५) । माहिष्मतीकी स्त्रियोंको अग्निदेवका वरदान (वन० ३१ । ३८)। सहदेवद्वारा अग्निदेवकी स्तुति (सभा० ३१ । ४१–४९)। अग्निदेवकी आज्ञासे नीलद्वारा सहदेवका सत्कार (सभा० ३१ । ५८-५९)। इन्होंने बाणासुरकी राजधानीकी रक्षा की (सभा० ३८ । २९ के बाद दाक्षिणात्य पाठ)। दमयन्ती-स्वयंवरमें राजा नलको वर प्रदान किया (वन० ५७ । ३६½)। ये कबूतर बनकर राजा उशीनरकी गोदमें छिपे (वन० १३० । २४ और १९७। ३)। इन्होंने राजा उशीनरको अपना परिचय तथा वर दिया (वन० १९७ । २५–२८)। महर्षि अङ्गिराको अपना प्रथम पुत्र स्वीकार किया (वन० २१७ । १८)। सहनामक अग्निसे अद्भुत नामक अग्निकी उत्पत्ति (वन० २२२ । १)। सप्तर्षियोंकी पत्नियोंपर मोहित होकर ये वनमें चले गये (वन० २२४ । ३३–३८)। इन्होंने स्कन्दकी रक्षा की (वन० २२६ । २९)। सीताजीकी शुद्धिका समर्थन किया (वन० २९१ । २८)। अर्जुनने अस्त्रप्राप्तिके लिये अग्निदेवका आश्रय लिया था (विराट० ४५ । ४०)। इन्द्रकी खोजके लिये बृहस्पतिके साथ अग्निका संवाद (उद्योग० १५ । २८ से ३४ तक)। उन्होंने बृहस्पतिको इन्द्रका पता बताया (उद्योग० १६ । १२)। ब्रह्माजीके रोषसे प्रकट हुए अग्निदेवके द्वारा चराचर जगत्का दाह (द्रोण० ५२ । ४१)। स्कन्दको पार्षद प्रदान किया (शल्य० ४५ । ३३)। कार्तवीर्य अर्जुनसे भिक्षा माँगकर उसकी सहायतासे अग्निने ग्राम, वन एवं पर्वतोंके साथ आपव मुनिका आश्रम भी जलाया (शान्ति० ४९ । ३८ से ४१ तक)। ब्रह्माके कहनेसे इन्द्रकी ब्रह्महत्याका एक चतुर्थांश स्वीकार किया (शान्ति० २८२ । ३५)। इन्होंने मेढकों, हाथियों और तोतोंको शाप दिया (अनु० ८५ । २८, ३६, ४०)। देवताओंको आश्वासन दिया (अनु० ८५ । ५०)। गङ्गाजीके गर्भमें शिवजीका वीर्य स्थापित किया (अनु० ८५ । ५६)। प्रजापतियोंको अपनी संतान माना (अनु० ८५ । ११८) । कार्तिकेयको बकरा दिया (अनु० ८६ । २४)। पितरों और देवोंके अजीर्ण-निवारणका उपाय बतलाया (अनु० ९२ । १०) । इन्द्रादि देवताओंके समक्ष धर्मके रहस्यका वर्णन किया (अनु० १२६ । २९–३४; १२७ । १–५) । ये इन्द्रका संदेश लेकर मरुत्तके पास गये (आश्व० ९ । १४-१५)। इन्होंने मरुत्तका उत्तर इन्द्रको सुनाया (आश्व० ९ । २२–२३)। ब्राह्मबलकी श्रेष्ठताका प्रतिपादन किया (आश्व० ९ । ३१–३७)। कुण्डलोंका अपहरण हो जानेपर नागलोकमें गये हुए उत्तङ्कको अश्वरूपधारी अग्निदेवने सहायता दी, नागोंको क्षुब्ध करके कुण्डल लौटानेको विवश कर दिया (आश्व० ५८ । ४१–५५ तथा आदि० ३ । १५१–१५४) । इन्होंने महाप्रस्थानके समय अर्जुनसे गाण्डीव धनुष वापस लिया (महाप्रस्थान० १ । ३५–४३)।

अग्निकन्यापुर–अग्निपुरतीर्थमें स्नान करनेसे मिलनेवाला पुण्यलोक (किसी-किसीके मतमें यह भी एक तीर्थ है) (अनु० २५ । ४३)।

अग्नितीर्थ–सरस्वतीके तटका एक प्रसिद्ध तीर्थ, जिसमें अग्निदेव शमीके गर्भमें छिपे थे (वन० ८३ । १३८), (शल्य० ४७ । १९–२१)।

अग्निधारातीर्थ–एक पवित्र तीर्थका नाम। (कोई-कोई इस तीर्थको गौतमवनके समीप बताते हैं) (वन० ८४ । १४६)।

अग्निपुर–एक तीर्थका नाम (किन्हींके मतमें इन्दौर राज्यमें नर्मदाके दक्षिणतटपर स्थित महेश्वर नामक स्थान) (अनु० २५ । ४३)।

अग्निमान्–अग्निविशेष (सूतिका-गृहकी अग्निका अग्निहोत्रकी अग्निसे स्पर्श हो जानेपर प्रायश्चित्तके लिये अष्टाकपाल पुरोडाशकी आहुति इसी अग्निमें दी जाती है ।) (वन० २२१ । ३१)।

अग्निवेश–ये अग्निके पुत्र थे, इन्होंने भरद्वाजसे आग्नेयास्त्र प्राप्त किया था । ये द्रोणाचार्य एवं द्रुपदके अस्त्रविद्यागुरु थे (आदि० १२९ । ३९-४०) । अगस्त्यद्वारा इनको धनुर्वेदकी शिक्षा प्राप्त हुई थी (आदि० १३८ । ९)।

अग्निवेश्य–(१) अग्निवेशका ही दूसरा नाम अग्निवेश्य है । युधिष्ठिरका आदर करनेवाले ब्रह्मर्षियोंमें इनका भी नाम आया है (वन० २६ । २३) । (२) भारतका एक प्राचीन जनपद (भीष्म० ५० । ५२)।

अग्निशिरतीर्थ–यमुना-तटवर्ती तीर्थविशेष, जहाँ संजयपुत्र सहदेवने यज्ञ किया था (वन० ९० । ५–७)।

अग्नीषोम–(१) अग्नि और सोम नामक देवता, जो एक साथ रहकर हविष्य ग्रहण करते हैं (सभा० ७ । २१)। (२) अग्नि और सोमके लिये दी जानेवाली आहुति (अनु० ९७ । १०) । (३) मनु (या भानु) नामक अग्निकी तीसरी पत्नी निशाके गर्भसे उत्पन्न अग्नि और सोम नामक दो पुत्र, ये दोनों अग्निस्वरूप हैं (वन० २२१ । १५) ।

अग्निष्वात्त–सात पितरोंमें एक (सभा० ११ । ४५-४६)।

अग्रणी–भानु या मनुकी तीसरी पत्नी निशाके गर्भसे उत्पन्न पाँचवाँ पुत्र । मनुष्य जिनके द्वारा सब भूतोंको अन्नका अग्रभाग अर्पण करते हैं, वे 'अग्रणी' नामक अग्नि हैं (वन० २२१ । १५, २२) ।

अग्रयायी–राजा धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक, इसका दूसरा नाम 'अनुयायी' भी है (आदि० ११६ । ११)।

अग्रह–चातुर्मास्य यज्ञोंमें नित्यविहित आग्नेय आदि आठ हविष्योंके उद्भवस्थान 'अग्रह' नामक अग्नि, ये भानु या मनुकी 'सुप्रजा' और 'बृहद्भासा' नामक पत्नियोंके गर्भसे उत्पन्न होनेवाले छः पुत्रोंमेंसे पाँचवें हैं (वन० २२१ । ९—१४)।

अघमर्षण–वानप्रस्थ-धर्मका पालन करनेवाले एक ऋषि (शान्ति० २४४ । १६) ।

अङ्ग–(१) एक प्राचीन जनपदका नाम । दुर्योधनने कर्णको अङ्गदेशके राज्यपर अभिषिक्त किया (आदि० १३५ । ३८) । (विहारप्रान्तमें भागलपुर और मुंगेर जिलेके आस-पासका प्रदेश, जिसकी राजधानी चम्पापुरी थी । कहीं-कहीं इसका विस्तार वैद्यनाथधामसे लेकर भुवनेश्वरतक लिखा है—हिन्दी शब्दसागर) । कर्ण यहींका राजा बनाया गया था । तीर्थयात्राके अवसरपर अर्जुनका यहाँ आगमन हुआ था (आदि० २१४ । ९-१०) । (२) अङ्गदेशीय क्षत्रिय अथवा प्रजावर्ग । अङ्गदेशवासियोंने राजसूययज्ञके अवसर-पर युधिष्ठिरको भेंट अर्पण किया था (सभा० ५२ । १६) । अङ्गदेशीय योद्धा श्रीकृष्णद्वारा पराजित हुए थे (द्रोण० ११ । १५) । अङ्गदेशवासियोंपर परशुरामजीकी विजय (द्रोण० ७० । १२) । अङ्गों-पर कर्णकी विजय (कर्ण० ८ । १९) । अङ्गदेशीय वीरोंने सोलहवें दिनके युद्धमें अर्जुनपर चाढ़ई की थी (कर्ण० १७ । १२) । अङ्गदेशीय वीरोंका धृष्टद्युम्न एवं पाञ्चाल-सेनापर आक्रमण (कर्ण० २२ । २) । (३) अङ्ग-देशनिवासी म्लेच्छोंका एक सरदार, जो महाभारत-युद्धके बारहवें दिन भीमसेनद्वारा हाथीसहित मारा गया था (द्रोण० २६ । १४—१७) । (४) अङ्गराज (म्लेच्छ-सरदार), यह भीमसेनद्वारा मारे गये 'अङ्ग' (अङ्गाधिपति म्लेच्छ) से भिन्न था; यह सोलहवें दिनके युद्धमें नकुलद्वारा मारा गया (कर्ण० २२ । १८)। (५) अङ्गराज बृहद्रथ, जिनकी कथा षोडश राजकीयो-पाख्यानमें आयी है (शान्ति० २९ । ३१) । (६) मनुके पुत्र अङ्ग, जो अन्तर्धामाके पिता थे (अनु० १४७ । २३) । (७) 'अङ्ग' नामसे प्रसिद्ध अङ्गराज, जिनके साथ पृथ्वी स्पर्धा रखती थी (अनु० १५३ । २)।

अङ्गद–(१) वानरराज वालीके पुत्र (वन० ८२ । २८)। वालीकी पत्नी तारा इनकी माता थीं (वन० २८० । १८) । इनका सीताजीकी खोजसे लौटकर मधुवनके फल खाना (वन० २८२ । २७-२८) । श्रीरामका इन्हें दूत बनाकर रावणके दरबारमें भेजना (वन० २८३ । ५४) । लङ्कामें जाकर रावणको श्रीरामका संदेश सुनाना (वन० २८४ । १०—१६) । अङ्गदका इन्द्रजित्के साथ घोर युद्ध इनका (वन० २८८ । १४—१९) । अङ्गदका साथियोंसहित आगे बढ़कर रावण और उसकी सेनापर आक्रमण (वन० २९० । ३-४) । श्रीरामके द्वारा किष्किन्धाके युवराजपदपर इनका अभिषेक (वन० २९१ । ५९) । (२) कौरवपक्षका एक वीर योद्धा, जो बारहवें दिनके युद्धमें उत्तमौजासे लड़ा था (द्रोण० २५ । ३८-३९) । (३) एक आभूषण-का नाम, जो बाँहमें पहना जाता है ।

अङ्गमलज–भारतवर्षका एक जनपद (भीष्म० ९ । ५०)।

अङ्गार–(१) एक जनपद (भीष्म० ९ । ६०) । (२) एक प्राचीन राजा, जो मान्धातासे पराजित हुआ था (शान्ति० २९ । ८८) ।

अङ्गारक–(१) सौवीर देशका एक राजकुमार, जो जयद्रथका अनुगामी था (वन० २६५ । १०) । (२) 'मङ्गल' नामक ग्रह, जो ब्रह्माजीकी सभामें नित्य उपस्थित होते हैं (सभा० ११ । २९) । (३) सूर्यके १०८ नामोंमेंसे एक (वन० ३ । १७) ।

अङ्गारपर्ण–(१) एक गन्धर्व, जो अर्जुनसे पराजित होकर उनका मित्र बन गया । इसकी पत्नीका नाम 'कुम्भीनसी' था, (आदि० १६९ अ०) । (देखिये चित्ररथ) (२) गङ्गातटवर्ती एक वन, जो गन्धर्वराज अङ्गारपर्णके अधिकारमें था ।

अङ्गावह–एक वृष्णिवंशी महारथी वीर, जो युधिष्ठिरके राजसूययज्ञमें श्रीबलरामजी आदिके साथ आया था (सभा० ३४ । १६)।

अङ्गिरा–ब्रह्माजीके छः मानस पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६५ । १०) । ये ब्रह्माजीके सभासद् हैं (सभा० ११ । १९) । इन्हींके पुत्र बृहस्पतिका देवताओंने पौरोहित्यके पदपर वरण किया था (आदि० ७६ । ६) । इनकी ब्रह्माजीके वीर्य एवं अङ्गारसे उत्पत्तिका वर्णन (अनु० ८५ । १०५-१०६) । इनसे बृहस्पति, उतथ्य और संवर्त नामक तीन पुत्रोंकी उत्पत्ति हुई (आदि० ६६ । ५) । इन्होंने सूर्यदेवकी रक्षा की है (वन० ९२ । ६) । ये अलकनन्दा नामक गङ्गाके तटपर नित्य स्वाध्याय, जप

आदि करते हैं (वन० १४२ । ६) । अग्निदेवने अङ्गिराको अपना प्रथम पुत्र स्वीकार किया (वन० २१७ । ८–१८) । इनकी पत्नी सुभासे होनेवाली संतति-बृहत्कीर्ति आदि पुत्र और भानुमती आदि कन्याओंका वर्णन (वन० २१८ । १–८) । इन्हें इन्द्रदेवतासे वरकी प्राप्ति हुई (उद्योग० १८ । ५–७) । इन्होंने द्रोणाचार्यके पास आकर उनसे युद्ध बंद करनेको कहा था (द्रोण० १९० । ३४–४०) । गौतमके पूछनेपर तीर्थोंका महत्त्व बताया (अनु० २५ । ७–७१) । अगस्त्यजीके समक्ष स्वयं कमलोंकी चोरी न करनेके विषयमें शपथ करना (अनु० ९४ । २०) । इनके द्वारा भीष्मजीसे अनशनव्रतकी महिमाका वर्णन (अनु०१०६ । ११–१६) । धर्मके रहस्यका वर्णन (अनु० १२७ । ८) । समुद्रके जलका पान (अनु० १५३ । ३) । अग्निको शाप (अनु० १५३ । ८) । इन्होंने राजा अविक्षित्‌का यज्ञ कराया (आश्व० ४ । २२) ।

अचल–(१) कौरवपक्षका रथी वीर, जो गान्धारराज सुबलका पुत्र और शकुनिका भाई था (उद्योग० १६८ । १) । यह युधिष्ठिरका राजसूययज्ञ देखनेके लिये गया था (सभा० ३४ । ७) । इसका अपने भाई वृषकके साथ ही अर्जुनद्वारा वध हुआ (द्रोण० ३० । ११) । व्यासजीने एक रातके लिये जिन मृतात्माओंको जीवित अवस्थामें बुलाया था, उनमें यह भी था (आश्रम० ३२।१२) । (२) स्कन्दका एक पार्षद (शल्य० ४५।७४) । (३) विष्णुसहस्रनाममें आया हुआ भगवान्‌का एक नाम (अनु० १४९।९२) ।

अचला–स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । १४) ।

अच्युत–भगवान् श्रीकृष्णका एक नाम (भीष्म० २५।२१) । (अपनी महिमा या स्वरूपसे अथवा धर्मसे कभी च्युत न होनेके कारण भगवान्‌को 'अच्युत' कहते हैं । इस यौगिक अर्थमें यह नाम युधिष्ठिर आदिके लिये भी विशेषरूपसे प्रयुक्त हुआ है ।)

अच्युतस्थल–वर्णसंकरजातीय अन्त्यजोंका । वासस्थान एक प्राचीन ग्राम (वन० १२९ । ९) ।

अच्युतायु–कौरवपक्षीय एक वीर, श्रुतायुका भाई, अच्युतायु और श्रुतायु—दोनोंका अर्जुनद्वारा वध हुआ (द्रोण० ९३ । ७–२४) ।

अज–(१) इक्ष्वाकुवंशी नरेश, महाराज दशरथके पिता (वन० २७४ । ६) । (२) प्राचीन ऋषियोंका एक समुदाय, इन्हें स्वाध्यायद्वारा स्वर्गप्राप्ति हुई (शान्ति० २६ । ७) । (३) महाराज जह्नुके पुत्र, बलाकाश्वके पिता (शान्ति० ४९ । ३) । (४) एक राजा जिन्होंने जीवनमें कभी मांस नहीं खाया (अनु० ११५ । ६६) । (किन्हींका मत है कि ये महाराज दशरथके पिता ही थे ।) (५) अजन्मा (भीष्म० २८ । ६) । (६) सूर्य (वन० ३ । १६) । (७) शिव (आश्व० ८ । २१) । (८) ब्रह्मा (अनु० १५३ । १७) । (९) विष्णु (अनु० १४९ । ६९) । (१०) श्रीकृष्ण (उद्योग० ७० । ८; शान्ति० ३४२ । ७४) । (११) बीज (शान्ति० ३३७ । ४) । (१२) छाग या बकरा (शान्ति० ३३७ । ३) ।

अजक–वृषपर्वा दानवका छोटा भाई, जो शाल्वरूपमें उत्पन्न हुआ था (आदि० ६५ । २४ तथा ६७ । १६) ।

अजगर–एक विशालकाय सर्प, जो पूर्वजन्ममें नहुष था और अगस्त्यके शापसे सर्प होकर नीचे गिरा था । इसीने भीमसेनको पकड़ा था (वन० १७८ । २८, १७९ । १०—२४) । उसका युधिष्ठिरके साथ संवाद (वन० १८० तथा १८१ अ०) ।

अजनाभ–एक पर्वतका नाम (अनु० १६५ । ३२) ।

अजमीढ़–(१) महाराज सुहोत्रके द्वारा ऐक्ष्वाकीके गर्भसे उत्पन्न, सोमवंशीय क्षत्रिय; इनके भाइयोंका नाम सुमीढ़ और पुरुमीढ़ था, इनके 'धूमिनी', 'नीली' तथा 'केशिनी' नामकी तीन रानियाँ थीं; जिनमें धूमिनीके गर्भसे 'ऋक्ष', नीलीके गर्भसे दुष्यन्त और परमेष्ठी तथा केशिनीके 'जह्नु', 'व्रजन' तथा 'रूपिण' नामके तीन पुत्र हुए थे । (आदि० ९४ । ३०–३२ तथा अनु० ४ । २) । (२) एक सोमवंशी क्षत्रिय राजा, जो सोमवंशी विकुण्ठन तथा दशार्हकुलकी कन्या सुदेवाके गर्भसे उत्पन्न हुए थे; इनकी कैकेयी, गान्धारी, विशाला तथा ऋक्षा नामवाली चार स्त्रियाँ थीं; जिनसे एक सौ चौबीस पुत्र हुए थे (आदि० ९५ । ३५–३७) ।

अजवक्त्र–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ७५) ।

अजविन्दु–सुवीरोंके वंशमें उत्पन्न एक कुलाङ्गार राजा (उद्योग० ७४ । १४) ।

अजातशत्रु–युधिष्ठिर (भीष्म० ८५ । १९ तथा सभा० १३ । ९) ।

अजेय–एक प्राचीन राजा (आदि० १ । २३४) ।

अजैकपात्–ग्यारह रुद्रोंमेंसे एक । ब्रह्माजीके पौत्र एवं स्थाणुके पुत्र (आदि० ६६ । १—३) । ये सुवर्णके रक्षक हैं (उद्योग० ११४ । ४) । ग्यारह रुद्रोंमें इनके नाम अनेक स्थलोंपर आये हैं । यथा—(शान्ति० २०८ । १९) ।

अजोदर–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ६०) ।

अञ्जन–(१) एक पर्वतका नाम (सभा० ७८ । १५) । (२) सुप्रतीकके वंशमें उत्पन्न पातालवासी 'अञ्जन'नामक

हाथी (उद्योग० ९९ । १५) । (३) घटोत्कचके साथी राक्षसकी सवारीमें आया हुआ 'अञ्जन' नामक दिग्गज (भीष्म० ६४ । ५७ तथा द्रोण० ११२ । ३३) ।

अञ्जनपर्वा–घटोत्कचका पुत्र (उद्योग० १९४ । २०) । अश्वत्थामाद्वारा इसका वध (द्रोण० १५६ । ८९-९०) ।

अञ्जलिकावेध–गजराजको वशमें करनेकी एक विद्या, इसे भीमसेन जानते थे (द्रोण० २६ । २३) ।

अञ्जलिकाश्रम–एक तीर्थ, इसमें शाकका भोजन करते हुए चीरवस्त्र धारणकर कुछ काल निवास करनेसे कन्याकुमारी तीर्थके दस बार सेवनका फल प्राप्त होता है (अनु० २५ । ५२) ।

अटवीशिखर–एक जनपदका नाम (भीष्म० ९ । ४८) ।

अठिद–दक्षिण दिशाका एक जनपद (भीष्म० ९ । ६४) ।

अणी–शूलके अग्रभागका नाम । इसको अपने शरीरके भीतर लिये हुए ही विचरनेके कारण माण्डव्य ऋषि 'अणीमाण्डव्य' कहलाने लगे (आदि० १०७ । ८) ।

अणीमाण्डव्य–महर्षि माण्डव्य तथा इनकी तपस्या (आदि० १०६ । २-३) । इनका 'अणीमाण्डव्य' नाम होनेका कारण (आदि० १०७ । ८) । निरपराध होनेपर भी इनको शूलीपर चढ़ाये जानेका दण्ड मिला (आदि० ६३ । ९२ तथा आदि० १०६ । १२) । शूलके अग्रभागपर इनकी तपस्या (आदि० १०६ । १५) । इनकी दयनीय दशासे संतप्त एवं तपस्यासे प्रभावित हो पक्षीरूपधारी महर्षियोंका इनके समीप आगमन (आदि० १०६ । १६) । 'फतिंगोंके पुच्छभागमें सींक घुसेड़नेके फलस्वरूप ही आपको शूलीपर चढ़ाये जानेका दण्ड मिला है'—इस प्रकार धर्मराजद्वारा इनको सम्बोधन (आदि० १०७ । ११) । ब्राह्मणवधकी अत्यधिक भयङ्करताका इनके द्वारा प्रतिपादन (आदि० १०७ । १५) । धर्मराजको शूद्रयोनिमें जन्म लेनेका इनके द्वारा अभिशाप (आदि० १०७ । १६ ; ६३ । ९६) । 'चौदह वर्षकी आयुतक किये हुए अशुभ कर्मोंका फल किसीको नहीं प्राप्त होगा' इस प्रकार इनकी घोषणा (आदि० १०७ । १७) । श्रीकृष्णके हस्तिनापुर जाते समय मार्गमें उनसे जो ऋषि मिले थे, उनमें अणीमाण्डव्य भी थे (देखिये उद्योग० ८३ । ६४ के बाद दाक्षिणात्य पाठ) । इनका विदेहराज जनकसे तृष्णाका त्याग करनेके विषयमें प्रश्न करना (शान्ति० २७६ । ३) । शिव-महिमाके विषयमें युधिष्ठिरको अपना अनुभव बताना (अनु० १८ । ४६—५१½) ।

अणुह–एक प्राचीन राजाका नाम (आदि० १ । २३२) ।

अतिबल–(१) वायुद्वारा स्कन्दको दिया गया एक पार्षद (शल्य० ४५ । ४४) । (२) एक नीतिशास्त्रका ज्ञाता नरेश, जो राज्य पाकर इन्द्रियोंका गुलाम हो गया था । इसके पिताका नाम अनङ्ग था (शान्ति० ५९ । ९२) ।

अतिबाहु–एक गन्धर्व, जो कश्यपकी पत्नी प्राधाका पुत्र था । उसके तीन भाई और हैं—हाहा, हूहू तथा तुम्बुरु (आदि० ६५ । ५१) ।

अतिभीम–'तप' नामधारी पाञ्चजन्य अग्निके पुत्र । पंद्रह उत्तरदेवों अथवा अग्निविनायकोंमेंसे एक (वन० २२० । ११) ।

अतियम–वरुणद्वारा स्कन्दको दिये गये दो पार्षदोंमेंसे एक । इसके दूसरे साथीका नाम यम था (शल्य० ४५ । ४५) ।

अतिरथ–पूरुवंशी राजा मतिनारके तृतीय पुत्र । इनके अन्य तीन भाइयोंके नाम—तंसु, महान् और द्रुह्यु (आदि० ९४ । १४) ।

अतिलोमा–एक असुर, जो भगवान् श्रीकृष्णद्वारा मारा गया था (सभा० ३८ । २९ के बाद दाक्षि० पृष्ठ ८२५ प्रथम कालम) ।

अतिवर्चा–हिमवान्द्वारा स्कन्दको दिये गये दो पार्षदोंमेंसे एक । इसके दूसरे साथीका नाम सुवर्चा था (शल्य० ४५ । ४६) ।

अतिशृङ्ग–विन्ध्याचलद्वारा स्कन्दको दिये गये दो पाषाणयोधी पार्षदोंमेंसे एक । इसके दूसरे साथीका नाम उच्छृङ्ग था (शल्य० ४५ । ४९-५०) ।

अतिषण्ड–बलरामजीके अनन्त नागका रूप धारण करके परम धाम पधारते समय उनका स्वागत करनेके लिये आये हुए बहुत-से नागोंमेंसे एक (मौसल० ४ । १६) ।

अतिस्थिर–मेरु पर्वतद्वारा स्कन्दको दिये गये दो पार्षदोंमेंसे एक । दूसरेका नाम 'स्थिर' था (शल्य० ४५ । ४८) ।

अत्रि–एक ब्रह्मर्षि, जो ब्रह्माजीके मानस पुत्र थे (आदि० ६५ । १० तथा शान्ति०के १६६, २०७, २०८ अध्याय) । ये ब्रह्माजीके सात पुत्रों एवं सात ब्रह्माओंमेंसे एक हैं । इनके वंशमें प्राचीनबर्हि उत्पन्न हुए थे, जो दस प्रचेताओंके पिता थे । अत्रिके दो औरस पुत्र कहे गये हैं—वीर्यवान् राजा सोम और भगवान् अर्यमा (शान्ति० २०८ । ३—१०) । ये इक्कीस प्रजापतियोंमेंसे एक हैं (शान्ति० ३३४ । ३५) । 'चित्रशिखण्डी' कहे जानेवाले सात ऋषियोंमेंसे भी एक हैं (शान्ति० ३३५ । २७) । सम्पूर्ण लोकोंकी उत्पत्ति और प्रतिष्ठाके आधारभूत 'आठ प्रकृति' कहे जानेवाले मरीचि आदि प्रजापतियोंमें भी इनकी गणना की गयी है (शान्ति० ३४० । ३४–३६) । इनकी पत्नीका

नाम अनसूया था (अनु० १४ । ९५) । पराशरका राक्षस-यज्ञ बंद करानेके लिये इनका आगमन (आदि० १८० । ८) । महाराज पृथुके यज्ञमें इनका गौतमसे संवाद (वन० १८५ । १५—२३) । पृथुद्वारा इन्हें धनकी प्राप्ति (वन० १८५ । ३४-३६) । अत्रिके शरीरसे विभिन्न अग्नियोंका प्रादुर्भाव (वन० २२२ । २७-२९) । द्रोणाचार्यके पास आकर उनसे युद्ध बंद करनेको कहना (द्रोण० १९० । ३५—४०) । इन्होंने सोमके राजसूय यज्ञमें होताका कार्य किया था (शल्य० ४३ । ४७) । ये देवताओंकी प्रार्थनासे दिनमें सूर्य होकर तपे और रातमें चन्द्रमा बनकर प्रकाशित हुए । इनके तेजसे असुर दग्ध हो गये । इन्होंने सूर्यको तेजस्वी बनाया (अनु० १५६ । ९—१४) । उत्तर दिशाका आश्रय लेकर उन्नति करनेवाले महर्षियोंमें इनका नाम आया है (अनु० १६५ । ४४) । इनके धर्मात्मा पुत्र दुर्वासा पश्चिम दिशामें रहकर अभ्युदयशील होते हैं (अनु० १६५ । ४३) । इन्होंने अपने वंशज निमिको श्राद्धके विषयमें उपदेश दिया था । (अनु० ९१ । २०—४४) । वृषादर्भिसे प्रतिग्रहके दोष बताना (अनु० ९३ । ४३ के बाद) । इनका अरुन्धतीसे अपनी दुर्बलताका कारण बताना (अनु० ९३ । ६२) । यातुधानीसे नाम-का निर्वचन—अर्थ बताना (अनु० ९३ । ८२) । मृणालकी चोरी नहीं की—इस विषयमें शपथ खाना (अनु० ९३ । ११३) । (२) शुक्राचार्यके पुत्र । भयानक कर्मकर्ता (आदि० ६५ । ३७) । (३) भगवान् शिव-का एक नाम (अनु० १७ । ३८) ।

अत्रिभार्या (अनसूया)–ये अत्रिकी ब्रह्मवादिनी पत्नी थीं । एक बार पतिसे रुष्ट हो उनसे अलग होकर ये तीन सौ वर्षोंतक तपस्यामें संलग्न रहीं । उस समय भगवान् शङ्करने प्रसन्न होकर इन्हें पुत्र-प्राप्तिका वरदान दिया था (अनु० १४ । ९५—९८) ।

अथर्वा–(१) एक मुनि, जो छन्द (वेद)के गायक थे (उद्योग० ४३ । ५०) । ये ही अथर्वा अङ्गिराके नामसे प्रसिद्ध हैं । इन्होंने ही जलमें छिपे हुए सहनामक अग्निका पता लगाया (वन० २२२ । ८) । अग्निका अथर्वाको अग्निरूपसे प्रकाशित हो देवताओंके लिये हविष्य पहुँचाने-का आदेश देना । (वन० २२२ । ९) । अग्निके प्राकट्यके लिये देवताओंका अथर्वाकी शरणमें आना और इनकी पूजा करना (वन० २२२ । १८) । अथर्वाका समुद्रको मथकर अग्निका दर्शन एवं सम्पूर्ण लोकोंकी सृष्टि करना (वन० २२२ । १९) । (२) अथर्ववेद । (३) भगवान् शिव-का एक नाम अथर्वशीर्ष (अनु० १७ । ९१) ।

अदिति–दक्षकी पुत्री, कश्यपकी पत्नी तथा द्वादश आदित्यों-की माता (आदि० ६५ । ११—१६) । नरकासुरद्वारा इनके कुण्डलोंका अपहरण । सत्यभामाजीको इनका वरदान । भगवान् श्रीकृष्णद्वारा इनको दिव्य कुण्डल एवं बहुमूल्य रत्नोंकी भेंट (उद्योग० ४८ । ८० तथा सभा० ३८ । २९ के बाद) । मैनाकपर्वतके कुक्षिभागमें स्थित विनशन तीर्थके भीतर देवी अदितिने पुत्र-प्राप्तिके निमित्त साध्य देवताओंके उद्देश्यसे अन्न (ब्रह्मौदन) तैयार किया था (वन० १३५ । ३) । इन्होंने पूरे एक सहस्र वर्षोंतक भगवान् विष्णु (वामन) को गर्भमें धारण किया था (वन० २७२ । ६२) । अदितिके गर्भसे भगवान् विष्णुके सात बार प्रकट होनेकी चर्चा (शान्ति० ४३ । ६) । देवताओंकी विजयके उद्देश्यसे अन्न तैयार करनेवाली अदितिको बुधका शाप; मृत अण्डकी उत्पत्ति तथा उसीसे प्रकट होनेके कारण श्राद्धदेवकी मार्तण्ड नामसे प्रसिद्धि (शान्ति० ३४२ । ५६) । देवी अदितिने एक पैरपर खड़ी रहकर पुत्रके लिये घोर तपस्या की, जिससे भगवान् विष्णु उनके गर्भमें आये (अनु० ८३ । २५-२६) ।

अदृश्यन्ती–महर्षि वसिष्ठकी पुत्रवधू, शक्तिकी पत्नी, पराशरकी माता । वसिष्ठजीको इनके गर्भस्थ बालकके मुखसे वेदाध्ययन करनेका शब्द सुनायी देना, उनके पूछनेपर वंशोच्छेदके भयसे चिन्तित हुए वसिष्ठको इनका अपने गर्भमें स्थित हुए शक्तिके पुत्रकी सूचना देना (आदि० १७६ । ११—१५) । कल्माषपादके भयसे भीत हुई अदृश्यन्तीको वसिष्ठका आश्वासन (आदि० १७६ । २३) । इनके गर्भसे पराशरका जन्म (आदि० १७७ । १) । इनके आदर्श पतिप्रेमकी चर्चा (उद्योग० ११७ । ११) ।

अद्भुत–(१) एक अग्नि, जो सह नामक अग्निके पुत्र हैं; इनकी माताका नाम मुदिता है; ये सम्पूर्ण भूतोंके अधिपति, आत्मा और भुवनभर्ता हैं; ये ही महाभूतपति, ऐश्वर्य-सम्पन्न, सर्वत्र विचरनेवाले तथा 'गृहपति' नामसे जगत्को पवित्र करनेवाले हैं; इनके पुत्रका नाम भरत है (वन० २२२ । १-६) । अद्भुतकी पत्नीका नाम 'प्रिया' और उसके गर्भसे उत्पन्न होनेवाले उनके औरस पुत्रका नाम 'विभूरसि' है (वन० २२२ । २६) । (२) भगवान् विष्णुका एक नाम (अनु० १४९ । १०८) ।

अद्रि–एक राजा, जो विष्वगश्वके पुत्र और युवनाश्वके पिता थे (वन० २०२ । ३) ।

अद्रिका–एक अप्सरा, जो ब्रह्माजीके शापसे मछली होकर यमुनाजीमें रहती थी (आदि० ६३ । ५८) । बाजके द्वारा गिराये गये उपरिचर वसुके वीर्यका इसके द्वारा ग्रहण (आदि० ६३ । ५९-६०) । इसके पेटसे

'सत्यवती' नामक कन्या एवं 'मत्स्य' नामक पुत्रकी उत्पत्ति (आदि० ६३ । ६१-६२) । दो संतानोंको उत्पन्न करके इसका शापसे मुक्त होना (आदि०६३ । ६४–६६) । अर्जुनके जन्मके समय अन्य अप्सराओंके साथ अद्रिका भी स्वर्गसे आयी थी (आदि० १२२ । ६१) ।

अधर्म–समस्त प्राणियोंका विनाश करनेवाला पाप (पापका अभिमानी पुरुष) और उसकी उत्पत्तिका कारण (आदि० ६६ । ५३) ।अधर्मकी पत्नीका नाम निर्ऋति है, इसके तीन 'नैर्ऋत' नामवाले राक्षस पुत्र हैं—भय, महाभय और मृत्यु (आदि० ६६ । ५४-५५) । अधर्मके ही अंशसे सम्पत्तिके पुत्र दर्पका प्रादुर्भाव हुआ (शान्ति० ९० । २७) ।

अधिरथ—एक सूत, कर्णका पालक पिता (आदि० ११० । २३; १३६ । १–४) । यह राजा धृतराष्ट्रका मित्र था और इसकी पत्नीका नाम राधा था, वह अनुपम सुन्दरी थी, राधाके कोई संतान नहीं थी, वह पुत्र-प्राप्तिके लिये सदा प्रयत्नशील रहती थी (वन० ३०९ । १–३) । अधिरथको कर्णकी प्राप्ति (वन० ३०९ । ८-९) ।

अधिराज्य–भारतवर्षका एक जनपद (कुछ लोग इसे वर्तमान रीवाँ राज्य मानते हैं) (भीष्म० ९ । ४४) ।

अधृष्या–एक नदी (भीष्म० ९ । २४) ।

अधोक्षज–श्रीकृष्णका एक नाम, इस नामकी व्युत्पत्ति (उद्योग० ७० । १०; अनु० १४ । ६९) । भगवान् विष्णुका एक नाम (अनु० १४९ । ५७) ।

अधःशिरा–एक दिव्य महर्षि, जिन्होंने श्रीकृष्णके हस्तिनापुर जाते समय मार्गमें उनसे भेंट की थी (उद्योग०८३ । ६४ के बाद दाक्षिणात्य पाठ) ।

अनघ–(१) एक देवगन्धर्व, जो अर्जुनके जन्मोत्सवमें आया था (आदि० १२२ । ५५) । (२) एक राजा (सभा० ८ । २१) । (३) एक देश या जनपद (सभा ३० । ९) । (४) स्कन्दका एक नाम (वन० २३२ । ५) । (५) गरुड़की संतानोंमेंसे एक (उद्योग० १०१ । १२) । (६) भगवान् शिवका एक नाम (अनु० १७ । ३८) । (७) भगवान् विष्णुका एक नाम (अनु० १४९ । २९) ।

अनङ्ग–प्रजापति कर्दमका पुत्र, जो प्रजारक्षक, साधु तथा दण्डनीतिमें निपुण था । इसके पुत्रका नाम अतिबल था (शान्ति० ५९ । ९१-९२) ।

अनङ्गा–एक नदी (भीष्म० ९ । ३५) ।

अनन्त–(१) कद्रूके ज्येष्ठ पुत्र भगवान् अनन्त (शेषनाग) (आदि० ६५ । ४१) ।भगवान् अनन्त (शेषनाग) सात धरणीधरोंमें एक हैं (अनु० १५० । ६१) । भगवान् अनन्तका ब्रह्माजीके आदेशसे अकेले ही इस सारी पृथ्वीको धारण करना (आदि० ३६ । २४) । ब्रह्माजीने अनन्त (शेषनाग) के लिये गरुडको सहायक बना दिया (आदि० ३६ । २५) । पश्चिम दिशामें नागराज अनन्तके निवास-स्थानकी चर्चा (उद्योग० ११० । १८) । भगवान् अनन्त (बलराम) का रसातल-प्रवेश (स्वर्गा० ५ । २३) । (२) भगवान् सूर्यका नाम (वन० ३ । २४) । (३) भगवान् श्रीकृष्णका नाम (उद्योग० ७० । १४) । (४) स्कन्दके एक सेनापति (शल्य० ४५ । ५७) । (५) भगवान् विष्णुका नाम (अनु० १४९ । ८३) । (६) भगवान् शिवका नाम (अनु० १७ । १३५) ।

अनन्तविजय–युधिष्ठिरके शङ्खका नाम (भीष्म० २५ । १६; शल्य० ६१ । ७१ के बाद दाक्षिणात्य पाठ) ।

अनन्ता–महाराज पूरुके पुत्र जनमेजयकी पत्नी, मधुवंशकी कन्या । इनके गर्भसे जनमेजयद्वारा प्राचिन्वान्‌का जन्म हुआ था (आदि० ९५ । १२) ।

अनरकतीर्थ–एक तीर्थ, जिसमें स्नान करनेसे दुर्गति दूर होती है तथा जहाँ नारायण आदिके साथ ब्रह्मा नित्य निवास करते हैं (वन० ८३ । १६८) ।

अनरण्य–इक्ष्वाकुवंशके एक प्राचीन नरेश (आदि० १ । २३६) । इन्होंने मांसभक्षणका निषेध किया (अनु० ११५ । ५९) । ये सायं और प्रातःकाल स्मरण करनेयोग्य राजर्षियोंमेंसे एक हैं (अनु० १६५ । ५९) ।

अनल–(१) आठ वसुओंमेंसे एक, जो शाण्डिलीके पुत्र हैं (आदि० ६६ । २०) । (२) गरुडकी प्रमुख संतानोंमेंसे एक (उद्योग० १०१ । ९) ।

अनला–(१) सुरभिकन्या रोहिणीकी पुत्री । इससे पिण्डाकार फल देनेवाले सात प्रकारके वृक्षों तथा शुकी नामवाली कन्याका प्रादुर्भाव हुआ (आदि० ६६ । ६७–६९) । (२) नागमाता सुरसाकी पुत्री, जो वनस्पतियों, वृक्षों और लतागुल्मोंकी जननी हुई (आदि० ६६ । ७० के आगे दाक्षिणात्य पाठ) ।

अनवद्या–कश्यपकी पत्नी तथा दक्षकी कन्या प्राधाकी सात पुत्रियोंमेंसे एक (आदि० ६५ । ४५) । यह स्वर्गकी अप्सरा थी, जो अर्जुनके जन्मकालमें अन्य अप्सराओंके साथ नृत्यके लिये आयी थी (आदि० १२२ । ६१) ।

अनश्वा–महाराज कुरुके पौत्र तथा विदूरके पुत्र । मधुवंश-की कन्या सम्प्रिया इनकी माता थी । इन्होंने मगधराज-कुमारी अमृताके गर्भसे परिक्षित्‌को जन्म दिया (आदि० ९५ । ३९–४१) ।

अनादि–भगवान् विष्णुका एक नाम (अनु० १४९ । ११४)।

अनाधृष्टि–(१) रौद्राश्वद्वारा मिश्रकेशी अप्सराके गर्भसे उत्पन्न 'ऋचेयु' अथवा 'अन्वग्भानु' का नाम 'अनाधृष्टि' था (आदि० ९४ । ८–१२)। (२) सात यादव महारथियोंमेंसे एक (सभा० १४ । ५८)। ये उपप्लव्य नगरमें अभिमन्युके विवाहके अवसरपर उसकी माता सुभद्राके साथ पधारे थे (विराट० ७२ । २२)। कुरुक्षेत्र-में श्रीकृष्ण और अर्जुनको घेरकर चलनेवाले अनेक वीरोंमें एक अनाधृष्टि भी थे (उद्योग० १५१ । ६७)। ये ही वृद्धक्षेमके पुत्र थे, जिनकी चर्चा धृतराष्ट्रने की है (द्रोण० १० । ५५)। इन्हींका वृष्णिवंशी 'वार्धक्षेमि' नामसे उल्लेख हुआ है, जिन्हें कृपाचार्यने द्रोणपर आक्रमण करनेसे रोका था (द्रोण० २५ । ५१-५२)।

अनालम्ब–एक तीर्थ, जिसमें स्नान करनेसे पुरुषमेध यज्ञका फल प्राप्त होता है (अनु० २५ । ३२-३३)।

अनिकेत–कुबेरकी सभामें उनकी सेवाके लिये सदा उपस्थित रहनेवाले यक्षोंमेंसे एक (सभा० १० । १८)।

अनिमिष–(१) गरुडकी प्रमुख संतानोंमेंसे एक (उद्योग० १०१ । १०)। (२) भगवान् शिवका एक नाम (अनु० १७ । ४१)। (३) भगवान् विष्णुका एक नाम (अनु० १४९ । ३६)।

अनिरुद्ध–(१)भगवान् श्रीकृष्णके पौत्र एवं प्रद्युम्नके पुत्र(आदि० १८५ । १७)। अनिरुद्धका प्रच्छन्नरूपसे बाणपुत्री उषाके साथ पहुँचकर उसके साथ आनन्दपूर्वक रहना। बाणासुर-का अनिरुद्धको कैद करके कष्ट देना। नारदजीके मुखसे अनिरुद्धको बाणासुरके यहाँ बंदी हो कष्टमें पड़ा हुआ सुनकर श्रीकृष्णका बाणनगरपर आक्रमण; अनिरुद्धका उद्धार तथा उषाके साथ द्वारका-आगमन आदि (सभा० ३८ अध्याय दा० पाठ श्रीकृष्णचरित्रके अन्तर्गत)। अर्जुनसे धनुर्वेदकी शिक्षा लेते समय ये युधिष्ठिरकी सभामें साम्ब आदिके साथ विराजमान होते थे (सभा० ४ । ३३–३६)। अनिरुद्ध-की विष्णुरूपता तथा इनके द्वारा ब्रह्माजीकी उत्पत्ति (भीष्म० ६५ । ७१; शान्ति० ३४० । ३०-३१)। अनिरुद्ध (विष्णु) के नाभि-कमलसे ब्रह्माजीका प्रादुर्भाव (शान्ति० ३४१ । १५–१७)। (२) वृष्णिवंशी क्षत्रिय, जो प्रद्युम्नपुत्रसे भिन्न था। इन दोनोंका द्रौपदीके स्वयंवरमें आगमन हुआ था (आदि० १८५ । १७–२०)। (३) मांसभक्षणका त्याग करनेवाला एक राजा (अनु० ११५ । ६०)। (४) भगवान् विष्णुका एक नाम (अनु० १४९ । ३३)।

अनिल– (१) आठ वसुओंमेंसे एक। इनके पिता धर्म और माता श्वासा हैं। इनकी पत्नीका नाम शिवा है और मनोजव एवं अविज्ञातगति नामक दो पुत्र हैं (आदि० ६६ । १७–२५)। (२) गरुडकी मुख्य-मुख्य संतानोंमेंसे एक (उद्योग० १०१ । ९)। (३) भगवान् शिवका एक नाम (अनु० १७ । १००)। (४) भगवान् विष्णुका एक नाम (अनु० १४९ । ३८)।

अनीकविदारण–सिंधुराज जयद्रथका भाई (वन० २६५ । १२)। अर्जुनद्वारा वध (वन० २७१ । २७)।

अनील–प्रमुख नागोंमेंसे एक (आदि० ३५ । ७)।

अनु–महाराज ययातिके द्वारा शर्मिष्ठासे उत्पन्न तीन पुत्रोंमेंसे एक मझले (आदि० ७५ । ३३–३५)। अपनी युवा-वस्था न देनेके कारण इनको पिताद्वारा जराग्रस्त होने, अग्निहोत्र-त्यागी बनने तथा युवा होते ही इनकी संतानोंके मरनेका अभिशाप (आदि० ८४ । २५-२६)।

अनुकर्मा–एक विश्वेदेव (अनु० ९१ । ३२)।

अनुक्रमणिकापर्व–आदिपर्वका एक अवान्तरपर्व, पहला अध्याय।

अनुगीतापर्व–आश्वमेधिकपर्वके सोलहवें अध्यायसे ९२ तक-का एक पर्व।

अनुगोप्ता–एक विश्वेदेव (अनु० ९१ । ३७)।

अनुचक्र–प्रजापति त्वष्टाद्वारा स्कन्दको दिये गये दो पार्षदों-मेंसे एक। इसका दूसरा साथी चक्र था (शल्य० ४५ । ४०)।

अनुदात्त (स्वर)–(१) पाञ्चजन्य अग्निद्वारा अपनी दोनों भुजाओंसे उत्पन्न किये गये प्राकृत और वैकृत भेदोंवाला 'अनुदात्त' नामक स्वर (वन० २२० । ५–८)। (२) पाञ्चजन्यद्वारा पितरोंके लिये उत्पन्न किये गये पाँच पुत्रोंमेंसे एक, इसकी उत्पत्ति प्राणके अंशसे हुई थी (वन० २२० । ८–१०)।

अनुद्यूत–वह जूआ, जो कौरवों और पाण्डवोंने वनवासकी बाजी लगाकर दूसरी बार खेला था (सभा० ७६ । १०–२४)।

अनुद्यूतपर्व–सभापर्वके अन्तर्गत अध्याय ७४ से ८१ तकका भाग।

अनुपावृत्त–एक भारतीय जनपदका नाम (भीष्म० ९ । ४८)।

अनुमति–एक कलासे रहित अर्थात् चतुर्दशीयुक्त पूर्णिमाकी अधिष्ठात्री देवी (शल्य० ७५ । १३)।

अनुयायी–धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६७ । १०२)। इसीका दूसरा नाम 'अग्रयायी' है (आदि० ११६ । ११)। भीमसेनके द्वारा मारे जाते समय इसके 'अनुयायी' नामका ही उल्लेख हुआ है (द्रोण० १५७ । १७–२०)।

अनुविन्द–(१) धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६७ । ९४)। घोषयात्राके समय दुर्योधनके साथ गन्धर्वों-द्वारा यह भी बंदी बनाया गया था (वन० २४२ । ८)।

भीमसेनद्वारा इसका वध (द्रोण० १२७ । ६६)। (२) अवन्तीके राजकुमार। विन्दके भाई। ये दोनों भाई प्रतापी सहदेवद्वारा दक्षिण-विजयके समय पराजित हुए थे (सभा० ३१ । १०)। इन दोनों बन्धुओंका एक अक्षौहिणी सेनासहित दुर्योधनकी सहायतामें जाना (उद्योग० १९ । २४-२५)। प्रथम दिनके संग्राममें कुन्तिभोजके साथ इनका द्वन्द्व-युद्ध (भीष्म० ४५ । ७२–७५)। अर्जुनपुत्र इरावान्द्वारा पराजित होना (भीष्म० ८३ । १८–२२)। भीमसेन और अर्जुनके साथ युद्ध (भीष्म० ११३-११४ अध्यायोंमें)। चेकितानके साथ युद्ध (द्रोण० १४ । ४८)। विराटके साथ युद्ध (द्रोण० २५ । २०-२१; ९६ । ४–६)। अर्जुनद्वारा इसका वध (द्रोण० ३९९ । २७–२९)। (३) केकयराजकुमार। कौरव-पक्षका योद्धा। सात्यकिद्वारा वध (कर्ण० १३ । २१)।

अनुशासनपर्व–महाभारतका एक प्रमुख पर्व।

अनुष्णा–एक नदीका नाम (भीष्म० ९ । २४)।

अनुह्राद–हिरण्यकशिपुका तीसरा पुत्र (आदि० ६५ । १८)। यही शिशुपालपुत्र धृष्टकेतुके रूपमें पैदा हुआ था (आदि० ६७ । ७)।

अनूचाना–एक अप्सरा, जिसने अन्य अप्सराओंके साथ आकर अर्जुनके जन्मके अवसरपर नृत्य किया था (आदि० १२२ । ६१)।

अनूदर–धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६७ । ९९; ११६ । ८)।

अनूप–एक प्राचीन जनपद (सभा० ५१ । २४)। (किसी-किसीके मतमें नीमाड़के लगभग नर्मदा-तटवर्ती प्रदेश; दक्षिण मालवा ही अनूप देश है (हिंदीमहाभारत परिशिष्ट पृष्ठ ५)।

अनूपक–अनूपदेशके निवासी योद्धा (भीष्म० ५० । ४७)।

अनूपपति–समुद्रतटवर्ती अनूपदेशका राजा कार्तवीर्य (वन० ११६ । १९)।

अनूपराज–अनूपदेशके राजा (सभा० ४ । २८)। (कुछ व्याख्याकार 'अनूपराजो दुर्धर्षः' इस वाक्यांशका अर्थ 'अनूपराज दुर्धर्ष' करते हैं अर्थात् अनूपराजका नाम 'दुर्धर्ष' मानते हैं और दूसरे लोग 'दुर्धर्ष' पदको अनूपराजका विशेषण समझते हैं।)

अनेना–(१) पुरूरवाके पुत्र राजा 'आयु'के द्वारा स्वर्भानुकुमारीके गर्भसे उत्पन्न पाँचवाँ पुत्र। इसके अन्य चार भाई ये–नहुष, वृद्धशर्मा, रजि तथा गय (आदि० ७५ । २४–२६)। (२) इक्ष्वाकुवंशी महाराज ककुत्स्थके पुत्र (वन० २०२ । २)।

अन्तक–चौदह यमोंमेंसे एक। ये पितरोंकी ओरसे पृथ्वीदोहनके समय दोग्धा थे (द्रोण० ६९ । २६)।

अन्तचार–एक प्राचीन भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ६८)।

अन्तर्गिरि–हिमालयकी भीतरी श्रृङ्खलाका एक जनपद (भीष्म० ९ । ४९)। अर्जुनद्वारा इसपर विजय (सभा० २७ । ३)।

अन्तर्धान–कुबेरका एक अस्त्र (वन० ४१ । ३८)।

अन्तर्धामा–मनुवंशी अङ्गके पुत्र और हविर्धामाके पिता (अनु० १४७ । २३)।

अन्तर्याग–कान-नेत्र आदि दस होताओंद्वारा साध्य आध्यात्मिक यज्ञ (आश्व० अ० २१ से २७ तक)।

अन्तर्वृत्ति–स्वर्गकी प्राप्ति करानेवाली आन्तरिक वृत्ति (अनु० १४४ । ४—१७ तथा २९—४०)।

अन्तवास–एक प्राचीन देश (सभा० ५१ । १७)।

अन्ध–(१) एक कश्यपवंशी नाग (उद्योग० १०३ । १६)। (२) एक अन्ध हिंसक जीव, जिसने समस्त प्राणियोंके विनाशका वरदान प्राप्त किया था और इसीलिये जिसे ब्रह्माजीने अन्धा बना दिया था। इसे मारकर व्याध स्वर्गलोकका अधिकारी हुआ था (कर्ण० ६९ । ४१—४५)।

अन्धक–(१) यदुकुलमें उत्पन्न अन्धकसे प्रचलित कुलपरम्परामें जन्म लेनेवाले क्षत्रिय। इनके द्वारा अर्जुनका सत्कार (आदि० २१७ । १८-१९)। (२) एक राजा, जिसके पास पाण्डवपक्षकी ओरसे युद्धमें सहायताके लिये निमन्त्रण भेजा गया था (उद्योग० ४ । १२)। (३) एक तीर्थ, जिसमें स्नान करनेसे पुरुषमेध यज्ञके फलकी प्राप्ति बतायी गयी है (अनु० २५ । ३२-३३)। (४) एक असुर, जो भगवान् शङ्करद्वारा मारा गया था (अनु० १४ । २१४-२१५)।

अन्धकार–क्रौञ्चद्वीपका एक पर्वत (भीष्म० १२ । १८)।

अन्धकारक–क्रौञ्चद्वीपका एक जनपद (भीष्म० १२ । २२)।

अन्ध्र–(१) दक्षिण भारतका एक जनपद (भीष्म० ९ । ४९)। (२) अन्ध्रदेशवासी योद्धा (द्रोण० ४ । ८)।

अन्ध्रक (या आन्ध्रक)–(१) अन्ध्रदेशके राजा, जो युधिष्ठिरकी मयनिर्मित सभामें बैठते थे (सभा० ४ । २४)। ये युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें आये थे (सभा० ३४ । ११)। (२) अन्ध्रदेशवासी मनुष्य अथवा योद्धा। पाण्ड्यनरेशने महाभारत-युद्धमें इन्हें परास्त किया था (कर्ण०

२०।१०-११)। श्रीकृष्णने अर्जुनको अन्ध्र, पुलिन्द आदि देशोंके योद्धाओंको मारनेका उत्साह दिलाया (कर्ण० ७३।१९-२१)। (३) जातिविशेष। दक्षिणभारतीय आन्ध्र-पुलिन्द आदि जातियोंको 'म्लेच्छ' कहा गया है (शान्ति० २०७।४२)।

अन्यगोचरी-स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य०४६।२७)।

अन्वग्भानु-मिश्रकेशी अप्सराके गर्भसे उत्पन्न रौद्राश्वके पुत्र। इनके दो नाम और मिलते हैं-ऋचेयु तथा अनाधृष्टि (आदि० ९४।८-१२)।

अपरकाशि-भारतवर्षका एक जनपद (भीष्म० ९।४२)।

अपरकुन्ति-भारतवर्षका एक जनपद (भीष्म० ९।४३)।

अपरनन्दा-एक नदी, जिसका दर्शन अर्जुनने किया था (आदि० २१४।६-७)। युधिष्ठिरने भी इसकी यात्रा की (वन० ११०।१)। दैववंश-ऋषिवंशके साथ कीर्तनीय पुण्य नदियोंमें 'अपरनन्दा'का भी नाम आया है (अनु० १६५।२८)।

अपरम्लेच्छ-एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९।६५)।

अपरवल्लव-एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९।६२)।

अपरसेक-एक मध्य भारतीय जनपद (सभा० ३१।९)।

अपराजित-(१) एक कश्यपवंशी नाग (आदि० ३५।१३; उद्योग० १०३।१५)। (२) एक क्षत्रिय राजा। कालेय नामक आठ दैत्योंमेंसे एकके अंशसे उत्पन्न (आदि० ६७।४९)। इन्हें पाण्डवोंकी ओरसे रण-निमन्त्रण प्राप्त हुआ (उद्योग० ४।२१)। (३) कौरव धृतराष्ट्रका एक पुत्र (आदि० ६७।१०१)। भीमसेन-द्वारा इसका वध (भीष्म० ८८।२१-२२)। (४) कुरु-पौत्र जनमेजय कुमार धृतराष्ट्रके कुण्डिक आदि नौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ९४।५०-५९)। (५) ग्यारह रुद्रोंमेंसे एक (शान्ति० २०८।२०)। (आदिपर्वके ६६ वें अध्यायमें जो ग्यारह रुद्रोंके नाम मिलते हैं, वे शान्ति-पर्ववाले नामोंसे अधिकांश भिन्न हैं, उनमें 'अपराजित' नहीं है।) (६) भगवान् विष्णुका एक नाम (अनु० १४९।८९)।

अपरान्त-एक प्राचीन जनपद। दक्षिण भारतका वह प्रदेश जो पश्चिम समुद्रके किनारेपर है। यह प्रदेश पश्चिमी घाटके पश्चिमी समुद्रके तटपर है (भीष्म० ९।४७)। शूर्पारक-क्षेत्रका दूसरा नाम (शान्ति० ४९।६७)।

अपान्तरतमा-श्रीनारायणके 'भो' शब्दके उच्चारणसे प्रकट हुए एक महात्मा पुरुष। भगवान्‌की वाक् या सरस्वतीसे प्रादुर्भूत होनेके कारण इनका नाम सारस्वत हुआ। ये ही अपान्तरतमाके नामसे विख्यात हुए (शान्ति० ३४९।३८-३९)। ये त्रिकालज्ञ थे। इन्हें वेदोंकी व्याख्याके लिये भगवान्‌ने ऋक्-साम आदि श्रुतियोंके संग्रहका आदेश दिया (शान्ति० ३४९।४०-४१)। स्वायम्भुव मन्वन्तरमें इनके द्वारा वेदोंका विभाग हुआ, जिससे प्रसन्न होकर भगवान्‌ने उन्हें सभी मन्वन्तरोंमें धर्मप्रवर्तक होनेका आशीर्वाद दिया तथा भविष्यमें वशिष्ठवंशी पराशरके ज्ञानवान्, तपोबलसम्पन्न पुत्ररूपमें अवतीर्ण होनेकी बात बतायी (शान्ति० ३४९।४२-५९)।

अप्सुजाता-स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६।४)।

अप्सुहोम्य-एक प्राचीन ऋषि, जो युधिष्ठिरकी सभामें विराजमान होते थे (सभा० ४।१२)।

अबल-पाञ्चजन्यद्वारा उत्पन्न किये गये पंद्रह उत्तरदेवों (विनायकों) मेंसे एक (वन० २२०।११)।

अबन्धुदायाद-कुटुम्बी न होनेपर भी उत्तराधिकारी पुत्र (आदि० ११९।३२)। (छः प्रकारके पुत्र 'अबन्धुदायाद' कहलाते हैं। जिनके नाम इस प्रकार हैं—१. 'दत्त' (जिसे माता-पिताने स्वयं समर्पित कर दिया हो)। २. क्रीत (जिसे धन आदि देकर खरीद लिया गया हो)। ३. 'कृत्रिम' (जो स्वयं मैं आपका पुत्र हूँ—यों कहकर समीप आया हो)। ४. सहोढ़ (जो कन्या-अवस्थामें ही गर्भवती होकर ब्याही गयी हो, उसके गर्भसे उत्पन्न)। ५. 'ज्ञातिरेता' (अपने कुलका पुत्र)। ६. हीन जातिकी स्त्रीके गर्भसे उत्पन्न। ये कुटुम्बी न होनेपर भी सम्पत्तिके अधिकारी होते हैं; अतः इन्हें 'अबन्धुदायाद' कहते हैं।

अभय-(१) धृतराष्ट्रका एक पुत्र (आदि० ६७।१०४; ११६।१२)। भीमसेनद्वारा इसका वध (द्रोण० १२७।६२)। (२) एक प्राचीन भारतीय जनपद, जिसपर भीमसेनने विजय प्राप्त की (सभा० ३०।९)।

अभिजित्-(१) दिनका आठवाँ मुहूर्त। मुहूर्तविशेष। इसमें युधिष्ठिरका जन्म (आदि० १२२।६)। (२) रोहिणीकी छोटी बहिन। एक नक्षत्र (वन० २३०।८)। अभिजित् नक्षत्रके योगमें मधु और घृत दान करनेसे स्वर्गकी प्राप्ति (अनु० ६४।२७)।

अभिभू-काशिराजके पुत्र। पाण्डवपक्षके योद्धा (१) (उद्योग० १५१।६३)। इनके वसुदानके पुत्रद्वारा मारे जानेकी चर्चा (कर्ण० ६।२३-२४)। इनके घोड़ोंका वर्णन (द्रोण० २३।२६-२७)।

अभिमन्यु-अर्जुनके द्वारा सुभद्राके गर्भसे उत्पन्न एक वीर राजकुमार (आदि० ६३।१२१; २२०।६५)। ये चन्द्रमाके पुत्र 'वर्चा' के अवतार थे (आदि० ६७।११३)। सोलह वर्षतक ही इनका इस भूतलपर रहनेका कारण (आदि० ६७।११३-१२५)।

इनका 'अभिमन्यु' नाम होनेका कारण (आदि० २२० । ६७) । अर्जुनसे इनका समस्त अस्त्र-विद्याओंका अध्ययन (आदि० २२० । ७२) । मातासहित अभिमन्युका मामा श्रीकृष्णके साथ वनसे द्वारकाको जाना (वन० २२ । ४७) । प्रद्युम्नद्वारा अभिमन्युकी अस्त्रशिक्षा (वन० १८३ । २८) । अभिमन्युद्वारा द्रौपदीकुमारोंका गदा और ढाल-तलवारके दाँव-पेंच सिखाना (वन० १८३ । २९) । मातासहित अभिमन्युका उपप्लव्य नगरमें आगमन (विराट० ७२ । २२) । उत्तराके साथ अभिमन्युका विवाह (विराट० ७२ । ३५) । संजयद्वारा इनके पराक्रम और इन्द्रियसंयमका वर्णन (उद्योग० ५० । ४३) । प्रथम दिनके युद्धमें कोसलराज बृहद्बलके साथ द्वन्द्वयुद्ध (भीष्म० ४५ । १४–१७) । भीष्मके साथ भयंकर संग्राम करके उनके ध्वजको काट देना (भीष्म० ४७ । ९–२५) । भीष्मके साथ जूझते हुए श्वेतकी सहायतामें इनका आना (भीष्म० ४८ । १०१) । धृष्टद्युम्नद्वारा निर्मित क्रौञ्च-व्यूहमें स्थान-ग्रहण (भीष्म० ५० । ५०) । भीष्मपर चढ़ाई करते हुए अर्जुनकी सहायता करना (भीष्म० ५२ । ३०; ६० । २३–२५) । दूसरे दिनके संग्राममें लक्ष्मणके साथ युद्ध (भीष्म० ५५ । ८–१३) । अर्जुनद्वारा निर्मित अर्धचन्द्रव्यूहमें स्थान-ग्रहण (भीष्म० ५६ । १६) । गान्धारोंके साथ युद्ध करना (भीष्म० ५८ । ७) । इनका अद्भुत पराक्रम (भीष्म० ६१ । १–११) । शल्यपर आक्रमण तथा हाथीसहित मगधराज (जयत्सेन) का वध (भीष्म० ६२ । १३–४८) तथा (कर्ण० ७३ । २४-२५) । भीमसेनकी सहायता (भीष्म० ६३, ६४, ६९ तथा ९४ अध्याय) । लक्ष्मणके साथ युद्ध और उसे पराजित करना (भीष्म० ७३ । ३१–३७) । कैकयराजकुमारोंका अभिमन्युको आगे करके शत्रुसेनापर आक्रमण (भीष्म० ७७ । ५८–६१) । विकर्णपर विजय (भीष्म० ७८ । २१) । विकर्णपर विजय (भीष्म० ७९ । ३०–३५) । इनके द्वारा चित्रसेन, विकर्ण और दुर्मर्षणकी पराजय (भीष्म० ८४ । ४०–४२) । धृष्टद्युम्नके शृङ्गाटकव्यूहमें स्थान-ग्रहण (भीष्म० ८७ । २१) । भगदत्तके साथ युद्ध (भीष्म० ९५ । ४०) । अम्बष्ठकी पराजय (भीष्म० ९६ । ३९-४०) । अलम्बुषके साथ घोर युद्ध (भीष्म० १०० अध्यायमें) । इनके द्वारा अलम्बुषकी पराजय (भीष्म० १०१ । २८-२९) । चित्रसेनकी पराजय (भीष्म० १०४ । २२) । सुदक्षिणके साथ द्वन्द्वयुद्ध (भीष्म० ११० । १५) । सुदक्षिणके साथ द्वन्द्वयुद्ध (१११ । १८–२१) । दुर्योधनके साथ युद्ध (भीष्म० ११६ । १–८) । बृहद्बलके साथ युद्ध (भीष्म० ११६ । ३०–३६) । भीष्मपर धावा (भीष्म० ११८ । ४०) । अर्जुनकी रक्षाके लिये युद्ध करना (भीष्म० ११९ । २१) । धृतराष्ट्रद्वारा इनकी वीरताका वर्णन (द्रोण० १० । ४७–५२) । पौरवके साथ युद्ध करके उनकी चुटिया पकड़कर पटकना (द्रोण० १४ । ५०–६०) । जयद्रथके साथ युद्ध (द्रोण० १४ । ६४–७४) । शल्यके साथ युद्ध (द्रोण० १४ । ७८–८२) । इनके घोड़ोंका वर्णन (द्रोण० २३ । ३३) । इनके वधका संक्षिप्त वर्णन (द्रोण० ३३ । १९–२८) । चक्रव्यूहसे बाहर निकलनेकी असमर्थता प्रकट करना (द्रोण० ३५ । १८-१९) । व्यूहभेदनकी प्रतिज्ञा (द्रोण० ३५ । २४–२८) । चक्रव्यूहमें प्रवेश और कौरवोंकी चतुरङ्गिणी सेनाका संहार (द्रोण० ३६ । १५–४६) । इनके द्वारा अश्मकपुत्रका वध (द्रोण० ३७ । २२-२३) । राजा शल्यको मूर्च्छित करना (द्रोण० ३७ । ३४) । इनके द्वारा शल्यके भाईका वध (द्रोण० ३८ । ५–७) । इनके भयसे कौरव-सेनाका पलायन (द्रोण० ३८ । २३-२४) । द्रोणाचार्यद्वारा अभिमन्युके पराक्रमकी प्रशंसा (द्रोण० ३९ अध्याय) । दुःशासनको फटकारते हुए उसे मूर्च्छित कर देना (द्रोण० ४० । २–१४) । इनके द्वारा कर्णकी पराजय (द्रोण० ४० । ३५-३६) । अभिमन्युद्वारा कर्णके भाईका वध, कौरव-सेनाका संहार तथा भगाया जाना (द्रोण० ४१ अध्याय) । वृषसेनकी पराजय (द्रोण० ४४ । ५) । वसातीयका वध (द्रोण० ४४ । १०) । सत्यश्रवाका वध (द्रोण० ४५ । ३) । शल्यपुत्र रुक्मरथका वध (द्रोण० ४५ । १३) । इनके प्रहारसे पीड़ित दुर्योधनका पलायन (द्रोण० ४५ । ३०) । इनके द्वारा दुर्योधन कुमार लक्ष्मणका वध (द्रोण० ४६ । १२–१७) । इनके द्वारा क्राथपुत्रका वध (द्रोण० ४६ । २५–२७) । अभिमन्युका घोर युद्ध, उनके द्वारा वृन्दारकका वध तथा अश्वत्थामा, कर्ण और बृहद्बल आदिके साथ युद्ध (द्रोण० ४७ । १–२१) । इनके द्वारा कोसलनरेश बृहद्बलका वध (द्रोण० ४७ । २२) । इनका कर्णके साथ युद्ध और उसके छः मन्त्रियोंका वध (द्रोण० ४८ । १–६) । इनके द्वारा मगधराजके पुत्र अश्वकेतुका वध (द्रोण० ४८ । ७) । इनके द्वारा मार्तिकावतकनरेश भोजका वध (द्रोण० ४८ । ८) । इनके द्वारा शल्यकी पराजय (द्रोण० ४८ । १४-१५) । इनके द्वारा शत्रुञ्जय, चन्द्रकेतु, मेघवेग, सुवर्चा और सूर्यभासका वध (द्रोण० ४८ । १५-१६) अभिमन्युका शकुनिको घायल करना

(द्रोण० ४८ । १६-१७) । सुबलपुत्र कालकेयको मारना (द्रोण० ४९ । ७) । दुःशासनकुमारकी गदाके प्रहारसे अभिमन्युका प्राणत्याग (द्रोण० ४९ । १३-१४) । इन्हें योगी, तपस्वी, मुनियोंके अक्षयलोककी प्राप्ति (द्रोण० ७१ । १२-१६) । अभिमन्युके पुत्र परीक्षित्का जन्म (आश्व० ६९ अध्याय) । अभिमन्युवधका वृत्तान्त वसुदेवने श्रीकृष्णके मुखसे सुना (आश्व० ६१ । १५-४२) । अभिमन्युका सोमपुत्र वर्चारूपसे सोममें प्रवेश (स्वर्गा० ५ । १८-२०) । महाभारतमें आये हुए अभिमन्युके नाम—आर्जुनि, सौभद्र, कार्ष्णि, अर्जुनात्मज, अर्जुनावर, फाल्गुनि तथा शक्रात्मजात्मज ।

अभिमन्युवधपर्व–द्रोणपर्वका एक अवान्तरपर्व (अध्याय ३३ से ७१ तक)

अभिषेचनीय–जिसमें पूजनीय पुरुषोंका अभिषेक—अर्घ्य देकर सम्मान किया जाता है, उस कर्मका नाम 'अभिषेचनीय' है। यह राजसूय यज्ञका अङ्गभूत सोमयाग-विशेष है (सभा० ३६ । १) ।

अभिष्यन्त–महाराज कुरुके द्वारा वाहिनीके गर्भसे उत्पन्न । इनके अन्य भाई अश्ववान्, चैत्ररथ, मुनि और जनमेजय। ये अश्ववान्से छोटे और चैत्ररथसे बड़े थे (आदि० ९४ । ५०-५१) ।

अभिसारी–एक प्राचीन नगरी, जिसपर दिग्विजयके समय अर्जुनने विजय पायी (सभा० २७ । १९) ।

अभीति–स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । २७) ।

अभीरू–छठे कालकेयके अंशसे उत्पन्न एक राजर्षि (आदि० ६७ । ५३) ।

अभीषाह–(१) एक प्राचीन जनपद (भीष्म० १८ । १२) । (२) अभीषाह जनपदके निवासी योद्धा (भीष्म० ९३ । २) ।

अभीसार–एक प्राचीन भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ९४) ।

अमध्य–भगवान् श्रीकृष्णका एक नाम (शान्ति० ३४२ । ९०) ।

अमरपर्वत–एक प्राचीन स्थान, जिसे नकुलने जीता था (सभा० ३२ । ११) ।

अमरह्रद–एक तीर्थ, जिसमें स्नान करनेसे मनुष्य स्वर्गलोकमें प्रतिष्ठित होता है (वन० ८३ । १०६) ।

अमरावती–देवराज इन्द्रकी पुरी, जहाँ अर्जुन गये थे (वन० ४२ । ४२; उद्योग० १०३ । १) ।

अमावसु–पुरूरवाद्वारा उर्वशीके गर्भसे उत्पन्न एक राजा (आदि० ७५ । २४) ।

अमाहठ–धृतराष्ट्र नागके कुलमें उत्पन्न एक नाग, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें जल मरा था (आदि० ५७ । १६) ।

अमितध्वज–एक दानव (शान्ति० २२७ । ५०) ।

अमिताशना–स्कन्धकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । ७) ।

अमितौजा–एक भयंकर पराक्रमी पाञ्चाल क्षत्रिय, जो केतुमान् नामक असुरके अंशसे प्रकट हुआ था (आदि० ६७ । १२) । पाण्डवोंकी ओरसे इन्हें रण-निमन्त्रण भेजा गया था (उद्योग० ४ । १२) । पाण्डव-पक्षके महारथी वीरोंमें इनकी गणना (उद्योग० ७१ । ११) ।

अमूर्तरया–एक प्राचीन नरेश, जिसके पुत्र राजा गय हुए (वन० ९५ । १७) । इन्हें पूरुसे खड्गकी प्राप्ति हुई (शान्ति० १६६ । ७५) ।

अमृता–मगधदेशकी राजकुमारी, जो अनश्वाकी पत्नी और परिक्षित्की माता थी (आदि० ९५ । ४१) ।

अमोघ–(१) बृहस्पतिकुलमें उत्पन्न एक अग्नि (वन० २२० । २४) । (२) भद्रवट-यात्राके समय शंकरजीके दाहिने भागमें चलनेवाला एक यक्ष (वन० २३१ । ३५) । (३) स्कन्दका एक नाम (वन० २३२ । ५) । (४) भगवान् शिवका एक नाम (अनु० १७ । ११४) । (५) भगवान् विष्णुका एक नाम (अनु० १४९ । २५) ।

अमोघा–स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । २१) ।

अम्बरीष–(१) एक प्राचीन नरेश, जो सूर्यवंशी राजा नाभागके पुत्र थे और जिन्होंने यमुनातटपर यज्ञ किया था (आदि० १ । २२७; भीष्म० ९ । ६ तथा वन० १२९ । २) । दुर्वासाद्वारा अम्बरीषके प्रभावका स्मरण (वन० २६३ । ३३) । संजयको समझाते हुए नारदजी-द्वारा इनके चरित्रका कथन (द्रोण० ६४ अध्याय) । अम्बरीषके अधिकारमें पूर्वकालमें यह पृथ्वी थी—इसकी चर्चा (शान्ति० ८ । ३३-३४) । इनके यज्ञका वर्णन (शान्ति० २९ । १००-१०४) । अपने सेनापति सुदेवकी अपनेसे उत्कृष्ट गति देखकर उसके विषयमें इनका इन्द्रसे प्रश्न करना (शान्ति० ९८ । ६-११) । रणयज्ञके विषयमें इन्द्रसे प्रश्न (शान्ति० ९८ । १४) । इनके द्वारा ब्राह्मणको ग्यारह अर्बुद गो-दान (शान्ति० २३४ । २३) । अगस्त्यजीके कमलोंकी चोरी होनेपर इनका शपथ खाना (अनु० ९४ । २९) । मांस-भक्षणनिषेधसे परावर-तत्त्वका ज्ञान तथा सर्वभूतात्मताकी प्राप्ति (अनु० ११५ । ५८-५९) । इनके द्वारा ब्राह्मणको राज्य-दान (अनु० १३७ । ८) । जिनके नाम प्रातः-सायं कीर्तन करनेयोग्य हैं, उन राजाओंमें इनकी भी गणना

(अनु० १६५ । ५३)। इनकी आध्यात्मिक स्वराज्य-गाथा (आश्व० ३१ । ७–१२)। (२) एक नाग, जो बलरामजीके रसातल-प्रवेशके समय स्वागतार्थ आया था (मौसल० ४ । १६)।

अम्बष्ठ–(१) एक प्राचीन देश, जिसे नकुलने जीता था (सभा० ३२। ७)। (सिन्धदेशके उत्तरका एक प्रजातन्त्र राज्य। यूनानी लेखकोंने उसे 'अम्ब्रस्तई' या 'अम्ब्रस्तनोई' लिखा है–हिंदी महाभारत परिशिष्ट पृष्ठ ७)। (२) कौरवपक्षका एक राजा, जो अम्बष्ठ देशका अधिपति एवं 'श्रुतायु' नामसे प्रसिद्ध था, अभिमन्युद्वारा पराजित हुआ था (भीष्म० ९६ । ३९-४०)। अर्जुनके साथ युद्ध और उनके द्वारा उसका वध (द्रोण० ९३ । ६०—६९)। (३) पाण्डवपक्षका एक योद्धा, जो अम्बष्ठजातिका था। इसने कौरवपक्षीय चेदिराजके साथ युद्ध करके उसे धराशायी किया था (द्रोण० २५ । ४९-५०)।

अम्बा–काशिराजकी ज्येष्ठ पुत्री (आदि० १०२ । ६०)। भीष्मद्वारा विचित्रवीर्यके लिये इसका अपहरण (आदि० १०२ । ५७ तथा सभा० ४१ । २३)। शाल्वके प्रति अपनी अनुरक्ति दिखाकर उनके साथ अपने विवाहके लिये इसकी भीष्मसे प्रार्थना (आदि० १०२ । ६१-६२)। भीष्मद्वारा इसको शाल्वके समीप जानेकी अनुमति दी गयी (आदि० १०२ । ६४)। अम्बाका शाल्वके प्रति अनुराग दिखाकर उनके पास जानेके लिये भीष्मसे आज्ञा माँगना (उद्योग० १७४ । ५–१०)। शाल्वराजसे अपनी धर्मपत्नी बनानेके लिये उसका अनुरोध (उद्योग० १७५ । ११–१८)। शाल्वसे परित्यक्त होनेपर भीष्मसे बदला लेनेका विचार (उद्योग० १७५ । २६–३५)। शैखावत्य मुनिके आश्रममें जाकर उनसे अपना दुःख सुनाना (उद्योग० १७५ । ३८–४४)। तापसोंके समझानेपर भी तपस्या करनेका ही अपना निश्चय बतलाना (उद्योग० १७६ । १२–१४)। परशुरामजीसे भीष्मको मार डालनेका अनुरोध करना (उद्योग० १७७ । ३५–४२; १७८ । ५–७)। भीष्मके वधके लिये अम्बाकी कठोर तपस्या (उद्योग० १८६ । १९–२९)। गङ्गाद्वारा नदी होनेके शापसे वत्स देशमें नदी होना (उद्योग० १८६ । ३१–४०)। दूसरे जन्ममें तपस्या करके महादेवजीसे उसकी वर-प्राप्ति (उद्योग० १८७ । १–१५)। चिताकी आगमें प्रवेश (उद्योग० १८७ । १९)। द्रुपदके यहाँ कन्यारूपमें जन्म और 'शिखण्डी' नाम पड़ना (उद्योग० १८८ । ७–१९)।

अम्बाजन्म–एक तीर्थ, जिसका सम्बन्ध नारदजीसे है; वहाँ मरनेवालेको नारदजीकी कृपासे परम उत्तम लोक प्राप्त होते हैं (वन० ८३ । ८१)।

अम्बालिका–काशिराजकी पुत्री, विचित्रवीर्यकी द्वितीय पत्नी (आदि० ९५ । ५१)। इनकी माताका नाम 'कौसल्या' था। इनके गर्भसे व्यासद्वारा पाण्डुकी उत्पत्ति (आदि० १०५ । २१)। व्यासके भयंकररूपसे घबराकर पाण्डुवर्णकी-सी हो जानेके कारण इनके गर्भसे पाण्डुवर्णके ही पुत्रका जन्म होना (आदि० १०५ । १८)। पाण्डुके निधनपर इनकी मूर्च्छा (आदि० १२६ । २४)।

अम्बिका–(१) काशिराजकी पुत्री, विचित्रवीर्यकी पत्नी और धृतराष्ट्रकी माता। अम्बिकाकी माताका नाम 'कौसल्या' (आदि० ९५ । ५१)। विचित्रवीर्यके साथ अम्बिका-अम्बालिकाका पाणिग्रहण (आदि० १०२ । ६५)। वंशरक्षाके हेतु इन दोनों बहिनोंको व्यासद्वारा पुत्रोत्पादनके लिये सत्यवतीका आदेश (आदि० १०४ । ५१ से १०५ । १५ तक)। व्यासजीके द्वारा इनके गर्भसे धृतराष्ट्रका जन्म (आदि० १०५ । १३)। व्यासजीके भयानक रूपसे भयभीत होकर आँखें बंद करनेके कारण इनके पुत्रका जन्मान्ध होना (आदि० १०५ । १०)। सत्यवतीद्वारा इनको पुनः व्यासके साथ समागमके लिये आज्ञा और इनका अस्वीकार (आदि० १०५ । २३)। इनके द्वारा अपनी दासीको छलपूर्वक व्यासजीके पास भेजना और उस दासीके गर्भसे विदुरका जन्म (आदि० १०५ । २८)। पाण्डुका दोनों माताओंको अपने बाहुबलसे जीते हुए धनकी भेंट अर्पण करना (आदि० ११३ । १)। सत्यवतीके साथ इन दोनों बहिनोंका तपोवनमें जाकर प्राणविसर्जन (आदि० १२७ । १३)। (२) एक अप्सरा, जो अर्जुनके जन्मके अवसरपर नृत्य करने आयी थी (आदि० १२२ । ६२)। (३) एक देवी, स्कन्दमाता पार्वती, इनके नामस्मरणसे पापका नाश होता है (अनु० १५० । २८-२९)।

अम्बुमती–एक नदी एवं उत्तम तीर्थ (वन० ८३ । ५६)।

अम्बुवाहिनी–एक नदी, जिसका जल तटवर्ती मनुष्य पीते हैं (भीष्म० ९ । २७)। यह प्रातः-सायं स्मरण करने योग्य नदी है (अनु० १६५ । २०)।

अम्बुवीच–मगधनरेशोंमेंसे एक। इनके मन्त्रीका नाम 'महाकर्णि' था (आदि० २०३ । १७–१९)।

अम्बोपाख्यान–उद्योगपर्वका अन्तिम अवान्तर पर्व, जो अध्याय १७३ से १९६ तक है।

अम्भोरुह–महर्षि विश्वामित्रके पुत्रोंमेंसे एक (अनु० ४ । ५९)।

अयःशङ्कु–एक महादैत्य, जो केकयदेशके एक राजकुमारके रूपमें उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७। १०)।

अयःशिरा–कश्यप-पत्नी दनुके पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६५ । २३)। यही केकयदेशके एक राजकुमारके रूपमें उत्पन्न हुआ (आदि० ६७। १०)।

अयति–राजा नहुषके पुत्र । ययातिके भाई (आदि० ७५ । ३०)।

अयवाह–एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ४५)।

अयुतनायी–एक पूरुवंशीय क्षत्रिय, जो राजा महाभौमके पुत्र थे। उनकी माताका नाम 'सुयज्ञा', पत्नीका नाम 'कामा' तथा पुत्रका नाम 'अक्रोधन' था । अयुत (दस हजार) पुरुषमेध यज्ञोंका अनुष्ठान करनेसे इनका नाम 'अयुतनायी' हुआ (आदि० ९५। १९–२१)।

अयोध्या–सुप्रसिद्ध अयोध्यापुरी, जो इक्ष्वाकुवंशी राजाओं-की राजधानी थी और जहाँ मुनिवर वसिष्ठजी राजा कल्माष-पादके यहाँ पधारे थे । (आदि० १७६ । ३५-३६) अयोध्याके धर्मज्ञ नरेश महाबली दीर्घयज्ञको भीमसेनने कोमलतापूर्ण बर्तावसे वशमें कर लिया था (सभा० ३० । २)। भगवान् श्रीराम सीताजीसे विवाह करके अपनी पुरी अयोध्यामें आये (सभा० ३८ । २९ के बाद पृष्ठ ७९४ दाक्षि० पाठ)। वनपर्वके ६० । २४; ६६ । २१; ७० । १८; ७१ । २४; ७४ । १७; ९९ । ४१; १४८ । १५; १५२ । ३; २०२ । १; २९१ । ६० में तथा उद्योगपर्वके ११५। १८ में भी अयोध्याका नाम आया है।

अयोबाहु (अयोभुज)–राजा धृतराष्ट्रका एक पुत्र (आदि० ६७ । ९८)। भीमसेनद्वारा इसका वध (द्रोण० १५७ । १९)।

अरट्ट–एक देश, जहाँके योद्धाओंको साथ ले द्रोणके मारे जानेपर कृतवर्मा भागा था (द्रोण० १९३। १३)।

अरण्यपर्व–वनपर्वका एक अवान्तरपर्व (अध्याय १ से अध्याय १० तक)

अरन्तुक–कुरुक्षेत्रकी एक सीमाका निर्धारण करनेवाला अरन्तुक नामक द्वारपाल (वन० ८३ । ५२)। कुबेर-सम्बन्धी यह तीर्थ सरस्वती नदीमें स्थित है । यहाँ स्नान करनेसे अग्निष्टोम यज्ञका फल मिलता है (शल्य० ५३ । २४)।

अरालि–विश्वामित्रके ब्रह्मवादी पुत्रोंमेंसे एक (अनु० ४ । ५८)।

अरिमेजय–एक वृष्णिवंशी योद्धा (द्रोण० ११ । २८)।

अरिष्ट–एक वृषभरूपधारी असुर, जिसे पशुओंके हितकी कामनासे भगवान् श्रीकृष्णने मारा था (सभा० ३८। २९ के बाद दाक्षिणात्य पाठ पृष्ठ ८०१)।

अरिष्टनेमा–कश्यपपुत्र 'अरिष्टनेमि' नामक मुनि (वन० १८४ । ८)।

अरिष्टनेमि–(१) विनताके छः पुत्रोंमेंसे एक । इनके अन्य भाइयोंके नाम ये हैं—तार्क्ष्य, गरुड, अरुण, आरुणि, वारुणि (आदि० ६५ । ४०) । परपुरञ्जयका इनके आश्रमपर जाना (वन० १८४ । ८)। इनके द्वारा ब्राह्मणोंके महत्त्वका वर्णन (वन० १८४। १७–२२)। राजा सगरको मोक्षविषयक उपदेश (शान्ति० २८८ । ५–४६)। (२) महर्षि कश्यपका दूसरा नाम (शान्ति० २०८ । ८)। (३) यमराजकी सभामें बैठनेवाले एक राजा (सभा० ८ । ९) । (४) विराट-नगरमें अज्ञातवासके समय सहदेवका कल्पित नाम (विराट० १० । ५)। (५) भगवान् श्रीकृष्णका एक नाम (उद्योग० ७१ । ५)।

अरिष्टसेन–कौरवपक्षका एक राजा (शल्य० ६ । ३)।

अरिष्टा–गन्धर्वराज हंसकी माता (आदि० ६७ । ८३)।

अरिह–(१) एक सोमवंशी क्षत्रिय, जो पूरुवंशीय अवाचीन-द्वारा उसकी पत्नी विदर्भराजकुमारी मर्यादाके गर्भसे उत्पन्न हुआ था। इसकी पत्नी अङ्गराजकुमारीके गर्भसे महाभौम नामक पुत्र हुआ (आदि० ९५ । १८-१९)। (२) एक सोमवंशीय राजा, जो देवातिथिके द्वारा विदेहराज-कुमारी मर्यादाके गर्भसे उत्पन्न हुआ था। यह मर्यादा अवाचीनकी पत्नीसे भिन्न थी। इस अरिहकी पत्नी अङ्ग-राजकुमारी सुदेवा थी और इसके पुत्रका नाम 'ऋक्ष' था (आदि० ९५ । २३-२४)।

अरुज–राक्षसोंका दल (वन० २८५ । २)।

अरुण–(१) विनताके पुत्र, पिताका नाम कश्यप। सूर्यके सारथि। इनकी उत्पत्तिका प्रसंग, इनका अपनी माताको शाप देना और उस शापसे छूटनेका उपाय भी बताना (आदि० १६ । १६–२३)। इनका सूर्यके क्रोधजनित तीव्र तेजकी शान्तिके लिये उनके रथपर स्थित होना (आदि० २४। १५–२०) । इनके द्वारा कुपित हुए सूर्यका सारथ्य (आदि० १६। २२-२३)। इनका श्येनीके गर्भसे सम्पाती और जटायुको जन्म देना (आदि० ६६ । ७०)। इनके द्वारा स्कन्दको अपने पुत्र ताम्रचूडका दान (शल्य० ४६। ५१ तथा अनु० ८६। २२)। (२) प्राचीन ऋषियोंका एक समुदाय, जिन्हें स्वाध्यायद्वारा स्वर्गकी प्राप्ति हुई (शान्ति० २६ । ७)। (३) अरुण नामक एक नाग, जो परमधाम पधारनेके समय बलरामजीके स्वागतमें आया था (मौसल० ४। १५)।

अरुणा-(१) एक अप्सरा, जो कश्यप-पत्नी प्राधाके गर्भसे उत्पन्न हुई थी (आदि० ६५ । ५०) । (२) 'अरुणा' नामवाली एक नदी, जो सरस्वती नदीमें मिली है (वन० ८३ । १५) ।

अरुणासंगम-अरुणा और सरस्वतीके संगमका पवित्र तीर्थ (शल्य० ४३ । ३०—४३) ।

अरुन्धती (अक्षमाला)-(१) महर्षि वसिष्ठकी पत्नी (आदि० १९८ । ६ तथा उद्योग० ११७ । ११) । वसिष्ठजीके चरित्रपर संदेह करनेके कारण इनकी कान्तिमें मलिनता (आदि० २३२ । २७-२९) । ये ब्रह्माजीकी सभामें विराजमान होती हैं (सभा० ११ । ४०) । अरुन्धतीसहित वसिष्ठने उज्जानक सरोवरके तटपर तपस्याद्वारा शान्ति प्राप्त की (वन० १३० । १७) । अरुन्धतीकी तपस्या और पतिसेवाके प्रभावसे स्वाहा उनका रूप धारण न कर सकी (वन० २२५ । १४-१५) । सप्तर्षियोंने केवल देवी अरुन्धतीको छोड़कर अन्य छः मुनिपत्नियोंको अपने यहाँसे निकाल दिया था (वन० २२६ । ८) । शिवजी द्वारा इनके तपकी परीक्षा और इन्हें वरदान (शल्य० ४८ । ३८-५४) । वृषादर्भिसे प्रतिग्रहके दोष बताना (अनु० ९३ । ४५) । यातुधानीसे अपने नामका निर्वचन कहना (अनु० ९३ । ९६) । मृणालकी चोरीके विषयमें इनका शपथ खाना (९३ । १२७-१२८) । अगस्त्यजीके कमलोंकी चोरी होनेपर शपथ खाना (अनु० ९४ । ३८) । इनके द्वारा धर्मके रहस्यका वर्णन (अनु० १३० । ३-११) । देवताओंद्वारा अरुन्धतीकी प्रशंसा तथा ब्रह्माजीका उन्हें वर देना (अनु० १३० । १२-१३) ।

अरुन्धतीवट-एक तीर्थ, इसके समीपवर्ती सामुद्रक तीर्थमें स्नान और तीन रात ब्रह्मचर्यपालनपूर्वक उपवास करनेसे अश्वमेध यज्ञका फल मिलता है (वन० ८४ । ४१) ।

अरूपा-दक्षकन्या प्राधाकी एक पुत्री (आदि०६५ । ४६)

अर्क-(१) दिवके पुत्र अर्क, जो विवस्वान्‌के ही स्वरूप हैं (आदि० १ । ४२) । (२) एक प्राचीन राजा (आदि० १ । २३६) । (३) एक दानवराज, जो राजर्षि ऋषिकरूपसे उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७ । ३२-३३) ।

अर्कज-बलीह-कुलका एक राजा (उद्योग० ७४ । १४) ।

अर्कपर्ण-कश्यप-पत्नी 'मुनि'के गर्भसे उत्पन्न एक देवगन्धर्व (आदि० ६५ । ४३) ।

अर्घाभिहरणपर्व-सभापर्वके एक अवान्तर पर्वका नाम (अध्याय ३६ से ३९ तक) ।

अर्चिष्मत्-पितरोंका एक गण (शान्ति० २६९ । १५) ।

अर्चिष्मती-महर्षि अङ्गिराकी चौथी पुत्री (वन० २१८ । ६) ।

अर्जुन-(१) ये नरस्वरूप हैं (आदि० १ । १) । इनको धर्ममय विशाल वृक्षका तना कहा गया है (आदि० १ । ११०) । ये पाण्डुके क्षेत्रज पुत्र हैं । इन्द्रके द्वारा कुन्तीके गर्भसे इनकी उत्पत्ति हुई है (आदि० ६३ । ११६) । ये इन्द्रके अंशसे प्रकट हुए हैं (आदि० ६७ । १११) । फाल्गुन मास तथा दोनों फाल्गुनीके संधिकालमें इनकी उत्पत्ति हुई, इसीसे इनका नाम 'फाल्गुन' हुआ (आदि० १२२ । ३५ के बाद दाक्षिणात्य पाठ) । आकाशवाणीद्वारा इनकी जन्मकालमें प्रशंसा (आदि० १२२ । ३८-४६) । इनके जन्मोत्सवपर समस्त देवताओं, गन्धर्वों, आदित्यों, रुद्रों, वसुओं, नागों तथा ऋषियोंका शुभागमन और प्रमुख अप्सराओंद्वारा नृत्य-गान (आदि० १२२ । ५०—७४) । शतशृङ्गनिवासी ऋषियोंद्वारा इनका नामकरण-संस्कार (आदि० १२३ । २०) । वसुदेवके पुरोहित काश्यपके द्वारा इनके उपनयनादि-संस्कार । राजर्षि शुकसे इनके द्वारा धनुर्वेदका अध्ययन । (आदि० १२३ । ३१ के बाद दाक्षिणात्य पाठ) । इनके द्वारा द्रौपदीके गर्भसे श्रुतकीर्तिका जन्म (आदि० ९५ । ७५) । सुभद्राके गर्भसे अभिमन्युकी उत्पत्ति (आदि० ९५ । ७८) । कृपाचार्यसे इन (पाण्डवों) का अध्ययन (आदि० १२९ । २३) । अर्जुन आदिका द्रोणाचार्यकी शिष्यतामें अध्ययन (आदि० १३१ । ४) । अर्जुनद्वारा गुरुके अभीष्ट कार्यको सिद्ध करनेकी प्रतिज्ञा (आदि० १३१ । ७) । आचार्यका अर्जुनको हृदयसे लगाकर उनके प्रति हार्दिक स्नेह प्रकट करना । इनकी अध्ययननिष्ठा तथा सर्वाधिक योग्यता (आदि० १३१ । १३-१४) । इनसे कर्णकी स्पर्धा (आदि० १३१ । १२) । अर्जुन अनुपम प्रतिभाशाली हैं—ऐसी द्रोणाचार्यकी धारणा (आदि० १३१ । १५) । ये अपनी गुरुभक्ति तथा अस्त्रोंके अभ्यासकी लगनके कारण गुरुके विशेष प्रिय हुए (आदि० १३१ । २०) । इनके द्वारा रात्रिमें धनुर्विद्याका अभ्यास (आदि० १३१ । २५) । इनको अद्वितीय धनुर्धर बनानेके लिये द्रोणाचार्यका आश्वासन (आदि० १३१ । २७) । एकलव्यकी धनुर्विद्यासे इनकी चिन्ता और द्रोणसे इनका उलाहना (आदि० १३१ । ४८-४९) । समस्त युद्ध-विद्याओंमें इनकी कुशलता (आदि० १३१ । ६३) । ये सर्वश्रेष्ठ अस्त्राभ्यासी और गुरुभक्त थे (आदि० १३१ । ६४) । द्रोणाचार्यद्वारा इनकी लक्ष्यवेधके विषयमें परीक्षा तथा इनके द्वारा गीधके मस्तकका छेदन (आदि० १३२ । १—९) । द्रोणाचार्यपर आक्रमण करनेवाले ग्राहका इनके द्वारा वध (आदि० १३२ । १७) । द्रोणाचार्यद्वारा प्रसन्न होकर इनको 'ब्रह्मशिर' नामक अस्त्रका दान (आदि० १३२ । १८) । रङ्गभूमिमें इनके अद्भुत

अस्त्रकौशल (आदि० १३४।१८–२५)। रङ्गभूमिमें कर्णको इनकी फटकार (आदि० १३५ । १८) । कर्णसे लड़नेके लिये रङ्गभूमिमें इनका उद्यत होना (आदि० १३५ । २१)। इनके द्वारा मन्त्रियोंसहित द्रुपदकी पराजय और उन्हें बंदी बनाकर द्रोणाचार्यको सौंपना (आदि० १३७ । ६३)। इनका द्रुपदकी 'अहिच्छत्रा' नगरीको जीतकर उसे द्रोणाचार्यको गुरुदक्षिणाके रूपमें देना (आदि० १३७ । ७७) । 'ब्रह्मशिर' नामक अस्त्रकी परम्परा तथा उसके उपयोगका नियम बतलाकर द्रोणाचार्यका अर्जुनको विरोधी होनेपर अपने साथ भी लड़नेके लिये वचनबद्ध करना (आदि० १३८ । ९–१५) । इनके द्वारा यवनराज, सौवीरनरेश विपुल और सुमित्रके वध आदि पराक्रमका धृतराष्ट्रद्वारा चिन्तन (आदि० १३८ । २०–२३) । हिडिम्बके साथ युद्ध होते समय भीमसेनकी सहायताके लिये इनका उद्यत होना (आदि० १५३ । १८-१९) । द्रौपदीको इन्हें समर्पित करनेके लिये द्रुपदका संकल्प तथा लाक्षागृहमें इनकी मृत्यु होनेका समाचार सुनकर द्रुपदका शोक (आदि० १६६ । ५६ के बाद दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ४९३) । चित्ररथ गन्धर्वको इनकी फटकार और इनके द्वारा गङ्गा आदि नदियोंकी महिमा (आदि० १६९।१६–२४)। युद्धमें इनके द्वारा चित्ररथपर आग्नेयास्त्र-का प्रहार और उसकी मूर्छा (आदि० १६९ । ३१–३३)। चित्ररथको इनका जीवन-दान (आदि० १६९ । ३७)। चित्ररथके साथ इनकी मित्रता (आदि० १६९ । ३८–५८)। चित्ररथसे इन्हें 'चाक्षुषी' विद्या एवं दिव्य अश्वोंकी प्राप्ति (आदि० १६९ । ४३–४६) । इनपर चित्ररथके आक्रमणका कारण (आदि० १६९ । ६०) । चित्ररथपर इनकी विजयका कारण (आदि० १६९ । ७१) । किसी श्रोत्रिय ब्राह्मणका पुरोहितरूपमें वरण करनेके लिये इनको चित्ररथकी सलाह (आदि० १६९ । ७४) । चित्ररथ-को इनके द्वारा आग्नेयास्त्रका दान (आदि० १८२ । ३) । पाञ्चाल-यात्राके समय मार्गमें अर्जुन आदि पाण्डवोंसे व्यासजीकी भेंट (आदि० १८४ । २) । द्रुपदनगरमें अर्जुन आदि पाण्डवोंका मातासहित एक कुम्भकारके घरमें ठहरना (आदि० १८४ । ६) । द्रौपदीके स्वयंवरमें इन्हें लक्ष्यवेधके लिये उद्यत देखकर इनके सम्बन्धमें ब्राह्मणोंके ऊहापोह (आदि० १८७ । २–१६) । स्वयंवरमें इनका लक्ष्यवेध और द्रौपदीका इनके गलेमें जयमाला डालना (आदि० १८७ । २१–८७ के बाद दाक्षिणात्य पाठ) । स्वयंवरमें आये हुए राजाओंके साथ ब्राह्मणवेशमें युद्ध करते समय श्रीकृष्णद्वारा बलरामजीको इनका परिचय देना (आदि० १८८ । २०) । स्वयंवरमें कर्णसे इनका युद्ध और इनके द्वारा उसकी पराजय (आदि० १८९ । १०–२२) । द्रौपदीके विषयमें इनकी युधिष्ठिरसे बातचीत (आदि० १९० । ८–१०) । द्रौपदीके साथ इन (पाण्डवों) का विधिपूर्वक विवाह (आदि० १९७ । १३) । ब्राह्मणके गोधनकी रक्षाके लिये इनका आयुधागारमें प्रवेश और वनवास (आदि० २१२ । १९–३५) । हरिद्वारमें उलूपीद्वारा इनका नाग-लोकमें आकर्षण (आदि० २१३ । १३) । इनके द्वारा उलूपीके गर्भसे 'इरावान्' का जन्म (आदि० २१३ । ३६ के बाद दाक्षिणात्य पाठ) । इनका मणिपूर जाकर चित्राङ्गदासे विवाह (आदि० २१४ । १५–२६) । इनके द्वारा चित्राङ्गदाके गर्भसे बभ्रुवाहनका जन्म (आदि० २१४ । २७) । इनका दक्षिणके तीर्थोंमें जाना और वर्गा आदि अप्सराओंका ग्राह-योनिसे उद्धार करना (आदि० २१५ एवं २१६ अध्यायोंमें) । पुनः मणिपुरमें आकर इनके द्वारा चित्राङ्गदाको आश्वासन और राजसूय-यज्ञमें आनेका आदेश (आदि० २१६ । २३–३१) । इनका गोकर्णतीर्थकी ओर जाना (आदि० २१६ । ३४) । प्रभास-क्षेत्रमें इनसे श्रीकृष्णकी भेंट (आदि० २१७ । ३-४) । रैवतक पर्वतपर इनका रातभर श्रीकृष्णके साथ विश्राम (आदि० २१७ । ८) । श्रीकृष्णके साथ इनका द्वारका-गमन (आदि० २१७ । १५) । सुभद्राहरणके विषयमें इनके लिये श्रीकृष्णकी सम्मति (आदि० २१८ । २१–२३) । सुभद्रासे विवाहके लिये इनको युधिष्ठिरकी सम्मति (आदि० २१८ । २५) । इनके द्वारा सुभद्राका हरण (आदि० २१९ । ७) । इनसे युद्ध करनेके लिये वृष्णिवंशियोंकी तैयारी (आदि० २१९ । १६–१९) । सुभद्रासे इनका विधिपूर्वक विवाह (आदि० २२० । १३)। पुष्करतीर्थमें इनके द्वारा वनवासके शेष समयका यापन (आदि० २२० । १४) । सुभद्राको गोपीवेशमें सजाकर उसे द्रौपदीके पास इनका भेजना (आदि० २२० । १९)। श्रीकृष्णके साथ इनका यमुनामें जलविहार (आदि० २२१ । १४–२०) । खाण्डववनको जलानेके लिये इनसे ब्राह्मणरूपधारी अग्निकी प्रार्थना (आदि० २२२ । ५–११) । इनका अग्निदेवसे दिव्य धनुष और रथ आदि माँगना (आदि० २२३ । १५–२१) । अग्निका इनको गाण्डीव धनुष, अक्षय तरकस एवं दिव्य रथ देना (आदि० २२४ । ६–१४) । खाण्डव-दाहके समय इन्द्र आदि देवताओंके साथ इनका भयानक युद्ध (आदि० २२६ अ०में) । इनके द्वारा तक्षक नागकी पत्नीका वध (आदि० २२६ । ६–८) । अश्वसेन (नाग) को इनका शाप (आदि० २२६ । ११) । इनसे इन्द्र आदि देवताओंकी पराजय तथा इन्द्रका स्वर्गको लौटना (आदि० २२६ । १३–२३) । मयासुरको इनका अभयदान

(आदि० २२७ । ४४) । इन्द्रद्वारा इन्हें समस्त दिव्यास्त्र प्रदान करनेका आश्वासन (आदि० २३३ । १०-१२) । अर्जुन और मयासुरकी बातचीत (सभा० १ । २-८) । मयासुरद्वारा इनको देवदत्त नामक शङ्खकी भेंट (सभा० ३ । २१) । जरासंधको जीतनेके विषयमें युधिष्ठिरको उत्साह दिलानेके लिये वीरोचित उद्गार (सभा० १६ । ७-१७) । श्रीकृष्ण और भीमसेनके साथ अर्जुनकी मगध-यात्रा (सभा० २० अ०में) । इनका दिग्विजयके लिये प्रस्थान (सभा० २५ । ७) । इनके द्वारा कुलिन्द आदि देशोंपर विजय तथा भगदत्तकी पराजय (सभा० २६ अ०में) । अन्तर्गिरि, उलूकपुर, मोदापुर आदि देशोंपर इनकी विजय (सभा० २७ अ०में) । किम्पुरुष, हाटक तथा उत्तर कुरुपर विजय प्राप्त करके इनका इन्द्रप्रस्थ लौटना (सभा० २८ अ०में) । राजसूयके बाद अर्जुनका द्रुपदको कुछ दूर पहुँचाना (सभा० ४५ । ४८) । कर्ण और उसके अनुगामियोंको तथा समस्त विपक्षियोंको मारनेके लिये अर्जुनकी प्रतिज्ञा (सभा० ७७ । ३२-३६) । वनयात्राके समय अर्जुनका बालू उड़ाते हुए जानेका रहस्य (सभा० ८० । ५-१५) । इनके द्वारा श्रीकृष्णका स्तवन (वन० १२ । ११-४३) । इनके द्वारा द्रौपदीको आश्वासन (वन० १२ । १३३) । इनका वनमें साथ गये हुए प्रजावर्गको आश्वासन (वन० २३ । १३-१४) । द्वैतवनमें निवास करनेके लिये युधिष्ठिरको इनकी सलाह (वन० २४ । ५-११) । तपके लिये प्रस्थान और इन्द्रकीलपर इनकी इन्द्रसे भेंट, बातचीत तथा इन्हें इन्द्रका वरदान (वन० ३७ । ३७-५८) । इनकी चार मासतक उग्र तपस्या (वन० ३८ । २२-२७) । इनके द्वारा मूक दानवका वध (३९ । ७-१६) । किरातरूपधारी भगवान् शङ्करके साथ इनका युद्ध (वन० ३९ । ३२-६४) । इनके द्वारा शिवजीकी स्तुति (वन० ३९ । ७४-८२) । इनकी पाशुपतास्त्रके लिये महादेवजीकी प्रार्थना (वन० ४० । ८) । इन्हें पाशुपतास्त्रकी प्राप्ति (वन० ४० । २१) । इन्हें यमद्वारा दण्डास्त्रकी प्राप्ति (वन० ४१ । २५-२६) । वरुणद्वारा पाश-अस्त्रकी प्राप्ति (वन० ४१ । ३१-३२) । कुबेरद्वारा अन्तर्धानास्त्रकी प्राप्ति (वन० ४१ । ४१) । इन्द्रका इन्हें स्वर्गमें चलनेका आदेश (वन० ४१ । ४३-४४) । अर्जुनके चिन्तन करनेपर मातलिद्वारा इन्द्रके रथका आनयन और उसपर बैठकर इनका स्वर्गलोकके लिये प्रस्थान (वन० ४२ । १०—३१) । स्वर्गलोकमें पहुँचनेपर इनका महान् स्वागत तथा इन्द्रसभामें पहुँचकर इनका इन्द्रदेवसे मिलना (वन० ४३ । ८—१५) । इन्द्रभवनमें इन्हें अस्त्र और संगीतकी शिक्षा (वन० ४४ । ३—११) । अर्जुनके सत्कारके लिये इन्द्रका चित्रसेनद्वारा उर्वशीको संदेश एवं आदेश (वन० ४५ अ०में) । उर्वशीका कामपीड़ित होकर अर्जुनके पास जाना और अपने आनेका कारण बताना (वन० ४६ । २२—३५) । अर्जुनका उर्वशीका प्रस्ताव सुनकर दोनों हाथोंसे आँख बंद कर लेना और इसकी ओर देखनेका कारण बताते हुए उसे 'पूरुवंशकी जननी' कहना, साथ ही उसे अपने लिये कुन्ती, माद्री और शचीका स्थान देना (वन० ४६ । ३६—४७) । उनके अस्वीकार करनेपर उर्वशीका इन्हें शाप देकर लौट आना (वन० ४६ अ०में) । अर्जुनको इन्द्रका आश्वासन (वन० ४६ । ५५-५९) । इनकी युधिष्ठिरकी रक्षाके लिये महर्षि लोमशसे प्रार्थना (वन० ४७ । ३२-३३) । इन्द्रलोकसे लौटकर इनका गन्धमादन पर्वतपर भाइयोंसे मिलना (वन० १६५ । ४) । इनके द्वारा अपनी तपस्या-यात्रा और पाशुपतास्त्रकी प्राप्तिका वर्णन (वन० १६७ अ०में) । इनका इन्द्रलोकमें प्राप्त हुई अस्त्रशिक्षा आदिका वृत्तान्त बताना (वन० १६८ अ०में) । निवातकवचोंके साथ अपने युद्धका वर्णन (वन० १६९ अ०से १७२ अ० तक) । अपने द्वारा हिरण्यपुरवासी पौलोमों और कालकेयोंके वधका वृत्तान्त बताना (वन० १७३ अ०में) । इनका भाइयोंको दिव्यास्त्रोंका प्रयोग दिखानेके लिये उद्यत होना (वन० १७५ । ७) । गन्धर्वोंके हाथसे कौरवोंको छुड़ानेके लिये अर्जुनकी प्रतिज्ञा (वन० २४३ । २१) । अर्जुनका गन्धर्वोंसे दुर्योधनको छोड़नेके लिये कहना और न छोड़नेपर उनके ऊपर बाण बरसाना (वन० २४४ । १२—२१) । इनके द्वारा चित्रसेन गन्धर्वकी पराजय (वन० २४५ । १—२६) । जयद्रथके अनुगामी पाँच सौ पर्वतीय महारथियोंका संहार (वन० २७१ । ८) । सौवीरदेशके बारह राजकुमारोंका वध (वन० २७१ । २७) । शिबि, इक्ष्वाकु, त्रिगर्त और सिन्धुदेशके क्षत्रियोंका विनाश (वन० २७१ । २८) । द्वैतवनमें पानी लानेके लिये जाना और सरोवरपर मूर्च्छित होना (वन० ३१२ । २२-३२) । अर्जुनका युधिष्ठिरको अज्ञातवासके लिये कुछ उपयोगी राज्योंके नाम बताना (विराट० १ । १२-१३) । विराटनगरमें 'बृहन्नला' नामसे रहनेकी बात बताना (विराट० २ । २५-२७) । नपुंसक वेषमें राजा विराटके पास जाना और उनसे अपने यहाँ रखनेके लिये प्रार्थना करना (विराट० ११ । २-९) । बृहन्नलारूपमें इनका द्रौपदीसे अपना मनोगत दुःख प्रकट करना (विराट० २४ । २३—२५) । अपने आप (बृहन्नला) को सारथि बनानेके लिये द्रौपदीद्वारा इनका उत्तरको कहलाना (विराट० ३६ । १०-१३) ।

उत्तरका सारथि बनकर युद्धके लिये प्रस्थान (विराट० ३७ । २७) । भयभीत होकर भागते हुए उत्तरको दौड़कर पकड़ना (विराट० ३८ । ४०) । उत्तरको समझा-बुझाकर अपना सारथि बनाकर रथपर चढ़ाना (विराट० ३८ । ४६—५१) । शमीवृक्षसे अस्त्र उतारनेके लिये उत्तरको आदेश देना (विराट० ४० । ३) । उत्तरको पाण्डवोंके दिव्यायुधोंका परिचय देना (विराट० ४३ अ०में) । उत्तरकुमारसे अपने भाइयोंका परिचय देना तथा अपने दस नामोंकी पृथक्-पृथक् व्याख्या करना (विराट० ४४ । १३—२२) । उत्तरसे अपनी नपुंसकताका कारण बताना (विराट० ४५ । १३ के बाद दाक्षिणात्य पाठ १५ तक) । अपने अस्त्रोंका स्मरण करना और आनेपर उनसे वार्तालाप (विराट० ४५ । २७-२८) । इनका शङ्ख बजाना और डरे हुए उत्तरको धीरज देना (विराट० ४६ । ८—२३) । बाणोंद्वारा आचार्य द्रोणको प्रणाम करना और युद्धकी आज्ञा माँगना (विराट० ५३ । ७) । कौरवसेनापर आक्रमण करके विराटकी गौओंको लौटा लेना (विराट० ५३ । २४-२५) । कर्णपर आक्रमण (विराट० ५४ । ४-५) । इनके द्वारा विकर्णकी पराजय (विराट० ५४ । ९-१०) । राजा शत्रुंतपका वध (विराट० ५४ । ११–१३) । कर्णके भाई संग्रामजित्का वध (विराट० ५४ । १८) । कर्णकी पराजय (विराट० ५४ । १९—३६) । कौरवसेनाका संहार करके उसे खदेड़ देना (विराट० ५५ । १—३८) । उत्तरको कौरववीरोंका परिचय देकर कृपाचार्यके पास जाना (विराट० ५५ । ४१—६०) । कृपाचार्यको रथहीन और घायल करना (विराट० ५७ । ३६–३८) । द्रोणाचार्यके साथ युद्ध और उन्हें घायल करना (विराट० ५८ अ०में) । अश्वत्थामाके साथ युद्ध और उनके बाणोंको समाप्त कर देना (विराट० ५९ । १—१५) । कर्णके साथ पुनः युद्ध और उसे घायल करके खदेड़ना (विराट० ६० अ०में) । उत्तरके हतोत्साह होनेपर उसे आश्वासन देकर भीष्मके पास जाना और उनका ध्वज काट गिराना (विराट० ६१ । १३—३५) । दुःशासनको घायल करना (विराट० ६१ । ४०) । विकर्णको रथसे नीचे गिराना (विराट० ६१ । ४२) । दुःसह और विविंशतिको घायल करना (विराट० ६१ । ४५) । रणभूमिमें रक्तकी नदी प्रकट कर देना (विराट० ६२ । १७–२१) । समस्त कौरव महारथियोंको पराजित करना (विराट० ६३ । १–१४) । भीष्मके साथ अद्भुत युद्ध और उन्हें घायल करके युद्धसे विमुख करना (विराट० ६४ अ० में) । पुनः उनके द्वारा विकर्णकी पराजय (विराट० ६५ । १०) । दुर्योधनकी पराजय (विराट० ६५ । १३) । सम्मोहनास्त्रके द्वारा इनका सभी कौरव महारथियोंको मोहित कर देना (विराट० ६६ । ८–११) । युद्ध बंद होनेपर इनके द्वारा भीष्म आदि श्रेष्ठ पुरुषोंका अभिवादन एवं सम्मान (विराट० ६६ । २५-२६) । दुर्योधनके मुकुटका खण्डन (विराट० ६६ । २७) । उत्तरसे अपना रहस्य न खोलनेके लिये कहना (विराट० ६७ । ९-१०) । उत्तराको कौरव महारथियोंके वस्त्र देना (विराट० ६९ । १६) । विराटको युधिष्ठिरका परिचय देना (विराट० ७० । ९–२८) । अन्य चारों पाण्डवों और द्रौपदीका परिचय देना (विराट० ७१ । ३–१०) । उत्तरद्वारा अर्जुनके पराक्रमका वर्णन (विराट० ७१ । १९–२१) । उत्तराको पुत्रवधूके रूपमें स्वीकार करना (विराट० ७२ । ७) । युद्ध न करनेवाले भगवान् श्रीकृष्णको ही सहायकरूपमें स्वीकार करना (उद्योग० ७ । २१) । हस्तिनापुरको लौटते हुए संजयसे कौरवोंको संदेश देना (उद्योग० ३२ अध्यायके आदिमें दाक्षिणात्य पाठ) । संजयद्वारा इनकी वीरताका वर्णन (उद्योग० ५० । २६–२८) । कौरवोंसे संधिके विषयमें श्रीकृष्णके समक्ष अपने विचार प्रकट करना (उद्योग० ७८ अ० में) । आधा राज्य लेकर ही संधि स्वीकार करनेके लिये श्रीकृष्णसे कहना (उद्योग० ८३ । ५१–५३) । इनके द्वारा धृष्टद्युम्नको प्रधान सेनापति बनानेका प्रस्ताव (उद्योग० १५१ । १९–२५) । युद्धके लिये कही गयी श्रीकृष्णकी बातोंका समर्थन (उद्योग० १५४ । २५-२६) । अपने पराक्रमका वर्णन करके रुक्मीकी सहायताको अस्वीकार करना (उद्योग० १५८ । २७–३५) । उलूकसे दुर्योधनके संदेशका उत्तर (उद्योग० १६२ । ३७–४४) । उलूकसे दुर्योधनके संदेशका उत्तर (उद्योग० १६३ । ३–२३) । युधिष्ठिरके पूछनेपर त्रिलोकीको पलक मारते नष्ट करनेकी अपनी शक्ति बताना (उद्योग० १९४ । १०-११) । युधिष्ठिरकी आज्ञासे इनके द्वारा अपनी सेनाका वज्रव्यूहनिर्माण (भीष्म० १९ । ७) । 'श्रीकृष्णकी कृपासे विजय होती है' ऐसा कहकर युधिष्ठिरको आश्वासन (भीष्म० २० । ७–१७) । इनके द्वारा दुर्गादेवीका स्तवन और वरप्राप्ति (भीष्म० २३ । ४–१९) । इनका श्रीकृष्णसे दोनों सेनाओंके बीचमें रथ खड़ा करनेके लिये कहना (भीष्म० २५ । २१) । स्वजनोंको देखकर मोहग्रस्त हो युद्धसे खेद, धर्म-नाशका भय और दोष प्रकट करते हुए धनुष त्यागकर बैठ जाना (भीष्म० २५ । २६–४७) । किंकर्तव्यविमूढ होकर श्रीकृष्णसे अपने कर्तव्यके विषयमें शिक्षा देनेके लिये प्रार्थना करते हुए युद्ध न करनेका निश्चय करके बैठ

जाना (भीष्म० २६ । ४-९) । अर्जुनका भगवान्‌से गीताके उपदेश सुनना (भीष्म० २६ । ११ से ४२ अ० तक) । अर्जुनका भगवान्‌से स्थितप्रज्ञ पुरुषके लक्षण पूछना (भीष्म० २६ । ५४) । ज्ञान और कर्मकी श्रेष्ठताके विषयमें अर्जुनकी शङ्का (भीष्म० २७ । १-२) । बलात्कारसे पाप करानेमें हेतु क्या है, इस विषयमें इनका प्रश्न (भीष्म० २७ । ३६) । भगवान् श्रीकृष्णका जन्म आधुनिक मानकर अर्जुनका संदेह करना (भीष्म० २८ । ४) । संन्यास और निष्काम कर्मयोगकी श्रेष्ठताके विषयमें प्रश्न (भीष्म० २९ । १) । योगभ्रष्ट पुरुषकी गतिके सम्बन्धमें अर्जुनका प्रश्न और संशय-निवारणके लिये भगवान्‌से प्रार्थना (भीष्म० ३० । ३७-३९) । ब्रह्म, अध्यात्म और कर्मादिके विषयमें इनके सात प्रश्न (भीष्म० ३२ । १-२) । अर्जुनद्वारा भगवान्‌की स्तुति और उनके प्रभावका वर्णन करते हुए उनकी विभूतियोंको जाननेकी इच्छा प्रकट करना तथा भगवच्चिन्तनके विषयमें सात प्रश्न करके योगशक्ति और विभूतियोंको विस्तारसे कहनेके लिये प्रार्थना करना (भीष्म० ३४ । १२-१८) । अपने मोहकी निवृत्ति मानते हुए अर्जुन-द्वारा भगवद्वचनोंकी प्रशंसा एवं विश्वरूप देखनेकी इच्छा प्रकट करके उस रूपका दर्शन करानेके लिये भगवान्‌से प्रार्थना (भीष्म०३५ । १-४) । अर्जुनका भगवान्‌के विश्वरूपका दर्शन और स्तुति करना (भीष्म० ३५ । १५-३१) । भयभीत अर्जुनद्वारा भगवान्‌की स्तुति और चतुर्भुजरूपका दर्शन करानेके लिये प्रार्थना (३५ । ३५-४६) । साकार-निराकारके उपासकोंमें कौन श्रेष्ठ है, यह जाननेके लिये अर्जुनका प्रश्न (भीष्म० ३६। १)। गुणातीत पुरुषके विषयमें अर्जुनके तीन प्रश्न (भीष्म० ३८ । २१) । शास्त्रविधिको त्यागकर श्रद्धासे पूजन करने-वाले पुरुषोंकी निष्ठाके विषयमें इनका प्रश्न (भीष्म० ४१ । १) । संन्यास और त्यागका तत्त्व जाननेके लिये अर्जुनका प्रश्न (भीष्म० ४२ । १) । अर्जुन और श्रीकृष्णके प्रभावका कथन (भीष्म० ४२ । ७८) । कवच उतारकर पैदल ही कौरव-सेनाकी ओर जाते हुए युधिष्ठिरसे उधर जानेका कारण पूछना (भीष्म० ४३ । १६) । प्रथम दिनके युद्धमें इनका भीष्मके साथ द्वन्द्वयुद्ध (भीष्म० ४५ । ८-११) । भीष्मके साथ घोर युद्ध (भीष्म० ५२ अ०में) । दूसरे दिनके युद्धमें अद्भुत पराक्रम दिखाते हुए कौरवसेनाको खदेड़ देना (भीष्म० ५५ । १७-३५) । भीष्मको मारनेके लिये उद्यत हुए श्रीकृष्णको रोककर उनसे कर्तव्य-पालनके लिये प्रतिज्ञा करना (भीष्म० ५९ । १०१-१०३) । इनके द्वारा कौरवसेनाकी पराजय और तीसरे दिनके युद्धकी समाप्ति (भीष्म० ५९ । १११-१३२) । भीष्मके साथ द्वैरथ युद्ध (भीष्म० ६० । २५-२९) । भीष्मके साथ घमासान युद्ध (भीष्म० ७१ अ०में) । अश्वत्थामाके साथ युद्ध (भीष्म० ७३ । ३-१६) । इनके द्वारा त्रिगर्तराज सुशर्मा-की पराजय और कौरवसेनामें भगदड़ (भीष्म० ८२ । १) । इनका अद्भुत पराक्रम (भीष्म० ८५ । १-८) । इनके द्वारा रथसेनाका संहार (भीष्म० ८९ । ३५-३८) । इरावान्‌के वधसे इनके दुःखपूर्ण उद्गार (भीष्म० ९६ । २-१२) । दुर्योधनके प्रति भीष्मद्वारा इनके पराक्रमका वर्णन (भीष्म० ९८ । ४-१५) । द्रोणाचार्य और सुशर्माके साथ युद्ध (भीष्म० १०२ । ६-२३) । इनके द्वारा त्रिगर्तोंकी पराजय (भीष्म० १०४ । ४-८) । श्रीकृष्णके चेतावनी देनेपर भीष्मके साथ युद्ध (भीष्म० १०६ । ४२-५४) । भीष्मको मारनेके लिये उद्यत श्रीकृष्णसे कर्तव्यपालनके लिये प्रतिज्ञा करना (भीष्म० १०६ । ७०-७५) । भीष्मवधके लिये उद्यत न होना (भीष्म० १०७ । ९१-९५ के बादतक) । श्रीकृष्णके समझानेपर भीष्म-वधके लिये उद्यत होना (भीष्म० १०७ । १०३-१०६) । भीष्म-वधके लिये शिखण्डीको प्रोत्साहन देना (भीष्म० १०८ । ५२-६०) । इनके भयसे पीड़ित होकर कौरवसेनाका पलायन (भीष्म० १०९ । १३-१४) । दुःशासनके साथ इनका द्वन्द्वयुद्ध (भीष्म० ११० । २८-४६; १११ । ५७-५८) । इनका अद्भुत पुरुषार्थ (भीष्म० ११४ अ०में) । भगदत्तके साथ अर्जुनका द्वन्द्वयुद्ध (भीष्म० ११६ । ५६-६०) । भीष्मके साथ द्वन्द्वयुद्ध (भीष्म० ११६ । ६२-७८) । भीष्मके साथ घोर युद्ध और उन्हें मूर्छित करना (भीष्म० ११७ । ३५-६४) । दुःशासनके साथ युद्ध (भीष्म० ११७ । १२-१९) । शिखण्डीको आगे करके भीष्मपर आक्रमण (भीष्म० ११८ । ३७-५४) । भीष्मको रथसे गिराना (भीष्म० ११९ । ८७) । बाणशय्यापर सोये हुए भीष्मको तीन बाण मारकर तकिया देना (भीष्म० १२० । ४५) । दिव्यास्त्रद्वारा भीष्मके मुखमें शीतल जलकी धारा गिराना (भीष्म० १२१ । २४-२५) । धृतराष्ट्रद्वारा इनकी वीरताका वर्णन (द्रोण० १० । १५-२८) । नरस्वरूपमें इनकी महिमाका वर्णन (द्रोण० ११ । ४१-४२) । द्रोणाचार्यद्वारा पकड़े जानेके भयसे भीत युधिष्ठिर-को आश्वासन (द्रोण० १३ । ७-१४) । द्रोणाचार्यके साथ युद्ध और उनकी सेनाको पराजित करना (द्रोण० १६ । ४३-५१) । युधिष्ठिरकी रक्षाका भार सत्यजित्‌को सौंपना (द्रोण० १७ । ४४) । संशप्तकोंके साथ युद्ध और सुधन्वाका वध (द्रोण० १८ । २२ तथा १९ अ०में) । इनके द्वारा संशप्तकोंका वध (द्रोण० २७ । १८-२६) । सुशर्माके भाईका वध और सुशर्माकी पराजय (द्रोण० २८ । ८-१०) । भगदत्तके साथ युद्ध (द्रोण० २८ । १४-३० से २९ अ० तक) । श्रीकृष्णसे वैष्णवास्त्रका रहस्य पूछना (द्रोण० २९ । २१-२४) । इनके द्वारा भगदत्तके हाथी सुप्रतीक-का वध (द्रोण० २९ । ४३) । अर्जुनके द्वारा भगदत्तका वध

(द्रोण० २९ । ४७–५०) । वृषक और अचलका वध (द्रोण० ३०।११) । इनका शकुनिकी मायाका नाश करते हुए उसे परास्त करना (द्रोण० ३० । १५–२८) । कर्णके साथ युद्ध (द्रोण० ३२ । ५२–६२) । इनके द्वारा कर्णके तीन भाइयोंका वध (द्रोण० ३२ । ६०-६१) । अभिमन्युकी मृत्युपर विलाप (द्रोण० ७२ । १९–६५) । भाइयोंपर क्रोध प्रकट करना (द्रोण० ७२ । ७६–८३) । युधिष्ठिरके मुखसे अभिमन्युवधका वृत्तान्त सुनकर मूर्छित होना (द्रोण० ७३ । १६-१७) । जयद्रथवधकी प्रतिज्ञा करना (द्रोण० ७३ । २०–४९) । श्रीकृष्णसे जयद्रथवधके विषयमें वीरोचित वचन कहना (द्रोण० ७६ अ० में) । श्रीकृष्णसे पुत्रवधू उत्तरासहित सुभद्राको समझानेके लिये कहना (द्रोण० ७७ । ९-१०) । इनके द्वारा शङ्करजीका निशीथ-पूजन (द्रोण० ७९ । १–४) । (अर्जुनका स्वप्न–) स्वप्नमें श्रीकृष्णका आना और उनकी सम्मतिसे उनके साथ शिवजीके पास जाकर प्रणाम करना (द्रोण० ८० । २–४९) । इनके द्वारा भगवान् शिवकी स्तुति (द्रोण० ८० । ५५–६४) । भगवान् शिवसे दिव्यास्त्रकी याचना (द्रोण०८१।३) पाशुपतास्त्रकी प्राप्ति और श्रीकृष्णसहित शिविरको लौटना (स्वप्नकी समाप्ति) (द्रोण० ८१ । २१–२४) । पाण्डवसभामें अपना स्वप्न सुनाना(द्रोण०८४ । ६)। श्रीकृष्ण और सात्यकिके साथ रणयात्रा (द्रोण०८४ । २१) । सात्यकिको युधिष्ठिरकी रक्षाका भार सौंपना (द्रोण०८४ । २७–३४) । युद्धके आरम्भमें इनके द्वारा शङ्खनाद (द्रोण० ८८ । २०) । दुर्मर्षणकी गजसेनाका संहार (द्रोण० ८९ अ० में) । इनका दुःशासनके साथ युद्ध और उसका पलायन (द्रोण० ९० अ०में) । इनके द्वारा द्रोणाचार्यका सम्मान (द्रोण० ९१ । ३–६) । द्रोणाचार्यके साथ युद्ध और उन्हें छोड़कर आगे बढ़ना (द्रोण० ९१ । ११–३२; ९२ । ६–१४) । कृतवर्माके साथ युद्ध (द्रोण० ९२ । १६–२६)। श्रुतायुधके साथ युद्ध (द्रोण० ९२ । ३५–४३) । काम्बोजराज सुदक्षिणके साथ युद्ध और उसका वध (द्रोण० ९२ । ६१–७१) । श्रुतायु और अच्युतायुके साथ इनका युद्ध और उन दोनोंका वध (द्रोण०९३ । ७–२४) । इनके द्वारा नियुतायु और दीर्घायुका वध (द्रोण०९३ । २९) । म्लेच्छसेनाका संहार (द्रोण० ९३ । ३१–५९) । श्रुतायु और अम्बष्ठके साथ युद्ध और अम्बष्ठका वध (द्रोण०९३ । ६०–६९) । विन्द-अनुविन्दका वध (द्रोण० ९९ । २५-२९) । संग्रामक्षेत्रमें इनका सरोवर प्रकट करना(द्रोण०९९ ।५९) । रणक्षेत्रमें बाणमय गृहका निर्माण (द्रोण० ९९ । ६२) । श्रीकृष्णके प्रोत्साहन देनेपर दुर्योधनको मारनेके लिये उद्यत होना (द्रोण० १०२ । १९–२१ के बाद दाक्षिणात्य पाठ) दुर्योधनके साथ युद्ध और उसे परास्त करना (द्रोण० १०३ । २१–३२) । इनका कौरव महारथियोंके साथ घोर युद्ध (द्रोण०१०४ अ०में) । इनके ध्वजका वर्णन (द्रोण०१०५। ८-९) । इनका नौ महारथियोंके साथ युद्ध (द्रोण० १०५। ३३–३८)। कर्ण और अश्वत्थामाको खदेड़ना(द्रोण०१३९ । ११२–१२१) । सात्यकिको देखकर अर्जुनकी चिन्ता (द्रोण० १४१ । २६–३७) । श्रीकृष्णकी प्रेरणासे भूरिश्रवाकी दाहिनी भुजा काटना (द्रोण० १४२ । ७२) । भूरिश्रवाको उत्तर देना (द्रोण० १४३ । १६–३२) । इनका सात कौरव महारथियोंके साथ युद्ध (द्रोण० १४५ अ०में)। इनके द्वारा कर्णकी पराजय(द्रोण० १४५ । ८३)। कौरवसेनाका भीषण संहार (द्रोण १४६ अ० में) । इनके द्वारा जयद्रथका सिर काटकर उसे बाणद्वारा उसके पिता वृद्धक्षत्रकी गोदमें डालना (द्रोण० १४६ । १२२–१२७) । कृपाचार्य और अश्वत्थामाको युद्धमें पराजित करना(द्रोण०१४७।९–११) । कृपाचार्यके मूर्च्छित होनेपर विलाप करना (द्रोण० १४७।१३–२७) । भीमसेनको कटुवचन सुनानेके कारण कर्णको फटकारना (द्रोण०१४८ । ८–२२) । कर्णपुत्र वृषसेनके वधकी प्रतिज्ञा करना (द्रोण०१४८ । १९-२०) । कर्णके साथ युद्ध करके उसे पराजित करना(द्रोण०१५९।६२–६४) । द्रोणाचार्यके साथ युद्ध और कौरवसेनाको खदेड़ना (द्रोण० १६१ अ०में) । इनके द्वारा राक्षसराज अलम्बुषकी पराजय(द्रोण०१६७ । ४७) । शकुनि और उलूककी पराजय (द्रोण० १७१ । ३८–४०) । कर्णके पराक्रमसे भयभीत हुए युधिष्ठिरसे प्रेरित हो इनका श्रीकृष्णसे अपना कर्तव्य पूछना (द्रोण० १७३ । २९–३४)। घटोत्कचको कर्णके साथ युद्ध करनेके लिये आदेश देना(द्रोण० १७३ । ६०–६२) । घटोत्कचवधसे प्रसन्न हुए श्रीकृष्णसे उनकी प्रसन्नताका कारण पूछना (द्रोण० १८० । ६–१०) । जरासंध आदिके वधके विषयमें श्रीकृष्णसे प्रश्न करना (द्रोण० १८१ । १)। उभयपक्षके सैनिकोंको सो जानेके लिये आदेश देना (द्रोण० १८४ । २६–२८) । द्रोणाचार्यके साथ घोर युद्ध करना(द्रोण०१८८ । २४-५३)। श्रीकृष्णसे सात्यकिकी प्रशंसा करना (द्रोण०१९१ । ४८–५३) । अश्वत्थामाके क्रोध और गुरुहत्याके भीषण परिणामका वर्णन करना (द्रोण०१९६ । २६–५३) । नारायणास्त्र, गौ और ब्राह्मणके सामने गाण्डीव रख देनेकी बात कहना (द्रोण० १९९ । ५३) । व्यासजीसे अपने आगे-आगे चलनेवाले त्रिशूलधारी पुरुषके विषयमें प्रश्न करना (द्रोण० २०२ । ४–८) । युधिष्ठिरके आदेशसे अर्धचन्द्रव्यूह बनाकर कर्णके साथ युद्ध करनेके लिये प्रस्थान (कर्ण० ११ । २८) । अश्वत्थामाके साथ घोर युद्ध और उसे परास्त करना (कर्ण० १६ अ०से १७ वें अ०तक) । इनके द्वारा हाथीसहित दण्डधारका वध (कर्ण० १८ । १३) । इनके द्वारा हाथीसहित दण्डका वध (कर्ण० १८ । १९) । संशप्तकोंका भीषण संहार (कर्ण० १९ । २–२६) ।

सुशर्माके छः भाइयों (सत्यसेन, चन्द्रदेव, मित्रदेव, श्रुतंजय, सौश्रुति और मित्रवर्मा) का वध(कर्ण० २७ । १२–२५) । कौरवसेनाकासंहार (कर्ण० ३० । १५–३६)। युधिष्ठिरके आदेशसे कर्णपर आक्रमण (कर्ण० ४६ । ३७)। इनके द्वारा संशप्तकोंका संहार (कर्ण० ४७ अ०में)। सुशर्माके साथ युद्ध और दस हजार संशप्तकोंका वध (कर्ण० ५३ अ०में) । संशप्तकोंका संहार और सुदक्षिणके भाईका वध(कर्ण० ५६।१००–११७)। अश्वत्थामाके साथ युद्ध और उसे परास्त करना (कर्ण० ५६। १२१–१४२)। श्रीकृष्णसे युधिष्ठिरको देखनेके लिये उनके पास चलनेका आग्रह (कर्ण० ५८ । ३–७) । धृष्टद्युम्नको अश्वत्थामाके चंगुलसे छुड़ाना और अश्वत्थामाको पराजित करना (कर्ण० ५९ । ५४–६१) । इनके द्वारा अश्वत्थामाकी पराजय (कर्ण० ६४ । ३१-३२) । श्रीकृष्णके साथ युधिष्ठिरके पास जाकर उनके चरणोंमें प्रणाम करना (कर्ण० ६५ । १७) । अबतक कर्णके न मारे जानेका कारण युधिष्ठिरसे बतलाते हुए उसके वधकी प्रतिज्ञा करना (कर्ण०६७ अ०में) । युधिष्ठिरका वध करनेको उद्यत होना (कर्ण० ६९ । ९–१५) । श्रीकृष्णसे अपनी प्रतिज्ञा-पूर्तिका उपाय पूछना (कर्ण० ६९ । ६७–७५) । 'तू' शब्द कहकर युधिष्ठिरको कटुवचन सुनाना (कर्ण० ७० । २–२१) । युधिष्ठिरका अपमान करनेके कारण आत्महत्याके लिये तलवार खींचना (कर्ण० ७० । २३) । युधिष्ठिरसे क्षमायाचना(कर्ण०७०। ३८-३९)। युधिष्ठिरसे कर्ण-वधकी प्रतिज्ञा करना (कर्ण० ७० । ४०-४१) । युधिष्ठिरके चरणोंमें प्रणिपात और कर्ण-वधकी प्रतिज्ञा करना (कर्ण० ७१ । ३५–३८) । कर्ण-वधके लिये मार्गमें जाते समय चिन्तामग्न होना (कर्ण० ७२ । १६-१७) । श्रीकृष्णसे इनके वीरोचित उद्गार (कर्ण० ७४ अ०में) । इनके द्वारा कौरवसेनाका भीषण संहार (कर्ण० ७७ । ५–२०) । श्रीकृष्णसे कर्णके पास चलनेके लिये कहना (कर्ण० ७९ । ७–१२) । इनके द्वारा कौरवसेनाका विध्वंस (कर्ण० ७९।७१–९० से ८० अ० तक; ८१ । ५–२०) । कौरवोंको ललकारते हुए वृषसेनका वध (कर्ण० ८५ । ३७) । युद्धके लिये इनका कर्णके सम्मुख उपस्थित होना (कर्ण० ८६ । २३) । कर्णवधके लिये श्रीकृष्णसे वार्तालाप (कर्ण० ८७ । १०५–११७) । कर्णके साथ इनका द्वैरथ युद्ध (कर्ण० ८९ अ०से ९० अ० तक) । इनके द्वारा राजकुमार सभापतिका वध (कर्ण० ८९ । ६४) । कर्णके सर्पमुख बाणसे इनके किरीटका गिरना (कर्ण० ९० । ३३) । इनके द्वारा कर्णका वध (कर्ण० ९१ । ५०)। रथसेनाका विध्वंस (कर्ण० ९३ । ४२–४६) । अश्वत्थामाके साथ युद्ध (शल्य० १४ अ०में) । श्रीकृष्णके समक्ष दुर्योधनके दुराग्रहकी निन्दा (शल्य० २४ । १६–५०) । कौरवोंकी रथसेनाका संहार (शल्य० २५ । १–१४) । दुर्योधनको मारनेके विषयमें श्रीकृष्णसे वार्तालाप (शल्य० २७ । १३–२७) । सत्यकर्मा, सत्येषु और पैंतालीस पुत्रोंसहित सुशर्माका वध (शल्य० २७ । ३८–४८) । श्रीकृष्णसे भीमसेन और दुर्योधनके बलाबलके विषयमें पूछना (शल्य० ५८ । २) । भीमसेनको अपनी जाँघ ठोंककर संकेत करना (शल्य० ५८ । २१)। युद्धके पश्चात् इनके रथका दग्ध होना (शल्य० ६२ । १३) । श्रीकृष्णसे अपने रथके दग्ध होनेका कारण पूछना (शल्य० ६२ । १६-१७) । अश्वत्थामासे भीमसेनकी रक्षाके लिये श्रीकृष्णके साथ जाना (सौप्तिक० १३ । ६) । अश्वत्थामाका अस्त्र-शान्त करनेके लिये ब्रह्मास्त्रका प्रयोग (शल्य० १४ । ५-६) । व्यासजीको देखकर अपना अस्त्र लौटा लेना (सौप्तिक० १५। २–४) गान्धारीके शापके भयसे श्रीकृष्णके पीछे छिपना (स्त्री० १५ । ३१) । धनकी महत्ता दिखाते हुए राजधर्म-पालनके लिये युधिष्ठिरको समझाना (शान्ति० ८ अ०में) युधिष्ठिरको समझाते हुए गृहस्थधर्मके पालनपर जोर देना (शान्ति० ११ अ०में) । युधिष्ठिरसे इनके द्वारा राधधर्मकी महत्ताका वर्णन करना (शान्ति० १५ अ०में) । राजा जनक और उनकी रानीका दृष्टान्त देकर युधिष्ठिरको संन्यास लेनेसे रोकना (शान्ति० १८ अ०में) । युधिष्ठिरसे क्षत्रिय-धर्मकी प्रशंसा करना (शान्ति० २२ अ०में) । युधिष्ठिरका शोक दूर करनेके लिये श्रीकृष्णसे प्रार्थना करना (शान्ति० २९ । २-३) । अर्जुनको युधिष्ठिरका शत्रुओं तथा दुष्टोंके दमनका कार्य सौंपना (शान्ति० ४१ । १३) । युधिष्ठिरका इन्हें रहनेके लिये दुःसासनका भवन देना (शान्ति० ४४ । ८-९) । युधिष्ठिरके पूछनेपर त्रिवर्गमें अर्थकी प्रधानता बताना (शान्ति० १६७ । ११–२०) । श्रीकृष्णसे उनके नामोंकी व्युत्पत्ति पूछना (शान्ति० ३४१ । ५–७) । श्रीकृष्णसे पुनः गीताका ज्ञान पूछना (आश्व० १६ । ५–७) । श्रीकृष्णसे परब्रह्मके स्वरूपके विषयमें प्रश्न करना (आश्व० ३५ । १) । श्रीकृष्णके प्रति इनके प्रशंसासूचक वचन (आश्व० ५२ । ६–२४) । श्रीकृष्णकी द्वारका-यात्राके लिये युधिष्ठिरसे आज्ञा माँगना (आश्व० ५२ । ४२-४३) । व्यासजीके समझानेसे पुत्रशोकसे निवृत्त होकर संतोष-लाभ करना (आश्व० ६२ । १८) । धन लानेके विषयमें पाँचों भाइयोंमें बातचीत; और भाइयोंके साथ जाकर इनका हिमालयसे मरुत्तका धन ले आना (आश्व० ६३ अ०से ६५ अ० तक) । अर्जुनकी

अश्वरक्षाके लिये नियुक्ति (आश्व० ७२ । १६)। सेनासहित अर्जुनका अश्वकी रक्षाके लिये उसके पीछे-पीछे पैदल ही जाना (आश्व० ७३ । ७-८)। अर्जुनके द्वारा त्रिगर्तोंकी पराजय, सूर्यवर्माकी हार, केतुवर्माका वध, धृतवर्माका घायल होना आदि (आश्व०७४ अ०में)। प्राग्ज्यौतिषपुरमें भगदत्तके पुत्र वज्रदत्तकी पराजय तथा उसके हाथीका विनाश (आश्व० ७६ । १७–१९)। अर्जुनका सैन्धवोंके साथ युद्ध और दुःशलाके अनुरोधसे उसकी समाप्ति (आश्व० ७७-७८ अ०)। अर्जुन और बभ्रुवाहनका युद्ध तथा अर्जुनकी मृत्यु (आश्व०७९ अ०में)। उलूपीके प्रयत्नसे संजीवनी मणिके द्वारा अर्जुनका पुनर्जीवन (आश्व० ८० अ०में)। उलूपीसे उसके और चित्राङ्गदाके युद्धस्थलमें आनेका कारण पूछना (आश्व० ८१ । १में)। अर्जुनकी पराजयका रहस्य तथा उलूपी और चित्राङ्गदासे विदा लेकर उनका पुनः अश्वके पीछे जाना (आश्व० ८१ अ०में)। अर्जुनद्वारा मगधराज मेघसंधिकी पराजय (आश्व० ८२ अ०में)। शकुनि-पुत्रकी पराजय, शकुनिकी स्त्रीके अनुरोधसे अर्जुनका युद्ध बंद कर देना (आश्व० ८४ अ०में)। श्रीकृष्णका युधिष्ठिरसे अर्जुनका संदेश कहना (आश्व० ८६ । ९–२१)। अर्जुनके विषयमें श्रीकृष्ण-युधिष्ठिरकी बातचीत, अर्जुनके दूत तथा अर्जुनका हस्तिनापुरमें आना (आश्व० ८७ । १–२२)। धृतराष्ट्रके श्राद्ध और दानके लिये धन माँगनेपर अर्जुनकी सहमति तथा भीमसेनके अस्वीकार करनेपर अर्जुनका उन्हें समझाना (आश्रम० ११-१२ अ०)। यादवोंसहित इनका वनमें जाकर धृतराष्ट्र और माता कुन्ती आदिके दर्शन करना तथा व्यासजीके द्वारा मृत व्यक्तियोंका आवाहन होनेपर उन सबसे मिलना, हस्तिनापुरको लौटना तथा धृतराष्ट्र आदिके दग्ध होनेके समाचारसे दुखी होना और उनके श्राद्ध आदि करना (आश्रम० २३–३९ अ०तक)। अर्जुनका दारुकके साथ द्वारका जाना, श्रीकृष्णपत्नियोंसे मिलना और उन्हें धीरज बँधाकर वसुदेवके पास जाना (मौसल० ५ अ०में)। अर्जुनसे मिलकर वसुदेवका विलाप करना और उनके लिये कहे गये श्रीकृष्णका संदेश सुनाना (मौसल० ६ अ०में)। 'अब पाण्डवोंके भी परलोकगमनका समय आ गया है, हम यहाँके लोगोंको इन्द्रप्रस्थ ले जायँगे'—ऐसा वसुदेवसे कहकर अर्जुनका दारुक तथा मन्त्रियोंको यात्राकी तैयारीके लिये आदेश देना तथा रातमें श्रीकृष्णभवनमें ठहरना (मौसल० ७ । १–१४)। वसुदेवका परलोकवास और अर्जुनद्वारा उनका दाह-संस्कार एवं वृष्णिवंशी कुमारोंद्वारा जलदान (मौसल० ७ । १५–५७)। अर्जुनका यादव-विनाशस्थलमें जाकर छोटे-बड़ेके क्रमसे सबका दाह करना, फिर श्रीकृष्ण-बलरामके शरीरोंका अनुसंधान कराकर उनका भी दाह-संस्कार करना (मौसल० ७ । २८–३१)। अर्जुनका श्रीकृष्णपत्नियों तथा द्वारकावासियोंको लेकर इन्द्रप्रस्थकी ओर प्रस्थान (मौसल० ७ । ३२)। मार्गमें लुटेरोंका आक्रमण और अर्जुन आदिका उनसे स्त्रियोंकी रक्षा करनेमें असमर्थ होना। शेष व्यक्तियोंको लेकर जाना। मार्तिकावतमें कृतवर्माके पुत्रको सरस्वतीके तटपर सात्यकिके पुत्रको उन प्रदेशोंका राजा बनाना और वज्रको इन्द्रप्रस्थमें अभिषिक्त करना (मौसल० ७ । ५१–७२)। अर्जुनका व्यासजीसे बीती बातें बताना और व्यासजीका उन्हें आश्वासन देते हुए पाण्डवोंको महाप्रस्थानके लिये प्रेरित करना (मौसल० ८ अ०में) अर्जुनका भाइयोंसहित महाप्रस्थान और मार्गमें अग्निदेव और भाइयोंके कहनेसे गाण्डीव धनुषको जलमें डाल देना (महाप्रा० १ । १–४२)। मार्गमें अर्जुनका गिरना और युधिष्ठिरका उनके गिरनेका कारण बताना (महाप्रा० २ । १८–२२)। अर्जुनका भगवान् श्रीकृष्णके पार्षदरूपसे दर्शन (स्वर्गा० ४ । ४)।

महाभारतमें आये हुए अर्जुनके नाम—ऐन्द्रि, भारत, भीमानुज, भीमसेनानुज, बीभत्सु, बृहन्नला, शाखामृगध्वज, शक्रज, शक्रनन्दन, शक्रसूनु, शक्रात्मज, शक्रसुत, श्वेताश्व, श्वेतहय, श्वेतवाह, श्वेतवाहन, देवेन्द्रतनय, धनंजय, गाण्डीवभृत्, गाण्डीवधन्वा, गाण्डीवधारी, गाण्डीवी, गुडाकेश, इन्द्ररूप, इन्द्रसुत, इन्द्रात्मज, इन्द्रावरज, जय, जिष्णु, कपिध्वज, कपिकेतन, कपिप्रवर, कपिवरध्वज, कौन्तेय, कौरव, कौरवश्रेष्ठ, कौरव्य, कौरवेय, किरीटभृत्, किरीटमाली, किरीटवान्, किरीटी, कृष्ण, कृष्णसारथि, कुन्तीपुत्र, महेन्द्रसूनु, महेन्द्रात्मज, नर, पाकशासनि, पाण्डव, पाण्डवेय, पाण्डुनन्दन, पार्थ, पौरव, फाल्गुन, प्रभञ्जनसुतानुज, सव्यसाची, सुरसूनु, तापत्य, त्रिदशेश्वरात्मज, वानरध्वज, वानरकेतन, वानरकेतु, वानरवर्यकेतन, वासवज, वासवनन्दन, वासवात्मज, वासवि, विजय आदि।

अर्जुनकी पत्नियोंके नाम—द्रौपदी, उलूपी, चित्राङ्गदा और सुभद्रा।

इनके पुत्रोंके नाम क्रमशः—श्रुतिकीर्ति, इरावान्, बभ्रुवाहन और अभिमन्यु।

(२) हैहयराज कार्तवीर्य, यमसभाके एक सदस्य (सभा० ८ । ११)। (विशेष देखिये कार्तवीर्य) (३) यमसभामें बैठनेवाले एक राजा (सभा० ८ । १७)।

अर्जुनक—एक व्याध; इसका गौतमी, सर्प, मृत्यु और कालके साथ संवाद (अनु० १ । २१-६८)।

अर्जुनवनवासपर्व—आदिपर्वका अवान्तर पर्व अध्याय २१२ से २१७ तक।

अर्जुनाभिगमनपर्व—वनपर्वका अवान्तर पर्व, अध्याय १२ से ३७ तक।

अर्थ—धर्मद्वारा श्रीदेवीसे उत्पन्न (शान्ति० ५९ । १३२)।

अर्धकीलतीर्थ—दर्भीमुनिके द्वारा प्रकट किया हुआ एक तीर्थ (वन० ८३ । १५३)।

अर्बुक–एक देश, जिसे सहदेवने जीता था (सभा० ३१ । १४) ।

अर्बुद–(१) गिरिव्रजनिवासी एक नाग (सभा० २१ । ९) । (२) आबू पर्वत (वन० ८२ । ५५) ।

अर्यमा–बारह आदित्योंमें एक, माता अदिति और पिता कश्यप हैं (आदि० ६५ । १५; शान्ति० २०८ । १५) ।

अर्वावसु–एक प्राचीन ऋषि, जो युधिष्ठिरकी सभामें विराजते थे (सभा० ४ । १०) । अर्वावसुकी तपस्याद्वारा परावसुकी ब्रह्महत्याके पापसे मुक्ति । अर्वावसुद्वारा सूर्यसम्बन्धी रहस्यमय वेदमन्त्रका अनुष्ठान तथा इससे संतुष्ट हुए सूर्यदेवताका अर्वावसुको मनोवाञ्छित वरदान (वन० १३८ अ० में) । हस्तिनापुर जाते समय मार्गमें इनका श्रीकृष्णसे भेंट करना (उद्योग० ८३ । ६४ के बाद दाक्षि० पाठ) । उपरिचरके यज्ञमें इनका सदस्यताग्रहण (शान्ति० ३३६ । ७) । ब्रह्मतेजसे सम्पन्न, लोकस्रष्टा तथा रुद्र आदिके समान प्रभावशाली ऋषियोंमें इनकी गणना (अनु० १५० । ३०–३२) ।

अलकनन्दा–देवलोककी गङ्गा । गङ्गाजी जब देवलोकमें विचरण करती हैं, तब इनका नाम अलकनन्दा होता है और जब पितृलोकमें बहती हैं, तब ये वैतरणी कहलाती हैं तथा इस लोकमें आकर इनका नाम गङ्गा होता है (आदि० १६९ । २२) । गढ़वाल जिलेकी अलकनन्दा नामवाली नदी—जो विष्णुगङ्गा (धवलगङ्गा या धौली) और सरस्वती नामक छोटी नदियोंकी संयुक्त धारासे बनी है । यह गङ्गाकी सहायक नदी है (हिंदी महाभारत परिशिष्ट पृष्ठ ६) ।

अलका–कुबेरकी नगरी और पुष्करिणी (आदि० ८५ । ९; सभा० १० । ८) ।

अलम्बतीर्थ–एक दिव्य तीर्थ, जहाँ गरुड़जी कच्छप और हाथीको लेकर गये (आदि० ३९ । ३९) ।

अलम्बुष–(१) कौरवपक्षका योद्धा एक महारथी राक्षसराज, जो राक्षस ऋष्यश्रृङ्गका पुत्र था (उद्योग० १६७ । ३३; द्रोण० १०६ । १६) । प्रथम दिनके युद्धमें घटोत्कचके साथ द्वन्द्वयुद्ध (भीष्म० ४५ । ४२–४५) । सात्यकिद्वारा इसकी पराजय (भीष्म० ८२ । ४४–४५) । इरावान्‌के साथ युद्ध और इसके द्वारा उनका वध (भीष्म० ९० । ५६–७६) । अभिमन्युके साथ युद्ध और द्रौपदीपुत्रोंकी पराजय (भीष्म० १०० । ३१–५४) । अभिमन्युद्वारा इसका पराजित होना (भीष्म० १०१ । २८-२९) । सात्यकिके साथ द्वन्द्वयुद्ध (भीष्म० १११ । १–६) । घटोत्कचके साथ युद्ध (द्रोण० १४ । ४६-४७; २५ । ६१-६२) । कुन्तिभोजके साथ युद्ध (द्रोण० ९६ । १८–२०) । भीमसेनके साथ युद्ध (द्रोण० १०६ । १६-१७) । भीमसेनके साथ मायामय युद्ध और उनसे परास्त होकर भागना (द्रोण० १०८ । १३–४२) । इसका दूसरा नाम 'शालकटंकट' था । यह घटोत्कचद्वारा मारा गया (द्रोण० १०९ । २२–३१) । (२) कौरवपक्षका एक श्रेष्ठ राजा, जो सात्यकिद्वारा मारा गया (द्रोण० १४० । १८) । (३) एक राक्षसराज, जो अर्जुनसे पराजित हो युद्धका मैदान छोड़कर भाग गया (द्रोण० १६७ । ३७–४७) । (४) एक राक्षस, जटासुरका पुत्र; इसका दुर्योधनसे युद्धके लिये आज्ञा माँगना (द्रोण० १७४ । ६–८) । घटोत्कचके हाथसे युद्धमें मारा जाना (द्रोण० १७४ । ३७-३८) ।

अलम्बुषा–एक अप्सरा, जो महर्षि कश्यप और प्राधाकी पुत्री थी (आदि० ६५ । ४९) । इसने अर्जुनके जन्मोत्सवपर अन्य अप्सराओंके साथ आकर नृत्य किया (आदि० १२२ । ६१) । इसने महर्षि दधीचको मोहित किया (शल्य० ५१ । ७-८) ।

अलर्क–(१) काशी और करूषके अधिपति । ये बड़े सत्यप्रतिज्ञ थे (वन० २५ । १३) । ये यमराजकी सभाके एक सदस्य हैं (सभा० ८ । १८) । इन्होंने राज्य और धनको त्यागकर धर्मका आश्रय लिया, मांस-भक्षणका निषेध किया (अनु० ११५ । ६४) । अपनी इन्द्रियोंपर विजय पानेका प्रयत्न और इन्द्रियोंद्वारा उत्तर (आश्व० ३० । ५–२५) । ध्यानयोगद्वारा इन्हें परमसिद्धिकी प्राप्ति (आश्व० ३० । २८-२९) । (२) एक भयंकर कीट, जिसने कर्णकी जाँघमें काटा था (शान्ति० ३ । १३) ।

अलाताक्षी–स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । ८) ।

अलायुध–एक राक्षस, जो बकासुरका भाई और कौरवपक्षका योद्धा था (द्रोण० ९५ । ४६; १७६ । ६) । इसका घटोत्कचके साथ युद्ध (द्रोण० ९६ । २७-२८) । भीमसेनके साथ युद्ध करनेके लिये इसका दुर्योधनसे आज्ञा माँगना (द्रोण० १७६ । ६–१०) । भीमसेनके साथ घोर युद्ध (द्रोण० १७७ अ० में) । घटोत्कचद्वारा वध (द्रोण० १७८ । ३१) ।

अलोलुप–धृतराष्ट्रका एक पुत्र (आदि० ६७ । १०३) भीमसेनद्वारा इसका वध (कर्ण० ८४ । ६) ।

अवगाह–एक वृष्णिवंशी योद्धा (द्रोण० ११ । २७) ।

अवन्ती–(अवन्ति) भारतका एक जनपद—मालवप्रदेश तथा उसकी राजधानी उज्जयिनी । (यह स्थान शिप्रा नदीके तटपर है और सात मोक्षदायिनी पुरियोंमेंसे एक है) (सभा

३८ । २९ के बाद दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ८०२; भीष्म० ९ । ४३) ।

अवभृथ–यज्ञान्त-स्नान (सभा० ४५ । ४०) ।

अवसान–एक प्राचीन तीर्थ, जहाँ जानेसे सहस्र गोदानका फल प्राप्त होता है (वन० ८२ । १२८) ।

अवाकीर्ण–सरस्वतीतटवर्ती एक तीर्थ (शल्य० ४१ । १–३०) ।

अवाचीन–पूरुवंशीय राजा जयत्सेनके द्वारा विदर्भकुमारी सुश्रवाके गर्भसे उत्पन्न एक राजा, इनके द्वारा विदर्भराज-कुमारी मर्यादाके गर्भसे 'अरिह' की उत्पत्ति हुई (आदि० ९५ । १७-१८) ।

अविकम्पन–एक प्राचीन नरेश, जिन्हें ज्येष्ठ मुनिसे सात्वत धर्मकी प्राप्ति हुई (शान्ति० ३४८ । ४७) ।

अविक्षित्–(१) एक सम्राट्, महाराज मरुत्तके पिता (द्रोण० ५५ । ३७) । ये अङ्गिराके यजमान थे । इनके अनुपम गुणोंका वर्णन (आश्व० ४ । १७–२२) । (२) कुरुके उनकी पत्नी वाहिनीके गर्भसे उत्पन्न पाँच पुत्रोंमें जो अश्ववान् थे, उन्हींका दूसरा नाम अविक्षित् भी था (आदि० ९४ । ५०–५२) ।

अविज्ञातगति–'अनिल' नामक वसुके द्वारा शिवाके गर्भसे उत्पन्न पुत्र, इसके भाईका नाम 'मनोजव' था (आदि० ६६ । २५) ।

अविन्ध्य–एक बुद्धिमान् वृद्ध एवं श्रेष्ठ राक्षस, जिसने सीताजीको आश्वासन देनेके लिये अशोकवाटिकामें त्रिजटा-को भेजा था (वन० २८० । ५६-५७) । इसका सीताजीको मारनेके लिये उद्यत हुए रावणको समझाकर रोकना (वन० २८९ । २८–३२) । लङ्का-विजयके पश्चात् सीताजीको लेकर श्रीरामके पास आना (वन० २९१ । ६-७) ।

अविमुक्त–वाराणसीका मध्यभाग—अविमुक्त क्षेत्र; यहाँ प्राणोत्सर्ग करनेवालेको मोक्ष प्राप्त होता है (वन० ८४ । ७८-७९) ।

अव्यय–धृतराष्ट्र-कुलमें उत्पन्न हुआ एक सर्प, जो जनमेजय-के नागयज्ञमें दग्ध हुआ था (आदि० ५७ । १६) ।

अशनि–एक दिव्य महर्षि, जिन्होंने श्रीकृष्णके हस्तिनापुर जाते समय मार्गमें उनसे भेंट की थी (उद्योग० ८३ । ६४ के बाद दाक्षिणात्य पाठ) ।

अशोक–(१) भीमसेनका सारथि । इसका कलिङ्गराज श्रुतायुके साथ युद्ध करते समय रथहीन भीमके पास रथ पहुँचाना (भीष्म० ५४ । ७०-७१) । (२) एक क्षत्रिय राजा, जो अश्वनाम विख्यात असुरके अंशसे प्रकट हुआ था (आदि० ६७ । १४) । यही कलिंगराज चित्राङ्गदकी कन्याके स्वयंवरमें गया था (शान्ति० ४ । ७) ।

अशोकतीर्थ–शूर्पारक क्षेत्रके अन्तर्गत एक तीर्थ (वन० ८८ । १३) ।

अशोकवनिका–लङ्कापुरीकी सुप्रसिद्ध अशोकवाटिका, जहाँ सीताजी रखी गयी थीं (वन० २८० । ४१–४२) ।

अश्मक–(१) महाराज कल्माषपादके क्षेत्रज पुत्र । महर्षि वसिष्ठके द्वारा कल्माषपादकी पत्नी मदयन्तीके गर्भसे इनकी उत्पत्ति हुई (आदि० १७६ । ४७) । इनका अश्मक नाम होनेका कारण (आदि० १७६ । ४६) । इनके द्वारा 'पौदन्य' नगरका निर्माण (आदि० १७६।४७) । (२) (गोदावरी और माहिष्मतीके बीचका) एक देश (भीष्म० ९ । ४४) । (३) अश्मक देशका राजा, पाण्डव-पक्षका योद्धा, जो कर्णद्वारा जीता और बाँधा गया था (कर्ण०) । सम्भवतः इसीने राजा युधिष्ठिरको बछड़ेसहित दस हजार दुधारू गौएँ दी थीं (सभा० ५१ दाक्षिणात्य पाठ) । (४) एक ऋषिका नाम (शान्ति० ४७ । ५) ।

अश्मकी–यादव-वंशमें उत्पन्न एक राजकुमारी, प्राचिन्वान्-की स्त्री । इसके गर्भसे संजात नामक पुत्रकी उत्पत्ति हुई (आदि० ९५ । १३) ।

अश्मकदायाद (अश्मकपुत्र)–एक कौरवपक्षीय योद्धा, जो अभिमन्युद्वारा मारा गया था (द्रोण० ३७ । २२–२३) ।

अश्मपृष्ठ–गयामें स्थित प्रेतशिला तीर्थ । यहाँ पिण्ड देनेसे ब्रह्महत्या दूर होती है (अनु० २५ । ४२) ।

अश्मा–एक प्राचीन मुनि । प्रारब्धकी प्रबलता बताते हुए इनका जनकके प्रश्नका उत्तर देना (शान्ति० २८ । ५–५७) ।

अश्व–कश्यपपत्नी दनुके पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६५ । २४) ।

अश्वकेतु–गान्धारराजका पुत्र, जो कौरवपक्षका योद्धा था और अभिमन्युद्वारा मारा गया था (द्रोण० ४८।७) ।

अश्वग्रीव–कश्यपपत्नी दनुके पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६५ । २४) ।

अश्वतर–(१) एक प्रमुख नाग (आदि० ३५ । १०) । (२) अश्वतर नागसे उपलक्षित प्रयागका एक तीर्थ (वन० ८५ । ७६) ।

अश्वतीर्थ–एक प्राचीन तीर्थ, जो कन्नौजके पास गङ्गाके तटपर स्थित है (वन० ९५ । ३) । इसके प्राकट्यका वर्णन (अनु० ४ । १७) ।

अश्वत्थामा–(१) कृपीके गर्भसे उत्पन्न द्रोणाचार्यका पुत्र (आदि० ६३ । १०७; १२९ । ४७) । इसका जन्म शिव, यम, काम तथा क्रोधके सम्मिलित अंशसे हुआ था (आदि० ६७ । ७२) । इसका अश्वत्थामा नाम होनेका कारण (आदि० १२९ । ४८-४९) । इसका आटेके पानीको दूध समझकर पीना और प्रसन्न होना (आदि० १३० । ५४) । कौरवराजकुमारोंके साथ इसका भी अपने पितासे अध्ययन (आदि० १३१ अध्याय) । युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें इसका पदार्पण (सभा० ३४ । ८) । कर्ण और दुर्योधनको फटकारते हुए इसका अर्जुनके विषयमें अपना उद्गार प्रकट करना (विराट० ५० अध्याय) । अर्जुनके साथ युद्ध और बाणोंसे खाली हो जानेपर इसका उनके समक्ष नीचा देखना (विराट० ५९ । १–१५) । दुर्योधनसे दस दिनमें पाण्डवसेनाको नष्ट करनेकी शक्तिका कथन (उद्योग० १९३ । १९) । प्रथम दिनके युद्धमें इसका शिखण्डीके साथ द्वन्द्व-युद्ध (भीष्म० ४५ । ४६–४८) । दूसरे दिनके युद्धमें शल्य और कृपके साथ रहकर इसका धृष्टद्युम्न और अभिमन्युसे युद्ध करना (भीष्म० ५५ । २–७) । अर्जुनके साथ जूझना (भीष्म० ७३ । ६–१६) । इसके द्वारा शिखण्डीकी पराजय (भीष्म० ८२ । ३४–३८) । अनूप-नरेश नीलकी पराजय (भीष्म० ९४ । ३५-३६) । सात्यकिके प्रहारसे इसका मूर्छित होना (भीष्म० १०१ । ४६-४७) । विराट और द्रुपदके साथ द्वन्द्व-युद्ध (भीष्म० ११० । १६) । विराट और द्रुपदके साथ द्वन्द्व-युद्ध (भीष्म० १११ । २२–२७) । सात्यकिके साथ द्वन्द्व-युद्ध (भीष्म० ११६ । ९–१२) । प्रतिविन्ध्यके साथ युद्ध (द्रोण० २५ । २९–३१) । इसके द्वारा राजा नीलका वध (द्रोण० ३१ । २४-२५) । इसका अभिमन्युको घायल करना (द्रोण० ३७ । २४–३१) । इसके ध्वजका वर्णन (द्रोण० १०५ । १०-११) । अर्जुनके बाणोंसे व्याकुल होकर अश्वत्थामाका भागना (द्रोण० १३९ । १२१–१२३) । अर्जुनके साथ युद्ध (द्रोण० १४५ अध्याय) । अर्जुनके साथ युद्ध और इसकी पराजय (द्रोण० १४७ । ११) । इसके द्वारा अंजनपर्वाका वध (द्रोण० १५६ । ८९-९०) । इसके द्वारा सुरथ, शत्रुंजय, बलानीक, जयानीक और जयाश्वका वध (द्रोण० १५६ । १८०-१८१) । इसके द्वारा राजा श्रुताह्वका वध (द्रोण० १५६ । १८२) । इसके द्वारा हेममाली, पृषध्र और चन्द्रसेनका वध (द्रोण० १५६ । १८३) । इसके द्वारा कुन्तिभोजके दस पुत्रोंका वध (द्रोण० १५६ । १८३) । घटोत्कचके साथ युद्धमें उसे पराजित करना (द्रोण० १५६ । १६४–१६१) । इसका कर्णको मारनेके लिये उद्यत होना (द्रोण० १५९ । ३–९) । अर्जुनसे युद्ध करनेके लिये उद्यत दुर्योधनको रोकना (द्रोण० १५९ । ८४-८५) । दुर्योधनको उपालम्भपूर्ण आश्वासन (द्रोण० १६० । २–१७) । धृष्टद्युम्नके साथ युद्धमें सेनासहित उसे पराजित करना (द्रोण० १६० । ४१–५३) । इसके द्वारा घटोत्कचकी पराजय (द्रोण० १६६ । १८) । दुर्योधनसे कौरव सेनाके भागनेका कारण पूछना (द्रोण० १९३ । २९–३२) । कृपाचार्यसे अपने पिताके वधका समाचार सुनकर कुपित होना (द्रोण० १९३ । ६८–७०) । इसका दुर्योधनके समक्ष क्रोधपूर्ण उद्गार और नारायणास्त्रको प्रकट करना (द्रोण० १९४ अध्याय) । दुर्योधनको अपनी प्रतिज्ञा सुनाना (द्रोण० १९९ । ५–७) । इसके द्वारा नारायणास्त्रका प्रयोग (द्रोण० १९९ । १५) । पुनः नारायणास्त्र प्रकट करनेमें अश्वत्थामाका अपनी असमर्थता दिखाना (द्रोण० २०० । २७–२९) । धृष्टद्युम्नको परास्त करना (द्रोण० २०० । ४३-४४) । इसके द्वारा मालवनरेश सुदर्शनका वध (द्रोण० २०० । ८३) । इसके द्वारा पौरव वृद्धक्षत्रका वध (द्रोण० २०० । ८४) । इसके द्वारा चेदिदेशके युवराजका वध (द्रोण० २०० । ८५) । भीमसेनके साथ घोर युद्ध और उनको पराजित करना (द्रोण० २०० । ८७–१२८) । इसके द्वारा आग्नेयास्त्रका प्रयोग (द्रोण० २०१ । १६-१७) । श्रीकृष्ण और अर्जुनको आग्नेयास्त्रसे मुक्त देखकर सब कुछ मिथ्या कहते हुए उसका युद्धस्थलसे भागना (द्रोण० २०१ । ४५–४७) । मार्गमें व्यासजीसे भेट और उनसे श्रीकृष्ण तथा अर्जुनपर आग्नेयास्त्रका प्रभाव न होनेका कारण पूछना (द्रोण० २०१ । ५०–५५) । कर्णको सेनापति बनानेकी सलाह देना (कर्ण० १० । १२–१७) । भीमसेनके साथ घोर युद्ध और मूर्च्छित होना (कर्ण० १५ अध्याय) । अर्जुनके साथ घोर युद्ध और पराजित होना (कर्ण० अ० १६ से १७ अ० तक) । पाण्ड्यनरेश मलयध्वजका वध (कर्ण० २० । ४६) । पाण्डव महारथियोंको परास्त करके युधिष्ठिरको भगा देना (कर्ण० ५५ अध्याय) । अर्जुनके साथ युद्धमें पराजित होना (कर्ण० ५६ । १२१–१४२) । धृष्टद्युम्नके वधकी प्रतिज्ञा करना (कर्ण० ५७ । ७–१०) । धृष्टद्युम्नको परास्त करके उसे जीते-जी खींचना (कर्ण० ५९ । ३९–५३) । अर्जुनद्वारा पराजित होना (कर्ण० ५९ । ६०-६१) । अर्जुनद्वारा पराजित होना (कर्ण० ६४ । ३१-३२) । पाण्डवोंके साथ संधि करनेके लिये दुर्योधनसे अनुरोध (कर्ण० ८८ । २१–२९) । दुर्योधनके पूछनेपर सेनापतिके लिये शल्यका नाम प्रस्तावित करना (शल्य० ६ । १९–

२१)। अर्जुनके साथ युद्ध (शल्य० १४ अध्याय)। इसके द्वारा पाञ्चाल-महारथी सुरथका वध (शल्य० १४।४३)। द्वैपायन सरोवरपर जाकर दुर्योधनके सामने सोमकोंके वधकी प्रतिज्ञा करना (शल्य० ३०। १९–२२)। सेनासहित युधिष्ठिरके वहाँ पहुँचनेपर हट जाना (शल्य० ३० । ६३)। दुर्योधनकी अवस्थापर विषाद करना (शल्य० ६५ । १३–२०)। पाञ्चालोंके वधकी प्रतिज्ञा करना (शल्य० ६५। ३४–३७)। सेनापति-पदपर अभिषिक्त हो दुर्योधनको हृदयसे लगाकर युद्धके लिये प्रस्थित होना (शल्य० ६५ । ४४)। उल्लूका कौवोंपर आक्रमण देखकर इसके मनमें क्रूर संकल्पका उदय होना (सौप्तिक० १ । ४५-५६)। कृतवर्मा और कृपाचार्यसे सलाह लेना (सौप्तिक० १ । ५९–६९)। कृतवर्मा और कृपाचार्यको अपना क्रूरतापूर्ण निश्चय बताना (सौप्तिक० ३ अध्याय)। कृपाचार्यके समझानेपर उन्हें उत्तर देना (सौप्तिक० ४। २२–३४)। कृपाचार्यके समझानेपर उन्हें उत्तर देना (सौप्तिक० ५ । १८–२९)। कृपाचार्य और कृतवर्माको अपना निश्चय बताना (सौप्तिक० ५ । ३४–३७)। पाण्डवोंके शिबिरद्वारपर एक अद्भुत पुरुषसे युद्ध और शस्त्रोंके अभावमें चिन्तित होकर भगवान् शिवकी शरण लेना (सौप्तिक० ६ अध्याय)। इसके द्वारा भगवान् शिवकी स्तुति (सौप्तिक० ७ । २–१२)। इसके सामने अग्निवेदी और भूतगणोंका प्राकट्य (सौप्तिक० ७ । १३–१५)। इसके द्वारा भगवान् शिवको आत्म-समर्पण (सौप्तिक० ७ । ५२)। भगवान् शिवद्वारा इसे खड्गकी प्राप्ति (सौप्तिक० ७ । ६६)। इसके द्वारा रातमें सोये हुए पाञ्चालों, सोमकों और द्रौपदी-पुत्रोंका संहार (सौप्तिक० ८ । १७–१३२)। दुर्योधनकी दशा देखकर विलाप करना (सौप्तिक० ९ । १९–४६)। दुर्योधनको पाञ्चालों और द्रौपदी-पुत्रोंके मारे जानेकी खबर सुनाना (सौप्तिक० ९ । ४८–५२)। श्रीकृष्णका इसके द्वारा अपनेसे सुदर्शनचक्र माँगनेकी चर्चा करना (सौप्तिक० १२ अध्याय)। पाण्डवोंके वधके लिये ऐषीकास्त्रका प्रयोग (सौप्तिक० १३ । १९–२२)। व्यासजीसे अपना अस्त्र लौटानेमें अपनी असमर्थता बताना (सौप्तिक० १५ । १३–१८)। व्यासजीके कहनेसे अपनी मणि अलग रखकर पाण्डवोंके गर्भपर अस्त्र छोड़ना (सौप्तिक० १५ । २८–३५)। अपने अस्त्रको उत्तराके गर्भपर गिरनेका संकल्प करना (सौप्तिक० १६ । ६-७)। श्रीकृष्णसे अभिशप्त हो पाण्डवोंको मणि देकर अश्वत्थामाका वनको प्रस्थान (सौप्तिक० १६ । २०)। धृतराष्ट्रसे मिलकर इसका व्यासाश्रमकी ओर जाना (स्त्री० ११।२१)।

महाभारतमें आये हुए अश्वत्थामाके नाम–आचार्यनन्दन, आचार्यपुत्र, आचार्यसुत, आचार्यतनय, आचार्यसत्तम, द्रौणि, द्रौणायनि, द्रोणपुत्र, द्रोणसूनु, गुरुपुत्र, गुरुसुत, भारताचार्यपुत्र ।

(२) मालवनरेश इन्द्रवर्माका हाथी, जो भीमसेनद्वारा मारा गया था (द्रोण० १९० । १५)।

अश्वनदी–कुन्तिभोज देशकी एक नदी, जो चर्मण्वतीमें मिली है। इसीमें कुन्तीने शिशु कर्णको पिटारीमें बंद करके छोड़ा था (वन० ३०८ । २२)।

अश्वपति–(१) कश्यपपत्नी दनुके पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६५ । २४)। (२) मद्रदेशके राजा। संतान-प्राप्तिके लिये इनकी तपस्या और सावित्रीकी आराधना (वन० २९३। १–८)। इनकी सावित्री देवीसे वर-याचना (वन० २९३ । १४)। इन्हें सावित्री नामकी कन्या प्राप्त हुई (वन० २९३ । २३)। इनका सावित्रीको स्वयं वर खोजनेके लिये भेजना (वन० २९३ । ३३)। नारदजीसे सत्यवान्के गुण-दोषके विषयमें प्रश्न (वन० २९४। १४)। राजर्षि द्युमत्सेनसे सावित्रीको पुत्रवधू बनानेके लिये प्रार्थना (वन० २९५ । १०–१२)। इन्हें मालवीके गर्भसे सौ पुत्रोंकी प्राप्ति (वन० २९९ । १३)।

अश्वबन्ध–घोड़ोंको वशमें करनेवाला सवार (विराट० ३।३)।

अश्वमेध–प्राचीन देश। इस देशके राजाका नाम रोचमान था, जिसे दिग्विजयके समय भीमसेनने बलपूर्वक जीत लिया था (सभा० २९।८)।

अश्वमेधदत्त–शतानीककी पत्नी विदेहराजकुमारीके गर्भसे उत्पन्न पुत्र (आदि० ९५।८६)।

अश्वमेधपर्व–आश्वमेधिकपर्वका एक अवान्तरपर्व (१—१५ अध्यायतक)।

अश्वरथा–गन्धमादनपर्वतके नीचे आर्ष्टिषेणके आश्रमके पास बहनेवाली एक नदी (वन० १६०।२१)।

अश्ववती–तीनों समय स्मरण करनेयोग्य नदियोंमेंसे एक (अनु० १६५।२५)।

अश्ववान्–भरतवंशी महाराज कुरुके प्रथम पुत्र। इनकी माताका नाम 'वाहिनी' था। इनका दूसरा नाम 'अविक्षित्' था। इनके परीक्षित्, शबलाश्व, आदिराज, विराज, शाल्मलि, उच्चैःश्रवा, भयङ्कर तथा जितारि नामके आठ पुत्र थे (आदि० ९४।५०–५३)।

अश्वशङ्कु–कश्यपपत्नी दनुके पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६७।१०)।

अश्वशिरःस्थान–एक पवित्र स्थान, स्वप्नमें शिवजीके पास जाते हुए श्रीकृष्ण और अर्जुन यहाँ गये थे (द्रोण० ८०।३२)।

अश्वशिरा–(१) कश्यपपत्नी दनुके पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६५।२३)। (२) नरनारायणाश्रमके पास वैहायसकुण्डपर वेदपाठी भगवान् हयग्रीव (शान्ति० १२७।३)।

अश्वसेन–तक्षकनागका पुत्र (आदि० २२६।५)। खाण्डव-वन-दाहके समय इसकी माताका अर्जुनद्वारा वध (आदि० २२६।८)। इन्द्रद्वारा इसकी रक्षा (आदि० २२६।९)। अर्जुनद्वारा इसे आश्रयहीनताका शाप (आदि० २२६।११)। कर्णद्वारा छोड़े गये सर्पमुख बाणमें प्रविष्ट होकर इसका अर्जुनके किरीटको दग्ध करना (कर्ण० ९०।३३)। कर्णद्वारा अस्वीकार किये जानेपर इसका अर्जुनपर आक्रमण (कर्ण० ९०।५०)। श्रीकृष्णद्वारा परिचय पाकर अर्जुन-द्वारा इसका वध (कर्ण० ९०।५४)।

अश्वहृदय–घोड़ोंका हर्ष एवं उत्साह बढ़ानेवाला एक मन्त्र (द्रोण० १६।१८ के बाद दाक्षिणात्य पाठ)।

अश्वातक–एक देश (भीष्म० ५१।१५)।

अश्विनीकुमार–नासत्य और दस्र नामक दो भाई, जो देवताओंके अन्तर्गत हैं। त्वष्टाकी पुत्री संज्ञाने अश्विनीरूप धारण करके भगवान् सूर्यके अंशसे अन्तरिक्षमें इन्हें उत्पन्न किया। ये संज्ञाकी नाकसे निकले हैं (आदि० ६६। ३५; अनु० १५०। १७-१८)। ये ब्रह्मा आदि अन्य देवताओंके क्रमसे स्वयं भी अण्डसे उत्पन्न हुए (आदि० १।३४)। आयोदधौम्यके शिष्य उपमन्युके द्वारा इनकी स्तुति (आदि० ३।५७–६८)। इनके द्वारा उपमन्युको वरदान (आदि० ३।७३)। इन्होंने माद्रीके गर्भसे नकुल और सहदेवको उत्पन्न किया (आदि० ९५।६३)। ये देवताओंके साथ विमानपर बैठकर द्रौपदीका स्वयंवर देखने आये थे (आदि० १८६।६)। खाण्डववन-दाहके समय श्रीकृष्ण-अर्जुनसे युद्धके लिये आये हुए देवताओंमें ये भी थे (आदि० २२६।३३)। इन्होंने सुकन्यासे अपनेको पतिरूपमें वरण करनेका आग्रह करके उसके सतीत्वकी परीक्षा ली (वन० १२३।१०)। अपनेको देवताओंका श्रेष्ठ वैद्य बताया (वन० १२३।१२)। इनके द्वारा च्यवनको यौवनदान तथा सुकन्याद्वारा पतिकी पहचान (वन० १२३।१३–२१)। च्यवन मुनिके प्रभावसे इनका शर्यातिके यज्ञमें सोमपान (वन० अ० १२४ से अ० १२५।१०)। इन अश्विनीकुमारोंने मान्धाताको पिताके पेटसे बाहर निकाला (द्रोण० ६२।४)। इनके द्वारा स्कन्दको वर्धन और नन्दन नामक दो पार्षद प्रदान (शल्य० ४५।३८)। इन्हें घीकी आहुति तथा उसके दानसे अधिक प्रसन्नता होती है (अनु० ६५।७)। आश्विनमासमें ब्राह्मणको घी दान करनेवाले पुरुषको अश्विनीकुमार रूप देते हैं (अनु० ६५।१०)। इक्कीस तथा उन्तीस दिनोंपर एक समय भोजन करनेवालोंको अश्विनीकुमारोंके लोककी प्राप्ति होती है (अनु० १०७। ९५, १२६)। कीर्तनीय नामोंमें नाम-निर्देश (अनु० १५०।८१)।

अश्विनीकुमारतीर्थ–जिसमें स्नान करनेसे रूपकी प्राप्ति होती है (वन० ८३।१७)।

अश्विनीतीर्थ–यहाँ स्नान करनेसे मनुष्य रूपवान् होता है (अनु० २५।२१)।

अष्टक–एक प्राचीन राजर्षि (आदि० ८६। ५)। ये राजा ययातिके दौहित्र थे (आदि० ८९। १३)। अष्टक और राजा ययातिका संवाद (आदि० अ० ८८ से ९२ अ०)। ययातिकी पुत्री माधवीके गर्भसे विश्वामित्रद्वारा इनकी उत्पत्ति हुई थी (उद्योग० ११९। १८)। इनके द्वारा ययातिको अपने पुण्यफलका दान (उद्योग० १२२।१३-१४)। ययाति एवं शिबि आदि राजाओंके साथ इनका स्वर्गगमन (उद्योग० ९३। १६ के बाद दा० पाठ)। स्वर्ग जाते समय इनके द्वारा शिबिकी श्रेष्ठताके विषयमें ययातिसे प्रश्न (उद्योग० ९३। १७)। देवर्षि नारदद्वारा इनके स्वर्गसे प्रथम गिरनेका वर्णन (वन० १९८। ४-५)। इन्हें महाराज प्रतर्दनद्वारा खड्गकी प्राप्ति (शान्ति० १६६। ८०)। अगस्त्यजीके कमलोंकी चोरी होनेपर इनका शपथ (अनु० ९४। ३६)। प्रातः-सायं स्मरण करने योग्य तथा पापनाशक राजाओंमें अष्टककी भी गणना (अनु० १६५। ५६)।

अष्टजिह्व–स्कन्दके सैनिकोंमेंसे एक (शल्य० ४५। ६२)।

अष्टवसु–गणदेवता। धर्मद्वारा दक्षकी विभिन्न कन्याओंसे उत्पन्न। इनकी संख्या आठ है, जिनके नाम इस प्रकार हैं—धर, ध्रुव, सोम, अह, अनिल, अनल, प्रत्यूष तथा प्रभास (आदि० ६६। १७—२०)। पुराणोंमें इनके नामोंके सम्बन्धमें मतभेद पाया जाता है। जैसे विष्णुपुराण-के अनुसार—आप, ध्रुव, सोम, धर्म, अनिल, अनल, प्रत्यूष तथा प्रभास (विष्णु० १। १५)। भागवतके अनुसार—द्रोण, प्राण, ध्रुव, अर्क, अग्नि, दोष, वसु और विभावसु (भागवत ६। ६) हरिवंशके अनुसार—आप, धर, ध्रुव, सोम, अनिल, अनल, प्रत्यूष तथा प्रभास (१।३)। इससे परस्पर कोई विरोध नहीं समझना चाहिये; क्योंकि एक व्यक्तिके अनेक नाम हो सकते हैं और विभिन्न स्थानोंमें उसे अलग-अलग नामोंसे कहा जा सकता है। इन सबका विशेष परिचय उन-उन नामोंमें देखना चाहिये। गङ्गाके गर्भसे शान्तनुद्वारा इन सबका जन्म (आदि० ९८। १२) वसिष्ठके द्वारा इन सबको मनुष्ययोनिमें जन्म लेनेका शाप (आदि० ९९। ३२)। प्रार्थना करनेपर 'द्यो'के अतिरिक्त इन सबको यथाशीघ्र शापसे मुक्त होनेका वसिष्ठजीद्वारा आश्वासन (आदि० ९९। ३८-३९)। इनके द्वारा परशुरामजीसे युद्ध करते समय भीष्मको प्रस्वापास्त्र-का दान (उद्योग० १८३। ११—१३)। मृत्युके लिये

विचार करते हुए भीष्मके विचारका समर्थन (भीष्म० ११९ । ३७)।

अष्टविवाह–ब्राह्म, दैव, आर्ष, प्राजापत्य, आसुर, गान्धर्व, राक्षस तथा पैशाच—ये आठ विवाह (आदि० ७३।८-९)।

अष्टाकपाल–आठ कपालोंद्वारा संस्कारपूर्वक तैयार किया हुआ पुरोडाश (शान्ति० २२१ । २४)।

अष्टावक्र–महर्षि कहोडके द्वारा उद्दालककुमारी सुजाताके गर्भसे उत्पन्न एक मुनि। पिताके अध्ययनमें बालकका दोष निकालना (वन० १३२ । ८—१०)। इनका राजा जनकके यज्ञमें जाना (वन० १३२ । २३)। द्वारपाल-से वार्तालाप (वन० १३३ । ५—१६)। राजा जनकसे प्रश्नोत्तर (वन० १३३ । २०—३०)। वंदीके साथ शास्त्रार्थ करके उसे हराना (वन०१३४।१–२१)। समङ्गामें स्नान करनेसे इनके अङ्गोंका सीधा होना (वन० १३४।३९) महर्षि वदान्यसे उनकी कन्या माँगना (अनु० १९।११)। वदान्यके कहनेसे इनका उत्तर दिशाकी ओर प्रस्थान (अनु० १९ । २७)। कुबेरके भवनमें विश्राम (अनु० १९ । ४०-४१)। नारी-रूपधारिणी उत्तर दिशाके साथ संवाद (अनु० १९ । ७३ से २१ । ११ तक)। वदान्य ऋषिसे अपना सब समाचार कहना (अनु० २१ । १५-१६)। वदान्यकी कन्या सुप्रभाके साथ इनका विवाह (अनु० २१ । १८)।

अष्टावक्रतीर्थ–इसमें तर्पण करके बारह दिनोंतक निराहार रहनेसे नरमेधयज्ञका फल मिलता है (अनु० २५ । ४१)।

असमञ्जा–सगर और शैब्यासे उत्पन्न एक इक्ष्वाकुवंशी राजा, जो प्रजाके बालकोंको सरयू नदीमें फेंक देता था। प्रजाकी आर्त पुकारसे पिघलकर सगरने मन्त्रीद्वारा असमञ्जाको निकलवा दिया (वन० १०७। ४३; शान्ति० ५७ । ७–९)।

असिक्नी–भारतवर्षके पंजाब प्रान्तकी एक नदी, चन्द्रभागा या चिनाव (भीष्म० ९ ।२३)।

असित–(१) एक राजा (द्रोण० ६२ । ११; शान्ति० २९ । ८८)। (२) एक ऋषि (शान्ति० ४७ । ७)।

असितदेवल–एक प्रसिद्ध ऋषि। महाभारतमें अनेक स्थलों-पर इनका नाम आया है। इन्होंने पितरोंको पंद्रह लाख श्लोकवाला महाभारत सुनाया था (आदि० १ । १०७)। इन्होंने जनमेजयके सर्पसत्रमें सदस्यता ग्रहण की थी (आदि० ५३ । ८)। राजा युधिष्ठिरके अभिषेककालमें व्यास और नारदजी आदिके साथ ये भी उपस्थित थे (सभा० ५३ । १०)। इन्होंने अञ्जनपर्वतपर युधिष्ठिरको उपदेश दिया (सभा० ७८ । १५)। आदित्यतीर्थकी महिमाके प्रसङ्गमें इनके चरित्रका वर्णन (शल्य० ५० अध्याय)। जैगीषव्य मुनिसे समताके विषयमें इनका प्रश्न (शान्ति० २२९ । ५)। नारदजीके सृष्टिविषयक प्रश्नका उत्तर (शान्ति० २७५ । ४–३९)। शिवमहिमा-के विषयमें इनका युधिष्ठिरसे अपना अनुभव बताना (अनु० १८ । १७-१८)।

असितध्वज–कश्यप और विनताके एक पुत्र, जो अर्जुनके जन्मोत्सवमें पधारे थे (आदि० १२२ । ७३)।

असितपर्वत–आनर्तदेशमें नर्मदाके तटपर स्थित एक पर्वत (वन० ८९ । ११)।

असिता–एक अप्सरा, जो अर्जुनके जन्मोत्सवमें आयी थी (आदि० १२२ । ६३)।

असिपत्रवन–एक नरक, जिसके मायामयस्वरूपका युधिष्ठिर-को दर्शन कराया गया था (स्वर्गारोहण० २ । २३)। यमलोकका असिपत्र नामक वन (शान्ति० ३२१ । ३२)।

असिलोमा–कश्यपपत्नी दनुके पुत्रोंमेंसे एक(आदि० ६५।२३)।

असुरा–कश्यप और प्राधाकी आठ पुत्रियोंमेंसे एक (आदि० ६५ । ४१)।

अस्ताचल–पश्चिम दिशाका एक पर्वत (उद्योग० ११० । ६)।

अस्ति–मगधनरेश जरासंधकी पुत्री। कंसकी पत्नी। सहदेव-की बहिन। इसकी दूसरी बहिनका नाम 'प्राप्ति' था। वह भी कंसकी ही पत्नी थी (सभा० १४ । २९–३२)।

अहंयाति–पूरुवंशी राजा संयाति तथा रानी वराङ्गीके पुत्र। इनके द्वारा भानुमतीके गर्भसे सार्वभौम नामक पुत्रकी उत्पत्ति हुई (आदि० ९५ । १४-१५)।

अह–धर्मपुत्र। आठ वसुओंमेंसे एक। इसकी माताका नाम 'रता' है (आदि० ६६ । १७–२०)।

अहः (या अहन्)–एक तीर्थ, जिसमें स्नान करनेसे सूर्य-लोककी प्राप्ति होती है (वन० ८३ । १००)।

अहर–कश्यप और दनुके पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६५ ।२५)।

अहल्या–महर्षि गौतमकी पत्नी। इनका उत्तङ्कसे गुरुदक्षिणा-के रूपमें सौदासकी रानीके कुण्डल माँगना (आश्व० ५६ । २९)। गौतम ऋषिसे उत्तङ्कके कल्याणके लिये कहना (आश्व० ५६ । ३४)। इन्द्रद्वारा इनकी धर्षणा (शान्ति० ३४२ । २३)।

अहल्याह्रद–महर्षि गौतमके तपोवनमें अहल्याह्रद नामक तीर्थमें स्नान करनेसे मनुष्यको परमगति प्राप्त होती है (वन० ८४ । १०९)।

अहिच्छत्र–उत्तर पाञ्चालवर्ती राज्य । यह द्रोणाचार्यके अधिकारमें था । इसे आचार्य द्रोणने अर्जुनद्वारा द्रुपदको पराजित करके प्राप्त किया था (आदि० १३७ । ७३–७६) ।

अहिच्छत्रा–एक प्राचीन नगरी, जो अहिच्छत्र राज्यकी राजधानी थी । अर्जुनने द्रुपदको जीतकर इसे गुरुदक्षिणामें द्रोणाचार्यको दिया था (आदि० १३७ । ७३–७७) ।

अहिता–भारतवर्षकी एक प्रमुख नदी (भीष्म० ९ । २१) ।

अहिर्बुध्न्य–ग्यारह रुद्रोंमेंसे एक । ये सुवर्णके रक्षक हैं (उद्योग० ११४ । ४) । ग्यारह रुद्रोंमें इनके नाम अनेक स्थलोंपर आये हैं जैसे (शान्ति० २०८ । १९-२०) ।

अहोवीर्य–वानप्रस्थ-धर्मका पालन करनेवाले एक मुनि (शान्ति० १४४ । १७) ।

आ

आकर्ष–'आकर्ष' नामक देश तथा वहाँके निवासी (सभा० ३४ । ११) ।

आकाशजननी–परकोटेमें बने हुए छोटे-छोटे छिद्र, जिसके रास्ते तोपोंसे गोलियाँ छोड़ी जाती हैं (शान्ति० ६९ । ४३) ।

आकृति–सुराष्ट्र देशका राजा । कौशिकाचार्य सहदेवद्वारा इनकी पराजय (सभा० ३१ । ६१) ।

आकृतीपुत्र–'आकृती' नामवाली माताका पुत्र रुचिपर्वा । पाण्डव-पक्षीय योद्धा, जो भगदत्तके द्वारा मारा गया (द्रोण० २७ । ५०–५२) ।

आक्रोश–महोत्थ देशका राजा; जिसे नकुलने जीता था (सभा० ३२ । ५-६) ।

आग्निवेश्य–एक प्राचीन महर्षि, जिन्होंने बृहस्पतिसे कवच तथा उसे बाँधनेकी विद्या (मन्त्रयुक्त विधि) प्राप्त की, जो धनुर्वेदके आचार्य और द्रोणाचार्यके गुरु थे (द्रोण० ९४ । ६७-६८) ।

आग्रायण–भानु (मनु) नामक अग्निके चौथे पुत्र (वन० २२१ । १३) ।

आग्रेय–एक गणतन्त्र राज्य, जिसे कर्णने जीता था (वन० २५४ । १९-२१) ।

आङ्गरिष्ठ–प्राचीन नरेश । अपने द्वारा मोहवश पाप हो जानेके कारण उसके प्रायश्चित्तके विषयमें कामन्दक मुनिसे राजाका प्रश्न (शान्ति० १२३ । १३-१४) ।

आङ्गिरसी–एक ब्राह्मणकी पतिव्रता पत्नी । राक्षसभावापन्न कल्माषपादद्वारा इसके पतिका भक्षण । इसके द्वारा कल्माषपादको पत्नी-समागम करते ही मृत्यु होने एवं वशिष्ठद्वारा पुत्र प्राप्त होनेका शाप (आदि० १८१ । १६-२२) ।

आङ्घ्रिक–विश्वामित्रके ब्रह्मवादी पुत्रोंमेंसे एक (अनु० ४ । ५४) ।

आजगर–अजगर वृत्तिसे रहनेवाले एक मुनि, जिनके साथ प्रह्लादका संवाद हुआ था (शान्ति० १७९ । २) ।

आजगरपर्व वनपर्वका एक अवान्तरपर्व (१७६ से १८१ अध्याय तक) ।

आजगरव्रत–आजगर मुनिद्वारा आचरित अवधूत धर्म (शान्ति० १७९ । १८–३६) ।

आजगव–महाराज मान्धाताका धनुष (वन० १२६ । ३३-३४) । महाराज पृथुका धनुष (द्रोण० ६९ । १३) । अर्जुनके गाण्डीव धनुषका नामान्तर (द्रोण० १४५ । ९४) ।

आजमीढ़–अजमीढ़वंशमें उत्पन्न होनेवाले, कौरव-पाण्डव (आदि० १७२ । ५० के बाद दाक्षिणात्य पाठ) ।

आजानेय–घोड़ोंकी एक उत्तम जाति (वन० २७० । १०) ।

आञ्जनककुल–गजराजोंकी सेनाका नाम । सात्यकिद्वारा वर्णन (द्रोण० ११२ । १७-१८) ।

आटवीपुरी–एक प्राचीन नगर, जिसे माद्रीकुमार सहदेवने जीता था (सभा० ३१ । ७२) ।

आडम्बर–धाताद्वारा स्कन्दको दिये गये पाँच पार्षदोंमेंसे एक (शल्य० ४५ । ३९) ।

आतक–कौरव्यकुलमें उत्पन्न एक नाग, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें जला था (आदि० ५७ । १३) ।

आत्मा–(१) दिवः पुत्र आदि विवस्वान्‌के पुत्रों या स्वरूपोंमेंसे एक (आदि० १ । ४२) (२) नित्य, अविनाशी, एक, शुद्ध-बुद्ध आतमा एवं परमात्मा (भीष्म० २६ । ११–३०) ।

आत्रेय–(१) एक प्राचीन ऋषि, जो जनमेजयके सर्पसत्रके सदस्य थे (आदि० ५३ । ८) । (२) महर्षि वामदेवका शिष्य (वन० १९२ । ४६) । (३) भारतवर्षका एक जनपद (भीष्म० ९ । ६८) । (४) एक परम प्राचीन महर्षि । इनके द्वारा शिष्योंको निर्गुण ब्रह्मका उपदेश दिया गया (अनु० १३७ । ३) ।

आत्रेयी–एक नदी (सभा० ९ । २२) ।

आथर्वण–एक मुनि । स्वप्नमें श्रीकृष्णसहित शिवजीके पास जाते हुए अर्जुन इनके स्थानपर गये थे (द्रोण० ८० । ३२) ।

आदित्य–(१) इनकी संख्या बारह है । इनके पिताका नाम कश्यप और माताका नाम अदिति है । इनमें इन्द्र

सबसे बड़े और विष्णु (वामन) सबसे छोटे हैं (आदि० ६६ । ३६)। (२) एक विश्वेदेव (अनु० ९१ । ३६)।

आदित्यकेतु–धृतराष्ट्रके पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६७ । १०२)। भीमसेनद्वारा इसका वध (भीष्म० ८८ । २८)।

आदित्यतीर्थ–सरस्वतीतटवर्ती एक प्राचीन तीर्थ (शल्य० ४९ । १७) । इसकी विशेष महिमा (शल्य० अध्याय ५०)।

आदित्यपर्वत–हिमालयका एक शिखर, शिवजीका निवास-स्थान (शान्ति० ३२७ । २२)।

आदिपर्व–महाभारतका पहला पर्व ।

आदिराज–पूरुवंशीय महाराज कुरुके पौत्र तथा अविक्षित्के पुत्र (आदि० ९४ । ५२)।

आदिष्टी–जिन्हें गुरुने नियत वर्षोंतक ब्रह्मचर्यव्रत-पालनका आदेश दिया हो (अनु० २२ । १७)।

आद्यकठ–एक प्राचीन ऋषि, जो राजा उपरिचरके यज्ञके एक सदस्य थे (शान्ति० ३३६ । ९)।

आनन्द–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ६५)।

आनर्त–एक प्राचीन देश, जिसे अर्जुनने जीता था (सभा० २६ । ४)।

आनुशासनिकपर्व–महाभारतका एक पर्व ।

आन्ध्र–दक्षिणका एक देश, जिसे सहदेवने दूतोंद्वारा ही वशमें कर लिया था (सभा० ३१ । ७१)।

आपगा–नदी एवं तीर्थ, जहाँ एक ब्राह्मणको भोजन करानेसे कोटि ब्राह्मणोंको भोजन करानेका फल प्राप्त होता है (वन० ८३ । ६८)।

आपद्धर्मपर्व–शान्तिपर्वका एक अवान्तर पर्व (अध्याय १३१ से १७३ तक)।

आपव–(१) वसिष्ठ मुनिका नामान्तर (आदि० ९९ । ५)। (२) एक प्राचीन ऋषि । अग्निके साथ आकर कार्तवीर्यद्वारा अपने आश्रमके जलाये जानेपर इनका राजाको शाप देना (शान्ति० ४९ । ४२-४३)।

आपस्तम्ब–एक प्रसिद्ध ऋषि । इनके द्वारा राजा द्युमत्सेनको आश्वासन (वन० २९८ । १८)।

आपूरण–एक प्रमुख नाग, कश्यपका वंशज (आदि० ३५ । ६; उद्योग० १०३ । १०)।

आप्त–एक प्रमुख नाग, कश्यपका वंशज (आदि० ३५ । ८; उद्योग० १०३ । १२)

आभीर–(१) सिन्धु और सरस्वती-तटवर्ती आभीर गणतन्त्रके निवासी, जिन्हें नकुलने जीता था (सभा० ३२ । ९-१०)। समुद्रतटवर्ती गृहोद्यान तथा सिन्धुके उस पार (आभीर देशमें) निवास करनेवाली आभीर जातिके लोग । ये लोग युधिष्ठिरके यहाँ भेंट लेकर आये थे (सभा० ५१ । ११–१३)। मार्कण्डेयजीका कहना है कि कलियुगमें आभीर, शक आदि म्लेच्छगण भारतवर्षके विभिन्न भागोंके राजा होंगे (वन० १८८ । ३५-३६)। शूर आभीरगण द्रोणनिर्मित गरुडव्यूहमें ग्रीवाके स्थानमें खड़े किये गये थे (द्रोण० २० । ६)। शूद्रों और आभीरोंसे द्वेष होनेके कारण विनशनतीर्थमें सरस्वती नदी अदृश्य हो गयी थी (शल्य० ३७ । १-२)। आभीर पहले क्षत्रिय थे । परशुरामजीके भयसे पर्वतोंकी गुफाओंमें छिप गये और अपने कर्म छोड़ बैठे; अतः उनकी संतानें शूद्रत्वको प्राप्त हुईं (आश्व० २९ । १६)। इन्हीं आभीरोंने द्वारकावासिनी स्त्रियोंको साथ लेकर जाते हुए अर्जुनपर डाका डाला था (मौसल० ७। ४७–६३)। (२) आभीर देश (भीष्म० ९ । ४७-६७)।

आमरथ–भारतवर्षका एक जनपद (भीष्म० ९ । ५४)।

आयाति–नहुषके पुत्र । ययातिके भ्राता (आदि० ७५ । ३०)।

आयु–(१) पुरूरवाके द्वारा उर्वशीके गर्भसे उत्पन्न एक राजा, जिन्होंने स्वर्भानवीके गर्भसे नहुष आदिको जन्म दिया (आदि० ७५ । २४)। इन्हें पुरूरवासे खड्गकी प्राप्ति (शान्ति० १६६ । ७४)। इन्होंने तपोबलसे ही समाजमें प्रतिष्ठा प्राप्त की (शान्ति० २९६ । १५)। इनके द्वारा मांस-भक्षणका निषेध (अनु० ११५ । ५९)। (२) एक मण्डूकराज, जो सुन्दरी सुशोभनाका पिता था । इसने इक्ष्वाकुवंशी राजा परीक्षित्को अपनी कन्या अर्पित की थी (वन० १९२ । ३२–३५)। मण्डूकोंको मारनेका आदेश रोकनेके लिये इसकी राजासे प्रार्थना (वन० १९२ । २७)। इसके द्वारा अपनी कन्याको शाप (वन० १९२ । ३५)।

आयोदधौम्य–एक प्रसिद्ध ऋषि । इनके आरुणि, उपमन्यु तथा वेद नामके तीन प्रसिद्ध शिष्य थे (आदि० ३ । २१)। हस्तिनापुर जाते हुए श्रीकृष्णसे मार्गमें इनका मिलना (उद्योग० ८३ । ६४ के बाद दाक्षिणात्य पाठ)।

आरणेयपर्व–वनपर्वका एक अवान्तरपर्व (अध्याय ३११ से ३१५ तक)।

आरालिक–मतवाले हाथियोंको वशमें करनेवाला गजशिक्षक (विराट० २ । ९)।

आरुणि–(१) आयोदधौम्य ऋषिके शिष्य । पाञ्चालदेश-निवासी । इनकी गुरुभक्ति, इनको गुरुका आशीर्वाद तथा

इनका उद्दालक नामसे प्रसिद्ध होना (आदि० ३ । २२-३२) । (२) धृतराष्ट्र नागके कुलमें उत्पन्न एक नाग, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें जल मरा था (आदि० ५७ । १९) । (३) कश्यप और विनताके पुत्र (आदि० ६५ । ४०) । (४) एक कौरवपक्षीय महारथी वीर, जिसने शकुनिके साथ होकर अर्जुनपर हमला किया था (द्रोण० १५६ । १२२) ।

आरुषी-मनुकी पुत्री, च्यवन मुनिकी पत्नी । इसके पुत्रका नाम था 'और्व' । ये अपनी माके ऊरुसे प्रकट हुए, अतः 'और्व' कहलाये (आदि० ६६ । ४६) ।

आरोचक-भारतवर्षका एक जनपद और वहाँके निवासी (भीष्म० ५१ । ७) ।

आर्चीक-सैन्धवारण्यसे आगे मनीषी पुरुषोंका निवासभूत एक पर्वत (वन० १२५ । १६) ।

आर्जव-सुबलपुत्र शकुनिका भाई, इरावान्द्वारा इसका वध (भीष्म० ९० । २७-४६) ।

आर्तायनि-ऋतायनके पुत्र शल्य, इनके पूर्वज श्रेष्ठ थे और सदा सत्य ही बोलते थे; इसलिये ये 'आर्तायनि' कहे गये हैं (शल्य० ३२ । ५६) ।

आर्तिमान्-सर्पभय निवारण करनेवाला एक मन्त्र (आदि० ५८ । २३-२६) ।

आर्यक-एक प्रमुख नाग (आदि० ३५ । ७) । ये शूरसेनके मातामह थे, इन्होंने भीमको रसपान करानेके लिये वासुकिसे प्रार्थना की (आदि० १२७ । ६४-६८) । अपने पौत्र सुमुखके साथ मातलिकी कन्याके विवाहके प्रसङ्गमें इनकी नारदसे बातचीत (उद्योग० १०४ । १३-१७) ।

आर्या-शिशुकी माता । सप्त मातृकाओंमेंसे एक (वन० २२८ । १०) ।

आर्यावर्त-भारतवर्षका नामान्तर अथवा एक भारतीय प्रदेश (शान्ति० ३२५ । १५) । (स्मृतियोंके अनुसार विन्ध्य तथा हिमालयके बीचका भूभाग आर्यावर्त है ।)

आर्ष्टिषेण-एक राजर्षि, इनके द्वारा युधिष्ठिरको प्रश्नरूपमें उपदेश मिला (वन० १५६ । १६; वन० १५९ अध्याय) । पृथूदक तीर्थमें तप करके इन्होंने ब्राह्मणत्व प्राप्त किया था (शल्य० ३९ । ३६) । इनकी तपस्याका वर्णन (शल्य० ४० । ३-९) । सरस्वती नदीके लिये इन ऋषिका आशीर्वाद, यहाँ स्नान करनेवालेको अश्वमेधका फल प्राप्त होगा, यहाँ सर्पोंसे भय न होगा तथा थोड़े ही समयतक इस तीर्थके सेवनसे महान् फलकी प्राप्ति होगी (शल्य० ४० । ७-८) ।

आर्ष्टिषेण-आश्रम-एक तीर्थ, यहाँ स्नान करनेवालेको सब पापोंसे छुटकारा मिल जाता है (अनु० २५ । २५) ।

आलम्ब-एक प्राचीन ऋषि, जो युधिष्ठिरकी सभामें विराजमान होते थे (सभा० ४ । १४) ।

आलम्बायन-इन्द्रके सखा, आलम्ब गोत्रीय चारुशीर्ष ही आलम्बायन नामसे प्रसिद्ध हुए हैं (अनु० १८ । ५) ।

आवर्तनन्दा-एक तीर्थ, इसका सेवन करनेवाले पुरुषको नन्दनवनमें स्वर्गीय सुख प्राप्त होता है (अनु० २५ । ४५) ।

आवशीर-पूर्वदिशाका एक भारतीय जनपद, जिसे कर्णने दिग्विजयके समय जीता था (वन० २५४ । ९) ।

आवसथ्य-महान् तेजःपुञ्जसे सम्पन्न एक अग्नि (वन० २२१ । ५) ।

आवह-वायुके सात भेदोंमेंसे दूसरा (शान्ति० ३२८ । ३७) ।

आशावह-(१) दिवःपुत्र आदि बारह सूर्योंमेंसे एक (आदि० १ । ४२) । (२) एक वृष्णिवंशी राजकुमार, जो द्रौपदीके स्वयंवरमें उपस्थित था (आदि० १८५ । १९) ।

आश्रमवासपर्व-आश्रमवासिक पर्वका एक अवान्तरपर्व, (१ से २८ अध्याय तक) ।

आश्रमवासिकपर्व-महाभारतका एक पर्व ।

आश्राव्य-इन्द्रसभामें विराजमान होनेवाले एक मुनि (सभा० ७ । १८) ।

आश्वलायन-विश्वामित्रके ब्रह्मवादी पुत्रोंमेंसे एक (अनु० ४ । ५४) ।

आषाढ़-(१) एक क्षत्रिय राजा, जो क्रोधवशसंज्ञक दैत्यके अंशसे उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७ । ५९-६३) । इन्हें पाण्डवोंकी ओरसे रणनिमन्त्रण प्राप्त हुआ था (उद्योग० ४ । १७) । (२) एक मासका नाम । आषाढ़ मासमें एक समय भोजन करनेवाला पुत्र और धन-धान्यसे सम्पन्न होता है (अनु० १०६ । २६) । (३) भगवान् शिवका नाम (अनु० १७ । १२१) । (४) एक नक्षत्रका नाम, पूर्वाषाढ़ा-उत्तराषाढ़ा । इसमें उपवास करके कुलीन ब्राह्मणको दधि दान करनेवाला पुरुष गोधनसम्पन्न कुलमें जन्म पाता है (अनु० ६४ । २५-२६) ।

आसुरायण-विश्वामित्रके एक ब्रह्मवादी पुत्र (अनु० ४ । ५६) ।

आसुरि-एक प्राचीन ऋषि, जो कपिल-सांख्यदर्शनके आचार्य एवं पञ्चशिखके गुरु थे । इन्होंने मुनियोंको ब्रह्मज्ञानका उपदेश दिया था (शान्ति० २१८ । १०-१४) ।

आस्तीक-एक ऋषि, जो यायावर कुलके जरत्कारु ऋषिके पुत्र थे । इनकी माताका नाम भी जरत्कारु था (आदि०

१३ । १०-११; १५ । ३; ४८ । ९-११) । इनका जन्म (आदि० ४८ । १७) । इनका च्यवन मुनिसे अध्ययन (आदि० ४८ । १८)। 'आस्तीक' नाम होनेका कारण (आदि० ४८ । २०)। नागराज वासुकिके भवनमें इनका पालन (आदि० ४८ । २१) । नागराज वासुकिको इनका आश्वासन (आदि० ५४ । १७–२५) । इनका जनमेजयके यज्ञ-मण्डपमें आगमन (आदि० ५४ । २६-२७) । इनके द्वारा यजमान, ऋत्विज आदिकी स्तुति (आदि० ५५ । १–१६) । इनको राजा जनमेजयका वरदान (आदि० ५६ । १७) । आस्तीकका राजासे 'तुम्हारा यज्ञ बंद हो और इसमें सर्प न गिरने पावें' यह वर माँगना (आदि० ५६ । २१–२६) । इनके द्वारा तक्षककी प्राणरक्षा (आदि० ५८ । १–१०) । अश्वमेध-यज्ञमें सदस्य होनेके लिये जनमेजयद्वारा इनसे प्रार्थना (आदि० ५८ । १५-१६) । 'मेरे आख्यानका पाठ करनेवालोंको सर्पोंसे कोई भय न हो'—ऐसा इनका सर्पोंसे वर माँगना (आदि० ५८ । २१) । आस्तीकका व्यासजीकी महत्ता बताते हुए जनमेजयकी प्रशंसा करना (आश्रम० ३६ । १२–१६) । सर्पोंको संकटसे छुड़ाकर आस्तीकका प्रसन्न होना (स्वर्गा० ५ । ३२) ।

आस्तीकपर्व–महाभारतके आदिपर्वका एक अवान्तर पर्व (अध्याय १३ से ५८ तक) ।

आहुक*–यदुवंशी राजा उग्रसेनका नामान्तर (उद्योग० १२८ । ३८-३९; अनु० १४ । ४१) । इनकी पुत्री 'सुतनु' के साथ अक्रूरका विवाह (सभा० १४ । ३३) । आहुकके सौ पुत्र थे (सभा० १४ । ५६) । आहुक और अक्रूरके पारस्परिक वैरसे श्रीकृष्णकी चिन्ता (शान्ति० ८१ । ८–११) । आहुक (उग्रसेन) के आदेशसे नगरमें यह घोषणा की गयी कि द्वारकामें कोई मदिरा न बनावे; जो नशीली वस्तु तैयार करेगा, उसे शूलीपर चढ़ा दिया जायगा (मौसल० १ । २८–३१) ।

आहुति–(१) एक क्षत्रिय, जो जारूथी नगरीमें श्रीकृष्णसे पराजित हुआ था । इसी नगरीमें शिशुपाल आदिकी भी पराजयका उल्लेख मिलता है । (वन० १२ । ३०) । (२) नारायणका एक नाम (शान्ति० ३३८ । ९२) ।

इ

इक्षुमती–कुरुक्षेत्रमें या उसके निकट बहनेवाली एक नदी, जहाँ तक्षक और अश्वसेन—ये दो नाग रहा करते थे (आदि० ३ । १४१) ।

इक्षुला–एक प्रमुख नदी, जिसका जल भारतवर्षके लोग पीते हैं (भीष्म० ९ । १७) ।

इक्ष्वाकु–(१) वैवस्वत मनुके दस पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ७५ । १५; अनु० २ । ५) । एक जापक ब्राह्मणके साथ इनका संवाद (शान्ति० १९९ । ३९–११७) । इनकी सद्गतिका वर्णन (शान्ति० २०० । २६) । इनके द्वारा मांस-भक्षण-निषेध (अनु० ११५ । ६६) । इनके सौ पुत्र थे (अनु० २ । ५) । इनके स्वर्गवासके पश्चात् इन्हींके पुत्र शशाद राजा हुए (वन० २०२ । १) । (२) वैवस्वत मनुके प्रपौत्र एवं क्षुपके पुत्र; इनके भी सौ पुत्र थे, जिनमें सबसे बड़ा विंश था (आश्व० ४ । २–५) । इन्हें अपने पिता क्षुपद्वारा खड्गकी प्राप्ति हुई थी (शान्ति० १६६ । ७३) ।

इध्मवाह–दृढस्युका दूसरा नाम, ये अगस्त्यके पुत्र थे । ये इध्म (समिधा) का भार वहन करनेसे 'इध्मवाह' कहलाये (वन० ९९ । २७) ।

इन्द्र–(१) कश्यपसे उनकी पत्नी अदितिके गर्भसे जो बारह आदित्य उत्पन्न हुए, उनमें इन्द्र प्रमुख हैं (आदि० ६५ । ११–१६; ७५ । १०-११) । ये वज्रधारी, वृत्र-हन्ता, पुरंदर तथा तीनों लोकोंके स्वामी हैं (आदि० ३ । १४८-१४९) । देवश्रेष्ठ और सहस्राक्ष हैं (आदि० २५ । ९–१३) । तक्षकद्वारा अपहृत हुए मदयन्तीके कुण्डलोंकी प्राप्ति करानेमें इन्होंने उत्तङ्ककी सहायता की (आदि० ३ । १३१) । उत्तङ्कद्वारा इनकी स्तुति (आदि० ३ । १४६–१४९) । समुद्रमन्थनसे इन्हें ऐरावतकी प्राप्ति हुई (आदि० १८ । ४०) । कद्रूद्वारा इनकी स्तुति (आदि० २५ । ७–१७) । इनके द्वारा की हुई वर्षासे सर्पोंकी प्रसन्नता (आदि० २६ अ०में) । इनके द्वारा वालखिल्य ऋषियोंका अपमान (आदि० ३१ । १०) । गरुड़के ऊपर इनका वज्रप्रहार और उनसे मित्रता स्थापित करनेकी इच्छा (आदि० ३३ । १८–२५) । इन्द्र और गरुड़की मित्रता (आदि० ३४ । १) । सर्पोंसे छलपूर्वक अमृतका अपहरण (आदि० ३४ । ८–२०) । इन्द्रका तक्षकको आश्वासन (आदि० ५३ । १५–१७) । इनके द्वारा कुन्तीके गर्भसे अर्जुनकी उत्पत्ति (आदि० ६३ । ११६) । इनका ब्राह्मणका रूप धारण करके कर्णसे कवच-कुण्डल माँगना (आदि० ६७ । १४४-१४५) । विश्वामित्रका तप भङ्ग करनेके लिये मेनका अप्सराको भेजना (आदि० ७१ । २१–२६) । वायुका रूप धारण करके इनके द्वारा

---

* कहीं-कहीं 'आहुक' को उग्रसेनका पिता कहा गया है; परंतु महाभारतमें इसका स्पष्ट उल्लेख नहीं मिलता है । इसके विपरीत उद्योग० १२८ । ३८-३९ में आहुक उग्रसेनको एक व्यक्ति बताया गया है ।

जलक्रीड़ा करती हुई देवयानी आदि कन्याओंके वस्त्रोंका सम्मिश्रण (आदि० ७८ । ४) । इनका ययातिके साथ वार्तालाप और उन्हें स्वर्गसे नीचे गिराना (आदि० ८८ । १–५) । पाण्डुद्वारा इन्द्रकी आराधना तथा इन्द्रका उन्हें वरदान (आदि० १२२ । २६-२७) । कुन्तीद्वारा इनका आवाहन तथा इनके द्वारा अर्जुनका जन्म (आदि० १२२ । ३५) । 'जानपदी' नामक अप्सराको भेजकर इनका शरद्वान् ऋषिकी तपस्यामें विघ्न डालना । (आदि० १२९ । ६) । शिवजीद्वारा इनका हिमालयकी गुफामें अवरोध और मनुष्यलोकमें अर्जुनरूपमें जन्म लेनेके लिये इन्हें आदेश (आदि० १९६ । ९–२६) । पाण्डवोंके निवासके लिये खाण्डवप्रस्थमें दिव्यनगरके निर्माणहेतु इनको श्रीकृष्णकी मानसिक प्रेरणा तथा खाण्डवप्रस्थमें दिव्य नगरका निर्माण करनेके लिये इनका विश्वकर्माको आदेश (आदि० २०६।२८ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ५९३) । तिलोत्तमाके रूपसे मोहित होकर इनका सहस्रनेत्र होना (आदि० २१० । २७) । खाण्डववनकी रक्षाके लिये इनका श्रीकृष्ण तथा अर्जुनके साथ युद्ध (आदि० २२६ अ० में) । इनके द्वारा तक्षकके पुत्र अश्वसेनकी रक्षा (आदि० २२६ । ९) । अर्जुनद्वारा इनकी पराजय (आदि० २२७ । २३) । श्रीकृष्ण तथा अर्जुनको इनका वरदान (आदि० २३३ । १०–१२) । नारदजीद्वारा इनकी दिव्य सभाका युधिष्ठिरके प्रति वर्णन (सभा० ७ अ० में) । भगवान् श्रीकृष्णद्वारा इनका मानमर्दन, इनके द्वारा भगवान् श्रीकृष्णका 'गोविन्द' नामकरण (सभा० ३८ । २९ के बाद दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ८०१) । नरकासुरको मारनेके लिये इनकी श्रीकृष्णसे प्रार्थना (पृष्ठ ८०६ दा० पाठ) । इनका सुरभिसे वार्तालाप (वन० ९ । ६–१६) । इनके द्वारा अर्जुनको दिव्यास्त्र देनेकी स्वीकृति (वन० ३७ । ५७-५८) । इनका अर्जुनको स्वर्गमें चलनेका आदेश (वन० ४१ । ४३–४५) । इनके द्वारा चित्रसेनको अर्जुनके लिये संगीतविद्याकी शिक्षा देनेका आदेश (वन० ४४ । ८) । इनका अर्जुनकी प्रसन्नताके लिये चित्रसेनको उर्वशीके पास भेजना (वन० ४५ । २) । उर्वशीके शाप देनेपर इनके द्वारा अर्जुनको आश्वासन (वन० ४६ । ५५–५८) । इनका नर-नारायणकी महिमा बतलाते हुए लोमश मुनिको युधिष्ठिरके पास संदेश देनेके लिये भेजना (आदि० ४७ । ७–३१) । इनका नलद्वारा दमयन्तीको संदेश देना (वन० ५५ । ६) । इनके द्वारा दमयन्ती-स्वयंवरमें राजा नलको वर-प्रदान (वन० ५७ । ३५-३६) । इनका कलियुगको नलके प्रति अन्याय करनेसे रोकना (वन० ५८ । ११-१२) । इनके द्वारा वृत्रासुरका वध (वन० १०१ । १४-१५) । इनका महर्षि च्यवनपर वज्र-प्रहार करनेको उद्यत होना (वन० १२४ । १७) । मदासुरसे डरे हुए इन्द्रका अश्विनीकुमारोंको सोमपानका अधिकारी बनाना (वन० १२५ । २-३) । इनका युवनाश्वकुमार मान्धाताको अँगुली पिलाना (वन० १२६ । ३०; द्रोण० ६२ । ७-८) । इनका बाज बनकर उशीनरसे कबूतरके बराबर तौलकर मांस माँगना (वन० १३१ । २३-२४) । इनके द्वारा राजा उशीनरको वर-प्रदान (वन० १३१ । ३०-३१) । इनका यवक्रीतको वर-प्रदान (वन० १३५ । ४१-४२) । नरकासुरको मारनेके लिये इनकी विष्णुसे प्रार्थना (वन० १४२ । २४) । इनके द्वारा गन्धमादन पर्वतपर युधिष्ठिरको आश्वासन (वन० १६६ । १३-१४) । हिरण्यपुरके विनाशके उपलक्ष्यमें इनके द्वारा अर्जुनका अभिनन्दन (वन० १७३ । ७२–७५) । इनका महर्षि बकसे चिरजीवियोंके सुख-दुःखके विषयमें प्रश्न (वन० १९३ अ० में) । बाजरूपसे राजा शिबिसे वार्तालाप तथा उनसे कबूतरके बराबर मांस माँगना (वन० १९७ । २०) । इनके द्वारा केशी दानवकी पराजय और देवसेनाका उद्धार (वन० २२३ । १५) । देवसेनाके साथ ब्रह्माके पास जाना (वन० २२४ । २१-२२) । स्कन्दद्वारा पराजित होकर इनकी शरणमें जाना (वन० २२७ । १७-१८) । स्कन्दको देवसेनापति-पदपर अभिषिक्त करना (वन० २२९ । २३) । स्कन्दको देवसेनाके साथ पाणिग्रहणके लिये कहना (वन० २२९ । ४८) । रावणके पुत्र इन्द्रजित्से इनकी पराजयकी चर्चा (वन० २८८ । ३) । कर्णसे उसका कवच-कुण्डल माँगना (वन० ३१० । ४) । कर्णको अपनी अमोघ शक्ति देना (वन० ३१० । २३) । त्रिशिराको तपसे डिगानेके लिये अप्सराओंको भेजना (उद्योग० ९ । ९–१२) । इनके द्वारा त्रिशिराका वध (उद्योग० ९ । २२–२४) । त्रिशिराके सिर काटनेके लिये इनके द्वारा बढ़ईको वरदान (उद्योग० ९ । ३७) । त्रिशिराके वधसे लगी हुई ब्रह्महत्याका विभाजन (उद्योग० ९ । ४३ के बाद दाक्षि० पाठ) । इनका वृत्रासुरके मुखसे बाहर निकलना (उद्योग० ९ । ५४) । भगवान् विष्णुके कहनेसे वृत्रासुरके साथ इनकी मैत्री (उद्योग० १० । ३२) । इनके द्वारा वृत्रासुरका वध (उद्योग० १० । ३९) । इनका ब्रह्महत्याके भयसे जलमें छिपना (उद्योग १० । ४६) । इनके द्वारा ब्रह्महत्याका विभाजन (उद्योग० १३ । १९) । इनका प्रकट होकर पुनः नहुषके भयसे अन्तर्धान होना (उद्योग० १३ । २१-२२) । इनका लोकपालोंको उनका अधिकार प्रदान

करना (उद्योग० १६ । ३१–३४) । अगस्त्यजीसे नहुषके पतनका वृत्तान्त पूछना (उद्योग० १७ । ६) । इनका महर्षि अङ्गिराको वरदान (उद्योग० १८ । ७) । स्वर्गमें आकर इन्द्रपदपर प्रतिष्ठित होना (उद्योग० १८ । ९) । मातलिके जामाता नागकुमार सुमुखको भगवान् विष्णुकी आज्ञासे दीर्घायु बनाना (उद्योग० १०४ । २८) । शिवद्वारा दिव्यकवचकी प्राप्ति, उससे सुरक्षित होकर इनका वृत्रको मारना तथा मन्त्र और विधिसहित वह कवच अङ्गिराको देना (द्रोण० ९४ । ६४–६६) । इन्द्रके लिये विश्वकर्माद्वारा विजय नामक धनुषका निर्माण तथा इन्द्रका उसे परशुरामको समर्पण करना (कर्ण० ३१ । ४२–४४) । त्रिपुरोंसे भयभीत होकर इनका देवताओंसहित ब्रह्माके पास जाना (कर्ण० ३३ । ३७–४०) । कर्ण और अर्जुनके द्वैरथ-युद्धमें अर्जुनकी विजयके लिये इनका सूर्यसे विवाद (कर्ण० ८७ । ५७–५९) । इन्द्रके अनुरोधसे ब्रह्मा और शिवजीके द्वारा अर्जुनकी विजय घोषणा (कर्ण० ८७ । ६८–७३) । नमुचिके वधसे संकटमें पड़े हुए इन्द्रका अरुणासङ्गममें स्नान करनेसे उद्धार (शल्य० ४३ । ४३–४५) । इनके द्वारा स्कन्दको 'उत्क्रोश' और 'पञ्चक' नामक दो अनुचर-प्रदान (शल्य० ४५ । ३५-३६) । स्कन्दको शक्ति नामक अस्त्र और घण्टाका दान (शल्य० ४६ । ४४-४५) । इनके द्वारा भरद्वाजकन्या श्रुतावतीकी परीक्षा और उसे वर-प्रदान (शल्य० ४८ । २–५८) । इन्द्रतीर्थमें सौ यज्ञ करनेसे इनका 'शतक्रतु' नाम होना (शल्य० ४९ । २–४) । कुरुक्षेत्रकी भूमि जोतते हुए राजर्षि कुरुके साथ इनका संवाद (शल्य० ५३ । ५–१५) । पक्षीरूपसे आकर इनका तपस्वियोंको गृहस्थ-धर्मका उपदेश (शान्ति० ११ । ११—२६) । इनका रन्तिदेवको वरदान (शान्ति० २९ । १२०-१२१) । बृहस्पतिजीसे समस्त प्राणियोंके लिये प्रिय होनेका उपाय पूछना (शान्ति० ८४ । २) । अम्बरीषके पूछनेपर इनका उनके सेनापति सुदेवकी सद्गतिका कारण बताना (शान्ति० ९८ । ११ के बाद दाक्षि० पाठ से १३ तक) । अम्बरीषके पूछनेपर इन्द्रका उनसे रणयज्ञका वर्णन करना (शान्ति० ९८ । १५—५०) । बृहस्पतिजीसे विजय-प्राप्तिके उपाय पूछना (शान्ति० १०३ । ४-५) । प्रह्लादके पास शीलकी शिक्षाके लिये शिष्यरूपसे निवास और वररूपसे उसकी प्राप्ति (शान्ति० १२४ । २८—६२) । विरूपाक्षको राजधर्माके शापकी कथा सुनाना (शान्ति० १७३ । ८–१०) । राजधर्माके कहनेसे गौतमको जीवन-दान देना (शान्ति० १७३ । १२-१३) । आत्महत्याके लिये उद्यत काश्यपको सियारके रूपमें प्रकट होकर समझाना (शान्ति० १८० अ० में) । प्रह्लादके साथ इनका ज्ञानविषयक संवाद (शान्ति० २२२ । ९—३७) । ब्रह्मासे बलिका पता पूछना (शान्ति० २२३ । ३–७) । बलिपर आक्षेप (शान्ति० २२३ । १४—२५; शान्ति० २२४ । २–४) । लक्ष्मीके साथ संवाद और उनकी सुप्रतिष्ठा (शान्ति० २२५ । ५—२९) । बलिको जीवित चले जानेकी आज्ञा देना (शान्ति० २२५ । ३३–३६) । नमुचिसे उसके श्रीहीन होनेपर भी दुःखित न होनेका कारण पूछना (शान्ति० २२६ । ३) । राजलक्ष्मीसे भ्रष्ट होनेपर भी बलिसे शोक न करनेका कारण पूछना (शान्ति० २२७ । १४—१९) । बलिका उत्तर सुनकर उसकी बातोंका समर्थन और उसे अभय-दान (शान्ति० २२७ । ८९—११६) । नारदजीके साथ लक्ष्मीका दर्शन (शान्ति० २२८ । १६–१८) । असुरोंको त्यागकर आनेके विषयमें लक्ष्मीसे प्रश्न (शान्ति० २२८ । २८) । लक्ष्मीको साथ लेकर अमरावतीमें प्रवेश (शान्ति० २२८ । ८९) । इनके द्वारा अपनी पत्नी अहल्याकी धर्षणाकी गौतमद्वारा चर्चा (शान्ति० २६६ । ४७—५१) । इनका वृत्रासुरके साथ युद्ध और मोहित होना (शान्ति० २८१ । १३—२१) । देवताओं और ऋषियोंके प्रोत्साहनसे इनके द्वारा वृत्रासुरका वध (शान्ति० २८२ । ९) । ब्रह्महत्याके भयसे भागना और कमलनालमें छिपना (शान्ति० २८२ । ११–१८) । ब्रह्माद्वारा इन्हें ब्रह्महत्यासे छुटकारा प्राप्त होना (शान्ति० २८२ । ५६) । अहल्यापर बलात्कारके कारण गौतमके शापसे इन्द्रकी दाढ़ी-मूँछ हरी हो गयी और विश्वामित्रके शापसे इन्हें अपना अण्डकोश खो देना पड़ा, जिससे भेड़के अण्डकोश जोड़े गये (शान्ति० ३४२ । २३) । इन्हें दुहरी ब्रह्महत्या लगी (शान्ति० ३४२ । ४२) । नारदजीसे अद्भुत घटनाके विषयमें इनका प्रश्न करना (शान्ति० ३५२ । ७–९) । एक तोतेके साथ संवाद (अनु० ५ । १३–२८) । राजर्षि भङ्गास्वनको स्त्री बना देना (अनु० १२ । ५–१०) । भङ्गास्वनके दो सौ पुत्रोंमें फूट डालना (अनु० १२ । २९–३१) । भङ्गास्वनपर प्रसन्न होकर वर देना (अनु० १२ । ४२-४३) । मतङ्गको तपस्यासे विरत करनेके प्रसंगमें उसके साथ संवाद (अनु० २७ । २७ से २९ । १२ तक) । मतङ्गको वरदान देना (अनु० २९ । २४-२५) । शम्बरासुरसे व्यवहारके विषयमें प्रश्न (अनु० ३६ । ३) । महर्षि देवशर्माकी पत्नी रुचिको प्रलोभन देना और विपुलद्वारा फटकार पाना (अनु० ४१ । ७–२६) । बृहस्पतिजीसे

उत्तम दानके विषयमें पूछना (अनु० ६२ । ५३)। ब्रह्माजीसे गोलोक और गोदानके विषयमें प्रश्न (अनु० ७२ । ६–१२)। ब्रह्माजीसे दूसरेकी गौका अपहरण करनेके फलके सम्बन्धमें प्रश्न (अनु० ७४ । १)। ब्रह्माजीसे गोलोककी श्रेष्ठताके विषयमें प्रश्न (अनु० ८३ । १३-१४)। कार्तिकेयको भेंट समर्पित करना (अनु० ८६ । २५)। अगस्त्यजीको अपना परिचय देकर कमलकी चोरीका कारण बताना (अनु० ९४ । ४७–४९)। मातलिके पूछनेपर सबके वन्दनीय पुरुषका परिचय देना (अनु० ९६ । २२ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ १७८३)। धृतराष्ट्रके रूपमें इनके द्वारा गौतमनामक ब्राह्मणके हाथीका अपहरण कर लिये जानेपर इनके साथ संवाद (अनु० १०२ । ७–६१) । महर्षि विद्युत्प्रभको पापसे छूटनेका उपाय बताना (अनु० १२५ । ४८–५०)। बृहस्पतिजीसे धर्मके विषयमें जिज्ञासा (अनु० १२५। ५९)। अश्विनीकुमारोंके निमित्त च्यवनके साथ संघर्ष (अनु० १५६ । १६–३१) । पञ्चशिखावाले बालकके रूपमें शिवजीपर वज्र प्रहार करते समय इनकी बाँहका स्तम्भित होना और शिवजीकी कृपासे पुनः इनका संकटमुक्त होना (अनु० १६० । ३३–३६)। बृहस्पतिजीको मरुत्तका यज्ञ करानेसे रोकना (आश्व० ५ । १८–२१)। बृहस्पतिजीसे उनकी चिन्ताका कारण पूछना (आश्व० ९ । १–५)। अग्निको दूत बनाकर मरुत्तके पास संदेश भेजना (आश्व० ९ । ८)। गन्धर्वराज धृतराष्ट्रको दूत बनाकर मरुत्तके पास भेजना (आश्व० १० । २)। मरुत्तपर वज्र-प्रहार करनेको उद्यत होना (आश्व० १० । ८) । मरुत्तके यज्ञमें जाना (आश्व० १० । २०)। यज्ञमण्डपकी व्यवस्था करना (आश्व० १० । २६–३०)। इनके द्वारा शरीरस्थ वृत्रासुरका संहार (आश्व० ११ । १९)। चाण्डालरूपसे उत्तङ्कको अमृत पिलानेके लिये प्रकट होना (आश्व० ५५ । १८-१९)। मुनिके इनकार करनेपर अन्तर्धान होना (आश्व० ५५ । २२)। ब्राह्मणका रूप धारण करके उत्तङ्ककी सहायता करना (आश्व० ५८ । ३२-३३)। उत्तङ्क मुनिके डंडेमें वज्रास्त्रका संयोग करना (आश्व० ५८ । ३५)। इनके द्वारा स्वर्गमें श्रीकृष्णका स्वागत (मौसल० ४ । २८) । इन्द्रका युधिष्ठिरको अपने रथपर बैठकर सदेह स्वर्ग चलनेके लिये कहना और उनके आश्रितवात्सल्यकी परीक्षा करना (महाप्रस्था० ३ । १–२९)। धर्मप्रेरित इन्द्रके द्वारा युधिष्ठिरकी पुनः परीक्षा—देवदूतद्वारा उन्हें मायामय नरकका दर्शन करवाना (स्वर्गा० २ अ०में)।

महाभारतमें आये हुए इन्द्रके नाम—अदितिनन्दन, आखण्डल, अमरश्रेष्ठ, अमराधिप, अमरराज, अमरेश, अमरेश्वर, अमरेन्द्र, अमरोत्तम, असुरार्दन, असुरसूदन, बलभित्, बलहन्, बलहन्ता, बलजित्, बलनाशन, बलनिषूदन, बलसूदन, बलवृत्रघ्न, बलवृत्रहन्, बलवृत्रनिषूदन, बलवृत्रसूदन, भूतभव्येश, शचीपति, शक्र, शम्बरहन्, शम्बरपाकहन्, शतक्रतु, शतमन्यु, दशशताक्ष, दशशतनयन, दशशतेक्षण, दैत्यनिबर्हण, दैत्यासुरनिबर्हण, दानवशत्रु, दानवघ्न, दानवारि, दानवसूदन, देवश्रेष्ठ, देवदेव, देवाधिप, देवगणेश्वर, देवपति, देवराज, देवराट्, देवेश, देवेन्द्र, हरि, हरिश्मश्रु, हरिहय, हरिमान्, हरिवाहन, ईश्वर, जगदीश्वर, काश्यप, कौशिक, किरीटी, कुशिकोत्तम, लोकत्रयेश, लोकेश्वरेश्वर, मघवा, महेन्द्र, मरुत्पति, मरुत्वान्, मुकुटी, नमुचिघ्न, नमुचिहन्, पाकशासन, पर्जन्य, पुरन्दर, पुरुभूत, पूषानुज, पुष्करेक्षण, सहस्रदृक्, सहस्राक्ष, सहस्रलोचन, सहस्रनयन, सहस्रनेत्र, सर्वदानवसूदन, सर्वदेवेश, सर्वलोकामर, सुरश्रेष्ठ, सुराधिप, सुरगणेश्वर, सुरपति, सुरपुङ्गव, सुरराट्, सुरराज, सुरारिहन्, सुरर्षभ, सुरसत्तम, सुरेश, सुरेश्वर, सुरेन्द्र, सुरोत्तम, त्रैलोक्यपति, त्रैलोक्यराज, त्रिभुवनेश्वर, त्रिदशाधिप, त्रिदशाधिपति, त्रिदशेश, त्रिदशेश्वर, त्रिदशेन्द्र, त्रिदिवेश्वर, त्रिलोकराज, त्रिलोकेश, वज्रभृत्, वज्रधर, वज्रधारी, वज्रधृक्, वज्रहस्त, वज्रपाणि, वज्रायुध, वज्री, वरद, वासव, विबुधश्रेष्ठ, विबुधाधिप, विबुधाधिपति, विबुधेश्वर, विश्वभुक्, वृषाकपि, वृत्रशत्रु, वृत्रहन्, वृत्रहन्ता, वृत्रनिषूदन। (२)पाञ्चजन्यद्वारा बलसे प्रकट किया गया 'इन्द्र' नामक अग्नि (वन० २२० । ७)।

इन्द्रकील—हिमालय और गन्धमादनसे आगेका एक पर्वत, जिसका अभिमानी देवता कुबेरका उपासक है (सभा० १० । ३२; वन० ३७ । ४२)।

इन्द्रजित्—राक्षसराज रावणका पुत्र, इसका लक्ष्मणके साथ युद्ध (वन० २८५ । ८)। इसके द्वारा राम-लक्ष्मणका मूर्छित होना (वन० २८८ । २६)। लक्ष्मणद्वारा इसका वध (वन० २८९ । २३)।

इन्द्रतापन—वरुणकी सभामें उनकी उपासना करनेवाला एक दैत्य (सभा० ८ । १५)।

इन्द्रतीर्थ—सरस्वती-तटवर्ती एक तीर्थ, जहाँ इन्द्रने सौ यज्ञोंका अनुष्ठान किया था; इसकी विशेष महिमा (शल्य० ४८ । १८; ४९ । २–५)।

इन्द्रतोया—गन्धमादनपर्वतके निकट बहनेवाली एक नदी, यहाँ स्नान और तीन रात उपवासका फल अश्वमेधका पुण्य (अनु० २५ । ११)।

इन्द्रदमन—एक प्राचीन नरेश । इनके द्वारा ब्राह्मणको धनदान (शान्ति० २३४ । १८)।

इन्द्रद्युम्न–(१) एक असुरभावापन्न नरेश, जो श्रीकृष्ण-द्वारा मारा गया (वन० १२ । ३२) । (२) एक महर्षि (वन० २६ । २२) । (३) राजा जनकके पिता (वन० १३३ । ४) । (४) एक प्राचीन राजर्षि, जो कीर्ति लोप होनेसे स्वर्गसे भूतलपर गिरे और एक चिरजीवी कच्छपद्वारा अपनी कीर्तिका बखान सुनकर पुनः स्वर्गलोकमें जा पहुँचे थे (वन० १९९ अध्याय) ।

इन्द्रद्युम्नसरोवर–(१) गन्धमादन पर्वतके समीपवर्ती सरोवर । यहाँ पत्नियोंसहित पाण्डुका आगमन (आदि० ११८ । ५०) । (२) द्वारकापुरीका एक सरोवर (सभा० ३८ । २९ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ८१६) ।

इन्द्रद्वीप–एक द्वीपका नाम, जिसे पहले सहस्रबाहुने जीतकर अपने अधिकारमें किया था (सभा० ३८ । २९ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ७९२) ।

इन्द्रपर्वत–विदेहदेशवर्ती एक पर्वत (सभा० ३० । १५) ।

इन्द्रप्रस्थ–पाण्डवोंकी राजधानी (वर्तमान दिल्ली) । विश्वकर्माद्वारा इसका निर्माण । इसका 'इन्द्रप्रस्थ' नाम होनेका कारण (आदि० २०६ । २८ के बाद) । व्यास-द्वारा इसके भूभागका शोधन (आदि० २०६ । २९) । इसका विशद वर्णन (आदि० २०६ । २९ के बाद दा० पा०, पृष्ठ ५९५–२०६ । ४९ तक) । (आदिपर्वके २०७, २१८, २२०, २२१ अध्यायोंमें; सभापर्वके १३, २४, ३२, ७३; वनपर्वके ५१, २३३, २३७; विराटपर्वके १८, ५०; उद्योगपर्वके २६, ५५, ९५; भीष्मपर्वके १२१; शान्तिपर्वके १२४ तथा आश्वमेधिकपर्वके १५ अध्यायोंमें भी 'इन्द्रप्रस्थ'का नाम आया है । मौसलपर्व ७ । ७२ में यह कथा आयी है कि अनिरुद्धके पुत्र वज्रको इन्द्रप्रस्थमें यादवोंका राजा बनाया गया था ।)

इन्द्रमार्ग–एक प्राचीन तीर्थ । यहाँके स्नानका फल स्वर्गकी प्राप्ति (अनु० २५ । ९) ।

इन्द्रलोकाभिगमनपर्व–वनपर्वके अन्तर्गत एक अवान्तर पर्व (अध्याय ४२ से ५१ तक) ।

इन्द्रवर्मा–मालवनरेश । पाण्डवपक्षके योद्धा । इनके अश्वत्थामा नामक हाथीका भीमसेनद्वारा वध (द्रोण० १९० । १५) ।

इन्द्रसेन–(१) सोमवंशीय महाराज अविक्षित्के पौत्र एवं परीक्षित्के पुत्र (आदि० ९४ । ५५) । (२) पाण्डवोंका सारथि (सभा० ३३ । ३०) । युधिष्ठिर-की आज्ञासे इन्द्रसेनका द्वारकामें भगवान् श्रीकृष्णको बुलानेके लिये जाना और उनसे चलनेका अनुरोध करना (सभा० १३ । ४१-४२) । इसका पाण्डवोंके साथ वन-गमन (वन० १ । ११) । गन्धमादनजाते समय पाण्डवोंका इन्द्रसेनको पुलिन्दराज सुबाहुके यहाँ छोड़ना(वन० १४० । २७) । इसका धात्रेयिकासे द्रौपदीका समाचार पूछना (वन० २६९ । ११–१५) । इन्द्रसेनको द्वारका जानेका आदेश (विराट० ४ । ३) । इन्द्रसेनका द्वारका-गमन (विराट० ४ । ५८) । उपप्लव्य नगरमें अभिमन्युके विवाहमें जाना (विराट० ७२ । २३) । (३) एक कौरवपक्षका योद्धा (द्रोण० १५६ । १२२) ।(४) इन्द्रसेन (और इन्द्रसेना) निषधनरेश नलके पुत्र और पुत्री, इनकी माता दमयन्ती थी । दमयन्तीद्वारा नलके जुएमें हारनेकी आशङ्का होनेपर वार्ष्णेयसे इन्द्रसेन और इन्द्रसेनाको कुण्डिन-पुर भेजवाना (वन० ६० । १८–२४) । इन दोनोंकी पुनः राजा नलसे भेंट (वन० ७५ । २४) ।

इन्द्रसेना–(१) राजा नलकी पुत्री (देखिये 'इन्द्रसेन और इन्द्रसेना') । (२) नारायणकी कन्या और मुद्गलकी पत्नी, अप्रतिम सुन्दरी होकर भी इसने एक हजार वर्षके बूढ़े पति मुद्गलका अनुसरण किया (वन० ११३ । २४; (विराट० २१ । ११) ।

इन्द्राणी–इन्द्रपत्नी शची (देखिये शची) ।

इन्द्राभ–भरतवंशीय महाराज कुरुके प्रपौत्र एवं धृतराष्ट्रके सातवें पुत्र (आदि० ९४ । ५९) ।

इन्द्रोत–शुनकवंशी ऋषि । राजा जनमेजयको फटकारना (शान्ति० १५० । ९–१९) । राजा जनमेजयसे ब्राह्मणोंके प्रति द्रोह न करनेकी प्रतिज्ञा कराकर उन्हें अपनी शरणमें लेना (शान्ति० १५१ । १०–२१) । राजा जनमेजयको धर्मोपदेश करके उनसे अश्वमेध यज्ञ कराना (शान्ति० १५२ अ०में) ।

इरा–(१) कुबेरकी सेवामें रहनेवाली अप्सरा (सभा० १० । ११) । (२) ब्रह्माके सभाभवनमें उनकी उपासना करनेवाली एक देवी (सभा० ११ । ३९) ।

इरामा–एक महानदी, जिसे मार्कण्डेयजीने भगवान् बाल-मुकुन्दके उदरमें देखा था (वन० १८८ । १०४) ।

इरावती–पञ्चनद प्रदेशकी रावी नदी, जो दिव्यरूप धारण करके अन्य नदियोंके साथ वरुणकी सेवामें उपस्थित होती है (सभा० ९ । १९) । पार्वतीजीने स्त्रीधर्म वर्णन करनेके सम्बन्धमें जिन नदियोंसे सलाह ली थी, उनमें 'इरावती' भी उपस्थित थी (अनु० १४६ । १८) ।

इरावान्–अर्जुनके द्वारा नागकन्या उलूपीके गर्भसे उत्पन्न पुत्र (आदि० २१३ । ३६ के बाद दाक्षिणात्य पाठ) । प्रथम दिनके युद्धमें श्रुतायुष्के साथ इनका

द्वन्द्व-युद्ध (भीष्म० ४५ ।६९–७१) । इनके द्वारा विन्द और अनुविन्दकी पराजय (भीष्म० ८३ । १८–२२) । इनका युद्ध करके शकुनिके पाँच भाइयोंका वध करना (भीष्म० ९० । २७–४६) । अलम्बुषके साथ युद्ध और उसके द्वारा इनका वध (भीष्म० ९० । ५६–७६) ।

इला–(१) वैवस्वत मनुकी पुत्री, पुरुषरूपमें परिणत होनेपर इनका नाम सुद्युम्न हुआ (आदि० ७५ । १६; अनु० १४७ । २६) । [ये दो बार अपने जीवनमें स्त्री होकर पुरुष हुए थे । पहले तो इन्होंने होताओंके दोषसे कन्या होकर ही जन्म लिया था । बादमें वशिष्ठजीकी कृपासे पुरुष हुए और दुबारा इलावृतखण्डमें जाकर महादेवजीके शापसे स्त्री हुए थे । यह कथा श्रीमद्भागवतके नवम स्कन्धमें देखना चाहिये ।] इनके गर्भसे पुरूरवाका जन्म हुआ (फिर ये पुरुष हो गये) । अतः पुरूरवाके पिता और माता दोनों कहे जाते हैं (आदि० ७५ । १८-१९) । इला बुधकी पत्नी और पुरूरवाकी माता थी (अनु० १४७ ।२७) । (२) एक नदी, जिसने कार्तिकेयको फल-फूलकी भेंट अर्पित की थी (अनु० ८६ । २४) । इला नदी सम्बन्धी तीर्थमें युधिष्ठिरने ब्राह्मणोंसहित स्नान किया था (वन० १५६ । ८) ।

इलावृतवर्ष–जम्बूद्वीपका मध्यवर्ती भूभाग (सभा० २८ । ६ के बाद दाक्षिणात्य पाठ) ।

इलास्पद–एक प्राचीन तीर्थ, इसमें स्नान करनेसे दुर्गतिका निवारण तथा वाजपेय यज्ञका पुण्यफल सुलभ होता है (वन० ८३ ।७७–७८) ।

इलिल–एक पुरुवंशी राजा । सम्राट् दुष्यन्तके पिता (आदि० ७१ । ७ के बाद दाक्षिणात्य पाठ) । इनकी भार्याका नाम 'रथन्तर्या' था (आदि० ७४ । १२५ के बाद दाक्षिणात्य पाठ) । दुष्यन्तके पिता तथा माताके ये नाम दाक्षिणात्य पाठके अनुसार दिये गये हैं । उदीच्य पाठके अनुसार इनके पिताका नाम 'ईलिन' और माताका नाम 'रथन्तरी' था (आदि० ९४ । १६–१८) ।

इल्वल–मणिमती नगरीका निवासी एक दैत्य (वन० ९६ । ४) । एक ब्राह्मणसे रुष्ट होनेके कारण यह ब्राह्मणद्रोही होकर छलसे ब्राह्मणोंकी हत्या किया करता था (वन० ९६ । ५–१३) । इसका अगस्त्यजीसे 'मैं कितना धन दान करना चाहता हूँ ?' यह पूछना (वन० ९९ । १३) । इसके द्वारा श्रुतर्वा, ब्रध्नश्व, त्रसदस्यु और अगस्त्यजीको धनका दान (वन० ९९ । १६) । अगस्त्यजीके हुङ्कारसे इसका भस्म होना (वन० ९९ । १७ के बाद दाक्षिणात्य पाठ) ।

इषुपाद–एक दानव । माता 'दनु' । पिता कश्यप (आदि० ६५।२५) । यही विख्यात पराक्रमी राजा नग्नजित्के रूपमें उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७ । २०-२१) ।

ई

ईजिक–एक देश (भीष्म० ९ । ५२) ।

ईरी–यमराजकी सभामें वैवस्वत यमकी उपासना करनेवाले एक सौ 'ईरी' नामवाले नरेश (सभा० ८ । २३) ।

ईलिन–पूरुवंशी महाराज तंसुके पुत्र । इनकी पत्नीका नाम 'रथन्तरी' था । उसके गर्भसे इनके दुष्यन्त, शूर, भीम, प्रवसु तथा वसु नामक पाँच पुत्र हुए थे (आदि० ९४ । १६–१८) ।

ईश–एक विश्वेदेव (अनु० ९१ । ३५) ।

ईशानाध्युषिततीर्थ–एक प्राचीन तीर्थ, जिसके सेवनसे सहस्र कपिलादान और अश्वमेध यज्ञका फल मिलता है (वन० ८४ । ८-९) ।

ईश्वर–(१) ग्यारह रुद्रोंमेंसे एक, ब्रह्माजीके पौत्र एवं स्थाणुके पुत्र (आदि० ६६ । ३) । (२) एक राजा, जो क्रोधवश नामक दैत्योंमेंसे किसीके अंशसे उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७ । ६५) । (३) राजा पूरुके द्वारा पौष्टीके गर्भसे उत्पन्न द्वितीय पुत्र, महारथी (आदि० ९४ । ५) । (४) एक विश्वेदेव (अनु० ९१ । ३७) ।

उ

उक्थ–(१) परावाणीका उत्पादक एक अग्नि, जिसकी त्रिविध उक्थ-मन्त्रोंद्वारा स्तुति की जाती है (वन० २१९ । २५) । (२) सामवेदका एक विशेष भाग ।

उक्षा–ऋषभकन्दका नाम (वन० १९७ । १७) ।

उग्र–(१) धृतराष्ट्रके पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६७ । १०३) । भीमसेनद्वारा इसका वध (भीष्म० ६४ । ३४-३५) । (२) एक यादव राजकुमार, जिसे पाण्डवोंकी ओरसे रणनिमन्त्रण भेजा गया (उद्योग० ४ । १२) । (३) भगवान् शिवका एक नाम (अनु० १७ । १००) । (४) प्रजापति कविके पुत्र । (अनु० ८५ । १३३) । (५) एक वर्णसंकर जाति । क्षत्रिय पुरुष और शूद्रा स्त्रीके संयोगसे उत्पन्न बालक (अनु० १४८ । ७) ।

उग्रक–एक प्रमुख नाग (आदि० ३५ । ७) ।

उग्रकर्मा–(१) शाल्व देशका राजा, जो भीमसेनके द्वारा मारा गया (कर्ण० ५ । ४१) । (२) केकय-राजकुमार विशोकका सेनापति, कर्णद्वारा इसका वध (कर्ण० ८२ । ४-५) ।

उग्रतीर्थ–क्रोधवशसंज्ञक दैत्यके अंशसे प्रकट हुआ एक क्षत्रिय राजा (आदि० ६७ । ६५) ।

उग्रतेजा–(१) भगवान् शिवका एक नाम (अनु० १७ । ५७) । (२) एक श्रेष्ठ नाग, जो बलरामजीके परमधाम पधारनेके समय उनके स्वागतके लिये आया था (मौसल० ४ । १६) ।

उग्रश्रवा–(१) लोमहर्षणपुत्र; सौति; पौराणिक (आदि० १ । १) । (२) धृतराष्ट्रका एक पुत्र (आदि० ६७ । १००) । भीमसेनद्वारा इसका वध (द्रोण० १५७ । १९) ।

उग्रसेन–(१) महाराज जनमेजयका एक भाई, जिसने अपने अन्य दो भाइयोंके साथ सरमा-पुत्रको मारा था (आदि० ३ । १-२) (२) 'मुनि'नामवाली कश्यपकी पत्नीका एक पुत्र, देवगन्धर्व (आदि० ६५ । ४२) । यह अर्जुनका जन्मोत्सव देखने गया था (आदि०१२२ । ५५) । विराटनगरमें अर्जुन और कृपाचार्यका युद्ध देखनेके लिये भी इसने पदार्पण किया था (विराट० ५६ । ११-१२) । (३) एक राजा, जो 'स्वर्भानु' नामक असुरके अंशसे प्रकट हुआ था (आदि०६७ । १२-१३) । (४) (चित्रसेन) धृतराष्ट्रका एक पुत्र (आदि० ६७ । १००) । भीमसेनद्वारा इसका वध (द्रोण० १३७ । २९-३०) । (५) ये वृष्णिवंशके प्रतापी राजा और राजा कुन्तिभोजके फुफेरे भाई थे (आदि० ६७ । १३०; २१६ । ८) । राजा उग्रसेनका दूसरा नाम आहुक था (उद्योग० १२८ । ३८-३९; अनु० १४ । ४१) । इनके मन्त्री वसुदेव थे और पुत्र बलवान् कंस; कंस अपने पिता उग्रसेनको कैद करके मन्त्रियोंके साथ इनका राज्य भोगने लगा (सभा० २२ । ३६ के बाद दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ७३१) । उग्रसेनकी सम्मतिसे श्रीकृष्णने भाइयोंसहित कंसको मारकर पुनः उग्रसेनको ही मथुराके राज्यपर अभिषिक्त किया (सभा० पृष्ठ ७३२) । उग्रसेन और वृष्णिवंशको जरासंधसे सदा क्लेश प्राप्त होता था (सभा० पृष्ठ ७३२) । शाल्वके चढ़ाई करनेपर उग्रसेनके द्वारा नगरकी सुरक्षा (वन० १५ । २३) । श्रीकृष्णसे नारदजीकी पूज्यताके विषयमें प्रश्न (शान्ति० २३० । ३) । साम्बके पेटसे पैदा हुआ मुसल उग्रसेनको दिया गया, उसे देखकर ये दुखी हुए और उसे कुटवाकर चूर्ण बनवाकर इन्होंने समुद्रमें फेंकवा दिया, फिर मद्यनिषेधकी आज्ञा जारी की (मौसल० १ । २७-३०) । उग्रसेन मृत्युके पश्चात् विश्वेदेवोंमें मिल गये थे (स्वर्गा० ५ । १७-१८) । (६) सोमवंशीय राजा अविक्षित्के पौत्र तथा परीक्षित्के पुत्र (आदि० ९४ । ५२-५४) ।

उग्रायुध–(१) धृतराष्ट्रका एक पुत्र (आदि० ६७ । ९९) । यह द्रौपदीके स्वयंवरमें गया था (आदि० १८५ । २) । (२) पाण्डवपक्षीय एक पाञ्चाल योद्धा, कर्णद्वारा घायल (कर्ण० ५६ । ४४) । (३) कौरव-पक्षका एक योद्धा, जो पराक्रमी और आदर्श धनुर्धर था, युद्धक्षेत्रमें मारा गया (शल्य० २ । ३७) । (४) एक दुर्धर्ष चक्रवर्ती नरेश, जिसे भीष्मजीने किसी समय मारा था (शान्ति० २७ । १०) ।

उग्रायुधपुत्र–कौरव-पक्षका एक संशप्तक योद्धा, जिसे अर्जुनने मारा था (कर्ण० १९ । ७) ।

उच्चैःश्रवा–(१) समुद्र-मन्थनके समय समुद्रसे प्रकट हुआ सर्वश्रेष्ठ अश्व, जो देवलोकमें चला गया (आदि० १८ । ३३—३७) । इसके शरीरका रंग कैसा है—इस प्रश्नको लेकर कद्रू एवं विनताका विवाद (आदि० २० । २ से २३ । ३ तक) । (२) पूरुवंशी महाराज कुरुके पौत्र तथा अविक्षित्के छठे पुत्र (आदि० ९४ । ५३) ।

उच्छिख–तक्षककुलमें उत्पन्न एक नाग, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें जल मरा था (आदि० ५७ । ९) ।

उच्छृङ्ग–विन्ध्यद्वारा स्कन्दको दिये गये दो पार्षदोंमेंसे एक, इसका दूसरा साथी अतिश्रृङ्ग था (शल्य० ४५ । ४९) ।

उज्जयन–विश्वामित्रके ब्रह्मवादी पुत्रोंमेंसे एक (अनु० ४ । ५८) ।

उज्जयन्त पर्वत–सौराष्ट्र देश (काठियावाड़) के पिण्डारक क्षेत्रके अन्तर्गत एक महान् सिद्धिदायक पर्वत (वन० ८८ । २१) ।

उज्जानक–मानसरोवरसे आगे गन्धमादनके निकट आर्ष्टिषेणके आश्रमके पासका एक तीर्थभूत सरोवर, इसमें स्नान करनेसे पापोंसे छुटकारा मिलता है (वन० १३० । १७; अनु० २५ । ५५) ।

उज्जालक–मरुप्रदेशमें स्थित बालुकामय समुद्र (वन० २०२ । १६) ।

उण्ड्र (या उड्र)–दक्षिण भारतका एक जनपद, जिसे सहदेवने दूतोंद्वारा जीत लिया था (सभा० ३१ । ७१) ।

युधिष्ठिरके राजसूययज्ञमें उण्ड्रनिवासी भेंट लेकर आये थे (वन० ५१ । २२) ।

उतथ्य–महर्षि अङ्गिराके मध्यम पुत्र (आदि० ६६ । ५) । महाराज मान्धाताको राजधर्मके विषयमें इनका उपदेश (शान्ति० ९० और ९१ अध्यायोंमें) । सोमकी कन्या भद्राके साथ विवाह (अनु० १५४ । १२) । वरुणद्वारा भद्राका अपहरण किये जानेपर इनका सम्पूर्ण जल पी लेना (अनु० १५४ । २२–२८) ।

उत्कल–भारतवर्षका एक जनपद (भीष्म० ९ । ४१) । कर्णने दुर्योधनके लिये इस देशको जीता था (द्रोण० ४ । ८) ।

उत्कोचक–एक प्राचीन तीर्थ, जहाँ महर्षि धौम्य तपस्या करते थे, पाण्डवोंने यहींपर धौम्यमुनिका पुरोहितके रूपमें वरण किया था (आदि० १८२ । २–६) ।

उत्क्राथिनी–स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । १६) ।

उत्क्रोश–इन्द्रद्वारा स्कन्दको दिये गये दो पार्षदोंमेंसे एक, इसके दूसरे साथीका नाम पञ्चक था (शल्य० ४५ । ३५) ।

उत्तङ्क–(१) आयोदधौम्यके तीसरे शिष्य वेदके शिष्य (आदि० ३ । ८३) । इनकी गुरुसेवा (आदि० ३ । ८५) । इनके द्वारा गुरुपत्नीकी अवैध आज्ञाका उल्लङ्घन (आदि० ३ । ८७) । गुरुपत्नीके कहनेपर इनका राजा पौष्यके यहाँसे कुण्डल लानेके लिये जाना (आदि० ३ । ९८) । इनके द्वारा अमृतस्वरूप गोमयका भक्षण (आदि० ३ । १०१) । गुरुपत्नीके लिये राजासे कुण्डलकी याचना (आदि० ३ । १०४) । क्षत्राणीके अन्तःपुरमें उपस्थित न होनेकी बात बताकर इनका राजाको उपालम्भ देना (आदि० ३ । १०६) । फिर आचमन आदिसे शुद्ध होनेपर इनको क्षत्राणीका दर्शन होना और उनसे इनका कुण्डल माँगना (आदि० ३ । १११) । इनका राजा पौष्यको अपवित्र अन्न खिलानेके कारण शाप देना (आदि० ३ । ११६) । पौष्यद्वारा इनको अनपत्य होनेका शाप (आदि० ३ । ११७) । कुण्डल लेकर आते समय इनकी क्षपणकरूपधारी तक्षकसे भेंट तथा उसके द्वारा कुण्डलोंका हरण होना (आदि० ३ । १२७) । इनका क्षपणकका पीछा करना एवं क्षपणकका तक्षकरूपमें प्रकट होकर नागलोकमें जाना (आदि० ३ । १२९-१३०) । नागलोक जाते समय इनकी सहायताके लिये इन्द्रका वज्रको आदेश देना (आदि० ३ । १३१) । नागलोकमें जाकर इनके द्वारा तक्षककी स्तुति (आदि० ३ । १४०) । नागलोकमें वस्त्र बुनती हुई दो स्त्रियों तथा चक्र घुमाते हुए छः कुमारों एवं एक दिव्य पुरुषका इन्हें दर्शन होना तथा इनका उनकी स्तुति करना (आदि० ३ । १४४–१४९) । इनके द्वारा घोड़ेकी गुदा फूँकनेसे आगकी लपटोंका प्रकट होना एवं आगसे भयभीत होकर तक्षकका कुण्डल देना (आदि० ३ । १५१–१५३) । नागलोकमें देखे हुए कुमार आदिके विषयमें इनका गुरुसे पूछना (आदि० ३ । १६३) । बैल और उसपर चढ़े हुए पुरुषके सम्बन्धमें इनकी जिज्ञासा (आदि० ३ । १६५) । गुरुके द्वारा इनके प्रश्नोंका समाधान (आदि० ३ । १६६–१६८) । तक्षकके विनाशहेतु सर्पयज्ञके लिये राजा जनमेजयको सर्पसत्रकी सलाह देना (आदि० ३ । १७८–१८४) । (२) गौतम ऋषिके शिष्य, द्वारका जाते समय मार्गमें श्रीकृष्णसे इनकी भेंट और उनसे कौरवों-पाण्डवोंका समाचार पूछना (आश्व० ५३ । ८–१४) । कुपित होकर इनका श्रीकृष्णको शाप देनेके लिये उद्यत होना (आश्व० ५३ । २०–२२) । श्रीकृष्णसे अध्यात्मतत्त्वका वर्णन करनेके लिये कहना (आश्व० ५४ । १) । शापदानसे निवृत्त होकर इनका श्रीकृष्णसे विश्वरूपका दर्शन करानेके लिये प्रार्थना करना (आश्व० ५५ । १–३) । श्रीकृष्णसे जलके लिये वरदान माँगना (आश्व० ५५ । १३) । श्रीकृष्णका इन्हें उत्तङ्क नामक मेघोंसे जल प्राप्त होनेका वर देना (आश्व० ५५ । ३५–३७) । इनकी उत्कृष्ट गुरुभक्ति (आश्व० ५६ । २–६) । उत्तङ्कका गुरुके लिये काष्ठका बोझ लाना । उस बोझके साथ गिरी हुई सफेद जटा देखकर वृद्धावस्थाका अनुमान करके इनका रोदन, गुरुपुत्रीका इनके आँसुओंको अपने हाथमें लेना और उसका हाथ जलना, गुरुके पूछनेपर 'घर जानेकी आज्ञा न मिलनेसे ही मुझे दुःख हुआ है' यह बताना तथा गुरुका इन्हें आज्ञा लेकर घर जानेका आदेश देना; उत्तङ्कका 'गुरुदक्षिणा क्या दूँ ?' यह पूछना, गुरुका बिना दक्षिणाके ही संतोष व्यक्त करके उन्हें पुत्री देनेकी इच्छा व्यक्त करना तथा उत्तङ्कका षोडशवर्षीय युवक होकर उसका पाणिग्रहण करना (आश्व० ५६ । ७–२४) । इनका गुरुपत्नीसे गुरुदक्षिणा माँगनेका आग्रह और अहल्याका मदयन्तीके कुण्डल माँगना (आश्व० ५६ । २५–२९) । कुण्डल लानेके लिये सौदासके पास जाकर उनके साथ इनका वार्तालाप करना (आश्व० ५७ । ३-१८) । मदयन्तीको राजाका संदेश सुनाकर कुण्डल माँगना (आश्व० ५७ । १९) । राजा सौदाससे रानीके लिये संदेशका प्रमाण माँगना (आश्व० ५८ । १) । मदयन्तीको राजाका संदेश सुनाकर कुण्डल प्राप्त करना (आश्व० ५८ । ३) । सौदासके साथ

पुनः इनकी बातचीत (आश्व० ५८ । ४–१६) । इनके वृक्षपर चढ़कर बेल तोड़कर गिराते समय कुण्डलोंकी चोरी (आश्व० ५८ । २४–२६) । इनका डंडेसे साँपकी बाँबी खोदना (आश्व० ५८ । २७-२८) । इन्द्रकी सहायता-से नागलोकमें पहुँचना (आश्व० ५८ । ३६–३८) । अश्वरूप अग्निकी सहायतासे कुण्डल प्राप्त करना (आश्व० ५८ । ५६) । गुरुपत्नीको कुण्डल देना (आश्व० ५८ । ५८) । इनकी तपस्यासे प्रसन्न होकर भगवान् विष्णुका इन्हें वरदान देना (वन० २०१ । ३०)। इनका अयोध्यानरेश बृहदश्वसे धुन्धुको मारनेके लिये आग्रह करना (वन० २०२ । २२) ।

उत्तमाश्व–भारतवर्षका एक जनपद (भीष्म० ९ । ४१)।

उत्तमौजा–पाण्डवोंका सम्बन्धी । पाञ्चालदेशीय योद्धा (उद्योग० ५७ । ३२) । इनके द्वारा अर्जुनके रथके दाहिने पहियेकी रक्षा (भीष्म० १५ । १९; भीष्म० १९ । २४; भीष्म० ९८ । ४३) । इनके रथके घोड़ोंका वर्णन (द्रोण० २३ । ८) । अङ्गदके साथ इनका युद्ध (द्रोण० २५ । ३८-३९) । कृतवर्माके साथ युद्ध (द्रोण० ९२ । २७–३२) । दुर्योधनके साथ युद्ध करके इनका पराजित होना (द्रोण० १३० । ३०–४३)। कृतवर्मासे इनकी पराजय (कर्ण० ६१ । ५९) । इनके द्वारा कर्णपुत्र सुषेणका वध (कर्ण० ७५ । १३)। अश्वत्थामाद्वारा इनका वध (सौप्तिक० ८ । ३५-३६)। उत्तमौजा आदिका दाह (स्त्री० २६ । ३४) ।

उत्तर–(१) राजा विराटके पुत्र । इनका विराटके साथ द्रौपदी-स्वयंवरमें आना (आदि० १८५ । ८) । इनका दूसरा नाम 'भूमिंजय' था (विराट० ३५ । ९) । इनके पास गोपाध्यक्षका आना और इन्हें युद्धके लिये उत्साहित करना (विराट० ३५ । ९) । इनके द्वारा अपने लिये सारथि ढूँढ़नेका प्रस्ताव (विराट० ३६ । २)। बृहन्नला नामधारी अर्जुनको सारथि बनाकर इनका युद्धके लिये प्रस्थान (विराट० ३७ । २७) । कौरवोंकी सेना देखकर भयभीत हो रथसे कूदकर भागना (विराट० ३८ । २८) । अर्जुनके समझानेपर इनका सारथि बननेको राजी होना (विराट० ३८ । ५१) । शमी-वृक्षसे अर्जुनकी आज्ञाके अनुसार पाण्डवोंके दिव्य धनुष आदि उतारना (विराट० ४१ । ८) । बृहन्नलासे पाण्डवोंके अस्त्रोंके विषयमें प्रश्न करना (विराट० ४२ अध्यायमें) । अर्जुनसे उनके दस नामोंके कारण पृथक्-पृथक् पूछना (विराट० ४४ । १०–१२) । अर्जुनको पहचानकर उनकी शरणमें जाना (विराट० ४४ । २४-२५) । अर्जुनसे उनके नपुंसक होनेका कारण पूछना (विराट० ४५ । १२) । घायल होनेसे हतोत्साह होकर अर्जुनसे सारथ्यके लिये अपनी असमर्थता प्रकट करना (विराट० ६१ । ४–१२) । अर्जुनके आदेशसे कौरव महारथियोंके वस्त्र उतार लेना (विराट० ६६ । १५) । बृहन्नलाको सारथि बनाकर इनका नगर-की ओर प्रस्थान (विराट० ६७ । १४) । उत्तरका नगरमें प्रवेश करके पिता तथा कङ्कके चरणोंमें अभिवादन (विराट० ६८ । ५७) । विराटसे युद्धका समाचार बताना (विराट० ६९ । १–११) । पितासे पाण्डवोंका परिचय देना (विराट० ७१ । १३–१७) । अर्जुनका विशेषरूपसे परिचय देना (विराट० ७१ । १८–२१) । प्रथम दिनके युद्धमें वीरबाहुके साथ द्वन्द्वयुद्ध (भीष्म० ४५ । ७७) । शल्यपर आक्रमण और उनके द्वारा इनका वध (भीष्म० ४७ । ३६–३९) । स्वर्गमें जाकर इनका विश्वेदेवोंमें प्रवेश (स्वर्गा० ५ । १७-१८)। (२) एक राजा, जो अपने बड़ेका अपमान करनेके कारण नष्ट हो गया (सभा० २२ । २४) । (३) एक अग्नि, तीन दिन अग्निहोत्र छूट जानेपर इन्हें अष्टाकपाल चरुकी आहुति देना कर्तव्य (वन० २२१ । २९) । (४) उत्तर भारतका एक जनपद (भीष्म० ९ । ६५) ।

उत्तर उलूक–उत्तर दिशामें स्थित उलूक देश, जिसे अर्जुन-ने जीता था (सभा० २७ । ११) ।

उत्तर कुरु–जम्बूद्वीपका एक वर्ष (खण्ड), जिसकी सीमातक अर्जुन गये थे और वहाँसे करके रूपमें बहुत धन लाये थे । वह भूमि मनुष्योंके लिये अगम्य है (सभा० २८ । ७–२०) । यह उत्तर कुरुवर्ष नील-गिरिसे दक्षिण तथा मेरुगिरिसे उत्तर है । वहाँ सिद्ध पुरुष निवास करते हैं । वहाँके वृक्ष फल-फूलसे सम्पन्न हैं, फूल सुगन्धित, फल मधुर और सरस हैं । 'क्षीरी' नामवाले वृक्ष वहाँ षड्रसयुक्त अमृतमय दूध देते हैं । कुछ वृक्ष मनोवाञ्छित फल देते हैं । 'क्षीर'के फलोंमें इच्छानुसार वस्त्र और आभूषण भी प्रकट होते हैं । वहाँ मणिमयी भूमि और सोनेकी बालुका है । स्वर्गच्युत पुण्यात्मा वहाँ रहते हैं । वहाँके निवासियोंकी आयु ग्यारह हजार वर्षकी होती है । वहाँ भारुण्ड नामक पक्षी होते हैं, जो मृतकोंकी लाशें उठाकर कन्दराओंमें डालते हैं (भीष्म० ७ । २–१३) ।

उत्तर कोसल–एक भारतीय जनपद, जिसे भीमसेनने जीता था (सभा० ३० । ३) ।

उत्तर ज्योतिष–पश्चिमका एक प्राचीन नगर, जिसे नकुल-ने जीता था (सभा० ३२ । ११) ।

उत्तर दिशा–गरुडने गालवके समक्ष उत्तर दिशाका

विस्तारपूर्वक वर्णन किया है (उद्योग० १११ अध्याय)। मूर्तिमती उत्तर दिशाके द्वारा अष्टावक्रका स्वागत (अनु० अध्याय १९ से २१)।

उत्तरपाञ्चाल–एक जनपद, जहाँ पृषत्की मृत्युके बाद द्रुपदको राजा बनाया गया (आदि० १२९ । ४३)। आगे चलकर उत्तरपाञ्चाल एवं उसकी राजधानी अहिच्छत्रापर द्रोणका अधिकार हो गया। यह प्रदेश गङ्गाके उत्तर तटपर था (आदि० १३७ । ७०-७६)।

उत्तरपारियात्र–एक पर्वत, जहाँ अर्जुनके लिये शुभाशंसा की गयी थी (वन० ३१३ । ८)।

उत्तरमानस–एक तीर्थ, यहाँकी यात्रा करनेसे भ्रूणहत्यारा भी पापसे मुक्त हो जाता है (अनु० २५ । ६०)।

उत्तरा–मत्स्यनरेशकी कन्या, अभिमन्युकी पत्नी और परीक्षित्-की माता (आदि० ९५ । ८३-८४)। उत्तराकी शिक्षा-के लिये अर्जुनने अपनेको रखनेका राजा विराटसे अनुरोध किया। विराटने कहा, तुम उत्तराको नृत्यकी शिक्षा दो। फिर अर्जुनने उत्तराको नृत्य-गीत सिखाना आरम्भ किया (विराट० ११ । ८–१२)। उत्तराका बृहन्नलासे उत्तरका सारथि बननेके लिये कहना (विराट० ३७ । ५–१९)। बृहन्नलासे गुड़िया बनानेके लिये कौरवोंके वस्त्र माँगना (विराट० ३७ । २८-२९)। अभिमन्युके साथ उत्तराका विवाह (विराट० ७२ । ३५)। पतिकी मृत्युके शोकसे दुखी होकर मूर्च्छित होना (द्रोण० ७८ । ३७)। श्रीकृष्णद्वारा उसे आश्वासन (द्रोण० ७८ । ४०–४२)। युद्धस्थलमें अभिमन्युको मरा हुआ देखकर विलाप करना (स्त्री० २० । ४–२८)। अभि-मन्युके लिये शोक करना और व्यासजीद्वारा इसका समझाया जाना (आश्व० ६२ । ८–१२)। वनको जाते हुए धृतराष्ट्रके पीछे कुछ दूरतक जानेवाली स्त्रियोंमें उत्तरा भी थी (आश्रम० १५ । १०)।

उत्तरापथ–उत्तर भारत (शान्ति० २०७ । ४३)।

उत्तेजनी–स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । ६)।

उत्पलावन–पंजाबका एक तीर्थ, जहाँ विश्वामित्रने अपने पुत्रके साथ यज्ञ किया था (वन० ८७ । १५)। यहाँ स्नानका फल (अनु० २५ । ३४)।

उत्पलिनी–नैमिषारण्यके समीप बहनेवाली एक नदी, जिसका दर्शन अर्जुनने किया (आदि० २१४ । ६)।

उत्पातक–यहाँ स्नान करके उपवास करनेसे नरमेधके फलकी प्राप्ति होती है (अनु० २५ । ४१)।

उत्सवसंकेत–(१) लुटेरोंके दल, जिनपर अर्जुनने विजय प्राप्त की (सभा० २७ । १६)। (२) दक्षिण दिशाका एक जनपद (भीष्म० ९ । ६१)।

उदपानतीर्थ–सरस्वती नदीके जलमें स्थित एक प्राचीन तीर्थ, इसकी उत्पत्तिकी कथा (शल्य० ३६अध्याय)।

उदयगिरि–एक प्राचीन तीर्थ, जहाँ एक दिन संध्योपासना करनेसे बारह वर्षोंतक संध्योपासना करनेका फल मिलता है (वन० ८४ । ९३)।

उदयाचल–उदयगिरि (द्रोण० १८४ । ४७)।

उदरशाण्डिल्य–इन्द्रसभामें विराजमान एक ऋषि (सभा० ७ । १३)।

उदराक्ष–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ६३)।

उदानवायु–प्राणवायुके पाँच भेदोंमेंसे एक (वन० २१३ । १२)।

उदापेक्षी–विश्वामित्रका एक ब्रह्मवादी पुत्र (अनु० ४ । ५९)।

उद्दालक–एक ऋषि, जो जनमेजयके सर्पसत्रके सदस्य थे (आदि० ५३ । ७)। ये ही आयोदधौम्य ऋषिके शिष्य आरुणि पाञ्चाल हैं, जो आगे चलकर उद्दालक नामसे प्रसिद्ध हुए। ये इन्द्रकी सभामें भी उपस्थित होते थे (सभा० ७ । १२)। उद्दालकके पुत्रका नाम श्वेतकेतु और कन्याका नाम सुजाता था। उद्दालकने अपनी कन्या सुजाताका ब्याह प्रिय शिष्य कहोडसे किया था, जिसके गर्भसे अष्टावक्रका जन्म हुआ था (वन० १३२ । १–९)। उद्दालकके यज्ञमें उनके चिन्तन करनेपर सरस्वती नदीका प्राकट्य हुआ था, उस समय उनकी उस धाराका नाम 'मनोरमा' हुआ था (शल्य० ३८ । २२–२५)। इन्होंने अपने पुत्र श्वेतकेतुको ब्राह्मणोंके प्रति उसके कपटपूर्ण व्यवहारके कारण निकाल दिया था (शान्ति० ५७ । १०)।

उद्दालकि–प्राचीन ऋषि। नाचिकेतके पिता (अनु० ७१ । २-३)। नाचिकेतपर रुष्ट होकर इनका शाप देना (अनु० ७१ । ७)। पुत्रशोकसे संतप्त होकर इनका पृथ्वीपर गिरना (अनु० ७१ । ९)। मरकर जीवित हुए पुत्रसे उसके विषयमें पूछना (अनु० ७१ । १३)।

उद्धव–एक यादव। श्रीकृष्णके सखा एवं मन्त्री। इनका परिचय महाभारतमें इस प्रकार है—उद्धवजी द्रौपदीके स्वयंवरमें पधारे थे (आदि० १८५ । १८)। ये रैवतक-पर्वतके उत्सवमें सम्मिलित थे (आदि० २१८ । ११)। बृहस्पतिके शिष्य महाबुद्धिमान् उद्धवजी सुभद्राके लिये दहेज लेकर इन्द्रप्रस्थमें गये थे (आदि० २२० । ३०)। शाल्वके चढ़ाई करनेपर इनके द्वारा द्वारका नगरीकी

सुरक्षा (वन० १५ । ९)। वृष्णिवंशियोंसे विदा ले उद्धवजी अपने तेजसे पृथ्वी-आकाशको व्याप्त करते हुए प्रभासक्षेत्रसे अन्यत्र चले गये। वृष्णिकुलके भावी विनाशको जाननेवाले भगवान् श्रीकृष्णने उन्हें वहाँ नहीं रोका (मौसल० ३ । ११–१३)।

उद्धव–एक राजा, जिन्हें पाण्डवोंकी ओरसे रण-निमन्त्रण भेजा गया (उद्योग० ४ । २३)।

उद्धस–उद्धसदेशीय योद्धा, जिन्हें साथ लेकर नकुल-सहदेव धृष्टद्युम्ननिर्मित क्रौञ्चव्यूहकी बायीं पाँखके स्थानमें खड़े हुए थे (भीष्म० ५० । ५३)।

उद्भिद्–कुशद्वीपके प्रथम वर्ष (खण्ड) का नाम (भीष्म० १२ । १२)।

उद्योगपर्व–महाभारतका एक प्रधान पर्व।

उद्रपारक–धृतराष्ट्र नागके कुलमें उत्पन्न एक सर्प, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें दग्ध हो गया था (आदि० ५७ । १७)।

उद्वह–(१) क्रोधवशसंज्ञक दैत्यके अंशसे उत्पन्न एक क्षत्रिय राजा (आदि० ६७ । ६४)। (२) वायुके सात भेदोंमेंसे तीसरा (शान्ति० ३२८ । ४०)।

उन्माथ–यमराजद्वारा स्कन्दको दिये गये दो पार्षदोंमें एक। दूसरेका नाम प्रमाथ था (शल्य० ४५ । ३०)।

उन्माद–पार्वतीद्वारा स्कन्दको दिये गये पार्षदोंमेंसे एक (शल्य० ४५ । ५१)।

उन्मुच–दक्षिण दिशामें रहनेवाले एक ब्रह्मर्षि (शान्ति० २०८ । २८)।

उपकीचक–कालेय राक्षसोंके अंशसे उत्पन्न। कीचकके छोटे भाई, कीचकके मारे जानेपर ये द्रौपदीको बाँधकर श्मशानमें ले गये थे। इनकी संख्या १०५ थी, भीमसेन-द्वारा इनका वध (विराट० २३ । ५—२८)।

उपकृष्णक–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ५७)।

उपगहन–महर्षि विश्वामित्रका एक ब्रह्मवादी पुत्र (अनु० ४ । ५६)।

उपगिरि–उत्तर दिशाका एक पर्वतीय जनपद (सभा० २७ । ३)।

उपचित्र–धृतराष्ट्रका एक पुत्र (आदि० ६७ । ९५)। (भीष्म० ५१ । ८ में भी इसका नाम आया है)। भीमसेनद्वारा इसका वध (द्रोण० १३६ । २२)।

उपजला–एक नदी, जहाँ यज्ञ करके उशीनरने इन्द्रसे भी ऊँचा स्थान प्राप्त किया था (वन० १३० । २१)।

उपत्यक–एक भारतीय जनपद, जो पर्वतकी तराईमें स्थित है (भीष्म० ९ । ५५)।

उपनन्द–(१) धृतराष्ट्रका एक पुत्र (आदि० ६७ । ९६)। भीमसेनद्वारा इसका वध (कर्ण० ५१ । १९)। (२) नागलोकका एक नाग (उद्योग० १०३ । १२)। (३) स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ६४)।

उपप्लव्य–विराट-राज्यका एक उपनगर, जो राजधानीके पास ही था; यहाँ अज्ञातवासके बाद पाण्डवोंने निवास किया था (विराट० ७२ । १४)। (इसका नाम अनेक बार आया है।)

उपमन्यु–(१) आयोदधौम्य ऋषिके शिष्य (आदि० ३ । २२—३३)। इनकी गुरुभक्ति (आदि० ३ । ३५—४९)। इनका आकके पत्ते खानेसे अन्धा होकर कुएँमें गिरना और गुरुकी आज्ञासे इनके द्वारा अश्विनी-कुमारोंकी स्तुति (आदि० ३ । ५०—६८)। इनको अश्विनीकुमारका वरदान (आदि० ३ । ७३)। इनको गुरुदेवका आशीर्वाद (आदि० ३ । ७६-७७)। (२) सत्ययुगके महायशस्वी ऋषि। व्याघ्रपादके पुत्र। धौम्यके बड़े भाई (अनु० १४ । ११-१२; अनु० १४ । ५५)। इनके आश्रमका वर्णन (अनु० १४ । ४५—६३)। श्रीकृष्णका इन्हें प्रणाम करना और उपमन्युका उन्हें पुत्र-प्राप्तिका विश्वास दिलाते हुए महादेवजीकी आराधनाके लिये कहना एवं शिवजीकी महिमा बताना (अनु० १४ । ६४—११०)। इन्होंने बाल्यकालमें मातासे दूध-भात माँगा, माँने आटा घोलकर दोनों भाइयोंको दूधके नाम-पर दे दिया। फिर इन्होंने पिताके साथ किसी यजमानके यहाँ जाकर दूधका स्वाद चखा और घर आकर माँसे कहा, 'तुमने जो दूध कहकर दिया, वह दूध नहीं था।' माँने कहा, 'भगवान् शिवकी कृपाके बिना दूध-भात कहाँ?' उन्होंने पूछा, 'महादेवजी कौन हैं?' फिर माताने उनकी महिमा बतायी; जिससे वे शिवाराधनामें प्रवृत्त हुए (अनु० १४ । ११५—१६७)। इनकी तपस्या, शिव-भक्ति, स्तुति-प्रार्थना, शिवदर्शन और वरप्राप्ति (अनु० १४ । १६८—३७७)। इनका श्रीकृष्णसे तण्डिद्वारा की गयी शिव-स्तुतिका वर्णन (अनु० १६ अध्यायमें)। इनके द्वारा श्रीकृष्णसे शिवसहस्रनामस्तोत्रका वर्णन (अनु० १७ अध्यायमें)।

उपयाज–परम शान्त, ब्रह्माके तुल्य प्रभावशाली, संहिताके स्वाध्यायमें तत्पर, कश्यप गोत्रमें उत्पन्न, सूर्यदेवके भक्त एवं सुयोग्य एक श्रेष्ठ महर्षि, जो याजके छोटे भाई थे (आदि० १६६ । ७–१०)। द्रोणविनाशक पुत्रकी प्राप्तिके लिये इनसे द्रुपदकी प्रार्थना और एक अर्बुद धेनु-का प्रलोभन (आदि० १६६ । १०–१२)। इनका द्रुपदकी प्रार्थनाको अस्वीकार करना और अपनी अभीष्ट-

सिद्धिके हेतु याजके समीप जानेके लिये उन्हें आदेश देना (आदि० १६६ । १३–२०) । इनके द्वारा याजकी हीन वृत्तिका वर्णन (आदि० १६६ । १५–१९) । द्रोणविनाशक पुत्रेष्टि-यज्ञमें सहयोग देनेके लिये इनको याजकी प्रेरणा (आदि० १६६ । ३२) । (याज और) उपयाजकी तपस्यासे द्रुपदको द्रौपदी एवं धृष्टद्युम्नकी प्राप्ति (सभा० ८० । ४५) ।

उपरिचरवसु–एक प्राचीन पुरुवंशी राजा, जो नित्य धर्मपरायण थे (आदि० ६३ । १) । इन्द्रकी आज्ञासे उन्होंने चेदिदेशका राज्य स्वीकार किया (आदि० ६२ । २) । इन्द्रके द्वारा इनके प्रति चेदिदेशकी प्रशंसा (आदि० ६३ । ८–११) । देवराजद्वारा इन्हें सर्वज्ञ होनेका वरदान (आदि० ६३ । १२) । इनको देवेन्द्रके द्वारा दिव्य विमान, बाँसकी छड़ी एवं वैजयन्तीमालाकी भेंट (आदि० ६३ । १३–१७) । इनका बाँसकी छड़ीको धरतीमें गाड़कर इन्द्रपूजाकी प्रथा चलाना (आदि० ६३ । १८-१९) । हंसका स्वरूप धारण करके इन्द्रका इनकी की हुई पूजा ग्रहण करना एवं अपनी पूजाका महत्त्व बतलाना (आदि० ६३ । २२–२५) । उपरिचरवसुने चेदिदेशमें ही रहकर इस पृथ्वीका धर्मपूर्वक पालन किया (आदि० ६३ । २८) । इनके बृहद्रथ, प्रत्यग्रह, कुशाम्बु, मावेल्ल तथा यदु नामके पाँच पुत्र थे (आदि० ६३ । ३०-३१) । इनका 'उपरिचर' नाम होनेका कारण (आदि० ६३ । ३४) । इनकी राजधानीके समीप प्रसिद्ध नदी 'शुक्तिमती' बहती थी (आदि० ६३ । ३५) । इनके द्वारा 'कोलाहल' पर्वतपर पैरसे प्रहार (आदि० ६३ । ३६) । इनके द्वारा शुक्तिमतीकी पुत्री 'गिरिका' का पाणिग्रहण (आदि० ६३ । ३९) । पितरोंकी आज्ञाका पालन करनेके लिये हिंसक पशुओंको मारनेके हेतु इनका वनमें जाना (आदि० ६३ । ४१-४२) । श्येनपक्षीके द्वारा अपनी पत्नी गिरिकाके लिये इनके द्वारा अपना वीर्य भेजना (आदि० ६३ । ५४) । बाजोंके पारस्परिक युद्धसे इनके वीर्यका यमुनाजीमें गिर जाना (आदि० ६३ । ५८) । यमुनाजीमें गिरे हुए इनके वीर्यसे मत्स्यरूपधारिणी 'अद्रिका' नामक अप्सराद्वारा 'सत्यवती' एवं 'मत्स्य' राजाका जन्म (आदि० ६३ । ५८–६१) । मछलीके पेटसे उत्पन्न हुए 'मत्स्य' नामक बालकका इनके द्वारा ग्रहण एवं सत्यवतीको मल्लाहके हाथमें सौंपना (आदि० ६३ । ६३–६७) । यमकी सभामें ये विराजमान होते हैं (सभा० ८ । २०) । ये इन्द्रके सखा, नारायणके भक्त, धर्मात्मा, पितृभक्त तथा आलस्यरहित थे, श्रीनारायणदेवके वरसे इन्हें साम्राज्य प्राप्त हुआ था, ये वैष्णवशास्त्रके अनुसार भगवान्का पूजन करते थे, यज्ञशिष्ट अन्नके भोक्ता, सत्यपरायण और अहिंसक थे, इन्होंने सब कुछ भगवान्को समर्पित कर दिया था । इन्हें इन्द्रदेव अपने साथ एक शय्या और आसनपर बिठाते थे (शान्ति० ३३५ । १७–२६) । इनके यज्ञका आरम्भ (शान्ति० ३३६ । ५) । इनके यज्ञकी समाप्ति (शान्ति० ३३६ । ६१) । अजका अर्थ बकरा बतानेके कारण ऋषियोंके शापसे इनका पातालमें प्रवेश (शान्ति० ३३७ । १३–१६) । देवताओंद्वारा इन्हें वर-प्राप्ति (शान्ति० ३३७ । २४–२७) । भगवत्कृपासे गरुडने इन्हें आकाशचारी बनाया (शान्ति० ३३७ । ३७) । इनका ब्रह्मलोकगमन (शान्ति० ३३७ । ३८) ।

उपवेणा–एक नदी, जो अग्निकी जननी मानी जाती है (किसी-किसीके मतमें यह सम्भवतः दक्षिणभारतकी कृष्णवेणा या कृष्णा नामक नदीकी एक शाखा है ।) (वन० २२२ । २४) ।

उपश्रुति–उत्तरायणकी अधिष्ठात्री देवी । इन्होंने ही कमलनालकी ग्रन्थिमें इन्द्राणीको इन्द्रका दर्शन कराया था (आदि० १६६ । ५६ के बाद दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ४८३) । इनकी सहायतासे शचीकी इन्द्रसे भेंट (उद्योग० १४ । १२-१३) ।

उपसुन्द–निकुम्भ दैत्यका पुत्र । सुन्दका भाई । ये दोनों भयंकर और क्रूर हृदयके थे (आदि० २०८ । २-३) । इन दोनों भाइयोंके पारस्परिक प्रेमका वर्णन (आदि० २०८ । ४–६) । त्रिभुवनपर विजय पानेके लिये विन्ध्यपर्वतपर इन दोनोंकी उग्र तपस्या (आदि० २०८ । ७) । इनकी तपस्यामें देवताओंका विघ्न डालना (आदि० २०८ । ११) । इन दोनोंको अपने भाईके अतिरिक्त किसी दूसरेसे न मरनेका ब्रह्माजीद्वारा वरदान (आदि० २०८ । २४-२५) । त्रिभुवनमें इन दोनोंके अत्याचार (आदि० २०९ अध्याय) । तिलोत्तमाके कारण इन दोनों भाइयोंकी एक-दूसरेके हाथसे गदायुद्धमें मृत्यु (आदि० २११ । १९) ।

उपावृत्त–भारतवर्षका एक जनपद (भीष्म० ९ । ४८) ।

उपेन्द्र–भगवान् विष्णुका एक नाम (अनु० १४९ । ३०) ।

उपेन्द्रा–एक नदी, जिसका जल भारतके लोग पीते हैं (भीष्म० ९ । २७) ।

उमा–पार्वती देवी (वन० ३७ । ३३) । (विशेष 'पार्वती' शब्द देखिये ।)

उम्लोचा–एक अप्सरा, जो अर्जुनके जन्म-महोत्सवपर अन्य अप्सराओंके साथ नाचने-गाने आयी थी (आदि० १२२ । ६५) ।

उरग–एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९।५४)।

उरगा–उत्तर भारतकी एक पर्वतीय राजधानी, जहाँके राजा रोचमानको अर्जुनने परास्त किया था (सभा० २७ । १९)।

उर्वरा–कुबेरभवनकी एक अप्सरा, जिसने अन्य नर्तकियोंके साथ अष्टावक्रके स्वागतमें नृत्य किया था (अनु० १९। ४४)।

उर्वशी– (१) एक प्रसिद्ध सर्वश्रेष्ठ अप्सरा (आदि० ७४ । ६८; वन० ४३ । २९) । उर्वशीके गर्भसे राजा पुरूरवाद्वारा छः पुत्र उत्पन्न हुए–आयु, धीमान्, अमावसु, दृढायु, वनायु और शतायु (आदि० ७५। २४-२५) । यह स्वर्गकी विख्यात ग्यारह अप्सराओंमें ग्यारहवीं है, जिसने अर्जुनके जन्मोत्सवपर गीत गाया था (आदि० १२२ । ६६) । कुबेरकी सभामें नृत्य-गान करनेवाली अप्सराओंमें यह भी है (सभा० १० । ११) इसकी अर्जुनके पास जानेके लिये चित्रसेनसे बात (वन० ४५ । १४-१६) । इसका कामपीड़ित होकर अर्जुनके पास पहुँचना (वन० ४६। १६) । उर्वशीका अर्जुन-के निकट अपने आनेका कारण बताना और अपनी काम-विवशता प्रकट करना (वन० ४६। २२–३५)। 'स्वर्गकी अप्सराओंका किसीके साथ पर्दा नहीं है, उनके साथ सम्पर्कसे दोष नहीं होता' ऐसा कहकर उर्वशीका अर्जुनसे समागमके लिये प्रार्थना करना (वन० ४६। ४२-४४) । कामनापूर्ति न होनेपर इसके द्वारा अर्जुनको शाप (वन० ४६ । ४९-५०) । शुकदेवजीकी परमपद-प्राप्तिके समय आश्चर्यचकित होना (शान्ति० ३३२। २१–२४) । (२) भगीरथके ऊरुपर बैठनेके कारण गङ्गाजीका एक नाम (द्रोण०६० । ६)।

उर्वशीतीर्थ–एक तीर्थ, जिसकी यात्रा करके मनुष्य इस भूतलपर पूजित होता है (वन० ८४ । १५७)। यहाँ स्नानका फल (अनु० २५ । ४६)।

उर्वी–पृथ्वीका नाम, यह नाम पड़नेका कारण (शान्ति० २०८ । २८)।

उलूक– (१) शकुनिका पुत्र (उद्योग० ५७ । २३)। यह द्रौपदीके स्वयंवरमें गया था (आदि० १८२। २२) । दुर्योधनके कहनेसे पाण्डवोंके शिविरमें जाकर भरी सभामें दुर्योधनका संदेश सुनाना (उद्योग० १६१ अ० में) । दुर्योधनको पाण्डवोंके संदेश सुनाना (उद्योग० १६३ । ५१–५३) । प्रथम दिनके युद्धमें चेदिराजके साथ इसका द्वन्द्वयुद्ध (भीष्म० ४५। ७८–८०) । सहदेवका इसपर आक्रमण (भीष्म० ७२। ५) । अर्जुनद्वारा इसकी पराजय (द्रोण० १७१। ४०) । द्रोणाचार्यके मारे जानेपर युद्धस्थलसे भागना (द्रोण० १९३। १४) । इसके द्वारा युयुत्सुकी पराजय (कर्ण० २५ । ९–११) । सहदेवद्वारा इसकी पराजय (कर्ण० ६१ । ४३-४४) । नकुलके साथ इसका युद्ध (शल्य० २२। २८-२९) । सहदेवके द्वारा इसका वध (शल्य० २८ । ३२-३३) । **महाभारतमें आये हुए इसके नामान्तर**—शाकुनि, कैतव, सौबलसुत और कैतव्य । (२) एक यक्ष (या नाग), जिसके साथ गरुडने युद्ध किया था (आदि० ३२। १८-१९)। (३) उत्तरभारतका एक जनपद, जिसके राजा बृहन्त-को अर्जुनने परास्त किया था (सभा०२७। ५)। (४) एक प्राचीन ऋषि, जो विश्वामित्रके पुत्र हैं (अनु० ४ । ५१) । ये शरशय्यापर पड़े हुए भीष्मके पास आये थे (शान्ति० ४७ । ११)।

उलूकदूतागमनपर्व–उद्योगपर्वका एक अवान्तरपर्व(अध्याय १६० से १६४ तक)।

उलूकाश्रम–एक तीर्थ (उद्योग० १८६ । २६)।

उलूत–एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ५४)।

उलूपी–ऐरावत-कुलोत्पन्न कौरव्य नागकी पुत्री (आदि० २१३ । १२) । इसके द्वारा अर्जुनका हरिद्वारसे नाग-लोकमें आकर्षण (आदि० २१३। १३) । अर्जुन-द्वारा इसके गर्भसे इरावान्का जन्म(आदि० २१३ । ३६ के बाद दाक्षिणात्य पाठ) । इसका बभ्रुवाहनको अर्जुनसे युद्ध करनेके लिये उत्साहित एवं उत्तेजित करना (आश्व० ७९ । ११-१२) । संजीवन मणिके द्वारा अर्जुनको जिलाना (आश्व० ८० । ५०–५२) । अर्जुनके पूछने-पर युद्धमें अपने आनेका कारण बताकर उनको मिले हुए शाप और उससे छूटनेका वृत्तान्त बताना तथा उससे विदा लेकर अर्जुनका अश्वके पीछे जाना (आश्व० ८१ अ० में) । बभ्रुवाहन और चित्राङ्गदाके साथ इसका हस्तिनापुर आगमन (आश्व० ८७। २६-२७) । इसके द्वारा कुन्ती और द्रौपदीके चरण छूना, सुभद्रासे मिलना तथा नाना प्रकारके उपहार पाना (आश्व० ८८। १–५) । इसके द्वारा गान्धारीकी सेवा (आश्रम० १। २३) । यह प्रजाके साथ प्रतिकूल बर्ताव नहीं करेगी–ऐसा प्रजाजनोंका विश्वास (आश्रम० १० । ४६)। संजयका ऋषियोंसे इसका परिचय देना (आश्रम०२५। ११) । पाण्डवोंके महाप्रस्थानके पश्चात् उलूपीका गङ्गा-जीमें प्रवेश (महाप्र० १ । २७) । **महाभारतमें आये हुए उलूपीके नाम**––भुजगात्मजा, भुजगेन्द्रकन्या, भुजगोत्तमा, कौरवी, कौरव्यदुहिता, कौरव्यकुलनन्दिनी, पन्नगनन्दिनी, पन्नगसुता, पन्नगात्मजा, पन्नगेश्वरकन्या, पन्नगी, उरगात्मजा ।

उल्मुक-एक वृष्णिवंशी महारथी राजकुमार, जो युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें आया था (सभा० ३४ । १६) । प्रभास-क्षेत्रमें पाण्डवोंसे मिलनेके लिये आये हुए वृष्णिवंशियोंमें उल्मुक भी थे (वन० १२० । १९) । धृतराष्ट्रको युद्धमें उल्मुक आदि वृष्णिवंशी वीरोंके आनेकी सम्भावना-से भय (द्रोण० ११ । २८) ।

उशङ्गव-यमराजकी सभामें बैठनेवाले एक राजा (सभा० ८ । २६) ।

उशना-महर्षि (भृगु) के पुत्र शुक्राचार्य, ये असुरोंके उपाध्याय थे । इनका एक नाम उशना भी है (आदि० ६५ । ३६) । (विशेष देखिये शुक्र ।)

उशीनर-(१) एक वृष्णिवंशी एवं पराक्रमी राजकुमार, जो द्रौपदीके स्वयंवरमें गया था (आदि० १८५ । २०) । (२) शिबिदेशके राजा, ये यम-सभाके सदस्य हैं (सभा० ८ । १४) । इनका बाजरूपी इन्द्रको अग्निरूपी कबूतर-की रक्षाके लिये अपना मांस काटकर देना (वन० १३० । २१ से १३१ । २८ तक) । इन्द्र और अग्निद्वारा राजाका अभिनन्दन (वन० १३१ । ३०-३१) । इनका स्वर्गगमन (वन० १३१ । ३२-३३) । इनका गालवको शुल्करूपमें दो सौ घोड़े देकर ययातिकन्या माधवीको स्वीकार करना (उद्योग० ११८ । १५) । इनको महाराज शुनकसे खड्गकी प्राप्ति (शान्ति० १६६ । ७९) । ये शरणागतवत्सल शिबिके पिता थे । माधवीके गर्भसे शिबि नामक पुत्रकी प्राप्ति (उद्योग० ११८ । २०) । इन्हें गोदानसे स्वर्गकी प्राप्ति हुई (अनु० ७६ । २५) । (३) काशिराज वृषादर्भि, इनकी शरणागतरक्षाके प्रसङ्गमें कबूतर और बाजकी कथा (अनु० ३२ अ०में) । ये उशीनर और वृषादर्भि दोनों नामोंसे विख्यात थे और काशी जनपदके राजा थे (अनु० ३२ । २२-३७) । (४) एक देश, जहाँके निवासी सैनिक अर्जुनके द्वारा मारे गये थे (कर्ण० ५। ४७) । इस देशके वीर सब प्रकारके अस्त्र-शस्त्रोंमें कुशल और बलशाली होते हैं (शान्ति० १०१ । ४) । उशीनर देशके क्षत्रिय ब्राह्मणोंकी कृपादृष्टिसे वञ्चित होनेके कारण शूद्र हो गये (अनु० ३३ । २२-२३) ।

उशीरबीज-(१) उत्तराखण्डका एक पर्वत (वन० १३९ । १) । (२) हिमालयके पास उत्तर दिशाका स्थानविशेष, जहाँ महाराज मरुत्तका यज्ञ हुआ था (उद्योग० १११ । २३) ।

उषा-बाणासुरकी पुत्री, इसके साथ गुप्तरूपसे अनिरुद्धका विहार, बाणासुरद्वारा अनिरुद्धका निग्रह तथा श्रीकृष्ण-द्वारा बाणासुरको जीतकर अनिरुद्ध एवं उषाका द्वारका आनयन (सभा० ३८ । २९ के बाद दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ८२१ से ८२४ तक) ।

उषङ्गु-(१) पश्चिम दिशामें निवास करनेवाले एक ऋषि (शान्ति० २०८ । ३०) । (२) भगवान् शिवका एक नाम (अनु० १७ । १०५) । (३) यदुवंशी वृजिनीवान्के पुत्र । चित्ररथके पिता (अनु० १४७।२९)।

उष्ट्रकर्णिक-दक्षिण भारतका एक जनपद, जिसे सहदेवने दूतोंद्वारा ही वशमें कर लिया था (सभा० ३१ । ७१) ।

उष्णदेश-क्रौञ्चद्वीपके अन्तर्गत क्रौञ्चपर्वतके निकट मनोनुग देशके बाद स्थित एक देश (भीष्म० १२ । २१) ।

उष्णीगङ्ग-एक प्राचीन तीर्थ (वन० १३५ । ७) ।

उष्णीनाभ-एक विश्वेदेव (अनु० ९१ । ३४) ।

ऊ

ऊर्जयोनि-विश्वामित्रके ब्रह्मवादी पुत्रोंमेंसे एक (अनु० ४ । ५९) ।

ऊर्णनाभ (**सुदर्शन**)-धृतराष्ट्रका एक पुत्र (आदि० ६७ । ९६) । भीमसेनद्वारा इसका वध (द्रोण० १२७ । ६७) ।

ऊर्णायु-एक देवगन्धर्व, जो अर्जुनके जन्मोत्सवमें आया था (आदि० १२२ । ५५) । इसका मेनकाके प्रति अनुराग (उद्योग० ११७ । १६) ।

ऊर्ध्वबाहु-दक्षिण दिशामें निवास करनेवाले एक ऋषि, जो धर्मराजके ऋत्विज हैं (अनु० १५० । ३४-३५; अनु० १६५ । ४०) ।

ऊर्ध्वभाक्-एक अग्नि, जो बृहस्पतिके पञ्चम पुत्र हैं (वन० २१९ । २०) ।

ऊर्ध्वरेता-एक महर्षि, जो युधिष्ठिरका बड़ा सम्मान करते थे (वन० २६ । २४) ।

ऊर्ध्ववेणीधरा-स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । १८) ।

ऊर्व (**और्व**)-एक तेजस्वी भृगुवंशी ऋषि, जिन्होंने त्रिलोकीके नाशके लिये एक भयंकर अग्निकी सृष्टि की और उसे समुद्रमें डालकर बुझा दिया । ये च्यवनके पुत्र और ऋचीकके पिता थे (अनु० ५६ । १-७) ।

ऊष्मप-पितरोंका एक गण, जो यमसभामें यमराजकी उपासना करता है (सभा० ८ । ३०) ।

ऊष्मा-पाञ्चजन्य नामक अग्निके पुत्र (वन० २२१ । ४) ।

ऋ

ऋक्ष (१)-महाराज अजमीढके द्वारा धूमिनीके गर्भसे उत्पन्न । इनके पुत्रका नाम संवरण था, जो कुरुवंशमें

प्रसिद्ध राजा हुए हैं (आदि० ९४ । ३१-३४)। (२) पूरुवंशीय राजा अरिहके द्वारा सुदेवाके गर्भसे उत्पन्न। इनकी पत्नीका नाम 'ज्वाला' एवं पुत्रका नाम 'मतिनार' था (आदि० ९५ । २४–२५)।

ऋक्षदेव–शिखण्डीका पुत्र, इसके घोड़े सफेद और लाल रंगके सम्मिश्रणसे पद्मके समान वर्णवाले थे (द्रोण० २३ । २४-२५)।

ऋक्षवान्–भारतवर्षके सात कुलपर्वतोंमेंसे एक (भीष्म० ९ । ११; वन० ६१ । २१)।

ऋक्षा–सोमवंशीय महाराज अजमीढकी पत्नी (आदि० ९५ । ३७)।

ऋक्षाम्बिका–स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६।१२)।

ऋचीक–(१)-एक महर्षि, जो भृगुकुमार च्यवनके पुत्र थे (वन० ९९ । ४२)। ये ही कल्पान्तरमें ही और्वके पुत्र हुए, ये जमदग्निके पिता थे (आदि० ६६ । ४५–४७)। इन्होंने शुल्करूपमें महाराज गाधिको देनेके लिये वरुणसे एक हजार अश्वोंकी याचना की थी (वन० ११५ । २६–२७)। इनका सत्यवतीके साथ विवाह (वन० ११५ । २९)। इनका परशुरामको क्षत्रियोंके वधसे रोकना (वन० ११७ । १०; आश्व० २९ । २०)। इनका वरुणसे माँगकर सत्यवतीके शुल्करूपमें गाधिको एक हजार श्यामकर्ण घोड़े देना (उद्योग० ११९ । ५-६)। गाधिपुत्री सत्यवतीके साथ इनका विवाह (शान्ति० ४९ । ७)। इनका पुत्रोत्पत्तिके लिये चरु देना (शान्ति० ४९ । ९)। माताके साथ चरुके उलट-फेर हो जानेपर अपनी पत्नी सत्यवतीके साथ संवाद (शान्ति० ४९ । १८–२८)। विश्वामित्रके जन्मप्रसंगमें पुनः इस कथाका वर्णन (अनु० ४ अ०में)। ऋचीकको शाल्वराज द्युतिमान्से राज्यका दान प्राप्त हुआ था (अनु० १३७ । २३)। (२) विवस्वान्के स्वरूपभूत बारह सूर्योंमेंसे एक (आदि० १ । ४२)। (३) सम्राट् भरतके पौत्र एवं भुमन्युके पुत्र (आदि० ९४ । २४)।

ऋचेयु–पूरुके तीसरे पुत्र रौद्राश्वके द्वारा मिश्रकेशी अप्सराके गर्भसे उत्पन्न प्रथम पुत्र (आदि० ९४ । १०)। अन्वग्भानु तथा अनाधृष्टि भी इन्हींके नाम थे, ये महान् विद्वान् तथा चक्रवर्ती सम्राट् थे, इनके पुत्रका नाम 'मतिनार' था (आदि० ९४ । ११–१३)।

ऋण–चार प्रकारके ऋण (आदि० ११९ । १७)। इन ऋणोंके निराकरणकी आवश्यकता (आदि० ११९ । १८–२०)।

ऋत–ग्यारह रुद्रोंमेंसे एक (अनु० १५० । १२)।

ऋतधामा–भगवान् श्रीकृष्णका एक नाम (शान्ति० ३४२ । ६९)।

ऋतुपर्ण–अयोध्याके एक राजा, जो इक्ष्वाकुकुलमें उत्पन्न तथा द्यूतविद्याके मर्मज्ञ थे और जिनके यहाँ नलका सारथि वार्ष्णेय उनके जूएमें पराजित हो जानेपर जाकर रहने लगा (वन० ६६ । २१-२२; ६० । २५)। इनके द्वारा बाहुक बने हुए राजा नलकी अपने यहाँ अश्वाध्यक्षके पदपर नियुक्ति (वन० ६७ । ५–७)। इनका दमयन्तीके द्वितीय स्वयंवरके लिये विदर्भदेशको प्रस्थान (वन० ७१ । २०)। इनका बाहुककी अश्वसंचालन-कलासे प्रभावित होना (वन० ७१ । २४)। इनकी गणित-विद्याकी अद्भुत शक्ति (वन० ७२ । ७–११)। इनके द्वारा नलको द्यूतहृदयका दान (वन० ७२ । २९)। विदर्भनरेश भीमद्वारा इनका आतिथ्य-सत्कार (वन० ७३ । २०)। इन्हें नलसे अश्वविद्याकी प्राप्ति तथा इनका अयोध्याको लौटना (वन० ७७ । १७–१९)।

ऋतुस्थला–स्वर्गकी प्रधान ग्यारह अप्सराओंमेंसे एक, जिसने अन्य अप्सराओंके साथ अर्जुनके जन्म-महोत्सवमें आकर नृत्य और गान किया था (आदि० १२२ । ६५-६६)।

ऋतेयु-पश्चिम दिशानिवासी एक ऋषि, जो वरुणके सात ऋत्विजोंमेंसे एक हैं (अनु० १५० । ३६)।

ऋत्वा–एक देवगन्धर्व, जो अर्जुनके जन्मोत्सवमें उपस्थित हुआ था (आदि० १२२ । ५७)।

ऋद्धि–कुबेरकी पत्नी (उद्योग० ११७ । ९)।

ऋद्धिमान्–एक महानाग, जो गरुड़द्वारा मारा गया था (वन० १६० । १५)।

ऋभु–ऋभुनामक देवताओंका गण, जो देवताओंद्वारा भी आराधित होता है (वन० २६१ । १९; शान्ति० २०८ । २२; अनु० १३७ । २५)।

ऋषभ–(१) धृतराष्ट्रके कुलमें उत्पन्न एक नाग, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें जल मरा था (आदि० ५७ । १७)। (२) एक वृषभरूपधारी राक्षस, जो मगधनरेश बृहद्रथद्वारा मारा गया और जिसकी खालसे तीन नगाड़े बनाये गये (सभा० २१ । १६)। (३) एक प्राचीन तपस्वी ऋषि, जो पहले कभी ऋषभकूटपर रहते थे (वन० ११० । ८)। ये ब्रह्मसभामें ब्रह्माजीकी सेवामें उपस्थित होते हैं (सभा० ११ । २४)। ऋषभमुनिका सुमित्रको आशाके त्यागका उपदेश (शान्ति० १२५ अध्यायसे १२८ तक)। (४) दक्षिण-समुद्रतटवर्ती एक पर्वत, जहाँ गालव और गरुड़को शाण्डिलीका दर्शन हुआ था (उद्योग० ११२ । २२; ११३ । १)। पाण्ड्यदेशवर्ती यह पर्वत एक

पवित्र तीर्थ है, जहाँकी यात्रासे वाजपेय यज्ञके फल और स्वर्गलोक सुलभ होते हैं (वन० ८५ । २१)। (५) एक राजा, जिन्हें भारतवर्ष बहुत प्रिय रहा है (भीष्म० ९ । ७)। (६) एक राजा या राजकुमार, जो द्रोणनिर्मित गरुड-व्यूहके हृदयस्थानमें खड़ा किया गया था (द्रोण० २० । १२) । (७) एक दैत्य या दानव (शान्ति० २२७ । ५१)।

ऋषभकूट–एक पर्वत, जहाँ पहले कभी ऋषभ मुनिने तपस्या की थी (वन० ११० । ८)।

ऋषभतीर्थ–कोसला या अयोध्यामें स्थित एक प्राचीन तीर्थ, जहाँ उपवास करनेसे सहस्र गोदान और वाजपेय यज्ञका फल मिलता है (वन० ८५ । १०-११)।

ऋषभद्वीप–सरस्वतीतटवर्ती एक तीर्थ, जहाँ स्नान करनेसे देवविमान सुलभ होता है (वन० ८४ । १६०)।

ऋषिक–(१) एक राजर्षि, जो दानवोंके सरदार 'अर्क' के अंशसे उत्पन्न हुए थे (आदि० ६७ । ३२-३३)। (२) एक उत्तरीय जनपद, जहाँ ऋषिकराजके साथ अर्जुनका भयानक युद्ध हुआ था (सभा० २७ । २५; भीष्म० ९ । ६४)।

ऋषिकुल्या–एक नदी एवं प्राचीन तीर्थ, जहाँ स्नान करके पापरहित मानव देवताओं और पितरोंकी पूजा करनेसे ऋषिलोकमें जाता है (वन० ८४ । ४८-४९; भीष्म० ९ । ४७)।

ऋषिगिरि–मगधकी राजधानी गिरिव्रजके समीपवर्ती एक पर्वत, जिसका दूसरा नाम 'मातङ्ग' है (सभा० २१ । २-३)।

ऋष्यमूक–एक पर्वत, जिसके शिखरपर मार्कण्डेयजीने धनुर्धर श्रीराम और लक्ष्मणका दर्शन किया था (वन० २५ । ९)। यहीं हनुमान्‌जी सुग्रीवके साथ रहे (वन० १४७ । ३०)। इसी ऋष्यमूकसे सटा हुआ पम्पासरोवर है (वन० २७९ । ४४)। श्रीराम और लक्ष्मणका ऋष्यमूकपर जाना तथा सुग्रीवके साथ श्रीरामकी मैत्री (वन० २८० । ९-११)।

ऋष्यशृङ्ग–(१) महर्षि विभाण्डकके पुत्र । मृगीके पेटसे इनकी उत्पत्ति तथा ऋष्यशृङ्ग नाम पड़नेका कारण (वन० ११० । ३७-३९) । ये कश्यपगोत्री थे और तपस्या तथा इन्द्रियसंयमसे ही प्रतिष्ठित हुए थे (शान्ति० २९६ । १४-१६) । महर्षि ऋष्यशृङ्ग ब्रह्मसभामें बैठकर ब्रह्माजीकी उपासना करते हैं (सभा० ११ । २३) । अपने आश्रमपर आयी हुई एक वेश्याको ब्रह्मचारी मुनि समझकर इनके द्वारा उसका आतिथ्य-सत्कार (वन० १११ । १३)। वेश्याको ब्रह्मचारी समझकर इनके द्वारा अपने पितासे उसके स्वरूप और आचरणका वर्णन (वन० ११२ अ०में) इनका राजा लोमपादके यहाँ जाना (वन० ११३ । ८) लोमपादपुत्री शान्ताके साथ इनका विवाह (वन० ११३ । ११; शान्ति० २३४ । ३४) । महाभारतमें आये हुए ऋष्यशृङ्गके नाम—काश्यप, कश्यपपुत्र और कश्यपात्मज । (२) एक राक्षस, जिसके पुत्रका नाम अलम्बुष था (द्रोण० १०६ । १६)।

ए

एकचक्र–कश्यप और दनुका पुत्र एक विख्यात दानव (आदि० ६५ । २५)।

एकचक्रा–एक प्राचीन नगरी, जहाँ कुन्तीदेवी अपने पाँच पुत्रोंके साथ कुछ कालतक एक ब्राह्मणके यहाँ ठहरी थीं पाण्डव यहाँ वेदाभ्यास-परायण ब्रह्मचारी बनकर माताके साथ रहते थे (आदि० ६१ । २६-२७)। भीमने यहाँ रहकर बकासुरको मारा था (आदि० ६१ । २९) एकचक्रा नगरीमें पाण्डवोंके जाने, एक मासतक रहने और भीमद्वारा बकासुरके मारे जानेका विस्तृत वृत्तान्त (आदि० १५५ अध्यायसे १६३ अध्यायतक)।

एकचन्द्रा–स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । ३०)।

एकचूडा–स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । ५)

एकजट–स्कन्दके एक सैनिकका नाम (शल्य० ४५ । ५८)।

एकत–एक प्राचीन महर्षि, जो गौतमके पुत्र थे, इनके दो भाई और थे—द्वित और त्रित। ये तेजस्वी महात्मा थे तो भी एक बार इन्होंने त्रितसे छल किया । इस कथाका वर्णन (शल्य० ३६ अ० में) । ये पश्चिम दिशाका आश्रय लेनेवाले ऋषि हैं (शान्ति० २०८ । ३१) इन्होंने उपरिचर वसुके यज्ञमें सदस्यता ग्रहण की (शान्ति० ३३६ । ५-६)। ये तीनों भाई भगवान् नारायणके दर्शनके लिये श्वेतद्वीपमें गये थे । (शान्ति० ३३९ । १२) । इन्होंने अपने भाई त्रितको कुएँमें गिराया था (शान्ति० ३४१ । ४६) । बाणशय्यापर पड़े हुए भीष्मजीके पास ये भी गये थे (अनु० २६ । ७)। ये तीनों भाई वरुणके सात ऋत्विजोंमें हैं और पश्चिम दिशामें रहते हैं (अनु० १५० । ३६; १६५ । ४२)।

एकत्वचा–स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । २४)।

एकपाद–एक जनपद, जहाँके राजा और निवासी मनुष्य युधिष्ठिरके राजसूय-यज्ञमें आये थे और भीड़के कारण दरवाजेपर रोक दिये गये थे (सभा० ५१ । १७)।

एकपाद्–भगवान् विष्णुका एक नाम (अनु० १४९ । ९५)।

एकरात्रतीर्थ–एक तीर्थ, जहाँ एक रात नियमपूर्वक सत्यवादी होकर रहनेसे मनुष्य ब्रह्मलोकमें प्रतिष्ठित होता है (वन० ८३ । १८२)।

एकलव्य–(१)निषादराज हिरण्यधनुका पुत्र। इसका द्रोणाचार्यके पास धनुर्वेदके अध्ययनके लिये आगमन (आदि० १३१ । ३१)। निषादपुत्र होनेके कारण द्रोणद्वारा इसका प्रत्याख्यान (आदि० १३१ । ३२)। आचार्य द्रोणकी मूर्तिमें गुरुभावना करके इसके द्वारा धनुर्विद्याका अभ्यास (आदि० १३१ । ३४)। गुरुभक्तिके कारण इसकी बाणविद्यामें सफलता (आदि० १३१ । ३५)। पाण्डवोंके कुत्तेके मुँहको बाणोंसे भरकर इसका पाण्डवोंको विस्मयमें डालना (आदि० १३१ । ४१)। पाण्डवों तथा कौरवोंद्वारा इसकी प्रशंसा (आदि० १३१ । ४२)। पाण्डवोंके प्रति इसका अपना परिचय देना (आदि० १३१ । ४५)। इसका द्रोणाचार्यको अपने दाहिने हाथका अँगूठा काटकर गुरुदक्षिणाके रूपमें देना (आदि० १३१ । ५८)। द्रोणाचार्यका अर्जुनके हितके लिये इसका अँगूठा कटवाना (द्रोण० १८१ । १७)। श्रीकृष्णका अर्जुनके प्रति उसके पराक्रमका तथा अपने द्वारा इसके वधके कारणका कथन (द्रोण० १८१ । १८–२१)। निषादराज एकलव्यके श्रीकृष्णद्वारा मारे जानेकी चर्चा (उद्योग० ४८ । ७७; मौसल० ६ । ११)। (२) क्रोधवशसंज्ञक दैत्यके अंशसे उत्पन्न एक राजा (आदि० ६७ । ६३)। पाण्डवोंकी ओरसे इन्हें रणनिमन्त्रण भेजा गया (उद्योग० ४ । १७)।

एकलव्यसुत–एकलव्यका पुत्र, जिसने अश्वमेधके अश्वके पीछे जाते हुए अर्जुनके साथ घोर युद्ध किया था। अर्जुनसे पराजित होकर उसने उनका सत्कार किया (आश्व० ८३ । ८–१०)।

एकशृङ्ग–सात पितरोंमेंसे एक। ये तीन अमूर्त पितरोंके अन्तर्गत हैं। ये सब-के-सब ब्रह्मसभामें ब्रह्माजीकी उपासना करते हैं (सभा० ११ । ४७-४८)।

एकहंस तीर्थ–एक तीर्थ, जहाँ स्नान करनेसे सहस्र गोदानका फल मिलता है (वन० ८३ । २०)।

एकाक्ष–(१) कश्यप और दनुका पुत्र एक विख्यात दानव (आदि० ६५ । २९)। (२) स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ५८)।

एकानङ्गा–यशोदा मैयाकी पुत्री। भगवान् श्रीकृष्णकी बहिन। यह वही कन्या है, जिसके निमित्तसे श्रीकृष्णने कंसका वध किया था (सभा० ३८ । २९ के बाद दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ८२०, कालम २)।

एडी–स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । १३)।

एरक–कौरव्य-कुलोत्पन्न एक नाग, जो सर्पसत्रमें जलकर भस्म हो गया (आदि० ५७ । १३)।

एलापत्र–एक प्रमुख नाग, इसकी माता कद्रू और पिता कश्यप थे। इसके द्वारा माताके शापसे चिन्तित हुए वासुकिको देवताओंके प्रति ब्रह्माजीके द्वारा कहे हुए शापोद्धारके उपायोंका वर्णन (आदि० ३८ । १—१९)।

(ऐ)

ऐक्ष्वाकी–सम्राट् भुमन्युकी पुत्रवधू एवं सुहोत्रकी पत्नी। महाराज सुहोत्रद्वारा इनके गर्भसे अजमीढ़, सुमीढ़ तथा पुरुमीढ़ नामक तीन पुत्र हुए थे (आदि० ९४ । २४–३०)।

ऐरावत–(१) समुद्रमन्थनके समय प्रकट हुआ एक हाथी, जो इन्द्रके अधिकारमें है (आदि० १८ । ४०)। यह क्रोधवशाकी पुत्री भद्रमनाका पुत्र है और यही देवताओंका हाथी है (आदि० ६६ । ६२-६३)। (यही पूर्व दिशाका दिग्गज है।) ऐरावत आदि चार दिग्गज पुष्कर द्वीपमें भी रहते हैं (भीष्म० १२ । ३३)। (२) कश्यप और कद्रूसे उत्पन्न एक प्रमुख नाग (आदि० ३५ । ५)। इसके कुलमें उलूपीके पिता कौरव्यका जन्म हुआ था (आदि० २१३ । १८)। कश्यपवंशी नागोंमें इसकी गणना (उद्योग० १०३ । ११)। (३) एक असुर, जो भगवान् श्रीकृष्णद्वारा मारा गया (सभा० ३८ । २९ के बाद दाक्षि० पाठ, पृष्ठ ८२५, कालम १)।

ऐरावतखण्ड–शृङ्गवान् पर्वतसे उत्तर समुद्रके निकटका एक वर्ष (भीष्म० ६ । ३७)। धृतराष्ट्रके प्रति संजयद्वारा इसका विशेष वर्णन (भीष्म० ८ । १०–१५)।

ऐल–इलानन्दन पुरूरवा, जो यमराजकी सभामें विराजमान होते हैं (सभा० ८ । १६)। इन्होंने जीवनमें कभी मांस-सेवन नहीं किया था (अनु० ११५ । ६५)। ये सबेरे और सायंकाल स्मरण करनेयोग्य पुण्यात्मा नरेशोंमेंसे एक हैं (अनु० १६५ । ५२)।

ऐषीक–सौप्तिकपर्वका एक अवान्तर पर्व, अध्याय १० से अध्याय १८ तक।

(ओ)

ओघरथ–ओघवान्के पुत्र (अनु० २ । ३८)।

ओघवती-(१) एक नदी (भीष्म० ९ । २२)। कुरुक्षेत्रमें वसिष्ठके आवाहन करनेपर प्रकट हुई सरस्वतीका नाम (शल्य० ३८ । २७)। भीष्मजी ओघवतीके तटपर बाणशय्यापर पड़े थे (शान्ति० ५० । ७)। (२) ओघवान्‌की पुत्री (अनु० २ । ३८)। इसका अग्निपुत्र सुदर्शनके साथ विवाह (अनु० २ । ३९) । अतिथि-सत्कारके लिये ब्राह्मणरूपधारी धर्मको आत्मसमर्पण (अनु० २ । ५७)।

ओघवान्-(१) कौरवपक्षका एक योद्धा (कर्ण० ५ ४२)। (२) नृगके पितामह (अनु० २ । ३८)।

ओड्र-एक प्राचीन देश, जहाँके राजा भेंट देनेके लिये युधिष्ठिरके यज्ञमें पधारे थे (सभा० ५१ । २३)।

(औ)

औक्थ्य-एक साम (वन० १३४ । ३६)।

औदका-औदका उस स्थानका नाम है, जहाँ नरकासुरने सोलह हजार कन्याओंको कैद कर रक्खा था। नरकासुरका यह अन्तःपुर मणिपर्वतपर बना था। जलकी सुविधासे सम्पन्न होनेके कारण उस स्थानका नाम 'औदका' रक्खा गया था। यह सुर दानवके संरक्षणमें था (सभा० ३८ में दाक्षि० पाठ, पृष्ठ ८०५, कालम १)।

औदुम्बर-उदुम्बर या औदुम्बर देशके क्षत्रिय राजकुमार, जो युधिष्ठिरके यहाँ भेंट लेकर आये ते (सभा० ५२ । १३)।

औद्दालक-एक मुनिसेवित तीर्थ, जहाँ स्नान करके मनुष्य पापमुक्त हो जाता है (वन० ८४ । १६१)।

औरसिक-एक देश, जहाँके योद्धाओंको भगवान् श्रीकृष्णने जीता था (द्रोण० ११ । १६)।

और्व(ऊर्व)-एक ऋषि, जो च्यवन मुनिके द्वारा मनुपुत्री आरुषीके गर्भसे उत्पन्न हुए थे । ये अपनी माताकी जाँघ फाड़कर प्रकट हुए थे (आदि० ६६ । ४६)। इनके पुत्रका नाम ऋचीक था (आदि० ६६ । ४७)। माताकी जाँघसे इनका प्राकट्य (आदि० १७७ । २४)। इनका और्व नाम होनेका कारण (आदि० १७८ । ८)। इनके द्वारा क्षत्रियोंके नेत्रोंकी दृष्टिशक्तिका अपहरण (आदि० १७७ । २५)। अन्धभावको प्राप्त हुए क्षत्रियोंका इनसे नेत्रोंके लिये प्रार्थना और इनका नेत्रदान (आदि० १७८ । ७) । सम्पूर्ण लोकोंके विनाशके लिये इनका संकल्प और प्रयत्न (आदि० १७८ । ९-१०) । पितरोंद्वारा इनके जगद्विनाशक संकल्पका निवारण (आदि० १७८ । १४—२२)। इनके द्वारा अपनी क्रोधाग्निका बडवानलरूपसे समुद्रमें त्याग (आदि० १७९ । २१)। इनके द्वारा तालजङ्घ वंशके विनाशकी चर्चा (अनु० १५३ । ११)।

औशनस-एक सरस्वती-तटवर्ती तीर्थ, जहाँ ब्रह्मा आदि देवता और तपस्वी मुनि रहते हैं (वन० ८३ । १३५)। इसका कपालमोचन नाम पड़नेका कारण और माहात्म्य (शल्य० ३९ । ९—२२)।

औशिज-(१) एक प्राचीन राजा, जो देवराज इन्द्रके समान पराक्रमी थे (आदि० १ । २२६)। (२) एक प्राचीन धर्मज्ञ मुनि, जो युधिष्ठिरकी सभामें विराजते थे (सभा० ४ । १७)। ये अङ्गिराके पुत्र हैं (शान्ति० २०८ । २७)।

औशीनरि (औशीनर)-उशीनरकुमार शिबि, जो यम-राजकी सभामें बैठनेवाले नरेश हैं (सभा० ८ । १४)।

औशीनरी-उशीनर देशकी एक शूद्रजातीय कन्या, जिसके गर्भसे गौतमने काक्षीवान् आदि पुत्रोंको उत्पन्न किया (सभा० २१ । ५)।

औष्णीक-एक प्राचीन देश, जहाँके राजा भेंट लेकर युधिष्ठिरके यहाँ आये थे (सभा० ५१ । १७)।

(क)

कंस-(१) मथुराके महाराज उग्रसेनका पुत्र (सभा० २२ । ३६ के बाद दाक्षिणात्य पाठ) । इसके रूपमें कालनेमि दानव ही उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७ । ६७)। जरासंधकी पुत्री उसकी पत्नी थी, जो इसे राजा बना देनेकी शर्तके साथ मिली थी। मन्त्रियोंद्वारा इसका राज्याभिषेक और इसका अपने पिताको कैद करके स्वयं राज्य भोगना। इसके द्वारा देवकीजीका वसुदेवजीके साथ विवाह । आकाशमें देवदूतकी वाणी सुनकर इसका देवकीको मार डालनेके लिये उद्यत होना। इसके द्वारा देवकीके छः शिशुओंका वध (सभा० २२ । ३६ के बाद दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ७३१)। कंसका वसुदेवपर कड़ा पहरा। इसके द्वारा वसुदेवकी लायी हुई गोपकन्याको मारनेका प्रयत्न। इसके द्वारा व्रजके गोपोंका सताया जाना (पृष्ठ ७३२) । श्रीकृष्ण-बलभद्रद्वारा सुनामा और मुष्टिकके मारे जानेपर कंसके मनमें भयका आवेश तथा श्रीकृष्णद्वारा कंसका वध (सभा० ३८, पृष्ठ ८०१, कालम २)। कंस अस्त्रज्ञान और बल-पराक्रममें कार्तवीर्यके समान था। इससे समस्त राजाओंको उद्वेग होता था। उसके पास एक करोड़ पैदल सैनिक थे। आठ लाख रथी और उतने ही हाथीसवार थे। बत्तीस लाख घुड़सवारोंकी सेना थी (सभा० ३८, पृष्ठ ८०३) । सभामें विराजमान कंसका श्रीकृष्णके हाथसे मन्त्रियों और परिवारसहित वध

(सभा० अध्याय ३८, दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ८०४; कालम १)। (२) एक असुर, जो श्रीकृष्णद्वारा मारा गया। यह उग्रसेनके पुत्र कंससे भिन्न था (सभा० ३८,पृष्ठ ८२५)।

क–(१) प्रजापति (आदि० १। ३२)। (२) दक्ष-प्रजापतिका एक नाम (शान्ति० २०८। ७)। (३) भगवान् विष्णुका एक नाम (अनु० १४९। ९१)।

ककुत्स्थ–इक्ष्वाकुवंशी महाराज शशादके पुत्र, जो अनेनाके पिता थे (वन० २०२। १-२)।

कक्ष–एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९। ४९)।

कक्षक–वासुकिकुलमें उत्पन्न एक नाग; जो जनमेजयके सर्पसत्रमें जल मरा था (आदि० ५७। ६)।

कक्षसेन–(१) राजा अविक्षित्के पौत्र तथा परीक्षित्के प्रथम पुत्र (आदि० ९४। ५४)। ये यम-सभाके सदस्य और सूर्यपुत्र यमके उपासक बताये गये हैं (सभा० ८। १८)। इनका वसिष्ठको सर्वस्व समर्पण करके स्वर्गलोकगमन (अनु० १३७। १५)। सायं-प्रातः स्मरण करनेयोग्य पुण्यात्मा नरेशोंमेंसे एक (अनु० १६५।५९)। ये न्यायोपार्जित धनके दान और सत्य-भाषणके द्वारा परम सिद्धिको प्राप्त हुए (आश्व० ९१। ३५-३६)। (२) राजा युधिष्ठिरकी सभामें बैठकर उनकी उपासना करनेवाले एक नरेश (सभा० ४। २२)।

कक्षसेन-आश्रम–असित नामक पर्वतपर स्थित एक पुण्य-दायक आश्रम (वन० ८९। १२)।

कक्षीवान्–(१) एक प्राचीन राजा, जो व्युषिताश्व-पत्नी भद्राके पिता थे (आदि० १२०। १७)। (२) एक ऋषि, जो अङ्गिराके पुत्र हैं और पूर्व दिशामें निवास करते हैं (शान्ति० २०८। २७-२८; अनु० १६५। ३७-३८)। इन्होंने एकाग्रचित्त हो वेदकी ऋचाओंद्वारा भगवान् विष्णुकी स्तुति करके उनकी कृपा एवं तपस्यासे सिद्धि प्राप्त की (शान्ति० २९२। १५–१७)। ये तपस्यासे अपनी प्रकृतिको प्राप्त हुए (शान्ति० २९६। १४–१६)। ये महेन्द्रके गुरु, ब्रह्मतेजसे सम्पन्न और लोक-स्रष्टा बताये गये हैं। इनका तेज रुद्र, अग्नि और वसुओं-के समान है। ये पृथ्वीपर शुभ कर्म करके देवताओंके साथ आनन्द भोगते हैं। इनका कीर्तन करनेसे इन्द्रलोककी प्राप्ति होती है (अनु० १५०। ३०—३३)।

कक्षेयु–पूरुपुत्र रौद्राश्वके द्वारा मिश्रकेशी अप्सराके गर्भसे उत्पन्न पुत्र (आदि० ९४। १०)। ये सायं-प्रातः स्मरणीय राजाओंमेंसे एक हैं (अनु० १६५। ६)।

कङ्क–(१) एक प्राचीन राजा (आदि० १। २३३)। (२) एक पक्षी, जो सुरसाकी संतान है (आदि० ६६। ६९)। (३) वृष्णिकुलके सात महारथी वीरों-मेंसे एक (सभा० १४। ५९)। यह द्रौपदीके स्वयंवरमें आया था (आदि० १८५। १९)। युधिष्ठिर-के राजसूय यज्ञमें भी इसका आना हुआ था (सभा०३४। १५)। (४) एक जनपद, जहाँके लोग युधिष्ठिरके लिये भेंट लाये थे (सभा० ५१। ३०; शान्ति० ६५। १३)। (५) छद्मवेषी ब्राह्मण, अज्ञातवासके समय युधिष्ठिरका बदला हुआ नाम (विराट० १। २४; विराट० १८। २५; विराट० ३१। २१; विराट० ७०। ४)।

कङ्कणा–स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६। १६)।

कच–देवगुरु बृहस्पतिके ज्येष्ठ पुत्र (आदि० ७६। ११)। देवताओंके आग्रह करनेपर इनका संजीवनीविद्या सीखनेके लिये शुक्राचार्यके समीप जाना (आदि० ७६। १२–१८)। शुक्राचार्यको अपना परिचय देकर एक सहस्र वर्षोंतक ब्रह्मचर्य-पालनके लिये इनका उनसे अनुमति माँगना (आदि० ७६। २०)। शुक्राचार्यके द्वारा इनका स्वागत (आदि० ७६। २१)। इनके द्वारा गुरुकुलमें शुक्राचार्य एवं आचार्यपुत्री देवयानीकी आराधना (आदि० ७६। २२–२५)। इनकी देवयानी-द्वारा एकान्त-परिचर्या (आदि० ७६। २६)। इनके द्वारा गुरुकी गौओंकी सेवा (आदि० ७६। २७)। दानवोंका इन्हें मारकर कुत्तों और सियारोंको खिला देना (आदि० ७६। २९)। इनके वियोगमें देवयानीकी चिन्ता (आदि० ७६। ३१-३२)। शुक्राचार्यकी संजीवनीके प्रभावसे इनका कुत्तोंके पेट फाड़कर प्रकट होना (आदि० ७६। ३४)। दानवोंका इन्हें पीसकर समुद्रके जलमें मिला देना (आदि० ७६। ४१)। देवयानीके पुनः चिन्तित होनेपर शुक्राचार्यके द्वारा इनका पुनः संजीवन (आदि० ७६। ४२)। दानवोंका इन्हें जलाकर इनकी राखको मदिरामें मिला शुक्राचार्यको पिला देना (आदि० ७६। ४३)। गुरुके पेटमें मृत-संजीवनी-विद्या सीखकर इनका शुक्राचार्यको जीवित करना (आदि० ७६। ५८—६२)। इनके द्वारा गुरुकी महिमा एवं उनके अनादरसे हानिका वर्णन (आदि० ७६। ६३-६४)। देवयानीके आग्रह करनेपर भी इनका उसके साथ विवाह स्वीकार न करना (आदि० ७७। ६—१५)। इनको देवयानीके द्वारा संजीवनी विद्या सिद्ध न होनेका शाप (आदि० ७७। १६)। इनके द्वारा देवयानीको ब्राह्मण-जातीय पति न मिलनेका शाप (आदि० ७७। १९)। स्वर्ग जानेपर इनको देवताओं-द्वारा वरदान (आदि० ७७। २३)। इनसे संजीवनी-विद्या पढ़कर देवताओंका कृतार्थ होना (आदि० ७८। १)। बाण-शय्यापर पड़े हुए भीष्मके पास ये भी गये थे (शान्ति० ४७। ९; अनु० २६। ८)।

कच्छ–एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ५६)।

कच्छपी–नारदजीकी वीणा (शल्य० ५४ । १९)।

कठ–एक धर्मज्ञ जितेन्द्रिय ऋषि, जो युधिष्ठिरकी सभामें विराजते थे (सभा० ४ । १८) । राजसूय यज्ञमें युधिष्ठिरने इनका सत्कार किया था (सभा० ४५ । ३८ के बाद दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ८४३) । ये सर्पदंशनसे मरी हुई प्रमद्वराको देखने आये थे (आदि० ८ । २५)।

कणिक–(१) धृतराष्ट्रका एक मन्त्री, जो कूट राजनीति और अर्थ-शास्त्रका पण्डित तथा उत्तम मन्त्रका ज्ञाता ब्राह्मण था (आदि० १३९ । २)। इसके द्वारा धृतराष्ट्र-को कूटनीतिका उपदेश (आदि० १३९ । ५–९२) । (२) भरद्वाजकुलमें उत्पन्न एक कूट-नीतिज्ञ ब्राह्मण, जिसने सौवीरनरेश शत्रुंजयको कूट-नीतिका उपदेश किया था (शान्ति० १४० अ०) ।

कण्टकिनी–स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६।१६)।

कण्डरीक–एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि, जिनके कुलमें प्रतापी राजा ब्रह्मदत्त उत्पन्न हुए थे (शान्ति० ३४२।१०५)।

कण्डु–एक महर्षि, जिनकी पुत्री 'वार्क्षी' ने दस प्रचेताओं-के साथ विवाह-सम्बन्ध स्थापित किया था (आदि० १९५ । १५)।

कण्डूति–स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । १४)।

कण्व–(१) कश्यपगोत्रीय प्राचीन महर्षि, जिनका आश्रम मालिनी नदीके तटपर था (आदि० ७० । २१–२८) । इनके आश्रमका वर्णन (आदि० ७० । २४–२९) । इन्हें मेधातिथिका पुत्र और पूर्व दिशामें रहनेवाला ऋषि बताया गया है (शान्ति० २०८ । २७; अनु० १५१ । ३१; अनु० १६५ । ३८)। इनके द्वारा शकुन्तलाका पालन-पोषण एवं नामकरण (आदि० ७२ । १३–१६) । शकुन्तलाके गान्धर्व विवाहका समर्थन (आदि० ७३ । २६-२७)। इनका शकुन्तलाके प्रति पातिव्रत्य धर्मका उपदेश एवं इसकी महिमाका वर्णन (आदि० ७४ । ९-१०) । शकुन्तलाको पतिगृह पहुँचानेके लिये शिष्योंको इनका आदेश (आदि० ७४ । १०-११)। इनके द्वारा स्त्रियोंको पिताके घरमें अधिक दिनोंतक रहनेका निषेध (आदि० ७४ । १२)। आचार्य बनकर इनके द्वारा राजा भरतके 'गोवितत' नामक अश्वमेध यज्ञका सम्पादन (आदि० ७४ । १३०)। इनका दुर्योधनको समझाते हुए मातलिका उपाख्यान सुनाना (उद्योग० ९७ । १२ से १०५ । ३७ तक)। इन्हें भरतसे दक्षिणारूपमें जाम्बूनद सुवर्णके बने हुए एक हजार कमल प्राप्त हुए थे (द्रोण० ६८ । ११-१२) । (२) प्राचीन युगान्तरके एक प्रसिद्ध तपस्वी महामुनि, जिन्हें ब्रह्माजीने वर दिया था (अनु० १४१ में दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ५९१५) ।

कण्वाश्रम–कण्व मुनिका आश्रम । यह लक्ष्मीद्वारा सेवित तथा लोकपूजित है । यह स्थान धर्मारण्यके अन्तर्गत है। यहाँ प्रवेश करनेमात्रसे मनुष्य पापमुक्त हो जाता है (वन० ८२ । ४५-४६)। प्रवेणी नदीके उत्तरमार्गमें कण्वका पुण्यमय आश्रम है, जहाँ वरुणस्रोतस् नामक पर्वतपर सूर्यके पार्श्ववर्ती माठर देवताका विजयस्तम्भ सुशोभित है (वन० ८८ । १०-११)। (किसी-किसीके मतमें यह स्थान राजपूतानेमें कोटासे चार मील दक्षिण-पूर्व चम्बल नदीके तटपर स्थित है ।)

कथक–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ६७)।

कदलीवन–सौगन्धिक कमलोंसे भरी हुई कुबेर-पुष्करिणीके तटपर स्थित सुवर्णमय केलोंसे भरा हुआ एक उपवन, जो हनुमान्‌जीका निवासस्थान था (वन० १४६ । ५८)।

कद्रू–दक्ष प्रजापतिकी एक पुत्री (आदि० ६५ । १३)। यह नागोंकी माता और कश्यपकी पत्नी हैं। कश्यपके वर देनेको उद्यत होनेपर इनके द्वारा उनसे एक हजार नागोंके पुत्ररूपमें पानेकी प्रार्थना (आदि० १६ । ५–८)। पाँच सौ वर्षोंके बाद इनको एक हजार पुत्रोंकी प्राप्ति (आदि० १६ । १५) । इनके द्वारा अपने पुत्रोंको आज्ञापालन न करनेके कारण शाप (आदि० २० । ८)। 'उच्चैःश्रवा घोड़ेका रंग क्या है ?' इस प्रश्नपर कद्रू और विनताका परस्पर विवाद करना । पराजित होनेपर दासी बननेकी शर्त रखना और कद्रूका छलपूर्वक विनताको अपनी दासी बनाना (आदि० २० । २ से २३ । ४ तक) । इनके द्वारा अपने पुत्रोंकी सूर्यके तापसे रक्षाके लिये इन्द्रकी स्तुति (आदि० २५ । ७–१७)। कद्रूकी प्रमुख संतानोंकी नामावली (आदि० ३५ अध्याय)। ये ब्रह्मसभामें ब्रह्माजीकी उपासना करती हैं (सभा० ११ । ४१–४३) । यह स्कन्दग्रहके रूपमें सूक्ष्म शरीर धारण करके गर्भवती स्त्रियोंके गर्भमें प्रवेश कर जाती और वहाँ उस गर्भको खा जाती हैं । इससे वह गर्भिणी सर्प पैदा करती है (वन० २३० । ३७-३८) । इसकी शान्तिका उपाय (वन० २३० । ४३–४५) ।

कध्मोर–प्रातः और सायं स्मरण करनेयोग्य एक राजर्षि (अनु० १६५ । ५३) ।

कनकध्वज–धृतराष्ट्रका पुत्र (कनकाङ्गद) (आदि० ११६ । १४) । यह द्रौपदीके स्वयंवरमें गया था (आदि० १८५ । ३) । भीमसेनद्वारा इसका वध (भीष्म० ९६ । २६-२७) ।

कनकाक्ष–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ७४)।

कनकाङ्गद (कनकध्वज)–धृतराष्ट्रका एक पुत्र (आदि० ६७ । १०५) । (देखिये कनकध्वज)

कनकापीड–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ६६)।

कनकायु–धृतराष्ट्रका पुत्र (आदि० ६७ । ९९)। इसका एक नाम करकायु भी था। द्रौपदी-स्वयंवरके अवसरपर इसके इसी नामका उल्लेख है (आदि० १८५ । २)। (इन दोनों नामोंसे भी इसकी मृत्युका उल्लेख नहीं है। सम्भव है, इसका कोई तीसरा नाम भी हो।)

कनकावती–स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । ८)।

कनखल–एक तीर्थ, जहाँ स्नान करके तीन रात उपवास करनेवाला मनुष्य अश्वमेधयज्ञका फल पाता है (वन० ८४ । ३०; वन० ९० । २२)। यहाँ स्नानका फल (अनु० २५ । १३)।

कन्दरा–स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । ९)।

कन्दर्प–कामदेवका एक नाम (वन० ५३ । २८)।

कन्यकागुण–एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ५२)।

कन्याकूप–एक प्राचीन तीर्थ। यहाँ स्नानका फल कीर्तिकी प्राप्ति (अनु० २५ । १९-२०)।

कन्यातीर्थ–(१) कुरुक्षेत्रकी सीमामें स्थित एक तीर्थ (वन० ८३ । ११२)। (२) पाण्ड्य देशमें दक्षिण समुद्रके तटपर स्थित कन्या या कुमारी नामक तीर्थ; जहाँ स्नान करनेसे सहस्र गोदानका फल और पापसे छुटकारा मिलता है (वन० ८५ । २३; वन० ८८ । १४; वन० ९५ । ३)।

कन्याश्रम–एक तीर्थ, जिसमें तीन राततक उपवास करके नियमित भोजन करनेसे स्वर्गीय सुख सुलभ होता है (वन० ८३ । १८९)।

कन्यासंवेद्यतीर्थ–एक प्राचीन तीर्थ, जिसके सेवनसे मनुष्यको प्रजापति मनुका लोक प्राप्त होता है (वन० ८४ । १३६)।

कन्याह्रद–एक तीर्थ, जिसमें निवास करनेसे देवलोककी प्राप्ति होती है (अनु० २५ । ५३)।

कप–दानवोंका एक दल। इसका स्वर्गपर अधिकार करना (अनु० १५७ । ४)। ब्राह्मणोंद्वारा इसका संहार (अनु० १५७ । १७-१८)।

कपट–एक दानव। कश्यपपत्नी दनुका पुत्र (भीष्म० ६५ । २६)।

कपालमोचन–कुरुक्षेत्रमें सरस्वती-तटवर्ती एक तीर्थ, जो सब पापोंसे छुड़ानेवाला है (वन० ८३ । १३७; शल्य० ३९ वाँ अध्याय)।

कपाली–ग्यारह रुद्रोंमेंसे एक। ये ब्रह्माजीके पौत्र तथा स्थाणुके पुत्र थे (आदि० ६६ । १-३)।

कपिञ्जल–एक प्रकारके पक्षी, जो मरे हुए त्रिशिराके वेद-पाठी मुखसे उत्पन्न हुए थे (उद्योग० ९ । ४०)।

कपिञ्जला–एक नदी, जिसका जल भारतीय प्रजा पीती है (भीष्म० ९ । २६)।

कपिध्वज–अर्जुनका एक नाम (भीष्म० २५ । २०)।

कपिल–(१) भगवान् श्रीकृष्ण या विष्णुके पुरातन अवतार महर्षि कपिल, जिन्होंने दृष्टिपातमात्रसे सगर-पुत्रोंको भस्म कर दिया था (वन० ४७ । १८-१९; वन० १०७ । ३२-३३)। ये प्रजापति कर्दमके पुत्र हैं। इनकी माताका नाम देवहूति है। इनका दूसरा नाम 'चक्रधनु' है (उद्योग० १०९ । १७-१८)। शान्ति० ४३ अध्यायमें भी इनकी महिमाका उल्लेख हुआ है। बाणशय्यापर गिरनेके समय भीष्मजीके पास आनेवाले महर्षियोंमें इनका भी नाम आया है (शान्ति० ४७ । ८)। इनका स्यूमरश्मि ऋषिके साथ यज्ञ-विषयक संवाद (शान्ति० २६८ अध्याय)। प्रवृत्ति-निवृत्तिमार्गके विषयमें उन्हीं ऋषिसे संवाद (शान्ति० २६९ अध्याय)। स्यूमरश्मिसे ब्रह्म-प्राप्तिके सम्बन्धमें बातचीत (शान्ति० २७० अध्याय)। इनका शिवमहिमाके विषयमें युधिष्ठिरको अपना अनुभव बताना (अनु० १८ । ४-५)। सात धरणीधर ऋषियोंमेंसे एक ये भी हैं (अनु० १५० । ४१)। इनके शापसे सगर-पुत्रोंके दग्ध होनेकी चर्चा (अनु० १५३ । ९)। (२) भगवान् सूर्यका एक नाम (वन० ३ । २४)। (३) एक नागराज, जिनका कपिलतीर्थ प्रसिद्ध है। कपिलके उस तीर्थमें स्नान करनेसे सहस्र कपिला-दानका फल होता है (वन० ८४ । ३२)। (४) भानु (मनु) नामक अग्निके चतुर्थ पुत्र पूर्वोक्त महर्षि कपिलके ही अवतार या स्वरूप हैं (वन० २२१ । २१)। (५) एक श्रेष्ठ ऋषि, जो शालिहोत्रके पिता थे। इन्होंने उपरिचरके यज्ञकी सदस्यता ग्रहण की थी (शान्ति० ३३६ । ८)। (६) विश्वामित्रके ब्रह्मवादी पुत्रोंमेंसे एक (अनु० ४।५६)। (७) भगवान् शिवका एक नाम (अनु० १७ । ९८)। (८) भगवान् विष्णुका एक नाम (अनु० १४९ । ७०; वन० १४९ । १०९)।

कपिलकेदारतीर्थ–कपिलका केदाररूप तीर्थ। इसमें स्नान करनेसे महान् पुण्यकी प्राप्ति होती है। उस दुर्लभतीर्थमें जाकर तपस्याद्वारा पाप नष्ट हो जानेसे मनुष्यको अन्तर्धान-विद्याकी प्राप्ति होती है (वन० ८३ । ७२–७४)।

कपिलतीर्थ–नागराज कपिलका एक तीर्थ, जिसमें स्नान करनेसे सहस्र कपिला-दानका फल प्राप्त होता है (वन० ८४ । ३२)।

कपिला–(१) दक्ष प्रजापतिकी पुत्री। कश्यपपत्नी (आदि० ६५ । १२)। (२) कुरुक्षेत्रके अन्तर्गत एक प्राचीन तीर्थ। यहाँ स्नान करनेसे सहस्र गोदानका फल मिलता है (वन० ८३ । ४७-४८)। (३) एक नदी, जिसका जल भारतीय प्रजा पीती है (भीष्म०

९ । २८)।(४) पञ्चशिखकी माता (शान्ति० २१८ । १५)।

कपिला गाय—इसकी उत्पत्ति तथा दानका वर्णन (अनु० ७७ अ०; अनु० १३० । १९-२०)।

कपिलावट—एक तीर्थ, यहाँ उपवाससे सहस्र गोदानका फल प्राप्त होता है (वन० ८४ । ३१)।

कपिलाश्व—महाराज कुवलाश्वके पुत्र। ये तीन भाई धन्धुकी क्रोधाग्निसे बच गये थे। इन्हींसे इक्ष्वाकुवंशी नरेशोंकी वंश-परम्परा चालू हुई (वन० २०४ । ४०)। ये पृथ्वीके उन प्राचीन शासकोंमेंसे हैं, जो इसे छोड़कर स्वर्गको चले गये (शान्ति० २२७ । ५१)।

कपिलाह्रद—वाराणसीके अन्तर्गत एक तीर्थ, जहाँ स्नानसे राजसूय यज्ञका फल मिलता है (वन० ८४ । ७८)। यहाँ स्नानका फल (अनु० २५ । २५)।

कपिस्कन्ध—स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ५७)।

कपोत—गरुडकी प्रमुख संतानोंमेंसे एक(उद्योग० १०१।१३)।

कपोत, कपोती और बहेलियेकी कथा—(शान्ति० १४३ अध्यायसे १४९ तक)। कपोतके द्वारा शरणागत अतिथिका सत्कार (शान्ति० १४३ । ४)। बहेलियेको उसके क्रूर-कर्मके कारण सगे-सम्बन्धियोंने भी त्याग दिया था (शान्ति० १४३ । १०-१४)। पक्षियोंके वधसे पत्नीसहित जीविका चलानेवाले उस बहेलियेको एक दिन आँधी-वर्षाके कारण महान् कष्टकी प्राप्ति (शान्ति० १४३। १८-२५)। सर्दीसे व्याकुल होकर पृथ्वीपर गिरी हुई एक कपोतीको उठाकर उसने पींजड़ेमें डाल लिया। स्वयं दुखी होकर भी उस पापीने दूसरोंको सताना न छोड़ा (शान्ति० १४३ । २५-२७)। बहेलियेका एक वृक्षके नीचे विश्राम (शान्ति० १४३ । २८-३३)। उसी वृक्षपर रहनेवाले कबूतरद्वारा अपनी प्यारी भार्या कबूतरीका गुणगान तथा पतिव्रता स्त्रीकी प्रशंसा (शान्ति० १४४ । १-१७)। कबूतरीका कबूतरसे शरणागत व्याधकी सेवाके लिये प्रार्थना (शान्ति० १४५ अध्याय)। कबूतरके द्वारा अतिथिसत्कार और अपने शरीरका बहेलियेके लिये परित्याग (शान्ति० १४६ अध्याय)। बहेलियेका वैराग्य (शान्ति० १४७ अध्याय)। कबूतरीका विलाप, अग्निमें प्रवेश तथा उन दोनों कपोतदम्पतिको स्वर्गलोककी प्राप्ति (शान्ति० १४८ अध्याय)। बहेलियेकी तपस्या तथा दावानलमें दग्ध होकर उसका स्वर्गलोकमें जाना। कपोतकी शरणागत-वत्सलता तथा कपोतीके पातिव्रत्यकी अनुकरणीयता। कपोत-कपोतीके इस प्रसंगको श्रवण करनेका फल (शान्ति० १४९ अध्याय)।

कपोतरोमा—उशीनरकुमार शिबिके पुत्रका नाम। उसका दूसरा नाम 'औद्भिद' था (वन० १९७ । २७-२८)। यमकी सभामें विराजमान होनेवाले नरेशोंमें इनका भी नाम आया है (सभा० ८ । १७)। ये कलिङ्गराज चित्राङ्गदकी कन्याके स्वयंवरमें गये थे (शान्ति० ४ । ६)।

कबन्ध—एक राक्षस। भगवान् श्रीरामद्वारा इसका वध (सभा० ३८ । २९ के बाद दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ७९४ का दूसरा कालम)। इसका लक्ष्मणको पकड़ना (वन० २७९ । ३०)। लक्ष्मणद्वारा इसका मारा जाना (वन० २७९ । ३८-३९)। शापसे मुक्त होनेपर इसका विश्वावसु गन्धर्वके रूपमें प्रकट हो सीताजीका पता बताना (वन० २७९ । ४२-४३)।

कमठ—(१) युधिष्ठिरकी सभामें विराजमान कम्बोजराज (सभा० ४ । २२)। (२) एक ऋषि, जिन्होंने तपस्याद्वारा सिद्धि प्राप्त की थी (शान्ति० २९६ । १४-१६)।

कमला—स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । ९)।

कमलाक्ष—(१) कौरवपक्षका एक महारथी योद्धा, जिसे दुर्योधनने अर्जुनपर आक्रमण करनेके लिये शकुनिके साथ भेजा था (द्रोण० १५६ । १२०-१२३)। (२) तारकासुरका पुत्र। त्रिपुरोंमेंसे रजतमयपुरका अधिपति(कर्ण० ३३ । ५)। शिवजीद्वारा तीनों पुरोंका संहार (कर्ण० ३४। ११४)। अन्यत्रके वर्णनके अनुसार कमलाक्षके अधिकारमें सुवर्णमय पुर था और शिवजीने तीनों पुरोंको दग्ध किया (द्रोण० २०२ । ६४-८३)।

कमलाक्षी—स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । ६)।

कम्प—एक वृष्णिवंशी राजकुमार, जो मृत्युके पश्चात् विश्वेदेवोंमें मिल गया (स्वर्गा० ५ । १६)।

कम्पन—एक महाबली नरेश, जो युधिष्ठिरकी सभामें विराजमान होते थे (सभा० ४ । २२)।

कम्पना—एक सिद्धसेवित नदी, जिसका जल भारतीय प्रजा पीती है (भीष्म० ९ । २५)। इसमें स्नान करनेसे पुण्डरीक यज्ञका फल प्राप्त होता है (वन० ८४ । ११६)।

कम्बल—(१) एक प्रमुख नाग (आदि० ३५ । १०)। ये वरुणकी सभामें भी विराजमान होते हैं (सभा० ९ । ९)। मातलिके उपाख्यानमें ये कश्यपके वंशज कहे गये हैं (उद्योग० १०३ । ९)। प्रयागतीर्थमें कम्बल नागका स्थान है, जो ब्रह्माजीकी वेदीके अन्तर्गत है (वन० ८५। ७६-७७)।(२) कुशद्वीपका चौथा वर्ष (भीष्म० १२ । १३)।

करंजनिलया—वृक्षोंकी माता अनला या वीरुधा, जो करंज नामक वृक्षपर निवास करती है। यह वरदायिनी तथा

प्राणियोंपर कृपा करनेवाली है; अतः पुत्रार्थी मनुष्य करंज वृक्षपर इसके उद्देश्यसे प्रणाम करते हैं (**वन० २३० । ३५–३६**) ।

करक–एक भारतीय जनपद (**भीष्म० ९ । ६०**) ।

करकर्ष–चेदिराजका भ्राता । शरभका छोटा भाई । इन दोनोंको साथ लेकर वे (चेदिराज) पाण्डवोंकी सहायताके लिये आये थे (**उद्योग० ५० । ४७**) । इसने युद्धके मैदानमें आगे बढ़कर चेकितानको अपने रथपर बिठाकर उनकी रक्षा की (**भीष्म० ८४ । ३२–३३**) ।

करकाश–कौरवपक्षका एक योद्धा, जो द्रोणनिर्मित गरुड-व्यूहमें उसकी ग्रीवाके स्थानमें खड़ा किया गया था (**द्रोण० २० । ६**) ।

करट–एक भारतीय जनपद (**भीष्म० ९ । ६३**) ।

करतोया–एक तीर्थभूत पवित्र नदी, जो वरुणकी सभामें उपस्थित हो उनकी उपासना करती है (**सभा० ९ । २२**) । यहाँ तीन रात उपवास करनेसे अश्वमेधयज्ञका फल मिलता है (**वन० ८५ । ३**) ।

करन्धम–एक इक्ष्वाकुवंशी नरेश, जो खनीनेत्रके पुत्र और अविक्षित्के पिता थे । इनका प्रथम नाम सुवर्चा था । इन्होंने अपने करका धमन करके (हाथको बजाकर) सेना उत्पन्न किया और शत्रुओंको मार भगाया; इसलिये ये करन्धम कहलाये (**आश्व० ४ । २–१९**) । ये यमराजकी सभामें रहकर भगवान् यमकी उपासना करते हैं (**सभा० ८ । १६**) ।

करभ–एक राजा, जो मगधराज जरासन्धके आगे नतमस्तक रहता था (**सभा० १४ । १३**) ।

करभञ्जक–एक भारतीय जनपद (**भीष्म० ९ । ६९**) ।

करम्भा–कलिङ्गदेशकी राजकुमारी । पूरुवंशी महाराज अक्रोधनकी पत्नी । देवातिथिकी माता (**आदि० ९५ । २२**) ।

करवीर–(१) एक प्रमुख नाग (**आदि ३५ । १२**) । (**२**) द्वारकाके समीपवर्ती एक वन (**सभा० ३८ । २९ के बाद, पृष्ठ ८१३, कालम १**) ।

करवीरपुर–एक तीर्थ, जहाँ स्नान करनेसे मनुष्य ब्रह्मरूप हो जाता है (**अनु० २५ । ४४**) ।

करहाटक–दक्षिण भारतका एक देश, जिसे सहदेवने दूतोंद्वारा ही जीता था (**सभा० ३१ । ७०**) ।

कराल–एक देवगन्धर्व, जो अर्जुनके जन्मोत्सवके समय आया था (**आदि० १२२ । ५७**) ।

करालजनक–मिथिलाके एक राजा, जिन्होंने वसिष्ठजीसे विविध ज्ञानविषयक प्रश्न किये और उनके सदुपदेश सुने (**शान्ति० ३०२ अध्यायसे ३०८ अध्याय तक**) ।

करालदन्त–इन्द्रकी सभामें विराजनेवाले एक महर्षि, जो वहाँ रहकर इन्द्रकी उपासना करते हैं (**सभा० ७ । १४**) ।

करालाक्ष–स्कन्दका एक सैनिक (**शल्य० ४५ । ६१**) ।

करीति–एक भारतीय जनपद (**भीष्म० ९ । ४४**) ।

करीषक–एक भारतीय जनपद (**भीष्म० ९ । ५५**) ।

करीषिणी–एक नदी, जिसका जल भारतीय प्रजा पीती है (**भीष्म० ९ । १७, २३**) ।

करूष–(१) एक भारतीय जनपद (आधुनिक विद्वानोंकी धारणाके अनुसार बघेलखण्ड और बुन्देलखण्डका कुछ भाग (**आदि० १२२ । ४०**) । (**२**) करूषराज, जिसकी प्राप्तिके लिये तपस्या करनेवाली वैशाली भद्राका शिशुपालने अपहरण किया था (**सभा० ४५ । ११**) । (**३**) एक नरेश, जिन्होंने जीवनमें कभी मांस नहीं खाया (**अनु० ११५ । ६४**) ।

करेणुमती–चेदिनरेश शिशुपालकी पुत्री, नकुलकी पत्नी एवं निरमित्रकी माता (**आदि० ९५ । ७९**) ।

कर्कखण्ड–पूर्वीय भारतका एक जनपद, जिसे कर्णने दुर्योधनके लिये जीता था (**वन० २५४ । ८**) ।

कर्कर–एक प्रमुख नाग (**आदि० ३५ । १६**) ।

कर्कोटक–(१) कश्यप और कद्रूकी संतानोंमें प्रमुख एक नाग (**आदि० ३५ । ५**) । ये अर्जुनके जन्मोत्सवमें गये थे (**आदि० १२२ । ७१**) । वरुणकी सभामें विराजमान होते हैं (**सभा० ९ । ९**) । दावानलसे दग्ध होनेके भयसे इनका राजा नलको पुकारना, नलके आनेपर उनसे नारदजीके शापसे अपने स्थावर-तुल्य होनेका हाल कहना, उनका मित्र होना, राजा नलको डँसकर उनका रूप विकृत करना, उन्हें आश्वासन देना तथा पुनः पूर्वरूपमें परिणत होनेके लिये ओढ़नेके निमित्त दो वस्त्र प्रदान करना (**वन० ६६ । २—२५**) । ये शिवजीके रथके घोड़ोंके केसर बाँधनेकी रस्सी बनाये गये थे (**कर्ण० ४ । २९**) । बलरामजीके स्वधामगमनके समय स्वागतके लिये ये भी गये थे (**मौसल० ४ । १५**) । (**२**) कर्कोटक देश और वहाँके निवासी (**कर्ण० ४४ । ४३**) ।

कर्ण–(१) कुन्तीके गर्भ और सूर्यके अंशसे कवच-कुण्डल-धारी महाबली कर्णकी उत्पत्ति (**आदि० ६३ । ९८; आदि० ११० । १८**) । पहले इसका 'वसुषेण' नाम था; परंतु जब इसने अपने कवच-कुण्डलोंको शरीरसे उधेड़कर इन्द्रको दे दिया, तबसे उसका नाम

'वैकर्तन' हो गया (आदि० ६७ । १४४—१४७)। कुन्तीके द्वारा इसका जलमें परित्याग (आदि० ६७ । १३९; आदि० ११० । २२)। इसे ब्राह्मणके लिये कुछ भी अदेय नहीं था (आदि० ६७ । १४३)। ब्राह्मण-रूपमें याचक होकर आये हुए इन्द्रको इसके द्वारा कवच-कुण्डलका दान एवं प्रसन्न हुए इन्द्रसे इसको 'शक्ति' नामक अमोघ अस्त्रकी प्राप्ति (आदि०६७।१४४–१४६; आदि० ११० । २८-२९)। यह सूर्यदेवका सर्वोत्तम अंश था (आदि० ६७ । १५०)। गङ्गाके प्रवाहमें बहते हुए इस बालक कर्णका अधिरथके हाथमें पहुँचना (आदि० १०० । २३)। अधिरथ तथा उसकी पत्नी राधाका इसको अपना पुत्र बना लेना (आदि० ११० । २३)। इसका 'वसुषेण' नाम होनेका कारण (आदि० ११० । २४)। इसकी सूर्य-भक्ति (आदि० ११० । २५)। इसकी ब्राह्मण-भक्ति (आदि० ११० । २६)। इसका 'कर्ण' और 'वैकर्तन' नाम होनेका कारण (आदि० ११० । ३१)। द्रोणाचार्यके समीप अध्ययनके लिये इसका आगमन (आदि० १३१ । ११)। अध्ययनावस्थामें अर्जुनसे इसकी स्पर्धा (आदि० १३१ । १२)। रङ्गभूमिमें इसकी अर्जुनसे स्पर्धा तथा अस्त्र-कुशलता (आदि० १३५ । ९—१२)। रङ्ग-भूमिमें दुर्योधनद्वारा इसका सम्मान (आदि० १३५ । १३-१४)। अर्जुनद्वारा इसे रङ्गभूमिमें फटकार (आदि० १३५ । १८)। अर्जुनसे लड़नेके लिये इसका रङ्गभूमिमें उद्यत होना (आदि० १३५ । २०)। रङ्गभूमिमें कृपाचार्यका इससे परिचय पूछना और इसका लज्जित होना (आदि० १३५ । ३४)। दुर्योधनद्वारा इसका अङ्गदेशके राजपदपर अभिषेक (आदि० १३५ । ३८)। इसके द्वारा दुर्योधनको अटल मित्रताका वरदान (आदि० १३५ । ४१)। इसका रङ्गभूमिमें अपने पिता अधिरथ-का अभिवादन (आदि० १३६ । २)। भीमसेनद्वारा इसका तिरस्कार (आदि० १३६ । ६)। द्रुपदसे पराजित होकर इसका पलायन (आदि० १३७ । २४ के बाद दाक्षिणात्य पाठ)। द्रौपदीके स्वयंवरमें इसका आगमन (आदि० १८५ । ४)। स्वयंवरमें लक्ष्यवेधके लिये उद्यत हुए कर्णको देखकर सूतपुत्र होनेके कारण इसका वरण न करनेके सम्बन्धमें द्रौपदीका वचन (आदि० १८६ । २३)। द्रौपदीके स्वयंवरमें अर्जुनद्वारा इसकी पराजय (आदि० १८९ । २२)। पराक्रमपूर्वक द्रुपदको पराजित कर पाण्डवोंको कैद करनेके लिये इसका दुर्योधनको परामर्श (आदि० २०१ । १—२१)। इसको द्रोणकी फटकार (आदि० २०३ । २६)। राजसूय-दिग्विजयके समय भीमसेनद्वारा इसकी पराजय (सभा० ३० । २०)। युधिष्ठिरके राजसूय-यज्ञमें रथि-श्रेष्ठ कर्णका आगमन (सभा० ३४ । ७)। यह अङ्ग और वङ्ग देशका राजा था और इसने जरासंधको परास्त किया था (सभा० ४४ । ९–११)। द्यूतके लिये आये हुए राजा युधिष्ठिर कर्णसे भी मिले थे (सभा० ५८ । २३)। द्यूतसभामें कर्ण भी उपस्थित था और द्रौपदीको दावपर लगानेसे बहुत प्रसन्न हुआ था (सभा० ६५ । ४४)। इसके द्वारा विकर्णको फटकारते हुए द्रौपदीके हारे जानेकी घोषणा और द्रौपदी तथा पाण्डवोंके वस्त्र उतार लेनेके लिये दुःशासनको आदेश (सभा० ६८ । २७—३८)। इसका द्रौपदीको दूसरा पति चुन लेनेके लिये कहना और उसे दासी बताना (सभा० ७१ । १—४)। वनमें चलकर पाण्डवोंका वध करनेके लिये दुर्योधनको इसकी सलाह (वन० ७ । १६—२०)। द्वैतवनमें पाण्डवोंके पास चलनेके लिये इसका दुर्योधनको उभाड़ना (वन० २३७ अध्याय)। घोषयात्राका प्रस्ताव बताना (वन० २३८ । १९-२०)। धृतराष्ट्रके आगे घोषयात्राका प्रस्ताव रखना (वन० २३९ । ३–५)। द्वैतवनमें गन्धर्वोंद्वारा इसकी पराजय (वन० २४१ । ३२)। मार्गमें इसके द्वारा दुर्योधनका अभिनन्दन (वन० २४७ । १०—१५)। दुर्योधनको अनशन न करनेके लिये इसका समझाना (वन० २५० अध्याय)। भीष्मद्वारा इसकी निन्दा, इसके क्षोभपूर्ण वचन और इसका दिग्विजयके लिये प्रस्थान (वन० २५३ अध्याय)। इसके द्वारा समूची पृथ्वीपर दिग्विजय और हस्तिनापुरमें इसका स्वागत (वन० २५४ अध्याय)। कर्णका दुर्योधनको यज्ञके लिये सलाह देना (वन० २५५ अध्याय)। कर्णद्वारा अर्जुनके वधकी प्रतिज्ञा (वन० २५७ । १६-१७)। सूर्यके समझानेपर भी इसका कवच-कुण्डल देनेका ही निश्चय रखना (वन० ३०० । २७—३९)। इन्द्रसे शक्ति लेकर ही उन्हें कवच-कुण्डल देनेका निश्चय (वन० ३०२ । १७ के बाद दाक्षिणात्य पाठ)। कर्णका कुन्तीके गर्भसे जन्म, कुन्तीका उसे पिटारीमें रखकर अश्वनदीमें बहा देना तथा अमृतसे प्रकट हुए कवच-कुण्डल धारण करनेके कारण इसका नदीमें जीवित रह सकना (वन० ३०८ । ४—७–२७)। पिटारीमें बंद हुए कर्णका अधिरथ और राधाके हाथमें आना (वन० ३०९ । ५-६)। राधाद्वारा कर्णका विधि-पूर्वक पालन (वन० ३०९ । ११-१२)। इसका 'वसुषेण' और 'वृष' नाम पड़नेका कारण (वन० ३०९ । १३-१४)। हस्तिनापुरमें इसकी शिक्षा और दुर्योधनसे मित्रता (वन० ३०९ । १७-१८)। इन्द्रसे उनकी शक्ति माँगना (वन० ३१० । २१)। इन्द्रको

इसके द्वारा कवच-कुण्डल-दान (वन० ३१० । ३८)। पाण्डवोंका पता लगानेके लिये इसकी पुनः गुप्तचर भेजनेकी सलाह (विराट० २६ । ८—१२)। द्रोणाचार्यकी बातोंपर आक्षेप करते हुए अर्जुनसे युद्ध करनेका ही इसका निश्चय (विराट० ४७ । २१–३४)। इसकी आत्मप्रशंसापूर्ण अहङ्कारोक्ति (विराट० ४८ अध्याय)। अर्जुनपर इसका आक्रमण (विराट० ५४ । १९)। अर्जुनसे पराजित होकर युद्धके मुहानेसे भागना (विराट० ५४ । ३६)। अर्जुनके साथ पुनः युद्ध और पराजित होकर भागना (विराट० ६० । २७)। कर्णके कपड़ोंकी उत्तरद्वारा उतारा जाना (विराट० ६५ । १५)। द्रुपदके पुरोहितके कथनका समर्थन करनेवाले भीष्मके वाक्योंपर इसका आक्षेप करना (उद्योग० २१ । ९—१५)। इसकी आत्मप्रशंसा (उद्योग० ४९ । २९—३२; उद्योग० ६२ । २—६)। भीष्मजीके आक्षेप करनेपर इसका अस्त्र त्यागकर सभासे प्रस्थान (उद्योग० ६२ । १३)। दुर्योधनके पक्षमें रहनेका निश्चय बताते हुए श्रीकृष्णसे रणयज्ञके रूपकका वर्णन करना (उद्योग० १४१ अध्याय)। इसके द्वारा श्रीकृष्णसे युधिष्ठिरकी विजय और दुर्योधनकी पराजयके लक्षणोंका वर्णन (उद्योग० १४३ । २—४५)। कुन्तीको उत्तर देते हुए उनके चार पुत्रोंको न मारनेकी प्रतिज्ञा (उद्योग० १४६ । ४—२३)। भीष्मजीके जीते-जी युद्ध न करनेकी प्रतिज्ञा (उद्योग० १५६ । २५)। भीष्मकी कटु आलोचना (उद्योग० १६८ । ११—२९)। पाँच दिनमें ही पाण्डवसेनाको नष्ट करनेकी अपनी शक्तिका कथन (उद्योग० १९३ । २०)। श्रीकृष्णके समझानेपर दुर्योधनका ही पक्ष ग्रहण करनेका निश्चय (भीष्म० ४३ । ९२)। भीष्मसे शस्त्र डलवा देनेके लिये दुर्योधनको सलाह देना (भीष्म० ९७ । ७—१३)। बाणशय्यापर पड़े हुए भीष्मके पास जाकर इसका उन्हें प्रणाम करना (भीष्म० १२२ । ४-५)। भीष्मके समझानेपर क्षमा-प्रार्थना करते हुए इसका युद्धका ही निश्चय बताना (भीष्म० १२२ । २३—३३)। कौरवोंद्वारा इसका स्मरण (द्रोण० १ । ३३—४७)। भीष्मके लिये शोक प्रकट करते हुए इसका रणके लिये प्रस्थान (द्रोण० २ अध्याय)। भीष्मकी प्रशंसा करते हुए युद्धके लिये उनसे आज्ञा माँगना (द्रोण० ३ अध्याय)। भीष्मकी आज्ञा पाकर कौरवोंकी सेनामें इसका जाना (द्रोण० ४ । १५)। दुर्योधनके पूछनेपर इसका सेनापतिके लिये द्रोणाचार्यका नाम बताना (द्रोण० ५ । १३—२१)। दुर्योधनसे भीमसेनके स्वभावका वर्णन करते हुए द्रोणाचार्यकी रक्षाके लिये कहना (द्रोण० २२ । १८—२८)। केकय-राजकुमारोंके साथ युद्ध (द्रोण० २५ । ४२–४४)। अर्जुन, भीमसेन, धृष्टद्युम्न और सात्यकिके साथ युद्ध (द्रोण० ३२ । ५२—७०)। इसका अभिमन्युसे पराजित होना (द्रोण० ४० । १७—३६)। इसका द्रोणाचार्यसे अभिमन्युके वधका उपाय पूछना (द्रोण० ४८ । १८)। इसके द्वारा अभिमन्युके धनुष और ढालका काटा जाना (द्रोण० ४८ । ३२—३९)। इसके ध्वजका वर्णन (द्रोण० १०५ । १२–१४)। भीमसेनके साथ युद्धमें इसका पराजित होना (द्रोण० १२९ । ३३)। भीमसेनके साथ इसका युद्ध और पराजित होना (द्रोण० १३१ से १३८ अध्यायतक)। भीमसेनसे बचनेके लिये इसका रथमें दुबक जाना (द्रोण० १३९ । ७६)। भीमसेनको मूर्च्छित करके इसका धनुषकी नोकसे उन्हें दबाना (द्रोण० १३९ । ९१-९२)। भीमसेनको कटुवचन सुनाना (द्रोण० १३९ । ९५—१०९)। अर्जुनके बाणोंसे आहत होकर इसका दूर हट जाना (द्रोण० १३९ । ११४)। अर्जुनके द्वारा युद्धमें परास्त होना (द्रोण० १४५ । ८३-८४)। दुर्योधनके प्रोत्साहन देनेपर उसे उत्तर देना (द्रोण० १४५ । २५—३३)। सात्यकिके साथ युद्धमें इसकी पराजय (द्रोण० १४७ । ६४-६५)। दुर्योधनद्वारा द्रोणाचार्यपर किये गये दोषारोपणका निराकरण (द्रोण० १५२ । १५—२२)। दुर्योधनसे दैवकी प्रधानताका वर्णन (द्रोण० १५२ । २३–३४)। दुर्योधनको आश्वासन (द्रोण० १५८ । ५–११)। इसके द्वारा कृपाचार्यका अपमान (द्रोण० १५८ । २५–३२; द्रोण० १५८ । ४९—७०)। अर्जुनके साथ युद्धमें इसका पराजित होना (द्रोण० १५९ । ६२–६४)। सहदेवको युद्धमें परास्त करके उनके शरीरमें धनुषकी नोक चुभोकर उन्हें कटु वचन सुनाना (द्रोण० १६७ । २—१८)। सात्यकिके साथ इसका युद्ध (द्रोण० १७० । ३०—४३)। दुर्योधनको इसकी सलाह (द्रोण० १७० । ४६—६०)। इसके द्वारा धृष्टद्युम्नकी पराजय (द्रोण० १७३ । ७)। घटोत्कचके साथ इसका घोर युद्ध (द्रोण० १७५ अध्याय)। इसके द्वारा इन्द्रकी दी हुई शक्तिसे घटोत्कचका वध (द्रोण० १७९ । ५४–५८)। भीमसेनके साथ युद्ध और उन्हें परास्त करना (द्रोण० १८८ । १०–२२)। भीमसेनके साथ युद्ध (द्रोण० १८९ । ५०–५५)। द्रोणाचार्यके मारे जानेपर युद्धस्थलसे भागना (द्रोण० १९३ । १०)। सात्यकिद्वारा इसकी पराजय (द्रोण० २०० । ५३)। संजयद्वारा इसके सेनापतित्व तथा मृत्युका वर्णन (कर्ण० ३ । १७–२१)। अर्जुनद्वारा इसके पुत्र वृषसेनके

वधकी चर्चा (कर्ण० ५ । २३-२४) । सेनापतिके लिये प्रस्ताव करनेपर दुर्योधनको आश्वासन (कर्ण० १० । ४०-४१) । सेनापति-पदपर अभिषेक (कर्ण० १० । ४३) । इसका कौरव-सेनाका मकरव्यूह बनाकर युद्धके लिये प्रस्थान (कर्ण० ११ । १४) । इसके द्वारा पाण्डवसेनाका संहार (कर्ण० २१ । १८-२४) । भागते हुए नकुलके गलेमें धनुष फँसाकर उन्हें पकड़ना और जीवित छोड़ देना (कर्ण० २४ । ४५-५१) । सात्यकिके साथ इसका युद्ध (कर्ण० ३० अध्याय) । दुर्योधनसे अपनी युद्धसम्बन्धी व्यवस्थाके लिये कहना (कर्ण० ३१ । ३५—६९) । शल्यको सारथि बनाकर युद्धके लिये प्रस्थान (कर्ण० ३६ । २४-२५) । इसकी आत्मप्रशंसा (कर्ण० ३७ । १३—३१) । अर्जुनका पता बतानेवालेको पुरस्कार देनेकी घोषणा (कर्ण० ३८ अध्याय) । शल्यको फटकारते हुए मद्रनिवासियोंकी निन्दा करना और उन्हें मारनेकी धमकी देना (कर्ण० ४० अध्याय) । शल्यको फटकारते हुए अपनेको परशुरामजी तथा एक ब्राह्मणद्वारा प्राप्त शापोंकी बात बताना (कर्ण० ४२ अध्याय) । आत्मप्रशंसापूर्वक शल्यको फटकारना (कर्ण० ४३ अध्याय) । इसके द्वारा मद्र आदि बाह्लीक देशवासियोंकी निन्दा करना (कर्ण० ४४ से ४५ अध्यायतक) । इसके द्वारा पाञ्चालोंका संहार (कर्ण० ४६ । २१-२२) । पाण्डव-सेनाका संहार (कर्ण० ४८ । ९-१७) । कर्णपुत्र सुषेण और चित्रसेन-द्वारा पिताके रथके पहियोंकी रक्षा, वृषसेनद्वारा उसके पृष्ठभागकी रक्षा (कर्ण० ४८ । १८-१९) । भीमसेन-द्वारा कर्णपुत्र भानुसेनका वध (कर्ण० ४८ । २७) । कर्णद्वारा युधिष्ठिरपर आक्रमण (कर्ण० ४८ । ६३) । युधिष्ठिरके साथ युद्धमें इसका मूर्च्छित होना (कर्ण० ४९ । २१) । इसके द्वारा युधिष्ठिरके चक्ररक्षक चन्द्रदेव और दण्डधारका वध (कर्ण० ४९ । २७) । युधिष्ठिरको परास्त करके उनका तिरस्कार करना (कर्ण० ४९ । ४८-५९) । भीमसेनद्वारा इसकी पराजय (कर्ण० ५० । ४७) । भीमसेनके साथ इसका घोर संग्राम (कर्ण० ५१ से अध्यायतक) । इसके द्वारा पाञ्चाल, चेदि और केकय-वीरोंका भीषण संहार (कर्ण० ५६ । ३८—६९) । धृष्टद्युम्नके साथ युद्ध (कर्ण० ५९ । ७-१४) । इसके द्वारा शिखण्डीकी पराजय (कर्ण० ६१ । २३) । युधिष्ठिरको घायल करके युद्धसे विमुख कर देना (कर्ण० ६२ । २९-३१) । इसके द्वारा नकुल, सहदेव और युधिष्ठिरकी भीषण पराजय (कर्ण० ६३ अध्याय) । दुर्योधनकी प्रेरणासे इसका भार्गवास्त्र प्रकट करना (कर्ण० ६४ । ४७) । उत्तमौजाद्वारा कर्णपुत्र सुषेणका वध (कर्ण० ७५ । ९) । इसके द्वारा पाण्डवसेनाका भीषण संहार (कर्ण० ७८ अध्याय) । अर्जुनके पराक्रमके विषयमें शल्यसे वार्तालाप (कर्ण० ७९ । ४९—७०) । अर्जुन और भीमसेनद्वारा खदेड़े हुए धृतराष्ट्र-पुत्रोंको इसका शरण देना (कर्ण० ८१ । ५१) । इसके द्वारा केकयराजकुमार विशोकका वध (कर्ण० ८२ । ३) । केकय-सेनापति उग्रकर्माका वध (कर्ण० ८२ । ५) । सात्यकिद्वारा कर्णपुत्र प्रसेनका वध (कर्ण० ८२ । ६) । इसके द्वारा धृष्टद्युम्नके पुत्रका वध (कर्ण० ८२ । ९) । इसका भीमसेनके भयसे भीत होना (कर्ण० ८४ । ७-८) । अर्जुनद्वारा कर्णपुत्र वृषसेनका वध (कर्ण० ८५ । ३६) । शल्यसे वार्तालाप (कर्ण० ८७ । १०१-१०३) । अर्जुनके साथ द्वैरथ युद्ध (कर्ण० ८९ अध्याय) । कर्णके सर्पमुख बाणसे अर्जुनके किरीटका गिरना (कर्ण० ९० । ३३) । रथका पहिया धँस जानेसे उसे निकालनेके लिये इसका रथसे उतरना और बाण न चलनेके लिये अर्जुनसे अनुरोध करना (कर्ण० ९० । १०५-११६) । अर्जुनद्वारा इसका वध (कर्ण० ९१ । ५०) । कर्णका दाह-संस्कार (स्त्री० २६ । ३६) । ब्राह्मणद्वारा इसे शाप प्राप्त होनेका प्रसंग (शान्ति० २ । २३-२६) । इसे ब्रह्मास्त्रकी प्राप्ति और परशुरामजीका शाप (शान्ति० ३ अध्याय) । कलिङ्गराजकी कन्याका दुर्योधनद्वारा अपहरण होनेपर इसके द्वारा समस्त राजाओंकी पराजय (शान्ति० ४ । १७-२०) । इसके बल-पराक्रमका वर्णन (कर्ण० ५ अध्याय) । इसके द्वारा जरासंधकी पराजय (कर्ण० ५ । ४) । इसके द्वारा मालिनी और चम्पानगरीकी प्राप्ति (कर्ण० ५ । ६-७) । इसके कुण्डलदानकी चर्चा (अनु० १३७ । ९) । कुन्तीका व्यासजीके सम्मुख कर्णके जन्मप्रसङ्गकी चर्चा और इसे देखनेकी इच्छा व्यक्त करना (आश्रम० ३० अध्याय) । कर्ण सूर्यका अंश था (आश्रम० ३१ । १४) । व्यासजीके आवाहन करनेपर कर्णका भी प्रकट होना (आश्रम० ३२ । ९) । स्वर्गमें जाकर इसका सूर्यदेवमें मिल जाना (स्वर्गा० ५ । २०) ।

महाभारतमें आये हुए कर्णके नाम—आधिरथि, आदित्यनन्दन, आदित्यतनय, अङ्गराज, अङ्गेश्वर, अर्कपुत्र, भरतर्षभ, गोपुत्र, कौन्तेय, कुन्तीसुत, कुरूद्वह, कुरुपृतनापति, कुरुवीर, कुरुयोध, पार्थ, पूषात्मज, राधासुत, राधात्मज, राधेय, रविसूनु, सौति, सावित्र, सूर्यज, सूर्यपुत्र, सूर्यसम्भव, सूत, सूतनन्दन, सूतपुत्र, सूतसूनु, सूतसुत, सूततनय, सूतात्मज, वैकर्तन, वैवस्वत, वसुषेण, वृष । (२) धृतराष्ट्रका एक पुत्र (आदि० ६७ । ९५; आदि० ११६ । ३) । भीमसेनद्वारा इसपर आक्रमण

(भीष्म० ७७ । ८) । भीमसेनद्वारा इसका वध (भीष्म० ७७ । १६) ।

कर्णनिर्वाक–वानप्रस्थधर्मका पालन करके स्वर्गको प्राप्त हुए एक ब्रह्मर्षि (शान्ति० २४४ । १८) ।

कर्णपर्व–महाभारतका एक प्रमुख पर्व ।

कर्णप्रावरण–(१) प्राचीन कालके मनुष्योंकी एक जाति, जो दक्षिण समुद्रके तटपर रहती थी । सहदेवने इस जातिके लोगोंको परास्त किया था (सभा० ३१ । ६७)। (जो अपने कानोंसे ही अपने शरीरको ढक लें, उन्हें 'कर्णप्रावरण' कहते हैं । प्राचीन कालमें ऐसी जातिके लोग थे, जिनके कान पैरोंतक लटकते थे ।) इस जातिके लोग युधिष्ठिरको भेंट देनेके लिये आये थे (सभा० ५२।१९)। (२) दक्षिण भारतका एक जनपद । यहाँके योद्धा दुर्योधनकी सेनामें थे (भीष्म० ५१ । १३) ।

कर्णप्रावरणा–स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । २५) ।

कर्णवेष्ट–एक क्षत्रिय राजा, जो 'क्रोधवश' संज्ञक दैत्यके अंशसे उत्पन्न थे (आदि० ६७ । ६०–६६) । पाण्डवोंकी ओरसे इन्हें रणनिमन्त्रण भेजा गया था (उद्योग० ४ । १५) ।

कर्णश्रवा–अजातशत्रु युधिष्ठिरका आदर करनेवाले एक महर्षि (वन० २६ । २३) ।

कर्णाटक–एक दक्षिण भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ५९) ।

कर्णिका–ग्यारह विख्यात अप्सराओंमेंसे एक, जिसने अर्जुनके जन्म-समयमें आकर नाच-गान किया था (आदि० १२२ । ६४–६६) ।

कर्णिकारवन–सुमेरु पर्वतके उत्तर भागमें समस्त ऋतुओंके फूलोंसे भरा हुआ एक दिव्य एवं रमणीय वन (भीष्म० ६ । २४) ।

कर्ता–एक विश्वेदेव (अनु० ९१ । ३५) ।

कर्दम–(१) एक प्रमुख नाग (आदि० ३५ । १६) । (२) एक प्राचीन ऋषि, जो ब्रह्मसभामें रहकर ब्रह्माजीकी उपासना करते हैं (सभा० ११ । १९) । इक्कीस प्रजापतियोंमें इनका नाम आया है (शान्ति० २३४ । ३६-३७) । (३) एक राजर्षि, जो विरजाके पौत्र तथा कीर्तिमान्‌के पुत्र थे। इनके पुत्रका नाम अनंग था (शान्ति० ५९ । ९०-९१) ।

कर्दमिलक्षेत्र–समङ्गाके निकटका एक क्षेत्र, जहाँ राजा भरतका अभिषेक हुआ था (वन० १३५ । १) ।

कर्वट–एक प्राचीन देश, जिसके राजाको भीमसेनने जीता था (सभा० ३० । २४) ।

कल–पितरोंका एक गण । ये ब्रह्मसभामें रहकर ब्रह्माजीकी उपासना करते हैं (सभा० ११ । ४७) ।

कलविङ्क–(१) एक तीर्थ, जहाँ स्नान करनेसे अनेक तीर्थोंमें स्नानका फल मिलता है (अनु० २५ । ४३) । (२) एक प्रकारका पक्षी, जिसकी उत्पत्ति मरे हुए त्रिशिराके सुरापायी मुखसे हुई (उद्योग० ९ । ४२) ।

कलश–एक कश्यप-वंशी नाग (उद्योग० १०३ । ११) ।

कलशपोतक–एक प्रमुख नाग (आदि० ३५ । ७) ।

कलशी–एक तीर्थ, जहाँ आचमन करनेसे अग्निष्टोम यज्ञका फल मिलता है (वन० ८३ । ८०) ।

कलशोदर–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ७२) ।

कला–कालपरिमाण (शल्य० ४५ । १५) ।

कलाप–एक महातेजस्वी ऋषि, जिनका राजसूय यज्ञके अन्तमें राजा युधिष्ठिरने पूजन किया (सभा० ४५ । ३८ के बाद दाक्षिणात्यपाठ पृष्ठ ८४३, कालम १) ।

कलि–(१) सोलह देवगन्धर्वोंमेंसे एक । कश्यप-पत्नी 'मुनि' के पुत्र (आदि० ६५ । ४४) । ये अर्जुनके जन्म-महोत्सवमें भी पधारे थे (आदि० १२२ । ५७) । (२) सत्ययुग आदिके क्रमसे प्रवृत्त होनेवाला चौथा युग (शान्ति० ६९ । ८१–९२) । इसका इन्द्रके साथ संवाद—दमयन्तीने राजा नलको अपना पति चुन लिया—यह इन्द्रसे सुनकर इसका कुपित होना और उसे दण्ड देनेको उद्यत हो जाना (वन० ५८ । ६) । नलके शरीरमें प्रविष्ट होकर उन्हें राज्यसे वञ्चित करनेका संकल्प करना और इसमें इसकी द्वापरसे सहायताके लिये प्रार्थना (वन० ५८ । १३-१४) । इसका राजा नलके शरीरमें प्रवेश (वन० ५९ । ३) । पुष्करको जूआ खेलनेके लिये तैयार करना (वन० ५९ । ४-५) । नलको दुःख देनेवाले (कलियुग) के लिये दमयन्तीका शाप (वन० ६३ । १६-१७) । कर्कोटक नागके विषसे दग्ध हो कलियुगका बड़े दुःखसे नलके शरीरमें रहना (वन० ६६ । १५-१६) । द्यूतविद्याका रहस्य जाननेके अनन्तर नलके शरीरसे कलियुगका निकलना और शापाग्निसे मुक्त होना (वन० ७२ । ३०-३१) । कलिका अपने स्वरूपको प्रकट करना और नलका उसे शाप देनेका विचार करना (वन० ७२ । ३२) । भयभीत एवं कम्पित हुए कलियुगका हाथ जोड़कर राजासे क्रोध रोकनेकी प्रार्थना करना, इन्द्रसेनजननी दमयन्तीके शापसे अपने पीडित होनेकी चर्चा करना, नलकी शरणमें जाना और नलका कीर्तन करनेवालोंको अपनेसे (कलिसे) भय न होनेकी घोषणा करना और डरकर बहेड़ेके वृक्षमें समा जाना (वन० ७२ ।

३०–३८)। कलियुगका सर्वश्रेष्ठ तीर्थ गङ्गा (वन० ८५। ८९–९१)। कलियुगका मान (वन० १८८। २६-२७)। कलियुगके अन्तिम भागमें संसारकी स्थिति (वन० १८८। ३९–६४)। कलियुग एवं युगान्तमें जगत्की परिस्थिति (वन० १९०। ११–८८); कलिके मनुष्योंकी आयु (शान्ति० २३१। २५)। कलिके युगधर्मका वर्णन (वन० १४९। ३३–३८; शान्ति० ६९। ९१–९७; शान्तिपर्वके २३१, २३२, २३८ और ३४० आध्यायोंमें भी कलिधर्मका वर्णन आया है)। मार्कण्डेयजीद्वारा उसके प्रभावका वर्णन (वन० १८८। २५–८५; वन० १९०। ७–९२)। इस कलियुग-का अंश ही कुरुकुलकलङ्क राजा दुर्योधनके रूपसे उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७। ८७; आश्रम० ३१। १०)। (३) भगवान् सूर्यका एक नाम (वन० ३। २०)। (४) भगवान् शिवका एक नाम (अनु० १७। ७९)।

कलिङ्ग (कालिङ्ग)—(१) दक्षिण भारतका एक प्राचीन देश। तीर्थयात्राके अवसरपर यहाँ अर्जुनका आगमन (आदि० २१४। ९; भीष्म० ९। ४६, ६९)। सहदेवने दक्षिण-विजयके समय इसे जीता था (सभा० ३१। ७१)। इस देशके निवासी युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें भेंट लेकर आये थे (सभा० ५२। १८)। तीर्थयात्राके समय युधिष्ठिर यहाँ गये थे (वन० ११४। ४)। कर्णने दिग्विजयके समय इसे जीता था (वन० २५४। ८)। सहदेवने दन्तकूरमें कलिङ्गोंको परास्त किया था (उद्योग० २३। २४)। दन्तकूरमें श्रीकृष्णने कलिङ्गोंका संहार किया था (उद्योग० ४८। ७६)। सहदेवने इसे जीता था—इसकी चर्चा (उद्योग० ५०। ३१)। कर्णने इस देशको पहले जीता था (द्रोण० ४। ८)। द्रोणनिर्मित गरुडव्यूहकी ग्रीवा और पीठके स्थानपर कलिङ्गदेशीय योद्धा स्थित थे (द्रोण० २०। ६–१०)। परशुरामजीके द्वारा इस देशके निवासी परास्त हुए थे (द्रोण० ७०। १२)। कलिङ्गदेशीय योद्धा सात्यकिके साथ लड़े हैं (द्रोण० १४१। १०-११)। परशुरामजीके डरसे भगे हुए कुछ क्षत्रिय शूद्र हो गये थे—उन्हींमें कलिङ्गोंकी भी गणना है (अनु० ३३। २२)। (२) कलिङ्ग देशका राजा (सभा० ५१। ७ के बाद दा० पाठ)। इसका नाम श्रुतायु था (भीष्म० ५४। ६८-६९)। यह द्रौपदीके स्वयंवरमें गया था (आदि० १८५। १३)। द्रोणनिर्मित व्यूहके दाहिने अङ्गमें स्थित था (द्रोण० ७। ११)। जयद्रथ-की रक्षामें संलग्न था (द्रोण० ७४। १७)। भीमसेन-के साथ कलिङ्ग-राजकुमारका युद्ध और उनके द्वारा इसका वध (द्रोण० १५५। २१–२४)। कलिङ्गराज श्रुतायुको आगे करके कलिङ्गवासियोंने भीमसे लड़ाई की और उनके द्वारा वे मारे गये थे (भीष्म० ५४। ३–४२)। (शेष देखिये श्रुतायु—)। (३) स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५। ६४)।

कल्कि—भगवान् विष्णुके भावी दशम अवतार, जो कलियुग-के अन्तमें धर्मके शिथिल हो जानेपर प्रकट होंगे, इनका नाम होगा कल्कि विष्णुयशा (सभा० ३८। २९ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ७९६, कालम २; वन० १९०। ९३-९४)। कल्किके स्वरूप और कार्यका वर्णन (वन० १९०। ९३–९७)। इनके द्वारा कलियुगके बाद कृतयुगकी स्थापना (वन० १९१। १–१४)। भगवान् नारायणका नारदजीसे कल्किको अपना अवतार बताना (शान्ति० ३३९। १०४)।

कल्माष—(१) एक प्रमुख नाग (आदि० ३५। ७)। (२) एक उत्तम अश्व, जिसका रंग चितकबरा था। यह अश्व अर्जुनने दिग्विजयके समय हाटकदेशके निकट-वर्ती गन्धर्वनगरसे प्राप्त किया था (सभा० २८। ६)।

कल्माषपाद—एक इक्ष्वाकुवंशी राजा, जो ऋतुपर्णके पौत्र एवं सुदासके पुत्र थे। इनका दूसरा नाम मित्रसह था। सुदासपुत्र होनेसे ये सौदास भी कहलाते थे। इस भूतलपर ये असाधारण तेजसे सम्पन्न थे (आदि० १७५। १; अनु० ७८। १–२)। इनका नगरसे निकलकर वनमें मृगयाके लिये जाना, वहाँ इनके द्वारा हिंसक पशुओंका वध (आदि० १७५। २)। वहाँसे थककर इनका नगरकी ओर लौटना और एक तंग रास्तेपर इनकी शक्ति मुनिसे भेंट (आदि० १७५। ६–७)। वहाँ मार्ग देनेके प्रश्नको लेकर दोनोंमें विवाद और राजाद्वारा मुनिका तिरस्कार (आदि० १७५। ८–११)। शक्तिद्वारा इन्हें राक्षस होनेका शाप (आदि० १७५। १३–१४)। विश्वामित्रकी प्रेरणासे इनके शरीरमें 'किङ्कर' नामक राक्षसका आवेश (आदि० १७५। २१)। इनके द्वारा रसोइयेको एक तपस्वी ब्राह्मणके भोजनके लिये मनुष्यका मांस देनेकी प्रेरणा (आदि० १७५। ३१)। ब्राह्मण-द्वारा इन्हें राक्षसस्वभावसे युक्त होनेका शाप (आदि० १७५। ३५–३६)। इनके द्वारा महर्षि शक्तिका भक्षण (आदि० १७५। ४०)। विश्वामित्रकी प्रेरणासे इनके द्वारा वशिष्ठके समस्त पुत्रोंका संहार (आदि० १७५। ४२)। वशिष्ठपर इनका आक्रमण (आदि० १७६। १८)। मन्त्रपूत जलसे अभिषिक्त करके वशिष्ठद्वारा इनका उद्धार (आदि० १७६। २६)। वसिष्ठद्वारा इनको कभी भी ब्राह्मणका अपमान न करनेका आदेश (आदि० १७६। ३१)। वशिष्ठसे पुत्र प्राप्त करनेके लिये इनकी

प्रार्थना (आदि० १७६ । ३३)। वशिष्ठद्वारा इनकी पत्नीके गर्भसे 'अश्मक' नामक पुत्रका उत्पादन (आदि० १७६ । ४७) । शापग्रस्त-अवस्थामें इनके द्वारा मैथुनके लिये उद्यत हुए ब्राह्मणका भक्षण (आदि० १८१ । १६)। ब्राह्मणपत्नी आङ्गिरसीद्वारा इन्हें अपनी पत्नीके साथ समागम करते ही मृत्यु होने एवं वशिष्ठद्वारा ही पुत्र प्राप्त होनेका शाप (आदि० १८१ । २०) । महर्षि पराशरद्वारा दयावश सौदासकुमार सर्वकर्माकी प्राण-रक्षा (शान्ति० १४९ । ७६–७७) । इनका नाम मित्रसह और इनकी रानीका नाम मदयन्ती था । उसे इन्होंने वशिष्ठकी सेवामें अर्पित की (शान्ति० २३४ । ३०; अनु० १३७ । १८) । इनका वशिष्ठजीसे गौके विषयमें पूछना (अनु० ७८ । ३) । कुण्डलकी याचनाके लिये गये हुए उत्तङ्क मुनिके साथ इनका संवाद (आश्व० ५७ । १–१८; आश्व० ५८ । ४–१६) ।

कल्माषी–एक नदी, जिसके आस-पास भ्रमण करते हुए राजा द्रुपद ब्राह्मणोंकी एक बस्तीमें पहुँचे और याज-उपयाजसे मिले थे (आदि० १६६ । ५–६) । इसीके किनारे निवास करनेवाले भृगुजीने युधिष्ठिरको उपदेश देकर अनुगृहीत किया था (सभा० ७८ । १६)। (आचार्य नीलकण्ठने 'कल्माषी' का अर्थ 'कृष्णवर्णा यमुना' किया है ।)

कल्याणी–स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । ७)।

कवच–इन्द्रसभामें विराजमान होनेवाले एक ऋषि (सभा० ७ । १७ के बाद दाक्षि० पाठ) । ये पश्चिम दिशामें निवास करते हैं (शान्ति० २०८ । ३०) ।

कवची–धृतराष्ट्रका पुत्र (आदि० ६७ । १०३)। भीमसेनद्वारा इसका वध (कर्ण० ८४ । २–६) ।

कवि–(१) महर्षि भृगुके पुत्र (आदि० ६६ । ४२)। अगस्त्यजीके कमलोंकी चोरी होनेपर शपथ करना (अनु० ९४ । ३२) । (२) बृहस्पतिके पाँचवें पुत्र एक अग्नि, जो बड़वानलरूपसे समुद्रका जल सोखते हैं। शरीरके भीतर ऊपरकी ओर गतिशील होनेके कारण इन्हें 'उदान' और 'ऊर्ध्वभाक्' भी कहा गया है (वन० २१९ । २०) । (३) वरुणके यज्ञमें ब्रह्माजीके शुक्रका हवन होनेसे जो तीन पुरुष प्रकट हुए उनमेंसे एक । शेष दो भृगु और अङ्गिरा थे । ब्रह्माजीने कविको ही अपना पुत्र स्वीकार किया । इस कविके 'कवि, काव्य' आदि आठ पुत्र हुए जो वारुण कहलाते हैं । ये सभी प्रजापति हैं (अनु० ८५ । १३२–१३४) । (४) ब्रह्मपुत्र कविके पुत्र (अनु० ८५ । १३३) । (५) एक विश्वेदेव (अनु० ९१ । ३६) ।

कशेरक–कुबेरकी सभामें उपस्थित हो उनकी सेवामें संलग्न रहनेवाले बहुसंख्यक यक्षोंमेंसे एक (सभा० १० । १५)।

कशेरु–'त्वष्टा' प्रजापतिकी एक सुन्दरी पुत्री, जिसे चौदह वर्षकी अवस्थामें नरकासुर हर लाया था । सोलह हजार निन्यानबे अन्य कुमारियोंके साथ इसका भी भगवान् श्रीकृष्णके साथ विवाह हुआ । इन सब कुमारियोंने भगवान् श्रीकृष्णसे देवर्षि नारद तथा वायुदेवके भविष्य कथनकी सत्यता बताते हुए उनके दर्शनमात्रसे अपनेको कृतकृत्य बताया और उनके प्रति अपनी सकामभावना प्रकट की । फिर भगवान्ने इन्हें अपनाया (सभा० ३८ २९ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ८०४–८११) ।

कशेरुमान् (कसेरुमान्)—एक यवनजातीय असुर, जो श्रीकृष्णद्वारा मारा गया (सभा० ३८ । २९ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ८२४, कालम २; वन० १२ । ३२) ।

कश्यप–(१) एक देवर्षि, ब्रह्मर्षि और प्रजापति, जो मरीचि ऋषिके पुत्र और दक्ष प्रजापतिके जामाता हैं (आदि० ६५ । ११) । ये कद्रू और विनताके पति हैं (आदि० १६ । ६) । ब्रह्माजीने इन्हें सर्पोंपर क्रोध न करनेके लिये कहा और उनका विष उतारनेवाली विद्या प्रदान की (आदि० २० । १४-१५) । कश्यपजीका गरुड़से कुशल पूछना और उनके भोजन माँगनेपर एक हाथी और कछुएको खानेके लिये आदेश देना । विभावसु और सुप्रतीक मुनिके वैर और शापकी कथा सुनाकर उन्हींके हाथी और कछुआ होनेकी बात बताना और उनके विशाल शरीर एवं युद्धका वर्णन करना (आदि० २९ । १३––३२) । तपस्यामें लगे हुए पिता कश्यपका गरुड़को दर्शन (आदि० ३० । ११) । इनका पुत्रकी कामनासे यज्ञ करना (आदि० ३१ । ५) । वालखिल्यों-के प्रसादसे इनका विनताके गर्भसे अरुण और गरुड़को जन्म देकर गरुड़को पक्षियोंके 'इन्द्र' पदपर अभिषिक्त करना (आदि० ३१ । १२––१५) । अदिति, दिति, दनु, काला, दनायु, सिंहिका, क्रोधा, प्राधा, विश्वा, विनता, कपिला, मुनि, कद्रू––ये दक्षकी तेरह कन्याएँ इनकी पत्नियाँ हैं (आदि० ६५ । १२) । इनकी संतानोंका वर्णन (आदि० ६५ । १४—५४) । इनसे देवता और असुर दोनों उत्पन्न हुए (आदि० ६६ । ३४) । इन्होंने ज्येष्ठ पत्नी अदितिके गर्भसे इन्द्र आदि बारह आदित्योंको जन्म दिया (आदि० ७५ । १०) । कश्यप और सुरभिके सहवाससे नन्दिनी नामक गौकी उत्पत्ति (आदि० ९९ । ८—१४) । अर्जुनके जन्म-समयमें उपस्थित हुए सात ऋषियोंमें ये भी थे (आदि० १२२ । ५१) । परशुरामजीका इन्हें समूची पृथ्वी दानमें देना (आदि० १२९ । ६२) । ये ब्रह्माजीकी सभामें विराज-

मान होते हैं (सभा० ११ । १८) । इनका प्रह्लादके पूछनेपर उन्हें प्रश्नका असत्य उत्तर देने या यथार्थ बात जानते हुए भी कुछ उत्तर न देनेके दोष बताना तथा दोनों पक्षोंसे मिले होनेके कारण गवाही न देनेवाले गवाहको प्राप्त हुए दोषका वर्णन करना (सभा० ६८ । ७३–७५) । युधिष्ठिरके साथ तीर्थयात्रा करनेवाले ऋषियोंमें इनका भी नाम आया है (वन० ८५ । ११९) । ब्रह्माजीने यज्ञमें सारी पृथ्वी कश्यपको दान कर दी; इससे पृथ्वीको बड़ा खेद हुआ और वह रसातलको जाने लगी । तब कश्यपजीने अपनी तपस्यासे पृथ्वीको प्रसन्न किया (वन० ११४ । १८—२२) । परशुराम-जीका कश्यपको भूमिदान करके स्वयं उनका महेन्द्रपर्वत-पर निवास (वन० ११७ । १४) । कश्यपपत्नी अदितिके गर्भसे भगवान्‌का वामन-अवतार (वन० २७२ । ६२) । परशुरामजीसे सम्पूर्ण पृथ्वीको दक्षिणा-रूपमें लेकर उन्हें पृथ्वीसे बाहर निकल जानेका आदेश देना (द्रोण० ७० । १९–२१) । इनका द्रोणाचार्यके पास जाकर उनसे युद्ध बंद करनेको कहना (द्रोण० १९० । ३५—४०) । स्कन्दके जन्म-समयमें इनका आगमन (शल्य० ४५ । १०) । परशुरामजीसे दक्षिणा-रूपमें पृथ्वीका दान लेना (शान्ति० ४९ । ६४) । परशुरामजीको राज्यके बाहर भेजना (शान्ति० ४९ । ६५-६६) । रसातलको जाती हुई पृथ्वीको ऊरुओंके सहारे रोकना (शान्ति० ४९ । ७२) । पुरोहितके विषयमें पुरूरवाको उपदेश (शान्ति० ७३ । ७—३२) । कश्यपजीका दूसरा नाम 'अरिष्टनेमि' भी है (शान्ति० २०८ । ८) । इनका भीष्मको वराह-अवतारकी कथा सुनाना (शान्ति० २०९ । ६) । ये मूलभूत कश्यप-गोत्रके प्रवर्तक हैं (शान्ति० २९६ । १७-१८) । महर्षि कश्यपके अङ्गोंसे तिलकी उत्पत्ति (अनु० ६६ । १०) । इनका वृषादर्भिसे प्रतिग्रहका दोष बताना (अनु० ९३ । ४०) । अरुन्धतीसे अपने शरीरकी दुर्बलताका कारण बताना (अनु० ९३ । ६५) । यातु-धानीसे अपने नामका परिचय देना (अनु० ९३ । ८६) । मृणालकी चोरीके विषयमें शपथ खाना (अनु० ९३ । ११६-११७) । अगस्त्यजीके कमलोंकी चोरी होनेपर शपथ खाना (अनु० ९४ । १८) । कुबेरके सात गुरुओंमेंसे एक ये भी हैं, ये उत्तर दिशाका आश्रय लेकर रहते हैं, इनके कीर्तनसे कीर्ति और कल्याणकी प्राप्ति होती है (अनु० १५० । ३८-३९) । इनका तपोबलसे पृथ्वीको धारण करना (अनु० १५३ । २) ।

महाभारतमें आये हुए कश्यपजीके नाम—देवर्षि, काश्यप, महर्षि, मारीच, प्रजापति, अरिष्टनेमि आदि ।

(२) एक नाग, जो अर्जुनके जन्म-महोत्सवमें उपस्थित हुआ था (आदि० १२२ । ७१) ।

कहोड—महर्षि उद्दालकके शिष्य और जामाता । अष्टावक्रके पिता (वन० १३२ । ३—८) । इनका उद्दालकका शिष्य होकर विनीत भावसे उनकी परिचर्यामें संलग्न रहना । इनके द्वारा की गयी सेवाके महत्त्वको समझकर गुरुका इन्हें शीघ्र ही सम्पूर्ण वेद-शास्त्रोंका ज्ञान कराना और अपनी कन्या सुजाताका इनके साथ विवाह कर देना (वन० १३२ । ९) । अपने गर्भस्थ बालकद्वारा अपने अध्ययनकी कटु आलोचना सुनकर इनका उसे आठ अङ्गोंसे वक्र होनेका शाप देना (वन० १३२ । १०-११) । गर्भवती सुजाताका इनसे धनकी याचना करना (वन० १३२ । १५) । इनका जनकके दरबारमें जाना और वहाँ शास्त्रार्थी पण्डित बन्दीसे हारकर जलमें डुबाया जाना (वन० १३२ । १५) । इनका जलसे बाहर आना और अष्टावक्रको समङ्गा नदीमें स्नान करनेका आदेश देना (वन० १३४ । ३२—३९) ।

कहोल—इन्द्रकी सभामें विराजमान होनेवाले एक प्राचीन ऋषि (सभा० ७ । १७ के बाद दाक्षिणात्य पाठ) । हस्तिनापुर जाते हुए श्रीकृष्णसे मार्गमें इनकी भेंट (उद्योग० ८३ । ६४ के बाद दाक्षिणात्य पाठ) ।

काक—एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ ६४) ।

काकी—(१) ताम्राकी लोक-विख्यात पुत्री । इसने उल्लुओंको जन्म दिया (आदि० ६६ । ५६-५७) । (२) शिशुओंकी सात मातृकाओंमेंसे एक (वन० २२८ । १०) ।

काक्षीवान्—गौतम ऋषिके पुत्र । चण्डकौशिक ऋषिके पिता (सभा० १७ । २२; २१ । ५) । ये युधिष्ठिरकी सभामें विराजमान होते थे (सभा० ४ । १७) ।

काञ्चन—मेरुद्वारा स्कन्दको दिये गये दो पार्षदोंमेंसे एक, दूसरा मेघमाली था (शल्य० ४५ । ४७) ।

काञ्चनाक्ष—स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ५७) ।

काञ्चनाक्षी—नैमिषारण्यमें बहनेवाली सरस्वतीका नाम (शल्य० ३८ । १९) ।

काञ्ची—(मद्रासमे ३७ मील दक्षिण-पश्चिममें स्थित एक नगर, जो प्राचीन समयमें चोल राजाओंकी राजधानी था । इस समय इसे 'काञ्जीवरम्' कहते हैं । यह सात मोक्ष-दायिनी पुरियोंमेंसे एक है ।) यहाँके योद्धा दुर्योधनकी सेनामें विद्यमान थे (उद्योग० १६१ । २१) ।

कात्यायन–इन्द्रकी सभामें विराजमान होनेवाले एक ऋषि (सभा० ७ । १९) ।

कानीन–एक प्रकारका बन्धुदायाद पुत्र (आदि० ११९ । ३३) । (विवाहसे पहले ही जिस कन्याको इस शर्तपर दिया जाता है कि 'इसके गर्भसे उत्पन्न हुआ पुत्र मेरा ही पुत्र समझा जायगा ।' उस कन्याके गर्भसे उत्पन्न पुत्रको 'कानीन' कहते हैं—यह नीलकण्ठकी व्याख्या है ।) सर्वसम्मत मत यह है कि नारीकी कन्यावस्थामें (विवाहसे पूर्व) ही जो पुत्र पैदा होता है, वह 'कानीन' कहलाता है । यथा—व्यास, कर्ण, शिवि, अष्टक, प्रतर्दन और वसुमान आदि ।

कान्तारक–एक दक्षिण भारतीय जनपद, जिसके राजाको सहदेवने दक्षिण-विजयके अवसरपर पराजित किया (सभा० ३१ । १३) । (वेणा नदीके तटपर स्थित भूभागको ही 'कान्तारक' कहा गया है—ऐसा आधुनिक विचारकोंका मत है ।)

कान्ति–एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ४०) ।

कान्यकुब्ज–गङ्गातटपर बसा हुआ एक प्राचीन नगर, जो राजा गाधिकी राजधानी था (आधुनिक कन्नौज ही प्राचीन कान्यकुब्ज है) । वह राज्य या जनपद भी कान्यकुब्ज नामसे ही विख्यात था (आदि० १७४ । ३; वन० ११५ । २०) । यहाँ विश्वामित्रने इन्द्रके साथ सोमपान किया था (वन० ८७ । १७) । कान्यकुब्जमें राजा गाधिकी कुमारी पुत्री सत्यवतीको अपनी पत्नी बनानेके लिये ऋचीक मुनिने राजासे माँगा था (उद्योग० ११९ । ४) ।

कान्दशिरा–एक जाति, जो पहले क्षत्रिय थी; किंतु ब्राह्मणोंसे डाह रखनेके कारण नीच भावको प्राप्त हो गयी (अनु० ३५ । १७) ।

कापिल–कुशद्वीपका सातवाँ वर्ष (भीष्म० १२ । १४) ।

कापी–एक नदी, जिसका जल भारतीय प्रजा पीती है (भीष्म० ९ । २४) ।

काम–(१) धर्मके तीन पुत्रोंमेंसे एक, इनकी पत्नीका नाम रति है (आदि० ६६ । ३२-३३) । (२) अनुपम रूपवान् स्वाहापुत्र अग्नि (वन० २१९ । २३) । (३) भगवान् शिवका एक नाम (अनु० १७ । ४२) । (४) कामस्वरूप रुक्मिणीपुत्र प्रद्युम्न (अनु० १४८ । २०-२१) । (५) भगवान् विष्णुका एक नाम (अनु० १४९ । ४५) । (६) एक ऋषिका नाम (अनु० १५० । ४१) ।

कामचरी–स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । २३) ।

कामठक (या कामठ)–धृतराष्ट्र कुलमें उत्पन्न एक नाग, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें जल मरा था (आदि० ५७ । १६) ।

काम (अथवा कामाख्य) तीर्थ–एक तीर्थ, जहाँ स्नानसे मनोवाञ्छित फलकी प्राप्ति होती है (वन० ८२ । १०५) ।

कामदा–स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । २७) ।

कामदेव–भगवान् विष्णुका एक नाम (अनु० १४९ । ८३) ।

कामन्दक–एक प्राचीन ऋषि, जिन्होंने आङ्गरिष्ठको राजधर्मका उपदेश दिया था (शान्ति० १२३ । १५–२५) ।

कामा–पृथुश्रवाकी पुत्री, जो पूरुवंशी महाराज अयुतनायीकी पत्नी तथा अक्रोधनकी माता थी (आदि० १७७ । २१) ।

काम्पिल्य–दक्षिणपाञ्चालका एक नगर, जो द्रुपदकी राजधानी था (आदि० १३७ । ७३) । विवाहके पश्चात् शिखण्डीका काम्पिल्य नगरमें आगमन (उद्योग० १८९ । १३) । दशार्णराजने एक समय इसके निकट पहुँचकर किसी ब्राह्मणको दूत बनाकर वहाँ भेजा था (उद्योग० १९२ । १४) । प्राचीन कालमें यहीं राजा ब्रह्मदत्त राज्य करते थे, जिनके यहाँ पूजनी नामक चिड़िया थी (शान्ति० १३९ । ५) ।

काम्बोज–(१) पश्चिमोत्तर भारतखण्डका एक जनपद और वहाँके निवासी, जिन्हें अर्जुनने जीता था (सभा० २७ । २३) । युधिष्ठिरके रथमें काम्बोजदेशमें उत्पन्न (काबुली) घोड़े जोते गये थे (सभा० ५३ । ५) । काम्बोजदेशीय म्लेच्छगण कलियुगमें राजा होंगे—यह भविष्यवाणी (वन० १८८ । ३६) । काम्बोज योद्धा दुर्योधनके सैनिक थे (उद्योग० १६० । १०३) । महाभारतकालमें इस देशका राजा सुदक्षिण था, जो महारथी माना गया था (उद्योग० १६६ । १–३) । भीष्मनिर्मित गरुडव्यूहके पुच्छ-स्थानमें काम्बोज खड़े किये गये थे (भीष्म० ५६ । ७) । काम्बोजदेशीय अश्व देखनेयोग्य तथा तोतेकी पाँखके समान रङ्गवाले होते हैं । ऐसे ही घोड़े नकुलके रथमें जुते हुए थे (द्रोण० २३ । ७) । काम्बोज आदि कई देशोंके अश्व पूँछ, कान और नेत्रोंको स्थिर करके वेगसे दौड़नेवाले होते हैं (द्रोण० ३६ । ३६) । (२) काम्बोजराज सुदक्षिण, जो द्रौपदीस्वयंवरमें गया था (आदि० १८५ । १५) । जिसके छोटे भाईका अर्जुनद्वारा वध हुआ था (कर्ण० १५६ । १११) । यह काम्बोजदेशीय घोड़ोंपर सवार हो युद्धके लिये चला था (भीष्म० ७१ । १३) । इसका युद्ध और अर्जुनद्वारा वध (द्रोण० ९२ । ६१–७३) । काम्बोजनरेश सुदक्षिणके वधकी चर्चा (द्रोण०

९४ । ३०) । सुदक्षिणका पिता भी काम्बोज या काम्बोजराज कहलाता था (द्रोण० ९२ । ६१)। (३) काम्बोज देशका एक प्राचीन नरेश, महाराज धुन्धुमारसे इन्हें खड्गकी प्राप्ति हुई (शान्ति० १६६ । ७७)

काम्यकवन—एक वनका नाम, वनवासकालमें पाण्डवोंने यहाँ निवास किया था । यह ऋषि-मुनियोंको बहुत प्रिय था । पाण्डवोंका काम्यकवनमें प्रवेश तथा विदुरजीका वहाँ जाकर उनसे मिलना और बातचीत करना (वन० ५ अ० में)। संजयका काम्यकवनमें जाकर विदुरको बुला ले आना (वन० ६ । ११–१७)। युधिष्ठिर आदिका द्वैतवनसे काम्यकवनमें प्रवेश, काम्यकवनमें पाण्डवोंके पास भगवान् श्रीकृष्ण, मुनिवर मार्कण्डेय तथा नारदजीका आगमन (वन० १८२-१८३ अ० में)। पाण्डवोंका काम्यकवनमें गमन (वन० २५८ अ० में)।

काम्या—एक स्वर्गीय अप्सरा, जो अर्जुनके जन्मोत्सवमें नृत्य करने आयी थी (आदि० १२२ । ६४)।

कायव्य—एक डाकू, निषादपुत्र, जो क्षत्रिय पिता और निषादजातीय मातासे उत्पन्न हुआ था, इसके सदाचारका वर्णन (शान्ति० १३५ । २—९)। लुटेरोंद्वारा सरदार होनेके लिये प्रार्थना करनेपर उसके द्वारा उन्हें धर्मोपदेश (शान्ति० १३५ । १३–२२)।

कायशोधन तीर्थ—कुरुक्षेत्रके अन्तर्गत एक तीर्थ, जहाँ जाने और स्नान करनेसे शरीरकी शुद्धि होती है (वन० ८३ । ४२)।

कारन्धम—दक्षिण समुद्रके समीपवर्ती तीर्थ (पाँच नारी तीर्थोंमेंसे एक) (आदि० २१५ । ३) । यहाँ शापवश ग्राह बनकर रहनेवाली अप्सरा (वर्गाकी सखी) का अर्जुनद्वारा उद्धार (आदि० २१५ । २१)।

कारपवन—सरस्वतीनदी-सम्बन्धी एक प्राचीन तीर्थ (शल्य० ५४ । १२)।

कारस्कर—एक निन्द्य एवं त्याज्य देश, जहाँका धर्म दूषित है (कर्ण० ४४ । ४३)।

कारीष—महर्षि विश्वामित्रका एक ब्रह्मवादी पुत्र (अनु० ४ । ५५)।

कारूष— (१) वैवस्वत मनुके छठे पुत्र (आदि० ७५ । १६)। (२) एक प्राचीन देश, जहाँका राजा चोर-डाकुओंको मारनेवाला था । यह द्रौपदीके स्वयंवरमें उपस्थित हुआ था (आदि० १८५ । १६)।

कार्तवीर्य—हैहयनरेश कृतवीर्यका पुत्र सहस्रबाहु अर्जुन, इसके प्रभाव तथा अत्याचारका वर्णन (वन० ११५ । १२–१४)। पराक्रमी सहस्रबाहुका अग्निदेवको भिक्षा देना (शान्ति० ४९ । ३८)। आपव मुनिद्वारा इसे शापकी प्राप्ति (शान्ति० ४९ । ४३)। परशुरामद्वारा इसकी भुजाओंका उच्छेद (शान्ति० ४९ । ४८)। इसके वंशका संहार (शान्ति० ४९ । ५२-५३)। इसके द्वारा मांसभक्षणनिषेध (अनु० ११५ । ६०)। इसकी दत्तात्रेयजीसे वरयाचना (अनु० १५२ । ७–१०)। वरप्राप्तिके पश्चात् इसके अहंकारयुक्त वचन—ब्राह्मणकी अपेक्षा क्षत्रियकी श्रेष्ठताका प्रतिपादन (अनु० १५२ । १५–२२)। वायुदेवके कहनेसे इसका ब्राह्मणकी महत्ता स्वीकार करना (अनु० १५७ । २४–२६)। इसका अभिमानवश समुद्रको बाणोंसे आच्छादित करना (आश्व० २९ । ३) । परशुरामजीद्वारा इसका वध (आश्व० २९ । ११)।

महाभारतमें आये हुए कार्तवीर्य अर्जुनके नाम—अनूपपति, अर्जुन, हैहय, हैहयेन्द्र, हैहयाधिपति, हैहयर्षभ, हैहयश्रेष्ठ आदि ।

कार्तस्वर—एक दैत्य, जो कभी इस पृथ्वीका अधिपति था; किंतु इसे छोड़कर चल बसा (शान्ति० २२७ । ५२)।

कार्तिकेय—भगवान् स्कन्दका एक नाम, कृत्तिकाओंने इन्हें स्तन्य-पान कराया, अतः ये कार्तिकेय नामसे प्रसिद्ध हुए (अनु० ८५ । ८१-८२; अनु० ८६ । १३-१४)। (विशेष देखिये स्कन्द)

कार्पासिक—एक प्राचीन देश, जहाँ निवास करनेवाली दासियाँ युधिष्ठिरके राजसूययज्ञमें सेवाकार्य करती थीं (सभा० ५१ । ८)।

कार्ष्णि—एक देवगन्धर्व, जो अर्जुनके जन्मोत्सवमें उपस्थित हुआ था (आदि० १२२ । ५६)।

काल (१)—'ध्रुव' नामक वसुके पुत्र—सबको अपना ग्रास बनानेवाले भगवान् काल (आदि० ६६ । २१)। ये स्कन्दके अभिषेकमें गये थे (शल्य० ४५ । १७)। (२) एक महर्षि, जो इन्द्रकी सभामें उपस्थित हो उनकी उपासना करते हैं (सभा० ७ । १४)।

कालकक्ष—स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ६९)।

कालकण्ठ—स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ६९)।

कालकवृक्षीय—एक प्राचीन ऋषि, जो इन्द्रकी सभामें विराजमान होते हैं (सभा० ७ । १८)। इनका एक कौएको पिंजड़ेमें बाँधकर साथ लेना और कोसलराज क्षेमदर्शीके सारे राज्यमें वहाँका समाचार जाननेके लिये बारंबार चक्कर लगाना (शान्ति० ८२ । ६-७)। लोगोंको वायसीविद्या सीखनेकी प्रेरणा देते हुए घूम-घूमकर

राजकर्मचारियोंके दुष्कर्मोंको अपनी आँखों देखना (शान्ति० ८२ । ८) । सर्वज्ञ काकके कथनका बहाना लेकर उनका समस्त राजकर्मचारियोंकी चोरीका हाल बताना और राजाको सतत सावधान रहनेके लिये उपदेश देना (शान्ति० ८२ । १२–५७, ६१–६७) । राजा क्षेमदर्शीको इनका वैराग्यपूर्ण उपदेश (शान्ति० १०४ । १२–५४) । राजा क्षेमदर्शीसे राज्यप्राप्तिके विभिन्न उपायोंका वर्णन (शान्ति० १०५ । ५–२५) । क्षेमदर्शीसे संधि करनेके लिये राजा जनकको समझाना (शान्ति० १०६ । ९—१९) ।

कालका–महान् असुरकुलकी कन्या, कालकेयों अथवा कालकंजोंकी माता, इसकी अपने पुत्रोंके लिये तपस्या और ब्रह्माजीसे वरयाचना (अनु० १७३ । ७–११) ।

कालकाक्ष–एक दैत्य, जिसका गरुडद्वारा वध हुआ था (उद्योग० १०५ । १२) ।

कालकीर्ति–मयूरके छोटे भाई सुपर्णनामक असुरके अंशसे उत्पन्न एक क्षत्रिय राजा (आदि० ६७ । ३७) ।

कालकूट–(१) समुद्रसे प्रकट हुआ एक भयानक विष और इसका भगवान् शिवद्वारा पान (आदि० १८ । ४१–४३) । भीमसेनके भोजनमें दुर्योधनद्वारा कालकूट मिलाया गया था (आदि० १२७ । ४५–४८; वन० १२ । ८०) । (२) एक पर्वत, जो पत्नियोंसहित तपस्याके लिये जाते समय राजा पाण्डुको मार्गमें मिला था (आदि० ११८ । ४७-४८) । श्रीकृष्णको इन्द्रप्रस्थसे गिरिव्रज जाते समय मार्गमें कोई कालकूट पर्वत लाँघना पड़ा था (सभा० २० । २६-२७) । यहाँ दुर्योधनकी सेनाका पड़ाव पड़ा था (उद्योग० १९ । ३०) । (३) उत्तराखण्डमें कालकूट पर्वतके आसपासका प्रदेश, जिसे अर्जुनने उत्तर-दिग्विजयके समय जीता था (सभा० २६ । ४) ।

कालकेय (कालखंज)–(कालका अथवा) कालाके पुत्र, हिरण्यपुरनिवासी दानव । इसका अर्जुनके साथ युद्ध और उनके द्वारा इसका संहार (आदि० ६५ । ३५; वन० १७३ । १९–५५; उद्योग० १५८ । ३०; द्रोण० ५१ । १६; कर्ण० ७९ । ६२) । इन सबने वृत्रासुरकी अध्यक्षतामें देवताओंपर चढ़ाई की थी (वन० १०० । ३-४) ।

कालकोटि–नैमिषारण्यके अन्तर्गत एक प्राचीन तीर्थ (वन० ९५ । ३) ।

कालखंज (कालकंज)–असुरवंशकी कन्या कालकाके पुत्र कालकंज या कालखंज कहे गये हैं, ये ही कालकेय भी हैं, इनकी संख्या लाखोंके लगभग थी, इनकी माताने तपस्या करके इनके लिये एक विशाल हिरण्यपुर नामक नगर ब्रह्माजीसे प्राप्त किया था, जिसमें ये देवताओंसे अवध्य एवं सुरक्षित हो निवास करते थे (वन० १०३ । ७–१३) । ये वरुणकी सभामें रहकर उनकी उपासना करते थे (सभा० ९ । १२) । इनके साथ अर्जुनका युद्ध और उनके द्वारा इन दानवोंका संहार (वन० १७३ अध्याय) । अर्जुनने इन्द्रकी आज्ञासे इनका वध किया था (विराट० ४९ । १०; विराट० ६१ । २५; उद्योग० ४९ । १४) । ये भगवान् विष्णुके चरणोंसे उत्पन्न कहे गये हैं (उद्योग० १०० । ५–६) ।

कालघट–एक वेदविद्याके पारंगत ब्राह्मण, जो जनमेजयके सर्पसत्रके सदस्य बने थे (आदि० ५३ । ८) ।

कालञ्जरगिरि–मेधाविक तीर्थका लोकविख्यात पर्वत, जहाँ देवह्रदमें स्नानसे सहस्र गोदानका फल मिलता है (वन० ८५ । ५६) । इस तीर्थकी महिमाका वर्णन (अनु० २५ । ३५) ।

कालतीर्थ–अयोध्याका एक तीर्थ, जहाँ स्नानसे ग्यारह वृषभदानका फल प्राप्त होता है (वन० ८५ । ११) ।

कालतोयक–एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ४७) ।

कालद–एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ६३) ।

कालदन्तक (कालदन्त)–वासुकि-कुलमें उत्पन्न एक नाग, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें जल मरा था (आदि० ५७ । ६) ।

कालनेमि–एक महाबली दानव, जो इस भूतलपर कंस नामसे उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७ । ६७) ।

कालपथ–विश्वामित्रके ब्रह्मवादी पुत्रोंमेंसे एक (अनु० ४ । ५०) ।

कालपर्वत–(१) लङ्काके समीप समुद्रतटवर्ती एक पर्वत (वन० २७७ । ५४) । (२) एक पर्वत, जो स्वप्नमें श्रीकृष्णसहित शिवजीके पास जाते हुए अर्जुनको मार्गमें मिला था (द्रोण० ८० । ३१) ।

कालपृष्ठ–एक नाग, जो त्रिपुरविनाशके समय शिवजीके रथमें जुते हुए घोड़ोंके केसर बाँधनेके लिये रस्सी बनाया गया था (कर्ण० ३४ । २९–३०) ।

कालमुख–'कालमुख' नामवाली एक विशेष जातिके लोग, जो मनुष्य और राक्षस दोनोंके संयोगसे उत्पन्न हुए थे । सहदेवने दक्षिण-दिग्विजयके समय उन सबपर भी विजय प्राप्त की थी (सभा० ३१ । ६७) ।

कालयवन–एक असुरभावापन्न यवन, जो श्रीकृष्णद्वारा मारा गया था (सभा० ३८ । २९ के बाद दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ८२४, कालम २; द्रोण० ११ । १६–१८) । यह गर्गाचार्यके

तेजसे उत्पन्न एवं अत्यन्त शक्तिशाली असुर था (शान्ति० ३३९ । ९५)।

कालरात्रि–मृत्युकी रातकी अधिष्ठात्री, जिसे सौप्तिक-आक्रमणके समय पाण्डवपक्षके योद्धाओंने प्रत्यक्ष देखा था। उसके स्वरूपका वर्णन (सौप्तिक० ८ । ६९–८४)।

कालवेग–वासुकिकुलमें उत्पन्न एक नाग, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें जल मरा था (आदि० ५७ । ६)।

कालशैल–उत्तराखण्डकी एक पर्वतमाला (वन० १३९ । १)।

काला–दक्ष प्रजापतिकी पुत्री, कश्यपकी पत्नी, कालकेय नामक असुरोंकी माता (आदि० ६५ । १२, ३४–३५)।

कालाप–एक धर्मज्ञ जितेन्द्रिय ऋषि, जो युधिष्ठिरकी सभामें विराजते थे (सभा० ४ । १८)।

कालाम्र–भद्राश्ववर्षके शिखरपर स्थित भद्रशालवनमें सुशोभित एक महान् वृक्ष, जो एक योजन ऊँचा है। उसमें सदा फल-फूल लगे रहते हैं। उसका रस पीकर भद्राश्ववर्षके स्त्री-पुरुष सदा जवान बने रहते हैं और सिद्ध तथा चारण सदा उस वृक्षके आस-पास रहते हैं (भीष्म० ७ । १४–१८)।

कालिक–पूषाद्वारा स्कन्दको दिये गये दो पार्षदोंमेंसे एक, दूसरेका नाम 'पाणीतक' था (शल्य० ४५ । ४३–४४)।

कालिका–स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । १४)।

कालिकाश्रम–एक तीर्थ, जहाँ स्नान और तीन रात निवास करनेसे मनुष्य जन्म-मरणके चक्करसे छूट जाता है (अनु० २५ । २४)।

कालिकासंगम–एक तीर्थ, जिसमें स्नान करके तीन रात उपवास करनेवाला मानव सब पापोंसे छूट जाता है (वन० ८४ । १५६)।

कालिकेय–सुबलका पुत्र, जो अभिमन्युद्वारा निहत हुआ था (द्रोण० ४९ । ७)।

कालिङ्ग–कलिङ्ग देशका राजा श्रुतायुध, जो युधिष्ठिरकी सभामें विराजमान होता था (सभा० ४ । २६)। इसीका नाम श्रुतायु भी था (सभा० ५१ । ७ के बाद दाक्षिणात्य पाठ)।

कालिन्दी–कलिन्दगिरिनन्दिनी यमुना। ये अन्य सरिताओंके साथ स्वयं भी वरुणसभामें पदार्पण करती हैं (सभा० ९ । १८)। (विशेष देखिये यमुना)।

कालिय–एक प्रमुख नाग (आदि० ३५ । ६)। वृन्दावनमें कदम्बवनके पास जो ह्रद था, उसमें प्रवेश करके श्रीकृष्णने कालियनागके मस्तकपर नृत्यक्रीडा की और उसे अन्यत्र चले जानेका आदेश दिया (सभा० ३८ । २९ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ८००, कालम १)।

काली–वेदव्यासकी माता सत्यवती (आदि० ६० । २)।

कालीयक–एक प्रमुख नाग (आदि० ३५ । १०)।

कालेय–इसी नामसे प्रसिद्ध दैत्यगण (आदि० ६७ । ४७–५५)। इनके द्वारा वसिष्ठ, च्यवन, भरद्वाज आदि मुनियोंके आश्रमोंपर जाकर ऋषियोंका भक्षण (वन० १०२ । ३–६)। देवताओंद्वारा इनका वध (वन० १०५ । १०)। कुछ कालेय पातालमें भाग गये (वन० १०५ । १२)।

कालेहिका–स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । २३)।

कालोदक–एक तीर्थ जहाँ सौ योजन दूरसे आकर नहानेवाले मनुष्यकी भ्रूणहत्या दूर हो जाती है (अनु० २५ । ६०)। इसमें स्नानसे दीर्घायु प्राप्त होती है (शान्ति० १५२ । १२-१३)।

कावेरी–एक उत्तम तीर्थभूत नदी, जो वरुण-सभामें रहकर उनकी उपासना करती है (सभा० ९ । २०)। (यह दक्षिण भारतकी प्रसिद्ध नदी है। इसके तटपर श्रीरङ्गक्षेत्र, त्रिचनापल्ली तथा कुम्भकोणम् आदि प्रख्यात नगर एवं तीर्थ हैं।) इसमें स्नान करनेसे सहस्र गोदानका फल मिलता है (वन० ८५ । २२)।

काव्य–प्रजापति कविके आठ वारुणसंज्ञक पुत्रोंमेंसे एक (अनु० ८५ । १३३)।

काश–काशके अभिमानी० देवता, जो यमकी सभामें धर्मराजकी उपासना करते हैं (सभा० ८ । ३२)।

काशि–(१) एक भारतीय जनपद (वर्तमान काशीराज्य तथा वाराणसीमण्डल)। जिसपर पाण्डुने विजय प्राप्त की थी (आदि० ११२ । २९; भीष्म० ९ । ५२)। भीमसेनने काशीमें उस देशके राजाकी कन्या बलन्धराके साथ ब्याह किया (आदि० ९५ । ७७)। भीमसेनने इसपर विजय प्राप्त की (सभा० ३० । ६; उद्योग० ५० । १९)। सहदेवने भी काशिदेशपर विजय पायी थी (उद्योग० ५० । ३१)। इस काशिदेशके महारथी राजा वाराणसीमें रहते थे और पाण्डवपक्षके योद्धा थे (उद्योग० ५० । ४१; उद्योग० १९६ । २)। अर्जुनने भी इस देशको जीतकर अपने वशमें किया था (आदि० १२२ । ४०)। श्रीकृष्णने इस देशको जीता था (द्रोण० ११ । १५)। कर्णने दुर्योधनके लिये इस देशको वशमें किया था (कर्ण० ८ । १९)। काशिदेशपर हर्यश्व राजा हुए, इनके बाद सुदेव, फिर दिवोदास (अनु० ३० ।

१२–१५; उद्योग० ११७ । १) । फिर वृषदर्भ उशीनर भी कभी वहाँके राजा हुए थे (अनु० ३२ । ९) । अम्बा-स्वयंवरके अवसरपर भीष्मने इस देशको जीता था (अनु० ४४ । ३८) । युधिष्ठिरके अश्वमेधका घोड़ा इस देशमें गया था (आश्व० ८३ । ४) । (२) काशीराज्य अथवा जनपदमें रहनेवाले लोग। काशिराज और काशिप्रदेशके योद्धा युधिष्ठिरकी सेनामें थे तथा भीष्मद्वारा मारे और घायल किये गये (भीष्म० १०६ । १८–२०) ।

काशिक–पाण्डवपक्षका एक उदार रथी (उद्योग० १७१ । १५) ।

काशिराज–काशिदेशके राजा, जो 'दीर्घजिह्व' नामक दानवके अंशसे उत्पन्न थे (आदि० ६७ । ४०) । ये युधिष्ठिरके बड़े प्रेमी थे । उपप्लव्य नगरमें अभिमन्युके विवाहमें एक अक्षौहिणी सेनाके साथ इनका शुभागमन हुआ था (विराट० ७२ । १६) । ये बड़े पराक्रमी थे और महाभारत-युद्धमें इन्होंने पाण्डवोंका पक्ष ग्रहण किया था (भीष्म० २५ । ५) ।

काशी–प्रजापति कविके पुत्र । आठ वारुणसंज्ञक पुत्रोंमेंसे एक (अनु० ८५ । १३३) ।

काशीपुरी–वाराणसी नगरी, जिसे भगवान् श्रीकृष्णने जलाया था (उद्योग० ४८ । ७६) ।

काशीश्वरतीर्थ–कुरुक्षेत्रकी सीमामें अम्बुमती नदीके समीप स्थित एक तीर्थ, जिसमें स्नान करके मनुष्य सब रोगोंसे मुक्त और ब्रह्मलोकमें प्रतिष्ठित होता है (वन० ८३ । ५७) ।

काश्मीर (**काश्मीरक**)–एक भारतीय जनपद तथा यहाँके निवासी, दिग्विजयके समय इसे अर्जुनने जीता था (सभा० २७ । १७; भीष्म० ९ । ५३—६७) । इस देशके निवासी राजा युधिष्ठिरके लिये भेंट लाये थे (सभा० ३४ । १२; सभा० ५२ । १४; वन० ५१ । २६) । श्रीकृष्णने भी काश्मीरवासियोंको परास्त किया था (द्रोण० ११ । १६) । परशुरामजीने इन्हें परास्त किया था (द्रोण० ७० । ११) ।

काश्मीरमण्डल–पुण्यमय काश्मीर-प्रदेशका वह स्थान, जहाँ उत्तरके समस्त ऋषि, नहुषकुमार ययाति, अग्नि और काश्यपका संवाद हुआ था (वन० १३० । १०-११) । काश्मीरमण्डलकी चन्द्रभागा (चनाब) और वितस्ता (झेलम) में सात दिन स्नान करनेसे मनुष्य मुनिके समान निर्मल हो जाता है । काश्मीरमण्डलकी जो नदियाँ महानद सिन्धुमें गिरती हैं, उनमें तथा सिन्धुमें स्नान करके मनुष्य मृत्युके पश्चात् स्वर्गगामी होता है (अनु० २५ । ७-८) ।

काश्य–(१) काशीके एक राजा, जो अम्बा, अम्बिका और अम्बालिकाके पिता थे तथा जिनकी उक्त तीनों कन्याओंका भीष्मने अपहरण किया था (आदि० १०२ । ५६, ६४-६५) । (२) काशिराज जो युधिष्ठिरके समय विद्यमान थे और जिन्होंने राजसूय-यज्ञमें युधिष्ठिरके अभिषेकके समय उन्हें धनुष अर्पण किया था (सभा० ५३ । ९) । काश्य तथा अन्य राजाओंके दिये हुए धनको युधिष्ठिर जूएमें हार गये (सभा० ६८ । २) । इन्हें पाण्डवोंकी ओरसे रण-निमन्त्रण भेजा गया था (उद्योग० ४ । १९) । काश्यके पुत्रका नाम अभिभू था (उद्योग० १५१ । ६३; भीष्म० ९३ । १३) । उत्तम रथी नरश्रेष्ठ काश्य (या काशिराज) भीष्म और द्रोणके समान पराक्रमी थे (उद्योग० १७१ । २२) । काश्यका नाम 'सेनाविन्दु' और 'क्रोधहन्ता' था (उद्योग० १७१ । २०–२२) । पाण्डव-सेनाके महाधनुर्धर शूरवीरोंमें काश्य (काशिराज) भी हैं । इन्होंने भी सबके साथ शङ्खनाद किया था (भीष्म० २५ । १७) । धृतराष्ट्रपुत्र जयके साथ इनका युद्ध (द्रोण० २५ । ४५) । वसुदानके पुत्रद्वारा काशिराज (कुमार) अभिभूके वधकी चर्चा (कर्ण० ६ । २३–२४) । (२) एक प्राचीन ऋषि, जो शरशय्यापर पड़े हुए भीष्मजीके पास पधारे थे (शान्ति० ४७ । १०) ।

काश्यप–(१) एक प्रसिद्ध मन्त्रवेत्ता ब्राह्मण, जो सर्प-दंशनसे पीड़ित हुए परीक्षित्के प्राण बचानेके लिये आ रहे थे (आदि० ४२ । ३३) । हस्तिनापुर जाते समय इनका मार्गमें तक्षकसे भेंट और तक्षकके डँसनेसे भस्म हुए वृक्षको मन्त्रबलसे पुनः पूर्ववत् हरा-भरा कर देना (आदि० ४२ । ३३ से ४३ । १० तक) । इनका तक्षकसे वार्तालाप करना और उससे यथेष्ट धन पाकर लौट जाना (आदि० ५० । १९–२७) । (२) वसुदेवजीके पुरोहित, जिन्होंने पाण्डवोंके गर्भाधानसे लेकर चूडाकरणतक सारे संस्कार कराये (आदि० १२३ । ३१ के बाद दाक्षिणात्य पाठ) । इनके द्वारा पाण्डुका अन्त्येष्टि-संस्कार सम्पन्न कराया गया (आदि० १२४ । ३१ के बाद दाक्षिणात्य पाठ) । युधिष्ठिरका आदर करनेवाले ऋषियोंमें ये भी थे (वन० २६ । २३) । सिद्ध महर्षिके साथ इनका संवाद (आश्व० १६ । १९ से आश्व० १९ । ५३ तक) । (३) इन्द्रकी सभामें विराजमान होनेवाले एक ऋषि, जो कश्यपके पुत्र हैं (सभा० ७ । १७ के बाद दाक्षिणात्य पाठ) । परम धर्मात्मा काश्यपने पृथुके यज्ञमें सदस्यता ग्रहण की थी और अत्रि तथा गौतमके विवादको सभामें उपस्थित किया था (वन० १८५ । २१) । कश्यपपुत्र विभाण्डक, राजधर्मा,

विश्वावसु, इन्द्र, आदित्य, वसु, अन्य देवता तथा कश्यप-कुलमें उत्पन्न समस्त प्रजा काश्यप कही गयी है। (४) कश्यपपुत्र काश्यप नामक अग्नि। यह उन पाँच अग्नियोंमेंसे एक हैं, जिन्होंने तीव्र तपस्या करके पाञ्चजन्यको उत्पन्न किया था (वन० २२० । १-५)। महत्तर नामक अग्नि, जो काश्यपके अंशसे प्रकट हुए थे, वे भी काश्यप कहलाये। इन्हें पाञ्चजन्यने पितरोंके लिये उत्पन्न किया था (वन० २२० । ९)। (५) एक ऋषि-कुमार, जो एक वैश्यके रथके धक्केसे गिरकर आत्महत्या करनेको उद्यत हो गये। शृगालरूपधारी इन्द्रके साथ उनका संवाद (शान्ति० १८० । ६)।

काश्यपद्वीप–एक द्वीप, जो चन्द्रमामें प्रतिबिम्बित खरगोश-की आकृतिमें एक कानके रूपमें दृष्टिगोचर होता है (भीष्म० ६ । ५५)।

काष्ठा–कालपरिमाण (शल्य० ४५ । १५)।

किंजप्य–कुरुक्षेत्रके अन्तर्गत एक तीर्थ, जहाँ स्नान और जप करनेसे असीम फल प्राप्त होता है (वन० ८३ । ७९)।

किंदत्तकूप–एक कूपमय तीर्थ, जहाँ सेरभर तिल दान करनेसे मनुष्य तीनों ऋणोंसे मुक्त होता है (वन० ८३ । ९८)।

किंदम–एक ऋषि, मृगीरूपधारिणी पत्नीके साथ मृगरूप धारण करके मैथुन करते समय इनका पाण्डुके बाणोंसे घायल होना (आदि० ११७ । ६-७)। बाणकी चोट खानेपर इनका मानव-वाणीमें विलाप (वन० ११७ । ८-११)। इनका पाण्डुके साथ संवाद (वन० ११७ । १२-२९)। इनके द्वारा राजा पाण्डुको शाप (वन० ११७ । ३०-३३)। इनका प्राणत्याग (वन० ११७ । ३४)।

किंदान–कुरुक्षेत्रके अन्तर्गत एक तीर्थ, जहाँ स्नान और दान करनेसे उसका असीम फल प्राप्त होता है (वन० ८३ । ७९)।

किङ्कर–(१) एक राक्षस, जिसने विश्वामित्रकी प्रेरणासे शापग्रस्त राजा कल्माषपादके शरीरमें प्रवेश किया था (आदि० १७५ । २१)। विश्वामित्रकी प्रेरणासे इसके द्वारा वसिष्ठके समस्त पुत्रोंका संहार (आदि० १७५ । ४१)। (२) राक्षसोंकी एक जाति या वर्ग, जो मयासुरकी आज्ञाके अनुसार आठ हजारकी संख्यामें उपस्थित हो युधिष्ठिरके मयनिर्मित सभाभवनकी रक्षा करते और उसे एक स्थानसे दूसरे स्थानपर उठाकर ले जाते थे (सभा० ३ । २८; सभा० ४८ । ९)। युधिष्ठिरने धन लानेके लिये हिमालयपर जानेके बाद वहाँ किङ्कर नामक राक्षसोंको भेंट पूजा दी थी (आश्व० ६५ । ६)। (३) यमराजके दण्डका नाम। वे अन्तकालमें इससे प्राणियोंका संहार करते हैं (कर्ण० ५६ । १२०)।

किङ्किणीकाश्रम–एक तीर्थ, जहाँ स्नान करनेसे स्वर्गलोककी प्राप्ति होती है (अनु० २५ । २३)।

कितव–एक प्राचीन जातिके लोग, जो नाना प्रकारकी भेंट-सामग्री लेकर राजा युधिष्ठिरके यहाँ आये थे (सभा० ५१ । १२)।

किन्नर–गन्धर्वविशेष (सभा० १० । १४)।

किम्पुना–एक तीर्थस्वरूपा पवित्र नदी, जो वरुणकी सभामें रहकर उनकी उपासना करती है (सभा० ९ । २०)।

किम्पुरुष–(१) धवलगिरिसे आगे हिमालयके उत्तर भागमें विद्यमान एक देश, जो द्रुमपुत्रसे सुरक्षित था। इसे अर्जुनने जीता था (सभा० २८ । १-२)। (२) एक जाति, जो पुलहकी संतान हैं (आदि० ६६ । ८)। किम्पुरुषोंने समुद्रपानका अद्भुत दृश्य देखनेके लिये अगस्त्यजीका अनुसरण किया था (वन० १०४ । २१)। कुबेरके क्रीडास्थलरूप सरोवरकी रक्षामें किम्पुरुष भी तत्पर रहते थे (वन० १५३ । ९)। कुबेर लंका छोड़कर किम्पुरुषोंके साथ गन्धमादनपर आकर रहने लगे (वन० २७५ । ३३)। ये दक्ष-कन्याओंकी संतति हैं (शान्ति० २०७ । २५)। युधिष्ठिरके अश्वमेधयज्ञमें किम्पुरुष भी थे (आश्व० ८८ । ३७)। (३) जम्बूद्वीपका एक खण्ड, जिसे किम्पुरुषवर्ष एवं हैमवत भी कहते हैं। शुकदेवजी इसे लाँघकर भारतवर्षमें पहुँचे थे (शान्ति० ३२५ । १३-१४)।

किरात–एक भारतीय जनपद (भीष्म० २ । ५१, ५७)।

किरीटी–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ७१)।

किर्मीर–एक राक्षस, जो नरकासुरका भ्राता और काम्यकवनका रहनेवाला था। इसका भीमसेनसे युद्ध (वन० ११ । ४४-६४)। भीमसेनद्वारा इसका वध (वन० ११ । ६७)।

किर्मीरवधपर्व–वनपर्वके एक अवान्तर पर्वका नाम (वनपर्वका ग्यारहवाँ अध्याय)।

किष्किन्धागुहा–दक्षिण भारतमें धारवाड़ जिलेका एक पर्वतीय स्थान, जहाँ प्राचीन कालमें वानरराज वालि-सुग्रीव रहा करते थे। यहाँ सहदेवने मैन्द और द्विविदको जीता था (सभा० ३१ । १७)। इसी किष्किन्धामें श्रीरामने वालीको मारा और सुग्रीवको वहाँका स्वामी बनाया (वन० २८० । १५-३९)।

कीचक–मत्स्यनरेश विराटका साला और सेनापति एक महाबली वीर, जो द्रौपदीको देखकर काममोहित हो

गया था (विराट० १४ । ४–१०; विराट० १८ । ७)। यह रानी सुदेष्णाका भाई था (विराट० १५ । ७; विराट० २१ । २९)। यह 'सूतपुत्र' कहा जाता था (विराट० १४ । ४७)। कालेय नामक दैत्योंमें सबसे बड़ा जो 'बाण' था, वही कीचकरूपमें उत्पन्न हुआ था । इसके छोटे भाई भी कालेय ही थे (विराट० १६ अध्यायमें पृष्ठ १८९३)। इसके छोटे भाई एक सौ पाँच थे, जो उपकीचक कहलाते थे । वे सभी भीमसेनके द्वारा मारे गये थे (विराट० २३ । ३२-३३)। सूतराज केकयकी बड़ी रानी मालवीके गर्भसे कीचक और इसके भाई उत्पन्न हुए (विराट० १६ अध्यायमें दा० पाठ, पृष्ठ १८९३)। इसका सुदेष्णासे द्रौपदीका परिचय पूछना (विराट० १४ । ७–२३)। द्रौपदीसे प्रेमयाचना करना (विराट० १४ । ४०–४५)। द्रौपदीको प्राप्त करनेके लिये इसका सुदेष्णासे अनुरोध (विराट० १५ । २)। द्रौपदीका केश पकड़ना और उसे लात मारना (विराट० १६ । १०)। संकेतानुसार द्रौपदीसे मिलनेके लिये इसका रातके समय नृत्यशालामें जाना (विराट० २२ । ४०)। वहीं रातहीमें भीमसेनके साथ युद्ध और उनके द्वारा इसका वध (विराट० २२ । ५२–८२)। इसने अपने जीवनमें त्रिगर्तराज सुशर्माको बारंबार हराया था (विराट० २५ और ३० अध्याय)।

कीचकवधपर्व–विराटपर्वका एक अवान्तर पर्व (अध्याय १४ से २४ तक)।

कीटक–क्रोधवशसंज्ञक दैत्योंके अंशसे उत्पन्न एक राजा (आदि० ६७ । ६०)।

कीर्ति–दक्ष प्रजापतिकी एक पुत्री और धर्मराजकी स्त्री (आदि० ६६ । १४)। कीर्तिकी अधिष्ठात्री देवी (वन० ३७ । ३३)।

कीर्तिधर्मा–युधिष्ठिरका सम्बन्धी और सहायक क्षत्रिय वीर (द्रोण० १५८ । ३९)।

कीर्तिमान्–(१) नारायणके मानसिक पुत्र विरजाके आत्मज, जो पाँचों विषयोंसे ऊपर उठकर मोक्षमार्गका अवलम्बन करने लगे (शान्ति० ५९ । ९०)। (२) एक विश्वेदेव (अनु० ९१ । ३१)।

कुकुण–एक कश्यपवंशी नाग (उद्योग० १०३ । १०)।

कुकुर–(१) यदुवंशी 'कुकुर' नामक नरेशसे प्रचलित हुई वंशपरम्परा । इस वंशके क्षत्रिय भगवान् श्रीकृष्णकी आज्ञाके अनुसार चलकर शत्रुओंको बंदी बनाते और मित्रोंको आनन्दित करते थे (उद्योग० २८ । ११)। कुकुर और अन्धकवंशके लोग मौसल–युद्धमें परस्पर जूझते हुए एक-दूसरेपर मतवाले होकर टूटते थे (मौसल० ३ । ४२)। (२) एक कश्यपवंशी नाग (उद्योग० १०३ । १०)। (३) एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ६०)।

कुक्कुटिका–स्कन्दकी अनुचरी मातृका (भीष्म० ४६ । १५)।

कुक्कुर–(१) एक धर्मज्ञ, जितेन्द्रिय ऋषि, जो युधिष्ठिरकी सभामें विराजते थे (सभा० ४ । १८)। (२) एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ४२)।

कुक्षि–(१) एक सुप्रसिद्ध दानवराज, जो मेरुगिरिके समान तेजस्वी और विशाल 'पार्वतीय' नामक राजा हुआ (आदि० ६७ । ५६)। (२) रैभ्यका पुत्र, जो शुद्ध, सुव्रत और धर्मात्मा दिक्पाल था (शान्ति० ३४८ । ४२-४३)।

कुञ्जर–(१) एक प्रमुख नाग (आदि० ३५ । १५)। सौवीर देशका एक राजकुमार, जो जयद्रथका अनुगामी था (वन० २६५ । १०)। अर्जुनद्वारा इसका वध (वन० २७१ । २७)।

कुञ्जल–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ७६)।

कुठर–एक प्रमुख नाग (आदि० ३५ । १५)। बलरामजीके नागरूपमें समुद्रकी ओर पधारते समय उनके स्वागतमें यह भी आया था (मौसल० ४ । १५)।

कुठार–धृतराष्ट्रकुलमें उत्पन्न एक नाग, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें जल मरा था (आदि० ५७ । १५)।

कुणिगर्ग–एक महायशस्वी और शक्तिशाली ऋषि, जिनकी कन्या व्याह न करके तपस्यामें संलग्न हो वृद्ध हो गयी और अन्तमें अपनी तपस्याका आधा भाग देकर उसने एक ऋषिके साथ अपना विवाह-संस्कार सम्पन्न किया (शल्य० ५२ । ३)।

कुणिन्द–एक द्विज-मुख्य (ब्राह्मण अथवा क्षत्रिय नरेश), जिन्होंने राजसूय यज्ञमें युधिष्ठिरको दिव्य शङ्खकी भेंट दी थी (सभा० ५१ । ७ के बाद दाक्षिणात्य पाठ)।

कुण्ड–'कुण्ड' नामवाले एक विद्वान् ब्राह्मण ऋषि, जो जनमेजयके सर्पसत्रके सदस्य हुए थे (आदि० ५३ । ८)।

कुण्डज (कुण्डभेदि)–धृतराष्ट्रका पुत्र (आदि० ६७ । १०५)। भीमसेनद्वारा 'कुण्डभेदि' नामसे इसका वध (भीष्म० ९६ । २६)।

कुण्डधार–(१) धृतराष्ट्रका एक पुत्र, भीमसेनद्वारा इसका वध, इसका दूसरा नाम कुण्डोदर था (भीष्म० ८८ । २३)। (२)वरुणकी सभामें उपस्थित होनेवाला

एक नाग (सभा० ९ । ९) । (३) एक मेघ, अपने भक्त ब्राह्मणके लिये यक्षराज मणिभद्रसे इसकी प्रार्थना (शान्ति० २७१ । १९–२०) । ब्राह्मणके लिये धर्मका वरदान दिलाना (शान्ति० २७१ । २४–२६) । तपःसिद्ध हुए ब्राह्मणसे मिलकर अन्तर्धान होना (शान्ति० २७१ । ५२) ।

कुण्डभेदी–धृतराष्ट्रका एक पुत्र (आदि० ६७ । १०४) । भीमसेनद्वारा इसका वध (द्रोण० १२७ । ६०) ।

कुण्डल–(१) कौरव्यकुलमें उत्पन्न एक नाग, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें जल मरा था (आदि० ५७ । १३) । (२) एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ६३) ।

कुण्डलाहरणपर्व–वनवासके एक अवान्तर पर्वका नाम (अध्याय ३०० से ३१० तक) ।

कुण्डली–(१) गरुडकी संतानोंमेंसे एक (उद्योग० १०१ । ९) । (२) एक नदी, जिसका जल भारतीय प्रजा पीती है (भीष्म० ९ । २१) । (३) धृतराष्ट्रका एक पुत्र, इसका दूसरा नाम 'कुण्डाशी' था (यह नाम आदि० ६७ । ९७ में आया है) । भीमसेनद्वारा इसका वध (भीष्म० ९६ । २४) । (४) भगवान् विष्णुका एक नाम (अनु० १४९ । ११०) ।

कुण्डारिका–स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । १५) ।

कुण्डाशी–धृतराष्ट्रका एक पुत्र (आदि० ११६ । १४) । 'कुण्डली' नामसे भीमसेनद्वारा इसका वध (भीष्म० ९६ । २४) ।

कुण्डिक–सोमवंशी महाराज कुरुके प्रपौत्र एवं धृतराष्ट्रके प्रथम पुत्र (आदि० ९४ । ५८) ।

कुण्डिन–(१) पूरुवंशी महाराज कुरुके प्रपौत्र एवं धृतराष्ट्रके पञ्चम पुत्र (आदि० ९४ । ५८) । (२) 'कुण्डिन' नामसे प्रसिद्ध पुर या नगर, जो विदर्भदेशकी राजधानी था (वन० ६०, ७३, ७७ अ० में; उद्योग० १५८ अ० में) ।

कुण्डीविष–एक भारतीय जनपद(भीष्म० ५० । ५०) ।

कुण्डीवृष–एक भारतीय जनपद (भीष्म० ५६ । ९) ।

कुण्डोदपर्वत–एक तीर्थभूत पर्वत, जहाँ राजा नलको जल और शान्ति मिली (वन० ८७ । २५) ।

कुण्डोदर–(१) एक प्रमुख नाग (आदि० ३५ । १६) । (२) धृतराष्ट्रका एक पुत्र (आदि० (६७ । ९७) । 'कुण्डधार' नामसे भीमसेनद्वारा इसका वध (भीष्म० ८८ । २३) । (३) पूरुवंशी महाराज कुरुके पौत्र एवं जनमेजयके छठे पुत्र (आदि० ९४ । ५५) ।

कुतप–श्राद्धमें प्रशस्तकाल (दिनके आठवें भागमें जब सूर्यका ताप घटने लग जाता है, उस समयका नाम कुतप है । उसमें पितरोंके लिये दिया हुआ दान अक्षय होता है (आदि० ९३ । १३ के बाद दाक्षिणात्य पाठ) । (यह काल बारह बजेके बाद आता है ।)

कुनदीक–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ५८) ।

कुन्तल–(१) दक्षिण भारतीय कुन्तल जनपदके निवासी (सभा० ३४ । ११; उद्योग० १४० । २६) । कुन्तलदेशीय योद्धा (भीष्म० ५१ । १२; कर्ण० २० । १०) । (२) दक्षिण भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ५२–५९) ।

कुन्ति–(१) कुन्ति देशके निवासी राजा और योद्धा (सभा० १४ । २६) । (२) एक भारतीय जनपद (सभा० १४ । २७; भीष्म० ९ । ४०–४३) ।

कुन्तिभोज–(१) एक क्षत्रिय राजा, जो शूरसेनके फुफेरे भाई थे (आदि० ६७ । १३०) । शूरसेनद्वारा इनके लिये अपनी पुत्री पृथाको गोद देना (आदि० ६७ । १३१) । सहदेवद्वारा दक्षिण-दिग्विजयके समय उनपर आक्रमण और इनका सहर्ष उनके शासनको स्वीकार करना (सभा० ३१ । ६) । ये युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें पधारे थे (सभा० ३४ । १२) । इनका दुर्वासाकी सेवाके लिये अपनी पुत्री कुन्तीको उपदेश (वन० ३०३ । १३–२९) । (२) कुन्तिभोजके पुत्र भी इसी नामसे प्रसिद्ध थे; इनका दूसरा भाई पुरुजित् था । ये दोनों पाण्डवोंके मामा थे (कर्ण० ६ । २२) । महाभारत प्रथम दिनके युद्धमें कुन्तिभोज और इनके पुत्रका विन्द और अनुविन्दके साथ युद्ध (भीष्म० ४५ ।७२–७६) । धृष्टद्युम्ननिर्मित क्रौञ्चव्यूहमें नेत्रके स्थानमें कुन्तिभोज और शैब्य खड़े किये गये थे (भीष्म० ५० । ४७) । मकरव्यूहमें कुन्तिभोज और शतानीक पैरोंके स्थानमें खड़े थे (भीष्म० ७५ । ११) । इनके घोड़ोंका वर्णन (द्रोण० २३ । ४६) । अलम्बुषके साथ युद्ध (द्रोण० १६ । १८३) । अश्वत्थामाद्वारा इनके दस पुत्र मारे गये (द्रोण० ९६ । १८–२०) । अर्जुनके मामा कुन्तिभोज और पुरुजित्के द्रोणद्वारा मारे जानेकी चर्चा (कर्ण० ६ । १२) ।

कुन्ती–शूरसेनकी पुत्री, राजा कुन्तिभोजकी (दत्तक) कन्या पृथा (आदि० ६३ । ९८; आदि० १०९ । ५) । ये सिद्धि नामक देवीके अंशसे उत्पन्न हुई थीं (आदि० ६७ । १६०) । शूरसेनद्वारा इनका कुन्तिभोजके लिये गोदरूपमें दान (आदि० ११० । ३) । पिता कुन्तिभोजके घरमें देवताओं तथा अतिथियोंकी पूजा-सत्कारके लिये इनकी नियुक्ति (आदि० ११० । ४) ।

इनके द्वारा महर्षि दुर्वासाकी परिचर्या एवं संतुष्ट हुए महर्षिद्वारा इनको मन्त्रका उपदेश (आदि० ६७ । १३३-१३४; आदि० ११० । ६) । कौतूहलवश इनके द्वारा सूर्यका आवाहन (आदि० ६७ । १३६; आदि० ११० । ८) सूर्यद्वारा इनको अपने साथ समागमके लिये आदेश (आदि० ११० । १३) । इनका सूर्यसे क्षमायाचना करते हुए उनके प्रस्तावको अस्वीकार करना (आदि० ११० । ११–१६) । दोषोंके अस्पर्शका आश्वासन एवं दिव्यपुत्रका प्रलोभन देकर इनके साथ सूर्यका समागम (आदि० ११० । १६–१८) । इनके गर्भसे कर्णका जन्म (आदि० ६७ । १३७; आदि० ११० । १८) । सूर्यदेवका इनको पुनः कन्यात्व प्रदान करना (आदि० ११० । २०) । माता-पिता आदि बान्धवोंके भयसे इनके द्वारा नवजात शिशुका जलमें परित्याग (आदि० ६७ । १३९; आदि० ११० । २२) इनके द्वारा स्वयंवरमें पाण्डुका वरण और पिताद्वारा इनका विधिपूर्वक पाण्डुके साथ विवाह (आदि० १११ । ८-९) । संन्यासके लिये कृतसंकल्प हुए पाण्डुसे वानप्रस्थाश्रममें रहनेके लिये इनका हठ (आदि० ११८ । २७–३०) । इनको किसी श्रेष्ठ पुरुषके सम्पर्कसे पुत्रोत्पादन करनेके लिये पाण्डुका आदेश (आदि० ११९ । ३७) । परपुरुषसे संतानोत्पादनके विषयमें इनका विरोध तथा व्युषिताश्व एवं भद्राका उदाहरण देकर अपने मानसिक संकल्पसे ही पुत्रोत्पादनके लिये पाण्डुसे इनकी प्रार्थना (आदि० १२० । १—३७) । इनका दुर्वासासे प्राप्त हुए मन्त्रकी महिमा बताकर किसी देवताके आवाहनके लिये पाण्डुसे आज्ञा माँगना (आदि० १२१ । १०–१६) । धर्मराजके आवाहनके लिये इनको पाण्डुका आदेश (आदि० १२१ । १७–२०) । इनके द्वारा धर्मका आवाहन और उनके द्वारा इनके गर्भसे युधिष्ठिरका जन्म (आदि० १२२ । ७) । वायुदेवका आवाहन और उनके द्वारा इनके गर्भसे भीमकी उत्पत्ति (आदि० १२२ । १४) । इन्द्रका आवाहन और उनके द्वारा इनके गर्भसे अर्जुनका जन्म (आदि० १२२ । ३५) । इनके द्वारा तीनसे अधिक संतानोत्पादनका निषेध (आदि० १२२ । ७७-७८) । माद्रीके गर्भसे पुत्रकी उत्पत्तिके लिये इनसे पाण्डुका आग्रह (आदि० १२३ । ९—३४) । इनकी कृपासे माद्रीको पुत्रलाभ (आदि० १२३ । १५-१६) । पाण्डुके निधनपर इनका करुण विलाप (आदि० १२४ । १६–२३) । कुन्तीका मूर्च्छित होकर गिरना, माद्रीके उठानेपर विलाप करना तथा शतशृङ्गनिवासी ऋषियोंद्वारा इनको आश्वासन (आदि० १२४ । २२ के बाद दा० पाठ) । पतिके साथ सती होनेके लिये इनका माद्रीसे अनुरोध (आदि० १२४ । २३-२४) । बच्चोंकी रक्षाके हेतु सती न होनेके लिये इनसे माद्रीकी प्रार्थना (आदि० १२४ । २८) । पाण्डवोंके अल्पवयस्क होनेके कारण इनसे सती न होनेके लिये शतशृङ्गनिवासी ऋषियोंका अनुरोध, पतिके शवके साथ चितारोहणके लिये इनसे माद्रीका आज्ञा माँगना (आदि० १२४ । २८ के बाद दा० पाठ) । माद्रीको सती होनेके लिये इनकी आज्ञा (आदि० १२४ । २९) । ऋषियोंका कुन्ती और पाण्डवोंको लेकर हस्तिनापुर जाना (आदि० १२५ अ०) भीमके नागलोक चले जानेपर इनकी चिन्ता तथा विदुरद्वारा इनको आश्वासन (आदि० १२८ । ११—१८) । रङ्गभूमिमें कर्ण और अर्जुनके युद्धके लिये उद्यत होनेपर इनकी मूर्च्छा तथा विदुरद्वारा इनको आश्वासन (आदि० १३५ । २७-२८) । कुन्तीसहित पाण्डवोंकी वारणावतयात्रा (आदि० १४४ अ०) । इनके सहित पाण्डवोंका लाक्षागृहसे निकल जाना (आदि० १४७ अ०) । अधिक थक जानेके कारण माता कुन्तीको भीमसेनका अपनी पीठपर बिठाकर ले जाना (आदि० १४७ । २०-२१) । भीमको पतिरूपमें प्राप्त करनेके लिये इनसे हिडिम्बाकी प्रार्थना (आदि० १५४ । ४–१५) । हिडिम्बाकी मनोरथपूर्तिके लिये उनका युधिष्ठिरसे अनुरोध (आदि० १५४ । १५ के बाद दा० पाठ) । कामपीड़ित हिडिम्बाको पुत्रदान करनेके लिये इनका भीमको आदेश (आदि० १५४ । १८ के बाद दा० पाठ) । एकचक्रा नगरीके समीप इनको व्यासका आश्वासन (आदि० १५५ । १२) । इनका ब्राह्मण-परिवारके विषयमें भीमसेनसे वार्तालाप (आदि० १५६ । ११–१५) । ब्राह्मणद्वारा इनसे बकासुरके वृत्तान्तका कथन (आदि० १५९ । २–१७) । ब्राह्मण-परिवारको इनका आश्वासन (आदि० १६० । १–३) । भीमद्वारा बकवध-वृत्तान्तको गुप्त रखनेके लिये इनका ब्राह्मणसे अनुरोध (आदि० १६० । १६-१७) । ब्राह्मण-परिवारको दुःखसे मुक्त करने एवं अत्याचारी बकासुरके विनाशके लिये इनका भीमको आदेश (आदि० १६० । २०) । इनके इस आदेशका युधिष्ठिरद्वारा प्रतिवाद (आदि० १६१ । ५) । युधिष्ठिरके प्रति इनके द्वारा कृतज्ञताकी प्रशंसा (आदि० १६१ । १४) । इनके द्वारा युधिष्ठिरके प्रति भीमके बाहुबलकी श्रेष्ठताका प्रतिपादन (आदि० १६१ । १५–१८) । इनको पुत्रोंसहित पाञ्चालदेश जानेके लिये आगन्तुक ब्राह्मणकी प्रेरणा (आदि० १६६ । ५६ के बाद दा० पाठ) । पाञ्चालदेश चलनेके लिये इनका युधिष्ठिरको परामर्श

(आदि० १६७ । ८) । इनके द्वारा द्रौपदीरूप भिक्षाका मिलकर उपभोग करनेके लिये पाण्डवोंको उपदेश (आदि० १९० । २) । द्रुपदके रनिवासमें इनका सम्मान (आदि० १९३ । ९) । व्यासजीके पूछनेपर द्रौपदीके विवाहके सम्बन्धमें इनका निर्णय (आदि० १९५ । १८) । इनके द्वारा द्रौपदीको आशीर्वाद एवं शिक्षा (आदि० १९८ । ४) । विदुरका द्रुपदके भवनमें आकर कुन्ती, द्रौपदी तथा पाण्डवोंके लिये नाना प्रकारके रत्न और धन भेंट करना (आदि० २०५ । १४) विदुरजीका महलमें जाकर कुन्तीके चरणोंमें प्रणाम करना। कुन्तीका 'किसी तरह मेरे पुत्रोंके प्राण बचे हैं' ऐसा कहकर दुःख प्रकट करना, विदुरजीको ही उनके जीवनका रक्षक बताकर उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करना और भविष्यमें क्या होगा—इसके लिये शोकाकुल होना । विदुरका उन्हें पुनः आश्वासन देना और उन सबको साथ लेकर हस्तिनापुर जाना (आदि० २०६ । ९ के बाद दा० पाठसहित ११ तक) । गान्धारीका कुन्ती और द्रौपदीको राजा पाण्डुके महलमें ठहरानेके लिये विदुरको आदेश देना (आदि० २०६ । २२ के बाद दाक्षि० पाठ) । इन्द्रप्रस्थमें श्रीकृष्णका कुन्तीसे जानेके लिये विदा माँगना और कुन्तीका उन्हींको अपना तथा अपने पुत्रोंका रक्षक बताकर सदा सुधि बनाये रखनेके लिये उनसे प्रार्थना करना (आदि० २०६ । ५१ के बाद दा० पाठ) । अर्जुनका सुभद्रासहित आकर माता कुन्तीको प्रणाम करना । कुन्तीका सुभद्राको हृदयसे लगाकर उसका मस्तक सूँघना (आदि० २२० । १४–२१) । विदुरका कुन्तीको अपने घरमें रखनेके लिये पाण्डवोंसे कहना और पाण्डवोंका उनके अनुरोधको स्वीकार करना (सभा० ७८ । ५–८) । द्रौपदीका कुन्तीसे वनगमनके लिये विदा लेना और कुन्तीका उसे आश्वासन देते हुए जानेकी आज्ञा तथा कर्तव्यका उपदेश दे स्वयं भी पुत्रोंके पीछे विलाप करती हुई जाना (सभा० ७९ । १–२९) । विदुरका कुन्तीको आश्वासन देना (सभा०७९ । ३१) । कुन्तीका दुर्वासाकी सेवाके लिये उद्यत होना (वन० ३०४ । १–११) । इनकी सेवासे प्रसन्न होकर दुर्वासाका इन्हें मन्त्र प्रदान करना (वन० ३०५ । २०) । इनके द्वारा सूर्यदेवका आवाहन (वन० ३०६ । ७) । इनकी सूर्यदेवसे कवच-कुण्डलविभूषित पुत्रकी माँग (वन० ३०७ । १७) । इनका नवजात शिशुको पिटारीमें रखकर नदीमें छोड़ देना (वन० ३०८ । २२) । श्रीकृष्णके मिलनेपर उनसे पाण्डवोंका समाचार पूछकर इनका विलाप करना (उद्योग० ९० । ५–९०) । श्रीकृष्णद्वारा पाण्डवोंको उत्साहवर्धक संदेश देना और विदुलोपाख्यान सुनाकर उन्हें युद्धके लिये उत्तेजित करना (उद्योग० १३२ । ५ से उद्योग० १३७ । २३ तक) । विदुरकी बातोंसे चिन्तित होकर इनका कर्णके पास जाना (उद्योग० १४४ । २६) । कर्णको अपना प्रथम पुत्र बताते हुए उसे पाण्डवपक्षमें मिल जानेके लिये प्रेरित करना (उद्योग० १४५ अध्याय) । कुन्तीका पाण्डवोंसे मिलना और द्रौपदीको आश्वासन देना (स्त्री० १५ । ३३–३८) । कर्णको भी जलाञ्जलि देनेके लिये कहना और पाण्डवोंके सामने कर्णका अपने गर्भसे जन्म लेनेका रहस्य प्रकट करना (स्त्री० २७ । ७–१३) । कर्णके लिये चिन्तित युधिष्ठिरको समझाना (शान्ति० ६ । ४–८) । इनके द्वारा अभिमन्युवधके शोकसे पीड़ित सुभद्रा और उत्तराको आश्वासन (आश्व० ६१ । ३३–४०) । इनकी उत्तराके मृत बालकको जिलानेके लिये श्रीकृष्णसे प्रार्थना (आश्व० ६६ । १४–२६) । इनके द्वारा गान्धारीकी सेवा (आश्रम० १ । २३-२४) । वनमें जाती हुई गान्धारी तथा धृतराष्ट्रके साथ इनका भी जाना । ये आगे-आगे गान्धारीका हाथ पकड़े जाती थीं (आश्रम० १५ । १–९) । पाण्डवोंके अनुरोध करनेपर भी कुन्तीका वनमें जानेसे न रुकना । युधिष्ठिरका सहदेवका ख्याल रखने, कर्णको याद रखने तथा द्रौपदी एवं भीमसेन आदिका भी प्रिय करनेका आदेश देना (आश्रम० १६ । ७–१६) । युधिष्ठिर आदि पुत्रोंका लौट चलनेके लिये अत्यन्त आग्रह तथा द्रौपदी और सुभद्राका अपने पीछे-पीछे आना देखकर आँसू पोंछती हुई कुन्तीका पाण्डवोंको उनके अनुरोधका उत्तर देना (आश्रम० १६ । १७ से १७ अध्यायतक) । धृतराष्ट्र और गान्धारीके समझानेपर भी कुन्तीका न लौटना तथा गान्धारी और धृतराष्ट्र आदिके साथ उनका गङ्गातटपर निवास (आश्रम० १८ । ४–१६) । वनमें कुन्तीके पास उनके पुत्रोंका आना । कुन्तीका रोते हुए सहदेवको हृदयसे लगा लेना (आश्रम० २४ । ७–१०) । कुन्तीका उन पुत्रहीन दम्पतिको अपने साथ खींचकर लाना (आश्रम० २४ । १२) । कुन्तीका व्यासजीसे कर्णके जन्मका गुप्त रहस्य बताकर अपने उस पुत्रके दर्शनकी इच्छा प्रकट करना (आश्रम० २९ । ४९ से ३० । १८ तक) । युधिष्ठिर और सहदेवका कुन्तीसे उनकी सेवाके लिये वनमें रहनेकी इच्छा प्रकट करना और कुन्तीका उन्हें हृदयसे लगाकर तपस्यामें विघ्न न पड़े, इसके लिये लौट जानेका आदेश देना (आश्रम० ३६ । २८–४२) । कुन्तीकी वनमें कठोर तपस्या । एक मासतक उपवास करके एक दिन भोजन करना (आश्रम० ३७ ।

१४)। कुन्तीका ध्यान लगाकर बैठना और दावाग्निमें जलकर भस्म हो जाना (आश्रम० ३७। ३१–३२)। कुन्तीकी हड्डियोंका गङ्गामें डाला जाना और उनके लिये श्राद्धकार्य सम्पादित होना (आश्रम० ३९ अध्याय)। कुन्ती और माद्री दोनों पत्नियोंके साथ राजा पाण्डुका महेन्द्रभवनमें जाना (स्वर्गा० ५। १५)।

कुन्द–धाताद्वारा स्कन्दको दिये गये पाँच पार्षदोंमेंसे एक (शल्य० ४५। ३९)।

कुन्दापरान्त–एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९। ४९)।

कुपट–एक दानव, कश्यपपत्नी दनुका पुत्र (आदि० ६५। २६)।

कुबेर–पुलस्त्यकुमार विश्रवा मुनिके पुत्र, जो राक्षसोंके राजा थे, लङ्कामें निवास करते थे। नरयान (पालकी) पर चढ़नेके कारण 'नरवाहन' तथा राजाओंके भी राजा होनेसे 'राज-राज' कहलाते थे। इनके पिता विश्रवा इनपर कुपित थे। पिताके क्रोधको जानकर इन्होंने उनकी सेवा और प्रसन्नताके लिये तीन राक्षस-कन्याओंको नियुक्त कर दिया था (आदि० २७५। १–३)। इनकी पत्नीका नाम भद्रा है (आदि० १९८। ६)। इनका उत्तर दिशामें कैलासपर यक्षों और राक्षसोंके आधिपत्यपर अभिषेक किया गया (वन० १११। १०-११)। ब्रह्माजीसे वरदान पाकर रावणका कुबेरको जीतना, इन्हें लङ्कासे निष्कासित करना और इनके पुष्पक विमानको छीन लेना। फिर कुबेरद्वारा रावणको शाप (वन० २७५। ३२–३५)। खाण्डवदाहके समय युद्धमें श्रीकृष्ण और अर्जुनपर प्रहार करनेके लिये इन्होंने गदा हाथमें ली थी (आदि० २२६। ३२)। नारदजीद्वारा इनकी दिव्य सभाका वर्णन (सभा० १० अध्याय)। इनके द्वारा अर्जुनको अन्तर्धानास्त्रका दान (वन० ४१। ३८)। इनकी गन्धमादनपर पाण्डवोंसे भेंट और युधिष्ठिर तथा भीमसेनको सान्त्वना (वन० १६१। ४३–५१)। इनका अपनेको अगस्त्यसे शाप मिलनेकी कथाका युधिष्ठिरके प्रति वर्णन (वन० १६१। ५४–६२)। इनके द्वारा युधिष्ठिर और भीमसेनको उपदेश और सान्त्वना (वन० १६२ अध्याय)। इनका श्रीरामके लिये अभिमन्त्रित जल भेजना (वन० २८९। ९)। स्थूणाकर्णको स्त्री ही बने रहनेका शाप देना (उद्योग० १९२। ४५–४७)। यक्षोंके अनुरोधसे उसके शापका अन्त बताना (उद्योग० १९२। ५०)। कुबेर शुक्राचार्यसे एक चौथाई धन पाकर उसमेंसे सोलहवाँ भाग मनुष्योंके लिये अर्पित करते हैं (भीष्म० ६। २३)। पृथ्वीदोहनके समय ये दोग्धा थे (द्रोण० ६९। २४)। कुबेरकी सरस्वतीके तटपर तपस्या, कुबेरतीर्थकी उत्पत्ति तथा कुबेरको अनेक वरोंकी प्राप्ति। कुबेरने वहाँ धनका आधिपत्य, रुद्रदेवके साथ मित्रता, देवत्व, लोकपालत्व, नलकूबर नामक पुत्र तथा पुष्पकविमान प्राप्त किये (शल्य० ४७। २८–३१)। महाराज मुचुकुन्दके साथ युद्ध और वार्तालाप (शान्ति० ७४। ४–१८)। उशनाद्वारा अपने धनका अपहरण होनेपर इनका शिवजीकी शरणमें जाना (शान्ति० २८९। १२)। इनके द्वारा अष्टावक्र मुनिका स्वागत-सत्कार (अनु० १९। ३७–५०)।

महाभारतमें आये हुए कुबेरके नाम–अलकाधिप, धनद, धनदेश्वर, धनाधिगोप्ता, धनाधिप, धनाधिपति, धनाध्यक्ष, धनेश्वर, धनपति, धनेश, द्रविणपति, गदाधर, गुह्यकाधिप, गुह्यकाधिपति, कैलासनिलय, नरवाहन, निधिप, पौलस्त्य, राजराज, राजराट्, राक्षसाधिपति, राक्षसेश्वर, वैश्रवण, वित्तगोप्ता, वित्तपति, वित्तेश, यक्षाधिप, यक्षाधिपति, यक्षपति, यक्षप्रवर, यक्षराट्, यक्षराज, यक्षराक्षसभर्ता, यक्षरक्षोधिप इत्यादि।

कुबेरतीर्थ–सरस्वती नदी-सम्बन्धी एक तीर्थ, इसकी उत्पत्तिका प्रसंग (शल्य० ४७। २५–३१)।

कुब्जाम्रक–यात्रामात्रसे सहस्र गोदानका फल और स्वर्ग देनेवाला एक तीर्थ (वन० ८४। ४०)।

कुमार–(१) 'अनल' नामक वसुके पुत्र स्कन्द, जिनका जन्मकालमें सरकंडोंके वनमें निवास था (आदि० ६६। २३)। इनका 'कार्तिकेय' नाम होनेका कारण (आदि० ६६। २४)। कुमारग्रह अथवा कुमार स्कन्दके पार्षद, जो वज्रका प्रहार होनेपर कुमारके शरीरसे प्रकट हुए थे (वन० २८८। १)। (२) भारतवर्षका एक पूर्वीय जनपद, जहाँके राजा श्रेणिमान्‌को दिग्विजयके समय भीमसेनने परास्त किया था (सभा० ३०। १); यहाँके राजकुमार राजसूययज्ञमें युधिष्ठिरके लिये भेंट लाये थे (सभा० ५२। १४–१७)। (३) एक प्राचीन राजा, जिसे पाण्डवोंकी ओरसे रणनिमन्त्रण भेजा गया था (उद्योग० ४। २४)। द्रोणाचार्यके साथ युद्ध और उनके द्वारा इसका परास्त होना (द्रोण० १६। २१–२५)। (४) 'सनत्कुमार' अथवा कुमार सनत्सुजात ऋषि, जिन्होंने किसी समय कहा था कि 'मृत्युकी सत्ता है ही नहीं' (उद्योग० ४१। २)। (५) गरुड़की प्रमुख संतानोंमेंसे एक (उद्योग० १०१। १३)।

कुमारक–कौरव्यकुलमें उत्पन्न एक नाग, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें जल मरा था (आदि० ५७। १३)।

कुमारकोटि–एक तीर्थ, जिसके नियमपूर्वक सेवनसे दस हजार गोदानका फल प्राप्त होता है (वन० २ । ११७)।

कुमारधारा–पितामह सरोवरसे निकली 'कुमारधारा' नामकी एक धारा, जहाँ स्नानसे कृतार्थता प्राप्त होती है (वन० ८४ । १४९)।

कुमारवर्ष–रैवतक पर्वतके पासका वर्ष (भीष्म० ११।२६)।

कुमारी–(१) केकयदेशकी एक राजकुमारी, पूरुवंशीय राजा भीमसेनकी पत्नी, प्रतिश्रवाकी माता (आदि० ९५ । ४३)। (२) स्कन्दके शरीरसे उत्पन्न कुमारी ग्रह। ये कुमारियाँ गर्भस्थ बालकोंका भक्षण करनेवाली हैं (वन० २३०।३१)। (३) धनंजय नागकी भार्या (उद्योग० ११७ । १७)। (४) भारतकी एक नदी, जिसका जल यहाँकी प्रजा पीती है (भीष्म० ९ । ३६)। (५) शाकद्वीपकी एक नदी (भीष्म० ११ । ३२)।

कुमुद–(१) एक प्रमुख नाग (आदि० ३५ । १५; उद्योग० १०३ । १३; मौसल० ४ । १५)। (२) एक वानर जो वानरराज सुग्रीवका सहायक एवं अनुगामी था (वन० २८९ । ४)। (३) सुप्रतीकके कुलमें उत्पन्न एक गजराज (उद्योग० ९९ । १५)। (४) गरुडकी प्रमुख संतानोंमेंसे एक (उद्योग० १०१ । १२)। (५) कुशद्वीपका एक पर्वत (भीष्म० १२ । १०)। (६) धाताद्वारा स्कन्दको दिये गये पाँच पार्षदोंमेंसे एक (शल्य० ४५ । ३९)। (७) स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ५६)। (८) भगवान् विष्णुका एक नाम (अनु० १४९ । ७६)।

कुमुदमाली–ब्रह्माद्वारा स्कन्दको दिये गये चार पार्षदोंमेंसे एक (शल्य० ४५ । २५)।

कुमुदाक्ष–एक प्रमुख नाग (आदि० ३५ । १५)।

कुमुदोत्तर–शाकद्वीपका एक वर्ष, जो जलद या मलयके निकट है (भीष्म० ११ । २५)।

कुम्भ–प्रह्लादजीके तीन पुत्रोंमेंसे एक, इसके शेष दो भाई विरोचन और निकुम्भ हैं (आदि० ६५ । १९)।

कुम्भक–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ७५)।

कुम्भकर्ण–राक्षसकन्या पुष्पोत्कटाके दो पुत्रोंमेंसे एक। रावणका सहोदर छोटा भाई। इसके पिता पुलस्त्यकुमार विश्रवा थे (वन० २७५ । १—७)। इसका तप करके ब्रह्मासे नींदका वरदान माँगना (वन० २७५ । २८)। इसका लक्ष्मणद्वारा वध (वन० २८७ । १९)।

कुम्भकर्णाश्रम–एक तीर्थ, इसकी यात्रासे भूतलपर सम्मान-लाभ (वन० ८४ । १५७)।

कुम्भयोनि–अर्जुनके जानेपर इन्द्रसभामें नृत्य करनेवाली अप्सराओंमेंसे एक (वन० ४३ । ३०)।

कुम्भरेता–शंयुके प्रथम पुत्र भरद्वाजकी पत्नी वीराके गर्भसे उत्पन्न वीर नामक अग्नि, जिन्हें सोमदेवताके साथ द्वितीय आज्य-भाग प्राप्त होता है। इन्हें 'रथप्रभु' 'रथध्वान' और 'कुम्भरेता' भी कहते हैं (वन० २२० ।९-१०)।

कुम्भवक्त्र–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ७५)।

कुम्भश्रवा–स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । २६)।

कुम्भाण्डकोदर–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ६९)।

कुम्भिका–स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । १५)।

कुम्भीनसि–एक मायावी असुर (अनु० ३९ । ७)।

कुम्भीनसी–गन्धर्वराज चित्ररथकी पत्नी, जिसने चित्ररथकी जीवन-रक्षाके लिये युधिष्ठिरसे प्रार्थना की थी (आदि० १६९ । ३५)।

कुरङ्गक्षेत्र–एक तीर्थ, यहाँ स्नान और त्रिरात्र-उपवासका फल (अनु० २५ । १–१२)।

कुरु–(१) सूर्यकन्या तपतीके गर्भसे सम्राट् संवरणद्वारा उत्पन्न (आदि० ९४ । ४८)। इनके द्वारा वाहिनीके गर्भसे अश्ववान्, अभिष्यन्त, चैत्ररथ, मुनि एवं जनमेजयका जन्म। इनके नामसे कुरुजाङ्गल देशकी प्रसिद्धि। इनकी तपस्यासे कुरुक्षेत्रका पवित्र होना (आदि० ९४ । ५०-५१)। इनकी दूसरी पत्नी शुभाङ्गीसे विदुरका जन्म (आदि० ९५ । ३९)। कुरुक्षेत्रकी भूमि जोतते हुए इनका इन्द्रके साथ संवाद (शल्य० ५३ । ६–१५)। कुरुक्षेत्रमें इनके यज्ञ करते समय सरस्वती नदी 'सुरेणु' नामसे प्रकट हुई थीं। कुछ व्याख्याकारोंके अनुसार 'ओघवती' नामसे इनका प्राकट्य हुआ था (शल्य० ३८ । २६-२७)। (२) एक श्रद्धा-शम-दमसम्पन्न प्राचीन ऋषि, जो शरशय्यापर पड़े हुए भीष्मजीको देखने आये थे (शान्ति० ४७ । ८)।

कुरुक्षेत्र–सरस्वती एवं दृषद्वती नामक नदीका मध्यवर्ती क्षेत्र, इसमें निवासकी महिमा (वन० ८३ । ४, २०४, २०५)। कुरुक्षेत्रमें इक्षुमती नदीके तटपर तक्षक रहता था (आदि० ३ । १३९–१४२)। कुरुने अपनी तपस्यासे इस क्षेत्रको पवित्र बनाया (आदि० ९४ । ५०)। चित्राङ्गद नामक गन्धर्वके साथ युद्ध करके महाराज चित्राङ्गदकी मृत्यु यहीं हुई थी (आदि० १०१ । ८-९)। सुन्द और उपसुन्द सम्पूर्ण दिशाओंको जीतकर कुरुक्षेत्रमें निवास करते थे (आदि० २०९ । २७)। खाण्डवदाहके पहले तक्षक वहाँसे कुरुक्षेत्र चला गया था (आदि० २२६ । ४)। वनयात्राके समय पाण्डवोंका यहाँ आगमन (वन० ५ । १)। यह एक प्रसिद्ध तीर्थ है, जिसके दर्शनमात्रसे पाप नाश हो जाता

है (वन० ८३ । १-३, ७-८) । कुरुक्षेत्रकी सीमाके भीतर एक पवित्र स्थानमें मान्धाताने यज्ञ किया था (वन० १२६ । ४५) । मुद्गल नामक जितेन्द्रिय ऋषि, जो उञ्छवृत्तिसे जीविका चलाते थे, कुरुक्षेत्रमें ही रहते थे (वन० २६० । ३) । भीष्म और परशुरामका युद्ध कुरुक्षेत्रमें ही हुआ था (उद्योग० १७८ । ७२) । कौरव और पाण्डव युद्धके लिये कुरुक्षेत्रमें ही एकत्र हुए और वहीं श्रीकृष्णके मुखसे अर्जुनको गीताका उपदेश प्राप्त हुआ (भीष्म० २५ अध्यायसे ४२ अ० तक) । महाभारत-युद्धका मैदान कुरुक्षेत्र ही था (भीष्मपर्वसे शल्यपर्वतक) । इसी क्षेत्रमें भीष्मजी शरशय्यापर पड़े थे (भीष्म० ११९ । ९२) । कुरुक्षेत्रमें सरस्वती नदी 'ओघवती'के रूपमें प्रकट हुई (शल्य० ३८ । ३-४) । पहले यह समन्तपञ्चक क्षेत्र था । महाराज कुरुके समयसे इसका नाम कुरुक्षेत्र हुआ । इसकी सीमाका निर्धारण तथा महिमा (शल्य० ५३ अ०) । बलरामजी-द्वारा इसकी महिमाका वर्णन (शल्य० ५५ । ६–१०) । भीमसेन और दुर्योधनका युद्ध तथा दुर्योधनका वध भी इसी क्षेत्रमें हुआ (शल्य० ५५ अ० से ५८ अ० तक) । अतिथिसत्कारपरायण अग्निपुत्र सुदर्शन अपनी पत्नी ओघवतीके साथ कुरुक्षेत्रमें ही रहते थे (अनु० २ । ४०) ।

कुरुजाङ्गल अथवा कुरु–भारतवर्षका सुविख्यात जनपद, जिसकी राजधानी हस्तिनापुर थी । कुरुके नामसे ही कुरुजाङ्गल देशकी प्रसिद्धि हुई (आदि० ९४ । ४९) । धृतराष्ट्र तथा पाण्डुके जन्मके बाद इस देशकी सर्वाङ्गीण उन्नतिका वर्णन (आदि० १०८ । १—१६) ।

कुरुतीर्थ–कुरुक्षेत्रमें तैजसतीर्थसे पूर्वभागमें स्थित एक तीर्थ, जहाँ स्नान करनेसे ब्रह्मलोककी प्राप्ति होती है (वन० ८३ । १६५) ।

कुरुपाञ्चाल–कुरु और पाञ्चाल नामक भारतवर्षके दो जनपद (भीष्म० ९ । ३९) ।

कुरुवर्णक–एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ५६) ।

कुरुविन्द–एक भारतीय जनपद तथा वहाँके निवासी (भीष्म० ८७ । ९) ।

कुलत्थ–एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ६६) ।

कुलधर्म–सनातनकालसे चले आनेवाले कुलाचार (भीष्म० २५ । ४०) ।

कुलपांसन राजा–(उद्योग० ७४ अ० में) ।

कुलम्पुन–एक तीर्थ, जहाँ स्नान करनेसे मानव अपने समूचे कुलको पवित्र कर देता है (वन० ८३ । १०४) ।

कुलम्पुना–एक नित्य स्मरणीय नदी (अनु० १६५ । २०) ।

कुलाचल–महेन्द्र, मलय, सह्य, शुक्तिमान्, ऋक्षवान्, विन्ध्य और पारियात्र—ये सात कुलपर्वत हैं (भीष्म० ९ । ११) ।

कुलिक–एक प्रमुख नाग, जो कद्रूका पुत्र है (आदि० ६५ । ४१) ।

कुलिन्द–(१) एक प्राचीन राजा (सभा० १४ । २६) । (२) प्राचीन देश (सभा० २६ । ३; भीष्म० ९ । ५५, ६३) ।

कुल्या–एक तीर्थ, यहाँ उपवाससे अश्वमेध यज्ञका फल प्राप्त होता है (अनु० २५ । ५६) ।

कुवलयापीड–ऐरावत-कुलोत्पन्न कंसका हाथी । भगवान् श्रीकृष्णद्वारा इसका वध (सभा० ३८ । २९ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ८०१, कालम १) ।

कुवलाश्व–इक्ष्वाकुवंशी महाराज बृहदश्वके पुत्र, इनके इक्कीस हजार पुत्र थे (वन० २०२ । ५) । इनका धुन्धुको मारनेके लिये प्रस्थान (वन० २०४ । ११) । इनमें भगवान् विष्णुके तेजका प्रवेश (वन० २०४ । १३) । इनके द्वारा धुन्धुका वध (वन० २०४ । ३२) । इन्हें देवताओंसे वर-प्राप्ति (वन० २०४ । ३६–३८) । इनका धुन्धुमार नाम पड़नेका कारण (वन० २०४ । ४२) ।

कुवीरा-एक नदी, जिसका जल भारतीय प्रजा पीती है (भीष्म० ९ । २७) ।

कुश–एक प्राचीन कालके महर्षि, जो अग्निदेवके समान प्रतापी थे, ये ब्रह्माजीके पुत्र और विश्वामित्रके प्रपितामह थे (आदि० ७४ । ६९ के बाद दाक्षिणात्य पाठ) ।

कुशचीरा–एक नदी, जिसका जल भारतके निवासी पीते हैं (भीष्म० ९ । २३) ।

कुशद्वीप–सुप्रसिद्ध सात द्वीपोंमेंसे एक । इसका विशेष वर्णन (भीष्म० १२ । ६–१६) ।

कुशधारा–एक नदी, जिसका जल भारतवासी पीते हैं (भीष्म० ९ । २४) ।

कुशनाभ–महर्षि कुशके धर्मात्मा पुत्र, गाधिके पिता और विश्वामित्रके पितामह (आदि० ७४ । ६९ के बाद दाक्षिणात्य पाठ) ।

कुशप्लवन–एक तीर्थ, जहाँ स्नान और तीन रात निवाससे अश्वमेध यज्ञका फल सुलभ होता है (वन० ८५ । ३६) ।

कुशल–क्रौञ्चपर्वतके निकटका एक देश (भीष्म० १२ । २१) ।

कुशल्य–एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ४०) ।

कुशवती–देवलोककी एक नगरी (वन० १६१ । ५४) ।

कुशवान्–मानस-सरोवरके निकटवर्ती, उज्जानक सरोवरका एक ह्रद (वन० १३० । १७-१८) ।

कुशविन्दु-एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ५६)।

कुशस्तम्ब-एक तीर्थ, जहाँ स्नान करनेवाला मनुष्य स्वर्गमें अप्सराओंद्वारा सेवित होता है (अनु० २५ । २८)।

कुशस्थली-द्वारकापुरीका प्राचीन नाम (सभा० १४।५०)।

कुशाद्य-एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९। ४४)।

कुशाम्ब-राजा उपरिचरवसुके तृतीय पुत्र, इनका दूसरा नाम मणिवाहन था (आदि० ६३ । ३१)।

कुशावर्त-एक तीर्थ, यहाँ स्नानका फल (अनु० २५। १३)।

कुशिक-(१) अजमीढके वंशमें उत्पन्न जह्नुके वंशज वल्लभके पुत्र (आदि० ९५ । ३३; भीष्म० ९ । ८; अनु० ४ । ५)। एक स्थानपर इन्हें जह्नुवंशज बलाकाश्वका पुत्र कहा गया है (शान्ति० ४९ । ३)। इनकी पुत्र-प्राप्तिके लिये तपस्या (शान्ति० ४९ । ४)। इन्द्रका पुत्ररूपमें जन्म (शान्ति० ४९ । ५-६)। इनके यहाँ च्यवनका आगमन तथा रहनेकी इच्छा बताना (शान्ति० ५२ । ९-१०)। भार्यासहित इनके द्वारा च्यवनका सत्कार तथा उन्हें सर्वस्व अर्पण (शान्ति० ५२। १३-१८)। इनका च्यवनको घरमें ले जाकर ठहराना, शय्या आदि देना और सेवाके लिये प्रतिज्ञा करना (शान्ति० ५२ । २३-२४)। पत्नीसहित राजाका निराहार रहकर इक्कीस दिनोंतक सोये हुए च्यवनके पैर दबाना (शान्ति० ५२ । ३४-३५)। च्यवनके सहसा चले जानेसे इनकी चिन्ता और पुनः उन्हें शय्यापर विराजमान देख आश्चर्य और उनकी आज्ञासे पुनः उतने ही दिनोंतक सोये हुए मुनिकी चरणसेवा (शान्ति० ५३ । २-७)। मुनिके प्रतिकूल आचरणसे भी राजा-रानीका क्रोध न करना (शान्ति० ५३ । ८-२४)। इन राजदम्पतिका रथमें जुतकर कोड़ोंसे पीटा जाना और अन्तमें मुनिकी कृपासे नवयौवनसम्पन्न एवं स्वस्थ होना (शान्ति० ५३ । २७-६३)। च्यवन मुनिके वर माँगनेके लिये कहनेपर संतोष प्रकट करके नगरको वापस आना (अनु० ५३ । ५९-६५)। दूसरे दिन मुनिके पास जाकर अद्भुत स्वर्गीय दृश्य देखना (अनु० ५४ । २-२५)। रानीसे मुनिकी प्रशंसा करना (अनु० ५४। २६-३१)। च्यवनके वर माँगनेके लिये कहनेपर संतोष प्रकट करना (अनु० ५४ । ३८-४२)। च्यवन मुनिसे अपने यहाँ रहनेका कारण और परीक्षाके क्लेशोंके विषयमें पूछना (अनु० ५५ । २-९)। च्यवनमुनिसे वर माँगना (अनु० ५५ । १८; अनु० ५५ । ३५)। अपने पौत्रके ब्राह्मणत्वके विषयमें पूछना (अनु० ५५ । ३६-३७)।

(२) एक वनवासी ऋषि, जो सर्पविषसे मरी हुई प्रमद्वराको देखनेके लिये गये थे (आदि० ८ । २५)। इन्होंने हस्तिनापुरको जाते हुए श्रीकृष्णकी मार्गमें परिक्रमा की थी (उद्योग० ८३ । २७)।

कुशिकाश्रम-कौशीनदीके निकटवर्ती एक तीर्थभूत आश्रमका नाम (वन० ८४ । १३१)।

कुशेशय-कुशद्वीपके छः श्रेष्ठ पर्वतोंमेंसे एक (भीष्म० १२। १०-११)।

कुसुम-धाताद्वारा स्कन्दको दिये गये पाँच पार्षदोंमेंसे एक (शल्य० ४५। ३९)।

कुसुम्भि-द्वारकाके समीपवर्ती एक वन (सभा० ३८ । २९ के बाद पृष्ठ ८१३, कालम १)।

कुस्तुम्बुरु-कुबेरकी सभाका एक पिशाच (सभा० १०। १६)।

कुहन-सौवीर देशका एक राजकुमार, जो जयद्रथका अनुगामी था (वन० २६५ । ११)।

कुहर-कलिङ्गदेशका एक राजा, जो क्रोधवश नामवाले दैत्योंके अंशसे उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७ । ६५)।

कुहुर-एक कश्यपवंशी नाग (उद्योग० १०३ । १५)।

कुहू-महर्षि अङ्गिराकी आठवीं पुत्री (वन० २१८ । ८)। यह स्कन्दके जन्म-समयमें आयी थी (शल्य० ४५ । १३)।

कूर्चामुख-विश्वामित्रके ब्रह्मवादी पुत्रोंमेंसे एक (अनु० ४ । ५३)।

कूर्म-एक प्रमुख नाग, जो कद्रूका पुत्र है (आदि० ६५ । ४१)।

कूष्माण्डक-एक प्रमुख नाग (आदि० ३५ । ११)।

कृकणेयु-पूरुके तीसरे पुत्र। रौद्राश्वके द्वारा मिश्रकेशी अप्सराके गर्भसे उत्पन्न दस पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ९४। १०)।

कृत-एक विश्वेदेव (अनु० ९१ । ३१)।

कृतक्षण-विदेहदेशके एक राजा, जो युधिष्ठिरकी सभामें विराजते थे (सभा० ४ । २७)। इन्होंने राजा युधिष्ठिरको चौदह हजार घोड़े भेंटमें दिये थे (सभा० ५१ । ७ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ८६१, कालम २)।

कृतचेता-एक प्राचीन ऋषि, जो अजातशत्रु युधिष्ठिरका विशेष आदर करते थे (वन० २६ । २२)।

कृतबन्धु-एक प्राचीन नरेश (आदि० १ । २३८)।

कृतयुग-हनुमान्‌जीद्वारा इस युगके धर्मका वर्णन (वन० १४९ । ११-२५)। मार्कण्डेयजीद्वारा इसका वर्णन (वन० १८८ । २२)। कलियुगके बाद कल्कीद्वारा इसकी स्थापना (वन० १९१ । १-१४)।

कृतवर्मा–यदुकुलके अन्तर्गत भोजवंशी हृदिकका पुत्र, जो भगवान् श्रीकृष्णका अनुरागी एवं आज्ञापालक था (आदि० ६३ । १०५) । यह मरुद्गणोंके अंशसे उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७ । ८१) । इसका द्रौपदीके स्वयंवरमें पदार्पण (आदि० १८५ । १८) । यह सुभद्राके लिये उपहार-सामग्री लेकर खाण्डवप्रस्थमें गया था (आदि० २२० । ३१) । यह युधिष्ठिरकी सभामें विराजमान होता था (सभा० ४ । ३०) । यह वृष्णि-वंशके सात महारथियोंमेंसे एक था (सभा० १४ । ५८) । उपप्लव्य नगरमें अभिमन्युके विवाहमें उपस्थित हुआ था (विराट० ७२ । २१) । पाण्डवोंकी ओरसे इसको रणनिमन्त्रण भेजा गया था (उद्योग० ४ । १२) । दुर्योधनके माँगनेपर एक अक्षौहिणी सेनाकी सहायता देना (उद्योग० ७ । ३२) । इसका सेनासहित दुर्योधन-की सहायतामें जाना (उद्योग० १९ । १७) । सात्यकि-के कहनेसे श्रीकृष्णकी रक्षाके लिये कौरवसभाके द्वारपर उसका सेनासहित डट जाना (उद्योग० १३० । १०-११) । यह कौरवपक्षका अतिरथी वीर था (उद्योग० १६५ । २४) । प्रथम दिनके युद्धमें इसका सात्यकिके साथ द्वन्द्वयुद्ध (भीष्म० ४५ । १२-१३) । अभिमन्यु-के हाथों यह घायल हुआ था (भीष्म० ४७ । १०) । भीष्मद्वारा निर्मित क्रौञ्चारुणव्यूहमें मस्तककी जगह खड़ा किया गया था (भीष्म० ७५ । १७) । भीमसेन-द्वारा इसका पराजित होना (भीष्म० ८२ । ६१) । सात्यकिद्वारा इसका घायल होना (भीष्म० १०४ । १६) । धृष्टद्युम्नके साथ द्वन्द्वयुद्ध (भीष्म० ११० । ९-१०; भीष्म० १११ । ४०–४४) । भीमसेन और अर्जुनके साथ युद्ध (भीष्म० ११३, ११४ अध्याय) । सात्यकिके साथ युद्ध (द्रोण० १४ । ३५-३६; द्रोण० २५ । ८-९) । अभिमन्युपर प्रहार और उसके घोड़ोंको मार डालना (द्रोण० ४८ । ३२) । अभिमन्युपर आक्रमण करनेवाले छः महारथियोंमें एक यह भी था (द्रोण० ७३ । १०) । अर्जुनके साथ युद्ध और उनके प्रहारसे इसका मूर्च्छित होना (द्रोण० ९२ । १६– २६) । इसका युधामन्यु और उत्तमौजाके साथ युद्ध (द्रोण० ९२ । २७–३२) । सात्यकिके साथ युद्ध (द्रोण० ११३ । ४६–५८) । भीमसेनको आगे बढ़नेसे रोकना (द्रोण० ११३ । ६४–६७) । भीमसेन और शिखण्डी-को परास्त करके इसका पाण्डव-सेनाको खदेड़ना (द्रोण० ११४ । ५९–१०३) । सात्यकिद्वारा इसकी पराजय (द्रोण० ११५ । १०-११; द्रोण० ११६ । ४१) । युधिष्ठिरके साथ युद्ध और उन्हें परास्त करना (द्रोण० १६५ । २४–४०) । द्रोणाचार्यके मारे जानेपर युद्धस्थल-से भागना (द्रोण० १९३ । १३) । सात्यकिद्वारा इसकी पराजय (द्रोण० २०० । ५३) । इसके द्वारा शिखण्डीकी पराजय (कर्ण० २६ । ३६-३७) । धृष्टद्युम्न-द्वारा इसका मूर्च्छित किया जाना (कर्ण० ५४ । ४० के बाद दा० पाठ) । इसके द्वारा उत्तमौजाकी पराजय (कर्ण० ६१ । ५९) । भीमसेनके साथ युद्धमें भागना (शल्य० ११ । ४५–४७) । सात्यकिद्वारा इसकी पराजय (शल्य० १७ । ७७-७८; शल्य० २१ । २९-३०) । युधिष्ठिरद्वारा पराजय (शल्य० १७ । ८७) । द्वैपायन सरोवरपर जाकर दुर्योधनको युद्धके लिये उत्साहित करना (शल्य० ३० । ९–१४) । सेनासहित युधिष्ठिर-के पहुँचनेपर इसका वहाँसे हट जाना (शल्य० ३० । ६३) । अश्वत्थामाके साथ रातमें सौप्तिक युद्धके लिये जाना (सौप्तिक० ५ । ३८) । रातमें शिविरसे भागे हुए योद्धाओंका इसके द्वारा वध (सौप्तिक० ८ । १०६-१०७) । पाण्डवोंके शिविरमें इसका आग लगाना (सौप्तिक० ८ । १०९-११०) । धृतराष्ट्रको दुर्योधन-के मारे जानेका समाचार बताकर इसका अपने देशकी ओर जाना (स्त्री० ११ । २१) । युधिष्ठिरके अश्वमेध-यज्ञमें सम्मिलित होनेके लिये भगवान् श्रीकृष्णके साथ कृतवर्माका भी आगमन (आश्व० ६६ । ३-४) । सात्यकिद्वारा मौसल-युद्धमें इसका वध (मौसल० ३ । २८) । स्वर्गमें जानेपर इसका मरुद्गणोंमें प्रवेश (स्वर्गा० ५ । १३) ।

महाभारतमें आये हुए कृतवर्माके नाम–आनर्तवासी, भोज, भोजराज, हार्दिक्य, हृदिकसुत, हृदिकात्मज, माधव, सात्वत, वार्ष्णेय, वृष्णि, वृष्णिसिंह आदि ।

कृतवाक्–अजातशत्रु युधिष्ठिरका आदर करनेवाले एक महर्षि (वन० २६ । २४) ।

कृतवीर्य–(१) सोमवंशी राजा अहंयातिके श्वशुर, भानु-मतीके पिता (आदि० ९५ । १५) । (२) भूमण्डल-के एक सुप्रसिद्ध प्राचीन राजा, जो कार्तवीर्यके पिता और वेदज्ञ भृगुवंशियोंके यजमान थे (आदि० १७७ । ११) । इनके द्वारा सोमयज्ञ करके भृगुवंशियोंके लिये विपुल धनराशिका दान (आदि० १७७ । १३) । ये यमराज-की सभाके एक सदस्य हैं (सभा० ८ । ९) । माहिष्मती नगरीका राजा अर्जुन इन्हीं कृतवीर्यका ज्येष्ठ पुत्र था (सभा० ३८ । २९ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ७९१, कालम २) ।

कृतवेग–एक पुण्यात्मा एवं बहुश्रुत राजर्षि, जो यमसभाको सुशोभित करते हैं (सभा० ८ । ९) ।

कृतशौच–कुरुक्षेत्रके अन्तर्गत एक तीर्थ, जहाँ जाने और तीर्थ-सेवन करनेसे पुण्डरीक-यज्ञका फल प्राप्त होता है (वन० ८३ । २१) ।

कृतश्रम-युधिष्ठिरकी सभामें बैठनेवाले एक महर्षि (**सभा० ४ । १४**) । इनको वानप्रस्थधर्मके पालनसे स्वर्गलोककी प्राप्ति हुई (**शान्ति० २४४ । १८**) ।

कृति-(१) एक पुण्यात्मा एवं बहुश्रुत राजर्षि, जो यमराजकी सभाको सुशोभित करते हैं (**सभा० ८ । ९**) । (२) एक विश्वेदेव (**अनु० ९१ । ३५**) । (३) भगवान् विष्णुका एक नाम (**अनु० १४९ । २२**) ।

कृती-शूकरदेशका एक राजा, जिसने युधिष्ठिरको सौ गजरत्न भेंट किये थे (**सभा० ५२ । २५**) ।

कृत्तिका-(१) एक तीर्थ, यहाँकी यात्रासे अतिरात्र यागका फल मिलता है (**वन० ८४ । ५१**) । (२) कृत्तिकाएँ छः हैं, इनका स्कन्दसे अपनेको माता स्वीकार करनेका अनुरोध (**वन० २३० । ५**) । इन्हें नक्षत्रमण्डलमें स्थानकी प्राप्ति (**वन० २३० । ११**) । कृत्तिका नक्षत्रमें दान देनेका फल (**अनु० ६४ । ५**) ।

कृत्तिकाङ्गारक-एक तीर्थ, जहाँ स्नान करके एक पक्षतक निराहार रहनेवाला मनुष्य निष्पाप होकर स्वर्गलोकमें जाता है (**अनु० २५ । २२-२६**) ।

कृत्तिकाश्रम-एक तीर्थ, जहाँ स्नान करके पितरोंका तर्पण और महादेवजीको संतुष्ट करनेवाला पुरुष पापमुक्त हो स्वर्गमें जाता है (**अनु० २५ । २५**) ।

कृत्या-(१) दैत्योंद्वारा आभिचारिक यज्ञसे उत्पन्न की हुई एक राक्षसी, जो आमरण उपवासके लिये बैठे हुए दुर्योधनको वनसे उठाकर रसातलमें ले गयी थी (**वन० २५२ । २१-२९**) । (२) एक नदी, जिसका जल भारतीय प्रजा पीती है (**भीष्म० ९ । १८**) ।

कृत्रिम-एक प्रकारका अबन्धुदायादपुत्र ('मैं आपका पुत्र हूँ' यों कहकर जो स्वयं समीप आया हो) (**आदि० ११९ । ३४**) ।

कृप-एक प्राचीन राजा, जिन्होंने कभी मांस नहीं खाया था (**अनु० ११५ । ६४**) ।

कृपाचार्य-किसी समय गौतमगोत्रीय शरद्वान्‌का वीर्य सरकंडेके समूहपर गिरा और दो भागोंमें बँट गया, उसीसे एक पुत्र और एक कन्याका जन्म हुआ, कन्याका नाम कृपी हुआ और पुत्र महाबली कृपके नामसे प्रसिद्ध हुआ (**आदि० ६३ । १०७**) । ये रुद्रगणके अंशावतार और अत्यन्त पुरुषार्थी थे (**आदि० ६७ । ७७**) । 'जानपदी' नामक अप्सराके दर्शनसे सरकंडेपर स्खलित हुए महर्षि शरद्वान्‌के दो भागोंमें बँटे हुए वीर्यसे एक पुत्र और एक कन्याकी उत्पत्ति (**आदि० १२९ । ६-१४**) । वनमें शिकारके लिये आये हुए महाराज शान्तनुका इन्हें देखना और कृपाके वशीभूत हो घर लाकर इनका पालन-पोषण एवं समस्त संस्कार करना (**आदि० १२९ । १५-१८**) । इनका 'कृप' नाम होनेका कारण (**आदि० १२९ । २०**) । शरद्वान्‌का इनको इनके गोत्र आदिका गुप्तरूपसे परिचय देकर समस्त शास्त्रोंका उपदेश करना (**आदि० १२९ । २१-२२**) । ये धनुर्वेदके परमाचार्य हो गये (**आदि० १२९ । २२**) । इनसे कौरवों-पाण्डवों तथा यादवोंका धनुर्वेद पढ़ना (**आदि० १२९ । २३**) । रङ्गभूमिमें अर्जुनपर आक्षेप करते समय इनका कर्णसे उसके कुलका परिचय पूछना (**आदि० १३५ । ३२**) । ये युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें उपस्थित थे (**सभा० ३४ । ८**) । धनकी देख-रेख और दक्षिणा बाँटनेके कामपर नियुक्त किये गये थे (**सभा० ३५ । ७**) । इनका पाण्डवोंके अन्वेषणके लिये सलाह देना (**विराट० २९ । १-१४**) । कर्णको फटकारते हुए युद्धके विषयमें अपना मत प्रकट करना (**विराट० ४९ अ०में**) । अर्जुनद्वारा घायल होनेपर कौरवोंका इन्हें अन्यत्र हटा ले जाना (**विराट० ५७ । ४३**) । दुर्योधनसे दो मासमें पाण्डव-सेनाको नष्ट करनेकी अपनी शक्तिका कथन (**विराट० १९३ । १९**) । युधिष्ठिरको आज्ञा देकर अपनेको अवध्य बताना (**भीष्म० ४३ । ७०-७५**) । प्रथम दिनके युद्धमें बृहत्क्षत्रके साथ इनका द्वन्द्वयुद्ध (**भीष्म० ४५ । ५२-५४**) । चेकितानद्वारा इनका मूर्च्छित होना (**भीष्म० ८४ । ३१**) । सात्यकिको घायल करना (**भीष्म० १०१ । ४०-४१**) । सहदेवके साथ द्वन्द्व-युद्ध करना (**भीष्म० ११० । १२-१३; भीष्म० १११ । २८-३३**) । भीमसेन और अर्जुनके साथ युद्ध (**भीष्म० ११३, ११४ अध्याय**) । धृष्टकेतुके साथ युद्ध (**द्रोण० १४ । ३३-३४**) । वार्धक्षेमिके साथ युद्ध (**द्रोण० २५ । ५१-५२**) । अभिमन्युके पार्श्वरक्षकोंका वध कर देना (**द्रोण० ४८ । ३२**) । इनके ध्वजका वर्णन (**द्रोण० १०५ । १४-१६**) । अर्जुनके साथ युद्ध (**द्रोण० १४५ अ०**) । अर्जुनके साथ युद्धमें मूर्च्छित होना (**द्रोण० १४७ । ९**) । कर्णको फटकारना (**द्रोण० १५८ । १३-२३; ३३-४७**) । अश्वत्थामासे दुर्योधनको अर्जुनके साथ युद्धके लिये जानेसे रोकनेको कहना (**द्रोण० १५९ । ७७-८२**) । इनके द्वारा शिखण्डीकी पराजय (**द्रोण० १६९ । ३२**) । द्रोणाचार्यके मारे जानेपर युद्धस्थलसे भागना (**द्रोण० १९३ । १२**) । अश्वत्थामासे द्रोणवधका समाचार बताना (**द्रोण० १९३ । ३७-६७**) । सात्यकिद्वारा पराजय (**द्रोण० २०० । ५३**) । इनके

द्वारा शिखण्डीकी पराजय (कर्ण० ५४ । २३)। चित्रकेतु-पुत्र सुकेतुका वध (कर्ण० ५४ । २८)। युधामन्युको परास्त करना (कर्ण० ६१ । ५५-५६)। इनके द्वारा कुलिन्द-राजकुमारका वध (कर्ण० ८५ । ६)। दुर्योधनको सन्धिके लिये समझाना (शल्य० ४ अ०)। द्वैपायन सरोवरपर जाकर दुर्योधनको युद्धके लिये उत्साहित करना (शल्य० ३० । ९–१४)। सेनासहित युधिष्ठिरके पहुँचनेपर वहाँसे हट जाना (शल्य० ३० । ६३)। दुर्योधनके कहनेसे अश्वत्थामाको सेनापति-पदपर अभिषिक्त करना (शल्य० ६५ । ४३)। दैवकी प्रबलता बताते हुए अश्वत्थामाको सत्पुरुषोंसे सलाह लेनेकी राय देना (सौप्तिक० २ अ०)। अश्वत्थामाको प्रातःकाल युद्ध करनेके लिये समझाना (सौप्तिक० ४ । १–२०; सौप्तिक० ५ । १–१७)। अश्वत्थामाके साथ रातमें युद्धके लिये जाना (सौप्तिक० ५ । ३८)। इनके द्वारा पाण्डव-शिविरसे भागे हुए योद्धाओंका वध (सौप्तिक० ८ । १०६-१०७)। शिविरमें आग लगाना (सौप्तिक० ८ । १०९-११०)। दुर्योधनकी दशा देखकर विलाप करना (सौप्तिक० ९ । १०–१७)। धृतराष्ट्र और गान्धारीको कौरव-पाण्डवोंके विनाशकी सूचना देना (स्त्री० ११ । ५–१७)। समाचार बताकर हस्तिनापुरकी ओर चला जाना (स्त्री० ११ । २१)। इन्हें द्रोणाचार्यसे खड्ग-विद्या प्राप्त होनेका प्रसंग (शान्ति० १६६ । ८१)। तपस्यासे सिद्धि या प्रतिष्ठा प्राप्त करनेवाले लोगोंमें इनका भी नाम है (शान्ति० २९६ । १४)। वनमें जाते समय धृतराष्ट्रका कृपाचार्यको युधिष्ठिरके हाथों सौंपकर अपने साथ जानेसे लौटाना (आश्रम० १६ । ५)। महाप्रस्थानसे पूर्व युधिष्ठिरने कृपाचार्यकी पूजा करके उन्हें परीक्षित्को शिष्यरूपमें सौंपा (महाप्रस्थान० १ । १४-१५)।

महाभारतमें आये हुए कृपाचार्यके नाम–आचार्य, आचार्यसत्तम, भारताचार्य, ब्रह्मर्षि, शारद्वत, शरद्वत्-सुत, गौतम आदि।

कृपी–शरद्वान् ऋषिकी पुत्री, कृपाचार्यकी बहन, द्रोणाचार्यकी पत्नी और अश्वत्थामाकी माता (आदि० ६३ । १०७-१०८)। शान्तनुद्वारा इनका संवर्धन (पालन-पोषण) एवं समस्त संस्कार (आदि० १२९ । १८)। द्रोणाचार्यका इन्हें धर्मपत्नीके रूपमें ग्रहण करना (आदि० १२९ । ४६)। इनका मरे हुए द्रोणाचार्यके लिये रोना (स्त्री० २३ । ३४–३७)।

महाभारतमें आये हुए इनके नाम–शारद्वती, कृपी, गौतमी आदि।

कृमि–(१) एक क्षत्रियकुल (उद्योग० ७४ । १३)। (२) एक नदी, जिसका जल भारतीय प्रजा पीती है (भीष्म० ९ । १७)।

कृश–(१) श्रृङ्गीऋषिका एक मित्र, जो धर्मके लिये कष्ट उठानेके कारण सदा कृश ही रहा करता था (आदि० ४० । २७-२८)। इनका श्रृङ्गीऋषिको उत्तेजित करना (आदि० ४० । २९–३२)। इनका श्रृङ्गीऋषिको उनके पिताके कंधेपर राजा परीक्षित्द्वारा सर्प डालनेका समाचार सुनाना (आदि० ४१ । ५–९)। (२) ऐरावतकुलोत्पन्न एक नाग, जो जनमेजयके सर्पयज्ञमें दग्ध हो गया था (आदि० ५७ । ११)। (३) एक दिव्य महर्षि, जो शरशय्यापर पड़े हुए भीष्मजीको देखनेके लिये आये थे (अनु० २६ । ७)।

कृशक–एक कश्यपवंशी नाग (उद्योग० १०३ । १५)।

कृशाश्व–यमकी सभामें उपस्थित धर्मराजकी उपासना करनेवाले एक नरेश (सभा० ८ । १७)। ये उत्तर-गोग्रहणके समय अर्जुनका कृपाचार्य एवं अन्य कौरव-वीरोंके साथ होनेवाले युद्धको देखनेके लिये इन्द्रके विमानमें बैठकर आये थे (सभा० ५६ । १०)। इनका प्रातःसायं स्मरण-कीर्तन करनेवाला मनुष्य धर्म-फलका भागी होता है (अनु० १६५ । ४९)।

कृषीवल–इन्द्रकी सभामें बैठकर उनकी उपासना करनेवाले एक प्राचीन महर्षि (सभा० ७ । १३)।

कृष्ण–(१) सत्यवतीनन्दन द्वैपायन व्यास, जिन्हें शरीरका रंग साँवला होनेके कारण लोग 'कृष्ण' भी कहते थे (आदि० १०४ । १५)। (देखिये 'व्यास') (२) एक नाग, जो वरुणसभामें रहकर वरुण देवताकी उपासना करते हैं (सभा० ९ । ८)। (३) अर्जुनका एक नाम (विराट० ४४ । २२)। (४) स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ५७)। (५) एक महर्षि, जो उत्तरायणके आरम्भमें शर-शय्याशायी भीष्मजीको देखनेके लिये पधारे थे (शान्ति० ४७ । १२)। (६) भगवान् शिवका एक नाम (अनु० १७ । ४५)। (७) भगवान् विष्णुका एक नाम (अनु० १४९ । ७२)। (८) ये नारायणस्वरूप हैं, इनकी वन्दना करके महाभारतका पाठ करनेका विधान (आदि० १ । मङ्गलाचरण १)। ये 'श्रीकृष्ण' ही धर्ममय वृक्षके मूल हैं (आदि० १ । १११)। विश्ववन्दित महायशस्वी भगवान् विष्णु जगत्के जीवोंपर अनुग्रह करनेके लिये वसुदेवजीके द्वारा देवकीके गर्भसे प्रकट हुए (आदि० ६३ । ९९)। आदि-अन्तसे रहित, सबके आत्मा, अव्यय, अनन्त, अचल, अजन्मा, नारायणस्वरूप, अनादि, सर्वव्यापी, परम पुरुष पूर्णतम परमात्मा ही धर्मकी वृद्धिके लिये अन्धक और वृष्णि-

कुलमें बलराम और श्रीकृष्णरूपसे अवतीर्ण हुए (आदि० ६३। १००–१०४)। सम्पूर्ण देवताओं एवं इन्द्रका भगवान् श्रीहरिसे अवतार ग्रहण करनेकी प्रार्थना और भगवान्‌की स्वीकृति (आदि० ६४ । ५१–५४)। देवताओंके भी देवता, सनातन पुरुष, नारायणके ही अंशस्वरूप प्रतापी वसुदेवनन्दन श्रीकृष्ण मनुष्योंमें अवतीर्ण हुए थे (आदि० ६७ । १५१)। अपने श्याम और श्वेत दो प्रकारके केशोंको द्वारमात्र बनाकर सच्चिदानन्दघन नारायणने स्वयं ही अपनेको पूर्णतम पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण रूपसे प्रकट किया (आदि० १९६ । ३२-३३)। वृष्णिवंशियों-सहित इनका द्रौपदीके स्वयंवरमें आगमन (आदि० १८५ । १६–२०)। इनका स्वयंवरमें आये हुए ब्राह्मणवेषधारी पाण्डवोंको पहचानना और बलरामजी-को संकेतसे बताना (आदि० १८६ । ८–१०)। द्रौपदी-स्वयंवरमें भीम और अर्जुनके विषयमें इनका बलरामजीसे वार्तालाप (आदि० १८८ । २०–२३ के बाद दाक्षिणात्य पाठ)। पाण्डवोंसे मिलनेके लिये बलरामसहित इनका कुम्भकारके घरमें आगमन (आदि० १९० । १८)। द्रौपदीके विवाहके अवसरपर इनके द्वारा पाण्डवोंको विविध उपहारोंकी भेंट (आदि० १९८ । १३–१९)। पाण्डवोंको द्रुपद-नगरसे हस्तिनापुर जानेके लिये इनकी सम्मति (आदि० २०६ । ६)। पाण्डवोंके निवासके लिये दिव्य नगर-निर्माणके हेतु इनकी इन्द्रको प्रेरणा (आदि० २०६ । २८ के बाद दाक्षिणात्य पाठ)। प्रभास क्षेत्रमें इनका अर्जुनके साथ मिलन और रैवतक पर्वतपर विश्राम (आदि० २१७ । ३–८)। अर्जुनको सुभद्राहरणके लिये इनकी सम्मति (आदि० २१८ । २३)। सुभद्राहरणसे कुपित हुए वृष्णिवंशियोंको इनकी सान्त्वना (आदि० २२० । १–११)। दहेजरूपमें विपुल धनराशि लेकर इनका इन्द्रप्रस्थ नगरमें आगमन और भेंटसमर्पण (आदि० २२० । २७–५२)। अर्जुन-के साथ इनका यमुनाजीमें जल-विहार (आदि० २२१ । १४–२०)। खाण्डववन-दाहके लिये इनसे अग्निकी प्रार्थना (आदि० २२२ । २–११)। अग्निद्वारा इनको दिव्य चक्रका दान (आदि० २२४ । २३)। वरुणद्वारा इनको कौमोदकी गदाकी भेंट (आदि० २२४ । २८)। खाण्डववनदाहके समय इनका इन्द्र आदि देवताओंके साथ युद्ध (आदि० २२६ अध्याय)। अर्जुनके द्वारा अभयदान देनेपर इनका मयासुरको जीवनदान (आदि० २२७ । ४४–४५)। अर्जुनके साथ निरन्तर प्रेम-वृद्धिके लिये इनकी इन्द्रसे वर-याचना (आदि० २३३ । १३)। इनकी मयासुरको सभाभवन-निर्माणके लिये आज्ञा (सभा० १ । १३)। इनकी द्वारकायात्रा (सभा० २ अध्याय)। इन भगवान् वासुदेवने विन्दुसरोवरपर धर्मपरम्पराकी रक्षाके लिये बहुत वर्षोंतक निरन्तर श्रद्धा-पूर्वक यज्ञ किया था (सभा० ३ । १६)। युधिष्ठिरको राजसूय यज्ञके लिये इनकी सम्मति (सभा० १४ अध्याय)। जरासंधके वधके विषयमें इनकी युधिष्ठिर और भीमसेनसे बातचीत (सभा० १५ । १४–२५)। इनके द्वारा अर्जुनकी बातका अनुमोदन और जरासंधकी उत्पत्तिका वर्णन (सभा० १७ अध्याय)। जरासंध-वधके लिये भीम और अर्जुनके साथ ब्राह्मण-रूप धारणकर इनकी मगध-यात्रा (सभा० २० अध्याय)। इनके द्वारा मगधकी राजधानीकी प्रशंसा (सभा० २१ । १–११)। इनका जरासंधके साथ संवाद (सभा० २१ । ४९–५४)। निरपराध कैद किये हुए राजाओं-को छोड़ देनेके लिये इनकी जरासंधको चेतावनी (सभा० २२ । ७–२६)। जरासंधके वधके लिये इनका भीमको संकेत (सभा० २४ । ५ के बाद दाक्षिणात्य पाठ)। इनके द्वारा जरासंध-पुत्र सहदेवका राज्याभिषेक (सभा० २४ । ४३)। राजसूय यज्ञके उपलक्ष्यमें इनके द्वारा युधिष्ठिरको विपुल धनराशिकी भेंट (सभा० ३३ । १३)। राजसूय यज्ञमें भीष्मके आदेशपर सहदेवद्वारा इनकी अग्रपूजा (सभा० ३६ । ३०)। इनके प्रति शिशुपालके आक्षेपपूर्ण वचन (सभा० ३७ अध्याय)। भीष्मद्वारा इनकी महिमाका वर्णन (सभा० ३८ । ६–२९)। भगवान् श्रीकृष्णके अवतारका प्रकृतिपर प्रभाव; अवतारकालमें महर्षियों, देवर्षियों आदिका आगमन तथा इन्द्रद्वारा भगवान्‌से प्रार्थना (सभा० ३८ । पृष्ठ ७९७)। वसुदेवजीका नव-जात शिशु श्रीकृष्णको कंसके भयसे गोकुलमें नन्दगोपके घर छिपा देना (सभा० ३८ । पृष्ठ ७९८)। इनके पदा-घातसे दही आदिके मटकोंसे भरे छकड़ेका उलट जाना (सभा० ३८ । पृष्ठ ७९८)। इनके द्वारा पूतनाका वध, यशोदा मैयाका इन्हें ऊखलमें बाँधना, इनके द्वारा यमलार्जुनका उद्धार (सभा० ३८ । पृष्ठ ७९८)। इनकी सात वर्षकी अवस्थामें वेष-भूषा, खेल-कूद, मनोरञ्जन और इनके द्वारा वत्स-चारण (सभा० ३८ । पृष्ठ ७९९)। श्रीकृष्णका अकेले वृन्दावनमें जाना, इनकी शोभा और वन-विहार तथा इनके द्वारा कालिय नागका मानमर्दन एवं अन्यत्र प्रेषण; इनका बलभद्रजीके साथ वन-विहार (सभा० ३८ । पृष्ठ ८००)। इनके द्वारा इन्द्रका मान-भङ्ग और गोवर्धन-धारण। देवेन्द्रद्वारा इनका 'गोविन्द' नामकरण और 'गवेन्द्र' पदपर अभिषेक। इनके द्वारा अरिष्टासुर, केशीनामक दैत्य, आन्ध्रदेशीय मल्ल चाणूर, कंसके सेनापति 'सुनामा' का वध; इनके

द्वारा कंसके मनमें भयका उत्पादन और कुवलयापीडका वध, श्रीकृष्णद्वारा कंसका वध और उग्रसेनका राजाके पदपर अभिषेक (सभा० ३८ । पृष्ठ ८०१; ८०४) । बलरामजीके साथ इनका मथुरामें ही निवास, उज्जयिनीमें सान्दीपनि मुनिके यहाँ इन दोनों भाइयोंका अध्ययनके लिये जाना तथा चौंसठ कलाओंका अध्ययन एवं गुरुसेवा करना, इन्हें बारह दिनोंमें ही गजशिक्षा और अश्वशिक्षाकी प्राप्ति । इनका पुनः धनुर्वेदकी शिक्षाके लिये सान्दीपनिके यहाँ जाना और अवन्तीमें निवास करना; पचास दिन-रातमें ही दस अङ्गोंसे युक्त सुप्रतिष्ठित एवं रहस्यसहित धनुर्वेदका ज्ञान प्राप्त करना; सान्दीपनिपुत्रके मारनेवाले असुरका श्रीकृष्ण और बलरामद्वारा वध; मरे हुए गुरुपुत्रको यमलोकसे लाकर इनके द्वारा गुरुदक्षिणा तथा ऐश्वर्यका दान (सभा० ३८ । पृष्ठ ८०२) । चौंसठ कलाओंके नाम ये हैं—१–गीत (गाना), २–वाद्य (बाजा बजाना), ३–नृत्य (नाचना), ४–नाट्य (नाटक करना, अभिनय करना), ५–आलेख्य (चित्रकारी करना), ६–विशेषकच्छेद्य (तिलकके साँचे बनाना), ७–तण्डुल-कुसुमबलिविकार (चावलों और फूलोंका चौक पूरना), ८–पुष्पास्तरण (फूलोंकी सेज रचना तथा बिछाना), ९–दशन-वसनाङ्गराग (दाँतों, कपड़ों और अङ्गोंको रँगना या दाँतोंके लिये मञ्जन-मिस्सी आदि, वस्त्रोंके लिये रंग और रँगनेकी सामग्री तथा अङ्गोंमें लगानेके लिये चन्दन, केसर, मेंहदी, महावर आदि बनाना और उनके बनानेकी विधिका ज्ञान), १०–मणिभूमिका कर्म (ऋतुके अनुकूल घर सजाना), ११–शयनरचना (बिछावन वा पलंग बिछाना), १२–उदकवाद्य (जलतरंग बजाना), १३–उदकघात (पानीके छींटे आदि मारने वा पिचकारी चलाने और गुलाबपाससे काम लेनेकी विद्या), १४–चित्रयोग (अवस्था-परिवर्तन करना अर्थात् नपुंसक करना, जवानको बुड्ढा और बुड्ढेको जवान करना इत्यादि), १५–माल्यग्रन्थ-विकल्प (देवपूजनके लिये या पहननेके लिये माला गूँथना), १६–केश-शेखरा–पीड़-योजन (सिरपर फूलोंसे अनेक प्रकारकी रचना करना या सिरके बालोंमें फूल लगाकर गूँथना), १७–नेपथ्ययोग (देश-कालके अनुसार वस्त्र-आभूषण आदि पहनना), १८–कर्ण-पत्र-भंग (कानोंके लिये कर्णफूल आदि आभूषण बनाना), १९–गन्धयुक्ति (सुगन्धित पदार्थ, जैसे गुलाब, केवड़ा, इत्र, फुलेल आदि बनाना), २०–भूषण-भोजन, २१–इन्द्रजाल, २२–कौचुमारयोग (कुरूपको सुन्दर करना या मुँहमें और शरीरमें मलने आदिके लिये ऐसे उबटन आदि बनाना, जिनसे कुरूप भी सुन्दर हो जाय), २३–हस्तलाघव (हाथकी सफाई, फुर्ती या लाग), २४–चित्रशाका-पूप-भक्ष्यविकार-क्रिया (अनेक प्रकारकी तरकारियाँ; पूप और खानेके पकवान बनाना, सूपकर्म), २५–पान-करसरागासव-भोजन (पीनेके लिये अनेक प्रकारके शर्बत, अर्क और शराब आदि बनाना), २६–सूचीकर्म (सीना, पिरोना), २७–सूत्रकर्म (रफूगरी और कसीदा काढ़ना तथा तागेसे तरह-तरहके बेल-बूटे बनाना), २८–प्रहेलिका (पहेली या बुझौवल कहना और बूझना), २९–प्रतिमाला (अन्त्याक्षरी अर्थात् श्लोकका अन्तिम अक्षर लेकर उसी अक्षरसे आरम्भ होनेवाला दूसरा श्लोक कहना, बैतबाजी), ३०–दुर्वाचकयोग (कठिन पदों या शब्दोंका तात्पर्य निकालना), ३१–पुस्तक-वाचन (उपयुक्त रीतिसे पुस्तक पढ़ना), ३२–नाटिका-ख्यायिका-दर्शन (नाटक देखना या दिखलाना), ३३–काव्य-समस्या-पूर्ति, ३४–पट्टिकावेत्रबाणविकल्प (नेवाड़, बाध या बेंतसे चारपाई आदि बुनना), ३५–तर्क-कर्म (दलील करना या हेतुवाद), ३६–तक्षण (बढ़ई; संगतराश आदिका काम करना), ३७–वास्तुविद्या (घर बनाना; इंजीनियरी), ३८–रूप्यरत्न-परीक्षा (सोने, चाँदी आदि धातुओं और रत्नोंको परखना), ३९–धातुवाद (कच्ची धातुओंको साफ करना या मिली धातुओंको अलग-अलग करना), ४०–मणिराग-ज्ञान (रत्नोंके रंगोंको जानना), ४१–आकर-ज्ञान (खानोंकी विद्या), ४२–वृक्षायुर्वेदयोग (वृक्षोंका ज्ञान; चिकित्सा और उन्हें रोपने आदिकी विधि), ४३–मेष-कुक्कुट-लावक-युद्धविधि (भेंड़े, मुर्गे, बटेर, बुलबुल आदिको लड़ानेकी विधि), ४४–शुक-सारिका-प्रलापन (तोता, मैना पढ़ाना), ४५–उत्सान (उबटन लगाना और हाथ, पैर, सिर आदि दबाना), ४६–केश-मार्जनकौशल(बालोंका मलना और तेल लगाना), ४७–अक्षर-मुष्टिकाकथन (करपलई), ४८–म्लेच्छितकलाविकल्प (म्लेच्छ या विदेशी भाषाओंका जानना), ४९–देशभाषा-ज्ञान (प्राकृतिक बोलियोंको जानना), ५०–पुष्पशकटिका-निमित्तज्ञान (दैवीलक्षण, जैसे बादलकी गरज, बिजलीकी चमक इत्यादि देखकर आगामी घटनाके लिये भविष्यवाणी करना), ५१–यन्त्रमातृका (यन्त्रनिर्माण), ५२–धारण-मातृका (स्मरण बढ़ाना), ५३–सम्पाठ्य (दूसरेको कुछ पढ़ते हुए सुनकर उसे उसी प्रकार पढ़ देना), ५४–मानसी काव्य-क्रिया (दूसरेका अभिप्राय समझकर उसके अनुसार तुरंत कविता करना या मनमें काव्य करके शीघ्र कहते जाना), ५५–क्रियाविकल्प (क्रियाके प्रभावको पलटना), ५६–छलितकयोग (छल या ऐय्यारी करना), ५७–अभिधान (कोष-छन्दोज्ञान), ५८–वस्त्रगोपन

(वस्त्रोंकी रक्षा करना), ५९–द्यूतविशेष (जूआ खेलना), ६०—आकर्षण-क्रीड़ा (पासा आदि फेंकना), ६१—बाल-क्रीड़ाकर्म (लड़का खेलाना), ६२—वैनायिकीविद्या-ज्ञान (विनय और शिष्टाचार, इल्मे इख्लाक वो आदाब), ६३—वैजयिकी विद्याज्ञान, ६४—वैतालिकी विद्याज्ञान ॥

—हिंदी शब्दसागरसे

श्रीकृष्णको गँदा और परिघके युद्धमें तथा सम्पूर्ण अस्त्र-शस्त्रोंके ज्ञानमें उत्कृष्ट स्थानकी प्राप्ति और समस्त लोकोंमें उनकी ख्याति (सभा० ३८ । पृष्ठ ८०३)। इनका मथुरा छोड़कर द्वारकामें जाना तथा इनके द्वारा बड़े-बड़े असुरोंका वध (सभा० ३८ । पृष्ठ ८०४)। भौमासुरको मारनेके लिये इनसे इन्द्रकी प्रार्थना (सभा० ३८ । पृष्ठ ८०६) श्रीकृष्ण-द्वारा नरकासुरको मारकर माता अदितिके कुण्डल ला देनेकी प्रतिज्ञा । इनके द्वारा मुरनामक असुर, निशुम्भ, हयग्रीव, विरूपाक्ष, पञ्चजन तथा नरकासुरका वध (सभा० ३८। पृष्ठ ८०७)। भूमिद्वारा इनको कुण्डल-दान (सभा० ३८। पृष्ठ ८०८)। मणिपर्वतपर बने हुए नरकासुरके अन्तःपुरमें इनका प्रवेश तथा नरकासुर द्वारा अपहरण करके लायी हुई कन्याओं-की गान्धर्व विवाह करनेके लिये भगवान्‌से प्रार्थना (सभा० ३८ । पृष्ठ ८०८–८१०) । उनकी प्रार्थना स्वीकार करके श्रीकृष्णका उन्हें द्वारका भेजना (सभा० ३८ । पृष्ठ ८११)। इनका मणिपर्वतको गरुडपर लादकर बलरामजी और इन्द्रके साथ स्वर्गलोकमें जाना, मेरुपर्वतके मध्यशिखरपर पहुँचकर श्रीकृष्ण द्वारा देवस्थानोंका दर्शन; फिर देवलोकमें जाकर इन्द्र-भवनके निकट इनका गरुड़से उतरना, देवताओंद्वारा इनका स्वागत तथा इनका माता अदितिके चरणोंमें प्रणाम करके उन्हें उनके कुण्डल अर्पित कर देना (सभा० ३८ । पृष्ठ ८११)। देवमाता अदिति और इन्द्रपत्नी शचीद्वारा श्रीकृष्ण एवं सत्यभामाका सत्कार तथा वहाँसे लौटकर इन सबका द्वारकामें आगमन (सभा० ३८।पृष्ठ ८१२) । इनके द्वारा मणिपर्वत (प्राग्ज्योतिषपुर) से लायी गयी धनराशिका वृष्णिवंशियोंमें वितरण (सभा० ३८। पृष्ठ ८१८)। इन्द्रद्वारा श्रीकृष्णकी महिमाका वर्णन (सभा० ३८। पृष्ठ ८१९) । शोणितपुरमें इनका शिवजीसे युद्ध और उनकी पराजय (सभा० ३८। पृष्ठ ८२३) । इनके द्वारा बाणासुरकी भुजाओंका छेदन (सभा० ३८। पृष्ठ ८२३)। इनका रुक्मीको भयभीत करना, जारूथीमें आहुति, क्राथ और शिशुपालको पराजित करना, शैव्य, दन्तवक्र तथा शतधन्वाको भी हराना; इन्द्रद्युम्न, कालयवन, कशेरुमान्‌का वध करना। द्युमत्सेनके साथ इनका युद्ध, महाबली गोपति और तालकेतुका इनके द्वारा वध, पाण्डय, पौण्ड्र, मत्स्य, कलिङ्ग और अङ्ग आदि अनेक देशोंके राजाओंकी एक साथ ही पराजय (सभा० ३८ । पृष्ठ ८२४)।इनके द्वारा बभ्रुकी पत्नीका उद्धार; पीठ, कंस, पैठक तथा अतिलोमा नामक असुरोंका वध; जम्भ, ऐरावत, विरूप और शम्बर आदि असुरोंका वध;भोगवतीमें वासुकि नागको जीतकर इनके द्वारा रोहिणीकुमार गदका उद्धार (सभा० ३८।पृष्ठ ८२५)।इनकी गोदमें आते ही शिशुपालकी दो भुजाओं तथा तीसरी आँखका विनाश (सभा० ४३ । १८) । 'शिशुपालके सौ अपराध क्षमा कर दूँगा' ऐसा कहकर इनका श्रुतश्रवा (अपनी बुआ) को आश्वासन (सभा० ४३ । २४) । इनके द्वारा शिशुपालका वध (सभा० ४५ । २५) । यज्ञकी समाप्तिपर श्रीकृष्णद्वारा युधिष्ठिरका अभिनन्दन (सभा० ४५ । ३९–४३) । राजसूय यज्ञमें ऋषियोंसहित श्रीकृष्णने युधिष्ठिरका अभिषेक किया (सभा० ५३ । १५-१६) । द्रौपदीकी लाज रखनेके लिये इनका अव्यक्तरूपसे उसके चीरमें प्रवेश करके उसे बढ़ाना (सभा० ६८ । ४७) । इनके द्वारा रोती हुई द्रौपदीको आश्वासन-प्रदान (वन० १२ । १२८–१३२) । इनका जुएके दोष बताते हुए पाण्डवोंपर आयी हुई विपत्तिमें अपनी अनुपस्थिति-को कारण मानना (वन० १३ अध्याय) । इनके द्वारा शाल्वके साथ युद्ध करने तथा सौभ विमानसहित उसके नष्ट करनेका संक्षिप्त वर्णन (वन० १४ अ० से २२ अध्याय-तक) । इनका शाल्वके साथ भीषण युद्ध (वन० २० अध्याय)।इनका शाल्वकी मायासे मोहित होना (वन० २१ । २२)। श्रीकृष्णद्वारा सौभविमानसहित शाल्वका वध (वन० २२ । ३६-३७) । इनका पाण्डवोंसे सम्मानित हो सुभद्रा और अभिमन्युको साथ लेकर द्वारकाको प्रस्थान (वन० २२ । ४७-४८) । प्रभासक्षेत्रमें पाण्डवोंसे भेंट और सात्यकिके वचनोंका इनके द्वारा समर्थन (वन०१२०।२३–२६) । काम्यकवनमें पाण्डवोंके पास इनका आगमन और इनके द्वारा उन्हें आश्वासन (वन० १८३ । १६–३६)। मार्कण्डेयजीको कथा कहनेके लिये प्रेरित करना (वन० १८३ । ५०) । द्रौपदीके स्मरण करनेपर पाण्डवोंके आश्रममें प्रकट होना, बटलोईमेंसे सागका पत्ता खाकर त्रिलोकीको तृप्त करना (वन० २६३ । १८–२५)। उपप्लव्यनगरमें अभिमन्युके विवाहके अवसरपर जाकर युधिष्ठिरको बहुत-सा धन भेंट करना (विराट० ७२। २४-२५) । राजा विराटकी सभामें कौरवोंके अत्याचार और पाण्डवोंके धर्म-व्यवहारका वर्णन करते हुए किसी सुयोग्य दूतको कौरवोंके यहाँ भेजनेका प्रस्ताव (उद्योग० १ अध्याय)। द्रुपदको कार्यभार सौंपकर इनका द्वारका-को प्रस्थान (उद्योग० ५ । ११) । दुर्योधन और अर्जुन दोनोंकी सहायता करनेके लिये स्वीकृति देना (उद्योग० ७ । १६) । अर्जुनका सारथ्य कर्म स्वीकार करना (उद्योग० ७ । ३८) । संजयको प्रत्युत्तर देते हुए इनके द्वारा कर्मयोगका समर्थन (उद्योग० २९ । ६–१६) । इनके द्वारा वर्णधर्मका निरूपण (उद्योग० २९ । २२–२६) । कौरवोंके अन्यायका उद्घाटन करते

हुए इनका संजयद्वारा धृतराष्ट्रको चेतावनीका संदेश (उद्योग० २९ । ३१–५८)। संजयद्वारा कौरवोंके लिये संदेश देना (उद्योग० ५९ । १८–२९)। शान्ति-स्थापनार्थ कौरवसभामें जानेके लिये उद्यत होना (उद्योग० ७२ । ७९–८१)। कौरवोंके अत्याचारोंका वर्णन करके युधिष्ठिरको युद्धके लिये प्रोत्साहन देना (उद्योग० ७३ अध्याय)। भीमसेनको उत्तेजित करना (उद्योग० ७५ अध्याय)। भीमसेनको आश्वासन देना (उद्योग० ७७ अध्याय)। अर्जुनकी बातोंका उत्तर देना (उद्योग० ७९ अध्याय)। श्रीकृष्णके द्वारा द्रौपदीको आश्वासन (उद्योग० ८२ । ४४–४९)। सात्यकिसहित रथपर आरूढ़ हो हस्तिनापुरको प्रस्थान (उद्योग० ८३ । २९)। मार्गमें इनका दिव्य महर्षियोंके दर्शन करना (उद्योग० ८३ । ६०)। हस्तिनापुर जाते समय मार्गमें वृकस्थलमें विश्राम (उद्योग० ८४ । २०-२१)। श्रीकृष्णका हस्तिना-पुरमें स्वागत (उद्योग० ८९ । ५)। इनका राज-महलमें प्रवेश (उद्योग० ८९ । ११)। विदुरके गृहमें पदार्पण (उद्योग० ८९ । २२)। कुन्तीसे मिलकर उन्हें आश्वासन देना (उद्योग० ९० । ९१–९९)। दुर्योधन-से उसके निमन्त्रणको अस्वीकार करनेका कारण बताना (उद्योग० ९१ । २४–३२)। विदुरके घर इनका भोजन और विश्राम (उद्योग० ९१ । ४१)। विदुरजीसे कौरवसभामें जानेका औचित्य बतलाना (उद्योग० ९३ अध्याय)। श्रीकृष्णका कौरवसभामें प्रवेश (उद्योग० ९४ । ३३)। कौरवसभामें इनका प्रभावशाली भाषण (उद्योग० ९५ अध्याय)। दुर्योधन-को पाण्डवोंसे संधि करनेके लिये समझाना (उद्योग० १२४ । ८–६२)। दुर्योधनको फटकारना (उद्योग० १२८ । २–३१)। कंस और दैत्यदानवोंका दृष्टान्त देते हुए दुर्योधनको कैद करनेकी सलाह देना (उद्योग० १२८ । ५०)। दुर्योधनद्वारा कैद किये जानेकी बात सुनकर इनकी सिंहगर्जना (उद्योग० १३० । २४–२९)। कौरवसभामें इनके विश्वरूपका दर्शन (उद्योग० १३१ । ५–१३)। इनके द्वारा धृतराष्ट्रको अदृश्य नेत्र प्रदान करना (उद्योग० १३१ । १९)। कौरवसभासे प्रस्थान (उद्योग० १३१ । ३७-३८)। कुन्तीके पास जाकर पाण्डवोंसे कहनेके लिये संदेश पूछना (उद्योग० १३२ । ४)। कर्णके साथ मन्त्रणा तथा उपप्लव्यनगरको प्रस्थान (उद्योग० १३७ । २९-३०)। कर्णको पाण्डव-पक्षमें आनेके लिये समझाना (उद्योग० १४० । ६–२९)। कर्णसे पाण्डवोंकी निश्चित विजयका प्रतिपादन करते हुए युद्धकी तिथि निर्धारित करना (उद्योग० १४२ । १७–२०)। युधिष्ठिरसे भीष्मके वचनोंका वर्णन (उद्योग० १४७ । १६–४३)। युधिष्ठिरसे द्रोणाचार्यके वचनोंका वर्णन (उद्योग० १४८ । २–१६)। युधिष्ठिरसे विदुरके वचनोंका वर्णन (उद्योग० १४८ । १८–२६)। युधिष्ठिरसे गान्धारीके वचनोंका वर्णन (उद्योग० १४८ । २९–३६)। युधिष्ठिरसे धृत-राष्ट्रके वचनोंका वर्णन (उद्योग० १४९ अध्याय)। कौरवसभामें अपने किये हुए प्रयत्नोंका वर्णन करके दण्डपर ही जोर देना (उद्योग० १५० । १८)। धृष्ट-द्युम्नको प्रधान सेनापति बनानेका समर्थन (उद्योग० १५१ । ४९); युधिष्ठिरको युद्ध करना ही कर्तव्य बतलाना (उद्योग० १५४ । १५)। दुर्योधनके संदेश-का उत्तर देना (उद्योग० १६२ । ६ उद्योग० १६२ । ५७–६३)। कौरवसेनाको मारनेके लिये अर्जुनको आदेश (भीष्म० २२ । १६)। अर्जुनको दुर्गाकी स्तुति करनेके लिये कहना (भीष्म० २३ । २)। अर्जुनको गीताका उपदेश देना (भीष्म० २६ । ११ से ४२ अध्यायतक)। कुरुक्षेत्रमें इनके द्वारा पाञ्च-जन्य नामक शङ्खका बजाया जाना (भीष्म० २५ । १५)। सांख्ययोगका वर्णन (भीष्म० २६ । ११–३०)। अज्ञानी और ज्ञानवान्‌के लक्षण तथा रागद्वेषसे रहित होकर कर्म करनेके लिये प्रेरणा (भीष्म० २७ । २५–३५)। फलसहित पृथक्-पृथक् यज्ञोंका कथन और ज्ञानकी महिमा (भीष्म० २८ । २४–४२)। सांख्ययोगी और निष्काम कर्मयोगीके लक्षण तथा ज्ञानयोगका वर्णन (भीष्म० २९ । ७–२६)। योगभ्रष्ट पुरुषकी गति और ध्यानयोगीकी महिमा (भीष्म० ३० । ३७–४७)। आसुरी स्वभाववालोंकी निन्दा और भगवद्भक्तोंकी प्रशंसा तथा अन्य देवताओंकी उपा-सनाका वर्णन (भीष्म० ३१ । १३–२३)। ब्रह्म, अध्यात्म और कर्मादिका वर्णन (भीष्म० ३२ । ३–७)। सकाम और निष्काम उपासनाका फल और निष्काम भगवद्भक्तिकी महिमा (भीष्म० ३३ । २०–३४)। श्रीकृष्ण-द्वारा अपनी विभूतियों और योगशक्तिका कथन (भीष्म० ३४ । १९–४२)। इनके द्वारा अपने विश्वरूपका वर्णन और फलसहित अनन्यभक्तिका कथन (भीष्म० ३५ । ५–१८; ५५)। साकार-निराकारके उपासकों और भगवत्प्राप्तिके उपाय तथा भगवत्प्राप्त पुरुषोंके लक्षणोंका वर्णन (भीष्म० ३६ । १–२०)। क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ तथा ज्ञानसहित प्रकृति-पुरुषका वर्णन (भीष्म० ३७ । १–३४)। सत्, रज और तम तथा भगवत्प्राप्तिके उपाय और गुणातीत पुरुषके लक्षण (भीष्म० ३८ । ५–२७)। जीवात्माके विषय, प्रभावसहित परमेश्वरके स्वरूप तथा क्षर-अक्षर तथा पुरुषोत्तमका वर्णन (भीष्म० ३९ ।

७-२०)। दैवी और आसुरी सम्पदा तथा आसुरी सम्पदावालोंके लक्षण और उनके अधोगतिका वर्णन (भीष्म० ४० । १-२०) । आहार, यज्ञ, तप और दानके पृथक्-पृथक् भेद (भीष्म० ४१ । ७-२२)। ज्ञान, कर्म, कर्ता, बुद्धि, धृति और सुखके पृथक्-पृथक् भेद (भीष्म० ४२ । १९-४०)। कर्णको पाण्डवोंके पक्षमें आनेके लिये समझाना (भीष्म० ४३।९-९१)। भीष्मके पराक्रमसे चिन्तित हुए युधिष्ठिरको आश्वासन देना (भीष्म० ५० । २६-३०) । चक्र लेकर भीष्मको मारनेके लिये उद्यत होना (भीष्म० ५९ । ८८-८९)। भीष्मद्वारा इनकी महिमाका वर्णन (भीष्म० ६५। २५ से ६८ अ० तक) । भीष्मको मारनेके लिये अर्जुनको चेतावनी (भीष्म० १०६ । ३३-३७)। चाबुक लेकर भीष्मके वधके लिये दौड़ना (भीष्म० १०६ । ५५-५७) । भीष्मके पराक्रमसे दुःखित युधिष्ठिरको सान्त्वना देना (भीष्म० १०७ । २६-४०)। भीष्मके पास चलनेके लिये युधिष्ठिरके प्रस्तावकी स्वीकृति (भीष्म० १०७ । ५२-५५) । भीष्म-वधके लिये उद्यत न होनेवाले अर्जुनको समझाना (भीष्म० १०७ । ९६-१०२) । भीष्मका वध करनेके लिये अर्जुनको प्रेरित करना (भीष्म० ११८ । ३५-३६) । भीष्मके मारे जानेपर युधिष्ठिरसे वार्तालाप (भीष्म० १२० । ६६-६७)। धृतराष्ट्रद्वारा इनकी लीलाओंसहित महिमाका वर्णन (द्रोण० ११ । १-४०) । भगदत्तद्वारा अर्जुनपर चलाये हुए वैष्णवास्त्रको अपनी छातीपर लेना (द्रोण० २९ । १८)। अर्जुनके पूछनेपर वैष्णवास्त्रका रहस्य बताकर भगदत्तको मारनेका आदेश देना (द्रोण० २९ । २५-३४; ४४-४५) । अभिमन्यु-वधसे दुखी होकर विलाप करते हुए अर्जुनको शान्त करना (द्रोण० ७२ । ६६-७४)। अर्जुनसे जयद्रथकी रक्षाका समाचार बताना (द्रोण० ७५ अ० में)। पुत्रशोकसे दुखी सुभद्राको आश्वासन देना (द्रोण० ७७ । १२-२६)। विलाप करती हुई द्रौपदी, सुभद्रा और उत्तराको आश्वासन देना (द्रोण० ७८ । ४०-४२)। अर्जुनकी विजयके लिये समयपर रथ तैयार करके लानेके लिये दारुकको आदेश देना (द्रोण० ७९ । २१-४२)। सोते हुए अर्जुनको स्वप्नमें दर्शन देना और उनसे वार्तालाप करके शिवजीके पास ले जाना (द्रोण० ८० । २-४९)। इनके द्वारा भगवान् शिवकी स्तुति (द्रोण० ८० । ५५-६४)। जयद्रथ-वधके लिये युधिष्ठिरको आश्वासन (द्रोण० ८३ । २१-२८)। इनके द्वारा शङ्ख बजाया जाना (द्रोण० ८८ । २१) । द्रोणाचार्यको छोड़कर आगे बढ़नेके लिये अर्जुनको प्रेरणा (द्रोण० ९१ । ३०-३१) । घोड़ोंको पिलानेके लिये जल प्रकट करनेके हेतु अर्जुनको प्रेरित करना (द्रोण० ९९ । ५८)। इनके द्वारा संग्रामभूमिमें अश्वपरिचर्या (द्रोण० १०० । १०-१६) । अर्जुनको दुर्योधनका वध करनेके लिये प्रोत्साहन (द्रोण० १०२ । १-१८)। दुर्योधनपर बाणोंको विफल होते देख अर्जुनको उपालम्भ (द्रोण० १०३ । ६-१०) । अर्जुनको सात्यकिके आगमनकी सूचना देना (द्रोण० १४१ । १३-२५)। भूरिश्रवाके चंगुलसे सात्यकिको छुड़ानेके लिये अर्जुनको प्रेरित करना (द्रोण० १४२ । ६४-६५)। भूरिश्रवाको मुक्त होनेका वरदान (द्रोण० १४३ । ४८)। मायाद्वारा अन्धकारकी सृष्टि करके जयद्रथ-वधके लिये अर्जुनको प्रेरित करना (द्रोण० १४६ । ६२-७२)। जयद्रथके सिरको उसके पिताकी गोदमें डालनेके लिये कहना और उसका रहस्य बताना (द्रोण० १४६ । १०४-११९) । जयद्रथ-वधके पश्चात् मायारूपी अन्धकारको समेट लेना (द्रोण० १४६ । १३२)। कर्णके साथ अर्जुनको युद्ध करनेसे मना करना (द्रोण० १४७ । ३३-३६) । जयद्रथ-वधके बाद अर्जुनको बधाई देना (द्रोण० १४८ । २५-३२)। अर्जुनको संग्रामका दृश्य दिखाते हुए युधिष्ठिरके पास ले जाना (द्रोण० १४८ । ३६-५९) । जयद्रथ-वधके बाद युधिष्ठिरको विजयका समाचार बताना (द्रोण० १४९ । २)। युधिष्ठिरके क्रोधको ही शत्रु-वधमें कारण बताना (द्रोण० १४९ । ४५-५१)। युधिष्ठिरको द्रोणाचार्यके साथ युद्ध करनेसे रोकना (द्रोण० १६२ । ४७-५१)। आधी रातके समय कर्णके साथ अर्जुनके युद्धका अनौचित्य बताकर घटोत्कचको भेजनेके लिये अनुमति देना (१७३ । ३५-४१)। घटोत्कचको कर्णके साथ युद्ध करनेके लिये आदेश देना (द्रोण० १७३ । ४५-५८)। अर्जुनसे भिन्न-भिन्न महारथियोंका सामना करनेके लिये व्यवस्था बताना (द्रोण० १७७ । ३३-३६)। अलायुधका वध करनेके लिये घटोत्कचको प्रेरित करना (द्रोण० १७८ । २-३)। अर्जुनद्वारा घटोत्कचके वधसे प्रसन्नताका कारण पूछे जानेपर कर्णकी प्रशंसा करते हुए अपनी प्रसन्नताका कारण बताना (द्रोण० १८० । ११-३३)। अर्जुनसे जरासंध आदि धर्मद्रोहियोंके वधका कारण बताना (द्रोण० १८१ । २-३३)। सात्यकिसे कर्णद्वारा अर्जुनपर शक्ति न छोड़े जानेका कारण बताना (द्रोण० १८२ । ३५-४६)। घटोत्कच-वधसे दुखी युधिष्ठिरको समझाना (द्रोण० १८३ । २४-२६)। द्रोणाचार्यके वधकी युक्ति बताना (द्रोण० १९० । १०-१२) । युधिष्ठिरको छलपूर्वक अश्वत्थामाके मारे जानेकी झूठी बात कहनेको विवश

करना (द्रोण० १९० । ४६-४७) । नारायणास्त्रको शान्त करनेका उपाय बताना (द्रोण० १९९ । ३८-४२) । भीमसेनको रथसे खींचकर नारायणास्त्रको शान्त करना (द्रोण० २०० । १५-१७) । अर्जुनको युद्धस्थलका भीषण दृश्य दिखाना (कर्ण० १९ । २८-५३) । अश्वत्थामाके साथ युद्धमें शिथिल देखकर अर्जुनको चेतावनी देना (कर्ण० ५६ । १३५-१३८) । अर्जुनको युद्ध-भूमिका दृश्य दिखाते हुए युधिष्ठिरके पास ले जाना (कर्ण० ५८ । १०-४१) । अर्जुनसे धृष्टद्युम्नको अश्वत्थामाके चंगुलसे छुड़ानेको कहना (कर्ण० ५९ । ४७-४९) । अर्जुनसे दुर्योधन और कर्णके पराक्रमका वर्णन करके कर्णको मारनेके लिये उन्हें उत्साहित करना और भीमसेनके पराक्रमका वर्णन करना (कर्ण० ६० अध्याय) । घायल युधिष्ठिरको देखनेके बहाने अर्जुनको कर्णके पाससे हटा लेना (कर्ण० ६४ । ६६) । अर्जुनके साथ युधिष्ठिरके पास जाकर उनके चरणोंमें प्रणाम करना (कर्ण० ६५ । १७) । युधिष्ठिरके वधसे अर्जुनको रोकनेके प्रसंगमें बलाक व्याध और कौशिक ब्राह्मणकी कथा कहकर समझाना और युधिष्ठिरको 'तू' शब्द कहनेमात्रसे अर्जुनकी प्रतिज्ञा-पूर्ति बताना (कर्ण० ६९ अध्याय) । अर्जुनको आत्महत्यासे बचाना (कर्ण० ७० । २३-२४) । युधिष्ठिरको प्रसन्न करना (कर्ण० ७० । ४९-५५) । अर्जुनको उपदेश (कर्ण० ७१ । ३-१२) । कर्ण-वधके लिये अर्जुनको प्रोत्साहन (कर्ण० ७२ । १७ से ७३ अध्याय-तक) । कर्ण-वधके लिये अर्जुनको प्रोत्साहन (कर्ण० ८६ । २-१६) । कर्णवधके लिये अर्जुनको प्रोत्साहन (कर्ण० ८९ । ४३-४८) । कर्णके सर्पमुख बाणसे अर्जुनकी रक्षा करना (कर्ण० ९० । २९-३१) । धर्मकी दुहाई देनेपर कर्णको चेतावनी देना (कर्ण० ९१ । १-१४) । कर्ण-वधका शुभ समाचार सुनानेके लिये अर्जुनसे युधिष्ठिरके पास चलनेको कहना और सैनिकोंको युद्धकी व्यवस्थाका आदेश देना (कर्ण० ९६ । २-११) । युधिष्ठिरके पास पहुँचकर कर्ण-वधका समाचार सुनाना (कर्ण० ९६ । १८-२३) । शल्यका वध करनेके लिये युधिष्ठिरको उत्साहित करना (शल्य० ७ । २५-४१) । अर्जुनसे दुर्योधनको मारनेके लिये कहना (शल्य० २७ । ३-१२) । युधिष्ठिरको क्रियात्मक प्रयोगद्वारा दुर्योधनको मारनेके लिये सलाह देना (शल्य० ३१ । ६-१५) । युधिष्ठिरको फटकारना (शल्य० ३३ । २-१६) । अर्जुनसे भीमसेन और दुर्योधनके बलाबलका वर्णन करके मायाद्वारा दुर्योधनको मारनेकी सलाह देना (शल्य० ५८ । ३-२०) । दुर्योधनके वधसे कुपित बलरामजीको समझाना (शल्य० ६० । १४-२५के बादतक) । भीमसेनद्वारा किये जाते हुए अधर्मपूर्ण बर्तावको आप चुपचाप देखते क्यों हैं ? उन्हें रोकते क्यों नहीं ? यह युधिष्ठिरसे पूछना (शल्य० ६० । ३३-३४) । इनके द्वारा दुर्योधनपर आक्षेप (शल्य० ६१ । १८-२३) । दुर्योधनद्वारा किये गये आक्षेपोंका इनकी ओरसे उत्तर (शल्य० ६१ । ३९-५०) । इनके द्वारा पाण्डवोंका समाधान (शल्य० ६१ । ६१-६९) । इनका अर्जुनको रथसे उतरनेके लिये आदेश देना (शल्य० ६२ । ९-१०) । अर्जुनद्वारा रथके दग्ध होनेका कारण पूछनेपर इनका उत्तर (शल्य० ६२ । १८-१९) । इनके द्वारा युधिष्ठिरका अभिनन्दन (शल्य० ६२ । २१-२७) । युधिष्ठिरके भेजनेसे हस्तिनापुरको जाना (शल्य० ६२ । ४५ शल्य० ६३ । ३४) । धृतराष्ट्रको आश्वासन देना (शल्य० ६३ । ४०-५८) । गान्धारीको प्रबोधन (शल्य० ६३ । ५९-६५) । हस्तिना-पुरसे शिविरको लौटना (शल्य० ६३ । ७८) । अश्वत्थामाकी चपलता और क्रूरताके प्रसङ्गमें सुदर्शनचक्रके माँगनेकी बात सुनाते हुए युधिष्ठिरको उससे भीमसेनकी रक्षा करनेके लिये प्रयत्न करनेका आदेश देना (सौप्तिक० १२ अध्याय) । अर्जुन और युधिष्ठिरको साथ लेकर भीमसेनकी रक्षाके लिये जाना (सौप्तिक० १३ । १-९) । अर्जुनको ब्रह्मास्त्र प्रकट करनेका आदेश देना (सौप्तिक० १४ । २-३) । इनके द्वारा अश्वत्थामाको शाप (सौप्तिक० १६ । ८-१६) । महादेवजीकी महिमाका प्रतिपादन (सौप्तिक० १७ । ६-२६) । इनका धृतराष्ट्रको समझाना (स्त्री० १२ । २३-३०) । धृतराष्ट्रको फटकारकर उनका क्रोध शान्त करना (स्त्री० १३ । २-११) । गान्धारीद्वारा अपनेको दिये गये शापका समर्थन (स्त्री० २५ । ४८-४९) । गान्धारीको सान्त्वना देना (स्त्री० २६ । १-५) । नारद-संजय-संवादरूपमें षोडशराजकीयोपाख्यान सुनाकर युधिष्ठिर-को समझाना (शान्ति० २९ अध्याय) । युधिष्ठिरके पूछनेपर नारद-पर्वत-उपाख्यान सुनाना (शान्ति० ३० अध्याय) । व्यासजीकी बात माननेके लिये युधिष्ठिरको समझाना (शान्ति० ३७ । २१-२५) । युधिष्ठिरसे चार्वाकको प्राप्त हुए वर आदिका वर्णन करना (शान्ति० ३९ अध्याय) । भीष्मकी प्रशंसा और युधिष्ठिरको उनके पास चलनेका आदेश (शान्ति० ४६ । ११-२३) । युधिष्ठिरको परशुरामोपाख्यान सुनाना (शान्ति० ४९ अध्याय) । भीष्मजीके गुण-प्रभावका सविस्तर वर्णन करते हुए उनसे युधिष्ठिरका शोक दूर करनेके लिये कहना (शान्ति० ५० । १३-३८) । भीष्मकी प्रशंसा करते हुए युधिष्ठिरको धर्मोपदेश करनेका आदेश

(शान्ति० ५१ । १०–१८) । धर्मोपदेशके लिये भीष्मको वरदान (शान्ति० ५२ । १४–२१) । इनकी प्रातश्चर्या (शान्ति० ५३ । १–९) । भीष्मद्वारा ही धर्मोपदेश होनेका कारण बताते हुए उन्हें उपदेश करनेको कहना (शान्ति० ५४ । २५–३९) । भीष्मसे युधिष्ठिरके लज्जित और भयभीत होनेका कारण बताना (शान्ति० ५५ । ११–१३) । जाति-भाइयोंमें फूट न पड़नेके विषयमें नारदजीसे पूछना (शान्ति० ८१ अध्याय) । इन्हींसे सम्पूर्ण भूतोंकी उत्पत्तिका वर्णन करना (शान्ति० २०७ अध्याय) । उग्रसेनसे नारदजीके गुणोंका वर्णन करना (शान्ति० २३० । ४–२४) । अर्जुनको अपने नामोंकी व्युत्पत्ति बताना (शान्ति० ३४१ । ८–५१) । अर्जुनसे सृष्टिकी प्रारम्भिक अवस्थाका वर्णन करना (शान्ति० ३४२ । ३–२१) । अर्जुनसे अपने नामोंकी व्याख्या करना (शान्ति० ३४२ ।६७–११६) । युधिष्ठिरसे महादेवजीके माहात्म्यकी कथाके प्रसंगमें उपमन्युकी कथा सुनाना और अपनी तपस्या तथा दर्शन पानेका वृत्तान्त बताना (अनु० १४ अध्याय) । भगवती उमासे आठ वरदान माँगना (अनु० १५ । ६) । उपमन्युके साथ शिवजीके विषयमें वार्तालाप (अनु० १६ अध्याय) । इनके द्वारा भगवान् शिवकी महिमाका वर्णन (अनु० १८ । ६१–८३) । नारदजीसे पूजनीय पुरुषोंके लक्षण पूछना (अनु० ३१ । २–४) । पृथ्वीसे गृहस्थोंके पापनाशक अनुष्ठानके विषयमें प्रश्न करना (अनु० ३४ । २१) । गिरगिटयोनिसे नृगका उद्धार करना (अनु० ७० । ७) । नृगसे उनकी दुर्गतिका कारण पूछना (अनु० ७० । ८-९) । ब्राह्मणका धन न लेनेके विषयमें घोषणा करना (अनु० ७० । ३१) । पृथ्वी देवीसे गृहस्थधर्मके विषयमें पूछना (अनु० ९७ । ४) । पर्वतको जलाकर पुनः उसे प्रकृतिस्थ करना (अनु० १३९ । १६–२१)। ऋषियोंके पूछनेपर इसका रहस्य बताना (अनु० १३९ । ३०–४४) । भीष्मजीद्वारा इनकी महिमाका वर्णन (अनु० १५८ अध्याय) । युधिष्ठिरको ब्राह्मणकी महिमा सुनानेके प्रसंगमें प्रद्युम्नके पूछनेपर दुर्वासाका चरित्र कहना (अनु० १५९ अध्याय) । युधिष्ठिरके प्रति शिवजीकी महिमाका वर्णन करना (अनु० १६० अध्याय से १६१ अध्यायतक) । भीष्मको देहत्यागके लिये अनुमति प्रदान करना (अनु० १६७ । ४६-४७) । भीष्मके लिये शोक करती हुई गङ्गाको आश्वासन देना (अनु० १६८ । ३०–३५) । शोकाकुल युधिष्ठिरको समझाना (आश्व० २ । २–८) । युधिष्ठिरको विविध दृष्टान्तोंद्वारा समझाना (आश्व० ११ अ० से १३ अध्यायतक) । अर्जुनसे अपने द्वारका जानेका प्रस्ताव करना (आश्व० १५ । १२–३४) । अर्जुनके पूछनेपर पुनः गीताका ज्ञान सिद्ध महर्षि और काश्यपके संवादरूपसे सुनाना (आश्व० १६ । ९ से १८ अध्याय तक) । पुनः ब्राह्मणगीताके द्वारा ज्ञानोपदेश करना (आश्व० २० अध्यायसे ३४ अध्यायतक) । अर्जुनके प्रति गुरु-शिष्यके संवादरूपमें ब्रह्मा और महर्षियोंके प्रश्नोत्तररूप मोक्षधर्मका वर्णन (आश्व० ३५ अध्यायसे ५१ अध्यायतक) । युधिष्ठिरकी आज्ञा पाकर सुभद्रा और सात्यकिके साथ द्वारकाको प्रस्थान (आश्व० ५२ । ५४–५८) । उत्तङ्क मुनिके पूछनेपर कौरवों-पाण्डवोंका समाचार सुनाना (आश्व० ५३ । १५–१८) । उत्तङ्क मुनिसे अध्यात्मतत्त्वका वर्णन करना (आश्व० ५४ । २–१९) । उत्तङ्क मुनिको विश्वरूपका दर्शन कराना (आश्व० ५५ । ४–६) । उत्तङ्क मुनिको दर्शन देकर चाण्डालरूपधारी इन्द्रका रहस्य बताते हुए मरुदेशमें उत्तङ्क नामक मेघोंद्वारा वर्षा होनेका वर देना (आश्व० ५५ । २६–३७) । रैवतक पर्वतपर होनेवाले महोत्सवमें सम्मिलित होना (आश्व० ५९ । ३-४) । उस महोत्सवसे अपने महलमें पधारना (आश्व० ५९ । १६) । वसुदेवजीके पूछनेपर महाभारतयुद्धका वृत्तान्त सुनाना (आश्व० ६० । ६–३६) । वसुदेवजीके पूछनेपर अभिमन्यु-वधका वृत्तान्त सुनाना (आश्व० ६१ । १५–४२) । इनके द्वारा अभिमन्युका श्राद्ध-कर्म (आश्व० ६२ । २–५) । इनका हस्तिनापुरमें आगमन और उत्तराके मृतबालकको जिलानेके लिये कुन्तीकी इनसे प्रार्थना (आश्व० ६६ अध्याय) । उत्तराके मृतबालकको इनके द्वारा जीवनदान (आश्व० ६९ । १६–२४) । उत्तराके उक्त शिशुका नामकरण (आश्व० ७० । ११-१२) । श्रीकृष्णका युधिष्ठिरको अश्वमेध यज्ञके लिये सम्मति देना (आश्व० ७१ । २३–२६) । श्रीकृष्णका बलराम आदिके साथ आगमन और युधिष्ठिरको अर्जुनका संदेश सुनाना तथा उनके अधिक कष्ट उठानेका कारण बताना (आश्व० ८६। १३–२१) । ब्राह्मणोंको दक्षिणा देनेके सम्बन्धमें युधिष्ठिरको व्यासजीकी आज्ञा माननेके लिये कहना (आश्व० ८९ । १८-१९) । इनका युधिष्ठिरसे विदा लेकर बन्धुओंसहित द्वारकाको लौटना (आश्व० ८९ । ३७-३८) । भगवान् श्रीकृष्णद्वारा युधिष्ठिरको वैष्णवधर्म-सम्बन्धी विविध विषयोंका उपदेश (आश्व० ९२ । दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ६३०८ से ६३५२ तक) । शापकी बात सुनकर भगवान् श्रीकृष्णका वृष्णिवंशियोंकी 'ऐसी ही भवितव्यता है' ऐसा कहकर नगरमें प्रवेश करना (मौसल० १ । २३-२४) । मदिरानिर्माण-निषेधकी आज्ञा जारी करना (मौसल० १ । २९–३१) ।

द्वारकामें भयंकर उत्पात देखकर भगवान् श्रीकृष्णका यदुवंशियोंको तीर्थयात्राके लिये आज्ञा देना (मौसल० २ अध्याय)। सात्यकि और प्रद्युम्नको मारा हुआ देख श्रीकृष्णका कुपित हो एक मुट्ठी एरका उठाना और भोज तथा अन्धक कुलके प्रमुख योधाओंका संहार करना (मौसल० ३। ३५–३७)। साम्ब और गदके मारे जानेपर कुपित हुए श्रीकृष्णद्वारा समस्त यादवोंका संहार (मौसल० ३। ४४–४७)। श्रीकृष्णका बलरामजीको एक वृक्षके नीचे ध्यान लगाये बैठे हुए देखना और दारुकको अर्जुनके पास भेजकर संदेश कहलाना (मौसल० ४। १–३)। इनका बलरामजीसे अपनी प्रतीक्षाके लिये कहकर स्त्रियोंको कुटुम्बी जनोंके संरक्षणमें सौंपनेके लिये द्वारका जाना और पितासे अर्जुनके आनेतक स्त्रियोंका संरक्षण करनेकी बात कहकर स्वयं तपके लिये बलरामजीके पास जानेका विचार प्रकट करना (मौसल० ४। ७–१०)। उनका रोती हुई स्त्रियोंको आश्वासन दे अर्जुनके आनेकी बात बताकर चल देना और वनके एकान्त प्रदेशमें बलरामजीके पास जाकर उनके मुखसे एक विशाल सर्पको निकलकर समुद्रकी ओर जाते देखना (मौसल० ४। १२–१३)। बलरामजीके परमधाम-गमनके पश्चात् उनका वनमें विचरना ! बीती बातों और घटनाओंको याद करके उनपर विचार करना। गान्धारी और दुर्वासाके कथनको भी ध्यानमें लाना और परमधामको जानेके लिये किसी निमित्तकी प्रतीक्षा करते हुए योगयुक्त होकर पृथ्वीपर लेटना, जरानामक व्याधके बाणसे तलुओंमें घाव हो जानेपर अपने तेजसे प्रकाशित होते हुए ऊर्ध्वलोकको जाना, वहाँ उनका स्वागत होना और इन्द्र आदि देवताओंसे मिलना (मौसल० ४। १८–२८)। अर्जुनद्वारा इनके शरीरका दाह-संस्कार होना (मौसल० ७। ३१)। दिव्यधाममें इनकी नारायणरूपसे स्थिति (स्वर्गा० ५। २४–२६)। इनकी पटरानियोंमेंसे रुक्मिणी, गान्धारी, शैब्या, हैमवती तथा जाम्बवती—इन पाँचोंने पतिलोककी कामनासे अग्निमें प्रवेश किया। सत्यभामा तथा अन्य दो देवियोंने तपस्याका निश्चय करके वनमें प्रवेश किया (मौसल० ७। ७३–७४)। शेष सोलह हजार रानियाँ दस्युओंके हाथोंसे छूटकर सरस्वतीके जलमें कूद पड़ीं और स्वर्गमें भगवान्से जा मिलीं (स्वर्गा० ५। २५)। (इनकी सभी रानियोंसे दस-दस पुत्र उत्पन्न हुए थे। इनमें प्रद्युम्न, साम्ब, चारुदेष्ण आदि प्रधान हैं।)

महाभारतमें आये हुए कृष्णके नाम—अच्युत, अधिदेव, अधोक्षज, आदिदेव, अज, अमध्य, अनादि, अनादिमध्यपर्यन्त, अनादिनिधन, अनाद्य, अनन्त, अन्धकवृष्णिनाथ, असित, आत्मा, अव्यक्त, अव्यय, भोजराजन्यवर्धन, भूतेश्वर, भूतपति भूतात्मा, भूतेश, चक्रधर, चक्रधारी, चक्रगदाभृत्, चक्रगदाधर, चक्रगदापाणि, चक्रपाणि, चक्रायुध, शैब्यसुग्रीववाहन, शम्भु, शङ्खचक्रगदाधर, शङ्खचक्रगदाहस्त, शङ्खचक्रगदापाणि, शङ्खचक्रासिपाणि, शार्ङ्गचक्रगदाधर, शार्ङ्गचक्रासिपाणि, शार्ङ्गधनुर्धर, शार्ङ्गधन्वा, शार्ङ्गगदापाणि, शार्ङ्गगदासिपाणि, शार्ङ्गी, शौरि, शूलभृत्, शूली, दाशार्ह, दशार्हभर्ता, दशार्हाधिपति, दाशार्हकुलवर्धन, दाशार्हनन्दन, दाशार्हनाथ, दाशार्हसिंह, दाशार्हवीर, दामोदर, देवदेव, देवदेवेश, देवदेवेश्वर, देवकीमातः, देवकीनन्दन, देवकीपुत्र, देवकीसुत, देवकीतनय, गदाग्रज, गदपूर्वज, गरुडध्वज, गोपाल, गोपेन्द्र, गोपीजनप्रिय, गोविन्द, हलधरानुज, हरि, हृषीकेश, जनार्दन, कंसकेशिनिषूदन, कंसनिषूदन, कौस्तुभभूषण, केशव, केशिहन्, केशिहन्ता, केशिनिषूदन, केशिसूदन, महाबाहु, पीतवासा, रमानाथ, रामानुज, सङ्कर्षणानुज, सर्वदाशार्हहर्ता, सर्वनागरिपुध्वज, सर्वयादवनन्दन, सत्य, सुपर्णकेतु, तार्क्ष्यध्वज, तार्क्ष्यलक्षण, त्रैलोक्यनाथ, त्रियुग, वासुदेव, वसुदेवपुत्र, वसुदेवसुत, वसुदेवात्मज, व्रजनाथ, वृष्णिशार्दूल, वृष्णिश्रेष्ठ, वृष्णिकुलोद्वह, वृष्णिनन्दन, वृष्णिपति, वृष्णिप्रवर, वृष्णिप्रवीर, वृष्णिपुङ्गव, वृष्णिसत्तम, वृष्णिसिंह, वृष्णिजीव, वृष्ण्यन्धकपति, वृष्ण्यन्धकोत्तम, यादव, यादवशार्दूल, यादवश्रेष्ठ, यादवाग्र्य, यादवनन्दन, यादवेश्वर, यदुशार्दूल, यदुश्रेष्ठ, यदूद्वह, यदुकुलश्रेष्ठ, यदुकुलनन्दन, यदुकुलोद्वह, यदुनन्दन, यदुप्रवीर, यदुपुङ्गव, यदुसुखावह, यदूत्तम, यदुवंशविवर्धन, यदुवर, यदुवीर, यदुवीरमुख्य, योगेश्वर, योगीश, योगीश्वर, योगी इत्यादि।

कृष्णकर्णी—स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६। २४)।

कृष्णकेश—स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५। ६१)।

कृष्णद्वैपायन—महर्षि पराशरके पुत्र—सत्यवतीनन्दन व्यास (आदि० १। १०, ५५)। हस्तिनापुर जाते समय मार्गमें श्रीकृष्णसे भेंट (उद्योग० ८३। ६४ के बाद दाक्षिणात्य पाठ) (विशेष—देखिये व्यास)।

कृष्णपर्वत—कुशद्वीपका एक पर्वत, जो 'गौर' नामक मैनसिलके पर्वतसे पश्चिमभागमें स्थित एवं नारायणको विशेष प्रिय है (भीष्म० १२। ४)।

कृष्णवर्त्मा—अग्निदेवका एक नाम, जिसका आस्तीकने जनमेजयके सर्पसत्रमें अग्निकी स्तुति करते हुए उच्चारण किया था (आदि० ५५। १०)।

कृष्णवेणा—दक्षिण भारतकी एक पवित्र नदी, जिसके

देवकुण्ड (जातिसर ह्रद) में स्नानसे पूर्वजन्मकी स्मृति होती है (सभा० ९ । २०; वन० ८५ । ३७; भीष्म० ९ । २८) । यह अग्निका उत्पत्ति-स्थान है (वन० २२२ । २६) ।

कृष्णा—(१) द्रौपदी, जो यज्ञवेदीसे उत्पन्न हुई थी (आदि० ६३ । ११०) (विशेष—देखिये द्रौपदी) । (२) एक नदी, जिसका जल भारतीय प्रजा पीती है (भीष्म० ९ । ३३) । (३) दुर्गाजीका एक नाम (विराट० ६ । ९) । (४) स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । २२) ।

कृष्णात्रेय—एक प्राचीन ऋषि, जिन्होंने तपोबलद्वारा चिकित्साशास्त्र (आयुर्वेद) का सबसे पहले ज्ञान प्राप्त किया (शान्ति० २१० । २१) ।

कृष्णानुभौतिक—एक महर्षि, जो उत्तरायणके आरम्भमें शरशय्याशायी भीष्मजीको देखनेके लिये पधारे थे (शान्ति० ४७ । ११) ।

कृष्णौजा—स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ७५) ।

केकय—(१) एक भारतीय जनपद (व्यास और शतलजके बीचका भूभाग) (भीष्म० ९ । ४८) । दशरथपत्नी कैकेयीके पिताका राज्य यहीं था, इसीसे वह कैकेयी कहलाती थी (वन० २७७ । १५) । (२) (कैकय अथवा कैकेय) केकय देशके निवासी या अधिपति, राजा एवं राजकुमार विशेषतः केकयदेशीय पाँच राजकुमार, जो परस्पर भाई थे और पाण्डवपक्षमें सम्मिलित थे (वन० १२० । २६) । इनका द्रोणाचार्यके साथ युद्ध (द्रोण० २१ । २३-२९) । ये द्रोणाचार्यद्वारा मारे गये थे (स्त्री० २५ । १५) । इनका दाह-संस्कार (स्त्री० २६ । ३६) । (३) दो केकय-राजकुमार विन्द और अनुविन्द दुर्योधनके पक्षमें थे, जो सात्यकिद्वारा मारे गये थे (कर्ण० १३ । २०-३६) । (४) एक सूतराज, जो इसी (केकय) नामसे विख्यात था । इसकी दो मालव-कन्याएँ पत्नियाँ थीं—बड़ी मालवीसे कीचक-उपकीचक पैदा हुए थे और छोटीसे कैकेयी सुदेष्णाका जन्म हुआ था, जो राजा विराटसे व्याही गयी थी (विराट० १६ । दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ १८९३) ।

केतु—(१) एक ग्रह, एक ही राहुके शिरश्छेदसे सिर और धड़ अलग-अलग हो गये थे (आदि० १९ । ६-८) । यह राहुके शरीरका धड़ या पुच्छभाग माना गया है । अर्जुन और कर्णके ध्वजकी उपमा राहु और केतुसे दी गयी है (कर्ण० ८७ । ९२) । (२) एक प्राचीन ऋषि, इन्हें स्वाध्यायद्वारा स्वर्गकी प्राप्ति (शान्ति० २६ । ७) । (३) भगवान् शिवका एक नाम (अनु० १७ । ३८) ।

केतुमान्—(१) एक दानव, कश्यपपत्नी दनुका पुत्र (आदि० ६५ । २४) । यही 'अमितौजा' नामक पाञ्चाल क्षत्रिय वीरके रूपमें उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७ । ११) । 'अमितौजा' पाण्डवपक्षका महारथी वीर था । (२) युधिष्ठिरकी सभामें विराजमान होनेवाले एक राजा (सभा० ४ । २७) । कलिङ्गराज श्रुतायुधका मित्र । कौरवपक्षीय योद्धा (भीष्म० १७ । ३२) । भीमसेनके साथ युद्ध और इनके द्वारा इसका वध (भीष्म० ५४ । ७७) । (३) युधिष्ठिरकी सभाको सुशोभित करनेवाले एक नरेश, जो पूर्वोक्त 'केतुमान्' से भिन्न थे (सभा० ४ । ३२) । ये पाण्डवपक्षके योद्धा थे, धृतराष्ट्रद्वारा इनकी वीरताका वर्णन (द्रोण० १० । ४४) । (४) द्वारकापुरीमें भगवान् श्रीकृष्णके एक प्रासादका नाम, जिसमें भगवान्‌की पत्नी सुदत्ताजी रहती थीं । (सभा० ३८ । २९ के बाद दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ८१५, कालम २) ।

केतुमाल—जम्बूद्वीपके नौ वर्षोंमेंसे एक, जो देवोपम पुरुषों और सुन्दरी स्त्रियोंकी निवासभूमि था, इसे अर्जुनने जीता था (सभा० २८ । ६ के बाद दाक्षिणात्य पाठ) । यह द्वीप या वर्ष मेरुपर्वतके पश्चिम भागमें है, यहीं जम्बूखण्ड प्रदेश है, जहाँके निवासी दस हजार वर्षोंकी आयुवाले होते हैं (भीष्म० ६ । १३, ३१-३२) । यहाँके पुरुष सुनहले रंगके और स्त्रियाँ अप्सराओंके समान सुन्दरी होती हैं । इन्हें कभी रोग-शोक नहीं होता (भीष्म० ६ । ३२-३३) ।

केतुमाला—पश्चिममें जम्बूमार्गके अन्तमें एक तीर्थ (वन० ८९ । १५) ।

केतुवर्मा—एक त्रिगर्तदेशीय राजकुमार, जो त्रिगर्तराज सूर्यवर्माका छोटा भाई था । यह आश्वमेधिक अश्वकी रक्षाके लिये गये हुए अर्जुनके साथ लोहा लेकर उन्हींके हाथों मारा गया (आश्व० ७४ । १४-१५) ।

केतुश्रृङ्ग—एक प्राचीन नरेश, जो कालके अधीन हो चुके हैं (आदि० १ । २३७) ।

केदार—कुरुक्षेत्रके अन्तर्गत एक तीर्थ, यहाँ स्नानसे पुण्यकी प्राप्ति (वन० ८३ । ७२) ।

केरल—(१) एक म्लेच्छ जाति, वशिष्ठकी 'होमधेनु' नन्दिनीने अपने मुँहके फेनसे केरल, हूण आदि दस प्रकारके म्लेच्छोंकी सृष्टि की (आदि० १७४ । ३८) । (२) एक दक्षिण भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ५८) । वहाँके नरेश और निवासी भी केरल ही कहे गये हैं । सहदेवने केरल देशको दूतोंद्वारा ही वशमें कर लिया और कर देनेको विवश किया (सभा० ३१ ।

७१-७२)। केरल-नरेशने राजा युधिष्ठिरको चन्दन, अगुरु, मोती, वैदूर्य और चित्रक नामक रत्न भेंट किये (सभा० ५१ । ४ के बाद दाक्षिणात्य पाठ पृष्ठ, ८६१, कालम १)। कर्णने दिग्विजयके समय यहाँके राजाको जीता और दुर्योधनके लिये 'करद' बनाया था (वन० २५४ । १५-१६)।

केवला-एक नगरी, जिसे कर्णने अपनी दिग्विजययात्रामें जीता था (वन० २५४ । १०-११)।

केशयन्त्री-स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । १७)।

केशव-भगवान् श्रीकृष्णका एक नाम । इसकी निरुक्ति (शान्ति० ३४१ । ४८-४९)। केशव नाम महाभारत-में अनेक स्थलोंपर प्रयुक्त हुआ है (यथा-भीष्म० २५ । ३१; २६ । ५४; २७ । १; ३४ । १४; ३५ । ३५, ४२ । ७६ आदि)।

केशिनी-(१) एक अप्सरा, जो प्राधाके गर्भसे देवर्षि कश्यपद्वारा उत्पन्न हुई है (आदि० ६५ । ५०)। (२) महाराज अजमीढ़की तृतीय पत्नी । इनके गर्भसे अजमीढ़द्वारा जह्नु, व्रजन एवं रूपिण नामके तीन पुत्रोंका जन्म हुआ था (आदि० ९४ । ३२)। (३) दमयन्तीकी दासी । इसका बाहुक नामधारी नलके साथ संवाद (वन० ७४ अध्याय)। इसके द्वारा बाहुककी परीक्षा (वन० ७५ अध्याय)। (४) उमादेवीकी अनुगामिनी सहचरी (वन० २३१ । ४८)। (५) एक सुन्दरी कन्या, जिसके लिये विरोचन और सुधन्वामें संवाद हुआ था (उद्योग० ३५ । ५-१५)।

केशी-(१) एक दानव, कश्यपपत्नी दनुका पुत्र (आदि० ६५ । २३)। इसीने भगवान् विष्णुके साथ तेरह दिनों-तक युद्ध किया था (वन० १३४ । २०)। इसके द्वारा देवसेनाका अपहरण (वन० २२३ । ९)। इसका इन्द्रसे पराजित होकर भागना (वन० २२३ । १५)। (२) एक दैत्य, जो कंसका अनुगामी था । इसके शरीरमें दस हजार हाथियोंका बल था। यह घोड़ेकी ही आकृतिमें रहता था । कंसकी प्रेरणासे श्रीकृष्ण-को मारने आया था; परंतु स्वयं ही पुरुषोत्तम भगवान् श्रीकृष्णके हाथों मारा गया (सभा० ३८ । पृष्ठ ८०१ कालम १)। (जिस स्थानपर यह मारा गया, वह वृन्दावन-में आजकल केशीघाटके नामसे विख्यात है ।) श्रीकृष्णने केशीको धर्मपूर्वक मारा था, यह उन्होंने शपथपूर्वक घोषित किया है (आश्व० ६९ । २३)। इनके द्वारा केशिवधकी चर्चा (मौसल० ६ । १०)।

केसर-शाकद्वीपका एक पर्वत, जहाँकी वायुमें केसरकी सुगन्ध भीनी रहती है (भीष्म० ११ । २३)।

केसरी-एक वानरराज, जिनके क्षेत्रभूत अञ्जना देवीके गर्भसे वायुद्वारा हनुमान्जीका जन्म हुआ था (वन० १४७ । २७)।

कैकेयी-(१) पूरुवंशीय महाराज अजमीढ़की पत्नी (आदि० ९५ । ३७)। (२) महाराज दशरथकी पट-रानी । भरतकी माता (वन० २७४ । ८)। इनका महाराज दशरथसे भरतके लिये राज्य और रामके लिये वनवासका वरदान माँगना (वन० २७७ । २६)। इनका भरतको राज्य ग्रहण करनेके लिये कहना (वन० २७७ । ३२)। (३) सूतराज केकयकी छोटी पत्नी मालवी-के गर्भसे उत्पन्न सुदेष्णा, जो महाराज विराटकी रानी थी (विराट० १६ । दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ १८९३, कालम १)। (केकयदेशके राजाओंकी सभी कुमारियाँ कैकेयी कही गयी हैं । जैसे सार्वभौमकी पत्नी और जयत्सेनकी माता सुनन्दा (आदि० ९५ । १६)। परीक्षित्-पुत्र भीमसेन-की धर्मपत्नी एवं प्रतिश्रवाकी माता कुमारी (आदि० ९५ । ४३) इत्यादि ।

कैटभ-(१) एक महान् असुर, जो मधुका भाई एवं सहचर था । इन दोनोंकी उत्पत्ति भगवान् विष्णुके कानोंकी मैलसे हुई थी । भगवान्ने मिट्टीसे इनकी आकृति बनायी थी । इनकी मूर्तिमें वायुके प्रविष्ट हो जानेसे ये सप्राण हो गये थे । इसके साथीका मधु और इसका कैटभ नाम होनेका कारण (सभा० ३८ । दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ७८३)। भगवान् विष्णुद्वारा इन दोनोंका वध (सभा० ३८ । पृष्ठ ७८४)। मधुसहित कैटभकी उत्पत्तिका वर्णन, नाभिकमलपर भगवत्प्रेरणासे जलकी दो बूँदें पड़ी थीं, जो रजोगुण और तमोगुणकी प्रतीक थीं । भगवान्ने उन दोनों बूँदोंकी ओर देखा । एक मधु और दूसरी बूँद कैटभके आकारमें परिणत हुई (शान्ति० ३४७ । २५-२६)। भगवान् हयग्रीवद्वारा इनका वध (शान्ति० ३४७ । ६९-७०)। (२) एक दानव, जो कभी इस पृथ्वीका अधिपति था; किंतु इसे छोड़कर चल बसा (शान्ति० २२७ । ५३)।

कैतव-(१) शकुनिपुत्र उलूक (आदि० १८५ । २२)। (२) एक भारतीय जनपद (भीष्म० १८ । १३)।

कैरातपर्व-वनपर्वका एक अवान्तर पर्व (अध्याय ३८ से ४१ तक)।

कैलास-एक पर्वत, जो कुबेर तथा भगवान् शिवका निवास-स्थान है (वन० १०९ । १६-१७; वन० १४१ । ११-१२)। यहाँ श्वेतकिने भगवान् शिवकी प्रसन्नताके लिये उग्र तपस्या की (आदि० २२२ । ३६-४०)। कैलासके उत्तर मैनाक है, जहाँ मयासुरने मणिमय भाण्ड

तैयार करके रक्खा था (सभा० ३ । २-९) । कैलास-पर्वत कुबेरके सभाभवनमें जाकर उनकी उपासना करता है (सभा० १० । ३१-३३) । व्यासजी कैलासपर गये थे (सभा० ४६ । १७) । राजा सगरने भी अपनी दोनों पत्नियोंके साथ जाकर कैलासपर तपस्या की थी (वन० १०६ । १०) । भगीरथने भगवान् शिवकी प्रसन्नताके लिये कैलासपर जाकर तप किया (वन० १०८ । २६) । कैलासपर्वत छः योजन ऊँचा है । वहाँ सब देवता आया करते हैं । उसके पास ही विशाला (बदरिकाश्रम) है । कुबेरभवनरूप कैलासपर असंख्य यक्ष, राक्षस, किन्नर, सुपर्ण, नाग और गन्धर्व रहते हैं (वन० १४१ । ११-१२) । कैलास-शिखरके निकट ही कुबेरकी नलिनी है, जहाँ भीमसेन गये थे (वन० १५३ । १-२) । अन्य पाण्डवोंका भी वहाँ गमन (वन० १५५ । २३) । कैलासपर्वतपर कुबेरको यक्ष और राक्षसोंका राजा बनाया गया था (उद्योग० १११ । ११) । अष्टावक्रजी कैलास होते हुए उत्तर दिशाकी ओर गये । वहाँ कुबेरभवनमें उनका सत्कार हुआ था (अनु० १९ । ३१) । सुरभिने देव-गन्धर्व-सेवित कैलासके सुरम्य शिखरपर तपस्या की (अनु० ८३ । २८-३०) ।

कैलासक (या कैलास)–एक कश्यपवंशीय नाग (उद्योग० १०३ । ११) ।

कैशिक–एक प्राचीन देश, जिसपर विदर्भनरेश भीष्मकने विजय पायी थी (सभा० १४ । २१) ।

कोकनद (१) एक प्राचीन क्षत्रियनरेश, जो दिग्विजयके समय अर्जुनसे भयभीत होकर उनकी शरणमें आया था (सभा० २७ । १८) । (२) स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ६०) । (३) स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ६१) । (४) स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ७४) ।

कोकवक–एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ६१) ।

कोकामुख–एक तीर्थ, इसमें स्नानसे पूर्वजन्मकी स्मृति जाग्रत् होती है (वन० ८४ । १५८) ।

कोकिलक–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ७३) ।

कोङ्कण–एक दक्षिण भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ६०) ।

कोटरक–एक कश्यपवंशीय नाग (उद्योग० १०३ । १२) ।

कोटरा–(१) स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । १४) । (२) स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । १७) ।

कोटिकास्य (कोटिक)–शिबिनरेश सुरथका पुत्र, जिसने वनमें जयद्रथ आदि साथियोंका द्रौपदीको परिचय दिया था (वन० २६५ अध्याय) । भीमसेनद्वारा इसका वध (वन० २७१ । २६) ।

कोटितीर्थ–एक तीर्थ, जहाँ आचमन करनेसे अश्वमेध यज्ञका फल मिलता है (वन० ८२ । ४९; वन० ८४ । ७७; वन० ८५ । ६१) । यह कुरुक्षेत्रके अन्तर्गत है (वन० ८३ । १७; वन० ८३ । २००) ।

कोटिश–वासुकिकुलमें उत्पन्न एक नाग (आदि० ५७ । ५) ।

कोपवेग–एक महर्षि, जो युधिष्ठिरकी सभामें विराजते थे (सभा० ४ । १६) ।

कोलगिरि–दक्षिण भारतका एक पर्वत—कोलाचल, जहाँके निवासियोंको सहदेवने जीता था (सभा० ३१ । ६८) ।

कोलाहल–प्राचीन कालका एक सचेतन पर्वत, जिसने कामवश दिव्यरूपधारिणी शुक्तिमती नदीको रोक लिया था (आदि० ६३ । ३५-३६) । उपरिचर वसुके द्वारा इसपर पैरोंसे प्रहार (आदि० ६३ । ३६) । इसके द्वारा शुक्तिमती नदीके गर्भसे जुड़वीं संतानकी उत्पत्ति (आदि० ६३ । ३७) ।

कोलिक–विडालोपाख्यानमें आये हुए एक चूहेका नाम (उद्योग० १६० । ३८) ।

कोलिसर्प–एक जाति, जो पहले क्षत्रिय थी; किंतु ब्राह्मणोंकी कृपादृष्टि न मिलनेसे शूद्रत्वको प्राप्त हो गयी (अनु० ३३ । २२) ।

कोल्लगिरेय–दक्षिणका एक देश, जिसे अर्जुनने अश्वमेधीय यज्ञकी रक्षाके समय जीता था (आश्व० ८३ । ११) ।

कोशल–कोशलदेशीय क्षत्रिय, जो जरासंधके भयसे दक्षिण भाग गये थे (सभा० १४ । २७) ।

कोषा–एक नदी, जिसका जल भारतीय प्रजा पीती है (भीष्म० ९ । ३४) ।

कोष्ठवान्–एक पर्वत, जो अन्य बहुतसे पर्वतोंका अधिपति है (आश्व० ४३ । ५) ।

कोसल–एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ४०-४१, ५२) । पूर्वदिग्विजयके समय भीमसेनने उत्तर कोशलको जीता था (सभा० ३० । ३) । दक्षिण-दिग्विजयके समय सहदेवने दक्षिण कोशलको जीतकर अपने अधिकारमें कर लिया था (सभा० ३१ । १२-१३) । पहले श्रीकृष्णने भी इस जनपदपर विजय पायी थी (द्रोण० २१ । १५) कोशलराज अभिमन्युद्वारा मारा गया था (कर्ण० ५ । २१) । दुर्योधनके लिये कर्णने इस देशको जीता था (कर्ण० ८ । १९) । यहाँका राजा क्षेमदर्शी था (शान्ति० ८२ । ६) । अम्बाके स्वयंवरमें भीष्मने भी

कोसलको जीता था (अनु० ४४ । ३८) । अश्वमेधके घोड़ेके पीछे जाते हुए अर्जुनने इस देशपर विजय पायी थी (आश्व० ८३ । ४) ।

कोसला (अयोध्या)–सुप्रसिद्ध पुरी, जहाँ ऋषभतीर्थमें स्नान और त्रिरात्र उपवाससे वाजपेय तथा सहस्र गोदान-का फल मिलता है (वन० ८५ । १०-११) ।

कोहल–(१) वेदविद्याके पारङ्गत विद्वान् ब्राह्मण, जो जनमेजयके सर्पसत्रके सदस्य थे (आदि० ५३ । ९) । (२) एक ब्राह्मण, जिन्हें राजा भगीरथने एक लाख सवत्सा गौएँ दान की थीं (अनु० १३७ । २७) । (३) उत्तर दिशाका आश्रय लेकर रहनेवाले एक ऋषि, सम्भव है, ये ही जनमेजयके सर्पसत्रके सदस्य बने हों (अनु० १६५ । ४५) ।

कौकुलिका–स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । १५) ।

कौकुहक–दक्षिण भारतका एक जनपद (भीष्म० ९ । ६०) ।

कौणप–वासुकिके कुलमें उत्पन्न हुआ एक नाग, जो माताके शापसे पीड़ित हो विवशतापूर्वक सर्पसत्रकी आगमें होम किया गया था (आदि० ५७ । ६) ।

कौणपासन–एक प्रमुख नाग (आदि० ३५ । १४) ।

कौणिकुत्स्य–एक वनवासी श्रेष्ठ द्विज, जो सर्पदंशनसे मरी हुई प्रमद्वराको देखनेके लिये आये थे (आदि० ८ । २५) ।

कौण्डिन्य–एक महर्षि, जो युधिष्ठिरकी सभामें विराजते थे (सभा० ४ । १६) ।

कौत्स–एक वृद्ध एवं विद्वान् ब्राह्मण, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें उद्गाता बनाये गये थे (आदि० ५३ । ६) । इन्हींको राजर्षि भगीरथने अपनी कन्या 'हंसी' का दान किया था; जिससे वे अक्षय लोकको प्राप्त हुए (अनु० १३७ । २६) ।

कौमोदकी–भगवान् श्रीकृष्णकी गदा, यह गदा खाण्डव-वन-दाहके अवसरपर वरुणने उन्हें भेंटमें दी थी (आदि० २२४ । २८) ।

कौरव–कुरुके पुत्र तथा कुरुकुलमें उत्पन्न होनेवाले पुरुष 'कौरव' कहलाते हैं । (यद्यपि पाण्डव तथा धृतराष्ट्रपुत्र दोनों ही कौरव कहलाते हैं तथापि पाण्डवोंका पृथक् ग्रहण हो जानेसे 'कौरव' शब्द प्रायः दुर्योधन आदिके लिये ही व्यवहृत होता है; फिर भी पाण्डवोंके लिये भी इस शब्दका प्रयोग हुआ ही है ।) इनके द्वारा रङ्गभूमिमें आचार्य और अस्त्रोंके पूजनपूर्वक अस्त्र-कलाप्रदर्शन (आदि० १३३ । २३ के बाद ३५ तक) । द्रुपदके द्वारा इनकी पराजय (आदि० १३७ । २४-२५) । द्रुपदके पाण्डवोंके सम्बन्धी हो जानेपर इनका भयभीत और निराश होना (आदि० १९९ । १४–१५) ।

कौरव्य–एक प्रमुख नाग (आदि० ३५ । १३) ।

कौशिक–(१) युधिष्ठिरकी सभामें विराजनेवाले एक ऋषि (सभा० ४ । १२) । हस्तिनापुर जाते समय श्रीकृष्णसे मार्गमें उनकी भेंट (उद्योग० ८३ । ६४ के बाद दा० पाठ) । (२) एक प्राचीन ऋषि जो इन्द्रकी सभामें विराजमान होते हैं (सभा० ७ । १८ के बाद दा० पाठ) (३) जरासंधका एक मन्त्री, जिसका दूसरा नाम हंस था (सभा० २२ । ३२-३३) (देखिये हंस) । (४) एक तपस्वी ब्राह्मण, इनकी क्रोधभरी दृष्टिसे बगुलीका भस्म होना (वन० २०६ । ५) । इनका पतिव्रतासे वार्तालाप (वन० २०६ । १८) । इनका धर्मव्याधसे विविध धार्मिक विषयोंपर वार्तालाप (वन० २०७ अ० से २१६ तक) । इनका घर लौटकर माता-पिताकी सेवामें तत्पर होना (वन० २१६ । २३) । (५) हैमवतीके प्रियतम पति, कुशिकवंशी विश्वामित्र (वन० ८४ । १४२-१४३; उद्योग० ११७ । १३) । (६) एक सत्यवादी तपस्वी ब्राह्मण, जिसे लुटेरोंको छिपे मनुष्योंका पता बतानेके कारण नरककी प्राप्ति हुई (कर्ण० ६९ । ४६–५२) ।

कौशिककुण्ड–एक तीर्थ, यहाँ विश्वामित्रने उत्तम सिद्धि प्राप्त की थी (वन० ८४ । १४२) ।

कौशिकाचार्य–इस पदवीसे विभूषित राजा आकृति (सभा० २१ । ६१-६२) । (देखिये आकृति)

कौशिकाश्रम–एक तीर्थ, जहाँ काशिराजकी कन्याने कठोर तप किया (उद्योग० १८६ । २७) ।

कौशिकी–(१) एक नदी (अनु० ९४ । ६) । महर्षि विश्वामित्रद्वारा इसका निर्माण (आदि० ७१ । ३०) । (जिसे आजकल 'कोसी' कहते हैं । यह नदी पूर्वी-विहारके कई जिलोंमें बह रही है ।) (२) एक पापनाशिनी नदी, इसमें स्नान करनेमात्रसे राजसूय यज्ञका फल प्राप्त होता है (वन० ८४ । १३२; वन० ८७ । १३; भीष्म० ९ । २९) । यहाँ स्नानका फल (अनु० २५ । ३१) ।

कौशिकी-अरुणासङ्गम–एक तीर्थ, जहाँ स्नान और त्रिरात्र उपवाससे पाप छूट जाते हैं (वन० ८४ । १५६) ।

कौशिकीकच्छ–कोसी नदीका कछार (सभा० ३० । २२) ।

कौसल—बकरेके समान मुख धारण करनेवाले स्कन्ददेवका एक नाम (वन० २२८ । ४)।

कौसल्या—(१) ययातिनन्दन महाराज पूरुकी पत्नी और जनमेजय (प्रवीर) की पत्नी, इनका दूसरा नाम 'पौष्टी' था (आदि० ९५ । १०–११) । (२) काशिराजकी पत्नी तथा अम्बा, अम्बिका एवं अम्बालिका-की माता (आदि० ९५ । ५१) । (३) दशरथ-नन्दन श्रीरामकी माता (वन० २७४ । ७-८) । (४) मिथिलानरेश महाराज जनककी पटरानी, इनका पतिको संन्यास न लेनेके लिये समझाना (शान्ति० १८ । ७–३६) ।

कौस्तुभ—समुद्रसे प्रकट हुई एक मणि जो भगवान् विष्णुके वक्षःस्थलका आभूषण बनी (आदि० १८ । ३६) । मणिरत्न कौस्तुभका प्रादुर्भाव (उद्योग० १०२ । १२) ।

क्रतु—ब्रह्माजीके एक मानसपुत्र (आदि० ६५ । १०; आदि० ६६ । ४; शान्ति० १६६ । १६) । बालखिल्य-नामक ऋषि क्रतुके ही पुत्र हैं (आदि० ६६ । ९) । ये अर्जुनके जन्म-समयमें पधारे थे (आदि० १२२।५२)। पराशरके राक्षस-सत्रमें राक्षसोंकी जीवनरक्षाके लिये गये थे (आदि० १८० । ९) । ये इन्द्र और ब्रह्माजीके सभामें विराजमान होते हैं (सभा० ७ । १७; सभा० ११ । १९) । स्कन्दके जन्मकालमें भी ये पधारे थे (शल्य० ४५ । १०) । शरशय्यापर पड़े हुए भीष्म-जीके पास गये थे (शान्ति० ४७ । १०) । इक्कीस प्रजापतियोंमें ये भी हैं (शान्ति० ३३४ । ३५–३७) । सात 'चित्रशिखण्डी' ऋषियोंमें भी क्रतुकी गणना की गयी है (शान्ति० ३३५ । २७) । आठ प्रकृतियोंमें भी इनका स्थान है (शान्ति० ३४० । ३४) । इन्हें शिवभक्तिद्वारा सहस्रों पुत्रोंकी प्राप्ति हुई (अनु० १४ । ८७-८८) । उत्तरायण आरम्भ होनेपर भीष्मजी देखने-के लिये आये थे (अनु० २६ । ४) । ये महायोगेश्वर माने गये हैं (अनु० ९२ । २१) ।

क्रथ—(१) एक क्षत्रिय राजा, जो क्रोधवशसंज्ञक असुरके अंशसे उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७ । ६१) । (२) एक प्राचीन देश, जिसपर विदर्भनरेश भीष्मकने विजय पायी थी (सभा० १४ । २१) । (३) एक राजराजेश्वर, जिन्हें भीमसेनने दिग्विजयके समय परास्त किया था (सभा० ३० । ७) । (४) एक महर्षि, जिन्होंने शान्ति-दूत बनकर हस्तिनापुर जाते हुए श्रीकृष्णकी परिक्रमा की थी (उद्योग० ८३ । २७) । (५) एक कौरव-योद्धा (द्रोण० १२० । १०-११) । (६) स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ७०) ।

क्रथन—(१) एक यक्ष, जिसके साथ पक्षिराज गरुडने युद्ध किया था (आदि० ३२ । १८) । (२) एक असुर, जो भूतलपर राजा 'सूर्याक्ष' के रूपमें उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७ । ५७) । (३) धृतराष्ट्रका एक पुत्र (आदि० ११६ । ११) ।

क्रमजित्—एक क्षत्रियनरेश, जो युधिष्ठिरकी सभामें उनके पास बैठते थे (सभा० ४ । २८) ।

क्रव्याद्—पितरोंका एक गण (शान्ति० २६९ । १५) ।

क्राथ—(१) एक प्रसिद्ध राजा, जो सिंहिकाकुमार राहुके अंशसे उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७ । ४०) । यह द्रौपदीके स्वयंवरमें उपस्थित था (आदि० १८६ । १५) । जारूथीनगरीमें श्रीकृष्णद्वारा पराजित हुआ था (वन० १२ । ३०) । इसने दुर्योधनकी सेनामें सम्मिलित हो अभिमन्युपर धावा किया था (द्रोण० ३७ । २५) । इसका पुत्र अभिमन्युद्वारा मारा गया (द्रोण० ४६ । २६-२७) । इसके द्वारा कलिङ्गराजकुमारका वध हुआ और पाण्डवपक्षीय, पर्वतीयनरेशद्वारा इसका वध हुआ (कर्ण० ८५ । १५-१६) । (२) पूरुवंशी महाराज कुरुके प्रपौत्र एवं धृतराष्ट्रके एक पुत्र (आदि० ९४ । ५८) । (३) एक वानर सेनापति (वन० २८३ । १९) । (४) (क्रथन) धृतराष्ट्रका एक पुत्र । भीमसेनद्वारा इसका वध (कर्ण० ५१ । १६) । (५) स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ७०) । (६) एक नाग, जो बलरामजीके परमधाम पधारते समय उनके स्वागतके लिये गया था (मौसल० ४ । १६) ।

क्रिया—दक्ष प्रजापतिकी एक पुत्री और धर्मराजकी पत्नी (आदि० ६६ । १४) ।

क्रीत—एक प्रकारका अबन्धुदायाद पुत्र, जिसे धन आदि देकर खरीद लिया गया हो (आदि० ११९ । ३४) ।

क्रूर—एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ६५) ।

क्रूरा (अथवा क्रोधा)—दक्षप्रजापतिकी पुत्री । कश्यपकी पत्नी (आदि० ६५ । १२-१३; आदि० ६६ । १३) । इस क्रूरा या क्रोधाके क्रूर स्वभाववाले असंख्य पुत्र-पौत्र हैं और यही 'क्रोधवश' संज्ञक असुरोंकी जननी है (आदि० ६५ । ३२) ।

क्रोध—एक विख्यात दानव, जो काला नामक कश्यपपत्नीका पुत्र था (आदि० ६५ । ३५) ।

क्रोधन—एक ऋषि, जो इन्द्रकी सभामें विराजते हैं (सभा० ७ । ११) ।

क्रोधना—स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । ६) ।

क्रोधवर्द्धन—एक असुर, जो 'दण्डधार' नामक राजाके

रूपमें इस भूतलपर उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७ । ४६) ।

क्रोधवश–राक्षसोंके एक गणका नाम । इनकी माता कश्यप-पत्नी क्रोधा या क्रूरा थी (आदि० ६५ । ३२) । ये ही कुबेरके सौगन्धिक कमलोंवाले सरोवर (या नलिनी) की, जिसका नाम अलका था, रक्षा करते थे । भीमसेनने इनके साथ युद्ध करके इन्हें परास्त किया था (वन० १५४ । २०-२१) । इन्होंने धनाध्यक्ष कुबेरको भीमसेनके बल-पराक्रमका वृत्तान्त बताया था (वन० १५४ । २५) । ये रावणकी सेनामें भी सम्मिलित थे (वन० २८५ । २) ।

क्रोधशत्रु–एक विख्यात दानव, जो काला नामक कश्यप-पत्नीका पुत्र था (आदि० ६५ । ३५) ।

क्रोधहन्ता–(१) कश्यपपत्नी कालाके चार पुत्रोंमेंसे एक प्रसिद्ध दानव (आदि० ६५ । ३५) । इसे वृत्रासुरका छोटा भाई कहा गया है । यही राजा दण्डके रूपमें उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७ । ४५) । (२) पाण्डव-पक्षीय राजा सेनाविन्दुका दूसरा नाम (उद्योग० १७१ । २०) ।

क्रोशना–स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । १७) ।

क्रोष्टा–यदुके पुत्र (अनु० १४७ । २८) ।

क्रौञ्च–एक पर्वत, जिसे स्कन्दने विदीर्ण किया था (शल्य० ४६ । ८४) ।

क्रौञ्चद्वीप–एक प्रसिद्ध द्वीप, इसका विशेष वर्णन (भीष्म० १२ । १७—२३) ।

क्रौञ्चनिषूदन–सरस्वती-सम्बन्धी तीर्थ, जहाँ सरस्वतीमें स्नान करनेसे विमानलाभ होता है (वन० ८४ । १६०) ।

क्रौञ्चपदी–एक तीर्थ, जहाँ पिण्डदान करके मनुष्य तीन ब्रह्महत्यासे मुक्त हो जाता है (अनु० २५ । ४२) ।

क्रौञ्चव्यूह–सेनाकी मोर्चाबंदीका वह प्रकार, जिसमें सैनिकोंको क्रौञ्च पक्षीकी आकृतिमें खड़ा किया जाता है । भीष्मद्वारा क्रौञ्चव्यूहकी रचना (भीष्म० ७५ । १५—२२) । युधिष्ठिरद्वारा उक्त व्यूहकी रचना (द्रोण० ७ । २५-२७) ।

क्रौञ्चारुणव्यूह–यह भी क्रौञ्चव्यूहका ही नामान्तर है । इसका निर्माण धृष्टद्युम्नने किया था (भीष्म० ५० । ४२—५७) ।

क्षत्ता–विदुर (उद्योग० ३३।२,६) (देखिये विदुर) ।

क्षत्रंजय–धृष्टद्युम्नका एक वीर पुत्र (द्रोण० १० । ५३) । द्रोणाचार्यद्वारा द्रुपदके तीन पुत्रों (क्षत्रदेव, क्षत्रंजय तथा क्षत्रवर्मा) का वध (द्रोण० १८६ । ३३-३४) ।

क्षत्रदेव–शिखण्डीका पुत्र (उद्योग० ५७ । ३२; द्रोण० २३ । ६) । यह एक श्रेष्ठ रथी था (उद्योग० १७१ । १०) । भगदत्तद्वारा इसकी दाहिनी भुजापर गहरा आघात (भीष्म० ९५ । ७३) । इसका लक्ष्मणके साथ युद्ध (द्रोण० १४ । ४९) । द्रोणके साथ युद्ध (द्रोण० २१ । ५०, ५६) । इसके रथके घोड़ोंका रंग (द्रोण० २३ । ६) । लक्ष्मणद्वारा इसका वध (कर्ण० ६ । २६-२७) ।

क्षत्रधर्मा–धृष्टद्युम्नका पुत्र अर्धरथी (उद्योग० १७१ । ७) । इसके रथके घोड़ोंका रंग (द्रोण० २३ । ५) । द्रोणाचार्यद्वारा इसका वध (द्रोण० १२५ । ६६) ।

क्षत्रवर्मा–धृष्टद्युम्नका एक वीर पुत्र (द्रोण० १० । ५३) । जयद्रथके साथ युद्ध (द्रोण० २५ । १०–१२) । आचार्य द्रोणद्वारा इसका वध (द्रोण० १८६ । ३४) ।

क्षितिकम्पन–स्कन्दका सेनापति (शल्य० ४५ । ५९) ।

क्षीरवती–एक पुण्यतीर्थ, वहाँ स्नान करके देवताओंके पूजनमें लगा हुआ मनुष्य वाजपेय-यज्ञका फल पाता है (वन० ८४ । ६८-६९) ।

क्षीरसागर (क्षीरनिधि)–इसकी उत्पत्ति (उद्योग० १०२ । ४) । अन्य नामोंद्वारा इसकी चर्चा—क्षीरोद (आदि० २ । ९१; भीष्म० १० । ११; शान्ति० ३३६ । २३; शान्ति० ३४० । ४५; अनु० १४ । २४०)। क्षीरोदधि (शान्ति० ३३६ । २७) ।

क्षीरी–उत्तर कुरुवर्षके कुछ वृक्ष, जो सदा षड्विध रसोंसे युक्त अमृतके समान स्वादिष्ट दूध बहाते रहते हैं । उनके फलोंमें इच्छानुसार वस्त्र और आभूषण भी प्रकट होते हैं (भीष्म० ७ । ४-५) ।

क्षुद्रक–एक देश और वहाँके निवासी, ये युधिष्ठिरके लिये भेंट लाये थे (सभा० ५२ । १५) । क्षुद्रकोंको साथ लेकर दुर्योधन शकुनिकी सेनाकी रक्षामें लगा था (भीष्म० ५१ । १६) । क्षुद्रक आदि देशोंके सैनिक भीष्मकी आज्ञाका पालन करते हुए अर्जुनके निकट चले गये (भीष्म० ५९ । ७६) । भीष्मके पीछे द्रोणाचार्यके साथ रहकर क्षुद्रक भी शत्रुओंसे जूझनेके लिये चले थे (भीष्म० ८७ । ७) । परशुरामजीने पहले कभी क्षुद्रकोंका संहार किया था (द्रोण० ७० । ११) । अर्जुनद्वारा क्षुद्रकोंका वध (कर्ण० ५ । ४७) ।

क्षुप–(१) एक प्रजापति, जो ब्रह्माजीके द्वारा मस्तकपर धारण किये हुए उनके गर्भसे उत्पन्न हुए थे । ब्रह्माजीके छींकनेपर ये उनके मस्तकसे गिर पड़े थे (शान्ति० १२२ । १६—१७) । यही ब्रह्माके यज्ञके ऋत्विज हुए थे(शान्ति० १२२ । १७) । भगवान् रुद्रने इनको समस्त

प्रजाओं तथा धर्मधारियोंका अधिपति बनाया था (शान्ति० १२२ । ३५)। (२) शक्तिशाली वैवस्वतमनुके आत्मज महाबाहु प्रसन्धिके पुत्र और इक्ष्वाकुके पिता (आश्व० ४ । ३) । ये महाबली राजर्षि यमराजकी सभामें विराजमान होते हैं (सभा० ८ । १३) । इन्हें मनुसे खड्गकी प्राप्ति हुई (शान्ति० १६६ । ७३) । इन महाराज क्षुपने जीवनमें कभी मांस नहीं खाया था (अनु० ११५ । ६७) ।

क्षुरकर्णी–स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । २५) ।

क्षेत्र–देहधारियोंका यह शरीर (भीष्म० ३७ । १) । क्षेत्रका वर्णन (भीष्म० ३७ । ५–६) ।

क्षेत्रज्ञ–इस शरीरको जाननेवाला जीवात्मा । सम्पूर्ण शरीरोंमें क्षेत्रज्ञरूपसे भगवान् ही विराजमान हैं (भीष्म० ३७ । १—२) । क्षेत्रके स्वभाव और प्रभावसहित क्षेत्रज्ञका वर्णन (भीष्म० ३७ । १९—३३) ।

क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ-ज्ञान–क्षेत्र और क्षेत्रज्ञका अर्थात् विकार-सहित प्रकृति और पुरुषका विभागपूर्ण यथार्थ बोध—यही ज्ञान है (भीष्म० ३७ । २) ।

क्षेम–एक क्षत्रिय राजा, जो क्रोधवशसंज्ञक दैत्यके अंशसे उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७ । ६५) । यह पाण्डव-पक्षीय योद्धा था और द्रोणाचार्यद्वारा मारा गया था (द्रोण० २१ । ५३) ।

क्षेमक–(१)कश्यप और कद्रूसे उत्पन्न एक नाग (आदि० ३५ । ११) । (२) एक प्राचीन राजा, जो युधिष्ठिरकी सभामें विराजमान होता था (सभा० ४ । २२) । इसे पाण्डवोंकी ओरसे रणनिमन्त्रण भेजा गया था (उद्योग० ४ । २३) ।

क्षेमङ्कर–जयद्रथका साथी त्रिगर्तदेशका एक राजा, कोटिकास्यद्वारा द्रौपदीको इसका परिचय (वन० २६५ । ६-७) । नकुलके हाथों इसका वध (वन० २७१ । ७०) ।

क्षेमदर्शी–कोसलदेशके एक राजा (शान्ति० ८२ । ४) । इनके दरबारमें उपस्थित हो कालकवृक्षीय मुनिका इनके मन्त्री आदिके दोष बताना और राजाको उपदेश देना (शान्ति० ८२ । १२—६७) । सेना आदिके नष्ट हो जानेपर इनका कालकवृक्षीय मुनिसे धनके अतिरिक्त सुखका उपाय पूछना (शान्ति० १०४ । ४–१०) । कालकवृक्षीय मुनिके प्रयत्नसे राजा जनकके साथ इनकी संधि और उनके द्वारा इनका सत्कार और जामाता बनाया जाना (शान्ति० १०६ । २३–२८) ।

क्षेमधन्वा–एक कौरवपक्षीय प्रधान रथी, जो दुर्योधनके अग्रगामी सहायकोंमें था (भीष्म० १७ । २७) ।

क्षेमधूर्ति–(१)एक क्षत्रिय राजा, जो क्रोधवशसंज्ञक दैत्यके अंशसे उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७ । ६४) । इसे पाण्डवोंकी ओरसे रण-निमन्त्रण भेजे जानेका विचार (उद्योग०४ । ८) । यही कुलूतदेशका अधिपति था और कौरवपक्षसे युद्धमें आकर भीमसेनके द्वारा मारा गया था (कर्ण० १२ । ४४) । (२) एक कौरव-पक्षका राजा, बृहन्तका सगा भाई, इसका सात्यकिके साथ युद्ध (द्रोण० २५ । ४७–४८) । सात्यकिद्वारा इसका वध (शल्य० २१ । ८) । (३) कौरव-पक्षका एक योद्धा, पाण्डवपक्षीय बृहत्क्षत्रके साथ इसका युद्ध (द्रोण० १०६ । ८) । बृहत्क्षत्रद्वारा इसका वध (द्रोण० १०७ । ६) ।

क्षेममूर्ति–धृतराष्ट्रका एक पुत्र (आदि० ६७ । १००) ।

क्षेमवाह–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ६६) ।

क्षेमवृद्धि–राजा शाल्वका मन्त्री तथा सेनापति । जाम्बवती-कुमार साम्बद्वारा इसकी पराजय (वन० १६ । ११–१६) ।

क्षेमशर्मा–कौरव-पक्षीय एक योद्धा, जो द्रोणनिर्मित गरुड़-व्यूहके ग्रीवाभागमें खड़ा किया गया था (द्रोण० २० । ६) ।

क्षेमा–एक स्वर्गीय अप्सरा, जो अन्य अप्सराओंके साथ अर्जुनके जन्ममहोत्सवपर नृत्य करनेके लिये आयी थी (आदि० १२२ । ६६) ।

क्षैमि–क्षेमकुमार सत्यधृति, जिसे चितकबरे, विशालकाय, वशमें किये हुए, सुवर्णकी मालासे विभूषित तथा ऊँचे कदवाले शुभलक्षण अश्वोंने युद्धभूमिमें पहुँचाया (द्रोण० २३ । ५८) ।

(ख)

खग–(१) कश्यपके वंशमें उत्पन्न हुआ एक नाग (उद्योग० १०३ । १०) । (२) भगवान् शिवका एक नाम (अनु० १७ । ६७) ।

खगम–पूर्वकालका एक तपोबलसम्पन्न ब्राह्मण, जो सहस्रपाद ऋषिका मित्र था (आदि० ११ । १) । इसके शापसे सहस्रपाद ऋषिका 'डुण्डुभ' सर्प होना (आदि० ११ । २–४) ।

खट्वाङ्ग–इलविलाके पुत्र महाराज दिलीपका दूसरा नाम (द्रोण० ६१ । १–१०) । इन्होंने यह सारी पृथ्वी ब्राह्मणोंको दान कर दी थी (द्रोण० ६१ । २) । इनके यज्ञोंमें सड़कें सोनेकी बनी थीं । सभा-मण्डप भी

सुवर्णसे ही निर्मित हुआ था (द्रोण० ६१ । ३-४)। इनके यज्ञके दिव्य वैभवका वर्णन (द्रोण० ६१ । ५-११)।

खड्ग-स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ६७)।

खड्गी-भगवान् शिवका एक नाम (अनु० १७ । ४३)।

खण्डखण्डा-स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । २०)।

खनीनेत्र-सूर्यवंशी विविंशके ज्येष्ठ पुत्र, जो पराक्रमी होने और अकण्टक राज्य पानेपर भी प्रजाके अनुरागभाजन न हो सके । अतः राज्यसे उतार दिये गये (आश्व० ४ । ६—९)।

खर-(१) एक राक्षस, जो विश्रवाका पुत्र एवं शूर्पणखाका सहोदर भाई था । इसकी माताका नाम राका था (वन० २७५ । ४—८)। यह धनुर्विद्यामें विशेष पराक्रमी तथा ब्रह्मद्रोही था (वन० २७५ । १२)। रावण, कुम्भकर्ण और विभीषणकी तपस्याके समय ये दोनों भाई-बहन उनकी सेवा करते थे (वन० २७५ । १२)। शूर्पणखाके कारण इसका श्रीरामसे बड़ा भारी वैर हो गया (वन० २७७ । ४२)। श्रीरामने तपस्वी जनोंकी रक्षाके लिये खर आदि चौदह हजार राक्षसोंका संहार किया (सभा० ३८। २९ के बाद, पृष्ठ ७९४)। (२) राक्षसोंका एक दल, जिसने अन्य दलोंके साथ वानर-सेनापर आक्रमण किया था (वन० २८५ । २)।

खरकर्णी-स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । २६)।

खरजङ्घा-स्कन्दकी अनुचरी मातृका(शल्य० ४६ । २२)।

खरी-स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । ६)।

खली-(१) भगवान् शिवका एक नाम (अनु० १७ । ४३)। (२) दानवोंका एक समुदाय, जिसे वशिष्ठजीने अपने तेजसे दग्ध कर दिया (अनु० १५५ । २२)।

खलु-भारतवर्षकी एक नदी, जिसका जल यहाँकी प्रजा पीती है (भीष्म० ९ । २८)।

खस-एक देश (द्रोण० १२१ । ४२)।

खाण्डव (वन)-यमुना-तटवर्ती एक वन, जिसे भगवान् श्रीकृष्ण तथा अर्जुनकी सहायतासे अग्निदेवने जलाया था इसकी रक्षाके लिये इन्द्रके प्रयत्न । इसके जलानेके समय तक्षककी पत्नीका अर्जुनद्वारा वध (आदि० २२३ अध्यायसे २२५ तक)।

खाण्डवदाहपर्व-आदिपर्वका एक अवान्तर पर्व (अध्याय २२१ से २२६ तक)।

खाण्डवप्रस्थ-प्राचीन कालका एक नगर, जो पाण्डवोंकी राजधानी थी—इन्द्रप्रस्थ (आदि० ६१ । ३५)। यहीं रहकर अर्जुनने भगवान् श्रीकृष्णकी सहायतासे अग्निदेवको तृप्त किया था (आदि० ६१ । ४५)। पूर्वकालमें पुरूरवा, नहुष और ययाति भी यहीं निवास करते थे (आदि० २०६ । २५ के बाद दाक्षिणात्य पाठ)। (विशेष देखिये इन्द्रप्रस्थ)।

खाण्डवायन-परशुरामजीकी दी हुई स्वर्णवेदीको खण्ड-खण्ड करके आपसमें बाँटनेवाले ब्राह्मणोंका नाम (वन० ११७ । १३)।

खाशीर-पूर्वोत्तर भारतका एक जनपद (भीष्म० ९ । ६८)।

खिल-महाभारतके परिशिष्ट भाग हरिवंशका दूसरा नाम (आदि० २ । ८२-८३; आदि० ३७९-३८०)।

ख्याता-स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । २०)।

(ग)

गगनमूर्धा-कश्यप और दनुके वंशका एक विख्यात दानव (आदि०६५ । २४)। यह पाँच केकय-राजकुमारोंमेंसे एक-के रूपमें उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७ । १०)।

गङ्गा-देवनदी । वसुओंकी माता । भीष्मकी जननी । महर्षि वशिष्ठके शाप और इन्द्रके आदेशसे आठ वसुओंका गङ्गाजीके गर्भसे शान्तनुपुत्र होकर जन्म लेना (आदि० ६७ । ७४)। गङ्गाजीका आधिदैविक रूप देवाङ्गनाके तुल्य है, वे उसी रूपसे एक दिन ब्रह्माजीकी सभामें उपस्थित हुईं । उस समय वायुके झोंकेसे उनके शरीरका चाँदनीके समान उज्ज्वल वस्त्र सहसा कुछ ऊपरकी ओर उठ गया । उस अवस्थामें उनकी ओर देखनेके कारण महाभिषको ब्रह्माजीके द्वारा मर्त्यलोकमें जन्म लेनेका शाप मिला और इन्हें भी उनके प्रतिकूल आचरण करनेके लिये उनके साथ जानेका संकेत प्राप्त हुआ (आदि० ९६ । ४—८)। महाभिषका चिन्तन करती हुई गङ्गा-का वहाँसे जाना और मार्गमें वसुओंसे उनकी उदासीका कारण पूछना (आदि० ९६ । ९-१२)। 'वशिष्ठके शापवश हमें मर्त्यलोकमें जन्म लेना पड़ेगा, वहाँ आप ही हमारी जननी हों' वसुओंकी गङ्गाजीसे प्रार्थना और इनका इस प्रार्थनाको स्वीकार करना (आदि० ९६ । १२—१८)। जन्म लेते ही जलमें फेंक देनेके लिये इनसे वसुओंकी अभ्यर्थना (आदि० ९६ । १९)। शान्तनुको एक पुत्र प्राप्त होनेके लिये इनका वसुओंद्वारा व्यवस्था कराना (आदि० ९६ । २०-२२)। अपना पति बननेके लिये राजा प्रतीपसे इनकी प्रार्थना (आदि० ९७ । ५)। दाहिनी जाँघपर बैठनेके कारण इन्हें पत्नीरूपमें नहीं, पुत्रवधूरूपमें प्रतीपका अङ्गीकार करना (आदि०

९७ । ११) । गङ्गाजीका प्रतीपकी आज्ञाको स्वीकार करना (आदि० ९७ । १२—१५) । राजा शान्तनुका गङ्गाजीके परम सुन्दर दिव्य प्रभासे प्रकाशमान, साक्षात् लक्ष्मीके समान मनोरम, अनिन्द्य सौन्दर्यसे सम्पन्न, दिव्याभरणभूषित, सूक्ष्माम्बर-विलसित तथा कमलोदर-कान्तिसे सुशोभित दिव्य रूपका दर्शन तथा उनके प्रति आकृष्ट हो उनसे अपनी पत्नी बननेके लिये प्रार्थना (आदि० ९७ । २७—३३) । गङ्गाजीका कुछ शर्तोंके साथ उनके अनुरोधको अङ्गीकार करना (आदि० ९८ । १—४) । शान्तनुके द्वारा इनके गर्भसे आठ देवोपम पुत्रोंकी उत्पत्ति (आदि० ९८ । १२) । इनके द्वारा नवजात शिशुओंका जलमें प्रक्षेप (आदि० ९८ । १३) । भीष्मका जन्म होनेपर उनके भी वधकी आशङ्कासे इनको शान्तनुकी कड़ी फटकार (आदि० ९८ । १६) । अपने रहस्यको प्रकट करके इनका शान्तनुको उनके नवजात शिशुओं (वसुओं) का संक्षिप्त परिचय देना (आदि० ९८ । १७—२४) । वसुओंको वशिष्ठद्वारा प्राप्त हुए शापकी बात बताकर और यही एक पुत्र चिरकालतक मानवलोकमें रहेगा, ऐसा कहकर इनके द्वारा शान्तनुके प्रति भीष्मके भावी गुणोंका वर्णन और पालनके लिये उसे साथ लेकर इनका अन्तर्धान हो जाना (आदि० ९९ अ०) । शान्तनुका गङ्गाजीसे अपने पुत्रको दिखानेके लिये कहना और गङ्गाजीका पाल-पोषकर बड़े एवं सुशिक्षित किये हुए उस पुत्रको राजा-के हाथमें सौंप देना (आदि० १०० । ३०–४०) । गङ्गा प्राचीन कालमें हिमालयके स्वर्णशिखरसे निकलीं और सात धाराओंमें विभक्त हो समुद्रमें गिरीं । इन सातोंके नाम हैं—गङ्गा, यमुना, सरस्वती, रथस्था, सरयू, गोमती और गण्डकी । इन धाराओंका जल पीनेवाले पुरुषोंके पाप तत्काल नष्ट हो जाते हैं । ये गङ्गा देवलोक-में अलकनन्दा और पितृलोकमें वैतरणी नाम धारण करती हैं । इस मर्त्यलोकमें इनका नाम 'गङ्गा' है । इनका तीर्थरूपसे वर्णन (वन० ८५ । ८८–९९) । इनका राजा भगीरथको वर देना (वन० १०८ । १५) । इनका भूतलपर गिरना (वन० १०९ । ८) । इनके द्वारा समुद्रका भरा जाना (वन० १०९ । १८) । अग्निकी उत्पत्तिके स्थानभूत नदियोंमें इनकी भी गणना (वन० २२२ । २२) । परशुरामजीसे युद्धके लिये उद्यत भीष्मको डाँटना (उद्योग० १७८ । ८६–८८) । परशुरामजीसे भीष्मके लिये क्षमा माँगना (उद्योग० १७८ । ९२) । परशुरामजीके साथ होनेवाले युद्धमें सारथिके मारे जानेपर भीष्मका सारथ्य करना (उद्योग० १८२ । १६) । इनका अम्बाको नदी होनेका शाप देना (उद्योग० १८६ । ३६) । मेरुपर्वतके शिखरसे दुग्धके समान श्वेत धारवाली विश्वरूपा अपरिमित शक्तिशालिनी भयङ्कर वज्रपातके समान शब्द करने-वाली परम पुण्यात्मा पुरुषोंद्वारा सेवित सुभग-स्वरूपा पुण्यमयी भागीरथी गङ्गा बड़े प्रबल वेगसे सुन्दर चन्द्र-मोहृद (चन्द्रकुण्ड) में गिरती हैं । गङ्गाद्वारा प्रकट किया हुआ वह ह्रद समुद्रके समान प्रतीत होता है । भगवान् शङ्कर इन्हें एक लाख वर्षतक अपने मस्तकपर धारण किये रहे । ब्रह्मलोकसे उतरकर त्रिपथगामिनी गङ्गा पहले हिरण्यशृङ्गके पास विन्दुसरोवरमें प्रविष्ट हुईं । वहींसे उनकी सात धाराएँ विभक्त हुईं । जिनके नाम इस प्रकार हैं—वस्वोकसारा, नलिनी, पावनी, सरस्वती, जम्बू-नदी, सीतागङ्गा और सिन्धु (भीष्म० ६ । २८–५०) । बाणशय्यापर पड़े हुए भीष्मके पास महर्षियोंको भेजना (भीष्म० ११९ । ९७-९८) । इनका भागीरथी नाम पड़नेका कारण (द्रोण० ६० । ६) । इनके द्वारा स्कन्दको कमण्डलुका दान (शल्य० ४६ । ५०) । समुद्रसे बेंतकी नम्रताका वर्णन (शान्ति० ११३ । ८–११) । इनका जह्नुकी पुत्रीरूपसे प्रसिद्ध होना (अनु० ४ । ३) । गङ्गा-जीमें स्नानका फल (अनु० २५ । ३९) । इनकी महिमाका वर्णन (अनु० २६ । २६–९६) । अग्नि-द्वारा स्थापित किये गये शिवजीके तेजको इनका मेरु पर्वत-पर छोड़ना (अनु० ८५ । ६८) । अग्निसे अपने गर्भके स्वरूप आदिका वर्णन (अनु० ८५ । ७२–७६) । पार्वतीजीसे स्त्रीधर्मका वर्णन करनेके लिये प्रार्थना (अनु० १४६ । २७–३२) । अपने पुत्र भीष्मकी मृत्युपर इनका शोक करना (अनु० १६८ । २३–२८) । भीष्मजीके धराशायी होनेपर वसुओंका गङ्गाजीके तटपर आकर अर्जुनको शाप देनेकी इच्छा प्रकट करना और गङ्गाजीद्वारा उनके इस विचारका अनुमोदन होना (आश्व० ८१ । १२–१५) ।

महाभारतमें आये हुए गङ्गाजीके नाम—आकाशगङ्गा, भगीरथसुता, भागीरथी, शैलराजसुता, शैलसुता, देवनदी, हैमवती, जाह्नवी, जह्नुकन्या, जह्नुसुता, समुद्रमहिषी, त्रिपथगा, त्रिपथगामिनी इत्यादि ।

गङ्गादत्त—राजा शान्तनुके द्वारा गङ्गाजीके गर्भसे उत्पन्न कुमार देवव्रत (आदि० ९९ । ४५ के बाद दाक्षिणात्य पाठ) । (देखिये भीष्म)

गङ्गाद्वार—जहाँ गङ्गाजी पर्वतमालाओंसे निकलकर समतल भूमि या मैदानमें आती हैं, उस स्थानका नाम गङ्गाद्वार है; इसीको 'हरद्वार' या 'हरिद्वार' कहते हैं । गङ्गाद्वारमें प्रतीपने तपस्या की (आदि० ९७ । १) । यहाँ भरद्वाज

मुनि रहते थे (आदि० १२९ । ३३)। अर्जुनने यहाँके तीर्थोंकी यात्रा की (आदि० २१३ अध्याय)। गङ्गाद्वार स्वर्गद्वारके समान है, वहाँ एकाग्रचित्त होकर कोटितीर्थमें स्नान करनेसे पुण्डरीक यज्ञका फल मिलता है (वन० ८४ । २७; वन० ८९ । १५; वन० ९० । २१)। पत्नीसहित महर्षि अगस्त्यने यहाँ तप किया था (वन० ९७ । ११)। जयद्रथने यहीं आराधना करके भगवान् शिवको प्रसन्न किया था (वन० २७२ । २४–२६)। दक्ष-प्रजापतिने भी यहीं (कनखलमें) यज्ञ किया था (शल्य० ३८ । २७-२८)। गङ्गाद्वार तथा वहाँके तीर्थ-विशेष कुशावर्त, विल्वक, नीलपर्वत तथा कनखलमें स्नान करके पापरहित हुआ मनुष्य स्वर्गलोकको जाता है (अनु० २५ । १३)। गङ्गाद्वारमें भीष्मजीने अपने पिताका श्राद्ध किया था, जिसमें पिण्ड लेनेके लिये शान्तनुका हाथ प्रकट हुआ था (अनु० ८४ । ११–१५)। धृतराष्ट्र, गान्धारी और कुन्ती गङ्गाद्वारके वनमें दग्ध हुई थीं और वहाँ युधिष्ठिरने उनके लिये श्राद्धकर्म भी कराया था (आश्रम० ३९ । १४–२०)।

गङ्गामहाद्वार–यह वह स्थान है, जहाँ हिमालयके शिखरसे गङ्गाजी उतरती हैं। यह गङ्गोत्तरीसे भी बहुत आगे है। एक सत्यवादी महात्मा धाममुनि उसकी रक्षा करते हैं। उनकी मूर्ति, आकृति तथा संचित तपस्याका परिमाण किसीको ज्ञात नहीं होता। उस गङ्गामहाद्वारसे आगे जानेवाला मनुष्य हिमराशिमें गल जाता है। भगवान् नर-नारायणको छोड़कर दूसरा कोई उस गङ्गामहाद्वारसे आगे कभी नहीं गया (उद्योग० १११ । १६–२०)।

गङ्गा-यमुना-सङ्गम–प्रयागका एक पावन तीर्थ, जिसमें स्नान करनेसे दस अश्वमेध यज्ञका फल मिलता और समस्त कुलका उद्धार हो जाता है (वन० ८४ । ३५; वन० ८५ । ७४–७६)।

गङ्गा-सरस्वती-सङ्गम–प्रयागका एक पवित्र तीर्थ, जहाँ स्नान करनेसे अश्वमेध यज्ञका फल मिलता और स्वर्गलोक प्राप्त होता है (वन० ८४ । ३८)।

गङ्गा-सागर-सङ्गम–एक तीर्थ, जहाँ स्नान करनेसे दस अश्वमेध यज्ञोंके फलकी प्राप्ति होती है। वहाँ गङ्गाके दूसरे पार जाकर स्नान और तीन रात निवास करनेवाला मनुष्य सब पापोंसे मुक्त हो जाता है (वन०८५।४-५)।

गङ्गाह्रद–यहाँ स्नानका फल (अनु० २५ । ३४)। कुरुक्षेत्रकी सीमामें स्थित यौवन तीर्थके अन्तर्गत गङ्गाह्रद नामका कूप है, जिसमें तीन करोड़ तीर्थोंका वास है। उसमें स्नान करनेवाला मनुष्य स्वर्गलोकमें जाता है (वन० ८३ । १७६; वन० ८३ । २०१)।

गङ्गोद्भेद–एक तीर्थ, जिसमें तीन रात उपवास करनेवाला मनुष्य वाजपेय यज्ञका फल पाता और सदाके लिये ब्रह्मीभूत हो जाता है (वन० ८४ । ६५)।

गज–(१) एक महापराक्रमी वानरराज, जो एक अरब सेनाके साथ श्रीरामके पास आये थे (वन० २८३ । ३)। (२) सुबलपुत्र शकुनिका एक छोटा भाई, जिसने अन्य भाइयोंके साथ रहकर पाण्डवसेनाके दुर्जय व्यूहमें प्रवेश किया था (भीष्म० ९० । २७–३०)। इरावान्-द्वारा इसका वध (भीष्म० ९० । ४५–४६)।

गजकर्ण–कुबेरकी सभामें उपस्थित हो उनकी सेवा करनेवाला एक यक्ष (सभा० १० । १६)।

गजशिरा–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ६०)।

गण–सेना-गणनाके लिये एक पारिभाषिक शब्द। तीन गुल्मोंका एक गण होता है (आदि० २ । २१)।

गणा–स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । ३)।

गणित–एक सनातन विश्वेदेव, कालकी गतिके ज्ञाता (अनु० ९१ । ३६)।

गणेश–व्यासनिर्मित महाभारतको लिपिबद्ध करनेवाले विघ्नेश्वर भगवान गणनायक(आदि० १ । ७५–७९)।

गण्डक–एक देश, जो गण्डकी नदीके आस-पास बसा हुआ है। इसे भीमसेनने दिग्विजयके समय जीता था (सभा० २९ । ४)।

गण्डकण्डू–कुबेरकी सभाका एक यक्ष, जो वहाँ धनाध्यक्ष कुबेरकी सेवा करता है (सभा० १० । १५)।

गण्डकी–गङ्गाजीकी सात धाराओंमेंसे एक, गण्डकीका जल पीनेवाले मनुष्य तत्काल पापरहित हो जाते हैं (आदि० १६९ । २०-२१)। ग्रन्थान्तरोंमें इनके दो नाम और प्रसिद्ध हैं—नारायणी और शालग्रामी। महाभारत (भीष्म० ९ । २५) में तथा बौद्ध ग्रन्थोंमें इनका हिरण्वती या हिरण्यवती नाम भी उपलब्ध होता है। श्रीकृष्ण, अर्जुन और भीमसेनने इन्द्रप्रस्थसे गिरिव्रज जाते समय इसे पार किया था (सभा० २० । २७)। गण्डकी नदी सब तीर्थोंके जलसे उत्पन्न हुई है। वहाँ जानेसे तीर्थयात्री अश्वमेध यज्ञका फल पाता और सूर्य-लोकमें जाता है (वन० ८४ । ११३)। अग्निकी उत्पत्तिकी स्थानभूता नदियोंमें 'गण्डकी' की भी गणना है (वन० २२२ । २२)। हिरण्वती या गण्डकी भारतवर्षकी प्रधान नदियोंमें है (भीष्म०९।२५)।

गण्डा–सप्तर्षियोंकी सेवा करनेवाली एक दासी (अनु०

९३ । २२) । इसका वृषादर्भिसे प्रतिग्रहके दोष बताकर उससे भय प्रकट करना (अनु० ९३ । ४६) । इसका यातुधानीसे अपने नामका अभिप्राय बताना (अनु० ९३ । ९८) । मृणालकी चोरीके विषयमें शपथ खाना (अनु० ९३ । १२९) ।

गतिताली–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ६७) ।

गद–भगवान् श्रीकृष्णके अनुज । ये द्रौपदीके स्वयंवरमें आये थे (आदि० १८५ । १७) । अर्जुन और सुभद्राके लिये दहेज लेकर ये द्वारकासे इन्द्रप्रस्थ आये थे (आदि० २२० । ३२) । श्रीकृष्णके द्वारका जानेपर गदने इनका स्वागत किया और श्रीकृष्णने उन्हें हृदयसे लगाया (सभा० २ । ३५) । युधिष्ठिरके मयनिर्मित सभाभवनमें प्रवेश करनेके समय गद भी वहाँ उपस्थित थे (सभा० ४ । ३०) । पाण्डुनन्दन युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें अन्य वृष्णिवंशियोंके साथ गद भी पधारे थे (सभा० ३४ । १६) । शाल्वके चढ़ाई करनेपर इन्होंने द्वारका नगरीकी रक्षा-व्यवस्थामें सहयोग दिया था (वन० १५ । ९) । युधिष्ठिरके अश्वमेध यज्ञमें श्रीकृष्णके साथ ये भी आये थे (आश्व० ८६ । ५) । मौसल-युद्धमें गदको मारा गया देख भगवान् श्रीकृष्णको विरोधियोंपर बड़ा क्रोध हुआ था (मौसल० ३ । ४५) ।

गदापर्व–शल्यपर्वका एक अवान्तर पर्व (शल्य० अध्याय ३० से ६५ तक) ।

गदावसान–मथुराका स्थानविशेष । श्रीकृष्णके द्वारा अपने जामाता कंसके मारे जानेपर अत्यन्त कुपित हो मगधराज जरासंधने श्रीकृष्णको मारनेकी नीयतसे निन्यानबे बार अपनी गदा घुमाकर गिरिव्रजसे मथुराकी ओर फेंकी । वह गदा निन्यानबे योजन दूर मथुरामें जाकर गिरी । जिस स्थानपर वह गदा गिरी थी, वह स्थान मथुरामें 'गदावसान' नामसे विख्यात हुआ (सभा० १९ । २२–२५) ।

गन्धकाली–सत्यवतीका दूसरा नाम । भीष्मने पिताका प्रिय करनेकी इच्छासे उनके साथ माता सत्यवती या गन्धकालीका विवाह करवाया (आदि० ९५ । ४८) । (देखिये सत्यवती)

गन्धमादन–(१) हिमालयके उत्तरभागमें स्थित बदरिकाश्रमके समीपवर्ती पर्वत । गन्धमादनपर कश्यपजीने तपस्या की (आदि० ३० । १०) । यहीं भगवान् शेषने भी तप किया था (आदि० ३६ । ३) । शतश्रृङ्गपर्वतपर तपस्याके लिये जाते समय दोनों पत्नियोंसहित पाण्डुका यहाँ आगमन (आदि० ११८ । ४८) । यह गन्धमादन पर्वत दिव्यरूप धारण करके कुबेरकी सभामें रहकर उन भगवान् धनाध्यक्षकी उपासना करता है (सभा० १० । ३२) । नारायणरूपसे भगवान् श्रीकृष्णने यत्र-सायंगृह मुनि होकर दस हजार वर्षोंतक गन्धमादन पर्वतपर निवास किया है (वन० १२ । ११) । तपस्याके लिये जाते समय अर्जुनने हिमवान् तथा गन्धमादन पर्वतको लाँघकर आगेकी यात्रा की थी (वन० ३७ । ४१) । तपोबलसे ही गन्धमादनपर जाना सम्भव है—यह लोमशका वचन (वन० १४० । २२) । गन्धमादनपर विशाला बदरीका वृक्ष और भगवान् नर-नारायणका आश्रम है । वहाँ सदा यक्षलोग निवास करते हैं (वन० १४१ । २२–२४) । पाण्डवोंका गन्धमादनमें प्रवेश और वहाँकी प्राकृतिक स्थितिका वर्णन (वन० १४३ । २–६) । घटोत्कच और उसके साथियोंकी सहायतासे पाण्डवोंका गन्धमादनपर्वतपर पहुँचना (वन० १४५ अ०) । गन्धमादनकी प्राकृतिक शोभाका वर्णन (वन० १५८ अध्याय) । गन्धमादनपर भीमसेनद्वारा कुबेरके सखा राक्षसप्रवर मणिमान्‌का वध (वन० १६० । ७६-७७) । अर्जुनका इन्द्रलोकसे लौटकर गन्धमादनपर आना (वन० १६४ अध्याय) । लङ्कासे निर्वासित हुए कुबेरका गन्धमादनपर निवास (वन० २७५ । ३३) । यहाँ नर-नारायणने अवर्णनीय तपस्या की है (उद्योग० ९६ । १५) । (२) गन्धमादन-निवासी एवं गन्धमादन नामसे प्रसिद्ध एक वानर-यूथपति, जो दस खरब वानरोंकी सेना साथ लेकर श्रीरामके समीप आया था (वन० २८३ । ५) । (३) एक राक्षसराज, जो यक्षों, गन्धर्वों और निशाचरोंके साथ कुबेरकी सभामें उनकी उपासना करता है (सभा० १० । ३०-३१) ।

गन्धर्वतीर्थ–सरस्वती-तटवर्ती एक प्राचीन तीर्थ, जहाँ विश्वावसु आदि गन्धर्व नृत्य आदिका आयोजन करते रहते हैं । बलरामजीने इसकी यात्रा की थी (शल्य० ३७ । ९—१३) ।

गन्धर्वनगर–(नगर, ग्राम आदिका वह आभास, जो आकाशमें या स्थलमें दृष्टिदोषसे दिखायी पड़ता है । जब गरमीके दिनोंमें मरुभूमि या समुद्रमें वायुकी तहोंका घनत्व उष्णताके कारण असमान होता है, उस समय प्रकाशकी गतिके विच्छेदसे दूसरे शहर, गाँव, वृक्ष, नौका आदिका प्रतिबिम्ब आकाशमें पड़ता है और कभी-कभी उस आकाशके प्रतिबिम्बका प्रतिबिम्ब उलटकर पृथ्वीपर पड़ता है, जिससे कभी दूरके गाँव, नगर या तो आकाशमें उलटे टँगे या समीप दिखायी पड़ते हैं । यह दृष्टिदोष वायुकी असमान तहके कारण उस समय होता है, जब नीचेकी

तहकी वायु इतनी जल्दी हल्की हो जाती है कि ऊपरकी वायु और ऊपर नहीं जा सकती । गन्धर्वनगरका फल बृहत्संहितामें लिखा है—हिन्दी-शब्द-सागर) । महर्षियोंके अन्तर्धानको गन्धर्वनगरकी उपमा (आदि० १२५ । ३५) ।

गन्धर्वी–क्रोधवशाकी पुत्री । सुरभिकी कन्या । इससे घोड़ोंकी उत्पत्ति हुई (आदि० ६५ । ६७-६८) ।

गन्धवती–सत्यवतीने पराशरजीसे अपने शरीरके लिये उत्तम सुगन्धका वर माँगा । वर पाकर वह 'गन्धवती' एवं 'योजनगन्धा' नामसे प्रसिद्ध हुई (आदि० ६३ । ८०–८३) । (देखिये सत्यवती) ।

गभस्तिमान् द्वीप–एक द्वीप, जिसे शक्तिशाली सहस्रबाहुने जीता था (सभा० ३८ । २९ के बाद दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ७९२, कालम १) ।

गय–(१) 'आयु'के द्वारा स्वर्भानुकुमारीके गर्भसे उत्पन्न चतुर्थ पुत्र । पुरूरवाके पौत्र (आदि० ७५ । २५) । (२) एक प्राचीन राजा, जो अमूर्तरयाके पुत्र और राजर्षियोंमें श्रेष्ठ थे । शमठद्वारा इनके यज्ञका वर्णन (वन० ९५ । १८—२९) । ये यमराजकी सभामें विराजमान होते हैं (सभा० ८ । १८) । इन्होंने सम्पूर्ण तीर्थोंकी यात्रा की और वहाँके पावन जलके स्पर्श तथा महात्माओंके दर्शनसे प्रचुर धन एवं यश लाभ किये थे (वन० ९४ । १८-१९) । इनके यज्ञकी प्रशंसा (वन० १२१ । ३—१३) । विराट-नगरमें गोहरणके समय अर्जुन और कृपाचार्यका युद्ध देखनेके लिये ये इन्द्रके विमानपर बैठकर आये थे (विराट० ५६ । ९-१०) । इन्होंने हस्तिनापुर जाते हुए श्रीकृष्णकी मार्गमें परिक्रमा की थी (उद्योग० ८३ । २७) । इनपर मान्धाताकी विजय (द्रोण० ६२ । १०) । सृञ्जयको समझाते हुए नारदजीद्वारा इनके यज्ञका वर्णन (द्रोण० ६६ अध्याय)। इन्होंने गयामें यज्ञ किया । इनके यज्ञमें आयी हुई सरस्वतीका नाम 'विशाला' है (शल्य० ३८ । २०-२१)। श्रीकृष्णद्वारा इनके यज्ञका वर्णन (शान्ति० २९ । ११२—११९) । इनके द्वारा ब्राह्मणको पृथ्वीदान (शान्ति० २३४ । २६) । इन्होंने मांस-भक्षणका निषेध किया था (अनु० ११५ । ५९) । (३) एक परम पुण्यमय श्रेष्ठ पर्वत, जो राजा गयद्वारा सम्मानित हुआ है । वहीं देवर्षिसेवित कल्याणमय ब्रह्मसरोवर है । गयामें जाकर श्राद्ध करनेसे मनुष्यकी बीस पीढ़ियोंका उद्धार हो जाता है (वन० ८७ । ८–१०) । (४) एक देश, जिसके भीतर गय पर्वत और गया तीर्थ है । इस देशके लोग राजा युधिष्ठिरके यहाँ भेंट लेकर आये थे (सभा० ५२ । १६) ।

गयशिर–गया तीर्थके अन्तर्गत जो गय नामक पर्वत है, उसीको गयशिर अथवा गयशीर्ष कहते हैं, वहीं अक्षयवट है (वन० ८७ । ११; वन० ९५ । ९) ।

गयशीर्ष–गयाका ही तीर्थविशेष, जहाँ अक्षयवट है और जहाँ पितरोंके लिये दिया हुआ अन्न अक्षय होता है (वन० ८७ । ११; वन० ९५ । ९) ।

गया–एक परम पावन तीर्थ, जहाँ जाकर ब्रह्मचर्य-पालनपूर्वक एकाग्र-चित्त होनेसे मनुष्य अश्वमेध-यज्ञका फल पाता और अपने कुलका उद्धार कर देता है (वन० ८४ । ८२; वन० ९५ । ८) ।

गरिष्ठ–एक मुनि, जो इन्द्रसभामें रहकर वज्रधारी इन्द्रकी उपासना करते हैं (सभा० ७ । १३) ।

गरुड़–कश्यप और विनताके परम तेजस्वी पुत्र, जो भगवान् विष्णुके वाहन और ध्वज हैं (आदि० २३ । १२) । ये समय आनेपर अपनी माताकी सहायताके बिना ही अण्डा फोड़कर बाहर निकल आये । इनमें महान् साहस और बल-पराक्रम था । ये अपने तेजसे सम्पूर्ण दिशाओंको प्रकाशित करते थे । इच्छानुसार रूप धारण करने, चलने, पराक्रम दिखानेमें समर्थ थे । प्रज्वलित अग्निपुञ्जके समान अत्यन्त भयङ्कर जान पड़ते थे । इनकी पिङ्गल-वर्णकी आँखें बिजलीके समान चमकती थीं । ये पैदा होते ही सहसा बढ़कर विशाल हो गये और आकाशमें उड़ चले । देवता इन्हें बड़वानलके समान भीषण देख अग्निदेवकी शरणमें गये । अग्निदेवने बताया कि ये महातेजस्वी विनतानन्दन गरुड़ हैं । ये कश्यपकुमार देवताओंके हितैषी और सर्पोंके संहारक हैं (आदि० २३ । ५—१३) । देवताओंद्वारा इनकी स्तुति (आदि० २३ । १५—२६) । देवताओंद्वारा स्तुति करनेपर इनका अपने तेजको समेटना (आदि० २३ । २७; आदि० २४ । २) । अपने और माताके दास्यभावसे छूटनेके लिये इनका सर्पोंसे उपाय पूछना (आदि० २७ । १४-१५) । स्वर्ग जाते समय इनके पूछनेपर माताका इनको मार्गका भोजन बतलाना (आदि० २८ । २) । माताका इनके पूछनेपर इन्हें ब्राह्मणकी महिमा बताना और उन्हें न खानेका आदेश देना (आदि० २८ । ३–१२) । स्वर्ग जाते समय इनको माताका आशीर्वाद (आदि० २८ । १४–१६) । निषादोंके साथ एक सस्त्रीक ब्राह्मणका इनके मुँहमें आना, इनका कण्ठ जलना तथा इनके द्वारा उसका परित्याग (आदि० २९ । २–५) । पिता कश्यपका इनको कछुए तथा हाथीके पूर्वजन्मका इतिहास बताकर उन्हें खानेका आदेश देना (आदि० २९ । १३–३२) । इनके द्वारा हाथी, कछुए एवं बालखिल्य

ऋषियोंको लेकर उड़नेकी अद्भुत घटना (आदि० २९ । ३७ से ३० । २५)। बालखिल्य मुनियोंद्वारा इनका नामकरण (आदि० ३० । ६-७) । इनके पिताके स्तुति करनेपर बालखिल्य मुनियोंद्वारा उस शाखाका परित्याग (आदि० ३० । १६) । इनके स्वर्गके समीप जानेपर वहाँ अनेक प्रकारके अशुभसूचक उत्पात होना (आदि० ३० । ३२-३८)। भयभीत हुए इन्द्रको बृहस्पतिका अमृतके लिये गरुडके आनेकी सूचना देना (आदि० ३० । ४०-४२) । अमृत हरण करनेके लिये इनको स्वर्ग आते देख इन्द्रका देवताओंको सावधान करना (आदि० ३० । ४२-४४) । इनकी जन्मकथा तथा इनका पक्षियोंके इन्द्रपदपर अभिषेक (आदि० ३१ । ३४-३५; आदि० ३२ । १-२५) । अपना लघु रूप बनाकर चक्रमें इनका घुसना और अमृतके स्थानमें प्रवेश करना । वहाँ अमृतरक्षक अद्भुत पराक्रमी दो सर्पोंको मारकर इनका अमृतपात्रको लेकर उड़ना (आदि० ३३ । १-११) । मार्गमें इनका भगवान् विष्णुसे उनके ध्वजपर रहने तथा बिना अमृत पिये अजर-अमर होनेका वर पाना एवं उनके लिये भी स्वयं वाहन होनेका वर देना (आदि० ३३ । १२-१६) । इन्द्रके साथ इनका युद्ध और मित्रता (आदि० ३३ । २८ से ३४ । ७) । इन्द्रके कथनानुसार गरुड़के द्वारा नागोंका अमृतकी प्राप्तिसे वञ्चित होना, इन्द्रके मनोरथकी पूर्ति और विनताका दासीभावसे छुटकारा (आदि० ३४ । ८-२०) । इनके कुशोंपर अमृत रखनेसे उनका पवित्र होना (आदि० ३४ । २४) । ये अर्जुनके जन्म-समयमें वहाँ पधारे थे (आदि० १२२ । ५०) । श्रीकृष्णके ध्वजपर गरुडकी स्थिति (सभा० २४ । २२-२४) । इनका ऋद्धिमान् नामक नागको पकड़ना (वन० १६० । १५) । इनकी गर्वपूर्ण आत्मप्रशंसा (उद्योग० १०५ । ३-१७) । भगवान् विष्णुद्वारा इनके गर्वका नाश (उद्योग० १०५ । २२) । इनकी भगवान्से क्षमा-याचना (उद्योग० १०५ । २७-२९) । गुरुदक्षिणाके लिये चिन्तित हुए गालवको इनका आश्वासन देना (उद्योग० १०७ । १७-१९) । गालवसे पूर्व दिशाका वर्णन करना (उद्योग० १०८ अध्याय) । गालवसे दक्षिण दिशाका वर्णन करना (उद्योग० १०९ अध्याय) । गालवसे पश्चिम दिशाका वर्णन करना (उद्योग० ११० अध्याय) । गालवसे उत्तर दिशाका वर्णन करना (उद्योग० १११ अध्याय) । ऋषभ पर्वतपर पंखहीन होना और शाण्डिलीसे क्षमा-याचना करना (उद्योग० ११३ । ८-११) । शाण्डिलीके वरदानसे पंखोंकी प्राप्ति (उद्योग० ११३ । १७) । गालवको धनके लिये राजर्षि ययातिके पास चलनेका परामर्श (उद्योग० ११४ । १-८) । ययातिसे अपने आगमनका प्रयोजन बताना (उद्योग० ११४ । ११-२०) । ययातिकी कन्याके मिलनेपर गालवसे विदा लेना (उद्योग० ११५ । १६) । गालवको गुरुदक्षिणाके लिये छः सौ घोड़े और माधवीको भी गुरुकी सेवामें समर्पित करनेके लिये सम्मति देना (उद्योग० ११९ । ९-१०) । इनके द्वारा स्कन्दको अपने पुत्र मयूरका दान (शल्य० ४६ । ५१) । श्रीनारायणकी आज्ञासे राजा उपरिचर वसुको पातालसे उठाकर आकाशचारी बनाना (शान्ति० ३३७ । ३७) । ऋषियोंके समाजमें नारायणकी महिमाके विषयमें अपना अनुभव सुनाना (अनु० १३ । दा० पाठ) । इनका कार्तिकेयको मयूर भेंट करना (अनु० ८६ । २१) ।

महाभारतमें आये हुए गरुड़के नाम—अरुणानुज, भुजगारि, गरुत्मान्, काश्यपेय, खगराट्, पक्षिराट्, पक्षिराज, पतगपति, पतगेश्वर, सुपर्ण, तार्क्ष्य, वैनतेय, विनतानन्दवर्धन, विनतासूनु, विनतासुत, विनतात्मज आदि ।

गरुड़व्यूह—सेनाकी मोर्चाबंदीकी एक विधि, जिसके अनुसार सैनिकोंको गरुड़की आकृतिमें खड़ा किया जाता है (भीष्म० ५६ । २) ।

गर्ग—एक प्राचीन महर्षि । इनका द्रोणाचार्यके पास आकर उनसे युद्ध बंद करनेके लिये कहना (द्रोण० १९० । ३५-४०) । महाराज पृथुके दरबारमें ज्यौतिषी होना (शान्ति० ५९ । १११) । महात्मा गर्गने किसी समय गन्धर्वराज विश्वावसुको वेद्य तत्त्वकी नित्यताका उपदेश दिया था (शान्ति० ३१८ । ५९-६३) । शिवमहिमाके विषयमें युधिष्ठिरसे अपना अनुभव बताना (अनु० १८ । ३८-३९) ।

गर्गस्रोत—सरस्वती-तटवर्ती एक तीर्थ, जहाँ तपस्यासे पवित्र अन्तःकरणवाले वृद्धगर्गने कालका ज्ञान, कालकी गति, ग्रहों और नक्षत्रोंके उलट-फेर आदि बातोंकी जानकारी की (शल्य० ३७ । १४-१८) ।

गवय—एक महापराक्रमी वानरराज, जो एक अरब सेनाके साथ श्रीरामके समीप पधारे थे (वन० २८३ । ३) ।

गवल्गण—मुनियोंके समान ज्ञानी एवं धर्मात्मा सञ्जयके पिता (आदि० ६३ । ९७) ।

गवाक्ष—(१) एक गोलांगूल (लंगूर) जातिका वानर, जो देखनेमें बड़ा भयङ्कर था । अपने साथ साठ सहस्र कोटि (६ खरब) वानर-सेना लेकर श्रीरामके सामने उपस्थित हुआ (वन० २८३ । ४) । (२) सुबलपुत्र शकुनिका

एक छोटा भाई,जिसने अन्य भाइयोंके साथ रहकर पाण्डव-सेनाके दुर्जय व्यूहमें प्रवेश किया था (भीष्म० ९० । २७—३०) । इरावान्‌द्वारा इसका वध (भीष्म० ९० । ४५-४६) ।

गवायन–एक यज्ञका नाम (वन० ८४ । १०२) ।

गविष्ठ–दस विख्यात दानवोंमेंसे एक (आदि० ६५ । ३०) । यही राजा द्रुमसेनके रूपमें प्रकट हुआ था (आदि० ६७ । ३४-३५) ।

गाङ्गेय–(१) गङ्गानन्दन देवव्रत भीष्म (आदि० ९९ । ४७) । गङ्गानन्दन देवव्रत भीष्म (अनु० २६ । २) । (२) गङ्गापुत्र भगवान् स्कन्द (शल्य० ४४ । १६) । (३) गङ्गाजीका जल (वन० ३ । ३५) ।

गाण्डीव–वरुणदेवका एक दिव्य धनुष, जो अग्निदेवके द्वारा अर्जुनको दो अक्षय तरकसोंके साथ प्राप्त हुआ (आदि० ६१ । ४७-४८; उद्योग० १५८ । ६) । अग्निका वरुणसे अर्जुनके लिये गाण्डीव धनुष, दो अक्षय तरकस और कपिध्वज रथ माँगना तथा वरुणका उनकी माँग स्वीकार करके वे सब वस्तुएँ प्रस्तुत करना (आदि० २२४ । ३—१७) । अर्जुनद्वारा गाण्डीव-ग्रहण (आदि० २२४ । २०) । गाण्डीव धनुष शत्रुओंकी सेनाके लिये कालरूप है । यह सब आयुधोंसे विशाल है । यह अकेला ही एक लाख धनुषोंके समान है । देवताओं, दानवों और गन्धर्वोंने इसका बहुत वर्षोंतक पूजन किया है । इसमें कभी कहीं कोई चोटका चिह्न नहीं आया है । पूर्वकालमें ब्रह्माजीने इसे एक हजार वर्षोंतक धारण किया था । तदनन्तर प्रजापतिने पाँच सौ तीन वर्षोंतक इसे अपने पास रक्खा । फिर इन्द्रने पचासी वर्षोंतक, सोमने पाँच सौ वर्षोंतक तथा राजा वरुणने सौ वर्षोंतक इसे धारण किया था (विराट० ४३ । १०६) । वज्रकी गाँठको 'गाण्डीव' कहा गया है । यह धनुष इसीका बना हुआ है । इसलिये 'गाण्डीव' कहलाता है । जगत्‌का संहार करनेके लिये इसका निर्माण हुआ है । देवतालोग सदा इसकी रक्षा करते हैं (उद्योग० ९८ । १९) । 'गाण्डीव दूसरेको दे दो' ऐसा कहनेवालेका सिर काट लेना यह अर्जुनका उपांशु व्रत था (कर्ण० ६९ । ९-१०) । अग्निदेवके कहनेपर वरुणको वापस देनेके लिये अर्जुनने गाण्डीव धनुष और अक्षय तरकसोंको जलमें डाल दिया था (महाप्रस्था० १ । ३६—४२) ।

गाधि–विश्वामित्रके पिता । गाधिके पिताका नाम 'कुशनाभ' था (आदि० ७४ । ६९ के बाद दाक्षिणात्य पाठ) । ये कुशिक (या कुशनाभ) के पुत्र तथा कान्यकुब्ज देशके अधिपति थे (आदि० १७४ । ३) । इनके द्वारा ऋचीक मुनिको अपनी कन्या सत्यवतीका दान (वन० ११५ । २८; शान्ति० ४९ । ७) । तीर्थयात्राके प्रसङ्गसे इनका ऋचीकके आश्रमपर जाना (शान्ति० ४९ । १३) । कुशिकपुत्र गाधि दीर्घकालतक संतान-हीन थे; अतः संतानकी इच्छासे पुण्य कर्म करनेके लिये वे वनमें रहने लगे । वहाँ सोमयाग करनेसे उन्हें एक कन्या हुई, जिसका नाम सत्यवती था । इसे ऋचीक मुनिने माँगा । तब गाधिने शुल्क लेकर कन्या देनेकी इच्छा प्रकट की और चन्द्रमाके समान कान्तिमान् तथा श्यामवर्णके एक कर्णवाले एक हजार घोड़े लेकर उन्होंने अपनी कन्या उन ब्रह्मर्षिको दे दी (अनु० ४ । ६—२०) । ये अपने पुत्र विश्वामित्रको राज्यसिंहासनपर बिठाकर स्वर्गलोकको चले गये (शल्य० ४० । १६) ।

गान्धर्व–एक प्रकारका विवाह (आदि० ७३ । ९) । वर और वधू दोनों एक-दूसरेको स्वेच्छासे स्वीकार कर लें, यह गान्धर्व विवाह है । यह विवाह क्षत्रियोंके लिये धर्मानुकूल है (आदि० ७३ । १३) ।

गान्धार–एक प्राचीन देश, आधुनिक मतके अनुसार इसमें सिन्धु और कुनर नदीसे लेकर काबुल नदीतकका प्रदेश और पेशावर तथा मुल्तान सम्मिलित हैं । गान्धारीके पिता सुबल यहींके राजा थे (आदि० १०९ । ११) ।

गान्धारी–(१) पूरुवंशीय महाराज अजमीढ़की द्वितीय पत्नी (आदि० ९५ । ३७) । (२) गान्धारराज सुबलकी पुत्री (आदि० १०९ । ९) । ये मतिके अंशसे उत्पन्न हुई थीं (आदि० ६७ । १६०) । इन्होंने भगवान् शङ्करकी आराधना करके उनसे अपने लिये सौ पुत्र प्राप्त होनेका वरदान पा लिया था (आदि० १०९ । १०) । पिताद्वारा इनका धृतराष्ट्रके लिये वाग्दान (आदि० १०९ । १२) । गान्धारी पतिव्रत-परायणा थी । उन्होंने जब सुना कि मेरे भावी पति अंधे हैं और माता-पिता मेरा विवाह उन्हींके साथ करना चाहते हैं, तब रेशमी वस्त्र लेकर उसके कई तह करके उसीसे अपनी आँखें बाँध लीं । उन्होंने निश्चय कर लिया था कि मैं सदा पतिके अनुकूल रहूँगी । उनके दोष नहीं देखूँगी (आदि० १०९ । १३–१५) । शकुनिद्वारा इनके विवाह-संस्कारका सम्पादन (आदि० १०९ । १५–१७) । सुन्दरी गान्धारीने अपने उत्तम स्वभाव, सदाचार तथा सद्व्यवहारोंसे समस्त कौरवोंको प्रसन्न कर लिया । अपने सुन्दर बर्तावसे समस्त गुरुजनोंकी प्रसन्नता प्राप्त करके उत्तम व्रतका पालन करनेवाली पतिपरायणा गान्धारीने कभी दूसरे पुरुषोंका नामतक नहीं लिया (आदि० १०९ । १८–१९) । इनके द्वारा व्यासका सत्कार और उनसे

सौ पुत्रोंकी प्राप्तिके लिये वर-याचना (आदि० ११४ । ८)। गान्धारीका गर्भ-धारण । कुन्तीके पुत्र होनेका समाचार सुनकर महान् दुःखके कारण अपने उदरपर आघात और इनके गर्भसे एक मांस-पिंडका प्रादुर्भाव (आदि० ११४ । ९–१२) । व्यासजीके आदेशानुसार सौ टुकड़ोंमें विभक्त हुए उस मांस-पिण्डकी रक्षा-व्यवस्था होनेपर उससे सौ पुत्रोंकी उत्पत्ति (आदि० ११४ । १७–२२) । पुत्रीके लिये इनका मनोरथ एवं व्यासद्वारा उसकी पूर्ति (आदि० ११५ । ९–१७) । इनके द्वारा धृतराष्ट्रको चेतावनी (सभा० ७५ । २–१०) । इनका दुर्योधनको समझाना (उद्योग० ६९ । ९–१०) । युद्ध होनेके विषयमें इनका धृतराष्ट्रको ही दोषी बताना (उद्योग० १२९ । १०–१५) । पाण्डवोंको आधा राज्य देकर संधि करनेके लिये दुर्योधनको समझाना (उद्योग० १२९ । १९–५४) । कर्णवधका समाचार सुनकर मूर्छित होकर गिरना (कर्ण० ४ । ५; कर्ण० ९६ । ५५)। श्रीकृष्णके समझानेपर उन्हें उत्तर देना (शल्य० ६३ । ६६–६८) । पाण्डवोंको शाप देनेकी इच्छा करना (स्त्री० १४ । २) । व्यासजीके समझानेपर उन्हें उत्तर देना (स्त्री० १४ । १४–२१) । भीमसेनपर कुपित होकर उनसे अन्यायका कारण पूछना (स्त्री० १५ । १२–१४; स्त्री० १५ । २१–२३) । युधिष्ठिरपर कुपित होकर उन्हें पूछना और इनकी तनिक-सी दृष्टि पड़ते ही युधिष्ठिरके पैरोंके नखोंका काला पड़ जाना (स्त्री० १५ । २४–३०) । कुन्ती और द्रौपदीको धीरज देना (स्त्री० १५ । ४१–४४) । युद्धस्थलमें मारे गये स्वजनोंको देखकर श्रीकृष्णके समक्ष विलाप करना (स्त्री० १६ । १८–६०) । दुर्योधनको मरा हुआ देखकर श्रीकृष्णके सम्मुख विलाप करना (स्त्री० १७ । ५–३२) । अपने अन्य पुत्रों तथा दुःशासनको देखकर श्रीकृष्णके सम्मुख इनका करुण रोदन (स्त्री० १८ अध्याय) । विकर्ण, दुर्मुख, चित्रसेन, विविंशति और दुःसहको देखकर श्रीकृष्णके सम्मुख इनका विलाप (स्त्री० १९ अध्याय) । इनके द्वारा श्रीकृष्णसे उत्तरा और विराट-कुलकी स्त्रियोंके शोक और विलापका वर्णन (स्त्री० २० अध्याय) । कर्णके शवको देखकर उसके शौर्य तथा उसकी स्त्रीके विलापका श्रीकृष्णके सम्मुख वर्णन (स्त्री० २१ अध्याय) । अवन्तीनरेश, जयद्रथ तथा दुःशलाको देखकर इनका श्रीकृष्णके सम्मुख शोक प्रकट करना (स्त्री० २२ अध्याय) । शल्य, भगदत्त, भीष्म और द्रोणको देखकर श्रीकृष्णके सम्मुख इनका विलाप (स्त्री० २३ अध्याय) । भूरिश्रवाकी पत्नियोंका विलाप तथा शकुनिको देखकर श्रीकृष्णके सम्मुख इनका शोकोद्गार (स्त्री० २४ अध्याय) । अन्यान्य वीरोंको मरा हुआ देखकर विलाप करना और कुपित होकर श्रीकृष्णको शाप देना (स्त्री० २५ । १–३६; स्त्री० २५ । ४३–४६) । राजा धृतराष्ट्रके साथ इनका वनको प्रस्थान (आश्रम० १५ । ८–९) । वनमें व्यासजीके समक्ष खड़ी होकर इनका उनसे महाराज धृतराष्ट्र तथा द्रौपदी, सुभद्रा, कुन्ती आदि सभी कुरुकुलकी स्त्रियोंके स्वजनोंके लिये होनेवाले शोकका वर्णन करना और सबको मरे हुए सम्बन्धियोंके दर्शन करानेका प्रस्ताव करना (आश्रम० २९ । ३७–४९) । व्यासजीकी कृपासे इनका राजा धृतराष्ट्र तथा कुरुकुलकी स्त्रियोंके साथ गङ्गाजीसे प्रकट हुए अपने परलोकवासी स्वजनोंके दर्शन करना (आश्रम० ३२ अध्याय) । धृतराष्ट्र और कुन्तीके साथ इनका गङ्गाद्वारके वनमें दावानलसे दग्ध होना (आश्रम० ३७ । ३१–३२) । युधिष्ठिरका इनके लिये जलाञ्जलि देना तथा नाना प्रकारकी वस्तुओंका दान एवं श्राद्ध-कर्म करना (आश्रम० ३९ अध्याय) । 'गान्धारीके शापकी सफलताका अवसर प्राप्त हुआ है'–ऐसी श्रीकृष्णकी मान्यता (मौसल० २ । २१) । धृतराष्ट्रके साथ इनको कुबेरके दुर्लभ लोकोंकी प्राप्ति (स्वर्गा० ५ । १४) । (३) उमादेवीकी अनुगामिनी सहचरी (वन० २३१ । ४८)।

महाभारतमें आये हुए गान्धारीके नाम–गान्धारराजदुहिता, सौबलेयी, सौबली, सुबलजा, सुबलपुत्री, सुबलात्मजा आदि।

गायत्री–चौबीस अक्षरोंका एक वैदिक मन्त्र; स्थावर-जङ्गम उन्नीस प्राणी हैं। इनके साथ पाँच महाभूतोंको गिन लेनेपर इनकी संख्या चौबीस हो जाती है । गायत्रीके भी इतने ही अक्षर होते हैं; इसलिये इन चौबीस भूतोंको भी लोकसम्मत गायत्री कहते हैं । जो इस सर्वगुणसम्पन्न पुण्यमयी गायत्रीको यथार्थरूपसे जानता है वह कभी नष्ट नहीं होता है (भीष्म० ४ । १५–१६) । गायत्री त्रिपुर-विजयके समय महादेवजीके रथके ऊपरी भागकी बन्धन-रज्जु बनी थी (कर्ण० ३४ । ३५) । कन्या गायत्रीने कार्तवीर्य अर्जुनको ब्राह्मणोंकी श्रेष्ठताके विषयमें चेतावनी देते हुए आकाशवाणीद्वारा अपना मन्तव्य प्रकट किया था (अनु० १५२ । १४, २०) ।

गायत्री-स्थान–एक तीर्थस्थान, जहाँ तीन रात निवास करनेवाला सहस्र गोदानका फल पाता है (वन० ८५ । २८) ।

गायन–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ६७) ।

गार्ग्य (१)–एक प्राचीन ऋषि, जो देवराज इन्द्रकी सभामें विराजमान होते हैं (सभा० ७ । १८ के बाद दाक्षिणात्य पाठ) । विश्वामित्रके ब्रह्मवादी पुत्रोंमेंसे एक (अनु० ४ । ५५) । इनके द्वारा धर्मके रहस्यका वर्णन

(अनु० १२७ । ९-१४)। (२) एक भारतीय जनपद, जिसे भगवान् श्रीकृष्णने जीता था (द्रोण० ११ । १५)।

गार्दभि–विश्वामित्रके एक ब्रह्मवादी पुत्र (अनु० ४।५९)।

गार्हपत्य–(१) सात पितरोंमेंसे एक (सभा० ११ । ४६)। (२) एक अग्नि (वन० २२४ । ३५)।

गालव–युधिष्ठिरकी सभामें विराजनेवाले एक ऋषि (सभा० ४ । १५)। ये इन्द्रकी सभामें भी बैठते हैं (सभा० ७। १०)। गुरुदक्षिणा माँगनेके लिये इनका गुरु विश्वामित्र-से हठ करना (उद्योग० १०६ । २५)। गुरुदक्षिणाके लिये आठ सौ घोड़े पानेकी चिन्ता (उद्योग० १०७ । ३-१५)। गरुडकी पीठपर बैठकर पूर्व दिशाकी ओर जाते हुए गरुडके वेगसे इनका व्याकुल होना (उद्योग० ११२ । ५-१८)। गरुडके साथ धनके लिये ययातिके पास जाना (उद्योग० ११४ । ९) । ययातिकन्या माधवी-को लेकर अयोध्यानरेश हर्यश्वके पास जाना (उद्योग० ११५ । १८)। राजा हर्यश्वसे दो सौ घोड़े शुल्करूपमें लेकर माधवीको एक पुत्र उत्पन्न करनेके लिये उनके हाथमें सौंपना (उद्योग० ११६ । १५)। पुत्रोत्पत्तिके बाद पुनः माधवीको लेकर इनका दिवोदासके पास जाना (उद्योग० ११६ । २२)। दो सौ घोड़े शुल्करूपमें लेकर माधवीको दिवोदासके हाथमें एक पुत्रकी उत्पत्तिके लिये देना (उद्योग० ११७ । ७)। पुत्रोत्पत्तिके पश्चात् वहाँसे माधवीको लेकर गालवका उशीनरके पास जाना और उशीनरको माधवीके गर्भसे दो पुत्र उत्पन्न करनेकी प्रेरणा देते हुए उनसे चार सौ घोड़े माँगना (उद्योग० ११८। ३-८)। गरुडकी सलाहसे विश्वामित्रको छः सौ घोड़े और माधवीको देकर गुरुदक्षिणा चुकाना (उद्योग० ११८ । १४)। फिर एक पुत्रकी उत्पत्तिके बाद माधवीको राजा ययातिको लौटाकर इनका वनको जाना (उद्योग० ११८ । २४) । स्वर्गसे गिरे हुए ययातिको इनका अपने तपका आठवाँ भाग देना (उद्योग० १२१ । २८) । नारदजीसे श्रेयके विषयमें प्रश्न करना (शान्ति० २८७ । ५-११)। शिवमहिमा-के विषयमें युधिष्ठिरसे अपना अनुभव सुनाना (अनु० १८ । ५२-५८)। अगस्त्यजीके कमलोंकी चोरी होने-पर शपथ करना (अनु० ९४ । ३७)। महर्षि गालव विश्वामित्रजीके ब्रह्मवादी पुत्रोंमेंसे एक थे (अनु० ४। ५२)। इनके पुत्रका नाम शृङ्गवान् था, जो एक महर्षि थे और जिन्होंने वृद्धकन्यासे विवाह किया था (शल्य० ५२ । १४-१५)। (२) एक बाभ्रव्यगोत्रीय ऋषि, जो वेदके क्रमविभागके पारङ्गत विद्वान् थे (शान्ति० ३४२ । १०४)।

गिरिका–शुक्तिमती नदीकी पुत्री, जिनका जन्म कोलाहल पर्वतके द्वारा शुक्तिमतीके गर्भसे हुआ था (आदि० ६३ । ३७)। यही राजा उपरिचर वसुकी पत्नी हुई (आदि० ६३ । ३९)।

गिरिगह्वर–पूर्वोत्तर भारतका एक जनपद (भीष्म० ९ । ४२)।

गिरिप्रस्थ–निषधदेशका एक पर्वत, जिसके आश्रयमें छिपे रहकर इन्द्रने अपना कार्य सिद्ध किया था (वन० ३१५ । १३)।

गिरिव्रज–मगधदेशकी प्राचीन राजधानी। जरासंध गिरिव्रज-में ही रहता था। उसके समयमें गिरिव्रजकी जो प्राकृतिक स्थिति थी, उसका वर्णन श्रीकृष्णने अर्जुनसे इस प्रकार किया था—यहाँ पशुओंकी अधिकता है, जलकी सदा पूर्ण सुविधा रहती है, रोग-व्याधिका प्रकोप नहीं होता। सुन्दर महलोंसे भरा-पूरा यह नगर बड़ा मनोहर जान पड़ता है । यहाँ विहारोपयोगी विपुल, वराह, वृषभ (ऋषभ), ऋषिगिरि (मातंग) तथा चैत्यक नामक पर्वत हैं। बड़े-बड़े शिखरोंवाले ये पाँचों सुन्दर पर्वत शीतल छायावाले वृक्षोंसे सुशोभित हैं और एक साथ मिलकर एक-दूसरेके शरीरका स्पर्श करते हुए मानो गिरिव्रज नगरकी रक्षा कर रहे हों। यहाँ अर्बुद और शक्रवापी नामवाले दो नाग रहते हैं। स्वस्तिक और मणि नामक नागोंके भी यहाँ उत्तम भवन हैं। यहाँ सदा मेघ समयपर वर्षा करते हैं (सभा० २१ ।१-१०)। यहाँ जरासंधने अपनेद्वारा जीते गये नरेशोंको कैद करके रखा था (सभा० १४ । ६३)। गिरिव्रजसे मथुराकी ओर जरासंधने अपनी गदा फेंकी थी (सभा० १९ । २३-२४)। श्रीकृष्ण, अर्जुन और भीमसेन गिरिव्रजमें गये । भीमने वहाँ जरासंधको मारा और भगवान् श्रीकृष्णने बंदी राजाओंको कैदसे छुड़ाया। फिर भयभीत हो शरणमें आये हुए जरासंधपुत्रको राजाके पदपर अभिषिक्त किया (सभा० २४ अध्याय)। भीमसेनने पूर्वदिग्विजयके समय जरासंधके पुत्रको 'कर' देनेकी शर्तपर उसके राज्यपर प्रतिष्ठित कर दिया (सभा० ३० । १७-१८) । गिरिव्रजमें ही राजर्षि धुन्धुमार देवताओंके वरदानको त्यागकर सोये थे (अनु० ६ । ३९)।

गीतप्रिया–स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । ७)।

गीता–कुरुक्षेत्रमें युद्धके अवसरपर स्वजनोंके वधकी आशङ्कासे मोहग्रस्त हुए अर्जुनके शोक, चिन्ता और दैन्यका निवारण करके उन्हें कर्तव्य कर्ममें निष्काम भावसे

लगा देनेके लिये भगवान् श्रीकृष्णने अर्जुनको जो उपदेश दिया था, वही 'गीता' (अथवा 'श्रीमद्भगवद्गीता') के नामसे विख्यात है । वेदव्यासजीने गीताके इस प्रसङ्गको भीष्मपर्वके श्रीमद्भगवद्गीतापर्वमें अध्याय २५ से ४२ तक लिपिबद्ध किया है । इसमें कुल सात सौ श्लोक हैं। श्रीमद्भगवद्गीताके प्रत्येक अध्यायके विषयोंका संक्षिप्त दिग्दर्शन इस प्रकार है—दोनों सेनाओंके प्रधान-प्रधान वीरों एवं शङ्खध्वनिका वर्णन तथा स्वजन-वधके पापसे भयभीत हुए अर्जुनका विषाद **(भीष्म० २५ अध्याय)**। अर्जुनको युद्धके लिये उत्साहित करते हुए भगवान्के द्वारा नित्यानित्य वस्तुके विवेचनपूर्वक सांख्ययोग, कर्मयोग एवं स्थितप्रज्ञकी स्थिति और महिमाका प्रतिपादन **(भीष्म० २६ अध्याय)**। ज्ञानयोग और कर्मयोग आदि समस्त साधनोंके अनुसार कर्तव्य कर्म करनेकी आवश्यकताका प्रतिपादन एवं स्वधर्म-पालनकी महिमा तथा कामनिरोधके उपायका वर्णन **(भीष्म० २७ अध्याय)**। सगुण भगवान्के प्रभाव, निष्काम कर्मयोग तथा योगी महात्मा पुरुषोंके आचरण और उनकी महिमाका वर्णन करते हुए विविध यज्ञों एवं ज्ञानकी महिमाका वर्णन **(भीष्म० २८ अध्याय)**। सांख्ययोग, निष्काम कर्मयोग, ज्ञानयोग एवं भक्तिसहित ध्यानयोगका वर्णन **(भीष्म० २९ अध्याय)**। निष्काम कर्मयोगका प्रतिपादन करते हुए आत्मोद्धारके लिये प्रेरणा तथा मनोनिग्रहपूर्वक ध्यानयोग एवं योगभ्रष्टकी गतिका वर्णन **(भीष्म० ३० अध्याय)**। ज्ञान-विज्ञान, भगवान्की व्यापकता, अन्य देवताओंकी उपासना एवं भगवान्को प्रभावसहित न जाननेवालोंकी निन्दा और जाननेवालोंकी महिमाका कथन **(भीष्म० ३१ अध्याय)**। ब्रह्म, अध्यात्म और कर्मादिके विषयमें अर्जुनके सात प्रश्न और उनका उत्तर एवं भक्तियोग तथा शुक्ल और कृष्ण मार्गोंका प्रतिपादन **(भीष्म० ३२ अध्याय)**। ज्ञान-विज्ञान और जगत्की उत्पत्तिका, आसुरी और दैवी सम्पदावालोंका, प्रभावसहित भगवान्के स्वरूपका, सकाम-निष्काम उपासनाका एवं भगवद्भक्तिकी महिमाका वर्णन **(भीष्म० ३३ अध्याय)**। भगवान्की विभूति और योगशक्तिका तथा प्रभावसहित भक्तियोगका कथन, अर्जुनके पूछनेपर भगवान्द्वारा अपनी विभूतियोंका और योगशक्तिका पुनः वर्णन **(भीष्म० ३४ अध्याय)**। विश्वरूपका दर्शन करानेके लिये अर्जुनकी प्रार्थना, भगवान् और संजयद्वारा विश्वरूपका वर्णन, अर्जुनद्वारा भगवान्के विश्वरूपका देखा जाना, भयभीत हुए अर्जुनद्वारा भगवान्की स्तुति-प्रार्थना, भगवान्द्वारा विश्वरूप और चतुर्भुजरूपके दर्शनकी महिमा और केवल अनन्य भक्तिसे ही भगवान्की प्राप्तिका कथन **(भीष्म० ३५ अध्याय)**। साकार और निराकारके उपासकोंकी उत्तमताका निर्णय तथा भगवत्प्राप्तिके उपायका एवं भगवत्प्राप्तिवाले पुरुषोंके लक्षणोंका वर्णन **(भीष्म० ३६ अध्याय)**। ज्ञानसहित क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ और प्रकृति-पुरुषका वर्णन **(भीष्म० ३७ अध्याय)**। ज्ञानकी महिमा और प्रकृति-पुरुषसे जगत्की उत्पत्तिका, सत्त्व, रज, तम—तीनों गुणोंका, भगवत्प्राप्तिके उपायका एवं गुणातीत पुरुषके लक्षणोंका वर्णन **(भीष्म० ३८ अध्याय)**। संसार-वृक्षका, भगवत्प्राप्तिके उपायका, जीवात्माका प्रभावसहित परमेश्वरके स्वरूपका एवं क्षर-अक्षर और पुरुषोत्तमके तत्त्वका वर्णन **(भीष्म० ३९ अध्याय)**। फलसहित दैवी और आसुरी सम्पदाका वर्णन तथा शास्त्रविपरीत आचरणोंको त्यागने और शास्त्र-अनुकूल आचरण करनेके लिये प्रेरणा **(भीष्म० ४० अध्याय)**। श्रद्धाका और शास्त्रविपरीत घोर तप करनेवालोंका वर्णन, आहार, यज्ञ, तप और दानके पृथक्-पृथक् भेद तथा ॐ, तत्, सत्के प्रयोगकी व्याख्या **(भीष्म० ४१ अध्याय)**। त्यागका, सांख्य-सिद्धान्तका, फलसहित वर्ण-धर्मका, उपासनासहित ज्ञाननिष्ठाका, भक्तिसहित निष्काम कर्मयोगका एवं गीताके माहात्म्यका वर्णन **(भीष्म० ४२ अध्याय)**।

गुडाकेश—अर्जुनका एक नाम (आदि० १३८ । ८) । (निद्राको जीत लेनेके कारण अर्जुनका नाम गुडाकेश हुआ)। (देखिये अर्जुन)

गुणकेशी—इन्द्रके प्रिय सारथि मातलिकी कन्या **(उद्योग० ९७ । १३)**। नागकुमार सुमुखके साथ विवाह हुआ **(उद्योग० १०४ । २९)**।

गुणमुख्या—स्वर्गकी एक अप्सरा, जो अर्जुनके जन्मकालमें अन्य अप्सराओंके साथ नृत्य करने आयी थी (आदि० १२२ । ६१)।

गुणावती—एक नदी, जिसके उत्तर प्रान्तमें परशुरामजीने क्षत्रियोंका संहार किया था **(द्रोण० ७० । ८)**।

गुणावरा—स्वर्गकी एक अप्सरा, जो अर्जुनके जन्मकालमें अन्य अप्सराओंके साथ नृत्य करने आयी थी **(आदि० १२२ । ६१)**।

गुप्तक—सौवीर देशका राजकुमार, जो जयद्रथका साथी था **(वन० २६५ । १०)**। अर्जुनद्वारा इसका वध **(वन० २७१ । २७)**।

गुरुभार—गरुड़की प्रमुख संतानोंमेंसे एक **(उद्योग० १०१ । १३)**।

गुरुस्कन्द—एक पर्वतराज **(आश्व० ४३ । ५)**।

गुल्म–सेना-गणनाके लिये एक पारिभाषिक शब्द—तीन सेनामुखका एक गुल्म होता है (आदि० २ । २०)।

गुह–एक दक्षिण भारतीय म्लेच्छ जातिका नाम (शान्ति० २०७ । ४२)।

गुह्यक–(१) देवयोनिके अन्तर्गत एक जाति; इस जातिके लोग द्रौपदीका स्वयंवर देखने आये थे (आदि० १८६ । ७)। ये कुबेरकी सभाका वहन करते हैं (सभा० १० । ३)। गन्धमादनपर भीमसेनने अपनी गदासे गुह्यकोंको मारा था; (शल्य० ११ । ५५–५७)। महाभारत-युद्धमें मारे गये योद्धाओंमेंसे कुछ लोग गुह्यकोंके लोकोंको प्राप्त हुए (स्वर्गा० ४ । २३)(२) एक यक्ष,जो कुबेरकी सभामें उनकी सेवाके लिये उपस्थित होता था (सभा० १० । १५)। वह ब्रह्माजीकी सभामें भी उपस्थित होता है (सभा० ११ । ४९)।

गृत्समद–इन्द्रके प्रिय सखा और बृहस्पतिके समान एक श्रेष्ठ मुनि। शिव-महिमाके विषयमें इनका युधिष्ठिरसे अपना अनुभव बताना (अनु० १८ । १९–२९)। ये वीतहव्य-के पुत्र थे और रूपमें इन्द्रकी समानता करते थे; किसी समय दैत्योंने इन्हें 'इन्द्र' मानकर पकड़ लिया था। इनके पुत्रका नाम सुचेता था (अनु० ३० । ५८-५९)। ऋग्वेदमें महामना गृत्समदकी श्रेष्ठ श्रुति विराजमान है; ब्राह्मणलोग इनका बड़ा सम्मान करते हैं। ये ब्रह्मर्षि गृत्समद बड़े तेजस्वी और ब्रह्मचारी थे (अनु० ३० । ६०-६१)।

गृध्रकूट–एक पर्वत, जहाँ लंगूरोंने मगधराज बृहद्रथको बचाया था (शान्ति० ४९ । ८२)।

गृध्रपत्र–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ७४)।

गृध्रवट–महादेवजीका स्थान, जहाँ भस्मस्नान कर्तव्य है। वहाँ यात्रा करनेसे ब्राह्मणको व्रतके पालनका पुण्य फल प्राप्त होता है तथा अन्य वर्णवालोंके सारे पाप नष्ट हो जाते हैं (वन० ८४ । ९१-९२)।

गृहदेवी–राक्षसी जरा, जिसे ब्रह्माजीने 'गृहदेवी' के नामसे उत्पन्न किया था (सभा० १८ । १-२)। दानवोंके विनाशके लिये इसकी सृष्टि हुई है। यह दिव्यरूप धारण करनेवाली है। जो अपने घरकी दीवारपर अनेक पुत्रोंसे घिरी हुई युवती स्त्रीके रूपमें इसका चित्र अङ्कित करती है, उसके घरमें सदा वृद्धि होती है (सभा० १८ । ३-४)।

गेरु–एक पर्वतीय धातु (वन० १५८ । ९५)।

गो (गौ)–महर्षि पुलस्त्यकी भार्याका नाम 'गो' या गौ था। इनके गर्भसे वैश्रवण नामक पुत्र हुआ, जो पिताको छोड़कर पितामह ब्रह्माजीकी सेवामें रहता था (वन० २७४ । १२)।

गोकर्ण–(१) एक प्राचीन तीर्थ, जहा पूर्वकालमें भगवान् शेषने तपस्या एवं एकान्तवास किया था (आदि० ३६ । ३)। यह भगवान् शिवका स्थान है, यहाँ तीर्थ-यात्राके प्रसंगमें अर्जुनका आगमन हुआ था (आदि० २१६ । ३४)। यह समुद्रके मध्यमें विद्यमान, त्रिभुवन-विख्यात और अखिल लोकवन्दित तीर्थ है। यहाँ ब्रह्मा आदि देवता, तपोधन महर्षि और भूत-यक्ष आदि भगवान् शङ्करकी उपासना करते हैं। यहाँ भगवान् शिवकी पूजा करके तीन रात उपवास करनेवाला मनुष्य अश्वमेध यज्ञका फल पाता और गणपति-पद प्राप्त कर लेता है (वन० ८५ । २४–२७)। गोकर्ण तीर्थ तीनों लोकोंमें विख्यात है। वह पवित्र कल्याणमय और शुभ है। अशुद्ध अन्तःकरणवालोंके लिये यह तीर्थ अत्यन्त दुर्लभ है (वन० ८८ । १५-१६)। (२) यह एक तपोवन है (भीष्म० ६ । ५१)।

गोकर्णा–कर्णके सर्पमुख बाणमें प्रविष्ट अश्वसेन नागकी माता (कर्ण० ९० । ४२)।

गोकर्णी–स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । २५)।

गोकुल–अधिक गौओंके रहनेका स्थान एवं नन्दका गोकुल—जहाँ पले हुए ग्वालोंको सव्यसाची अर्जुनने मारा था (सभा० ३८ । पृष्ठ ७९९-८००; कर्ण० ५ । ३८)।

गोतीर्थ–एक तीर्थ, जहाँ पाण्डवलोग तीर्थयात्रा करते हुए गये थे (वन० ९५ । ३)।

गोदा–स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । २८)।

गोदावरी–एक नदी, जो वरुणकी सभामें उपस्थित होती है (सभा० ९ । २०)। यह दक्षिण भारतके नासिक जिलेमें स्थित त्र्यम्बक ज्योतिर्लिङ्गके समीप ब्रह्मगिरिसे निकलती और समुद्रमें मिलती है। इसमें अगाध जल भरा है। बहुत-से तपस्वी इसका सेवन करते हैं तथा यह सबके लिये कल्याणस्वरूपा है (वन० ८८ । २)। सिद्ध पुरुषोंसे सेवित गोदावरीके तटपर जाकर स्नान करनेसे गोमेध यज्ञका फल मिलता है और वासुकिका लोक प्राप्त होता है (वन० ८५ । ३३; ८८ । २)। राजा युधिष्ठिर तीर्थ-यात्रा करते हुए यहाँ भी आये थे। यह समुद्रगामिनी नदी है (वन० ११८ । ३)। यह अग्निकी उत्पत्तिस्थान है (वन० २२२ । २४)। दशरथनन्दन भगवान् श्रीरामने (पञ्चवटीमें) गोदावरीके तटपर कुछ काल-तक निवास किया था (वन० २७७ । ४१)। भारतवर्ष-की प्रधान नदियोंमें गोदावरीकी गणना है (भीष्म०

९ । १४)। जो जनस्थानमें गोदावरीके जलमें स्नान करके उपवास करता है, वह पुरुष राजलक्ष्मीसे सेवित होता है (अनु० २५ । २९)।

गोधा-(गोध)-पूर्वोत्तर भारतका एक जनपद (भीष्म० ९ । ४२)।

गोनन्द-स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४३ । ६५)।

गोपति-(१)कालकेतुका साथी एक राक्षस, जो महेन्द्रके शिखरपर इरावतीके किनारे श्रीकृष्णद्वारा आहत हुआ और अक्षप्रपतनके अन्तर्गत नेमिहंस-पथ नामक स्थानमें मारा गया (सभा० ३८ । २९ के बाद दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ८२४)। (२) एक देवगन्धर्व, जो कश्यपपत्नी मुनिके गर्भसे उत्पन्न हुआ था (वन० ६५ । ४२)। यह अर्जुनके जन्ममहोत्सवमें आया था (आदि० १२२ । ५५)। (३) शिबिका एक पुत्र, परशुरामजीके क्षत्रियसंहारके बाद वनमें गौओंने इसकी रक्षा की थी। पृथ्वीने कश्यपजीको इसका परिचय दिया था (शान्ति० ४९ । ७८-७९)। (४) भगवान् शिवका एक नाम (अनु० १७ । ११५)। (५) भगवान् विष्णुका एक नाम (अनु० १४९। ६६)।

गोपराष्ट्र-पूर्वोत्तर भारतका एक जनपद (भीष्म० ९ । ४४)।

गोपायन-गोपोंकी सेनाका नाम (भीष्म० ७१ । १३)।

गोपालकक्ष-एक पूर्वीय देश, जिसे भीमसेनने दिग्विजयके समय जीता था (सभा० ३० । ३; भीष्म० ९ । ५६)।

गोपाली-(१) एक अप्सरा, जिसने अर्जुनके सम्मानार्थ इन्द्रसभामें नृत्य किया था (वन० ४३ । ३०)। (२) स्कन्दकी अनुचरी मातृका(शल्य० ४६ । ४)।

गोप्रतार-सरयूनदीका उत्तम तीर्थ, जहाँ भृत्य, सेना और वाहनोंसहित भगवान् श्रीराम परमधामको पधारे थे (वन० ८४ । ७०-७३)।

गोभवन-कुरुक्षेत्रकी सीमामें स्थित एक पवित्र तीर्थ, जहाँ स्नान करनेसे सहस्र गोदानका फल मिलता है (वन० ८३ । ५०)।

गोमती-एक प्रसिद्ध नदी, गङ्गाकी सात धाराओंमेंसे एक, इसका जल पीनेवाले मनुष्योंके पाप तत्काल नष्ट हो जाते हैं (आदि० १६९ । २०-२१)। यह वरुणकी सभामें उपस्थित होती है (सभा० ९ । २३)। युधिष्ठिर तीर्थयात्राके प्रसंगसे यहाँ गये थे (वन० ९५ । २)। यह विश्वभुक् नामक अग्निकी पत्नी है (वन० २१९ । १९)। जारूथीमें गोमतीके तटपर दशरथनन्दन भगवान् श्रीरामने दस अश्वमेध यज्ञ किये थे (वन० २५१ । ७०)। यह भारतवर्षकी प्रधान नदियोंमेंसे है (भीष्म० ९ । १८)। दिवोदासकी नगरीका एक छोर गङ्गाके उत्तरतटपर था और दूसरा छोर गोमतीके दक्षिण किनारेतक फैला हुआ था (अनु० ३० । १८)।

गोमतीमन्त्र-एक मन्त्र, जिसे गौओंके बीचमें खड़ा होकर मन-ही-मन जपा जाता है। ऐसा करनेवाला पुरुष शुद्ध एवं निर्मल (पापरहित) हो जाता है। जो तीन रात उपवास करके गोमतीमन्त्रका जप करता है, उसे गौओंका वरदान प्राप्त होता है। इसके जपसे पुत्रार्थीको पुत्र, धनार्थीको धन और पतिकी इच्छावाली स्त्रीको मनके अनुकूल पतिकी प्राप्ति होती है (अनु० ८१ । ४२-४५)।

गोमन्त-(१) द्वारकाके निकटका एक श्रेष्ठ पर्वत, (गोमान् या रैवतक) जहाँ जरासंधको पछाड़कर बलरामजीने उसे जीवित छोड़ दिया था; क्योंकि उसकी मृत्यु भीमसेनके हाथसे होनेवाली थी (सभा० २४ । ४ के बाद दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ७३१)। (२) पूर्वोत्तर भारतका एक जनपद (भीष्म० ९ । ४३)। (३) कुशद्वीपका एक पर्वत (भीष्म० १२ । ८)।

गोमुख-(१) क्रोधवशसंज्ञक दैत्यके अंशसे उत्पन्न एक राजा (आदि० ६७ । ६३-६६)। (२) इन्द्रसारथि मातलिका पुत्र (उद्योग० १०० । ८)।

गोरथ-मगधकी राजधानी गिरिव्रजके निकटका एक पर्वत (सभा० २० । ३०)।

गोलोक-एक दिव्य सच्चिदानन्दमय लोक, जो समस्त लोकपालोंके लोकोंसे ऊपर है और वहाँ प्रधानतः दिव्य गौओंका निवास है। इसकी समस्त लोकोंसे ऊपर स्थिति क्यों है—इसके कारणका ब्रह्माजीद्वारा प्रतिपादन (अनु० ८३ अध्याय)। गोलोक भगवान् नारायणका ऊपरका ओठ और ब्रह्मलोक नीचेका ओठ है (शान्ति० ३४७ । ५२)।

गोवर्धन-(१) व्रजमण्डलका सुप्रसिद्ध पर्वत, जो भगवान् श्रीकृष्णका स्वरूप माना गया है, इसे 'गिरिराज' कहते हैं। जब इन्द्र व्रजवासियोंको अपनी पूजा न पानेके कारण मिटा देनेके लिये व्रजमें घोर वर्षा करने लगे, उन दिनों भगवान् श्रीकृष्णने बाल्यावस्थामें ही गौओंकी रक्षाके लिये एक सप्ताहतक गोवर्धन पर्वतको अपने हाथपर उठा रक्खा था (सभा० ३८ । दाक्षिणात्य पाठ पृष्ठ ८०१; सभा० ४१ । ९; उद्योग० १३० । ४६)। (२) वाहीक देशके राजभवनके द्वारपर स्थित एक वटवृक्ष, जो गोवर्धन नामसे प्रसिद्ध था (कर्ण० ४४ । ८)।

गोवासन-(१) शिवि देशके राजा, जिनकी पुत्री देविकाने स्वयंवरमें राजा युधिष्ठिरको अपना पति चुना था

(आदि० ५९ । ७६)। इन्होंने एक सहस्र योद्धाओं-को साथ ले काशिराज अभिभूके पराक्रमी पुत्रका सामना किया था (द्रोण० ९५ । ३८; द्रोण० ९६ । ११)। (२) एक देश, जहाँके निवासी राजा युधिष्ठिरके लिये तीन खरबकी सम्पत्ति लेकर भेंट देनेके निमित्त आये थे, (सभा० ५१ । ५)।

गोविकर्ता–महाबली बैलोंको नाथनेवाला (विराट० २ । ९)।

गोवितत–अश्वमेध-यज्ञका एक भेद, यही यज्ञ कण्वने अपने दौहित्र भरतसे करवाया था (आदि० ७४ । १३०)।

गोविन्द–भगवान् श्रीकृष्णका एक नाम, गिरिराज गोवर्धन-को धारण करके गौओं तथा व्रजवासियोंकी रक्षा करनेके कारण इन्द्रने भगवान् श्रीकृष्णका 'गोविन्द' नाम रक्खा, 'गवेन्द्र' (गौओंके इन्द्र) पदपर उनका अभिषेक किया (सभा० ३८ । २९ के बाद, पृष्ठ ८०१, कालम १)।

गोविन्दगिरि–क्रौञ्चद्वीपका एक पर्वत (भीष्म० १२ । १९)।

गोव्रज–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ६६)।

गोव्रत–गोव्रतधारी पुरुष, जो जहाँ कहीं भी सो लेता है, जिस किसी भी फल-मूल आदिसे भोजनका कार्य चला लेता है तथा वल्कल आदि जिस किसी वस्तुसे शरीरको ढक लेता है, वही यहाँ गोव्रतधारी कहलाता है (उद्योग० ९९ । १४)।

गोशृङ्ग–दक्षिणका एक श्रेष्ठ पर्वत, जिसपर सहदेवने विजय पायी थी (सभा० ३१ । ५)।

गोसव–एक महायज्ञ (वन० ३० । १७)।

गोस्तनी–स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । ३)।

गोहरणपर्व–विराटपर्वका एक अवान्तर पर्व (अध्याय २५ से ६९ तक)।

गौतम–(१) सप्तर्षियोंमेंसे एक, जो अन्य ऋषियोंके साथ अर्जुनके जन्मोत्सवमें पधारे थे (आदि० १२२ । ५०-५१)। इनके एक पुत्रका नाम शरद्वान् गौतम था, जो सरकण्डोंके साथ उत्पन्न हुए थे (आदि० १२९ । २)। इनके दूसरे पुत्रका नाम चिरकारी था (शान्ति० २६६ । ४)। ये ब्रह्माजीकी सभामें उनकी सेवाके लिये उपस्थित होते हैं (सभा० ११ । १९)। इनका अत्रि मुनिके साथ संवाद (वन० १८५ । १५—१८)। इनका सत्यवान्के जीवित होनेका विश्वास दिला-कर राजा द्युमत्सेनको आश्वासन देना (वन० २९८ । ११–१३)। सावित्रीसे वनका वृत्तान्त पूछना (वन० २९८ । ३३–३५)। द्रोणाचार्यके पास आकर उनसे युद्ध बंद करनेके लिये कहना (द्रोण० १९० । ३६–४०)। शर-शय्यापर पड़े हुए भीष्मजीको देखनेके लिये अन्य मुनियोंके साथ ये भी पधारे थे (शान्ति० ४७ । १०)। इनका पारियात्र पर्वतपर अपने आश्रममें साठ हजार वर्षोंतक तपस्या करना। इनके यहाँ लोकपाल यमका पदार्पण और इनके द्वारा उनका सत्कार (शान्ति० १२९ । ४—८)। यमके साथ इनकी धर्म-चर्चा (शान्ति० १२९ । ९)। ये उत्तर-दिशाका आश्रय लेकर रहते हैं (शान्ति० २०८ । ३३)। इनका अपने पुत्र चिरकारीको उसकी माता अहल्याके वधके लिये आदेश देना (शान्ति० २६६ । ७)। वनमें जाकर पत्नी-वधके विषयमें चिन्ता करना (शान्ति० २६६ । ४७—५८)। वनसे लौटनेपर पत्नीको जीवित पाकर इनके द्वारा पुत्रका अभिनन्दन (शान्ति० २६६ । ६७–७१)। इनके शापसे इन्द्रका हरी दाढ़ी-मूँछोंसे युक्त होना (शान्ति० ३४२ । २३)। इनका अङ्गिरासे तीर्थोंके विषयमें प्रश्न (अनु० २५ । ५-६)। राजा वृषादर्भिसे प्रतिग्रहके दोष बताना (अनु० ९३ । ४२)। अरुन्धतीसे अपने शरीरके मोटे न होनेका कारण बताना (अनु० ९३ । ६७)। यातुधानीके समक्ष अपने नाम-की व्याख्या करना। (अनु० ९३ । ९०)। मृणालकी चोरीके विषयमें शपथ खाना (अनु० ९३ । १२२-१२३)। अगस्त्यजीके कमलोंकी चोरी होनेपर शपथ खाना (अनु० ९४ । १९)। अहल्यापर बलात्कारके कारण इनका इन्द्रको शाप (अनु० १५३ । ६)। अपने सभी शिष्योंमें उत्तङ्कपर ही इनका अधिक स्नेह और प्रेम होना, उत्तङ्कके इन्द्रिय-संयम, शौच, पुरुषार्थ, क्रियाशीलता और उत्तमोत्तम सेवासे इनका अधिक प्रसन्न होना तथा अधिक प्रेमके कारण ही इनका उत्तङ्क-को घर जानेकी आज्ञा न देना (आश्व० ५६ । ४–६)। इनकी आज्ञासे इनकी पुत्रीका रोते हुए उत्तङ्कके आँसुओं-का अपने हाथोंमें लेना, इनका उत्तङ्कसे उनके मानसिक शोकका कारण पूछना। उनकी घर जानेकी इच्छा जान-कर उन्हें सहर्ष आज्ञा प्रदान करना। उनके गुरु-दक्षिणा देनेकी इच्छा प्रकट करनेपर उनकी सेवासे ही अपनेको संतुष्ट बताना और गुरु-दक्षिणा लेनेकी इच्छा न करना, साथ ही उत्तङ्कके षोडशवर्षीय युवक हो जानेपर उनके साथ अपनी कन्याका विवाह कर देना (आश्व० ५६ । ११—२४)। इनका अपनी पत्नीसे उत्तङ्कके विषयमें पूछना और वह राक्षस सौदासके यहाँ कुण्डल लाने गया है—यह जानकर पत्नीको उसके वधकी आशङ्का बताकर इस अनुचित आज्ञाके लिये उपालम्भ देना । उत्तङ्ककी रक्षाके लिये अपनी पत्नी अहल्याकी इच्छाका अनुमोदन

करना (आश्व० ५६ । ३२—३५) । गौतमके पुत्र शरद्वान्को भी 'गौतम' कहा जाता है (आदि० १२९ । २) तथा शरद्वान्के पुत्र कृप और कन्या कृपीके लिये भी 'गौतम' (आदि० १३० । १४) एवं 'गौतमी' नामका प्रयोग देखा जाता है (आदि० १२९ । ४७) । (२) एक ऋषि, जो अन्य ऋषि-मुनियोंके साथ युधिष्ठिरकी सभामें विराजते थे (सभा० ४ । १७) । ये इन्द्रकी सभामें भी उपस्थित होकर देवेन्द्रकी उपासना करते थे (सभा० ७ । १८) । इन्होंने ही गिरिव्रजमें निवास करके उशीनर देशकी शूद्र-जातीय कन्याके गर्भसे काक्षीवान् नामक पुत्र उत्पन्न किया था (सभा०२१ । ३–५) । (३) एक तपस्वी एवं विद्वान् ब्राह्मण मुनि, जो एकत, द्वित और त्रितके पिता थे (शल्य० ३६ । ७९) । (४) एक तपस्वी ब्राह्मण, जिन्होंने अपने हाथीका अपहरण हो जानेपर धृतराष्ट्ररूपधारी इन्द्रके साथ संवाद किया था (अनु० १०२ अध्याय) । (५) मध्यदेशका रहनेवाला एक कृतघ्न ब्राह्मण, जिसका नाम गौतम था, इसका डाकुओंके गाँवमें निवास (शान्ति० १६८ । ३६) । अपने गाँवके एक सदाचारी ब्राह्मणद्वारा फटकारे जानेपर उसके द्वारा समुद्रकी यात्रा (शान्ति० १६९ । १) । वनमें राजधर्मा नामके बकका अतिथि होना (शान्ति० १६९ । १७) । राजधर्माका आतिथ्य स्वीकार करके धनके लिये राक्षसराज विरूपाक्षके पास पहुँचना (शान्ति० १७० । २६) । विरूपाक्षसे वार्तालाप और धन लेकर लौटना (शान्ति० १७१ । २–२८) । राजधर्माको मार डालनेका विचार (शान्ति० १७१ । ३४-३५) । जलती हुई लकड़ियोंद्वारा राजधर्माका वध (शान्ति० १७२ । ३) । राक्षसोंद्वारा इसका वध (शान्ति० १७२ । २३-२४) । इन्द्रद्वारा जीवनदान (शान्ति० १७३ । १२-१३) । इसे देवताओंका शाप (शान्ति० १७३ । १७–१८) ।

गौतमी-(१) द्रोणाचार्यकी भार्या (आदि०१२९ । ४७) । (देखिये—कृपी) (२) गौतम गोत्रकी एक कन्या जटिला, जिसने सात ऋषियोंसे विवाह किया था (आदि० १९५ । १४) । यह ब्रह्माजीकी सभामें विराजमान होती है (सभा० ११ । ४०) । द्रौपदीकी पतिसेवाके विषयमें गौतमी जटिलाका दृष्टान्त (शान्ति० ३८ । ५) । (३) एक ब्राह्मणी । अपने पुत्रकी मृत्युपर इसका व्याध, सर्प, मृत्यु और कालके साथ संवाद (अनु० १ । २१–३२) । (४) एक नदी (अनु० १६५ । २१) ।

गौर-कुशद्वीपका एक पर्वत (भीष्म० १२ । ४) ।

गौरपृष्ठ-एक राजर्षि, जो यमसभामें उपस्थित हो सूर्यपुत्र यमकी उपासना करते हैं (सभा० ८ । २१) ।

गौरमुख-शमीक ऋषिके एक शिष्य । इन्होंने गुरुकी आज्ञासे राजा परीक्षित्को शृङ्गी ऋषिके शापका समाचार सुनाया (आदि० ४२ । १४–२२) ।

गौरवाहन-एक राजा, जो युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें पधारे थे (सभा० ३४ । १२) ।

गौरशिरा-एक मुनि, जो इन्द्रकी सभामें रहकर वज्रधारी इन्द्रकी उपासना करते हैं (सभा० ७ । ११) ।

गौराश्व-एक राजर्षि, जो यमसभामें रहकर सूर्यपुत्र यमकी उपासना करते हैं (सभा० ८ । १८) ।

गौरी-(१) महादेवी पार्वतीका एक नाम (वन० ८४ । १५१) । (२) उमादेवीकी अनुगामिनी सहचरी (वन० २३१ । ४८) । (३) वरुणकी प्रिय पत्नी (उद्योग० ११७ । ९) । (४) भारतवर्षकी एक प्रमुख नदी, जिसका जल भारतीय जनता पीती है (भीष्म० ९ । २५) ।

गौरीशिखर-एक त्रिभुवनविख्यात तीर्थ, वहाँ स्तनकुण्डमें स्नान करनेसे वाजपेय यज्ञका तथा देवता-पितरोंका पूजन करनेसे अश्वमेध यज्ञका फल मिलता है (वन० ८४ । १५१–१५४) ।

ग्रन्थिक-विराटनगरमें अज्ञातवासके समय नकुलका नाम (विराट० ३ । ४) ।

ग्रामणी-भगवान् शिवके एक गण, जिनके नामका शुद्धभावसे कीर्तन करनेवाले मनुष्योंके सब पाप नष्ट हो जाते हैं (अनु० १५० । २५) ।

ग्रामणीय-ग्रामशासक क्षत्रियोंके वंशज, जिन्हें दिग्विजयके समय नकुलने जीता था (सभा० ३२ । ९) ।

(घ)

घट-एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ६३) ।

घटजानुक-एक प्राचीन ऋषि, जो युधिष्ठिरकी सभामें विराजते हैं (सभा० ४ । १३) । हस्तिनापुर जाते समय मार्गमें श्रीकृष्णसे इनकी भेंट (उद्योग० ८३ । ६४ के बाद दाक्षिणात्य पाठ) ।

घटोत्कच-हिडिम्बाके गर्भसे भीमसेनद्वारा उत्पन्न एक राक्षस (आदि० १५४ । ३१) । इसका 'घटोत्कच' नाम होनेका कारण (आदि० १५४ । ३८) । आवश्यकता पड़नेपर अपने पितृवर्गों (पाण्डवों) की सेवाके लिये इसका कुन्तीको आश्वासन (आदि० १५४ । ४५) । इन्द्रकी शक्तिका आघात सहन करनेके लिये इन्द्रद्वारा

इसकी सृष्टि (आदि० १५४ । ४६) । सहदेवकी आज्ञासे इसकी लङ्का-यात्रा (सभा० ३१ । ७२ के बाद दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ७५९) । इसके द्वारा विभीषणको पाण्डवोंका परिचय (सभा० ३१ । पृष्ठ ७६२) । विभीषणसे कर लाकर इसका सहदेवको देना (सभा० ३८ । पृष्ठ ७६४) । भीमसेनकी आज्ञासे द्रौपदीको कंधेपर चढ़ाकर इसका गन्धमादनकी यात्रा करना (वन० १४५ । ४–८) । इसका दुर्गम मार्गमें पाण्डवोंको पीठपर बिठाकर ले जाना और उन्हें संकटसे पार करना (वन० १७६ । २१) । प्रथम दिनके संग्राममें इसका अलम्बुषके साथ द्वन्द्वयुद्ध (भीष्म० ४५ । ४२–४५) । दुर्योधनके साथ युद्ध (भीष्म० ५८ । १४-१५) । भगदत्तके साथ मायायुद्ध छेड़ना और इसके अद्भुत पराक्रमसे पराजित होकर कौरवसेनाका उस दिन युद्ध बंद कर देना (भीष्म० ६४ । ५७–७२) । भगदत्त-द्वारा इसका पराजित होना (भीष्म० ८३ । ३०–४०) । दुर्योधनके साथ युद्ध करके उसे प्राण-संशयमें डाल देना (भीष्म० ९१ । १९ से ९२ । ७ तक) । वङ्गनरेशके गजराजको मारकर उसे पराजित करना (भीष्म० ९२ । १२) । इसके द्वारा विकर्णकी पराजय (भीष्म० ९२ । ३६) । इसके द्वारा बृहद्बलकी पराजय (भीष्म० ९२ । ४१) । कौरव महारथियोंके प्रहारसे व्याकुल होकर इसका आकाशमें उड़ना (भीष्म० ९३ । ६) । इसकी आसुरी मायासे कौरवसेनाका पलायन (भीष्म० ९४ । ४१–४७) । दुर्मुखके साथ इसका द्वन्द्वयुद्ध (भीष्म० ११० । १३-१४; भीष्म० १११ । ३७–३९) । धृतराष्ट्रद्वारा इसकी वीरताका वर्णन (द्रोण० १० । ७२-७३) । अलम्बुषके साथ इसका युद्ध (द्रोण० १४ । ४६-४७) । इसके घोड़ोंका वर्णन (द्रोण० २३ । ७५) । अलम्बुषके साथ युद्ध (द्रोण० २५ । ६१-६२) । अलायुधके साथ युद्ध (द्रोण० ९६ । २७-२८) । इसके द्वारा अलम्बुषका वध (द्रोण० १०९ । २८-२९) । अश्वत्थामाके साथ युद्धमें इसके पुत्र अञ्जनपर्वाका उसके द्वारा मारा जाना तथा इसका भी पराजित होना (द्रोण० १५६ । ५६–१८६) । अश्वत्थामाद्वारा इसकी पराजय (द्रोण० १६६ । १५–३८) । श्रीकृष्ण और अर्जुनकी आज्ञासे इसका कर्णके साथ युद्धके लिये जाना (द्रोण० १७३ । ६३–६५) । घटोत्कच और जटासुरके पुत्र अलम्बुषका घोर युद्ध तथा अलम्बुषका वध (द्रोण० १७४ अध्याय) । इसके रूप तथा रथ आदिका वर्णन और कर्णके साथ मायामय घोर युद्ध (द्रोण० १७५ अ०) । इसके द्वारा अलायुधका वध (द्रोण० १७८ । ३१) । इसका मायामय घोर युद्ध करके कौरव-सेनाका संहार करना (द्रोण० १७९ । २५–४७) । कर्णद्वारा छोड़ी हुई इन्द्रप्रदत्त शक्तिके प्रहारसे घटोत्कचका वध (द्रोण० १७९ । ५८) । यह यज्ञों और ब्राह्मणोंसे द्वेष एवं घृणा करता था (द्रोण० १८१ । २६-२७) । व्यासजीके आवाहन करनेपर यह भी गङ्गाजीके जलसे प्रकट हुआ था (आश्रम० ३२ । ८) । यह मृत्युके पश्चात् यक्षों एवं देवताओंमें मिल गया (स्वर्गा० ५ । ३७) ।

महाभारतमें आये हुए घटोत्कचके नाम–भैमसेनि, भैमि, भीमसेनसुत, भीमसेनात्मज, भीमसूनु, भीमसुत, हैडिम्ब, हैडिम्बि, राक्षस, राक्षसाधिप, राक्षसपुङ्गव, राक्षसेश्वर, राक्षसेन्द्र इत्यादि ।

घटोत्कचवधपर्व–द्रोणपर्वका एक अवान्तर पर्व (अध्याय १५३ से १८३ तक) ।

घण्टोदर–एक दैत्य या दानव, जो वरुणकी सभामें उनकी सेवाके लिये उपस्थित होता है (सभा० ९ । १३४) ।

घण्टाकर्ण–ब्रह्माद्वारा स्कन्दको दिये गये चार पार्षदोंमेंसे तीसरा । पहला नन्दिसेन, दूसरा लोहिताक्ष और चौथा कुमुदमाली था (शल्य० ४५ । २३-२४) ।

घूर्णिका–शुक्राचार्यकी पुत्री देवयानीकी धाय (आदि० ७८ । २५) ।

घृतपा–घी पीकर रहनेवाले ऋषि, जो ब्रह्माजीकी आज्ञाके अधीन रहकर सनातनधर्मका पालन करते हैं (शान्ति० १६६ । २४) ।

घृतवती–भारतकी एक प्रमुख नदी, जिसका जल भारतीय प्रजा पीती है (भीष्म० ९ । २३; भीष्म० ९ । ३१) ।

घृततोय–(अथवा घृतोद) समुद्र—घीका समुद्र (भीष्म० १२ । २) ।

घृताची–एक श्रेष्ठ अप्सरा, जिसके गर्भसे महर्षि प्रमतिद्वारा 'रुरु' का जन्म हुआ था (आदि० ५ । ९) । यह छः प्रधान अप्सराओंमेंसे एक है (आदि० ७४ । ६८) । घृताची उन प्रधान ग्यारह अप्सराओंमेंसे एक है, जो अर्जुनके जन्मोत्सवमें नाचने-गाने आयी थीं (आदि० १२२ । ६५) । इसके दर्शनसे स्खलित हुए भरद्वाज मुनिके वीर्यसे द्रोणाचार्यका जन्म हुआ था (आदि० १२९ । ३५–३८; वन० ४३ । २९) । यह कुबेरसभाकी प्रमुख अप्सरा है (सभा० १० । १०) । इसे देखकर भरद्वाजजीके वीर्यका स्खलन और श्रुतावती नामक कन्याकी उत्पत्ति (शल्य० ३४८ । ६४–६६) । इसके दर्शनसे व्यासजीके वीर्यका स्खलन और शुकदेवजीका जन्म (शान्ति० ३२४ । २–९) । इसने अष्टावक्रके

स्वागत-सत्कारके निमित्त कुवेरसभामें नृत्य किया था (अनु० १९ । ४४)।

घृतार्चि–भगवान् श्रीकृष्णका एक नाम, जिसकी व्याख्या उन्होंने श्रीमुखसे की है (शान्ति० ३४२ । ८५)।

घोर–महर्षि अङ्गिराके वारुणसंज्ञक पुत्रोंमेंसे एक (अनु० ८५ । १३१)।

घोरक–पश्चिमोत्तर भारतका एक जनपद, जहाँके लोगोंने राजा युधिष्ठिरको बहुत धन अर्पित किया था (सभा० ५२ । १४)।

घोषयात्रापर्व–वनपर्वका एक अवान्तर पर्व (अध्याय २३६ से २५७ तक)।

घ्राणश्रवा–स्कन्दका एक सैनिक एवं पार्षद, जो निरन्तर योगयुक्त रहकर सदा ब्राह्मणोंसे प्रेम रखते हैं (शल्य० ४५ । ५७)।

(च)

चक्र–(१) नागराज वासुकिसे उत्पन्न एक नाग, जो सर्पसत्रमें जल मरा था (आदि० ५७ । ६) । (२) भगवान् श्रीकृष्णका सुप्रसिद्ध अस्त्र सुदर्शनचक्र, जिसे अग्निदेवने उन्हें प्रदान किया था (आदि० २२४ । २३)। (३) एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ४५)। (४) भगवान् विष्णुद्वारा स्कन्दको दिये गये तीन पार्षदोंमेंसे एक (शल्य० ४५ । ३७) । (५) त्वष्टाद्वारा स्कन्दको दिये गये दो अनुचरोंमेंसे एक, दूसरेका नाम अनुचक्र था (शल्य० ४५ । ४०) ।

चक्रक–विश्वामित्रके ब्रह्मवादी पुत्रोंमेंसे एक (अनु० ४ । ५४)।

चक्रदेव–वृष्णिवंशका एक अतिरथी वीर (सभा० १४ । ५७-५८)।

चक्रद्वार–एक पर्वत, जो सुलभाके पूर्वजोंके यज्ञोंमें देवराज इन्द्रके सहयोगसे यज्ञवेदीमें ईंटाकी जगह चुना गया था (शान्ति० ३२० । १८५)।

चक्रधनु–महर्षि कर्दमसे उत्पन्न भगवान् कपिलमुनि ही चक्रधनु कहलाते हैं। ये दक्षिणदिशामें रहते हैं। इन्होंने ही सगर-पुत्रोंको भस्म कर दिया था (उद्योग० १०९ । १७-१८)।

चक्रधर्मा–विद्याधरोंके अधिपति, जो अपने छोटे भाइयोंके साथ कुबेरकी सभामें उपस्थित हो भगवान् कुबेरकी उपासना करते हैं (सभा० १० । २७)।

चक्रनेमि–स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । ५)।

चक्रमन्द–एक नाग, जो बलरामजीके परमधाम पधारते समय उनके स्वागतके लिये आया था (मौसल० ४ । १६)।

चक्रव्यूह–द्रोणनिर्मित एक सैन्य-व्यूह, जिसका भेदन करना पाण्डव-दलमें केवल अर्जुन जानते थे; अभिमन्यु इसमें प्रवेश करके निकलना नहीं जानता था, अतः उसमें बाहरसे सहायता न पहुँच सकनेके कारण मारा गया; इस व्यूहका निर्माण गाडीके पहियेकी आकृतिमें होता है। इसका वर्णन (द्रोण० ३४ । १३–२४)।

चक्राति–एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ४५)।

चक्षु–विवस्वान् (सूर्य) के ही बोधक दिवःपुत्र आदि बारह सूर्योंमेंसे एक (आदि० १ । ४२)।

चक्षुर्वर्धनिका–शाकद्वीपकी एक नदी (भीष्म० ११ । ३३)।

चण्डकौशिक–गौतमपुत्र महात्मा कक्षीवान्के पुत्र (सभा० १७ । २२)। इनकी कृपासे मगधनरेश बृहद्रथको पुत्रकी प्राप्ति हुई; वही जरासंधके नामसे विख्यात हुआ (आदि० १७ । २८–४१)। इनके द्वारा जरासंधका भविष्यकथन (आदि० १९ अध्याय)।

चण्डतुण्डक–गरुड़की प्रमुख संतानोंमेंसे एक (उद्योग० १०१ । ९)।

चण्डबल–इसी नामसे प्रसिद्ध एक वानर, जो कुम्भकर्णके मुखका ग्रास बन गया था (वन० २८७ । ६)।

चण्डभार्गव–वेदवेत्ताओंमें श्रेष्ठ एक विद्वान् ब्राह्मण, जो च्यवनमुनिके वंशमें उत्पन्न हुए थे, ये अपने समयके सुप्रसिद्ध कर्मकाण्डी थे और राजा जनमेजयके सर्पयज्ञके होता बनाये गये थे (आदि० ५३ । ४-५)।

चतुरश्व–एक राजर्षि, जो यमसभामें उपस्थित होकर सूर्यपुत्र यमकी उपासना करते हैं (सभा० ८ । ११)।

चतुर्दंष्ट्र–स्कन्दका एक सैनिक अथवा पार्षद, जो ब्राह्मणोंसे प्रेम रखनेवाला है (शल्य० ४५ । ६२)।

चतुर्वेद–सात पितरोंमेंसे एक (सभा० ११ । ४७)।

चतुष्कर्णी–स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । २५)।

चतुष्पथरता–स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । २७)।

चत्वरवासिनी–स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । १२)।

चन्द्र–(१) एक श्रेष्ठ दैत्य, जो चन्द्रमाके समान सुन्दर और चन्द्रवर्मा नामसे विख्यात काम्बोज देशका राजा हुआ (आदि० ६७ । ३१-३२)। (२) चन्द्रमा (आदि० २०९ । २६; वन० ११८ । १२)। (देखिये–चन्द्रमा)।

चन्द्रक–बिडालोपाख्यानमें वर्णित उल्लूका नाम (शान्ति० १३८ । ३३)।

चन्द्रकुण्ड–(चन्द्रह्रद)–एक ह्रद या कुण्ड, जिसमें मेरुपर्वतसे भागीरथी गङ्गा गिरती हैं (भीष्म० ६ । २९)।

चन्द्रकेतु–कौरवपक्षका एक योद्धा, अभिमन्युद्वारा इसका वध (द्रोण० ४८ । १५-१६)।

चन्द्रतीर्थ–एक प्राचीन तीर्थ, जिसकी बहुत-से ऋषिलोग उपासना करते हैं। यहाँ वालखिल्य नामक वैखानस मुनि निवास करते हैं। यहाँ तीन पवित्र शिखर और तीन झरने हैं (वन० १२५ । १७)।

चन्द्रदेव–(१) त्रिगर्तराज सुशर्माका भाई। अर्जुनद्वारा वध (कर्ण० २७ । ३–१३)। (२) पाण्डवपक्षका पाञ्चालयोद्धा। युधिष्ठिरका चक्ररक्षक। कर्णद्वारा इसका वध (कर्ण० ४९ । २७)।

चन्द्रप्रमर्दन–दक्षकन्या सिंहिकाका पुत्र। पिताका नाम कश्यप (आदि० ६५ । ३१)।

चन्द्रभ–स्कन्दका एक सैनिक या पार्षद, जो ब्राह्मणोंका प्रेमी है (शल्य० ४५ । ७५)।

चन्द्रभागा–पञ्चनद प्रदेश (पंजाब) की एक नदी, जिसे आजकल 'चिनाब' कहते हैं (सभा० ९ । १९)। इसमें सात दिन स्नान करनेसे मनुष्य मुनिके समान निर्मल हो जाता है (अनु० २५ । ७)।

चन्द्रमा–(१) शीतल किरणोंवाले सोम, जो क्षीरसागरका मन्थन होते समय उससे प्रकट हुए थे (आदि० १८ । ३४)। ये अत्रिपुत्र और बुधके पिता हैं (द्रोण० १४४ । ४)। इन्हें प्रजापति दक्षने अपनी सत्ताईस कन्याएँ पत्नीरूपमें प्रदान की थीं (आदि० ६६ । १३; आदि० ७५ । ९; शल्य० ३५ । ४५)। सोमके सत्ताईस पत्नियाँ हैं, जो सम्पूर्ण लोकोंमें विख्यात हैं। पवित्र व्रतका पालन करनेवाली वे सोम-पत्नियाँ काल-विभागका ज्ञापन करनेमें नियुक्त हैं। लोक-व्यवहारका निर्वाह करनेके लिये वे सब-की-सब नक्षत्रवाचक नामोंसे युक्त हैं (आदि० ६६ । १६-१७)। ये नक्षत्रोंके साथ मेरु पर्वतकी परिक्रमा करते और पर्वसंधिके समय विभिन्न मासोंका विभाग करते रहते हैं। इस प्रकार महामेरुका उल्लङ्घन करके समस्त प्राणियोंका पोषण करते हुए वे पुनः मन्दराचलको चले जाते हैं (वन० १६३ । ३२-३३)। चन्द्रमण्डलका व्यास ग्यारह हजार योजन, उनकी परिधिका विस्तार तैंतीस हजार योजन और उनकी मोटाई उनसठ सौ योजन है (भीष्म० १२ । ४२-४३)। इनकी सभी पत्नियाँ अनुपम रूपवती थीं; परंतु रोहिणीका सौन्दर्य उन सबसे बढ़कर था, अतः वे अन्य पत्नियोंकी उपेक्षा करके सदा रोहिणीके पास रहने लगे। यह देख दूसरी स्त्रियोंने पिता दक्षसे उनकी शिकायत की। दक्षने समझाते हुए कहा–'तुम्हें सबपर समान भाव रखना चाहिये।' उनके इस आदेशकी अवहेलना करके सोम पूर्ववत् रोहिणीमें ही आसक्त रहने लगे। इससे कुपित हो दक्षने उनके लिये राजयक्ष्माकी सृष्टि की और वह रोग उनके शरीरमें समा गया। सोम क्षीण हो चले। उनके क्षीण होनेसे ओषधियों और प्रजाका भी क्षय होने लगा। तब देवताओंके अनुरोधसे दक्षने उनके रोगकी निवृत्तिका उपाय बताते हुए कहा-'सोम अपने सब स्त्रियोंके प्रति समान बर्ताव करें और पश्चिम समुद्रमें, जहाँ सरस्वती नदीका संगम हुआ है, वहाँ जाकर स्नान करें। उस तीर्थमें महादेवजीकी आराधनासे इन्हें इनकी पूर्व कान्ति प्राप्त हो जायगी। ये पंद्रह दिन क्षीण होंगे और पंद्रह दिन सदा बढ़ते रहेंगे।' सोमने अमावास्याको उस तीर्थमें गोता लगाया; इससे उन्हें उनकी शीतल किरणें प्राप्त हो गयीं और वे सम्पूर्ण जगत्को प्रकाशित करने लगे। वे प्रत्येक अमावास्याको वहाँ स्नान करते हैं(शल्य० ३५ । ४५–८६)। इनके द्वारा स्कन्दको मणि और सुमणि नामक पार्षदोंका दान (शल्य० ४५ । ३२)। शम्बरासुरके प्रति ब्राह्मणोंकी महिमाका वर्णन (अनु० ३६ । १३–१७ के बाद दाक्षिणात्य पाठ)। इनका कार्तिकेयको भेंड़ा देना (अनु० ८६ । २३)। अजीर्ण-निवारणके लिये पितरों और देवताओंको ब्रह्माजीकी शरणमें जानेकी सलाह देना (अनु० ९२ । ६)। पूर्णमासी तिथिको चन्द्रोदयके समय ताँबेके बर्तनमें मधुमिश्रित पकवान लेकर जो चन्द्रमाके लिये बलि अर्पण करता है, उसकी दी हुई उस बलिको साध्य, रुद्र, आदित्य, विश्वेदेव, अश्विनीकुमार, मरुद्गण और वसुदेवता भी ग्रहण करते हैं तथा उससे चन्द्रमा और समुद्रकी भी वृद्धि होती है (अनु० १३४ । ३–६)। (२) ये सोम या चन्द्रमा आठ वसुओंमेंसे एक हैं। वसुरूपमें ये धर्मपत्नी मनस्विनीके पुत्र हैं। उनकी मनोहरा नामक पत्नीसे चार पुत्र उत्पन्न हुए हैं—वर्चा, शिशिर, प्राण और रमण (आदि० ६६ । १८–२२)। सोमने अपने पुत्र वर्चाको कुछ शर्तोंके साथ केवल सोलह वर्षोंके लिये देवकार्यकी सिद्धिके निमित्त भूतलपर भेजा था, जो 'अभिमन्यु' रूपसे अवतीर्ण हुआ था (आदि० ६७ । ११३–१२४)। (३) भारतवर्षकी एक प्रमुख नदी, जिसका जल भारतीय प्रजा पीती है (भीष्म० ९ । २९)।

चन्द्रवत्स—एक क्षत्रियकुल, जो चन्द्रवत्ससे आरम्भ हुआ था, इसमें 'धारण' नामक 'कुलपांसन' राजकुमार पैदा हुआ था (उद्योग० ७४ । १६) ।

चन्द्रवर्मा—काम्बोजदेशका एक राजा, जो चन्द्रमाके समान सुन्दर था, यह चन्द्रनामक दैत्यके अंशसे उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७ । ३१-३२) । धृष्टद्युम्नके द्वारा इसका वध (द्रोण० ३२ । ६५) ।

चन्द्रविनाशन—एक महान् असुर, जो भूतलपर 'जानकि' नामसे प्रसिद्ध राजा हुआ था (आदि० ६७ । ३७-३८) ।

चन्द्रसीता—स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । ११) ।

चन्द्रसेन—(१) एक राजकुमार, जो बंगालके राजा समुद्रसेनका पुत्र था और द्रौपदीके स्वयंवरमें गया था (आदि० १८५ । ११) । यह अपने पिताके साथ ही भीमसेनद्वारा पराजित हुआ था (सभा० ३० । २४) । यह पाण्डव-सेनाका श्रेष्ठ रथी और युधिष्ठिरका सहायक था (उद्योग० १७१ । १९) । चन्द्रमाके समान श्वेतवर्णवाले समुद्री घोड़े इसके रथमें जुते थे । (द्रोण० २३ । ६०) । अश्वत्थामाद्वारा इसका वध (द्रोण० १५६ । १८३) । (२) कौरवपक्षका योद्धा शल्यका चक्ररक्षक, युधिष्ठिरद्वारा इसका वध (शल्य० १२ । ५२) ।

चन्द्रहन्ता—एक दैत्य, जो राजर्षि 'शुनक' के रूपमें इस भूतलपर उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७ । ३७-३८) ।

चन्द्रहर्ता—दक्षकन्या सिंहिकाका पुत्र, पिताका नाम कश्यप (आदि० ६५ । ३१) ।

चन्द्राश्व—इक्ष्वाकुवंशी महाराज कुवलाश्वके पुत्र, ये धुन्धुकी क्रोधाग्निमें दग्ध होनेसे बच गये थे (वन० २०४ । ४०–४२) ।

चन्द्रोदय—राजा विराटका एक भाई (द्रोण० १५८ । ४२) ।

चपल—एक प्राचीन नरेश (आदि० १ । २३८) ।

चमसोद्भेद—सुराष्ट्रदेशीय विनशनतीर्थके अन्तर्गत एक तीर्थ, जहाँ अदृश्य हुई सरस्वतीका दर्शन होता है, यहाँ स्नान करनेसे अग्निष्टोम यज्ञका फल मिलता है (वन० ८२ । ११२; वन० । ८८ । २०; शल्य० ३५ । ८७) ।

चमू—सैन्यगणनाके लिये एक पारिभाषिक शब्द । तीन पृतनाकी एक चमू होती है (आदि० २ । २१) ।

चमूहर—एक विश्वेदेव (अनु० ९१ । ३५) ।

चम्पकारण्य (चम्पारन)—एक तीर्थ, जहाँ एक रात निवास करनेसे सहस्र गोदानका फल मिलता है (वन० ८४ । १३३) ।

चम्पा—यहाँ भागीरथीमें तर्पण करनेकी महिमा है (वन० ८५ । १४-१५) । भागीरथी गङ्गाके तटपर अवस्थित एक प्राचीन नगरी, जिसमें त्रेतायुगमें राजा लोमपाद रहते थे (वन० ११३ । १५) । द्वापरमें यहाँ अधिरथ सूतकी राजधानी थी । यहीं गङ्गाजीके जलसे राधाको वह पिटारी मिली, जिसमें शिशु 'कर्ण' बंद था (वन० ३०८ । २६ से वन० ३०९ । ५ तक) । इसपर कर्ण अधिकार करके इसका पालन करता था (शान्ति० ५ । ७) । विपुलका चम्पानगरीको जाना (अनु० ४२ । १६) ।

चर्ममण्डल—एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ४७) ।

चर्मण्वती—एक नदी, जिसे आजकल 'चम्बल' कहते हैं, यह वरुणकी सभामें उपस्थित होती है (सभा० ९ । २१) । इसके तटपर सहदेवने जम्भकके पुत्रको परास्त किया था (सभा० ३१ । ७) । चर्मण्वती नदीमें स्नान करनेसे राजा रन्तिदेवद्वारा अनुमोदित 'अग्निष्टोम' यज्ञका फल मिलता है (वन० ८२ । ५४) । अग्निकी उत्पत्तिकी स्थानभूता नदियोंमें इसकी भी गणना है (वन० २२२ । २३) ।

चर्मवान्—सुबलका एक पुत्र, शकुनिका भाई, इरावान्द्वारा इसका वध (भीष्म० ९० । २७–४६) ।

चाक्षुषी—एक प्रकारकी विद्या, जिसको मनुने सोमको, सोमने विश्वावसुको, विश्वावसुने चित्ररथको और चित्ररथने अर्जुनको दिया था । तीनों लोकोंमें जो भी वस्तुएँ हैं, उनमेंसे जिस वस्तुको आँखसे देखनेकी इच्छा हो, उसे इस विद्याके प्रभावसे कोई भी देख सकता है और जिस रूपमें देखना चाहे, उसी रूपमें देख सकता है (आदि० १६९ । ४३–४५) ।

चाणूर—(१) एक क्षत्रिय नरेश, जो मयनिर्मित सभामें युधिष्ठिरकी सेवामें बैठते थे (सभा० ४ । २६) । (२) एक आन्ध्रदेशीय मल्ल (पहलवान), जो एक महान् असुर था, यह कंसके दरबारमें रहा करता था, भगवान् श्रीकृष्णने इसका वध कर दिया (सभा० ३८ । पृष्ठ ८०१; उद्योग० १३० । ४७) ।

चातुर्मास्य—एक व्रत, जिसका वर्षाके चार महीनोंमें यत्नपूर्वक पालन करना आवश्यक माना जाता है । वीर पाण्डवोंने गयामें चातुर्मास्य व्रत ग्रहण करके वेदादि शास्त्रोंके स्वाध्यायद्वारा भगवान्‌की आराधना की (वन० ९५ । १३-१४) ।

चातुर्वर्ण्य-ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र—इन चारों वर्णोंको ही चातुर्वर्ण्य कहते हैं, साक्षात् भगवान्ने ही गुणकर्मविभागपूर्वक चातुर्वर्ण्यकी सृष्टि की है (भीष्म० २८ । १३; शान्ति० २०७ । ३०—३३) ।

चान्द्रमसी-बृहस्पतिकी यशस्विनी पत्नी तारा, जो कभी चन्द्रमाके सम्पर्कमें आ जानेके कारण 'चान्द्रमसी' कहलाती थी । इसने छः अग्निस्वरूप पुत्रों और एक 'स्वाहा' नामक पुत्रीको जन्म दिया था (वन० २१९ । १) ।

चान्द्रव्रत-रूप-सौन्दर्य, सौभाग्य तथा लोकप्रियताकी प्राप्ति करानेवाला एक व्रत, जो मार्गशीर्ष मासकी शुक्ल प्रतिपदाको मूल नक्षत्रसे चन्द्रमाका योग होनेपर आरम्भ किया जाता है, इसका विशेष विधान (अनु० ११० अध्याय) ।

चाम्पेय-विश्वामित्रके ब्रह्मवादी पुत्रोंमेंसे एक (अनु० ४ । ५८) ।

चारु (चारुचित्र)-धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६७ । ९५; आदि० ११६ । ४) । भीमसेनद्वारा वध (द्रोण० १३६ । २०—२२) ।

चारुदेष्ण-भगवान् श्रीकृष्णद्वारा रुक्मिणीके गर्भसे प्रकट (अनु० १४ । २९) । द्रौपदीके स्वयंवरमें इनका आगमन (आदि० १८५ । १७) । इनके द्वारा विविन्ध्यका वध (वन० १६ । २६) ।

चारुनेत्रा-कुबेरकी सभामें उपस्थित हो भगवान् धनदकी सेवा करनेवाली एक अप्सरा (सभा० १० । १०) ।

चारुमत्स्य-विश्वामित्रके ब्रह्मवादी पुत्रोंमेंसे एक (अनु० ४ । ५९) ।

चारुयशा-श्रीकृष्ण और रुक्मिणीके पुत्र (अनु० १४ । ३३-३४) ।

चारुवक्त्र-स्कन्दका सैनिक या पार्षद, जो ब्राह्मणोंका प्रेमी है (शल्य० ४५ । ७१) ।

चारुवेष-श्रीकृष्ण और रुक्मिणीके पुत्र (अनु० १४ । ३३-३४) ।

चारुशीर्ष-एक आलम्बगोत्रीय ऋषि, जो इन्द्रके प्रिय सखा थे; शिव-महिमाके विषयमें युधिष्ठिरसे इनका अनुभव सुनाना (अनु० १८ । ५—७) ।

चारुश्रवा-श्रीकृष्ण और रुक्मिणीके पुत्र (अनु० १४ । ३३-३४) ।

चार्वाक-दुर्योधनका मित्र एक राक्षस, जिसने युधिष्ठिरके नगर-प्रवेशके समय संन्यासी-वेषमें आकर उनके प्रति दुर्वचन कहे थे (शान्ति० ३८ । २२—२७) । बदरिकाश्रममें इसकी तपस्याका वर्णन (शान्ति० ३९ । ३) । इसका ब्रह्माजीसे अपने लिये किसी भी प्राणीसे भय न होनेका वर माँगना और ब्रह्माजीका कुछ संशोधनके साथ उसको वर-प्रदान करना (शान्ति० ३९ । ४-५) । ब्राह्मणोंद्वारा इसका वध (शान्ति० ३८ । ३५) ।

चाषवक्त्र-स्कन्दका एक सैनिक या पार्षद, जो ब्राह्मणोंका प्रेमी है (शल्य० ४५ । ७६) ।

चिकुर-नागराज आर्यकके पुत्र एवं सुमुखके पिता, जिन्हें गरुड़ने अपना ग्रास बना लिया था (उद्योग० १०३ । २४) ।

चित्र-(१) धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६७ । ९५; आदि० ११६ । ४) । भीमसेनद्वारा इसका वध (द्रोण० १३६ । २०—२२) । (२) एक गजराज, जिसके साथ स्कन्दने शैशवकालमें क्रीड़ा की थी (वन० २२५ । २३) । (३) कौरव-पक्षका एक योद्धा, प्रतिविन्ध्यद्वारा वध (कर्ण० १४ । ३२-३३) । (४) चेदिदेशीय पाण्डवपक्षका योद्धा, कर्णद्वारा वध (कर्ण० ५६ । ४९) ।

चित्रक (नामान्तर—चित्र एवं चित्रबाण)-धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६७ । १०५) । चित्र नामसे इसका भीमसेनद्वारा वध (द्रोण० १३७ । ३०) ।

चित्रकुण्डल (दीर्घलोचन)-धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ११६ । ६) । भीमसेनद्वारा इसका वध (भीष्म० ९६ । २७) । (चित्रकुण्डलकी जगह दीर्घलोचन पाठभेद मिलता है ।)

चित्रकूट-सर्वपापनाशिनी मन्दाकिनीके तटपर अवस्थित एक श्रेष्ठ पर्वत । वहाँ मन्दाकिनीमें स्नान और देवता-पितरोंकी पूजा करनेसे अश्वमेध-यज्ञका फल मिलता है (वन० ८५ । ५८) । वनवासके समय भगवान् श्रीरामने चित्रकूट पर्वतपर निवास किया था (वन० २७७ । ३८) । जो चित्रकूट पर्वतपर मन्दाकिनीके जलमें स्नान करके उपवास करता है, वह पुरुष राजलक्ष्मीसे सेवित होता है (अनु० २५ । २९) । (यह स्थान उत्तरप्रदेशके बाँदा जिलेमें है) ।

चित्रकेतु-(१) गरुड़की प्रमुख संतानोंमेंसे एक (उद्योग० १०१ । १२) । (२) पाण्डव-पक्षका एक योद्धा । पाञ्चालराजकुमार (भीष्म० ९५ । ४१) ।

चित्रगुप्त-धर्मराजके मन्त्री । इनके द्वारा धर्मके रहस्यका वर्णन (अनु० १३० । १८—३३) ।

चित्रचाप (चित्रशरासन या शरासन)-धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६७ । ९८; आदि० ११६ । ६) ।

चित्रदेव-स्कन्दका सैनिक या पार्षद, जो ब्राह्मणोंका प्रेमी है (शल्य० ४५ । ७१) ।

चित्रधर्मा-भूमण्डलका एक नरेश, जिसके रूपमें विरूपाक्ष नाम दैत्य ही उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७ । २२-२३) । पाण्डवोंकी ओरसे इन्हें रण-निमन्त्रण भेजा गया था (उद्योग० ४ । १३) ।

चित्रपुष्प-विचित्र पुष्पोंसे भरा हुआ एक वन, जो द्वारकाके पश्चिमवर्ती सुकक्ष नामक रजतपर्वतपर सुशोभित था (सभा० ३८ । पृष्ठ ८१२) ।

चित्रबर्ह-गरुड़की प्रमुख संतानोंमेंसे एक (उद्योग० १०१ । १२) ।

चित्रबाण (नामान्तर—चित्र या चित्रक)-धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ११६ । ४) । भीमसेनद्वारा वध (द्रोण० १३७ । २९) ।

चित्रबाहु (चित्रायुध)-धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६७ । ९७; आदि० ११६ । ८) । चित्रायुध नामसे इसका भीमसेनद्वारा वध (द्रोण० १३६ । २०-२२) ।

चित्ररथ-(१) एक देवगन्धर्व, जो पिता कश्यप और माता मुनिका पुत्र था (आदि० ६५ । ४३) । यह अर्जुनके जन्मोत्सवमें गया था (आदि० १२२ । ५६) । यही गन्धर्वराज अङ्गारपर्णके नामसे विख्यात था (आदि० १६९ । ५) । प्रदोषकालमें गङ्गाजीके जलके भीतर अपनी स्त्रियोंके साथ क्रीड़ा करते समय पाण्डवोंके वहाँ आ जानेसे इसका उनके ऊपर क्रोध प्रकट करना और फटकारना (आदि० १६९ । ५-१५) । गन्धर्वको अर्जुनका मुँहतोड़ उत्तर (आदि० १६९ । १६-२४) । अर्जुनके साथ इसका युद्ध (आदि० १६९ । २५) । अर्जुनके आग्नेयास्त्रसे इसके रथका दग्ध होना और इसकी मूर्च्छा तथा अर्जुनका इसे युधिष्ठिरके पास घसीट ले जाना (आदि० १६९ । ३१-३३) । इसकी जीवन-रक्षाके लिये युधिष्ठिरसे कुम्भीनसीकी प्रार्थना (आदि० १६९ । ३५) । अर्जुनद्वारा इसको जीवनदान (आदि० १६९ । ३७) । इसका चित्ररथ नाम होनेका कारण तथा अर्जुनके कारण इसका 'दग्धरथ' नाम होना (आदि० १६९ । ४०) । इसके द्वारा विश्वावसुसे अपनेको चाक्षुषी विद्याकी प्राप्तिका कथन और चाक्षुषी विद्याके महत्त्वका वर्णन (आदि० १६९ । ४३-४६) । इसके द्वारा पाण्डवोंको गन्धर्वदेशीय दिव्य अश्वोंका दान और उनकी प्रशंसा (आदि० १६९ । ४८-५४) । इसका अर्जुनको चाक्षुषी विद्या प्रदान करना (आदि० १६९ । ५६) । अर्जुनके साथ इसकी मित्रता (आदि० १६९ । ५८) । इसका पाण्डवोंपर अपने आक्रमण और पराजयका कारण बताना (आदि० १६९ । ६०-७२) । किसी श्रोत्रिय ब्राह्मणको पुरोहितरूपमें वरण करनेके लिये इसकी अर्जुनको प्रेरणा (आदि० १६९ । ७३-८०) । इसका अर्जुनको तपती और संवरणकी कथा सुनाना (आदि० १७० अध्यायसे १७२ तक) । वसिष्ठके साथ विश्वामित्रके वैरका कारण सुनाकर इसके द्वारा वसिष्ठके अद्भुत क्षमाबलका वर्णन (आदि० १७३ अध्यायसे १७४ अध्यायतक) । इसका शक्तिके शापसे राक्षसभावको प्राप्त हुए राजा कल्माषपादके द्वारा विश्वामित्रकी प्रेरणासे वसिष्ठके पुत्रोंके भक्षण एवं वसिष्ठके शोककी कथा सुनाना (आदि० १७५ अध्याय) । इसके द्वारा कल्माषपादके उद्धार और वसिष्ठजीसे उन्हें अश्मक नामक पुत्रकी प्राप्ति-का वर्णन (आदि० १७६ अध्याय) । शक्तिपुत्र पराशरके जन्म और पिताकी मृत्युका हाल सुनकर कुपित हुए पराशरको शान्त करनेके लिये वसिष्ठजीके और्वोपाख्यान सुनानेकी कथाका वर्णन (आदि० १७७ अध्यायसे १७८, १७९ अध्यायतक) । पराशरके राक्षससत्रके आरम्भ और समाप्ति तथा कल्माषपादको ब्राह्मणी आङ्गिरसीके शापकी कथा कहना (आदि० १८० अध्यायसे १८१ अध्यायतक) । अर्जुनके पूछनेपर इसका धौम्यको पुरोहित बनानेकी सलाह देना (आदि० १८२ । १-२) । चित्ररथका अर्जुनसे आग्नेयास्त्रको ग्रहण करना (आदि० १८२ । ३) । यह कुबेरकी सभामें रहकर भगवान् धनाध्यक्षकी उपासना करता है (सभा० १० । २६) । इसने राजा युधिष्ठिर-को चार सौ दिव्य घोड़े दिये, जो वायुके समान वेगशाली थे (सभा० ५२ । २३) । यह गन्धर्वोंद्वारा पृथ्वीदोहनके समय बछड़ा बना था (द्रोण० ६९ । २५) ।

महाभारतमें आये हुए चित्ररथके नाम-अङ्गारपर्ण, दग्धरथ, गन्धर्व और गन्धर्वराज इत्यादि ।

(२)मार्तिकावत देशका राजा, जिसकी अपनी पत्नीके साथ की हुई जलक्रीडाको रेणुकाने देखा था (वन० ११६ । ७) । (३) एक पाञ्चाल राजकुमार, द्रोणाचार्यद्वारा इसका वध (द्रोण० १२२ । ४३-४९) । (४) अङ्गदेशके एक राजा, जो देवशर्माकी पत्नी रुचिकी बहिन प्रभावतीके पति थे (अनु० ४२ । ८) । (५) यदुवंशी उषङ्गुके पुत्र एवं शूरके पिता (अनु० १४७ । २९) ।

चित्ररथा-एक प्रमुख नदी, जिसका जल भारतीय प्रजा पीती है (भीष्म० ९ । ३४) ।

चित्रलेखा-एक अप्सरा, जिसने अर्जुनके स्वागत-समारोह-

के अवसरपर इन्द्रसभामें नृत्य किया था (वन० ९ । ३४) ।

चित्रवर्मा-(१) धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६७ । ९७; आदि० ११६ । ६) । भीमसेन-द्वारा इसका वध (द्रोण० १३६ । २०-२२) । (२) एक पाञ्चाल राजकुमार । राजा द्रुपदने इसे युद्धके लिये निमन्त्रित करनेकी प्रेरणा दी थी (उद्योग० ४ । १३) । चित्रकेतु, सुधन्वा, चित्ररथ और वीरकेतु—ये चार इसके भाई थे । बड़े भाई वीरकेतुके मारे जानेपर शेष सभी भाई द्रोणाचार्यपर टूट पड़े और उनके द्वारा मारे गये (द्रोण० १२२ । ४३-४९) । यह सुचित्रका पुत्र था (कर्ण० ६ । २७-२८) ।

चित्रवाहन-मणिपूरके नरेश, चित्राङ्गदाके पिता (आदि० २१४ । १५) । पुत्रिका-धर्मकी शर्तपर इनके द्वारा अर्जुनको अपनी कन्याका दान (आदि० २१४ । २५)।

चित्रवाहा-एक प्रमुख नदी, जिसका जल भारतीय जनता पीती है (भीष्म० ९ । १७) ।

चित्रवेगिक-धृतराष्ट्रके कुलमें उत्पन्न एक नाग, जो सर्पसत्रमें दग्ध हो गया था (आदि० ५७ । १८) ।

चित्रशरासन (शरासन या चित्रचाप)-धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ११६ । ४) । भीमसेनद्वारा इसका वध (द्रोण० १३६ । २०-२२) ।

चित्रशिखण्डी-पाञ्चरात्रशास्त्रके रचयिता मरीचि, अत्रि, अङ्गिरा, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु और वशिष्ठ—इन सात ऋषियोंकी संज्ञा (शान्ति० ३३५ । २७) ।

चित्रशिला-एक प्रमुख नदी, जिसका जल भारतीय प्रजा पीती है (भीष्म० ९ । ३०) ।

चित्रसेन (उग्रसेन)-(१) धृतराष्ट्रके ग्यारह महारथी पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६३ । ११९) । यह द्रौपदीके स्वयंवरमें गया था (आदि० १८५ । ३) । युधिष्ठिरके साथ जूआ खेलनेको उद्यत हुए लोगोंमें यह भी था (सभा० ५८ । १३) । इसका चेकितानके साथ युद्ध (भीष्म० ११० । ८) । भीमसेनके साथ युद्ध (भीष्म० ११३ । २) । सुशर्माके साथ संग्राम (भीष्म० ११६ । २७-२९) । भीमके साथ युद्ध (द्रोण० ९६ । ३१) । सात्यकिके साथ युद्ध (द्रोण० ११६ । ४) । भीमसेन-द्वारा मारा गया (द्रोण० १३७ । २९-३०) । इसका शतानीकके साथ युद्ध और शतानीकद्वारा इसकी पराजयका वर्णन (द्रोण० १६८ । १-१२) । (यह युद्ध चित्रसेनके जीवनकालका है । अध्याय १३७ में इसके वधका वर्णन हुआ है । इससे पहले जो इन्होंने शतानीकके साथ युद्ध किया था, उसका वर्णन पीछे किया गया है ।) (२) पूरुवंशीय राजा अविक्षित्के पौत्र तथा परीक्षित्के तृतीय पुत्र (आदि० ९४ । ५४) । (३) एक गन्धर्व, जो सत्ताईस सहायक गन्धर्वों और अप्सराओंके साथ युधिष्ठिरकी सभामें उपस्थित हो उनका मनोरञ्जन करते थे (सभा० ४ । ३७) । ये कुबेरकी सभामें भी उपस्थित होते हैं (सभा० १० । २६) । ये इन्द्रकी सभामें विराजते हैं (सभा० ७ । २२) । इनका अर्जुनको संगीत-विद्याकी शिक्षा देना (वन० ४४ । ८-९) । इन्द्रके आदेशसे इनका उर्वशीके पास जाकर उसे अर्जुनको प्रसन्न करनेके लिये कहना (वन० ४५ । ६-१३) । द्वैतवनमें कौरवोंके साथ इनका युद्ध और कर्णको परास्त करना (वन० २४१ अध्याय) । दुर्योधनको बंदी बनाना (वन० २४२ । ६) । अर्जुनद्वारा पराजित होकर इनका अपनेको प्रकट कर देना (वन० २४५ । २७) । इन्द्रसे अर्जुनकी युद्ध-कलाकी प्रशंसा करना (विराट० ६४ । ३८-४३) । युधिष्ठिरके अश्वमेधयज्ञमें ये भी पधारे थे और यथावसर अपने नृत्य-गीतकी कलाओंद्वारा ब्राह्मणोंका मनोरञ्जन करते थे (आश्व० ८८ । ३९-४०) । धृतराष्ट्रके आश्रमपर नारदजीके साथ ये भी पधारे थे (आश्रम० २९ । ९) । (४) जरासंधका मन्त्री, डिम्भक (सभा० २२ । ३२-३३) । (देखिये—डिम्भक) (५) अभिसारदेशका राजा और कौरव-पक्षका एक योद्धा । श्रुतकर्माद्वारा इसका वध (कर्ण० १४ । १४) । (६) (श्रुतसेन)-त्रिगर्तराज सुशर्माका भाई (कर्ण० २७ । ३-११) । (७) एक पाञ्चाल योद्धा, कर्णद्वारा वध (कर्ण० ४८ । १५) । (८) कर्णका पुत्र, कर्णका चक्ररक्षक (कर्ण० ४८ । १८) । नकुलद्वारा इसका वध (शल्य० १० । १९-२०) । (९) कर्णका भाई, युधामन्युद्वारा इसका वध (कर्ण० ८३ । ३९-४०) । (१०) समुद्रतटवर्ती राज्यके अधिपति एक पाण्डवपक्षीय योद्धा, जो अपने पुत्रके साथ युद्धभूमिमें समुद्रसेनके द्वारा मारा गया (कर्ण० ६ । १५-१६) । (११) एक नाग, जो कर्ण और अर्जुनके युद्धमें अर्जुनकी विजयका समर्थक था (कर्ण० ८७ । ४३) ।

चित्रसेना-(१) कुबेरकी सभामें उपस्थित हो धनदकी उपासना करनेवाली एक अप्सरा (सभा० १० । १०) । अर्जुनके इन्द्रलोकमें जानेपर इसने नृत्य किया था (वन० ४३ । ३०) । (२) एक प्रमुख नदी, जिसका जल भारतीय प्रजा पीती है (भीष्म० ९ । १७) । (३) स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । १४) ।

चित्रा–एक अप्सरा, जिसने अष्टावक्रके सम्मानार्थ कुबेरकी सभामें नृत्य किया था (अनु० १९ । ४४) ।

चित्राक्ष–धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६७ । ९५; आदि० ११६ । ४) । भीमसेनद्वारा वध (द्रोण० १३६ । २०–२२) ।

चित्राङ्ग (चित्राङ्गद या श्रुतान्तक)–धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ११६ । ६) । भीमसेनद्वारा इसका वध (शल्य० २६ । १०-११) ।

चित्राङ्गद (चित्राङ्ग)–(१) धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक । 'श्रुतान्तक' नामसे भीमसेनद्वारा इसका वध (शल्य० २६ । १०) । (२) महाराज शान्तनुके द्वारा सत्यवतीके गर्भसे उत्पन्न एवं विचित्रवीर्यके अग्रज (आदि० ९५ । ४९-५०; आदि० १०१ । २) । पिताके स्वर्गवासी होनेपर भीष्मद्वारा इनका राज्याभिषेक (आदि० १०१ । ५) । चित्राङ्गद नामक गन्धर्वके साथ इनका भीषण संग्राम और उसके द्वारा इनकी मृत्यु (आदि० १०१ । ९) । भीष्मद्वारा इनका अन्त्येष्टि-संस्कार (आदि० १०१ । ११) । (३) एक गन्धर्व, जिसके द्वारा शान्तनुपुत्र चित्राङ्गदका वध किया गया (आदि० १०१ । ९) । (४) द्रौपदीके स्वयंवरमें आये हुए एक राजा (सम्भव है, ये कलिङ्गराज या दशार्णराजमेंसे कोई रहे हों ।) (आदि० १८५ । २२) । (५) कलिङ्गदेशके एक राजा, जिनके यहाँ किसी समय स्वयंवर-महोत्सवमें देश-देशके राजा एकत्र हुए थे (शान्ति० ४ । २) । (६) महाबली शत्रुमर्दन दशार्णनरेश, जिनके साथ अश्वमेध-सम्बन्धी अश्वकी रक्षाके समय अर्जुनका बड़ा भयङ्कर युद्ध हुआ और ये अर्जुनके अधीन हो गये (आश्व० ८३ । ५–७) ।

चित्राङ्गदा–(१) मणिपूरनरेश चित्रवाहनकी पुत्री (आदि० २१४ । १५) । नगरमें विचरण करती हुई इस राजकुमारीपर अर्जुनकी दृष्टि पड़ी और वे इसे चाहने लगे (आदि० २१४ । १६) । चित्राङ्गदाके पितासे उनका इसे अपनी पत्नी बनानेके लिये माँगना (आदि० २१४ । १७) । अर्जुनद्वारा इसका पाणिग्रहण (आदि० २१४ । २६) । इसके गर्भसे अर्जुनद्वारा एक पुत्रका जन्म और अर्जुनका चित्राङ्गदाको हृदयसे लगाकर वहाँसे प्रस्थित हो जाना (आदि० २१४ । २७) । इससे मिलनेके लिये अर्जुनका पुनः मणिपूरमें आगमन (आदि० २१६ । २३) । मणिपूरसे जाते समय इसको अर्जुनका आश्वासन तथा राजसूय-यज्ञमें आनेका आदेश (आदि० २१६ । २६—३४) । बभ्रुवाहन और अर्जुनके युद्धमें दोनोंके धराशायी होनेपर इसका संतप्त हृदयसे समराङ्गणमें आना और पतिदेवकी दशाका निरीक्षण (आश्व० ७९ । ३७–३९) । पति-वियोगके शोकसे संतप्त हो मूर्च्छित होकर गिरना, कुछ देर बाद होशमें आनेपर उलूपीको सामने खड़ी देखना और उसे उपालम्भ देकर उससे अर्जुनके प्राण बचानेका अनुरोध करना (आश्व० ८० । २—७) । पतिके निकट जाकर इसका विलाप करना (आश्व० ८० । ८—११) । पुनः उलूपीसे पतिको जिलानेके लिये अनुरोध करना (आश्व० ८० । १२—१७) । आमरण उपवासका संकल्प लेकर बैठना (आश्व० ८० । १८) । चित्राङ्गदाका उलूपी तथा बभ्रुवाहनके साथ हस्तिनापुरमें जाना (आश्व० ८७ । २६) । इसका कुन्ती और द्रौपदीके चरणोंका स्पर्श करना और सुभद्रा आदिसे मिलना (आश्व० ८८ । २-३) । कुन्ती, द्रौपदी और सुभद्रा आदिका चित्राङ्गदाके लिये विविध रत्नोंकी भेंट देना (आश्व० ८८ । ३-४) । इसका दासीकी भाँति गान्धारीकी सेवामें संलग्न होना (आश्रम० १ । २३-२४) । वनमें जाते हुए धृतराष्ट्र और गान्धारीके साथ कुरुकुलकी अन्य स्त्रियोंसहित चित्राङ्गदाका भी घरसे बाहर निकलना और रोना (आश्रम० १५ । १०) । संजयका आश्रमवासी मुनियोंको कुरुकुलकी स्त्रियोंका परिचय देते समय चित्राङ्गदाकी अङ्गकान्तिको नूतन मधूकपुष्पकी भाँति गौर बताना (आश्रम० २५ । ११) । पाण्डवोंके महाप्रस्थानके पश्चात् इसका 'मणिपूर' नामक नगरको जाना (महाप्रस्थान० १ । १८) । (२) एक अप्सरा, जिसने अष्टावक्रके सम्मानार्थ कुबेरकी सभामें नृत्य किया था (अनु० १९ । ४४) ।

चित्रायुध (या चित्रबाहु)–(१) धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६७ । ९७) । भीमसेनद्वारा इसका वध (द्रोण० १३६ । २०–२२) । (२) (दृढ़ायुध) धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ११६ । ८) । भीमसेनद्वारा इसका वध (द्रोण० १३७ । २९) । (३) सिंहपुर-नरेश, जिनकी राजधानी सिंहपुरपर अर्जुनने दिग्विजयके समय आक्रमण किया और उसे युद्धमें जीत लिया (सभा० २७ । २०) । (४) चेदिदेशके एक महारथी योद्धा, जो पाण्डव पक्षमें थे । उनके घोड़े लाल और आयुध आदि विचित्र थे (द्रोण० २३ । ५६—६४) । कर्णद्वारा इनका वध (कर्ण० ५६ । ४९) ।

चित्राश्व–सत्यवान्‌का दूसरा नाम । इन्हें अश्व बहुत प्रिय थे । ये मिट्टीके अश्व बनाया करते थे और चित्रमें अश्व ही अङ्कित करते थे, इसलिये लोग इन्हें 'चित्राश्व' भी कहते थे (वन० २९४ । १३) ।

चित्रोपला–एक प्रमुख नदी, जिसका जल भारतीय प्रजा पीती है (भीष्म० ९ । ३४) ।

चिबुक-नन्दिनी गौद्वारा उत्पादित एक म्लेच्छ जाति (आदि० १७४ । ३८) ।

चिरकारी-महर्षि गौतमका एक पुत्र, जो प्रत्येक कार्यपर अधिक देरतक विचार करनेके कारण उसे बहुत देरसे पूर्ण करता था, इसीसे चिरकारी कहलाता था । पिताद्वारा अपनी माताके वधका आदेश पानेपर उसका विचार करना (शान्ति० २६६ । ३--४३) । पिताके चरणोंमें नतमस्तक होना (शान्ति० २६६ । ६०) । पिताद्वारा उसका अभिनन्दन (शान्ति० २६६ । ६७) । पिताके साथ स्वर्गगमन (शान्ति० २६६ । ७८) ।

चिरान्तक-गरुड़की प्रमुख संतानोंमेंसे एक (उद्योग० १०१ । १३) ।

चीन-(१) नन्दिनी गौद्वारा उत्पादित एक म्लेच्छ जाति (आदि० १७४ । ३८) । (२) एक देश, जहाँके लोग युधिष्ठिरको भेंट देनेके लिये आये थे (सभा० ५१ । २३) ।

चीरक-एक देश या जनपद, जिसे कर्णने जीतकर दुर्योधनके लिये कर देनेवाला बना दिया था (कर्ण० ८ । १९) ।

चीरवासा-(१) एक क्षत्रिय राजा, जो क्रोधवश नामक दैत्यके अंशसे उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७ । ६१) । (२) एक यक्ष, जो कुबेरकी सभामें उपस्थित हो भगवान् धनाध्यक्षकी सेवा करता है (सभा० १० । १८) ।

चीरिणी-एक नदी, जिसके तटपर वैवस्वत मनुने भीगे चीर और जटा धारण किये तपस्या की थी (वन० १८७ । ६) ।

चुलुका-एक प्रमुख नदी, जिसका जल भारतीय प्रजा पीती है (भीष्म० ९ । २०) ।

चूचुक-दक्षिण भारतकी एक म्लेच्छ जाति (शान्ति० २०७ । ४२) ।

चूचुप-दक्षिण भारतका एक जनपद (उद्योग० १४० । २६) ।

चेकितान-पाण्डव-पक्षका एक महारथी, जो वृष्णिवंशी यादव था और द्रौपदीके स्वयंवरमें गया था (आदि० १८५ । ११; उद्योग० १७१ । १९; भीष्म० ८४ । २०) । राजा युधिष्ठिरके मयनिर्मित सभामें प्रवेश करते समय ये भी उनकी सेवामें उपस्थित थे (सभा० ४ । २७) । इन्होंने युधिष्ठिरके राजसूययज्ञमें उपस्थित हो अभिषेकके समय उनके लिये तरकस भेंट किया था (सभा० ५३ । ९) । प्रथम दिनके संग्राममें सुशर्माके साथ इनका द्वन्द्वयुद्ध (भीष्म० ४५ । ६०–६२) । कृपाचार्यको मूर्छित करके स्वयं भी उनके द्वारा मूर्छित होना (भीष्म० ८४ । ३१) । चित्रसेनके साथ द्वन्द्वयुद्ध (भीष्म० ११० । ८-९; भीष्म० १११ । ५३–५५) । धृतराष्ट्रद्वारा इनकी वीरताका वर्णन (द्रोण० १० । ५४) । अनुविन्दके साथ युद्ध (द्रोण० १४ । ४८) । इनके घोड़ोंका वर्णन (द्रोण० २३ । ४५) । द्रोणाचार्यद्वारा इनकी पराजय (द्रोण० १२५ । ६८–७१) । दुर्योधनद्वारा इनका वध (शल्य० १२ । ३१–३३) । व्यासजीके आवाहन करनेपर गङ्गाजीके जलसे ये भी प्रकट हुए थे (आश्रम० ३२ । १२) । इनके दो नाम और मिलते हैं---सात्वत और वार्ष्णेय ।

चेदि-एक प्राचीन देश, जिसे उपरिचर वसुने जीता था और इसपर शासन किया था (आदि० ६३ । १-२) । चेदिदेशकी विशेषता (आदि० ६३ । ८) । यहींका राजा शिशुपाल था । नकुलकी पत्नी करेणुमती भी यहींकी राजकुमारी थीं (आदि० ९५ । ७९) । शिशुपालकी मृत्युके पश्चात् उसके पुत्र धृष्टकेतुको चेदिदेशका राजा बनाया गया (सभा० ४५ । ३६) । राजा नलके समयमें सुबाहु इस देशके राजा थे; जिनके यहाँ दमयन्तीने सुखपूर्वक निवास किया था (वन० ६५ । ४४–७६) । चेदिराज धृष्टकेतु एक अक्षौहिणी सेना साथ लेकर पाण्डवोंकी सहायतामें आये थे (उद्योग० १९ । ७) । इस देशके क्षत्रिय वीर भगवान् श्रीकृष्णकी सलाहसे चलकर शत्रुओंको बंदी बनाते और मित्रोंको आनन्दित करते थे (उद्योग० २८ । ११) । भारतके प्रमुख जनपदोंमें 'चेदि'की भी गणना है (भीष्म० ९ ।४०) ।

चैत्य-देववृक्ष (आदि० १५० । ३३) ।

चैत्यक-मगधकी राजधानी गिरिव्रजके समीपका एक पर्वत, जो मगधवासियोंको अत्यन्त प्रिय था । बृहद्रथ-परिवारके लोग इसकी देवताकी भाँति पूजा किया करते थे (सभा० २१ । १–५) ।

चैत्ररथ-(१) एक वन, जहाँ राजा ययातिने 'विश्वाची' अप्सराके साथ रमण किया था (आदि० ७५ । ४८) । तपस्याके लिये जाते समय राजा पाण्डु अपनी दोनों पत्नियोंके साथ यहाँ आये थे (आदि० ११८ । ४८) । द्वारकापुरीका एक वन, जो इसी (चैत्ररथ) नामसे प्रसिद्ध था और ब्रह्माजीके अलौकिक उद्यानकी भाँति शोभा पाता था (सभा० ३८ । पृष्ठ ८१२, कालम २) । (२) भरतवंशीय महाराज कुरुके द्वारा वाहिनीके गर्भसे उत्पन्न एक राजकुमार (आदि० ९४ । ५०) ।

चैत्ररथपर्व-आदिपर्वका एक अवान्तर पर्व (अध्याय १६४ से १८२ तक) ।

चैद्य–चेदिराज शिशुपाल (आदि० १ । ३१)। चेदिराज धृष्टकेतु, जो धृष्टद्युम्ननिर्मित क्रौञ्चव्यूहके नेत्र-स्थानमें खड़े थे (भीष्म० ५० । ४७)।

चोल–एक देश, जिसकी सेनाओंपर अर्जुनने विजय पायी थी (सभा० २७ । २१)। चोलदेशके नरेशको भी चोल कहा गया है, ये युधिष्ठिरको भेंट देने गये थे (सभा० ५२ । ३५)। दक्षिण भारतका एक जनपद, जहाँके वीर योद्धा धृष्टद्युम्ननिर्मित क्रौञ्चव्यूहकी दाहिनी पाँखका आश्रय लेकर खड़े थे (भीष्म० ९ । ६०; भीष्म० ५० । ५१)। भगवान् श्रीकृष्णने इस देशको जीता था (द्रोण० ११ । १७)। पाण्डवोंकी ओरसे इन्होंने युद्ध किया (कर्ण० १२ । १५)।

चौर–क्षत्रियोंकी एक प्राचीन जाति, जो ब्राह्मणोंके रोषसे शूद्रत्वको प्राप्त हो गयी (अनु० ३५ । १७)।

च्यवन–(१) एक सुप्रसिद्ध तपस्वी मुनि, जो महर्षि भृगुके पुत्र थे (आदि० ५ । ८)। इनकी उत्पत्ति-कथा (आदि० ५ । १३ से ६ । ३ तक)। इनका च्यवन नाम पड़नेका कारण तथा इन्हें देखते ही पुलोमा राक्षस-का जलकर भस्म हो जाना (आदि० ६ । ३)। इनके द्वारा सुकन्या नामक पत्नीके गर्भसे प्रमतिका जन्म (आदि० ५। ९; आदि० ८। १)। इनसे आस्तीकने अङ्गोंसहित सम्पूर्ण वेदोंका अध्ययन किया था (आदि० ४८ । १८)। इनकी भार्या मनुकी पुत्री आरुषी थी, जिससे और्व मुनिका जन्म हुआ था (आदि० ६६ । ४६)। ये ब्रह्माजीकी सभामें रहकर उनकी उपासना करते हैं (सभा० ११ । २२)। सुकन्याद्वारा इनकी आँखोंके फोड़ दिये जानेपर इनके द्वारा राजा शर्यातिके सैनिकोंका मलावरोध (वन० १२२ । १५–१७)। इन्हें शर्यातिसे सुकन्याकी प्राप्ति होनेपर इनकी प्रसन्नता (वन० १२२ । २६-२७)। रूप, यौवन और पत्नीकी प्राप्तिसे प्रसन्न होकर इनका अश्विनीकुमारों-को सोमपानके अधिकारी बनानेकी प्रतिज्ञा करना (वन० १२३ । २२-२३)। इनके द्वारा इन्द्रकी भुजाओंका स्तम्भन (वन० १२४ । १९; शान्ति० २४२ । २४)। इनका अश्विनीकुमारोंको सोमपान कराना (वन० १२५ । १०)। अभिमन्त्रित जल पी लेनेपर राजा युवनाश्व-को इनका आश्वासन देना (वन० १२६।१०–२८)। देवव्रत भीष्मका इनसे वेदाङ्गों और वेदोंका अध्ययन (शान्ति० ३७। ११)। (२) अङ्गिराके वंशज, च्यवन नामक अग्नि (वन० २२० । १)।

च्यवनाश्रम–एक तीर्थ, जिसमें काशिराजकी कन्या अम्बाने स्नान किया (उद्योग० १८६ । २६)।

च्यवन-सरोवर–एक तीर्थ जिसमें पितरोंका तर्पण किया जाता है (वन० १२५ । ११-१२)।

(छ)

छत्रवती–अहिच्छत्रदेशकी राजधानी, अहिच्छत्रा नगरीका दूसरा नाम (आदि० १६५ । २१)।

छन्दोदेव–मतङ्गको इन्द्रके वरदानसे जन्मान्तरमें मिलने-वाला नाम (अनु० २९ । २४)।

छागमुख–बकरेके समान मुख धारण करनेवाले भगवान् स्कन्द, जो अपने पुत्रों और कन्याओंसे घिरकर मातृ-काओंके देखते-देखते युद्धमें अपने पक्षकी रक्षा करते हैं (वन० २२८ । ३-४)।

(ज)

जङ्गारि–विश्वामित्रके ब्रह्मवादी पुत्रोंमेंसे एक (अनु० ४। ५७)।

जङ्घाबन्धु–एक प्राचीन ऋषि, जो युधिष्ठिरकी सभामें विराजते थे (सभा० ४ । १६)।

जटाधर–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ६१)।

जटायु–एक गीध, विनतानन्दन अरुणके दूसरे पुत्र, इनकी माताका नाम श्येनी और बड़े भाईका नाम सम्पाति था (आदि० ६६ । ६९-७०)। इनका सीताहरणके समय रावणके साथ युद्ध (वन० २७९। ३–५)। रावणद्वारा इनकी पाँखोंका काटा जाना (वन० २७९ । ६)। श्रीरामचन्द्रजीको सीताका पता बताकर इनका प्राण त्याग करना (वन० २७९। २३)। जटायु अपने भाई सम्पातिके साथ सूर्यमण्डल-की ओर उड़े थे। सम्पातिकी पाँखें जल गयीं और इनकी बची रह गयीं—इस प्रसङ्गकी चर्चा (वन० २८५ । ४९-५०)।

जटालिका–स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६। २३)।

जटासुर–(१) एक राजा, जो युधिष्ठिरकी सभामें रहता था (सभा० ४ । २४)। (२) एक राक्षस, जो पाण्डवोंके अस्त्र-शस्त्र तथा द्रौपदी, युधिष्ठिर, नकुल और सहदेवको लेकर भागा जा रहा था (वन० १५७। ७–११)। इसका भीमसेनके साथ युद्ध तथा प्राण-त्याग (वन० १५७ । ४८–७०)। इसके पुत्रका नाम अलम्बुष था, जो घटोत्कचके हाथसे मारा गया (द्रोण० १७४ । ७—३७)।

जटासुरवधपर्व–वनपर्वका एक अवान्तर पर्व (अध्याय १५७)।

जटिला–गौतमगोत्रकी कन्या, सात ऋषियोंकी पत्नी

(आदि० १९५ । १४)। हस्तिनापुरकी स्त्रियोंद्वारा द्रौपदीकी पतिसेवाके विषयमें इनका दृष्टान्त (शान्ति० ३८ । ५)।

जटी–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ६१)।

जठर–(१) एक वेदविद्याके पारंगत ब्राह्मण, जो जनमेजयके सर्पसत्रके सदस्य बने थे (आदि० ५३ । ८)। (२) एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ४२)।

जतुगृह–लाक्षागृह, जिसे दुर्योधनने पाण्डवोंके विनाशके लिये वारणावतमें बनवाया था (आदि० ६१ । १७)। पाण्डवोंने इस भवनमें सालभर रहकर इसमें आग लगा दी (आदि० ६१ । २१–२३)। दुष्ट दुर्योधनकी प्रेरणासे पुरोचनद्वारा महात्मा पाण्डवोंके विनाशके लिये लाहका घर बनवाया गया था (आदि० १४३ । ८)। विदुरके भेजे हुए खनकद्वारा पाण्डवोंने इसमें सुरंगका निर्माण कराया था (आदि० १४६ । १६)। अपने शराबी पाँच पुत्रोंके साथ मदिरा पीकर मत्त होकर एक भीलनीका इस भवनमें आकर सोना (आदि० १४७ । ७)। भीमका इस घरमें आग लगाना (आदि० १४७ । १०)। इसमें जलकर पुरोचनकी मृत्यु (आदि० १४७ । १६)।

जतुगृहपर्व–आदिपर्वका एक अवान्तर पर्व (अध्याय १४० से १५० तक)।

जनक–(क) मिथिलाके एक भूतपूर्व राजा, जो अब यमसभामें विराजमान होते हैं (सभा० ८ । १९)। (ख) युधिष्ठिरके समकालिक मिथिलाके एक राजा, जिसे भीमसेनने दिग्विजयके समय पराजित किया था (सभा० ३० । १३)। (ग) एक विदेहराज जनक, जिनके दरबारमें वन्दीद्वारा शास्त्रार्थमें हारे हुए कहोडको समुद्रमें डलवा दिया गया था (वन० १३२ । १५)। इनका अपनी यज्ञशालामें आये हुए अष्टावक्रसे वार्तालाप (वन० १३३ । २०–३०)। इनका अष्टावक्रको वन्दीसे शास्त्रार्थ करनेका अवसर देना (वन० १३३ । ३०)। हारे हुए वन्दीको अष्टावक्रके इच्छानुसार जलमें डुबानेकी बात स्वीकार करना (वन० १३४ । २९)। कहोडका जनकके सामने प्रकट होकर पुत्रकी प्रशंसा करना (वन० १३४ । ३२–३६)। राजाकी आज्ञासे वन्दीका समुद्रके जलमें प्रवेश (वन० १३४ । ३७)। धर्मव्याधद्वारा कौशिक ब्राह्मणके प्रति जनकके गुणोंका वर्णन (वन० २०७ । ३७–३९)। विदेहराज जनक सीताके पिता थे (वन० २७४ । ९)। इनका राज्य छोड़कर संन्यास ग्रहण करनेका उपक्रम (शान्ति० १८ । ४-५)। इनका अश्मा मुनिसे कुटुम्बी जन और धनका नाश होनेपर क्या करना चाहिये, इस विषयमें प्रश्न करना (शान्ति० २८ । ४)। जनकका स्वर्ग और नरकका प्रत्यक्ष दर्शन कराकर अपने सैनिकोंको युद्धके लिये प्रोत्साहित करना (शान्ति० ९९ । ४–७)। कालकवृक्षीय मुनिके समझानेपर जनकका क्षेमदर्शीसे संधि करना और उसका सत्कार करके उसके साथ अपनी कन्याका ब्याह कर देना (शान्ति० १०६ । २१–२८)। इनकी विरक्ति (शान्ति० १७८ । २)। महर्षि माण्डव्यके तृष्णाविषयक प्रश्नका जनकद्वारा उत्तर (शान्ति० २७६ अध्याय)। पराशरजीसे कल्याण-प्राप्तिके विषयमें जनकके प्रश्न (शान्ति० २९० । ४)। पराशरजीसे इनके विविध प्रकारके प्रश्न (शान्ति० २९६ । १-२; शान्ति० २९८ । २)। कराल जनकको वसिष्ठका उपदेश (शान्ति० ३०२ अध्यायसे ३०८ अध्याय तक)। वसुमान् जनकको एक मुनिका धर्मविषयक उपदेश (शान्ति० ३०९ अध्याय)। महर्षि याज्ञवल्क्यसे देवरातपुत्र जनकका प्रश्न करना और उनके द्वारा उनके प्रश्नोंका समाधान (शान्ति० ३१० अध्याय से ३१८ अध्याय तक)। जरा-मृत्युके उल्लङ्घनके विषयमें महर्षि पञ्चशिखसे जनदेव जनकका प्रश्न (शान्ति० ३१९ । ५)। धर्मध्वज जनककी परीक्षाके लिये आयी हुई और उनके शरीरमें प्रविष्ट हुई सुलभासे उसपर दोषारोपण करते हुए इनका प्रश्न (शान्ति० ३२० । ७५)। राजा जनकद्वारा शुकदेवजीका पूजन (शान्ति० ३२६ । ३–५)। शुकदेवजीको उनका ज्ञानोपदेश (शान्ति० ३२६ । २२–५१)। जनकने जीवनमें कभी मांस नहीं खाया था (अनु० ११५ । ६५)। ब्राह्मणरूपधारी धर्म और जनकका ममत्व-त्यागविषयक संवाद (आश्व० ३२ अध्याय)।

महाभारतमें आये हुए जनकके नाम–ऐन्द्रद्युम्नि, दैवराति, धर्मध्वज, कराल, करालजनक, मैथिल, मिथिलाधिप, मिथिलाधिपति, मिथिलेश्वर, वैदेह, विदेहराज आदि। (मिथिलाके प्रायः सभी राजा जनक कहलाते थे। प्रस्तुत वर्णनमें अनेक जनकोंके जीवनकी बातें संकलित हुई हैं। नामोंमें भी विभिन्न जनकोंके नाम हैं। यह किसी एक ही जनकका परिचय नहीं है।)।

जनदेव–मिथिलानरेश जनक (शान्ति० २१८ । ३)। इन्हें पञ्चशिखका उपदेश (शान्ति० २१८ । २२ से शान्ति० २१९ । ५२ तक)। ब्राह्मणरूपमें विष्णुद्वारा इनकी परीक्षा (शान्ति० २१९ । ५२ के बाद दाक्षिणात्य पाठ)। इन्हें भगवान् विष्णुका दर्शन और वर-प्राप्ति (शान्ति० २१९ अध्यायकी समाप्तितक)।

जनमेजय–(१) एक राजर्षि, जो महाराज परीक्षित्के पुत्र थे। इनकी माताका नाम मद्रवती था, इनकी पत्नी वपुष्टमासे शतानीक और शङ्कुकर्ण नामक दो पुत्र उत्पन्न हुए थे (आदि० ३ । ९; आदि० ९५ । ८५-८६)। इन्होंने कुरुक्षेत्रमें दीर्घकालतक यज्ञ किया था (आदि० ३ । १)। इनके तीन भाई थे–श्रुतसेन, उग्रसेन और भीमसेन (आदि० ३ । १)। सरमाके शाप देनेपर इनका चिन्तित होना (आदि० ३ । ११)। इन्होंने सोमश्रवाको पुरोहित बनाया और भाइयोंको उनकी प्रत्येक आज्ञाके पालनका आदेश दिया (आदि० ३ । १२–२०)। उनके द्वारा तक्षशिलापर विजय (आदि० ३ । २०)। इनका वेदको अपना उपाध्याय बनाना (आदि० ३ । ८२)। सर्पयज्ञ करनेके लिये इनको उत्तङ्ककी सलाह (आदि० ३ । १८३-१८४)। काशिराज सुवर्णवर्माकी पुत्री वपुष्टमासे इनका विवाह (आदि० ४४ । ८-९)। मन्त्रियोंके द्वारा अपने पिताकी मृत्युका विस्तारपूर्वक समाचार सुनकर इनका तक्षकसे बदला लेनेका निश्चय (आदि०५० । ३३–५४)। ऋत्विजोंद्वारा इनको सर्प-सत्र करनेका परामर्श (आदि० ५१ । ६-७)। इन्होंने यज्ञकी दीक्षा लेनेसे पहले ही सेवकको यह आदेश दे दिया कि मुझे सूचित किये बिना किसी अपरिचित व्यक्तिको यज्ञमण्डपमें न आने दिया जाय, इनका तक्षकको अग्निकुण्डमें गिरानेके लिये ऋत्विजोंको बारंबार प्रेरणा (आदि० ५६ । ४–११)। उनका आस्तीकको वर देना और यज्ञसमाप्तिका वर माँगनेपर उनसे दूसरा वर माँगनेका आग्रह करना (आदि० ५६ । १७–२६)। इनके द्वारा यज्ञ बंद करनेकी आज्ञा देकर ऋत्विज आदि सदस्यों और लोहिताक्ष सूत तथा शिल्पीको पुरस्कार (आदि० ५८ अध्याय)। सर्पसत्रमें आये हुए व्यासजीसे इनकी महाभारत-युद्ध-सम्बन्धी वृत्तान्त सुनानेकी प्रार्थना (आदि० ६० । १८-१९)। इनके प्रार्थना करनेपर व्यासजीकी आज्ञासे वैशम्पायनजीने इनसे पूरुवंश, भरतवंश एवं कुरुवंशके परिचयपूर्वक सम्पूर्ण पुरातन इतिहास एवं महाभारत युद्धकी कथा सुनायी थी (आदि० ६० । १८–२४)। इनका व्यासजीसे अपने पिताके दर्शन करानेकी प्रार्थना और व्यासजीका परलोकसे उनका आवाहन करके उसी रूप और अवस्थामें जनमेजयको दर्शन कराना, जनमेजयका पहले पिताको अवभृथ-स्नान कराकर स्वयं स्नान करना तथा आस्तीकसे अपने यज्ञको विविध आश्चर्योंका केन्द्र बताना और आस्तीकके कहनेसे महर्षि व्यासका बारंबार पूजन करना। इसके बाद वैशम्पायनजीसे शेष कथा सुनानेके लिये कहना (आश्रम० ३५ । ४–१८)। कथा सुनकर तथा यज्ञको समाप्त करके राजाने समस्त ब्राह्मणोंको पर्याप्त दक्षिणा देकर संतुष्ट किया और सबको विदा करके तक्षशिलासे हस्तिनापुरको चले आये (स्वर्गा० ५ । ३३-३४)।

महाभारतमें आये हुए जनमेजयके नाम–भारत, भरतशार्दूल, भरतश्रेष्ठ, भारताग्र्य, भरतर्षभ, भरतसत्तम, कौरव, कौरवशार्दूल, कौरवनन्दन, कौरवेन्द्र, कौरव्य, कुरुशार्दूल, कुरुश्रेष्ठ, कुरूद्वह, कुरुकुलश्रेष्ठ, कुरुकुलोद्वह, कुरुनन्दन, कुरुप्रवीर, कुरुपुङ्गवाग्रज, कुरुसत्तम, पाण्डव, पाण्डवनन्दन, पाण्डवेय, पारिक्षित्, पौरव आदि।

(२) एक परलोकवासी नरेश (आदि० १ । २२८)। ये यमराजके सभामें विराजमान होते हैं (सभा० ८ । १९)। मान्धाताने इन्हें पराजित किया था (द्रोण० ६२ । १०)। इन्होंने तीन ही दिनोंमें विजयी होकर इस भूमण्डलका राज्य प्राप्त किया था (शान्ति० १२४ । १६)। ब्राह्मणोंके लिये अपने शरीर और गौका त्याग करके इन्होंने उत्तम लोक प्राप्त किया था (शान्ति० २३४ । २४; अनु० १३७ । ९)। (३) एक क्षत्रिय राजा, जो क्रोधवशसंज्ञक दैत्योंके अंशसे उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७ । ६२)। पाण्डवोंकी ओरसे इन्हें रण-निमन्त्रण भेजा गया था (उद्योग० ४ । १६)। यह गदा-युद्धमें कुशल पर्वतीय राजा था। इसे धृतराष्ट्रपुत्र दुर्मुखने मारा था (कर्ण० ६ । १९-२०)। (४) एक राजा, जो भरतवंशी महाराज कुरुके द्वारा वाहिनीके गर्भसे उत्पन्न हुए थे (आदि० ९४ । ५१)। (५) अश्ववान् कुमार परीक्षित्के वंशमें उत्पन्न एक राजा, जिसके पुत्रका नाम धृतराष्ट्र था (आदि० ९४ । ५३–५६)। ये परीक्षित्-वंशीय नरेश, अर्जुनके प्रपौत्र और अभिमन्युके पौत्रसे भिन्न थे (शान्ति० १५० । ३)। ये अनजानमें ब्रह्महत्या कर देनेके कारण प्रजा, ब्राह्मणों और पुरोहितोंद्वारा त्याग दिये गये और दुखी हो वनमें जाकर पुण्यकर्म एवं तपस्या करने लगे। इन्होंने पृथ्वीपर घूम-घूमकर ब्रह्महत्यानिवारणका उपाय पूछा, अन्तमें एक शौनकवंशी इन्द्रोत मुनिकी शरणमें गये (शान्ति० १५० । ४–८)। इन्द्रोतमुनिके फटकारनेपर इन्होंने उनकी ही शरण ग्रहण की (शान्ति० १५१ । १–९)। इन्द्रोत मुनिने अश्वमेधयज्ञ कराकर इन्हें पापसे मुक्त किया (शान्ति० १५२ । ३९)। (६) महाराज पूरुके पुत्र, इनकी माताका नाम कौसल्या था, इन्हींका दूसरा नाम प्रवीर है, इनके द्वारा मधुवंशकी कन्या अनन्ताके गर्भसे प्राचिन्वान्की उत्पत्ति हुई थी (आदि० ९५ । ११-१२)। (७) वरुणकी सभामें विराजमान होनेवाला एक नाग (सभा० ९ । १०)। (८) नीपवंशका

एक कुलाङ्गार नरेश (उद्योग० १७४ । १३) । (९) पाण्डवपक्षका एक पाञ्चालदेशीय योद्धा, जो दुर्मुखका पुत्र था, यह युधिष्ठिरका सम्बन्धी एवं सहायक था, इसके घोड़ोंका वर्णन (द्रोण० २३ । ५१; द्रोण० १५८ । ३९)। इसका कर्णके साथ युद्ध (कर्ण० ४९ । ३५-३७) ।

जनस्थान-दण्डकारण्यका एक भाग, जो गोदावरीके तटपर है और जहाँ त्रेतायुगमें राक्षसोंका समुदाय निवास करता था, यहाँ रहकर देवताओंका कार्य सिद्ध करते हुए श्रीरामने प्रजाजनोंके हितकी कामनासे भयानक कर्म करनेवाले मारीच, खर, दूषण, त्रिशिरा आदि चौदह हजार राक्षसोंका वध किया (सभा० ३८ । दा० पाठ, पृष्ठ ७९४)। यहीं राक्षसराज रावणने मायासे सुवर्णमय मृगका रूप धारण करनेवाले मारीच नामक राक्षसके द्वारा श्रीरामको धोखेमें डालकर इनकी धर्मपत्नी सीताको हर लिया था (वन० १४७ । ३३-३४) । यहाँ रहते समय शूर्पणखाके नाक-कान कटवानेके कारण श्रीरामका जनस्थानवासी राक्षस खरके साथ महान् वैर हो गया (वन० २७७ । ४२) । नरश्रेष्ठ श्रीरामने जनस्थानमें तपस्वी मुनियोंकी रक्षाके लिये चौदह हजार राक्षसोंका वध किया था । (द्रोण० ५९ । ३) । जनस्थानमें श्रीरामने जब राक्षसोंके संहारका विचार किया था, उस समय एक राक्षसके सिरको काटकर दूर फेंका, वह महोदर मुनिकी जाँघमें जा लगा और उसकी हड्डी मुनिकी जाँघमें धँस गयी थी (शल्य० ३९ । ९-११) । जनस्थानमें गोदावरीके जलमें स्नान करके उपवास करनेवाला पुरुष राजलक्ष्मीसे सेवित होता है (अनु० २५ । २९) ।

जनार्दन-भगवान् श्रीकृष्णका एक नाम (वन० १२ । ३४) । दस्युजनोंको त्रास देनेके कारण भगवान् श्रीकृष्णका नाम जनार्दन हुआ है (उद्योग० ७० । ६)। महाभारतमें अनेक स्थलोंपर 'जनार्दन' नामका प्रयोग हुआ है, यथा-(भीष्म० २५ । ३६,३९,४४;भीष्म०२७। १; भीष्म० ३४ । १८; भीष्म० ३५ । ५१) इत्यादि ।

जन्तु-प्रसिद्ध राजा सोमकका पुत्र, जिसके प्रति राजपरिवारकी भारी आसक्ति थी (वन० १२७ । ४—१५) । सौ पुत्रोंकी प्राप्तिके निमित्त जन्तुकी आहुति देकर यज्ञ करनेके लिये ऋत्विजकी सलाह (वन० १२७ । १६-२७) । जन्तुके लिये माताओंका शोक और ऋत्विजोंका इसे काटकर इसकी चर्बियोंकी आहुति देना (वन० १२८ । २—६) । इसका पुनः अपनी माताके गर्भसे जन्म (वन० १२८ । ८) ।

जमदग्नि-एक ब्रह्मर्षि, जो सत्यवती और ऋचीक ऋषिके पुत्र, और्वके पौत्र तथा महर्षि च्यवनके प्रपौत्र थे; ये ऋचीकके सौ पुत्रोंमें बड़े थे । इनके भी चार पुत्र थे, जिनमें सबसे छोटे परशुरामजी थे (आदि० ६६ । ४५-४९) । जमदग्निजी अर्जुनके जन्मोत्सवमें पधारे थे (आदि० १२२ । ५१) । ये ब्रह्माजीकी सभामें विराजते हैं (सभा० ११ । २२) । इनका सत्यवतीके गर्भसे जन्म (वन० ११५ । ४३) । इनकी राजा प्रसेनजित्से रेणुकाकी माँग और उसके साथ विवाह (वन० ११६ । २) । इनको अपनी पत्नी रेणुकाके गर्भसे पाँच पुत्रोंकी प्राप्ति (वन० ११६ । ४) । इनका रेणुकाका वध करनेके लिये पुत्रोंको आदेश (वन० ११६ । ११) । माताका वध कर देनेपर परशुरामको इनका वरदान (वन० ११६ । १८) । कार्तवीर्यके पुत्रोंद्वारा इनका वध (वन० ११६ । २८; शान्ति० ४९ । ५०) । द्रोणाचार्यके पास आकर इनका उनसे युद्ध बंद करनेको कहना (द्रोण० १९० । ३५-४०) । इनके जन्मका प्रसंग (शान्ति० ४९ । २९) । इनसे परशुरामका जन्म (शान्ति० ४९ । ३१-३२) । इनका वृषादर्भिसे प्रतिग्रहके दोष बताना (अनु० ९३ । ४४) । अरुन्धतीसे अपने मोटे न होनेका कारण बताना (अनु० ९३ । ६४) । यातुधानीसे अपने नामकी व्याख्या बताना (अनु० ९३ । ९४) । मृणालकी चोरीके विषयमें शपथ खाना (अनु० ९३ । १२०-१२१) । अगस्त्यजीके कमलोंकी चोरी होनेपर शपथ खाना (अनु० ९४ । २५) । रेणुकाके पैर और मस्तकके संतप्त होनेसे सूर्यपर कोप करना (अनु० ९५ । १८) । इनका शरणागत सूर्यको अभयदान देना (अनु० ९६ । ८-१२) । इनके द्वारा धर्मके रहस्यका वर्णन (अनु० १२७ । १७-१९) । ये उत्तर दिशाके ऋषि हैं (अनु० १६५ । ४४) । जमदग्निका क्रोधपर विजय (आश्व० ९२ । ४१-४६) ।

महाभारतमें आये हुए जमदग्निके नाम-आर्चीक, भार्गव, भार्गवनन्दन, भृगुशार्दूल, भृगुश्रेष्ठ, भृगूत्तम, ऋचीकपुत्र, ऋचीकतनय आदि ।

जम्बुक-स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ७४) ।

जम्बू-मेरुपर्वतके दक्षिण भागमें विद्यमान वृक्षविशेष, जो सदा फल-फूलोंसे भरा रहता है, सिद्ध और चारण उस वृक्षका सेवन करते हैं, उसकी शाखा ऊँचाईमें स्वर्गलोकतक फैली हुई है, उसीके नामपर इस द्वीपको जम्बूद्वीप कहते हैं (सभा० २८ । ६ के बाद दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ७४७) ।

जम्बूक-स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ७६) ।

जम्बूखण्डविनिर्माणपर्व-भीष्मपर्वका एक अवान्तर पर्व (अध्याय १ से १० तक) ।

जम्बूद्वीप–सात द्वीपोंमेंसे एक (सभा० २८ । ६ के बाद दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ७४७) । (यह द्वीप समस्त भूमण्डलके मध्यभागमें है ।) इसके विस्तार आदिका वर्णन (भीष्म० ११ । ५–७) ।

जम्बूनदी–गङ्गाकी सात धाराओंमेंसे एक धाराका नाम (भीष्म० ६ । ४८) ।

जम्बूमार्ग–प्राचीन तीर्थ, जो देवताओं, पितरों और ऋषियोंसे सेवित है, वहाँ जानेसे अश्वमेध यज्ञका फल मिलता है (वन० ८२ । ४०-४१) । साधारणभावसे तीन महीनेतक और इन्द्रियसंयमपूर्वक एकाग्रचित्त हो एक ही दिन जम्बूमार्गमें स्नान करनेसे मनुष्य सिद्धि प्राप्त कर लेता है (अनु० २५ । ५१) ।

जम्भ–(१) एक असुर, जिसे भगवान् श्रीकृष्णने मारा था (सभा० ३८ । दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ८२५; द्रोण० ११ । ५) । (२) एक दैत्य, जिसका शुक्राचार्यने त्याग किया था (सभा० ६२ । १२) । इसीका वध इन्द्रने किया था (शान्ति० ९८ । ४९) । (३) एक असुर, जो भगवान् विष्णुद्वारा मारा गया था (वन० १०२ । २४) । (४) राक्षसोंका एक दल, जो रावणके अधीन था और वानर-सैनिकोंपर धावा बोला था (वन० २८५ । २) । (५) पौलोम और कालखंज नामक दानवोंके अन्तर्गत एक दानव, जो नरावतार अर्जुनके द्वारा मारा गया (उद्योग० ४९ । १४-१५) ।

जम्भक–एक क्षत्रिय राजा, जो वसुदेवनन्दन भगवान् श्रीकृष्णद्वारा दलबलसहित मार डाला गया था, केवल उसका पुत्र ही जीवित बच गया था, जिसे सहदेवने दक्षिण-दिग्विजयके समय जीता था (सभा० ३१ । ७-८) ।

जय– (१) महाभारतका नाम (आदि० १ । १ मङ्गला-चरण; प्रत्येक पर्वका मङ्गलाचरण; आदि० ६२ । २०) । (२) धृतराष्ट्रका एक महारथी पुत्र (आदि० ६३ । ११९) । इसने गोहरणके समय विराटनगरमें अर्जुनपर धावा किया था (विराट० ५४ । ७) । नीलके साथ इसका युद्ध (द्रोण० २५ । ४५) । भीमसेनद्वारा इसका वध (द्रोण० १३५ । ३६) । (३) एक देवता, जो मूसल लेकर खाण्डवदाहके समय अर्जुन और श्रीकृष्णके विपक्षमें खड़े हुए थे (आदि० २२६ । ३४) । (४) एक प्राचीन नरेश, जो यमसभामें उपस्थित हो सूर्यपुत्र यमकी उपासना करते हैं (सभा० ८ । १५) । (५) भगवान् सूर्यका एक नाम (वन० ३ । २४) । (६) विराटनगरमें रहते समय युधिष्ठिरका गुप्त नाम (अन्य भाइयोंके गुप्त नाम क्रमशः जयन्त, विजय, जयत्सेन, और जयद्बल थे ।) (विराट० ५ । ३५) । जब सूत-पुत्र द्रौपदीको श्मशानमें लिये जा रहे थे, तब द्रौपदीने 'जय आदि' गुप्त नामोंसे ही पाण्डवोंको अपनी रक्षाके लिये पुकारा था (विराट० २३ । १२) । (७) एक मुहूर्तका नाम (उद्योग० ६ । १७) । (८) एक कश्यपवंशी नाग (उद्योग० १०३ । १६) । (९) विदुलोपाख्यानका नाम (उद्योग० १३६ । १८) । (१०) एक कौरवदलका योद्धा, जो शकुनिका साथी होकर अर्जुनपर आक्रमण करनेके लिये दुर्योधनद्वारा भेजा गया था (द्रोण० १५६ । ११९–१२३) । (११) पाण्डवपक्षका एक पाञ्चाल योद्धा, जो कर्णद्वारा घायल किया गया था (कर्ण० ५६ । ४४) । (१२) नाग-राज वासुकिके द्वारा स्कन्दको दिये गये दो पार्षदरूप नागोंमेंसे एक नाग, दूसरेका नाम महाजय था (शल्य० ४५ । ५२) । (१३) विजय या जीत (शल्य० ४६ । ६४) । (१४) भगवान् विष्णुका नाम (अनु० १४९ । ६७) ।

जयत्सेन–(१) मगधदेशका एक राजा, जो जरासंधका पुत्र था और कालेय नामक दैत्योंमें सबसे श्रेष्ठ असुरके अंशसे उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७ । ४८) । यह द्रौपदीके स्वयंवरमें गया था (आदि० १८५ । ८) । पाण्डवोंकी ओरसे इसे रणनिमन्त्रण भेजा गया (उद्योग० ४ । १९) । एक अक्षौहिणी सेनाके साथ पाण्डवोंके यहाँ इसका आगमन हुआ था (उद्योग० १९ । ८) । धृतराष्ट्रपुत्र विजयके साथ इसने युद्ध किया (द्रोण० २५ । ४५) । (२) पूरुवंशी सार्वभौमके द्वारा केकय-कुमारी सुनन्दाके गर्भसे उत्पन्न एक राजा, इनकी पत्नी विदर्भराजकुमारी सुश्रवा थी और इनके पुत्रका नाम अवाचीन था (आदि० ९५ । १६-१७) । (३) विराटनगरमें रहते समय नकुलका गुप्त नाम (विराट० ५ । ३५; विराट० २३ । १२) । (४) एक कौरवपक्षका राजा, जो मगधनिवासी जरासंधका पुत्र था । यह एक अक्षौहिणी सेना साथ लेकर दुर्योधनकी सहायताके लिये आया था (भीष्म० १६ । १६) । यह अभिमन्युद्वारा मारा गया (कर्ण० ५ । ३०) । ('जयत्सेन' नामक दो राजा या राजकुमार हैं, दोनों ही मागध हैं और दोनों-हीके पिताका नाम जरासंध है, परंतु सुप्रसिद्ध राजा जरासंधका पुत्र सहदेव ही पिताके बाद मगधका राजा हुआ था और वह अपने भाई जयत्सेनके साथ पाण्डव-पक्षमें ही सम्मिलित हुआ था; अतः यह दूसरा जयत्सेन मगधदेशवासी किसी अन्य जरासंधका पुत्र है, यही मानना

चाहिये ।) (५) धृतराष्ट्रका एक पुत्र, शतानीकद्वारा इसकी पराजय (भीष्म० ७९ । ४४-४५) । भीमसेन-द्वारा इसका वध (शल्य० २६ । ११-१२) ।

जयत्सेना–स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । ६)।

जयद्बल–विराटनगरमें रहते समय सहदेवका एक गुप्त नाम (विराट० ५ । ३५; विराट० २३ । १२) ।

जयद्रथ–(१) सिन्धुनरेश वृद्धक्षत्रका पुत्र, इसकी पत्नीका नाम दुःशला था (आदि० ६७ । १०९-११०) । दुःशलाके साथ उसका विवाह (आदि० ११६ । १७-१८)। यह द्रौपदीके स्वयंवरमें गया था (आदि० १८५ । २१)। युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें सम्मिलित हुआ था (सभा० ३४ । ८) । कौरवसभामें राजा युधिष्ठिरके जुआ खेलते समय यह भी मौजूद था (सभा० ५८ । २६) । जयद्रथका विवाहकी इच्छासे शाल्वदेशकी ओर जाते समय साथियोंसहित काम्यकवनमें पहुँचना और द्रौपदी-को देखकर चकित होना, फिर दूषित भावनाका उदय होनेसे उनका परिचय जाननेके लिये कोटिकास्यको उनके पास भेजना (वन० २६४ । ६–१६) । द्रौपदीसे इसका अनुचित प्रस्ताव करना (वन० २६७ । १३–१७) । द्रौपदीकी इसको कड़ी फटकार (वन० २६७ । १९-२० और दाक्षिणात्य पाठके श्लोक) । द्रौपदीका इसको धिक्कारना और फटकारना (वन० २६८ । २–९) । इसका द्रौपदीको समझाना (वन० २६८ । १०–१२) । पुनः द्रौपदीकी इसे कड़ी फटकार (वन० २६८ । १३–२२) । उसका द्रौपदीको पकड़नेकी चेष्टा और उनके धक्के खाकर कटे पेड़की भाँति गिरना, फिर दुबारा उठकर उन्हें पकड़ना और रथपर बैठनेके लिये विवश कर देना (वन० २६८ । २३–२५) । धौम्यमुनिका जयद्रथको फटकारना (वन० २६८ । २६-२७) । जयद्रथद्वारा अपहृत हुई द्रौपदीके पीछे धौम्य मुनिका जाना (वन० २६८ । २८) । युधिष्ठिरके समक्ष धात्रेयिकाद्वारा जयद्रथके अत्याचारका वर्णन (वन० २६९ । १७—२२) । पाण्डवोंका जयद्रथको ललकारना (वन० २६९ । २८) । द्रौपदीद्वारा जयद्रथके सामने पाण्डवोंके पराक्रम-का वर्णन (वन० २७० अध्याय) । पाण्डवोंद्वारा जयद्रथकी सेनाका संहार और जयद्रथका पलायन (वन० २७१ । १—३३) । भीम और अर्जुनका जयद्रथका पीछा करना और उसे फटकारना (वन० २७१ । ५२—५९) । भीमसेनका जयद्रथको पकड़कर पीटना और अधमरा कर देना, उसका सिर मूड़कर पाँच शिखाएँ रख देना, राजाओंकी सभामें युधिष्ठिरका दास बताकर अपना परिचय देनेके लिये उसे विवश करके बंदी बनाकर रथपर डाल लेना और युधिष्ठिरके सामने उसी दशामें उपस्थित करना (वन० २७२ । २—१५) । युधिष्ठिर-का इसे छोड़ देनेका आदेश और युधिष्ठिरकी दासता स्वीकार कर लेनेके कारण इसे छोड़ देनेके लिये द्रौपदीका भी भीमसेनसे अनुरोध (वन० २७२ । १७-१८) । जयद्रथका छुटकारा, युधिष्ठिरका उसे उसके पापकर्मके लिये धिक्कारते हुए दासभावसे मुक्त कर देना और उसे सकुशल लौट जानेकी आज्ञा देना (वन० २७२ । २१—२४) । जयद्रथका लज्जित हो सीधे गङ्गाद्वारको जाना और तपस्याद्वारा भगवान् शङ्करको प्रसन्न करके एक दिनके लिये अर्जुनके सिवा अन्य चार पाण्डवोंको जीत लेनेका वरदान प्राप्त करना (वन० २७२ । २५—२९) । इसका सेनासहित दुर्योधनकी सहायतामें आना (उद्योग० १९ । १९) । प्रथम दिनके युद्धमें द्रुपदके साथ द्वन्द्व-युद्ध (भीष्म० ४५ । ५५–५७) । भीमसेनसे दुर्योधन-की रक्षा करके भीमसेनपर आक्रमण (भीष्म० ७९ । १७—२०) । भीमसेनके पुरुषार्थसे इसका किंकर्त्तव्य-विमूढ़ होना (भीष्म० ८५ । ३५ के बाद) । भीमसेन और अर्जुनके साथ युद्ध (भीष्म० ११३ अध्यायसे ११४ अध्यायतक) । विराटके साथ इसका द्वन्द्व-युद्ध (भीष्म० ११६ । ४२–४४) । अभिमन्युके साथ युद्ध (द्रोण० १४ । ६४—७४) । क्षत्रवर्माके साथ युद्ध (द्रोण० २५ । १०–१२) । व्यूहद्वारपर पाण्डवोंको रोक देना (द्रोण० ४२ । ७) । धृतराष्ट्रके पूछनेपर संजयद्वारा इसको वर-प्राप्तिका वर्णन (द्रोण० ४२ । १२—२२) । पाण्डवोंके साथ युद्ध और व्यूहद्वारको रोके रखना (द्रोण० ४३ अध्याय) । अर्जुनद्वारा की गयी अपने वधकी प्रतिज्ञा जानकर कौरवोंके सामने अपना भय प्रकट करके वहाँसे चले जानेकी आज्ञा माँगना (द्रोण० ७४ । ४—१२) । इसके ध्वजका वर्णन (द्रोण० १०५ । २०–२२) । अर्जुनके साथ इसका युद्ध (द्रोण० १४५ अध्याय) । भगवान् श्रीकृष्णकी प्रेरणासे अर्जुनका जयद्रथके काटे हुए सिरको समन्त-पञ्चकमें तपस्या करनेवाले इसके पिताकी गोदमें गिराना तथा उनके द्वारा उस सिरके भूमिपर गिरनेसे उनके भी सिरके सौ टुकड़े हो जाना (द्रोण० १४६।१०४—१३०)।

महाभारतमें आये हुए जयद्रथके नाम–सैन्धव, सैन्धवक, सौवीर, सौवीरज, सौवीरराज, सिन्धुपति, सिन्धुराज, सिन्धुराट्, सिन्धुसौवीरभर्ता, सुवीर, सुवीरराष्ट्रप, वार्धक्षत्रि आदि ।

(२) एक राजा, जो यमसभामें बैठकर सूर्यपुत्र यमकी उपासना करते हैं (सभा० ८ । ३६) ।

जयद्रथवधपर्व–द्रोणपर्वका एक अवान्तर पर्व (अध्याय ८५ से १५२ तक)।

जयद्रथविमोक्षणपर्व–वनपर्वका एक अवान्तर पर्व (अध्याय २७२)।

जयन्त–(१) इन्द्रके पुत्र, इनकी माताका नाम शची था (आदि० ११२। ३-४)। (२) विराटनगरमें रहते समय भीमसेनका एक गुप्त नाम (विराट० ५। ३५; विराट०२३। १२)। (३) एक पाञ्चाल-शिरोमणि महा-मनस्वी वीर, जो महारथी माना गया था (उद्योग० १७१। ११)। (४) ग्यारह रुद्रोंमेंसे एक (शान्ति० २०८। २०)। (५) भगवान् विष्णुका एक नाम (अनु० १४९। ९८)। (६) बारह आदित्योंमेंसे एक (अनु० १५०। १५)।

जयन्ती–सरस्वती-तटवर्ती एक तीर्थस्थान, जहाँ सोमतीर्थमें स्नान करके मनुष्य राजसूय-यज्ञका फल प्राप्त करता है (वन० ८३। १९)।

जयप्रिया–स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६। १२)।

जयरात–कौरव-पक्षका योद्धा, जो कलिङ्गदेशका राजकुमार था। भीमसेनद्वारा इसका वध (द्रोण० १५५। २८)।

जयसेन–एक मगधदेशीय राजकुमार, जो युधिष्ठिरकी सभामें बैठा करता था (सभा० ४। २६)।

जया–दुर्गा देवीका एक नाम (विराट० ६। १६)।

जयानीक–(१) द्रुपदपुत्रका एक पुत्र, जो अश्वत्थामाद्वारा मारा गया (द्रोण० १५६। १८१)। (२) विराटके भाई (द्रोण० १५८। ४२)।

जयावती– स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६। ४)।

जयाश्व (१)–द्रुपदका एक पुत्र, जो अश्वत्थामाद्वारा मारा गया (द्रोण० १५६। १८१)। (२) विराटके भाई (द्रोण० १५८। ४२)।

जरत्कारु–(१) यायावरसंज्ञक ब्राह्मणोंके घरमें उत्पन्न एक ऊर्ध्वरेता और महान् ऋषि, जो आस्तीकके पिता थे (आदि० १३। ११; आदि० १५। २-३)। (यायावर शब्दका अर्थ इसी अध्यायकी टिप्पणीमें देखना चाहिये।) इनके द्वारा गर्तमें लटके हुए अपने पितरोंका दर्शन तथा उनके आदेशसे विवाह करनेका इनका निश्चय (आदि० १३। १५–२७)। उनके विवाहकी शर्तें (आदि० १३। २८–३१)। नागराज वासुकिके द्वारा भिक्षाके रूपमें प्राप्त हुई अपने समान नामवाली कन्यासे इनका विवाह होनेकी कथा (आदि० १४। २–७)। इनका जरत्कारु नाम होनेका कारण (आदि० ४०। ३-४)। इनकी तपश्चर्याका वर्णन (आदि० ४०। ९)। गर्तमें लटके हुए पितरोंद्वारा इनको अपने दुःखकी कथा सुनाना तथा इनसे इनका परिचय पूछना (आदि० ४५। ३–३२)। पितरोंको अपना परिचय देकर कुछ शर्तोंके साथ विवाह करनेके लिये इनका उन्हें वचन देना (आदि० ४६। २–१०)। पत्नीके लिये विचरते हुए इनका कहीं पत्नी प्राप्त न होनेपर उदासीन हो वनमें जोर-जोरसे पुकार लगाना तथा धीरे-धीरे कन्याकी भिक्षा माँगना (आदि० ४६। १२-१३)। दूतोंद्वारा इनका उद्देश्य जानकर नागराज वासुकिका इनकी समस्त शर्तोंको स्वीकार करके इनके साथ अपनी बहिनका ब्याह कर देना (आदि० ४६। १९–२३; आदि० ४७। ५)। पत्नीके साथ इनकी शर्त एवं ऋतुकाल आनेपर उसमें गर्भाधान (आदि० ४७। ८–१३)। धर्मलोपके भयसे पत्नीके द्वारा जगाये जानेपर इनके द्वारा पत्नीका परित्याग (आदि० ४७। १५–४३)। पुत्रके लिये पत्नीके प्रार्थना करनेपर 'तुम्हारे उदरमें गर्भ है' इस प्रकार पत्नीको इनका आश्वासन (आदि० ४७। ४२)। (२) नागराज वासुकिकी बहिन, जरत्कारु नामक ऋषिकी पत्नी तथा आस्तीककी माता (आदि० १४। ६-७)। धर्मलोपके भयसे पतिको जगानेपर पतिके द्वारा इनका परित्याग (आदि० ४७। १६–४३)। पुत्रके लिये प्रार्थना करनेपर जरत्कारु ऋषिके द्वारा इनको आश्वासन (आदि० ४७। ४२)। जरत्कारु ऋषिके चले जानेपर मातृ-शापसे चिन्तित हुए वासुकिको इनका आश्वासन (आदि० ४८। १–१३)। अपने पुत्र आस्तीकको सर्पोंकी रक्षाके लिये इनकी प्रेरणा (आदि० ५४। ५–१६)।

जरा–(१) एक राक्षसी, जिसने जरासंधके शरीरके दोनों टुकड़ोंको जोड़ा था (सभा० १७। ४०)। पूर्वकालमें ब्रह्माजीने गृहदेवीके नामसे इसकी सृष्टि की थी और इसे दानवोंके विनाशके लिये नियुक्त किया था। जो अपने घरकी दीवारपर इसे अनेक पुत्रोंसहित युवती स्त्रीके रूपमें भक्तिपूर्वक लिखता है—इसका चित्र अङ्कित करता है, उसके घरमें सदा वृद्धि होती है; अन्यथा उसे हानि उठानी पड़ती है। मगधराज बृहद्रथके घरमें इसकी भलीभाँति पूजा होती थी; अतः उसने प्रसन्न होकर दो टुकड़ोंमें उत्पन्न हुए शिशु जरासंधको जोड़कर बृहद्रथको सुरक्षित रूपसे दे दिया था (सभा० १८। १–७)। इसका राजा बृहद्रथको अपना परिचय देना (सभा० १८। १–८)। इसकी मृत्युके कारणका श्रीकृष्णद्वारा अर्जुनके प्रति कथन (द्रोण० १८१। १२–१४)। (२) 'जरा' नामक एक व्याध, जिसने मृगके भ्रमसे

सोते हुए श्रीकृष्णके एक पैरमें बाण मारा था (**मौसल० ४ । २२-२३**) ।

जरायु-स्कन्दकी अनुचरी मातृका (**शल्य० ४६ । १९**) ।

जरासंध-(१) (नामान्तर शत्रुसह)—धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (**आदि० ६७ । १००**) । 'शत्रुसह' नामसे इसका भीमसेनद्वारा वध (**द्रोण० १३७ । ३०**) । (२) विप्रचित्ति नामक दानवके अंशसे उत्पन्न मगधराज बृहद्रथका पुत्र (**सभा० १७ । १२**) । श्रीकृष्ण-द्वारा इसकी उत्पत्तिका वर्णन (**सभा० १७ । १२–५१**) । चण्डकौशिक मुनिके द्वारा कृपापूर्वक दिये हुए फलके माताओंद्वारा भक्षण करनेपर उनके गर्भसे इसका जन्म (**सभा० १७ । २९**) । इसका जरासंध नाम होनेका कारण (**सभा० १८ । ११**) । चण्डकौशिक मुनिद्वारा इसके भविष्यका कथन (**सभा० १९ । ४–१५**) । द्रौपदीके स्वयंवरमें इसका आगमन (**आदि० १८५ । २३**) । स्वयंवरमें धनुष उठाते समय इसका घुटनोंके बल गिरना और लज्जित होकर स्वदेशको लौट जाना (**आदि० १८५ । २७**) । भगवान् श्रीकृष्णका इसके पराक्रमका युधिष्ठिरके प्रति वर्णन (**सभा० १४ । ६२–७०**) । श्रीकृष्णके साथ इसके वैरका कारण (**सभा० १९ । २२**) । श्रीकृष्णको मारनेके लिये इसका मगधसे मथुराको गदाका प्रक्षेप (**सभा० १९ । २३**) । इसका श्रीकृष्णके साथ संवाद (**सभा० २१ । ४२–४७**) । इसके द्वारा शिवजीकी प्रसन्नताके हेतु नरबलिके लिये नरेशोंका निग्रह (**सभा० २२ । ८**) । भीमसेनके साथ इसका युद्ध (**सभा० २३ । १० से सभा० २४ । ६ तक**) । भीमसेनद्वारा इसकी मृत्यु (**सभा० २४ । ७**) । अर्जुनके प्रति श्रीकृष्णका इसके वधका कारण बताना (**द्रोण० १८१ । ८–१६**) । कर्णद्वारा पराजित होकर उसे मालिनी नगरी देकर उसके साथ इसके संधि करनेकी चर्चा (**शान्ति० ५ । ६**) ।

महाभारतमें आये हुए जरासंधके नाम-बार्हद्रथ, मागध, मगधाधिप, मगधाधिपति, मगधेश्वर आदि । (३) मगधदेशका एक दूसरा क्षत्रिय, जिसका पुत्र जयत्सेन कौरवपक्षका योद्धा था और अभिमन्युद्वारा मारा गया था (**कर्ण० ५ । ३०**) ।

जरासंधवधपर्व-सभापर्वका एक अवान्तर पर्व (**अध्याय २० से २४ तक**) ।

जरिता-मन्दपाल ऋषिकी भार्या पक्षिणी (**आदि० २२८ । १६**) । मन्दपालके द्वारा इसके गर्भसे उत्पन्न हुए पुत्र—जरितारि, सारिसृक्क, स्तम्बमित्र और द्रोण (**आदि० २२९ । ९**) । खाण्डववनदाहके समय पुत्रोंके लिये इसकी चिन्ता और पुत्रोंद्वारा इसे आत्मरक्षाके हेतु अन्यत्र चले जानेका आदेश (**आदि० २२९ । १२**) । इसका अपने बच्चोंके साथ संवाद (**आदि० २३० अध्याय**) । अग्निदेवकी कृपासे इसके बच्चोंकी रक्षा (**आदि० २३१ अध्याय**) ।

जरितारि-पक्षिरूपधारी मन्दपाल ऋषिके द्वारा जरिताके गर्भसे उत्पन्न एक पक्षी मुनि । इनके द्वारा अग्निकी स्तुति । खाण्डववनमें अग्निद्वारा इनको अभयदान (**आदि० २३१ अध्याय**) ।

जर्जरानना-स्कन्दकी अनुचरी मातृका (**शल्य० ४६ । १९**) ।

जर्तिक-वाहीकोंकी एक जाति, जिसका चरित्र अत्यन्त निन्दित है (**कर्ण० ४४ । १०**) ।

जल-जल-तत्त्वके अभिमानी देवता, जो ब्रह्माजीकी सभामें विराजमान होते हैं (**सभा० ११ । २०**) ।

जलद-शाकद्वीपका एक पर्वत, जिसके निकट कुमुदोत्तर वर्ष है (**भीष्म० ११ । २५**) ।

जलधार-शाकद्वीपका एक पर्वत (**भीष्म० ११ । १६**) ।

जलन्धम-स्कन्दका एक सैनिक (**शल्य० ४५ । ५७**) ।

जलप्रदानिकपर्व-स्त्रीपर्वका एक अवान्तर पर्व (**अध्याय १ से १५ तक**) ।

जलसंधि-(१) धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (**आदि० ६७ । ९४**) । भीमसेनद्वारा इसका वध (**भीष्म० ६४ । ३३**) । (२) कौरव-पक्षका एक महारथी योद्धा (**उद्योग० ६६ । ७**) । यह द्रौपदीके स्वयंवरमें भी गया था (**आदि० १८५ । १२**) । सात्यकिद्वारा इसका वध (**द्रोण० ११५ । ५२-५३**) ।

जला-यमुनाकी पार्श्ववर्तिनी एक नदी, जहाँ उशीनरने यज्ञ करके इन्द्रसे भी ऊँचा स्थान प्राप्त किया था (**वन० १३० । २१**) ।

जलेयु-पूरु-पुत्र रौद्राश्वद्वारा मिश्रकेशी अप्सरासे उत्पन्न (**आदि० ९४ । १०**) ।

जलेला-स्कन्दकी अनुचरी मातृका (**शल्य० ४६ । १६**) ।

जलेश्वरी-स्कन्दकी अनुचरी मातृका (**शल्य० ४६ । १३**) ।

जल्प-एक प्रकारका वाद, जिसमें वादी छल, जाति और निग्रह-स्थानको लेकर अपने पक्षका मण्डन और विपक्षीके पक्षका खण्डन करता है । इसमें वादीका उद्देश्य तत्त्व-निर्णय नहीं होता; किंतु स्वपक्ष-स्थापन और परपक्ष-खण्डनमात्र होता

है । वादके समान इसमें भी प्रतिज्ञा, हेतु आदि पाँच अवयव होते हैं (सभा० ३६ । ३) ।

जवन–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ७५) ।

जह्नु–महाराज अजमीढ़के द्वारा केशिनीके गर्भसे उत्पन्न एक राजा, उनके वंशज कुशिक नामसे प्रसिद्ध हुए (आदि० ९४ । ३२-३३) । इनकी वंशपरम्पराका वर्णन (शान्ति० ४९ । ३—६) । गङ्गाजी इनकी पुत्री-भावको प्राप्त हुईं (अनु० ४ । ३) ।

जागुड़–एक देश, भारतका एक जनपद, जहाँके राजा युधिष्ठिरके राजसूय-यज्ञमें आये थे (वन० ५१ । २५) ।

जाङ्गल–एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ५६) ।

जाजलि–एक प्राचीन ऋषि, जिन्होंने घोर तपस्या की थी (शान्ति० २६१ । ३३—३७) । इनके सिरपर पक्षियोंका अंडा देना (शान्ति० २६१ । २३-२४) । मनमें सिद्ध होनेका अहङ्कार आनेपर आकाशवाणीद्वारा इन्हें तुलाधारके पास जानेका आदेश (शान्ति० २६१ । ४२-४३) । इनका तुलाधारके पास जाना और धर्मोपदेश सुनना (शान्ति० अध्याय २६२ से २६३ तक) । इन्हें पक्षियोंका उपदेश (शान्ति० २६४ । ६—१९) । इनका तुलाधारके साथ परमधामगमन (शान्ति० २६४ । २०-२१) ।

जाठर–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ६२) ।

जातिस्मर–एक तीर्थ, जहाँ स्नान करके मनुष्यके शरीर एवं मनकी शुद्धि हो जाती है (वन० ८४ । १२८) ।

जातिस्मर कीट–एक कीड़ा, जिसे शुभ कर्मके प्रभावसे अपने पूर्वजन्मोंकी बातोंका स्मरण बना रहा । व्यासजीकी कृपासे उसकी क्रमशः उन्नति और उद्धार (अनु० ११७ अध्यायसे ११९ अध्यायतक) ।

जातिस्मरह्रद–एक तीर्थ, जिसमें स्नान करनेवाला मनुष्य पूर्वजन्मकी बातोंको स्मरण करनेकी शक्ति पा लेता है (वन० ८५ । ३) ।

जातूकर्ण–एक जितेन्द्रिय मुनि, जो युधिष्ठिरकी सभामें विराजते थे (सभा० ४ । १४) ।

जानकि–एक क्षत्रिय राजा, जो चन्द्रविनाशन असुरके अंशसे उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७ । ३९) । पाण्डवोंकी ओरसे इसे रण-निमन्त्रण भेजा गया था (उद्योग० ४ । २०) ।

जानपदी–एक अप्सरा, जो इन्द्रकी आज्ञासे शरद्वान्‌की तपस्यामें विघ्न डालनेके लिये आयी थी (आदि० १२९ । ६) । इसके दर्शनसे स्खलित हुए शरद्वान्‌के वीर्यसे कृप एवं कृपीका जन्म (आदि० १२९ । ११—२०) ।

जानुजङ्घ–सायं-प्रातः स्मरण करने योग्य एक पुण्यात्मा नरेश (अनु० १६५ । ५९) ।

जापक–एक गायत्री-जपपरायण ब्राह्मण । जापकमें दोष आनेके कारण उसे नरककी प्राप्ति (शान्ति० १९७ अध्याय) । परमधामके अधिकारी जापकके लिये देवलोक भी नरकतुल्य है (शान्ति० १९८ अध्याय) । जापकको सावित्रीका वरदान—उसके पास धर्म, यम और काल आदिका आगमन । राजा इक्ष्वाकु और जापक ब्राह्मणका संवाद । सत्यकी महिमा तथा जापककी परम गतिका वर्णन (शान्ति० १९९ अध्याय) । जापक ब्राह्मण और राजा इक्ष्वाकुके उत्तम गतिका वर्णन तथा जापकको मिलनेवाले फलकी उत्कृष्टता (शान्ति० २०० अध्याय) ।

जाबालि–विश्वामित्रके ब्रह्मवादी पुत्रोंमेंसे एक (अनु० ४ । ५५) ।

जाम्बवती–ऋक्षराज जाम्बवान्‌की पुत्री और भगवान् श्रीकृष्णकी पत्नी (सभा० ३८ । दा० पाठ, पृष्ठ ८१५) । श्रीकृष्णसे पुत्र-प्राप्तिके लिये इनकी प्रार्थना (अनु० १४ । ३०—३४) । श्रीकृष्णकी तपस्या-यात्राके लिये इनकी मङ्गल-कामना (अनु० १४ । ३६—४०) । श्रीकृष्णके परमधाम पधारनेपर ये पतिलोककी प्राप्तिके लिये अग्निमें समा गयी थीं (मौसल० ७ । ७३) ।

जाम्बवान्–ऋक्षराज, सुग्रीवके मन्त्री (वन० २८० । २३) । ये दस खरब काले रीछोंकी सेना लेकर भगवान् श्रीरामके पास आये थे (वन० २८३ । ८) ।

जाम्बूनद–(१) पूरुवंशी महाराज कुरुके पौत्र एवं जनमेजयके पाँचवें पुत्र (आदि० ९४ । ५६) । (२) एक सुवर्णमय पर्वत (मेरु), जहाँसे गङ्गाजीका कल-कल नाद लोमशजीको सुनायी दिया था (वन० १३९ । १६) । (३) उशीरबीज नामक स्थानमें स्थित एक पवित्र सुवर्णमय पर्वत, जहाँ राजा मरुत्तने यज्ञ किया था (उद्योग० १११ । २३) । (४) जम्बूद्वीपकी जम्बूनदीसे उत्पन्न सुवर्ण (भीष्म० ७ । २६) ।

जाम्बूनदी–एक प्रमुख नदी, जिसका जल भारतीय प्रजा पीती है (भीष्म० ९ । ३०) ।

जायाशब्दकी निरुक्ति–पुरुषका अपना आत्मा ही संतानरूपमें स्त्रीके गर्भसे जन्म लेता है (वन० १२ । ७०) ।

जारुधि–एक प्राचीन देश (सभा० ३८ । ३९ के बाद दाक्षि० पाठ) ।

जारूथी–एक स्थान या नगर, जहाँ श्रीकृष्णने आहुति, क्राथ, साथियोंसहित शिशुपाल, जरासंध, शैव्य और शतधन्वाको परास्त किया था (वन० १२ । ३०) ।

जाह्नवी–गङ्गाजीका एक नाम (जो जह्नुकी पुत्री होनेके कारण प्रसिद्ध हुआ था ।) (आदि० ९९ । ४) ।

जितवती–राजर्षि उशीनरकी सुन्दर रूप और युवावस्थासे सुशोभित पुत्री, जो मनुष्यलोककी सुप्रसिद्ध सुन्दरी थी और द्यो नामक वसुकी पत्नीकी सखी थी (आदि० ९९ । २२–२४) । इसके निमित्त वशिष्ठजीकी नन्दिनी गौका अपहरण करनेके लिये वसुपत्नीकी अपने पतिसे प्रार्थना (आदि० ९९ । २१–२५) । इसके लिये नन्दिनीका अपहरण करनेसे वसुओंको वशिष्ठजीका शाप (आदि० ९९ । ३२) ।

जितात्मा–एक विश्वेदेव (अनु० ९१ । ३१) ।

जितारि–पूरुवंशी महाराज कुरुके पौत्र एवं अविक्षित्के पुत्र (आदि० ९४ । ५३) ।

जिष्णु–(१) अर्जुनका एक नाम (वन० ४७ । १३) । जिष्णु नामसे अर्जुनके प्रसिद्ध होनेका कारण (विराट० ४४ । २१) । (२) भगवान् श्रीकृष्णका एक नाम । ये सबको जीतनेके कारण जिष्णु कहलाते हैं (उद्योग० ७० । १३) । (३) पाण्डवपक्षका एक चेदिदेशीय योद्धा, कर्णद्वारा इसका वध (कर्ण० ५६ । ४८) ।

जिष्णुकर्मा–पाण्डवपक्षका एक चेदिदेशीय योद्धा (कर्ण० ५६ । ४८) ।

जीमूत–(१) एक मल्ल (पहलवान), जिसका विराटनगरमें भीमसेनके साथ मल्ल-युद्ध हुआ और जो उनके द्वारा मारा गया (विराट० १३ । २४–३६) । (२) एक ब्रह्मर्षि, जिनके सामने हिमालयकी वह स्वर्णनिधि प्रकट हुई थी, जिसे जैमूत कहते हैं (उद्योग० १११ । २३) ।

जीवजीवक–पक्षिविशेष (शान्ति० १३९ । ६) ।

जीवल–अयोध्यानरेश ऋतुपर्णका सारथि, इससे बाहुक नामवाले राजा नलका वार्तालाप (वन० ६७ । ११) ।

जृम्भिका–जँभाई, जिसे देवताओंने वृत्रासुरके मुखसे इन्द्रको निकालनेके लिये पैदा किया था (उद्योग० ९ । ५३) ।

जैगीषव्य–ब्रह्माजीकी सभामें रहकर उनकी उपासना करनेवाले एक महर्षि (सभा० ११ । २४) । आदित्य तीर्थकी महिमाके प्रसंगमें इनके चरित्रका वर्णन (शल्य० ५० अध्याय) । इनका असितदेवल मुनिको समत्व-बुद्धिका उपदेश (शान्ति० २२९ । ७—२५) । शिवमहिमाके विषयमें युधिष्ठिरसे इनका अपना अनुभव सुनाना (अनु० १८ । ३७) ।

जैत्र–(१) एक रथविशेष, जिसपर आरूढ़ हो राजा हरिश्चन्द्रने सम्पूर्ण दिशाओंपर विजय पायी थी (सभा० १२ । १२) । (२) धृतराष्ट्रका एक पुत्र, भीमसेनद्वारा इसका वध (शल्य० २६ । १४) । (३) धृष्टद्युम्नका शङ्ख (शल्य० ६१ । ७१ के बाद दाक्षिणात्य पाठ) ।

जैमिनि–एक ब्रह्मर्षि, जो जनमेजयके सर्पयज्ञमें ब्रह्मा बनाये गये थे (आदि० ५३ । ६) । ये महर्षि व्यासके शिष्य हैं (आदि० ६७ । ८९) । ये युधिष्ठिरकी सभामें विराजमान होते थे (सभा० ४ । ११) । शरशय्यापर पड़े हुए भीष्मजीको देखनेके लिये ये भी गये थे (शान्ति० ४७ । ६) ।

ज्ञानपावनतीर्थ–एक प्राचीन तीर्थ, जहाँ जानेसे मनुष्य अग्निष्टोम यज्ञका फल पाता और मुनिलोकको जाता है (वन० ८४ । ३) ।

ज्येष्ठ–(१) सामवेदके पारंगत एक प्राचीन ऋषि, जिन्हें बर्हिषद नामक ऋषियोंसे सात्वत धर्मका उपदेश प्राप्त हुआ था (शान्ति० ३४८ । ४६) । (२) जेठका महीना (अनु० १०९ । ९) ।

ज्येष्ठपुष्कर–एक तीर्थ, (वन० २०० । ६६; अनु० १३० । ७) ।

ज्येष्ठ साम–एक साम, जिसकी उपासनाका व्रत ज्येष्ठमुनिने लिया था (शान्ति० ३४८ । ४६) ।

ज्येष्ठस्थान–एक तीर्थ, जहाँ महादेवजीका दर्शन-पूजन करनेसे मनुष्य चन्द्रमाके समान प्रकाशित होता है (वन० ८५ । ६२) ।

ज्येष्ठा–एक नक्षत्र, जिसमें ब्राह्मणको सामयिक शाक और मूली दान करनेसे अभीष्ट समृद्धि एवं सद्गतिकी प्राप्ति होती है (अनु० ६४ । २३) । ज्येष्ठानक्षत्रमें इन्द्रिय-संयमपूर्वक पिण्डदान करनेवाला मनुष्य समृद्धिशाली होता है तथा प्रभुत्व प्राप्त करता है, चन्द्रव्रतमें ज्येष्ठा नक्षत्रकी चन्द्रमाकी ग्रीवामें स्थिति मानकर उसके द्वारा चन्द्रमाके ग्रीवाभागका चिन्तन करनेका विधान है (अनु० ११० । ७) ।

ज्येष्ठिल–एक तीर्थ, जहाँ जाकर एक रात्रि रहनेसे मानव सहस्र गोदानका फल पाता है (वन० ८४ । १३४) ।

ज्येष्ठिला–एक नदी, जो वरुणकी सभामें उपस्थित होती है (सभा० ९ । २१) ।

ज्योति–(१) 'अहः' नामक वसुके पुत्र (आदि० ६६ । २३) । (२) अग्निद्वारा स्कन्दको दिये गये दो पार्षदोंमेंसे एक । दूसरेका नाम ज्वालाजिह्व था (शल्य० ४५ । ३३) ।

ज्योतिक–कश्यप और कद्रूसे उत्पन्न हुआ एक प्रमुख नाग (आदि० ३५ । १३)।

ज्योतिरथा–एक प्रमुख नदी, जिसका जल भारतवासी पीते हैं (भीष्म० ९ । २६)।

ज्योतिरथ्या–एक नदी, जिसका शोणभद्रसे संगम हुआ है, इस संगममें स्नान करनेसे मनुष्य अग्निष्टोम यज्ञका फल पाता है (वन० ८५ । ८)।

ज्योतिष्क–(१) एक कश्यपवंशीय नाग (उद्योग० १०३ । १५)। (२) सुमेरु पर्वतका एक शिखर (शान्ति० २८३ । ५)।

ज्योत्स्नाकाली–सोमकी दूसरी पुत्री, सूर्यकी भार्या, ये रूपमें साक्षात् लक्ष्मीके समान हैं (उद्योग० ९८ । १३)।

ज्वर–रोगविशेष, भगवान् शङ्करके स्वेदसे इसकी उत्पत्तिका प्रकार (शान्ति० २८३ । ३७—५५)।

ज्वाला–तक्षक नागकी पुत्री, जो महाराज ऋक्षकी पत्नी और मतिनारकी माता थी (आदि० ९५ । २५)।

ज्वालाजिह्व–(१) अग्निद्वारा स्कन्दको दिये गये दो पार्षदोंमेंसे एक; दूसरेका नाम ज्योति था (शल्य० ४५ । ३३) । (२) स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ६१)।

(झ)

झल्लि–एक वृष्णिवंशी यादव, जो द्वारकाके सात मुख्य मन्त्रियोंमेंसे एक है (सभा० १४ । ६० के बाद दाक्षिणात्य पाठ)।

झिल्लिक–एक दक्षिण भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ५९)।

झिल्ली (अथवा झिल्ली पिण्डारक)–(१) एक वृष्णिवंशी योद्धा, जो द्रौपदीके स्वयंवरमें गया था (आदि० १८५ । २०)। ये सुभद्राके लिये दहेज लेकर खाण्डवप्रस्थ आये थे (आदि० २२० । ३२)। धृतराष्ट्रद्वारा इनके पराक्रमका वर्णन (द्रोण० ११ । २८)। (२) (या झिल्लिका) झींगुर नामक एक कीड़ा (वन० ६४ । १)।

(ट)

टिट्टिभ–एक दैत्य या दानव, जो वरुणकी सभामें उपस्थित होता है (सभा० ९ । १५)।

(ड)

डम्बर–धाताद्वारा स्कन्दको दिये गये दो पार्षदोंमेंसे एक। दूसरेका नाम आडम्बर था (शल्य० ४५ । ३९)।

डिंडिक–बिडालोपाख्यानमें आये हुए एक चूहेका नाम (उद्योग० १६० । ३४)।

डिम्भक–जरासंधका नीतिशास्त्रविशारद मन्त्री । हंसका भ्राता (सभा० १९ । २६)। किसी भी अस्त्र-शस्त्रसे न मरनेका इसे देवताओंद्वारा वरदान (सभा० १४ । ३७) । भगवान् श्रीकृष्णके साथ जरासंधके सत्रहवीं बारके युद्धमें एक हंस नामका राजा बलरामजीके द्वारा मारा गया था। उसके मारे जानेपर जरासंधके सैनिक चिल्ला-चिल्लाकर 'हंस मारा गया' ऐसा कहने लगे । उसे सुनकर इसे अपने भाईकी मृत्युका भ्रम हुआ और वह उसके वियोगमें यमुनाजीमें कूदकर मर गया (सभा० १४ । ४१-४२)।

डुण्डुभ–एक सर्प, जिसका रुरुके साथ संवाद हुआ था। ये शापग्रस्त सहस्रपाद ऋषि थे (आदि० ९ । २१ से आदि० १० । ७ तक)। ब्राह्मण मित्रके शापसे इनके सर्प होनेकी कथा (आदि० ११ । १–९)। महर्षि रुरुके दर्शनसे इनका सर्पयोनिसे मुक्त होना (आदि० ११ । १२)। इनके द्वारा अहिंसा-धर्मकी श्रेष्ठताका रुरुके प्रति उपदेश (आदि० ११ । १३–१९)।

(त)

तंसु–पूरुवंशी राजा मतिनारके पुत्र (आदि० ९४ । १४)। इनके पुत्रका नाम ईलिन था (आदि० ९४ । १६)।

तक्षक–एक श्रेष्ठ नाग, जो कश्यपद्वारा कद्रूके गर्भसे उत्पन्न हुआ (आदि० ३५ । ५)। इसके द्वारा क्षपणकका रूप धारण करके उत्तङ्क मुनिके कुण्डलोंका अपहरण (आदि० ३ । १२७; आश्व० ५८ । २५-२६)। राजा परीक्षित्को डसनेके लिये जाते हुए इसकी मार्गमें काश्यप नामक ब्राह्मणसे भेंट और धन देकर इसका उन्हें लौटा देना (आदि० ४२ । ३६ से ४३ । २०; आदि० ५० । १८–२७) । तपस्वी नागोंद्वारा फल आदि भेजकर उस फलके साथ ही इसका छलपूर्वक परीक्षित्के पास पहुँचना और उन्हें डँस लेना (आदि० ४३ । २२–३६; आदि० ५० । २९)। इसका इन्द्रकी शरणमें जाना और इन्द्रद्वारा इसे आश्वासन प्राप्त होना (आदि० ५३ । १४–१७)। आस्तीककी कृपासे जनमेजयके यज्ञमें इसकी रक्षा (आदि० ५८ । ३–७)। यह इन्द्रका मित्र था और सपरिवार खाण्डववनमें रहता था; अतः इसीके लिये इन्द्र सदा खाण्डववनकी रक्षा करते थे । उनके जल बरसा देनेके कारण अग्नि उस वनको जला नहीं पाती थी (आदि० २२२ । ७) । खाण्डववनदाहके अवसरपर इसका कुरुक्षेत्रमें निवास और अर्जुनद्वारा इसकी पत्नीका वध (आदि० २२६ । ४–८)। यह वरुणकी सभाका सदस्य है (सभा० ९ । ८)। नागों-

द्वारा पृथ्वी-दोहनके समय यह बछड़ा बना था (द्रोण० ६९ । २२) । बलरामजीके शेषरूपसे अपने लोकमें पधारते समय यह प्रभासक्षेत्रके समुद्रमें उनके स्वागतके लिये आया था (मौसल० ४ । १५) ।

तक्षशिला–एक नगरी, जिसे जनमेजयने जीता था (और जहाँ सर्पसत्रका अनुष्ठान एवं महाभारत-कथाका श्रवण किया था) (आदि० ३ । २०) । सर्पसत्र और महाभारत-कथाकी समाप्ति होनेपर ब्राह्मणोंको दक्षिणा दे विदा करके जनमेजय तक्षशिलासे हस्तिनापुरको चले आये (स्वर्गा० ५ । ३१–३५) ।

तङ्गण–एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ६४) ।

तडित्प्रभा–स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । १७) ।

तण्डि–वानप्रस्थ-धर्मका पालन करनेवाले एक ब्रह्मर्षि (शान्ति० २४४ । १७) । इन्होंने ब्रह्माजीके समक्ष शिव-सहस्रनाम सुनाया था (अनु० १४ । १९) । इनके द्वारा शिवजीकी स्तुति (अनु० १६ । १२–६५) ।

तनय–एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ६४) ।

तनु–एक प्राचीन महर्षि, जिन्होंने राजा वीरद्युम्नको उनके पुत्रके विषयमें कुछ बताया था (शान्ति० १२७ । १८–२२) । राजा वीरद्युम्नको उपदेश (शान्ति० १२८ । ९–२३) ।

तन्तिपाल–विराटनगरमें रहते समय सहदेवका नाम (विराट० ३ । ९) ।

तन्तु–विश्वामित्रका एक ब्रह्मवादी पुत्र (अनु० ४ । ५५) ।

तन्दुलिकाश्रम–एक प्राचीन तीर्थ, जहाँ जानेसे मनुष्य कभी दुर्गतिमें नहीं पड़ता और ब्रह्मलोकमें जाता है (वन० ८२ । ४३) ।

तप–काश्यप, वासिष्ठ, प्राणक, च्यवन तथा त्रिवर्चा—इन पाँच मुनियोंकी तपस्यासे प्रकट हुआ एक तेजस्वी पुत्र, जो पाँच रंगोंसे युक्त होनेके कारण पाञ्चजन्य नामसे विख्यात हुआ । यह पूर्वोक्त पाँचों ऋषियोंके वंशका प्रवर्तक हुआ । ये पाञ्चजन्य नामक अग्नि ही घोर तपस्याके कारण तप कहलाये । फिर इन्होंने बहुत-से पुत्र उत्पन्न किये (वन० २२० अध्याय) ।

तपती–भगवान् सूर्यकी कन्या और संवरणकी पत्नी । इनके गर्भसे अजमीढवंशी संवरणके द्वारा कुरुकी उत्पत्ति हुई (आदि० ९४ । ४८) । सूर्यकन्या तपती सावित्री-देवीकी छोटी बहिन थी । तपस्यामें संलग्न रहनेके कारण यह तीनों लोकोंमें तपती नामसे विख्यात हुई (आदि० १७० । ६-७) । इसके अनुपम सौन्दर्यका वर्णन (आदि० १७० । ८–१०) । 'इसका विवाह किसके साथ किया जाय'–पिताकी यह चिन्ता (आदि० १७० । ११) । सूर्यदेवका संवरणके साथ तपतीके विवाहका विचार (आदि० १७० । १५–२०) । संवरणको तपतीका प्रथम दर्शन और इसके अप्रतिम सौन्दर्यसे उनका मोहित होना (आदि० १७० । २३-२४) । राजाका तपतीसे कुछ प्रश्न करना और तपतीका उन्हें उत्तर दिये बिना ही अदृश्य हो जाना (आदि० १७० । ३५–४२) । राजाको मूर्छित पड़ा देख तपतीका पुनः उन्हें दर्शन और आश्वासन देना । राजाकी इससे प्रणययाचना तथा तपती-का अपनेको पिताकी वशवर्तिनी बताकर उन्हींसे अपना वरण करनेका संवरणको परामर्श देना (आदि० १७१ अध्याय) । वसिष्ठजीका संवरणके लिये सूर्यसे तपतीको माँगना । सूर्यका अपनी कन्याको उनके लिये दे देना और तपतीका वसिष्ठजीके साथ संवरणके पास आना (आदि० १७२ । २२–३०) । एक पर्वतशिखरपर संवरणद्वारा तपतीका विधिवत् पाणिग्रहण किया जाना (आदि० १७२ । ३३) । संवरण और तपतीका बारह वर्षोंतक विहार और तपतीके गर्भसे कुरुका जन्म (आदि० १७२ । ३४–५०) ।

तपन–एक पाञ्चाल योद्धा, जिसका कर्णद्वारा वध हुआ (कर्ण० ४८ । १५) ।

तम–गृत्समदवंशी श्रवाके पुत्र (अनु० ३० । ६३) ।

तमसा–एक श्रेष्ठ नदी, जिसका जल भारतवर्षके लोग पीते हैं (भीष्म० ९ । ३१) ।

तमोऽन्तकृत्–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ५८) ।

तरन्तुक–कुरुक्षेत्रकी सीमाका निर्धारण करनेवाले तरन्तुक नामक एक यक्ष और उनका स्थान । वहाँ एक रात निवास करनेसे सहस्र गोदानका फल प्राप्त होता है (वन० ८३ । १५-१६; शल्य० ५३ । २४) ।

तरल–एक भारतीय जनपद, जिसे कर्णने जीता था (कर्ण० ८ । २०) ।

तरुणक–धृतराष्ट्रकुलमें उत्पन्न हुआ एक नाग, जो सर्पसत्रकी अग्निमें जलकर भस्म हो गया था (आदि० ५७ । १९) ।

ताडकायन–विश्वामित्रके ब्रह्मवादी पुत्रोंमेंसे एक (अनु० ४ । ५६) ।

ताण्ड्य–एक महर्षि, जो इन्द्रकी सभामें विराजते हैं (सभा० ७ । १२) । इनके द्वारा वानप्रस्थ-धर्मका पालन हुआ था; जिससे ये स्वर्गको प्राप्त हुए (शान्ति०

२४४ । १७)। ये उपरिचर वसुके यज्ञमें सदस्य थे (शान्ति० ३३६ । ७)।

तापत्य–तपती और संवरणसे उत्पन्न हुए राजा कुरुके वंशमें जन्म ग्रहण करनेवाले सभी कौरव 'तापत्य' कहलाते हैं। इसी अभिप्रायसे चित्ररथ गन्धर्वने अर्जुनको तापत्य कहा था (आदि० १६९ । ७९)। अर्जुनके पूछनेपर उसने तापत्य नामके समर्थनमें तपती और संवरणके मिलनेका प्रसंग सुनाया था (आदि० १७० अध्यायसे १७२ अध्यायतक)।

तापसारण्य–तपस्वी जनोंसे सुशोभित एक तीर्थ या वन (वन० ८७ । २०)।

ताम्रचूडा–स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । १८)।

ताम्रद्वीप–एक दक्षिण भारतीय जनपद, जिसे सहदेवने जीतकर अपने अधीन किया था (सभा० ३१ । ६८)।

ताम्रपर्णी–पाण्ड्य देश (दक्षिण भारत) की एक पवित्र नदी, जहाँ मोक्ष पानेके उद्देश्यसे देवताओंने आश्रममें रहकर बड़ी भारी तपस्या की थी (वन० ८८ । १४)।

ताम्रलिप्त–एक प्राचीन राजा, जिसे सहदेवने पूर्व-दिग्विजयके समय परास्त किया था (सभा० ३० । २४)।

ताम्रलिप्तक–एक पूर्वोत्तर भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ५७)।

ताम्रवती–अग्नियोंकी उत्पत्तिकी स्थानभूता एक नदी (वन० २२२ । २३)।

ताम्रा–(१) काकी, श्येनी, भासी, धृतराष्ट्री तथा शुकी—इन पाँच कन्याओंकी जननी ताम्रादेवी (आदि० ६६ । ५६)। (२) एक श्रेष्ठ नदी, जिसका जल भारतके लोग पीते हैं (भीष्म० ९।२८)।

ताम्रारुणतीर्थ–एक तीर्थ, यहाँकी यात्रा करनेसे मनुष्य अश्वमेधयज्ञका फल पाता और ब्रह्मलोकमें जाता है (वन० ८४ । १५४)।

ताम्रोष्ठ–कुबेरकी सभामें रहकर उनकी सेवामें रहनेवाला एक यक्ष (सभा० १० । १६)।

तार–श्रीरामकी सेनाका एक वानर योद्धा, जिसने निखर्वट नामक राक्षसके साथ युद्ध किया (वन० २८५ । ९)।

तारकासुर–एक राक्षस, जो ताराक्ष, कमलाक्ष और विद्युन्मालीका पिता था (कर्ण० ३३ । ५)। स्कन्द-द्वारा इसका वध (शल्य० ४६ । ७३)। इसके महान् पराक्रमका वर्णन (अनु० ८४ । ७९–८१)।

तारा–(१) वानरराज बालीकी भार्या (वन० २८० । १८–२०)। सुग्रीवसे युद्धके लिये उद्यत हुए पतिको इसका समझाना (वन० २८० । २१–२४)। सुग्रीवको पति बनाना (वन० २८० । ३९)। (२) बृहस्पतिकी पत्नी (उद्योग० ११७ । १३)।

ताराक्ष (या तारकाक्ष)—तारका एक पुत्र, जो त्रिपुरोंमें सुवर्णमय पुरका अधिपति था (कर्ण० ३३।५; कर्ण० १५। २१)। भगवान् शिवद्वारा इसका वध (कर्ण० ३४। ११४)।

तार्क्ष्य–(१) कश्यपपत्नी विनताका एक पुत्र (आदि० ६५ । ४०)। (२) एक ऋषि, जो इन्द्रकी सभामें विराजमान होते हैं (सभा० ७ । १८)। ये तार्क्ष्य अरिष्टनेमि कहे गये हैं। उन्होंने क्षत्रियोंको यह बताया था कि हमें मृत्युका भय नहीं होता (वन० १८४। ८–२१)। इनका सरस्वती देवीके साथ धर्मविषयक संवाद हुआ था (वन० १८६ अध्याय)। (३) तार्क्ष्यदेशीय एक क्षत्रिय राजकुमार, जो राजसूयके समय युधिष्ठिरको भेंटके तौरपर बहुत धन अर्पित कर रहे थे (सभा० ५२ । १५)। (४) भगवान् शिवका एक नाम (अनु० १७ । ९८)।

तालकेतु–एक असुर, जो भगवान् श्रीकृष्णद्वारा महेन्द्र-पर्वतके शिखरपर इरावतीके किनारे पकड़ा गया और अक्षप्रपतनके समीपवर्ती हंसनेमिपथ नामक स्थानमें मारा गया (सभा० ३८ । दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ८२४; वन० १२ । ३४)।

तालचर–भारतवर्षका एक जनपद (उद्योग० १४०। २६)।

तालजङ्घ–(१) एक प्रसिद्ध क्षत्रिय-कुल, जिसे राजा सगरने जीता था (वन० १०६ । ८)। यह वंश शर्यातिवंशी वत्सकुमार सुप्रसिद्ध राजा तालजङ्घसे प्रचलित हुआ था (अनु० ३० । ७)। एक महान् असुर, जो ब्राह्मणोंका सम्मान न करनेके कारण ब्रह्मदण्डसे ही मारा गया (वन० ३०३ । १७; अनु० ३० । ७)।

तालवन–(१) एक दक्षिण भारतीय जनपद, जिसे सहदेवने जीतकर उसे राजा युधिष्ठिरके लिये कर देनेको विवश कर दिया (सभा० ३१ । ७१) । (२) द्वारकाके समीपवर्ती लतावेष्ट पर्वतके चारों ओर सुशोभित होनेवाले तीन वनोंमेंसे एक (सभा० ३८ । दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ८१३)।

तालाकट–एक दक्षिण भारतीय जनपद, जिसे सहदेवने जीता था (सभा० ३१ । ६५)।

तित्तिर–(१) एक प्रकारका पक्षी, जो मरे हुए त्रिशिराके

भयानक मुखसे उत्पन्न हुए थे (उद्योग० ९ । ४१) । (२) एक भारतीय जनपद (भीष्म० ५० । ५१) ।

तित्तिरि–(१) कश्यप और कद्रूसे उत्पन्न एक प्रमुख नाग (आदि० ३५ । १५) । (२) युधिष्ठिरकी सभामें विराजनेवाले एक ऋषि (सभा० ४ । १२) । (३) अश्वोंकी एक जाति, जो तीतरोंकी भाँति चितकबरी होती है (यह अश्व अर्जुनने दिग्विजयके समय गन्धर्व-नगरसे प्राप्त किया था ।) (सभा० २८ । ६) ।

तिमि–एक जलजन्तु, जो समुद्रमें ही होता है (सभा० ३८ । २९ के बाद दाक्षिणात्य पाठ) ।

तिमिङ्गिल–एक राजा, जिन्हें दक्षिण-दिग्विजयके समय सहदेवने अपने अधीन किया था (सभा० ३१ । ६९) ।

तिलभार–एक पूर्वोत्तरवर्ती भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ५३) ।

तिलोत्तमा–एक अप्सरा, जो कश्यपकी 'प्राधा' नामवाली पत्नीसे उत्पन्न हुई थी (आदि० ६५ । ४९) । अर्जुनके जन्म-समयमें पदार्पण करके इसने वहाँ नृत्य किया था (आदि० १२२ । ६२) । ब्रह्माके आदेशसे विश्वकर्मा-द्वारा तीनों लोकोंके दर्शनीय पदार्थोंके सारतत्त्व तथा रत्न-राशिसे इसका निर्माण (आदि० २१० । ११—१४) । इसका तिलोत्तमा नाम होनेका कारण (आदि० २१० । १८) । इसके रूपसे मोहित होकर भगवान् शिवका चतुर्मुख और इन्द्रका सहस्रनेत्र होना (आदि० २१० । २८) । इसको अपनी पत्नी बनानेके लिये ही सुन्द और उपसुन्दका परस्पर गदायुद्ध करके एक-दूसरेके हाथसे मारा जाना (आदि० २११ । १९) । इसको ब्रह्माद्वारा त्रिभुवनमें अव्याहत गतिका वरदान (आदि० २११ । २३) । इसके नामकी निरुक्ति (अनु० १४१ । १) ।

तीरग्रह–एक पूर्वोत्तरवर्ती भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ५२) ।

तीर्थकोटि–एक तीर्थ, जहाँ स्नान करनेवाले यात्रीको पुण्डरीक-यज्ञका फल मिलता है और वह विष्णुलोकको जाता है (वन० ८४ । १२१) ।

तीर्थनेमि–स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । ७) ।

तीर्थयात्रापर्व–वनपर्वका एक अवान्तर पर्व (अध्याय ८० से १५६ तक) ।

तुङ्गकारण्य–एक तीर्थ, जहाँ सारस्वत मुनिने दूसरे ऋषियों-को वेदाध्ययन कराया था (वन० ८५ । ४६) ।

तुङ्गवेणा–एक श्रेष्ठ नदी, जिसका जल भारतके लोग पीते हैं (भीष्म० ९ । २७) ।

तुण्ड–(१) एक राक्षस, जिसने वानर-सेनापति नलके साथ युद्ध किया था (वन० २८५ । ९) । (२) एक राजा, जिन्हें पाण्डवोंकी ओरसे रण-निमन्त्रण भेजा गया था (उद्योग० ४ । २१) ।

तुण्डिकेर–एक भारतीय जनपद (द्रोण० १७ । २०) ।

तुम्बुरु–(१) एक देवगन्धर्व, जो कश्यप और प्राधाके पुत्र थे (आदि० ६५ । ५१) । अर्जुनके जन्मोत्सवपर इनका संगीत हुआ था (आदि० १२२ । ५४) । ये इन्द्रकी सभामें विराजमान होते हैं (सभा० ७ । १४) । कुबेरकी सभाके भी प्रधान गन्धर्व हैं (सभा० १० । २६) । इन्होंने युधिष्ठिरको सौ घोड़े भेंट किये थे (सभा० ५२ । २४) । इन्द्रलोकमें अर्जुनके स्वागतके समय ये भी थे (वन० ४३ । १४) । पर्वसंधिके समय गन्धमादन पर्वतपर कुबेरकी सेवामें उपस्थित हुए तुम्बुरुके सामगानका स्वर स्पष्ट सुनायी पड़ता है (वन० १५९ । २९) । गोग्रहणके अवसरपर कौरवोंके साथ अर्जुनका युद्ध देखनेके लिये ये स्वयं भी आये थे (विराट० ५६ । १२) । युधिष्ठिरके अश्वमेधमें भी ये पधारे थे (आश्व० ८८ । ३९) । (२) एक प्राचीन ऋषि, जो शरशय्या-पर पड़े हुए भीष्मजीको देखने गये थे (शान्ति० ४७ । ८) ।

तुर्वसु–ययातिके द्वारा देवयानीके गर्भसे उत्पन्न (आदि० ७५ । ३५; आदि० ८३ । ९) । ययातिकी तुर्वसुसे युवावस्थाकी याचना (आदि० ८४ । १०-११) । तुर्वसुका उन्हें अपनी युवावस्था देनेसे इनकार करना (आदि० ७५ । ४३; आदि० ८४ । १२) । ययातिका तुर्वसुको शाप—'तेरी संतति नष्ट हो जायगी; जिनके आचार और धर्म वर्णसंकरोंके समान हैं, जो प्रतिलोमसंकर जातियोंमें गिने जाते हैं तथा जो कच्चा मांस खानेवाले चाण्डाल आदिकी श्रेणीमें हैं, ऐसे लोगोंका तू राजा होगा, पशुवत् आचरण करनेवाले पापात्मा म्लेच्छोंमें तेरा वास होगा' (आदि० ८४ । १३–१५) ।

तुलाधार–एक काशीनिवासी धर्मात्मा वैश्य (शान्ति० २६१ । ४२-४३) । इनका अपने पास आये हुए जाजलि मुनिका सत्कार करके उनके आगमनका कारण स्वयं ही बताना (शान्ति० २६१ । ४६–५१) । जाजलिको धर्मका उपदेश देना (शान्ति० २६२ । ५—३५) । इनके द्वारा जाजलिको आत्मयज्ञविषयक धर्मका उपदेश (शान्ति० २६३ । ४—४३) । इन्हें जाजलिके साथ स्वर्गकी प्राप्ति (शान्ति० २६४ । २०-२१) ।

तुषार–(१) एक उदीच्य जनपद (कुछ लोगोंके मतमें आधुनिक तुखारिस्तान—आक्सस नदीके आस-पासका प्रदेश ही तुषार है) । यहाँके नरेश युधिष्ठिरके राजसूय

यज्ञमें बुलाये गये थे और आकर रसोई परोसनेका कार्य करते थे (वन० ५१ । २५-२६) । गन्धमादनसे द्वैतवनकी ओर लौटे हुए पाण्डव तुषार देशको पार करके राजा सुबाहुके नगरमें पहुँचे थे (वन० १७७ । १२) । (२) तुषार जनपदके निवासी, जो भीष्मनिर्मित क्रौञ्चव्यूहके दाहिने पक्षका आश्रय लेकर स्थित हुए थे (भीष्म० ७५ । २१) । तुषारवासी म्लेच्छ मान्धाताके राज्यमें निवास करते थे (शान्ति० ६५ । १३) ।

तुहर–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ७१) ।

तुहुण्ड–एक दानव, जो कश्यपके द्वारा दनुके गर्भसे उत्पन्न हुआ था (आदि० ६५ । २५) । यही भूतलपर सेनाबिन्दु नामक राजा हुआ था (आदि० ६७ । १९-२०) ।

तृणक–एक राजर्षि, जो यमसभामें उपस्थित हो वहाँ सूर्यपुत्र यमकी उपासना करते हैं (सभा० ८ । १७) ।

तृणप–एक देवगन्धर्व, जो अर्जुनके जन्म-समयमें वहाँ पधारे थे (आदि० १२२ । ५६) ।

तृणबिन्दु–(१) काम्यकवनका एक सरोवर, जिसके पास पाण्डवलोग द्वैतवनसे गये थे (वन० २५८ । १३) । (२) काम्यकवनमें रहनेवाले एक ऋषि, जिनकी आज्ञासे पाण्डवोंने द्रौपदीको आश्रममें छोड़कर शिकारके लिये प्रस्थान किया था (वन० २६४ । ५) । ये शर-शय्यापर पड़े हुए भीष्मको देखनेके लिये कुरुक्षेत्रमें गये थे (शान्ति० ४७ । ९) ।

तृणसोमाङ्गिरा–दक्षिण दिशाका आश्रय लेकर रहनेवाले एक ऋषि (अनु० १५० । ३४) ।

तृतीया–एक नदी, जो वरुणसभामें उपस्थित रहकर वरुण-देवकी उपासना करती है (सभा० ९ । २१) ।

तेजस्वी–पाँच इन्द्रोंमेंसे एक नाम (आदि० १९६ । २८-२९) ।

तेजेयु–पूरुपुत्र रौद्राश्वके द्वारा मिश्रकेशी अप्सराके गर्भसे उत्पन्न (आदि० ९४ । ११) ।

तैजस–कुरुक्षेत्रके अन्तर्गत एक वरुण देवतासम्बन्धी तीर्थ, जहाँ स्कन्दका देवसेनापतिके पदपर अभिषेक हुआ था (वन० ८३ । १६४) ।

तैत्तिरि–राजा उपरिचर वसुके यज्ञमें सम्मिलित हुए सोलह सदस्योंमेंसे एक (शान्ति० ३३६ । ९) ।

तोमर–एक पूर्वोत्तरवर्ती भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ६९) ।

तोरणस्फाटिक–धृतराष्ट्रके बनवाये हुए सभाभवनका नाम (द्यूतक्रीडाके समय धृतराष्ट्रकी आज्ञासे इस सभाका निर्माण हुआ था । इसमें सुवर्ण तथा वैदूर्यसे जटित एक हजार खम्भे और सौ दरवाजे थे । इसकी लंबाई तथा चौड़ाई दो-दो मीलकी थी ।) (सभा० ५६ । १८) ।

त्रसदस्यु–एक राजर्षि, जो यमसभामें रहकर सूर्यपुत्र यमकी उपासना करते हैं (सभा० ८ । ९) । ये भूपालोंमें श्रेष्ठ, इक्ष्वाकुवंशीय और महामनस्वी थे, उनके पिताका नाम पुरुकुत्स था, इनके यहाँ अगस्त्य मुनि, श्रुतर्वा और ब्रध्नश्वका आगमन और इनका राज्यकी सीमापर जाकर उन सबका विधिवत् आदर-सत्कार करना और उनके पधारनेका कारण पूछना (वन० ९८ । १२–१४) । इनका अगस्त्यजीके धन माँगनेपर उनके सामने अपने आय-व्ययका लेखा रखना (वन० ९८ । १६) । ये प्रातःसायं स्मरण करनेयोग्य नरेशोंमेंसे एक हैं (अनु० १६५ । ५५) ।

त्रिककुब्धाम–भगवान् विष्णुका एक नाम (अनु० १४९ । २०) ।

त्रिकूट–लङ्काके पासका एक पर्वत (वन० २७७ । ५४) ।

त्रिगङ्ग–एक तीर्थ, जहाँ देवताओं और पितरोंका तर्पण करनेसे मनुष्य पुण्यलोकमें प्रतिष्ठित होता है (वन० ८४ । २९) ।

त्रिगर्त–(१) एक जनपद (भीष्म० ५१ । ७) । वहाँके निवासी और राजा । एकचक्रानगरीकी ओर जाते हुए पाण्डवलोग इस देशसे होकर निकले थे (आदि० १५५ । २) । अर्जुनने उत्तर दिग्विजयके समय इस देशको जीता था । यहाँके नरेश कुन्तीनन्दन अर्जुनकी शरणमें आये थे (सभा० २७ । १८) । नकुलने भी अपनी दिग्विजययात्रामें इस देशको जीता था (सभा० ३२ । ७) । ये लोग युधिष्ठिरके लिये भेंट लाये थे (सभा० ५२ । १४) । एक त्रिगर्तदेशीय वीरने राजा युधिष्ठिरके रथके घोड़ोंको मार डाला, फिर युधिष्ठिर-द्वारा वह स्वयं भी मारा गया (वन० २७१ । १२–१४) । हाथीसहित त्रिगर्तराज सुरथ नकुलद्वारा मारा गया (वन० २७१ । १८–२२) । अर्जुनने त्रिगर्तोंका संहार किया (वन० २७१ । २८) । त्रिगर्त-देशीय योद्धाओं तथा त्रिगर्तराज सुशर्माद्वारा विराटके राज्यपर आक्रमण और उनकी गौओंका अपहरण (विराट० ३० अध्याय) । त्रिगर्तोंके साथ मत्स्यदेशीय वीरोंका युद्ध (विराट० ३२ अध्याय) । त्रिगर्तराज सुशर्माका विराटको पकड़कर ले जाना, भीमद्वारा सुशर्माका निग्रह और युधिष्ठिरका अनुग्रह करके उसे छोड़ देना (विराट० ३३ अध्याय) । पाँच त्रिगर्तोंके साथ युद्ध करनेका काम पाँचों द्रौपदी-पुत्रोंको सौंपा गया (उद्योग० १६४ ।

८)। त्रिगर्तराज पाँच भाई थे और पाँचों उदार रथी थे, इनमें प्रधान सत्यरथ था (उद्योग० १६६ । ९–११)। ये भीष्मनिर्मित गरुड़व्यूहमें मस्तकस्थानपर खड़े किये गये थे (भीष्म० ५६ अध्याय)। अर्जुन और अभिमन्युपर त्रिगर्तोंने धावा किया था (भीष्म० ६१ अध्याय)। नकुलके साथ इनका युद्ध (भीष्म० ७२ अध्याय)। अर्जुनने इनपर वायव्यास्त्र छोड़ा था (भीष्म० १०२ अध्याय)। पहले कर्णने इनको परास्त किया था (द्रोण० ४ अध्याय; कर्ण० ८ अध्याय)। श्रीकृष्णने भी इनपर विजय पायी थी (द्रोण० ११ अध्याय)। सत्यरथ आदि पाँचों भाइयोंने यह प्रतिज्ञा की थी कि 'या तो अर्जुनको मारेंगे या मर जायँगे' इसीलिये ये संशप्तक कहलाये (द्रोण० १७ अध्याय; द्रोण० १९ अध्याय)। परशुरामजीने भी कभी त्रिगर्तोंका संहार किया था (द्रोण० ७० अध्याय)। सात्यकिके साथ त्रिगर्तोंका युद्ध (द्रोण० १४१ अध्याय)। युधिष्ठिरके द्वारा त्रिगर्तोंका वध (द्रोण० १५७ अध्याय)। त्रिगर्तोंने अर्जुन और श्रीकृष्णपर धावा किया (शल्य० २७ अध्याय)। अश्वमेधयज्ञके अश्वकी रक्षाके लिये गये हुए अर्जुनद्वारा इन सबकी पराजय (आश्व० ७४ अध्याय)। (२) त्रिगर्त-नामधारी एक राजा, जो यमकी सभामें विराजते हैं (सभा० ८ । २०)।

त्रिजटा–एक राक्षसी, जो अशोकवाटिकामें सीताजीको आश्वासन दिया करती थी । इसने अविन्ध्यका संदेश और अपना स्वप्न सीताजीको सुनाया था (वन० २८० । ५४––७२)। श्रीरामका त्रिजटाको धन आदि देकर संतुष्ट करना (वन० २९१ । ४१)।

त्रित–धर्मपरायण प्रजापति गौतमके तीन पुत्रोंमेंसे एक, उनके दूसरे दो भाई एकत और द्वित थे। तीनों ही मुनि और ब्रह्मवादी थे। इन सबने तपस्याद्वारा ब्रह्मलोकपर विजय पायी थी (शल्य० ३६ । ७–९)। त्रित मुनिके कूपमें गिरने, वहाँ यज्ञ करने और अपने भाइयोंको शाप देनेकी कथा (शल्य० ३६ अध्याय)। ये उपरिचरवसुके यज्ञमें सदस्य थे (शान्ति० ३३६ । ६)। भीष्मजीके महाप्रयाणके समय उन्हें देखने आये हुए महर्षियोंमें ये भी थे (अनु० २६ । ६)। वरुणके सात ऋत्विजोंमेंसे एक ये भी हैं। ये पश्चिमदिशामें निवास करनेवाले ऋषि हैं (अनु० १५० । ३६-३७)।

त्रिदिवा–(१) एक प्रमुख नदी, जिसका जल भारतवर्षकी प्रजा पीती है (भीष्म० ९ । १७)। (२) एक प्रमुख नदी, जिसका जल भारतवर्षकी प्रजा पीती है (भीष्म० ९ । १८)।

त्रिपाद–एक राक्षस, जिसका स्कन्दद्वारा वध हुआ (शल्य० ४६ । ७५)।

त्रिपुर–मयासुरद्वारा निर्मित असुरोंके तीन पुर या नगर, जो सोने, चाँदी और लोहेके बने हुए थे; इनके स्वामी क्रमशः कमलाक्ष, ताराक्ष और विद्युन्माली थे । भगवान् शंकरने इन तीनों पुरों और वहाँ रहनेवाले असुरोंका नाश किया था (कर्ण० ३३ अध्यायसे ३४ अध्यायतक)।

त्रिपुरा–एक भारतीय जनपद, जिसे कर्णने जीता था (वन० २५४ अध्याय)। कोसलनरेश बृहद्बल त्रिपुराके सैनिकोंके साथ थे (भीष्म० ८७ । ९)।

त्रिपुरी–एक दक्षिण भारतीय जनपद, जिसके राजाको सहदेवने दिग्विजयके समय जीता था (सभा० ३१ । ६०)।

त्रिराव–गरुड़के प्रमुख संतानोंमेंसे एक (उद्योग० १०१ । ११)।

त्रिवर्चा (त्रिवर्चक)–अङ्गिराके पुत्र एक ऋषि, जिन्होंने अन्य चार ऋषियोंके साथ तप करके पाञ्चजन्य नामक अग्निस्वरूप पुत्रको जन्म दिया था (वन० २२० । १–५)।

त्रिविष्टप–कुरुक्षेत्रके अन्तर्गत एक तीर्थ, जहाँ पापनाशिनी वैतरणीमें स्नान करके भगवान् शिवकी पूजा करनेसे मनुष्य सब पापोंसे मुक्त हो परम गतिको प्राप्त होता है (वन० ८३ । ८४-८५)।

त्रिशङ्कु–एक राजा, जिन्हें गुरुके शापसे हीनावस्थामें पड़े होनेपर भी महातपस्वी विश्वामित्रने स्वर्गलोकमें पहुँचाया था (आदि० ७१ । ३४ और उसके बाद दो श्लोक दा० पाठ)। ये इक्ष्वाकु-कुलमें उत्पन्न हुए थे, अयोध्याके राजा थे और विश्वामित्रसे मेल-जोल रखते थे। इनकी पत्नी केकय-राजकुमारी सत्यवती थी, इन्हींके पुत्र सत्यप्रतिज्ञ हरिश्चन्द्र थे (सभा० १२ । १० के बाद दा० पाठ)।

त्रिशिरा–ये त्वष्टाके पुत्र थे। इनका दूसरा नाम विश्वरूप था (उद्योग० ९ । ३)। इनका अप्सराओंके लुभानेपर भी शान्त रहना (उद्योग० ९ । १५-१६)। इन्द्रके वज्र-प्रहारसे इनकी मृत्यु (उद्योग० ९ । २४)।

त्रिशूलखात–एक तीर्थ, जहाँ स्नान करके देवता और पितरोंकी पूजा करनेसे मनुष्य देह-त्यागके पश्चात् गणपतिपद प्राप्त कर लेता है (वन० ८४ । ११-१२)।

त्रिषवण–एक दिव्य महर्षि, जिन्होंने शान्तिदूत बनकर हस्तिनापुर जाते हुए श्रीकृष्णसे मार्गमें भेंट की थी (उद्योग० ८३ । ६४ के बाद दा० पाठ)।

त्रिस्थान–एक तीर्थ, जहाँ एक मासतक निराहार रहकर स्नान करनेसे देवताओंका दर्शन होता है (अनु० २५ । १५)।

त्रिस्रोतसी–एक नदी, जो वरुण-सभामें उपस्थित रहकर वरुणदेवकी उपासना करती है (सभा० ९ । २३)।

त्रुटि–स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । १७)।

त्रेता–कृतयुग या सत्ययुगके बाद द्वितीय युग। हनुमान्‌जी द्वारा इसके धर्मका वर्णन–त्रेतामें यज्ञकर्मका आरम्भ होता है, धर्मके एक पादका ह्रास हो जाता है और भगवान् विष्णुका वर्ण लाल हो जाता है (वन० १४९ । २३–२६)। मार्कण्डेयजीद्वारा त्रेताका वर्णन। त्रेतायुग तीन हजार दिव्य वर्षोंका है, इसकी संध्या और संध्यांशके भी उतने ही सौ दिव्य वर्ष होते हैं। इस प्रकार यह युग छत्तीस सौ दिव्य वर्षोंका होता है (वन० १८८ । २३)।

त्रैवलि–एक ऋषि, जो युधिष्ठिरकी सभामें विराजमान होते थे (सभा० ४ । १३)।

त्र्यक्ष–एक जनपद, जहाँके राजा युधिष्ठिरके पास भेंट लेकर आये थे। द्वारपर रोक दिये जानेके कारण खड़े थे (सभा० ५१ । १७)।

त्र्यम्बक–ग्यारह रुद्रोंमेंसे एक (शान्ति० २०८ । १९)।

त्वष्टा–बारह आदित्योंमेंसे एक। कश्यपके द्वारा अदितिके गर्भसे उत्पन्न (आदि० ६५ । १६)। खाण्डववनके दाहके समय इन्द्रकी ओरसे युद्धके लिये इनका आगमन और अस्त्रके रूपमें पर्वतको उठाना (आदि० २२६ । ३४)। ये इन्द्रकी सभामें विराजमान होते हैं (सभा० ७ । १४)। इनकी पुत्री कशेरुका नरकासुरद्वारा अपहरण (सभा० ३८ । २९ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ८०४-८०५)। प्रजापति त्वष्टा (विश्वकर्मा) के द्वारा वज्रका निर्माण (वन० १०० । २४)। नल नामक वानर इनका पुत्र था (वन० २८३ । ४१)। इन्द्रद्वारा अपने पुत्र त्रिशिराके मारे जानेसे इनका इन्द्रपर कुपित होना और वृत्रासुरको प्रकट करना (उद्योग० ९ । ४८)। त्वष्टाने अपनी तपस्यासे संतुष्ट हुए शिवजीकी कृपासे वृत्रासुर नामक पुत्र उत्पन्न किया (द्रोण० ९४ । ५४)। इनके द्वारा स्कन्दको चक्र और अनुचक्र नामक दो पार्षद-प्रदान (शल्य० ४५ । ४०)।

त्वष्टाधर–शुक्राचार्यके रौद्रकर्म करने-करानेवाले दो पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६५ । ३७)।

(द)

दंश–अलर्क नामक कीड़ेकी योनिमें पड़ा हुआ एक राक्षस, जो परशुरामजीकी दृष्टि पड़ते ही कीट-योनिसे मुक्त हो गया था। परशुरामजीके पूछनेपर उसका अपनी दुर्गति-का कारण बताना (शान्ति० ३ । १४-१५; १९–२३)।

दक्ष–(१) ब्रह्माजीके दाहिने अँगूठेसे उत्पन्न एक महर्षि, जो महातपस्वी एवं प्रजापति थे। इनकी पत्नी ब्रह्माजीके बाँयें अँगूठेसे उत्पन्न हुई थी। उनके गर्भसे दक्षने पचास कन्याएँ उत्पन्न की थीं (आदि० ६६ । १०-११)। ये ही कल्पान्तरमें दस प्रचेताओंद्वारा मारिषाके गर्भसे उत्पन्न हुए थे; अतः प्राचेतस दक्ष कहलाते हैं। इनसे समस्त प्रजाएँ उत्पन्न हुई हैं, इसीसे ये सम्पूर्ण लोकके पितामह हैं (आदि० ७५ । ५)। इनके समान ही गुणशीलवाले इनके एक हजार पुत्र उत्पन्न हुए। उन्हें नारदजीने मोक्षशास्त्र एवं सांख्यज्ञानका उपदेश दे दिया; जिससे वे विरक्त होकर घरसे निकल गये। तब इन्होंने पुत्रिकाधर्मके अनुसार दौहित्रोंको अपना पुत्र माननेका संकल्प लेकर पचास कन्याएँ उत्पन्न की (आदि० ७५ । ६–८)। इन्होंने इनमेंसे दस कन्याएँ धर्मको, तेरह कश्यपको और कालका संचालन करनेमें नियुक्त नक्षत्रस्वरूपा सत्ताईस कन्याएँ चन्द्रमाको ब्याह दीं (आदि० ७५ । ८)। ये अर्जुनके जन्मकालमें कुन्तीदेवीके स्थानपर गये थे (आदि० १२२ । ५२)। ये भगवान् ब्रह्माकी सभामें रहकर उनकी उपासना करते हैं (सभा० ११ । १८)। इन्होंने सरस्वतीके तटपर यज्ञ किया और उस स्थानके लिये एक वर दिया कि यहाँ मरनेवालेको स्वर्ग प्राप्त होगा। वही विनशन तीर्थ है (वन० १३० । २)। ये ब्रह्माजीके मानसपुत्रोंमें सातवें हैं और मेरुपर्वतपर रहते हैं (वन० १६३ । १४)। इन्होंने सत्ताईस कन्याएँ सोमको ब्याह दी थीं, इनके पति चन्द्रमा केवल 'रोहिणी' को ही प्यार करते थे; अतः अन्य पत्नियोंने पिता दक्षके पास जाकर इस बातकी शिकायत की, तब दक्षने चन्द्रमासे कहा–'सोम! तुम अपनी सभी पत्नियोंके प्रति समानतापूर्ण बर्ताव करो; जिससे तुम्हें महान् पाप न लगे।' इसके बाद इन्होंने सब कन्याओंको समझाकर चन्द्रमाके यहाँ भेजा; परंतु सोमने दक्षकी बात नहीं मानी। अपनी पुत्रियोंके मुखसे फिर सोमकी शिकायत सुनकर इन्होंने उन्हें शाप देनेकी धमकी दी। जब चन्द्रमाने फिर उनकी बातकी अवहेलना कर दी, तब इन्होंने रोषपूर्वक राजयक्ष्माकी सृष्टि की और वह सोमके शरीरमें प्रविष्ट हो गया (शल्य० ३५ । ४५–६२)। देवताओंके अनुरोध करनेपर इन्होंने बताया, सोम अपनी पत्नियोंके प्रति समानतापूर्ण बर्ताव करें और सरस्वती-समुद्र-संगममें स्नान करके महादेवजीकी आराधना करें, तब इस रोगसे मुक्त हो जायँगे। प्रतिमास पंद्रह दिनोंतक ये प्रतिदिन क्षीण होंगे और आधे मासतक निरन्तर बढ़ते रहेंगे (शल्य० ३५ । ७३—७७)। गङ्गाद्वारमें इनके आवाहन करनेपर

सरस्वती वहाँ आयी और 'सुरेणु' नामसे विख्यात हुई (शल्य० ३८ । २८-२९)। बाणशय्यापर पड़े हुए भीष्मको देखनेके लिये ये भी गये थे (शान्ति० ४७ । १०)। इनकी आठ कन्याएँ ब्रह्मर्षियोंको ब्याही गयी थीं, जिनसे अनेक प्रकारके जीव-जन्तु तथा देवता-मनुष्य आदि उत्पन्न हुए (शान्ति० १६६ । १७)। इनका एक नाम 'क' भी है (शान्ति० २०८ । ७)। शिवजीद्वारा इनके यज्ञका विध्वंस (शान्ति० २८३ । ३२—३७)। यज्ञके समय दधीचिके साथ इनका संवाद (शान्ति० २८४ । २०-२२)। यज्ञविध्वंसके बाद इनका शिवजीकी शरणमें जाना (शान्ति० २८४ । ५७)। शिवजीसे क्षमा-प्रार्थना करना (शान्ति० २८४ । ६१-६४)। सहस्रनामद्वारा शिवजीका स्तवन करना (शान्ति० २८४ । ६९-१८०)। इनके द्वारा रुद्रको शाप (शान्ति० ३४२ । २५)। इनके द्वारा चन्द्रमाको शाप । इनकी साठ कन्याओंमें जो अन्तिम दस थीं, वे मनुको ब्याही गयी थीं (शान्ति० ३४२ । ५७)। (२) गरुड़की प्रमुख संतानोंमेंसे एक (उद्योग० १०१ । १२)। (३) एक विश्वेदेव (अनु० ९१ । ३५)।

दक्षिण दिशा—इसका वर्णन (उद्योग० १०९ अध्याय)।

दक्षिण पाञ्चाल—यह दक्षिण पाञ्चाल देश गङ्गाके दक्षिण तटसे लेकर चम्बल नदीतक फैला हुआ था, जहाँके क्षत्रिय जरासंधके भयसे दक्षिण भाग गये थे (सभा० १४ । २७)। पाञ्चाल एक ही जनपद था, जो गङ्गाके दोनों तटोंपर फैला हुआ था। द्रोणाचार्यने अपने शिष्योंद्वारा द्रुपदपर आक्रमण करवाकर उसे अपने अधीन करके आधा द्रुपदको दे दिया और आधा अपने अधिकारमें रक्खा। जो भाग द्रोणके अधिकारमें था, वह 'उत्तरपाञ्चाल' और जिसके राजा द्रुपद थे, वह 'दक्षिणपाञ्चाल' के नामसे प्रसिद्ध हुआ (आदि० १३७ अध्याय)।

दक्षिणमल्ल—मल्लराष्ट्र (जिसकी राजधानी कुशीनगर या कुशीनारा थी) का दक्षिणी भाग; इसे भीमसेनने पूर्वदिग्विजयके समय जीता था (सभा० ३० । १२)।

दक्षिण सिन्धु—एक तीर्थ, जो दक्षिण दिशाका समुद्र-रूप ही है, इसमें जाकर स्नान करनेसे मनुष्य अग्निष्टोम यज्ञका फल पाता है और देवविमानपर बैठनेका सौभाग्य प्राप्त कर लेता है (वन० ८२ । ५३-५४)।

दक्षिणाग्नि—पाञ्चजन्यसे उत्पन्न एक घोर पावक (आचार्य नीलकण्ठने इसका नाम 'दक्षिणाग्नि' लिखा है ।) (वन० २२० । ६)।

दक्षिणापथ—दक्षिण भारतका नामान्तर, जिसका परिचय नलने दमयन्तीको दिया था (वन० ६१ । २३)।

दण्ड—(१) एक क्षत्रिय राजा, जो 'क्रोधहन्ता' नामक असुरके अंशसे उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७ । ४५)। यह अपने पिता विदण्डके साथ द्रौपदीके स्वयंवरमें आया था (आदि० १८५ । १२)। दिग्विजयके समय भीमसेनने उसे दण्डधारसहित परास्त किया था (सभा० ३० । १७)। यह मगधदेशके क्षत्रिय राजा दण्डधारका भाई था और अर्जुनद्वारा भाईके मारे जानेपर इसने श्रीकृष्ण तथा अर्जुनपर धावा किया था, इस युद्धमें अर्जुनने इसका मस्तक काट लिया था (कर्ण० १८ । १६-१९)। (२) एक सूर्यका अनुचर (वन० ३ । ६८)। (३) यमराजका दिव्यास्त्र, जिसका वेग कहीं भी कुण्ठित नहीं होता, इसे यमराजने अर्जुनको प्रदान किया था (वन० ४१ । २६)। (४) चम्पाके निकटका एक तीर्थ, जहाँ गङ्गामें स्नान करके मनुष्य सहस्र गोदानका फल पाता है (वन० ८५ । १५)। (५) एक चेदिदेशीय पाण्डवपक्षका योद्धा, जो कर्णद्वारा निहत हुआ था (कर्ण० ५६ । ४९)। (६) भगवान् विष्णुका एक नाम (अनु० १४९ । १०५)।

दण्डक—दक्षिण भारतका एक देश, जो दण्डकारण्यका भूभाग है। इसे सहदेवने दिग्विजयके समय जीता था (सभा० ३१ । ६६)। दण्डकका विशाल राज्य एक ब्राह्मणने नष्ट कर दिया था (अनु० १५३ । ११)।

दण्डकारण्य—एक तीर्थ और वन, जहाँ स्नान करनेसे सहस्र गोदानका फल मिलता है (वन० ८५ । ४१)। यहीं गोदावरीके तटपर पञ्चवटीमें वनवासके समय श्रीरामजी रहे। यहीं शूर्पणखाको कुरूप किया गया और यहीं खर, दूषण, त्रिशिरा आदि चौदह हजार राक्षसोंका वध, मारीचका वध, सीताहरण, जटायुवध आदि घटनाएँ घटित हुईं (वन० २७७ अध्यायसे २७९ अध्यायतक)।

दण्डकेतु—पाण्डवपक्षका एक योद्धा, इसके रथके घोड़ोंका वर्णन (द्रोण० २३ । ६८)।

दण्डगौरी—एक स्वर्गीय अप्सरा, जिसने इन्द्रसभामें अर्जुनके स्वागतार्थ नृत्य किया था (वन० ४३ । २९)।

दण्डधार—(१) मगधनिवासी एक क्षत्रिय राजा, जो 'क्रोधवर्धन' नामक दैत्यके अंशसे उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७ । ४६)। भीमसेनने दिग्विजयके समय इसे इसके भाई दण्डसहित जीता था (सभा० ३० । १७)। यह कौरवपक्षका योद्धा था, हाथीपर चढ़कर लड़ता था और भगदत्तके समान पराक्रमी था। इसने जब पाण्डवसेनाका संहार आरम्भ किया, तब श्रीकृष्णकी प्रेरणासे अर्जुनने आकर इसके साथ युद्ध करके इसे मार

डाला (कर्ण० ८ । १-१३) । (२) धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६७ । १०३) । भीमसेनद्वारा इसका वध (कर्ण० ८४ । ५-६) । (३) एक राजा, जो पाण्डवोंका सहायक था । इसके नामके साथ मणिमान्‌का भी नाम आता है; अतः इन दोनोंमें कुछ लगाव रहा होगा---ऐसा अनुमान होता है । (सम्भव है, ये दोनों परस्पर पिता-पुत्र, भाई-भाई या मित्र रहे हों ।) द्रौपदीके स्वयंवरमें भी दोनोंके नामोंका एक साथ उल्लेख हुआ है (आदि० १८६ । ७) । पाण्डवोंकी ओरसे इनको और मणिमान्‌को भी रण-निमन्त्रण भेजा गया था (उद्योग० ४ । २०-२१) । ये दोनों द्रोणाचार्यके द्वारा मारे गये हैं; दोनोंके नामोंका उल्लेख मरणकालमें एक साथ हुआ है (कर्ण० ६ । १३-१४) । (४) एक पाञ्चालयोद्धा, जो पाण्डवपक्षका वीर था । इसके घोड़ोंका वर्णन (द्रोण० २३ । ५३) । यह युधिष्ठिरका चक्ररक्षक था और कर्णद्वारा मारा गया था (कर्ण० ४९ । २७) ।

दण्डनीति–ब्रह्माजीके द्वारा निर्मित नीतिशास्त्रमें वर्णित दण्डविधान-विषयक नीतिविद्या (शान्ति० ५९ । ७६–७९) । दण्डनीतिके गुणोंका वर्णन (शान्ति० ६९ । ७५–१०५) ।

दण्डबाहु–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ७३) ।

दण्डी–धृतराष्ट्रका एक पुत्र (आदि० ६७ । १०३) ।

दत्त (या दत्तक)–एक प्रकारका पुत्र, जिसे जन्मदाता माता-पिताने स्वयं समर्पित कर दिया हो । यह छः प्रकारके अबन्धु-दायादोंमेंसे एक है (आदि० ११९ । ३४) ।

दत्तात्मा–एक विश्वेदेव (अनु० ९१ । ३४) ।

दत्तात्रेय–भगवान् विष्णुके अवतार (अत्रिपत्नी अनसूयाके गर्भसे इनका प्राकट्य) । सहस्रबाहु अर्जुनद्वारा इनकी तीव्र आराधना और इनके द्वारा उसे चार दुर्लभ वरदानोंकी प्राप्ति (सभा० ३८ । २९ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ७९१) । इनके द्वारा साध्योंको उपदेश (उद्योग० ३६ । ४–२१) ।

दत्तामित्र–सौवीरदेशका राजा सुमित्र, जिसका अर्जुनने दमन किया था (आदि० १३८ । २३) ।

दधिमण्डोदक–एक समुद्र, जो घृतोद समुद्रके बाद आता है (भीष्म० १२ । २) ।

दधिमुख–(१) कश्यप और कद्रूसे उत्पन्न हुआ एक प्रमुख नाग (आदि० ३५ । ८) । (२) एक वृद्ध एवं पराक्रमी वानर, जो भयंकर वानरोंकी विशाल सेना साथ लेकर श्रीरामके पास आया था (वन० २८३ । ७) ।

दधिवाहन–एक प्राचीन नरेश, जिनका पौत्र महर्षि गौतम-द्वारा गङ्गा-तटपर परशुरामजीके क्षत्रिय-संहारसे बचाया और सुरक्षित रक्खा गया था (शान्ति० ४९ । ८०) ।

दधीच–(१) कुरुक्षेत्रके अन्तर्गत एक परम पुण्यमय पावन तीर्थ, जहाँ सरस्वतीपुत्र अङ्गिराका जन्म हुआ था । इसमें स्नान करनेसे अश्वमेधयज्ञका फल मिलता और सरस्वती-लोककी प्राप्ति होती है (वन० ८३ । १८६–१८८) । (२) महर्षि भृगुके पुत्र, इनके द्वारा वज्रनिर्माणके लिये देवताओंको अस्थिदान (वन० १०० । २१) । सरस्वती नदीके द्वारा इन्हें सारस्वत नामक पुत्रकी प्राप्ति (शल्य० ५१ । १३-१४) । इनके द्वारा सरस्वतीको वरदान (शल्य० ५१ । १७–२४) । देवताओंके द्वारा अस्थिके लिये याचना करनेपर इनका प्राण त्याग करना (शल्य० ५१ । २९-३०) । इनकी अस्थियोंसे वज्र आदि अस्त्रोंका निर्माण (शल्य० ५१ । ३१-३२) । ब्रह्माजीके पुत्र महर्षि भृगुने तीव्र तपस्यासे भरे हुए लोकमङ्गलकारी विशालकाय एवं तेजस्वी दधीचको उत्पन्न किया था । ऐसा जान पड़ता था मानो सम्पूर्ण जगत्‌के सारतत्त्वसे उनका निर्माण हुआ हो । वे पर्वतके समान भारी और ऊँचे थे । इन्द्र इनके तेजसे सदा उद्विग्न रहते थे (शल्य० ५१ । ३२-३४) । दक्षयज्ञमें शिवजीका भाग न देखकर कुपित हो दक्ष आदिको इनका चेतावनी देना (शान्ति० २८४ । १२-२१) । देवताओंके कहनेसे प्राण त्याग करना (शान्ति० ३४२ । ४०) ।

दनायु–दक्षप्रजापतिकी पुत्री और महर्षि कश्यपकी पत्नी (आदि० ६५ । १२) । इसके चार पुत्र हुए—विक्षर, बल, वीर और महान् असुर वृत्र (आदि० ६५ । ३३) ।

दनु–दक्ष-प्रजापतिकी पुत्री, महर्षि कश्यपकी पत्नी तथा दानवोंकी माता (आदि० ६५ । १२) । दनुके चौंतीस पुत्र हुए, जिनमें सबसे बड़ा विप्रचित्ति था (आदि० ६५ । २१—३६) । ये ब्रह्माजीकी सभामें विराजमान होती हैं (सभा० ११ । ३९) ।

दन्तवक्त्र (या दन्तवक्र)–एक क्षत्रिय राजा, क्रोधवश-संज्ञक दैत्यके अंशसे उत्पन्न (आदि० ६७ । ६२) । यह करूष देशका अधिपति था (सभा० १४ । १२) । सहदेवने इसे दक्षिण-दिशाकी विजयके समय पराजित किया था (सभा० ३१ । ३) । इसे पाण्डवोंकी ओरसे रण-निमन्त्रण भेजा गया था (उद्योग० ४ । १६) ।

दम–(१) विदर्भनरेश भीमके पुत्र और दमयन्तीके भाई (वन० ५३ । ९) । (२) एक महर्षि, जो अन्य महर्षियोंके साथ भीष्मजीको देखनेके लिये आये और कथा-वार्ता सुनाकर अन्तर्धान हो गये (अनु० २६ । ४—१३) ।

दमघोष–चेदिदेशका एक राजा, जिसका पुत्र शिशुपाल था (आदि० १८६ । ८५) ।

दमन–(१) एक प्राचीन ब्रह्मर्षि (वन० ५३ । ६) । पत्नीसहित विदर्भनरेश भीमद्वारा इनका सत्कार और प्रसन्न हुए मुनिका राजाको एक कन्या तथा तीन पुत्र प्रदान करना (वन० ५३ । ६–८) । (२) विदर्भ-नरेश भीमके पुत्र और दमयन्तीके भाई (वन० ५३ । ९) । (३) पौरवका पुत्र । धृष्टद्युम्नद्वारा इसका वध (भीष्म० ६१ । २०) ।

दमयन्ती–विदर्भनरेश भीमकी पुत्री, जो महर्षि दमनके आशीर्वादसे उत्पन्न हुई थी ! इनके तीन भाई थे-- दम, दान्त और दमन (वन० ५३ । ९) । इनके प्रति प्रमदावनमें हंसद्वारा नलके गुणोंका वर्णन (वन० ५३ । २७—३०) । इनका देवदूत बनकर आये हुए नलसे वार्तालाप, उनका परिचय पूछना और महलके भीतर उनका आना कैसे सम्भव हुआ, यह जिज्ञासा प्रकट करना (वन० ५५ । २०-२१) । नलके मुखसे देवताओंके वरणका प्रस्ताव सुनकर दमयन्तीका हँसकर नलको अपना पाणिग्रहण करनेके लिये प्रेरित करना और उनके अस्वीकार करनेकी दशामें प्राण त्याग देनेका निश्चय प्रकट करना (वन० ५६ । १—४) । पुनः नलके द्वारा देवताओंके ही वरण करनेका अनुरोध होनेपर शोकाश्रु बहाती हुई दमयन्तीका देवताओंको नमस्कार करके नलको ही वरण करनेकी बात घोषित करना और स्वयंवर-सभामें देवताओंके समक्ष उन्हींको अपना पति चुननेका निश्चय बताना (वन० ५६ । १४—२१) । दमयन्तीका स्वयंवर-सभामें आगमन (वन० ५७ । ८) । स्वयंवर-सभामें नलके रूपमें पाँच व्यक्तियोंको देखकर निषधनरेश नलकी पहचान न होनेसे दमयन्तीका देवताओंकी शरणमें जाना और राजा नलकी प्राप्ति करानेके लिये उनसे प्रार्थना करना (वन० ५७ । ८—२१) । देवताओंकी कृपासे दमयन्तीमें देव-सूचक लक्षणोंके निश्चय करनेकी शक्तिका उत्पन्न होना तथा देवों और मनुष्योंके लक्षणोंपर विचार करके इनका नलको पहचान लेना (वन० ५७ । २४-२५) । इनके द्वारा पतिरूपमें नलका वरण (वन० ५७ । २७-२८) । नलका इनमें अनन्य अनुराग बनाये रखने-का विश्वास दिलाना तथा दमयन्तीद्वारा नलका अभिनन्दन होना (वन० ५७ । ३१–३३) । नलके साथ दमयन्तीका विवाह, नव-दम्पतिका विहार और दमयन्तीके गर्भसे इन्द्रसेन तथा इन्द्रसेनाका जन्म (वन० ५७ । ४०—४६) । इनका राजा नलको जुएसे रोकनेका प्रयास (वन० ६० । ५–७) । पराजयकी सम्भावना होनेपर इनका कुमार-कुमारीको वार्ष्णेयद्वारा पिताके यहाँ भेजना (वन० ६० । १९-२०) । दमयन्तीका पतिके साथ तीन दिनोंतक नगरके समीप केवल जल पीकर रहना और फल-मूलका आहार करते हुए वनमें जाना । पतिके विदर्भका रास्ता बतानेपर शङ्कित होना और उन्हें अपने साथ विदर्भनरेशके यहाँ चलनेके लिये कहना (वन० ६१ । ५—३६) । एक धर्मशालामें दमयन्तीका पतिके साथ सोना और उठनेपर उन्हें न देख उनके लिये विलाप करना (वन० अध्याय ६२ से ६३ । १२ तक) । इन्हें अजगरका निगलना (वन० ६३ । २१) । इनके शापसे व्याधका भस्म होना (वन० ६३ । ३९) । इन्हें तपस्वियोंका आश्वासन (वन० ६४ । ९२—९५) । इनकी व्यापारी-दलसे भेंट तथा उन सबसे बात-चीत (वन० ६४ । ११४—१३२) । जङ्गली हाथियोंके उपद्रवसे क्षतिग्रस्त व्यापारियोंका दमयन्तीको राक्षसी समझ-कर इसे मारनेका संकल्प करना और दमयन्तीका घने जङ्गलमें भागकर अपनी दशापर विलाप करना (वन० ६५ । २७—३५) । दमयन्तीकी चिन्ता, इनका चेदि-राजके नगरमें पहुँचकर उन्मत्ताकी भाँति घूमना और राजमाताद्वारा महलमें बुलवाया जाना (वन० ६५ । ४५—५२) । राजमाता और दमयन्तीकी बातचीत (वन० ६५ । ५३–६६) । राजमातासे शर्त करके दमयन्ती-का वहाँ उद्वेगरहित हो निवास करना(वन० ६५ । ६७–७६)। सुदेव ब्राह्मणका चेदि-पुरीमें राजाके पुण्याहवाचनके समय सुनन्दाके साथ खड़ी हुई दमयन्तीको देखना, इनके अनुपम सौन्दर्य तथा अन्य लक्षणोंद्वारा इन्हें पहचानना, इनकी दयनीय दशासे व्यथित होना । इन्हें सान्त्वना देनेके विचारसे इनके पास जाकर अपनेको इनके भाईका मित्र बताना और इनके माता-पिता तथा बच्चोंका कुशल-समाचार निवेदन करना । सुदेवको पहचानकर दमयन्तीका अपने सुहृदोंके समाचार पूछना और फूट-फूटकर रोना । सुनन्दाका दमयन्तीकी इस स्थितिके विषयमें राजमाताको सूचित करना और राजमाता-का सुदेवको बुलाकर उनसे दमयन्तीका परिचय पूछना (वन० ६८ अध्याय) । सुदेवका दमयन्तीके विषयमें विस्तारपूर्वक सारी बातें बताना । उसके ललाटमें स्थित कमलके चिह्नकी ओर संकेत करना; राजमाताका उस चिह्नसे अपनी बहिनकी पुत्रीके रूपमें दमयन्तीको पहचानकर रोते-रोते गले लगाना । सुनन्दाका भी रोकर बहिन दमयन्तीको हृदयसे लगाना । दमयन्तीका मौसीसे विदर्भ जानेकी आज्ञा माँगना और उनके द्वारा दी हुई सवारीपर बैठकर संरक्षक सेनाके साथ विदर्भ जाना । वहाँ पिताके घर पहुँचकर मातासे नलके अन्वेषणका

प्रयास करनेके लिये कहना। पिताकी आज्ञासे नलको ढूँढ़नेके लिये जाते हुए ब्राह्मणोंको नलसे कहनेके लिये अपना संदेश बताना और जो उस संदेशका उत्तर दें, उनकी सारी परिस्थिति जानकर उनके विषयमें शीघ्र सूचना देनेके लिये कहना (वन० ६९ अध्याय)। पर्णादका दमयन्तीसे बाहुकरूपधारी नलका समाचार बताना और दमयन्तीका मातासे सलाह करके पिताको सूचित किये बिना गुप्तरूपसे सुदेव नामक ब्राह्मणको राजा ऋतुपर्णके यहाँ कल ही सूर्योदयके बाद होनेवाले अपने स्वयंवरका संदेश देकर भेजना (वन० ७० अध्याय)। नलके विषयमें दमयन्तीके विचार (वन० ७३। ८–१५)। इनके द्वारा बाहुककी परीक्षाके लिये केशिनीका भेजा जाना (वन० ७५। २)। माता-पिताकी आज्ञा लेकर दमयन्तीका बाहुकको अपने महलमें बुलाना और 'महाराज नल मुझे छोड़कर क्यों चले गये ? क्या तुमने उन्हें कहीं देखा है ?' इत्यादि प्रश्न करके अपना दुःख निवेदन करना। बाहुकरूपी नलके नेत्रोंसे आँसू बहना और उनका 'कलियुगसे प्रेरित होकर सब कुछ करना पड़ा है।' ऐसा कहकर दमयन्तीके द्वितीय पति-वरणकी भावनापर कटाक्ष करना, दमयन्तीका शपथपूर्वक अपनी निर्दोषता बताना। वायु देवताका आकाशवाणीद्वारा दमयन्तीकी शुद्धताका समर्थन करना और स्वयंवरको नलकी प्राप्तिका एक उपायमात्र बताना। तत्पश्चात् नलका अपने रूपको प्रकट करना और दमयन्तीके साथ उनका मिलन (वन० ७६ अध्याय)। पुष्करसे अपने राज्यको वापस लेकर नलका दमयन्तीको पुनः अपनी राजधानीमें बुलाना (वन० ७९। १)।

दमी—एक त्रिभुवनविख्यात तीर्थ, जो सब पापोंका नाश करनेवाला है। यहाँ ब्रह्मा आदि देवता भगवान् महेश्वरकी उपासना करते हैं (वन० ८२। ७२)।

दम्भोद्भव—एक सार्वभौम सम्राट् (आदि० १। २३४)। ये महारथी और महापराक्रमी थे। इनका नर-नारायणके साथ युद्ध और उनसे पराजित होना तथा उनके चरणोंमें प्रणाम करके इनका पुनः अपनी राजधानीमें लौट आना (उद्योग० ९६। ५–३९)।

दरद—(१) बाह्लीक देशके एक राजा, जो सूर्यनामक महान् असुरके अंशसे उत्पन्न हुए थे (आदि० ६७। ५८)। इन्होंने जन्म लेते ही अपने शरीरके भारसे इस पृथ्वीको विदीर्ण कर दिया था (सभा० ४४। ८)। (२) एक प्राचीन-देश और वहाँके निवासी। जिसे इस उत्तर दिग्विजयके समय अर्जुनने जीता था (सभा० २७। २३)। दरद देशके लोग राजा युधिष्ठिरके लिये भेंट ले गये थे (सभा० ५२। १३)। वनवासके समय सुबाहुकी राजधानीमें जाते समय पाण्डवलोग दरद देशमें होकर गये थे (वन० १७७। १२)। पाण्डवोंकी ओरसे जिन्हें रणनिमन्त्रण भेजना आवश्यक समझा गया था, उनमें दरदराजका भी नाम है (उद्योग० ४। १५)। यह पूर्वोत्तर दिशामें स्थित देश है (भीष्म० ९। ६७)। दरददेशीय योद्धा दुर्योधनकी सेनामें सम्मिलित थे (भीष्म० ५१। १६)। भगवान् श्रीकृष्णने कभी इस देशको जीता था (द्रोण० ७०। ११)। दरद-देशीय योद्धाओंका सात्यकिपर आक्रमण और सात्यकिद्वारा इनका संहार (द्रोण० १२१। ४२-४३)। (३) एक जाति, दरदलोग पहले क्षत्रिय थे, परंतु ब्राह्मणोंके साथ ईर्ष्या करनेके कारण शूद्र हो गये (अनु० ३५। १७-१८)।

दरि—धृतराष्ट्रके वंशमें उत्पन्न एक नाग, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें जलकर भस्म हो गया था (आदि० ५७। १६)।

दर्दुर—एक पर्वत, जिसके अधिष्ठाता देवता कुबेरकी सभामें रहकर भगवान् धनाध्यक्षकी उपासना करते हैं (सभा० १०। ३२)।

दर्भी—एक प्राचीन ऋषि, जिन्होंने कुरुक्षेत्रकी सीमाके भीतर अर्धकील तीर्थ प्रकट किया था, वहाँ उपनयन और उपवास करनेसे मनुष्य कर्मकाण्ड और मन्त्रोंका ज्ञानी ब्राह्मण होता है। दर्भी मुनि वहाँ चार समुद्र भी लाये थे, उनमें स्नान करनेसे चार हजार गोदानका फल मिलता है (वन० ८३। १५४–१५७)।

दर्व—(१) एक क्षत्रिय जाति, इस वंशके श्रेष्ठ क्षत्रिय राजकुमारोंने अजातशत्रु युधिष्ठिरको बहुत धन भेंट किया था (सभा० ५२। १३)। (२) एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९। ५४)।

दर्वीसंक्रमण—एक तीर्थ, जहाँकी यात्रा करनेसे तीर्थयात्री अश्वमेध यज्ञका फल पाता और स्वर्गलोकमें जाता है (वन० ८४। ४५)।

दर्शक—एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९। ५३)।

दल—इक्ष्वाकुवंशी राजा परीक्षित्‌के पुत्र, जिसकी माता मण्डूकराजकी कन्या सुशोभना थी (वन० १९२। ३८)। इनका अपने बड़े भाई शलके मारे जानेपर राज्याभिषेक (वन० १९२। ५९)। इनका महर्षि वामदेवसे वार्तालाप तथा वाम्य अश्वोंको लौटाना (वन० १९२। ६०–७२)।

दल्भ—एक प्राचीन ऋषि, जिनके पुत्र दाल्भ्य नामसे प्रसिद्ध थे (वन० २६। ५)।

दश—एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ५६) ।

दशग्रीव—राक्षसराज दशमुख रावण, जो विश्रवामुनिके द्वारा पुष्पोत्कटाके गर्भसे उत्पन्न हुआ था । इसके सहोदर भाईका नाम था कुम्भकर्ण (वन० २७५ । ७, १०) । यह वरुणकी सभामें विराजमान होकर उनके पास बैठता है (सभा० ९ । १४) ।

दशज्योति—सुभ्राट्के तीन पुत्रोंमेंसे एक (आदि० १ । ४४) ।

दशमालिक—एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ६६) ।

दशरथ—इक्ष्वाकुवंशीय महाराज अजके पुत्र; जो सदा स्वाध्यायमें तत्पर रहनेवाले और पवित्र थे । इनकी माताका नाम इलविला था (वन० २७४ । ६) इनके चार पुत्र थे—श्रीराम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न (वन० २७४ । ७) । इनके तीन पत्नियाँ थीं—श्रीराममाता कौसल्या, भरतजननी कैकेयी तथा लक्ष्मण और शत्रुघ्नकी माता सुमित्रा (वन० २७४ । ८) । इनका श्रीरामके राज्याभिषेकके लिये सामग्री जुटानेके निमित्त पुरोहितको आदेश (वन० २७७ । १५) । कैकेयीका इन्हें वचनबद्ध करके इनसे श्रीरामके वनवास और भरतके राज्याभिषेकका वर माँगना और इनका दुःखित होकर मौन हो जाना (वन० २७७ । २१–२७) । श्रीरामके वनमें चले जानेपर इनका शरीर-त्याग करना (वन० २७७ । ३०) । रावणपर विजय पानेके बाद श्रीरामके पास इनका आना और राज्यके लिये आदेश देना (वन० २९१ । ३६) । दशरथके घरमें श्रीरामरूपसे अवतीर्ण हुए श्रीविष्णुने दशग्रीव रावणका वध किया था (वन० ३१५ । २०) ।

दशार्ण—एक प्राचीन जनपद (कुछ लोगोंके मतानुसार इसके दो भाग थे—पूर्वी और पश्चिमी । पूर्वीभागमें छत्तीसगढ़का कुछ भाग और पाटन राज्य था तथा पश्चिमी भागमें पूर्वी मालवा और भूपालकी रियासत सम्मिलित थी । हिंदी शब्दसागरके अनुसार विन्ध्यपर्वतके पूर्व-दक्षिणकी ओर स्थित उस प्रदेशका प्राचीन नाम 'दशार्ण' है, जिसके समीप होकर धसान नदी बहती है । 'मेघदूत' से पता चलता है कि विदिशा—आधुनिक भिलसा इसी प्रदेशकी राजधानी थी ।) इस देशपर राजा पाण्डुका आक्रमण और विजय (आदि० ११२ । २५) । भीमसेनने भी इस देशको जीता था (सभा० २९ । ५) । नकुलने भी इसपर आक्रमण करके विजय पायी थी (सभा० ३२ । ७) । प्राचीन कालमें दशार्णदेशके राजा सुदामा थे, इनकी दो पुत्रियाँ थीं, इनमेंसे एक विदर्भनरेश भीमको और दूसरी चेदिराज वीरबाहुको ब्याही गयी थी, भीमकी पुत्री दमयन्ती थी और वीरबाहुकी सुनन्दा । इन दोनोंका ननिहाल दशार्णदेशमें था, दमयन्तीका जन्म भी दशार्णराजके ही घरमें हुआ था (वन० ६९ । १३–१६) । महाभारत युद्धसे पूर्व दशार्णदेशके राजा हिरण्यवर्मा थे, जिनकी पुत्रीका विवाह पुरुषवेशमें रहनेवाली द्रुपदकन्या शिखण्डिनीसे हुआ था । यह रहस्य खुलनेपर दशार्णराजने द्रुपदपर आक्रमण करनेकी तैयारी की; परंतु दैवयोगसे शिखण्डिनी वनमें जाकर शिखण्डीरूपमें परिणित हो गयी और उसके पुरुषत्वका परिचय पाकर दशार्णराज संतुष्ट हो गये (उद्योग० १८९ अध्यायसे १९२ अध्यायतक) । दशार्ण देश दो थे अथवा एक ही देशके दो विभाग थे—ऐसा जान पड़ता है; क्योंकि भीष्मपर्वमें जहाँ भारतीय जनपदोंकी गणना करायी गयी है, वहाँ दो दशार्ण देशोंका उल्लेख देखा जाता है (भीष्म० ९ । ४१-४२) । दशार्ण देशके सैनिक दुर्योधनके पक्षमें थे और द्रोणाचार्यके अनुगामी होकर युद्ध करते थे (भीष्म० ५१ । १२) । युधिष्ठिरके अश्वमेध यज्ञके समय दशार्ण देशका राज्य चित्राङ्गदके अधिकारमें था, अर्जुनने इनको पराजित किया था (आश्व० ८३ । ५–७) ।

दशार्ह—यदुकुलमें उत्पन्न एक श्रेष्ठ क्षत्रिय, जिनके वंशमें उत्पन्न होनेवाले क्षत्रियोंको दाशार्ह कहते हैं । भगवान् श्रीकृष्णको भी इसीलिये दाशार्ह या दाशार्हपति कहते हैं (सभा० ३८ । दा० पाठ, पृष्ठ ८०९, ८१३, ८१४, ८१८, ८२० और८२५) ।

दशावर—एक दैत्य, जो वरुणकी सभामें रहकर उनकी उपासना करता है (सभा० ९ । १४) ।

दशाश्व—इक्ष्वाकुका दसवाँ पुत्र, जो माहिष्मतीपुरीमें राज्य करता था । इसके पुत्रका नाम मदिराश्व था (अनु० २ । ६) ।

दशाश्वमेध—कुरुक्षेत्रकी सीमाके अन्तर्गत एक तीर्थ, जहाँ स्नान करके मनुष्य सहस्र गोदानका फल पाता है (वन० ८३ । १४) ।

दशाश्वमेधिक—कुरुक्षेत्रकी सीमामें स्थित एक तीर्थ, जिसमें स्नान करके मनुष्य उत्तम गति पाता है (वन० ८३ । ६४) ।

दस्र—(नासत्य और) दस्र दोनों अश्विनीकुमारोंके नाम हैं (शान्ति० २०८ । १७) ।

दहति—अंशद्वारा स्कन्दको दिये गये पाँच पार्षदोंमेंसे एक (शल्य० ४५ । ३४) ।

दहदहा—स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । २०) ।

दहन—(१) ग्यारह रुद्रोंमेसे एक, ब्रह्माजीके पौत्र एवं

स्थाणुके पुत्र (आदि० ६६ । ३) । (२) अंशद्वारा स्कन्दको दिये गये पाँच पार्षदोंमेंसे एक (शल्य० ४५ । ३४) ।

दाक्षायणी–दक्षकी कन्या । राजधर्माने अपनी माता सुरभिको दाक्षायणी कहा है (शान्ति० १७० । २) । दाक्षायणी सुरभिने अपने मुखके फेनको राजधर्माकी चितापर गिराया, जिससे वह जी उठा (शान्ति० १७३ । ३) । (इसी तरह अदिति, दिति, दनु आदि सभी दक्ष-कन्याओंको दाक्षायणी समझना चाहिये) ।

दाक्षिणात्य–दक्षिण भारतके निवासी दाक्षिणात्य कहलाते हैं । राजा भीष्मक दाक्षिणात्योंके अधिपति थे (उद्योग० १५८ । २) ।

दानभारि–एक भारतीय जनपद (भीष्म० ५० । ५२) ।

दान्त–विदर्भनरेश भीमके पुत्र और दमयन्तीके भाई (वन० ५३ । ९) ।

दान्ता–अलकापुरीकी एक अप्सरा, जिसने अन्य अप्सराओंके साथ अष्टावक्रके स्वागतके लिये नृत्य किया था (अनु० १९ । ४५) ।

दामचन्द्र–युधिष्ठिरमें अनुराग रखनेवाला उनका एक सम्बन्धी और सहायक राजा, जो बड़ा पराक्रमी था (द्रोण० १५८ । ४०) ।

दामा–स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । ५) ।

दामोदर–भगवान् श्रीकृष्णका एक नाम, इस नामकी व्युत्पत्ति (उद्योग० ७० । ८) ।

दामोष्णी–युधिष्ठिरकी सभामें विराजमान होनेवाले एक महर्षि (सभा० ४ । १३) । इन्होंने हस्तिनापुर जाते हुए श्रीकृष्णसे मार्गमें भेंट की थी (उद्योग० ८३ । ६४ के बाद दा० पाठ) ।

दारद–एक भारतीय जनपद (शल्य० ५० । ५०) ।

दारुक–भगवान् श्रीकृष्णका सारथि, भगवान् श्रीकृष्णके द्वारका जाते समय युधिष्ठिरने दारुकको हटाकर थोड़ी देर स्वयं सारथ्य किया (सभा० २ । १६) । वे दारुकके साथ द्वारका पहुँचे (सभा० २ । ३०) । इसके द्वारा जोतकर लाये हुए गरुडध्वज रथपर आरूढ़ हो भगवान् श्रीकृष्ण द्वारकापुरीकी ओर प्रस्थित हुए (सभा० ४५ । ६०) । दारुकके पुत्रने प्रद्युम्नके रथका संचालन किया (वन० १८ । ३, १२, १५, ३०, ३३; वन० १९ । ६, १०, १३) । शाल्वके बाणोंसे दारुकका पीड़ित होना (वन० २१ । ५) । शाल्वका वध करनेके लिये इसका श्रीकृष्णको उत्साहित करना (वन० २२ । २१–२६) । उत्तरने सारथ्य कर्ममें अपनी उपमा श्रीकृष्णके सारथि दारुकसे दी (विराट० ४५ । १६) । इसके सिवा उद्योगपर्वके ८३, ८४, १३१, १३७ अध्यायोंमें; द्रोणपर्वके ८२, ११२ अध्यायोंमें; कर्णपर्वके ७२ अध्यायमें, शान्तिपर्वके ४६, ५३ अध्यायोंमें और आश्वमेधिकके ५२ अध्यायमें भी दारुकका नाम आया है । श्रीकृष्णद्वारा समयपर रथ लानेके लिये आदेश मिलनेपर उसे स्वीकार करना (द्रोण० ७९ । ४३–४४) । भगवान्‌की शङ्खध्वनि सुनकर उनके संदेशका स्मरण करके दारुकका जयद्रथ-वधके पश्चात् रथ लेकर श्रीकृष्णके पास जाना (द्रोण० १४७ । ४५–४६) । सात्यकिके उस रथपर चढ़कर कर्णके साथ युद्ध करते समय इसकी रथ-संचालनकी कुशलता (द्रोण० १४७।५४–५५) । भगवान्‌के रथको दारुकके देखते-देखते दिव्य घोड़े आकाशमें उड़ा ले गये (मौसल० ३ । ५) । दारुकको भगवान् श्रीकृष्णका अर्जुनको यादव-संहारकी बात बताने और उन्हें बुलानेके लिये जानेका आदेश देना तथा दारुकका प्रस्थित होना (मौसल० ४ । २-३) । दारुकका कुन्तीपुत्रोंसे मिलकर उनसे यदुवंश-विनाशका समाचार सुनाना और अर्जुनको साथ लेकर द्वारका लौटना (मौसल० ५ । १–५) । अर्जुनका दारुकके प्रति वृष्णिवंशी वीरोंके मन्त्रियोंसे मिलनेकी इच्छा प्रकट करना (मौसल० ७ । ६) ।

दारुण–गरुड़की प्रमुख संतानोंमेंसे एक (उद्योग० १०१ । ९) ।

दार्व–दर्वदेशीय अथवा दर्व-जातिमें उत्पन्न क्षत्रिय-नरेश (सभा० २७ । १८) ।

दार्वातिसार–एक म्लेच्छ जाति (द्रोण० ९३ । ४४) ।

दार्वी–एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ५४) ।

दाल्भ्य–(१) एक महर्षि, जो युधिष्ठिरकी सभामें विराजमान होते थे (सभा० ४ । ११) । (२) उत्तराखण्डका एक तीर्थभूत आश्रम (वन० ९० । १२) । (३) एक ऋषि, जिन्होंने सत्यवान्‌के जीवित होनेका विश्वास दिलाकर राजा द्युमत्सेनको आश्वासन दिया था (वन० २९८ । १७) ।

दाल्भ्यघोष–उत्तराखण्डका एक तीर्थभूत आश्रम (वन० ९० । १२) ।

दाशराज–सत्यवतीका पालक पिता निषादराज (उच्चैःश्रवा); जिसकी आज्ञासे सत्यवती धर्मार्थ नाव चलाया करती थी (आदि० १०० । ४८) । सत्यवतीके विवाहके लिये शान्तनुसे इसकी शर्त (आदि० १०० । ५६) । अपनी पुत्रीके विवाहके सम्बन्धमें भीष्मके प्रति इसका वक्तव्य (आदि० १०० । ७७–८४) ।

दाशार्णक–दशार्ण देशके निवासी (भीष्म० ५० । ४७) ।

दाशार्ही–दशार्ह-कुलमें उत्पन्न वृष्णिवंशियोंकी सभा तथा दशार्ह-कुलकी कन्या (सभा० ३८ । २९ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ८०६) । (दशार्ह-कुलकी कन्या होनेसे ही भुमन्युपत्नी विजया, विकुण्ठनपत्नी सुदेवा, कुरुपत्नी शुभाङ्गी, पाण्डुपत्नी कुन्ती और अर्जुनपत्नी सुभद्रा आदि दाशार्ही कही गयी हैं ।)

दाशेरक–क्षत्रियोंका एक वर्ग (भीष्म० ५० । ४७) ।

दासी–एक प्रमुख नदी, जिसका जल भारतवासी पीते हैं (भीष्म० ९ । ३१) ।

दिकू–एक प्रमुख नदी, जिसका जल भारतवासी पीते हैं (भीष्म० ९ । १९) ।

दिग्विजयपर्व–सभापर्वका एक अवान्तर पर्व (अध्याय २५ से ३२ तक) ।

दिति–दक्षप्रजापतिकी पुत्री, महर्षि कश्यपकी पत्नी और दैत्योंकी माता (आदि० ६५ । १२) । दितिका एक ही पुत्र जिसका नाम विख्यात हुआ था हिरण्यकशिपु (आदि० ६५ । १७) । ये ब्रह्माजीकी सभामें विराजमान होते हैं (सभा० ११ ३९) ।

दिलीप–(१) सगरके प्रपौत्र, अंशुमान्‌के पुत्र और भगीरथके पिता, इनका राज्याभिषेक तथा इनका अपने पुत्रको राज्य देकर वनगमन (वन० १०७ । ६३–६९) । श्रीकृष्णद्वारा युधिष्ठिरके समक्ष इनके चरित्रका वर्णन (द्रोण० ६१ अध्याय; शान्ति० २९ । ७१–८०) । ये अनेक बार गोदान करके उसके प्रभावसे स्वर्गको प्राप्त हुए थे (अनु० ७६ । २६) । अगस्त्यजीके कमलोंकी चोरी होनेपर इनका शपथ खाना (अनु० ९४ । २३) । ये मांस-भक्षणका निषेध करनेके कारण सम्पूर्ण भूतोंके आत्मस्वरूप हो गये और इन्हें परावरतत्त्वका ज्ञान हो गया था (अनु० ११५ । ५८-५९) । यम-सभामें रहकर सूर्यपुत्र यमकी उपासना करते हैं (सभा० ८ । १४) । (२) एक कश्यपवंशी नाग (उद्योग० १०३ । १५) ।

दिलीपाश्रम–एक तीर्थ, जहाँ काशिराजकी कन्या अम्बाने कठोर व्रतका आश्रय ले तप किया था (उद्योग० १८६ । २८) ।

दिवःपुत्र–विवस्वान्‌के बोधक या स्वरूपभूत बारह सूर्योंमेंसे एक (आदि० १ । ४२) ।

दिवाकर–(१) भगवान् सूर्यका एक नाम (वन० ११८ । १२) । (२) गरुड़की प्रमुख संतानोंमेंसे एक (उद्योग० १०१ । १४) ।

दिविरथ–(१) सम्राट् भरतके पौत्र एवं भुमन्युके पुत्र (आदि० ९४ । २४) । (२) एक राजा, जो दधिवाहनका पुत्र था । इसका पुत्र महर्षि गौतमद्वारा परशुरामके क्षत्रियसंहारसे बचाया और सुरक्षित रखा गया था (शान्ति० ४९ । ८०) ।

दिवोदास–ये काशी जनपदके राजा तथा सुदेव अथवा भीमसेनके पुत्र थे । इनका गालवको दो सौ श्यामकर्ण घोड़े शुल्कमें देकर ययातिकन्या माधवीको एक पुत्रकी उत्पत्तिके लिये अपनी पत्नी बनाना (उद्योग० ११७ । १–७) । पुत्रोत्पत्तिके बाद पुनः गालवको माधवी वापस देना (उद्योग० ११७ । ८–२१) । ये यमसभामें रहकर सूर्यपुत्र यमकी उपासना करते हैं (सभा० ८ । १२) । ये शत्रुओंके यहाँसे अग्निहोत्र और उसकी सामग्री भी हर लानेके कारण तिरस्कारको प्राप्त हुए (शान्ति० ९६ । २१) । इन्होंने इन्द्रकी आज्ञासे वाराणसी नगरी बसायी थी (अनु० ३० । १६) । ये अपने शत्रु हैहय-राजकुमारोंसे एक सहस्र दिनोंतक युद्ध करके सेना और वाहनोंके मारे जानेपर भाग निकले और भरद्वाजकी शरणमें गये, वहाँ मुनिने पुत्रेष्टि-यज्ञ करवाया, जिससे इन्हें प्रतर्दन नामक पुत्रकी प्राप्ति हुई (अनु० ३० । २०–३०) । दिवोदासने अपने पुत्र प्रतर्दनको युवराज बनाकर उसे वीतहव्यके पुत्रोंका वध करनेके लिये भेजा था (अनु० ३० । ३६-३७) ।

महाभारतमें आये हुए दिवोदासके नाम–भैमसेनि, काशीश, सौदेव, सुदेवतनय आदि ।

दिव्यकट–एक पश्चिम दिशावर्ती नगर, जिसे नकुलने दिग्विजयके समय अपने अधिकारमें कर लिया था (सभा० ३२ । ११) ।

दिव्यकर्मकृत्–एक विश्वेदेव (अनु० ९१ । ३५) ।

दिव्यसानु–एक विश्वेदेव (अनु० ९१ । ३०) ।

दिशाचक्षु–गरुड़के प्रमुख संतानोंमेंसे एक (उद्योग० १०१ । १०) ।

दीप्तकेतु–एक प्राचीन नरेश (आदि० १ । २३७) ।

दीप्तरोमा–एक विश्वेदेव (अनु० ९१ । ३१) ।

दीप्ताक्ष–एक क्षत्रियकुल, जिसमें पुरूरवा नामक कुलाङ्गार राजा प्रकट हुआ था (उद्योग० ७४ । १५) ।

दीप्ति–एक विश्वेदेव (अनु० ९१ । ३४) ।

दीप्तोदक–एक तीर्थ, जहाँ देवयुगमें भृगुजीने तपस्या की थी (वन० ९९ । ६९) ।

दीर्घ–मगधका एक राजा, जो राजगृहमें पाण्डुके द्वारा मारा गया था (आदि० ११२ । २७) ।

दीर्घजिह्व–महर्षि कश्यपद्वारा दनुके गर्भसे उत्पन्न एक दानव (आदि० ६५ । ३०) ।

दीर्घजिह्वा–स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । २३) ।

दीर्घतमा–एक मुनि, जो देवराज इन्द्रकी सभामें रहकर उन वज्रधारी देवेन्द्रकी उपासना करते हैं (सभा० ७ । ११) । ये पश्चिम दिशाका आश्रय लेकर रहनेवाले ऋषि हैं (अनु० १६५ । ४२) ।

दीर्घप्रज्ञ–एक क्षत्रिय नरेश, जो वृषपर्वा नामक प्रसिद्ध दैत्यके अंशसे प्रकट हुआ था (आदि० ६७ । १६) । पाण्डवोंकी ओरसे इसे रण-निमन्त्रण भेजना निश्चित हुआ था (उद्योग० ४ । १२) ।

दीर्घबाहु–धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६७ । १०५) । भीमसेनके द्वारा इसका वध (भीष्म० ९६ । २६) ।

दीर्घयज्ञ–अयोध्याके एक राजा, जिन्हें पूर्व-दिग्विजयके समय भीमसेनने कोमलतापूर्ण बर्तावसे ही अपने वशमें कर लिया (सभा० ३० । २) ।

दीर्घरोमा–(दीर्घलोचन) धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक, (आदि० ११६ । १३) । भीमसेनद्वारा इसका वध (द्रोण० १२७ । ६०) ।

दीर्घलोचन–(१) धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६७ । १०४) । भीमसेनद्वारा इसका वध (भीष्म० ९६ । २६-२७) । (२) (दीर्घरोमा) धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ११६ । १३) । भीमसेन-द्वारा इसका वध (द्रोण० १२७ । ६०) ।

दीर्घसत्र–एक तीर्थ, जहाँकी यात्रा करनेमात्रसे मनुष्य राजसूय और अश्वमेध यज्ञोंके समान फल पाता है (वन० ८२ । १०८–११०) ।

दीर्घायु–कलिङ्गराज श्रुतायुका भाई, जो अर्जुनद्वारा मारा गया (द्रोण० ९४ । २९) ।

दुःशल–धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६७ । ९३) । भीमसेनद्वारा इसकी मृत्यु (द्रोण० १२९ । ३९ के बाद दाक्षिणात्य पाठ) ।

दुःशला–धृतराष्ट्र और गान्धारीकी पुत्री तथा दुर्योधन आदि सौ भाइयोंकी बहिन (आदि० ६७ । १०५) । सिंधुराज जयद्रथकी पत्नी (आदि० ६७ । १०९) । इसके जन्मकी कथा (आदि० ११५ अध्याय) । पिताद्वारा जयद्रथके साथ इसका विवाह (आदि० ११६ । १८) । दुःशलाका विचार करके युधिष्ठिरने द्रौपदीहरणके समय भाइयोंको जयद्रथका वध न करनेकी आज्ञा दी थी (वन० २७१ । ४३) । अश्वमेधीय अश्वकी रक्षाके लिये त्रिगर्तदेशमें गये हुए अर्जुनके द्वारा त्रिगर्तवीरोंको कष्ट पाते देख दुःशलाका युद्ध बंद करानेके लिये रणभूमिमें अपने शिशु पौत्र सुरथकुमारको लेकर आना और अर्जुनके पूछनेपर उनसे सुरथकी मृत्युका हाल बताना, विलाप करना और पार्थसे शान्ति एवं कृपाकी याचना करना (आश्व० ७८ । २२–४१) । युधिष्ठिरका दुःशलाकी प्रसन्नताके लिये उसके बालक पौत्रको सिंधुदेशके राज्यपर अभिषिक्त करना (आश्व० ८९ । ३५) ।

दुःशासन–धृतराष्ट्रका एक महारथी पुत्र (आदि० ६३ । ११९) । यह पुलस्त्यकुलके राक्षसके अंशसे उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७ । ८९–९०, ९३; आदि० ११६ । २) । धृतराष्ट्रके चार प्रधान पुत्रोंमें इसे द्वितीय स्थान प्राप्त था (आदि० ९५ । ५७) । यह भाइयोंके साथ द्रौपदीके स्वयंवरमें गया था (आदि० १८५ । १) युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें यह भोजनकी देखभाल और परोसनेकी व्यवस्थामें नियुक्त था (सभा० ३५ । ५) । इसका द्रौपदीके केश पकड़कर उन्हें बलपूर्वक सभाभवनमें ले आना (सभा० ६७ । ३१) । इसके द्वारा द्रौपदीका चीरहरण (सभा० ६८ । ४०) । द्रौपदीके वस्त्र खींचते समय राजाओंद्वारा इसपर धिक्कारोंकी बौछार (सभा० ६८ । ५६) । इसके द्वारा पाण्डवोंका उपहास (सभा० ७७ । ३—१४) द्वैतवनमें गन्धर्वोंद्वारा बंदी बनाया जाना (वन० २४२ । ७) । दुर्योधनद्वारा राजा बननेके आदेशपर उसे अस्वीकार करते हुए इसका भाईके दोनों पैर पकड़कर रोना (वन० २४९ । २९–३५) । दुर्योधनके वैष्णव यज्ञमें आनेके लिये पाण्डवोंके पास निमन्त्रण भेजना (वन० २५६ । ८) । गुप्तचरोंको भेजकर पुनः पाण्डवोंका पता लगानेके लिये सलाह देना (विराट० २६ । १४–१८) । विराटनगरके निकट अर्जुनके साथ युद्ध और पराजित होकर उसका भागना (विराट० ६१ । ३६—४०) । कौरव-सभामें दुर्योधनसे इसका अपने आपके, दुर्योधनके और कर्णके कैद होनेकी सम्भावना बताना (उद्योग० १२८ । २३-२४) । प्रथम दिनके संग्राममें नकुलके साथ इसका द्वन्द्वयुद्ध (भीष्म० ४५ । २२–२४) । अर्जुनके साथ द्वन्द्वयुद्ध और उनसे पराजित होना (भीष्म० ११० । २८—४६; भीष्म० १११ । ५७-५८) । अर्जुनके साथ युद्धमें इसका घोर पराक्रम प्रकट करना (भीष्म० ११७ । १२—१९) । दुर्योधनसे अभिमन्युको मार डालनेकी प्रतिज्ञा करके युद्ध प्रारम्भ करना (द्रोण० ३९ । २४—३१) । अभिमन्युद्वारा इसका मूर्च्छित किया जाना (द्रोण० ४० । १३-१४) । अर्जुनके साथ युद्ध करके उनसे पराजित होकर भागना (द्रोण० ९० अध्याय) ।

सात्यकिके साथ इसका युद्ध (द्रोण० ९६ । १४–१७)। सात्यकिसे पराजित होकर इसका सेनासहित पलायन (द्रोण० १२१ । २९—४६) । सात्यकिद्वारा इसकी पराजय (द्रोण० १२३ । ३१—३४)। इसके द्वारा प्रतिविन्ध्यकी पराजय (द्रोण० १६८ । ४३) । सहदेवके साथ इसका युद्ध और उनके द्वारा पराजय (द्रोण० १८८ । २—९) । धृष्टद्युम्नद्वारा इसकी पराजय (द्रोण० १८९ । ५) । द्रोणाचार्यके मारे जानेपर इसका युद्धस्थलसे भागना (द्रोण० १९३ । १५) । सहदेवद्वारा पराजित होना (कर्ण० २३ । १८–२०) । धृष्टद्युम्नको काबूमें कर लेना (कर्ण० ६१ । ३३) । भीमसेनके साथ इसका युद्ध और पाण्डवोंपर आक्षेप (कर्ण० ८२ । ३२ के बाद दाक्षिणात्य पाठ) । क्रोधमें भरे भीमसेन और दुःशासनका घोर युद्ध (कर्ण० ८२ । ३३ से कर्ण० ८३ । ७ तक) । भीमसेनकी गदाकी चोटसे धरतीपर गिरकर दुःशासनका छटपटाना; भीमसेनका इसकी छातीपर चढ़कर इससे यह पूछना कि 'तूने किस हाथसे द्रौपदीके केश खींचे थे ।' दुःशासनका रोष और अभिमानके साथ अपनी गजसुण्ड-दण्डके समान मोटी दाहिनी भुजा दिखाकर यह उत्तर देना कि 'मैंने इसी हाथसे द्रौपदीके केश खींचे थे ।' भीमसेनका इसकी उस भुजाको उखाड़कर उसीके द्वारा इसे पीटना और इसकी छाती फाड़कर इसके गरम रक्तको पीना (कर्ण० ८३ । ८–२९) । दुःशासन जिसमें रहता था, वह सुन्दर महल वीरवर अर्जुनको रहनेके लिये दिया गया (शान्ति० ४४ । ८-९) । व्यासजीके आवाहन करनेपर गङ्गाजलसे इसका भी प्रकट होना (आश्रम० ३२ । ९)। मृत्युके पश्चात् इसे स्वर्गलोककी प्राप्ति हुई (स्वर्गा० ५ । २१-२२)

महाभारतमें आये हुए दुःशासनके नाम—भारत, भरतश्रेष्ठ, भारतापसद, धृतराष्ट्रज, कौरव, कौरव्य और कुरुशार्दूल आदि ।

दुःसह—धृतराष्ट्रका एक महारथी पुत्र (आदि० ६३ । ११९; आदि० ६७ । ९३; आदि० ११६ । २) । यह पुलस्त्यकुलके राक्षसके अंशसे उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७ । ८९) । अर्जुनके साथ इसका युद्ध और पराजित होकर भागना (विराट० ६१ । ४३–४५) । इसका सात्यकिके साथ युद्ध करके घायल होना (द्रोण० ११६ । २—७) । भीमसेनद्वारा इसका वध (द्रोण० १३५ । ३६) ।

दुन्दुभि—एक राक्षस, जिसे भगवान् शङ्करने वर दिया और वे ही इसके विनाशमें भी समर्थ हुए (अनु० १४ । २१४) ।

दुन्दुभिस्वन—कुशद्वीपमें मुनिदेशके बादका देश (भीष्म० १२ । १३) ।

दुन्दुभी—एक गन्धर्वी, जो मन्थरा नामसे प्रसिद्ध कुबड़ी दासी हुई थी, ब्रह्माजीने इसे देवकार्यकी सिद्धिके लिये भूतलपर जानेका आदेश दिया था (वन० २७६ । ९-१०) ।

दुराधन (दुराधर या दुर्धर)—धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६७ । १०१) । भीमसेनद्वारा इसका वध (द्रोण० १३५ । ३६) ।

दुराधर (दुर्धर या दुराधन)—धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ११६ । १०) । भीमसेनद्वारा इसका वध (द्रोण० १३५ । ३६) ।

दुर्ग—किला, दुर्ग छः प्रकारके होते हैं—मरुदुर्ग, जलदुर्ग, पृथ्वीदुर्ग, वनदुर्ग, पर्वतदुर्ग और मनुष्यदुर्ग (सैनिक-शक्तिसे सम्पन्न होना) । इनमें मनुष्यदुर्ग ही प्रधान है (शान्ति० ५६ । ३५) ।

दुर्गशैल—शाकद्वीपका एक पर्वत (भीष्म० ११ । २३) ।

दुर्गा—(१) त्रिभुवनकी अधीश्वरी देवी दुर्गा । महाराज युधिष्ठिरने विराटनगरमें प्रवेश करते समय जगज्जननी दुर्गाकी स्तुति की और देवीने प्रत्यक्ष दर्शन देकर उन्हें वर दिया (विराट० ६ अध्याय) । भगवान् श्रीकृष्णकी प्रेरणासे अर्जुनने महाभारत युद्धके प्रारम्भमें दुर्गादेवीकी स्तुति की और देवीने अन्तरिक्षमें स्थित होकर उन्हें विजयी होनेका वर दिया (भीष्म० २३ । ४—१९) । अर्जुनकृत दुर्गास्तोत्रकी महिमा (भीष्म० २३ । २२–२५) । (२) एक प्रमुख नदी, जिसका जल भारतकी प्रजा पीती है (भीष्म० ९ । ३३) ।

दुर्गाल—एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ५२) ।

दुर्जय—(१) महर्षि कश्यपद्वारा दनुके गर्भसे उत्पन्न एक दानव (आदि० ६५ । २३) । (२) (दुष्पराजय)—धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ११६ । ९) । (देखिये दुष्पराजय) । (३) एक राजा, जिसके लिये पाण्डव-पक्षसे रण-निमन्त्रण भेजनेके लिये द्रुपदने सलाह दी थी (उद्योग० ४ । १६) । (४) इक्ष्वाकुवंशी सुवीरके पुत्र (अनु० २ । ११) । (५) भगवान् विष्णुका एक नाम (अनु० १४९ । ९६) ।

दुर्जया—दुर्जय मणिमती नगरी, जिसे दुर्जया भी कहते हैं (वन० ९६ । १) । (कुछ आधुनिक समीक्षकोंने 'इलोरागुफा' को ही दुर्जया माना है । यह स्थान निजाम राज्यमें दौलताबादसे सात मील और नन्दगाँवसे चालीस मीलपर स्थित है ।)

दुर्धर्ष (दुर्मद)—धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६७ । ९४; आदि० ११६ । ३) । भीमसेनद्वारा इसका वध (द्रोण० १५५ । ४०) ।

दुर्मद–धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६७ । ९६; आदि० ११६ । ५) । भीमसेनद्वारा इसका वध (द्रोण० १३५ । ३६) ।

दुर्मर्षण–धृतराष्ट्रका एक महारथी पुत्र (आदि० ६३ । ११९; आदि० ६७ । ९५; आदि० ११६ । ३) । इसका भीमसेनके साथ युद्ध (भीष्म० ११३ अध्याय; द्रोण० २५ । ५–७) । अर्जुनसे लड़नेका उत्साह प्रकट करना (द्रोण० ८८ । ११–१३) । अर्जुनद्वारा इसकी गज-सेनाका संहार और पलायन (द्रोण० ८९ अध्याय) । इसका सात्यकिके साथ युद्ध और उनके द्वारा घायल होना (द्रोण० ११६ । ६–८) । भीमसेनद्वारा इसका वध (द्रोण० १३५ । ३६) । दुर्मर्षणका सुन्दर महल माद्री-कुमार नकुलको रहनेके लिये दिया गया (शान्ति० ४४ । १०-११) ।

दुर्मुख–(१) धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६७ । ९३; आदि० ११६ । ३) । यह द्रौपदीके स्वयंवरमें गया था (आदि० १८५ । १) । यह द्वैतवनमें गन्धर्वोंद्वारा बंदी बनाया गया (वन० २४२ । १२) । प्रथम दिनके संग्राममें इसका सहदेवके साथ द्वन्द्वयुद्ध (भीष्म० ४५ । २५–२७) । अभिमन्युके द्वारा इसके सारथिका वध (भीष्म० ४७ । १२) । इसके द्वारा श्रुतकर्माकी पराजय (भीष्म० ७९ । ३५–३८) । अभिमन्युद्वारा पराजित होना (भीष्म० ८४ । ४२) । घटोत्कचके साथ द्वन्द्वयुद्ध (भीष्म० ११० । १३-१४; भीष्म० १११ । ३७–३९) । धृष्टद्युम्नके साथ युद्ध (द्रोण० २० । २६–२९) । पुरुजित्‌के साथ युद्ध (द्रोण० २५। ४०-४१) । सहदेवके साथ युद्ध (द्रोण० १०६ । १३) । सहदेवद्वारा पराजित होना (द्रोण० १०७ । २५) । भीमसेनद्वारा इसका वध (द्रोण० १३४ । २०-२१) । इसके द्वारा पर्वतीय राजा जनमेजयके वधकी चर्चा (कर्ण० ६ । १९– २०) । इसका सुन्दर भवन सहदेवको रहनेके लिये दिया गया था (शान्ति०४४।१२–१३)। (२) (दुर्मर्षण) धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक(आदि० ६७।९५) । दुर्मर्षण नामसे भीमसेनद्वारा इसका वध (शल्य०२६ । ९–१०) । (३) एक राजा, जो युधिष्ठिरकी सभामें विराजमान होता था (सभा० ४।२१)। (४) एक असुर, जो वरुणकी सभामें रहकर उनकी उपासना करता है (सभा० ९ । १३) । (५) पाण्डवपक्षका एक योद्धा, जो कर्णके वशमें पड़ गया था (कर्ण० ७३ । १०४) । (६) एक सर्प, जो स्वधामको पधारते समय बलरामजीके स्वागतके लिये प्रभासक्षेत्रमें आया था (मौसल० ४ । १६) ।

दुर्योधन–(१) धृतराष्ट्र और गान्धारीके सौ पुत्रोंमेंसे एक, जो सबसे बड़ा था । यह अपने ग्यारह महारथी भाइयोंमें प्रधान था (आदि० ६३ । ११८–१२०) । यह कुरुकुलको कलङ्कित करनेवाला, दुर्बुद्धि तथा खोटे विचार रखनेवाला था और कलिके अंशसे उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७ । ८७) । दुर्योधनके द्वारा प्रज्वलित की हुई वैरकी भारी आग असंख्य प्राणियोंके विनाशका कारण बन गयी । इसके सौ भाइयोंकी उत्पत्ति पुलस्त्यकुलके राक्षसोंके अंशसे हुई थी (आदि० ६७ । ८८-८९) । इसकी उत्पत्तिकी कथा (आदि० ११४ । ९–२५) । इसके जन्म-समयमें प्रकट हुए अमाङ्गलिक अपशकुन (आदि० ११४ । २७–२९) । इसके जन्मकालिक अमङ्गलकारी उपद्रवोंको देखकर इसे कुल-संहारक बताते हुए इसे त्याग देनेके लिये धृतराष्ट्रको विदुरकी सलाह (आदि० ११४ । ३४–३९) । जिस दिन भीमसेनका जन्म हुआ, उसी दिन दुर्योधनका भी हुआ (आदि० १२२ । १९) । इसके द्वारा गङ्गातटवर्ती प्रमाणकोटि तीर्थमें जलक्रीडाका आयोजन और विष खिलाकर बेहोश किये हुए भीमसेनका जलमें प्रक्षेप (आदि० १२७ । २७–५४) । इसका भीमसेनके सारथिको उसका गला घोंटकर मार डालना (आदि० १२८ । ३६) । भीमसेनके भोजनमें पुनः कालकूट विष डलवानेका कुकृत्य (आदि० १२८ । ३७) । इसकी गदायुद्धमें प्रवीणता (आदि० १३१ । ६१) । इसका रणभूमिमें अस्त्रकौशल दिखाना (आदि० १३३ । ३२–३५) । भीमसेनके साथ गदा-युद्ध करते हुए इसका अश्वत्थामाद्वारा निवारण (आदि० १३४ । ५) । इसके द्वारा कर्णका राज्याभिषेक (आदि० १३५ । ३८) । इसकी कर्णसे अटल मित्रताके लिये याचना (आदि० १३५ । ४०) । कर्णका पक्ष लेकर इसका भीमसेन एवं पाण्डवोंपर आक्षेप (आदि० १३६ । १०–१८) । द्रुपदद्वारा इसकी पराजय (आदि० १३७ । २२ के बाद दा० पाठ) । युधिष्ठिरपर प्रजाका अनुराग देखकर इसकी चिन्ता (आदि० १४० । २९) । पाण्डवोंको वारणावत भेजनेके विषयमें दुर्योधन और धृतराष्ट्रका संवाद (आदि० १४१ । ३–२४) । वारणावतमें लाक्षागृह बनवाने तथा पाण्डवोंको जलानेके लिये इसका पुरोचनको आदेश (आदि० १४३ । २-१७) । द्रौपदीके स्वयंवरमें इसका कर्ण और भाइयोंसहित उपस्थित होना (आदि० १८५ । १०४) । लक्ष्यवेधके लिये धनुषपर प्रत्यञ्चा चढ़ाते समय इसका झटकेसे उत्तान गिरना और लज्जित हो अपने स्थानपर लौट जाना (आदि० १८६ । २८ के बाद) । पाण्डवोंके विनाशके लिये इसके द्वारा धृतराष्ट्रके प्रति विविध उपायोंका कथन (आदि० १९९ । २८–३१; आदि० २०० । ४–२०) ।

पाण्डवोंको आधा राज्य देनेके लिये इसे भीष्मकी सम्मति (आदि० २०२ । ५-१९) । इसका युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें भाइयोंसहित आना (सभा० ३४ । ६) । युधिष्ठिरके लिये आयी हुई भेंट-सामग्रीको ग्रहण करना और सँभाल कर रखना (सभा० ३५ । ९) । सबके विदा हो जानेपर भी युधिष्ठिरकी दिव्यसभामें दुर्योधन और शकुनि कुछ कालतक ठहरे रहे (सभा० ४५ । ३८) । दुर्योधनका मयनिर्मित सभाभवनको देखना और पग-पगपर भ्रमके कारण उपहासका पात्र बनना तथा युधिष्ठिरके वैभवको देखकर इसका चिन्तित होना (सभा० ४७ अध्याय) । पाण्डवोंपर विजय प्राप्त करनेके लिये इसका शकुनिसे वार्तालाप (सभा० ४८ अध्याय) । इसका धृतराष्ट्रसे अपनी चिन्ताका कारण बताना तथा जुएके लिये अनुरोध करना (सभा० ४९ । १२-३६, ४२; सभा० ५० अध्याय) । इसके द्वारा राजसूययज्ञमें युधिष्ठिरके लिये विभिन्न देशोंसे आयी हुई भेंटोंका धृतराष्ट्रके प्रति वर्णन (सभा० अध्याय ५१ से ५२ तक) । इसके द्वारा युधिष्ठिरके अभिषेकका अपने पिताके प्रति वर्णन (सभा० ५३ अध्याय) । इसका धृतराष्ट्रको उभाड़ना (सभा० अध्याय ५५ से ५६ तक) । जुएके अवसरपर विदुरजीको इसकी फटकार तथा विदुरजीका इसे चेतावनी देना (सभा० ६४ अध्याय) । द्रौपदीको पकड़कर सभाभवनमें लानेके लिये इसका विदुरको आदेश (सभा० ६६ । १) । विदुरका इसे पुनः फटकारना (सभा० ६६ । २-१२) । द्रौपदीको सभाभवनमें लानेके लिये इसका प्रातिकामीको आदेश (सभा० ६७ । २) । द्रौपदीके प्रति इसके छल-कपटयुक्त वचन (सभा० ७० । ३-६; सभा० ७१ । २०) । इसके द्वारा अर्जुनकी वीरताका वर्णन (सभा० ७४ । ६ के बाद) । धृतराष्ट्रसे पुनः जुएके लिये इसका अनुरोध (सभा० ७४ । ७-२३) । पुरवासियोंद्वारा इसकी निन्दा (वन० १ । १३-१७) । विदुरसे काम्यकवनसे लौट आनेपर इसकी चिन्ता (वन० ७ । २-६) । इसे मैत्रेय ऋषिका शाप (वन० १० । ३४) । इसके द्वारा द्वैतवनको यात्राविषयक कर्ण-शकुनिकी मन्त्रणा स्वीकार करना (वन० २३८ । २-१६) । घोषयात्राके लिये प्रस्थान (वन० २३९ । २३) । गौओंकी देख-भाल करना और इसके सैनिकोंका गन्धर्वोंके साथ संवाद (वन० २४० अध्याय) । दुर्योधन आदि कौरवोंका गन्धर्वोंके साथ युद्ध (वन० २४१ अध्याय) । चित्रसेन आदि गन्धर्वोंद्वारा दुर्योधन आदिकी पराजय तथा चित्रसेनका दुर्योधनको बंदी बनाना (वन० २४२ । ६) । गन्धर्वोंके हाथसे छुड़ानेके लिये पाण्डवोंके प्रति इसकी पुकार (वन० २४३ । ११ के बाद दा० पाठ) । इसका कर्णसे अपनी पराजयका समाचार बताना (वन० २४८ अध्याय) । कर्णसे अपनी ग्लानिका वर्णन करते हुए दुःशासनको राजा बननेका आदेश (वन० २४९ । १-२७) । इसका आमरण अनशनके लिये बैठना (वन० २५१ । १९-२०) । कृत्याद्वारा इसका रसातलमें पहुँचाया जाना (वन० २५१ । २९) । दानवों तथा कर्णके द्वारा समझाये जानेपर इसका अनशन त्यागकर हस्तिनापुरको प्रस्थान (वन० २५२ अध्याय) । इसके वैष्णव-यज्ञका आरम्भ और समाप्ति (वन० अध्याय २५५ से २५६ तक) । इसका महर्षि दुर्वासाको प्रसन्न करके युधिष्ठिरके आश्रमपर जानेके लिये वर माँगना (वन० २६२ । १९-२३) । गुप्तचरोंद्वारा पाण्डवोंका पता न मिलनेपर मन्त्रियोंसे इसका परामर्श करना (विराट० २६ । २-७) । मत्स्यदेशपर चढ़ाई करनेका निश्चय (विराट० २९ । १४ के बाद दा० पाठ) । मत्स्यदेशपर आक्रमण करनेके लिये दुःशासनको आदेश देना (विराट० ३० । २०-२४) । अपने सैनिकोंको उभाड़ते हुए इसका अर्जुनसे युद्ध करनेका ही निश्चय (विराट० ४७ । २-१९) । कर्णकी बातोंसे कुपित हुए आचार्य-वर्गसे इसका क्षमा माँगना (विराट० ५१ । १६) । अर्जुनके साथ युद्ध और उनसे हारकर भागना (विराट० ६५ अध्याय) । श्रीकृष्णसे सहायताके रूपमें नारायणी सेना प्राप्त करना (उद्योग० ७ । २३-२५) । इसका बलरामजीके पास सहायता माँगनेके लिये जाना (उद्योग० ७ । २५) । कृतवर्माके पास सहायता माँगनेके लिये जाना (उद्योग० ७ । ३२) । मार्गमें शल्यका सत्कार करके उनके प्रसन्न होनेपर अपने पक्षमें आनेके लिये उनसे प्रार्थना (उद्योग० ८ । १८) । इसके पास ग्यारह अक्षौहिणी सेनाओंका संग्रह (उद्योग० १९ । २७) । धृतराष्ट्रसे अपने पक्षके वीरोंका वर्णन करते हुए अपना उत्कर्ष तथा पाण्डवोंका अपकर्ष बतलाना (उद्योग० ५५ अध्याय) । संजयसे पाण्डवोंके रथ तथा घोड़ोंके विषयमें प्रश्न (उद्योग० ५६ । ६) । धृतराष्ट्रसे अपनी प्रबलताका प्रतिपादन (उद्योग० ५७ । ३६-४२) । युद्धको यज्ञका रूप देकर युद्ध करनेका ही निश्चय करना (उद्योग० ५८ । १०-१८) । धृतराष्ट्रको ढाढ़स बँधानेके लिये आत्मप्रशंसा करना (उद्योग० ६१ अध्याय) । भीष्मजीसे अपने पक्षकी प्रबलता बताना (उद्योग० ६३ । १-८) । श्रीकृष्णके सत्कारके लिये मार्गमें विश्राम-स्थान बनवाना (उद्योग० ८५ । १२-१७) । श्रीकृष्णको कैद करनेका विचार प्रकट करना (उद्योग० ८८ । १३) । अपना निमन्त्रण अस्वीकार कर देनेपर श्रीकृष्णसे उसका कारण पूछना (उद्योग०

९१ । १३–१५) । कण्वका दुर्योधनको मातलीयोपाख्यान सुनाना और संधिके लिये समझाना तथा इसके द्वारा कण्वमुनिके उपदेशकी अवहेलना (उद्योग० ९७ अध्यायसे १०५ अध्यायतक) । कौरवसभामें श्रीकृष्णको उत्तर देते हुए पाण्डवोंको सूईकी नोंक बराबर भी भूमि न देनेका निश्चय करना (उद्योग० १२७ अध्याय) । कैदकी सम्भावनासे इसका कौरवसभासे चला जाना (उद्योग० १२८ । २५–२७) । श्रीकृष्णको कैद करनेका षड्यन्त्र (उद्योग० १३० । ४–८) । रणयात्राके लिये सेनाको आज्ञा देना (उद्योग० १५३ । ८–१७) । इसके द्वारा अपने सेनापतियोंका निर्वाचन और अभिषेक (उद्योग० १५५ । ३१–३३) । इसका भीष्मको प्रधान सेनापतिके पदपर अभिषिक्त करना (उद्योग० १५६ । २६) । रुक्मीकी सहायता लेनेसे इनकार करना (उद्योग० १५८। ३७) । उलूकको दूत बनाकर पाण्डवोंके पास भेजना और श्रीकृष्ण, पाण्डव, द्रुपद, विराट, शिखण्डी और धृष्टद्युम्न आदिको कटुवचनोंद्वारा संदेश कहलाना (उद्योग० १६० अध्याय) । भीष्मसे कौरवपक्षके अतिरथियोंका नाम पूछना (उद्योग० १६५ । १२–१६)। भीष्मसे पाण्डवपक्षके अतिरथियोंकी जानकारी प्राप्त करना (उद्योग० १६८ । ३९–४२) । शिखण्डीको न मारनेके विषयमें भीष्मसे इसका प्रश्न (उद्योग० १७३ । १-२)। भीष्मसे शिखण्डीका जन्मवृत्तान्त पूछना (उद्योग० १८८ । १) । अपने पक्षके वीरोंसे उनकी शक्तिके विषयमें पूछना (उद्योग० १९३ । २–७) । कुरुक्षेत्रके मैदानमें चलनेके लिये सेनाको आज्ञा देना (उद्योग० १९५ अध्याय) । भीष्मकी रक्षाके लिये दुःशासनको आदेश (भीष्म० १५ । १२—२०) । इसका मणिमय महान् ध्वज नाग-चिह्नसे विभूषित था (भीष्म० १७। २५-२६) । युद्धके लिये जाते समय गजारूढ़ दुर्योधन और उसके गजकी छटाका वर्णन (भीष्म० २० । ७-८) । द्रोणाचार्यसे दोनों पक्षोंके प्रधान-प्रधान वीरोंका वर्णन करना (भीष्म० २५ । ७–११) । प्रथम दिनके संग्राममें भीमसेनके साथ इसका द्वन्द्वयुद्ध (भीष्म० ४५ । १९–२१) । भीमसेनके बाणोंसे आहत होकर इसका मूर्च्छित होना (भीष्म० ५८ । १७)। भीष्मको उलाहना देना (भीष्म० ५८ । ३४–४०)। गजसेनाके साथ भीमसेनपर आक्रमण (भीष्म० ६२ । ३५) । भीमसेनके साथ युद्ध करके इन्हें मूर्च्छित कर देना (भीष्म० ६४ । १६–२३) । पाण्डवोंके विशिष्ट पराक्रमके विषयमें भीष्मसे प्रश्न (भीष्म० ६५ । ३१–३४) । भीमसेनके साथ युद्ध (भीष्म० ७३ । १७–२३) । भीमसेनद्वारा इसका पराजित और मूर्च्छित होना (भीष्म० ७९ । ११—१६) । भीमसेनके पराक्रमसे भयभीत होकर इसकी भीष्मसे प्रार्थना (भीष्म० ८० । ४–६) । धृष्टद्युम्नद्वारा इसका पराजित होना (भीष्म० ८२ । ५३) । भीमसेनद्वारा एक साथ आठ भाइयोंके मारे जानेसे भीष्मके पास जाकर इसका विलाप करना (भीष्म० ८८ । ३७-३८) । घटोत्कचके साथ इसका युद्ध और उसके साथी चार राक्षसोंका इसके द्वारा वध (भीष्म० ९१ । २०-२१) । घटोत्कचके प्रहारसे इसका प्राण-संकटकी स्थितिमें पड़ जाना (भीष्म० ९२ । १४) । इसके प्रहारसे भीमसेनका मूर्च्छित होना (भीष्म० ९४ । ५-६) । घटोत्कचसे पराजित होकर भीष्मसे दुःख प्रकट करना (भीष्म० ९५ । ३–१५) । भीष्मसे पाण्डवोंको मारने अथवा कर्णको युद्धके लिये आज्ञा देनेका अनुरोध करना (भीष्म० ९७ । ३६–४२) । भीष्मकी रक्षाकी व्यवस्थाके लिये दुःशासनको आदेश (भीष्म० ९८ । ३१–४२; भीष्म० १०५ । २–६) । शल्यको युधिष्ठिरको रोकनेके लिये आदेश देना (भीष्म० १०५। २६–२८) । अपनी सेनाको मारी जाती देख भीष्मसे इसकी प्रार्थना (भीष्म० १०९ । १६–२३)। सात्यकिके साथ इसका द्वन्द्वयुद्ध (भीष्म० ११० । १४; भीष्म० १११ । १४–१८) । अभिमन्युके साथ युद्ध (भीष्म० ११६ । १–८) । इसके द्वारा अपने सैनिकोंको प्रोत्साहन (भीष्म० ११७ । २६–३०)। सेनापतिकी आवश्यकताका वर्णन करते हुए कर्णसे अनुमति लेना (द्रोण० ५ । ५–१२) । द्रोणाचार्यसे सेनापति होनेके लिये प्रार्थना करना (द्रोण० ६ । २–११)। इसके द्वारा द्रोणाचार्यका सेनापतिके पदपर अभिषेक (द्रोण० ७ । ५) । युधिष्ठिरको जीवित पकड़ लानेके लिये द्रोणाचार्यसे वर माँगना (द्रोण० १२ । ६)। पाण्डवोंकी सेनाको द्रोणाचार्यद्वारा विचलित हुई देख कर्णसे इसका हर्षपूर्ण वार्तालाप (द्रोण० २२ । ११–१७)। द्रोणाचार्यको उपालम्भ देना (द्रोण० ३३ । ७–९)। अभिमन्युको मारनेके लिये अपने महारथियोंको आदेश देना (द्रोण० ३९ । १६–१९) । अभिमन्युसे युद्ध करनेके लिये कर्णको प्रेरित करना (द्रोण० ४० । २३–२५) । अभिमन्युके प्रहारसे पीड़ित होकर भागना (द्रोण० ४५ । ३०) । अर्जुनके भयसे भीत जयद्रथको इसका आश्वासन (द्रोण० ७४ । १४–२०) । द्रोणाचार्यको उपालम्भ (द्रोण० ९४ । ४–१८)। अर्जुनसे युद्ध करनेमें अपनी असमर्थता प्रकट करना (द्रोण० ९४ । २७–३२) । द्रोणाचार्यद्वारा बाँधे गये दिव्य कवचसे युक्त होकर युद्धके लिये जाना (द्रोण०

९४ । ७३–७५) । अर्जुनको युद्धके लिये ललकारना (द्रोण० १०२ । ३६–३८) । अर्जुनके साथ युद्धमें पराजित होकर भागना (द्रोण० १०३ । ३२) । इसके ध्वजका वर्णन (द्रोण० १०५ । २६-२८) । सात्यकि-द्वारा इसकी पराजय (द्रोण० ११६ । २४-२५) । सात्यकिसे हारकर भाइयोंसहित भागना (द्रोण० १२० । ४३-४४) । पाण्डवोंके साथ संग्राम (द्रोण० १२४ । ३२–४२) । द्रोणाचार्यको उपालम्भ देना (द्रोण० १३० । ४–१२) । युधामन्यु और उत्तमौजाके साथ युद्ध (द्रोण० १३० । ३०–४३) । अर्जुनके वधके लिये कर्णको प्रोत्साहित करना (द्रोण० १४५ । १२–३३) । अर्जुनके साथ युद्ध (द्रोण० १४५ अध्याय) । जयद्रथवधके बाद खेद प्रकट करते हुए द्रोणाचार्यको उपालम्भ देना (द्रोण० १५० अध्याय) । कर्णसे वार्तालापके प्रसंगमें द्रोणाचार्यपर दोषारोपण (द्रोण० १५२ । २–१४) । युधिष्ठिरके साथ युद्ध और पराजय (द्रोण० १५३ । २९–३९) । कर्णसे अपनी सेनाकी रक्षाके लिये अनुरोध (द्रोण० १५८ । २–४) । कर्णको मार डालनेके लिये उद्यत हुए अश्वत्थामाको मनाना (द्रोण० १५९ । १३–१५) । अश्वत्थामासे पाञ्चालोंको मारनेके लिये अनुरोध (द्रोण० १५९ । ८६–१००) । पैदल सैनिकोंको प्रदीप जलाने-का आदेश (द्रोण० १६३ । १२) । द्रोणाचार्यकी रक्षाके लिये सैनिकोंको आदेश (द्रोण० १६४।२१–३०) । भीमसेनसे युद्ध और पराजित होकर भागना (द्रोण० १६६ । ४३–५८) । कर्णकी सलाहसे शकुनिको पाण्डवों-का वध करनेके लिये भेजना (द्रोण० १७० । ६२–६५) । सात्यकिद्वारा पराजय (द्रोण० १७१ । २३) । द्रोणाचार्य और कर्णको उपालम्भ (द्रोण० १७२ । ३–७) । जटासुरके पुत्र अलम्बुषको घटोत्कचके साथ युद्ध-के लिये आज्ञा देना (द्रोण० १७४ । ९–११) । कर्ण-को घटोत्कचके चंगुलसे छुड़ानेके लिये अलायुधको प्रेरित करना (द्रोण० १७७ । ९—१३) । अलायुधके वधसे पश्चात्ताप करना (द्रोण० १७८ । ३६–४०) । द्रोणा-चार्यको उपालम्भ देना (द्रोण० १८५ । २—८; द्रोण० १८५ । २२-२३) । नकुलके साथ युद्ध और उनसे परास्त होना (द्रोण० १८७ । ५०—५५) । सात्यकिके साथ संवाद और युद्ध (द्रोण० १८९ । २३—४८) । द्रोणाचार्यके मारे जानेपर युद्ध-स्थलसे भागना (द्रोण० १९३ । १७) । अश्वत्थामासे द्रोणवधका समाचार सुनानेके लिये कृपाचार्यको आदेश देना (द्रोण० १९३ । ३५) । अश्वत्थामासे पुनः नारायणास्त्र प्रकट करनेको कहना (द्रोण० २०० । २५) । सात्यकिद्वारा इसकी पराजय (द्रोण० २०० । ५३) । अपनी सेनाको आश्वासन देना (कर्ण० ३ । ७—१७) । कर्णसे सेना-पति बननेके लिये प्रार्थना करना (कर्ण० १० । २८—३७) । कर्णको सेनापतिके पदपर अभिषिक्त करना (कर्ण० १० । ४३) । युधिष्ठिरके साथ युद्धमें इसकी पराजय (कर्ण० २८ । ७-८; कर्ण० २९ । ३२) । कर्णके कथनानुसार व्यवस्थाके लिये उद्यत होना (कर्ण० ३१ । ७१-७२) । कर्णका सारथ्य करनेके लिये शल्यसे प्रार्थना (कर्ण० ३२ । २—२९) । शल्यके कुपित होकर उठ जानेपर उनकी प्रशंसा करके उन्हें प्रसन्न करना (कर्ण० ३२ । ५४—६२) । शल्यसे त्रिपुरोपा-ख्यानका वर्णन (कर्ण० ३३ अध्यायसे ३४ । १२१ तक) । इसके द्वारा कर्णको परशुरामद्वारा दिव्यास्त्र-प्राप्तिका वर्णन (कर्ण० ३४ । १२३—१६२) । शल्यको कर्णका सारथि बननेके लिये समझाना (कर्ण० ३५ अध्याय) । नकुल-सहदेवको अपने पराक्रमसे किं-कर्तव्यविमूढ़ कर देना (कर्ण० ५६ । ७—१८) । धृष्टद्युम्नके साथ युद्धमें परास्त होना (कर्ण० ५६ । ३४-३५) । अपने सैनिकोंको प्रोत्साहन देना (कर्ण० ५७ । २–४) । भीमसेनद्वारा पराजित होना (कर्ण० ६१ । ५३—६२) । कर्णसे अपनी सेनाकी रक्षाके लिये कहना (कर्ण० ६४ । ४०–४२) । इसके द्वारा कुलिन्द-राजकुमारका वध (कर्ण० ८५ । १४) । अश्वत्थामा-द्वारा किये गये संधिके प्रस्तावको न मानना (कर्ण० ८८ । ३०—३३) । कर्णकी मृत्युसे दुखी होना (कर्ण० ९२ । १५) । अपने सैनिकोंको ढाढ़स बँधाना (कर्ण० ९३ । ५२—५९) । संधिके लिये समझाते हुए कृपाचार्यको उत्तर देना और युद्धका ही निश्चय करना (शल्य० ५ अध्याय) । अश्वत्थामाके पास जाकर सेना-पतिके पदके लिये पूछना (शल्य० ६ । १७-१८) । शल्यसे सेनापति बननेके लिये प्रार्थना (शल्य० ६ । २५-२६) । शल्यको सेनापति-पदपर अभिषिक्त करना (शल्य० ७ । ६-७) । इसके द्वारा चेकितानका वध (शल्य० १२ । ३१-३२) । भीमसेनद्वारा पराजित होना (शल्य० १६ । ४२–४४) । अपनी सेनाको उत्साहित करना (शल्य० १९ । ५८—६६) । इसका अद्भुत पराक्रम (शल्य० २२ अध्याय) । धृष्टद्युम्नद्वारा पराजित होना (शल्य० २५ । २३) । अकेले भागकर सरोवरमें प्रवेश करना और मायासे उसका पानी बाँध देना (शल्य० २९ । ५४) । कृपाचार्य, अश्वत्थामा और कृतवर्माके कहनेपर भी युद्धसे उदासीनता प्रकट करना (शल्य० ३० । १४–१८) । जलमें छिपे-छिपे युधिष्ठिरसे वार्तालाप करना (शल्य० ३१ । ३८—५३) । युधिष्ठिरके

ललकारनेपर इसका जलसे बाहर निकलना (शल्य० ३२ । ३३—३९) । कवच आदिसे सुसज्जित होकर इसका किसी एक पाण्डवके साथ युद्धके लिये उद्यत होना (शल्य० ३२ । ६६—७१) । भीमसेनके साथ गदा-युद्धके लिये उद्यत होना (शल्य० ३३ । ५२-५५) । भीमसेनके साथ गदायुद्धके लिये उद्यत होनेपर अपशुकन (शल्य० ५६ । ८—१४) । भीमसेनके कटु वचनोंका उत्तर (शल्य० ५६ । ३८—४१) । भीमसेनके साथ भयङ्कर गदा-युद्ध (शल्य० ५७ अध्याय) । भीमसेनकी गदाकी चोटसे जाँघ टूट जानेपर इसका पृथ्वीपर गिरना (शल्य० ५८ । ४७-४८) । श्रीकृष्णद्वारा किये गये आक्षेपोंका उत्तर देना (शल्य० ६१ । २७—३९) । अपने कार्यपर संतोष प्रकट करना (शल्य० ६१ । ५०—५४) । संजयके सामने विलाप करना (शल्य० ६४ । ७—२९) । संदेशवाहकोंको संदेश देना (शल्य० ६४ । ३०—४०) । अश्वत्थामा, कृपाचार्य और कृतवर्माके सामने अपने कार्यपर संतोष प्रकट करना (शल्य० ६५ । २३—३१) । अश्वत्थामाको सेनापति बनाना (शल्य० ६५ । ४१) । अश्वत्थामाके कर्मकी प्रशंसा करके प्राण-त्याग करना (सौप्तिक० ९ । ५६-५७) । कर्णकी सहायतासे इसके द्वारा कलिङ्गराजकी कन्याके अपहरणकी चर्चा (शान्ति० ४ । १३) । राजा दुर्योधनका सजा-सजाया भवन वीरवर भीमसेनको रहनेके लिये दिया गया (शान्ति० ४४ । ६-७) । धृतराष्ट्रसे शीलके सम्बन्धमें इसके प्रश्नकी चर्चा (शान्ति० १२४ । १८—६४) । व्यासजीके आवाहन करनेपर गङ्गाजलसे भाइयोंसहित प्रकट होकर इसका धृतराष्ट्र आदि स्वजनोंसे मिलना (आश्रम० ३२ । ९) । स्वर्गमें राजा दुर्योधन सूर्यके समान तेजस्वी और वीरोचित शोभासे सम्पन्न हो पुण्यकर्मा देवताओंके साथ बैठा था, जिसे युधिष्ठिरने प्रत्यक्ष देखा (स्वर्गा० १ । ४-५) ।

महाभारतमें आये हुए दुर्योधनके नाम–आजमीढ, भारत, भरतशार्दूल, भरतश्रेष्ठ, भारताग्रय, भरतर्षभ, भरतसत्तम, भारतसत्तम, धार्तराष्ट्र, धृतराष्ट्रज, धृतराष्ट्रपुत्र, धृतराष्ट्रसूनु, धृतराष्ट्रसुत, धृतराष्ट्रात्मज, गान्धारि, गान्धारीपुत्र, कौरव, कौरवश्रेष्ठ, कौरवनन्दन, कौरवात्मज, कौरवेन्द्र, कौरव्य, कौरवेय, कुरु, कुरुश्रेष्ठ, कुरूद्वह, कुरुकुलश्रेष्ठ, कुरुकुलाधम, कुरुमुख्य, कुरुनन्दन, कुरुपति, कुरुप्रवीर, कुरुपुङ्गव, कुरुराज, कुरुसत्तम, कुरुसिंह, कुरूत्तम, कुरुवर्धन, सुयोधन आदि ।

(२) मनुवंशी सुवीरकुमार दुर्जयके पुत्र (अनु० २ । १३) । उनके द्वारा नर्मदानदीके गर्भसे परम सुन्दरी सुदर्शनानामक कन्याका जन्म (अनु० २ । १९) । इनका अपनी पुत्री सुदर्शनाको अग्निदेवके हाथों सौंपना (अनु० २ । ३४) ।

दुर्वारण–काम्बोज सैनिकोंका नाम । सात्यकिद्वारा इनका वर्णन (द्रोण० ११२ । ४२-४३) ।

दुर्वासा–कठोर व्रतका पालन करनेवाले तथा धर्मके विषयमें अपने निश्चयको सदा गुप्त रखनेवाले एक ब्राह्मण महर्षि, जो बड़े ही उग्र स्वभावके थे (आदि० ११० । ४-५) । कुन्तीद्वारा इनकी परिचर्या (आदि० ११० । ४) । इनके द्वारा कुन्तीको देवताओंके वशीकरण-मन्त्रका उपदेश (आदि० ११० । ६) । ये भगवान् शङ्करके अंशभूत श्रेष्ठ द्विज हैं (आदि० २२२ । ५२) । राजा श्वेतकिके शतवर्षीय यज्ञका सम्पादन करनेके लिये इनको भगवान् शङ्करका आदेश और इनका उस आदेशको शिरोधार्य करना (आदि० २२२ । ५५-५८) । इनके द्वारा श्वेतकिके यज्ञका सम्पादन (आदि० २२२ । ५९) । ये इन्द्रकी सभामें विराजमान होते हैं (सभा० ७ । ११) । ब्रह्माजीकी सभामें रहकर उनकी उपासना करते हैं (सभा० ११ । २३) । इन्होंने जहाँ भगवान् श्रीकृष्णको वरदान दिया था, वह स्थान वरदानतीर्थके नामसे प्रसिद्ध हुआ (वन० ८२ । ६३-६४) । इनके द्वारा महर्षि मुद्गलके दान-धर्म आदिकी छः बार परीक्षा (वन० २६० । १२-२१) । इनके द्वारा दुर्योधनको वर-प्रदान (वन० २६२ । २३) । इनका पाण्डवोंके आश्रमपर जाना (वन० २६३ । १-२) । स्नानके लिये गये हुए इनका पूर्ण तृप्तिका अनुभव करनेके कारण पाण्डवोंके यहाँ न जाकर शिष्योंसहित वहींसे पलायन (वन० २६३ । २९) । राजा कुन्तिभोजके यहाँ आगमन और शर्तके साथ निवास (वन० ३०३ । ७-८) । इनके द्वारा कुन्तीको अथर्ववेदीय उपनिषदोंमें प्रसिद्ध मन्त्रका दान (वन० ३०५ । २०) । पत्नीसहित श्रीकृष्णद्वारा दुर्वासाकी आराधना और इनका उन्हें वर देना (द्रोण० ११ । ९) । इनका श्रीकृष्णका आतिथ्य स्वीकार करके उनके क्रोधकी परीक्षा करना (अनु० १५९ । १८-३६) । श्रीकृष्णकी सेवासे प्रसन्न होकर रुक्मिणीसहित उन्हें वर देना तथा श्रीकृष्णने जो इनकी जूठनको अपने पैरमें नहीं लगाया था, उसे अप्रिय कार्य बताना (अनु० १५९ । ३७-४८) । महापराक्रमी भगवान् शिव ही दुर्वासा नामक ब्राह्मण बनकर द्वारकापुरीमें श्रीकृष्णभवनमें टिके रहे (अनु० १६० । ३७) । कुन्तीद्वारा क्रोधी एवं तपस्वी दुर्वासाकी आराधना और उनके द्वारा कुन्तीको वरकी प्राप्तिके प्रसंगकी चर्चा (आश्रम० ३० । २-६) । मौसलकाण्डमें यदुवंश-विनाशके पश्चात् एक जगह बैठे हुए श्रीकृष्णने दुर्वासाके

उस कथनका स्मरण किया था, जिसे इन्होंने खीरके उच्छिष्ट भागको पैरमें न लगानेके कारण इनसे कहा था (मौसल० ४ । १९)।

दुर्विगाह (दुर्विषह)–धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ११६ । ५) । भीमसेनद्वारा इसका वध (शल्य० २६ । २०)। (देखिये—दुर्विषह)

दुर्विभाग–एक देश, जहाँके उत्तम कुलमें उत्पन्न क्षत्रिय राजकुमारोंने युधिष्ठिरको राजसूययज्ञके अवसरपर बहुत धन अर्पित किया था (सभा० ५२ । ११–१७)।

दुर्विमोचन-धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक, भीमसेनद्वारा इसका वध (शल्य० २६ । १६)।

दुर्विरोचन–धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६७ । ९७) । भीमसेनद्वारा इसका वध (द्रोण० १२७ । ६२)।

दुर्विषह–धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक, इसका दूसरा नाम दुर्विगाह था (आदि० ११६ । ५)। यह द्रौपदीके स्वयंवरमें गया था (आदि० १८५ । १)। यह द्वैतवनमें गन्धर्वोंद्वारा बंदी बनाया गया था (वन० २४२ । १२)। भीमसेनद्वारा इसका वध (शल्य० २६ । २०)।

दुलिदुह–एक प्राचीन राजा (आदि० १ । २३३)।

दुष्कर्ण–धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६७ । ९५; आदि० ११६। ३)। शतानीकद्वारा इसका पराजित होना (भीष्म० ७९ । ४६–५२)। भीमसेनद्वारा वध (द्रोण० १५५ । ४०)।

दुष्पराजय (दुर्जय)–धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ११६ । ९)। द्वैतवनमें गन्धर्वोंद्वारा इसका बंदी बनाया जाना (वन० २४२ । १२)। नीलके साथ युद्ध (द्रोण० २५ । ४५)। भीमसेनद्वारा इसका वध (द्रोण० १३३ । ४१-४२)।

दुष्प्रधर्ष (दुष्प्रहर्ष)–धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६७ । ९६) । भीमसेनद्वारा इसका वध (शल्य० २६ । १८-१९)।

दुष्प्रधर्षण–धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६७ । ९४) । यह द्रौपदीके स्वयंवरमें गया था (आदि० १८५ । १)।

दुष्यन्त– (१) पूरुवंशके एक सुप्रसिद्ध राजा, चक्रवर्ती सम्राट् (आदि० ६८ । ३)। इनके राज्यकालमें प्रजाजनोंकी धार्मिकताका वर्णन (आदि० ६८ । ६–११)। इनकी भगवान् विष्णुके समान शारीरिक शक्ति, सूर्यतुल्य तेज एवं गदायुद्धकी कुशलता (आदि० ६८ । ११–१३) । इनकी मृगयाका वर्णन (आदि० ६९ । १–३१) । इनका कण्वके मनोहर आश्रममें प्रवेश तथा वहाँकी शोभाका निरीक्षण (आदि० ७० । २४–५१)। कण्वके आश्रममें इनकी शकुन्तलासे भेंट। उसे अपना परिचय देकर उसके प्रति प्रेम प्रकट करना एवं उससे उसका परिचय पूछना (आदि० ७१ । ३–१३) । शकुन्तलाके कण्वपुत्री कहकर परिचय देनेपर इनका मुनिको ऊर्ध्वरेता बताकर इस बातपर संशय प्रकट करना (आदि० ७१ । १४–१७)। शकुन्तलाका इनसे अपने जन्मका विस्तृत परिचय देना (आदि० ७१ । १८ से ७२ अध्यायतक) । इनका शकुन्तलाको अपनी भार्या बननेके लिये प्रेरित करना और विवाहके आठ भेद बतलाकर उसके साथ गान्धर्वविवाहका समर्थन करना (आदि० ७३ । १–१४)। शकुन्तलाके साथ इनका गान्धर्वविवाह और समागम तथा उसे राजधानीमें शीघ्र बुला लेनेके लिये आश्वासन (आदि० ७३ । १९–२१ और दा० पाठ)। इनके द्वारा शकुन्तलाके गर्भसे भरतकी उत्पत्ति (आदि० ७४ । १-२) । इनका शकुन्तलाको अस्वीकार करना (आदि० ७४ । १९-२०)। शकुन्तलाका इनके प्रति धर्मकी याद दिलाना, असत्यभाषण और अधर्मसे भय बताना तथा पत्नी एवं पुत्रकी महिमा बतलाते हुए पुत्रको अङ्गीकार करनेके लिये रोषपूर्ण अनुरोध करना (आदि० ७४ । २५–७२)। इनके द्वारा शकुन्तलाकी भर्त्सना (आदि० ७४ । ७३–८१) । इनके प्रति शकुन्तलाद्वारा सत्य-धर्मकी श्रेष्ठताका प्रतिपादन (आदि० ७४ । १०१–१०७)। आकाशवाणीद्वारा इनके समक्ष शकुन्तलाकी उक्तिका समर्थन करनेपर इनका उसको अङ्गीकार करना (आदि० ७४ । १०९–१२६) । सौ वर्षोंतक राज्य भोगनेके बाद इनका स्वर्गगमन (आदि० ७४ । १२६ के बाद दा० पाठ) । ये ईलिनके पुत्र थे, इनकी माताका नाम रथन्तरी था (आदि० ९४ । १७)। ये यमकी सभामें रहकर सूर्यपुत्र भगवान् यमकी उपासना करते हैं (सभा० ८ । १५)। इन्होंने जीवनमें कभी मांस नहीं खाया था (अनु० ११५ । ६४)। (२) पूरुवंशी महाराज अजमीढके द्वारा 'नीली' के गर्भसे उत्पन्न, इनके दूसरे भाईका नाम 'परमेष्ठी' था (आदि० ९४ । ३२)। दुष्यन्त और परमेष्ठी सभी पुत्र 'पाञ्चाल' कहलाये (आदि० ९४ । ३३)।

दूषण–जनस्थाननिवासी एक राक्षस, जो श्रीरामद्वारा मारा गया (सभा० ३८ । २९ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ७९४, कालम २; वन० २७७ । ४४)।

दृढ (१)—(दृढवर्मा) धृतराष्ट्रका एक पुत्र (देखिये दृढवर्मा)।

दृढ (२)—(दृढक्षत्र) धृतराष्ट्रका एक पुत्र (देखिये दृढक्षत्र)।

दृढक्षत्र (दृढ)–धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६७। ९९; आदि० ११६ । ८) । भीमसेनद्वारा इसका वध (द्रोण० १५७ । १७–१९) ।

दृढधन्वा–एक पूरुवंशीय क्षत्रिय, जो द्रौपदीके स्वयंवरमें उपस्थित था (आदि० १८५ । १५) ।

दृढरथ (दृढरथाश्रय)—(१) धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६७ । १०४)। भीमसेनद्वारा इसका वध (द्रोण० १५७ । १७–१९) । (२) प्रातःसायं स्मरण करनेयोग्य एक नरेश (अनु० १६५ । ५२) ।

दृढरथाश्रय (दृढरथ)–धृतराष्ट्रका एक पुत्र (आदि० ११६ । १२) । (देखिये दृढ़रथ) ।

दृढवर्मा (दृढ)–धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६७ । ९९; आदि० ११६ । ८) । भीमसेनद्वारा इसका वध (द्रोण० १३७ । २०–३०) ।

दृढव्य–एक महर्षि, जो धर्मराजके सात ऋत्विजोंमेंसे एक हैं, जो सदा दक्षिण दिशाका आश्रय लेकर रहते हैं (अनु० १५० । ३४-३५) ।

दृढव्रत–एक ब्रह्मर्षि, जो सदा दक्षिण दिशाका आश्रय लेकर रहते हैं (शान्ति० २०८ । २८-२९) ।

दृढसंध (शत्रुञ्जय)–धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६७ । १००; आदि० ११६ । ९) । भीमसेन-द्वारा शत्रुञ्जय नामसे इसका वध (द्रोण० १३७ । २०–३०) ।

दृढसेन–पाण्डवपक्षका एक योद्धा, द्रोणाचार्यद्वारा इसका वध (द्रोण० २१ । ५२) ।

दृढस्यु–महर्षि अगस्त्यद्वारा लोपामुद्राके गर्भसे उत्पन्न । ये अपनी माताके गर्भमें सात वर्षोंतक पले और बढ़े थे । सात वर्ष बीतनेपर अपने तेज और प्रभावसे प्रज्वलित हुए ये उदरसे बाहर निकले । दृढस्यु महाविद्वान्, महा-तेजस्वी और महातपस्वी थे । ये जन्मकालसे ही उपनिषदोंसहित सम्पूर्ण वेदोंका स्वाध्याय करते-से जान पड़े । बाल्यावस्थासे ही इध्म (समिधा) का भार वहन करनेके कारण इनका नाम 'इध्मवाह' हो गया था (वन० ९९ । २५–२७) ।

दृढहस्त–धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६७ । १०२; आदि० ११६ । १०) ।

दृढायु–(१) पुरूरवाद्वारा उर्वशीके गर्भसे उत्पन्न (आदि० ७५ । २५) । (२) एक राजा, जिन्हें पाण्डवोंकी ओरसे रण-निमन्त्रण भेजनेका विचार किया गया था (उद्योग० ४ । २३) । (३) एक ब्रह्मर्षि, जो सदा दक्षिण दिशामें निवास करते हैं (अनु० १६५ । ४०) । (दक्षिण दिशावासी ऋषियोंका वर्णन तीन स्थानोंमें आता है । सभी जगहोंके नाम किञ्चित् अन्तरके साथ प्रायः मिलते हैं । इन्हें देखनेसे दृढव्य, दृढव्रत और दृढायु—तीनों नाम एक ही ऋषिके जान पड़ते हैं)

दृढायुध (**चित्रायुध**)–धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६७ । ९९; आदि० ११६ । ८) । चित्रायुध नामसे इसका वध (द्रोण० १३६ । २०–२२) ।

दृढाश्व–इक्ष्वाकुवंशीय महाराज कुवलाश्वके पुत्र । ये धुन्धु-राक्षसकी क्रोधाग्निमें दग्ध होनेसे बच गये थे (वन० २०४ । ४०) ।

दृढेयु–एक पश्चिम दिशानिवासी ऋषि (अनु० १५० । ३६) ।

दृढेषुधि–एक प्राचीन राजा (आदि० १ । २३८) ।

दृषद्वती–कुरुक्षेत्रकी दक्षिणी सीमापर स्थित एक नदी, जिसके जलका सेवन वनवासी पाण्डवोंने किया था (वन० ५ । २) । इसके तटपर भगवान् शङ्करने युधिष्ठिरको उपदेश दिया था (सभा० ७८ । १५) । दृषद्वतीके उत्तर कुरुक्षेत्रमें रहना स्वर्गनिवासके तुल्य है (वन० ८३ । ४, २०४) । दृषद्वतीमें स्नान करके देवता-पितरों-का तर्पण करनेसे मनुष्य अतिरात्र और अग्निष्टोम यज्ञका फल पाता है (वन० ८३ । ८७-८८) ।

दृषद्वान्–पूरुवंशीय राजा संयातिके श्वशुर, इनकी पुत्रीका नाम वराङ्गी था (आदि० ९५ । १४) ।

देवक–(१) इन्द्रके समान कान्तिमान् एक नरेश, जो किसी गन्धर्वराजके अंशसे उत्पन्न हुए थे (आदि० ६७ । ६८) । ये उग्रसेनके भाई, देवकीके पिता और वसुदेव-जीके श्वशुर थे (सभा० २२ । ३६ के बाद दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ७३१) । इनकी पुत्री देवकीके स्वयंवरमें सम्पूर्ण क्षत्रिय एकत्र हुए थे (द्रोण० १४४ । ९) । (२) एक राजा, जिनके यहाँ ब्राह्मणद्वारा शूद्र-जातीय एक कन्या थी, जिसका विदुरजीके साथ विवाह हुआ था (आदि० ११३ । १२-१३) । (३) एक राजा, जिन्हें पाण्डवोंकी ओरसे रण-निमन्त्रण देनेका विचार किया गया था (उद्योग० ४ । १७) ।

देवकी–उग्रसेनके भाई देवककी पुत्री, वसुदेवकी पत्नी और भगवान् श्रीकृष्णकी माता (सभा० २२ । ३६ के बाद दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ७३१-७३२) । इनके स्वयंवरमें सम्पूर्ण क्षत्रिय एकत्र हुए थे (द्रोण० १४४ । ९) ।

देवकुण्ड (देवह्रद)–(१) एक तीर्थ, जहाँ स्नान करनेसे मनुष्य अश्वमेध यज्ञका फल और परमसिद्धि पाता है (वन० ८५ । २०) । (२) कृष्णवेणाके जलसे उत्पन्न हुए रमणीय देवकुण्डमें, जिसे 'जातिस्मरह्रद' भी कहते हैं, स्नान करनेसे मनुष्य जातिस्मर (पूर्वजन्मकी बातोंको याद करनेवाला) होता है (वन० ८५ । ३७-३८) ।

देवकूट–एक तीर्थ, जहाँ स्नान करनेवाला मनुष्य अश्वमेध-यज्ञका फल पाता और अपने कुलका उद्धार कर देता है (वन० ८४ । १४१) ।

देवग्रह–एक कष्टप्रद देव-सम्बन्धी ग्रह, जिसे जागते या सोतेमें देखकर मनुष्य पागल जो जाता है (वन० २३० । ४७) ।

देवदत्त–अर्जुनका दिव्य शङ्ख (सभा० ३ । ८) । यह शङ्ख मयासुरने बिन्दुसरोवरसे लाकर अर्जुनको दिया था (सभा० ३ । १०—२१) । श्वेत घोड़ोंसे जुते रथपर बैठे हुए अर्जुनने अपना देवदत्त नामक शङ्ख फूँका (भीष्म० २५ । १४-१५) ।

देवदारुवन–एक तीर्थ, जहाँ स्नान करनेका विशेष फल (अनु० २५ । २७) ।

देवदूत–देवताओंका सुविख्यात दूत, जिसका सायं-प्रातः स्मरण करनेसे पाप दूर होता है (अनु० १६५ । १४) । देवताओंने देवदूतको आज्ञा दी, तुम युधिष्ठिरको इनके सुहृदोंका दर्शन कराओ (स्वर्गा० २ । १४) । राजा और देवदूत साथ-साथ गये । देवदूत आगे-आगे चला और राजा उसके पीछे-पीछे (स्वर्गा० २ । १५-१६) । युधिष्ठिरके यह पूछनेपर कि अभी कितनी दूर चलना है, देवदूत लौट पड़ा और बोला—'बस, यहींतक आपको आना था' (स्वर्गा० २ । २८) । युधिष्ठिरके लौट जानेकी आज्ञा देनेपर देवदूत लौटकर देवराज इन्द्रके पास चला गया (स्वर्गा० २ । ५१–५३) ।

देवनदी–एक नदी, जो वरुणकी सभामें रहकर उनकी उपासना करती है (सभा० ९ । १९) ।

देवपथ–एक तीर्थ, जहाँ जानेसे देवसत्रका पुण्य प्राप्त होता है (वन० ८५ । ४५) ।

देवपुष्करिणी–एक प्राचीन तीर्थ, जहाँ जानेमात्रसे मनुष्य कभी दुर्गतिमें नहीं पड़ता और अश्वमेध-यज्ञका फल पाता है (वन० ८४ । ११८) ।

देवप्रस्थ–उत्तर दिशाके पर्वतीय देशका एक प्राचीन नगर, जहाँ सेनाबिन्दुकी राजधानी थी (सभा० २७ । १३) ।

देवभ्राट्–एक तेजस्वी देवता, जो रविके पुत्र और सुभ्राट्के पिता हैं (आदि० १ । ४२-४३) ।

देवमत–एक प्राचीन महर्षि, जिनका नारदजीके साथ प्राणोंके विषयमें संवाद हुआ (आदि० २४ अध्याय) ।

देवमित्रा–स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । १४) ।

देवमीढ–ययातिपुत्र यदुके वंशमें विख्यात एक यादव, जो शूरके पिता और वसुदेवके पितामह थे (द्रोण० १४४ । ६) ।

देवयजन–देवताओंका यज्ञस्थान प्रयाग, जहाँ काशिराजकी कन्या अम्बाने कठोर व्रतका आश्रय ले स्नान किया था (उद्योग० १८६ । २७) ।

देवयाजी–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ७०) ।

देवयानी–शुक्राचार्यकी प्यारी पुत्री (आदि० ७६ । १५) । बिना कचके ही गौओंको लौटकर आयी देख देवयानीके मनमें उनके मारे जानेकी आशङ्का और 'कचके बिना मैं जीवित नहीं रह सकती' ऐसा कहकर उसका पितासे कचको बुलानेका अनुरोध (आदि० ७६ । २०–३२) । दूसरी बार भी देवयानीके अनुरोधसे शुक्राचार्यद्वारा कचको जीवनदान (आदि० ७६ । ४२) । तीसरी बार पुनः कचको जीवित करनेके लिये देवयानीका आग्रह (आदि० ७६ । ४५—५०) । इसका कचसे पाणिग्रहणके लिये अनुरोध (आदि० ७७ । २–११) । प्रार्थनाके अस्वीकृत होनेपर इसके द्वारा कचको शाप (आदि० ७७ । १७) । कचद्वारा इसको शाप (आदि० ७७ । १९-२०) । इसके द्वारा इसका वस्त्र पहन लेनेके कारण शर्मिष्ठाको फटकार (आदि० ७८ । ८) । शर्मिष्ठाद्वारा भर्त्सनापूर्वक इसका कुएँमें गिराया जाना (आदि० ७८ । ९–१३) । इसकी राजा ययातिसे भेंट, वार्तालाप और राजा ययातिके द्वारा इसका कूपसे उद्धार, कुएँसे निकलनेपर इसके द्वारा राजा ययातिसे अपना पाणिग्रहण करनेके लिये प्रार्थना तथा ब्राह्मणकन्या होनेके कारण ययातिका इसकी प्रार्थनाको अस्वीकार करना (आदि० ७८ । १४–२४) । घूर्णिका नामक धायके द्वारा इसका वृषपर्वाके नगरमें न जानेके लिये अपने पिताको संदेश देना (आदि० ७८ । २५–२७) । शर्मिष्ठाने मेरी पुत्रीको मारा है, यह सुनकर पिताका इसे खोजते हुए वनमें जाना तथा इसे हृदयसे लगाकर सान्त्वना देना (आदि० ७८ । २८–३१) । शर्मिष्ठाके द्वारा किये हुए अपमानका इसके द्वारा अपने पिता शुक्राचार्यके समक्ष वर्णन (आदि० ७८ । ३१–३६) । शुक्राचार्यका इसके समक्ष अपने शक्तिका कथन और इसे सान्त्वना-प्रदान (आदि० ७८ । ३७–४१) । शुक्राचार्यका सहनशीलताकी प्रशंसा करते

हुए इसको आश्वासन देना (आदि० ७९ । १–७)। इसकी दानवोंके बीचमें निवास करनेसे अरुचि, विद्वानों-के लिये धनके लोभसे कटुवचन सहनेकी निन्दा (आदि० ७९ । ८–१३ तथा दाक्षिणात्य पाठ)। शुक्राचार्यका अपनी प्रियपुत्री देवयानीके प्रति किये गये अनुचित बर्तावको असह्य बताना और देवयानीको संतुष्ट करनेके लिये वृषपर्वा-को प्रेरित करना (आदि० ८० । ९–१२)। वृषपर्वाके मुहमाँगी वस्तु देनेकी प्रतिज्ञा करनेपर एक हजार कन्याओंके साथ शर्मिष्ठाके आजीवन अपनी दासी बन-कर रहनेके लिये उसके पिता वृषपर्वासे इसकी माँग (आदि० ८० । १६)। शर्मिष्ठाद्वारा दासीभाव स्वीकार करनेपर नगरमें जानेके लिये इसकी स्वीकृति (आदि० ८० । २६)। सखियोंके साथ वनमें क्रीड़ा करती हुई शर्मिष्ठासेवित देवयानीका ययातिको दर्शन (आदि० ८१ । १–७)। ययातिके पूछनेपर देवयानीका उन्हें शर्मिष्ठासहित अपना परिचय देना और उनसे अपना पति बननेके लिये प्रार्थना करना (आदि० ८१ । ८–१७)। ययातिका ब्राह्मणकी महिमा बताते हुए अपने-को ब्राह्मण-कन्यासे विवाहका अनधिकारी बताना और देवयानीके पिताकी आज्ञाके बिना उसे स्वीकार न कर सकनेका निश्चय प्रकट करना (आदि० ८१ । १८–२६)। ययातिके साथ अपने विवाहके लिये इसकी अपने पितासे प्रार्थना (आदि० ८१ । ३०)। पिताद्वारा इसका ययातिको समर्पण (आदि० ८१ । ३४)। इसका ययातिके साथ विधिपूर्वक विवाह एवं पतिगृहगमन (आदि० ८१ । ३६–३८)। देवयानीका विहार और दीर्घकालतक आनन्दोपभोग (आदि० ८२ । १–४)। इसका गर्भ-धारण और प्रथम पुत्रका जन्म (आदि० ८२ । ५)। शर्मिष्ठाकी पुत्र-प्राप्तिसे देवयानीको चिन्ता और किसी श्रेष्ठ ऋषिसे उसे संतानकी प्राप्ति हुई—यह सुनकर इसका क्रोधरहित हो महलमें लौट जाना (आदि० ८३ । १–७)। ययातिद्वारा देवयानीके गर्भसे यदु और तुर्वसु नामक दो पुत्रोंकी उत्पत्ति (आदि० ८३ । ९; ७५ । ३५)। ययातिसे शर्मिष्ठाको पुत्र हुए हैं, इस रहस्यका बालकोंद्वारा ही भेदन होनेसे देवयानीका शर्मिष्ठाको फटकारना और ययातिपर रुष्ट हो वहाँसे अपने पिताके घर जाना (आदि० ८३ । ११–२६)। इसके द्वारा पितासे ययातिके असद्वर्तावका निवेदन और इसके पिता-द्वारा राजाको वृद्ध होनेका शापदान (आदि० ८३ । २८–३१)।

महाभारतमें आये हुए देवयानीके नाम–औशनसी, भार्गवी, शुक्रतनया आदि।

देवराज–एक राजा, जो यमसभामें उपस्थित हो सूर्यपुत्र यमकी उपासना करते हैं (सभा० ८ । २६)।

देवरात–(१) युधिष्ठिरकी सभामें विराजमान होनेवाले एक राजा (सभा० ४ । २६)। (२) विश्वामित्रके ब्रह्मवादी पुत्रोंमेंसे एक (अनु० ४ । ५०)। वास्तवमें ये ऋचीक (अजीगर्त) के महातपस्वी पुत्र शुनःशेप हैं। ये एक यज्ञमें पशु बनाकर लाये गये थे। विश्वामित्रने देवताओंको संतुष्ट करके इन्हें छुड़ाया था, इसलिये ये विश्वामित्रके पुत्रभावको प्राप्त हुए। देवताओंके देनेसे इनका नाम देवरात हुआ (अनु० ३ । ६–८)।

देवल–(१) एक सुप्रसिद्ध ऋषि, जो प्रत्यूष नामक वसुके पुत्र थे (आदि० ६६ । २६)। (२) एक देवविद्याके पारङ्गत ऋषि, जो महर्षि धौम्यके अग्रज थे और जनमेजयके सर्पसत्रके सदस्य बनाये गये थे (आदि० ५३ । ८; आदि० १८२ । २)। हस्तिनापुर जाते समय मार्गमें श्रीकृष्णसे इनका मिलना (उद्योग० ८३ । ६४ के बाद दाक्षिणात्य पाठ)। युद्धके बाद युधिष्ठिरके पास आना (शान्ति० १ । ४)। अपनी कन्या सुवर्चलाके विवाहके विषयमें इनकी चर्चा, अपनी कन्याके स्वयंवरके लिये मुनिकुमारोंको बुलवाना तथा अपनी कन्याको श्वेतकेतुके हाथमें सौंपना (शान्ति० २२० अ० दाक्षिणात्य पाठ)।

देववन–एक पुण्यक्षेत्र, जहाँ बाहुदा और नन्दा नदी बहती हैं (वन० ८७ । २६)।

देवव्रत–गङ्गाके गर्भसे शान्तनुद्वारा उत्पन्न (आदि० १०० । २१)। (देखिये 'भीष्म')

देवशर्मा–एक ऋषि, जो जनमेजयके सर्पसत्रके सदस्य बनाये गये थे (आदि० ५३ । ९)। ये महाभाग्यशाली ऋषि थे; इनकी पत्नीका नाम रुचि था, जो इस पृथ्वीपर अद्वितीय सुन्दरी थी (अनु० ४० । १६)। इनका अपने शिष्य विपुलको अपनी पत्नीकी रक्षाका भार सौंपकर यज्ञके लिये जानेको उद्यत होना (अनु० ४० । २२-२३)। विपुलके पूछनेपर उसे इन्द्रका स्वरूप बताना (अनु० ४० । २८–३८)। इनका अपने आश्रमपर लौटना और विपुलको वर देना (अनु० ४१ । २८–३४)। विपुलको दिव्य पुष्प लानेके लिये भेजना (अनु० ४२ । १२)। विपुलको निर्दोष बताकर समझाना (अनु० ४३ । ४—१६)। ये उत्तर दिशाका आश्रय लेकर रहनेवाले ऋषि हैं (अनु० १६५ । ४६)।

देवसत्र–एक यज्ञका नाम (वन० ८४ । ६८)।

देवसम–एक पर्वत, जहाँ अगस्त्यके शिष्यका आश्रम है (वन० ८८ । १७)।

देवसेना–दक्षप्रजापतिकी पुत्री, दैत्यसेनाकी बहिन, जिसका केशी नामक राक्षसद्वारा अपहरण होनेपर इन्द्रद्वारा उद्धार

हुआ था (वन० २२३ । ७—१५)। इसका अपना और अपनी बहिनका परिचय देना तथा इन्द्रके प्रति अपने भावी पतिके लक्षणोंका वर्णन करना (वन० २२४। १—९)। इसका स्कन्दके साथ विवाह (वन० २२९। ४८)।

देवस्थान—एक प्राचीन ऋषि, जो युद्धके बाद युधिष्ठिरके पास आये थे (शान्ति० १ । ४)। इन्होंने युधिष्ठिरको यज्ञानुष्ठानके लिये प्रेरित किया (शान्ति० २० । २–१४)। इन्होंने युधिष्ठिरको उत्तम धर्म और यज्ञानुष्ठानका उपदेश दिया (शान्ति० २१ अध्याय)। इनके तथा अन्य मुनियोंके समझानेसे युधिष्ठिरने मानसिक दुःखको त्याग दिया (शान्ति० ३७ । २७)। शरशय्यापर पड़े हुए भीष्मके पास ये भी गये थे (शान्ति० ४७ । ५)। भीष्मका राजधर्मविषयक भाषण सुनकर इन्हें प्रसन्नता हुई (शान्ति० ५८ । २५)। इनके समझाने-बुझानेसे राजर्षि युधिष्ठिरका मन शान्त हुआ और उन्होंने मानसिक शोकजनित दुःख त्याग दिया (आश्व० १४ । २)।

देवहव्य—एक प्राचीन ऋषि, जो इन्द्रकी सभामें रहकर देवेन्द्रकी उपासना करते हैं (सभा० ७ । १८ के बाद दा० पाठ)।

देवहोत्र—एक ऋषि, जो उपरिचरके यज्ञके सदस्य बनाये गये थे (शान्ति ३३६ । ९)।

देवह्रद—कालञ्जर पर्वतपर स्थित एक तीर्थ, जहाँ स्नान करनेसे सहस्र गोदानका फल मिलता है (वन० ८५। ५६)। यहाँके स्नानका विशेष फल (अनु० २५। ४०)।

देवातिथि—पूरुवंशीय राजा अक्रोधनके द्वारा कलिङ्गदेशकी राजकुमारी करम्भाके गर्भसे उत्पन्न (आदि० ९५ । २२)। इनकी पत्नीका नाम मर्यादा था; जो विदेहराजकी पुत्री थीं। इनके पुत्रका नाम अरिह था (आदि० ९५ । २३)।

देवाधिप—एक क्षत्रिय राजा, जो अजेय दैत्य निकुम्भके अंशसे उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७ । २६-२७)।

देवापि—(१) महाराज प्रतीपके प्रथम पुत्र, शान्तनुके अग्रज, ये धर्माचरणद्वारा कल्याण-प्राप्तिकी इच्छासे वनको चले गये थे। अतः शान्तनु एवं बाह्लीकने ही राज्य प्राप्त किया था (आदि० ९४ । ६१–६२)। धर्मपूर्वक पृथ्वीका शासन करनेवाले महाराज प्रतीपके तीन देवोपम पुत्र हुए—देवापि, बाह्लीक और शान्तनु। देवापि सबसे बड़े थे। ये महान् तेजस्वी, धार्मिक, सत्यवादी, पिताकी सेवामें तत्पर, साधु पुरुषोंद्वारा सम्मानित तथा नगर एवं जनपद-निवासियोंके लिये आदरणीय थे। देवापिने बालकोंसे लेकर बूढ़ोंतक सभीके हृदयमें स्थान बना लिया था। ये अपने दोनों छोटे भाइयोंको बहुत प्रिय थे। उन तीनों बन्धुओंमें अच्छे भाई-का-सा स्नेहपूर्ण बर्ताव था। देवापि उदार, सत्यप्रतिज्ञ और समस्त प्राणियोंके हितैषी थे; परंतु चर्मरोगसे पीड़ित रहा करते थे। पिता प्रतीपने उनके राज्याभिषेककी तैयारी करायी, परंतु नगर और जनपदके लोगों एवं ब्राह्मणोंने आकर रोक दिया। हीनाङ्ग राजाका देवता अभिनन्दन नहीं करते। इसलिये चर्मरोगके दोषसे ही वे राज्यके अनधिकारी बताये गये। इससे पिताके नेत्रोंमें आँसू भर आया। वे देवापिके लिये दुखी हो गये। देवापि चुपचाप वनमें चले गये। बाह्लीक मामाके घर जाकर रहने लगे। अतः बाह्लीककी अनुमतिसे वह राज्य शान्तनुके अधिकारमें आया (उद्योग० १४९ । १५—२८)। देवापि कुरुक्षेत्रके अन्तर्गत पृथूदक तीर्थमें तपस्या करके ब्राह्मणत्वको प्राप्त हुए थे (शल्य० ३९ । ३७)। (२) पाण्डव-पक्षका एक चेदिदेशीय योद्धा, जो कर्णद्वारा निहत हुआ था (कर्ण० ५६ । ४८)।

देवारण्य—एक तीर्थ, जहाँ काशिराजकी कन्या अम्बाने कठोर व्रतका आश्रय ले तप किया था (उद्योग० १८६ । २७)।

देवावृध—(१) कौरव-पक्षके एक महारथी योद्धा (कर्ण० ८५ । ३)। (२) एक प्राचीन नरेश, जिन्होंने सोनेका छत्र दान करके अपने देशके प्रजाके साथ स्वर्गलोक प्राप्त किया था (शान्ति० २३४ । २१; अनु० १३७ । ७)।

देवाह्वय—एक प्राचीन नरेश (आदि० १ । २३५)।

देविका—(१) शिबिनरेश गोवासनकी पुत्री, जिसे युधिष्ठिरने स्वयंवरमें प्राप्त किया था। इसके गर्भसे उन्होंने यौधेय नामक पुत्र उत्पन्न किया (आदि० ९५ । ७६)। (२) एक तीर्थ, जहाँ ब्राह्मणोंकी उत्पत्ति सुनी जाती है। देविकामें स्नान करके भगवान् महेश्वरका पूजन और उन्हें यथाशक्ति चरु निवेदन करके यज्ञके फलकी प्राप्ति होती है (वन० ८२ । १०२)। यहाँके स्नानका विशेष फल (अनु० २५ । ९)।

देवी—(१) वरुणकी ज्येष्ठ पत्नी, जिसने बल नामक पुत्र और सुरा नामक कन्याको जन्म दिया था (आदि० ६६। ५२)। (२) एक स्वर्गीय अप्सरा, जो अर्जुनके जन्म-महोत्सवमें नृत्य करने आयी थी (आदि० १२२ । ६२)।

देवीतीर्थ—कुरुक्षेत्रकी सीमामें इस नामके तीन तीर्थ हैं। पहला शङ्खिनी तीर्थके भीतर है। उसमें स्नान करनेसे उत्तम रूपकी प्राप्ति होती है (वन० ८३ । ५१)।

दूसरा मधुवटीके अन्तर्गत है। वहाँ देवता और पितरोंकी पूजा करके मनुष्य देवीकी आज्ञाके अनुसार सहस्र गोदान-का फल पाता है (वन० ८३ । ९४)। तीसरा मृगधूम तीर्थके बाद आता है। उसमें स्नान करनेसे सहस्र गोदान-का फल मिलता है (वन० ८३ । १०२)।

देवीस्थान-एक तीर्थ, जहाँ शाकम्भरी देवीका निवास-स्थान है। वहाँ तीन दिनके शाकाहारसे बारह वर्षोंतक शाकाहार करनेका पुण्य-फल प्राप्त होता है (वन० ८४ । १३)।

दैत्यद्वीप-गरुड़की प्रमुख संतानोंमेंसे एक (उद्योग० १०१ । ११)।

दैत्यसेना-दक्ष-प्रजापतिकी पुत्री और देवसेनाकी बहिन, जिसे केशी नामक राक्षसने हर लिया था (वन० २२४ । १)।

दैव-एक प्रकारका विवाह (अपने घरपर देवयज्ञ करके यज्ञान्तमें ऋत्विजको अपनी कन्याका दान करना दैव विवाह कहा गया है।) यह विवाह ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य-इन तीनों वर्णोंमें ही ग्राह्य माना गया है (आदि० ७३ । ८-१०)।

दैवीसम्पत्ति-अभय आदि दिव्य गुणोंकी संज्ञा (भीष्म० ४० । १-३)। दैवीसम्पत्ति संसारसे मोक्ष दिलानेवाली मानी गयी है (भीष्म० ४० । ५)।

दौवालिक-एक देश, जहाँके राजा और निवासी राजसूय-यज्ञमें युधिष्ठिरके लिये भेंट ले आये थे (सभा० ५२ । १८)।

द्यु-(देखिये—'द्यौ')।

द्युति-एक देवी, इनके द्वारा अर्जुनके संरक्षणकी शुभकामना द्रौपदीने की थी (वन० ३७ । ३३)।

द्युतिमान्-(१) मद्रदेशके एक राजा, जिनकी पुत्री विजयाको सहदेवने स्वयंवरमें प्राप्त किया था (आदि० ९५ । ८०)। (२) शाल्वदेशके एक राजा, जिन्होंने ऋचीकको राज्य प्रदान करके उत्तम लोक प्राप्त किया था (शान्ति० २३४ । ३३; अनु० १३७ । २३)। (३) इक्ष्वाकुवंशीय मदिराश्वके महाभाग, महातेजस्वी, महान् धैर्यशाली और महाबली पुत्र, जिनके पुत्रका नाम सुवीर था (अनु० २ । ९)।

द्युमत्सेन-(१) एक प्राचीन नरेश, जो बलवानोंके आदर्श समझे जाते थे (आदि० १३८ । ५)। ये ही शाल्व-देशके धर्मात्मा राजा और सत्यवान्‌के पिता थे (वन० २९४ । ७)। महाराज अश्वपतिको सत्यवान्‌के विवाहके लिये स्वीकृति देना (वन० २९५ । १४)। सत्यवान्‌के साथ वनमें जानेके लिये सावित्रीकी प्रार्थना स्वीकार करना (वन० २९६ । २७)। इनकी अंधी आँखोंमें देखनेकी शक्तिका आना और इन महाबली नरेशका अपनी पत्नी शैव्याके साथ ऋषियोंके आश्रमोंमें जाकर सत्यवान्‌को ढूँढ़ना (वन० २९८ । २)। सत्यवान्‌के वनसे न लौटनेपर इनकी चिन्ता (वन० २९८ । ८)। शाल्व-देशकी प्रजाके अनुरोधसे इनका राज्याभिषेक (वन० २९९ । ११)। सत्यवान्‌के साथ वार्तालाप (शान्ति० २६७ अध्याय)। (२) एक पर्वतीय राजा, जिसके साथ भगवान् श्रीकृष्णने सहस्रों पर्वतोंको विदीर्ण करके युद्ध किया था (सभा० ३८ । २९ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ८२४)। ये युधिष्ठिर-की सभामें विराजते थे (सभा० ४ । ३१)।

द्यूतपर्व—सभापर्वका एक अवान्तर पर्व (अध्याय ४६ से ७३ तक)।

द्यौ (द्यु)—आठ वसुओंमेंसे एक (आदि० ९९ । १५)। इनके द्वारा नन्दिनीके गुणोंका वर्णन (आदि० ९९ । १९-२०)। नन्दिनी (गौ) के अपहरणके लिये इनसे इनकी पत्नीकी प्रार्थना (आदि० ९९ । २४)। इनके द्वारा नन्दिनीका अपहरण (आदि० ९९ । २८)। वसिष्ठद्वारा इनको दीर्घकालतक मनुष्यलोकमें रहनेका शाप (आदि० ९९ । ३२-३९)।

द्रविड़ (या द्राविड़)—एक दक्षिण भारतीय जनपद, जिसे दूतोंद्वारा संदेश देकर ही सहदेवने कर देनेके लिये विवश कर दिया था (सभा० ३१ । ७१)।

द्रविण—धर नामक वसुके पुत्र (आदि० ६६ । २१)।

द्राविड़—एक जाति जो पहले क्षत्रिय थी, किंतु ब्राह्मणोंकी कृपादृष्टिसे वञ्चित होनेके कारण (स्वधर्मज्ञानशून्य होकर) शूद्रभावको प्राप्त हो गयी (अनु० ३३ । २२-२३)।

द्रुपद—पाञ्चालदेशके राजा यज्ञसेन, जो मरुद्गणोंके अंशसे उत्पन्न हुए थे (आदि० ६७ । ६८)। ये महाराज पृषत्‌के पुत्र थे (आदि० १२९ । ४१)। भरद्वाजमुनिके आश्रममें द्रोणके साथ इनका खेलना और अध्ययन करना (आदि० १२९ । ४२)। पृषत्‌की मृत्युके पश्चात् इनका उत्तरपाञ्चालके राज्यपर अभिषेक हुआ (आदि० १२९ । ४३)। इनके यहाँ द्रोणका आना और इन्हें अपना सखा या मित्र कहनेके कारण इनके द्वारा फटकारा जाना (आदि० १३० । १-११)। द्रोणाचार्यद्वारा द्रुपद-के अग्निवेशके समीप धनुर्वेदाध्ययनसम्बन्धी वृत्तान्तकी भीष्मके समक्ष चर्चा (आदि० १३० । ४३)। अध्यय-नावस्थामें इनके द्वारा द्रोणको दिये गये आश्वासनकी चर्चा (आदि० १३० । ४६-४७)। कौरवोंका आक्रमण सुनकर और उनकी विशाल सेनाको अपनी आँखों देख पाञ्चालराज द्रुपदका भाइयोंसहित निकलना और शत्रुओं-पर बाणोंकी बौछार करना (आदि० १३७ । १०-११)।

इनका घोर युद्ध करके कौरवसेनाको पराजित करना (आदि० १३७ । १२–२५) । इनका भीमसेन और अर्जुनके साथ युद्ध तथा पराजय । अर्जुनद्वारा इन्हें बंदी बनाकर द्रोणको अर्पण करना (आदि० १३७ । २८–६३) । द्रोणका इन्हें आधा राज्य देकर और मित्र बने रहनेके लिये कहकर छोड़ना और इनका उनके साथ अटूट मैत्रीकी इच्छा प्रकट करना (आदि० १३७ । ७०–७४) इनके द्वारा किये हुए द्रोणके असम्मानका एक ब्राह्मण-द्वारा एकचक्रामें पाण्डवोंके प्रति वर्णन (आदि० १६५ । ७–११) । द्रोणविनाशक पुत्रकी प्राप्तिके लिये द्रुपदका ऋषियों और ब्राह्मणोंके आश्रमोंमें घूमना तथा ब्रह्मर्षि याज-उपयाजके पास पहुँचकर उपयाज ऋषिसे अपने उद्देश्य-सिद्धिके लिये प्रार्थना एवं उन्हें दस करोड़ धेनुका प्रलोभन देना (आदि० १६६ । १–१२) । उपयाजका उनकी प्रार्थनाको अस्वीकार कर देना (आदि० १६६ । १३) । इनका द्रोणकी महिमा बताकर द्रोणान्तक पुत्रके लिये महर्षि याजसे प्रार्थना करना और उनको एक अर्बुद धेनुका प्रलोभन देना (आदि० १६६ । २२–३१) । इनको यज्ञकुण्डसे 'धृष्टद्युम्न' नामक पुत्र एवं 'कृष्णा' नाम्नी कन्याकी प्राप्ति (आदि० १६६ । ३९–४४) । लाक्षागृहमें पाण्डवोंकी मृत्यु होनेका समाचार सुनकर इनका शोक, अर्जुनके लिये इनकी चिन्ता तथा उन्हींके साथ द्रौपदीका विवाह करनेका इनका संकल्प (आदि० १६६ । ५६ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ४९३) । अपने पुरोहितद्वारा उनको पाण्डवोंके जीवित रहनेका आश्वासन और द्रौपदीके स्वयंवरके लिये अनुरोध (आदि० १६६ । दा० पाठ, पृष्ठ ४९३) । द्रुपदने अर्जुन-को ढूँढ़ निकालनेके लिये एक ऐसा दृढ़ धनुष बनवाया था, जिसे दूसरा कोई झुका भी न सके (आदि० १८४ । ८-९) । इनकी स्वयंवरके समय लक्ष्यवेधके लिये घोषणा (आदि० १८४ । ११) । स्वयंवरमें आये हुए राजाओंद्वारा इनपर आक्रमण और पाण्डवोंद्वारा इनकी रक्षा (आदि० १८८ । १२–१४; आदि० १८९ अध्याय) । अर्जुनके साथ कुम्भकारके घर द्रौपदीके चले जानेपर उसके सम्बन्धमें इनकी चिन्ता (आदि० १९१ । १४–१८) । चिन्तित हुए द्रुपदको धृष्टद्युम्नका आश्वासन देना (आदि० १९२ । ३–१३) । पाण्डवोंका परिचय जाननेके लिये इनका अपने पुरोहितको आदेश (आदि० १९२ । १४) । पाण्डवोंका परिचय पानेके लिये इनका युधिष्ठिरसे प्रश्न (आदि० १९५ । २–७) । युधिष्ठिरका द्रुपदको आश्वासन देना, 'द्रौपदीका विवाह किसके साथ हो'—इस प्रश्नको लेकर युधिष्ठिरके साथ इनका वार्तालाप और एक स्त्रीके अनेक पुरुषोंके साथ विवाहका विरोध (आदि० १९४ । ८–३२) । व्यासजीके पूछनेपर द्रौपदीके विवाहके सम्बन्धमें इनकी अपनी सम्मति (आदि० १९५ । ७–९) । पाण्डवों एवं द्रौपदीके पूर्व-जन्मकी कथा सुनाकर व्यासद्वारा इनको दिव्य दृष्टिका दान (आदि० १९६ अध्याय) । इनके द्वारा पाण्डवोंको विपुल धनराशिकी दहेजरूपमें भेंट (आदि० २०६ । ९ के बाद दाक्षिणात्य पाठ) । दिग्विजयके समय कर्णद्वारा इनकी पराजय (वन० २५४ । ३) । धौम्य ऋषि पाण्डवोंद्वारा स्थापित अग्निको लेकर उसकी रक्षाके लिये द्रुपदके ही यहाँ भेजे गये थे (विराट० ४ । २-३) । उपप्लव्य नगरमें अभिमन्युके विवाहमें इनका आगमन (विराट० ७२ । १७) । राजाओंके पास रण-निमन्त्रण भेजनेके लिये इनका प्रस्ताव (उद्योग० ४ । ८––२४) । अपने पुरोहितको दूत बनाकर कौरव-सभामें भेजनेका प्रस्ताव (उद्योग० ४ । २५) । पुरोहितको दौत्य-कर्मके लिये इनका अनुमति देना (उद्योग० ६ । १७) । एक अक्षौहिणी सेना लेकर इनका पाण्डवोंके पास आना (उद्योग० ५७ । ४-५) । ये पाण्डव-सेनाके सात सेनापतियोंमेंसे एकके पदपर अभिषिक्त हुए थे (उद्योग० १५७ । ११-१२) । उलूकसे दुर्योधनके संदेशका उत्तर देना (उद्योग० १६३ । ४१) । संतान-प्राप्तिके लिये इन्हें महादेवजीसे वर-प्राप्ति (उद्योग० १८७ । ५-६) । हिरण्यवर्माकी चढ़ाईका समाचार पाकर इनका पत्नीसे संकटनिवारणका उपाय पूछना (उद्योग० १९० । १४––२१) । रानीकी सम्मतिसे देवाराधन करना (उद्योग० १९१ । ९) । हिरण्यवर्माको शिखण्डीकी परीक्षाके लिये संदेश देना (उद्योग० १९२ । २७) । शिखण्डीको द्रोणाचार्यके पास भेजकर उनसे धनुर्वेदकी शिक्षा दिलाना (उद्योग० १९२ । ६०) । प्रथम दिनके संग्राममें जयद्रथके साथ द्वन्द्व-युद्ध (भीष्म० ४५ । ५५–५७) । द्रोणाचार्यसे पराजित होना (भीष्म० ७७ । ४८; भीष्म० १०४ । २४-२५) । अश्वत्थामाके साथ द्वन्द्व-युद्ध (भीष्म० ११० । १६; भीष्म० १११ । २२–२७) । द्रोणाचार्यके साथ युद्ध (द्रोण० १४ । २६) । भगदत्तके साथ युद्ध (द्रोण० १४ । ४०–४२) । इनके रथके घोड़ोंका वर्णन (द्रोण० २३ । १२) । इनका बाह्लीकके साथ युद्ध (द्रोण० २५ । १८-१९) । वृषसेनद्वारा इनकी पराजय (द्रोण० १६८ । २४) । द्रोणाचार्यद्वारा इनका वध (द्रोण० १८६ । ४३) । इनका श्राद्धकर्म (शान्ति० ४२ । ५) । व्यासजीके आवाहन करनेपर अन्य परलोक-वासी वीरोंके साथ ये भी गङ्गाजीके जलसे प्रकट हुए ये (आश्रम० ३२ । ८) । ये स्वर्गमें जाकर विश्वेदेवोंमें मिल गये (स्वर्गा० ५ । १५) ।

महाभारतमें आये हुए द्रुपदके नाम—धृष्टद्युम्नपिता, पाञ्चाल, पाञ्चालनृप, पाञ्चालपति, पाञ्चालराज, पाञ्चाल्य, पार्षत, पृषदात्मज, सौमकि, यज्ञसेन आदि।

द्रुम–(१) एक प्राचीन राजा (आदि० १ । २३३)। (२) महाभारतकालका एक राजा, जो शिबि नामक दैत्यके अंशसे प्रकट हुआ था (आदि० ६७ । ८)। (३) एक किन्नरोंके स्वामी, जो कुबेर-सभामें रहकर उनकी उपासना करते हैं (सभा० १० । २९)। ये भीष्मकपुत्र रुक्मीके गुरु थे (उद्योग० १५८ । ३)। इन्होंने रुक्मीको विजय नामक धनुष दिया था (उद्योग० १५८ । ८)।

द्रुमसेन–(१) एक क्षत्रिय राजा, जो गविष्ठ नामक दैत्यके अंशसे उत्पन्न हुआ था (आदि० ६६ । ३५)। यह शल्यका चक्र रक्षक था। युधिष्ठिरद्वारा इसका वध हुआ (शल्य० १२ । ५३)। (२) कौरव पक्षका योद्धा, धृष्टद्युम्नद्वारा इसका वध (द्रोण० १७० । २२)।

द्रुह्यु–(१) ययातिके पुत्र, इनकी माताका नाम शर्मिष्ठा था (आदि० ७५ । ३५; आदि० ८३ । १०)। पिताद्वारा इनसे यौवनकी याचना तथा इनका पिताको अपनी युवावस्था देनेसे इनकार करना; अतः कुपित हुए पिताद्वारा इनको कभी भी प्रिय मनोरथकी सिद्धि न होने, अति दुर्गम देशोंमें रहने तथा राज्याधिकारसे वञ्चित होकर 'भोज' कहलानेका शाप (आदि० ८४ । २०–२२)। (२) पूरुवंशी राजा मतिनारके चार पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ९४ । १४)।

द्रोण–(१) गङ्गाद्वारनिवासी महर्षि भरद्वाजके पुत्र, जो बृहस्पतिके अंशसे उत्पन्न हुए थे (आदि० ६७ । ६९)। एक दिन भरद्वाज मुनि गङ्गाजीमें स्नान करनेके लिये गये, वहाँ घृताची अप्सरा पहलेसे ही स्नान करके वस्त्र बदल रही थी। उसका वस्त्र खिसक गया था। उस अवस्थामें उसे देखकर मुनिका वीर्य स्खलित हो गया। मुनिने उसे उठाकर एक द्रोण (यज्ञ-कलश) में रख दिया था। उस द्रोणसे उत्पन्न होनेके कारण ही उस बालकका नाम 'द्रोण' हुआ। इन्होंने सम्पूर्ण वेदों और वेदाङ्गोंका अध्ययन किया था (आदि० १२९ । ३३—३८)। परशुरामजीसे इनका समस्त अस्त्र-विद्याओंका अध्ययन (आदि० १२९ । ६६)। महर्षि अग्निवेशके आश्रममें इनका द्रुपदके साथ अध्ययन (आदि० १३० । ४०–४२)। द्रुपदद्वारा इनको छात्रावस्थामें आश्वासन (आदि० १३० । ४६)। शरद्वान्की पुत्री कृपीसे इनका विवाह (आदि० १३० । ४९)। कृपीके गर्भसे इनके द्वारा अश्वत्थामाका जन्म (आदि० १३० । ५०)। धनकी याचनाके लिये इनका द्रुपदके यहाँ जाना (आदि० १३० । ६२)। द्रुपदद्वारा इनका तिरस्कार (आदि० १३० । ६४—७३)। द्रुपदसे तिरस्कृत होकर इनका हस्तिनापुरमें आकर कृपाचार्यके घर गुप्तरूपसे वास करना (आदि० १३० । १४)। इनका कौरव-कुमारोंकी वीटा (गुल्ली) एवं अपनी अँगूठीको कुएँमेंसे निकालना (आदि० १३० । २९)। कौरव-कुमारोंद्वारा भीष्मके प्रति इनके पराक्रमकी प्रशंसा (आदि० १३० । ३६)। भीष्मद्वारा इनका सत्कार एवं कौरव-राजकुमारोंको पढ़ानेके लिये इनसे अनुरोध (आदि० १३० । ३९—७९)। इनका अर्जुनके प्रति अधिक वात्सल्य (आदि० १३१ । ७-८)। इनके द्वारा कौरवों एवं पाण्डवोंकी शिक्षा (आदि० १३१ । ९)। इनके समीप अध्ययनके लिये कर्णका आगमन (आदि० १३१ । ११)। ये राजकुमारोंको तो कमण्डलु भर लानेको कहते और अश्वत्थामाको घड़ा भरनेको देते, वह जल्दी घड़ा भरकर आ जाता तो उसे अकेलेमें कोई अस्त्र-संचालनकी उत्तम विधि बताते थे (आदि० १३१ । १६-१७)। अर्जुनको अद्वितीय धनुर्धर बनानेके लिये इनका आश्वासन (आदि० १३१ । २७)। इनके द्वारा कौरवोंको विविध अस्त्रोंकी शिक्षा (आदि० १३१ । २९)। इनकी अनुपम अस्त्र-विद्याको सुनकर सहस्रों राजाओं तथा राजकुमारोंका इनके समीप अध्ययनके लिये आगमन (आदि० १३१ । ३०)। इनका धनुर्वेदके अध्ययनके लिये आये हुए निषादपुत्र एकलव्यको पढ़ानेके लिये इनकार करना (आदि० १३१ । ३२)। अर्जुनकी प्रसन्नताके लिये इनका एकलव्यसे अँगूठा काटकर गुरुदक्षिणा देनेके लिये कहना (आदि० १३१ । ५६)। इनके द्वारा कौरव आदि समस्त छात्रोंकी परीक्षा (आदि० १३१ । ६९)। ग्राहद्वारा इनपर आक्रमण और अर्जुनद्वारा ग्राहको मारकर इनका संकटसे उद्धार। इससे संतुष्ट हुए आचार्य द्रोणका अर्जुनको ब्रह्मशिर अस्त्रका दान (आदि० १३२ । १२–१८)। राजकुमारोंद्वारा अस्त्रकलाके प्रदर्शनके लिये इनकी धृतराष्ट्रसे अनुमति-याचना (आदि० १३३ । ३)। इनके द्वारा राजकुमारोंके अस्त्र-कौशल-प्रदर्शनके लिये विशाल प्रेक्षा-गृह (रङ्ग-भवन) का निर्माण (आदि० १३३ । ८—१४)। समस्त दर्शकोंके जुट जानेपर आचार्य द्रोणका अपने पुत्रके साथ प्रेक्षा-गृहमें प्रवेश (आदि० १३३ । १५—२०)। द्रोणद्वारा देवपूजन और ब्राह्मणोंसे मङ्गल-कार्य-सम्पादन (आदि० १३३ । २१)। इन्हें दक्षिणारूपमें सुवर्ण, मणि, रत्न और नाना प्रकारके वस्त्रकी प्राप्ति (आदि० १३३ । २१ के बाद दाक्षिणात्य पाठ)। राजकुमारोंद्वारा आचार्य द्रोणकी

यथोचित पूजा (आदि० १३३ । २३ के बाद दाक्षिणात्य पाठ) । इनकी आज्ञासे राजकुमारोंका अस्त्र-कौशल-प्रदर्शन (आदि० १३३ । २३ के बाद दाक्षिणात्य पाठ)। भीम और दुर्योधनके गदा-युद्धको रोकनेके लिये इनका अश्वत्थामाको आदेश (आदि० १३४ । ४) । इनके द्वारा रङ्गभूमिमें अर्जुनकी प्रशंसा और उनकी ओर दर्शकोंकी दृष्टिको आकर्षित करना (आदि० १३४ । ७)। आचार्यको प्रणाम करके इनकी आज्ञा ले कर्णद्वारा भी अस्त्र-कौशल-प्रदर्शन (आदि० १३५ । १२) । द्रुपदको बंदी बनाकर लानेके लिये इनका शिष्योंको आदेश देना और अर्जुनद्वारा बंदी बनाकर लाये हुए द्रुपदको उनका आधा राज्य देकर उन्हें छोड़ देना (आदि० १३७ अध्याय)। ब्रह्मशिर नामक अस्त्रकी परम्परा तथा उसके उपयोगका नियम बतलाकर इनका वह अस्त्र अर्जुनको देना और युद्धभूमिमें विरोधी होनेपर अपने साथ भी लड़नेके लिये उनसे वचन लेना (आदि० १३८ । ९—१४) । इनके जन्म, अध्ययन तथा द्रुपदद्वारा प्राप्त हुए तिरस्कारका एकचक्रा नगरीमें ब्राह्मणद्वारा पाण्डवोंके प्रति वर्णन(आदि० १६५ । १—१५) । धृष्टद्युम्नको अस्त्र-शिक्षा देनेकी इनकी उदारता (आदि० १६५ ।५५) । द्रौपदी तथा पाण्डवोंके लिये उपहार भेजने, द्रौपदीसहित उनको आदर-पूर्वक द्रुपदनगरसे बुलाने एवं उनका आधा राज्य उन्हें दे देनेके लिये इनका धृतराष्ट्रसे अनुरोध (आदि० २०३ । १—१२) । कर्णको इनकी फटकार (आदि० २०३ । २६—२८) । ये युधिष्ठिरके राजसूय-यज्ञमें आये थे (सभा० ३४ । ८) । युधिष्ठिरका आचार्यके चरणोंमें प्रणाम करना और अपने यज्ञमें उनसे अनुग्रह करनेको कहना (सभा० ३५ । १-२) । राजसूय-यज्ञमें 'कौन काम हुआ और कौन नहीं हुआ' इसकी देख-रेखका कार्य द्रोण और भीष्मको सौंपा गया था (सभा० ३५ । ६)। युधिष्ठिर और शकुनिमें जुएका खेल आरम्भ होनेपर धृतराष्ट्रको आगे करके वहाँ द्रोणाचार्य भी आये थे (सभा० ६० । २) । आचार्य द्रोण जुआ खेलना पसंद नहीं करते थे (वन० ९ । २) । इनमें चारों अङ्गोंसे पूर्ण धनुर्वेद विद्यमान था (वन० ३७ । ४)। पाण्डवोंकी खोजके विषयमें दुर्योधनको इनकी सम्मति (विराट० २७ अध्याय) । बृहन्नला-वेषमें युद्धके लिये आते हुए अर्जुनके पराक्रमका इनके द्वारा वर्णन (विराट० ३९ अध्याय) । अर्जुनका शङ्खनाद सुनकर उन्हें अर्जुन ही समझकर कौरवोंसे अपशकुनोंका वर्णन (विराट० ४६ । २४—३३) । इनके द्वारा दुर्योधनकी रक्षाका प्रयत्न (विराट० ५१ । १८—२१) । अर्जुनके साथ इनका युद्ध और घायल होकर पलायन (विराट० ५८ अध्याय)। इनके द्वारा भीष्मकी बातोंका अनुमोदन (उद्योग० ४९ । ४४—४६) । श्रीकृष्णके कथनका समर्थन करते हुए दुर्योधनको समझाना (उद्योग० १२५ । १०—१७) । दुर्योधनको पुनः समझाना (उद्योग० १२६ अध्याय) । दुर्योधनको युद्ध न करनेके लिये समझाना (उद्योग० अध्याय १३८ से १३९ तक)। भीष्मद्वारा कहे गये कर्णके निन्दासूचक वाक्योंका इनके द्वारा समर्थन (उद्योग० १६८ । ८-९) । दुर्योधनके पूछनेपर एक मासमें पाण्डव-सेनाके नाश करनेकी अपनी शक्तिका कथन (उद्योग० १९३ । १८) । आचार्य द्रोणके रथ और घोड़ोंका वर्णन (भीष्म० २० । ११) । युधिष्ठिरको युद्धकी आज्ञा देकर उनकी शुभकामना करना और उन्हें अपनी मृत्युका उपाय बतलाना (भीष्म० ४३ । ५३—६६)। प्रथम दिनके संग्राममें धृष्टद्युम्नके साथ इनका द्वन्द्वयुद्ध (भीष्म० ४५ । ३१—३४) । धृष्टद्युम्नके साथ युद्धमें इनका अद्भुत पराक्रम (भीष्म० ५३ अध्याय)। द्रुपदपर विजय और अद्भुत पराक्रम प्रकट करना (भीष्म० ७७ । ४८—६७) । इनके द्वारा धृष्टद्युम्न-की पराजय (भीष्म० ७७ । ६९-७०) । इनके द्वारा विराट-पुत्र शङ्खका वध और विराटकी पराजय (भीष्म० ८२ । २३-२४) । भीमसेनके प्रहारसे इनका मूर्च्छित होना (भीष्म० ९४ । १९) । अर्जुनके साथ इनका युद्ध (भीष्म० १०२ । ६—२२) । इनके द्वारा द्रुपदकी पराजय (भीष्म० १०४ । २४-२५) । युधिष्ठिरके साथ द्वन्द्वयुद्ध (भीष्म० ११० । १७; भीष्म० १११ । ५०—५२) । अश्वत्थामासे अशुभ उत्पातोंका वर्णन और उसे भीष्मकी रक्षाके लिये धृष्टद्युम्नसे युद्ध करनेका आदेश (भीष्म० ११२ अध्याय) । धृष्टद्युम्नके साथ द्वन्द्वयुद्ध (भीष्म० ११६।४५—५४) । भीष्मके गिरनेके बाद प्रधान सेनापतिके पदपर इनका अभिषेक (द्रोण० ७ । ५) । धृष्टद्युम्नके साथ युद्ध (द्रोण० ७ । ४८—५४) । इनका अद्भुत पराक्रम और मृत्युकी चर्चा (द्रोण० ८ । ८—३२) । युधिष्ठिरको जीवित पकड़ने-के लिये दुर्योधनको वर देना (द्रोण० १२ । २०—२८)। इनका अद्भुत पराक्रम (द्रोण० १३ । १९—२९; द्रोण० १४ । १—१९) । द्रुपदपर आक्रमण (द्रोण० १४ । २६) । इनके द्वारा कुमारकी पराजय (द्रोण० १६ । २५) । युगन्धरका वध (द्रोण० १६ । ३१)। इनके द्वारा व्याघ्रदत्त और सिंहसेनका वध (द्रोण० १६ । ३७) । अर्जुनके साथ युद्ध और अपनी सेनाको लौटा लेना (द्रोण० १६ । ५०-५१) । दुर्योधनसे अर्जुनको युद्धस्थलसे दूर हटानेके लिये कहना (द्रोण० १७ । ३—१०) । इनके द्वारा वकका वध (द्रोण० २१ ।

१६)। सत्यजित्का वध (द्रोण० २१ । २१)। शतानीकका वध (द्रोण० २१ । २८)। दृढसेनका वध (द्रोण० २१ । ५२)। क्षेमका वध (द्रोण० २१ । ५३)। इनके द्वारा वसुदानका वध (द्रोण० २१ । ५५)। क्षत्रदेवका वध (द्रोण० २१ । ५६)। पाण्डवसेनाको क्षुभित करके धृष्टद्युम्नके साथ युद्ध (द्रोण० ३१ । ८–१८)। इनके द्वारा पाण्डवसेनाका संहार (द्रोण० ३२ । ४१–४३)। दुर्योधनसे पाण्डवपक्षके किसी महारथीको मारनेकी प्रतिज्ञा (द्रोण० ३३ । १०–१५)। इनके द्वारा चक्रव्यूहका निर्माण (द्रोण० ३४ । १३–२५)। अभिमन्युके पराक्रमकी प्रशंसा करना (द्रोण० ३९ । ११–१३)। कर्णके पूछनेपर अभिमन्युकी प्रशंसा करते हुए उसके वधका उपाय बतलाना (द्रोण० ४८ । १९–३१)। इनके द्वारा अभिमन्युके तलवारका काटा जाना (द्रोण० ४८ । ३७-३८)। अर्जुनके भयसे भीत जयद्रथको आश्वासन देना (द्रोण० ७४ । २५–३३)। जयद्रथको आश्वासन (द्रोण० ८७ । १५)। इनके द्वारा चक्रशकटव्यूहका निर्माण करके जयद्रथकी रक्षाकी व्यवस्था (द्रोण० ८७ । २२)। अर्जुनके साथ युद्ध (द्रोण० ९१ । ११–२९)। दुर्योधनका उपालम्भ सुनकर उसे ही अर्जुनके साथ युद्ध करनेके लिये भेजना (द्रोण० ९४ । १९–२६)। दिव्य कवचकी उत्पत्तिका प्रसंग बताकर दुर्योधनके शरीरमें कवच बाँधना (द्रोण० ९४ । ३९–६८)। धृष्टद्युम्नके साथ घोर युद्ध (द्रोण०अध्याय ९५ से ९७ तक)। सात्यकिके साथ घोर संग्राम (द्रोण० ९८ अध्याय)। इनका युधिष्ठिरके साथ युद्ध और उन्हें पराजित करना (द्रोण० १०६ । १८–४७)। इनके द्वारा पाण्डवसेना-का संहार और सात्यकिका घायल होना (द्रोण० ११० । १—३५)। सात्यकिके साथ युद्ध (द्रोण० ११३ । २१–३३)। सात्यकिद्वारा इनकी पराजय (द्रोण० ११७ । ३०)। सात्यकिसे पराजित होकर भागे हुए दुःशासनको फटकारना (द्रोण० १२२ । २—२७)। इनके द्वारा वीरकेतुका वध (द्रोण० १२२ । ४१)। चित्रकेतु, सुधन्वा, चित्रवर्मा और चित्ररथका वध (द्रोण० १२२ । ४८-४९)। धृष्टद्युम्नके प्रहारसे मूर्च्छित होना (द्रोण० १२२ । ५६)। धृष्टद्युम्नपर इनकी विजय (द्रोण० १२२ । ७१-७२)। इनके द्वारा बृहत्क्षत्रका वध (द्रोण० १२५ । २२)। पुत्र-सहित धृष्टकेतुका वध (द्रोण० १२५ । ३९–४१)। जरासंधकुमार सहदेवका वध (द्रोण० १२५ । ४५)। धृष्टद्युम्नकुमार क्षत्रधर्माका वध (द्रोण० १२५ । ६६)। चेकितानकी पराजय (द्रोण० १२५ । ६८–७१)। भीमसेनद्वारा इनकी पराजय (द्रोण० १२७ । ५३–५४)। भीमसेनद्वारा आठ बार रथसहित इनका फेंका जाना (द्रोण० १२८ । १८–२१)। दुर्योधनको द्यूतका परिणाम दिखाते हुए युद्धके लिये भेजना (द्रोण० १३० । १३–२४)। दुर्योधनके उपालम्भ देनेपर उसे उत्तर देना (द्रोण० १५१ अध्याय)। पाण्डवसेनापर आक्रमण और उसका संहार (द्रोण० १५४ अध्याय)। इनके द्वारा केकयों, धृष्टद्युम्नके सभी पुत्रों तथा सारथिसहित राजा शिबिका वध (द्रोण० १५५ । १४–१९)। युधिष्ठिरके साथ युद्धमें पराजित होना (द्रोण० १५७ । २८–४३)। अर्जुन और भीमसेनके साथ युद्ध (द्रोण० १६१ अध्याय)। युधिष्ठिरके साथ युद्धमें मूर्च्छित होना (द्रोण० १६२ । ४९)। धृष्टद्युम्नके साथ युद्ध (द्रोण० १७० । २–११)। दुर्योधनको अर्जुनकी प्रशंसासे गर्भित उत्तर (द्रोण० १८५। १० –२०)। दुर्योधनको व्यङ्ग्यपूर्ण उत्तर (द्रोण० १८५ । २४–३७)। इनके द्वारा द्रुपदके तीन पौत्र, द्रुपद और विराटका वध (द्रोण० १८६ । ३३–४३)। इनका अर्जुनके साथ घोर युद्ध (द्रोण० १८८ । २४–५३)। अश्वत्थामाकी मृत्यु सुनकर जीवनसे निराश होना (द्रोण० १९० । ५७-५९)। धृष्टद्युम्नके साथ भयंकर युद्ध (द्रोण० १९१ अध्याय)। अस्त्र त्यागकर योगधारणाद्वारा इनका ब्रह्मलोकगमन (द्रोण० १९२ । ४३–५३)। धृष्टद्युम्नद्वारा इनके सिरका काटा जाना (द्रोण०१९२ । ६२-६३)। अश्वत्थामाके जन्मकालमें इनके द्वारा ब्राह्मणोंके लिये एक हजार गौओंका दान किये जानेकी चर्चा (द्रोण० १९६ । २९-३०)। महाराज पृषदश्वसे इन्हें खड्गकी प्राप्तिका प्रसंग (शान्ति० १६६ । ८१)। इनके लिये श्राद्धकर्मका सम्पादन (शान्ति० ४२ । ३)। ये इन्द्रियसंयम और तपसे ही वेदोंके विद्वान् एवं समाजमें प्रतिष्ठित हुए। तपस्याके द्वारा ही ये अपनी प्रकृतिको प्राप्त हुए (शान्ति० २९६ । १५-१६)। व्यासजीके आवाहन करनेपर परलोकवासी कौरव-पाण्डव वीरोंके साथ ये भी गङ्गाजलसे प्रकट हुए थे (आश्रम० ३२ । ७)। ये मृत्युके पश्चात् स्वर्गमें गये, बृहस्पतिके समीप देखे गये और वहाँ कुछ कालके पश्चात् बृहस्पतिके अंशमें मिल गये (स्वर्गा० ४ । २१; स्वर्गा० ५ । १२)।

महाभारतमें आये हुए द्रोणाचार्यके नाम—आचार्य, आचार्यमुख्य, भारद्वाज, भरद्वाजसुत, भरद्वाजात्मज, भारताचार्य, शोणाश्व, शोणाश्ववाह, शोणहय, गुरु, रुक्मरथ आदि। (२) मन्दपालऋषिके द्वारा जरिता (पक्षिणी) के गर्भसे उत्पन्न चार पुत्रोंमेंसे एक (आदि० २२८ । १७)। द्रोण ब्रह्मवेत्ताओंमें श्रेष्ठ होगा—ऐसा पिताका

इसके विषयमें भविष्य कथन (आदि० २२९ । ९-१०) । इसके द्वारा अग्निदेवकी स्तुति (आदि० २३१ । १५-१९) । अग्निकी कृपाद्वारा खाण्डवदाहसे इसकी भाइयोंसहित रक्षा (आदि० २३१ । २१-२३) ।

द्रोणपर्व-महाभारतका एक मुख्य पर्व ।

द्रोणवधपर्व-द्रोणपर्वका एक अवान्तरपर्व (अध्याय १८४से १९२ तक) ।

द्रोणशर्मपद-एक तीर्थ, यहाँ स्नान करनेका विशेष फल (अनु० २५ । २८) ।

द्रोणाभिषेकपर्व-द्रोणपर्वका एक अवान्तर पर्व (अध्याय १ से १६ तक) ।

द्रौपदी-महाराज द्रुपदकी सती-साध्वी पुत्री कृष्णा, जो शची देवीके अंशसे उत्पन्न हुई थीं (आदि० ६७ । १५७) । महर्षि याजद्वारा अग्निमें आहुति डालनेपर यज्ञकुण्डसे कुमार धृष्टद्युम्नके बाद इनका प्राकट्य हुआ । अतः ये धृष्टद्युम्नकी बहिन हुई (आदि० १६६ । ३९-४४) । इन्हें पाञ्चाली कहा जाता था । इन्हें पाण्डवोंने पत्नीरूपमें प्राप्त किया तथा इनके गर्भसे उनके पाँच पुत्र हुए । युधिष्ठिरसे प्रतिविन्ध्य, भीमसेनसे सुतसोम, अर्जुनसे श्रुतकीर्ति, नकुलसे शतानीक और सहदेवसे श्रुतकर्माका जन्म हुआ था (आदि० ९५ । ७५) । इनके अनुपम सौन्दर्यका वर्णन (आदि० १६६ । ४५-४७) । इनके जन्मके समयकी आकाशवाणी—इस कन्याका नाम कृष्णा है । यह समस्त युवतियोंमें श्रेष्ठ एवं सुन्दरी है । क्षत्रियों-का संहार करनेके लिये प्रकट हुई है । यह यथासमय देवताओंका कार्य सिद्ध करेगी । और इसके द्वारा देवताओं-को महान् भय प्राप्त होगा (आदि० १६६ । ४८-४९) । ब्राह्मणोंद्वारा इनका नामकरण (आदि० १६६ । ५४) । व्यासजीका द्रौपदीके पूर्वजन्मका वृत्तान्त बताना—भगवान् शंकरद्वारा इन्हें पाँच पति प्राप्त होनेका वरदान (आदि० १६८ अध्याय) । इनके स्वयंवरमें विभिन्न देशोंसे आये हुए राजाओंका धृष्टद्युम्नद्वारा इनको परिचय-प्रदान (आदि० १८५ अध्याय) । सूतजातिके पुरुषको अपना पति न बनानेके विषयमें इनकी घोषणा (आदि० १८६ । २३) । इनका अर्जुनके गलेमें जयमाला डालना (आदि० १८७ । २५ के बाद दा० पाठ) । अर्जुन और भीमसेनके साथ इनका कुम्भकारके घरमें जाना (आदि० १८९ । ४१४-७) । घर जाकर पाण्डवोंका मातासे द्रौपदीको भिक्षा बताना और माताका बिना देखे ही उसे पाँचोंको उपयोगमें लानेकी आज्ञा देना (आदि० १९० । १-२) । कुम्भकारके घर जानेपर इनके सम्बन्धमें द्रुपदके ऊहापोह और चिन्ता (आदि० १९१ । १४-१८) । व्यासद्वारा द्रुपदको इनके पूर्वजन्मका वृत्तान्त सुनाना और इन्हें स्वर्गलोककी लक्ष्मी बताना (आदि० १९६ अध्याय) । धौम्य मुनिद्वारा क्रमशः प्रत्येक पाण्डवके साथ विधिपूर्वक इनके विवाह-संस्कारका सम्पादन (आदि० १९७ अध्याय) । कुन्तीद्वारा इनको आशीर्वाद तथा शिक्षा (आदि० १९८ । ४-१२) । हस्तिनापुर जाते समय इनको द्रुपदद्वारा दहेज रूपमें विपुलधनराशिकी भेंट (आदि० २०६ । ९ के बाद दा० पाठ) । धृतराष्ट्रकी पुत्रवधुओंद्वारा इनका स्वागत (आदि० २०६ । २२ के बाद दा० पाठ) । सुभद्राके आनेपर इनका अर्जुनके प्रति प्रणयकोप (आदि० २२० । १६-१७) । इनके समीप सुभद्राका गोपीवेषमें आगमन (आदि० २२० । १९) । दुःशासनद्वारा बलपूर्वक केश पकड़कर इनका सभामें लाया जाना (सभा० ६७ । ३१) । भरी सभामें अपने हारे जानेके सम्बन्धमें इनका समस्त सभासदोंसे प्रश्न (सभा० ६७ । ४१-५२) । दुःशासनद्वारा वस्त्र खींचे जानेपर इनका आर्तभावसे भगवान्‌को पुकारना (सभा० ६८ । ४१-४३) । इनकी लाज बचानेके लिये भगवान् श्रीकृष्णका स्वयं चीररूप होना और नये-नये चीर प्रकट करना (सभा० ६८ । ४५-४८) । कौरवोंकी सभामें इनका चेतावनीयुक्त विलाप (सभा० ६९ अध्याय) । इनको धृतराष्ट्रसे वरप्राप्ति (सभा० ७१ । २८-३२) । इनका कुन्तीसे वनगमनके लिये विदा लेना (सभा० ७९ । १-२) । किर्मीरकी मायासे भयभीत होकर मूर्च्छित होना (वन० ११ । १६-१८) । इनके द्वारा श्रीकृष्णका स्तवन तथा उनसे अपने प्रति किये गये अपमान और दुःखका वर्णन (वन० १२ । ५०-१२७) । युधिष्ठिरका क्रोध उभाड़नेके लिये इनके संतापपूर्ण वचन (वन० २७ अध्याय) । प्रह्लाद-बलि-संवादका वर्णन करके इनका युधिष्ठिरके क्रोधको उभा-ड़ना (वन० २८ अध्याय) । इनका युधिष्ठिरकी बुद्धि, धर्म एवं ईश्वरके न्यायपर आक्षेप (वन० ३० अध्याय) । युधिष्ठिरको पुरुषार्थ करनेके लिये जोर देना (वन० ३२ अध्याय) । तपके लिये जाते हुए अर्जुनके प्रति इनकी शुभाशंसा (वन० ३७ । २४-३५) । इनकी अर्जुनके लिये चिन्ता (वन० ८० । १२-१५) । गन्धमादनकी यात्रामें इनका मूर्च्छित होना (वन० १४४ । ४) । इनकी भीमसेनसे सौगन्धिक पुष्पोंकी माँग (वन० १४६ । ७) । जटासुरद्वारा इनका हरण और भीमसेन-का उसे मारकर इनकी तथा भाइयोंकी रक्षा करना (वन० १५७ अध्याय) । इनका आर्ष्टिषेणके आश्रममें भीमसेनसे उस पर्वतपर रहनेवाले राक्षसोंको मारनेका

अनुरोध (वन० १६० । १२–२४)। सत्यभामासे पतिको अनुकूल बनाये रखनेका उपाय बताना (वन० २३३ । १० से २३४ अध्यायतक)। दुर्वासाके आतिथ्यके लिये चिन्तित होकर श्रीकृष्णकी स्तुति करना (वन० २६३ । ८–१६)। द्रौपदीपर संकट जानकर भक्तवत्सल भगवान्‌का आना और द्रौपदीका उनसे दुर्वासाके आगमन आदिका वृत्तान्त निवेदन करना (वन० २६३ । १७–१९)। श्रीकृष्णका अपनेको भूखा बताकर द्रौपदीसे भोजन माँगना तथा द्रौपदीका लज्जित होकर यह बताना कि खानेके लिये कुछ नहीं बचा है (वन० २६३ । २०-२१)। 'कृष्णे! परिहास न कर। मुझे बटलोई लाकर दिखा' श्रीकृष्णके इस प्रकार आग्रह करनेपर द्रौपदीका बटलोई लाकर उन्हें देना और उसके कण्ठमें लगे हुए तनिकसे शाकको खाकर श्रीकृष्णका द्रौपदीसे यह कहना कि 'इस शाकसे सम्पूर्ण विश्वके आत्मा यज्ञभोक्ता सर्वेश्वर भगवान् श्रीहरि तृप्त एवं संतुष्ट हों' (वन० २६३ । २२–२५)। जयद्रथद्वारा भेजे हुए कोटिकास्यको उत्तर देना (वन० २६६ अध्याय)। जयद्रथको फटकारना (वन० २६७ । १९; २६८ । २–९)। जयद्रथके सामने पाण्डवोंके पराक्रमका वर्णन (वन० २७० अध्याय)। युधिष्ठिरके पूछनेपर विराट-नगरमें स्वयं सैरन्ध्रीरूपमें रहनेकी बात बताना (विराट० ३ । १८)। सैरन्ध्रीवेषमें इनका विराटपत्नी सुदेष्णासे अपनेको महलमें रखनेका अनुरोध (विराट० ९ । ८)। कीचकको धर्मकी बातें कहकर समझाना (विराट० १४ । ३४–३७)। कीचकको फटकारना (विराट० १४ । ४७–५२)। कीचकके घर सुदेष्णा-के भेजनेसे सुरा लानेके लिये जाना (विराट० १५ । १७)। कीचकके भरी सभामें लात मारनेपर इनका राजा विराटको उलाहना देना और फटकारना (विराट० १६ । १०–१२ के बाद दा० पाठ; विराट० १६ । २१ के बाद दा० पाठ)। सुदेष्णाके पूछनेपर रोनेका कारण बताना (विराट० १६ । ४९)। रातमें भीमसेनके पास जाना (विराट० १७ । ७-८)। भीमसेनसे अपना दुःख बताना और कीचकको मार डालनेके लिये आग्रह करना (विराट० १८ अध्याय)। पाण्डवोंके दुःखसे दुखी होकर भीमसेनके सम्मुख विलाप करना (विराट० १९ अध्याय)। भीमसेनसे अपना दुःख निवेदन करना (विराट० २० अध्याय)। कीचकद्वारा अपनेपर बीती हुई घटनाका भीमसेनसे वर्णन करना और कीचकके वध-के लिये आग्रह करना (विराट० २१ । १८–४८)। कीचकको नृत्यशालामें मिलनेके लिये संकेत देना (विराट० २२ । १६-१७)। उपकीचकोंद्वारा श्मशानमें ले जाये जाते समय पतियोंको पुकारना (विराट० २३ । १२–१४)। बृहन्नलारूपधारी अर्जुनसे मिलना (विराट० २४ । २१)। महलसे निकल जानेके लिये कहनेपर तेरह दिन और रहनेके लिये रानी सुदेष्णासे प्रार्थना करना (विराट० २४ । २९)। उत्तरसे बृहन्नला-रूपधारी अर्जुनको सारथि बनानेका प्रस्ताव करना (विराट० ३६ । १६–१९)। शान्तिदूत बनकर जानेके लिये उद्यत हुए श्रीकृष्णसे केशाकर्षणकी याद दिलाते हुए अपना दुःख सुनाना और युद्धकी ही सम्मति देना (उद्योग० ८२ । ४–४१)। विलाप करती हुई सुभद्रा और उत्तराके पास आना तथा शोकसे मूर्च्छित होना (द्रोण० ७८ । ३६–३७)। पुत्रोंके वधका समाचार सुनकर विलाप करना और अश्वत्थामाके वधके लिये आग्रह करना (सौप्तिक० ११ । १०–१५)। भीमसेनको अश्वत्थामाके वधके लिये प्रेरित करना (सौप्तिक० ११ । २२–२७)। भीमसेनके वचनोंसे शान्त होकर युधिष्ठिरको अश्वत्थामाकी मणि धारण करने-को देना (सौप्तिक० १६ । २४)। कुन्तीके पास पहुँचकर विलाप करना (स्त्री० १५ । ३७-३८)। राजदण्ड धारण करनेके लिये युधिष्ठिरको समझाना (शान्ति० १४ अध्याय)। पाण्डवोंके नगरमें प्रवेश करते समय हस्तिना-पुरकी स्त्रियोंद्वारा पाञ्चालीके पतिसेवन, अमोघ पुण्य-कर्म तथा सकल व्रतचर्याकी प्रशंसा (शान्ति० ३८ । ५-६)। सुभद्रा और बलदेवके साथ हस्तिनापुरमें पधारे हुए श्रीकृष्णका द्रौपदी आदिसे मिलना (आश्व० ६७ । ४-५)। श्रीकृष्णके सूतिकागृहमें प्रवेश करते समय द्रौपदीका उत्तराके पास जाकर उसे सूचित करना कि तुम्हारे श्वशुर भगवान् मधुसूदन पधार रहे हैं (आश्व० ६८ । ९)। श्रीकृष्णके द्वारा अर्जुनकी पिंडलियाँ मोटी बतायी जानेके कारण द्रौपदीने भगवान् श्रीकृष्णकी ओर तिरछी चितवनसे ईर्ष्यापूर्वक देखा और श्रीकृष्णने द्रौपदीके उस प्रेमपूर्ण उपालम्भको सानन्द ग्रहण किया (आश्व० ८७ । ११)। चित्राङ्गदा और उलूपीका द्रौपदीके चरण छूना और द्रौपदीका अपनी ओरसे उन्हें नाना प्रकारके उपहार देना (आश्व० ८८ । २–४)। श्रीकृष्णका द्रौपदी आदिसे मिलकर द्वारका जानेके लिये रथपर आरूढ़ होना (आश्व० ९२ । वैष्णवधर्म, पृष्ठ ६३८१)। द्रौपदीके द्वारा कुन्ती और गान्धारीकी सेवा (आश्रम० ११९)। वनमें जाते हुए धृतराष्ट्र, गान्धारी और कुन्तीके पीछे द्रुपदकुमारी कृष्णा आदिका जाना और विलाप करना (आश्रम० १५ । १०-११)। कुन्तीका युधिष्ठिरको बहू द्रौपदीका सदा प्रिय करते रहनेके लिये आदेश देना (आश्रम० १६ । १५)। रोती हुई

सुभद्रासहित द्रौपदीका अपनी सासके पीछे जाना (आश्रम० १६ । ३०) । द्रौपदीका युधिष्ठिरसे अपनी सासके दर्शनकी इच्छा प्रकट करना और अन्तःपुरकी सभी स्त्रियोंको कुन्ती एवं गान्धारीके दर्शनके लिये उत्सुक बताना (आश्रम० २२ । १४–२२) । द्रौपदी आदिका कुन्ती, गान्धारी और धृतराष्ट्रको प्रणाम करना (आश्रम० २४ । १९) । संजयका ऋषियोंसे द्रौपदीका परिचय देते समय इन्हें मूर्तिमती लक्ष्मी बताना (आश्रम० २५ । ९) । द्रौपदीका अपने पतियोंके साथ महाप्रस्थानके पथपर अग्रसर होना (महाप्रस्था० १ । १९–२०) । मार्गमें द्रौपदीका गिरना और भीमसेनके पूछनेपर युधिष्ठिरका इनके पतनका कारण बताना (महाप्रस्था० २ । ३–६) । स्वर्गलोकमें युधिष्ठिरका दिव्यकान्तिसे सूर्यदेवकी भाँति प्रकाशित होती हुई द्रौपदीका दर्शन करना और इन्द्रका स्वर्गलोककी लक्ष्मी बताकर इनका और इनके पुत्रोंका परिचय देना (स्वर्गा० ४ । १०–१४) ।

महाभारतमें आये हुए द्रौपदीके नाम–पाञ्चाली, कृष्णा, याज्ञसेनी, द्रुपदात्मजा, द्रुपदसुता, पाञ्चालराजदुहिता आदि ।

द्रौपदी-सत्यभामासंवादपर्व–वनपर्वका एक अवान्तर पर्व (अध्याय २३३ से २३५ तक) ।

द्रौपदीहरणपर्व–वनपर्वका एक अवान्तर पर्व (अध्याय २६२ से २७१ तक) ।

द्व्यक्ष–एक भारतीय जनपद, जहाँके राजा युधिष्ठिरके लिये भेंट लेकर आये थे (सभा० ५१ । १७) ।

द्वादशभुज–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ५७) ।

द्वादशाक्ष–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ५८) ।

द्वापरयुग–सत्ययुगसे तृतीय युग । हनुमान्‌जीद्वारा इस युगके धर्मका वर्णन (वन० १४९ । २७–३२) ।

द्वारका (द्वारवती या द्वारावती)–रैवतक पर्वतसे सुशोभित रमणीय कुशस्थली, जहाँ जरासंधसे वैर हो जानेपर समस्त यादव श्रीकृष्णकी सम्मतिसे एकत्र होकर रहने लगे । कुशस्थली दुर्गकी ऐसी मरम्मत करायी गयी थी कि वह देवताओंके लिये भी दुर्गम हो गया था । उस दुर्गमें रहकर स्त्रियाँ भी युद्ध कर सकती थीं । फिर वृष्णिकुलके महारथियोंकी तो बात ही क्या थी । रैवतककी दुर्गमताका विचार करके यदुवंशी वहाँ निर्भय एवं प्रसन्न रहते थे । रैवतक या गोमान दुर्गकी लम्बाई तीन योजनकी है । वहाँ एक-एक योजनपर सेनाओंकी तीन-तीन दलोंकी छावनी थी । प्रत्येक योजनके अन्तमें सौ-सौ द्वार थे, जो सेनाओंद्वारा सुरक्षित थे । वीरोंका पराक्रम ही उस गढ़का प्रधान फाटक था । कम-से-कम अठारह रण-दुर्मद क्षत्रिय वीर उस दुर्गकी सुरक्षामें सदा संलग्न रहते थे । (सभा० १४ । ५०–५५) । द्वारका पुरुषोत्तम श्रीकृष्णका प्रधान निवासस्थान थी । वह अमरावतीपुरीसे भी अधिक रमणीय थी । वहाँ वृष्णिवंशियोंके बैठनेके लिये एक सुन्दर सभा थी, जो दाशार्हीके नामसे प्रसिद्ध थी । उसकी लम्बाई-चौड़ाई एक-एक योजन थी । उसमें बलराम और श्रीकृष्ण आदि सभी वृष्णि और अन्धक वंशके लोग बैठते और सम्पूर्ण लोक-जीवनकी रक्षामें दत्तचित्त रहते थे (सभा० ३८ । पृष्ठ ८०६) । द्वारकाके रमणीय राजसदन सूर्य और चन्द्रमाके समान प्रकाशमान तथा मेरुपर्वतके शिखरोंकी भाँति गगनचुम्बी थे । उन भवनोंसे विभूषित द्वारकापुरीकी रचना साक्षात् विश्वकर्माने की थी । इसके चारों ओर बनी हुई चौड़ी खाइयाँ इसकी शोभा बढ़ाती थीं । यह पुरी ऊँची श्वेत चहारदीवारीसे घिरी थी । वहाँ नन्दनवन, मिश्रकवन, चैत्ररथवन और वैभ्राज नामक वन शोभा देते थे । रमणीय द्वारकापुरीकी पूर्वदिशामें उत्तुङ्ग शिखरोंवाला रैवतकपर्वत उस पुरीका आभूषणरूप जान पड़ता था । दक्षिणमें लतावेष्ट, पश्चिममें सुकक्ष और उत्तरमें वेणुमन्त नामक पर्वत इसकी शोभा बढ़ाते थे । इन पर्वतोंके चारों ओर अनेकानेक मनोहर वन-उपवन वहाँकी श्रीवृद्धि करते थे । पुरीकी पूर्वदिशामें एक रमणीय पुष्करिणी थी, जिसका विस्तार सौ धनुष था । महापुरी द्वारका पचास दरवाजोंसे सुशोभित थी । सुन्दर-सुन्दर महल और अट्टालिकाएँ उसकी शोभा बढ़ाती थीं । तीखे यन्त्र, शतघ्नी (तोप), विभिन्न यन्त्रोंके समुदाय और लोहेके बने हुए बड़े-बड़े चक्र उस पुरीकी रक्षाके लिये लगाये गये थे । पुरीका विस्तार छानबे योजन था । उसमें जानेके लिये आठ बड़ी-बड़ी सड़कें थीं और सोलह बड़े-बड़े चौराहे शोभा पा रहे थे । शुक्राचार्यकी नीतिके अनुसार उस नगरीका निर्माण किया गया था (सभा० ३८ । पृष्ठ ८१२ से ८१७ तक) । तीर्थयात्राके अवसरपर यहाँ अर्जुन पधारे थे और उनके स्वागतका बहुत ही सुन्दर आयोजन किया गया था । यहींसे उन्होंने सुभद्राका अपहरण किया था (आदि० अध्याय २१७ से २१९ तक) । द्वारकापुरीपर शाल्वका आक्रमण और वृष्णिवंशी वीरों तथा भगवान् श्रीकृष्णद्वारा शाल्वराजका सेनासहित संहार करके इस पुरीकी रक्षा (वन० अध्याय १५ से २२ तक) । (पुराणान्तरोंके वर्णनके अनुसार मोक्षदायिनी सात पुरियोंमेंसे एक यह भी है । विभिन्न पुराणोंमें इसकी महिमाका विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है ।) द्वारका और वहाँका पिण्डारक

क्षेत्र परम पावन तीर्थ हैं। इन तीर्थोंकी यात्रा करनेवालोंको नियमसे रहना और नियमित भोजन करना चाहिये। यहाँके पिण्डारक-तीर्थमें स्नान करनेसे मनुष्यको अधिकाधिक सुवर्णकी प्राप्ति होती है (वन० ८२। ६५)। यहीं राजा नृगका गिरगिटकी योनिसे उद्धार हुआ था (अनु० ७०। ७)। यहीं यदुवंशके विनाशके लिये साम्बके पेटसे मूसल पैदा होनेका शाप ऋषियोंद्वारा प्राप्त हुआ था (मौसल० १। १९-२१)। श्रीकृष्णके परमधाम पधारनेपर द्वारकावासी स्त्री-पुरुषोंके द्वारा इस पुरीके खाली कर दिये जानेपर समुद्रने इसे डुबो दिया (मौसल० ७। ४१-४२)।

द्वारपालपुर–एक प्राचीन नगर, जिसे नकुलने अपने अधिकारमें कर लिया था (सभा० ३२। ११-१२)।

द्वित–एक प्राचीन महर्षि, जो गौतमके पुत्र तथा एकत और त्रितके भाई थे। इनका लोभवश अपने भाई त्रितको कूपमें गिरा छोड़कर एकतके साथ घरको जाना और त्रितके शापसे भेड़िया होकर लंगूरों, रीछों और वानरोंको उत्पन्न करना (शल्य० ३७ अध्याय)। ये पश्चिम दिशाका आश्रय लेकर रहनेवाले ऋषि हैं (शान्ति० २०८। ३१)। ये प्रजापतिके पुत्र माने गये हैं। इन्हें उपरिचरवसुके यज्ञका सदस्य बनाया गया था (शान्ति० ३३६। ६)।

द्विमूर्धा–एक राक्षस, जो असुरोंके पृथ्वीदोहनके समय दोग्धा (दुहनेवाला) बना था (द्रोण० ६९। २०)।

द्विविद–किष्किन्धानिवासी एक वानर, जिसके साथ सहदेवने सात दिनोंतक युद्ध किया था तो भी वे उसे हरा न सके (सभा० ३१। १८-१९)। इसने सहदेवको नाना प्रकारके रत्नोंकी भेंट दी थी (सभा० ३१। २०)। यह सुग्रीवका मन्त्री था (वन० २८०। २३)। इसके संरक्षणमें रहकर श्रीरामका कार्य करनेके लिये वानर सेनाने कूच किया था (वन० २८३। १९)। इसने कभी श्रीकृष्णको पकड़नेकी इच्छा रखकर सौभ विमानके द्वारसे इनपर पत्थरोंकी वर्षा की थी (उद्योग० १३०। ४१-४२)।

दीपक–गरुड़की प्रमुख संतानोंमेंसे एक (उद्योग० १०१। ११)।

द्वैतवन–एक वन और सरोवर, यहाँ वनवासके समय पाण्डवोंने निवास किया था (वन० २४। १३)। यह सरस्वतीके तटपर अवस्थित था (वन० २४। २०)। तीर्थयात्राके समय बलरामजीने यहाँ पदार्पण किया था (शल्य० ३७। २७)।

द्वैपायन(१)–महर्षि पराशरके द्वारा सत्यवतीके गर्भसे उत्पन्न मुनिवर वेदव्यास, जो यमुनाके द्वीपमें छोड़ दिये गये, इसलिये द्वैपायन नामसे प्रसिद्ध हुए (आदि० ६३। ८६)। (देखिये व्यास)। (२) कुरुक्षेत्रका एक सरोवर, जिसमें दुर्योधन भागकर छिपा था (शल्य० ३०। ४७)।

(ध)

धनंजय–(१) एक प्रमुख नाग, जो कश्यप और कद्रूकी संतान है (आदि० ३५। ५)। यह वरुणकी सभामें उपस्थित हो भगवान् वरुणकी उपासना करता है (सभा० ९। ९)। यह त्रिपुर-दाहके समय भगवान् शिवके रथमें घोड़ोंके केसर बाँधनेकी रस्सी बनाया गया था (कर्ण० ३४। २९-३०)। (२) अर्जुनका एक नाम, सम्पूर्ण देशोंको जीतकर कररूपमें धन लेकर धनके ही बीचमें स्थित होनेके कारण अर्जुनका नाम धनंजय हुआ था (विराट० ४४। १३)। (देखिये अर्जुन)। (३) शिवजीद्वारा स्कन्दको दी हुई असुर-सेनाका नाम (शल्य० ४६। ४७)।

धनद–कुबेरकी सभाका एक यक्ष, जो भगवान् कुबेरकी सेवामें संलग्न रहता है (सभा० १०। १५)।

धनदा–स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६। १३)।

धनी–कप नामक दानवोंका दूत, इसके द्वारा ब्राह्मणोंके पास जाकर कपोंके सदाचारका वर्णन (अनु० १५७। ८—१४)।

धनुर्ग्रह (धनुग्रह या धनुधर)–धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६७। १०३; आदि० ११६। ११)। भीमसेनद्वारा इसका वध (कर्ण० ८४। २–६)।

धनुर्वक्त्र–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५। ६२)।

धनुर्वेद–वह शास्त्र, जिसमें धनुष आदि अस्त्र-शस्त्रोंको चलानेकी विद्याका निरूपण हो, चार पादोंसे युक्त अस्त्र-शस्त्र-विद्या। [भारतवर्षमें इस विद्याके बड़े-बड़े ग्रन्थ थे, जिन्हें क्षत्रियकुमार अभ्यासपूर्वक पढ़ते थे। मधुसूदन सरस्वतीने अपने प्रस्थानभेद नामक ग्रन्थमें धनुर्वेदको यजुर्वेदका उपवेद लिखा है। आजकल इस विद्याका वर्णन कुछ ग्रन्थोंमें थोड़ा बहुत मिलता है। जैसे—शुक्रनीति, कामन्दकी नीति, अग्निपुराण, वीर-चिन्तामणि, वृद्धशार्ङ्गधर, युद्धजयार्णव, युक्ति-कल्पतरु, नीतिमयूष इत्यादि। 'धनुर्वेद संहिता' नामक एक अलग पुस्तक भी मिलती है, परंतु उसकी प्राचीनता और प्रामाणिकतामें संदेह है। अग्निपुराणमें ब्रह्मा और महेश्वर इस वेदके आदि प्रकटकर्ता कहे गये हैं। परंतु मधुसूदन सरस्वती लिखते हैं कि 'विश्वामित्रने जिस धनुर्वेदका प्रकाश किया था, यजुर्वेदका उपवेद वही है।' उन्होंने अपने प्रस्थानभेदमें विश्वामित्रकृत इस उपवेदका

कुछ संक्षिप्त ब्यौरा भी दिया है। उसमें चार पाद हैं—दीक्षापाद, संग्रहपाद, सिद्धिपाद और प्रयोगपाद। प्रथम दीक्षापादमें धनुर्लक्षण (धनुषके अन्तर्गत सब हथियार लिये गये हैं) और अधिकारियोंका निरूपण है। धनुर्वेदके चार भेद इस प्रकार हैं—मुक्त, अमुक्त, मुक्तामुक्त तथा यन्त्रमुक्त। छोड़े जानेवाले बाण आदिको 'मुक्त' कहते हैं। जिन्हें हाथमें लेकर प्रहार किया जाय, उन खड्ग आदिको 'अमुक्त' कहते हैं। जिस अस्त्रको चलाने और समेटनेकी कला मालूम हो, वह अस्त्र 'मुक्तामुक्त' कहलाता है। अथवा जिसे छोड़नेके बाद फिर ले लिया जाय वह भाला, बरछा आदि मुक्तामुक्त है; जो किसी यन्त्रके सहारे छोड़ा जाय जैसे तोपसे गोला, वह अस्त्र 'यन्त्रमुक्त' कहा गया है। अधिकारीका लक्षण कहकर फिर दीक्षा, अभिषेक, शकुन आदिका वर्णन है। संग्रहपादमें आचार्यका लक्षण तथा अस्त्र-शस्त्रादिके लक्षणका संग्रह है। तृतीय पादमें सम्प्रदायसिद्ध विशेष-विशेष शस्त्रोंके अभ्यास, मन्त्र, देवता और सिद्धि आदि विषय हैं। प्रयोग नामक चतुर्थ पादमें देवार्चन, सिद्धि, अस्त्र-शस्त्रादिके प्रयोगोंका निरूपण है।

शस्त्र, अस्त्र, प्रत्यस्त्र और परमास्त्र—ये भी धनुर्वेदके चार भेद हैं। इसी प्रकार आदान, संधान, विमोक्ष और संहार—इन चार क्रियाओंके भेदसे भी धनुर्वेदके चार भेद होते हैं। वैशम्पायनके अनुसार शार्ङ्गधनुषमें तीन जगह झुकाव होता है; पर वैणव अर्थात् बाँसके धनुषका झुकाव बराबर क्रमसे होता है। शार्ङ्गधनुष साढ़े छः हाथका होता है और अश्वारोहियों तथा गजारोहियोंके कामका होता है। रथी और पैदलके लिये बाँसका ही धनुष ठीक है। अग्निपुराणके अनुसार चार हाथका धनुष उत्तम, साढ़े तीन हाथका मध्यम और तीन हाथका अधम माना गया है। जिस धनुषके बाँसमें नौ गाँठें हों; उसे 'कोदण्ड' कहना चाहिये। प्राचीनकालमें दो डोरियोंकी गुलेल भी होती थी, जिसे 'उपलक्षेपक' कहते थे। डोरी पाटकी और कनिष्ठा अँगुलीके बराबर होनी चाहिये। बाँस छीलकर भी डोरी बनायी जाती है। हिरन या भैंसेकी ताँतकी डोरी भी बहुत मजबूत बन सकती है। (वृद्धशार्ङ्गधर)

बाण दो हाथसे अधिक लंबा और छोटी अँगुलीसे अधिक मोटा न होना चाहिये। शर तीन प्रकारके कहे गये हैं, जिसका अगला भाग मोटा हो, वह स्त्रीजातीय है, जिसका पिछला भाग मोटा हो, वह पुरुष जातीय और जो सर्वत्र बराबर हो, वह नपुंसकजातीय कहलाता है। स्त्री जातीय शर बहुत दूरतक जाता है, पुरुषजातीय भिदता खूब है और नपुंसकजातीय निशाना साधनेके लिये अच्छा होता है। बाणके फल अनेक प्रकारके होते हैं; जैसे—आरामुख, क्षुरप्र, गोपुच्छ, अर्धचन्द्र, सूचीमुख, भल्ल, वत्सदन्त, द्विभल्ल, कार्णिक, काकतुण्ड इत्यादि। तीरमें गति सीधी रखनेके लिये पीछे पंखोंका लगाना भी आवश्यक बताया गया है। जो बाण सारा लोहेका होता है, उसे 'नाराच' कहते हैं।

उक्त ग्रन्थमें लक्ष्यभेद, शराकर्षण आदिके सम्बन्धमें बहुत-से नियम बताये गये हैं। रामायण, महाभारत आदिमें शब्दभेदी बाण मारनेतकका उल्लेख है। अन्तिम हिंदूसम्राट् महाराज पृथ्वीराजके सम्बन्धमें भी प्रसिद्ध है कि वे शब्दभेदी बाण मारते थे। [—हिंदी-शब्दसागरसे]

शरद्वान् धनुर्वेदके पारङ्गत विद्वान् और शिक्षक थे। इनसे कृपाचार्यने धनुर्वेद पढ़ा और अपने शिष्योंको पढ़ाया **(आदि० १२९। ३–५, २१, २२, २३)**। द्रोणाचार्यने यह विज्ञान परशुरामसे प्राप्त किया और कौरव-पाण्डवोंको इसकी शिक्षा दी **(आदि० १२९। ६६; आदि० १३१। ९)**। अग्निवेश धनुर्वेदमें अगस्त्यके शिष्य थे **(आदि० १३८। ९)**। इसे युधिष्ठिरने कौरवदलके भीष्म, द्रोण, कृप, अश्वत्थामा एवं कर्णमें ही पूर्णतः प्रतिष्ठित बताया था **(वन० ३७। ४)**। धनुर्वेदके दस अङ्ग और चार चरण हैं। **(शल्य० ६। १४की टिप्पणी; ४११२९)**। चारों पादोंसे युक्त धनुर्वेद मूर्तिमान् होकर भगवान् स्कन्दकी सेवामें उपस्थित हुआ था **(शल्य० ४४। २२)**।

धनुष—एक प्राचीन ऋषि, जो उपरिचर वसुके यज्ञके सदस्य बनाये गये थे **(शान्ति० ३३६। ७)**।

धनुषाक्ष—एक प्राचीन ऋषि जिन्होंने बालधिऋषिके पुत्र मेधावीका ऋषियोंका अपमान करनेके कारण विनाश कर दिया **(वन० १३५। ५० ५३)**।

धन्वन्तरि—देवताओंके वैद्य, जो पुराणानुसार समुद्र-मन्थनके समय और सब वस्तुओंके साथ समुद्रसे निकले थे। हरिवंशमें लिखा है कि जब ये समुद्रसे निकले, तब तेजसे दिशाएँ जगमगा उठीं। ये सामने विष्णुको देखकर ठिठक रहे। इसपर विष्णु भगवान्ने इन्हें अब्ज कहकर पुकारा। भगवान्के पुकारनेपर इन्होंने उनसे प्रार्थना की कि यज्ञमें मेरा भाग और स्थान नियत कर दिया जाय। विष्णुने कहा, भाग और स्थान तो बँट गये हैं, पर तुम दूसरे जन्ममें विशेष सिद्धि-लाभ करोगे। अणिमादि सिद्धियाँ तुम्हें गर्भसे ही प्राप्त रहेंगी और तुम सशरीर देवत्व लाभ करोगे। तुम आयुर्वेदको आठ भागोंमें विभक्त करोगे। द्वापरयुगमें काशिराज धन्वने पुत्रके लिये तपस्या और अब्जदेवकी आराधना की। अब्जदेवने धन्वके घर स्वयं अवतार लिया और भरद्वाज ऋषिसे आयुर्वेद-शास्त्रका अध्ययन करके प्रजाको रोगमुक्त किया। भावप्रकाशमें लिखा है कि इन्द्रने आयुर्वेद-शास्त्र सिखाकर धन्वन्तरिको लोकके कल्याणके लिये पृथ्वीपर भेजा। धन्वन्तरि काशीमें

उत्पन्न हुए और ब्रह्माके वरसे काशीके राजा हुए (हिंदी-शब्द-सागरसे) । (पुराणान्तरोंके कथनानुसार ये भगवान्‌के अवतार हैं ।) समुद्र-मन्थनके समय ये अमृतका कलश हाथमें लेकर प्रकट हुए थे (आदि० १८ । ३८) । बलिवैश्वदेवके समय ईशानकोणमें इन्हें बलि देनी चाहिये (अनु० ९७ । १०–१२) ।

धमधमा–स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । २०) ।

धर–(१) धर्मद्वारा धूम्राके गर्भसे उत्पन्न प्रथम वसु (आदि० ६६ । १९) । (२) युधिष्ठिरका सम्बन्धी और सहायक राजा (द्रोण० १५८ । ३९) ।

धर्म–सम्पूर्ण लोकोंको सुख देनेवाले एक देवता, जो ब्रह्माजीके दाहिने स्तनसे उत्पन्न हुए थे (आदि० ६६ । ३१) । ये भगवान् सूर्यके भी पुत्र कहे गये हैं (आदि० ६७ । ८६) । दक्ष-प्रजापतिकी कीर्ति आदि दस पुत्रियाँ इनकी पत्नी थीं (आदि० ६६ । १३–१५) । आठों वसु इनके पुत्र थे (आदि० ६६ । १७) । इनके तीन श्रेष्ठ पुत्र हैं—शम, काम और हर्ष (आदि० ६६ । ३२) । शूद्रयोनिमें जन्म लेनेके लिये इनको अणीमाण्डव्यका शाप (आदि० ६३ । ९५-९६) । इन्हींके अंश विदुर और युधिष्ठिर थे (आदि० ६७ । ८६, ११०) । इनके द्वारा कुन्तीके गर्भसे युधिष्ठिरका जन्म (आदि० १२२ । ७) । जब द्रौपदीका वस्त्र खींचा जा रहा था, उस समय धर्मस्वरूप श्रीकृष्णने अव्यक्त रूपसे उसके वस्त्रमें प्रवेश करके भाँति-भाँतिके सुन्दर वस्त्रोंद्वारा द्रौपदीको आच्छादित कर लिया (सभा० ६८ । ४६) । धर्मतीर्थमें इन्होंने तपस्या की थी (वन० ८४ । १) । ये धर्मप्रस्थमें सदा निवास करते हैं (वन० ८४ । ९९) । वैतरणीके तटपर इन्होंने यज्ञ किया था (वन० ११४ । ४) । इनका मृगरूपसे ब्राह्मणका अरणि-काष्ठ लेकर भागना (वन० ३११ । ९) । यक्ष-रूपसे नकुल, सहदेव, अर्जुन और भीमसेनको मूर्च्छित करना (वन० ३१२ अध्याय) । युधिष्ठिरके साथ प्रश्नोत्तर (वन० ३१३ । ४५—१३२) । युधिष्ठिरके उत्तरसे प्रसन्न होकर इनके द्वारा चारों पाण्डवोंको जीवनदान (वन० ३१३ । १३३) । धर्मके पास पहुँचनेके द्वार—अहिंसा, समता, शान्ति, दया और अमत्सर (वन० ३१४ । ८) । धर्मरूपमें प्रकट होकर इनका युधिष्ठिरको वरदान देना (वन० ३१४ । १२—२५) । वसिष्ठका रूप धारण करके विश्वामित्रकी परीक्षा लेना (उद्योग० १०६ । ८—१७) । ब्रह्माजीकी आज्ञासे धर्मने दैत्यों और दानवोंको अपने पाशमें बाँधकर वरुणके अधिकारमें दे दिया (उद्योग० १२८ । ४५-४६) । भगवान् नारायणने धर्मके पुत्ररूपसे अवतार लिया था (द्रोण० २०१ । ५७) । इन्होंने अपनी पत्नी 'श्री' के गर्भसे अर्थ नामक पुत्र उत्पन्न किया (शान्ति० ५९ । १३२-१३३) । ये तनु नामक मुनिके रूपमें उत्पन्न हुए थे (शान्ति० १२८ । २२-२३) । जापक ब्राह्मणके साथ इनका संवाद (शान्ति० १९९ । २०—२८) । मृगरूपसे सत्य नामक ब्राह्मणकी परीक्षा ली (शान्ति० २७२ । १७) । ब्राह्मणरूप धारण करके सुदर्शनकी परीक्षा ली (अनु० २ । ७९) । भैंसेके रूपसे महर्षि वत्सनाभकी वर्षासे रक्षा करना (अनु० १२ अध्याय दाक्षिणात्य पाठ) । इनके द्वारा धर्मके रहस्यका वर्णन (अनु० १२६ । २४—२८) । ब्राह्मणरूपमें राजा जनकसे इनका संवाद और अन्तमें प्रसन्न होकर इनका अपना परिचय देना तथा राजाकी प्रशंसा करना (आश्व० ३२ अध्याय) । ब्राह्मणरूप धारण करके इन्होंने ब्राह्मणपरिवारकी परीक्षा ली (आश्व० ९० अध्याय) । क्रोधरूपमें जमदग्निकी परीक्षा ली (आश्व० ९१ । ४२—५२) । माण्डव्यके शापसे धर्म ही विदुर हुए थे (आश्रम० २८ । १२) । धर्म, विदुर और युधिष्ठिरकी एकता (आश्रम० २८ । २१) । पाण्डवोंके महाप्रस्थानके समय कुत्तेका रूप धारण करके उनके पीछे-पीछे गये (महाप्रस्था० ३ । १७) । विदुर और युधिष्ठिर मृत्युके पश्चात् धर्ममें ही विलीन हुए थे (स्वर्गा० ५ । २२) ।

महाभारतमें आये हुए धर्मके नाम—धर्मराज, वृष, यम आदि ।

धर्मतीर्थ—(१) धर्मकी तपस्याका स्थानभूत एक तीर्थ, जहाँ स्नान करनेसे मनुष्य धर्मशील और एकाग्रचित्त होता है तथा अपने कुलकी सातवीं पीढ़ीतकके लोगोंको पवित्र कर देता है (वन० ८४ । १) । (२) एक परम पवित्र ब्रह्मसेवित तीर्थ, जहाँ जाकर स्नान करनेवाला वाजपेय यज्ञका फल पाता है और विमानपर बैठकर पूजित होता है (वन० ८४ । १६२) ।

धर्मद—स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ७२) ।

धर्मनेत्र—पूरुवंशीय महाराज कुरुके प्रपौत्र एवं धृतराष्ट्रके पुत्र (आदि० ९४ । ६०) ।

धर्मप्रस्थ—एक तीर्थ, जहाँ धर्मराजका नित्य निवास है । वहाँ कूपजलसे देवता-पितरोंका तर्पण करनेसे मनुष्य पापमुक्त हो स्वर्गलोकको जाता है (वन० ८४ । ९९) ।

धर्मव्याध—मिथिलापुरीमें रहनेवाला एक धर्मपरायण व्याध । इसके द्वारा वर्णधर्मका वर्णन (वन० २०७ । २०–२८) । शिष्टाचारका वर्णन (वन० २०७ । ६२–९८) । हिंसा और अहिंसाका विवेचन (वन० २०८ अध्याय) ।

धर्मकर्मविषयक मीमांसा (वन० २०९ अध्याय)। विषयसेवनसे हानि और ब्राह्मीविद्याका वर्णन (वन० २१० अध्याय)। इन्द्रियनिग्रहका वर्णन (वन० २११ अध्याय)। तीनों गुणोंके स्वरूप और फलका निरूपण (वन० २१२ अध्याय)। प्राणवायुकी स्थितिका प्रतिपादन (वन० २१३ अध्याय)। माता-पिताकी सेवाका दिग्दर्शन (वन० २१४ अध्याय)। अपने पूर्वजन्मकी कथा (वन० २१५ अध्याय)। कौशिक ब्राह्मणको माता-पिताकी सेवाका उपदेश देकर विदा करना (वन० २१६। ३२)।

धर्मारण्य--(१) एक प्राचीन तीर्थभूत वन, जहाँ प्रवेश करनेमात्रसे मनुष्य पापमुक्त हो जाता है (वन० ८२। ४६)। (२) एक ब्राह्मण, इसका पद्मनाभ नामक नागको अपना परिचय देना (शान्ति० ३६१। ५)। पद्मनाभसे सूर्यमण्डलकी बात पूछना (शान्ति० ३६२। १)। उञ्छव्रतका पालन करनेका निश्चय करके इसका नागराजसे विदा माँगना (शान्ति० ३६४। ७--१०)। च्यवनऋषिसे उञ्छव्रतकी दीक्षा लेना (शान्ति० ३६५। २)।

धर्मेयु--पूरुपुत्र रौद्राश्वके द्वारा मिश्रकेशी नामक अप्सराके गर्भसे उत्पन्न (आदि० ९४। ११)।

धवलगिरि (या श्वेत पर्वत)--एक पर्वत, जहाँ अर्जुनने अपनी सेनाका पड़ाव डाला था (सभा० २७। २९)।

धाता--(१) बारह आदित्योंमेंसे एक, इनकी माताका नाम अदिति और पिताका कश्यप है (आदि० ६५। १५)। खाण्डववन-दाहके समय श्रीकृष्ण और अर्जुनके साथ होनेवाले युद्धमें देवताओंकी ओरसे ये भी पधारे थे (आदि० २२६। ३४)। इनके द्वारा स्कन्दको पाँच पार्षद प्रदान किये गये थे, जिनके नाम थे--कुन्द, कुसुम, कुमुद, डम्बर और आडम्बर (शल्य० ४५। ३९)। (२) ब्रह्माजीके पुत्र, इनके दूसरे भाईका नाम विधाता है। दोनों मनुके साथ रहते हैं (आदि० ६६। ५०)। हस्तिनापुर जाते समय मार्गमें श्रीकृष्णसे इनकी भेंट (उद्योग० ८३। ६४ के बाद दाक्षिणात्य पाठ)।

धात्रेयिका--द्रौपदीकी दासी, जिसने पाण्डवोंसे जयद्रथद्वारा द्रौपदीके अपहरणका समाचार बताया था (वन० २६९। १६--२२)।

धाम--श्रीगङ्गा-महाद्वारकी रक्षा करनेवाले मुनि, जो उत्तर दिशामें स्थित हैं (उद्योग० १११। १७)।

धारण--(१) चन्द्रवत्सकुलमें उत्पन्न एक कुलाङ्गार नरेश (उद्योग० ७४। १६)। (२) एक कश्यपवंशीय नाग (उद्योग० १०३। १६)।

धारा--एक तीर्थ, जहाँकी यात्रा सब पापोंसे छुड़ानेवाली है। वहाँ स्नान करनेसे मनुष्य कभी शोकमें नहीं पड़ता है (वन० ८४। २५)।

धिषणा--एक देवी, जिसने स्कन्दके अभिषेकके समय पदार्पण किया था (शल्य० ४५। १४)।

धीमान्--पुरूरवाके द्वितीय पुत्र (आदि० ७५। २४)।

धीरोष्णी--एक सनातन विश्वेदेव (अनु० ९१। ३२)।

धुन्धु--(१) एक राक्षस, जो मधुकैटभका पुत्र था (वन० २०२। १८)। इसकी तपस्या और वरप्राप्ति (वन० २०४। २--४)। इसके द्वारा महाराज कुवलाश्वके पुत्रोंका दग्ध होना (वन० २०४। २६)। राजा कुवलाश्वद्वारा इसका वध (वन० २०४। ३२)। (२) एक राजा, जिसने जीवनमें कभी मांस नहीं खाया (अनु० ११५। ६६)।

धुन्धुमार--सूर्यवंशी महाराज बृहदश्वके पुत्र कुवलाश्व (द्रोण० ९४। ४२)। इन्हें ऐलविलद्वारा खड्गकी प्राप्ति हुई (शान्ति० १६६। ७६)। अगस्त्यजीके कमलोंकी चोरी होनेपर शपथ खाना (अनु० ९४। २१)। (देखिये कुवलाश्व)।

धुरन्धर--एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९। ४१)।

धूतपापा--एक प्रमुख नदी, जिसका जल भारतवासी पीते हैं (भीष्म० ९। १८)।

धूमपा--पितरों और ऋषियोंका समुदाय। ये लोग दक्षके यज्ञमें पधारे थे (शान्ति० २८४। ८-९)।

धूमावती--एक पवित्र तीर्थ, जहाँ तीन रात्रि उपवास करनेसे मनोवाञ्छित कामना प्राप्त होती है (वन० ८४। २२)।

धूमिनी--पूरुवंशी राजा अजमीढ़की रानी, इनके गर्भसे अजमीढ़द्वारा महाराज ऋक्षका जन्म हुआ था (आदि० ९४। ३२)।

धूमोर्णा-(१) यमराजकी भार्या (वन० ११७। ९)। (२) महर्षि मार्कण्डेयकी पत्नी (अनु० १४६। ४)।

धूम्र- (१) एक ऋषि, जो इन्द्रकी सभामें विराजमान होते हैं (सभा० ७। १७ के बाद दा० पाठ)। (२) स्कन्दका सैनिक (शल्य० ४५। ६४)।

धूम्रा--दक्षप्रजापतिकी पुत्री और धर्मकी पत्नी, जो ध्रुव तथा धरकी माता है (आदि० ६६। १९)।

धूम्राक्ष--एक राक्षस, जिसका हनुमान्‌जीके द्वारा वध हुआ (वन० २८६। १४)।

धूर्त्त--एक प्राचीन नरेश (आदि० १। २३८)।

धूर्त्तक-कौरव्यकुलमें उत्पन्न एक नाग, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें जल मरा था (आदि० ५७ । १३)।

धृतराष्ट्र-(१) राजा विचित्रवीर्यके क्षेत्रज पुत्र, विचित्रवीर्यकी पत्नी अम्बिकाके गर्भसे व्यासद्वारा उत्पन्न, ये जन्मसे अन्धे थे (आदि० १ । ९५; आदि० ६३ । ११३; आदि० १०५ । १३)। भीष्मद्वारा इनका पुत्रवत् पालन एवं इनके उपनयनादि संस्कारोंका सम्पादन(आदि० १०८ । १७-१८)।इनकी शारीरिक शक्ति एवं शिक्षा (आदि० १०८ । १९-२१)। जन्मान्ध होनेके कारण इनका राज्य-प्राप्तिसे वञ्चित होना (आदि० १०८ । २५)। गान्धारीके साथ विवाह (आदि १०९ । १६)। इनके द्वारा सौ अश्वमेध यज्ञका सम्पादन तथा प्रतियज्ञमें लाख-लाख स्वर्णमुद्राओंकी दक्षिणाका दान (आदि० ११३ । ५)। इनके द्वारा गान्धारीके गर्भसे सौ पुत्र होनेका वृत्तान्त (आदि० ११४ । १२--२५)। दुर्योधनके जन्मकालिक अमङ्गलसूचक लक्षणों या अपशकुनोंको देखकर उसे त्याग देनेके लिये इनको विदुरकी सलाह (आदि० ११४ । ३४–३९)। इनके द्वारा वैश्यजातीय स्त्रीके गर्भसे युयुत्सुका जन्म (आदि०११४ । ४३)। इनकी पुत्री दुःशलाके जन्मकी कथा (आदि० ११५ अध्याय)। इन्होंने अपने सभी पुत्रोंका विवाहसंस्कार कराया (आदि० ११६ । १७)। अपनी पुत्री दुःशलाका विवाह सिन्धुराज जयद्रथके साथ किया (आदि० ११६ । १८)। पाण्डुके शापग्रस्त होकर वानप्रस्थ लेनेपर इनका शोक (आदि० ११८ । ४५)। इनके द्वारा राजोचित ढंगसे पाण्डु तथा माद्रीके अन्त्येष्टि-संस्कार करानेके लिये विदुरको आदेश (आदि० १२६ । १–३)। युधिष्ठिरका युवराज-पदपर अभिषेक (आदि० १३८ । १-२)। पाण्डवोंकी उन्नति देखकर इनकी चिन्ता और इनके प्रति कणिकद्वारा कूटनीतिका उपदेश (आदि० १३९ । ३–९२)। पाण्डवोंको वारणावत जानेके लिये इनका आदेश (आदि० १४२ । १०)। वारणावतनिवासियोंका इनको पाण्डवों एवं पुरोचनके जलनेका संदेश देना (आदि० १४९ । ९)। पाण्डवोंके लिये इनका मिथ्या विलाप (आदि० १४९। १०)। इनके द्वारा पाण्डवोंको जलाञ्जलि-दान (आदि० १४९ । १५)। इनका पाण्डवोंके प्रति प्रेमका दिखावा (आदि० १९९ । २२ के बादसे २५ तक)। इनका पाण्डवोंके विषयमें दुर्योधनसे वार्तालाप (आदि० २०० । १–२०)। द्रुपदनगरसे बुलाकर पाण्डवोंको आधा राज्य देनेके लिये इनसे भीष्मका आग्रह (आदि० २०२ अध्याय)। द्रौपदी एवं पाण्डवोंके लिये उपहार भेजने, उनको आदरपूर्वक द्रुपदनगरसे बुलाने एवं पाण्डवोंका आधा राज्य दे देनेके लिये इनसे द्रोणाचार्यका अनुरोध (आदि० २०३ । १–१२)। पाण्डवोंका पराक्रम बतलाकर उन्हें द्रुपदनगरसे बुलाने एवं उनका आधा राज्य दे देनेके लिये इनसे विदुरकी सलाह (आदि० २०४। १५–३०)। पाण्डवोंको उनकी माता तथा द्रौपदीके साथ ले आनेके लिये इनका विदुरको आदेश (आदि० २०५ । ४)। द्रुपदनगरसे आते हुए पाण्डवोंकी अगवानीके लिये इनका कौरवोंको आदेश (आदि० २०६ । १२)। इनके द्वारा युधिष्ठिरका आधे राज्यपर अभिषेक और उन्हें भाइयोंसहित खाण्डवप्रस्थमें रहनेका आदेश (आदि० २०६ । २३ के बाद दा० पाठ)। ये युधिष्ठिरके राजसूययज्ञमें गये थे (सभा० ३४। ५)। इनका दुर्योधनसे उसकी चिन्ताका कारण पूछना (सभा० ४९ । ६–११ के बाद दा० पाठ)। इनका युधिष्ठिरको बुलानेके लिये विदुरको भेजना (सभा० ४९ । ५५—५९)। इनका दुर्योधनको वैर-विरोध होनेके कारण जूआ न खेलनेकी सलाह देना (सभा० ५० । १२)। पाण्डवोंके साथ विरोध न करनेके लिये इनका दुर्योधनको समझाना (सभा० ५४ अध्याय)। इनके द्वारा द्यूतक्रीडाकी निन्दा (सभा० ५६ । १२)। पाण्डवोंको द्यूतक्रीडामें सम्मिलित होनेके लिये बुलानेके हेतु इनका विदुरको आदेश (सभा० ५६ । २१) । इनका विदुरके साथ वार्तालाप (सभा० ५७ अध्याय)। द्यूतक्रीडाके अवसरपर इनको विदुरकी चेतावनी (सभा० ६३ अध्याय)। इनका द्रौपदीको वरदान (सभा० ७१ । ३१—३३)। इनके द्वारा युधिष्ठिरको सारा धन लौटाकर और आश्वासन दे उन्हें इन्द्रप्रस्थ लौट जानेका आदेश (सभा० ७३ अध्याय)। इनकी पुनः जूएके लिये स्वीकृति (सभा० ७४ । २४)। इन्हें गान्धारीकी चेतावनी (सभा०७५ अध्याय)। प्रजाके शोकके विषयमें इनका विदुरसे संवाद (सभा० ८० । ३५के बाद। दा०पाठ) इनकी चिन्ता तथा संजयसे बातचीत (सभा० ८१ अध्याय)। इनके द्वारा विदुरकी सलाहका विरोध (वन० ४ । १८–२१)। विदुरको बुलानेके लिये इनका संजयको आदेश (वन० ६ । ५—१०)। इनकी विदुरसे क्षमाप्रार्थना (वन० ६ । २१)। इनका पाण्डवोंके विषयमें मैत्रेयजीसे प्रश्न करना (वन० १० । ९)। इनका संजयके सम्मुख पुत्रोंके लिये चिन्ता करना (वन० ४८ अध्याय)। इनका पाण्डवोंका पराक्रम सुनकर संतप्त होना (वन० ४९ । १४–२३)। इनका पाण्डवोंके पराक्रम सुनकर भयभीत होना (वन० ५१ । ४५-४६)। पाण्डवोंका समाचार सुनकर इनके खेदयुक्त और चिन्तापूर्ण उद्गार (वन० २३६ अध्याय)। इनका दुर्योधन-

की घोषयात्राके लिये अनुमति देना (वन० २३९ । २२)। द्रुपद-पुरोहितको सत्कारके साथ विदा करना (उद्योग० २१ । २१)। संजयसे पाण्डवपक्षके वीरोंका वर्णन करते हुए संजयको दूत बनाकर पाण्डवोंके पास भेजना (उद्योग० २२ अध्याय)। संजयकी बात सुनकर चिन्ताके कारण जागरण और विदुरको बुलवाकर उनसे कल्याणकी बात पूछना (उद्योग० ३३ । ९-११)। इनका संजयसे युधिष्ठिरके सहायकोंके विषयमें प्रश्न (उद्योग० ५० । ९) । भीमसेनके पराक्रमसे डरकर इनका विलाप करना (उद्योग० ५१ अध्याय) । इनके द्वारा अर्जुनके पराक्रमसे प्राप्त होनेवाले भयका वर्णन (उद्योग० ५२ अध्याय) । कौरवसभामें युद्धसे भय दिखाकर शान्तिका प्रस्ताव (उद्योग० ५३ । १४-१५)। पाण्डवोंकी युद्ध-तैयारी सुनकर इनका विलाप (उद्योग० ५७ । २६-३५) । दुर्योधनको पाण्डवोंसे संधि कर लेनेके लिये समझाना (उद्योग० ५८ । २—९) । भीमके पराक्रमका वर्णन करके अपने पक्षके अन्य राजाओंको भय दिखाना (उद्योग० ५८ । १९–२८) । अपने पक्षकी अपेक्षा पाण्डव-पक्षको अधिक शक्तिशाली समझकर दुर्योधनको संधिके लिये समझाना (उद्योग० ६० अध्याय) । इनके द्वारा दुर्योधनको संधिकी सलाह (उद्योग० ६५ अध्याय) । संजयसे दोनों पक्षोंके बला-बलके विषयमें प्रश्न (उद्योग० ६७ । ४-५) । इनके द्वारा श्रीकृष्णका गुणगान (उद्योग० ७१ अध्याय) । श्रीकृष्णके सत्कारके लिये दुर्योधनको आज्ञा देना (उद्योग० ८५ । ७–१०) । विदुरसे श्रीकृष्णकी अगवानी करने, भेंट देने तथा उन्हें दुःशासनके महलमें ठहरानेका विचार प्रकट करना (उद्योग० ८६ अध्याय) । श्रीकृष्णको कैद करनेकी बात सुनकर दुर्योधनका विरोध करना (उद्योग० ८८ । १७-१८) । इनके द्वारा राजमहलमें श्रीकृष्णका आतिथ्य (उद्योग० ८९ । १८-१९) । दुर्योधनको समझानेके लिये श्रीकृष्णसे अनुरोध (उद्योग० १२४ । २–७) । दुर्योधनको समझाना (उद्योग० १२५ । २३–२७) । गान्धारीसे दुर्योधनकी उद्दण्डता बताना (उद्योग० १२९ । ७-८) । श्रीकृष्णको कैद करनेसे दुर्योधनको रोकना (उद्योग० १३० । ३४–३९) । श्रीकृष्णके विश्वरूप-दर्शनके लिये उनसे आँखकी याचना और नेत्र पाकर भगवत्स्वरूप-दर्शनसे कृतार्थ होना (उद्योग० १३१ । १८–२१) । कुरुक्षेत्रमें कौरव-पाण्डवके पड़ाव पड़ जानेपर आगेके समाचारके विषयमें संजयसे पूछना (उद्योग० १५९ । ३) । व्यासजीसे विजयसूचक लक्षणोंके विषयमें पूछना (भीष्म० ३ । ६४) । संजयसे पृथ्वीकी महिमा पूछना (भीष्म० ४ । ३—८) । संजयसे भीष्मकी मृत्युका समाचार सुनकर इनका विलाप (भीष्म० १४ अध्याय) । संजयसे इनका युद्धका सारा वृत्तान्त सुनना (भीष्मपर्वसे शल्यपर्व तक) अपनी सेनाको मारी जाती सुनकर इनकी चिन्ता (भीष्म० ७६ अध्याय) । द्रोणाचार्यकी मृत्यु सुनकर इनका शोकसे व्याकुल होना (द्रोण० अध्याय ९ से १० तक) । इनके द्वारा श्रीकृष्ण और अर्जुनकी महिमाका वर्णन (द्रोण० ११ अध्याय) । अर्जुनकी जयद्रथवधकी प्रतिज्ञापर इनका विलाप करना (द्रोण० ८५ अध्याय) । सात्यकिद्वारा अपनी सेनाका संहार सुनकर विषाद करना (द्रोण० ११४ । १—४६) । इनके द्वारा भीमसेनके बलका वर्णन और अपने पुत्रोंकी निन्दा (द्रोण० १३५ । १—२४) । संजयसे कर्णद्वारा अर्जुनपर शक्ति न छोड़े जानेका कारण पूछना (द्रोण० १८२ । १—१०) । कर्णकी मृत्यु सुनकर शोकाकुल होना (कर्ण० ४ अध्याय) । कर्णकी मृत्यु सुनकर विलाप करना और उसके वधका विस्तृत वर्णन करनेके लिये संजयसे कहना (कर्ण० अध्याय ८ से ९ तक) । कर्णवधका समाचार सुनकर मोहित होना (कर्ण० ९६ । ५४) । शल्य और दुर्योधनके वधका समाचार सुनकर मूर्छित होना (शल्य० १ । ३९-४०) । इनका विलाप करना और युद्धका समाचार पूछना (शल्य० २ अध्याय) । युद्धकी समाप्तिपर इनका विलाप (स्त्री० १ । १०—२१) । व्यासजीसे अपना दुःख बताकर विलाप करना (स्त्री० ८ । ६–११) । संजयकी बात सुनकर इनका मूर्छित होना (स्त्री० ९ । ८) । स्त्रियों और प्रजालोगोंके साथ रण-भूमिमें जानेके लिये नगरसे बाहर निकलना (स्त्री० १० । १६) । भीमसेनकी लोहमयी मूर्तिको तोड़ना (स्त्री० १२ । १७) । पाण्डवोंको हृदयसे लगाना (स्त्री० १३ । १७) । युधिष्ठिरसे मरे हुए लोगोंकी संख्या और गतिके विषयमें प्रश्न करना (स्त्री० २६ । ८, ११, १८) । युधिष्ठिरसे मरे हुए लोगोंके दाह-संस्कार करनेको कहना (स्त्री० २६ । २१–२३) । युद्धमें मारे गये सगे-सम्बन्धियोंका श्राद्ध करना (शान्ति० ४२ । २-३) । दुर्योधनको शीलका उपदेश (शान्ति० १२४ अध्याय) । शोकविह्वल युधिष्ठिरको समझाना (आश्व० १ । ८—२०) । भाइयोंसहित युधिष्ठिर तथा कुन्ती आदि देवियोंके द्वारा गान्धारीसहित धृतराष्ट्रकी सेवा (आश्रम० १ अध्याय) । पाण्डवोंका गान्धारीसहित धृतराष्ट्रके अनुकूल बर्ताव (आश्रम० २ अध्याय) । भीमकी मर्मभेदिनी बातोंसे व्यथित हुए धृतराष्ट्र-का गान्धारीसहित वनमें जानेका उद्योग एवं युधिष्ठिरसे अनुमति देनेके लिये अनुरोध (आश्रम० ३ । १—४०) । राजा धृतराष्ट्रका उपवाससे दुर्बल होनेके कारण बोलनेमात्रसे

थककर गान्धारीका सहारा ले अचेत सा होकर लेट जाना, राजा युधिष्ठिरके हाथ फेरनेसे इनका सचेत होना और उनसे पुनः हाथ फेरने और हृदयसे लगानेके लिये कहना (आश्रम० ३ । ६१–७३) । इनका युधिष्ठिरको हृदयसे लगाकर उनका मस्तक सूँघना और उनसे तपस्याके लिये पुनः अनुमति माँगना । युधिष्ठिरका इनसे अन्न ग्रहण करनेके लिये कहना और इनका वनमें जानेकी अनुमति दे देनेकी शर्तपर ही भोजन करनेको उद्यत होना (आश्रम० ३ । ७५–८६) । व्यासजीके समझानेपर युधिष्ठिरका धृतराष्ट्रको वनमें जानेकी अनुमति देना और उनसे भोजन करनेकी प्रार्थना करना (आश्रम० ४ अध्याय) । धृतराष्ट्रद्वारा राजा युधिष्ठिरको राजनीतिका उपदेश (आश्रम० अध्याय ५ से ७ तक) । धृतराष्ट्रका कुरुजाङ्गलदेशकी प्रजासे वनमें जानेकी आज्ञा माँगना और अपने अपराधोंके लिये क्षमा-प्रार्थना करना (आश्रम० अध्याय८से९तक) । प्रजाकी ओरसे साम्ब नामक ब्राह्मणका धृतराष्ट्रको उत्तर देना (आश्रम० १० अध्याय) । धृतराष्ट्रका युधिष्ठिरसे श्राद्ध करनेके लिये धन माँगना (आश्रम० ११ । १–६) । युधिष्ठिरका धृतराष्ट्रको यथेष्ट धन देनेकी स्वीकृति प्रदान करना (आश्रम० १२ । ४-५) । विदुरका धृतराष्ट्रको युधिष्ठिरका उदारता-पूर्ण उत्तर सुनाना (आश्रम० १३ अध्याय) । राजा धृतराष्ट्रके द्वारा मृत व्यक्तियोंके लिये श्राद्ध एवं विशाल दानयज्ञका अनुष्ठान (आश्रम० १४ अध्याय) । गान्धारीसहित धृतराष्ट्रका वनको प्रस्थान, कुन्तीका गान्धारीका हाथ अपने कंधेपर रखकर जाना, पाण्डवों, द्रौपदी आदि स्त्रियों और पुरवासियोंका रोते हुए इनके पीछे-पीछे जाना (आश्रम० १५ अध्याय) । राजा धृतराष्ट्रका पुरवासियोंको लौटाना, कृपाचार्य और युयुत्सुको युधिष्ठिरके हाथों सौंपना (आश्रम० १६ । २–५) । कुन्तीसहित गान्धारी और धृतराष्ट्र आदिका वनके मार्गमें गङ्गातटपर निवास करना (आश्रम० १८ । १६–२५) । धृतराष्ट्र आदिका गङ्गातटसे कुरुक्षेत्रमें जाना और शतयूपके आश्रमपर निवास करना (आश्रम० १९ अध्याय) । नारदजीका धृतराष्ट्रकी तपस्याविषयक श्रद्धाको बढ़ाना और इन्हें मिलनेवाली गतिका भी वर्णन करना (आश्रम० २० अध्याय) । धृतराष्ट्र आदिके लिये पुरवासियों तथा पाण्डवोंकी चिन्ता (आश्रम० २१ अध्याय) । पाण्डवों तथा पुरवासियोंका वनमें जाकर कुन्ती और गान्धारीसहित धृतराष्ट्रके दर्शन करना (आश्रम० २५ अध्याय) । धृतराष्ट्र और युधिष्ठिरकी बातचीत (आश्रम० २६ । १—१७) । धृतराष्ट्रके पास महर्षि व्यासका आगमन, इनसे कुशल पूछते हुए उनके द्वारा विदुर और युधिष्ठिरकी धर्मरूपताका प्रतिपादन तथा इनसे अभीष्ट वस्तु माँगनेके लिये आदेश प्रदान करना (आश्रम० २८ अध्याय) । धृतराष्ट्रका व्यासजीसे अपने मानसिक शोक एवं अशान्तिका वर्णन करना (आश्रम० २९ । २३–३४) । व्यासजीका धृतराष्ट्र आदिके पूर्वजन्मका परिचय देना तथा उनकी आज्ञासे इन सबका गङ्गातटपर जाना (आश्रम० ३१ अध्याय) । व्यासजीकी कृपासे दिव्य दृष्टि पाकर धृतराष्ट्रका गङ्गाजलसे प्रकट हुए अपने पुत्रों और सगे-सम्बन्धियोंका दर्शन करना एवं प्रसन्न होना (आश्रम० ३२ अध्याय) । व्यासजीकी आज्ञासे धृतराष्ट्र आदिका पाण्डवोंको विदा करना (आश्रम० ३६ अध्याय) । कुन्ती, गान्धारी-सहित धृतराष्ट्रकी तीव्र तपस्या एवं गङ्गाद्वारके वनमें इनका दावानलसे दग्ध हो जाना (आश्रम० ३७ । १०–३२) । धृतराष्ट्र आदिकी हड्डियोंका गङ्गामें प्रवाह तथा इनका श्राद्ध-कर्म (आश्रम० ३९ अध्याय) । स्वर्गलोकमें जानेपर गान्धारीसहित धृतराष्ट्रका धनाध्यक्ष कुबेरके दुर्लभ लोकोंको प्राप्त करना (स्वर्गा० ५ । १४) ।

महाभारतमें आये हुए धृतराष्ट्रके नाम—आजमीढ, अम्बिकासुत, आम्बिकेय, भारत, भरतशार्दूल, भरतश्रेष्ठ, भरतर्षभ, भरतसत्तम, कौरव, कौरवश्रेष्ठ, कौरवराज, कौरवेन्द्र, कौरव्य, कुरुशार्दूल, कुरुश्रेष्ठ, कुरूद्वह, कुरुकुलश्रेष्ठ, कुरुकुलोद्वह, कुरुमुख्य, कुरुनन्दन, कुरुप्रवीर, कुरुपुङ्गव, कुरुराज, कुरुसत्तम, कुरुवंश-विवर्धन, कुरुवीर, कुरुवृद्ध, कुरुवृद्धवर्य, वैचित्रवीर्य, प्रज्ञाचक्षु आदि ।

(२) कश्यप और कद्रूसे उत्पन्न हुआ एक नाग (आदि० ३५ । १३) । यह वरुणकी सभामें उपस्थित होकर उनकी उपासना करता है (सभा० ९ । ९) । नागोंद्वारा पृथ्वीके दोहनके समय यह दोग्धा बनाया गया था (द्रोण० ६९ । २२) । इसे शिवजीके रथके ईषादण्डमें स्थान दिया गया था (कर्ण० ३४ । २८) । बलरामजीके शरीरत्यागके समय उन भगवान् अनन्त नागके स्वागतके लिये यह प्रभास-क्षेत्रके समुद्रमें आया था (मौसल० ४ । १५) ।

(३) एक देवगन्धर्व, जो कश्यपपत्नी मुनिका पुत्र है (आदि० ६५ । ४२) । यह अर्जुनके जन्ममहोत्सवमें आया था (आदि० १२२ । ५५) । इसे देवराज इन्द्रने अपना दूत बनाकर मरुत्तके पास यह कहनेके लिये भेजा था कि 'राजन् ! तुम बृहस्पतिको आचार्य बनाओ (संवर्तको नहीं) । अन्यथा तुमपर वज्रका प्रहार करूँगा ।' धृतराष्ट्रने वहाँ जाकर इन्द्रका संदेश सुनाया था (आश्व० १० । २–८) गन्धर्वराज धृतराष्ट्र ही भूतलपर धृतराष्ट्रके रूपमें उत्पन्न हुआ था (स्वर्गा०

४ । १५) । (४) भरतवंशी महाराज कुरुके पौत्र एवं जनमेजयके प्रथम पुत्र (आदि० ९४ । ५६) । इनके कुण्डिक आदि बारह पुत्र थे (आदि० ९४ । ५८-६०) ।

धृतराष्ट्री-ताम्राकी पुत्री, इसने सभी प्रकारके हंसों, कलहंसों तथा चक्रवाकोंको जन्म दिया था (उद्योग० ८३ । ५६, ५८) ।

धृतवती (या घृतवती)-एक प्रमुख नदी, जिसका जल भारतीय प्रजा पीती है (भीष्म० ९ । २३, ३१) ।

धृतवर्मा-त्रिगर्तराज सूर्यवर्मा और केतुवर्माका भाई, जिसने सूर्यवर्माके पराजित होने और केतुवर्माके मारे जानेपर स्वयं ही आगे बढ़कर अश्वमेधीय अश्वकी रक्षाके लिये आये हुए अर्जुनके साथ लोहा लिया था । इसके द्वारा अर्जुनपर बाणवर्षा । बाण चलानेमें उसके हाथोंकी फुर्ती देखकर अर्जुनद्वारा मन-ही-मन उसकी प्रशंसा, उसके तेजस्वी बाणसे अर्जुनके हाथमें गहरी चोट लगनेके कारण गाण्डीव धनुषका गिर जाना; इससे धृतवर्माका अट्टहास करना, तब रोषमें भरे हुए अर्जुनका बाणोंकी वर्षा करना, धृतवर्माको बचानेके लिये त्रिगर्त योद्धाओंका अर्जुनपर धावा बोलना और अर्जुनद्वारा अठारह त्रैगर्त वीरोंके मारे जानेपर धृतवर्मा आदि सभी त्रिगर्तोंका दास बनकर अर्जुनकी शरणमें आना (आश्व० ७४ । १६-३३) ।

धृतसेन-कौरवपक्षका एक राजा (शल्य० ६ । ३) ।

धृति-(१) दक्ष प्रजापतिकी एक पुत्री, जो धर्मकी पत्नी थीं (आदि० ६६ । १४) । नकुल तथा सहदेवकी माता माद्री इन्हींका अवतार मानी जाती हैं (आदि० ६७ । १६०) । (२) एक सनातन विश्वेदेव (अनु० ९१ । ३०) ।

धृतिमान्-कुशद्वीपका पाँचवाँ वर्ष (खण्ड) (भीष्म० १२ । १३) ।

धृतिमान् (अङ्गिरा)-एक अग्नि, जिनके लिये दर्श तथा पौर्णमास यागोंमें हविष्य-समर्पणका विधान पाया जाता है, उन अग्निदेवका नाम विष्णु है । वे अङ्गिरा-गोत्रीय माने गये हैं और भानुके तीसरे पुत्र हैं (वन० २२१ । १२) ।

धृष्टकेतु-चेदिराज शिशुपालका पुत्र, जो हिरण्यकशिपुके पुत्र अनुह्लादके अंशसे उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७ । ७) । शिशुपालके मारे जानेपर उसके पुत्र धृष्टकेतुको चेदिदेशके राजसिंहासनपर अभिषिक्त किया गया (सभा० ४५ । ३६) । इसका वनमें पाण्डवोंसे मिलनेके लिये आना (वन० १२ । २) । इसका अपनी बहिन करेणुमतीको लेकर अपनी नगरीको प्रस्थान (वन० २२ । ५०) । इसका पुनः वनमें पाण्डवोंसे भेंट करना (वन० ५१ । १७) । पाण्डवोंकी ओरसे इसे रण-निमन्त्रण दिया गया (उद्योग० ४ । ८; उद्योग० ४ । २०) । यह एक अक्षौहिणी सेनाके साथ पाण्डवोंके पास आया (उद्योग० १९ । ७) । संजयद्वारा इसकी वीरताका वर्णन (उद्योग० ५० । ४४) । युधिष्ठिरकी सेनाके सात सेनापतियोंमेंसे एकके पदपर इसका अभिषेक किया गया था (उद्योग० १५७ । ११-१३) । प्रथम दिनके संग्राममें बाह्लीकके साथ इसका युद्ध (भीष्म० ४५ । ३८-४१) । भूरिश्रवाके साथ इसका युद्ध और पराजय (भीष्म० ८४ । ३९) । पौरवके साथ द्वन्द्वयुद्ध (भीष्म० ११६ । १३-२४) । धृतराष्ट्रद्वारा इसकी वीरताका वर्णन (द्रोण० १० । ४३) । कृपाचार्यके साथ युद्ध (द्रोण० १४ । ३३-३४) । इसके रथके घोड़ोंका वर्णन (द्रोण० २३ । २३-२४) । अम्बष्ठके साथ युद्ध (द्रोण० २५ । ४९-५०) । इसका वीरधन्वाके साथ युद्ध (द्रोण० १०६ । १०) । इसके द्वारा वीरधन्वाका वध (द्रोण० १०७ । १७) । इसका द्रोणाचार्यके साथ युद्ध और उनके द्वारा पुत्रसहित इसका वध (द्रोण० १२५ । २३-४१) । व्यासजीके आवाहन करनेपर परलोकवासी कौरव-पाण्डव वीरोंके साथ यह भी गङ्गाजलसे प्रकट हुआ था (आश्रम० ३२ । ११) । स्वर्गलोकमें जाकर यह विश्वेदेवोंमें मिल गया था (स्वर्गा० ५ । १५-१८) ।

महाभारतमें आये हुए धृष्टकेतुके नाम-चैद्य, चेदिज, चेदिप, चेदिपति, चेदिपुङ्गव, चेदिराट्, चेदिराज, शैशुपालि, शिशुपालसुत, शिशुपालात्मज आदि ।

धृष्टद्युम्न-पाञ्चालराज द्रुपदके अग्नितुल्य तेजस्वी पुत्र । यज्ञकर्मका अनुष्ठान होते समय प्रज्वलित अग्निसे धृष्टद्युम्नका प्रादुर्भाव हुआ । ये द्रोणाचार्यका विनाश करनेके लिये धनुष लेकर प्रकट हुए थे । फिर उसी वेदीसे द्रौपदी प्रकट हुई थी; अतः इन्हें उसका 'अग्रज बन्धु' कहा जाता है (आदि० ६३ । १०८-११०) । ये अग्निके अंशसे उत्पन्न हुए थे (आदि० ६७ । १२६) । याजने द्रुपदकी रानीको यज्ञका हविष्य ग्रहण करनेके लिये बुलाया । महारानीने शुद्ध होकर आनेकी इच्छा प्रकट की और थोड़ी देरतक महर्षिको प्रतीक्षाके लिये कहा; परंतु याजने कहा-'रानी ! इस हविष्यको याजने तैयार किया और उपयाजने इसका संस्कार किया है; फिर इससे संतानकी उत्पत्तिरूप अभीष्टकी सिद्धि कैसे नहीं होगी ? तुम इसे लेने आओ या न आओ ।' इतना कहकर ज्यों ही याजने उस संस्कारयुक्त हविष्यकी अग्निमें आहुति दी, त्यों ही उस प्रज्वलित अग्निसे ये एक तेजस्वी कुमार-

रूपसे प्रकट हुए (आदि० १६६ । ३६--३९) । इनके अङ्गोंकी कान्ति अग्निकी ज्वालाके समान उद्भासित हो रही थी। इनके मस्तकपर किरीट, अङ्गोंमें उत्तम कवच तथा हाथोंमें खड्ग, बाण और धनुष शोभा पाते थे। ये गर्जना करते हुए एक श्रेष्ठ रथपर जा चढ़े मानो युद्धकी यात्राके लिये जा रहे हों, इससे पाञ्चालोंको बड़ी प्रसन्नता हुई। ये 'साधु-साधु' कहकर इन्हें शाबाशी देने लगे (आदि० १६६ । ४०-४१) । इनके जन्मके समय आकाशवाणी हुई थी–'यह कुमार पाञ्चालोंका भय दूर करेगा; द्रोणवधके लिये इसका प्राकट्य हुआ है (आदि० १६६ । ४२-४३) । इनका धृष्टद्युम्न नाम होनेका कारण (आदि० १६६ । ५२) । द्रोणाचार्यद्वारा इनकी शिक्षा (आदि० १६६ । ५५) । द्रौपदीके स्वयंवरमें इनकी घोषणा (आदि० १८४ । ३५-३६) । इनका द्रौपदीको स्वयंवरमें आये हुए राजाओंका परिचय देना (आदि० १८५ अध्याय) । इनके द्वारा गुप्तरूपसे पाण्डवोंके व्यवहारोंका निरीक्षण (आदि० १९१ । १-१२) । द्रौपदीके सम्बन्धमें चिन्तित हुए द्रुपदको इनका आश्वासन देना (आदि० १९२ । १२) । व्यासजीके पूछनेपर द्रौपदीके विवाहके सम्बन्धमें इनकी सम्मति (आदि० १९५ । १०) । युधिष्ठिरके यहाँसे राजा विराटके विदा होनेपर धृष्टद्युम्न उन्हें पहुँचाने गये थे। (सभा० ४५ । ४७) । दुर्योधनद्वारा इनकी स्थिरताका वर्णन (सभा० ५३ । १९) । इनके द्वारा रोती हुई द्रौपदीको आश्वासन (वन० १२ । १३४-१३५) । इनका द्रौपदीकुमारोंको साथ लेकर अपनी राजधानीको प्रस्थान (वन० २२ । ४९) । इन्होंने काम्यकवनमें जाकर पाण्डवोंसे भेंट की (वन० ५१ । १७) । उपप्लव्य नगरमें अभिमन्युके विवाहमें इनका आगमन (विराट० ७२ । १८) । संजयद्वारा इनकी वीरताका वर्णन (उद्योग० ५० । १६) । ये पाण्डवदलके प्रधान सेनापति चुने गये थे (उद्योग० १५७ । १३) । इनका उलूकसे दुर्योधनके संदेशका उत्तर देना (उद्योग० १६३ । ४५-४७) । इनके द्वारा अपने पक्षके महारथियोंको समान प्रतिपक्षीके साथ युद्ध करनेका आदेश और उनका नामनिर्धारण (उद्योग० १६४ । ५-१०) । प्रथम दिनके संग्राममें द्रोणाचार्यके साथ इनका द्वन्द्व-युद्ध (भीष्म० ४५ । ३१-३४) । भीष्मके साथ युद्ध (भीष्म० ४७ । ३१) । दूसरे दिनके युद्धके लिये इनके द्वारा क्रौञ्चारुणव्यूहका निर्माण (भीष्म० ५० । ४२-५७) । द्रोणाचार्यके साथ घोर युद्ध (भीष्म० ५३ अध्याय) । कलिङ्गोंसे युद्ध करते समय भीमसेनकी रक्षामें पहुँचना (भीष्म० ५४ । ९९) । अश्वत्थामाके साथ युद्ध (भीष्म० ६१ । १९) । पौरव-पुत्र दमनका वध (भीष्म० ६१ । २०) । शल्यके पुत्रका वध (भीष्म० ६१ । २९) । शल्यके साथ युद्ध और घायल होना (भीष्म० ६२ । ८-१२) । इनके द्वारा मकरव्यूहका निर्माण (भीष्म० ७५ । ४-१२) । प्रमोहनास्त्रद्वारा धृतराष्ट्र-पुत्रोंपर इनकी विजय (भीष्म० ७७ । ४५) । द्रोणाचार्यद्वारा पराजित होना (भीष्म० ७७ । ६९-७०) । इनके द्वारा दुर्योधनकी पराजय (भीष्म० ८२ । ५३) । विन्द-अनुविन्दके साथ युद्ध (भीष्म० ८६ । ६४-६५) । कृतवर्माके साथ द्वन्द्वयुद्ध (भीष्म० ११० । ९-१०; भीष्म० १११ । ४०-४४) । भीष्मवधके लिये अपनी सेनाको प्रोत्साहन (भीष्म० ११० । २०-२३) । भीष्मके साथ युद्ध (भीष्म० ११४ । ३९) । द्रोणाचार्यके साथ द्वन्द्वयुद्ध (भीष्म० ११६ । ४५-५४; द्रोण० ७ । ४८-५४) । धृतराष्ट्रद्वारा इनकी वीरताका वर्णन (द्रोण० १० । ४०-४२, ६०-६२) । सुशर्माके साथ युद्ध (द्रोण० १४ । ३७-३९) । द्रोणाचार्यसे भयभीत युधिष्ठिरको आश्वासन (द्रोण० २० । २२-२३) । दुर्मुखके साथ युद्ध (द्रोण० २० । २६-२९) । इनके रथके घोड़ोंका वर्णन (द्रोण० २३ । ४) । द्रोणपर आक्रमण (द्रोण० ३१ । १७) । इनके द्वारा चन्द्रवर्मा और निषधराज बृहत्क्षत्रका वध (द्रोण० ३२ । ६५-६६) । द्रोणाचार्यके साथ घोर युद्ध (द्रोण० ९५ तथा ९७ अध्याय) । द्रोणाचार्यको मूर्च्छित करके उनके रथपर चढ़ जाना (द्रोण० १२२ । ५६-५८) । द्रोणाचार्यद्वारा पराजय (द्रोण० १२२ । ७१-७२) । भीमसेनके कहनेसे युधिष्ठिरकी रक्षाका भार स्वीकार करना (द्रोण० १२७ । १०-११) । अश्वत्थामाके साथ युद्धमें पराजित होना (द्रोण० १६० । ४१-५३) । द्रोणाचार्यके साथ युद्ध(द्रोण० १७० । २-१२) । इनके द्वारा द्रुमसेनका वध (द्रोण० १७० । २२) । कौरवसेनाकी पराजय (द्रोण० १७१ । ४९-५२) । कर्णद्वारा पराजित होना (द्रोण० १७३ । ७) । द्रोणाचार्यके वधकी प्रतिज्ञा (द्रोण० १८६ । ४६) । दुःशासनको हराकर द्रोणाचार्यपर आक्रमण (द्रोण० १८९ । १-६) । द्रोणाचार्यके साथ भयंकर संग्राम (द्रोण० अध्याय १९१ से १९२ । २६-३५ तक) । इनके द्वारा द्रोणाचार्यका सिर काटा जाना (द्रोण० १९२ । ६२-६३) । इनका अर्जुनके समक्ष द्रोणवधरूपी अपने कृत्यका समर्थन करना (द्रोण० १९७ । २४-४४) । सात्यकिके कटु वचनोंका उत्तर देना (द्रोण० १९८ । २५-४५) । अश्वत्थामाद्वारा पराजय (द्रोण० २०० । ४३) । इनके द्वारा गजसेनाका संहार (कर्ण० २२ । २-७) ।

कृपाचार्यसे भयभीत होना (कर्ण० २६ । १६–१८)। कृतवर्माको मूर्च्छित करना (कर्ण० ५४। ४० के बाद दा० पाठ)। दुर्योधनको युद्धमें परास्त करना (कर्ण० ५६। ३४-३५)। कर्णके साथ युद्ध (कर्ण० ५९। ७–१४)। अश्वत्थामाके साथ युद्धमें जीते-जी पकड़ा जाना (कर्ण० ५९। ३९–५३)। दुःशासनके काबूमें पड़ जाना (कर्ण० ६१। ३३)। कृपाचार्यके साथ युद्ध (शल्य० ११।३८)। इनके द्वारा शाल्वके हाथीका वध (शल्य० २०। २५)। इनके द्वारा दुर्योधनकी पराजय (शल्य० २५। २३)। अश्वत्थामाद्वारा इनका रात्रिमें वध (सौप्तिक० ८। २६)। इनका दाह-संस्कार (स्त्री० २६। ३४)। इनका श्राद्धकर्म (शान्ति० ४२। ४-५)। स्वर्गमें जाकर ये अग्निके स्वरूपमें मिल गये (स्वर्गा०५। २१)।

महाभारतमें आये हुए धृष्टद्युम्नके नाम–द्रौपदि, द्रोणहन्ता, पाञ्चाल, पाञ्चालदायाद, पाञ्चालकुलवर्धन, पाञ्चालमुख्य, पाञ्चालपुत्र, पाञ्चालराट, पाञ्चालराज, पाञ्चालतनय, पाञ्चाल्य, पाञ्चाल्यपुत्र, पार्षत, यज्ञसेनसुत, याज्ञसेनि आदि।

धृष्णु–(१) वैवस्वत मनुके द्वितीय पुत्र (आदि० ७५। १५)। (२) एक प्रजापति, जो कविके पुत्र हैं। इनको शुभलक्षण एवं ब्रह्मज्ञानी माना गया है (अनु० ८५। १३३)।

धेनुक–(१) एक भयङ्कर दैत्य, जो तालवनमें निवास करता था और गधेका रूप धारण करके रहता था। इसे बलदेवजीने मार गिराया था (सभा० ३८। २९ के बाद, पृष्ठ ८००, कालम २)। (२) एक भारतीय जनपद (भीष्म० ५०। ५१)।

धेनुकाश्रम–एक तीर्थ, यहाँ मृत्युने तप किया था (द्रोण० ५४। ८; शान्ति० २५८। १५)।

धेनुतीर्थ–एक त्रिभुवनविख्यात तीर्थ; वहाँ तिलमयी धेनुका दान करनेसे सब पापोंसे छुटकारा मिलता है और सोमलोककी प्राप्ति होती है (वन० ८४। ८७)।

धौतमूलक–चीनोंके कुलमें उत्पन्न हुआ एक कुलाङ्गार नरेश (उद्योग० ७४। १४)।

धौम्य–(१) उत्कोचक तीर्थमें तपस्या करनेवाले एक महर्षि, देवल ऋषिके अनुज, पाण्डवोंके पुरोहित (आदि० १८२। २)। पाण्डवोंद्वारा इनका पुरोहितरूपमें वरण (आदि० १८२। ६)। इन्होंने वेदीपर प्रज्वलित अग्निकी स्थापना करके उसमें मन्त्रोंद्वारा आहुति दी और युधिष्ठिरको बुलाकर कृष्णाके साथ उनका गँठबन्धन कर दिया। उन दोनों दम्पतिका पाणिग्रहण कराकर उनसे अग्निकी परिक्रमा करवायी और अन्य शास्त्रोक्त विधियोंका अनुष्ठान करके उनका विवाह-कार्य सम्पन्न कर दिया। इसी प्रकार क्रमशः सभी पाण्डवोंका विवाह द्रुपदकुमारी कृष्णाके साथ कराया (आदि० १९७। ११–१४)। इन्होंने पाण्डवोंके पुत्रोंके उपनयनादि संस्कार कराये थे (आदि० २२०। ८७)। युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें ये होता थे (सभा० ३३। ३५)। इन्होंने युधिष्ठिरका अभिषेक किया (सभा० ५३। १०)। पाण्डवोंके वनगमनके समय महर्षि धौम्य हाथमें कुशा लेकर उनके आगे-आगे जाते तथा मार्गमें यमसाम और रुद्रसामका गान करते थे (सभा० ८०। ८)। इनकी सूर्योपासनाके लिये युधिष्ठिरको प्रेरणा (वन० ३। ५–१२)। इनके द्वारा सूर्यके अष्टोत्तरशत नामोंका वर्णन (वन० ३। १६–१८)। किर्मीरकी मायाका नाश (वन० ११। २०)। इनके द्वारा युधिष्ठिरके प्रति तीर्थोंका वर्णन (वन० अध्याय ८७ से ९० तक)। युधिष्ठिरके प्रति ब्रह्मा, विष्णु आदिके स्थानों तथा सूर्य-चन्द्रमाकी गतिका वर्णन (वन० १६३ अध्याय)। द्रौपदीका अपहरण करनेपर जयद्रथको फटकारना और द्रौपदीकी रक्षाके लिये प्रयत्न करना (वन० २६८। २६-२७)। अज्ञातवासके लिये चिन्तित हुए युधिष्ठिरको समझाना (वन० ३१५। ११–२१)। पाण्डवोंको राजाके यहाँ रहनेका ढंग बताना (विराट० ४। ७–५१)। अज्ञातवासके लिये यात्रा करते समय पाण्डवोंकी अग्निहोत्रसम्बन्धी अग्निको प्रज्वलित करके धौम्यने उनकी समृद्धिवृद्धि, राज्यलाभ तथा भूलोक-विजयके लिये वेद-मन्त्र पढ़कर हवन किया। जब पाण्डव चले गये, तब जपयज्ञ करनेवालोंमें श्रेष्ठ धौम्यजी उस अग्निहोत्रसम्बन्धी अग्निको साथ लेकर पाञ्चालदेशमें चले गये (विराट० ४। ५४–५७)। इन्होंने युद्धमें मारे गये पाण्डवपक्षके सगेसम्बन्धी जनोंका दाहकर्म कराया था (स्त्री० २६। २४–३०)। युधिष्ठिरद्वारा धार्मिक कार्योंके लिये नियुक्ति (शान्ति० ४१। १४)। इनके द्वारा धर्मके रहस्यका वर्णन (अनु० १२७। १५-१६)। (२) एक ऋषि, जिन्होंने रातमें सत्यवान्‌के न लौटनेपर उनके पिता राजा द्युमत्सेनको सत्यवान्‌के जीवित होनेका विश्वास दिलाया था (वन० २९८। १९)। हस्तिनापुरके मार्गमें श्रीकृष्णसे इनकी भेंट (उद्योग० ८३। ६४ के बाद दा० पाठ)। ये शिवभक्त उपमन्यु ऋषिके छोटे भाई हैं (अनु० १४। ११२)।

धौम्र–एक प्राचीन ऋषि, जो शरशय्यापर पड़े हुए भीष्मजीके पास आये थे (शान्ति० ४७। ११)।

ध्रुव–(१) धर्मद्वारा धूम्राके गर्भसे उत्पन्न द्वितीय वसु (आदि० ६६। १९)। (२) नहुषके पुत्र। ययाति-

के भ्राता (आदि० ७५ । ३०) । (३) एक राजा, जो यमसभामें बैठकर सूर्यपुत्र यमकी उपासना करते हैं (सभा० ८ । १०) । (४) कौरवपक्षका एक योद्धा । भीमसेनद्वारा इसका वध (द्रोण० १५५ । २७) । (५) युधिष्ठिरका सम्बन्धी और सहायक राजा (द्रोण० १५८ । ३९) । (६) प्रातःसायं स्मरण करनेयोग्य एक राजा, जो महाराज उत्तानपादके पुत्र थे (अनु० १५० । ७८) ।

ध्रुवक–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ६५) ।

ध्रुवरत्ना–स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । ४) ।

ध्वजवती–सूर्यदेवकी आज्ञासे आकाशमें ठहरनेवाली हरिमेधामुनिकी कन्या (उद्योग० ११० । १३) ।

ध्वजिनी–एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ६१) ।

(न)

नकुल–(१) पाण्डुके क्षेत्रज पुत्र । अश्विनीकुमारोंके द्वारा माद्रीके गर्भसे उत्पन्न दो पुत्रोंमेंसे एक; ये दोनों भाई जुड़वें उत्पन्न हुए थे। दोनों ही सुन्दर तथा गुरुजनोंकी सेवामें तत्पर रहनेवाले थे (आदि० १ । ११४; आदि० ६३ । ११७; आदि० ९५ । ६३) । अनुपम रूपशाली तथा परम मनोहर नकुल और सहदेव अश्विनीकुमारोंके अंशसे उत्पन्न हुए थे (आदि० ६७ । १११-११२) । इनकी उत्पत्ति तथा शतशृङ्गनिवासी ऋषियोंद्वारा इनका नामकरण-संस्कार (आदि० १२३ । १७–२१) । वसुदेवके पुरोहित काश्यपद्वारा इनके उपनयन आदि संस्कार तथा राजर्षि शुकद्वारा इनका अस्त्रविद्याका अध्ययन और ढाल-तलवार चलानेकी कलामें निपुणता प्राप्त करना (आदि० १२३ । ३१ के बाद दा० पाठ) । पाण्डुकी मृत्युके पश्चात् माद्रीका अपने पुत्रों नकुल-सहदेवको कुन्तीके हाथोंमें सौंपकर पतिके साथ चितापर आरूढ़ होना (आदि० १२४ अध्याय) । शतशृङ्ग-निवासी ऋषियोंका पाँचों पाण्डवोंको कुन्तीसहित हस्तिनापुर ले जाना और उन्हें भीष्म आदिके हाथोंमें सौंपना (आदि० १२५ अध्याय) । द्रोणाचार्यका पाण्डवोंको नाना प्रकारके दिव्य एवं मानव अस्त्र-शस्त्रोंकी शिक्षा देना (आदि० १३१ । ९) । द्रुपदपर आक्रमण करते समय अर्जुनका माद्रीकुमार नकुल और सहदेवको अपना चक्र-रक्षक बनाना (आदि० १३७ । २७) । द्रोणद्वारा सुशिक्षित किये गये नकुल विचित्र प्रकारसे युद्ध करनेमें कुशल होनेके कारण अपने भाइयोंको बहुत प्रिय थे और अतिरथी कहलाते थे (आदि० १३८ । ३०) । धृतराष्ट्रके आदेशसे कुन्तीसहित पाण्डवोंकी वारणावत-यात्रा, वहाँ उनका स्वागत और लाक्षागृहमें निवास (आदि० अध्याय १४२ से १४५ तक) । लाक्षागृहका दाह और पाण्डवोंका सुरंगके रास्ते निकल जाना, भीमका नकुल-सहदेवको गोदमें लेकर चलना (आदि० १४७ अध्याय) । पाण्डवोंको व्यासजीका दर्शन और उनका एकचक्रा नगरीमें प्रवेश (आदि० १५५ अध्याय) । पाण्डवोंकी पाञ्चालयात्रा (आदि० १६९ अध्याय) । इनका द्रुपदकी राजधानीमें जाकर कुम्हारके यहाँ रहना (आदि० १८४ अध्याय) । पाँचों पाण्डवोंका द्रौपदीके साथ विवाहका विचार (आदि० १९० अध्याय) । पाँचों पाण्डवोंका कुन्तीसहित द्रुपदके घरमें जाकर सम्मानित होना (आदि० १९३ अध्याय) । पाँचों भाइयोंका द्रौपदीके साथ विवाह (आदि० १९७ अध्याय) । विदुरके साथ पाण्डवोंका हस्तिना-पुरमें आना और आधा राज्य पाकर इन्द्रप्रस्थ नगरका निर्माण करना (आदि० २०६ अध्याय) । पाँचों भाइयोंका द्रौपदीके विषयमें नियम-निर्धारण (आदि० २११ अध्याय) । नकुलद्वारा द्रौपदीके गर्भसे शतानीकका जन्म (आदि० २२० । ७९; आदि० ९५ । ७५) । इनका चेदिराजकी कन्या करेणुमतीके साथ विवाह और इनके द्वारा उसके गर्भसे निरमित्रका जन्म (आदि० ९५ । ७९) । इनके द्वारा पश्चिमदिशाके देशोंपर विजय । नकुलके जीतकर लाये हुए खजानेका बोझ दस हजार ऊँट बड़ी कठिनाईसे ढोकर ला सके थे (सभा० ३२ अध्याय) । राजसूय यज्ञके बाद ये गान्धारराज सुबल और उनके पुत्रोंको पहुँचाने गये थे (सभा० ४५ । ४९) । युधिष्ठिरके द्वारा ये जूएके दाँवपर रखे और हारे गये थे (सभा० ६५ । १२) । ये अपने शरीरमें धूल लपेटकर वनकी ओर गये थे (सभा० ८० । १८) । इनकी अर्जुनके लिये चिन्ता (वन० ८० । २३–२६) । जटासुरने इनका अपहरण किया था (वन० १५७ । १०) । इनके द्वारा क्षेमङ्कर, महामुख और सुरथका वध (वन० २७१ । १६–२२) । द्वैतवनमें जल लानेके लिये जाना और सरोवरपर गिरना (वन० ३१२ । १३) । इनका विराट-नगरमें ग्रन्थिक नामसे रहनेकी बात बताना (विराट० ३ । ४) । इनके 'नकुल' नामकी निरुक्ति (विराट० ५ । २५) । राजा विराटके यहाँ रहनेके लिये उनसे प्रार्थना करना (विराट० १२ । ८ के बाद दा० पाठ) । इनका त्रिगर्तोंके साथ युद्ध (विराट० ३३ । ३४) । दूत बनकर जानेके लिये उद्यत हुए श्रीकृष्णसे इनका समयोचित कर्तव्य करनेके लिये निवेदन (उद्योग० ८० अध्याय) । द्रुपदको प्रधान सेनापति बनानेके लिये इनका प्रस्ताव (उद्योग० १५१ । १६) । उलूकसे दुर्योधनके संदेशका उत्तर (उद्योग० १६३ । ३८) । कवच उतारकर कौरवसेनाकी ओर

पैदल ही जाते हुए युधिष्ठिरसे इनका प्रश्न करना (भीष्म० ४३ । १८) । प्रथम दिनके संग्राममें दुःशासनके साथ द्वन्द्व-युद्ध (भीष्म० ४५ । २२–२४) । शल्यके साथ युद्धमें इनका घायल होना (भीष्म० ८३ । ४५ के बाद दा० पाठ) । इनके द्वारा अश्वसेनाका संहार (भीष्म० ८९ । ३२–३४) । इनका शकुनिके साथ युद्ध (भीष्म० १०५ । ११-१२) । विकर्णके साथ द्वन्द्व-युद्ध (भीष्म० ११० । ११-१२; भीष्म० १११ । ३४–३६) । धृतराष्ट्रद्वारा इनकी वीरताका वर्णन (द्रोण० १० । २९-३०) । शल्यके साथ युद्ध (द्रोण० १४ । ३१-२२) । इनके रथके घोड़ोंका वर्णन (द्रोण० २३ । ७) । शकुनिके साथ इनका युद्ध (भीष्म० ९६ । २१–२५) । विकर्णके साथ इनका युद्ध (द्रोण० १०६ । १२) । इनके द्वारा विकर्णकी पराजय (द्रोण० १०७ । ३०) । इनके द्वारा शकुनिकी पराजय (द्रोण० १६९ । १६) । दुर्योधनको युद्धमें पराजित करना (द्रोण० १८७ । ५०–५५) । धृष्टद्युम्नकी रक्षामें जाना (द्रोण० १८९ । ७) । इनके द्वारा भगदत्तके पुत्रके मारे जानेकी चर्चा (कर्ण० ५ । २८) । इनके द्वारा अङ्गराजका वध (कर्ण० २२ । १८) । कर्णसे पराजित हो भागना और उसके द्वारा जीवित छोड़ा जाना (कर्ण० २४ । ४५–५१) । सुषेणके साथ युद्ध (कर्ण० ४८ । ३४–४०) । दुर्योधनके साथ युद्धमें घायल होना (कर्ण० ५६ । ७—१८) । वृषसेनके साथ युद्ध (कर्ण० ६१ । ३६–३९) । कर्णद्वारा पराजय (कर्ण० ६३ । १३) । वृषसेनके साथ युद्ध (कर्ण० ८४ । १९–३५) । इनके द्वारा कर्णके तीन पुत्रों (चित्रसेन, सत्यसेन और सुषेण) का वध (शल्य० १० । १९–५०) । शल्यके साथ युद्ध (शल्य० अध्याय १३ तथा १५ अध्याय) । युधिष्ठिरकी आज्ञासे द्रौपदीको बुलानेके लिये जाना (सौप्तिक० १० । २८) । गृहस्थधर्मकी प्रशंसा करते हुए राजा युधिष्ठिरको समझाना (शान्ति० १२ अध्याय) । युधिष्ठिरद्वारा सेनाध्यक्षके पदपर नियुक्ति (शान्ति० ४१ । १२) । युधिष्ठिरद्वारा इन्हें दुर्मर्षणके राजभवनकी प्राप्ति (शान्ति० ४४ । १०–११) । भीष्मजीसे खड्गकी उत्पत्ति आदिके विषयमें इनका प्रश्न (शान्ति० १६६ । २–६) । युधिष्ठिरके पूछनेपर इनका त्रिवर्गमें अर्थकी प्रधानता बताना (शान्ति० १६७ । २२–२९) । अश्वमेधयज्ञके समय ये भीमसेनके साथ नगरकी रक्षाके कार्यमें नियुक्त थे (आश्व० ७२ । १९) । कुन्तीका वन जाते समय इन्हें युधिष्ठिरको सौंपना (आश्रम० १६ । १५) । वनमें मिलनेके लिये आये हुए नकुलको देखकर कुन्ती बड़ी उतावलीके साथ आगे बढ़ी थीं (आश्रम० २४ । ११) । संजयका ऋषियोंसे इनका परिचय देना (आश्रम० २५ । ८) । इनकी पत्नीका परिचय देना (आश्रम० २५ । १४) । महाप्रस्थानके पथमें इनका गिरना और भीमसेनके पूछनेपर युधिष्ठिरका इनके पतनका कारण बताना (महाप्र० २ । १२–१७) । स्वर्गमें जानेपर युधिष्ठिरका इन्हें देखनेकी इच्छा प्रकट करना (स्वर्गा० २ । १०) । युधिष्ठिरने नकुल, सहदेवको तेजस्वीरूपमें अश्विनीकुमारोंके स्थानपर विराजमान देखा (स्वर्गा० ४ । ९) । (२) युधिष्ठिरके अश्वमेधयज्ञको तुच्छ बतानेवाला एक नेवला (आश्व० ९० अध्याय) ।

नग्नजित्–(१) एक क्षत्रिय राजा, जो 'इषुपाद' नामक दैत्यके अंशसे उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७ । २१) । यह दिग्विजयके समय कर्णद्वारा पराजित हुआ था (वन० २५४ । २१) । यह गान्धारदेशका ही एक राजा था, भगवान् श्रीकृष्णने इसके समस्त पुत्रोंको पराजित किया था (उद्योग० ४८ । ७५) । (२) एक दैत्य, जो प्रह्लादका शिष्य था और भूतलपर राजा 'सुबल' के रूपमें उत्पन्न हुआ था (आदि० ६३ । ११) ।

नग्निका–जिसमें ऋतुधर्म (रजोधर्म) का प्राकट्य न हुआ हो, ऐसी कुमारी कन्या (सभा० ३८ । २९ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ० ७९३) ।

नदीज एक प्राचीन राजा । पाण्डवोंकी ओरसे इन्हें रण-निमन्त्रण भेजनेका निश्चय हुआ था (उद्योग० ४ । १५) ।

नन्द (नन्दक)–(१) धृतराष्ट्रका पुत्र (आदि० ६७ । ९६; आदि० ११६ । ५) । भीमसेनद्वारा इसका वध (कर्ण० ५१ । १९) । (२) एक कश्यपवंशी नाग (उद्योग० १०३ । १२) । (३) गोकुल एवं नन्दगाँवमें रहनेवाले गोपोंके राजा (नन्दबाबा), जो भगवान् श्रीकृष्णके पालक पिता थे (सभा० ३८ । २९ के बाद दा० पाठ) । वसुदेवजीने अपने नवजात बालक श्रीहरिको नन्दगोपके घरमें छिपा दिया था । श्रीकृष्ण बहुत वर्षोंतक नन्दगोपके ही घरमें रहे (सभा० ३८ । पृष्ठ ७९८) । नन्दगोपके कुलमें यशोदाके गर्भसे एक कन्या उत्पन्न हुई थी, जो साक्षात् जगज्जननी दुर्गाका स्वरूप मानी जाती है । युधिष्ठिरने विराटनगरमें जाते समय उसका चिन्तन किया और देवीने प्रत्यक्ष दर्शन देकर उन्हें वर दिया (विराट० ६ अध्याय) । अर्जुनने दुर्गाकी स्तुति करते समय नन्दगोपके कुलमें उत्पन्न दुर्गास्वरूपा उस कन्याका स्तवन किया और देवीद्वारा उन्हें विजयसूचक आशीर्वाद प्राप्त हुआ (भीष्म० २३ अध्याय) । (४) युधिष्ठिरकी ध्वजापर बजनेवाले

दो मृदङ्गोंमेंसे एकका नाम, दूसरे मृदङ्गका नाम उपनन्दक था (वन० २७० । ७) । (५) स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ६४) । (६) स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ६५) । (७) भगवान् विष्णुका एक नाम (अनु० १४९ । ६९) ।

नन्दक-(१) एक कश्यपवंशीय नाग (उद्योग० १०३ । ११) । (२) (नन्द-) धृतराष्ट्रका एक पुत्र, जो द्रौपदीके स्वयंवरमें गया था (आदि० १८५ । ३) । इसे भीमसेनने गहरी चोट पहुँचायी थी (भीष्म० ६४ । १५) (देखिये नन्द नं० १) । (३) भगवान श्रीकृष्णका खड्ग (अनु० १४७ । १५) ।

नन्दन-(१) स्वर्गका एक दिव्य वन, जो अप्सराओंसे सेवित है (वन० ४३ । ३) । नन्दनवनमें जानेके अधिकारी—जो सब प्रकारकी हिंसाका त्याग करके जितेन्द्रियभावसे आवर्तनन्दा और महानन्दा तीर्थका सेवन करता है, उसकी स्वर्गस्थ नन्दनवनमें अप्सराएँ सेवा करती हैं (अनु० २५ । ४५) । जो लोग नृत्य और गीतमें निपुण हैं, कभी किसीसे याचना नहीं करते तथा सज्जनोंके साथ विचरण करते हैं ऐसे लोगोंके लिये ही यह नन्दनवन है (अनु० १०२ । २४) । (२) अश्विनीकुमारोंद्वारा स्कन्दको दिये गये दो पार्षदोंमेंसे एक । दूसरेका नाम वर्धन था (शल्य० ४५ । ३८) । (३) स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ६८) । (४) भगवान् शिवका एक नाम (अनु० १७ । ७६) । (५) भगवान् विष्णुका एक नाम (अनु० १४९ । ६९) ।

नन्दा-(१) धर्मके तीसरे पुत्र हर्षकी पत्नी (आदि० ६६ । ३३) । (२) (अनुमानतः) नैमिषारण्यके आसपास वहाँसे पूर्व दिशामें स्थित एक नदी, इसके पास ही अपरनन्दा भी है । अर्जुन पूर्व दिशाके तीर्थोंमें भ्रमण करते हुए नन्दा और अपरनन्दाके तटपर आये थे (आदि० २१४ । ६-७) । धौम्यने पूर्व दिशाके तीर्थोंके वर्णनके प्रसङ्गमें युधिष्ठिरके समक्ष इसका उल्लेख इस प्रकार किया है—कुण्डोद नामक रमणीक पर्वत बहुत फल-मूल और जलसे सम्पन्न है । जहाँ प्यासे हुए निषधनरेश नलको जल और शान्ति उपलब्ध हुई थी, वहीं तपस्वीजनोंसे सुशोभित पवित्र देववन नामक क्षेत्र है । जहाँ पर्वतके शिखरपर बाहुदा और नन्दा नदियाँ बहती हैं (वन० ८७ । २५-२७) । भाइयोंसहित युधिष्ठिरने लोमशजीके साथ नन्दा और अपरनन्दाकी यात्रा की । वे हेमकूट पर्वतपर आये और वहाँ अद्भुत बातें देखीं । वहाँ हवाके बिना भी बादल उत्पन्न होते और अपने आप हजारों ओले गिरने लगते थे । खिन्न मनुष्य उस पर्वतपर चढ़ नहीं सकते थे । प्रायः प्रतिदिन वहाँ तेज हवा चलती और रोज रोज मेघ वर्षा करता था । सवेरे-शाम उस पर्वतपर अग्निदेव प्रज्वलित दिखायी देते थे । वहाँ मक्खियाँ लोगोंको डंक मारती थीं । यह सब ऋषभ नामक प्राचीन तपस्वी ऋषिके आदेशसे होता है—ऐसा लोमशजीने बताया । नन्दाके तटपर पहले देवतालोग आये थे । उस समय उनके दर्शनकी इच्छासे मनुष्य सहसा वहाँ आ पहुँचे । देवता यह नहीं चाहते थे; अतः उन्होंने उस पर्वतीय प्रदेशको जनसाधारणके लिये दुर्गम बना दिया । तबसे साधारण मनुष्योंके लिये इस ऋषभकूट या हेमकूट पर्वतपर चढ़ना तो दूर रहा, इसे देखना भी कठिन हो गया । जिसने तपस्या नहीं की है, वह इस महान् पर्वतका दर्शन नहीं कर सकता । यहाँ अब भी देवता-ऋषि निवास करते हैं । इसीलिये सायंप्रातः अग्नि प्रज्वलित होती है । यहाँ नन्दामें गोता लगानेसे मनुष्योंका सारा पाप तत्काल नष्ट हो जाता है । युधिष्ठिरने वहाँ स्नान करके कौशिकी (कोसी) तीर्थकी यात्रा की थी (वन० ११० । १-२१) । इस तीर्थमें मृत्युने तपस्या की थी (द्रोण० ४५ । २०-२१) ।

नन्दाश्रम-एक तीर्थ, जहाँ काशिराजकी कन्या अम्बाने कठोर व्रतका आश्रय ले स्नान किया था (उद्योग० १८६ । २६) ।

नन्दि-एक देवगन्धर्व, जो अर्जुनके जन्मकालिक महोत्सवमें सम्मिलित हुए थे (आदि० १२२ । ५६) ।

नन्दिकुण्ड-यहाँ स्नानसे भ्रूणहत्या-जैसे पाप भी निवृत्त हो जाते हैं (अनु० २५ । ६०) ।

नन्दिग्राम-अयोध्या (फैजाबाद) से लगभग चौदह मील दक्षिणका एक ग्राम, जो भरतकुण्डके समीप है । भरतजी यहीं चरणपादुकाका सेवन करते हुए चौदह वर्षोंतक ठहरे रहे (वन० २७७ । ३९) ।

नन्दिनी-(१) कश्यपके द्वारा देवी सुरभिके गर्भसे उत्पन्न एक गौ, जो नन्दिनीके नामसे विख्यात थी (आदि० ९९ । ८) । यह गौ समस्त जगत्पर अनुग्रह करनेके लिये प्रकट हुई थी और सम्पूर्ण कामनाओंको देनेवालोंमें श्रेष्ठ थी । वरुणपुत्र धर्मात्मा वसिष्ठने इसे अपनी होमधेनुके रूपमें प्राप्त किया था (आदि० ९९ । ९) । मुनियोंद्वारा सेवित पवित्र एवं रमणीय तापस वनमें यह गौ निर्भय होकर चरती रहती थी । इस नन्दिनी नामक गायकी शील-सम्पत्ति देखकर एक वसुपत्नी आश्चर्यचकित हो उठी (आदि० ९९ । १०-१४) । वसुपत्नीने अपने पतिको वह गौ दिखायी । वसुने अपनी पत्नीसे उसके गुणोंका वर्णन करते हुए कहा-'यह उत्तम गौ दिव्य है । यह उन्हीं महर्षि वशिष्ठकी धेनु है, जिनका यह तपोवन है

जो मनुष्य इसका दूध पी लेगा, वह दस हजार वर्षोंतक युवावस्थाके साथ जीवित रहेगा' (आदि० ९९ । १५–२०) । द्यो नामक वसुके द्वारा नन्दिनीका अपहरण (आदि० ९९ । २८) । इसका अपहरण करनेके कारण वशिष्ठद्वारा वसुओंको शाप (आदि० ९९ । ३२) । इसके लिये विश्वामित्रकी वशिष्ठसे याचना (आदि० १७४ । १६-१७) । विश्वामित्रद्वारा इसका अपहरण (आदि० १७४ । २२) । अपने विभिन्न अङ्गोंसे हूण, यवन, किरात आदि म्लेच्छोंकी सृष्टि करके इसका विश्वामित्रकी सेनाको पराजित करना (आदि० १७४ । ३२—४३) । इसके द्वारा विश्वामित्रकी सेनाके नष्ट होनेका वर्णन (शल्य० ४० । २१-२२) । (२) एक तीर्थ, जहाँ देवसेवित एक कूप है, वहाँ स्नान करनेसे नरमेध-यज्ञका पूर्ण फल प्राप्त होता है (वन० ८४ । १५५) ।

नन्दिवर्धन–सात्यकिके शङ्खका नाम (शल्य० ६१ । ७१ के बाद दाक्षिणात्य पाठ) ।

नन्दिवेग–एक क्षत्रियवंश, जिसमें 'शम' नामवाला कुलाङ्गार नरेश उत्पन्न हुआ था (उद्योग० ७४ । १७) ।

नन्दिसेन–ब्रह्माद्वारा स्कन्दको दिये गये चार पार्षदोंमेंसे एक, शेष तीन पार्षद—लोहिताक्ष, घण्टाकर्ण और कुमुदमाली थे (शल्य० ४५ । २४) ।

नन्दीश्वर–भगवान् शिवके एक दिव्य पार्षद । ये कुबेरकी सभामें उपस्थित होनेवाले भगवान् शिवके वाहन हैं (सभा० १० । ३४) ।

नभ–एक सनातन विश्वेदेव (अनु० ९१ । ३७) ।

नभकानन–एक दक्षिण भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ५९) ।

नभोद–एक सनातन विश्वेदेव (अनु० ९१ । ३४) ।

नमुचि–कश्यपद्वारा दनुके गर्भसे उत्पन्न हुआ एक दानव (आदि० ६५ । २२) । इन्द्रद्वारा इसका वध (वन० २५ । १०; वन० २९२ । ४) । रथारूढ़ इन्द्रद्वारा नमुचिकी पराजयकी चर्चा (वन० १६८ । ८१) । इन्द्रद्वारा प्रतिज्ञाभङ्ग करके मारे जानेपर इसके सिरका उनके पीछे लग जाना (शल्य० ४३ । ३७-३८) । अरुणा-सङ्गममें गोता लगानेसे उस मस्तककी सद्गति (शल्य० ४३ । ४५) । इन्द्रके प्रश्नोंका उत्तर (शान्ति० २२६ । ४—२३) ।

नर–(१) एक भगवत्स्वरूप देवता, जो भगवान् नारायणके सखा हैं और पाण्डुपुत्र अर्जुनको जिनका अवतार बताया गया है (आदि० १, प्रथम श्लोक मङ्गलाचरण) । दैत्योंको अमृतसे वञ्चित करके जब देवताओंको अमृत पिलाया गया, उस समय होनेवाले देवासुर-संग्राममें नारायणसहित भगवान् नरने देवपक्षकी ओरसे आकर अपने दिव्य धनुषसे असुरोंका संहार किया था । उस महाभयङ्कर संग्राममें भगवान् नरने उत्तम सुवर्णभूषित अग्रभागवाले पंखयुक्त बाणोंद्वारा पर्वत-शिखरोंको विदीर्ण करते हुए समस्त आकाशमार्गको आच्छादित कर दिया । अन्ततोगत्वा वह अमृतकी निधि किरीटधारी भगवान् नरको रक्षाके लिये सौंप दी गयी (आदि० १९ । १९—३१) । द्रौपदीने अपनी लाज बचानेके लिये कौरव-सभामें भगवान् श्रीकृष्ण और नरको पुकारा था (सभा० ६८ । ४६) । ये एक प्राचीन ऋषि हैं । इन्होंने बदरिकाश्रममें अनेक सहस्र वर्षोंतक तप किया है (वन० ४० । १) । इन्द्रद्वारा इनके अवतारका वर्णन (वन० ४७ । १०) । जो बदरिकाश्रममें भगवान् नारायणके साथ रहकर तपस्या करते हैं, वे देवेश्वर नर ही अर्जुन हैं (वन० २७२ । २९) । इनके द्वारा दम्भोद्भवकी पराजय और पराजित हुए दम्भोद्भवको इनका उपदेश (उद्योग० ९६ । ३४—३८) । ग्रीवासे प्राणोंका निष्क्रमण होनेपर मनुष्य मुनियोंमें श्रेष्ठ नरका सांनिध्य प्राप्त करता है (शान्ति० ३१७ । ५) । स्वायम्भुव मन्वन्तरके सत्ययुगमें प्रकट हुए भगवान् वासुदेवके चार अवतारोंमें एक भगवान् नर हैं, जो अपने भाई नारायण-के साथ बदरिकाश्रममें जाकर एक सुवर्णमय रथपर आसीन हो तपस्या करते हैं (शान्ति० ३३४ । ९-१०) । नारद और नर-नारायणका संवाद (शान्ति० ३३४ । १३—४५) । भगवान् शङ्करने जो प्रज्वलित त्रिशूल चलाया था, वह दक्ष-यज्ञका विध्वंस करके भगवान् नारायणकी छातीमें आ लगा । तब नारायणने हुंकार किया और वह त्रिशूल लौटकर रुद्रके हाथमें आ पहुँचा । तब रुद्रने नर और नारायणपर आक्रमण किया । नारायण-ने अपने हाथसे रुद्रका गला दबा दिया, अतः वे नील-कण्ठ हो गये । इसके बाद नरने उनपर सींक चलायी । वह परशु बनकर चली । रुद्रने उसे खण्डित कर दिया । अतः ये 'खण्डपरशु' कहलाये (शान्ति० ३४२ । ११०—११७) । श्वेतद्वीपसे लौटे हुए नारदके साथ श्रीनर-नारायणकी बात-चीत (शान्ति० ३४३ अध्याय) । (२) एक गन्धर्व, जो कुबेरकी सभामें रहकर धनाध्यक्ष-की उपासना करते हैं (सभा० १० । १४) । (३) एक दक्षिण भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ६०) । (४) एक प्राचीन नरेश, जिन्होंने जीवनमें कभी मांस नहीं छुआ था (अनु० ११५ । ६४) ।

नरक–(१) दनुका एक पुत्र, जो प्रसिद्ध दानवकुलका प्रवर्तक हुआ (आदि० ६५ । २८) । यह वरुणकी सभामें रहकर उनकी उपासना करता है (सभा० ९ । १२) । इसे इन्द्रने परास्त किया था (वन० १६८ । ८१) । (२) एक जनपद, जहाँके शासक राजा भगदत्त थे (सभा० १४ । १४) । (३) (नरकासुर) एक असुर, जो पृथ्वीका पुत्र होनेके कारण भौम या भौमासुरके नामसे विख्यात था, यह प्राग्ज्योतिषपुरका राजा था । पृथ्वीके भीतर मूर्तिलिङ्गमय इसका निवास था (सभा०३८ । २९ के बाद दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ८०४) । इसके द्वारा त्वष्टाकी पुत्री कशेरुको मूर्च्छित करके उसका अपहरण (सभा० ३८ । पृष्ठ ८०५) । गन्धर्वों, देवताओं और मनुष्योंकी कन्याओं तथा सात अप्सराओंका अपहरण (सभा० ३८ । पृष्ठ ८०५) । इस तरह सोलह हजार कुमारियोंको एकत्र करके मणिपर्वत-पर औदका नामक स्थानमें भौमासुरने कैद कर रक्खा था । मुरके दस पुत्र तथा प्रधान-प्रधान राक्षस उस अन्तःपुरकी रक्षा करते थे । नरकासुरके चार राज्यपाल थे—हयग्रीव, निशुम्भ, पञ्चजन तथा मुर (सभा० ३८ । पृष्ठ ८०५) । इसने देवमाता अदितिके कुण्डलोंका भी अपहरण किया था । इसके राज्यकी सीमापर मुर दैत्यके बनाये हुए छः हजार पाश लगाये गये थे, जिनके किनारोंके भागोंमें छुरे लगे थे । श्रीकृष्णने इन पाशोंको काटकर और मुरको मार राज्यकी सीमामें प्रवेश किया था । इसके बाद बड़े-बड़े पर्वतोंके चट्टानोंके ढेरसे एक बाड़-सी लगायी गयी थी । इस घेरेका रक्षक निशुम्भ था । इसे भी मारकर श्रीकृष्ण आगे बढ़े थे । औदकाके अन्तर्गत लोहित गङ्गाके बीच विरूपाक्ष तथा पञ्चजन नामसे प्रसिद्ध पाँच भयंकर राक्षस उस राज्यके रक्षक थे । उनको भी मारकर श्रीकृष्णको आगे जाना पड़ा । इसके बाद प्राग्ज्योतिषपुर नामक नगर आता था । वहाँ श्रीकृष्णको दैत्योंके साथ विकट युद्ध करना पड़ा । देवासुर-संग्रामका दृश्य छा गया । इस तरह आठ लाख दानवोंको मारकर भगवान् पाताल-गुफामें गये । वहीं नरकासुर रहता था । वहाँ जाकर श्रीकृष्णने कुछ देर युद्ध करनेके बाद चक्रसे उस असुरका मस्तक काट डाला । भगवान् श्रीकृष्णने पृथ्वीके उस पुत्रको ब्रह्मद्रोही, लोककण्टक और नराधम बताया (सभा० ३८ । पृष्ठ ८०७) । भगवान् विष्णुद्वारा इसके वधकी चर्चा (वन० १४२ । २७) । उद्योग-पर्वमें पुनः उस प्रसङ्गका यों वर्णन है—असुरोंका प्राग्ज्यो-तिषपुर नामसे प्रसिद्ध एक भयंकर किला था, जो शत्रुओंके लिये अजेय था । वहाँ भूमिपुत्र महाबली नरकासुर निवास करता था । उसने देवमाता अदितिके सुन्दर मणिमय कुण्डल हर लिये थे । देवता उसे युद्धमें पराजित न कर सके । देवताओंने श्रीकृष्णसे उसके वधके लिये प्रार्थना की । श्रीकृष्णने निर्मोचन नगरकी सीमापर जाकर सहसा मुरके छः हजार लोहमय पाश काट दिये । फिर मुरका वध और राक्षस-समुदायका नाश करके उन्होंने निर्मोचन नगरमें प्रवेश किया । वहीं नरकासुरके साथ उनका युद्ध हुआ । श्रीकृष्णके हाथसे वह असुर मारा गया (उद्योग० ४८ । ८०–८४) । पृथ्वी देवीके अनुरोधसे श्रीकृष्णने उसके पुत्र नरकासुरके लिये वैष्णवास्त्र प्रदान किया था । वह अस्त्र नरकासुरके पुत्र भगदत्तको भी पितासे प्राप्त हुआ था (द्रोण० २९ । ३०–३६) ।

नरराष्ट्र–एक देश या राज्य, जिसे सहदेवने जीता था (सभा० ३१ । ६) ।

नरिष्यन्त–वैवस्वत मनुके पुत्र (आदि० ७५ । १५) ।

नर्मदा–दक्षिण भारत (मध्यप्रदेश) की एक प्रसिद्ध नदी, जो अमरकण्टकसे निकलकर भड़ौंचके पास खंभातकी खाड़ीमें गिरती है । यह वरुणकी सभामें रहकर उनकी उपासना करती है (सभा० ९ । १८) । भाइयोंसहित युधिष्ठिरने नर्मदाकी यात्रा की थी (वन० १२१ । १६) । लोमशने इन्हें बताया—वैदूर्य पर्वतका दर्शन करके नर्मदामें उतरनेसे मनुष्य देवताओंके समान पवित्र लोकोंको प्राप्त कर लेता है । नर्मदातटवर्ती वैदूर्य पर्वतपर सदा त्रेता और द्वापरकी संधिके समान समय रहता है । इसके निकट जाकर मनुष्य सब पापोंसे मुक्त हो जाता है । यह शर्यातिके यज्ञका स्थान है । यहीं इन्द्रने अश्विनी-कुमारोंके साथ बैठकर सोमपान किया था (वन० १२१ । १९–२१) । यह अग्निकी उत्पत्तिका स्थान है (वन० २२२ । २४) । यह माहिष्मतीके राजा दुर्योधनकी पत्नी बनी थी । राजाने इसके गर्भसे एक परम सुन्दरी कन्या उत्पन्न की थी, जो नाम और रूप दोनोंसे सुदर्शना थी (अनु० २ । १८-१९) । इसके जलमें स्नान करके एक पक्षतक निराहार रहनेवाला मनुष्य जन्मान्तरमें राजकुमार होता है (अनु० २५ । ५०) । नर्मदाने किसी समय मान्धाताके पुत्र पुरुकुत्सको अपना पति बनाया था (आश्रम० २० । १२-१३) ।

नल–(१) एक प्राचीन ऋषि, जो इन्द्र-सभामें विराजमान होते हैं (सभा० ७ । १७) । (२) एक प्राचीन नरेश, जो युद्धमें पराजित नहीं होते थे (आदि० १ । २२६–२३५) । ये निषधके राजा वीरसेनके पुत्र थे (वन० ५२ । ५६) । बृहदश्वद्वारा इनके गुणोंका वर्णन (वन० ५३ । २–४) । इनका बहुत-से सुवर्णमय पंखोंसे विभूषित हंसोंको देखकर उनमेंसे एकको पकड़ना

(वन० ५३ । १९)। 'आप मुझे छोड़ दें । मैं आपका प्रिय करूँगा। दमयन्तीके समक्ष आपके गुण बताऊँगा; जिससे वह आपके सिवा दूसरेका वरण नहीं करेगी।' हंसके ऐसा कहनेपर नलका उसे छोड़ देना (वन० ५३। २०–२२)। हंसका दमयन्तीके समक्ष नलके गुणोंका वर्णन और उसका नलके प्रति अनुराग (वन० ५३। २७–३२; वन० ५४। १–४)। स्वयंवरका समाचार सुनकर दमयन्तीमें अनुरक्त हुए राजा नलका विदर्भ देशको प्रस्थान (वन० ५४। २७)। इन्द्र आदि लोकपालोंद्वारा दूत बननेके लिये इनसे अनुरोध (वन० ५४। ३१)। इनका दूत बनकर दमयन्तीके महलमें जाना और दमयन्तीको देवताओंका वरण करनेके लिये समझाना (वन० ५५। ११–२५; वन० ५६। १–१२)। दमयन्तीका नलको ही वरण करनेका निश्चय प्रकट करना और नलका दूतत्व करके लौटकर दमयन्तीका संदेश लोकपालोंको सुनाना (वन० ५६। १५–३०)। स्वयंवरमें दमयन्तीद्वारा नलका पतिरूपमें वरण और लोकपालोंद्वारा नलको वरकी प्राप्ति (वन० ५७। १—३८)। दमयन्तीके साथ विवाह-संस्कार (वन० ५७। ४१)। नलका नगरको लौटना, प्रजापालन, यज्ञ तथा दमयन्तीके साथ विहार करना; दमयन्तीके गर्भसे इन्हें इन्द्रसेन नामक पुत्र और इन्द्रसेना नामवाली कन्याकी प्राप्ति (वन० ५७। ४२–४६)। देवताओंद्वारा नलके गुणोंका गान तथा इनपर कलियुगका कोप (वन० ५८ अध्याय)। नलमें कलिका प्रवेश और इनका पुष्करके साथ जूआ खेलना (वन० ५९ अध्याय)। इनका जूएमें हारकर दमयन्तीके साथ वनको प्रस्थान (वन० ६१। ६)। इनका पक्षियोंको पकड़नेके लिये उनके ऊपर वस्त्र फेंकना (वन० ६१। १४)। इनका सोती हुई दमयन्तीके आधे वस्त्रको फाड़कर पहनना, उसे वनमें अकेली छोड़कर जाना और पुनः लौटकर विलाप करना (वन० ६२। १८–२४)। नलका दमयन्तीको सोती छोड़कर बार-बार जाना और लौटना तथा कलिसे आकर्षित हो करुण विलाप करके चल देना (वन० ६२। २६–२९)। इनके द्वारा कर्कोटक नागकी दावानलसे रक्षा (वन० ६६। ९)। कर्कोटकका नलको डँसकर उनके रूपको बदल देना और इन्हें आश्वासन देना एवं पहलेके रूपकी प्राप्तिके लिये एक वस्त्र प्रदान करना (वन० ६६। ११–२६)। इनकी अयोध्यानरेश ऋतुपर्णके यहाँ बाहुक नामसे अश्वाध्यक्ष-पदपर नियुक्ति, इनकी दमयन्तीके लिये चिन्ता तथा जीवलसे वार्ता (वन० ६७ अध्याय)। इनके द्वारा ऋतुपर्णको अच्छे अश्वका परिचय देना (वन० ७१। १६)। इनकी अश्वसंचालनकी कला (वन० ७१। २३)। इन्हें ऋतुपर्णद्वारा द्यूतविद्याकी प्राप्ति (वन० ७२। २९)। इनके शरीरसे कलियुगका निष्क्रमण (वन० ७२। ३०)। इनका दमयन्तीकी दासी केशिनीसे वार्तालाप (वन० ७४ अध्याय)। दमयन्तीके आदेशसे केशिनीद्वारा बाहुककी परीक्षा, इनकी अपने पुत्र-पुत्रीसे भेंट और उनके प्रति वात्सल्य (वन० ७५ अध्याय)। इनका बाहुकरूपसे दमयन्तीके महलमें जाकर उससे वार्तालाप करना तथा पुनः नलरूपमें प्रकट होना (वन० ७६। ६—४२)। इनका दमयन्तीसे मिलन (वन० ७६। ४६)। इनका ऋतुपर्णके साथ वार्तालाप तथा उन्हें अश्वविद्याका दान (वन० ७७। १०–१७)। इनका पुष्करको जूएमें हराना (वन० ७८। १९)। इनके द्वारा पुष्करको सान्त्वना (वन० ७८। २०–२६)। इनके आख्यानके कीर्तनका महत्त्व (वन० ७९। १०, १५–१७)। ये यमसभामें उपस्थित हो सूर्यपुत्र यमकी उपासना करते हैं (सभा० ८। ११)। ये देवराज इन्द्रके विमानमें बैठकर अर्जुन तथा कौरवोंमें होनेवाले युद्धको देखनेके लिये आये थे (विराट० ५६। १०)। गोदान-महिमाके विषयमें इनका नाम-निर्देश (अनु० ७६। २५)।

महाभारतमें आये हुए नलके नाम—नैषध, निषधाधिप, निषधाधिपति, निषधराजेन्द्र, निषधेश्वर, पुण्यश्लोक, वीरसेनसुत आदि।

(३) एक वानरसेनापति, जो देव-शिल्पी विश्वकर्माका पुत्र था (वन० २८३। ४१)। इसके द्वारा समुद्रपर सौ योजन लंबे और दस योजन चौड़े सेतुका निर्माण (वन० २८२। ४३–४४)। इसका तुण्ड नामक राक्षससे युद्ध (वन० २८५। ९)।

नलकूबर—धनाध्यक्ष कुबेरके पुत्र, जो कुबेरकी सभामें उपस्थित होते हैं (सभा० १०। १९)। (इनके भाईका नाम मणिग्रीव था) इन्होंने अपनी प्रेयसी रम्भापर बलात्कार करनेके कारण रावणको यह शाप दिया था कि 'तू न चाहनेवाली किसी स्त्रीका स्पर्श नहीं कर सकेगा' (वन० २८०। ५९-६०)।

नलसेतु—नलद्वारा बनाया हुआ सेतु (वन० २८३। ४५)।

नलिनी—गङ्गाकी सात धाराओंमेंसे एक धारा (भीष्म० ६। ४८)।

नलोपाख्यानपर्व—वनपर्वका एक अवान्तर पर्व (अध्याय ५२ से ७९ तक)।

नवतन्तु—विश्वामित्रके ब्रह्मवादी पुत्रोंमेंसे एक (अनु० ४। ५८)।

नवराष्ट्र–एक देश, जिसे अर्जुनने अज्ञातवासके लिये चुना था (विराट० १ । १३) । (कुछ लोगोंके मतमें बम्बई प्रदेशके अन्तर्गत भड़ौंच नामक जिलेमें स्थित 'नवसारी' नामक स्थान ही नवराष्ट्र है ।)

नहुष–(१) कश्यप और कद्रूसे उत्पन्न हुआ एक प्रमुख नाग (आदि० ३५ । ९) । (२) आयुके द्वारा स्वर्भानुकुमारीके गर्भसे उत्पन्न पाँच पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ७५ । २५) । इनके पराक्रम और गुणोंका वर्णन (आदि० ७५ । २७-२८) । अपने इन्द्रत्वकालमें इनके द्वारा ऋषियोंके वाहन बनाये जानेकी चर्चा (आदि० ७५ । २९) । इन्होंने तेज, तप, ओज और पराक्रमद्वारा देवताओंको तिरस्कृत करके इन्द्रपदका उपभोग किया था (आदि० ७५ । २९–३०) । इनके पुत्रोंके नाम—यति, ययाति, संयाति, आयाति, अयति और ध्रुव थे (आदि० ७५ । ३०–३१) । ये यमराजकी सभामें उपस्थित होते हैं (सभा० ८ । ८) । अजगर-योनिमें पड़े हुए इनके द्वारा भीमसेनका पकड़ा जाना (वन० १७८ । २८) । भीमसेनके पूछनेपर उनसे अपना परिचय देना (वन० १७९ । १०–२४) । युधिष्ठिरके साथ इनके प्रश्नोत्तर (वन० १८० । ६ से १८१ । ४३ तक) । इनका शापमुक्त होकर पुनः स्वर्गगमन (वन० १८१ । ४४) । इन्होंने कभी वैष्णव याज किया था और उससे पवित्र हो स्वर्गलोककी यात्रा की थी (वन० २५७ । ५) । ये इन्द्रके विमानपर बैठकर अर्जुनका युद्ध देखनेके लिये आये थे (विराट० ५६ । ९) । देवताओंके अनुरोधसे इन्द्र-पदपर इनका अभिषेक (उद्योग० ११ । ९) । शचीको देखकर कामासक्त होना (उद्योग० ११ । १८–१९) । शचीके विषयमें देवताओंको इनका उत्तर (उद्योग० १२।६–८) । शचीको कुछ कालकी अवधि देना (उद्योग० १३ । ७) । सप्तर्षियोंको वाहन बनाना (उद्योग० १५ । २२) । महर्षि अगस्त्यद्वारा इन्हें शाप और इनका स्वर्गसे पतन (उद्योग० १७ । १४–१८) । आयुसे खड्गकी प्राप्ति (शान्ति० १६६ । ७४) । इन्हें पापकी प्राप्ति और ऋषियोंद्वारा इनका उद्धार (शान्ति० २६२ । ४८-५०) । इनकी इन्द्रपद-प्राप्तिसे लेकर अन्ततककी कथा (शान्ति० ३४२ । ४४–५२) । च्यवन ऋषिसे उनके मूल्यके विषयमें संवाद और इनका गौके मूल्यपर संतुष्ट करना (अनु० ५१ । ४–२५) । च्यवनद्वारा इन्हें वर-प्राप्ति (अनु० ५१ । ४४) । इन्होंने लाखोंकी संख्यामें गौओंका दान किया था, इससे इन्हें देवदुर्लभ स्थानकी प्राप्ति हुई (अनु० ८१ । ५-६) । अगस्त्यजीके कमलोंकी चोरी होनेपर इनका शपथ खाना (अनु० ९४ । २८) । इनका ऋषियोंपर अत्याचार (अनु० ९९ । १०–१३) । भृगुजीके शापसे इनका स्वर्गसे पतन (अनु० १०० । २५) । मांसभक्षण-निषेधसे इन्हें परावरतत्त्वका ज्ञान (अनु० ११५ । ६०) ।

महाभारतमें आये हुए नहुषके नाम–देवराज, देवराट्, देवेन्द्र, जगत्पति, नाग, नागेन्द्र, सुराधिपति, सुरपति, सुरेश्वर, सुरेन्द्र आदि ।

नाकुल–भारतवर्षका एक जनपद (भीष्म० ५० । ५३) ।

नागतीर्थ–(१) कुरुक्षेत्रकी सीमामें स्थित एक तीर्थ, जिसका सेवन करनेसे मनुष्य अग्निष्टोम यज्ञका फल पाता और नागलोकमें जाता है (वन० ८३ । १४) । (२) गङ्गाद्वार एवं कनखलके समीप नागराज कपिलका एक तीर्थ, जहाँ स्नान करनेसे मनुष्यको सहस्र कपिलादानका फल प्राप्त होता है (वन० ८४ । ३३) ।

नागदत्त–धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६७ । १०२) । भीमसेनद्वारा इसका वध (द्रोण० १५७ । १९) ।

नागद्वीप–सुदर्शन द्वीपके भीतरका एक द्वीप, जो चन्द्रमण्डल-की शशाकृतिमें कानके रूपमें दीखता है (भीष्म० ६ । ५५) ।

नागधन्वातीर्थ–सरस्वती-तटवर्ती एक प्राचीन तीर्थ, जहाँ वासुकिका निवासस्थान है । यहीं इनका नागराजके पदपर अभिषेक हुआ था । इस तीर्थका विशेष वर्णन (शल्य० ३७ । ३०–३३) ।

नागपुर–नैमिषारण्यमें गोमती-तटपर स्थित एक नगर, जो पद्मनाभ नामक नागका निवासस्थान था (शान्ति० ३५५ । ३)

नागलोक–नागोंका लोक (उद्योग० ९९ । १) । इस लोकके राजा वासुकि हैं (आदि० १२७ । ६०) । यहाँ एक कुण्ड है, जिसका रस पीनेसे एक व्यक्तिमें एक हजार हाथियोंके समान बल हो जाता है (आदि० १२७ । ६८) । इस लोककी स्थिति भूतलसे हजारों योजन दूर है (आश्व० ५८ । ३२-३३) । यह लोक सहस्रों योजन विस्तृत है । इसके चारों ओर दिव्य परकोटे बने हुए हैं । जो चारों ओर सोनेकी ईंटों और मणि-मुक्ताओंसे अलंकृत हैं । वहाँ स्फटिक मणिकी बनी सीढ़ियोंसे सुशोभित बहुत-सी बावड़ियाँ, निर्मल जलवाली अनेकानेक नदियाँ, नाना प्रकारके पक्षियों-से सुशोभित मनोहर वृक्ष देखनेमें आते हैं । नागलोकका बाहरी दरवाजा सौ योजन लंबा और पाँच योजन चौड़ा है (आश्व० ५८ । ३७–४०) ।

नागशत–एक पर्वत, जहाँ तपस्याके लिये जाते समय दोनों

पत्नियोंसहित राजा पाण्डु पधारे थे (आदि० ११८। ४७)

नागाशी-गरुड़की एक प्रमुख संतान (उद्योग० १०१। ९)।

नागोद्भेद-जहाँ सरस्वती अदृश्य भावसे रहती हैं। उस विनशन तीर्थके अन्तर्गत एक तीर्थ, जिसमें सरस्वतीके जलका प्रत्यक्ष दर्शन होता है। उसमें स्नान करनेसे नागलोककी प्राप्ति होती है (वन० ८२।११२)।

नाचिक-विश्वामित्रके ब्रह्मवादी पुत्रोंमेंसे एक (अनु० ४। ५८)।

नाचिकेत-एक प्राचीन ऋषि, जो उद्दालकिके पुत्र थे। (अनु० ७१। २)। यज्ञपरायण पिताका नाचिकेतको अपनी सेवामें रहनेकी आज्ञा देना। यज्ञका नियम पूर्ण होनेपर पिताने पुत्र नाचिकेतको नदीतटपर रक्खे हुए फूल, फल और समिधा आदि लानेका आदेश देना। नाचिकेतका नदीतटपर उन वस्तुओंके न मिलनेसे निराश लौटना। भूखसे पीड़ित पिताका रोषवश पुत्रको यमराजके यहाँ जानेकी बात कहना और पिताके इस शापसे नाचिकेतका मृत्युको प्राप्त होना (अनु० ७१। २–८)। पिताका पुत्रके लिये दुखी होकर विलाप करना एवं यमराजके यहाँसे लौटकर नाचिकेतका पुनः जीवित होना (अनु० ७१। ९–१२)। पिताके पूछनेपर नाचिकेतका यमके द्वारा प्राप्त हुए स्वागत-सत्कार तथा वहाँके पुण्यलोक-दर्शनका समाचार बताना (अनु० ७१। १३–५६)।

नाचीन-एक देश (सभा० ३८। २९ के बाद दा० पाठ)।

नाटकेय-एक देश (सभा० ३८। २९ के बाद दा० पाठ)।

नाडीजङ्घ-(१) इन्द्रद्युम्न-सरोवरपर रहनेवाला एक चिरजीवी बक (वन० १९९। ७)। (२) एक बकराज, जो कश्यपजीका पुत्र और ब्रह्माजीका मित्र था। इसका दूसरा नाम राजधर्मा था। देवकन्याके गर्भसे जन्म लेनेके कारण इसके शरीरकी कान्ति देवताके समान दिखायी देती थी। यह बड़ा विद्वान् और दिव्य तेजसे सम्पन्न था। (शान्ति० १६९। १९-२०) (विशेष देखिये राजधर्मा)।

नाभाग-वैवस्वतमनुके एक पुत्र (आदि० ७५। १५)। ये यमकी सभामें रहकर सूर्यपुत्र यमकी उपासना करते हैं (सभा० ८। १९)। इन्होंने समुद्रपर्यन्त पृथ्वीको जीतकर सत्यके द्वारा उत्तम लोकोंपर विजय पायी थी (वन० २५। १२)। इन्होंने दक्षिणाके रूपमें सारा राष्ट्र ब्राह्मणोंको दे दिया था(शान्ति० ९६। २२)। इन्होंने सात दिनमें पृथ्वीको जीता था। ये शीलवान और दयालु थे। अतः इनके गुणोंपर बिकी हुई पृथ्वी स्वयं इनके पास आयी थी(शान्ति० १२४। १६-१७)। अगस्त्यजीके कमलोंकी चोरी होनेपर शपथ खाना (अनु० ९४। ३१)। इन्होंने जीवनमें कभी मांस नहीं खाया था। इन्हें मांसभक्षण-निषेधके कारण परावरतत्त्वका ज्ञान हो गया था और अब ये ब्रह्मलोकमें विराज रहे हैं (अनु० ११५। ५८–६८)।

नाभागारिष्ट-वैवस्वतमनुके पुत्र (आदि० ७५। १७)।

नारद (१)-एक देवर्षि, जो ब्रह्माजीके मानस पुत्र हैं। ये जनमेजयके सदस्य बने थे (आदि० ५३। ८)। ये ही कालान्तरमें देवगन्धर्व होकर कश्यपद्वारा 'मुनि' के गर्भसे उत्पन्न हुए हैं (आदि० ६५। ४४)। इन्होंने तीस लाख श्लोकोंवाला महाभारत देवताओंको सुनाया था। (आदि० १। १०६-१०७; स्वर्गा० ५। ५६)। इन्होंने दक्षके पुत्रोंको सांख्यज्ञानका उपदेश दिया था, जिससे वे सब-के-सब विरक्त होकर घरसे निकल गये थे (आदि० ७५। ७-८)। ये अर्जुनके जन्म-समयमें पधारे थे (आदि० १२२। ५७)। द्रौपदीके स्वयंवरमें अन्य गन्धर्वों और अप्सराओंके साथ गये थे (आदि० १८६। ७)। द्रौपदीके निमित्त पाण्डवोंका आपसमें कोई मतभेद न हो—इस उद्देश्यसे इनका इन्द्रप्रस्थमें आगमन (आदि० २०७। ९)। इनके गुण, प्रभाव एवं रहस्यका विशद वर्णन (आदि० २०७। ९ के बाद दा० पाठ)। इनके द्वारा पाण्डवोंके प्रति सुन्द और उपसुन्दकी कथाका वर्णन करके द्रौपदीके विषयमें परस्पर फूटसे बचनेके लिये कोई नियम बनानेकी प्रेरणा (आदि० अध्याय २०८ से २२१ तक)। इनका वर्गा आदि शापग्रस्त अप्सराओंको आश्वासन और दक्षिण समुद्रके समीपवर्ती तीर्थोंमें रहनेका आदेश देना (आदि० २१६। १७)। इनके द्वारा युधिष्ठिरको प्रश्नके रूपमें विविध मङ्गलमय उपदेश (सभा० ५ अध्याय)। इनके द्वारा इद्र, यम, वरुण, कुबेर तथा ब्रह्माजीकी सभाका वर्णन (सभा० अध्याय ५ से ११ तक)। इनका हरिश्चन्द्रकी संक्षिप्त कथा सुनाकर युधिष्ठिरको राजसूय यज्ञ करनेके लिये पाण्डुका संदेश सुनाना (सभा० १२। २३–३४)। बाणासुरद्वारा अनिरुद्धके कैद होनेकी श्रीकृष्णको सूचना देना (सभा० ३८। २९ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ८२२, कालम १)। राजसूययज्ञमें अवभृथ-स्नानके समय इन्होंने युधिष्ठिरका अभिषेक किया (सभा० ५३। १०)। कौरवोंके विनाशके विषयमें नारदकी भविष्यवाणी (सभा० ८०। ३३–३५)। इन्होंने धौम्यको सूर्यके अष्टोत्तरशत नामका उपदेश

दिया था (वन० ३ । ७८) । इनका शाल्वको मारनेके लिये उद्यत प्रद्युम्नके पास आकर देवताओंका संदेश सुनाना (वन० १९ । २२–२४) । इन्द्रलोकमें अर्जुनके स्वागतमें अन्य गन्धर्वोंके साथ ये भी पधारे थे (वन० ४३ । १४) । इनके द्वारा इन्द्रके प्रति दमयन्ती-स्वयंवरकी सूचना (वन० ५४ । २०–२४) । इनका युधिष्ठिरको तीर्थयात्राका प्रसङ्ग सुनाकर अन्तर्धान होना (वन० ८१ । १२ से ८५ अध्यायतक)। राजा सगरको उनके पुत्रोंकी मृत्युका समाचार सुनाना (वन० १०७ । ३३) । अर्जुनको दिव्यास्त्र-प्रदर्शनसे रोकना (वन० १७५ । १८–२३) । काम्यकवनमें पाण्डवोंके पास इनका आगमन और मार्कण्डेय मुनिसे कथा सुननेका अनुमोदन करना (वन० १८३ । ४७–४९) । सुहोत्र और शिबिमें इनका शिबिको ही बढ़कर बताना (वन० १९४ । ३–७) । राजा अश्वपतिसे सत्यवान्‌के गुण-दोषका वर्णन करके उनके साथ सावित्रीके विवाहके लिये सम्मति देकर विदा होना (वन० २९४ । ११–३२) । शान्ति-दूत बनकर हस्तिनापुर जाते हुए श्रीकृष्णकी परिक्रमा करना (उद्योग० ८३ । २७) । पुत्रीके लिये वरकी खोजमें जाते समय मातलिको वरुण-लोकमें ले जाना और वहाँ आश्चर्यजनक वस्तुएँ दिखाना (उद्योग० ९८ अध्याय) । मातलिको पाताल-लोकमें ले जाना (उद्योग० ९९ अध्याय) । मातलिसे हिरण्यपुर-का वर्णन और दिग्दर्शन (उद्योग० १०० अध्याय) । मातलिको गरुडलोकमें ले जाना (उद्योग० १०१ अध्याय) । मातलिसे संतानसहित सुरभि तथा रसातलका वर्णन (उद्योग० १०२ अध्याय) । मातलिसे नागलोकका वर्णन (उद्योग० १०३ अध्याय) । आर्यकके सम्मुख मातलिकी कन्याके विवाहका प्रस्ताव (उद्योग० १०४ । १ –७) । दुर्योधनको समझाते हुए धर्मराजद्वारा विश्वामित्र-की परीक्षा और विश्वामित्रको गुरुदक्षिणा देनेके लिये गालवके हठका वर्णन (उद्योग० १०६ अध्यायसे १२३–२२ तक) । भीष्मको परशुरामजीके ऊपर प्रस्वापनास्त्रके प्रयोगसे मना करना (उद्योग० १८५ । ३-४) । पुत्र-शोकसे दुखी अकम्पनको इनके द्वारा सान्त्वना (द्रोण० ५२ । ३७ से द्रोण० ५४ । ४४–५० तक) । राजा सृंजयसे उनकी कन्याको माँगना (द्रोण० ५५ । १२) । महर्षि पर्वतके शापके बदले उन्हें शाप देना (द्रोण० ५५ । १७) । राजा सृंजयको पुत्र-प्राप्तिका वर देना (द्रोण० ५५ । २३ के बाद) । पुत्रशोकसे दुखी सृंजय-को मरुत्तका चरित्र सुनाकर समझाना (द्रोण० ५५ । ३६—५०) । राजा सुहोत्रकी दानशीलताका वर्णन करना (द्रोण० ५६ अध्याय) । पौरवकी दानशीलताका वर्णन (द्रोण० ५७ अध्याय) । शिबिके यश और दान-की महत्ताका वर्णन (द्रोण० ५८ अध्याय) । श्रीरामके चरित्रका वर्णन (द्रोण० ५९ अध्याय) । राजा भगी-रथके चरित्रका वर्णन (द्रोण० ६० अध्याय) । महा-राज दिलीपके उत्कर्षका वर्णन (द्रोण० ६१ अध्याय) । मान्धाताकी महत्ताका वर्णन (द्रोण० ६२ अध्याय) । महाराज ययातिका वर्णन (द्रोण० ६३ अध्याय) । राजा अम्बरीषके चरित्रका वर्णन (द्रोण० ६४ अध्याय) । राजा शशबिन्दुके दानका वर्णन (द्रोण० ६५ अध्याय) । राजा गयके चरित्रका वर्णन (द्रोण० ६६ अध्याय) । राजा रन्तिदेवके अतिथिसत्कारका वर्णन (द्रोण० ६७ अध्याय) । राजा भरतके चरित्रका वर्णन (द्रोण० ६८ अध्याय) । राजा पृथुके चरित्रका वर्णन (द्रोण० ६९ अध्याय) ! परशुरामजीका चरित्र सुनाना (द्रोण० ७० अध्याय) । सृंजयके मरे हुए पुत्रको जीवित करके उन्हें देना (द्रोण० ७१ । ८) । रणक्षेत्रमें अर्जुनद्वारा बाणोंके प्रहारसे प्रकट किये हुए सरोवरको देखनेके लिये नारदजी वहाँ पधारे थे (द्रोण० ९९ । ६१) । रात्रियुद्धमें कौरव-पाण्डव-सेनाओंमें दीपकका प्रकाश करना (द्रोण० १६३ । १५) । वृद्धकन्याको विवाह करनेके लिये प्रेरित करना (शल्य० ५२ । १२-१३) । बलरामजीसे कौरवोंके विनाश-का समाचार बताना (शल्य० ५४ । २५—३४) । अश्वत्थामा और अर्जुनके ब्रह्मास्त्रको शान्त करनेके लिये प्रकट होना (सौप्तिक० १४ । ११) । युद्धके पश्चात् युधिष्ठिरके पास आकर उनसे कुशल-समाचार पूछना (शान्ति० १ । १०–१२) । युधिष्ठिरसे कर्णको शाप प्राप्त होनेका प्रसंग सुनाना (शान्ति० अध्याय २ से ३ तक) । कर्णके पराक्रमका वर्णन (शान्ति० अध्याय ४ से ५ तक) । इनके द्वारा सृंजयके प्रति कहे हुए षोडश-राजकीयोपाख्यानका श्रीकृष्णद्वारा युधिष्ठिरके समक्ष वर्णन (शान्ति० २९ अध्याय) । श्रीकृष्णद्वारा पर्वत ऋषिके साथ इनके विचरने और परस्पर शाप आदिका वर्णन (शान्ति० ३० अध्याय) । इनका युधिष्ठिरको सृंजयपुत्र सुवर्णष्ठीवीका वृत्तान्त सुनाना (शान्ति० ३१ अध्याय) । शरशय्यापर पड़े हुए भीष्मको देखनेके लिये अन्य ऋषियोंके साथ इनका भी जाना (शान्ति० ४७ । ५) । युधिष्ठिर आदिको भीष्मजीसे धर्मविषयक प्रश्नके लिये प्रेरणा देना (शान्ति० ५४ । ८–१०) । जाति-भाइयोंमें फूट न पड़नेके विषयमें श्रीकृष्णके प्रश्नोंका उत्तर (शान्ति० ८१ अध्याय) । सेमलवृक्षकी प्रशंसा (शान्ति० १५४ । १०–३१) । सेमलवृक्षका अहंकार देखकर उसे फटकारना (शान्ति० १५५ । ९—१८) । वायुदेवके

पास जाकर सेमलवृक्षकी बात कहना (शान्ति० १५६ । २-४) । भगवान् विष्णुसे कृपा-याचना (शान्ति० २०७ । ४६ के बाद) । भगवान् विष्णुका स्तवन (शान्ति० २०९ । दाक्षिणात्य पाठ) । इन्द्रके साथ लक्ष्मीका दर्शन (शान्ति० २२८ । ११६) । पुत्रशोकसे दुखी अकम्पनको समझाना (शान्ति० अध्याय २५६ से २५८ तक) । महर्षि असितदेवलसे सृष्टिविषयक प्रश्न (शान्ति० २७५ । ३) । महर्षि समङ्गसे उनकी शोकहीनताका कारण पूछना (शान्ति० २८६ । ३-४) । गालवमुनिको श्रेयका उपदेश देना (शान्ति० २८७ । १२—५९) । व्यासजीके पास आना और उनकी उदासीका कारण पूछना (शान्ति० ३२८ । १२-१५) । व्यासजीको पुत्रके साथ वेदपाठ करनेको कहना (शान्ति० ३२८ । २०-२१) । शुकदेवजीको वैराग्य और ज्ञान आदि विविध विषयोंका उपदेश (शान्ति० अध्याय ३२९ से ३३१ तक) । नर-नारायणके समक्ष सबसे श्रेष्ठ कौन है, इस बातकी जिज्ञासा (शान्ति० ३३४ । २५-२७) । श्वेतद्वीपका दर्शन और वहाँके निवासियोंका वर्णन (शान्ति० ३३५ । ९-१२) । दो सौ नामोंद्वारा भगवान्‌की स्तुति (शान्ति० ३३८ अध्याय) । श्वेतद्वीपमें भगवान्‌का दर्शन (शान्ति० ३३९ । १—१०) । श्वेतद्वीपसे लौटकर नर-नारायणके पास जाना और उनके समक्ष वहाँके दृश्यका वर्णन करना (शान्ति० ३४३ । ४७-६६) । मार्कण्डेयजीके विविध प्रश्नोंका उत्तर देना (अनु० २२ । दाक्षिणात्य पाठ) । श्रीकृष्णके पूछनेपर पूजनीय पुरुषोंके लक्षण और उनके आदर-सत्कारसे होनेवाले लाभका वर्णन करना (अनु० ३१ । ५-३५) । पञ्चचूड़ा अप्सरासे स्त्रियोंके स्वभावके विषयमें प्रश्न (अनु० ३८ । ६) । भीष्मजीसे अन्नदानकी महिमाका वर्णन (अनु० ६३ । ५—४२) । देवकी देवीको विभिन्न नक्षत्रोंमें विभिन्न वस्तुओंके दानका महत्त्व बताना (अनु० ६४ । ५—३५) । अगस्त्यजीके कमलोंकी चोरी होनेपर शपथ खाना (अनु० ९४ । ३०) । पुण्डरीकको श्रेयके लिये भगवान् नारायणकी आराधनाका उपदेश देना (अनु० १२४ । दाक्षिणात्य पाठ) । इनके द्वारा हिमालय पर्वतपर भूत-गणोंसहित शिवजीकी शोभाका वर्णन (अनु० १४० अध्याय) । संवर्तको पुरोहित बनानेके लिये मरुत्तको सलाह देना (आश्व० ६ । १८-१९) । मरुत्तको संवर्त-का पता बताना (आश्व० ६ । २०-२६) । महर्षि देव-मतके प्रश्नोंका उत्तर देना (आश्व० २४ अध्याय) । युधिष्ठिरके अश्वमेध-यज्ञमें इनकी उपस्थिति (आश्व० ८८ । ३९) । नारदजीका प्राचीन ऋषियोंकी तपःसिद्धि-का दृष्टान्त देकर धृतराष्ट्रकी तपस्याविषयक श्रद्धाको बढ़ाना और शतयूपके पूछनेपर धृतराष्ट्रको मिलनेवाली गतिका वर्णन करना (आश्रम० २० अध्याय) । इनका युधिष्ठिरके समक्ष वनमें कुन्ती, गान्धारी और धृतराष्ट्रके दावानलसे दग्ध होनेका समाचार बताना (आश्रम० ३७ । १—३८) । धृतराष्ट्र लौकिक अग्निसे नहीं, अपनी ही अग्निसे दग्ध हुए हैं—यह युधिष्ठिरको बताना और उनके लिये जलाञ्जलि प्रदान करनेकी आज्ञा देना (आश्रम० ३९ । १—९) । साम्बके पेटसे मूसल पैदा होनेका शाप देनेवाले ऋषियोंमें ये भी थे (मौसल० १ । १५—२२) । इनके द्वारा युधिष्ठिरकी प्रशंसा (महाप्र० ३ । २६—२९) ।

महाभारतमें आये हुए नारदजीके नाम—ब्रह्मर्षि, देवर्षि, परमेष्ठिज, परमेष्ठी, परमेष्ठिपुत्र और सुरर्षि आदि ।

(२) विश्वामित्रके ब्रह्मवादी पुत्रोंमेंसे एक (अनु० ४ । ५३) ।

नारदागमनपर्व—आश्रमवासिकपर्वका एक अवान्तर पर्व (अध्याय ३७ से ३९ तक) ।

नारदी—विश्वामित्रके ब्रह्मवादी पुत्रोंमेंसे एक (अनु० ४ । ५९) ।

नाराच—बाणविशेष (आदि० १३८ । ६) । (सीधे बाणको नाराच कहते हैं । उसका अग्रभाग तीखा होता है ।)

नारायण—भगवान् विष्णु तथा उनके अवतारभूत धर्मपुत्र नारायण, जो अपने भाई नरके साथ बदरिकाश्रममें सुवर्णमय रथपर बैठकर तपस्या करते हैं । ये स्वायम्भुव मन्वन्तरमें धर्मके यहाँ चार स्वरूपोंमें अवतीर्ण हुए थे—नर, नारायण, हरि और कृष्ण (शान्ति० ३३४ । ९—१२) । इनका देवताओंको समुद्र-मन्थनका आदेश (आदि० १७ । ११-१३) । मोहिनीरूप धारण करके देवताओंको अमृत पिलाना (आदि० १८ । ४५ ४६ के बाद दा० पाठ) । इनके द्वारा राहुके मस्तकका उच्छेद तथा देवासुर-संग्राममें असुरोंका संहार (आदि० १९ । ५—१०, १९—२४) । इन्होंने गरुड़को अपना वाहन बनाया और ध्वजमें स्थान दिया (आदि० ३३ । १३—१७) । इनके कृष्ण और श्वेत केश श्रीकृष्ण और बलरामके रूपमें प्रकट हुए थे (आदि० १९६ । ३२-३३) । ये ब्रह्माजीकी सभामें विराजमान होते हैं (सभा० ११ । ५२-५३) । भीष्मद्वारा इनके स्वरूप एवं महिमाका वर्णन तथा इनके द्वारा मधु कैटभ दैत्यके वधके प्रसंगका वर्णन (सभा० ३८ । २९ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ७८१ से ७८४ तक) । इनके वाराह, नृसिंह

आदि अवतारोंका संक्षेपसे तथा श्रीकृष्णावतारका कुछ विस्तारसे वर्णन (**सभा० ३८ । पृष्ठ ७८४ से ८२६ तक**) । इन्द्रद्वारा इनके अवतारका वर्णन (**वन० ४७ । १०**) । इनके द्वारा इन्द्रको सान्त्वना तथा नरकासुरका वध (**वन० १४२ । २५–२७**) । इनका वाराह अवतार और पृथ्वीका उद्धार (**वन० १४५ । ४५–४७**) । प्रलयकालमें बालमुकुन्द रूपमें मार्कण्डेयको अपने स्वरूपका परिचय देना (**वन०१८९ । १––४९**) । इन्होंने कुवलाश्वमें अपने तेजको स्थापित किया (**वन० २०४ । १३**) । इनके द्वारा स्कन्दको पार्षद-प्रदान (**शल्य० ४५ । ३७**) । इन्द्ररूपसे मन्धाताको दर्शन दिया (**शान्ति० ६४ । १४**) । इन्द्ररूप धारण करके राजधर्मके विषयमें मान्धाताके साथ इनका संवाद (**शान्ति० ६४ । १६–३०;शान्ति० ६५ अध्याय**)। नारदजीके पूछनेपर इनका अपने आराध्य त्रिगुणातीत पुरुष सनातन परमात्माको ही सर्वश्रेष्ठ बताना (**शान्ति० ३३४ । २८––४५**)। राजा उपरिचरपर कृपा (**शान्ति० ३३७ । ३३–३५**) । नारदजीको अपने चतुर्व्यूह स्वरूपोंका परिचय कराना (**शान्ति० ३३९ । १९—७६**) । अपने भावी अवतारोंका वर्णन करना (**शान्ति० ३३९ । ७७––१०८**) । ब्रह्मादि देवताओंको प्रवृत्ति-निवृत्ति आदि धर्मोंका उपदेश देना (**शान्ति० ३४० । ४९—८९**) । शिवजीके साथ युद्ध और विजय (**शान्ति० ३४२ । ११०–११६**) । नारदजीसे वासुदेवजीका माहात्म्य बतलाना (**शान्ति० ३४४ अध्याय**) । नारदजीसे भगवान् वाराहकृत पितरोंके पूजनकी मर्यादाका वर्णन करना (**शान्ति० ३४५ । १२––२८**) । इनसे मधु और कैटभकी उत्पत्ति (**शान्ति० ३४७ । २४–२६**) । ब्रह्माजीद्वारा नारायणकी स्तुति, इनका हयग्रीवरूपसे प्रकट होकर मधु-कैटभद्वारा अपहृत हुए वेदोंको ढूँढ़ लाना और मधु-कैटभके साथ युद्ध करके उन दोनोंके वधद्वारा ब्रह्माजीका शोक दूर करना (**शान्ति० ३४७ । ६९–७१**) । इनकी महिमाका वर्णन (**शान्ति० ३४७ । ८०–९६**) । पौष मासमें नारायणके पूजनसे प्राप्त होनेवाले पुण्यफलका वर्णन (**अनु० १०९ । ४**) । इनके सहस्र नामोंका वर्णन (**अनु० १४९ अध्याय**) । श्रीकृष्ण इस लोकसे तिरोहित होनेके बाद अपने नारायण-स्वरूपमें प्रतिष्ठित हुए (**स्वर्गा० ५ । २४**) ।

महाभारतमें आये हुए नारायणके नाम–कृष्ण, वासुदेव, महापुरुष, विष्णु आदि ।

नारायणस्थान (या शालिग्रामतीर्थ)–एक परम पवित्र तीर्थ, जहाँ भगवान् विष्णु सदा निवास करते हैं । ब्रह्मा आदि देवता,तपोधन ऋषि,आदित्य, वसु तथा रुद्र भी वहाँ रहकर जनार्दनकी उपासना करते हैं, वहाँ भगवान् विष्णु शालग्राम नामसे प्रसिद्ध हैं । (सम्भवतः यह स्थान नैपालराज्यान्तर्गत शालग्रामी या गण्डकीके उद्गमके निकट है । जहाँसे शालग्राम-शिलाका प्राकट्य होता है ।) वहाँ भगवान् विष्णुके समीप यात्रा करके मनुष्य अश्वमेध यज्ञका फल पाता है और विष्णुधाममें जाता है (**वन० ८४ । १२५**) ।

नारायणाश्रम–एक तीर्थ (**वन० १२९ । ६**) ।

नारायणास्त्रमोक्षपर्व–द्रोणपर्वका एक अवान्तर पर्व (**अध्याय १९३ से २२० तक**) ।

नारीतीर्थ–प्राचीनकालके पाँच तीर्थ, जिन्हें कुछ कालतक तापसोंने छोड़ रक्खा था । उनके नाम हैं—अगस्त्यतीर्थ, सौभद्रतीर्थ, पौलोमतीर्थ, कारन्धमतीर्थ और भारद्वाज तीर्थ। इन तीर्थोंके समीप अर्जुनका आगमन। उनका सौभद्रतीर्थमें गोता लगाना और शापवश ग्राहरूपमें वहाँ रहनेवाली वर्गानामक अप्सराका उद्धार । वर्गाका अर्जुनको पाँच अप्सराओंको प्राप्त हुए शापकी विस्तृत कथा सुनाना (**आदि० २१५ अध्याय**) । वर्गाकी प्रार्थनासे अर्जुनद्वारा शेष चार अप्सराओंका उद्धार और उक्त पाँचों तीर्थोंकी नारीतीर्थके नामसे प्रसिद्धि (**आदि० २१६ । १–२२**) । इन तीर्थोंमें भाइयोंसहित युधिष्ठिरका आगमन, स्नान और गोदान (**वन० ११८ । ४–७**) ।

नाव्याश्रम–राजा लोमपादद्वारा निर्मित आश्रम । जिस नौकासे उनके राज्यमें ऋष्यशृङ्ग आये थे, उसीके नामपर इसका नामकरण हुआ (**वन० ११३ । ९**) ।

नासत्य–अश्विनीकुमारोंमेंसे एकका नाम (**शान्ति० २०८ । १७**) ।

निकुम्भ–(१) प्रह्लादजीका तृतीय पुत्र (**आदि० ६५ । १९**) । (२) एक विख्यात दानव (**आदि० ६५ । २६**) । (३) हिरण्यकशिपुके कुलमें उत्पन्न एक दैत्य, सुन्द-उपसुन्दका पिता (**आदि० २०८ । २-३**) । (४) स्कन्दका एक सैनिक (**शल्य० ४५ । ५६**) ।

निखर्वट–एक राक्षस, जिसने तार नामक वानरके साथ युद्ध किया (**वन० २८५ । ९**) ।

निचन्द्र–एक दानव (**आदि० ६५ । २६**) ।

निचिता–एक प्रमुख नदी, जिसका जल भारतीय प्रजा पीती है (**भीष्म० ९ । १८**) ।

नितम्भू–एक दिव्य महर्षि, ये शरशय्यापर पड़े हुए कालकी बाट जोहनेवाले भीष्मजीको देखनेके लिये आये थे (**अनु० २६ । ८**) ।

निधि–'शङ्ख' नामक निधि, जिसका दान करके राजा

ब्रह्मदत्त परमगतिको प्राप्त हुए थे (अनु० १३७ । १७)।

निबिड–क्रौञ्चद्वीपका एक पर्वत (भीष्म० १२ । १९)।

निमि–(१) एक प्राचीन राजा, विदेह देशके अधिपति (आदि० १ । २३४)। ये यमराजकी सभामें रहकर सूर्यपुत्र यमकी उपासना करते हैं (सभा० ८ । ९)। इनके द्वारा ब्राह्मणको राज्य-दान (वन० २३४ । २६)। इन्होंने जीवनमें कभी मांस नहीं खाया था (अनु० ११५ । ६५)। (२) अत्रिकुलमें उत्पन्न एक ऋषि, जो दत्तात्रेयके पुत्र थे (अनु० ९१ । ५)। इन्होंने अपने पुत्र श्रीमान्‌को पिण्डदान दिया (अनु० ९१ । १४-१५)। इनके द्वारा स्मरण करनेपर इनके समक्ष वंशप्रवर्तक अत्रिमुनिका प्रकट होना (अनु० ९१ । १८)। (३) विदर्भराजके पुत्र, जिन्होंने महात्मा अगस्त्यको अपनी कन्याका दान करके स्वर्गलोक प्राप्त किया था (अनु० १३७ । ११)।

निमेष–गरुडकी एक प्रमुख संतान (उद्योग० १०१ । १०)।

नियति–ब्रह्माजीकी सभामें रहकर उनकी उपासना करनेवाली एक देवी (सभा० ११ । ४३)।

नियुतायु–श्रुतायुका पुत्र, जो अर्जुनद्वारा मारा गया (द्रोण० ९४ । २९)।

नियोधक–एक दंगली पहलवानका नाम (विराट० २ । ९)।

निरमित्र–(१) नकुलका पुत्र, इसकी माता करेणुमती थी (आदि० ९५ । ७९)। (२) एक त्रिगर्तराजकुमार, जो सहदेवद्वारा मारा गया था (द्रोण० १०७ । २६)।

निरविन्द–एक पर्वत, यहाँ स्नान और पिण्डदानका फल (अनु० २५ । ४२)।

निरामय–एक प्राचीन नरेश (आदि० १ । २३७)।

निरामया–एक प्रमुख नदी, जिसका जल भारतीय प्रजा पीती है (भीष्म० ९ । ३३)।

निरामर्द–एक प्राचीन राजा (आदि० १ । २३७)।

निर्ऋति–(१) ग्यारह रुद्रोंमेंसे एक, ब्रह्माजीके पौत्र एवं स्थाणुके पुत्र (आदि० ६६ । २)। ये अर्जुनके जन्म-महोत्सवमें पधारे थे (आदि० १२२ । ६८)। (२) अधर्मकी स्त्री, इससे नैर्ऋत नामवाले तीन भयङ्कर राक्षस उत्पन्न हुए, जिनके नाम हैं–भय, महाभय एवं मृत्यु (आदि० ६६ । ५४-५५)।

निर्मोचन–एक नगर, जो मुरदैत्यकी राजधानी था (उद्योग० ४८ । ८३)।

निवातकवच–दैत्योंका एक दल, इन्द्रद्वारा इनका वर्णन (वन० ४७ । १५)। इनका अर्जुनके साथ युद्ध और संहार (वन० अध्याय १६९ से १७२ तक)।

निवातकवचयुद्धपर्व–वनपर्वका एक अवान्तर पर्व (अध्याय १६५ से १७५ तक)।

निशठ–(१) एक वृष्णिवंशी राजकुमार, जो रैवतक पर्वतके उत्सवमें सम्मिलित था (आदि० २१८ । १०)। (हरिवंशके अनुसार यह बलराम और रेवतीका पुत्र है।) यह सुभद्राके लिये दहेज लेकर खाण्डवप्रस्थमें आया था (आदि० २० । ३१)। युधिष्ठिरके राजसूययज्ञमें सम्मिलित हुआ था (सभा० ३४ । १६)। उपप्लव्यनगरमें अभिमन्युके विवाहमें उपस्थित हुआ था (विराट० ७२ । २२)। अश्वमेध यज्ञमें श्रीकृष्णके साथ निशठका भी आगमन हुआ था (आश्व० ६६ । ४)। यह मृत्युके पश्चात् विश्वेदेवोंमें मिल गया था (स्वर्गा० ५ । १६–१८)। (२) एक प्राचीन राजा, जो यम-सभामें रहकर सूर्यपुत्र यमकी उपासना करता है (सभा० ८ । ११)।

निशा–भानु (मनु) नामक अग्निकी तीसरी भार्या, जिसने रोहिणी नामक कन्या और अग्नि एवं सोम नामक पुत्रको जन्म दिया था। (इसने पाँच अग्निस्वरूप पुत्र और उत्पन्न किये थे—वैश्वानर, विश्वपति, संनिहित, कपिल और अग्रणी।)

निशाकर–गरुडकी प्रमुख संतानोंमेंसे एक (उद्योग० १०१ । १४)।

निशुम्भ–नरकासुरके चार प्रमुख राज्यपालोंमेंसे एक, जो भूतलसे लेकर देवयानतकका मार्ग रोककर खड़ा रहता था। श्रीकृष्णद्वारा इसका वध (सभा० ३८ । २९ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ८०५)।

निश्चीरा–एक त्रिलोकविख्यात नदी, जिसकी यात्रा करनेसे अश्वमेध यज्ञका फल मिलता और यात्री भगवान् विष्णुके लोकमें जाता है। निश्चीरासंगममें दानका फल इन्द्रलोककी प्राप्ति है (वन० ८४ । १३८-१३९)।

निश्च्यवन–बृहस्पतिके दूसरे पुत्र, जो यश, वर्चस् और कान्तिसे कभी च्युत नहीं होते, ये केवल पृथ्वीकी स्तुति करते हैं। निष्पाप, निर्मल, विशुद्ध तथा तेजःपुञ्जसे प्रकाशित हैं। इनके पुत्रका नाम सत्य है (वन० २१९ । १२-१३)।

निषङ्गी–धृतराष्ट्रका एक पुत्र (आदि० ६७ । १०३)। भीमसेनद्वारा इसका वध (कर्ण० ८४ । ४–६)।

निषध-(१) भरतवंशी महाराज कुरुके पौत्र एवं जनमेजय-के चतुर्थ पुत्र, जो धर्म और अर्थमें कुशल तथा समस्त प्राणियोंके हितमें संलग्न रहनेवाले थे (आदि० ९४। ५६)। (२) एक पर्वत, जो हरिवर्ष और इलावृतवर्षके बीचमें है। अर्जुनने दिग्विजयके समय यहाँके निवासियों-को जीतकर अपने अधीन किया था (सभा० २८। ६ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ७४६)। एक पर्वत, जो हिमवान् और हेमकूटसे भी आगे है। मार्कण्डेयजीने भगवान् बालमुकुन्दके उदरदेशमें इसका दर्शन किया था (वन० १८८। ११२)। (आधुनिक मतके अनुसार गन्धमादनके पश्चिम और काबुल नदीके उत्तरका पर्वत हिंदूकुश ही 'निषध' है)। (३) प्राचीन देश, जहाँ वीरसेन नामसे प्रसिद्ध राजा राज्य करते थे। इन्हींके पुत्र नल हुए (वन० ५२। ५५)।

निषाद-(१) एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९। ५१)। (२) वेनकी दाहिनी जाँघसे उत्पन्न एक पुरुष, जो ऋषियोंके निषीद (बैठ जाओ) कहनेसे 'निषाद' कहलाया तथा जिससे वनमें रहनेवाले निषादोंकी उत्पत्ति हुई (शान्ति० ५९। ९७)।

निषादनरेश-एक राजा, जो कालेय एवं क्रोधहन्तासंज्ञक दैत्यके अंशसे उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७। ५०)।

निष्कुट-एक प्राचीन प्रदेश, जहाँके अधिपतियोंको अर्जुनने जीता था (सभा० २७। २९)।

निष्कुटिका-स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६। १२)।

निष्कृति-एक अग्नि, जो बृहस्पतिके पुत्र हैं और लोगोंको संकटसे निष्कृति (छुटकारा) दिलानेके कारण 'निष्कृति' नामसे प्रसिद्ध हैं (वन० २१९। १४)।

निष्टानक-कश्यप और कद्रूसे उत्पन्न हुए एक प्रमुख नागका नाम (आदि० ३५। ९)।

निष्ठूरिक-एक कश्यपवंशी नाग (उद्योग० १०३। १२)।

निसुन्द-एक दैत्य, जो श्रीकृष्णद्वारा मारा गया था (वन० १२। २९)।

नीथ-एक वृष्णिवंशी राजकुमार (वन० १२०। १९)।

नीप-(१) एक प्राचीन जनपद, जहाँके राजा राजसूय यज्ञमें युधिष्ठिरको भेंट देनेके लिये आये थे (सभा० ५१। २४)। (२) एक क्षत्रियवंश, जिसमें जनमेजय नामक कुलाङ्गार राजा प्रकट हुआ था (उद्योग० ७४। १३)।

नील-(१) कश्यप और कद्रूसे उत्पन्न हुआ प्रमुख नाग (आदि० ३५। ७)। (२) (दुर्योधन) माहिष्मती नगरीके एक राजा, जो क्रोधवशसंज्ञक दैत्यके अंशसे उत्पन्न हुए थे (आदि० ६७। ६१)। ये द्रौपदीके स्वयंवरमें गये थे (आदि० १८५। १०)। सहदेवके साथ इनका भीषण युद्ध (सभा० ३१। २१)। अग्निदेवद्वारा राजा नीलकी सहायता (सभा० ३१। २३)। इनके द्वारा अग्निदेवको अपनी कन्याका दान (सभा० ३१। ३३)। अग्निदेवद्वारा राजा नीलकी सेनाको अभय-दान (सभा० ३१। ३५)। पराजित नीलद्वारा सहदेवका पूजन (सभा० ३१। ५८-५९)। कर्णने दिग्विजयके समय इन्हें पराजित किया था (वन० २५४। १५) पाण्डवोंकी ओरसे इन्हें रणनिमन्त्रण भेजनेका विचार किया गया था (उद्योग० ४। १६)। दुर्योधनकी सहायतामें इनका सेनासहित आगमन (उद्योग० १९। २३-२४)। दुर्योधनकी सेनामें एक रथियोंकी गणनामें इनका भी नाम था (उद्योग० १६६। ४)। इन्होंने नर्मदाको भार्या-रूपमें पाकर उसके गर्भसे सुदर्शना नामक कन्या उत्पन्न की, जिसे अग्निदेव चाहने लगे। राजाने इस बातको जानकर वह कन्या उनके साथ ब्याह दी। उससे सुदर्शन नामक पुत्र हुआ (अनु० २ अध्याय)। (३) एक पर्वत, जो उत्तरमें गन्धमादन और मन्दराचलके बाद आता है (वन० १८८। ११२)। गङ्गाद्वारमें भी एक नील पर्वत है, जहाँ स्नान करके पापरहित हुआ मनुष्य स्वर्गको जाता है (अनु० २५। १२)। (४) एक वानर-सेनापति, इसके द्वारा दूषणके छोटे भाई प्रमाथीका वध (वन० २८७। २७)। (५) पाण्डवपक्षका एक योद्धा, जो उदार रथी, सम्पूर्ण अस्त्रोंका ज्ञाता और महामनस्वी था (उद्योग० १७१। १५)। अनूप-देशका राजा, जिसे अश्वत्थामाने मूर्च्छित किया था (भीष्म० ९४। ३६)। इसके रथके घोड़ोंका वर्णन (द्रोण० २३। ६५)। दुर्जयके साथ युद्ध (द्रोण० २५। ४५)। अश्वत्थामाद्वारा वध (द्रोण० ३१। २५)। इसके कलिङ्गराज चित्राङ्गदकी कन्याके स्वयंवरमें जानेकी चर्चा (शान्ति० ४। ६)।

नीलगिरि-भद्राश्व वर्षकी सीमापर स्थित एक पर्वत, जिसे लाँघनेपर रम्यक वर्ष आता है (सभा० २८। ६ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ७४९)।

नीला-एक मुख्य नदी, जिसका जल भारतवासी पीते हैं (भीष्म० ९। ३१)।

नीली-महाराज अजमीढ़की द्वितीय पत्नी। इनके गर्भसे दुष्यन्त तथा परमेष्ठीका जन्म हुआ था (आदि० ९४। ३२)।

नीवारा–एक प्रमुख नदी, जिसका जल भारतीय जनता पीती है (भीष्म० ९ । १८) ।

नृग–एक प्रसिद्ध एवं प्राचीन दानी राजा, जो यमराजकी सभामें विराजमान होते हैं (सभा० ८ । ८) । नृगने वाराहतीर्थमें पयोष्णी नदीके तटपर यज्ञ किया था, जिसमें इन्द्र सोमपान करके मस्त हो गये थे और प्रचुर दक्षिणा पाकर ब्राह्मणलोग भी हर्षोल्लाससे परिपूर्ण हो गये थे (वन० ८८ । ५-६; वन० १२१ । १-२) । इन्हें भारतवर्ष बहुत प्रिय था (भीष्म० ९ । ७–९) । ये शौर्यसे सुयश एवं सम्मानके भागी होकर उत्तम लोकोंको प्राप्त हुए थे (भीष्म० १७ । ९– १०) । श्रीकृष्ण-द्वारा गिरगिटकी योनिसे उद्धार (अनु० ७० । ७) । श्रीकृष्णके पूछनेपर इनका अपनी आत्मकथा सुनाना (अनु० ७० । १०–२८) । श्रीकृष्णकी आज्ञासे इनका स्वर्गलोकमें गमन (अनु० ७० । २९) । गोदानमहिमाके प्रसंगमें इनका नामनिर्देश (अनु० ७६ । २५) । मांस-भक्षणका निषेध करनेके कारण इनको परावरतत्त्वका ज्ञान (अनु० ११५ । ६०) ।

नृत्यप्रिया–स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । १०) ।

नृसिंह–भगवान् विष्णुके अवतार । इनके द्वारा हिरण्यकशिपुके वधकी कथा (सभा० ३८ । २९ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ७८५ से ७८९ तक) ।

नेपाल–हिमालयकी तराईका एक जनपद । कर्णने अपनी दिग्विजयके समय यहाँके राजाको जीता था (वन० २५४ । ७) ।

नेमिहंसपथ–एक स्थान, जो श्रीकृष्णके ही राष्ट्रभूत आनर्तदेशके भीतर अक्षप्रपतनके समीप था । यहीं भगवान् श्रीकृष्णने गोपति एवं तालकेतुका वध किया था (सभा० ३८ । २९ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ८२४) ।

नैकपृष्ठ–एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ४१) ।

नैगमेय–(१) कुमार कार्तिकेयके तृतीय भ्राता । पिताका नाम अनल (आदि० ६६ । २४) । (२) कुमार कार्तिकेयकी चार मूर्तियोंमेंसे एक मूर्ति । दोके नाम थे—शाख और विशाख (शल्य० ४४ । ३७) ।

नैमिष–(इसे नैमिष एवं नैमिषारण्य भी कहा जाता है । आजकल लोग इसे 'नीमसार' कहते हैं । यह स्थान सीतापुर जिलेमें है ।) नैमिषारण्य तीर्थमें शौनकने अपना द्वादश वार्षिक यज्ञ किया था (आदि० १ । १; आदि० ४ । १) । ऋषियोंकी प्रेरणासे सौतिने यहाँ महाभारतकी सम्पूर्ण कथा सुनायी थी (आदि० १ । ९–२५) । इस तीर्थमें देवताओंने यज्ञ किया था (आदि० १९६ । १) । नैमिषारण्यमें आकर अर्जुनने उत्पलिनी (कमल-मण्डित गोमती) नदीका दर्शन किया (आदि० २१४ । ६) । इस सिद्धसेवित पुण्यमय तीर्थमें देवताओंके साथ ब्रह्माजी नित्य निवास करते हैं । नैमिषकी खोज करनेवाले पुरुषका आधा पाप उसी क्षण नष्ट हो जाता है और उस तीर्थमें प्रवेश करते ही वह सारे पापोंसे छुटकारा पा जाता है । वहाँ तीर्थसेवनमें तत्पर हो एक मासतक निवास करना चाहिये । पृथ्वीपर जितने तीर्थ हैं, वे सभी नैमिषमें विद्यमान हैं । जो वहाँ स्नान करके नियम-पालन-पूर्वक नियमित भोजन करता है, वह गोमेध यज्ञका फल पाता और अपने सात पीढ़ियोंका उद्धार कर देता है । जो नैमिषमें उपवासपूर्वक प्राणत्याग करता है, वह समस्त पुण्यलोकोंमें आनन्दका अनुभव करता है । नैमिषतीर्थ नित्य पवित्र और पुण्यजनक है । (वन० ८४ । ५९–६४) । देवर्षिसेवित प्राची दिशामें नैमिष नामक तीर्थ है, जहाँ भिन्न-भिन्न देवताओंके पृथक्-पृथक् पुण्यतीर्थ हैं । वहाँ देवर्षिसेवित परम रमणीय पुण्यमयी गोमती नदी है । देवताओंकी यज्ञभूमि और सूर्यका यज्ञ-पात्र विद्यमान है (वन० ८७ । ६-७) । भाइयोंसहित राजा युधिष्ठिरने नैमिषारण्य तीर्थमें आकर गोमतीके पुण्य तीर्थोंमें स्नान, गोदान एवं धन दान किया (वन० ९५ । १-२) ।

नैमिषकुञ्ज–कुरुक्षेत्रकी सीमामें स्थित एक प्राचीन तीर्थ, जिसका निर्माण नैमिषारण्यनिवासी मुनियोंने किया था । वहाँ स्नान करनेसे अग्निष्टोम यज्ञका फल प्राप्त होता है (वन० ८३ । १०९) ।

नैमिषेय–एक तीर्थ, जहाँ नैमिषारण्यवासी मुनियोंके दर्शनार्थ सरस्वतीकी धारा पश्चिमसे पूर्वको लौट आयी थी । यहाँ सरस्वतीकी धारा पलटनेका विशेष विवरण (शल्य० ३७ । ३५–५७) ।

नैर्ऋत–एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ५१) ।

नैर्ऋति–एक राक्षस । पृथ्वीके प्राचीन शासकोंमें इसका नाम है (शान्ति० २२७ । ५२) ।

नौकर्णी–स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । २९) ।

नौबन्धन–हिमालयका एक शिखर । यहाँ मत्स्य भगवान्के सींगसे खोलकर सप्तर्षियोंने नौका बाँधी थी (वन० १८७ । ५०) ।

न्यग्रोधतीर्थ–उत्तराखण्डका दृषद्वती-तटवर्ती एक आश्रम (वन० ९० । ११) ।

(प)

पक्षालिका–स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । १९) ।

पङ्कजित्–गरुडकी प्रमुख संतानोंमेंसे एक (उद्योग० १०१ । १०) ।

पङ्कदिग्धाङ्ग–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ६८) ।

पञ्चक–इन्द्रद्वारा स्कन्दको दिये गये दो पार्षदोंमेंसे एक । दूसरेका नाम उत्क्रोश था (शल्य० ४५ । ३५) ।

पञ्चकर्पट–एक पश्चिम भारतीय जनपद, जिसे नकुलने जीता था (सभा० ३२ । ७) ।

पञ्चगङ्गा–एक तीर्थ, जहाँ मृत्युने तपस्या की थी (द्रोण० ५४ । २३) ।

पञ्चगण–उत्तर दिशाका एक जनपद, जिसे अर्जुनने जीता था (सभा० २७ । १२) ।

पञ्चचूड़ा–पाँच जूड़ोंवाली एक अप्सरा (वन० १३४ । १२) । जो शुकदेवजीको परमपदकी प्राप्तिके लिये ऊपरकी ओर जाते देख आश्चर्यचकित हो उठी थी (शान्ति० ३३२ । १९-२०) । इसने नारदजीके समक्ष नारी-स्वभावका वर्णन किया था (अनु० ३८ । ११–३०) ।

पञ्चजन–'पञ्चजन' नामसे प्रसिद्ध पाँच असुर, जो नरकासुरके अनुयायी थे । भगवान् श्रीकृष्णने इनका वध किया था (सभा० ३८ । २९ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ७९८) ।

पञ्चनद–पश्चिमोत्तर भारतका एक प्रदेश, जिसे आजकल पंजाब कहते हैं; इसे पश्चिम-दिग्विजयके समय नकुलने जीता था (सभा० ३२ । ११) । इस प्रान्तमें पाँच प्रसिद्ध नदियाँ विपाशा (व्यास), शतद्रू (सतलज), इरावती (रावी), चन्द्रभागा (चनाब) और वितस्ता (झेलम) बहती हैं । इसलिये इसे पञ्चनद या पञ्जाब कहा गया है ।

पञ्चनद–(१) एक तीर्थ, जहाँ स्नान करनेसे मनुष्य पञ्चमहायज्ञोंका फल पाता है (वन० ८२ । ८३) । (२) कुरुक्षेत्रकी सीमामें स्थित एक तीर्थ, जहाँ कोटि-तीर्थमें स्नान करनेसे अश्वमेध यज्ञका फल प्राप्त होता है (वन० ८३ । १६-१७) ।

पञ्चमी–एक प्रमुख नदी, जिसका जल भारतवासी पीते हैं (भीष्म० ९ । २६) ।

पञ्चयज्ञा–एक प्राचीन तीर्थ, जहाँकी यात्रा करनेसे मनुष्य स्वर्गलोकमें प्रतिष्ठित होता है (वन० ८४ । १०-११) ।

पञ्चरात्र–एक आगम या शास्त्र, जिसके विशेषज्ञ पञ्चशिख-मुनि बताये गये हैं (शान्ति० २१८ । ११-१२) ।

पञ्चवक्त्र–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ७६) ।

पञ्चवटी–कुरुक्षेत्रकी सीमामें स्थित एक तीर्थ, जिसकी यात्रा करके महान् पुण्यसे युक्त हो मनुष्य सत्पुरुषोंके लोकमें प्रतिष्ठित होता है (वन० ८३ । १६२) ।

पञ्चवीर्य–एक सनातन विश्वेदेव (अनु० ९१ । ३६) ।

पञ्चशिख–एक प्राचीन ऋषि, जो कपिलाके पुत्र और आसुरिके शिष्य थे (शान्ति० २१८ । ६) । इनका पञ्चशिख नाम पड़नेका कारण (शान्ति० २१८ । ११-१२) । मिथिलानरेश जनदेवको इनका उपदेश (शान्ति० २१८ । २२ से २१९ । ५२ तक) । जरा-मृत्युकी निवृत्तिके विषयमें जनकको इनका उपदेश (शान्ति० ३१९ । ६–१५) ।

पञ्चाल–एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ४१; भीष्म० ९ । ४७) ।

पटच्चर–एक भारतीय जनपद और वहाँके निवासी राजा एवं राजकुमार आदि; इस देशके लोग जरासंधके भयसे दक्षिणको भाग गये थे (सभा० १४ । २६) । सहदेवने इन्हें दक्षिणदिग्विजयके समय जीता था (सभा० ३१ । ४) । ये लोग युधिष्ठिरके पक्षमें लड़ने आये थे और उन्हींके साथ क्रौञ्चव्यूहके पृष्ठभागमें खड़े थे (भीष्म० ५० । ४८) ।

पटवासक–धृतराष्ट्रकुलमें उत्पन्न एक नाग, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें जल मरा था (आदि० ५७ । १८) ।

पट्टुश–एक राक्षस, जिसने श्रीरामसेनाके पनस नामक वानरके साथ युद्ध किया था (वन० २८५ । ९) ।

पण्डितक (या पण्डित)–धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६७ । १०१) । भीमसेनद्वारा इसका वध (भीष्म० ८८ । २४-२५) ।

पतत्रि–कौरवपक्षका एक योद्धा, इसका भीमसेनद्वारा रथहीन होना (कर्ण० ४८ । ३०) ।

पतन–राक्षसों और पिशाचोंके दल (वन० २८५ । १-२) ।

पताकी–कौरवदलका एक योद्धा, जिसे साथ लेकर अर्जुनपर आक्रमण करनेके लिये दुर्योधनका शकुनिको आदेश (द्रोण० १५६ । १२२) ।

पतिव्रतामाहात्म्यपर्व–वनपर्वका एक अवान्तर पर्व (अध्याय २९३ से २९९ तक) ।

पत्ति–सेनाका परिमाणविशेष (आदि० २ । १९) ।

पत्तोर्ण–एक क्षत्रियनरेश, जो युधिष्ठिरके राजसूययज्ञमें भेंट लेकर आये थे (सभा० ५२ । १८) ।

पथिकृत–एक अग्नि; यदि दर्श और पूर्णमास याग बीचमें ही बंद हो जाय तो इनके लिये अष्टाकपाल पुरोडाश देनेका विधान है (वन० २२१ । ३०) ।

पदाति–कुरुकुमार जनमेजयके सातवें पुत्र (आदि० ९४। ५७)।

पद्म (प्रथम)–(१) कश्यप और कद्रूसे उत्पन्न पद्मनामक एक प्रमुख नाग (आदि० ३५। १०)। (२) (द्वितीय) कश्यप और कद्रूसे उत्पन्न पद्मनामका दूसरा नाग (आदि० ३४। १०)। ये दोनों पद्म वरुणकी सभामें उपस्थित होते हैं (सभा० ९। ८)। (३) एक राजा, जो यम-सभामें रहकर सूर्यपुत्र यमकी उपासना करता है (सभा० ८। २१)। (४) एक निधि, जो कुबेरकी सभामें उपस्थित रहती है (सभा० १०।३९)। (५) स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५। ५६)।

पद्मकूट-भगवान् श्रीकृष्णके एक प्रासादका नाम (सभा० ३८। २९ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ८१५)। (इस भवनमें भगवान्की प्रेयसी श्रीसुप्रभाजी रहती थीं।)

पद्मकेतन–गरुडकी प्रमुख संतानोंमेंसे एक (उद्योग० १०१। ११)।

पद्मनाभ–(१) धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६७। ९६)। (२) नैमिषारण्यमें गोमती-तटपर नागपुरमें निवास करनेवाला एक नाग (शान्ति० ३५५। ४)। इसके गुणोंका वर्णन (शान्ति० ३५५। ५—११)। इसका अपनी पत्नीसे धर्मविषयक वार्तालाप (शान्ति० ३५९ अध्याय)। अभिमान और रोष छोड़कर ब्राह्मणको दर्शन देनेके लिये उद्यत होना (शान्ति० ३६१। ८—१२)। ब्राह्मणके पूछनेपर सूर्यमण्डलकी कथा सुनाना (शान्ति० ३६२ अध्याय)।

पद्मसर–एक सरोवर, जहाँ खाण्डवप्रस्थसे गिरिव्रजकी ओर जाते समय मार्गमें श्रीकृष्ण, अर्जुन और भीमसेन पहुँचे थे (सभा० २०। २६)।

पद्मसौगन्धिक–चेदिदेशके पास वनप्रान्तमें स्थित एक कमलमण्डित सरोवर, जहाँ व्यापारियोंके एक दलपर जंगली हाथियोंने आक्रमण किया था (वन० ६५। २–८)।

पद्मावती–स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६। ९)।

पनस–एक वानर-यूथपति, जो सत्तावन करोड़ सेना साथ लेकर श्रीरामचन्द्रजीके पास आया था (वन० २८३। ६)। इसने पटुश नामक राक्षसके साथ युद्ध किया था (वन० २८५। ९)।

पम्पासरोवर-ऋष्यमूक पर्वतके पासका एक सरोवर, जिसके समीप अपने चार मन्त्रियोंके साथ सुवर्ण-मालाधारी वानरराज वालीके भाई सुग्रीव निवास करते थे (वन० २७९। ४४)।

पयस्य–महर्षि अङ्गिराके वारुणसंज्ञक आठ पुत्रोंमेंसे एक (अनु० ८५। १३०)।

पयोदा–स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६। २८)।

पयोष्णी–एक परम पवित्र नदी, जो विन्ध्यपर्वतसे निकलकर दक्षिण दिशाकी ओर बहती है। राजा नलने इसे समुद्रगामिनी बताकर दमयन्तीको इसका और विन्ध्यपर्वतका दर्शन कराया था (वन० ६१। २२)। सरिताओंमें श्रेष्ठ पयोष्णीमें जाकर स्नान एवं देवता-पितरोंका पूजन करनेसे तीर्थसेवीको सहस्र गोदानका फल मिलता है (वन० ८५। ४०)। राजा नृगने पयोष्णीके तटपर उत्तम वाराहतीर्थमें यज्ञ किया था; जिसमें सोम पीकर इन्द्र और दक्षिणा पाकर ब्राह्मण मस्त हो गये थे (वन० ८८। ४–६; वन० १२१। १-२)। पयोष्णीका जल हाथसे उठाया गया हो, धरतीपर पड़ा हो या वायुके वेगसे उछलकर शरीरपर पड़ गया हो, वह जन्मसे लेकर मृत्युपर्यन्त किये हुए समस्त पापोंको हर लेता है। यहाँ भगवान् शङ्करका शृङ्गनामक वाद्यविशेष है, जिसके दर्शनसे मनुष्यको शिवधामकी प्राप्ति होती है। इसका माहात्म्य दूसरी सभी नदियोंसे बढ़कर है (वन० ८८। ७–९)। धर्मराज युधिष्ठिर लोमशजी, भाइयों और सेवकोंके साथ विदर्भनरेशद्वारा पूजित उत्तम तीर्थोंवाली पुण्यसलिला पयोष्णीके तटपर गये थे। उसके जलमें यज्ञसम्बन्धी सोमरसका सम्मिश्रण हुआ था। धर्मराजने पयोष्णीके तटपर जाकर उसका जल पीया और वहाँ निवास किया (वन० १२०। ३१–३२)। अमूर्तरयाके पुत्र राजा गयने इसके तटपर सात अश्वमेध यज्ञ करके सोमरसके द्वारा वज्रधारी इन्द्रको संतुष्ट किया था (वन० १२१। ३)। यह भारतकी उन प्रमुख नदियोंमेंसे है, जिसका जल भारतवासी पीते हैं (भीष्म० ९। २०)।

पर–(१) एक प्राचीन राजा (आदि० १। २३४)। (२) विश्वामित्रके ब्रह्मवादी पुत्रोंमेंसे एक (अनु० ४। ५५)।

परतङ्गण–एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९। ६४)।

परपुरञ्जय–एक हैहयवंशी राजकुमार, इसके द्वारा हिंसक पशुके धोखेमें एक ऋषिकी हत्या (वन० १८४। ५)। अरिष्टनेमिद्वारा इसके ब्रह्महत्याके भ्रमका निवारण (वन० १८४। १४)।

परमकाम्बोज–पश्चिमोत्तर भारतका एक जनपद, जिसे अर्जुनने जीता था (सभा० २७। २५)।

परमक्रोधी–एक विश्वेदेव (अनु० ९१। ३२)।

परमेष्ठी–महाराज अजमीढ़के द्वारा नीलीके गर्भसे उत्पन्न द्वितीय पुत्र, इनके सभी पुत्र पाञ्चाल कहलाये (आदि० ९४ । ३२-३३)।

परशुराम–महर्षि जमदग्निके पुत्र, माताका नाम रेणुका, इनके द्वारा समन्तपञ्चक क्षेत्रका निर्माण (आदि० २ । ४) । क्षत्रियोंके रुधिरसे पितरोंका तर्पण तथा पितरों-द्वारा इनको वरदान (आदि० २ । ५-७) । इन्होंने इक्कीस बार इस पृथ्वीको क्षत्रियोंसे शून्य किया और अन्तमें महेन्द्र पर्वतपर उत्तम तपस्या की (आदि०६४।४)। इनके द्वारा महर्षि कश्यपको समस्त पृथ्वीका दान (आदि० १२९ । ६२) । द्रोणको सम्पूर्ण अस्त्रोंकी शिक्षा (आदि० १२९ । ६६) । द्रोणको ब्रह्मास्त्रका दान (आदि० १६५ । १३) । ये यमसभामें उपस्थित होते हैं (सभा० ८ । १९) । इनके द्वारा जम्भासुरके मस्तकका भेदन और शतदुन्दुभि नामक दैत्यका विनाश । इनके द्वारा इक्कीस बार क्षत्रियोंका विनाश हुआ और सहस्र-बाहु अर्जुन मारा गया । शाल्वके साथ इनका भयानक युद्ध, शाल्वके सौभ विमानको नष्ट न कर सकनेके सम्बन्धमें इनके प्रति नग्निका कुमारिकाओंके वचन (सभा० ३८ । २९ के बाद, पृष्ठ ७९२ से ७९५ तक) । ये युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें गये थे और इनके सहित ऋषियोंने युधिष्ठिरका अभिषेक किया (सभा० ५३ । ११)। परशुरामजीने भृगुतुङ्ग पर्वतपर युधिष्ठिरको उपदेश दिया था (सभा० ७८ । १५) । लोमशजीद्वारा युधिष्ठिरके प्रति इनके चरित्रका वर्णन (वन० ९९ । ४०–७१)। पिताकी आज्ञासे इनका अपनी माताका वध करना (वन० ११६ । १४) । इनको पिताका वरदान (वन० ११६ । १८) । इनके द्वारा कार्तवीर्य अर्जुनका वध (वन० ११६ । २५) । कुपित हुए इनका इक्कीस बार पृथ्वीको क्षत्रियोंसे सूनी करना (वन० ११७ । ९) । इनका यज्ञ और कश्यप आदि ब्राह्मणों-को भूमिदान (वन० ११७ । ११) । ये कर्णके गुरु थे (वन० ३०२ । ९) । हस्तिनापुर जाते समय मार्गमें इनका श्रीकृष्णसे मिलना और वार्तालाप करना (उद्योग० ८३ । ६४ के बादसे ७२ तक) । कौरव-सभामें दम्भोद्भवका उदाहरण देते हुए नर-नारायणस्वरूप श्रीकृष्ण और अर्जुनकी महिमाका वर्णन (उद्योग० ९६ अध्याय) । अम्बाका कार्य करनेके लिये उसे सान्त्वना देना (उद्यो० १७७ । ३२–३४) । अम्बाके साथ हस्तिनापुर जाकर भीष्मसे उसे ग्रहण करनेको कहना (उद्योग० १७८ । ३०) । भीष्मके अस्वीकार करनेपर उन्हें मार डालनेकी धमकी देना (उद्योग० १७८ । ३५-३६) । भीष्मके साथ युद्धके लिये कुरुक्षेत्रमें जाना (उद्योग० १७८ । ६६) । इनके संकल्पमय रथका वर्णन (उद्योग० १७९ । ३-४) । भीष्मके साथ युद्धा-रम्भ (उद्योग० १७९ । १९ से १८५ अध्याय तक) । देवता, पितर और गङ्गाके आग्रहसे इनका युद्ध बंद करके भीष्मपर संतुष्ट होना (उद्योग० १८५ । ३६) । अम्बा-से अपनी असमर्थता प्रकट करते हुए जानेके लिये कहना (उद्योग० १८६ । ३) । संजयको समझाते हुए नारदजीद्वारा इनके चरित्रका वर्णन (द्रोण० ७० अध्याय) । शिवसे वरदान पाना और दानवोंका वध करना (कर्ण० ३४ । १४९–१५५) । ब्राह्मणरूपधारी कर्णका रहस्य खुल जानेपर इनके द्वारा उसको शाप-दान (कर्ण० ४ । ९) । इनके देखनेमात्रसे दंशनामक राक्षस-का कीट-योनिसे उद्धार (शान्ति० ३ । १४) । कर्णको शाप (शान्ति० ३ । ३०–३२) । इनके जन्मका प्रसंग (शान्ति० ४९ । ३१-३२) । तपस्याद्वारा महादेवजीसे कुठार प्राप्त करना (शान्ति० ४९ । ३३) । हैहयराज अर्जुनकी भुजाओंका छेदन (शान्ति० ४९ । ४८)। कार्तवीर्यके वंशका संहार (शान्ति० ४९ । ५२-५३)। यज्ञान्तमें सारी पृथ्वी दक्षिणारूपमें कश्यपको दान (शान्ति० ४९ । ६३-६४) । शूर्पारक क्षेत्रमें निवास (शान्ति० ४९ । ६६–६७) । मुचुकुन्दको कपोत और बहेलियेकी कथा सुनाना (शान्ति० अध्याय १४३ से १४९ तक)। इनके द्वारा ब्राह्मणको पृथ्वी-दान (शान्ति० २३४ । २६) । शिव-महिमाके विषयमें युधिष्ठिरको अपना अनु-भव सुनाना (अनु० १८ । १२–१५) । वशिष्ठ आदि ऋषियोंसे अपनी शुद्धिका उपाय पूछना (अनु० ८४ । ३९-४०) । इनके द्वारा भूमिदान (अनु० १३७ । १२) । कार्तवीर्य अर्जुनका वध (आश्व० २९ । ११)। इक्कीस बार क्षत्रियोंका संहार (आश्व० २९ । १८)। पितरोंके समझानेसे युद्धसे विरत होना और तपस्याद्वारा परमसिद्धिकी प्राप्ति (आश्व० ३० अध्याय) ।

परशुरामकुण्ड–कुरुक्षेत्रकी सीमामें स्थित और परशुराम-द्वारा स्थापित पाँच कुण्ड, जो सुप्रसिद्ध तीर्थ हैं । इनकी उत्पत्ति और महत्ता (वन० ८३ । २६–३८) ।

परशुवन–एक नरक (शान्ति० ३२१ । ३२) ।

परहा–एक प्राचीन राजा (आदि० १ । २३८) ।

परान्त–एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ४७) ।

परावसु–एक ऋषि, जो रैभ्य मुनिके पुत्र और अर्वावसुके बड़े भाई थे । हिंसक पशुके धोखेमें इनके द्वारा पिताका वध और उनका अन्त्येष्टि-संस्कार (वन० १३८ । २—७) । इनका अपने छोटे भाई अर्वावसुको अपनी की हुई ब्रह्महत्याके निवारणके लिये व्रत करनेकी आज्ञा देना और उनका भाईकी आज्ञाको स्वीकार करना (वन०

१३८। ८–१०)। देवताओंद्वारा बृहद्द्युम्नके यज्ञसे इनका निकलवाया जाना (वन० १३८। २०)। अर्वावसुके प्रयत्नसे इनका निर्दोष सिद्ध होना (वन० १३८। २१)। इनके द्वारा परशुरामजीपर आक्षेप (शान्ति० ४९। ५७–५९)। ये अङ्गिराके वंशज माने जाते हैं (शान्ति० २०८। २६)। इन्होंने उपरिचरके यज्ञकी सदस्यता स्वीकार की (शान्ति० ३३६। ७)। ये इन्द्रसभाके सदस्य हैं (सभा० ७। १७ के बाद दाक्षिणात्य पाठ)।

परावह–वायुके सात भेदोंमेंसे एक। यह सप्तम वायु है। इसके स्वरूप और शक्तिका वर्णन (शान्ति० ३२८। ५२)।

पराशर–(१) धृतराष्ट्रके वंशमें उत्पन्न एक नाग, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें स्वाहा हो गया (आदि० ५७। १९)। (२) महर्षि शक्तिके द्वारा अदृश्यन्तीके गर्भसे उत्पन्न एक ऋषि, जो वसिष्ठ मुनिके पौत्र थे (आदि० १७७। १)। राक्षसभावापन्न कल्माषपादद्वारा इनके पिता शक्तिका वध (आदि० १७५। ४०)। बारह वर्षोंतक माताके गर्भमें इनका वेदाभ्यास (आदि० १७६। १५)। इनका 'पराशर' नाम होनेका कारण (आदि० १७७। ३)। अपनी माताके मुँहसे राक्षसद्वारा अपने पिताकी मृत्युका समाचार सुनकर सम्पूर्ण जगत्के विनाशके लिये इनका संकल्प (आदि० १७७। ५–९)। भृगुवंशी और्वकी कथा सुनाकर वशिष्ठद्वारा इनके जगद्विनाशके संकल्पका निवारण (आदि० १७७। ११ से अध्याय १८०। १ तक)। इनके द्वारा राक्षससत्रका अनुष्ठान, पुलस्त्य आदि महर्षियोंद्वारा इनके राक्षसयज्ञका निवारण (आदि० १८०। ८–११)। सत्यवतीके रूपके प्रति इनका आकर्षण (आदि० ६३। ७०-७१)। इनका सत्यवतीको योजनगन्धा होनेका वरदान देना (आदि० ६३। ८०–८२)। इनके द्वारा सत्यवतीके गर्भसे व्यासका जन्म (आदि० ६३। ८४)। ये शरशय्यापर पड़े हुए भीष्मजीको देखनेके लिये उनके पास गये थे (शान्ति० ४७। १०)। इन्होंने दयावश सौदासके पुत्रकी रक्षा की थी (शान्ति० ४९। ७७)। इनके द्वारा जनकको कल्याण-प्राप्तिके साधनका उपदेश (शान्ति० २९० अध्याय)। शिवमहिमाके विषयमें युधिष्ठिरको अपना अनुभव बताना (अनु० १८। ४०–४५)। इनका अपने शिष्योंको विविध ज्ञानपूर्ण उपदेश (अनु० ९६। २१ के बाद दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ५७७४ से ५७८६ तक)। पराशरमतानुसार सावित्रीमन्त्रका वर्णन (अनु० १५० अध्याय)।

परिक्षित् (परीक्षित्)–(१) कुरुकुमार अविक्षित्के प्रथम पुत्र। इनके कक्षसेन, उग्रसेन, चित्रसेन, इन्द्रसेन, सुषेण तथा भीमसेन नामके छः पुत्र थे। ये सभी धर्म और अर्थके ज्ञाता थे (आदि० ९४। ५२–५४)। (२) कुरुकुमार अनश्वाके पुत्र। इनकी माताका नाम 'अमृता' था। इनके द्वारा सुयशाके गर्भसे भीमसेनका जन्म हुआ था (आदि० ९५। ४१-४२)। (३) एक पाण्डुवंशीय सम्राट्, जो सुभद्राकुमार अभिमन्यु और उत्तराके पुत्र थे (आश्व० ६६ अध्याय)। इनके जन्मकालमें भगवान् श्रीकृष्ण हस्तिनापुरमें विद्यमान थे (आश्व० ६६। ८)। ये ब्रह्मास्त्रसे पीड़ित होनेके कारण चेष्टाहीन शवके रूपमें उत्पन्न हुए; अतः स्वजनोंका हर्ष और शोक बढ़ानेवाले हो गये थे (आश्व० ६६। ९)। इन्हें जीवित करनेके लिये कुन्तीकी श्रीकृष्णसे प्रार्थना (आश्व० ६६। १५–२८)। इन्हें जिलानेके लिये रोती हुई सुभद्राकी श्रीकृष्णसे प्रार्थना (आश्व० ६७ अध्याय)। श्रीकृष्णका प्रसूतिकागृहमें प्रवेश, उत्तराका विलाप और अपने पुत्रको जीवित करनेके लिये उसकी प्रार्थना (आश्व० ६८ अध्याय)। उत्तराका विलाप और भगवान् श्रीकृष्णका उसके मृत बालकको जीवनदान देना (आश्व० ६९ अध्याय)। श्रीकृष्णद्वारा परीक्षित्का नामकरण। उत्तराका इन्हें गोदमें लेकर श्रीकृष्णको प्रणाम करना और श्रीकृष्णका शिशु परीक्षित्के लिये बहुत-से रत्न उपहारमें देना (आश्व० ७०। ९—१२)। इनकी एक मासकी अवस्था होनेपर पाण्डवोंका हिमालयसे धन लेकर आना (आश्व० ७०। १३-१४)। युधिष्ठिरद्वारा परीक्षित्का कुरुदेशके राज्यपर अभिषेक (महाप्रस्थान० १। ७-८)। कृपाचार्यकी पूजा करके युधिष्ठिरका पुरवासियोंसहित परीक्षित्को शिष्यभावसे उनकी सेवामें सौंपना (महाप्रस्थान० १। १४-१५)। इनका माद्रवतीके साथ विवाह और उसके गर्भसे जनमेजय आदिका जन्म (आदि० ९५। ८५)। इनके तीन पुत्र और थे—श्रुतसेन, उग्रसेन और भीमसेन (आदि० ३। १७)। ये अपने प्रपितामह पाण्डुकी भाँति शिकार खेलनेके शौकीन थे (आदि० ४०। १०-११)। इनका एक दिन मृगयाके लिये एक गहन वनमें जाकर एक हिंसक पशुको बींधना और उस पशुका अदृश्य हो जाना (आदि० ४०। १३–१६)। थके-माँदे और प्यासे हुए राजाका शमीक मुनिके आश्रमपर आना, अपने बाणोंसे बिंधे हुए पशुका पता पूछना और ध्यानस्थ मुनिके उत्तर न देनेपर कुपित हुए नरेशका उनके कंधेपर एक मरा हुआ साँपको डाल देना (आदि० ४०। १७–२१)। राजाके दुर्व्यवहारसे दुखी हुए ऋषिकुमार कृशका शमीकपुत्र शृङ्गीऋषिको उनके विरुद्ध

उत्तेजित करना (आदि० ४० । २७—३२)। शृङ्गी-ऋषिका क्रुशसे राजा परीक्षित्के दुर्व्यवहारकी बात जानकर उन्हें शाप देना और शमीकका अपने पुत्रको शान्त करते हुए शापको अनुचित बताना (आदि० ४१ अध्याय)। शमीकमुनिके भेजे हुए गौरमुखका राजा परीक्षित्के पास आना और शृङ्गीऋषिके दिये हुए शापकी बात बताकर उनसे आत्मरक्षाके लिये प्रयत्न करनेको कहना (आदि० ४२ । १३—२२)। राजा परीक्षित्का पश्चात्ताप करना, मन्त्रियोंकी सलाहसे एक ही खंभेका ऊँचा महल बनवाना और रक्षाके लिये मन्त्र, औषध आदिकी आवश्यक व्यवस्था करना (आदि० ४२ । २३—३२)। परीक्षित्की रक्षाके लिये आते हुए काश्यपको लौटाकर तक्षकका छलसे परीक्षित्के पास पहुँचकर उन्हें डँस लेना (आदि० ४३ अध्याय)। इनकी मृत्युसे दुखी हुए मन्त्रियोंका रोदन और इनके अल्पवयस्क पुत्र जनमेजयका राज्याभिषेक (आदि० ४४ । १—६) । जनमेजयके पूछनेपर मन्त्रियोंद्वारा इनके धर्ममय आचार तथा उत्तम गुणोंका वर्णन (आदि० ४९ । ३–१८)। तक्षकद्वारा इनकी मृत्यु होनेका पुनः वर्णन (आदि० अध्याय ४९ से ५० तक)। व्यासजीकी कृपासे जनमेजयको अपने परलोकवासी पिता परीक्षित्का दर्शन। उनका अपने पिताको अवभृथ-स्नान कराना। तत्पश्चात् परीक्षित्का अदृश्य हो जाना (आश्रम० ३५ । ६–९)।

महाभारतमें आये हुए परीक्षित्के नाम—अभिमन्युसुत, अभिमन्युज, भरतश्रेष्ठ, किरीटितनयात्मज, कुरुश्रेष्ठ, कुरु-नन्दन, कुरुराज, कुरुवर्धन, पाण्डवेय आदि। (४) अयोध्याके एक इक्ष्वाकुवंशी नरेश (वन० १९२ । ३)। इनका मण्डूकराजकी कन्या सुशोभनासे विवाह (वन० १९२ । १२) । इनके द्वारा सुशोभनाके बावड़ीमें डूब जानेपर मण्डूकोंको मार डालनेका आदेश (वन० १९२ । २२ –२४)। मण्डूकराजद्वारा पुनः इन्हें सुशोभनाकी प्राप्ति (वन० १९२ । ३५)। सुशोभनाके गर्भसे इन्हें पुत्रकी प्राप्ति और इनका वनगमन (वन० १९२ । ३८)। (५) एक प्राचीन नरेश, जो कुरुवंशी अभिमन्युपुत्र परीक्षित्से भिन्न थे। इन्द्रोत मुनिद्वारा इनके पुत्र जनमेजयकी ब्रह्महत्याका निवारण (शान्ति० अध्याय १५० से १५१ तक)।

परिघ—(१) अंशद्वारा स्कन्दको दिये गये पाँच पार्षदोंमेंसे एक। चारके नाम इस प्रकार हैं—वट, भीम, दहति, और दहन। (२) विडालोपाख्यानमें वर्णित व्याधका नाम (शान्ति० १३८ । ११७)।

परिबर्ह—गरुडकी प्रमुख संतानोंमेंसे एक (उद्योग० १०१ । १३)।

परिवह—छठा वायुतत्त्व, इसके स्वरूप और शक्तिका वर्णन (शान्ति०३२८ । ४८)।

परिव्याध—पश्चिम दिशामें रहनेवाले एक महर्षि (शान्ति० २०८ । ३०)।

परिश्रुत—(१) स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ६०)। (२) स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ६१)

पर्जन्य—एक देवगन्धर्व, जो कश्यपद्वारा मुनिके गर्भसे उत्पन्न हुए थे (आदि० ६५ । ४४)। ये अर्जुनके जन्मोत्सवमें पधारे थे (आदि० १२२ । ५६)।

पर्णशाला—यामुनपर्वतकी तलहटीमें बसा हुआ ब्राह्मणोंका एक गाँव, जहाँ शर्मी नामक विद्वान् ब्राह्मण रहते थे (अनु० ६८ । ४–६)।

पर्णाद—(१) एक प्राचीन ऋषि, जो युधिष्ठिरकी सभामें विराजते थे (सभा० ४ । १३)। हस्तिनापुर जाते समय मार्गमें श्रीकृष्णसे इनकी भेंट (उद्योग०८३ । ६४ के बाद दा० पाठ)। (२) एक विदर्भनिवासी ब्राह्मण। इनका बाहुक नामधारी राजा नलका समाचार दमयन्तीसे कहना (वन० ७० । २–१३)। इन्हें दमयन्तीद्वारा पुरस्कार-दान (वन० ७० । १९)। (३) विदर्भनिवासी सत्य नामक ब्राह्मणके यज्ञमें होताका काम करनेवाले ऋषि (शान्ति० २७३ । ८)।

पर्णाशा—पश्चिमोत्तर भारतकी एक नदी, जो वरुणकी सभामें उपस्थित होती है (सभा० ९ । २१)। (कोई-कोई इसे राजपूतानेके अन्तर्गत 'बनास नदी' मानते हैं, जो चर्मण्वती या चम्बलकी सहायक है।) यह उन प्रमुख नदियोंमेंसे है, जिनका जल भारतवासी पीते हैं (भीष्म० ९ । ३१)। इसने वरुणद्वारा श्रुतायुध नामक पुत्रको जन्म दिया और वरुणसे प्रार्थना की कि 'मेरा यह पुत्र शत्रुओंके लिये अवध्य हो।' तब वरुणने कहा कि 'मैं इसके लिये हितकारक वरके रूपमें यह दिव्यास्त्र प्रदान करता हूँ, जिसके द्वारा तुम्हारा यह पुत्र अवध्य होगा' (द्रोण० । ९२ । ४४–४६)।

पर्वण—राक्षसों और पिशाचोंके दल (वन० २८५ । १–२)।

पर्वत—प्राचीन ऋषि या देवर्षि, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें सदस्य बने थे (आदि० ५३ । ८)। (ये और नारद अनेक स्थलोंपर साथ-साथ वर्णित हुए हैं। इन दोनोंको गन्धर्व भी माना जाता है और देवर्षि भी।) पर्वत और नारद द्रौपदीके स्वयंवरके अवसरपर आकाशमें दर्शक बनकर उपस्थित थे (आदि० १८६ । ७)। ये

युधिष्ठिरकी सभामें विराजते थे (सभा ४ । १५) । ये इन्द्रसभामें भी रहते हैं (सभा० ७ । १०) । गन्धर्वरूपसे कुबेर-की सभामें भी विराजते हैं (सभा० १० । २६) । ये नारद-जीके साथ इन्द्रलोकमें गये थे (वन० ५४ । १४) । काम्यकवनमें पाण्डवोंके पास जाकर इन्होंने उन्हें शुद्धभाव-से तीर्थयात्रा करनेके लिये आज्ञा दी थी (वन० ९३ । १८–२०) । राजा सृंजयकी कन्याको देखकर उसे प्राप्त करनेकी इच्छा करना (द्रोण० ५५ । ९–१०) । उस कन्याका नारदजीद्वारा वरण हो जानेसे कुपित हुए इनके द्वारा नारदजीको शाप(द्रोण० ५५ १४)। इनका रात्रियुद्धमें कौरव-पाण्डव-सेनाओंमें दीपकका प्रकाश करना (द्रोण० १६३ । १५) । ये नारदजीके भानजे थे—इन दोनों मुनियोंके उपाख्यानका श्रीकृष्णद्वारा वर्णन (शान्ति० ३० अध्याय) । इनका राजा सृंजयको पुत्रप्राप्तिका वर देना (शान्ति० ३१ । १६–१९) । अगस्त्यजीके कमलोंकी चोरी होनेपर शपथ खाना (अनु० ९४ । ३४) ।

पर्वसंग्रहपर्व–आदिपर्वका एक अवान्तर पर्व (अध्याय २) ।

पलाला–सात शिशु-माताओंमेंसे एक (वन० २२८ । १०) ।

पलाशवन–एक तीर्थभूत वन, जहाँ जमदग्निने यज्ञ किया था । उस यज्ञमें श्रेष्ठ नदियाँ मूर्तिमती हो अपना अपना जल लेकर उन मुनिश्रेष्ठके पास आयी थीं । उन्होंने वहाँ मधुसे ब्राह्मणोंको तृप्त किया था (वन० ९४ । १६–१९) ।

पलित–बिडालोपाख्यानमें वर्णित एक चूहेका नाम(शान्ति० १३८ । २१) । इसका लोमश नामक बिलावके साथ संवाद (शान्ति० १३८ । ३४–१९८) ।

पवनह्रद–कुरुक्षेत्रकी सीमामें स्थित एक मरुद्गणतीर्थ । वहाँ स्नान करनेसे मनुष्य विष्णुलोकमें प्रतिष्ठित होता है (वन० ८३ । १०५) ।

पवित्रपाणि–एक ऋषि, जो युधिष्ठिरकी सभामें विराजते थे (सभा० ४ । १५) । ये इन्द्र-सभाके भी सभासद हैं (सभा० ७ । १२) ।

पवित्रा भारतवर्षकी एक प्रमुख नदी, जिसका जल यहाँके वासी पीते हैं (भीष्म० ९ । २१) ।

पशु–एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ६७) ।

पशुदा–स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । २८) ।

पशुभूमि–पशुपतिनाथका निकटवर्ती स्थान (नैपाल) । इस देशपर भीमसेनकी विजय (सभा० ३० । ९) ।

पशुसख–सप्तर्षियोंका सेवक एक शूद्र, जिसकी स्त्रीका नाम गण्डा था (अनु० ९३ । २२) । इसका वृषादर्भिसे प्रतिग्रहके दोष बताना (अनु० ९३ । ४७) । यातुधानीसे अपने नामकी व्याख्या करना (अनु० ९३ । १००) । मृणालकी चोरीके विषयमें शपथ खाना (अनु० ९३ । १३१)।

पश्चिम दिशा–चार दिशाओंमेंसे एक, इसका विशेष वर्णन (उद्योग० ११० अध्याय) ।

पह्लव–(१) एक पश्चिम भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ६८) । (२) एक म्लेच्छ जाति, जो नन्दिनी नामक गौकी पूँछसे प्रकट हुई थी (आदि० १७४ । ३६) । नकुलने इस देश और जातिके लोगोंको जीता था (सभा० ३२ । १७) । ये लोग युधिष्ठिरके राजसूययज्ञमें उपहार लाये थे (सभा० ५२ । १५) । ये मान्धाताके राज्यमें निवास करते थे (शान्ति० ६५ । १३-१४) ।

पांशु–एक प्राचीन देश, जहाँसे राजा वसुदानने छब्बीस हाथी, दो हजार घोड़े और अन्य भेंट-सामग्री पाण्डवोंको समर्पित की थी (सभा० ५२ । २७-२८) ।

पाक–एक असुर, जिसे इन्द्रने मारा था (शान्ति० ९८ । ५०) ।

पाखण्ड–एक दक्षिण भारतीय जनपद, जिसे सहदेवने दूतों-द्वारा ही वशमें कर लिया (सभा० ३१ । ७०) ।

पाञ्चजन्य–(१) रैवतक पर्वतका समीपवर्ती वन, जिसकी बड़ी शोभा होती है (सभा० ३८ । २९ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ८१३) । (२) भगवान् श्रीकृष्णका शङ्ख (सभा० ३८ । २९ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ८१८) । शाल्वके साथ युद्ध करते समय श्रीकृष्णद्वारा पाञ्च-जन्य शङ्खका बजाया जाना (वन० २० । १३) । कुरुक्षेत्रके समराङ्गणमें भगवान् श्रीकृष्णने अपना पाञ्च-जन्य नामक शङ्ख बजाया था (भीष्म० २५ । १५) । (३) पाँच ऋषियोंके अंशसे उत्पन्न एक अग्नि । इसका दूसरा नाम तप था (वन० २२० । ५, ११) ।

पाञ्चरात्र–एक उत्तम शास्त्र, जिसके जाननेवाले महर्षि राजा उपरिचर वसुके यहाँ रहते थे । इसकी उत्पत्तिका प्रसंग (शान्ति० ३३५ । २५–५५) ।

पाञ्चाल–(१) एक प्राचीन देश । द्रुपद यहींके राजा थे । द्रौपदीको प्राप्त करनेके बाद पाण्डवोंने यहाँ सालभर तक निवास किया था (आदि० ६१ । ३१) । (विशेष देखिये पञ्चाल) (२) एक प्राचीन ऋषि, जिन्होंने वामदेवके बताये हुए ध्यानमार्गसे भगवान्‌की आराधना करके उन्हींके कृपाप्रसादसे वेदोंका क्रमविभाग प्राप्त किया था (शान्ति० ३४२ । १०२-१०३) ।

पाञ्चाली–राजा द्रुपदकी पुत्री, जो अग्निकुण्डसे उत्पन्न हुई थी (आदि० १६६ । ४४) । (देखिये––द्रौपदी) ।

पाञ्चाल्य–उत्तराखण्डका एक तीर्थभूत आश्रम (वन० ९० । ११-१२) ।

पाटलावती–भारतवर्षकी एक प्रमुख नदी, जिसका जल भारतके लोग पीते हैं (भीष्म० ९ । २२) ।

पाणिकूर्च–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ७६) ।

पाणिखात–कुरुक्षेत्रकी सीमामें स्थित एक तीर्थ, जहाँ स्नान करके देवता-पितरोंका तर्पण करनेसे अग्निष्टोम, अतिरात्र और राजसूय यज्ञोंका फल मिलता है (वन० ८३ । ८९) ।

पाणिमान्–एक नाग, जो वरुणकी सभामें उपस्थित हो उनकी उपासना करता है (सभा० ९ । १०) ।

पाणीतक–पूषाद्वारा स्कन्दको दिये गये दो पार्षदोंमेंसे एक । दूसरेका नाम कालिक था (शल्य० ४५ । ४३) ।

पाण्डर–ऐरावतकुलमें उत्पन्न हुआ एक नाग, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें जल मरा था (आदि० ५७ । ११) ।

पाण्डव–पाण्डुके पुत्र । युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल तथा सहदेव—ये पाँचों पाण्डव कहलाते थे । शतशृङ्गनिवासी ऋषियोंद्वारा पाण्डवोंके नामकरण-संस्कार (आदि० १२३ । १९–२२) । वसुदेवके पुरोहित काश्यपके द्वारा इनके उपनयनादि संस्कार और राजर्षि शुकद्वारा इनका विविध विद्याओंमें पारङ्गत होना (आदि० १२३ । ३१ के बाद, पृष्ठ ३६९) । पाण्डुके निधनपर इनका विलाप (आदि० १२४ । १७ के बाद दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ३७२) । शतशृङ्गनिवासी ऋषियोंद्वारा इनको हस्तिनापुर पहुँचाकर भीष्म आदि कौरवोंको इनके जन्मोंका वृत्तान्त सुनाना (आदि० १२५ । २२—२८) । कृपाचार्यसे इनका अध्ययन (आदि० १२९ । २३) । द्रोणाचार्यसे इनका अध्ययन (आदि० १३१ । ९) । एकलव्यकी धनुर्विद्यासे इनका विस्मित होना (आदि० १३१ । ४१) । द्रुपदपर इनका आक्रमण और विजय (आदि० १३७ । ३६–६३) । धृतराष्ट्रके आदेशसे पाण्डवोंका वारणावत जाना (आदि० १४२ । ६—१९) । विदुरद्वारा इनको कौरवोंके कुचक्रसे वचनेका संकेत (आदि० १४४ । १९–२६) । वारणावतनिवासियोंद्वारा इनका स्वागत (आदि० १४५ । १—५) । सुरंगद्वारा लाक्षागृहसे निकलकर इनका पलायन (आदि० १४७ । ११—१८) । विदुरजीके भेजे हुए नाविकके द्वारा इनका गङ्गापार होना (आदि० १४८ । १३) । इनको व्यासजीका आश्वासन तथा एक मासतक एकचक्रा नगरीमें ठहरनेका आदेश (आदि० १५५ । ७—१८) । एकचक्रानगरीमें इनका ब्राह्मणके घरमें निवास (आदि० १५६ । २) । उस नगरीमें इनकी भिक्षावृत्ति (आदि० १५६ । ४) । इनके प्रति एक ब्राह्मणद्वारा द्रोण तथा द्रुपदके पारस्परिक विरोधका; धृष्टद्युम्न एवं द्रौपदीके जन्म और उनके स्वयंवरका वर्णन (आदि० अध्याय १६४ से १६६ तक) । इनके विषयमें द्रुपदका शोक (आदि० १६६ । ५६ के बाद) । द्रौपदीके पूर्वजन्मका वृत्तान्त सुनाकर इनको पञ्चाल देश जानेके लिये व्यासजीकी आज्ञा (आदि० १६८ । ६—१५) । चित्ररथ गन्धर्वद्वारा इनको दिव्य अश्वोंकी प्राप्ति (आदि० १६९ । ४८) । इनका धौम्यके आश्रममें जाना और इनके द्वारा उनका पुरोहितके रूपमें वरण (आदि० १८२ । ६) । इनकी पञ्चालयात्रा (आदि० १८३ अध्याय) । द्रुपदके नगरमें इनका कुम्भकारके घरमें निवास (आदि० १८४ । ६) । ब्राह्मणवेशमें इनका द्रौपदीके स्वयंवरमें प्रवेश (आदि० १८४ । २७) । स्वयंवरमें श्रीकृष्णद्वारा इनका पहचाना जाना (आदि० १८५ । ९) । द्रौपदीरूप भिक्षाका मिलकर उपभोग करनेके लिये इनको माताका आदेश (आदि० १९० । २) । इनसे मिलनेके लिये बलरामसहित श्रीकृष्णका कुम्भकारके घरमें आगमन (आदि० १९० । १८) । धृष्टद्युम्नद्वारा गुप्तरूपसे इनके व्यवहारोंका निरीक्षण (आदि० १९१ । १-२) । द्रुपदद्वारा इनके शील-स्वभावकी परीक्षा (आदि० १९३ । ४—१०) । व्यासद्वारा इनके पूर्वजन्मके दिव्य वृत्तान्तका द्रुपदके प्रति वर्णन (आदि० १९६ अध्याय) । धौम्यमुनिद्वारा इनका क्रमशः द्रौपदीके साथ विधिपूर्वक विवाह (आदि० १९७ अध्याय) । द्रौपदीके विवाहोपलक्षमें इनको श्रीकृष्णद्वारा बहुमूल्य वस्तुओंकी भेंट (आदि० १९८ । १३) । पाण्डवोंके विवाहसे दुर्योधन आदिकी चिन्ता, धृतराष्ट्रका पाण्डवोंके प्रति प्रेमका दिखावा और दुर्योधनकी कुमन्त्रणा (आदि० १९९ अध्याय) । पाण्डवोंको पराक्रमसे दबानेके लिये कर्णकी सम्मति (आदि० २०१ अध्याय) । भीष्मकी दुर्योधनसे पाण्डवोंको आधा राज्य देनेकी सलाह (आदि० २०२ अध्याय) । द्रोणाचार्यकी पाण्डवोंको उपहार भेजने और उन्हें बुलानेकी सम्मति (आदि० २०३ । १—१२) । धृतराष्ट्रकी आज्ञासे विदुरका द्रुपदके यहाँ जाकर पाण्डवोंको भेंट देना और उन्हें हस्तिनापुर भेजनेके लिये द्रुपदसे प्रस्ताव करना (आदि० २०५ अध्याय) । पाण्डवोंका हस्तिनापुर आना और आधा राज्य पाकर इन्द्रप्रस्थ नगरका निर्माण करना (आदि० २०६ । १—५१) । पाण्डवोंके यहाँ नारदजीका आगमन और द्रौपदीको लेकर उनमें फूट न हो- इसके लिये कुछ नियम बनानेकी प्रेरणा देकर सुन्द और उपसुन्दकी कथाको प्रस्तावित करना तथा पाण्डवोंका द्रौपदीके विषयमें नियमनिर्धारण (आदि० अध्याय २०७ से २१

अध्यायतक)। भगवान् श्रीकृष्णकी द्वारकायात्रा और पाण्डवोंका उन्हें पहुँचाना (सभा० २ अध्याय)। पाण्डवोंका मयनिर्मित सभाभवनमें प्रवेश और निवास (सभा० ४ अध्याय)। नारदजीका पाण्डवोंसे मिलनेके लिये आना और पाण्डवोंद्वारा उनकी पूजा (सभा० ५। १२–१६)। पाण्डवोंपर विजय प्राप्त करनेके लिये शकुनि और दुर्योधनकी बातचीत (सभा० ४८ अध्याय)। पाण्डवोंकी हस्तिनापुरयात्रा (सभा० ५८। १९—३८)। जूएमें पाण्डवोंकी पराजय (सभा० ६५ अध्याय)। द्रौपदीद्वारा पाण्डवोंकी दास्यभावसे मुक्ति (सभा० ७१। २८–३३)। धृतराष्ट्रका पाण्डवोंको सारा धन लौटाकर विदा करना (सभा० ७३ अध्याय)। दुर्योधनका पुनः द्यूतक्रीड़ाके लिये पाण्डवोंको बुलानेका अनुरोध और धृतराष्ट्रद्वारा उसकी स्वीकृति (सभा० ७४ अध्याय)। दुःशासनद्वारा पाण्डवोंका उपहास (सभा० ७७। २—१४)। वनगमनके समय पाण्डवोंकी चेष्टाके विषयमें धृतराष्ट्र और विदुरका संवाद (सभा० ८०। १—१८)। पाण्डवोंका वनगमन, पुरवासियोंद्वारा उनका अनुगमन और पाण्डवोंका प्रमाणकोटितीर्थमें रात्रिवास (वन० १ अध्याय)। पाण्डवोंका काम्यकवनमें प्रवेश, विदुरजीका वहाँ जाकर उनसे मिलना और उनसे बातचीत करना (वन० ५ अध्याय)। पाण्डवोंका वध करनेके लिये दुर्योधन आदिकी वनमें जानेकी तैयारी और व्यासजीका आकर उनको रोकना (वन०अध्याय ७ से ८ तक)। व्यासजीकी पाण्डवोंके प्रति दयाका कारण (वन० ९। २०–२३)। मैत्रेयजीका धृतराष्ट्र और दुर्योधनसे पाण्डवोंके प्रति सद्भाव करनेका अनुरोध (वन० १०। ११—२८)। भोज, वृष्णि और अन्धकवंशके वीरोंसहित श्रीकृष्णका, पाञ्चालराजकुमार धृष्टद्युम्नका, चेदिराज धृष्टकेतुका तथा केकय राजकुमारोंका पाण्डवोंसे मिलनेके लिये वनमें आना और इन सबकी बातचीत (वन० अध्याय १२ से २२ तक)। पाण्डवोंका द्वैतवनमें जानेके लिये उद्यत होना और प्रजावर्गका उनके लिये व्याकुल होना (वन० २३ अध्याय)। पाण्डवोंका द्वैतवनमें जाना (वन० २४ अध्याय)। महर्षि मार्कण्डेयका पाण्डवोंको धर्माचरणका आदेश देना (वन० २५ अध्याय)। दल्भ्यपुत्र बकका पाण्डवोंको ब्राह्मणोंकी महिमा बताना (वन० २६ अध्याय)। द्रौपदीसहित पाण्डवोंका परस्पर संवाद तथा उनका पुनः काम्यकवनमें जाना (वन० अध्याय २७ से ३६ तक)। बृहदश्वका पाण्डवोंको नलोपाख्यान सुनाकर युधिष्ठिरको द्यूतविद्या और अश्वविद्याका रहस्य बताना (वन० अध्याय ५२ से ७९ तक)। अर्जुनके लिये द्रौपदीसहित पाण्डवोंकी चिन्ता (वन ८० अध्याय)। नारदजीका पाण्डवोंको तीर्थयात्राकी महिमा बताना और पुलस्त्यवर्णित तीर्थयात्राका प्रसङ्ग सुनाना (वन० अध्याय ८१ से ८५ तक)। धौम्यद्वारा पाण्डवोंके प्रति विभिन्न दिशाओंके तीर्थोंका वर्णन (वन० अध्याय ८६ से ९० तक)। महर्षि लोमशका स्वर्गसे आकर पाण्डवोंको अर्जुनके समाचार बताना और इन्द्रका संदेश सुनाना (वन० ९१ अध्याय)। पाण्डवोंका अपने अधिक साथियोंको विदा करके लोमशजीके साथ तीर्थयात्राके लिये प्रस्थान करना (वन० अध्याय ९२ से ९३ तक)। पाण्डवोंका विभिन्न तीर्थोंमें जाना और लोमशजीसे उनके माहात्म्य सुनना (वन० अध्याय ९४ से १३८ तक)। पाण्डवोंकी उत्तराखण्डयात्रा (वन० अध्याय १३९ से १४२ तक)। गन्धमादनकी यात्राके समय पाण्डवोंका आँधी-पानीसे सामना और घटोत्कचकी सहायतासे इनका गन्धमादनपर पहुँचना (वन० अध्याय १४३ से १४५ तक)। पाण्डवोंका गन्धमादनमें निवास, सौगन्धिकसरोवर एवं कदलीवनके दर्शन, भीमकी हनुमान्‌जीसे भेंट, जटासुर-वध, वृषपर्वाके यहाँ होते हुए इनका राजर्षि आर्ष्टिषेणके आश्रमपर जाना, कुबेरसे इनकी भेंट तथा धौम्यका इन्हें मेरुपर्वतके शिखरोंपर स्थित ब्रह्मा, विष्णु आदिके स्थानोंका लक्ष्य कराना (वन० अध्याय १४६। से १६३ तक)। पाण्डवोंकी अर्जुनके लिये उत्कण्ठा और अर्जुनका गन्धमादनपर आकर अपने भाइयोंसे मिलना (वन० अध्याय १६४ से १६५ तक)। इन्द्रका पाण्डवोंके पास आना और युधिष्ठिरको सान्त्वना देकर लौटना (वन० १६६ अध्याय)। पाण्डवोंका अर्जुनके मुखसे उनकी यात्राका वृत्तान्त सुनना (वन० अध्याय १६७ से १७३ तक)। पाण्डवोंका गन्धमादनसे प्रस्थान और द्वैतवनमें प्रवेश (वन० अध्याय १७४ से १७७ तक)। पाण्डवोंका पुनः द्वैतवनसे काम्यकवनमें प्रवेश और वहाँ इनके पास भगवान् श्रीकृष्ण, मुनिवर मार्कण्डेय तथा नारदजीका आगमन (वन० अध्याय १८२ से १८३ तक)। पाण्डवोंका मार्कण्डेयजीके मुखसे नाना प्रकारके आख्यान और उपदेश सुनना (वन० अध्याय १८४ से २३२ तक)। पाण्डवोंका गन्धर्वोंको परास्त करके दुर्योधन आदिको उनकी कैदसे छुड़ाना (वन० अध्याय २४४ से २४५ तक)। पाण्डवोंका आश्रमपर आकर द्रौपदी-हरणका समाचार सुन जयद्रथका पीछा करना (वन० २६९ अध्याय)। द्रौपदीका पाण्डवोंका पराक्रम वर्णन करना (वन० २७० अध्याय)। पाण्डवोंद्वारा जयद्रथकी सेनाका संहार (वन० २७१ अध्याय)। मार्कण्डेयजीका पाण्डवोंको श्रीराम और सावित्रीका

उपाख्यान सुनाना (वन० अध्याय २७४ से २९९ तक)। ब्राह्मणकी अरणि एवं मन्थनकाष्ठका पता लगानेके लिये पाण्डवोंका मृगके पीछे दौड़ना और दुखी होना (वन० ३११ अध्याय) । पानी लानेके लिये गये हुए चार पाण्डवोंका सरोवरके तटपर अचेत होकर गिरना (वन० ३१२ अध्याय)। युधिष्ठिरके उत्तरसे संतुष्ट हुए यक्षका चारों पाण्डवोंके जीवित होनेका वरदान देना और उन सबको जिलाकर उसका धर्मके रूपमें प्रकट हो युधिष्ठिरको वर देना (वन० अध्याय ३१३ से ३१४ तक)। अज्ञातवासके निमित्त पाण्डवोंका परस्पर परामर्शके लिये बैठना (वन० ३१५ अध्याय) । द्रौपदीसहित पाण्डवोंका विराटनगरमें अज्ञातवास तथा उनके द्वारा त्रैगर्तों एवं कौरवोंको पराजित करके विराटके गौओंकी रक्षा (विराट० अध्याय १ से ६८ तक) । अपने घरमें पाण्डवोंका परिचय पाकर राजा विराटके द्वारा उनका सत्कार और इन्हें अपना राज्य समर्पित करके इनकी रुचिके अनुसार उनका अर्जुनकुमार अभिमन्युके साथ उत्तराका विवाह करना (विराट० अध्याय ६९ से ७२ तक)। द्रुपदके संदेशसे राजाओंका पाण्डवपक्षकी ओरसे युद्धके लिये आगमन (उद्योग० ५ अध्याय)। पाण्डवपक्षमें आयी हुई सेनाका संक्षिप्त विवरण (उद्योग० १९ । १— १४) । दुर्योधनद्वारा पाण्डवोंके अपकर्षका वर्णन (उद्योग० ५५ अध्याय) । संजयद्वारा पाण्डवोंकी युद्धकी तैयारीका वर्णन (उद्योग० ५७ । २–२५)। कुन्तीका विदुलोपाख्यान सुनाकर पाण्डवोंके लिये शौर्यका संदेश देना (उद्योग० अध्याय १३२ से १३७ तक)। पाण्डवपक्षके सेनापतिका चुनाव, पाण्डवसैन्यका कुरुक्षेत्रमें प्रवेश, पड़ाव तथा शिविरनिर्माण (उद्योग० अध्याय १५१ से १५२ तक) । बलरामजीका पाण्डवोंसे बिदा लेकर तीर्थयात्राके लिये प्रस्थान (उद्योग० १५७ अध्याय)। दुर्योधनका उलूकको दूत बनाकर पाण्डवोंके पास संदेश भेजना (उद्योग० १६० अध्याय)। पाण्डवोंके शिविरमें पहुँचकर उलूकका दुर्योधनके संदेशको सुनाना (उद्योग० १६१ अध्याय) । पाण्डवपक्षकी ओरसे दुर्योधनके संदेशका उत्तर। पाँचों पाण्डवोंका संदेश लेकर उलूकका लौटना (उद्योग० १६३ अध्याय)। पाण्डवसेनाका युद्धके मैदानमें जाना (उद्योग० १६४ अध्याय)। पाण्डवपक्षके रथी-अतिरथी आदिका वर्णन (उद्योग० अध्याय १६९ से १७२ तक)। पाण्डवसेनाका युद्धके लिये प्रस्थान (उद्योग० १९६ अध्याय)। पाण्डवोंका कौरवोंके साथ युद्ध (भीष्मपर्वसे शल्यपर्वतक)। पाण्डवोंका मणि देकर द्रौपदीको शान्त करना (ऐषीक० १६ अध्याय)। पाण्डवोंका धृतराष्ट्रसे मिलना, धृतराष्ट्रके द्वारा भीमकी लोहमयी प्रतिमाका भङ्ग होना तथा श्रीकृष्णके फटकारनेसे शान्त हुए धृतराष्ट्रका पाण्डवोंको हृदयसे लगाना (स्त्री० अध्याय १२ से १३ तक) । पाण्डवोंको शाप देनेके लिये उद्यत हुई गन्धारीको व्यासजीका समझाना (स्त्री० १४ अध्याय)। पाण्डवोंका गान्धारीकी आज्ञा लेकर अपनी मातासे मिलना (स्त्री० १५ । ३२–३५)। व्यासजी तथा भगवान् श्रीकृष्णकी आज्ञासे पाण्डवोंका नगरमें प्रवेश तथा पुरवासियोंद्वारा इनका सत्कार (शान्ति० अध्याय ३७ से ३८ तक)। पाण्डवोंके रहनेके लिये विभिन्न भवनोंका विभाजन (शान्ति० ४४ अध्याय)। युधिष्ठिर आदि पाण्डवोंका भीष्मजीका उपदेश सुनना (शान्ति० अध्याय ५६ से अनु० १६५ अध्यायतक)। पाण्डवोंका भीष्मजीको जलाञ्जलि देना (अनु० १६८ अध्याय)। पाण्डवोंका हिमालयसे धन लेकर आना (आश्व० अध्याय ६३ से ६५ तक)। पाण्डवोंका हस्तिनापुरके समीप आगमन, श्रीकृष्ण आदिके द्वारा इनका स्वागत तथा इनका नगरमें आकर सबसे मिलना (आश्व० अध्याय ७० से ७१ तक)। पाण्डवोंका धृतराष्ट्र और गान्धारीके अनुकूल बर्ताव (आश्रम० अध्याय १ से २ तक)। गान्धारी और धृतराष्ट्रके साथ वनको जाती हुई कुन्तीसे घरको लौटनेके लिये पाण्डवोंका अनुरोध और कुन्तीद्वारा उनके अनुरोधका उत्तर (आश्रम० अध्याय १६ से १७ तक)। धृतराष्ट्र, गान्धारी और कुन्तीके लिये पाण्डवोंकी चिन्ता, इनका कुरुक्षेत्रमें पहुँचना तथा कुन्ती, गान्धारी एवं धृतराष्ट्रके दर्शन करना (आश्रम० अध्याय २१ से २४ तक)। संजयका ऋषियोंसे पाण्डवोंका परिचय देना (आश्रम० २५ अध्याय)। द्रौपदीसहित पाण्डवोंका महाप्रस्थान (महाप्र० १ अध्याय)। मार्गमें द्रौपदी, सहदेव, नकुल, अर्जुन और भीमसेनका गिरना तथा युधिष्ठिरका प्रत्येकके गिरनेका कारण बताना (महाप्र० २ अध्याय)। पाण्डवोंका स्वर्गमें पहुँचकर धर्म आदि अपने मूल स्वरूपोंमें मिलना (स्वर्गा० ४ । २–१३; स्वर्गा० ५ । २२)।

पाण्डवप्रवेशपर्व–विराटपर्वका एक अवान्तर पर्व (अध्याय १ से १२ तक)।

पाण्डु–(१) विचित्रवीर्यके क्षेत्रज पुत्र। महर्षि व्यासके द्वारा विचित्रवीर्यपत्नी अम्बालिकाके गर्भसे उत्पन्न (आदि० ६३ । ११३; आदि० १०५ । २१)। पाण्डुकी वंश-परम्पराका वर्णन (आदि० ९५ । ५८–८७)। इनके रंग-रूप तथा पाण्डु नाम होनेका कारण (आदि० १०५ । १७–१८)। ये पाण्डवोंके पिता थे (आदि० १०५ । २२)। भीष्मद्वारा इनका पालन-पोषण एवं उपनयनादि-संस्कार (आदि० १०८ । १७-१८)। इनका अध्ययन

तथा धनुर्विद्यामें इनकी अद्वितीयता (आदि० १०८ । १९–२१) । धृतराष्ट्रके जन्मान्ध होनेके कारण इनका राजपदपर अभिषेक (आदि० १०८ । २५) । कुन्तीद्वारा स्वयंवरमें इनका वरण और उनके साथ इनका विधिपूर्वक विवाह (आदि० १११ । ८-९) । भीष्मके प्रयत्नसे माद्रीके साथ इनका विवाह (आदि० ११२ । १८) । इनकी दिग्विजययात्रा (आदि० ११२ । २१) । दशार्णोंपर इनका पहला आक्रमण और विजय (आदि० ११२ । २५) । इनके द्वारा मगधराज दीर्घका वध (आदि० ११२ । २७) । विदेहवंशी क्षत्रियोंकी पराजय (आदि० ११२ । २८) । काशी, सुह्म तथा पुण्ड्रदेशोंपर इनकी विजय (आदि० ११२ । २९) । विभिन्न देशोंको जीतकर लाये हुए धनसमूहका इनके द्वारा अपने बन्धु-बाधवोंमें वितरण (आदि० ११३ । १-२) । इनके पराक्रमसे धृतराष्ट्रद्वारा सौ अश्वमेधयज्ञोंका अनुष्ठान तथा प्रति यज्ञमें लाख-लाख स्वर्णमुद्राओंकी दक्षिणाका दान (आदि० ११३ । ५) । इनका वनविहार (आदि० ११३ । ७–११) । अपनी मृगीरूपधारिणी पत्नीके साथ मृगरूप धारण करके मैथुन करनेवाले किंदम ऋषिका इनके द्वारा वध (आदि० ११७ । ३४) । इनको मृगरूपधारी किंदम ऋषिका शाप (आदि० ११७ । २७) । महर्षि किंदमकी मृत्युके कारण इनका पश्चात्ताप एवं संन्यास लेकर अवधूतकी तरह रहनेका अपना निश्चय (आदि०११८ । २–२२) । वानप्रस्थाश्रममें रहकर तपस्या करनेके लिये इनसे कुन्तीका हठ (आदि० ११८ । ३०) । वानप्रस्थाश्रममें पालन करनेके लिये इनके कठोर नियम (आदि० ११८ । ३२–३७) । इनके द्वारा अपने तथा पत्नियोंके भूषणोंका ब्राह्मणोंको दान (आदि० ११८ । ३९) । वानप्रस्थ लेनेके विषयमें सेवकोंद्वारा इनका धृतराष्ट्रको संदेश (आदि० ११८ । ४०) । कालकूट, हिमालय, गन्धमादन आदि पर्वतोंको लाँघकर तपस्याके लिये इनका पत्नियोंसहित शतशृङ्गपर्वतपर जाना (आदि० ११८ । ५०) । इनको ब्रह्मलोक जानेके लिये ऋषियोंद्वारा निषेध (आदि० ११९ । १४-१५) । पितृ-ऋणसे उद्धार होनेके लिये इनकी शतशृङ्गनिवासियोंसे प्रार्थना (आदि० ११९ । १५–२३) । ऋषियोंद्वारा इन्हें पुत्रप्राप्तिका आश्वासन (आदि० ११९ । २३–२६) । इनके द्वारा दत्तक आदि पुत्र-भेदोंका विश्लेषण तथा किसी श्रेष्ठ पुरुषसे संतानोत्पादनके लिये कुन्तीको आदेश (आदि० ११९ । २७–३७) । मानसिक संकल्पसे पुत्रोत्पादनके लिये इनसे कुन्तीकी प्रार्थना (आदि० १२० । ३७) । इनके द्वारा ब्राह्मणसे संतानप्राप्तिके लिये पुनः कुन्तीसे आग्रह तथा कुन्तीका दुर्वासासे प्राप्त हुए मन्त्रकी महिमा सुनाकर किसी श्रेष्ठ देवताके आवाहनके लिये इनसे आज्ञा माँगना (आदि० १२१ । १०–१६) । धर्मराजके आवाहनके लिये इनका कुन्तीको आदेश (आदि० १२१ । १७–२०) । बली पुत्रकी कामनासे वायुदेवके आवाहनके लिये कुन्तीको इनकी आज्ञा (आदि० १२२ । १० के बाद दा० पाठ) । इनके द्वारा सर्वोत्तम पुत्र-प्राप्तिके लिये इन्द्रकी आराधना और इन्द्रद्वारा इनको आश्वासन (आदि० १२२ । २६–२८) । सर्वश्रेष्ठ पुत्रके हेतु इन्द्रके आवाहनके लिये इनकी कुन्तीको प्रेरणा (आदि० १२२ । ३४) । कुन्तीद्वारा पुत्रप्राप्तिके लिये इनसे माद्रीकी प्रार्थना (आदि० १२३ । ६) । माद्रीके पुत्रलाभके लिये इनका कुन्तीसे अनुरोध (आदि० १२३ । ९–१४) । माद्रीके साथ समागम करके इनकी असामयिक मृत्यु (आदि० १२४ । १२) । इनके परलोकवासी होनेपर कुन्ती, माद्री तथा पाण्डवोंका विलाप (आदि० १२४ । १७–२२) । इनके आकस्मिक निधनपर शतशृङ्गनिवासी ऋषियोंको शोकका अनुभव (आदि० १२४ । २२ के बाद दा० पाठ) । काश्यप ऋषिद्वारा इनका अन्त्येष्टि-संस्कार (आदि० १२४ । ३१ के बाद दाक्षिणात्य पाठ) । कौरवोंद्वारा राजोचित ढंगसे इनका अस्थिदाह (आदि० १२६ । ५–२३) । कौरवोंद्वारा इनको जलाञ्जलि-दान (आदि० १२६ । २८-२९) । इनके देहावसानपर हस्तिनापुरके नागरिकोंका शोक (आदि० २२७ । ४) । ये यमकी सभामें उपस्थित होते हैं (सभा० ८ । २५) । इन्होंने देवर्षि नारदद्वारा राजसूययज्ञ करनेके लिये युधिष्ठिरको संदेश भेजवाया था (सभा० १२ । २४–२६) । इनका इन्द्रलोकमें निवास (आश्रम० २० । १७) । अपनी दोनों पत्नियों—कुन्ती और माद्रीके साथ इनका इन्द्रभवनमें जाना (स्वर्गारोहण० ५ । १५) ।

महाभारतमें आये हुए पाण्डुके नाम—भारत, भरतर्षभ, भरतसत्तम, कौरव, कौरवनन्दन, कौरवर्षभ, कौरव्य, कौरव्यदायाद, कौसल्यानन्दवर्धन, कुरूद्वह, कुरुकुलोद्वह, कुरुनन्दन, कुरुपति, कुरुप्रवीर, नागपुराधिप, नागपुरसिंह आदि ।

(२) कुरुकुमार जनमेजयके द्वितीय पुत्र (आदि० ९४ । ५६) ।

पाण्डुर—स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ७३) ।

पाण्डुराष्ट्र—एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ४४) ।

पाण्ड्य—दक्षिण भारतका एक जनपद तथा वहाँके एक राजा, जो कभी श्रीकृष्णद्वारा मारे गये थे (द्रोण० २३ । ६९) । इनके पुत्रका नाम मलयध्वज था । मलयध्वज

अस्त्रविद्यामें पारंगत होकर अपने पिताके वधका बदला लेनेके लिये द्वारकापुरीको विध्वंस करना चाहते थे; परंतु इनके सुहृदोंने इन्हें ऐसा दुःसाहस करनेसे रोक दिया, तबसे वैर छोड़कर ये अपने राज्यका शासन करते थे। महाभारतकालमें ये ही पाण्ड्यदेशके शासक थे (द्रोण० २३। ७०-७२)। ये द्रौपदीके स्वयंवरमें गये थे (आदि० १८६। १६)। ये युधिष्ठिरकी सभामें बैठा करते थे (सभा० ४। २४)। इन्होंने राजसूय यज्ञमें भेंट अर्पण की थी (सभा० ५२। ३५)। ये अपनी सेनाके साथ युधिष्ठिरकी सेवामें आये थे (उद्योग० १९। ९)। इनके रथपर सागरके चिह्नसे युक्त ध्वजा फहराती थी। बलवान् राजा पाण्ड्यने अपने दिव्य धनुषकी टङ्कार करते हुए वैदूर्यमणिकी जालीसे आच्छादित चन्द्रकिरणके समान श्वेत घोड़ोंद्वारा द्रोणाचार्यपर धावा किया था (द्रोण० २३। ७२-७३)। इनका वृषसेनके साथ युद्ध (द्रोण० २५। ५७)। इनका महान् पराक्रम और अश्वत्थामाद्वारा वध (कर्ण० २०। ४६)।

पाताल–नागलोकके नाभिस्थानमें स्थित एक प्रदेश या नगर; इसका नारदजीद्वारा विशेष वर्णन (उद्योग० अध्याय ९९ से १०० तक)।

पापहरा–एक प्रमुख नदी, जिसका जल भारतवासी पीते हैं (भीष्म० ९। २२)।

पारद–(१) एक प्राचीन जातिका नाम (आधुनिक मतके अनुसार यह उत्तर-बलूचिस्तानकी एक जाति थी)। इस जातिके लोग भाँति-भाँतिकी भेंटें लेकर युधिष्ठिरके राजसूय-यज्ञमें आये थे (सभा० ५१। ५२)। (२) एक देश, जहाँके लोग द्रोणाचार्यके साथ भीष्मजीके पीछे-पीछे चल रहे थे (भीष्म० ८७। ७)।

पारशव–शूद्राके गर्भसे ब्राह्मणद्वारा उत्पन्न बालक। इसीलिये विदुरजी भी पारशव कहलाते थे (आदि० १०८। २५; अनु० ४८। ५)।

पारसिक–एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९। ६६)।

पारा–कौशिकी नदीका नामान्तर (आदि० ७१। ३२)।

पारावत–ऐरावतके कुलमें उत्पन्न एक नाग, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें जल मरा था (आदि० ५७। ११)।

पाराशर्य–एक मुनि, जो व्याससे भिन्न हैं। ये युधिष्ठिरकी सभामें विराजते थे (सभा० ४। १३)। ये ही इन्द्र-सभाके भी सदस्य हैं (सभा० ७। १३)। हस्तिनापुर जाते समय मार्गमें श्रीकृष्णसे भेंट (उद्योग० ८३। ६४ के बाद दा० पाठ)।

पारिजात–(१) समस्त कामनाओंको देनेवाला एक दिव्य वृक्ष, जो समुद्र-मन्थनसे प्रकट हुआ था (आदि० १८। ३६ के बाद दा० पाठ)। (२) ऐरावतकुलमें उत्पन्न एक नाग, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें जल मरा था (आदि० ५७। ११)।

पारिजातक–एक जितात्मा मुनि, जो युधिष्ठिरकी सभामें विराजते थे (सभा० ४। १४)।

पारिप्लव–कुरुक्षेत्रकी सीमामें स्थित एक तीर्थ, जिसके सेवनसे अग्निष्टोम और अतिरात्र यज्ञोंका फल मिलता है (वन० ८३। १२)।

पारिभद्रक–कौरव-पक्षके वीर योद्धाओंका एक दल, जो सम्भवतः परिभद्र देशका निवासी था (भीष्म० ५१। ९)।

पारियात्र–एक पर्वत, जिसका अधिष्ठाता चेतन कुबेरकी सभामें रहकर उनकी उपासना करता है (सभा० १०। ३१)। मार्कण्डेयजीने भगवान् बालमुकुन्दके उदरमें इस पर्वतका दर्शन किया था (वन० १८८। ११५)। यहाँ महर्षि गौतमका महान् आश्रम था (शान्ति० १२९। ४)।

पार्थ–कुन्तीके पुत्रोंका नाम (इन्हें कौन्तेय भी कहते हैं)। इनकी उत्पत्तिकी कथाका दिग्दर्शन (आदि० १। ११४)। (यद्यपि यह शब्द कुन्तीके तीन पुत्रोंका ही मुख्यतया वाचक है तथापि कहीं-कहीं माद्रीकुमार नकुल-सहदेवके लिये भी इसका प्रयोग हुआ है। प्रायः यह युधिष्ठिर तथा अर्जुनके लिये ही प्रयुक्त हुआ है। उद्योग० १४५। ३ में 'पार्थ' नामका प्रयोग कर्णके लिये भी आया है।)

पार्वती–पर्वतराज हिमवान्की पुत्री तथा भगवान् शिवकी धर्मपत्नी (आदि० १८६। ४)। ये ब्रह्माजीकी सभामें भी विराजमान होती हैं (सभा० ११। ४१)। द्रौपदी-द्वारा अर्जुनकी रक्षाके लिये देवी उमाका कीर्तन एवं स्मरण (वन० ३७। ३३)। युधिष्ठिरद्वारा इनके दुर्गा-रूपका स्तवन और इनका दर्शन देकर उन्हें अनुगृहीत करना (विराट० ६ अध्याय)। अर्जुनद्वारा इनके दुर्गारूपका स्मरण और स्तवन। इनका प्रत्यक्ष दर्शन देकर उन्हें वर देना (भीष्म० २३। ४—१६)। एक समय ये भगवान् शङ्करको, जो पाँच शिखावाले बालकके रूपमें प्रकट हुए थे, गोदमें लेकर आयीं और देवताओंसे बोलीं, पहचानो यह कौन है ? (द्रोण० २०२। ८४)। इनके द्वारा स्कन्दको पार्षद-प्रदान (शल्य० ४५। ५१-५२)। दक्षयज्ञके विषयमें शिवजीके साथ इनका वार्तालाप (शान्ति० २८३। २३—२९)। दक्षयज्ञमें शिवजीका भाग न देखकर इनकी चिन्ता (शान्ति० २८४। २३)। उशनापर कुपित हुए शिव-

जीको शान्त करना (शान्ति० २८९ । ३५)। श्रीकृष्णको आठ वर देना (अनु० १५ । ७-८)। देवताओंको संतानहीन होनेका शाप देना (अनु० ८४। ७४-७५)। परिहासवश शिवजीकी दोनों आँखें हाथोंसे बंद करना (अनु० १४० । २६)। शङ्करजीके साथ संवाद (अनु० १४० । ४० से १४५ अध्यायतक)। गङ्गा आदि नदियोंसे स्त्री-धर्मके विषयमें सलाह लेना (अनु० १४६ । २२—२६)। इनके द्वारा स्त्री-धर्मका वर्णन (अनु० १४६ । ३३—५९)। ये मुञ्जवान् पर्वतपर भगवान् शिवके साथ रहती हैं (आश्व० ८ । १-३)।

महाभारतमें आये हुए पार्वतीके नाम—अम्बिका, आर्या, उमा, भीमा, शैलपुत्री, शैलराजसुता, शाकम्भरी, शर्वाणी, देवेशी, देवी, दुर्गा, गौरी, गिरिसुता, गिरिराजात्मजा, काली, महाभीमा, महादेवी, महाकाली, महेश्वरी, माहेश्वरी, पर्वतराजकन्या, रुद्राणी, रुद्रपत्नी, त्रिभुवनेश्वरी आदि।

पार्वतीय (**पर्वतीय**)—(१) महाभारतकालका एक राजा, जो कुक्षि नामक दानवके अंशसे उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७ । ५६)। (२) एक भारतीय जनपद और यहाँके निवासी। ये युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें उपहार लेकर आये थे (सभा० ५२ । ७)। जयद्रथकी सेनामें आये हुए पार्वतीयोंका अर्जुनद्वारा संहार (वन० २७१ । ८)। पार्वतीय योद्धा दुर्योधनकी सेनामें भी थे (उद्योग० ३० । २४)। भारतीय जनपदोंमें पार्वतीयकी गणना (भीष्म० ९ । ५६)। भगवान् श्रीकृष्णने कभी पार्वतीय देशपर विजय पायी थी (द्रोण० ११ । १६)। पार्वतीय योद्धा कौरवदलमें शकुनि और उलूकके साथ रहा करते थे (कर्ण० ४६ । १३)। पाण्डववीरोंद्वारा इनका युद्धमें संहार (शल्य० १ । २७)।

पार्वतेय—एक राजर्षि, जो कपट नामक दैत्यके अंशसे उत्पन्न हुए थे (आदि० ६७ । ३०)।

पार्श्वरोम—एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ५६)।

पार्ष्णिक्षेमा—एक विश्वेदेव (अनु० ९१ । ३०)।

पाल—वासुकिके कुलमें उत्पन्न एक नाग, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें दग्ध हुआ था (आदि० ५७ । ५)।

पालिता—स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । ३)।

पावक—भरत नामक अग्निके पुत्र, इनका दूसरा नाम 'महान्' था (वन० २१९ । ८)।

पावन—(१) कुरुक्षेत्रकी सीमामें स्थित एक तीर्थ, जहाँ देवता-पितरोंका तर्पण करनेसे अश्वमेध यज्ञका फल मिलता है (वन० ८३ । १७५)। (२) एक विश्वेदेव (अनु० ९१ । ३०)।

पाश—वरुणके दिव्य अस्त्र, जिनका वेग कोई रोक नहीं सकता (वन० ४१ । २९)।

पाशाशिनी—भारतकी एक प्रमुख नदी, जिसका जल यहाँके निवासी पीते हैं (भीष्म० ९ । २२)।

पाशिवाट—एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ६४)।

पाशी—धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ११६ । ८)। भीमसेनद्वारा इसका वध (कर्ण० ८४ । ५-६)।

पाशुपत—भगवान् शङ्करका परम प्रिय, सर्वश्रेष्ठ एवं अनुपम प्रभावशाली दिव्यास्त्र (वन० ४० । १५)। भगवान् शिवद्वारा इसका अर्जुनको उपदेश (वन० ४० । २०)। इसके उग्रस्वरूप तथा प्रभावका वर्णन (अनु० १४ । २५८—२७५)।

पाषाणतीर्ण—एक तीर्थ, जो शूर्पारक क्षेत्रमें जमदग्निकी वेदीपर स्थित है (वन० ८८ । १२)।

पिङ्गतीर्थ—एक प्राचीन तीर्थ, जहाँ आचमन करके ब्रह्मचारी और जितेन्द्रिय मनुष्य सौ कपिलाओंके दानका फल प्राप्त कर लेता है (वन० ८२ । ५७)।

पिङ्गल—(१) कश्यप और कद्रूसे उत्पन्न एक प्रमुख नाग (आदि० ३५ । ९)। (२) एक ऋषि, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें अध्वर्यु थे (आदि० ५३ । ६)। (३) इस नामके दूसरे ऋषि, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें सदस्य थे (आदि० ५३ । ७)। (४) एक यक्षराज, जो भगवान् शिवका सखा है और श्मशानभूमिमें ही (उसकी रक्षाके लिये) निवास करता है। यह सम्पूर्ण जगत्‌को आनन्द देनेवाला है (वन० २३१ । ५१)।

पिङ्गलक—एक यक्ष, जो कुबेरकी सभामें रहकर उनकी सेवा करता है (सभा० १० । १७)।

पिङ्गलराज—श्मशानमें निवास करनेवाला एक यक्षराज, जो भगवान् शिवका सखा है (वन० २३१ । ५१)।

पिङ्गाक्षी—(१) स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । १८)। (२) स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । २१)।

पिच्छल—वासुकिवंशमें उत्पन्न एक नाग, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें जल मरा था (आदि० ५७ । ६)।

पिच्छिला–एक प्रमुख नदी, जिसका जल भारतवासी पीते हैं (भीष्म० ९ । २९)।

पिञ्जरक–कश्यप और कद्रूसे उत्पन्न एक प्रमुख नाग (आदि० ३५ । ६; उद्योग० १०३ । ११) ।

पिञ्जला–भारतकी एक प्रमुख नदी, जिसका जल यहाँकी प्रजा पीती है (भीष्म० ९ । २७) ।

पिठर–एक दैत्य, जो वरुणकी सभामें रहकर उनकी उपासना करता है (सभा० ९ । १३) ।

पिठरक (पीठरक)–कश्यपवंशी प्रमुख नाग (आदि० ३५ । १४; उद्योग० १०३ । १४) । यह जनमेजयके सर्पसत्रमें जल मरा था (आदि० ५७ । १५) ।

पिण्डसेक्ता–तक्षक-कुलका एक नाग, जो सर्पसत्रमें जल मरा था (आदि० ५७ । ८) ।

पिण्डारक (पिण्डार)–(१) एक कश्यपवंशी प्रमुख नाग (आदि० ३५ । ११; उद्योग० १०३ । १४) । यह धृतराष्ट्रकुलमें उत्पन्न हुआ और जनमेजयके सर्पसत्रमें जल मरा था (आदि० ५७ । १७) । (२) सुराष्ट्रदेशमें द्वारकाके निकटका एक तीर्थ, जिसमें स्नान करनेसे अधिकाधिक सुवर्णकी प्राप्ति होती है (वन० ८२ । ६५) । यह तीर्थ तपस्वीजनोंद्वारा सेवित और कल्याणस्वरूप है (वन० ८८ । २१) । जो मानव पिण्डारक तीर्थमें स्नान करके वहाँ एक रात निवास करता है, वह प्रातःकाल होते ही पवित्र होकर अग्निष्टोम यज्ञका फल प्राप्त कर लेता है (अनु० २५ । ५७) ।

पितामहसर–एक सरोवर, जो गिरिराज हिमालयके निकट है, इसमें स्नान करनेसे अग्निष्टोम यज्ञका फल मिलता है (वन० ८४ । १४८) ।

पितृग्रह–पितृसम्बन्धी ग्रह (वन० २३० । ४८) ।

पिनाक–शिवजीका धनुष (सभा० ३८ । २९ के बाद दाक्षिणात्य पाठ) । इसकी उत्पत्तिका वर्णन (अनु० १४१ । दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ५९१५) । भगवान् शंकरके पाणि (हाथ) से आनत होकर (मुड़कर) उनका त्रिशूल धनुषाकार हो गया; अतः उसका नाम पिनाक हुआ (शान्ति० २८९ । १८) ।

पिनाकी–ग्यारह रुद्रोंमेंसे एक, ये ब्रह्माजीके पौत्र तथा स्थाणुके पुत्र हैं (आदि० ६६ । १-२; शान्ति० २०८ । २०) । अर्जुनके जन्मकालमें ये वहाँ पधारे थे (आदि० १२२ । ६८) ।

पिप्पलस्थान–जम्बूद्वीपके अन्तर्गत एक भूभागविशेष (भीष्म० ६ । २) ।

पिप्पलाद–एक प्राचीन ऋषि, शरशय्यापर पड़े हुए भीष्मजीके पास आनेवाले ऋषियोंमें ये भी थे (शान्ति० ४७ । ९) ।

पिशङ्ग–धृतराष्ट्रके वंशमें उत्पन्न एक नाग, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें जल मरा था (आदि० ५७ । १७) ।

पिशाच–(१) भूतयोनिविशेष । इनका प्राकट्य अण्डसे हुआ था (आदि० १ । ३५) । ये कुबेरकी सभामें रहकर उनकी सेवा करते हैं (सभा० १० । १६) । ब्रह्माजीकी सभामें रहकर उनकी उपासना करते हैं (सभा० ११ । ४९) । गोकर्ण तीर्थमें रहकर शिवजीकी आराधना करते हैं (वन० ८५ । २५) । मरीचि आदि महर्षियोंने पिशाच आदि सब भूतोंकी सृष्टि की थी (वन० २७२ । ४६) । इन्होंने रावणको अपना राजा बनाया था (वन० २७५ । ३८) । पिशाच रक्त पीने और कच्चा मांस खानेवाले होते हैं (द्रोण० ५० । ९—१३) । अलम्बुषके रथमें घोड़ोंकी जगह पिशाच जुते हुए थे (द्रोण० १६७ । ३८) । इन्होंने घटोत्कचके साथ रहकर उसकी सहायता की थी और कर्णपर आक्रमण किया था (द्रोण० १७५ । १०९) । खाण्डववन-दाहके समय अर्जुनने इन्हें जीता था (कर्ण० ३७ । ३७) । अर्जुन और कर्णके युद्धके अवसरपर ये उपस्थित थे (कर्ण० ८७ । ५०) । मुञ्जवान् पर्वतपर तपस्या करते हुए पार्वतीसहित शिवजीकी पिशाच आदि आराधना करते हैं (आश्व० ८ । ५-६) । महाभारतकालमें पिशाचलोग पृथ्वीके राजा होकर उत्पन्न हुए थे (आश्रम० ३१ । ६) । (२) एक यक्षका नाम (सभा० १० । १६) । (३) एक भारतीय जनपद, इस जनपदके योद्धा युधिष्ठिरकी सेनामें क्रौञ्चव्यूहके दाहिने पक्षकी जगह खड़े किये गये थे (भीष्म० ५० । ५०) । दुर्योधनकी सेनामें राजा भगदत्तके साथ पिशाचदेशीय सैनिक थे (भीष्म० ८७ । ८) । श्रीकृष्णने किसी समय पिशाच देशके योद्धाओंको परास्त किया था (द्रोण० ११ । १६) ।

पिशाचग्रह–पिशाचसम्बन्धी ग्रह (वन० २३० । ५२) ।

पीठ–एक असुर, यह श्रीकृष्णद्वारा मारा गया था (सभा० ३८ । पृष्ठ ८२५, कालम १; द्रोण० ११ । ५) ।

पुच्छाण्डक–तक्षककुलका एक नाग, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें जल मरा था (आदि० ५७ । ८) ।

पुञ्जिकस्थला–दस प्रधान अप्सराओंमेंसे एक । इसने अर्जुनके जन्म-महोत्सवमें गान किया था (आदि० १२२ । ६४) । यह कुबेरकी सभामें रहकर उनकी उपासना करती है (सभा० १० । १०) ।

पुण्डरीक–(१) एक महायज्ञ (सभा० ५ । १००;

वन० ३० । १७) । (२) कुरुक्षेत्रकी सीमामें स्थित एक तीर्थ, जहाँ स्नान करनेसे पुण्डरीक यज्ञका फल मिलता है (वन० ८३ । ८३) । (३) कश्यपवंशी एक नाग (उद्योग० १०३ । १३) । (४) एक दिग्गज (द्रोण० १२१ । २५) । (५) एक तीर्थसेवी ब्राह्मण, जिन्होंने नारदजीसे श्रेयके विषयमें प्रश्न किया था । इनको भगवान् नारायणका प्रत्यक्ष दर्शन और उनके साथ परमधामकी प्राप्ति (अनु० १२४ । दाक्षिणात्य पाठ) ।

पुण्डरीका–एक अप्सरा, जिसने अर्जुनके जन्मोत्सवमें पधारकर नृत्य किया था (आदि० १२२ । ६३) ।

पुण्डरीकाक्ष–भगवान् श्रीकृष्णका एक नाम, पुण्डरीक— अविनाशी परमधाममें स्थित हो अक्षतभावसे विराजमान होनेसे भगवान्को 'पुण्डरीकाक्ष' कहते हैं (अथवा पुण्डरीक—कमलके सदृश अक्षि (नेत्र) धारण करनेके कारण भी वे 'पुण्डरीकाक्ष' कहे गये हैं ।) (उद्योग० ७० । ६) ।

पुण्डरीयक–एक विश्वेदेव (अनु० ९१ । ३४) ।

पुण्ड्र–(१) एक प्राचीन राजा (आदि० १ । २३४) । (२) एक प्राचीन देश, जिसे महाराज पाण्डुने जीता था (आदि० ११२।२९)।(आधुनिक मान्यताके अनुसार मालदाका जिला, कोसी नदीके पूर्व पूर्णियाका कुछ अंश और दीनाजपुरका कुछ भाग तथा राजशाहीका सम्मिलित भूभाग 'पुण्ड्र' जनपदके अन्तर्गत रहा है ।) पुण्ड्रदेशके निवासी राजा युधिष्ठिरके लिये भेंट लेकर आये थे । (सभा० ५२ । १६) । कर्णने भी इस देशको दिग्विजयके समय जीता था (कर्ण० ८ । १९) । (कहते हैं, पौण्ड्रक वासुदेव इसी देशका राजा था ।) अश्वमेधीय अश्वकी रक्षाके समय अर्जुनने भी इस देशको जीता था (आश्व० ८२ । २९-३०) ।

पुण्ड्रक–एक प्राचीन क्षत्रिय नरेश, जो युधिष्ठिरकी सभामें बैठते थे (सभा० ४ । २४) । ये राजसूय-यज्ञमें युधिष्ठिरके लिये भेंट लेकर आये थे (सभा० ५२ । १८) ।

पुण्य–महर्षि विभाण्डकके आश्रमका नाम (वन० ११० । २३) ।

पुण्यकृत्–एक विश्वेदेव (अनु० ९१ । ३०) ।

पुण्यतोया–एक नदी, जिसे मार्कण्डेयजीने भगवान् बालमुकुन्दके उदरमें भ्रमण करते समय देखा था (वन० १८८ । १०४) ।

पुण्यनामा–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ५९) ।

पुत्–एक नरक, जिससे पिताका उद्धार करनेके कारण बेटेको 'पुत्र' कहा जाता है (आदि० ७४ । ३९) ।

पुत्रदर्शनपर्व–आश्रमवासिकपर्वका एक अवान्तर पर्व (अध्याय २९ से ३६ तक) ।

पुत्रिकासुत–पुत्रीका पुत्र, यह भी 'प्रणीत' के समान ही माना गया है (इसे छः प्रकारके बन्धुदायादमेंसे एक समझना चाहिये) (आदि० ११९ । ३३) ।

पुनश्चन्द्रा–एक तीर्थ, जो शूर्पारकक्षेत्रमें जमदग्निकी वेदीपर स्थित है (वन० ८८ । १२) ।

पुरन्दर–(१) देवराज इन्द्रका एक नाम (देखिये इन्द्र) । (२) तप या पाञ्चजन्य नामक अग्निके एक पुत्र । तपके तपस्याजनित महान् फलको प्राप्त करनेके लिये मानो इन्द्र ही 'पुरन्दर' नामसे उनके पुत्र होकर प्रकट हुए (वन० २२१ । ३) ।

पुरमालिनी–एक प्रमुख नदी, जिसका जल भारतवासी पीते हैं (भीष्म० ९ । २१) ।

पुरावती–भारतवर्षकी एक प्रमुख नदी, जिसका जल यहाँके वासी पीते हैं (भीष्म० ९ । २४) ।

पुरिका–एक प्राचीन नगरी, जहाँ पूर्वकालमें पौरिक नामक राजा राज्य करता था (शान्ति० १११ । ३) ।

पुरु–(१) एक प्राचीन क्षत्रियनरेश, जो युधिष्ठिरकी सभामें विराजमान होते थे (सभा० ४ । २७) । (२) एक पर्वत, जहाँ पूर्वकालमें पुरूरवाने यात्रा की थी (वन० ९० । २२) ।

पुरुकुत्स–एक राजा, जो यमसभामें रहकर सूर्यपुत्र भगवान् यमकी उपासना करते हैं (सभा० ८ । १३) । ये मान्धाताके पुत्र तथा नर्मदाके पति थे एवं कुरुक्षेत्रके वनमें तपस्या करके सिद्धिको प्राप्त हो स्वर्गलोकमें गये थे (आश्रम० २० । १२-१३) ।

पुरुजित्–एक क्षत्रियनरेश, जो कुन्तिभोजके पुत्र और कुन्तीके भाई थे । इनके दूसरे भाईका नाम कुन्तिभोज था (सभा० १४ । १६-१७; कर्ण० ६ । २२) । इनके घोड़ोंका वर्णन (द्रोण० २३ । ४६) । दुर्मुखके साथ इनका युद्ध (द्रोण० २५ । ४०-४१) । द्रोणाचार्य-द्वारा इनके मारे जानेकी चर्चा (कर्ण० ६ । २२-२३) । ये यमराजकी सभामें उनकी उपासना करते थे (सभा० ८ । २०) ।

पुरुमित्र–धृतराष्ट्रके ग्यारह महारथी पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६३ । ११९) जूएके समय यह भी उपस्थित था (सभा० ५८ । १३) । अभिमन्युद्वारा घायल हुआ था (भीष्म० ७३ । २४) । संजयद्वारा जीवित

योद्धाओंकी गणनामें इसका भी नाम था (कर्ण० ७ । १४)।

पुरुमीढ–सम्राट् सुहोत्रके तृतीय पुत्र, माताका नाम ऐक्ष्वाकी । इनके दो भाई और थे अजमीढ और सुमीढ (आदि० ९४ । ३०) ।

पुरुषादक–एक प्राचीन देश (सभा० ५१ । १७) ।

पुरुषोत्तम–भगवान् श्रीकृष्णका एक नाम । ये सर्वत्र परिपूर्ण हैं तथा सबके निवासस्थान हैं; इसलिये पुरुष हैं। सब पुरुषोंमें उत्तम होनेके कारण पुरुषोत्तम कहलाते हैं (उद्योग० ७० । ११-१२) ।

पुरूरवा–(१) ये (चन्द्रपुत्र) बुधके द्वारा इलाके गर्भसे उत्पन्न हुए थे (आदि० ७५ । १८-१९; द्रोण० १४४ । ४) । ब्राह्मणोंके प्रति इनका अत्याचार (आदि० ७५ । २०-२१) । ब्राह्मणोंद्वारा इनका विनाश (आदि० ७५ । २२) । उर्वशीके गर्भसे इनके द्वारा क्रमशः आयु, धीमान्, अमावसु, दृढायु, वनायु और शतायु नामक छः पुत्रोंका जन्म (आदि० ७५ । २४-२५) । इनका वायुदेवसे चारों वर्णोंकी उत्पत्ति तथा ब्राह्मणकी श्रेष्ठताके विषयमें प्रश्न करना (शान्ति० ७२ । ३) । पुरोहितके विषयमें कश्यपजीके साथ इनका संवाद (शान्ति० ७३ । ७–३२) । इक्ष्वाकुद्वारा इन्हें खड्गकी प्राप्ति हुई थी और इन्होंने उसे आयुको प्रदान किया था (शान्ति० १६६ । ७३-७४) । ब्राह्मणोंके आशीर्वादसे इनकी स्वर्ग-प्राप्तिकी चर्चा (अनु० ६ । ३१) । गोदान-महिमाके प्रसङ्गमें इनका नामनिर्देश (अनु० ७६ । २६) । इन्होंने अपने जीवनमें कभी मांस नहीं खाया (अनु० ११५ । ६५) । (२) दीप्ताक्षवंशका एक कुलपांसन राजा (उद्योग० ७४ । १५) ।

पुरोचन–यह दुर्योधनका मन्त्री था । दुर्योधनका इसको 'वारणावत' नगरमें लाक्षागृह बनवानेका आदेश देकर भेजना (आदि० १४३ । २–१७) । इसके द्वारा लाक्षागृहका निर्माण (आदि० १४३ । १९) । इसका पाण्डवोंको अपने डेरेपर लाकर स्वागत-सत्कार करके आदरपूर्वक निवास देना (आदि० १४५ । ९-१०) । पाण्डवोंसे उस नये गृह (लाक्षागृह) की चर्चा करके उनको सेवक-सामग्रियोंसहित उसमें (लाक्षागृहमें) लाकर ठहराना (आदि० १४५ । ११-१२) । इसका लाक्षागृहमें दग्ध होना (आदि० ६१ । २३; आदि० १४९ । २) ।

पुलस्त्य–ये ब्रह्माजीके मानस पुत्र हैं (आदि० ६५ । १०; वन० २७४ । १२) । छः शक्तिशाली महर्षियोंमें इनका भी नाम है (आदि० ६६ । ४) । बुद्धिमान् पुलस्त्य मुनिके पुत्र राक्षस, वानर, किन्नर और यक्ष हैं (आदि० ६६ । ७) । ये अर्जुनके जन्ममहोत्सवमें भी पधारे थे (आदि० १२२ । ५२) । पराशरजीके राक्षस-सत्रमें महर्षियोंके साथ इनका आना और पराशरजीको समझाकर उस सत्रको बंद करनेके लिये कहना (आदि० १८० । ९—२०) । ये इन्द्रकी सभामें बैठते हैं (सभा० ७ । १७) । ये ब्रह्माजीकी सभामें रहकर उनकी उपासना करते हैं (सभा० ११ । १९) । इनके द्वारा भीष्मसे विभिन्न तीर्थोंका फलादेश-पूर्वक वर्णन (वन० अध्याय ८२ से ८५ । १११ तक) । इनकी पत्नीका नाम गौ था । उनके गर्भसे इनके द्वारा वैश्रवण (कुबेर) का जन्म हुआ था (वन० २७४ । १२) । इन्होंने अपने आधे शरीरसे विश्रवा नामक पुत्र उत्पन्न किया था (आदि० २७४ । १३-१४) । स्कन्दके जन्ममहोत्सवके अवसरपर ये भी पधारे थे (शल्य० ४५ । ९) । शरशय्यापर पड़े हुए भीष्मके पास आये हुए ऋषियोंमें ये भी थे (शान्ति० ४७ । १०) । इक्कीस प्रजापतियोंमें भी इनका नाम है (शान्ति० ३३४ । ३५) । चित्रशिखण्डी नामवाले सात ऋषियोंमें एक ये भी हैं (शान्ति० ३३५ । २९) । ये आठ प्रकृतियोंमेंसे एक हैं (शान्ति० ३४० । ३४-३५) । प्रयाणके समय भीष्मजीके पास ये भी आये थे (अनु० २६ । ४) । (महाभारतमें इनके ब्रह्मर्षि, ब्रह्मयोनि और विप्रर्षि आदि नामोंका भी उल्लेख मिलता है ।)

पुलह–ये ब्रह्माजीके मानस पुत्र हैं (आदि० ६५ । १०; वन० २७५ । १२) । छः शक्तिशाली महर्षियोंमें इनका भी नाम है (आदि० ६६ । ४) । पुलहके शरभ, सिंह, किम्पुरुष, व्याघ्र, रीछ, ईहामृग (भेड़िया) जातिके पुत्र हुए (आदि० ६६ । ८) । ये अर्जुनके जन्मसमय पधारे थे (आदि० १२२ । ५२) । पराशरजीके राक्षससत्रमें महर्षियोंके साथ इनका आगमन (आदि० १८० । ९) । ये इन्द्रकी सभामें विराजते हैं (सभा० ७ । १७) । ब्रह्माजीकी सभामें रहकर ये उनकी उपासना करते हैं (सभा० ११ । १८) । अलकनन्दा गङ्गाके तटपर ये जप और स्वाध्याय करते हैं (वन० १४२ । ६) । स्कन्दके जन्ममहोत्सवमें ये भी पधारे थे (शल्य० ४५ । ९) । इक्कीस प्रजापतियोंमें एक ये भी हैं (शान्ति० ३३४ । ३५) । चित्रशिखण्डी नामक सात ऋषियोंमें भी इनका नाम है (शान्ति० ३३५ । २९) । आठ प्रकृतियोंमें इनका नाम है (शान्ति० ३४० । ३४-३५) । प्रयाणके समय

भीष्मजीके पास आये हुए ऋषियोंमें ये भी थे (अनु० २६ । ४)।

पुलिन्द-(१) एक देश तथा वहाँके निवासी । ये वसिष्ठजीकी गौ नन्दिनीके कुपित होनेपर उसके फेनसे उत्पन्न हुए थे (आदि० १७४ । ३८) । भीमसेनने पुलिन्द देशपर धावा करके वहाँके महान् नगर तथा उस देशके राजा सुकुमार और सुमित्रको जीत लिया था (सभा० २९ । १०) । सहदेवने भी इस देशके राजा सुकुमार और सुमित्रको वशमें कर लिया था (सभा० ३१ । ४) । ये उन म्लेच्छ जातियोंमें हैं, जो कलियुगमें पृथ्वीके शासक होंगे (वन० १८८ । ३५) । ये दुर्योधनकी सेनामें आये थे (उद्योग० १६० । १०३; उद्योग० १६१ । २१) । यह एक भारतीय जनपद है (भीष्म० ९ । ३९, ६२) । इनका पाण्ड्यनरेशके साथ युद्ध हुआ और उनके बाणोंद्वारा मारे गये (कर्ण० २० । १०—१२) । इनकी गणना क्षत्रियोंमें थी; परंतु ब्राह्मणोंकी कृपासे वञ्चित होनेके कारण ये शूद्र हो गये (अनु० ३३ । २२ । २३ ।) । (२) यह किरातोंका राजा था और युधिष्ठिरकी सभामें बैठता था (सभा० ४ । २४) ।

पुलोमा-(१) भृगु ऋषिकी पत्नी (आदि० ५ । १३) । पुलोमा नामक राक्षसके द्वारा इनका हरण होना (आदि० ६ । १) । इनके गर्भसे च्यवन मुनिका जन्म (आदि० ६ । २) । इनकी विस्तृत कथा (आदि० ५ । १३ से ६ । १३ तक) । (२) एक राक्षस । इसके द्वारा भृगुपत्नी पुलोमाका हरण होना (आदि० ५ । १५) । इसका कुपित हुए च्यवनके तेजसे भस्म होना (आदि० ६ । ३) । (३) कश्यप और दनुसे उत्पन्न एक प्रसिद्ध दानव (आदि० ६५ । २२) । यह धन-रत्नोंसहित इस पृथ्वीके महान् शासकोंमेंसे एक था (शान्ति० १२७ । ४९-५०) । (४) दैत्यकुलकी एक कन्या, जिसके पुत्रोंको 'पौलोम' कहते हैं । इसने और कालकाने भारी तपस्या करके ब्रह्माजीसे यह वर माँगा था कि 'हमारे पुत्रोंका दुःख दूर हो जाय । हमारे पुत्र देवता, राक्षस तथा नागोंके लिये भी अवध्य हों । इनके रहनेके लिये एक सुन्दर नगर होना चाहिये, जो अपने महान् प्रभापुञ्जसे जगमगा रहा हो । वह नगर विमानकी भाँति आकाशमें विचरनेवाला हो और उसमें नाना प्रकारके रत्नोंका संचय रहना चाहिये । देवता आदि उसका विध्वंस न कर सकें (वन० १७३ । ७–१२) ।

पुष्कर-(१) क्षेत्र । तीर्थगुरु (आदि० २२० । १४) । (यह तीर्थ अजमेरसे छः कोसकी दूरीपर उत्तर दिशामें है । इसके सम्बन्धमें पुराणोंमें ऐसी प्रसिद्धि है कि ब्रह्माजीने इस स्थानपर यज्ञ किया था । यहाँ ब्रह्माजीका एक मन्दिर है । पद्म और नारदपुराणमें इस तीर्थका बहुत कुछ माहात्म्य मिलता है । पद्मपुराणमें लिखा है कि एक बार पितामह ब्रह्मा हाथमें कमल लिये यज्ञ करनेकी इच्छासे इस सुन्दर पर्वतप्रदेशमें आये और यहाँ कमल उनके हाथसे गिर पड़ा । उसके गिरनेसे ऐसा शब्द हुआ कि सब देवता काँप उठे । जब देवता ब्रह्मासे पूछने लगे, तब ब्रह्माने कहा—'बालकोंका घातक वज्रनाभ असुर रसातलमें तप करता था । वह तुमलोगोंका संहार करनेके लिये यहाँ आना ही चाहता था कि मैंने कमल गिराकर उसे मार डाला । तुमलोगोंकी बड़ी भारी विपत्ति दूर हुई । इस पद्मके गिरनेके कारण इस स्थानका नाम पुष्कर होगा । यह परम पुण्यप्रद महातीर्थ होगा ।' साँचीसे मिले हुए एक शिलालेखसे यह पता लगता है कि ईसासे तीन सौ वर्षसे भी और पहले यह तीर्थस्थान प्रसिद्ध था—(हिंदी शब्दसागरसे) । (यहाँ ब्रह्मा, सावित्री, बदरीनारायण और वराहजीके मन्दिर प्रसिद्ध हैं ।) अर्जुनने अपने वनवासका शेष समय यहीं व्यतीत किया था (आदि० २२० । १४) । पुलस्त्यजीद्वारा इसका विशेष वर्णन (वन० ८२ । २०—४०) । भीष्मद्वारा इसके माहात्म्यका वर्णन (वन० ८९ । १६–१८) । पुष्करमें जाकर मृत्युने घोर तप किया था (द्रोण० ५४ । २६) । यहाँ ब्रह्माजीका यज्ञ हुआ था, जिसमें सरस्वती सुप्रभा नामसे प्रकट हुई थी (शल्य० ३८ । ५—१४) । पुष्करमें जाकर दान देना, भोगोंका त्याग करना, शान्तभावसे रहना, तपस्या और तीर्थके जलसे तन-मनको पवित्र करना चाहिये (शान्ति० २९७ । ३७) । यहाँ स्नान करनेसे मनुष्य विमानपर बैठकर स्वर्गलोकमें जाता है और अप्सराएँ स्तुति करती हुई जगाती हैं (अनु० २५ । ९) । (२) वरुणदेवके प्रिय पुत्र, इनके नेत्र विकसित कमलके समान दर्शनीय हैं; इसीलिये सोमकी पुत्रीने इनका पतिरूपसे वरण किया है (उद्योग० ९८ । १२) । (३) ये राजा नलके छोटे भाई थे (वन० ५२ । ५६) । इन्हें कलियुगका राजा नलके साथ जूआ खेलनेके लिये आदेश देना (वन० ५९ । ४) । इनका राजा नलके साथ जूआ खेलना (वन० ५९ । ९) । पुष्करने राजा नलका सर्वस्व जीत लिया था (वन० ६१ । १) । इनका राजा नलके साथ पुनः जूआ खेलना और सर्वस्व हारना (वन० ७८ । ४—२०) । नलसे क्षमा माँगकर इनका अपनी राजधानीको लौट जाना (वन० ७८। २७–

१९)। (४) एक द्वीप, इसका विशेषरूपसे वर्णन (भीष्म० १२। २४—३७)। (५) पुष्करद्वीपका एक पर्वत, जो मणियों तथा रत्नोंसे भरा-पूरा है (भीष्म० १२। २४-२५)।

पुष्करधारिणी–ये विदर्भनिवासी उञ्छवृत्तिधारी तथा अहिंसापरायण सत्यनामक ब्राह्मणकी धर्मचारिणी पत्नी थीं (शान्ति० २७२। ३—६)।

पुष्करिणी–सम्राट् भरतकी पुत्रवधू तथा भुमन्युकी पत्नी। इनके गर्भसे सुहोत्र, दिविरथ, सुहोता, सुहवि, सुयजु और ऋचीक नामक छः पुत्र हुए थे (आदि० ९४। २३–२५)।

पुष्टि–ये दक्षप्रजापतिकी कन्या और धर्मकी पत्नी हैं (आदि० ६६। १४)। ये ब्रह्माकी सभामें रहकर उनकी उपासना करती हैं (सभा० ११। ४२)। इन्द्रलोककी यात्राके समय अर्जुनकी रक्षाके लिये द्रौपदीने इनका स्मरण किया था (वन० ३७। ३३)।

पुष्टिमति-भरत नामक अग्निका नामान्तर, ये संतुष्ट होनेपर पुष्टि प्रदान करते हैं, अतः इनका नाम पुष्टिमति है (वन० २२१। १)।

पुष्प–कश्यपवंशी एक नाग (उद्योग० १०३। १३)।

पुष्पक–(१) कुबेरका एक दिव्य विमान, जो इन्हें ब्रह्माजीसे प्राप्त हुआ था (वन० २७४। १७)। इसे रावणने उनसे बलपूर्वक छीन लिया था (वन० २७५। ३४)। कुबेरने रावणको यह शाप दिया था कि यह विमान तेरी सवारीमें नहीं आ सकेगा; जो तेरा वध करेगा, उसीका यह वाहन होगा (वन० २७५। ३५)। लङ्का-विजयके पश्चात् श्रीरामने पुष्पकविमानकी पूजा करके उसे कुबेरको ही प्रसन्नतापूर्वक लौटा दिया (वन० २९१। ६९)। (२) द्वारकापुरीके दक्षिणभागमें स्थित लतावेष्ट नामक पर्वतको एक ओरसे घेरकर फैला हुआ एक वन (सभा० ३८। २९ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ८१३)।

पुष्पदंष्ट्र–कश्यपवंशी एक प्रमुख नाग (आदि० ३५। १२)।

पुष्पदन्त–(१) एक दिग्गज (द्रोण० १२१। २५)। (२) पार्वतीद्वारा कुमारको दिये गये तीन पार्षदोंमेंसे एक, अन्य दोका नाम उन्माद और शङ्कुकर्ण था (शल्य० ४५। ५१)।

पुष्परथ–राजर्षि वसुमनाका रथ, यह आकाश, पर्वत और समुद्र आदि दुर्गम स्थानोंमें भी बड़ी सुगमतासे जा सकता था (वन० १९८। १२-१३)।

पुष्पवती–इस तीर्थमें स्नान करके तीन रात उपवास करनेवाला मनुष्य सहस्र गोदानका फल पाता है और अपने कुलको पवित्र कर देता है (वन० ८५। १२)।

पुष्पवान्–एक राजा, जो कभी समस्त पृथ्वीका शासक था, परंतु कालसे पीड़ित हो इसे छोड़कर परलोकवासी हो गया (शान्ति० २२७। ५१—५६)।

पुष्पानन–एक यक्ष, जो कुबेरकी सभामें रहकर उनकी उपासना करता है (सभा० १०। १७)।

पुष्पोत्कटा–कुबेरद्वारा विश्रवाकी परिचर्यामें नियुक्त एक सुन्दरी राक्षसकन्या, जो नृत्य-गीतकी कलामें प्रवीण थी। इसीके गर्भसे रावण और कुम्भकर्णका जन्म हुआ था (वन० २७५। ३—७)।

पूजनी–काम्पिल्य नगरके राजा ब्रह्मदत्तके भवनमें निवास करनेवाली एक चिड़िया (शान्ति० १३९। ५)। यह समस्त प्राणियोंकी बोली समझती थी। सर्वज्ञ और सम्पूर्ण तत्त्वोंको जाननेवाली थी (शान्ति० १३९। ६)। राजकुमारने इसके बच्चेको मार डाला था; अतः इसने भी राजकुमारकी आँखें फोड़ दीं (शान्ति० १३९। १३–२०)। राजभवनको छोड़कर जाते समय पूजनीका राजा ब्रह्मदत्तके साथ संवाद (शान्ति० १३९। २१–१११)।

पूतना–(१) एक राक्षसी, जो भगवान् श्रीकृष्णद्वारा मारी गयी थी (सभा० ३८। २९ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ७९८)। (२) (पूतनाग्रह)– पूतना नामक राक्षसी, जो बालकोंके लिये ग्रहरूप है। यह स्कन्दके साथ रहनेवाली है (वन० २३०। ३७)। यही पूतना स्कन्दकी अनुचरी मातृकाओंमें भी गिनी गयी है (शल्य० ४६। १६)।

पूतिका–एक लता, जो सोमलताके स्थानपर यज्ञमें काम आती है (वन० ३५। ३३)।

पूरण–एक प्राचीन ऋषि, जो शरशय्यापर पड़े हुए भीष्मके पास आये थे (शान्ति० ४७। १२)।

पूरु–(१) एक प्राचीन राजा (आदि० १। २३२), जो राजा ययातिके द्वारा 'शर्मिष्ठा' के गर्भसे उत्पन्न हुए थे (आदि० ७५। ३५; आदि० ८३। १०)। (ये पौरववंशके प्रवर्तक आदि पुरुष थे।) इनके द्वारा अपने पिताको युवावस्थाका दान एवं उनकी वृद्धावस्थाका ग्रहण (आदि० ७५। ४३-४४; आदि० ८४। ३४)। इनके द्वारा गुरुजनोंके आज्ञापालनकी महिमाका वर्णन (आदि० ८४। ३०-३१ के बाद दा० पाठ)। प्रजाके अनुमोदन करनेपर ययातिद्वारा इनका राज्यपर अभिषेक होना (आदि० ८५। ३२)। कौसल्या (पौष्टी) नामक पत्नीके गर्भसे इनके द्वारा जनमेजय (प्रवीर), ईश्वर तथा रौद्राश्वका जन्म एवं इनके वंशका संक्षिप्त वर्णन (आदि०

९४ अध्याय)। इनके वंशका विस्तारपूर्वक वर्णन (आदि० ९५ अध्याय)। ये यम-सभामें रहकर सूर्यपुत्र यमकी उपासना करते हैं (सभा० ८। ८)। इन्द्रके विमानपर बैठकर अर्जुनका कौरवोंके साथ होनेवाला युद्ध देखनेके लिये आये थे (विराट०५६। १०)। मान्धाताद्वारा इनकी पराजय (द्रोण० ६२। १०)। ययातिद्वारा इन्हें खड्गकी प्राप्ति (शान्ति० १६६। ७४)। अगस्त्यजीके कमलोंकी चोरी होनेपर शपथ खाना (अनु० ९४। २२)। ये मांसभक्षणका निषेध करके परावर-तत्त्वका ज्ञान प्राप्त कर चुके थे (अनु० ११५। ५९)। (२) अर्जुनका सारथि, जिसे राजसूय यज्ञके लिये अन्नसंग्रहके कामपर जुट जानेका आदेश मिला था (सभा० ३३। ३०)

पूर्ण-(१) वासुकि-कुलोत्पन्न एक नाग, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें जल मरा था (आदि० ५७। ५)। (२) कश्यपकी प्राधा नामवाली पत्नीसे उत्पन्न एक देव-गन्धर्व (आदि०६५। ४६)।

पूर्णभद्र-एक कश्यपवंशी प्रमुख नाग (आदि० ३५। १२)।

पूर्णमुख-धृतराष्ट्रके वंशमें उत्पन्न एक नाग, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें जल गया (आदि० ५७। १६)।

पूर्णा-पञ्चमी, दशमी तथा पञ्चदशी तिथियोंकी संज्ञा। पूर्णा नामक पञ्चमी तिथिमें युधिष्ठिरका जन्म (आदि० १२२। ६)।

पूर्णाङ्गद-धृतराष्ट्रवंशमें उत्पन्न एक नाग, जो जनमेजयके सर्प-सत्रमें स्वाहा हो गया था (आदि० ५७। १६)।

पूर्णायु-एक देवगन्धर्व, जो कश्यपकी पत्नी प्राधाका पुत्र था (आदि० ६५। ४६)।

पूर्वचित्ति-एक श्रेष्ठ अप्सरा, जो सर्वश्रेष्ठ छः अप्सराओंमेंसे एक है (आदि० ७४। ६८)। यह उन दस विख्यात अप्सराओंमेंसे एक है, जिन्होंने अर्जुनके जन्मोत्सवमें पधार-कर नृत्य और गान किया था (आदि० १२२। ६५)। स्वर्गमें अर्जुनके स्वागत-समारोहमें इसने नृत्य किया था (वन० ४३। २९)। मलयपर्वतपर शुकदेवजीकी उत्तम गति देखकर यह आश्चर्यचकित हो उठी थी और इस विषयमें अपना हार्दिक उद्गार प्रकट किया था (शान्ति० ३३२। २१-२४)।

पूर्वदिशा-चार दिशाओंमेंसे एक, इसका विशेष वर्णन (उद्योग० १०८ अध्याय)।

पूर्वपाली-एक प्राचीन राजा, जिसे पाण्डवोंकी ओरसे रण-निमन्त्रण भेजनेका निश्चय किया गया था (उद्योग० ४। १७)।

पूर्वाभिरामा-एक प्रमुख नदी, जिसका जल भारतवासी पीते हैं (भीष्म० ९। २२)।

पूषणा-स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य०४६। २०)।

पूषा-(१) बारह आदित्योंमेंसे एक (आदि० ६५। १५)। ये अर्जुनके जन्मोत्सवमें पधारे थे (आदि० १२२। ६७)। खाण्डववनके युद्धमें इनका आगमन और श्रीकृष्ण तथा अर्जुनपर धावा (आदि० २२६। ३५)। भगवान् शङ्करने इनके दाँत तोड़े थे (द्रोण० २०२। ४९; सौप्तिक० १८। १६)। इनके द्वारा स्कन्दको पाणीतक और कालिक नामक दो पार्षदोंका दान (शल्य० ४५। ४३-४४)। ये घृतदानसे संतुष्ट होते हैं (अनु० ६५। ७)। (२) सूर्यदेवका एक नाम (वन० ३। १६)।

पृतना-सेनाका परिमाणविशेष—तीन वाहिनी (आदि० २। २१)।

पृथा-शूरसेनकी पुत्री, जो संसारकी अनुपम सुन्दरी थी; वसुदेवजीकी बड़ी बहिन थी (आदि० ६७। १२९)।

पृथाश्व-यमराजकी सभामें रहकर सूर्यपुत्र यमकी उपासना करनेवाला एक प्राचीन नरेश (सभा० ८। १९)।

पृथु-(१) आठ वसुओंमेंसे एक (आदि० ९९। ११)। (२) एक वृष्णिवंशी क्षत्रिय, जो द्रौपदीके स्वयंवरमें आया था (आदि० १८५। १८)। यह रैवतक पर्वतके उत्सवमें सम्मिलित हुआ था (आदि० २१८। १०)। (३) महाराज वेनके पुत्र, प्रथम नरेश। इनके द्वारा अत्रिमुनिको धनदान (वन० १८५। ८—३५)। संजयको समझाते हुए नारदजी-द्वारा इनके चरित्रका वर्णन (द्रोण० ६९ अध्याय)। श्रीकृष्णद्वारा इनके चरित्रका वर्णन (शान्ति० २९। १३७—१४४)। इनकी उत्पत्ति और चरित्रका विस्तृत वर्णन (शान्ति० ५९। ९८—१२८)। ये प्राचीन कालमें पृथ्वीके शासक थे; किंतु कालसे पीड़ित हो पृथ्वीको छोड़कर परलोकवासी हो गये (शान्ति० २२७। ४९—५६)। इन्होंने जीवनमें कभी मांस नहीं खाया था (अनु० ११५। ६५)। (४) इक्ष्वाकुवंशी महाराज अनेना-के पुत्र, इनके पुत्रका नाम विष्वगश्व था (वन० २०२। २-३)।

पृथुलाक्ष-एक राजा, जो यमसभामें रहकर सूर्यपुत्र यम-की उपासना करता है (सभा० ८। १०)।

पृथुलाश्व-एक राजा, जो यमसभामें रहकर सूर्यपुत्र यमकी उपासना करता है (सभा० ८। २२)।

पृथुवस्त्रा-स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६। १९)।

पृथुवेग– एक राजा, जो यमसभामें रहकर सूर्यपुत्र यमकी उपासना करता है (सभा० ८ । १२) ।

पृथुश्रवा–(१) महाभौमकुमार अयुतनायीकी पत्नी कामाके पिता (आदि० ९५ । २०-२१) । ये यमसभामें रहकर सूर्यपुत्र यमकी उपासना करते हैं (सभा० ८ । १२) । (२) एक प्राचीन ऋषि, जो अजातशत्रु युधिष्ठिरका बड़ा सम्मान करते थे (वन० २६ । २२—२५) । (३) स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ६२) । (४) एक नाग, जो बलरामजीके स्वागतार्थ प्रभासक्षेत्रमें आया था (मौसल० ४ । १५) ।

पृथूदक–कुरुक्षेत्रकी सीमामें स्थित एक कार्तिकेय-तीर्थ, जिसमें स्नान करनेमात्रसे सब पाप नष्ट हो जाते हैं तथा तीर्थसेवी पुरुषको अश्वमेधयज्ञके फल और स्वर्गलोककी प्राप्ति होती है । (वन० ८३ । १४१—१४४) । इस तीर्थकी महिमा (शल्य० ३९ । २८–३३) ।

पृथिवीतीर्थ–कुरुक्षेत्रकी सीमामें स्थित एक तीर्थ, जहाँ जाकर स्नान करनेसे सहस्र गोदानका फल मिलता है (वन० ८३ । १३) ।

पृथ्वी–(देखिये भूमि) ।

पृश्नि–एक प्राचीन महर्षि, जिन्होंने द्रोणाचार्यके पास आकर उनसे युद्ध बंद करनेको कहा था (द्रोण० १९० । ३४—४०) । इन्होंने स्वाध्यायके द्वारा स्वर्ग प्राप्त किया था (शान्ति० २६ । ७) ।

पृश्निगर्भ–भगवान् श्रीकृष्णका एक नाम, उसकी निरुक्ति— अन्न, वेद, जल और अमृत—इनको पृश्नि कहते हैं । ये सदा भगवान्‌के गर्भमें रहते हैं, इसलिये इनका नाम पृश्निगर्भ है । इस नामके उच्चारणसे त्रित मुनि कूपसे बाहर हो गये थे (शान्ति० ३४१ । ४५—४७) ।

पृषत–पाञ्चाल देशके एक राजा, जो महर्षि भरद्वाजके मित्र और द्रुपदके पिता थे (आदि० १२९ । ४१) ।

पृषदश्व–एक प्राचीन नरेश, जिन्हें राजा अष्टकद्वारा खड्गकी प्राप्ति हुई थी (शान्ति० १६६ । ८०) । ये यमराजकी सभामें रहकर सूर्यपुत्र यमकी उपासना करते हैं (सभा० ८ । १३) ।

पृषध्र–(१) वैवस्वत मनुके नवें पुत्र (आदि० ७५ । १६) । ये प्रातः-सायंकालीन कीर्तन करनेयोग्य राजाओंमेंसे एक हैं, इनके कीर्तनसे धर्मका फल प्राप्त होता है (अनु० १६५ । ५८—६०) । इन्होंने कुरुक्षेत्रमें तपस्या करके स्वर्ग प्राप्त किया (आश्रम० २० । ११) । (२) द्रुपदका एक पुत्र, जिसका अश्वत्थामाद्वारा वध हुआ था (द्रोण० १५६ । १८३) ।

पैङ्ग्य–एक ऋषि, जो युधिष्ठिरकी सभामें विराजते थे (सभा० ४ । १७) ।

पैजवन–एक शूद्र, जिसने ऐन्द्राग्न यज्ञकी विधिसे मन्त्रहीन यज्ञ करके उसकी दक्षिणाके रूपमें एक लाख पूर्णपात्र दान किये थे (शान्ति० ६० । ३९) ।

पैठक–एक असुर, जिसका भगवान् श्रीकृष्णद्वारा वध किया गया था (सभा० ३८ । २९ के बाद दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ८२५, कालम १) ।

पैल–एक प्राचीन ऋषि, जो व्यासजीके शिष्य थे । इनको व्यासजीने सम्पूर्ण वेदों एवं महाभारतका अध्ययन कराया था (आदि० ६३ । ८९-९०) । ये वसुके पुत्र थे और धौम्य मुनिके साथ युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञके होता बने थे (सभा० ३३ । ३५) । शरशय्यापर पड़े हुए भीष्मजीके पास अन्य ऋषियोंके साथ महात्मा पैल भी पधारे थे (शान्ति० ४७ । ६) ।

पैलगर्ग–एक मुनि, जिनके आश्रमपर काशिराजकी कन्या अम्बाने तपस्या की थी (उद्योग० १८६ । २८) ।

पैलगर्गाश्रम–एक तीर्थ, जहाँ काशिराजकी कन्या अम्बाने कठोर व्रतका आश्रय ले स्नान किया था (उद्योग० १८६ । २८) ।

पैशाच–विवाहका एक भेद । जब घरके लोग सोये हों अथवा असावधान हों, उस दशामें कन्याको चुरा लेना पैशाच विवाह है । यह सर्वथा सभी वर्णोंके लिये निषिद्ध है (आदि० ७३ । ९—१२) ।

पोतक–कश्यपवंशीय एक नाग (उद्योग० १०३ । ११) ।

पौण्ड्र–(१) नन्दिनीके पार्श्वभागसे प्रकट हुई एक म्लेच्छ जाति (आदि० १७४ । ३७) । (२) एक देश और वहाँके निवासी राजा आदि; पौण्ड्रदेशके राजा द्रौपदीके स्वयंवरमें आये थे (आदि० १८६ । १५) । इस देशको श्रीकृष्णने पराजित किया था (सभा० ३८ । २९ के बाद, पृष्ठ ८२४, कालम २) । पौण्ड्र देशके लोगोंके राजसूय यज्ञमें आनेकी चर्चा (वन० ५१ । २२) । युधिष्ठिरकी ओरसे उनके साथ ये क्रौञ्च-व्यूहमें खड़े थे (भीष्म० ५० । ४८) । कर्णने इस देशको जीता था (द्रोण० ४ । ८) । श्रीकृष्णने भी इसपर विजय पायी थी (द्रोण० ११ । १५) । मान्धाताके राज्यमें पौण्ड्रजातिके लोग निवास करते थे (शान्ति० ६५ । १४) । पौण्ड्रलोग पहले क्षत्रिय थे, किंतु ब्राह्मणोंके अमर्षसे शूद्रत्वको प्राप्त हो गये (अनु० ३५ । १७-१८) । (३) भीमसेनके शङ्खका नाम । युद्धके आरम्भमें भीमने इस महाशङ्खको बजाया था (भीष्म० २५ । १५) । दुर्योधनके मारे जानेपर भीमकर्मा भीमने

पौण्ड्र नामक महान् शङ्खकी ध्वनि की (शल्य० ६१ । ७१ के बाद दा० पाठ) ।

पौण्ड्रक–पुण्ड्रदेशका राजा वासुदेव, जो वंग, पुण्ड्र आदि अनेक देशोंका शासक था और जरासंधसे मिला हुआ था (सभा० १४ । २०) । राजसूय यज्ञके समय भीमसेन-द्वारा इसकी पराजय (सभा० ३० । २२) । यह युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें भेंट लेकर आया था (सभा० ५२ । १८) ।

पौण्ड्रमात्स्यक–एक क्षत्रिय राजा, जो दनायुके पुत्र वीर नामक दैत्यके अंशसे उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७ । ४३) ।

पौदन्य–एक प्राचीन नगर, जिसे सौदासके पुत्र अश्मकने बसाया था (आदि० १७६ । ४७) । (कुछ आधुनिक विचारकोंके मतानुसार गोदावरीके उत्तर तटपर बसा हुआ 'पैथान' नामक नगर ही पौदन्य है ।)

पौनर्भव–छः बन्धु-दायादोंमेंसे एक । दूसरी बार ब्याही हुई स्त्रीसे उत्पन्न हुआ पुत्र (आदि० ११९ । ३३) ।

पौरव– (१) एक राजर्षि, जो शरभ नामक दैत्यके अंशसे उत्पन्न हुए थे (आदि० ६७ । २७-२८) । ये पर्वतीय राजा थे और अर्जुनद्वारा पराजित हुए थे (सभा० २७ । १४-१५) । पाण्डवोंकी ओरसे इन्हें रण-निमन्त्रण भेजनेका विचार किया गया था (उद्योग० ४ । १४) । दुर्योधनकी सेनामें ये एक महारथी थे (उद्योग० १६८ । १९) । धृष्टकेतुके साथ इनका द्वन्द्व-युद्ध (भीष्म० ११६ । १३-१४) । इन्होंने अभिमन्युके साथ युद्ध किया और अभिमन्युने चुटिया पकड़कर इन्हें घसीटा था (द्रोण० १४ । ५०–६०) । महाभारत-युद्धमें ये अर्जुनद्वारा मारे गये थे, ऐसी चर्चा आयी है (कर्ण० ५ । ३५) । (२) पूरुके वंशमें उत्पन्न होनेवाले––कौरव-पाण्डव आदि (आदि० १७२ । ५० के बाद दा० पाठ) । (३) अङ्गदेशके एक प्राचीन राजा । नारदजीद्वारा सृञ्जयके समक्ष अश्वमेध यज्ञमें इनके दानका वर्णन (द्रोण० ५७ अध्याय) । (४) विश्वामित्रके ब्रह्मवादी पुत्रोंमेंसे एक (अनु० ४ । ५५) ।

पौरवक–क्षत्रियोंकी एक जाति, इस जातिके लोग युधिष्ठिरके साथ क्रौञ्चव्यूहमें खड़े थे (भीष्म० ५० । ४८) ।

पौरिक–पुरिका नगरीका एक राजा, जिसे पापके कारण सियारकी योनिमें जन्म लेना पड़ा था (शान्ति० १११ । ३-४) ।

पौरोगव–पाकशालाके अध्यक्षकी संज्ञा (विराट० २ । १) ।

पौलस्त्य–पुलस्त्यकुलके राक्षस, जो दुर्योधनके भाइयोंके रूपमें उत्पन्न हुए थे (आदि० ६७ । ८९–९१) ।

पौलोम–(१) पुलोमाके पुत्र । हिरण्यपुरके स्वामी । इनका अर्जुनके साथ युद्ध और उनके द्वारा इनका संहार (वन० १७२ । १६—५५) । (२) दक्षिण समुद्रके समीपका एक तीर्थ, पाँच नारी तीर्थोंमेंसे एक (आदि० २१५ । ३) । यहाँ ब्राह्मणके शापसे ग्राह बनकर रहनेवाली अप्सरा (वर्गाकी सखी) का अर्जुनद्वारा उद्धार हुआ (आदि० २१६ । २१-२२) ।

पौलोमपर्व–आदिपर्वका एक अवान्तर पर्व (अध्याय ४ से १२ तक) ।

पौलोमी–पुलोमा दानवकी पुत्री, देवराज इन्द्रकी पत्नी और जयन्तकी माता शची (आदि० ११२ । ४) । (देखिये शची)

पौष मास–(बारह महीनोंमेंसे एक, जिस मासकी पूर्णिमाको पुष्य-नक्षत्रका योग होता है, उसे 'पौष' कहते हैं । यह मार्गशीर्षके बाद और माघके पहले पड़ता है ।) पौष मासमें प्रतिदिन एक समय भोजन करनेवाला मनुष्य सौभाग्यशाली, दर्शनीय और यशस्वी होता है (अनु० १०६ । २०) । पौष मासकी द्वादशीको उपवासपूर्वक भगवान् नारायणकी पूजा करनेसे वाजपेय यज्ञका फल मिलता है (अनु० १०९ । ४) । पौष मासके शुक्लपक्षकी जिस तिथिमें रोहिणी नक्षत्रका योग हो, उस दिनकी रात्रिमें स्नान आदिसे शुद्ध हो एक वस्त्र धारण करके श्रद्धा और एकाग्रतापूर्वक आकाशके नीचे खुले मैदानमें सो जाय और चन्द्रमाकी किरणोंका पान करता रहे । ऐसा करनेसे उसे महान् यज्ञका फल मिलता है (अनु० १२६ । ४८–४९) ।

पौष्टी–राजा पूरुकी पत्नी, इनके गर्भसे पूरुद्वारा प्रवीर, ईश्वर तथा रौद्राश्व नामक तीन पुत्र उत्पन्न हुए थे (आदि० ९४ । ५) । इनका दूसरा नाम कौसल्या था (आदि० ९५ । ११) ।

पौष्य–एक क्षत्रिय राजा, जिन्होंने आचार्य वेदको पुरोहित बनाया था । इनकी कथा (आदि० ३ । ८२—११७) । इनकी रानीका उत्तङ्क ऋषिको कुण्डल देना (आदि० ३ । १११) । इनके द्वारा उत्तङ्कको संतानहीन होनेका शाप (आदि० ३ । ११७) ।

पौष्यपर्व–आदिपर्वका एक अवान्तर पर्व (३ अध्याय) ।

प्रकालन–वासुकि-वंशका एक नाग, जो जनमेजयके सर्प-यज्ञमें जल मरा था (आदि० ५७ । ६) ।

प्रकाश–एक भृगुवंशी ब्राह्मण, जो गृत्समदवंशी 'तम' के पुत्र थे (अनु० ३० । ६३) ।

प्रगण्डी–परकोटोंपर रक्षा-सैनिकोंके बैठनेका स्थान (शान्ति० ६९ । ४३) ।

प्रघस–राक्षसों और पिशाचोंके दल (वन० २८५ । १-२) ।

प्रघसा–स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । १६) ।

प्रचेता–प्राचीनबर्हिके दस पुत्र, जो ऋषि एवं प्रजापति हैं, इन्हींसे प्राचेतस दक्षका जन्म हुआ है (अनु० १४७ । २५) । इन्होंने कण्डु मुनिकी पुत्री वार्क्षीके साथ विवाह किया था (आदि० १९५ । १५) । ये इन्द्रकी सभामें विराजमान होते हैं (सभा० ७ । १६) । ब्रह्माजीकी सभामें रहकर उनकी उपासना करते हैं (सभा० ११ । १८) । ये स्कन्दके जन्मकालमें उनके पास पधारे थे (शल्य० ४५ । १०) ।

प्रजागरपर्व–उद्योगपर्वका एक अवान्तर पर्व (अध्याय ३३ से ४० तक) ।

प्रजागरा–एक अप्सरा, जिसने इन्द्रकी सभामें अर्जुनके स्वागत-समारोहके अवसरपर नाच-गान किया था (वन० ४३ । ३०) ।

प्रजापति–(१) प्रजाओंके स्रष्टा और पालक देवगुरु ब्रह्मा (आदि० १ । २९—३३) । (विशेष देखिये 'ब्रह्मा') । (२) महर्षि कश्यप, जिन्होंने वालखिल्योंसे देवराज इन्द्र-पर अनुग्रह करनेके लिये प्रार्थना की थी (आदि० ३१ । १६—२१) ।

महाभारतमें प्रजापतियोंके इक्कीस नाम आये हैं— ब्रह्मा, रुद्र, मनु, दक्ष, भृगु, धर्म, तप, यम, मरीचि, अङ्गिरा, अत्रि, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, वसिष्ठ, परमेष्ठी, सूर्य, चन्द्रमा, कर्दम, क्रोध और विक्रीत । ये इक्कीस प्रजापति उसी परमात्मासे उत्पन्न बताये गये हैं तथा उसी परमात्माकी सनातन धर्म-मर्यादाका पालन एवं पूजन करते हैं (शान्ति० ३३४ । ३५—३७) ।

प्रजापतिकी उत्तर वेदी–तरन्तुक, अरन्तुक, रामह्रद (परशुरामकुण्ड) तथा मचक्रुक—इनके बीचका भू-भाग कुरुक्षेत्र ही प्रजापतिकी उत्तर वेदी है (शल्य० ५३ । २४) ।

प्रजापति-वेदी–प्रतिष्ठानपुर (झूसी) सहित प्रयाग, कम्बल और अश्वतर नाग तथा भोगवती तीर्थ–यह ब्रह्माजीकी वेदी है (वन० ८५ । ७६-७७) ।

प्रणिधि–वासिष्ठ बृहद्रथके अंशसे उत्पन्न पाञ्चजन्य नामक अग्निके पुत्र (वन० २२० । ९) ।

प्रणीत–छः बन्धुदायादोंमेंसे एक, अपनी पत्नीके गर्भसे किसी महापुरुषके अनुग्रहसे उत्पन्न हुआ पुत्र (आदि० ११९ । ३३) ।

प्रतर्दन–काशी जनपदके एक प्राचीन नरेश, जो राजा ययातिके दौहित्र थे (आदि० ९३ । ५३ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ २८२) । ययाति-पुत्री माधवीके गर्भसे काशि-राज दिवोदासके द्वारा इनका जन्म हुआ था (उद्योग० ११७ । १८; अनु० ३० । ३०) । स्वर्गसे गिरते हुए राजा ययातिकी इनसे भेंट (आदि० ८६ । ५-६) । इनका ययातिके साथ वार्तालाप (आदि० ९२ । १४—१८ दा० पाठसहित) । इनके द्वारा ययातिको पुण्यदानका आश्वासन (आदि० ९२ । १६) । अष्टक आदि राजाओंके साथ इनका स्वर्गलोकको जाना (आदि० ९३ । १६ के बाद दा० पाठ) । देवर्षि नारदद्वारा भविष्यमें इनके स्वर्गसे गिरनेके कारणका वर्णन (वन० १९८ । ५) । इनका ययातिको अपना पुण्यफल देना (उद्योग० १२२ । ६-७) । पराजित राजाका सारा धन ले जाना (शान्ति० ९६ । २०) । महाराज शिविद्वारा इन्हें खड्गकी प्राप्ति (शान्ति० १६६ । ८०) । इनके द्वारा ब्राह्मणको नेत्र-दान (शान्ति० २३४ । २०) । इनके द्वारा वीतहव्य-पुत्रोंका वध (अनु० ३० । ४२-४३) । वीतहव्यको छोड़ देनेके लिये इनकी भृगुजीसे प्रार्थना (अनु० ३० । ५०—५२) । भृगुजीके वचनोंसे संतुष्ट होकर इनका नगरको लौटना (अनु० ३० । ५४—५६) । इनका अपने पुत्रको ब्राह्मणकी सेवामें समर्पित करके इस लोकमें अनुपम कीर्ति पाना और परलोकमें अक्षय आनन्द भोगना (अनु० १३७ । ५) ।

प्रताप–सौवीर देशका एक राजकुमार, जो जयद्रथके रथके पीछे हाथमें ध्वजा लेकर चलता था (वन० २६५ । १०) । अर्जुनद्वारा इसका वध (वन० २७१ । २७) ।

प्रतिज्ञापर्व–द्रोणपर्वका एक अवान्तर पर्व (अध्याय ७२ से ८४ तक) ।

प्रतिमत्स्य–एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ५२) ।

प्रतिरूप–एक दैत्य, जो कभी समस्त पृथ्वीका शासक था; परंतु कालसे पीड़ित हो इन्हें छोड़कर परलोकवासी हो गया (शान्ति० २२७ । ५३—५६) ।

प्रतिविन्ध्य–(१) द्रौपदीके गर्भसे युधिष्ठिरद्वारा उत्पन्न (आदि० ६३ । १२२-१२३; आदि० ९५ । ७५) । इनका जन्म विश्वेदेवके अंशसे हुआ था (आदि० ६७ । १२७-१२८) । इनके नामकी निरुक्ति (आदि० २२० । ७९—८१) । प्रथम दिनके संग्राममें शकुनिके साथ इनका द्वन्द्व-युद्ध (भीष्म० ४५ । ६३—६५) । अलम्बुषके साथ इनका युद्ध और उससे पराजित होना (भीष्म० १०० । ३९—४९) । इनके घोड़ोंका वर्णन (द्रोण० २३ । २७) । अश्वत्थामाके साथ इनका युद्ध (द्रोण० २५ । २९-३१) । दुःशासनके साथ इनका युद्ध और पराजित

होना (द्रोण० १६८ । ३४—४३) । राजा चित्रके साथ युद्ध और इनके द्वारा उसका वध (कर्ण० १४ । २०—३३) । रात्रिमें अश्वत्थामाके साथ युद्ध और उसके द्वारा मारा जाना (सौप्तिक० ८ । ४८—५४) । (महाभारतमें इनके लिये यौधिष्ठिर और यौधिष्ठिरि शब्द-का भी प्रयोग हुआ है ।) (२) एक प्रसिद्ध राजा, जो एकचक्र नामक दैत्यके अंशसे उत्पन्न हुए थे (आदि० ६७ । २१-२२) । दिग्विजयके समय अर्जुनने इन्हें परास्त किया था (सभा० २६ । ५) । पाण्डवोंकी ओरसे इन्हें रण-निमन्त्रण भेजनेका विचार किया गया था (उद्योग० ४ । १३) । ये यमराजकी सभामें रहकर उनकी उपासना करते हैं (सभा० ८ । २४) ।

प्रतिश्रवा—ये परीक्षित्के पुत्र थे, जो महाराज भीमसेनके द्वारा 'कुमारी' के गर्भसे उत्पन्न हुए थे । इनके पुत्रका नाम प्रतीप था (आदि० ९५ । ४२—४४) ।

प्रतिष्ठा—स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । २९) ।

प्रतिष्ठानपुर—प्रयागके भीतरका एक तीर्थ (जिसे आजकल झूसी कहते हैं) । यह प्रजापतिकी वेदीके अन्तर्गत है (वन० ८५ । ७६) । प्रतिष्ठानपुरमें राजा ययातिकी राजधानी थी, जहाँ गालव और गरुड़ गये थे (उद्योग० ११४ । ९) ।

प्रतीच्या—ये महर्षि पुलस्त्यकी पतिव्रता पत्नी थीं (उद्योग० ११७ । १६) ।

प्रतीत—एक विश्वेदेव (अनु० ९१ । ३२) ।

प्रतीप—एक कुरुवंशी राजा, जो धृतराष्ट्रके पुत्र थे । आदिपर्व ९४ । ४९—६० के वर्णनके अनुसार कुरुसे इनकी परम्परा इस प्रकार है—कुरु, कुरुके पुत्र अश्ववान् (अविक्षित्), इनके परीक्षित् आदि आठ भाई, इनके कुलमें जनमेजय, जनमेजयसे धृतराष्ट्र और धृतराष्ट्रसे प्रतीप हुए; किंतु आदिपर्व ९५ । ३९—४४ के वर्णनके अनुसार कुरुसे विदूर, विदूरसे अनश्वा, अनश्वासे परीक्षित्, परीक्षित्से भीमसेन, भीमसेनसे प्रतिश्रवा और प्रतिश्रवासे प्रतीपका जन्म हुआ था । इनकी पत्नीका नाम शैब्या-सुनन्दा था; उससे इनके तीन पुत्र हुए देवापि, शान्तनु तथा बाह्लीक (आदि० ९४ । ६१; आदि० ९५ । ४४) । इनके पास मनस्विनी गङ्गा सुन्दर रूप और उत्तम गुणोंसे युक्त युवती स्त्रीका रूप धारण करके गयीं और इनके दाहिने ऊरुपर जा बैठीं तथा इनके पूछनेपर उन्होंने इनकी पत्नी बननेकी कामना प्रकट की । तब इन्होंने उनका पुत्रवधूके रूपमें वरण किया (आदि० ९७ । १—१६) । इनका एक दिव्य नारीको पत्नीरूपमें स्वीकार करनेके लिये अपने पुत्र शान्तनुको आदेश देना (आदि० ९७ । २१—२३) । इनका शान्तनुको राज्य देकर वनमें प्रवेश करना (आदि० ९७ । २४) । इनके परलोकवासी होनेकी चर्चा (उद्योग० १४९ । २८) ।

प्रत्यग्रह—ये राजा उपरिचर वसुके द्वितीय पुत्र थे (आदि० ६३ । ३१) ।

प्रत्यङ्ग—एक प्राचीन नरेश (आदि० १ । २३८) ।

प्रत्यूष—ये धर्मके द्वारा प्रभाताके गर्भसे उत्पन्न हुए थे । इनकी गणना वसुओंमें है (आदि० ६६ । १७—२०) ।

प्रदाता—एक विश्वेदेव (अनु० ९१ । ३२) ।

प्रद्युम्न—ये सनत्कुमारके अंशसे भगवान् श्रीकृष्णद्वारा रुक्मिणीके गर्भसे प्रकट हुए थे (आदि० ६७ । १५२; सौप्तिक० १२ । ३०—३२) । अर्जुन और सुभद्राके विवाहके उपलक्ष्यमें दहेज लेकर आनेवाले वृष्णिवंशियोंमें ये भी थे (आदि० २२० । ३१) । ये युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें पधारे थे (सभा० ३४ । १६) । शाल्वके पराक्रम-से घबरायी हुई यादवसेनाको इनके द्वारा आश्वासन (वन० १६ । ३०—३२) । इनका शाल्वके साथ घोर युद्ध (वन० १७ अध्याय) । संग्रामभूमिमें इनका मूर्च्छित होना (वन० १७ । २२) । सारथिद्वारा मूर्च्छावस्थामें संग्रामसे हटा ले जानेपर इनका अनुताप और सारथिको उपालम्भ देना (वन० १८ अध्याय) । पुनः शाल्वके साथ युद्ध और उसे मारनेके लिये एक अद्भुत शत्रुनाशक बाणका संधान करना (वन० १९ । १२—१९) । इनके पास नारद और वायुदेवका आकर देवताओंका संदेश सुनाना (वन० १९ । २१—२४) । इनके द्वारा शाल्वकी पराजय (वन० १९ । २६) । इनसे अनिरुद्ध प्रकट हुए थे (भीष्म० ६५ । ७१) । ये महारथी वीर थे (द्रोण० ११० । ५९) । इनके नामकी निरुक्ति (शान्ति० ३३९ । ३७-३८) । ये श्रीकृष्णके तीसरे स्वरूप माने जाते हैं (अनु० १५८ । ३९) । श्रीकृष्णसे ब्राह्मणकी महिमाके विषयमें पूछना (अनु० १५९ । ४—७) । ये युधिष्ठिरके अश्वमेधयज्ञमें हस्तिनापुर आये थे (आश्व० ६६ । ३) । मौसल-युद्धमें इनका भोजोंके साथ युद्ध और उनके द्वारा इनका वध (मौसल० ३ । ३३—३५) । मरणोपरान्त ये सनत्कुमारके स्वरूपमें प्रविष्ट हो गये (स्वर्गा० ५ । १३) ।

प्रद्योत—एक यक्ष, जो कुबेरकी सभामें रहकर उनकी सेवा करता है (सभा० १० । १५) ।

प्रधान—एक प्राचीन राजर्षि, इन्हींके कुलमें सुलभा उत्पन्न हुई थी, जिसके साथ विदेहराज जनकका संवाद हुआ था (शान्ति० ३२० । १८४) ।

प्रबालक–एक यक्ष, जो कुबेरकी सभामें रहकर उनकी उपासना करता है (सभा० १० । १७) ।

प्रबाहु–कौरव-पक्षका एक योद्धा, जिसने अभिमन्युपर बाण-वर्षा की थी (द्रोण० ३७ । २६) ।

प्रभञ्जन–ये मणिपूरनरेश चित्रवाहनके पूर्वज थे, इनके कोई पुत्र नहीं था, अतः इन्होंने उत्तम तपस्या आरम्भ की । उस उग्र तपस्याद्वारा देवाधिदेव महेश्वर संतुष्ट हो गये और उन्होंने राजाको वरदान देते हुए कहा कि तुम्हारे कुलमें एक-एक संतान होती जायगी (आदि० २१४ । १९-२१) ।

प्रभद्रक–पाञ्चालोंका एक क्षत्रिय-दल, जो पाण्डवपक्षमें आया था (उद्योग० ५७ । ३३) । ये प्रायः धृष्टद्युम्न और शिखण्डीका अनुगमन करते थे(भीष्म० १९ । २२; भीष्म० ५६ । १४) । ये अधिकतर शल्यद्वारा मारे गये थे (शल्य० ११ । २४) । रातमें सोते समय अश्वत्थामाद्वारा प्रभद्रकोंका वध हुआ था (सौप्तिक० ८ । ६६) ।

प्रभा–(१) एक देवी, जो ब्रह्माकी सभामें रहकर उनकी उपासना करती हैं (सभा० ११ । ४१) । (२) अलकापुरीकी एक अप्सरा, जिसने अष्टावक्रजीके स्वागत-समारोहमें नृत्य किया था (अनु० १९ । ४५) ।

प्रभाकर–(१) एक कश्यपवंशी प्रमुख नाग (आदि० ३५ । १५) । (२) कुशद्वीपका छठा वर्षखण्ड (भीष्म० १२ । १३) ।

प्रभाता–ये धर्मकी पत्नी थीं और प्रत्यूष तथा प्रभास नामक दो वसु इन्हींके पुत्र थे (आदि० ६६ । १७—२०) ।

प्रभावती–(१) मयदानवके निवास स्थानपर तपस्या करनेवाली एक तपस्विनी, जो सीताजीकी खोजके लिये गये हुए वानरोंसे मिली थी (वन० २८२ । ४१) । (२) ये सूर्यदेवकी पत्नी थीं (उद्योग० ११७ । ८) । (३) स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । ३) । (४) अङ्गराज चित्ररथकी पत्नी, जो देवशर्माकी पत्नी रुचिकी बड़ी बहिन थी (अनु० ४२ । ८) । इसका अपनी बहिन रुचिसे दिव्य पुष्प मँगवा देनेके लिये अनुरोध (अनु० ४२ । १०) ।

प्रभास–(१) ये धर्मके द्वारा प्रभाताके गर्भसे उत्पन्न हुए थे, इनकी गणना वसुओंमें है (आदि० ६६ । १७—२०) । (२) एक प्राचीन तीर्थ (आदि० २१७ । ३) । यह पश्चिम समुद्रतटपर सौराष्ट्र देश (काठियावाड़) में है, यह देवताओंका तीर्थ है (वन० ८८ । २०) । (इसे सोमतीर्थ भी कहते हैं, सोमनाथ नामक ज्योतिर्लिङ्गका स्थान यहीं है ।) यहाँ तीर्थयात्राके अवसरपर अर्जुनका श्रीकृष्णसे मिलन (आदि० २१७ । ४) । प्रभासतीर्थमें श्रीकृष्णने एक हजार दिव्य वर्षोंतक एक पैरसे खड़े होकर तपस्या की थी (वन० १२ । १५-१६) । यहाँ अग्निदेव निवास करते हैं, इस तीर्थमें स्नान करके संयतचित्त मानव अतिरात्र और अग्निष्टोम यज्ञका फल पाता है (वन० ८२ । ५८—६०) । तीर्थयात्राके समय भाइयोंसहित युधिष्ठिर यहाँ आये थे और इस स्थानपर उन्होंने तपस्या की थी (वन० ११८ । १५—१८) । प्रभास तीर्थ इन्द्रको बहुत प्रिय है, यह पुण्यमय क्षेत्र और पापोंका नाश करनेवाला है (वन० १३० । ७) । इसके प्रभावका विशेषरूपसे वर्णन (शल्य० ३५ । ४१—८२) । यहाँ स्नान करनेसे मनुष्य विमानपर बैठकर स्वर्गमें जाता है और अप्सराएँ वहाँ स्तुति करती हुई उसे जगाती हैं (अनु० २५ । ९) । यहाँ ही यदुवंशियोंका परस्पर युद्ध करके विनाश हुआ था (मौसल० ३ । १०—४६) । प्रभास तीर्थसे ही बलरामजी तथा भगवान् श्रीकृष्ण परम धाम पधारे थे (मौसल० ४ अध्याय) । (३) स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ६९) ।

प्रभु–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ५८) ।

प्रमतक–एक ऋषि, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें सदस्य बने थे (आदि० ५३ । ७) ।

प्रमति (या प्रमिति)–च्यवन ऋषिके पुत्र । इनकी माताका नाम सुकन्या था (आदि० ५ । ९; आदि० ८ । १) । इनके घृताची अप्सराके गर्भसे रुरु नामक पुत्र उत्पन्न हुआ था (आदि० ८ । २) । इनका रुरुके लिये स्थूलकेश मुनिसे उनकी प्रमद्वरा नामक कन्याको माँगना (आदि० ८ । १५) । इनका रुरुको आस्तीक-पर्वकी कथा सुनाना (आदि० ५८ । ३०-३१) । शर-शय्यापर पड़े हुए भीष्मके पास उनकी मृत्युके समय ये भी पधारे थे (अनु० २६ । ५) । कहीं-कहीं इन्हें वीतहव्यके पुत्र गृत्समदके कुलमें जन्म लेनेवाले वागीन्द्रका पुत्र बताया गया है (अनु० ३० । ५८—६४) ।

प्रमथ–धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ११६ । १३) ।

प्रमथगण–शिवजीके गण, इनके द्वारा धर्माधर्मसम्बन्धी रहस्यका कथन (अनु० १३१ अध्याय) ।

प्रमदावन–राजमहलोंमें रानियोंके विहारके लिये बने हुए उपवन (वन० ५३ । २५) ।

प्रमद्वरा–रुरुकी पत्नी तथा शुनक ऋषिकी माता जो विश्वावसु और मेनकासे उत्पन्न हुई थी । इसकी उत्पत्ति, स्थूल

केशद्वारा इसके लालन-पालन, नामकरण एवं विवाहकी कथा (आदि० ५ । १०; आदि० ८ । ५-१३) । इसका सर्पसे डँसा जाना (आदि० ८ । १८) । मृत्युको प्राप्त हुई प्रमद्वराका पतिकी आयुसे जीवित होना (आदि० ९ । १५) ।

प्रमाणकोटि-गङ्गाके तटपर स्थित एक तीर्थ, जहाँ प्रमाण-कोटि नामसे प्रसिद्ध एक विशाल वट-वृक्ष था । यहीं दुर्योधनने भीमसेनको विष खिलाकर गङ्गाजलमें डाल दिया था (आदि० ६१ । ११; आदि० १२७ । ५४) । यहाँ प्रथम दिन पाण्डवोंका रात्रि-वास (वन० १ । ४१-४२) ।

प्रमाथ-यमराजद्वारा स्कन्दको दिये गये दो पार्षदोंमेंसे एक, दूसरेका नाम उन्माथ था (शल्य० ४५ । ३०) ।

प्रमाथी-(१) धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ११६ । १३) । इसका भीमसेनके साथ युद्ध तथा उनके द्वारा वध (द्रोण० १५७ । १७-१९) । (२) यह दूषण राक्षसका छोटा भाई था (वन० २८६ । २७) । इसका लक्ष्मणके साथ युद्ध करते समय वानर-सेनापति नीलद्वारा मारा जाना (वन० २८७ । २२—२७) । (३) घटोत्कचका साथी एक राक्षस, जिसका दुर्योधन-द्वारा वध हुआ था (भीष्म० ९१ । २०-२१) ।

प्रमाथिनी-एक अप्सरा, जिसने अर्जुनके जन्मोत्सवमें पधार-कर नृत्य किया था (आदि० १२२ । ६३) ।

प्रमुच-दक्षिण दिशामें रहनेवाले एक महर्षि (शान्ति० २०८ । २९) ।

प्रमोद-(१) ऐरावत-कुलमें उत्पन्न हुआ एक नाग, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें जल मरा था (आदि० ५७ । ११) । (२) स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ६५) ।

प्रम्लोचा-दस प्रमुख अप्सराओंमेंसे एक । यह अर्जुनके जन्म-महोत्सवमें वहाँ गयी थी (आदि० १२२ । ६५) । यह कुबेरकी सभामें रहकर उनकी उपासना करती है (सभा० १० । ११) ।

प्रयाग-गङ्गा और यमुनाके सङ्गमपर स्थित एक विख्यात तीर्थ, वहाँ गङ्गा-यमुनाके सङ्गममें स्नान करनेवाला पुरुष दस अश्वमेध यज्ञोंका फल पाता और अपने कुलका उद्धार कर देता है (वन० ८४ । ३५) । महर्षियोंद्वारा प्रशंसित प्रयाग-तीर्थमें ब्रह्मा आदि देवता, दिशा, दिक्पाल, लोक-पाल, साध्य, लोकसम्मानित पितर, सनत्कुमार आदि महर्षि, अङ्गिरा आदि निर्मल ब्रह्मर्षि, नाग, सुपर्ण, सिद्ध, सूर्य, नदी, समुद्र, गन्धर्व, अप्सरा तथा ब्रह्माजीसहित भगवान् विष्णु निवास करते हैं । वहाँ तीन अग्निकुण्ड हैं, जिनके बीचसे गङ्गा बहती हैं । यहीं यमुना गङ्गाके साथ मिली हैं । गङ्गा-यमुनाका मध्यभाग पृथ्वीका जघन माना गया है । प्रयाग जघनस्थानीय उपस्थ है । प्रतिष्ठानपुर (झूँसी), प्रयाग, कम्बल और अश्वतर नाग तथा भोगवती तीर्थ ब्रह्माजीकी वेदी है । उस तीर्थमें वेद और यज्ञ मूर्तिमान् होकर रहते हैं तथा प्रजापतिकी उपासना करते हैं । तपोधन ऋषि, देवता तथा चक्रवर्ती सम्राट् वहाँ यज्ञोंद्वारा भगवान्का यजन करते हैं । इसीलिये तीनों लोकोंमें प्रयागको सब तीर्थोंकी अपेक्षा श्रेष्ठ एवं पुण्यतम बताया गया है । इस तीर्थमें जाने अथवा इसका नाम लेनेमात्रसे भी मनुष्य मृत्युकालके भय और पापसे मुक्त हो जाता है (वन० ८५ । ६९—८०) । प्रयागके विश्वविख्यात त्रिवेणी-सङ्गममें स्नान करनेसे राजसूय और अश्वमेध यज्ञोंके फलकी प्राप्ति होती है । यह देवताओंद्वारा संस्कार की हुई यज्ञभूमि है । यहाँ दिया हुआ थोड़ा सा भी दान महान् होता है । प्रयागमें ही साठ करोड़ दस हजार तीर्थोंका निवास है । चारों विद्याओंके ज्ञानसे तथा सत्यभाषणसे जो पुण्य होता है, वह सब गङ्गा-यमुनाके सङ्गममें स्नान करनेमात्रसे प्राप्त हो जाता है । यहाँ वासुकिका भोगवती नामक उत्तम तीर्थ है । जो उसमें स्नान करता है, उसे अश्वमेध-यज्ञका फल मिलता है । प्रयागमें ही हंसप्रपतन नामक तीर्थ है और वहीं गङ्गाके तटपर दशाश्वमेधिक तीर्थ है । प्रयागमें गङ्गास्नानका महत्त्व सबसे अधिक है (वन० ८५ । ८१—८८) । गङ्गा-यमुनाका पुण्यमय सङ्गम सम्पूर्ण जगत्में विख्यात है । बड़े-बड़े महर्षि उसका सेवन करते हैं । यहाँ पूर्वकालमें पितामह ब्रह्माजीने यज्ञ किया था । उनके उस प्रकृष्ट यागसे ही इस स्थानका नाम प्रयाग हो गया (वन० ८७ । १८-१९) । पाण्डवोंने देवताओंकी यज्ञभूमि प्रयागमें पहुँचकर यहाँ गङ्गा-यमुनाके सङ्गममें स्नान किया और कुछ दिनोंतक वे वहाँ उत्तम तपस्यामें लगे रहे (वन० ९५ । ४-५) । प्रयाग-राजमें माघमासकी अमावास्याको तीन करोड़ दस हजार तीर्थोंका समागम होता है (अनु० २५ । ३५-३६) ।

प्रयुत-एक देव-गन्धर्व, जो कश्यपद्वारा मुनिके गर्भसे उत्पन्न हुआ था (आदि० ६५ । ४३) ।

प्ररुज-राक्षसों और पिशाचोंका दल (वन० २८५ । १-२) ।

प्रलम्ब-(१) कश्यप और दनुसे उत्पन्न एक प्रसिद्ध दानव (आदि० ६५ । २९) । (२) एक असुर, जिसे श्रीकृष्णके अभिन्नस्वरूप बलरामजीने मारा था (द्रोण० ११ । ५; शल्य० ४७ । १३) ।

प्रवरा-एक प्रमुख नदी, जिसका जल भारतवासी पीते हैं (भीष्म० ९ । २३) ।

प्रवसु–ये महाराज ईलिनके द्वारा रथन्तरीके गर्भसे उत्पन्न हुए थे, इनके चार भाई और थे–दुष्यन्त, शूर, भीम तथा वसु (आदि० ९४ । १७-१८) ।

प्रवह–प्राण, अपान आदि वायुभेदोंमें सातवाँ वायु, जो ऊर्ध्वगामी होता है (शान्ति० ३०१ । २७) । यह धूम और गर्मीसे उत्पन्न हुए बादलोंको इधर-उधर चलाता है और प्रथम मार्गमें प्रवाहित होता है (शान्ति० ३२८ । ३६) ।

प्रवालक–एक यक्ष, जो कुबेरकी सभामें रहकर उनकी उपासना करता है (सभा० १० । १७) ।

प्रवाह–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ६४) ।

प्रवीर–(१) ये पूरुके पुत्र थे । इनकी माताका नाम पौष्टी था । इनके दो भाई और थे—ईश्वर और रौद्राश्व । इनके द्वारा शूरसेनीके गर्भसे मनस्यु नामक पुत्रका जन्म हुआ था (आदि० ९४ । ५-६) । इनका दूसरा नाम जनमेजय था । इन्होंने तीन अश्वमेध यज्ञों और विश्वजित् यज्ञका अनुष्ठान करके वानप्रस्थाश्रम ग्रहण किया था (आदि० ९५ । ११) । (२) एक क्षत्रिय-कुल, जिसमें वृषध्वज नामका कुलाङ्गार राजा उत्पन्न हुआ था (उद्योग० ७४ । १६) ।

प्रवेणी–इस नदीके उत्तर तटपर कण्व मुनिका आश्रम है, जहाँ माठरका विजयस्तम्भ है (वन० ८८ । ११) ।

प्रवेपन–तक्षक-कुलका एक नाग, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें जलकर भस्म हो गया (आदि० ५७ । ९) ।

प्रशमी–अलकापुरीकी एक अप्सरा, जिसने अष्टावक्रके स्वागत-समारोहमें नृत्य किया था (अनु० १९ । ४५) ।

प्रशस्ता–एक समुद्रगामिनी पुण्यमयी नदी, जहाँ तीर्थ-यात्राके समय भाइयोंसहित युधिष्ठिर गये थे और वहाँ उन्होंने स्नान, तर्पण, दान आदि किया था (वन० ११८ । २–३) ।

प्रशान्तात्मा–सूर्यदेवका एक नाम (वन० ३ । २७) ।

प्रसन्धि–ये वैवस्वत मनुके पुत्र थे । इनके पुत्रका नाम क्षुप था (आश्व० ४ । २) ।

प्रसुह्म–एक प्राचीन देश, जिसे भीमसेनने पूर्वदिग्विजयके समय जीता था (सभा० ३० । १६) ।

प्रसृत–एक दैत्य, जिसका गरुडद्वारा वध हुआ था (उद्योग० १०५ । १२) ।

प्रसेन–यह कर्णका पुत्र था । सात्यकिद्वारा इसका वध हुआ था (कर्ण० ८२ । ६) ।

प्रसेनजित्–(१) एक राजा, जो महाभौमकी पत्नी सुयज्ञाके पिता थे । इन्होंने एक लाख सवत्सा गौओंका दान करके उत्तम लोक प्राप्त किया था (आदि० ९५ । २०; शान्ति० २३४ । ३६) । ये यमराजकी सभामें रहकर सूर्यपुत्र यमकी उपासना करते हैं (सभा० ८ । २१) । (२) एक राजा, जो रेणुकाके पिता थे । इनके द्वारा जमदग्निको अपनी पुत्री रेणुकाका दान (वन० ११६ । २) । (किसी-किसीके मतमें सुयज्ञाके पिता और रेणुकाके पिता एक ही हैं) । (३) एक यादव, जो सत्राजित्के भाई थे । ये दोनों भाई जुड़वें पैदा हुए थे और कुबेरोपम सद्गुणोंसे सम्पन्न थे । इनके पास जो स्यमन्तकमणि थी, वह प्रतिदिन प्रचुर सुवर्णराशि झरती रहती थी (सभा० १४ । ६० के बाद दा० पाठ) ।

प्रस्थल–एक अत्यन्त निन्दित देश, जिसका वर्णन कर्णने शल्यके प्रति किया था (कर्ण० ४४ । ४७) ।

प्रस्थला–सुशर्माकी राजधानी (भीष्म० ११३ । ५२) ।

प्रहस्त–रावणके परिवारका एक राक्षस, जिसने विभीषणके साथ युद्ध किया था (वन० २८५ । १४) । विभीषण-द्वारा इसका वध (वन० २८६ । ४) ।

प्रहास–(१) धृतराष्ट्र-वंशमें उत्पन्न एक नाग, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें स्वाहा हो गया (आदि० ५७ । १६) । (२) स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ६८) ।

प्रह्लाद–(१) हिरण्यकशिपुका प्रथम पुत्र । इनकी माताका नाम कयाधु था । इनके तीन पुत्र थे–विरोचन, कुम्भ और निकुम्भ (आदि० ६५ । १७–१९) । ये वरुणसभामें रहकर वरुणकी उपासना करते हैं (सभा० ९ । १२) । ब्रह्माजीकी सभामें भी उनकी सेवाके लिये उपस्थित होते हैं (सभा० ११ । १९) । विदुरका इनका दृष्टान्त प्रस्तुत करना (सभा० ६८ । ६५-६६) । इनके द्वारा बलिके प्रति तेज और क्षमाके अवसरका वर्णन (वन० २८ । ६–३३) । विरोचन और सुधन्वाके संवादमें इनका निर्णय (उद्योग० ६५ । ३५-३६) । ब्राह्मण-वेषमें शिष्यरूपसे प्रार्थना करनेपर इनके द्वारा इन्द्रको शीलका दान (शान्ति० १२४ । २८—६२) । उशनाने इन्हें दो गाथाएँ सुनायीं (शान्ति० १३९ । ७०–७२) । इनका एक अवधूतसे आजगर-वृत्तिकी प्रशंसा सुनना (शान्ति० १७९ अध्याय) । इनका इन्द्रके साथ संवाद (शान्ति० २२२ । ९-३५) । ये पृथ्वीके प्रधान शासकोंमेंसे एक हैं (शान्ति० २२७ । ५०) । स्कन्दकी गाड़ी हुई शक्तिके उखाड़नेमें इनका असफल होना (शान्ति० ३२७ । १८-१९) ।

महाभारतमें आये हुए प्रह्लादके नाम–असुराधिप,

असुरेन्द्र, दैतेय, दैत्य, दैत्यपति, दैत्येन्द्र, दानव आदि। (२) बाह्लीकवंशीय एक क्षत्रिय राजा, जो शलभ नामक दैत्यके अंशसे उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७। ३०-३१)। (३) एक नाग, जो वरुणसभामें उपस्थित हो वरुणकी उपासना करता है (सभा० ९। १०)। (४) एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९। ४६)।

प्राकृत–एक यज्ञ, जो बारह दिनोंमें सम्पन्न होता है (वन० १३४। १९)।

प्राक्कोसल–पूर्वकोसल देश, जो दक्षिण भारतमें पड़ता है। इसे सहदेवने जीता था (सभा० ३१। १३)।

प्राग्ज्योतिषपुर–एक प्राचीन नगर, जो भौमासुर (नरकासुर)की राजधानी था (सभा० ३८। २९ के बाद दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ८०७)। भौमासुरके बाद यहाँके प्रधान राजा भगदत्त हुए थे (सभा० २६। ७-८)। यह असुरोंका एक अजेय दुर्ग था। पूर्वकालमें यहीं नरकासुर निवास करता था (उद्योग० ४८। ८०)। भगदत्तके बाद यहाँके राजा वज्रदत्त हुए (आश्व० ७५। १)।

प्राङ्नदी–यहाँ जानेसे द्विज कृतार्थ हो इन्द्रलोकमें जाता है (वन० ८४। १५९)।

प्राचिन्वान्–महाराज पूरुके पौत्र एवं जनमेजयके पुत्र। इनकी माताका नाम अनन्ता था। इन्होंने उदयाचलसे लेकर सारी प्राची दिशाको एक ही दिनमें जीत लिया था, इसीलिये इनका नाम प्राचिन्वान् हुआ। इनके द्वारा अश्मकीके गर्भसे संयातिका जन्म हुआ (आदि० ९५। १२-१३)।

प्राचीनबर्हि–अत्रि-कुलमें उत्पन्न एक ऐश्वर्यशाली नरेश, जो दस प्रचेताओंके पिता थे (शान्ति० २०८। ६)। ये मनुवंशी हविर्धामाके पुत्र थे। इनसे दस प्रचेता हुए (अनु० १४७। २४-२५)।

प्राचेतस–दक्षप्रजापति, दस प्रचेताओंद्वारा वार्क्षी या मारिषाके गर्भसे उत्पन्न (आदि० ७५। ५)। (देखिये दक्ष)।

प्राच्य–एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९। ५८)।

प्राजापत्य–एक प्रकारका विवाह। वर और कन्या दोनों साथ रहकर धर्माचरण करें, इस बुद्धिसे कन्यादान करना प्राजापत्य विवाह माना गया है (आदि० ७३। ८)।

प्राण–सोम नामक वसुके द्वारा मनोहराके गर्भसे उत्पन्न। ये वर्चाके छोटे भाई थे। इनके दो भाई और थे— शिशिर एवं रमण (आदि० ६६। २१)।

प्राणक–प्राण नामक अग्निके पुत्र (वन० २२०। १)।

प्रातर–कौरव्य-कुलमें उत्पन्न एक नाग, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें दग्ध हो गया (आदि० ५७। १३)।

प्रातिकामी–दुर्योधनका सारथि (सभा० ६७। २-३)। इसका द्रौपदीको कौरव-सभामें बुलानेके लिये जाना (सभा० ६७। ४)। द्रौपदीके साथ इसका संवाद और उनकी कही हुई बातको सभामें आकर कहना (सभा० ६७। ४-१७)। इसके मारे जानेकी चर्चा (शल्य० ३३। ४९)।

प्राधा–दक्ष प्रजापतिकी पुत्री, एवं कश्यपकी पत्नी। अनवद्या आदि आठ कन्याएँ और दस देवगन्धर्व भी इन्हींकी संतानें हैं। ये हाहा, हूहू, तुम्बुरु और असिबाहु नामक चार श्रेष्ठ गन्धर्वों तथा अलम्बुषा आदि तेरह कन्याओं-अप्सराओंकी जननी हैं (आदि० ६५। १२, ४५-५१)।

प्राप्ति–(१) धर्मपुत्र शमकी भार्या (आदि० ६६। ३३)। (२) जरासंधकी पुत्री। कंसकी पत्नी और सहदेवकी छोटी बहिन। इसकी दूसरी बहिनका नाम अस्ति था, वह भी कंसकी ही पत्नी थी (सभा० १४। ३०-३१)।

प्रावरक (प्रावार)–क्रौञ्चद्वीपका एक देश (भीष्म० १२। २२)।

प्रावारकर्ण–हिमालयनिवासी चिरंजीवी एक उलूक (वन० १९९। ४)।

प्रावृषेय–एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९। ५०)।

प्रियक–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५। ६५)।

प्रियदर्शन–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५। ५९)।

प्रियभृत्य–एक प्राचीन राजा (आदि० १। २३६)।

प्रियमाल्यानुलेपन–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५। ६०)।

प्रेक्षागृह–उत्सव या नाटक आदिको सुविधापूर्वक देखनेके लिये बनाया गया भवन। राजकुमारोंके अस्त्रकौशलके प्रदर्शनके समय इसे द्रोणाचार्यने शिल्पियोंद्वारा बनवाया था (आदि० १३३। ११)। इस दिव्यभवनमें गान्धारी, कुन्ती आदि राजरानियोंका अस्त्रकौशल देखनेके लिये आगमन (आदि० १३३। १५)। वहाँ राजकुमारोंका अस्त्र-कौशल-प्रदर्शन (आदि० अध्याय १३३ से १३५ तक)।

प्रोषक–एक पश्चिम भारतीय जनपद (भीष्म० ९। ६९)।

प्रोष्ठ–एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९। ६१)।

प्लक्षजाता–प्लक्ष (पाकर) की जड़से प्रकट हुई सरस्वती। गङ्गाकी सात धाराओंमेंसे एक। इनका जल पीनेसे मनुष्यके पाप तत्काल नष्ट हो जाते हैं (आदि० १६९। २०-२१)।

प्लक्षप्रस्रवणतीर्थ-एक तीर्थ, यहींसे सरस्वती नदी प्रकट हुई है (शल्य० ५४ । ११)।

प्लक्षवती-एक नदी, जो सायं-प्रातः कीर्तन करने योग्य है (अनु० १६५ । २५)।

प्लक्षावतरण-यमुनाके उद्गमसे सम्बन्ध रखनेवाला एक पुण्यतीर्थ, जो स्वर्गका द्वार है (वन० ९० । ४; वन० १२९ । १३)।

(फ)

फलकक्ष-एक यक्ष, जो कुबेरकी सभामें रहकर उनकी सेवा करता है (सभा० १० । १६)।

फलकीवन-एक तीर्थ, जहाँ देवतालोग सदा निवास करते हैं और अनेक सहस्र वर्षोंतक भारी तपस्यामें लगे रहते हैं (वन० ८३ । ८६-८७)।

फलोदक-एक यक्ष, जो कुबेरकी सभामें रहकर उनकी सेवा करता है (सभा० १० । १६)।

फल्गु-एक नदी और तीर्थ, यहाँ जानेसे अश्वमेधयज्ञका फल मिलता है और बहुत बड़ी सिद्धि प्राप्त होती है । यहाँ पितरोंके लिये दिया हुआ अन्न अक्षय होता है (वन० ८४ । ९८; वन० ८७ । १२)।

फाल्गुन-(१) अर्जुनका एक नाम । हिमालयके शिखर-पर उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमें अर्जुनका जन्म हुआ था; इस-लिये इनका एक नाम फाल्गुन भी है (विराट० ४४ । ९, १६)। (२) बारह मासोंमें एक मास । (जिस मासकी पूर्णिमाको पूर्वाफाल्गुनी अथवा उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रका योग हो, उसे फाल्गुन मास कहते हैं, जो माघ मासके बाद और चैत्र मासके पूर्व आता है ।) जो फाल्गुन मासको एक समय भोजन करके व्यतीत करता है, वह अपनी स्त्रीको प्रिय होता है और वह उसके अधीन रहती है (अनु० १०६ । २२)। इस मासकी द्वादशी तिथिको उपवासपूर्वक गोविन्दनामसे भगवान्‌की पूजा करनेवाला पुरुष अतिरात्र यज्ञका फल पाता है और मृत्युके पश्चात् सोमलोकमें जाता है (अनु० १०९ । ६)।

(ब)

बदरिका (या बदरी)-सुप्रसिद्ध बदरिकाश्रमतीर्थ, जहाँ पूर्वकालमें नर-नारायणने अनेक बार दस-दस हजार वर्षोंतक तपस्या की थी (वन० ४० । १) । इस तीर्थमें स्नान करके मनुष्य दीर्घायु पाता और स्वर्गलोकमें जाता है (वन० ८५ । १३)। पाण्डवोंने यहाँकी यात्रा की थी। यहाँ नर-नारायणका आश्रम और 'अलकनन्दा' नामक भागीरथीकी धारा है । यहाँकी प्राकृतिक सुषमाका वर्णन (वन० १४५ अध्याय)।

बदरीपाचन (या बदरपाचन) तीर्थ-कुरुक्षेत्रके अन्तर्गत एक तीर्थ, यहाँ तीन रात उपवास करके बेरका फल खाकर बारह वर्षोंतक रहनेपर मनुष्य वसिष्ठके समान हो जाता है (वन० ८३ । १७९-१८१)।

बदरीवन-एक पुण्यतीर्थ, जिसके निकट विशालापुरी है। यह सब मिलकर बदरिकाश्रम तीर्थ है (वन० ९० । २५)। इसका विस्तारपूर्वक वर्णन (वन० १४५ । १३-२४)।

बधिर-कश्यपवंशी एक नाग (उद्योग० ७४ । १६)।

बन्धुदायाद-कुटुम्बी होनेसे उत्तराधिकारी पुत्र (आदि० ११९ । ३२-३३)। छः प्रकारके पुत्र बन्धुदायाद कह-लाते हैं; जिनके नाम इस प्रकार है-१. 'स्वयंजात' (जो अपनी विवाहिता पत्नीके गर्भसे अपने ही द्वारा उत्पन्न हो)। २. 'प्रणीत' (जो अपनी पत्नीके गर्भसे किसी उत्तम पुरुषके अनुग्रहसे उत्पन्न हो)। ३. 'पुत्रिकापुत्र' (जो अपनी पुत्रीका पुत्र हो)। ४. 'पौनर्भव' (जो दूसरी बार ब्याही हुई स्त्रीसे उत्पन्न हुआ हो)। ५. 'कानीन' (विवाहसे पहले ही जिस कन्याको इस शर्तके साथ दिया जाता है कि इसके गर्भसे उत्पन्न होनेवाला पुत्र मेरा ही पुत्र समझा जायगा, उस कन्यासे उत्पन्न)। ६. भानजा (बहिनका पुत्र)।

बभ्रु-(१) एक वृष्णिवंशी यादव, जो रैवतक पर्वतके महोत्सवमें सम्मिलित थे (आदि० २१८ । १०)। यदु-वंशियोंके सात प्रधान महारथियोंमें एक ये भी थे। (सभा० १४ । ६० के बाद दाक्षिणात्य पाठ)। द्वारका जाते समय इन तपस्वी बभ्रुकी पत्नीको शिशुपालने हर लिया था (सभा० ४५ । १०)। इन्होंने भी श्रीकृष्णके पास ही बने हुए पेय पदार्थको पीया था (मौसल० ३ । १६-१७)। व्याधके बाणसे लगे हुए एक मूसलद्वारा इनकी मृत्यु हुई थी (मौसल० ४ । ५-६)। शान्तिपर्वके ८१ । १७ में अक्रूरके लिये भी बभ्रु शब्दका प्रयोग आया है। (२) श्रीकृष्णके कृपापात्र काशीके नरेश । ये श्रीकृष्णकी कृपासे राज्यलक्ष्मीको प्राप्त हुए थे (उद्योग० २८ । १३)। (३) ये मत्स्यनरेश विराटके एक वीर पुत्र थे (उद्योग० ५७ । ३३)। (४) महर्षि विश्वामित्रके ब्रह्मवादी पुत्रोंमेंसे एक (अनु० ४ । ५०)।

बभ्रुमाली-एक ऋषि, जो युधिष्ठिरकी सभामें विराजमान होते हैं (सभा० ४ । १६)।

बभ्रुवाहन-राजा चित्रवाहनकी पुत्री चित्राङ्गदाके गर्भसे अर्जुनद्वारा उत्पन्न एक वीर राजा (आदि० २१६ । २४)। चित्रवाहनने अर्जुनको अपनी कन्या देनेसे पहले ही यह शर्त रख दी थी कि 'इसके गर्भसे जो एक पुत्र हो,

वह यहीं रहकर इस कुलपरम्पराका प्रवर्तक हो। इस कन्याके विवाहका यही शुल्क आपको देना होगा।' 'तथास्तु' कहकर अर्जुनने वैसा ही करनेकी प्रतिज्ञा की। पुत्रका जन्म हो जानेपर उसका नाम 'बभ्रुवाहन' रखा गया। उसे देखकर अर्जुनने राजा चित्रवाहनसे कहा—'महाराज! इस बभ्रुवाहनको आप चित्राङ्गदाके शुल्करूपमें ग्रहण कीजिये। इससे मैं आपके ऋणसे मुक्त हो जाऊँगा।' इसके अनुसार ये धर्मतः चित्रवाहनके पुत्र माने गये (आदि० २१४। २४-२६; आदि० २१६। २४-२५)। अपने पिता अर्जुनको मणिपूरके समीप आया जान इनका बहुत-सा धन साथमें लेकर उनके दर्शनके लिये नगरके बाहर निकलना (आश्व० ७९। १)। क्षत्रियधर्मके अनुसार युद्ध न करनेके कारण अर्जुनका इन्हें धिक्कारना (आश्व० ७९। ३-७)। उलूपीके प्रोत्साहन देनेपर इनका अर्जुनके साथ युद्ध करनेके लिये उद्यत होना और अश्वमेधसम्बन्धी अश्वको पकड़वा लेना (आश्व० ७९। ८—१७)। पिता और पुत्रमें परस्पर अद्भुत युद्ध और बभ्रुवाहनका अर्जुनको मूर्छित करके स्वयं भी मूर्छित होना (आश्व० ७९। १८—३७)। मूर्छासे जगनेपर बभ्रुवाहनका विलाप और आमरण अनशनके लिये प्रतिज्ञा करके बैठना (आश्व० ८०। २१—४०)। उलूपीका बभ्रुवाहनको सान्त्वना देकर उनके हाथमें दिव्यमणि प्रदान करना और उसे पिताके वक्षःस्थलपर रखनेके लिये आदेश देना (आश्व० ८०। ४२—५०)। मणिके स्पर्शसे जीवित हुए पिताको बभ्रुवाहनका प्रणाम करना और पिताका पुत्रको गलेसे लगाना (आश्व० ८०। ५१-५६)। अर्जुनका बभ्रुवाहनसे युद्धस्थलमें उलूपी और चित्राङ्गदाके उपस्थित होनेका कारण पूछना और बभ्रुवाहनका उलूपीसे ही पूछनेकी प्रार्थना करना (आश्व० ८०। ५७-६१)। उलूपीसे सब समाचार सुनकर प्रसन्न हुए अर्जुनका बभ्रुवाहनको अपनी दोनों माताओंके साथ युधिष्ठिरके अश्वमेध यज्ञमें आनेके लिये निमन्त्रण देना (आश्व० ८१। १—२४)। पिताकी आज्ञा शिरोधार्य करके बभ्रुवाहनका पितासे नगरमें चलनेके लिये अनुरोध करना और अर्जुनका 'कहीं भी ठहरनेका नियम नहीं है' ऐसा कहकर पुत्रसे सत्कारपूर्वक विदा ले वहाँसे प्रस्थान करना (आश्व० ८१। २६-३२)। अर्जुनका संदेश सुनाते हुए श्रीकृष्णका युधिष्ठिरसे राजा बभ्रुवाहनके भावी आगमनकी चर्चा करना (आश्व० ८६। १८-२०)। माताओंसहित बभ्रुवाहनका कुरुदेशमें आगमन और गुरुजनोंको प्रणाम करके उनका कुन्तीके भवनमें प्रवेश (आश्व० ८७। २६-२८)। माताओंसहित बभ्रुवाहनका कुन्ती, द्रौपदी और सुभद्रा आदिके चरणोंमें प्रणाम करना और उन सबके द्वारा रत्न-आभूषण आदिसे सम्मानित होना (आश्व० ८८। १-५)। अन्तःपुरसे आकर बभ्रुवाहनका राजा धृतराष्ट्र, युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव और भगवान् श्रीकृष्णको प्रणाम करना और उन सबके द्वारा धन आदिसे सत्कृत होना। श्रीकृष्णका बभ्रुवाहनको दिव्य अश्वोंसे जुता हुआ सुवर्णमय रथ प्रदान करना (आश्व० ८८। ६-११)। राजा युधिष्ठिरका बभ्रुवाहनको बहुत धन देकर विदा करना (आश्व० ८९। ३४)।

महाभारतमें आये हुए बभ्रुवाहनके नाम-बभ्रुवाह, चित्राङ्गदासुत, चित्राङ्गदात्मज, धनंजयसुत, मणिपूरपति, मणिपूरेश्वर आदि।

बर्बर-एक प्राचीन देश तथा वहाँके निवासी। इनकी गणना उन म्लेच्छ जातियोंमें है, जिनकी उत्पत्ति नन्दिनीके पार्श्वभागसे हुई है (आदि० १७४। ३७)। ये भीमसेनद्वारा पूर्व दिग्विजयके समय जीते गये थे (सभा० ३०। १४)। नकुलने भी पश्चिमदिग्विजयके समय इन्हें जीतकर भेंट वसूल किया था (सभा० ३२। १७)। ये युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें भेंट लेकर आये थे (सभा० ५१। २३)।

बर्हि-एक देवगन्धर्व। कश्यपके द्वारा प्राधाके गर्भसे उत्पन्न दस देवगन्धर्वोंमेंसे एक (आदि० ६५। ४६)।

बर्हिषद्-(१) पितरोंका एक दल, जो यमकी सभामें विराजमान होते हैं (सभा० ८। ३०)। ये मृत व्यक्तिके लिये मन्त्रपाठकी अनुमति प्रदान करते हैं (शान्ति० २६९। १५)। (२) त्रिलोकीको उत्पन्न करनेमें समर्थ पूर्व दिशानिवासी सप्तर्षियोंमें एक ये भी हैं (शान्ति० २०८। २७-२८)। ब्रह्माजीने इन्हें सात्वतधर्मका उपदेश दिया था और इन्होंने ज्येष्ठ नामसे प्रसिद्ध एक ब्राह्मणको इस धर्मका उपदेश दिया (शान्ति० ३४८। ४५-४६)।

बल-(१) कश्यपके द्वारा दनायुके गर्भसे उत्पन्न एक असुर। इसके तीन भाई और थे, जिनके नाम हैं—विक्षर, वीर और वृत्र (आदि० ६५। ३३)। यही पाण्ड्यदेशके राजाके रूपमें उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७। ४२)। इन्द्रद्वारा इसके पराजित होनेकी चर्चा (वन० १६८। ८१)। (२) वरुणके वीर्यसे उनकी ज्येष्ठ पत्नी देवीके गर्भसे उत्पन्न (आदि० ६६। ५२)। (३) इक्ष्वाकुवंशी राजा परीक्षित्द्वारा मण्डूकराजकी कन्या सुशोभनाके गर्भसे उत्पन्न। इनके दो भाई और थे—शल और दल (वन० १९२। ३८)। (४) एक वानर, जो कुम्भकर्णके साथ युद्धमें उसका ग्रास बन गया था (वन० २८७। ६)। (५) वायुद्वारा स्कन्दको दिये गये दो पार्षदोंमेंसे एक। दूसरे-

का नाम अतिबल था (शल्य० ४५ । ४४) । (६) एक प्राचीन ऋषि, जो अङ्गिराके पुत्र हैं और पूर्वदिशामें निवास करते हैं (शान्ति० २०८ । २७-२८) । (७) एक सनातन विश्वेदेव (अनु० ९१ । ३०) ।

बलद—ये भानु नामक अग्निके प्रथम पुत्र हैं और प्राणियोंको प्राण एवं बल प्रदान करते हैं (शान्ति० २२१ । १०) ।

बलदेव (बलराम)—(१) वसुदेव तथा रोहिणीके पुत्र । भगवान् श्रीकृष्णके अग्रज और शेषके अवतार (आदि० ६७ । १५२) । भगवान् नारायणके श्वेत केशसे इनका आविर्भाव हुआ (आदि० १९६ । ३३) । इनके द्वारा भीमको गदायुद्धकी शिक्षा (आदि० १३८ । ४) । द्रौपदीके स्वयंवरमें श्रीकृष्णसहित इनका आगमन (आदि० १८५ । १७) । द्रौपदीस्वयंवरमें इनका भीम और अर्जुनके विषयमें श्रीकृष्णसे वार्तालाप (आदि० १८८ । २४) । पाण्डवोंसे मिलनेके लिये श्रीकृष्णसहित कुम्भकारके घर जाना (आदि० १९० । १-८) । सुभद्राहरणके समय अर्जुनपर इनका कोप (आदि० २१९ । २५—३१) । श्रीकृष्णका इनको शान्त करना (आदि० २२० । १-११) । ये देवकीके गर्भमें थे, परंतु राजा यमने याम्य मायाद्वारा इन्हें रोहिणीके गर्भमें डाल दिया । इस सङ्कर्षणकर्मके कारण इनका 'सङ्कर्षण' और बलकी अधिकता होनेसे 'बलदेव' नाम भी हुआ (सभा० २२ । ३६ के बाद दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ७३१) । इनके द्वारा धेनुकासुरका वध (सभा० ३८ । २९ के बाद दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ८००) । मुष्टिकका वध (सभा० ३८ । २९ के बाद दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ८०१) । सान्दीपनिमुनिके आश्रममें इनका अध्ययन (सभा० ३८ । २९ के बाद दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ८०२) । प्रभासक्षेत्रमें इनके पाण्डवोंके प्रति सहानुभूतिसूचक दुःखपूर्ण उद्गार (वन० ११९ । ५—२२) । उपप्लव्य नगरमें अभिमन्युके विवाहमें जाना (विराट० ७२ । २१) । कौरव-पाण्डवोंमें संधिकी कामना रखते हुए इनके द्वारा दूत भेजनेके प्रस्तावका समर्थन (उद्योग० २ अध्याय) । दुर्योधनके सहायता माँगनेपर इनका उसकी तथा अर्जुनकी भी सहायता करनेसे इनकार करना (उद्योग० ७ । २९) । कुरुक्षेत्रके मैदानमें पाण्डवोंके शिविरमें आना (उद्योग० १५७ । १७) । इनका तीर्थयात्राके लिये प्रस्थान करना (उद्योग० १५७ । ३५) । दुर्योधन और भीमसेनके गदायुद्धके प्रारम्भमें इनका आगमन और वहाँ उपस्थित नरेशोंद्वारा सत्कार (शल्य० ३४ अध्याय) । इनकी तीर्थयात्राका वर्णन (शल्य० अध्याय ३५ से ५४ तक) । इनका नारदजीसे कौरवोंके विनाशके विषयमें पूछना (शल्य० ५४ । २४-२५) । भीमसेन और दुर्योधनके गदायुद्धके लिये सबको समन्तपञ्चकमें ले (जाना शल्य० ५५ । ६—१०) । अन्यायसे दुर्योधनके मारे जानेपर इनका कुपित होकर भीमसेनको मारनेके लिये उद्यत होना (शल्य० ६० । ४—१०) । भीमसेनके इस कर्मकी निन्दा करके द्वारकाको प्रस्थान करना (शल्य० ६० । २७—३०) । इनके द्वारा धर्मके रहस्यका वर्णन (शल्य० १२६ । १७—१९) । शिवजीद्वारा इनके रूपमें भगवान् अनन्तके भावी अवतार तथा महिमाका कथन (अनु० १४७ । ५४—६०) । इनके द्वारा अभिमन्युका श्राद्ध (आश्व० ६२ । ६) । युधिष्ठिरके अश्वमेधयज्ञमें इनका हस्तिनापुर आना (आश्व० ६६ । ४) । इनके आदेशसे द्वारकापुरीमें मद्यपान निषेधकी आज्ञा जारी होना (मौसल० १ । २९) । समाधि लगाकर बैठे हुए बलरामजीके मुखसे निकलते हुए विशालकाय श्वेत सर्पका श्रीकृष्णद्वारा दर्शन तथा इनके स्वागतके लिये अनेकानेक नागों और सरिताओंका आगमन (मौसल० ४ । १३—१७) । (२) एक महाबली नाग (अनु० १३२ । ८) ।

बलन्धरा—ये काशिराजकी कन्या थीं । इनके विवाहका शुल्क बल ही रक्खा गया था अर्थात् यह शर्त थी कि जो अधिक बलवान् हो, वही इनके साथ विवाह कर सकता है । पाण्डुपुत्र भीमसेनने इनके साथ विवाह करके सर्वग नामक पुत्र उत्पन्न किया (आश्व० ९५ । ७७) ।

बलबन्धु—एक प्राचीन नरेश (आदि० १ । २३७) ।

बलाक—एक व्याध । इसने एक हिंसक जन्तुको, जिसने समस्त प्राणियोंका अन्त कर देनेके लिये वर प्राप्त किया था और इसी कारण ब्रह्माने उसे अंधा कर दिया था, मार डाला । उस समय इस व्याधके ऊपर पुष्पोंकी वृष्टि हुई और यह विमानपर बैठकर स्वर्गलोकको चला गया (कर्ण० ६९ । ३९—४५) ।

बलाका तीर्थ—गन्धमादनपर्वतके निकटका एक तीर्थ । यहाँ तर्पण करनेवाला पुरुष देवताओंमें कीर्ति पाता है और अपने यशसे प्रकाशित होता है (अनु० २५ । १९) ।

बलाकाश्व—ये जह्नुके पौत्र तथा अज (सिन्धुद्वीप) के पुत्र थे । इनके पुत्रका नाम कुशिक था (शान्ति० ४९ । ३; अनु० ४ । ४) ।

बलाकी-धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६७ । ९८; आदि० ११६ । ७)। यह द्रौपदीके स्वयंवरमें गया था (आदि० १८५ । २)।

बलाक्ष-एक प्राचीन नरेश, जो विराटके गोग्रहणके समय अर्जुन और कृपाचार्यका युद्ध देखनेके लिये इन्द्रके विमानपर बैठकर आये थे (विराट० ५६ । ९-१०)।

बलानीक-(१) यह द्रुपदका पुत्र था। अश्वत्थामाद्वारा इसका वध हुआ था (द्रोण० १५६ । १८१)। (२) ये मत्स्यनरेश विराटके भाई थे और पाण्डवपक्षकी ओरसे लड़ने आये थे (द्रोण० १५८ । ४२)।

बलाहक-(१) एक नाग, जो वरुणसभामें रहकर उनकी उपासना करता है (सभा० ९ । ९)। (२) सिन्धुराज जयद्रथका एक भाई, जो द्रौपदीहरणके समय जयद्रथके साथ आया था (वन० २६५ । १२)। (३) भगवान् श्रीकृष्णके रथका एक अश्व, जो दाहिने पार्श्वमें जोता जाता था (विराट० ४५ । २३; द्रोण० १४७ । ४७)।

बलि-(१) ये प्रह्लादजीके पौत्र एवं विरोचनके पुत्र थे। इनके पुत्रका नाम बाण था (आदि० ६५ । २०)। इन्द्रलोकपर इनका आक्रमण और विजय प्राप्त करना (सभा० ३८ । २९ के बाद दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ७८९)। इनके द्वारा वामन भगवान्‌को तीन पग भूमि देनेका संकल्प, भगवान् वामनद्वारा इनका बन्धन। इनको पाताललोकमें रहनेके लिये भगवान्‌की आज्ञा (सभा० ३८ । २९ के बाद दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ७९०)। ये वरुणकी सभामें विराजते हैं (सभा० ९ । १२)। इनका प्रह्लादसे क्षमा और तेजविषयक प्रश्न करना (वन० २८ । ३-४)। बलि और वामनसम्बन्धी कथाका संक्षिप्त वर्णन (वन० २७२ । ६३-६९)। विरोचनकुमार बलि बाल्यकालसे ही ब्राह्मणोंपर दोषारोपण करते थे, जिससे राज्यलक्ष्मीने उनका त्याग कर दिया (शान्ति० ९० । २४)। इन्द्रके आक्षेपयुक्त वचनोंका कठोर उत्तर देना (शान्ति० २२३ अध्याय)। कालकी प्रबलता बताते हुए इन्द्रको इनकी फटकार (शान्ति० २२४ अध्याय)। लक्ष्मीसे परित्यक्त होनेपर इन्द्रको चेतावनी देना (शान्ति० २२५ । ३०-३२)। शोक न करनेके विषयमें इन्द्रद्वारा किये गये प्रश्नोंका उत्तर देना (शान्ति० २२७ । २१—८८)। विरोचनकुमार बलिको देवताओंने धर्मपाशमें बाँधकर भगवान् विष्णुके पुरुषार्थसे पातालवासी बना दिया (अनु० ६ । ३५)। जो दोषदृष्टि रखते हुए तथा श्रद्धारहित होकर दान दिया जाता है, उस सारे दानको ब्रह्माजीने असुरराज बलिका भाग निश्चित किया है (अनु० ९० । २०)। पुष्प, धूप और दीपदानके विषयमें शुक्राचार्यसे इनका प्रश्न करना (अनु० ९८ । १५)। (२) एक ऋषि, जो युधिष्ठिरकी सभामें विराजते हैं (सभा० ४ । १०)। हस्तिनापुर जाते समय मार्गमें इनकी श्रीकृष्णसे भेंट (उद्योग० ८३ । ६४ के बाद दाक्षिणात्य पाठ)।

बलिवाक-एक ऋषि, जो युधिष्ठिरकी सभामें विराजते हैं (सभा० ४ । १४)।

बलीह-एक क्षत्रियकुल, जिसमें अर्कज नामक कुलाङ्गार राजा उत्पन्न हुआ था (उद्योग० ७४ । १४)।

बलोत्कटा-स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । २३)।

बल्लव-(१) अज्ञातवासके समय पाण्डुपुत्र भीमसेनका सांकेतिक नाम (विराट० २ । १; विराट० ८-७)। (२) एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ६२)।

बहिर्गिरि-एक पर्वतीय प्रदेश, जिसे उत्तर-दिग्विजयके समय अर्जुनने जीता था (सभा० २७ । ३)। इसकी गणना भारतीय जनपदोंमें है (भीष्म० ९ । ५०)।

बहुदामा-स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । १०)।

बहुपुत्रिका-स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । ३)।

बहुमूलक-कश्यपद्वारा कद्रूके गर्भसे उत्पन्न एक नाग (आदि० ३५ । १६)।

बहुयोजना-स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । ९)।

बहुरूप-ग्यारह रुद्रोंमेंसे एक (शान्ति० २०८ । १९)।

बहुल-तालजङ्घ-वंशका एक कुलाङ्गार राजा (उद्योग० ७४ । १३)।

बहुला-(१) एक नदी, जिसका जल भारतवासी पीते हैं (भीष्म० ९ । २७)। (२) स्कन्दकी अनुचरी मातृका (शल्य० ४६ । ३)।

बहुवाद्य-एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ५५)।

बह्वाशी-धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६७ । १०२; आदि० ११६ । ११)। यह भीमसेनद्वारा मारा गया था (भीष्म० २८ । २९)।

बाण-(१) यह असुरराज बलिका विख्यात पुत्र है तथा इसे लोग भगवान् शिवके पार्षद महाकालके नामसे जानते हैं (आदि० ६५ । २०-२१)। इसकी राजधानीका नाम शोणितपुर था। इसने शिवजीकी तीव्र आराधना करके उनसे वरदान प्राप्त किया, जिससे यह देवताओंको सदा

आतङ्कित किये रहता था। इसकी उन्नतिके लिये शुक्राचार्य बराबर प्रयास करते रहते थे (सभा० ३८। २९ के बाद दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ८२१)। इसने अनिरुद्धको कैद कर लिया था। नारदजीद्वारा अनिरुद्धके कैद होनेका समाचार पाकर बलराम तथा प्रद्युम्नसहित श्रीकृष्णने शोणितपुरपर आक्रमण किया। वहाँ शिव, कार्तिकेय, अग्नि आदि देवता इसकी राजधानीकी रक्षा कर रहे थे (सभा० ३८। २० के बाद दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ८२२)। तब बाणासुरके लिये भगवान् महेश्वरने श्रीकृष्णके साथ युद्ध किया। तदनन्तर शिवजीको परास्त करके श्रीकृष्ण बाणासुरके समीप पहुँचे और उसके साथ युद्ध आरम्भ किया। भगवान् श्रीकृष्णके साथ युद्धमें चक्रद्वारा इसकी भुजाएँ काट डाली गयीं और यह धरतीपर गिर पड़ा (सभा० ३८। २९ के बाद दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ८२३)। बाणासुर क्रौञ्चपर्वतका आश्रय लेकर देवसमूहोंको कष्ट पहुँचाया करता था। यह देखकर महासेन (स्कन्द) ने इसपर आक्रमण किया और यह भागकर क्रौञ्चपर्वतमें जाकर छिप गया। इसीके कारण स्कन्दने क्रौञ्चपर्वतको विदीर्ण किया था (शल्य० ४६। ८२-८४)। (२) स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५। ६७)।

बादुलि-विश्वामित्रके ब्रह्मवादी पुत्रोंमेंसे एक (अनु० ४। ५३)।

बाभ्रव्य-एक गोत्रका नाम, गालवमुनि इसी गोत्रमें उत्पन्न हुए थे (शान्ति० ३४२। १०३)।

बार्हस्पत्य-बृहस्पतिद्वारा संक्षिप्त किया हुआ ब्रह्माजीका नीतिशास्त्र, जो बार्हस्पत्य कहलाता है और इसमें तीन हजार अध्याय हैं (शान्ति० ५९। ८४)।

बालग्रह-बालकोंका नाश करनेवाला एक ग्रह (शान्ति० १५३। ३)।

बालधि-एक प्राचीन शक्तिशाली ऋषि, पुत्रप्राप्तिके लिये इन्होंने घोर तपस्या की, जिससे प्रसन्न होकर देवताओंने इन्हें पुत्रोत्पत्तिके लिये वरदान दिया (वन० १३५। ४५-४७)। वरदानके फलस्वरूप इन्हें मेधावी नामक पुत्रकी प्राप्ति हुई (वन० १३५। ४९)। मेधावीने महर्षि धनुषाक्षका अपमान किया, जिससे उन्होंने इसका विनाश कर दिया (वन० १३५। ५०-५३)। पुत्रके मरनेपर बालधि मुनिका विलाप (वन० १३५। ५३-५४)।

बालस्वामी-स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५। ७४)।

बाष्कल-यह दितिपुत्र हिरण्यकशिपुका पुत्र था। इसके चार भाई और थे—प्रह्लाद, संह्लाद, अनुह्लाद और शिबि (आदि० ६५। १७-१८)। यही भगदत्तके रूपमें पृथ्वीपर उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७। ९)।

बाहु-(१) एक शक्तिशाली राजा, जिसे पाण्डवोंकी ओरसे रणनिमन्त्रण भेजनेका विचार किया गया था (उद्योग० ४। २२)। (२) सुन्दरवंशमें उत्पन्न एक कुलनाशक राजा (उद्योग० ७४। १५)। (३) एक प्राचीन नरेश, जो महाराज सगरके पिता थे (शान्ति० ५७। ८)। ये प्राचीनकालमें पृथ्वीके शासक थे; परंतु कालसे पीडित हो इसे छोड़कर परलोकवासी हो गये (शान्ति० २२७। ५१)।

बाहुक-(१) कौरव्यकुलमें उत्पन्न एक नाग, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें दग्ध हो गया था (आदि० ५७। १३)। (२) राजा नलका एक नाम, जब कि सूत-अवस्थामें वे अयोध्यानरेश ऋतुपर्णके यहाँ थे (वन० ६६। २०)। (विशेष देखिये—नल)। (३) एक वृष्णिवंशी वीर, जिसका पराक्रम प्रकट करनेके लिये श्रीकृष्ण तथा पाण्डवोंके सामने सात्यकिने चर्चा की है (वन० १२०। १९)।

बाहुदन्तक-पुरन्दरद्वारा संक्षिप्त किया हुआ ब्रह्माका नीतिशास्त्र, जो दस सहस्र अध्यायोंसे घटकर पाँच हजार अध्यायोंका हो गया (शान्ति० ५९। ८३)।

बाहुदा-इस तीर्थमें ब्रह्मचर्य-पालनपूर्वक एक रात उपवास करनेसे मनुष्य स्वर्गलोकमें प्रतिष्ठित होता है और देवसत्रका फल पाता है (वन० ८४। ६७-६८; वन० ८७। २७; वन० ९५। ४)। (कुछ आधुनिक विचारक अवधप्रान्तकी धवला या धुमेला नामक नदीको, जो राप्तीकी सहायक है, 'बाहुदा' कहते हैं।) यह उन नदियोंमेंसे एक है, जिसका जल भारतवासी पीते हैं (भीष्म० ९। १४, २९)। इसके तटपर महर्षि शङ्ख और लिखितके आश्रम थे (शान्ति० २३। १८-१९)। इस नदीमें स्नान करके पितरोंके लिये तर्पणकी चेष्टा करते समय महर्षि लिखितके कटे हुए हाथ नूतन रूपसे फिर उत्पन्न हो गये थे (शान्ति० २३। ३९-४०)।

बाहुदा सुयशा-कुरुवंशी परीक्षित्की पत्नी तथा भीमसेनकी माता (आदि० ९५। ४२)।

बाह्यकर्ण-कश्यपद्वारा कद्रूके गर्भसे उत्पन्न एक नाग (आदि० ३५। ९)।

बाह्यकुण्ड-कश्यपवंशमें उत्पन्न एक नाग (उद्योग० १०३। १०)।

बाह्लिक (बाह्लीक)–(१) एक राजा, जो शत्रुपक्षविनाशक महातेजस्वी 'अहर' के अंशसे प्रकट हुआ था (आदि० ६७ । २५) । (२) एक प्राचीन राजा, जो क्रोधवश-संज्ञक दैत्यके अंशसे उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७ । ६०) । पाण्डवोंकी ओरसे इसे रण-निमन्त्रण भेजनेका विचार किया गया था (उद्योग० ४ । १४) । यह कौरवपक्षका योद्धा था । इसे 'बाह्लीकराज' कहा गया है । इसका द्रौपदीपुत्रोंके साथ युद्ध (द्रोण० ९६ । १२-१३) । (३) भरतवंशी महाराज कुरुके पौत्र एवं जनमेजयके तृतीय पुत्र (आदि० ९४ । ५६) । (४) कुरुवंशी महाराज प्रतीपके पुत्र, देवापि और शान्तनुके भाई । ये महारथी वीर थे । इनकी माताका नाम सुनन्दा था, जो शिबिदेशकी राजकुमारी थी (आदि० ९४ । ६१-६२; आदि० ९५ । ४४) । (श्रीमद्भागवत ९ । २२ । १८ के अनुसार बाह्लीकके पुत्रका नाम सोमदत्त था ।) इन्होंने कौरव-सभामें जूएका विरोध किया था (सभा० ७४ । २५-२६) । संजयद्वारा लाये हुए युधिष्ठिरके संदेशको सुननेके लिये ये भी सभामें उपस्थित हुए थे (उद्योग० ४७ । ६-७) । ये कौरवोंका पाण्डवोंके साथ युद्ध होना नहीं चाहते थे (उद्योग० ५८ । ६-७) । कुटुम्बमें फूट न हो, इस डरसे इन्होंने पाण्डवोंको राज्य-भाग दे दिया था (उद्योग० १२९ । ४१) । दुर्योधन-की ग्यारह अक्षौहिणी सेनाओंके जो सेनापति चुने गये थे, उनमें एक ये भी थे (उद्योग० १५५ । ३३) । प्रथम दिनके युद्धमें धृष्टकेतुके साथ इनका द्वन्द्वयुद्ध (भीष्म० ४५ । ३८–४१) । भीमसेनद्वारा पराजित होना (भीष्म० १०४ । २६-२७) । द्रुपदके साथ युद्ध (द्रोण० २५ । १८-१९) । शिखण्डीके साथ युद्ध (द्रोण० ९६ । ७–१०) । भीमसेनद्वारा वध (द्रोण० १५७ । १५) । भीष्मके पूछनेपर कन्या-विवाहके विषयमें इनका अपना निर्णय देना (अनु० ४४ । ४३—५६) । (५) युधिष्ठिरके सारथिका नाम (सभा० ५८ । २०) । (६) एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ४७, ५४) ।

बिन्दुसर–एक प्राचीन सरोवर, जो कैलास पर्वतसे उत्तर दिशामें विद्यमान है (सभा० ३ । २-३) । यहाँ मयासुरका आगमन (सभा० ३ । ९-१०) । गङ्गा-वतरणके लिये यहाँ राजा भगीरथने बहुत वर्षोंतक उग्र तपस्या की थी (सभा० ३ । १०-११) । प्रजापतिने यहाँ सौ यज्ञोंका अनुष्ठान किया और इन्द्रने भी यहीं यज्ञ करके सिद्धि प्राप्त की (सभा० ३ । ११) । यहाँ भगवान् शङ्करने भी यज्ञ किये । वसुदेवनन्दन भगवान् श्रीकृष्णने भी यहाँ धर्म-सम्पादनके लिये बहुत वर्षोंतक श्रद्धापूर्वक यज्ञ किया था (सभा० ३ । ११—१६) । (यहींसे मयनामक दानवने देवदत्त शङ्ख और वृषपर्वाकी गदाको ले जाकर अर्जुन तथा भीमसेनको समर्पित किया था ।)

बिल्वक–कश्यपद्वारा कद्रूसे उत्पन्न एक नाग (आदि० ३५ । १२) ।

बिल्वकतीर्थ–हरद्वारके अन्तर्गत एक तीर्थ, जहाँ स्नान करके मनुष्य स्वर्गलोकका भागी होता है (अनु० २५ । १३) ।

बिल्वतेजा–तक्षककुलमें उत्पन्न हुआ एक नाग, जो सर्प-सत्रमें जल मरा था (आदि० ५७ । ९) ।

बिल्वपत्र–कश्यपवंशी एक नाग (उद्योग० १०३ । १४) ।

बिल्वपाण्डुर–कश्यपद्वारा कद्रूके गर्भसे उत्पन्न एक नाग (आदि० ३५ । १२) ।

बीभत्सु–अर्जुनका एक नाम (विराट० ४४ । ९) । 'बीभत्सु' नामकी निरुक्ति (विराट० ४४ । १८) ।

बुद्धि–ये दक्षप्रजापतिकी कन्या और धर्मकी पत्नी हैं । ये अपनी नौ बहिनोंके साथ, जो धर्मकी ही पत्नियाँ हैं, ब्रह्माजीद्वारा धर्मका द्वार निश्चित की गयी हैं (आदि० ६६ । १३–१५) ।

बुद्धिकामा–स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । १२) ।

बुद्बुदा–एक अप्सरा, जो वर्गाकी सखी थी (आदि० २१५ । २०) । इसे ग्राह होकर जलमें रहनेके लिये ब्राह्मणका शाप (आदि० २१५ । २३) । अर्जुनद्वारा इसका ग्राहयोनिसे उद्धार (आदि० २१६ । २१-२२) । यह कुबेरकी सभामें रहकर उनकी सेवा करती है (सभा० १० । ११) ।

बुध–(१) एक ग्रह, जो ब्रह्माजीकी सभामें उनकी उपासनाके लिये पधारते हैं (सभा० ११ । २९) । ये चन्द्रमाके पुत्र और पुरूरवाके पिता हैं (द्रोण० १४४ । ४) । इन्होंने व्रतचर्या की और उसकी समाप्ति होनेपर ये अदितिदेवीके यहाँ भिक्षाके लिये गये और बोले, 'मुझे भिक्षा दीजिये' भिक्षा न मिलनेपर इनकेःद्वारा अदिति-को शाप (शान्ति० ३४२ । ५६) । मनुकन्या इलाका बुधके साथ समागम हुआ, जिससे पुरूरवाका जन्म हुआ था (अनु० १४७ । २६-२७) । (२) एक वानप्रस्थी ऋषि, जिन्होंने वानप्रस्थ-धर्मका पालन एवं प्रसार करके स्वर्गलोक प्राप्त किया (शान्ति० २४४ । १७) ।

बृंहता–शिशु (स्कन्द) की सप्तमातृकाओंमेंसे एक (वन० १२८ । १०) ।

बृहक–एक देवगन्धर्व, जो अर्जुनके जन्मोत्सवमें पधारे थे (आदि० १२२ । ५७) ।

बृहज्ज्योति–महर्षि अङ्गिराके द्वारा सुभाके गर्भसे उत्पन्न सात पुत्रोंमेंसे एक (वन० २१८ । २) ।

बृहत–(१) यह शब्द विवस्वान्‌का बोधक है (आदि० १ । ४२-४३) । (२) कालेयोंमें जो आठवाँ था, उसके अंशसे उत्पन्न हुआ एक राजा (आदि० ६७ । ५५) । (३) एक साम, जो पाञ्चजन्य ऋषिके मूर्धास्थानसे प्रकट हुआ । उन्हीं ऋषिके मुखसे प्रकट हुए सामको 'रथन्तर' कहते हैं । ये दोनों वेगपूर्वक आयु आदिको हर लेते हैं, इसलिये 'तरसाहर' कहलाते हैं (वन० २२० । ७) ।

बृहत्कीर्ति–महर्षि अङ्गिराके द्वारा सुभाके गर्भसे उत्पन्न सात पुत्रोंमेंसे एक (वन० २१८ । २) ।

बृहत्केतु–प्राचीन कालके एक नरेश (आदि० १ । २३७) ।

बृहत्क्षत्र–(१) भगीरथवंशी एक राजा, जो द्रौपदीके स्वयंवरमें गये थे (आदि० १८५ । २३) । (२) केकयनरेश, प्रथम दिनके युद्धमें कृपाचार्यके साथ इनका द्वन्द्वयुद्ध (भीष्म० ४५ । ५२–५४) । इनके घोड़ोंका वर्णन, जो इनके रथको लेकर युद्ध-मैदानमें गये थे (द्रोण० २३ । २३-२४) । इनका क्षेमधूर्तिके साथ द्वन्द्वयुद्ध करना (द्रोण० १०६ । ७-८) । क्षेमधूर्तिके साथ इनका घोर युद्ध तथा इनके द्वारा उसका वध (द्रोण० १०७ । १–६) । बृहत्क्षत्रका द्रोणके साथ युद्ध और द्रोणाचार्यद्वारा इनका मारा जाना (द्रोण० १२५ । २२) । (३) निषधदेशका राजा । कौरवपक्षका योद्धा । धृष्टद्युम्नद्वारा इसका वध हुआ (द्रोण० ३२ । ६५-६६) ।

बृहत्त्वा–एक देवगन्धर्व, जो अर्जुनके जन्मोत्सवमें पधारे थे (आदि० १२२ । ५७) ।

बृहत्सेन–क्रोधवशसंज्ञक एक दैत्यके अंशसे उत्पन्न हुए एक राजा (आदि० ६७ । ६४) । पाण्डवोंकी ओरसे इन्हें रणनिमन्त्रण भेजनेका विचार किया गया था (उद्योग० ४ । २१) ।

बृहत्सेना–यह दमयन्तीकी धाय थी और अत्यन्त यशस्विनी, परिचर्याके काममें निपुण, समस्त कार्यसाधनमें कुशल, हितैषिणी, अनुरागिणी और मधुरभाषिणी थी । जूएमें राजा नलको हारते जान दमयन्तीने इसे मन्त्रियोंको बुलानेके लिये भेजा था (वन० ६० । ४–५) । दमयन्तीके आदेशसे बृहत्सेनाने विश्वसनीय पुरुषोंद्वारा वार्ष्णेय सूतको बुलवाया था (वन० ६० । ११) ।

बृहदम्बालिका–स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । ४) ।

बृहदश्व–(१) एक प्राचीन महर्षि । ये युधिष्ठिरका अधिक सम्मान करते थे (वन० २६ । २४-२५) । इनका काम्यकवनमें युधिष्ठिरके पास आगमन (वन० ५२ । ४०) । युधिष्ठिरद्वारा इनका सत्कार तथा इनके प्रति अपने दुःख-दैन्यका वर्णन करना (वन० ५२ । ४१–५०) । युधिष्ठिरको समझाते हुए इनका नलोपाख्यान सुनाना (वन० ५२ । ५४ से ७९ अध्यायतक) । इनके द्वारा युधिष्ठिरको आश्वासन तथा उन्हें अक्षहृदय और अश्वशिरका उपदेश देकर स्नान आदिके लिये प्रस्थान (वन० ७९ । ११–२१) । (२) ये इक्ष्वाकुवंशी राजा श्रावस्तके पुत्र थे । इनके पुत्रका नाम कुवलाश्व था (वन० २०२ । ४-५) । ये यथासमय अपने पुत्र कुवलाश्वको राज्यपर अभिषिक्त करके स्वयं तपस्याके लिये तपोवनमें चले गये (वन० २०२ । ७-८) ।

बृहदुक्थ–ये तप (पाञ्चजन्य) के पुत्र हैं । इस पृथ्वीपर जब अग्निहोत्र होने लगता है, उस समय इस भूतलपर स्थित श्रेष्ठ पुरुषोंद्वारा इन्हींकी पूजा होती है (वन० २२० । १८) ।

बृहद्गर्भ–राजा शिबिका पुत्र, जिसे एक ब्राह्मणके आतिथ्यके लिये उन ब्राह्मणदेवके कहनेसे राजाने स्वयं मार डाला और उसका दाह-संस्कार कर दिया । फिर विधिपूर्वक रसोई तैयार करके उसे बटलोईमें डालकर सिरपर रख लिया और वे उस ब्राह्मणकी खोज करने लगे (वन० १९८ । १८) ।

बृहद्गुरु–प्राचीन कालके एक नरेश (आदि० १ । २३३) ।

बृहद्द्युम्न–एक महान् सौभाग्यशाली एवं प्रतापी नरेश, जिन्होंने अपने यज्ञमें रैभ्यपुत्र अर्वावसु और परावसुको सहयोगी बनाया था (वन० १३८ । १-२) ।

बृहद्ध्वनि–एक प्रधान नदी, जिसका जल भारतवासी पीते हैं (भीष्म० ९ । ३२) ।

बृहद्बल–(१) प्राचीन कालके एक नरेश (आदि० १ । २३७) । (२) गान्धारराज सुबलके पुत्र । ये अपने भाई शकुनि और वृषकके साथ द्रौपदीके स्वयंवरमें आये थे (आदि० १८५ । ५) । (३) ये कोसल-

देशके राजा हैं। इन्हें पूर्वदिग्विजयके समय भीमसेनने परास्त किया था (सभा० ३०। १)। इनके द्वारा राजसूययज्ञमें युधिष्ठिरको चौदह हजार उत्तम अश्वोंकी भेंट दी गयी थी (सभा० ५१। ७ के बाद दा० पाठ)। पाण्डवोंकी ओरसे इन्हें रणनिमन्त्रण भेजनेका विचार किया गया था (उद्योग०४। २२)। ये कौरवपक्षसे लड़ने आये थे। दुर्योधनने सैन्यसमुद्रमें इनकी उपमा ज्वारसे दी है (उद्योग० १६१। ३९)। प्रथम दिनके युद्धमें अभिमन्युके साथ इनका द्वन्द्वयुद्ध (भीष्म० ४५। १४–१८)। घटोत्कचद्वारा इनकी पराजय (भीष्म० ९२। ४१)। अभिमन्युके साथ इनका घोर युद्ध (भीष्म० ११६। ३१–३६; द्रोण० ३७। ५-६)। अभिमन्युके साथ युद्ध और उनके द्वारा इनका वध (द्रोण० ४७। २०–२२)। इनकी स्त्रियोंका इन्हें सब ओरसे घेरकर रोदन (स्त्री० २५। १०)।

महाभारतमें आये हुए बृहद्बलके नाम—कौसल्य, कोसलेन्द्र, कोसलक, कोसलाधिपति, कोसलभर्ता, कोसलराज आदि।

बृहद्ब्रह्मा–महर्षि अङ्गिराके द्वारा सुभाके गर्भसे उत्पन्न सात पुत्रोंमेंसे एक (वन० २१८। २)।

बृहद्भानु–वेदोंके पारगामी विद्वान् भानुनामक अग्निको ही बृहद्भानु कहते हैं (वन० २२१। ८)।

बृहद्भास–महर्षि अङ्गिराके द्वारा सुभाके गर्भसे उत्पन्न सात पुत्रोंमेंसे एक (वन० २१८। २)।

बृहद्भासा–ये सूर्यकी कन्या तथा भानु (मनु) नामक अग्निकी भार्या हैं (वन० २२१। ९)।

बृहद्रथ–(१) एक प्राचीन राजा (आदि० १। २३५)। ये यमकी सभामें विराजमान हो सूर्यपुत्र यमकी उपासना करते हैं (सभा० ८। १०)। ये अङ्गदेशके राजा थे। श्रीकृष्णद्वारा इनके दानका वर्णन (शान्ति० २९। ३१–३८)। ये परशुरामजीके क्षत्रियसंहारसे बच गये थे। इन्हें गृध्रकूट पर्वतपर लंगूरोंने बचाया था (शान्ति० ४९। ८१-८२)। इन्हें पौरव भी कहा जाता था। पौरव नामसे इनके यज्ञ, दान आदिकी प्रशंसा (द्रोण० ५७ अध्याय)। इन्हें मान्धाताने जीता था (द्रोण० ६२। १०)। (२) चेदिराज सम्राट् उपरिचरके पुत्र, जिसे पिताने मगधदेशके राज्यपर अभिषिक्त किया था (आदि० ६३। ३०)। ये मगध देशके बलवान् राजा, तीन अक्षौहिणी सेनाके स्वामी और समराङ्गणमें अभिमानपूर्वक लड़नेवाले थे (सभा० १७। १३)। इनके पराक्रम आदि गुणोंका वर्णन (सभा० १७। १४–१६)। काशिराजकी दो कन्याओंके साथ इनका विवाह हुआ था। इन्होंने एकान्तमें अपनी दोनों पत्नियोंके साथ प्रतिज्ञा की थी कि मैं तुम दोनोंके साथ कभी विषम व्यवहार नहीं करूँगा। विषयोंमें डूबे हुए ही इनकी जवानी बीत चली; पर इनके कोई पुत्र नहीं हुआ (सभा० १७। १७–२१)। तब ये पत्नियोंसहित चण्डकौशिक मुनिके पास गये और उन्हें सब प्रकारके रत्नोंसे संतुष्ट किया। मुनिके अपने पास आनेका कारण पूछनेपर इन्होंने अपना पुत्राभावजनित कष्ट बताया और वनमें तपस्या करनेका विचार प्रकट किया। मुनिने इन्हें आमका एक फल दिया और इससे पुत्र होनेका विश्वास दिलाकर पुत्रको राज्यपदपर अभिषिक्त करनेके पश्चात् वनमें तपस्याके लिये जानेका आदेश दिया। मुनिने इनके भावी पुत्रके लिये आठ वरदान दिये थे। इसके बाद राजा मुनिको प्रणाम करके अपने घर गये (सभा० १७। २२—३१)। राजाने वह फल दो भागोंमें विभक्त करके एक-एक भाग पत्नियोंको खिला दिया। दोनोंके गर्भ रहा। प्रसवकाल आनेपर दोनोंके गर्भसे शरीरका आधा-आधा भाग उत्पन्न हुआ। उन निर्जीव टुकड़ोंको रानियोंने बाहर फेंकवा दिया। जरा नामक राक्षसीने उन दोनों टुकड़ोंको जोड़ दिया। उससे बलवान् कुमार सजीव हो उठा। राक्षसीने वह बालक राजाको अर्पित कर दिया। तब राजाने उससे परिचय पूछा। राक्षसी परिचय देकर अन्तर्हित हो गयी। राजा कुमारको लेकर महलमें आये। बालकका जातकर्म आदि किया और उसका नाम जरासंध रखा और मगधदेशमें राक्षसीपूजनका महान् उत्सव मनानेकी आज्ञा दी (सभा० १७। ३२ से १८ अध्यायतक)। इनका जरासंधको अपने राज्यपर अभिषिक्त करके दोनों पत्नियोंके साथ तपोवनको जाना (सभा० १९। १७-१८)। इन्होंने ऋषभ नामक राक्षसका वध करके उसकी खालसे तीन नगाड़े बनवाये थे, जिनपर चोट करनेसे महीनेभर आवाज होती रहती थी (सभा० २१। १६)। (३) एक राजा, जो 'सूक्ष्म' नामक दैत्यके अंशसे उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७। १९)। यह द्रौपदीके स्वयंवरमें गया था (आदि० १८५। २१)। (४) एक अग्नि, जो वसिष्ठपुत्र होनेके कारण वासिष्ठ भी कहलाते हैं (वन० २२०। १)। इनके प्रणिधि नामक पुत्र हुआ (वन० २२०। ९)।

बृहद्वती–एक प्रधान नदी, जिसका जल भारतवासी पीते हैं (भीष्म० ९। ३०)।

बृहदन्त–(१) उलूक देशके राजा। इनका अर्जुनके साथ युद्ध और उनके द्वारा पराजय, सब प्रकारके रत्नोंकी भेंट लेकर इनका अर्जुनकी सेवामें उपस्थित होना (सभा० २७। ५–९)। ये द्रौपदीके स्वयंवरमें भी गये थे (आदि०

१८५ । ७)। पाण्डवोंकी ओरसे इनको रणनिमन्त्रण भेजनेका निश्चय हुआ था (उद्योग० ४ । १३)। ये युधिष्ठिरके प्रति भक्तिभावके कारण उनके पक्षमें चले आये थे। इनके रथके घोड़ोंका वर्णन (द्रोण० २३ । ७६-७७)। इनके मारे जानेकी चर्चा (कर्ण० ६ । १२-१३)। (२) क्षेमधूर्तिका भाई। कौरवपक्षका योद्धा । सात्यकिके साथ इसका युद्ध (द्रोण० २५ । ४७-४८) । इसके मारे जानेकी चर्चा (कर्ण० ५ । ४२)।

बृहन्नला–विराटनगरमें अज्ञातवासके समय रखा हुआ अर्जुनका नाम (विराट० २ । २७)। (विशेष देखिये अर्जुन)

बृहन्मना–महर्षि अङ्गिराद्वारा सुभाके गर्भसे उत्पन्न सात पुत्रोंमेंसे एक (वन० २१८ । २)।

बृहन्मन्त्र–महर्षि अङ्गिराद्वारा सुभाके गर्भसे उत्पन्न सात पुत्रोंमेंसे एक (वन० २१८ । २)।

बृहस्पति–(१) महर्षि अङ्गिराके पुत्र । उतथ्य और संवर्तके भाई (आदि० ६६ । ५)। बृहस्पतिजीकी ब्रह्मवादिनी बहिन योगपरायण हो अनासक्त भावसे सम्पूर्ण जगत्में विचरती है। वह प्रभास नामक वसुकी पत्नी हुई (आदि० ६६ । २६-२७)। इनके अंशसे द्रोणाचार्यकी उत्पत्ति हुई थी (आदि० ६७ । ६९) । देवताओंद्वारा इनका पुरोहितके पदपर वरण (आदि० ७६ । ६)। शुक्राचार्यके साथ इनकी स्पर्धा (आदि० ७६ । ७)। इनके पुत्रका नाम 'कच' था (आदि० ७६ । ११) । इन्होंने भरद्वाज मुनिको आग्नेयास्त्र प्रदान किया था (आदि० १६९ । २९)। ये इन्द्रकी सभामें विराजमान होते हैं (सभा० ७ । २८) । ब्रह्माजीकी सभामें भी उपस्थित होते हैं (सभा० ११ । २९) । इनके द्वारा चान्द्रमसी (तारा) नामक पत्नीसे छः अग्निस्वरूप पुत्र उत्पन्न हुए, जिनमें शंयु सबसे बड़ा था । इनके सिवा, एक कन्या भी हुई थी (वन० २१९ अध्याय)। नहुषके भयसे भीत शचीको इनका आश्वासन देना (उद्योग० ११ । २३–२५)। नहुषसे अवधि माँगनेके लिये शचीको सलाह देना (उद्योग० १२ । २५)। अग्निके साथ संवाद (उद्योग० १५ । २८–३४) । इनके द्वारा अग्निका स्तवन (उद्योग० १६ । १—८)। इनका इन्द्रकी स्तुति करना (उद्योग० १६ । १४–१८)। इन्द्रके प्रति नहुषके बलका वर्णन (उद्योग० १६ । २३-२४) । पृथ्वी-दोहनके समय ये दोग्धा बने थे (द्रोण० ६९ । २३)। इनके द्वारा स्कन्दको दण्डका दान (शल्य० ४६ । ५०)। कोसलनरेश वसुमनासे राजाकी आवश्यकताका प्रतिपादन (शान्ति० ६८ । ८—६०)। इन्द्रको सान्त्वनापूर्ण मधुर वचन बोलनेका उपदेश (शान्ति० ८४ अध्याय)। इनका इन्द्रको विजय-प्राप्तिके उपाय और दुष्टोंका लक्षण बताना (शान्ति० १०३ । ७—५२)। इन्द्रको शुक्राचार्यके पास श्रेयःप्राप्तिके लिये भेजना (शान्ति० १२४ । २४)। मनुसे ज्ञानविषयक विविध प्रश्न करना (शान्ति० २०१ अध्यायसे २०६ अध्यायतक)। उपरिचरके यज्ञमें भगवान्-पर कुपित होना (शान्ति० ३३६ । १४)। मुनियोंके समझानेसे क्रोध शान्त करके यज्ञको पूर्ण करना (शान्ति० ३३६ । ६०-६१)। इनके द्वारा जलाभिमानी देवताको शाप (शान्ति० ३४२ । २७) । इनके द्वारा इन्द्रसे भूमिदानके महत्त्वका वर्णन (अनु० ६२ । ५५—९२)। राजा मान्धाताके पूछनेपर उनको गोदानके विषयमें उपदेश (अनु० ७६ । ५—२३) । युधिष्ठिरके प्रति इनका प्राणियोंके जन्म-मृत्युका और नानाविध पापोंके फलस्वरूप नाना योनियोंमें जन्म लेनेका वर्णन (अनु० १११ अध्याय)। युधिष्ठिरको अन्नदानकी महिमा बताना (अनु० ११२ अध्याय)। युधिष्ठिरको अहिंसा एवं धर्मकी महिमाका उपदेश देकर इनका स्वर्गगमन (अनु० ११३ अध्याय)। इनके द्वारा इन्द्रको धर्मोपदेश (अनु० १२५। ६०—६८) । इन्द्रके कहनेसे मनुष्यका यज्ञ न करानेकी प्रतिज्ञा करना (आश्व० ५ । २५–२७)। मरुत्तसे उनका यज्ञ करानेसे इनकार करना (आश्व० ६ । ८-९)। मरुत्तको धन प्राप्त होनेसे इनका चिन्तित होना (आश्व० ८ । ३६-३७)। इन्द्रके पूछनेपर उनसे अपनी चिन्ताका कारण बताते हुए मरुत्त और संवर्तको कैद करनेके लिये कहना (आश्व० ९ । ७)। ये और सोम ब्राह्मणोंके राजा बताये गये हैं (आश्व० ९ । ८–१०)।

बोध–(१) एक राजा जो जरासंधके भयसे अपने भाइयों और सेवकोंसहित दक्षिण दिशामें भाग गये थे (सभा० १४ । २६)। (२) एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ३९)।

बोध्य–एक प्राचीन ऋषि, जिन्होंने राजा ययातिके शान्ति-विषयक प्रश्न करनेपर उन्हें उपदेश दिया था, इनका वह उपदेश बोध्यगीताके नामसे प्रसिद्ध हुआ (शान्ति० १७८ अध्याय)।

ब्रध्नश्व–एक राजा, इनके पास महाराज श्रुतर्वाको साथ लिये हुए अगस्त्यजीका आगमन और राजाद्वारा उन दोनोंका स्वागत-सत्कार करके आनेका प्रयोजन पूछा जाना (वन० ९८ । ७-८)। अगस्त्यजीके धन माँगनेपर उनके सामने इनके द्वारा अपने आय-व्ययका विवरण रखा जाना (वन० ९८ । १०)। अगस्त्यजीके साथ धनकी याचनाके लिये जाना (वन० ९८ । १२) । महर्षि अगस्त्यजीकी

आज्ञासे पुनः अपनी राजधानीको लौटना (वन० ९९ । १८)।

ब्रह्मचारी–कश्यपद्वारा प्राधाके गर्भसे उत्पन्न एक देव-गन्धर्व (आदि० ६५ । ४७)। ये अर्जुनके जन्मकालिक महोत्सवमें पधारे थे (आदि० १२२ । ५८)।

ब्रह्मतीर्थ–कुरुक्षेत्रकी सीमामें स्थित एक तीर्थ, यहाँ स्नान-करनेसे ब्राह्मणेतर मानव ब्राह्मणत्व लाभ करता है और ब्राह्मण शुद्धचित्त होकर परम गति प्राप्त करता है (वन० ८३ । ११३)।

ब्रह्मतुङ्ग–एक पर्वत, जो स्वप्नमें श्रीकृष्णसहित शिवजीके पास जाते हुए अर्जुनको मार्गमें मिला था (द्रोण० ८० । ३१)।

ब्रह्मदत्त–पाञ्चालदेशीय काम्पिल्य नगरके एक प्राचीन राजा (शान्ति० १३९ । ५)। इनका पूजनीनामक चिड़िया-के साथ संवाद (शान्ति० १३९ । २४–१११)। इन पाञ्चालराजने ब्राह्मणोंको शङ्खनिधि देकर ब्रह्मलोक प्राप्त किया था (शान्ति० २३४ । २५; अनु० १३७ । १७)। ये कण्डरीक कुलमें उत्पन्न हुए थे, इन्होंने सात जन्मोंके जन्म-मृत्युसम्बन्धी दुःखोंका बारंबार स्मरण करके योगजनित ऐश्वर्य प्राप्त कर लिया था (शान्ति० ३४२ । १०५-१०६)। ये अब यमसभामें रहकर सूर्य-पुत्र यमकी उपासना करते हैं (सभा० ८ । २०)।

ब्रह्मदेव–पाण्डवपक्षके एक वीर योद्धा, जो सेनाकी रक्षाके लिये पीछे-पीछे क्षत्रदेवके साथ चल रहे थे (उद्योग० १९६ । २५)।

ब्रह्ममेध्या–भारतवर्षकी एक प्रधान नदी, जिसका जल यहाँ-के निवासी पीते हैं (भीष्म० ९ । ३२)।

ब्रह्मयोनि–कुरुक्षेत्रकी सीमामें स्थित एक तीर्थ, यहाँ स्नान करनेवाला मनुष्य ब्रह्मलोकमें जाता और अपनी सात पीढ़ियोंको तार देता है (वन० ८३ । १४०)। इसकी उत्पत्तिका प्रसङ्ग (शल्य० ४७ । २२–२४)।

ब्रह्मवेध्या–भारतवर्षकी एक प्रधान नदी, जिसका जल यहाँके निवासी पीते हैं (भीष्म० ९ । ३०)।

ब्रह्मशाला–एक उत्तम तीर्थ, जहाँ गङ्गाजी सरोवरमें स्थित थीं। इसका दर्शनमात्र पुण्यमय बताया गया है (वन० ८७ । २३)।

ब्रह्मशिर–ब्रह्मास्त्र, यह अस्त्र द्रोणाचार्यने प्रसन्न होकर अर्जुनको दिया था (आदि० १३२ । १८)। इसके प्रयोगका नियम (आदि० १३२ । १९–२१)। महर्षि अगस्त्यसे अग्निवेशको, अग्निवेशसे द्रोणको और द्रोणसे अर्जुनको इस अस्त्रकी प्राप्ति हुई थी (आदि० १३८ । ९–१२)।

ब्रह्मसर–(१) धर्मारण्यसे सुशोभित एक तीर्थ, जहाँ एक रात निवास करनेसे मनुष्य ब्रह्मलोकमें जाता है। यहाँ ब्रह्माद्वारा स्थापित यूपकी परिक्रमा करनेसे वाजपेय यज्ञका फल मिलता है (वन० ८४ । ८५)। इसके जलमें अवगाहन करनेसे पुण्डरीक यज्ञका फल प्राप्त होता है (अनु० २५ । ५८)। (२) गयाके अन्तर्गत एक कल्याणमय तीर्थ, जिसका देवर्षिगण सेवन करते हैं (वन० ८७ । ८)। यहाँ भगवान् अगस्त्य वैवस्वत यमसे मिलनेके लिये पधारे थे (वन० ९५ । ११)। (३) यहाँकी यात्रा करके भागीरथीमें स्नान, तर्पण आदि करने और एक मासतक निराहार रहनेसे मनुष्यको चन्द्रलोककी प्राप्ति होती है (अनु० २५ । ३९–४०)।

ब्रह्मस्थान–यहाँ ब्रह्माजीके समीप जानेसे मानव राजसूय और अश्वमेध यज्ञका फल पाता है (वन० ८४ । १०३)। यहाँ तीन रात उपवाससे सहस्र गोदानका फल प्राप्त होता है (वन० ८५ । ३५; उद्योग० १८६ । २६)। यहाँ कमल उखाड़नेपर अगस्त्यजीके कमलोंकी चोरी होना (अनु० ९४ । ८)।

ब्रह्मा–सृष्टिके प्रारम्भमें जब सर्वत्र अन्धकार-ही-अन्धकार था, किसी भी वस्तु या नाम-रूपका भान नहीं होता था, उस समय एक विशाल अण्ड प्रकट हुआ, जो सम्पूर्ण प्रजाओंका अविनाशी बीज था, उस दिव्य एवं महान् अण्डमें सत्यस्वरूप ज्योतिर्मय सनातन ब्रह्म अन्तर्यामीरूपसे प्रविष्ट हुआ। उस अण्डसे ही प्रथम देहधारी प्रजापालक देवगुरु पितामह ब्रह्माका आविर्भाव हुआ (आदि० १ । २९–३२)। महाभारतका निर्माण करके उसके अध्ययन और प्रचारके विषयमें विचार करते हुए कृष्णद्वैपायन व्यासके आश्रमपर इनका आगमन (आदि० १ । ५५–५७)। व्यासजीसे सत्कृत होकर इनका आसनपर विराजमान होना (आदि० १ । ५८-५९)। व्यासजीका अपने ग्रन्थका परिचय देते हुए उसका कोई योग्य लेखक न होनेके विषयमें चिन्ता प्रकट करना (आदि० १ । ६१–६७)। इनका महाभारतको 'काव्य'की संज्ञा देना और उसकी प्रशंसा करके उसके लेखनके लिये गणेशजीका स्मरण करनेकी सलाह देना (आदि० १ । ७१–७४)। इन्होंने वरुणके यज्ञमें महर्षि भृगुको अग्निसे उत्पन्न किया (आदि० ५ । ८)। भृगुद्वारा प्राप्त अग्निके शापको संकुचित करके उन्हें प्रसन्न करना (आदि० ७ । १८–२५)। इनके द्वारा प्रजाके हितकी कामनासे सर्पोंको दिये गये कद्रूके शापका अनुमोदन (आदि० २० । १०)। इनसे मरीचि, अत्रि, अङ्गिरा, पुलस्त्य, पुलह और क्रतु—इन छः मानस पुत्रोंकी उत्पत्ति हुई (आदि० ६५ । १०; आदि० ६६ । ४)। ब्रह्माजीके दाहिने अँगूठेसे दक्षका और बायेंसे दक्ष-पत्नीका

प्रादुर्भाव (आदि० ६६ । १०-११) । इनके दाहिने स्तनका भेदन करके मनुष्यरूपमें भगवान् धर्मका प्राकट्य (आदि० ६६ । ३१) । इनके हृदयका भेदन करके भृगुका प्रकट होना (आदि० ६६ । ४१) । इनकी प्रेरणासे शुक्राचार्य समस्त लोकोंका चक्कर लगाते रहते हैं (आदि० ६६ । ४२) । इनके दो पुत्र और हैं, जो मनुके साथ रहते हैं; उनके नाम हैं—धाता और विधाता (आदि० ६६ । ५०) । मनुष्योंकी मृत्यु रुक जानेसे चिन्तित हुए देवताओंको इनका आश्वासन (आदि० १९६ । ७) । इनके द्वारा सुन्द और उपसुन्दको वरदान (आदि० २०८ । १७–२५) । सुन्द और उपसुन्दके अत्याचारसे दुखी हुए महर्षियोंका इनके प्रति उनके अत्याचारोंका वर्णन (आदि० २१० । ४–८) । तिलोत्तमाका निर्माण करनेके लिये इनका विश्वकर्माको आदेश (आदि० २१० । ९–११) । तिलोत्तमाको इनका वरदान (आदि० २११ । २३-२४) । अपने अजीर्ण रोगको मिटानेके लिये अग्निकी इनसे प्रार्थना (आदि० २२२ । ६९–७१) । अग्निकी ग्लानिका कारण बताते हुए खाण्डववनको जलानेके लिये इनका उन्हें आदेश (आदि० २२२ । ७२–७७) । खाण्डववनको जलानेके कार्यमें श्रीकृष्ण तथा अर्जुनसे सहायताकी प्रार्थना करनेके लिये इनकी अग्निको प्रेरणा (आदि० २२३ । ५–११) । इनके द्वारा पूर्वकालमें गाण्डीव धनुषका निर्माण (आदि० २२४ । १९) । एक सहस्र युग बीतनेपर ये हिरण्यशृङ्ग पर्वतपर बिन्दुसरके समीप यज्ञ करते हैं (सभा० ३ । १५) । नारदजीद्वारा इनकी दिव्य सभाका वर्णन (सभा० ११ अध्याय) । इनके द्वारा हिरण्यकशिपुको शाप या किसी भी अस्त्र-शस्त्रसे न मरनेका वरदान (सभा० ३८ । २९ के बाद दा० पाठ; पृष्ठ ७८५-७८६) । प्रजापति ब्रह्माने इन्द्रके लिये एक दिव्य शङ्ख धारण किया था (सभा० ५३ । १४-१५) । इनके द्वारा धर्मारण्यमें ब्रह्मसरके समीप एक यूपकी स्थापना (वन० ८४ । ८६) । ब्रह्माने प्रयागमें यज्ञ किया था (वन० ८७ । १९) । प्रजापति ब्रह्माजीने पुष्कर तीर्थके लिये एक गाथा गायी है (वन० ८९ । १७-१८) । इनका देवताओंको दधीचिके पास उनकी हड्डियोंकी याचनाके लिये भेजना (वन० १०० । ८) । प्रजापति ब्रह्माजीने कुरुक्षेत्रमें इष्टीकृत नामक सत्रका एक सहस्र वर्षोंतक अनुष्ठान किया था (वन० १२९ । १) । वाराहरूपधारी विष्णुद्वारा पृथ्वीको ऊपर उठाये जानेसे क्षुब्ध हुए देवताओंको इनके द्वारा सान्त्वना-प्रदान (वन० १४२ । ५४–५७) । ब्रह्माजीके द्वारा कालकेयोंके लिये हिरण्यपुर नामक नगरका निर्माण और मनुष्यके हाथसे उनके विनाशका निर्देश (वन० १७३ । ११—१५) । भगवान् विष्णुके नाभिकमलसे इनकी उत्पत्तिका वर्णन (वन० २०३ । १०—१५) । इनके द्वारा धुन्धुको वरदान (वन० २०४ । २–४) । इन्द्रके प्रति देवसेनाके पतिका निर्धारण (वन० २२४ । २४) । ये पुलस्त्यके पिता और रावणके पितामह थे (वन० २७४ । ११-१२) । इनका देवताओंको वानर और रीछ-योनियोंमें अपने अंशसे संतान उत्पन्न करनेके लिये आदेश (वन० २७६ । ६-७) । इनके द्वारा सीताजीकी शुद्धिका समर्थन (वन० २९१ । ३५) । ययातिसे अभिमानको अधःपतनका हेतु बताना (उद्योग० १२३ । १४-१५) । इनके द्वारा भगवत्स्तुति (भीष्म० ६५ । ४७—७४) । देवताओंको नर-नारायणका परिचय देना (भीष्म० ६६ । ६—२३) । प्राणियोंके संहारके विषयमें उपाय सोचते समय इनका कोप (द्रोण० ५२ । ४०) । रुद्रसे अपने क्रोधका कारण बताना (द्रोण० ५३ । ३–५) । इनके शरीरसे मृत्युकी उत्पत्ति (द्रोण० ५३ । १७-१८) । मृत्युको जगत्के संहारका कार्य सौंपना (द्रोण० ५३ । २१-२२) । मृत्युकी तपस्यासे प्रसन्न होकर उसे वर देना (द्रोण० ५४ । ३३–३६) । मृत्युको आदेश (द्रोण० ५४ । ३९—४३) । वृत्रासुरके भयसे भीत देवताओंको साथ लेकर शिवजीके पास जाना (द्रोण० ९४ । ५३—५८) । त्रिपुरोंके संहारके समय ये भगवान् रुद्रके सारथि बने थे (द्रोण० २०२ । ७६) । इन्द्र आदि देवताओंसहित त्रिपुर-वधके लिये शिवजीके पास जाकर उनको प्रसन्न करना (कर्ण० ३३ । ४१—६२) । शिवजीसे त्रिपुरवधके लिये याचना करना (कर्ण० ३४ । २–५) । देवताओंकी प्रार्थनासे त्रिपुरवधके समय शिवजीका सारथि बनना (कर्ण० ३४ । ७५—७९) । कर्ण और अर्जुनके द्वैरथ-युद्धमें इन्द्रके पूछनेपर इनके द्वारा अर्जुनकी विजय-घोषणा (कर्ण० ८७ । ६९-८५) । इनके द्वारा स्कन्दको पार्षद-प्रदान (शल्य० ४५ । २४-२५) । स्कन्दके लिये काले मृगचर्मका दान (शल्य० ४६ । ५२) । इनकी सृष्टि-रचनाका वर्णन (सौप्तिक० १७ । १०—२०) । इनका चार्वाकको वर-प्रदान (शान्ति० ३९ । ५) । चार्वाककी मृत्युका उपाय बताना (शान्ति० ३९ । ८—१०) । इनके नीतिशास्त्रका वर्णन (शान्ति० ५९ । २९—८६) । इनका खड्ग उत्पन्न करके रुद्रदेवको देना (शान्ति० १६६ । ४५-४६) । देवताओंको आश्वासन (शान्ति० २०० । ३०-३१; शान्ति० २०९ । ३१—३६) । इन्द्रको बलिका पता बताना और वध करनेसे

रोकना (शान्ति० २२३ । ८—११) । प्रजाकी वृद्धि-पर इनका कोप (शान्ति० २५६ । १६) । शिवजीकी प्रार्थनासे क्रोधका त्याग (शान्ति० २५७ । १३) । मृत्युको संहारके लिये आदेश (शान्ति० २५८ । २८—३६) । वृत्रासुरके वधसे इन्द्रको लगी हुई ब्रह्महत्याका विभाजन (शान्ति० २८२ । ३१–५५) । दक्षयज्ञके समय कुपित हुए शिवजीका कोप शान्त करना (शान्ति० २८३ । ४५—४८) । हंसरूपसे साध्यगणोंको उपदेश (शान्ति० २९९ अध्याय) । देवताओंके साथ भगवान्‌की शरणमें जाना (शान्ति० ३४० । ४२—४८) । इनके द्वारा नारायण-रुद्र-युद्धकी शान्ति (शान्ति० ३४२ । १२४—१२९) । भगवान् हयग्रीवकी स्तुति (शान्ति० ३४७ । ३८—४५) । वैजयन्तपर्वतपर शिवजीके साथ वार्तालापमें इनके द्वारा नारायणकी महिमाका वर्णन (शान्ति० ३५० । २५ से ३५१ अध्यायतक) । देवताओंसे गरुड़-कश्यप-संवादका प्रसंग सुनाना (अनु० १३ । ६ के बाद दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ५४६७—५४७९) । इनके द्वारा ब्राह्मणोंकी महिमाका वर्णन (अनु० ३५ । ५—११के बाद दाक्षिणात्य पाठ) । यज्ञके लिये देवताओंको भूमि देना (अनु० ६६ । २१-२२) । इन्द्रसे गोलोक और गोदानकी महिमाका वर्णन (अनु० ७३ अध्याय) । गोदानके विषयमें इनका इन्द्रके प्रश्नका उत्तर देना (अनु० ७४ । २—१०) । इन्द्रको गोलोक और गौओंकी महिमा बताना (अनु० ८३ । १५—४५) । सुरभीको वरदान देना (अनु० ८३ । ३६—३९) । इनके द्वारा देवताओंको आश्वासन (अनु० ८५ । ८—१८) । वरुणरूपधारी महादेवजीके यज्ञमें इनका अपने वीर्यकी आहुति देना और उससे प्रजापतियोंका जन्म होना (अनु० ८५ । ९९—१०२) । पितरों और देवोंके अजीर्ण-निवारणके लिये अग्निको उपाय बताना (अनु० ९२ । ९) । नहुषके पतनके बाद शतक्रतुको इन्द्र बनानेके लिये देवोंको आदेश (अनु० १०० । ३४—३६) । राजा भगीरथको ब्रह्मलोकमें आया देख उनसे वहाँ पहुँचनेका साधन पूछना (अनु० १०३ । ६-७) । इनके द्वारा धर्मके रहस्यका वर्णन (अनु० १२६ । ४६—५०) । कप नामक दानवोंसे पराजित देवताओंको ब्राह्मणकी शरण लेनेका आदेश (अनु० १५७ । ५) । देवता, ऋषि, नाग और असुरोंको एकाक्षर 'ॐ' का उपदेश (आश्व० २६ । ८) । इनके द्वारा महर्षियोंको विविध ज्ञानका उपदेश (आश्व० ३५ । ३२ से आश्व० ५१ । ४० तक) ।

ब्रह्मावर्त—कुरुक्षेत्रके अन्तर्गत स्थित एक तीर्थ, यहाँ स्नान करनेवाला मानव ब्रह्मलोकको प्राप्त करता है (वन० ८३ । ५३) । यहाँ ब्रह्मचर्यपालनपूर्वक जानेसे मनुष्य अश्वमेध यज्ञका फल पाता और सोमलोकको जाता है (वन० ८४ । ४३) ।

ब्रह्मोदुम्बर—कुरुक्षेत्रकी सीमामें स्थित एक तीर्थ । यह ब्रह्माजीका उत्तम स्थान है (वन० ८३ । ७१) ।

ब्राह्म—एक प्रकारका विवाह । कन्याको वस्त्र और आभूषणोंसे अलंकृत करके सजातीय योग्य वरके हाथमें देना 'ब्राह्म' विवाह कहलाता है । यह सभी वर्णोंके लिये विहित है (आदि० ७३ । ८–१४) ।

ब्राह्मणी—(१) एक तीर्थ, यहाँ जानेसे मानव कमलके समान कान्तिमान् विमानद्वारा ब्रह्मलोकमें जाता है (वन० ८४ । ५८) । (२) भारतवर्षकी एक प्रमुख नदी, जिसका जल यहाँके निवासी पीते हैं (भीष्म० ९ । ३३) ।

(भ)

भग—(१) बारह आदित्योंमेंसे एक । इनकी माताका नाम अदिति और पिताका कश्यप है (आदि० ६५ । १५) । ये अर्जुनके जन्मोत्सवमें पधारे थे (आदि० १२२ । ६६) । खाण्डववनदाहके समय घटित हुए श्रीकृष्ण और अर्जुनके साथ युद्धमें इन्द्रकी ओरसे इनका आगमन तथा तलवार और धनुष लेकर शत्रुपर टूट पड़ना (आदि० २२६ । ३६) । ये इन्द्रकी सभामें विराजमान होते हैं (सभा० ७ । २२) । इन्होंने स्कन्दके अभिषेकमें भाग लिया (शल्य० ४५ । ५) । रुद्रने इनकी आँखें नष्ट कर दी थीं (सौप्तिक० १८ । २२) । (२) ग्यारह रुद्रोंमेंसे एक । ये भी अर्जुनके जन्मोत्सवमें पधारे थे (आदि० १२२ । ६९) ।

भगदत्त—प्राग्ज्योतिषपुरका अधिपति, बाष्कल नामक असुरके अंशसे उत्पन्न (आदि० ६७ । ९) । यह द्रौपदीके स्वयंवरमें गया था (आदि० १८५ । १२) । यह राजा पाण्डुका मित्र था । जरासंधसे मिला होनेपर भी युधिष्ठिरके प्रति पिताकी भाँति स्नेह रखता था । इसे यवनाधिप कहा गया है (सभा० १४ । १४–१६) । राजसूय-दिग्विजयके समय अर्जुनके साथ इसका घोर युद्ध हुआ और अर्जुनकी वीरतासे प्रसन्न होकर इसने उनकी इच्छाके अनुसार कार्य करनेकी प्रतिज्ञा की । यह इन्द्रका मित्र था और इन्द्रके समान ही पराक्रमी था । अर्जुनके पिता पाण्डुसे भी इसकी मैत्री थी । इसने अर्जुनके प्रति वात्सल्य दिखाया । यह किरात, चीन आदि समुद्रतटवर्ती सैनिकोंके साथ युद्धमें गया था (सभा० २६ । ७-१६) ।

युधिष्ठिरके राजसूययज्ञमें यह यवनोंके साथ गया था और अच्छी जातिके वेगशाली अश्व एवं बहुत-सी भेंट-सामग्री लेकर खड़ा था। बहुत-से हीरे और पद्मरागमणिके आभूषण एवं विशुद्ध हाथी-दाँतकी बनी मूठवाले खड्ग देकर यह राजसभामें गया था (सभा० ५१ । १४–१६)। दिग्विजयके समय कर्णद्वारा इसकी पराजय (वन० २५४ । ५)। पाण्डवोंकी ओरसे इसके पास रणनिमन्त्रण भेजनेका विचार किया गया था (उद्योग० ४ । ११)। दुर्योधनकी सहायतामें सेनासहित इसका आना (उद्योग० १९ । १५)। प्रथम दिनके संग्राममें विराटके साथ द्वन्द्व-युद्ध (भीष्म० ४५ । ४९–५१)। घटोत्कचके साथ युद्ध और पराजय (भीष्म० ६४ । ५९-६२)। भीमसेनको मूर्च्छित करना (भीष्म० ६४ । ५३–५४)। इसके द्वारा घटोत्कचकी पराजय (भीष्म० ८३ । ४०)। इसका अद्भुत पराक्रम (भीष्म० ९५ अध्याय)। इसके द्वारा दशार्णराजकी पराजय (भीष्म० ९५ । ४८-४९)। इसके द्वारा क्षत्रदेवकी दाहिनी भुजाका विदारण (भीष्म० ९५ । ७३)। भीमसेनके सारथि विशोककी मूर्च्छा (भीष्म० ९५ । ७६)। सात्यकिके साथ इसका द्वन्द्वयुद्ध (भीष्म० १११ । ७–१३)। भीमसेन और अर्जुनके साथ युद्ध (भीष्म० अध्याय ११३ से ११४)। अर्जुनके साथ द्वन्द्वयुद्ध (भीष्म० ११६ । ५६–६०)। द्रुपदके साथ युद्ध (द्रोण० १४ । ४०–४२)। हाथीसहित अद्भुत पराक्रम करके इसके द्वारा दशार्णराजका वध (द्रोण० २६ । ३८-३९)। रुचिपर्वाका वध (द्रोण० २६ । ५२-५३)। अर्जुनके साथ युद्ध (द्रोण० २८ । १४ से २९ अध्यायतक)। अर्जुनपर वैष्णवास्त्रका प्रयोग (द्रोण० २९ । १७)। अर्जुनद्वारा इसका वध (द्रोण० २९ । ४८–५०)। भगदत्तके बाद इसका पुत्र वज्रदत्त राजा हुआ, जो अर्जुनद्वारा जीता गया था (आश्व० ७६ । १–२०)। इसके पितामह शैलालय तपोबलसे इन्द्रलोकमें गये थे (आश्रम० २० । १०)।

भगदा–स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । २६)।

भगनन्दा–स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । ११)।

भगवद्गीतापर्व–भीष्मपर्वका एक अवान्तर पर्व (अध्याय २५ से ४२ तक)।

भगवद्यानपर्व–उद्योगपर्वका एक अवान्तर पर्व (अध्याय ७२ से १५० तक)।

भगीरथ–एक राजा, जो दिलीपके पुत्र थे (वन० २५ । १२)। ये यमसभामें रहकर सूर्यपुत्र यमकी उपासना करते हैं (सभा० ८ । १२)। इनका राज्याभिषेक (वन० १०७ । ६९)। इनका हिमालयपर तपस्या करके भगवान् शिव तथा गङ्गाजीको प्रसन्न करना एवं गङ्गाजीद्वारा वरदान पाना (वन० १०८ अध्याय)। इन्हें भगवान् शिवका वरदान (वन० १०९ । १–२)। इनका गङ्गाजीको ले जाकर पितरोंका उद्धार करना (वन० १०९ । १८–१९)। सृंजयको समझाते हुए नारदजीद्वारा इनके चरित्रका वर्णन (द्रोण० ६० अध्याय)। श्रीकृष्णद्वारा इनके दान, यज्ञ आदिका वर्णन (शान्ति० २९ । ६३–७०)। गोदान-महिमाके विषयमें इनका नामनिर्देश (अनु० ७६ । २५)। ब्रह्माके पूछनेपर अपने पुण्यकर्मोंका वर्णन करते हुए इनका अनशन-व्रतको ही ब्रह्मलोकमें पहुँचनेका साधन बताना (अनु० १०३ । ८–४२)। इनके द्वारा अपनी कन्याका कौत्सको दान (अनु० १३७ । २६)। कोहल ऋषिको एक लाख सवत्सा गौओंका दान करनेके कारण इन्हें उत्तम लोकोंकी प्राप्ति (अनु० १३७ । २७)।

भङ्ग–तक्षककुलमें उत्पन्न एक नाग, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें जलमरा था (आदि० ५७ । ९)।

भङ्गकार–(१) ये सोमवंशीय महाराज कुरुके पौत्र तथा अविक्षित्के पुत्र थे (आदि० ९४ । ५३)। (२) एक यदुवंशी क्षत्रिय, जो रैवतक पर्वतके महोत्सवमें सम्मिलित हुए थे (आदि० २१८ । ११)।

भङ्गास्वन–एक प्राचीन राजर्षि, जिनका इन्द्रके साथ वैर हो गया था (अनु० १२ । २)। इन्द्रकी प्रेरणासे इनका स्त्रीभावको प्राप्त होना (अनु० १२ । १०)। वनमें जानेपर एक तापसद्वारा इन्होंने सौ पुत्र उत्पन्न किया (अनु० १२ । २४)। इन्द्रसे पूछनेपर उनसे अपना वृत्तान्त सुनाना (अनु० १२ । ३४–४०)। इनका विषयसुखकी इच्छासे स्त्रीभावकी ही प्रशंसा करना (अनु० १२ । ५२–५३)।

भद्र–(१) एक गणराज्य। यहाँके क्षत्रियराजकुमारोंने राजसूययज्ञके अवसरपर युधिष्ठिरको बहुत-सा धन अर्पित किया था (सभा० ५२ । १४–१७)। दिग्विजयके समय कर्णने इस देशको जीता था (वन० २५४ । २०)। (२) चेदिदेशीय पाण्डवपक्षका एक योद्धा, जिसका कर्णद्वारा वध हुआ था (कर्ण० ५६ । ४८-४९)।

भद्रकर्णेश्वर–इसके समीप जाकर विधिपूर्वक पूजा करनेवाला मनुष्य कभी दुर्गतिमें नहीं पड़ता (वन० ८४ । ३९)।

भद्रकार–एक राजा, जो जरासंधके भयसे अपने भाइयों और सेवकोंसहित दक्षिण दिशामें भाग गया था (सभा० १४ । २६) ।

भद्रकाली–(१) दुर्गाजीका एक नाम । अर्जुनने इस नामसे दुर्गाजीका स्तवन किया था (भीष्म० २३ । ५) । दक्षयज्ञविध्वंसके समय ये पार्वतीजीके कोपसे प्रकट हुई थीं (शान्ति० २८४ । ५३-५४) । (२) स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । ११) ।

भद्रतुङ्ग–एक तीर्थ, जहाँ स्नान करके सुशील पुरुष ब्रह्मलोकमें जाता और वहाँ उत्तम गति पाता है (वन० ८२ । ८०) ।

भद्रमना–यह क्रोधवशाकी नौ कन्याओंमेंसे एक है । इसने देवताओंके हाथी महान् गजराज ऐरावतको जन्म दिया (आदि० ६६ । ६०–६३) ।

भद्रवट–यह उमावल्लभ महादेवजीका निवासस्थान है । यहाँ भगवान् शिवका दर्शन करनेवाला यात्री एक हजार गोदानका फल पाता है और महादेवजीकी कृपासे गणोंका आधिपत्य प्राप्त करता है (वन० ८२ । ५०-५१) ।

भद्रशाख–चकरेके समान मुख धारण करनेवाले स्कन्ददेवका एक नाम (वन० २२८ । ४) ।

भद्रशाल–मेरुके पूर्वभागमें स्थित भद्राश्ववर्षके शिखरपर अवस्थित एक वन, जिसमें कालाग्र नामक महान् वृक्ष है (भीष्म० ७ । १४) ।

भद्रा–(१) ये कक्षीवान्की पुत्री और पूरुवंशी राजा व्युषिताश्वकी पत्नी थीं । इनके रूपकी समानता करनेवाली उस समय दूसरी कोई स्त्री न थी (आदि० १२० । १७) । पतिके परलोकवासी हो जानेपर इनका विलाप करना (आदि० १२० । २१—३१) । इनको आकाशवाणीद्वारा पतिका आश्वासन और पतिके शवद्वारा इनके गर्भसे सात पुत्रोंकी उत्पत्ति (आदि० १२० । ३३—३६) । (२) ये कुबेरकी अनुरक्ता पत्नी थीं । कुन्तीने द्रौपदीसे दृष्टान्तरूपमें इनका वर्णन किया था (आदि० १९८ । ६) । (३) भगवान् श्रीकृष्णकी बहिन सुभद्राका एक नाम (आदि० २१८ । १४) । (विशेष देखिये सुभद्रा) (४) विशालानरेशकी कन्या, जो करूषराजकी प्राप्तिके लिये तपस्या करनेवाली थी; परंतु शिशुपालने करूषराजका वेष धारण करके मायासे इसका अपहरण कर लिया था (सभा० ४५ । ११) । (५) सोमकी पुत्री, जो अपने समयकी सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी मानी जाती थी । इन्होंने उतथ्यको पतिरूपमें प्राप्त करनेके लिये तीव्र तपस्या की । तब सोमके पिता महर्षि अत्रिने उतथ्यको बुलाकर इन्हें उनके हाथमें दे दिया और उतथ्यने विधिपूर्वक इनका पाणिग्रहण किया (अनु० १५४ । १०–१२) । वरुणद्वारा इनका अपहरण (अनु० १५४ । १३) । जब कुपित होकर उतथ्यने सारा जल पी लिया, तब वरुण उनकी शरणमें आये और उनकी भार्या भद्राको उन्हें लौटा दिया (अनु० १५४ । २८) । (६) वसुदेवजीकी चार पत्नियोंमेंसे एक (मौसल० ७ । १८) । ये वसुदेवजीके साथ ही चितारोहण कीं (मौसल० ७ । २४) ।

भद्राश्व–मेरुपर्वतके समीपका एक द्वीप (भीष्म० ६ । १३) । धृतराष्ट्रके प्रति संजयद्वारा इसका विशेष वर्णन (भीष्म० ७ । १३—१८) । इस भद्राश्ववर्षपर युधिष्ठिरने शासन किया था (शान्ति० १४ । २४) ।

भय–अधर्मद्वारा निर्ऋतिके गर्भसे उत्पन्न तीन भयंकर राक्षसोंमेंसे एक । अन्य दोका नाम महाभय और मृत्यु था । ये राक्षस सदा पापकर्ममें लगे रहनेवाले हैं (आदि० ६६ । ५४-५५) ।

भयङ्कर–(१) सौवीरदेशका एक राजकुमार, जो जयद्रथके रथके पीछे हाथमें ध्वजा लेकर चलता था । यह द्रौपदीहरणके समय जयद्रथके साथ गया था (वन० २६५ । १०-११) । अर्जुनद्वारा इसका वध (वन० २७१ । २७) । (२) एक सनातन विश्वेदेव (अनु० ९१ । ३१) ।

भयङ्करी–स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । ४) ।

भरणी–(सत्ताईस नक्षत्रोंमेंसे एक) जो भरणी नक्षत्रमें ब्राह्मणोंको तिलमयी धेनुका दान करता है, वह इस लोकमें बहुत-सी गौओंको तथा परलोकमें महान् यशको प्राप्त करता है (अनु० ६४ । ३५) । इस नक्षत्रमें श्राद्ध करनेसे उत्तम आयुकी प्राप्ति होती है (अनु० ८९ । १४) । चन्द्र-व्रतमें भरणी नक्षत्रको चन्द्रमाका सिर मानकर पूजा आदि करनेका विधान है (अनु० ११० । ९) ।

भरत–(१) दुष्यन्तके द्वारा शकुन्तलाके गर्भसे उत्पन्न एक राजा । इन्हींसे भरतवंशकी प्रवृत्ति हुई तथा इन्हींसे शासित होनेके कारण इस देशका नाम भारत हुआ (आदि० २ । ९५-९६; आदि० ७४ । १३१) । इनकी उत्पत्तिका वृत्तान्त (आदि० ७३ । १५ से आदि० ७४ । २ तक) । बचपनमें बड़े-बड़े दानवों, राक्षसों, सिंहों आदिका दमन करनेके कारण ऋषियोंने इनका नाम 'सर्वदमन' रखा था (आदि० ७४ । ८) । (२) ये शंयु नामक अग्निके द्वितीय पुत्र हैं । समस्त पौर्णमासयागोंमें स्रुवासे हविष्यके साथ घी उठाकर इन्हींको प्रथम आधार अर्पित किया जाता है । इनका नामान्तर ऊर्ज है (वन० २१९ । ६) । (३) ये भरत नामक अग्निके पुत्र हैं (वन० २१९ । ७) । ये संतुष्ट होनेपर पुष्टि प्रदान करते हैं; इसलिये इनका एक नाम पुष्टिमति है (वन० २२१ । १) । (४) ये अद्भुत नामक अग्निके पुत्र हैं, जो मरे हुए प्राणियोंके शवका दाह करते हैं । इनका अग्निष्टोममें नित्य निवास है; अतः इन्हें 'नियत' भी कहते हैं (वन० २२२ । ६) । (५) महाराज दशरथके पुत्र, जो कैकेयीके गर्भसे उत्पन्न हुए थे, श्रीराम, लक्ष्मण और शत्रुघ्न इनके भाई थे (वन० २७४ । ७-८) । श्रीरामके वनमें चले जानेपर

कैकेयीका इन्हें ननिहालसे बुलवाना और अकण्टक राज्य ग्रहण करनेके लिये कहना (वन० २७७ । ३१-३२)। इनका अपनी माताको फटकारना और उसके कुकृत्यपर फूट-फूटकर रोना (वन० २७७ । ३३-३४)। इनकी चित्रकूट-यात्रा (वन० २७७ । ३५–३८)। श्रीरामके लौटनेपर उन्हें राज्य समर्पण करना (वन० २९१ । ६५)।

भरती–भरत नामक अग्निकी पुत्री (वन० २१९ । ७)।

भरद्वाज–(१) एक प्राचीन ऋषि। सप्तर्षियोंमेंसे एक। ये अर्जुनके जन्मोत्सवमें पधारे थे (आदि० १२२ । ५१)। इन्हींकी कृपासे भरतको भुमन्यु नामक पुत्र प्राप्त हुआ (आदि० ९४ । २२)। ये भगवान् भरद्वाज किसी समय गङ्गाद्वारमें रहकर कठोर व्रतका पालन करते थे। एक दिन उन्हें एक विशेष प्रकारके यज्ञका अनुष्ठान करना था। इसलिये वे महर्षियोंको साथ लेकर गङ्गाजीमें स्नान करनेके लिये गये। वहाँ पहलेसे नहाकर वस्त्र बदलती हुई घृताची अप्सराको देखकर महर्षिका वीर्य स्खलित हो गया। महर्षिने उसे उठाकर द्रोण (कलश) में रख दिया। उससे एक पुत्र उत्पन्न हुआ, जिसका नाम द्रोण रखा गया (किन्हीं-किन्हींके मतमें सप्तर्षि भरद्वाजसे द्रोणपिता भरद्वाज भिन्न हैं।) (आदि० १२९ । ३३—३८)। इन्होंने अग्निवेशको आग्नेयास्त्रकी शिक्षा दी (आदि० १२९ । ३९)। ये ब्रह्माजीकी सभामें बैठकर उनकी उपासना करते हैं (सभा० ११ । २२)। इनका अपने पुत्र यवक्रीतको अभिमान न करनेका उपदेश देना (वन० १३५ । ४४)। इनका पुत्रशोकके कारण विलाप करना (वन० १३७ । १०–१८)। इनके द्वारा अपने मित्र रैभ्यमुनिको शाप (वन० १३७ । १५)। इनका पुत्रशोकसे अग्निमें प्रवेश (वन० १३७ । १९)। रैभ्यपुत्र अर्वावसुके प्रयत्नसे इनका पुनरुज्जीवन (वन० १३८ । २२)। इनका द्रोणाचार्यके पास आकर युद्ध बंद करनेको कहना (द्रोण० १९० । ३५–४०)। भृगुजीसे सृष्टि आदिके सम्बन्धमें पूछना और उनका उत्तर प्राप्त करना (शान्ति० अध्याय १८२ से १९२ तक)। इनका भगवान् विष्णुकी छातीमें जलसहित हाथसे प्रहार करना (शान्ति० ३४२ । ५४)। राजा दिवोदासको शरण देकर पुत्रेष्टिद्वारा उन्हें पुत्र प्रदान करना (अनु० ३० । ३०)। वृषादर्भिसे प्रतिग्रहके दोष बताना (अनु० ९३ । ४१)। अरुन्धतीसे अपने शरीरकी दुर्बलताका कारण बताना (अनु० ९३ । ६६)। यातुधानीको अपने नामकी व्याख्या सुनाना (अनु० ९३ । ८८)। मृणालकी चोरीके विषयमें शपथ खाना (अनु० ९३ । ११८–११९)। अगस्त्यजीके कमलोंकी चोरी होनेपर शपथ खाना (अनु० ९४ । ३५)। (२) ये शंयु नामक अग्निके प्रथम पुत्र हैं। यज्ञमें प्रथम आज्यभागके द्वारा इन भरद्वाजनामक अग्निकी ही पूजा की जाती है (वन० २१९ । ५)। (३) एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ६८)।

मरुकक्ष–एक भारतीय जनपद। यहाँके निवासी शूद्र युधिष्ठिरके राजसूय-यज्ञमें भेंट लेकर आये थे (सभा० ५१ । ९-१०)।

भर्ग–एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ५१)।

भर्तृस्थान–यहाँ जानेसे अश्वमेधयज्ञका फल प्राप्त होता है। यहाँ महासेन कार्तिकेयका निवास-स्थान है। यहाँ यात्रीको सिद्धिकी प्राप्ति होती है (वन० ८४ । ७६; वन० ८५ । ६०)।

भल्लाट–एक भारतीय जनपद, जिसे पूर्वदिग्विजयके समय भीमसेनने जीता था (सभा० ३० । ५)।

भव–(१) ग्यारह रुद्रोंमेंसे एक। ये ब्रह्माजीके पौत्र एवं स्थाणुके पुत्र थे (आदि० ६६ । १–३)। (२) एक सनातन विश्वेदेव (अनु० ९१ । ३५)।

भवदा–स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । १३)।

भागीरथी–यहाँ जाकर तर्पण करना चाहिये (वन० ८५ । १४)।

भाङ्गासुरि–एक राजा, जो यमराजकी सभामें विराजमान होकर सूर्यपुत्र यमकी उपासना करते हैं (सभा० ८ । १५)।

भाण्डायनि–एक ऋषि, जो इन्द्रकी सभामें उपस्थित हो वज्रधारी इन्द्रकी उपासना करते हैं (सभा० ७ । १२)।

भाण्डीर–व्रजभूमिमें स्थित एक वन और वहाँका एक वट-वृक्ष, जिसकी छायामें भगवान् श्रीकृष्ण ग्वालबालोंके साथ बछड़े चराते तथा भाँति-भाँतिकी क्रीड़ाएँ किया करते थे। भाण्डीरवनमें निवास करनेवाले बहुत-से ग्वाले वहाँ क्रीड़ा करते हुए श्रीकृष्णको विविध प्रकारके खिलौनोंद्वारा प्रसन्न रखते थे (सभा० ३८ । २९ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ८००)। (वृन्दावनमें केशीघाटके सामने यमुनाजीके उस पार उत्तर दिशामें यह वन पड़ता है। पुराणोंमें ऐसी कथा आती है कि यहाँ ब्रह्माजीने श्रीराधा-कृष्णका विवाह कराया था)।

भाद्रपद (प्रौष्ठपद)—(बारह महीनोंमेंसे एक, जिस मासकी पूर्णिमाको पूर्वभाद्रपद अथवा उत्तरभाद्रपद नामक नक्षत्रका योग हो, उसे 'भाद्रपद' कहते हैं। यह श्रावणके बाद और आश्विनके पहले आता है।) भाद्रपद मासमें प्रतिदिन एक समय भोजन करनेवाला मनुष्य गोधनसे सम्पन्न, समृद्धिशील तथा अविचल ऐश्वर्यका भागी होता है (अनु० १०६ । २८)। भाद्रपदकी द्वादशी तिथिको

उपवासपूर्वक हृषीकेश नामसे भगवान्‌की पूजा करनेवाला मनुष्य सौत्रामणि यज्ञका फल पाता और पवित्रात्मा होता है (अनु० १०९ । १२)।

भानु–(१) एक देव, जो विवस्वान्‌के बोधक माने गये हैं (आदि० १ । ४२)। (२) 'प्राधा' नामवाली कश्यपकी पत्नीके गर्भसे उत्पन्न एक देवगन्धर्व (आदि० ६५ । ४७)। (३) ये श्रीकृष्णके पुत्र थे (सभा० २ । ३५)। मृत्युके पश्चात् ये विश्वेदेवोंमें प्रविष्ट हो गये (स्वर्गा० ५ । १६–१८)। (४) ये पाञ्चजन्य-नामक अग्निके पुत्र हैं, जो आङ्गिरस च्यवनके अंशसे उत्पन्न हुए थे (वन० २२० । ९)। इन्हींको मनु तथा बृहद्भानु भी कहते हैं (वन० २२१। ८)। (५) एक प्राचीन राजा, जो कृपाचार्यके साथ होनेवाले अर्जुनके युद्धको देखनेके लिये इन्द्रके विमानमें बैठकर पधारे थे (विराट० ५६ । ९-१०)।

भानुदत्त–यह शकुनिका भाई था, जो भीमसेनके साथ युद्ध-में उनके द्वारा मारा गया था (द्रोण० १५७।२४–२६)।

भानुदेव–एक पाञ्चाल योद्धा, जो कर्णद्वारा मारा गया (कर्ण० ४८ । १५)।

भानुमती–(१) यह कृतवीर्यकी पुत्री तथा पूरुवंशी राजा अहंयातिकी पत्नी थी। इसके गर्भसे सार्वभौम नामक पुत्र उत्पन्न हुआ (आदि० ९५ । १५)। (२) महर्षि अङ्गिराकी प्रथम पुत्री, जो बड़ी रूपवती थी (वन० २१८ । ३)।

भानुमान्–कलिङ्गदेशका राजकुमार। यह कौरवपक्षकी ओरसे युद्ध करते हुए भीमसेनद्वारा मारा गया (भीष्म० ५४ । ३३-३९)।

भानुसेन–यह कर्णका पुत्र था। भीमसेनद्वारा इसका वध (कर्ण० ४८ । २७)।

भारत–भरतके वंशमें उत्पन्न होनेवाले लोग 'भारत' नामसे कहे जाते हैं (आदि० १७२ । ५० के बाद दा० पाठ)।

भारतवर्ष–जम्बूद्वीपके नौ वर्षोंमेंसे एक (भीष्म० ६ । ७)। इसका विशेष वर्णन (भीष्म० अध्याय ९से १०तक)।

भारतसंहिता–व्यासजीद्वारा रचित चौबीस हजार श्लोकोंकी संहिता, जिसे विद्वान् पुरुष भारत भी कहते हैं (आदि० १ । १०२)।

भारती–एक नदी, जिसकी गणना अग्नियोंको उत्पन्न करने-वाली नदियोंमें है (वन० २२२ । २५-२६)।

भारद्वाज–एक ऋषि, जिन्होंने सत्यवान्‌के जीवित होनेका विश्वास दिलाकर राजा द्युमत्सेनको आश्वासन दिया था (वन० २९८ । १६)

भारद्वाजतीर्थ–यह पाँच नारीतीर्थोंमेंसे एक है। यहाँ अर्जुन तीर्थयात्राके समय गये थे (आदि० २१५ । ४)।

भारद्वाजी–भारतवर्षकी एक प्रधान नदी, जिसका जल यहाँ-के निवासी पीते हैं (भीष्म० ९ । २९)।

भारुण्ड–उत्तरकुरुवर्षमें रहनेवाले महाबली पक्षियोंकी एक जाति। इनकी चोंच बड़ी तीखी होती है और ये वहाँके मरे हुए लोगोंकी लाशोंको उठाकर कन्दराओंमें फेंक आते हैं (भीष्म० ७ ।१२; शान्ति० १६९ । ९)।

भार्गव–एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ५०)।

भालुकि–एक प्राचीन ऋषि, जो युधिष्ठिरकी सभामें विराजते हैं (सभा० ४ । १५)।

भावन–द्वारकाके समीपवर्ती वेणुमन्त पर्वतके निकट स्थित एक सुन्दर वन (सभा० ३८। २९ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ८१३)।

भाविनि–स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । ११)।

भास–एक पर्वत, जिसकी गणना पर्वतोंके अधिपतियोंमें है (आश्व० ४३ । ५)।

भासी–(१) कश्यपकी प्राधा नामवाली पत्नीसे उत्पन्न हुई आठ कन्याओंमेंसे एक (आदि० ६५ । ४६)। (२) यह ताम्राकी पुत्री है। इसने मुर्गों तथा गीधोंको जन्म दिया (आदि० ६६ । ५६-५७)।

भास्कर–कश्यपद्वारा अदितिके गर्भसे उत्पन्न बारह आदित्योंमेंसे एक (अनु० १५०। १४-१५)।

भास्करि–एक प्राचीन ऋषि, जो शरशय्यापर पड़े हुए भीष्मको देखनेके लिये आये थे (शान्ति० ४७ । १२)।

भास्वर–सूर्यद्वारा स्कन्दको दिये गये दो पार्षदोंमेंसे एक। दूसरेका नाम सुभ्राज था (शल्य० ४५ । ३१)।

भीम–(१) कश्यपद्वारा मुनिके गर्भसे उत्पन्न एक देवगन्धर्व (आदि० ६५ । ४३)। (२) धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६७ । ९८)। यह भीमसेनद्वारा मारा गया (भीष्म० ६४ । ३६-३७)। (३) ये महाराज ईलिनके द्वारा रथन्तरीके गर्भसे उत्पन्न हुए थे। इनके चार भाई और थे—दुष्यन्त, शूर, प्रवसु और वसु(आदि० ९४ । १७-१८) (४) ये विदर्भदेशके राजा थे (वन० ५३ । ५)। दशार्णनरेश सुदामाकी पुत्री इनकी पत्नी थी (वन० ६९ । १४–१५)। महर्षि दमनकी कृपासे इन्हें दम, दान्त और दमन नामक तीन पुत्र तथा दमयन्ती नाम्नी कन्याकी प्राप्ति (वन० ५३ । ६–९)। इनके द्वारा दमयन्तीके स्वयंवरका आयोजन (वन०

५४ । ८–९) । इनके द्वारा नलके साथ दमयन्तीका विवाह किया जाना (वन० ५७ । ४०-४१) । सारथि वार्ष्णेयके द्वारा लाये गये राजा नलके बच्चोंको अपने आश्रयमें रखना (वन० ६० । २३–२४) । दमयन्ती-द्वारा इनके गुणोंका वर्णन (वन० ६४ । ४४–४७) । इनका नल-दमयन्तीकी खोजके लिये ब्राह्मणोंको पुरस्कार-की घोषणा करके चारों ओर भेजना (वन० ६८ । २–५) । महारानीकी प्रेरणासे राजा नलकी खोजके लिये ब्राह्मणोंको आज्ञा देकर भेजना (वन० ६९ । ३४) । इनके द्वारा अपने यहाँ आये हुए अयोध्यानरेश ऋतुपर्ण-का स्वागत (वन० ७३ । २०) । प्रकट हुए राजा नलको पुत्रकी भाँति अपनाना और आदर-सत्कारके साथ आश्वासन देना (वन० ७७ । ३–५) । एक महीनेके पश्चात् सेना, रथ आदिके साथ राजा नलको विदा करना (वन० ७८ । १-२) । इनके द्वारा आदर-सत्कारके साथ राजा नलसहित दमयन्तीकी विदाई (वन० ७९ । १-२) । (५) ये देवताओंके यज्ञका विनाश करनेवाले पाञ्चजन्यद्वारा उत्पन्न पाँच विनायकोंमें हैं (वन० २२१ । ११) । (६) अंशद्वारा स्कन्दको दिये गये पाँच अनुचरोंमेंसे एक । शेष चारोंके नाम—परिघ, वट, दहति और दहन (शल्य० ४५ । ३४-३५) । (७) एक प्राचीन नरेश । ये यमकी सभामें रहकर सूर्यपुत्र यमकी उपासना करते हैं, इस सभामें भीम नामके सौ राजा हैं (सभा० ८ । २४) । इन्होंने तपस्याद्वारा प्रजाओंका कष्टसे उद्धार किया था (वन० ३ । ११) ये प्राचीनकालमें पृथ्वीके शासक थे; किंतु कालसे पीड़ित हो इसे छोड़कर चले गये (शान्ति० २२७ । ४९) ।

भीमजानु–एक प्राचीन नरेश, जो यमसभामें रहकर सूर्यपुत्र यमकी उपासना करते हैं (सभा० ८ । २१) ।

भीमबल (भूरिबल)–(१) धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६७ । ९८; आदि० ११६ । ७) । भीमसेन-द्वारा इसका वध (शल्य० २६ । १४-१५) । (२) ये देवताओंके यज्ञका विनाश करनेवाले पाञ्चजन्यद्वारा उत्पन्न पाँच विनायकोंमें हैं (वन० २२१ । ११) ।

भीमरथ–(१) धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६७ । १०३; आदि० ११६ । १२) । भीमसेनद्वारा इसका वध (भीष्म० ६४ । ३६-३७) । (२) कौरवपक्षीय योद्धा, जो द्रोणनिर्मित गरुडव्यूहके हृदय-स्थानमें खड़ा हुआ था (द्रोण० २० । १२) । इसने पाण्डवपक्षीय म्लेच्छराज शाल्वका वध किया था (द्रोण० २५ । २६) । पहले जब युधिष्ठिर राजा थे, उस समय यह उनके सभाभवनमें बैठा करता था (सभा० ४ । २६) ।

भीमरथी (भीमा)–दक्षिणभारतमें स्थित एक नदी, जो समस्त पापभयका नाश करनेवाली है (वन० ८८ । ३) । (इसीके तटपर सुप्रसिद्ध तीर्थ पण्ढरपुर है ।) यह भारतवर्षकी मुख्य नदियोंमें है । इसके जलको यहाँके निवासी पीते हैं (भीष्म० ९ । २०) । इसीको 'भीमा' भी कहते हैं (भीष्म० ९ । २२) ।

भीमवेग–धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६७ । ९८; आदि० ११६ । ७) ।

भीमशर–धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६७ । ९९) ।

भीमसेन–(१) ये महाराज परीक्षित्के पुत्र तथा जनमेजय-के भाई थे । इन्होंने कुरुक्षेत्रके यज्ञमें देवताओंकी कुतिया सरमाके बेटेको पीटा था (आदि० ३ । १-२) । (२) कश्यपपत्नी मुनिके गर्भसे उत्पन्न एक देवगन्धर्व (आदि० ६५ । ४२) । ये अर्जुनके जन्मोत्सवमें पधारे थे (आदि० १२२ । ५५) । (३) ये सोमवंशीय महाराज अविक्षित्के पौत्र तथा परीक्षित्के पुत्र थे । इनकी माताका नाम सुयशा था । इनके द्वारा केकय देशकी राजकुमारी 'कुमारी'के गर्भसे प्रतिश्रवाका जन्म हुआ (आदि० ९४ । ५२–५५; आदि० ९५ । ४२-४३) । (४) ये महाराज पाण्डुके क्षेत्रज पुत्र हैं । वायुदेवके द्वारा कुन्तीके गर्भसे इनका जन्म हुआ था । इनके जन्म-कालमें आकाशवाणी हुई कि यह कुमार समस्त बलवानोंमें श्रेष्ठ है (आदि० १२२ । १४-१५) । जन्मके दसवें दिन ये माताकी गोदसे एक शिलाखण्डपर गिर पड़े और इनके शरीरकी चोटसे वह शिला चूर-चूर हो गयी (आदि० १२२ । १५ के बाद दाक्षिणात्य पाठसे १८ तक) । इनके जन्मकालीन ग्रहोंकी स्थिति (आदि० १२२ । १८ के बाद दाक्षिणात्य पाठ) । शतशृङ्गनिवासी ऋषियोंद्वारा इनका नामकरण-संस्कार (आदि० १२३ । १९-२०) । वसुदेवके पुरोहित काश्यपके द्वारा इनके उपनयनादि-संस्कार सम्पन्न हुए तथा इन्होंने राजर्षि शुकसे गदायुद्धकी शिक्षा प्राप्त की (आदि० १२३ । ३१ के बाद दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ३६९) । कृपाचार्यका इन (पाण्डवों) को अस्त्र-शस्त्रकी शिक्षा देना (आदि० १२९ । २३) । द्रोणाचार्यने इन (पाण्डवों) को नाना प्रकारकी मानव एवं दिव्य अस्त्र-शस्त्रोंकी शिक्षा दी (आदि० १३१ । ४, ९) । इनके द्वारा द्रौपदीके गर्भसे सुतसोमका जन्म (आदि० ९५ । ७५) । इनके द्वारा काशिराजकी पुत्री बलन्धराके गर्भसे 'सर्वग' की उत्पत्ति (आदि० ९५ । ७७) । इनके द्वारा बाल-क्रीडाओंमें धृतराष्ट्रपुत्रोंकी पराजय (आदि० १२७ । १६–२४) । दुर्योधनका इन्हें विष मिला हुआ भोजन कराना और मूर्च्छित होनेपर लताओंसे बाँधकर गङ्गाजलमें फेंकना (आदि० १२७ । ४५–५४) । मूर्च्छितावस्थामें इनका

नागलोकमें पहुँचना और वहाँ सर्पोंके डँसनेसे खाये हुए विषके दूर होनेपर अपना पराक्रम प्रकट करना (आदि० १२७ । ५५–५९) । नागलोकमें इनका आर्यक नागद्वारा आलिङ्गन और आर्यककी प्रेरणासे प्रसन्न हुए नागराज वासुकिकी आज्ञासे इनके द्वारा आठ कुण्डोंका दिव्य रसपान, जिससे इन्हें एक हजार हाथियोंके बलकी प्राप्ति हुई (आदि० १२७ । ६३–७१) । आठवें दिन रसके पच जानेपर इनका जागना और नागोंद्वारा इनका मङ्गलाचारपूर्वक स्वागत-सत्कार तथा दस हजार हाथियोंके समान बलशाली होनेका वरदान देकर इन्हें पुनः ऊपर पहुँचा देना (आदि० १२८ । २०–२८) । इनका नागलोकसे लौटकर माताको प्रणाम करना तथा भाइयोंसे मिलना (आदि० १२८ । २९-३०) । गदायुद्धमें इनका प्रवीण होना (आदि० १३१ । ६१) । हस्तिनापुरकी रङ्गभूमिमें परीक्षाके समय दुर्योधनके साथ गदायुद्ध एवं अश्वत्थामाद्वारा उस युद्धका निवारण (आदि० १३४ । १–५) । इनके द्वारा कर्णका तिरस्कार (आदि० १३६ । ६-७) । कर्णका पक्ष लेकर दुर्योधनका इनपर आक्षेप करना (आदि० १३६ । १०–१६) । इनके द्वारा द्रुपदकी गजसेनाका संहार (आदि० १३७ । ३१–३५) । बलरामजीसे इनकी गदायुद्धविषयक शिक्षा (आदि० १३८ । ४) । इनके द्वारा लाक्षागृहका जलाया जाना (आदि० १४७ । १०) । सुरंगसे निकल भागते समय इनके द्वारा मार्गमें थके हुए भाइयों एवं माताका परिवहन (आदि० १४७ । २०-२१) । धरतीपर सोये हुए भाइयों एवं माताको देखकर इनका विषाद करना (आदि० १५० । २१–४१) । हिडिम्बवनमें इनका जागरण करना (आदि० १५० । ४४-४५) । हिडिम्बाके साथ वार्तालाप करना (आदि० १५१ । २३–३६) । हिडिम्बासुरके साथ इनका युद्ध (आदि० १५२ । ३८–४५) । इनके द्वारा हिडिम्बका वध (आदि० १५३ । ३२) । हिडिम्बाको मारनेके लिये इनका उद्यत होना तथा युधिष्ठिरका इन्हें रोकना (आदि० १५४ । १-२) । हिडिम्बाको पुत्र दान करनेके लिये इन्हें माताका आदेश प्राप्त होना (आदि० १५४ । १८ के बाद दाक्षिणात्य पाठ) । हिडिम्बाके साथ इनकी शर्त (आदि० १५४ । २०) । हिडिम्बाके साथ इनका विहार (आदि० १५४ । २१–३०) । इनके द्वारा हिडिम्बाके गर्भसे घटोत्कचका जन्म (आदि० १५४ । ३१) । एकचक्रामें निवास करते समय पूरी भिक्षाका आधा भाग इनके उपभोगमें आता था (आदि० १५६ । ६) । ब्राह्मणका उपकार करनेके लिये इन्हें माता कुन्तीकी आज्ञा (आदि० १६० । २०) । इनका भोजन-सामग्री लेकर बकासुरके पास जाना और स्वयं ही भोजन करते हुए उसे पुकारना (आदि० १६२ । ४-५) । बकासुरका आना और कुपित होकर इनके साथ युद्ध छेड़ना (आदि० १६२ । ६–२८) । इनके द्वारा बकासुरका वध (आदि० १६३ । १) । इनके द्वारा मनुष्योंकी हिंसा न करनेकी शर्तपर बकके परिवारको जीवनदान देना (आदि० १६३ । २–४) । द्रौपदीके स्वयंवरमें आये हुए राजाओंके साथ ब्राह्मणवेशमें युद्ध करते समय इनका श्रीकृष्णद्वारा बलरामजीको परिचय देना (आदि० १८८ । १४—२१) । स्वयंवरके अवसरपर शल्यके साथ इनका युद्ध और इनके द्वारा शल्यकी पराजय (आदि० १८९ । २३–२९) । द्रौपदीके साथ इनका विधिपूर्वक विवाह (आदि० १९७ । १३) । मयासुरद्वारा इनको गदाकी भेंट (सभा० ३ । १८–२१) । जरासंधवधके विषयमें इनकी युधिष्ठिर और श्रीकृष्णके साथ बातचीत (सभा० १५ । ११–१३ के बाद दाक्षिणात्य पाठ) । जरासंधवधके लिये युधिष्ठिर और अर्जुनके साथ इनकी मगधयात्रा (सभा० २० अध्याय) । जरासंधके साथ इनका मल्लयुद्ध एवं श्रीकृष्णका जरासंधको चीरनेके लिये इन्हें संकेत करना (सभा० २३ । १० से २४ । ६ तक) । इनका जरासंधको चीर डालना (सभा० २४ । ७) । जरासंधके पुनः जीवित हो जानेपर श्रीकृष्णद्वारा इन्हें पुनः संकेतकी प्राप्ति और उस संकेतके अनुसार इनका जरासंधको चीरकर दो दिशाओंमें फेंक देना (सभा० २४ । ७ के बाद दाक्षिणात्य पाठ) । इनका पूर्वदिशाके प्रदेशोंको जीतनेके लिये प्रस्थान और विभिन्न देशोंपर विजय पाना (सभा० २९ अध्याय) । भीमका पूर्व दिशाके अनेक देशों और राजाओंको जीतकर भारी धनसम्पत्तिके साथ इन्द्रप्रस्थ लौटना (सभा० ३० अध्याय) । प्रथम पूजाके अवसरपर भीष्म तथा श्रीकृष्णकी निन्दा करनेपर शिशुपालको मारनेके लिये इनका उद्यत होना और भीष्मजीका इन्हें शान्त करना (सभा० ४२ अध्याय) । राजसूय-यज्ञकी समाप्तिपर ये भीष्म तथा धृतराष्ट्रको पहुँचाने गये थे (सभा० ४५ । ४८) । दुष्ट कौरवोंद्वारा भरी सभामें द्रौपदीके अपमान किये जानेपर इनका कुपित होकर युधिष्ठिरकी भुजाओंको जलानेके लिये कहना (आदि० ६८ । ६) । इनके द्वारा दुःशासनकी छाती फाड़कर उसके रक्त पीनेकी भीषण प्रतिज्ञा (सभा० ६८ । ५२-५३) । इनके रोषपूर्ण उद्गार (सभा० ७० । १२—१७) । दुर्योधनकी जाँघ तोड़ देनेके लिये इनकी प्रतिज्ञा (सभा० ७१ । १४) । इनका द्यूतसभामें समस्त शत्रुओंको

मारनेके लिये उद्यत होना (सभा० ७२ । १०-११) । दुःशासनके उपहास करनेपर उसे मारनेके लिये इनकी प्रतिज्ञा (सभा० ७७ । १६–१८) । दुःशासनका रक्त पीने तथा धृतराष्ट्रके सभी पुत्रोंका वध करनेके लिये इनकी प्रतिज्ञा (सभा० ७७ । २०–२२) । दुर्योधनको मारनेके लिये प्रतिज्ञा करना (सभा० ७७ । २६–२८) । इनकी अपनी भुजाओंकी ओर देखते हुए वन-गमन करना (सभा० ८० । ४) । किर्मीरके साथ इनका युद्ध तथा इनके द्वारा उसका वध (वन० ११ । २८—६७) । इनका पुरुषार्थकी प्रशंसा करते हुए युधिष्ठिरसे युद्ध छेड़नेके लिये अनुरोध (वन० ३३ अध्याय) । इनका युधिष्ठिरको युद्ध करनेके लिये उत्साहित करना (वन० ३५ अध्याय) । इनकी अर्जुनके लिये चिन्ता (वन० ८० । १७—२१) । इनका गन्धमादन पर्वतपर चढ़नेका उत्साह प्रकट करना (वन० १४० । ९—१७) । गन्धमादनकी यात्रामें इनके द्वारा घटोत्कचका स्मरण किया जाना (वन० १४४ । २५) । इनका सौगन्धिक पुष्पके लानेके लिये प्रस्थान करना (वन० १४६ । ९) । कदलीवनमें इनकी हनुमान्‌जीसे भेंट (वन० १४६ । ८६) । इनका हनुमान्‌जीके साथ संवाद (वन० अध्याय १४७ से १५० तक) । इन्हें हनुमान्‌जीका आश्वासन (वन० १५१ । १६—१९) । भीमसेनका सौगन्धिक वनमें पहुँचना (वन० १५२ अध्याय) । इनका सौगन्धिक सरोवरके पास पहुँचना (वन० १५३ । १०) । इनका क्रोधवश नामक राक्षसोंके साथ युद्ध और उन्हें पराजित करके सौगन्धिक पुष्प तोड़ना (वन० १५४ । १८—२३) । जटासुरके साथ इनका युद्ध तथा इनके द्वारा उसका वध (वन० १५७ । ५६—७०) । हिमालयके शिखरपर यक्षों और राक्षसोंके साथ इनका युद्ध तथा इनके द्वारा राक्षसराज मणिमान्‌का वध (वन० १६० । ४९—७७) । इनका गन्धमादनसे प्रस्थान करनेके लिये युधिष्ठिरसे वार्तालाप (वन० १७६ । ७—१६) । अजगरद्वारा इनका पकड़ा जाना (वन० १७८ । २८) । अजगरद्वारा पकड़े जानेपर उससे संवाद-रूपमें इनका विलाप करना (वन० १७९ । २५—३८) । अजगररूपधारी नहुषके चंगुलसे इनका छुटकारा पाना (वन० १८१ । ४३) । चित्रसेनद्वारा दुर्योधनके पकड़े जानेपर इनकी कटु-उक्ति (वन० २४२ । १५—२१) । इनके द्वारा कोटिकास्यका वध (वन० २७१ । २६) । जयद्रथको पकड़ उसके बाल काटकर पाँच चोटियाँ रखना और महाराज युधिष्ठिरका दास घोषित करना (वन० २७२ । ३—११) । द्वैतवनमें जल लानेके लिये जाना और सरोवरपर मूर्च्छित होना (वन० ३१२ । ३३—४०) । अज्ञातवासके लिये चिन्तित हुए युधिष्ठिरको उत्साहित करना (वन० ३१५ । २४–२६) । विराटनगरमें बल्लव नामसे रहनेकी बात बताना (विराट० २ । १) । राजा विराटसे अपने यहाँ रखनेके लिये प्रार्थना करना (विराट० ८ । ७) । जीमूत नामक मल्लके साथ कुश्ती लड़ना और उसका वध करना (विराट० १३ । २४—३६) । द्रौपदीसे रातमें पाकशालामें आनेका कारण पूछना (विराट० १७ । १७—२१) । प्राचीन पतिव्रताओंके उदाहरणद्वारा द्रौपदीको समझाना (विराट० २१ । १—१७ के बादतक) । कीचकको मारनेके लिये द्रौपदीको विश्वास दिलाकर नृत्यशालामें प्रवेश करना (विराट० २२ । ३८) । कीचकके साथ इनका युद्ध और उसका वध करना (विराट० २२ । ५२—८२) । इनके द्वारा एक सौ पाँच उपकीचकोंका वध और द्रौपदीको बन्धनमुक्त करना (विराट० २३ । २७-२८) । युधिष्ठिरके आदेशसे सुशर्माको जीते-जी पकड़ लेना (विराट० ३३ । ४८) । युधिष्ठिरके आदेशसे सुशर्माको छोड़ना और उसे विराटका दास घोषित करना (विराट० ३३ । ५९) । संजयद्वारा इनकी वीरताका वर्णन (उद्योग० ५० । १९—२५) । श्रीकृष्णसे इनका शान्तिविषयक प्रस्ताव करना (उद्योग० ७४ अध्याय) । अपने बलका वर्णन करते हुए श्रीकृष्णको उत्तर देना (उद्योग० ७६ अध्याय) । शिखण्डीको प्रधान सेनापति बनानेका प्रस्ताव करना (उद्योग० १५१ । २९–३२) । उलूकसे दुर्योधनके संदेशका उत्तर देना (उद्योग० १६२ । २०–२९) । उलूकसे दुर्योधनके संदेशका उत्तर देना (उद्योग० १६३ । ३२—३६) । कवच उतारकर पैदल ही कौरव-सेनाकी ओर जाते हुए युधिष्ठिरसे उसका कारण पूछना (भीष्म० ४३ । १७) । इनकी विकट गर्जनाका भयंकर रूप (भीष्म० ४४ । ८–१३) । प्रथम दिनके युद्धारम्भमें दुर्योधनके साथ इनका द्वन्द्वयुद्ध (भीष्म० ४५ । १९-२०) । कलिंगोंके साथ युद्ध करते समय इनके द्वारा शक्रदेवका वध (भीष्म० ५४ । २५) । इनके द्वारा भानुमान्‌का वध (भीष्म० ५४ । ३९) । कलिंगराज श्रुतायुके चक्ररक्षक सत्यदेव और सत्यका इनके द्वारा वध (भीष्म० ५४ । ७६) । इनके द्वारा केतुमान्‌का वध (भीष्म० ५४ । ७७) । गज-सेनाका संहार करके रक्तनदीका निर्माण करना (भीष्म० ५४ । १०३) । इनके द्वारा दुर्योधनकी पराजय (भीष्म० ५८ । १६—१९) । इनके द्वारा दुर्योधनकी गजसेनाका संहार (भीष्म० ६२ । ४९—६५) । इनका अद्भुत पराक्रम और भीष्मके साथ युद्ध (भीष्म० ६३ । १—२६) । धृतराष्ट्रपुत्रोंके साथ इनका युद्ध

और इनके द्वारा सेनापति, जलसंध, सुषेण, उग्र, वीरबाहु, भीम, भीमरथ और सुलोचन—इन आठ धृतराष्ट्रपुत्रोंका वध (भीष्म० ६४ । ३२—३८) । इनका घमासान युद्ध (भीष्म० ७० अध्याय) । भीष्मके साथ इनका घोर युद्ध (भीष्म० ७२ । २१—२५) । दुर्योधनके साथ इनका युद्ध (भीष्म० ७३ । १७—२३) । धृतराष्ट्र-पुत्रोंपर आक्रमण करके घोर पराक्रम प्रकट करना (भीष्म० ७७ । ६—३६) । इनका दुर्योधनको पराजित करना (भीष्म० ७९ । ११-१६) । इनके द्वारा कृतवर्माकी पराजय (भीष्म० ८२ । ६०-६१) । इनका अद्भुत पुरुषार्थ (भीष्म० ८५ । ३२—४०) । भीष्मके सारथिको मारकर उन्हें युद्ध-मैदानसे विलग कर देना (भीष्म० ८८ । १२) । इनके द्वारा धृतराष्ट्रके आठ पुत्रोंका वध (भीष्म० ८८ । १३—२९) । इनके द्वारा गजसेनाका संहार (भीष्म० ८९ । २६—३१) । इनके प्रहारसे द्रोणाचार्यका मूर्च्छित होना (भीष्म० ९४ । १८-१९) । इनके द्वारा धृतराष्ट्रके नौ पुत्रोंका वध (भीष्म० ९६ । २३—२७) । इनके द्वारा गजसेनाका संहार (भीष्म० १०२ । ३१—३९) । इनके द्वारा बाह्लीककी पराजय (भीष्म० १०४ । १८—२७) । भूरिश्रवाके साथ द्वन्द्वयुद्ध करना (भीष्म० ११० । १०-११; भीष्म० १११ । ४४—४९) । इनका दस प्रमुख महारथियोंके साथ युद्ध करना और अद्भुत पराक्रम दिखाना (भीष्म० अध्याय ११३ से ११४ तक) । इनके द्वारा गजसेनाका संहार (भीष्म० ११६ । ३७—३९) । धृतराष्ट्रद्वारा इनकी वीरताका वर्णन (द्रोण० १० । १३-१४) । विविंशतिके साथ इनका युद्ध (द्रोण० १४ । २७—३०) । शल्यके साथ गदायुद्धमें उनको पराजित करना (द्रोण० १५ । ८—३२) । इनके रथके घोड़ोंका वर्णन (द्रोण० २३ । ३) । दुर्मर्षणके साथ इनका युद्ध (द्रोण० २५ । ५—७) । इनके द्वारा म्लेच्छजातीय राजा अङ्गका वध (द्रोण० २६ । १७) । भगदत्त और उनके गजराजके साथ युद्धमें पराजित होकर भागना (द्रोण० २६ । १९—२९) । इनके द्वारा कर्णपर धावा करना और उसके पंद्रह योद्धाओंका एक साथ वध कर देना (द्रोण० ३२ । ६३-६४) । चक्रव्यूहमें साथ चलनेके लिये अभिमन्युको आश्वासन (द्रोण० ३५ । २२-२३) । अर्जुनद्वारा की गयी जयद्रथ-वधकी प्रतिज्ञाका अनुमोदन करना (द्रोण० ७३ । ५३ के बाद दाक्षिणात्य पाठ) । चित्रसेन, विविंशति और विकर्णके साथ इनका युद्ध (द्रोण० ९६ । ३१) । अलम्बुषके साथ इनका युद्ध (द्रोण० १०६ । १६-१७) । इनके द्वारा अलम्बुषकी पराजय (द्रोण० १०८ । ४२) । सात्यकिके साथ अर्जुनका समाचार लानेके लिये जाते समय सात्यकिके कहनेसे युधिष्ठिरकी रक्षाके लिये लौट आना (द्रोण० ११२ । ७०—७६) । कृतवर्माके साथ इनका युद्ध (द्रोण० ११४ । ६७—८०) । घबराये हुए युधिष्ठिरको सान्त्वना देना (द्रोण० १२६ । ३२—३४) । धृष्टद्युम्नको युधिष्ठिरकी रक्षाका भार सौंपना (द्रोण० १२७ । ४—९) । युधिष्ठिरकी आज्ञासे अर्जुनके पास जानेके लिये प्रस्थान करना (द्रोण० १२७ । २९) । इनके द्वारा द्रोणाचार्यकी पराजय (द्रोण० १२७ । ४२—५४) । इनके द्वारा कुण्डभेदी, सुषेण, दीर्घलोचन, वृन्दारक, अभय, रौद्रकर्मा, दुर्विमोचन, विन्द, अनुविन्द, सुवर्मा और सुदर्शनका वध (द्रोण० १२७ । ६०—६७) । इनके द्वारा रथसहित द्रोणाचार्यका आठ बार फेंका जाना (द्रोण० १२८ । १८—२१) । श्रीकृष्ण और अर्जुनके पास पहुँचकर युधिष्ठिरको सूचना देनेके लिये सिंहनाद करना (द्रोण० १२८ । ३२) । कर्णके साथ इनका युद्ध और उसे पराजित करना (द्रोण० १२९ अध्याय) । इनके द्वारा दुःशलका वध (द्रोण० १२९ । ३९ के बाद) । कर्णके साथ युद्ध और उसे परास्त करना (द्रोण० १३१ अध्याय) । कर्णके साथ घोर युद्ध (द्रोण० अध्याय १३२ से १३३ तक) । इनके द्वारा धृतराष्ट्रपुत्र दुर्जयका वध (द्रोण० १३३ । ४१-४२) । कर्णके साथ युद्ध और इनको परास्त करना (द्रोण० १३४ अध्याय) । इनके द्वारा धृतराष्ट्र-पुत्र दुर्मुखका वध (द्रोण० १३४ । २०-२९) । इनके द्वारा दुर्मर्षण, दुःसह, दुर्मद, दुर्धर (दुराधार) और जयका वध (द्रोण० १३५ । ३०—३६) । इनके द्वारा कर्णकी पराजय (द्रोण० १३६ । १७) । इनके द्वारा चित्र, उपचित्र, चित्राक्ष, चारुचित्र, शरासन, चित्रायुध और चित्रवर्माका वध (द्रोण० १३६ । २०—२२) । कर्णके साथ इनका घोर युद्ध (द्रोण० १३७ अध्याय) । इनके द्वारा शत्रुंजय, शत्रुसह, चित्र (चित्रबाण), चित्रायुध (अग्रायुध), दृढ़ (दृढवर्मा), चित्रसेन (उग्रसेन) और विकर्णका वध (द्रोण० १३७ । २९-३०) । कर्णके साथ इनका भयंकर युद्ध (द्रोण० १३८ अध्याय) । कर्णके साथ इनका भयंकर युद्ध और उसे परास्त करना (द्रोण० १३९ । ९) । इनके द्वारा कर्णके बहुत-से धनुषोंका काटा जाना (द्रोण० १३९ । १९—२२) । अस्त्रहीन होनेपर कर्णको पकड़नेके लिये इनका उसके रथपर चढ़ जाना (द्रोण० १३९ । ७४-७५) । कर्णके प्रहारसे इनका मूर्च्छित होना (द्रोण० १३९ । ९१) । अर्जुनसे कर्णको मारनेके लिये

कहना (द्रोण० १४८ । ३–६) । इनके द्वारा घूँसे और थप्पड़से कलिंगराजकुमारका वध (द्रोण० १५५ । २४) । इनके द्वारा घूँसे और थप्पड़से ध्रुवका वध (द्रोण० १५५ । २७) । इनके द्वारा घूँसे और थप्पड़से जयरातका वध (द्रोण० १५५ । २८) । इनके द्वारा घूँसे और थप्पड़से दुर्मद (दुर्धर्ष) और दुष्कर्षका वध (द्रोण० १५५ । ४०) । इनके परिघके प्रहारसे सोमदत्तका मूर्च्छित होना (द्रोण० १५७ । १०-११) । इनके द्वारा बाह्लीकका वध (द्रोण० १५७ । ११–१५) । इनके द्वारा नागदत्त, दृढरथ (दृढाश्व), महाबाहु, अयोभुज (अयोबाहु), दृढ (दृढक्षत्र), सुहस्त, विरजा, प्रमाथी, उग्र (उग्रश्रवा) और अनुयायी (अग्रयायी) का वध (द्रोण० १५७ । १६—१९) ।इनके द्वारा शतचन्द्रका वध (द्रोण० १५७ । २३) । इनके द्वारा शकुनिके भाई गवाक्ष, शरभ, विभु, सुभग और भानुदत्तका वध (द्रोण० १५७ । २३–२६) । इनका द्रोणाचार्यके साथ युद्ध करते समय कौरवसेनाको खदेड़ना (द्रोण० १६१ अध्याय) । दुर्योधनके साथ इनका युद्ध और उसे पराजित करना (द्रोण० १६६ । ४३–५८) । अलायुधके साथ इनका घोर संग्राम (द्रोण० १७७ अध्याय) । इनके द्वारा अर्जुनको प्रोत्साहन-प्रदान (द्रोण० १८६ । ९–११) । धृष्टद्युम्नको उपालम्भ देना (द्रोण० १८६ । ५१–५४) । कर्णके साथ युद्ध-में उससे पराजित होना (द्रोण० १८८ । १०—२२) । कर्णके साथ इनका युद्ध (द्रोण० १८९ । ५०—५५) । अश्वत्थामा नामक हाथीको मारकर द्रोणाचार्यको अश्वत्थामाके मारे जानेकी झूठी खबर सुनाना (द्रोण० १९० । १५-१६) । द्रोणाचार्यको उपालम्भ देते हुए अश्वत्थामाकी मृत्यु बताना (द्रोण० १९२ । ३७–४२) । अर्जुनसे अपना वीरोचित उद्गार प्रकट करना (द्रोण० १९७ । ३–२२) । धृष्टद्युम्नसे वाग्बाणोंद्वारा लड़ते हुए सात्यकिको पकड़कर शान्त करना (द्रोण० १९८ । ५०–५२) ।इनका वीरोचित उद्गार और नारायणास्त्रके विरुद्ध संग्राम करना (द्रोण० १९९ । ४५–६३) । अश्वत्थामाके साथ इनका घोर युद्ध और सारथिके मारे जानेपर युद्धसे हट जाना (द्रोण० २०० । ८७–१२८) । इनके द्वारा कुलूतनरेश क्षेमधूर्तिका वध (कर्ण० १२ । २५–४४) । अश्वत्थामाके साथ इनका घोर युद्ध और उसके प्रहारसे मूर्च्छित होना (कर्ण० १५ अध्याय) । इनके द्वारा कर्ण-पुत्र भानुसेनका वध (कर्ण० ४८ । २७) । कर्णको पराजित करके उसकी जीभ काटनेको उद्यत होना (कर्ण० ५० । ४७ के बादतक) । कर्णके साथ इनका घोर युद्ध और गजसेना, रथसेना तथा घुड़सवारों-का वध (कर्ण० ५१ अध्याय) । इनके द्वारा विवित्सु, विकट, सम, क्राथ (क्रथन), नन्द और उपनन्दका वध (कर्ण० ५१ । १२–१९) । इनके द्वारा कौरवसेनाका महान् संहार (कर्ण० ५६ । ७०–८१) । इनके द्वारा दुर्योधनकी पराजय और गजसेनाका संहार (कर्ण० ६१ । ५३, ६२–७४) । युद्धका सारा भार अपने ऊपर लेकर अर्जुनको युधिष्ठिरके पास भेजना (कर्ण० ६५ । १०) । अपने सारथि विशोकके साथ इनका वार्तालाप (कर्ण० ७६ अध्याय) । इनके द्वारा कौरव-सेनाका भीषण संहार और शकुनिकी पराजय (कर्ण० ७७ । २४–७०; कर्ण० ८१ । २४–३५) । दुःशासनके साथ इनका घोर युद्ध (कर्ण० ८२ । ३३ से कर्ण० ८३ । १० तक) । दुःशासनका वध करके उसका रक्त पान करना (कर्ण० ८३ । २८-२९) । इनके द्वारा धृतराष्ट्रके दस पुत्रों (निषङ्गी, कवची, पाशी, दण्डधार, धनुर्ग्रह, अलोलुप, शल, संध (सत्यसंध), वातवेग और सुवर्चा) का वध (कर्ण० ८४ । २–६) । कर्णवधके लिये अर्जुनको प्रोत्साहन देना (कर्ण० ८९ । ३७–४२) । इनके द्वारा पचीस हजार पैदल सेनाका वध (कर्ण० ९३ । २८) । इनके द्वारा कृतवर्माकी पराजय (शल्य० ११ । ४५-४७) । इनका शल्यको पराजित करना (शल्य० ११ । ६१-६२) । शल्यके साथ इनका गदायुद्ध (शल्य० १२ । १२–२७) । शल्यके साथ इनका घोर युद्ध (शल्य० १३ अध्याय; शल्य० १५ । १६–२७) । इनके द्वारा दुर्योधनकी पराजय (शल्य० १६ । ४२–४४) । इनके द्वारा शल्यके सारथि और घोड़ोंका वध (शल्य० १७ । २७) । इनके द्वारा इक्कीस हजार पैदल सेनाका वध (शल्य० १९ । ४९-५०) । इनके द्वारा गजसेना-का संहार (शल्य० २५ । ३०–३६) । इनके द्वारा धृत-राष्ट्रके ग्यारह पुत्रों (दुर्मर्षण, श्रुतान्त (चित्राङ्ग), जैत्र, भूरिबल (भीमबल), रवि, जयत्सेन, सुजात, दुर्विषह (दुर्विषाह), दुर्विमोचन, दुष्प्रधर्ष (दुष्प्रधर्षण), श्रुतर्वा) का वध (शल्य० २६ । ४–३२) । धृतराष्ट्रपुत्र सुदर्शनका इनके द्वारा वध (शल्य० २७ । ४९-५०) । गदायुद्धके प्रारम्भमें दुर्योधनको चेतावनी देना (शल्य० ३३ । ४३-५१) । इनका युधिष्ठिरसे अपना उत्साह प्रकट करना (शल्य० ५६ । १६–२७) । दुर्योधनको चेतावनी देना (शल्य० ५६ । २९–३६) । दुर्योधनके साथ भयंकर गदायुद्ध (शल्य० ५७ अध्याय) । गदाप्रहारसे दुर्योधन-की जाँघ तोड़ देना (शल्य० ५८ । ४७) । इनके द्वारा दुर्योधनका तिरस्कार करके उसके मस्तकको पैरसे ठुकराना

(शल्य० ५९ । ४–१२) । युधिष्ठिरके साथ विजयसूचक वार्तालाप करना (शल्य० ६० । ४३–४६) । दुर्योधनको गिरानेके पश्चात् पाण्डवसैनिकोंद्वारा इनकी प्रशंसा (शल्य० ६१ । ७–१६) । अश्वत्थामाको मारनेके लिये इनका प्रस्थान करना (सौप्तिक० ११ । २८–३८)। गङ्गातटपर व्यासजीके पास बैठे हुए अश्वत्थामाको ललकारना (सौप्तिक० १३ । १६-१७) । अश्वत्थामाकी मणि द्रौपदीको देकर उसे शान्त करना (सौप्तिक० १६ । २६–३३) । अपनी सफाई देते हुए गान्धारीसे क्षमा माँगना (स्त्री० १५ । २–११; १५–२०) । संन्यासका विरोध करके कर्तव्यपालनपर जोर देते हुए युधिष्ठिरको समझाना (शान्ति० १० अध्याय) । भीमसेनका भुक्त दुःखोंकी स्मृति कराते हुए मोह छोड़कर मनको काबूमें करके राज्यशासन और यज्ञके लिये युधिष्ठिरको प्रेरित करना (शान्ति० १६ अध्याय)। युधिष्ठिरद्वारा युवराजपदपर इनकी नियुक्ति (शान्ति० ४१ । ९) । युधिष्ठिरद्वारा इन्हें दुर्योधनका महल रहनेके लिये दिया गया (शान्ति० ४४ । ६-७) । युधिष्ठिरके पूछनेपर भीमसेनका त्रिवर्गमें कामकी प्रधानता बताना (शान्ति० १६७ । २९–४०)। युधिष्ठिरके पूछनेपर शंकरजीकी आराधनाद्वारा मरुत्तके छोड़े हुए धनको लानेकी ही सलाह देना (आश्व० ६३ । ११–१५ के बाद दाक्षिणात्य पाठ) । व्यासजीकी आज्ञासे राज्य और नगरकी रक्षाके लिये नकुलसहित भीमसेनकी नियुक्ति (आश्व० ७२ । १९) । युधिष्ठिरकी आज्ञासे भीमसेनका ब्राह्मणोंके साथ जाकर यज्ञभूमिको नपवाना और वहाँ यज्ञमण्डप, सैकड़ों निवासस्थान तथा ब्राह्मणोंके ठहरनेके लिये उत्तम भवनोंका शिल्पशास्त्रके अनुसार निर्माण कराना, साथ ही राजाओंको निमन्त्रित करनेके लिये दूत भेजना (आश्व० ८५ । ७–१७) । युधिष्ठिरका भीमसेनको समागत राजाओंकी पूजा करनेका आदेश (आश्व० ८६ । १–३) । बभ्रुवाहनका इनके चरणोंमें प्रणाम करना और भीमसेनका उसे सत्कारपूर्वक प्रचुर धन देना (आश्व० ८८ । ६–११) । भगवान् श्रीकृष्णके द्वारका जाते समय भीमसेनका उनके रथपर चढ़कर उनके ऊपर छत्र लगाना (आश्व० ९२ के बाद दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ६३८२) । भीमसेनका राजा धृतराष्ट्रके प्रति अमर्ष और दुर्भाव, अपने कृतज्ञ पुरुषोंद्वारा धृतराष्ट्रकी आज्ञाको भंग कराना, उन्हें सुनाकर दुर्योधन और दुःशासन आदिका दमन करनेवाली अपनी चन्दनचर्चित भुजाओंके बलकी प्रशंसा करना तथा धृतराष्ट्र और गान्धारीके मनमें उद्वेग पैदा करना (आश्रम० ३ । ३–१३) । धृतराष्ट्रके द्वारा श्राद्धके लिये धन माँगे जानेपर भीमसेनद्वारा विरोध (आश्रम० ११ । ७–२४)। अर्जुनका भीमसेनको समझाना (आश्रम० १२ । १–२)। वनमें जाते समय कुन्तीका युधिष्ठिरको भीमसेन आदिके साथ संतोषजनक बर्ताव करनेका आदेश देना (आश्रम० १६ । १५) । भीमसेनका गजराजोंकी सेनाके साथ गजारूढ़ हो धृतराष्ट्र और कुन्ती आदिसे मिलनेके लिये भाइयोंसहित वनको जाना (आश्रम० २३ । ९)। भीमसेन आदिको आया देख कुन्तीका उतावलीके साथ आगे बढ़ना (आश्रम० २४ । ११) । संजयका ऋषियोंसे भीमसेन और उनकी पत्नीका परिचय देना (आश्रम० २५ । ६,१२)। भीमसेनका अपने भाइयोंसे महाप्रस्थानका निश्चय करके जानेके लिये अपने आभूषण उतारना और उनके साथ महाप्रस्थान करना (महाप्रस्थान० १ । २०—२५) । मार्गमें द्रौपदी, सहदेव, नकुल और अर्जुनके क्रमशः गिरनेपर इनका युधिष्ठिरसे कारण पूछना; फिर इनका स्वयं भी गिरना और युधिष्ठिरसे अपने पतनका कारण पूछना (महाप्रस्थान० २ अध्याय) । स्वर्गमें इनका मरुद्गणोंसे घिरकर वायुदेवके पास विराजमान दिखायी देना (स्वर्गा० ४ । ७-८) ।

महाभारतमें आये हुए भीमसेनके नाम—अच्युतानुज, अनिलात्मज, अर्जुनाग्रज, अर्जुनपूर्वज, बल्लव, भीमधन्वा, जय, कौन्तेय, कौरव, कुरुशार्दूल, मारुतात्मज, मारुति, पाण्डव, पार्थ, पवनात्मज, प्रभञ्जनसुत, राक्षसकण्टक, समीरणसुत, वायुपुत्र, वायुसुत, वृकोदर आदि ।

(५) ये काशीके राजा दिवोदासके पिता थे (उद्योग० ११७ । १) ।

भीष्म–ये शान्तनुद्वारा गङ्गाके गर्भसे आठवें वसुके अंशसे उत्पन्न हुए थे । इनका नाम देवव्रत था (आदि० ६३ । ९१; आदि० ९५ । ४७; आदि० १०० । २१) । इनके द्वारा बचपनमें ही गङ्गाकी धाराका अवरोध करके अस्त्रविद्याका अभ्यास करना (आदि० १०० । २६) । गङ्गाद्वारा शान्तनुको इनका परिचय देना एवं प्रशंसा करना (आदि० १०० । ३३—४०) । इनका युवराजपदपर अभिषेक (आदि० १०० । ४३) । पिताको दुखी देखकर उनके लिये दाशराजसे सत्यवतीकी याचना करना (आदि० १०० । ७५) । पिताके मनोरथकी पूर्तिके लिये 'सत्यवतीकुमार ही राजा होगा' इस प्रकारकी इनकी दुष्कर प्रतिज्ञा (आदि० १०० । ८७) । समस्त देवताओं तथा ऋषियोंकी साक्षी देते हुए इनकी आजीवन अखण्ड ब्रह्मचारी रहनेकी भीषण प्रतिज्ञा (आदि० १०० । ९४–९६) । इनके ऊपर देवताओंद्वारा पुष्पवर्षा और इनका 'भीष्म' नाम रखा जाना (आदि० १०० । ९८) । पिताद्वारा इनको स्वच्छन्द-मृत्युका वरदान (आदि० १०० । १०२) । इनके द्वारा

चित्राङ्गदका अन्त्येष्टि-संस्कार कराना (आदि० १०१ । ११) । स्वयंवरमें आये हुए शाल्व आदि विभिन्न राजाओंको जीतकर इनका काशिराजकी कन्याओंका विचित्रवीर्यके लिये अपहरण करना (आदि० १०२ । ११—६८) । इनके द्वारा अष्टविध विवाहोंके स्वरूपका वर्णन (आदि० १०२ । १२–१५) । विचित्रवीर्यका अन्त्येष्टि-संस्कार कराना (आदि० १०२ । ७३) । सत्यवतीका इनसे राज्यासनपर आरूढ़ होने, वंशरक्षाके लिये अम्बिका आदिके गर्भसे पुत्रोत्पादन करने एवं विवाहके लिये अनुरोध करना (आदि० १०३ । १०-११) । किसी भी परिस्थितिमें किसी भी मूल्यपर सत्यको न छोड़ने तथा स्त्री-सहवास न करनेकी इनकी घोषणा (आदि० १०३ । १२—१८) । विचित्रवीर्यके क्षेत्र (पत्नियों) से ब्राह्मणद्वारा संतानोत्पत्तिके लिये सत्यवतीको परामर्श देना (आदि० १०४ । १२) । इनके प्रति सत्यवतीकी (व्यास-जन्मसम्बन्धी) आत्मकथा (आदि० १०४ । ५–१६) । विचित्रवीर्यकी स्त्रियोंसे व्यासद्वारा संतानोत्पत्तिके लिये इनको सत्यवतीकी सलाह (आदि० १०४ । १८-१९) । इनके द्वारा सत्यवतीके इस प्रस्तावका अनुमोदन (आदि० १०४ । २२-२३) । धृतराष्ट्रके प्रति गान्धारीको समर्पित करनेके लिये इनका सुबलके पास दूत भेजना (आदि० १०९ । ११) । मद्रराजके नगरमें जाकर इनका शल्यसे पाण्डुके लिये माद्रीकी याचना करना (आदि० ११२ । २—७) । मद्रराजद्वारा इनसे शुल्क लेकर माद्रीको पाण्डुके लिये समर्पण करना (आदि० ११२ । १४–१६) । इनके द्वारा राजा देवककी कन्याको लाकर विदुरका विवाह सम्पन्न कराना (आदि० ११३ । १२-१३) । शतशृङ्गनिवासी ऋषियोंद्वारा इनको पाण्डुके परलोकवासी तथा माद्रीके सती होनेका समाचार बताकर पाण्डवोंके जन्मका वृत्तान्त सुनाना (आदि० १२५ । २२—३३) । पाण्डुके निधनपर इनका शोक प्रकट करना तथा उन्हें जलाञ्जलि देना (आदि० १२६ । २७-२८) । इनके द्वारा पाण्डुका श्राद्ध सम्पन्न होना (आदि० १२७ । १) । राजकुमारोंकी शिक्षाके लिये सुयोग्य आचार्यकी खोज करना (आदि० १२९ । २४–२६) । राजकुमारोंकी शिक्षाके लिये इनका द्रोणाचार्यको अपने यहाँ सम्मानपूर्वक रखना (आदि० १३० । ७७–७९) । पाण्डवोंके जतुगृहमें जलनेका समाचार सुनकर इनका विलाप करना और पाण्डवोंको जलाञ्जलि देनेके लिये उद्यत हुए भीष्मको विदुरका उनके जीवित रहनेका रहस्य बतलाकर आश्वासन देना तथा जलाञ्जलिका निषेध करना (आदि० १४९ । १८ के बाद दा० पाठ) । भीष्मकी दुर्योधनसे पाण्डवोंको आधा राज्य देनेकी सलाह (आदि० २०२ अध्याय) । इनका युधिष्ठिरके राजसूय-यज्ञमें पधारना (सभा० ३४ । ५) । कौन काम हुआ और कौन नहीं हुआ—इसकी देख-रेखके लिये युधिष्ठिरद्वारा इनकी नियुक्ति (सभा० ३५ । ६) । राजसूय-यज्ञमें श्रीकृष्णकी अग्रपूजाके लिये इनका युधिष्ठिरको आदेश देना (सभा० ३६ । २८-२९) । इनके द्वारा शिशुपालके आक्षेपोंका खण्डन करते हुए श्रीकृष्णकी महिमाका विस्तारपूर्वक वर्णन (सभा० ३८ अध्याय) । शिशुपालके द्वारा उपद्रव मचानेपर चिन्तित हुए युधिष्ठिरको इनका आश्वासन (सभा० ४० अध्याय) । शिशुपालद्वारा इनकी निन्दा (सभा० ४१ अध्याय) । इनका शिशुपालको मारनेसे भीमसेनको रोकना (सभा० ४२ । १३) । इनके द्वारा शिशुपालके जन्मका वृत्तान्त सुनाना (सभा० ४३ अध्याय) । इन्हें शिशुपालकी फटकार (सभा० ४४ । ६—३२) । शिशुपालके वचनोंका उत्तर देना (सभा० ४४ । ३४) । श्रीकृष्णके साथ युद्ध करनेके लिये समस्त नरेशोंको इनकी चुनौती (सभा० ४४ । ४१-४२) । इनके द्वारा द्रौपदीके वचनोंका उत्तर दिया जाना (सभा० ६९ । १४—२१) । इनका पुलस्त्यजीसे तीर्थयात्राके विषयमें प्रश्न करना (वन० ८२ । ४—७) । दुर्योधनको समझाते हुए पाण्डवोंसे संधि करनेके लिये कहना (वन० २५३ । ४—१०) । युधिष्ठिरकी महिमा बताते हुए पाण्डवोंके अन्वेषणके लिये इनकी सम्मति (विराट० २८ अध्याय) । कर्णकी बातोंसे कुपित हुई सेनामें शान्ति और एकता बनाये रखनेकी चेष्टा करना (विराट० ५१ । १—१३) । पाण्डवोंके वनवास-कालकी पूर्तिके विषयमें इनका निर्णय (विराट० ५२ । १–४) । दुर्योधनको हस्तिनापुरकी ओर भेजकर सेनाको व्यूहबद्ध करना (विराट० ५२ । १६—२३) । अर्जुनके साथ इनका अद्भुत युद्ध और मूर्च्छित होनेपर सारथिद्वारा रणभूमिसे हटाया जाना (विराट० ६४ अध्याय) । दुर्योधनको सेनासहित हस्तिनापुर लौट चलनेकी सलाह देना (विराट० ६६ । २१-२२) । इनके द्वारा द्रुपदके पुरोहितकी बातोंका समर्थन (उद्योग० २१ । २—७) । इनका कर्णको फटकारते हुए अर्जुनकी प्रशंसा करना (उद्योग० २१ । १६-१७) । दुर्योधनको समझाते हुए श्रीकृष्ण और अर्जुनकी महिमा बताना (उद्योग० ४९ । २—२८) । इनके द्वारा कर्णका उपहास किया जाना (उद्योग० ४९ । ३४-४२) । इनका कर्णपर आक्षेप करना (उद्योग० ६२ । ७—११) । श्रीकृष्णको कैद करनेके सम्बन्धमें दुर्योधनकी बात सुनकर कुपित हो सभासे उठ जाना (उद्योग० ८८ । १९—२३) । दुर्योधनको पाण्डवोंसे संधि कर

लेनेके लिये समझाना (उद्योग० १२५ । २-८) । दुर्योधनको पुनः समझाना (उद्योग० १२६ अध्याय) । सभासे उठकर जाते समय दुर्योधनकी उद्दण्डताका वर्णन करना (उद्योग० १२८ । ३०-३२) । दुर्योधनको युद्ध न करनेके लिये समझाना (उद्योग० १३८ अध्याय) । भीष्मकी पाण्डवोंको न मारने और उनके दस हजार योद्धाओंको प्रतिदिन मारनेकी प्रतिज्ञा करके कर्णको साथ लेकर युद्ध न करनेकी शर्त करना (उद्योग० १५६ । २१—२४) । दुर्योधनके पूछनेपर कौरवपक्षके रथियों और अतिरथियोंका परिचय देना (उद्योग० अध्याय १६५ से १६८ तक) । इनका कर्णको फटकारना (उद्योग० १६८ । ३०—३८) । दुर्योधनको पाण्डवपक्षके अतिरथी आदिका परिचय देना (उद्योग० अध्याय १६९ से १७२ तक) । दुर्योधनसे शिखण्डी और पाण्डवोंका वध न करनेको कहना (उद्योग० १७२ । २०-२१) । दुर्योधनको अम्बोपाख्यान सुनाना (उद्योग० १७३ अध्याय) । इनके द्वारा काशिराजकी तीनों कन्याओंका अपहरण (उद्योग० १७३ । १३) । इनके द्वारा परशुरामजीका पूजन (उद्योग० १७८ । २७) । अम्बाको ग्रहण करनेके विषयमें परशुरामजीकी आज्ञा न मानना (उद्योग० १७८ । ३२-३४) । मारनेकी धमकी देनेपर परशुरामजीको रोषपूर्ण उत्तर देना (उद्योग० १७८ । ४३—६४) । परशुरामजीके साथ युद्ध करनेके लिये कुरुक्षेत्रमें जाना (उद्योग० १७८ । ८०) । युद्धके अवसरपर परशुरामजीसे युद्धकी आज्ञा माँगना (उद्योग० १७९ । १४) । परशुरामजीके साथ इनका युद्ध (उद्योग० १७९ । २७ से १८५ अध्यायतक) । वसुओं-द्वारा इन्हें प्रस्वापनास्त्रकी प्राप्ति (उद्योग० १८३ । ११-१३) । देवताओं और नारदजीके मना करनेपर प्रस्वापनास्त्रका प्रयोग न करना (उद्योग० १८५ । ७) । देवता, पितर तथा गङ्गाके आग्रहसे युद्ध बंद करके परशुरामजीके चरणोंमें प्रणाम करना (उद्योग० १८५ । ३५) । दुर्योधनको शिखण्डीके जन्मका वृत्तान्त सुनाना (उद्योग० अध्याय १८८ से १९२ तक) । दुर्योधनसे एक मासमें पाण्डव-सेनाका नाश करनेकी अपनी शक्तिका कथन (उद्योग० १९३ । १४) । युधिष्ठिरको युद्धकी आज्ञा देकर उनकी मङ्गल-कामना करना (भीष्म० ४३ । ४४-४८) । प्रथम दिनके युद्धमें अर्जुनके साथ इनका द्वन्द्व-युद्ध (भीष्म० ४५ । ८-११) । युद्धमें इनके द्वारा विराट-पुत्र श्वेतका वध (भीष्म० ४८ । ३-११५) । प्रथम दिनके युद्धमें इनका प्रचण्ड पराक्रम (भीष्म० ४९ । ४१—५१) । अर्जुनके साथ इनका घोर युद्ध (भीष्म० ५२ अध्याय) । सात्यकिद्वारा सारथिके मारे जानेपर घोड़ोंद्वारा रणक्षेत्रसे बाहर ले जाया जाना (भीष्म० ५४ । ११४-११५) । अर्जुनकी मारसे भागती हुई सेनाको देखकर दूसरे दिनका युद्ध बंद करनेका आदेश देना (भीष्म० ५५ । ४२) । दुर्योधनके उलाहना देनेपर सेनासहित पाण्डवोंको रोक देनेकी प्रतिज्ञा करना (भीष्म० ५८ । ४२—४४) । भीष्मका अद्भुत पराक्रम (भीष्म० ५९ । ५१—७४) । मारनेके लिये उद्यत हुए श्रीकृष्णका इनके द्वारा आह्वान (भीष्म० ५९ । ९६—९८) । अर्जुनके साथ इनका द्वैरथ-युद्ध (भीष्म० ६० । २५—२९) । भगदत्तको संकटमें पड़ा हुआ देखकर द्रोणा-चार्य और दुर्योधनको उसकी रक्षाके लिये आदेश देना (भीष्म० ६४ । ६४—६९) । पाण्डवोंके पराक्रमके विषयमें पूछनेपर उत्तरके प्रसंगमें दुर्योधनको नारायणा-वतार श्रीकृष्ण और नरावतार अर्जुनकी महिमा बताना (भीष्म० ६५ । ३५ से ६८ अध्यायतक) । इनके द्वारा ब्रह्मभूतस्तोत्रका कथन (भीष्म० ६८ । २—११) । शिखण्डीका सामना पड़नेपर युद्ध बंद कर देना (भीष्म० ६९ । २९) । भीमसेनके साथ इनका घमासान युद्ध (भीष्म० ७० अध्याय) । अर्जुन आदि योद्धाओंके साथ इनका घमासान युद्ध (भीष्म० ७१ अध्याय) । भीमसेनको घायल करके सात्यकिको परा-जित करना (भीष्म० ७२ । २१—२८) । विराटको घायल करना (भीष्म० ७३ । २) । भीमसेनके परा-क्रमसे भयभीत दुर्योधनको आश्वासन देना (भीष्म० ८० । ८—१२) । युधिष्ठिरको रथहीन कर देना (भीष्म० ८६ । ११) । भीमसेनद्वारा सारथिके मारे जानेपर घोड़ोंका इनका रथ लेकर भागना (भीष्म० ८८ । १२) । भगदत्तको घटोत्कचसे युद्ध करनेके लिये आज्ञा देना (भीष्म० ९५ । १७—२०) । दुर्योधनसे अर्जुनके पराक्रमका वर्णन करके शिखण्डीको छोड़कर शेष सोमकों और पाञ्चालोंके वधकी प्रतिज्ञा करना (भीष्म० ९८ । ४—२३) । इनका सात्यकिके साथ युद्ध (भीष्म० १०४ । २९—३६) । इनके द्वारा चेदि, काशि और करूष देशके चौदह हजार महारथियोंका एक साथ वध (भीष्म० १०६ । १८—२०) । मारनेके लिये आते हुए श्रीकृष्णका इनके द्वारा स्वागत (भीष्म० १०६ । ६४—६७) । युधिष्ठिरको अपने वधका उपाय बताना (भीष्म० १०७ । ७६—८८) । शिखण्डीसे उसके साथ युद्ध न करनेके लिये कहना (भीष्म० १०८ । ४३) । दुर्योधनको उत्तर देना तथा पाण्डवसेनाका संहार करना (भीष्म० १०९ । २४-३९) । युधिष्ठिरको अपने ऊपर

आक्रमण करनेके लिये आदेश देना (भीष्म० ११५। १३–१५)। इनका अद्भुत पराक्रम (भीष्म० ११६। ६२–७८)। अर्जुनके प्रहारसे मूर्च्छित होना (भीष्म० ११७। ६४)। इनके द्वारा विराटके भाई शतानीकका वध (भीष्म० ११८। २७)। इनके द्वारा पाण्डवसेनाका भीषण संहार (भीष्म० अध्याय ११८ से ११९। १–५४ तक)। जीवनसे उदास होकर मृत्युका चिन्तन करना (भीष्म० ११९। ३४-३५)। अर्जुनके बाणोंसे घायल होनेपर दुःशासनसे अर्जुनके पराक्रमका वर्णन करना (भीष्म० ११९। ५६–६७)। अर्जुनके द्वारा रथसे गिराया जाना (भीष्म० ११९। ८७)। हंसोंको सूर्यके उत्तरायण होनेतक प्राण धारण करनेकी बात बताना (भीष्म० ११९। १०४–१०८)। संजयद्वारा धृतराष्ट्रके प्रति इनकी महत्ताका वर्णन (भीष्म० १२०। १०–१५)। बाणशय्यापर सोते समय राजाओंसे तकिया माँगना (भीष्म० १२०। ३४)। राजाओंसे अपने अनुरूप तकिया न मिलनेपर अर्जुनसे माँगना (भीष्म० १२०। ३८)। राजाओंको समझाते हुए युद्ध बंद कर देनेके लिये अनुरोध करना (भीष्म० १२०। ५१–५५)। इनका अर्जुनसे पानी माँगना (भीष्म० १२१। १८-१९)। इनके द्वारा अर्जुनकी प्रशंसाका कथन (भीष्म० १२१। ३०–३७)। दुर्योधनको युद्ध बंद करनेके लिये समझाना (भीष्म० १२१। ३८–५५)। कर्णसे रहस्यपूर्वक वार्तालाप करना (भीष्म० १२२। ८–२२)। कर्णको स्वर्गप्राप्तिकी इच्छासे युद्ध करनेके लिये अनुमति देना (भीष्म० १२२। ३४–३८)। कर्णको प्रोत्साहन देकर युद्धके लिये भेजना (द्रोण० ४। २–१४)। धर्मका रहस्य जाननेके निमित्त युधिष्ठिरको भीष्मके पास जानेके लिये व्यासजीकी प्रेरणा (शान्ति० ३७। ५–७)। इनके द्वारा श्रीकृष्णकी स्तुति (भीष्मस्तवराज) (शान्ति० ४७। १६–१००; शान्ति० ५१। २–९)। धर्मोपदेश करनेके लिये श्रीकृष्णके सम्मुख अपनी असमर्थता प्रकट करना (शान्ति० ५२। २–१३)। अपनेको कष्टरहित बताते हुए 'आप स्वयं उपदेश क्यों नहीं देते' ऐसा भगवान् श्रीकृष्णसे पूछना (शान्ति० ५४। १७–२४)। युधिष्ठिरके गुण-कथनपूर्वक उनको प्रश्न करनेके लिये आदेश देना (शान्ति० ५५। २–१०)। भयभीत और लज्जित युधिष्ठिरको आश्वासन देना (शान्ति० १४। १९)। युधिष्ठिरको नाना प्रकारके दृष्टान्तों और उपाख्यानोंद्वारा राजधर्म, आपद्धर्म तथा मोक्षधर्मका उपदेश देना (शान्ति० ५६। १२ से अनु० १६५ अध्यायतक)। श्रीकृष्णसे भगवान् शिवकी महिमाका वर्णन करनेके लिये कहना (अनु० १४। १८–२१)। युधिष्ठिरको हस्तिनापुर जानेके लिये आदेश और उपदेश देना (अनु० १६६। ९–१४)। धृतराष्ट्रको कर्तव्यका उपदेश देना (अनु० १६७। ३०–३५)। श्रीकृष्णसे देहत्यागकी अनुमति माँगना (अनु० १६७। ३७–४५)। इनका प्राणत्याग करना (अनु० १६८। २–७)। कौरवोंद्वारा इनका दाहसंस्कार और इन्हें जलाञ्जलिदान (अनु० १६८। १०–२०)। रोती हुई गङ्गादेवीका इनके लिये शोक, इनकी वीरताकी प्रशंसा तथा इनके शिखण्डीके हाथसे मारे जानेके कारण दुःख प्रकट करना (अनु० १६८। २१–२९)। 'भीष्मका अर्जुनके द्वारा वध हुआ है' ऐसा कहकर श्रीकृष्ण और व्यासजीका गङ्गाको आश्वासन देना (अनु० १६८। ३०–३५)। व्यासजीके आवाहन करनेपर इनका गङ्गाके जलसे प्रकट होना (आश्रम० ३२। ७)। स्वर्गमें जाकर भीष्मका वसुओंके स्वरूपमें मिलना (स्वर्गा० ५। ११-१२)।

महाभारतमें आये हुए भीष्मके नाम—आपगासुत, आपगेय, भागीरथीपुत्र, भागीरथीसुत, भारत, भरतश्रेष्ठ, पितामह, भरतर्षभ, भरतसत्तम, भीष्मक, शान्तनव, शान्तनुपुत्र, शान्तनुसुत, शान्तनूज, शान्तनुनन्दन, देवव्रत, गङ्गासुत, गाङ्गेय, जाह्नवीपुत्र, जाह्नवीसुत, कौरव, कौरवधुरंधर, कौरवनन्दन, कौरव्य, कुरुशार्दूल, कुरुश्रेष्ठ, कुरूद्वह, कुरुकुलश्रेष्ठ, कुरुकुलोद्वह, कुरुमुख्य, कुरुनन्दन, कुरुपति, कुरुपितामह, कुरुप्रवीर, कुरुपुङ्गव, कुरुराजर्षिसत्तम, कुरुसत्तम, कुरूत्तम, कुरुवंशकेतु, कुरुवरश्रेष्ठ, कुरुवृद्ध, महाव्रत, नदीज, प्रपितामह, सागरगासुत, सत्यसंध, तालध्वज, वसु आदि।

भीष्मक—विदर्भदेशके अधिपति एक भोजवंशी नरेश, जो पृथ्वीके एक चौथाई भागके स्वामी, इन्द्रके सखा और बलवान् थे। इन्होंने अस्त्र-विद्याके बलसे पाण्ड्य, क्रथ और कैशिक देशोंपर विजय पायी थी। इनके भाई आकृति परशुरामजीके समान शौर्यसम्पन्न थे। राजा भीष्मक रुक्मिणीके पिता एवं भगवान् श्रीकृष्णके श्वशुर थे। ये मगधराज जरासंधके प्रति भक्ति रखते थे (सभा० १४। २१-२२)। राजसूय-यज्ञके अवसरपर सहदेवके भोजकट नगरमें पहुँचनेपर ये दो दिनोंतक युद्ध करके उनसे पराजित हुए थे (सभा० ३१। ११-१२)। महामना भीष्मकका दूसरा नाम हिरण्यरोमा था, ये साक्षात् इन्द्रके मित्र थे। समूचे दाक्षिणात्य प्रदेशपर इनका प्रभुत्व था। इनके पुत्रका नाम रुक्मी था, जो सम्पूर्ण दिशाओंमें विख्यात था (उद्योग० १५८। १-२)। ये कलिङ्गराज चित्राङ्गदकी पुत्रीके स्वयंवरके अवसरपर राजपुर नगरमें गये थे (शान्ति० ४। २–६)।

भीष्मपर्व–महाभारतका एक प्रधान पर्व ।

भीष्मवधपर्व–भीष्मपर्वका एक अवान्तर पर्व (अध्याय ४३ से १२२ तक) ।

भीष्मस्वर्गारोहणपर्व–अनुशासनपर्वका एक अवान्तर पर्व (अध्याय १६७ से १६८ तक) ।

भुमन्यु–(१) ये महाराज दुष्यन्तके पौत्र एवं भरतके पुत्र थे, जो महर्षि भरद्वाजकी कृपासे उत्पन्न हुए थे (आदि० ९४ । १९-२२) । इनकी माताका नाम सुनन्दा था; जो काशीनरेश सर्वसेनकी पुत्री थी (आदि० ९५ । ३२) । पिताद्वारा इनका युवराजपदपर अभिषेक (आदि० ९४ । २३) । इनके द्वारा पुष्करिणीके गर्भसे दिविरथ, सुहोत्र, सुहोता, सुहवि, सुयजु और ऋचीक नामक पुत्र उत्पन्न हुए (आदि० ९४ । २४-२५) । इनके द्वारा दशार्हकन्या विजयाके गर्भसे सुहोत्रका जन्म (आदि० ९५ । ३३) । (२) ये सोमवंशी महाराज कुरुके प्रपौत्र एवं धृतराष्ट्रके पुत्र थे (आदि० ९४ । ५९) । (३) एक देवगन्धर्व, जो अर्जुनके जन्म-महोत्सवके अवसरपर पधारे थे (आदि० १२२ । ५८) ।

भुवन–(१) एक दिव्य महर्षि, जो प्रयाणकालमें भीष्मजी-को देखनेके लिये वहाँ पधारे थे (अनु० २६ । ८) । (२) एक सनातन विश्वेदेव (अनु० ९१ । ३५) ।

भूतकर्मा–कौरवपक्षका एक योद्धा, जो नकुल-पुत्र शतानीक-के साथ युद्धमें उनके द्वारा मारा गया (द्रोण० २५ । २२-२३) ।

भूतधामा–जिन इन्द्रोंके अंशसे पाण्डवोंकी उत्पत्ति हुई थी, उन्हीं पाँचोंमेंसे दूसरे इन्द्रका नाम भूतधामा था (आदि० १९६ । २८-२९) ।

भूतमथन–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ६९) ।

भूतलय–एक गाँवका नाम । यहाँ चोरों और डाकुओंका अड्डा था । यहाँ एक नदी थी, जिसमें मुर्दे बहाये जाते थे । ऐसी नदीमें स्नान करना शास्त्रनिषिद्ध है (वन० १२९ । ९) ।

भूतशर्मा–कौरवपक्षका एक योद्धा, जो द्रोणाचार्यद्वारा निर्मित गरुड़व्यूहके ग्रीवास्थानमें खड़ा था (द्रोण० २० । ६-७) ।

भूतितीर्था–स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । २७) ।

भूपति–एक सनातन विश्वेदेव (अनु० ९१ । ३२) ।

भूमि–(१) भूदेवी; ये ब्रह्माजीकी पुत्री और भगवान् नारायणकी पत्नी हैं, भगवान् वाराहके साथ समागम होने-पर इनके गर्भसे एक पुत्र हुआ, जो इस भूतलपर भौम अथवा नरकके नामसे प्रसिद्ध हुआ है । भगवान् श्रीकृष्ण-द्वारा भौमासुरके मारे जानेपर इन्होंने स्वयं प्रकट हो अदितिके दोनों कुण्डल लौटाये और नरकासुरकी संतानकी रक्षाके लिये श्रीकृष्णसे प्रार्थना की (सभा० ३८ । २९ के बाद दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ८०८) । इनका अपना भार उतारनेके लिये भगवान् विष्णुसे प्रार्थना करना (वन० १४२ । ४१-४२) । वाराहरूपधारी विष्णुद्वारा इनका उद्धार (वन० १४२ । ४५-४७) । संजयका धृतराष्ट्रसे इनकी महिमाका वर्णन करना (भीष्म० ४ । १० से भीष्म० ५ । १२ तक) । श्रीकृष्णसे वैष्णवास्त्र माँगनेकी कथाकी चर्चा (द्रोण० २९ । ३०-३१) । पृथुसे अपने-को अपनी कन्या माननेके लिये प्रार्थना करना (द्रोण० ६९ । १५) । परशुरामजीद्वारा क्षत्रियसंहार हो जानेके बाद कश्यपजीसे भूपालकी याचना करना और बचे हुए राजकुमारोंका पता बताना (शान्ति० ४९ । ७४-८६) । श्रीकृष्णके पूछनेपर ब्राह्मणोंकी महिमाका वर्णन करना (अनु० ३४ । २२—२९) । इनका भगवान् श्रीकृष्ण-को गृहस्थ-धर्म सुनाना (अनु० ९७ । ५—२३) । राजा अङ्गके साथ स्पर्धा होनेके कारण अदृश्य हो जाना (अनु० १५३ । २) । इनका काश्यपी नाम पड़नेका कारण (अनु० १५४ । ७) । (२) प्राचीन नरेश भूमिपतिकी भार्या (उद्योग० ११७ । १४) ।

भूमिञ्जय–एक कौरवपक्षीय योद्धा, जो द्रोणाचार्यद्वारा निर्मित गरुडव्यूहके हृदयस्थानपर खड़ा था (द्रोण० २० । १३-१४) ।

भूमिपति–एक प्राचीन राजा (उद्योग० ११७ । १४) ।

भूमिपर्व–भीष्मपर्वका एक अवान्तर पर्व (अध्याय ११ से १२ तक) ।

भूमिपाल–एक प्राचीन क्षत्रिय नरेश, जो क्रोधवशसंज्ञक दैत्यके अंशसे उत्पन्न हुए थे (आदि० ६७ । ६१—६६) । इन्हें पाण्डवोंकी ओरसे रणनिमन्त्रण भेजनेका निश्चय किया गया था (उद्योग० ४ । १६) ।

भूमिशय–एक प्राचीन नरेश, जिन्हें राजा अमूर्तरयासे खड्गकी प्राप्ति हुई थी और इन्होंने उस खड्गको दुष्यन्त-कुमार भरतको दिया था (शान्ति० १६६ । ७५) ।

भूरि–ये कुरुवंशी सोमदत्तके पुत्र थे । इनके दो छोटे भाइयोंका नाम भूरिश्रवा और शल था । ये अपने पिता तथा भाइयोंके साथ द्रौपदीके स्वयंवरमें गये थे (आदि० १८५ । १४-१५) । पिता और भाइयोंके सहित युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें भी पधारे थे (सभा० ३४ । ८) । इनका सात्यकिके साथ युद्ध और उनके द्वारा वध (द्रोण० १६६ । १—१२) । मृत्युके पश्चात् ये विश्वेदेवोंमें मिल गये (स्वर्गा० ५ । १६-१७) ।

भूरितेजा-एक प्राचीन नरेश, जो क्रोधवशसंज्ञक दैत्यके अंशसे उत्पन्न हुए थे (आदि० ६७ । ६३—६६) । इन्हें पाण्डवोंकी ओरसे रणनिमन्त्रण भेजनेका निश्चय किया गया था (उद्योग० ४ । १७) ।

भूरिद्युम्न-(१) एक प्राचीन नरेश, जो यमराजकी सभामें रहकर सूर्यपुत्र यमकी उपासना करते हैं (सभा० ८ । १९, २१) । इन्होंने गोदान करके स्वर्गलोक प्राप्त किया (अनु० ७६ । २५) । (२) एक महर्षि, जिन्होंने शान्तिदूत बनकर हस्तिनापुर जाते समय मार्गमें श्रीकृष्णकी दक्षिणावर्त परिक्रमा की थी (उद्योग० ८३ । २७) । (३) यह राजा वीरद्युम्नका एकलौता पुत्र था, जो वनमें खो गया था (शान्ति० १२७ । १४) ।

भूरिबल (भीमबल)-धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६७ । ९८; आदि० ११६ । ७) । भीमसेनद्वारा इसका वध (शल्य० २६ । १४-१५) ।

भूरिश्रवा-ये कुरुवंशीय सोमदत्तके पुत्र थे । इनके दो भाइयोंका नाम भूरि और शल था । ये पिता और भाइयोंके साथ द्रौपदी-स्वयंवरमें गये थे (आदि० १८५ । १४-१५) । इनके द्वारा पाण्डवोंके पराक्रमका वर्णन और उनसे युद्ध न करके उनके साथ संधि करनेके लिये इनकी द्रुपदनगरमें दुर्योधनको सलाह (आदि० १९९ । ७ के बाद दाक्षिणात्य पाठ) । अपने पिता और भाइयोंके साथ ये युधिष्ठिरके राजसूययज्ञमें आये थे (सभा० ३४ । ८) । इनका एक अक्षौहिणी सेनासहित दुर्योधनकी सहायतामें आना (उद्योग० १९ । १६) । रथियोंके यूथपतियोंके यूथपतिरूपमें इनकी भीष्मद्वारा गणना (उद्योग० १६५ । २९) । प्रथम दिनके युद्धमें इनका शल्यके साथ द्वन्द्वयुद्ध (भीष्म० ४५ । ३५—३७) । इनकी सात्यकिपर चढ़ाई और उनके साथ युद्ध (भीष्म० ६३ । ३३ से ६४ । ४ तक) । इनका सात्यकिके साथ घोर युद्ध (भीष्म० ७४ अध्याय) । इनके द्वारा सात्यकिके दस पुत्रोंका वध (भीष्म० ७४ । २५) । धृष्टकेतुके साथ इनका युद्ध तथा इनके द्वारा धृष्टकेतुकी पराजय (भीष्म० ८४ । ३५—३९) । भीमसेनके साथ इनका द्वन्द्व-युद्ध (भीष्म० ११० । १०-११; भीष्म० १११ । ४४—४९) । शिखण्डीके साथ इनका-युद्ध (द्रोण० १४ । ४३—४५) । मणिमान्‌के साथ युद्ध करके उसका वध करना (द्रोण० २५ । ५३—५५) । इनके ध्वजका वर्णन (द्रोण० १०५ । २२—२४) । सात्यकिके साथ युद्ध करके उनकी चुटिया पकड़कर घसीटना (द्रोण० १४२ । ५९—६२) । अर्जुनद्वारा इनकी दाहिनी भुजाका काटा जाना (द्रोण० १४२ । ७२) । इनके द्वारा अर्जुनको उपालम्भ दिया जाना (द्रोण० १४३ । ४—१५) । इनका आमरण अनशनके लिये बैठना (द्रोण० १४३ । ३३—३५) । सात्यकिद्वारा इनका वध (द्रोण० १४३ । ५४) । मृत्युके पश्चात् इनका विश्वेदेवोंमें प्रविष्ट होना (स्वर्गा० ५ । १६) ।

महाभारतमें आये हुए भूरिश्रवाके नाम-भूरिदक्षिण, शलाग्रज, कौरव, कौरवदायाद, कौरवेय, कौरव्य, कौरव्यमुख्य, कुरुशार्दूल, कुरुश्रेष्ठ, कुरूद्वह, कुरुपुङ्गव, यूपकेतन, यूपकेतु आदि ।

भूरिहा-एक राक्षस, जो प्राचीन कालमें पृथ्वीका शासक था; परंतु कालके वशीभूत हो इसे छोड़कर चल बसा (शान्ति० २२७ । ५१—५६) ।

भूलिङ्ग-हिमालयके दूसरे भागमें रहनेवाली एक चिड़िया, जो सदा यही बोला करती थी—'मा साहसम्' अर्थात् 'साहस न करो'; परंतु स्वयं साहसका काम करती हुई सिंहके दाँतोंमें लगे हुए मांसके टुकड़ेको अपनी चोंचसे चुगती रहती है (सभा० ४४ । २८—३०) ।

भूषिक-एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ५८) ।

भृगु-एक महर्षि, जो ब्रह्माजीके द्वारा वरुणके यज्ञमें अग्निसे उत्पन्न हुए थे (आदि० ५ । ८) । इनकी प्यारी पत्नीका नाम पुलोमा था (आदि० ५ । १३) । पुलोमा राक्षसके हरण करते समय इनकी पत्नी पुलोमाका गर्भ चू पड़ा, जिससे च्यवन नामक पुत्रकी उत्पत्ति हुई (आदि० ६ । १—२४; आदि० ६६ । ४४-४५) । पत्नी पुलोमाद्वारा अपने हरणका रहस्य बतलानेपर इनका अग्निदेवको सर्वभक्षी होनेका शाप देना (आदि० ६ । १४) । इनके दूसरे पुत्रका नाम 'कवि' था (आदि० ६६ । ४२) । च्यवनके अतिरिक्त इनके छः पुत्र और हुए, जो व्यापक तथा इन्हींके समान गुणवान् थे; जिनके नाम इस प्रकार हैं—वज्रशीर्ष, शुचि, और्व, शुक्र, वरेण्य तथा सवन । सभी भृगुवंशी सामान्य रूपसे वारुण कहलाते हैं (अनु० ८५ । १२८-१२९) । ये युधिष्ठिरकी सभामें विराजते थे (सभा० ४ । १६) । इन्द्रकी सभामें रहकर उसकी शोभा बढ़ाते हैं (सभा० ७ । २९) । ब्रह्माकी सभामें उपस्थित रहकर ब्रह्माजीकी सेवा करते हैं (सभा० ११ । १९) । इनका अपनी पुत्रवधूको संतानके लिये वरदान देना (वन० ११५ । ३५—३७) । शान्तिदूत बनकर हस्तिनापुर जाते हुए श्रीकृष्णकी इनके द्वारा दक्षिणावर्त परिक्रमा (उद्योग० ८३ । २७) । इनका द्रोणाचार्यके पास आकर युद्ध बंद करनेको कहना (द्रोण० १९० । ३४—४०) । इनका भरद्वाजके प्रति

जगत्की उत्पत्ति और विभिन्न तत्त्वोंका वर्णन करना (शान्ति० १८२ अध्याय)। आकाशसे अन्य चार स्थूल भूतोंकी उत्पत्तिका वर्णन (शान्ति० १८३ अध्याय)। पञ्चमहाभूतोंके गुणोंका विस्तारपूर्वक वर्णन (शान्ति० १८४ अध्याय)। शरीरके भीतर जठरानल तथा प्राण-अपान आदि वायुओंकी स्थिति आदिका वर्णन (शान्ति० १८५ अध्याय)। जीवकी सत्ता तथा नित्यताको नाना प्रकारकी युक्तियोंसे सिद्ध करना (शान्ति० १८७ अध्याय) । वर्णविभाग-पूर्वक मनुष्यकी तथा समस्त प्राणियोंकी उत्पत्तिका वर्णन (शान्ति० १८८ अध्याय)। चारों वर्णोंके अलग-अलग कर्मोंका और सदाचारका वर्णन तथा वैराग्यसे परब्रह्मकी प्राप्तिका निरूपण (शान्ति० १८९ अध्याय)। सत्यकी महिमा, असत्यके दोष तथा लोक और परलोकके सुख-दुःखका विवेचन (शान्ति० १९० अध्याय)। ब्रह्मचर्य और गार्हस्थ्य आश्रमके धर्मोंका वर्णन (शान्ति० १९१ अध्याय)। वानप्रस्थ और संन्यास धर्मोंका वर्णन तथा हिमालयके उत्तरपार्श्वमें स्थित उत्कृष्ट लोककी विलक्षणता एवं महत्ताका प्रतिपादन (शान्ति० १९२ अध्याय)। इनका हिमवान्को रत्नोंका भण्डार न होनेका शाप देना (शान्ति० ३४२ । ६२)। इनके द्वारा राजा वीतहव्यको शरण देकर ब्राह्मणत्व प्रदान करना (अनु० ३० । ५७-५८)। ये अग्निकी ज्वालासे उत्पन्न हुए थे; अतः इनका नाम 'भृगु' पड़ा (अनु० ८५ । १०५-१०६)। अगस्त्यजीके कमलोंकी चोरी होनेपर इनका शपथ करना (अनु० ९४ । १६)। अगस्त्यजीसे नहुषको गिरानेका उपाय पूछना (अनु० ९९ । १५)। इनका अगस्त्यजी-को नहुषके पतनका उपाय बताना (अनु० ९९ । २२-२८)। इनके द्वारा नहुषको शाप (अनु० १०० । २४-२५)। नहुषके प्रार्थना करनेपर उनके शापका उद्धार बताना (अनु० १०० । ३०)।

भृगुतीर्थ-महर्षियोंद्वारा सेवित एक तीर्थ । यहाँ स्नान करके परशुरामजीने श्रीरामजीद्वारा अपहृत अपने तेजको पुनः प्राप्त कर लिया था । राजा युधिष्ठिरने भी अपने भाइयों-सहित यहाँ स्नान-तर्पण किया; जिससे उनका रूप अत्यन्त तेजस्वी हो गया और वे शत्रुओंके लिये परम दुर्धर्ष हो गये (वन० ९९ । ३४-३८)।

भृगुतुङ्ग-एक प्राचीन पर्वत, जहाँ राजा ययातिने अपनी पत्नियोंके साथ तपस्या की थी (आदि० ७५ । ५७)। तीर्थयात्राके अवसरपर अर्जुनका यहाँ आगमन हुआ था (आदि० २१४ । २)। यहाँ शाकाहारी होकर एक मास निवास करनेसे अश्वमेध यज्ञका फल मिलता है (वन० ८४ । ५०)। यहाँ उपवास करनेसे मनुष्य अपने आगे-पीछेकी सात-सात पीढ़ियोंका उद्धार कर देता है (वन० ८५ । ९१-९२)। इस महान् पर्वतकी भृगुतुङ्ग-आश्रमके नामसे भी प्रसिद्धि है। यहाँ भृगुजीने तपस्या की थी (वन० ९० । २३)। भृगुतुङ्गमें एक 'महाह्रद' नामक तीर्थ या सरोवर है । जो लोभका त्याग करके यहाँ स्नान करता और तीन राततक निराहार रहता है, वह ब्रह्महत्याके पापसे मुक्त हो जाता है (अनु० २५ । १८-१९)।

भेडी-स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६।१३)।

भेरीस्वना-स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका(शल्य० ४६।२६)।

भैरव-धृतराष्ट्रवंशी एक नाग, जो सर्पसत्रमें दग्ध हो गया (आदि० ५७ । १७)।

भोगवती-(१) नागलोक (आदि० २०६ । ५१; सभा० ३८ । २९ के बाद दाक्षिणात्य पाठ)। (२) पाताल-लोकमें स्थित गङ्गा (सभा० ३८ । २९ के बाद दाक्षि-णात्य पाठ, पृष्ठ ८१४)। प्रयागमें वासुकि नागका तीर्थ-विशेष, जो गङ्गामें ही है, इसमें स्नान करनेसे अश्वमेध यज्ञ-का फल मिलता है (वन० ८५।८६; उद्योग० १८६ ।२७)। (३) सरस्वती नदीका नामान्तर (वन० २४ । २०)। (४) स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६।८)।

भोगवान्-एक पर्वत, जिसे भीमसेनने पूर्व-दिग्विजयके समय जीता था (सभा० ३० । १२)।

भोज-(१) एक वंश, जो यदुकुलके अन्तर्गत है (आदि० २१७ । १८)। (२) मार्तिकावत देशके एक राजा, जो द्रौपदीके स्वयंवरमें पधारे थे (आदि० १८५ । ६)। ये युधिष्ठिरकी सभाके सभासद् थे (सभा० ४ । २६)। कौरव-पक्षसे युद्ध करते हुए अभिमन्युद्वारा मारे गये (द्रोण० ४८ । ८)। इन्होंने कलिङ्गराज चित्राङ्गदकी कन्याके स्वयंवरमें भी पदार्पण किया था (शान्ति० ४ । ७)। (३) एक यदुवंशी नरेश, जिन्हें महाराज उशीनरसे खड्गकी प्राप्ति हुई थी (शान्ति० १६६ । ७९)। (इन्हींसे यादवोंमें भोज-वंशकी परम्परा प्रचलित हुई थी।)

भोजकट-विदर्भदेशकी राजधानी, जिसे सहदेवने जीता था (सभा० ३१ । ११-१२)। रुक्मिणी-हरणके समय श्रीकृष्णके साथ युद्ध करके जहाँ रुक्मी पराजित हुआ था, वहीं उसने इस नये नगरको बसाया था (उद्योग० १५८ । १४-१५)। (इसके पहले इस राज्यकी राज-धानी कुण्डिनपुरमें थी।)

भोजा-सौवीरराजकी सर्वाङ्गसुन्दरी कमनीया कन्या, जिसे सात्यकिने अपनी रानी बनानेके लिये हर लिया था (द्रोण० १० । ३३)।

भौम-एक असुर (देखिये नरकासुर) (सभा० ३८ । २९ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ८०४--८०७) ।

भ्रमर-सौवीरदेशका एक राजकुमार, जो जयद्रथके रथके पीछे हाथमें ध्वजा लेकर चलता था । द्रौपदीहरणके समय जयद्रथके साथ गया था (वन० २६५ । १०-११) । अर्जुनद्वारा इसका वध हुआ (वन० २७१ । २७) ।

(म)

मकरी-भारतवर्षकी एक प्रधान नदी, जिसका जल यहाँके निवासी पीते हैं (भीष्म० ९ । २३) ।

मगध-एक प्राचीन देश । बिहार प्रान्तका दक्षिणी भाग; इसकी राजधानी गिरिव्रज (आधुनिक राजगृह) थी (सभा० २१ । २-३) । किसी समय बृहद्रथ मगध देशके राजा थे (आदि० ६३ । ३०) । कालेयोंमें जो महान् श्रेष्ठ असुर था, वही मगध देशमें जयत्सेन नामका राजा हुआ था (आदि० ६७ । ४८) । इस देशपर पाण्डुने आक्रमण करके वहाँके राजा 'दीर्घ' का वध किया था (आदि० ११२ । २६-२७) । इस देशमें राजा बृहद्रथने जरा राक्षसी (गृहदेवी) के लिये महान् उत्सव मनानेकी आज्ञा जारी की थी (सभा० १८ । १०) । महाभारतकालमें जरासंध मगध देशका राजा था, जिसे भगवान् श्रीकृष्णने युक्तिपूर्वक भीमसेनद्वारा मरवा डाला (सभा० २४ । ७ के बाद दा० पाठ) । जरासंधके मरनेके बाद उसके पुत्र सहदेवको भगवान् श्रीकृष्णने मगध देशके राज्यपर अभिषिक्त कर दिया (सभा० २४ । ४३) । इस देशको पूर्व दिग्विजयके समय भीमसेनने अपने वशमें कर लिया था (सभा० ३० । १६-१८) । यहाँके राजा भी युधिष्ठिरके राजसूय-यज्ञमें भेंट लेकर आये थे (सभा० ५२ । १८) । यहाँके राजा तथा निवासी महाभारत-युद्धमें युधिष्ठिरके पक्षमें आये थे (उद्योग० ५३ । २) । इस देशकी गणना भारतके प्रमुख जनपदोंमें है (भीष्म० ९ । ५०) ।

मघा-(१) एक तीर्थ, यहाँ जानेसे अग्निष्टोम और अतिरात्र यज्ञोंका फल मिलता है (वन० ८४ । ५१) । (२) सत्ताईस नक्षत्रोंमें एक नक्षत्रका नाम । जब मङ्गलग्रह वक्र होकर मघा नक्षत्रपर आता है, तब अमङ्गलका सूचक होता है (भीष्म० ३ । १४) । मघा नक्षत्रपर चन्द्रमाकी स्थिति होनेसे अपशकुन समझना चाहिये (भीष्म० १७ । २) । जो मनुष्य मघा नक्षत्रमें तिलसे भरे हुए वर्धमान पात्रोंका दान करता है, वह इस लोकमें पुत्रों और पशुओंसे सम्पन्न हो परलोकमें आनन्दका भागी होता है (अनु० ६४ । १२) । आश्विन मासके कृष्णपक्षमें मघा और त्रयोदशीका संयोग होनेपर घृतमिश्रित खीरका दान करनेसे पितरोंकी तृप्ति होती है (अनु० ८८ । ७; अनु० १२६ । ३५-३७) । मघा नक्षत्रमें हाथीके शरीरकी छायामें बैठकर उसके कानसे हवा लेते हुए चावलकी खीर या लौहशाकका पितरोंके लिये दान करनेसे पितर संतुष्ट होते हैं (अनु० ८८ । ८) । मघामें श्राद्ध एवं पिण्डदान करनेवाला मनुष्य अपने कुटुम्बीजनोंमें श्रेष्ठ होता है (अनु० ८९ । ५) । चान्द्रव्रतके समय मघाकी चन्द्रमाके नासिका-स्थानपर भावना करनी चाहिये (अनु० ११० । ८) ।

मङ्कणक-एक प्राचीन ऋषि, जो वायुदेवद्वारा सुकन्याके गर्भसे उत्पन्न हुए थे (शल्य० ३८ । ५९) । सप्तसारस्वत-तीर्थमें इन्हें सिद्धि प्राप्त हुई थी । एक बार इनके हाथमें कुश गड़ जानेसे घाव हो गया, जिससे शाकका रस चूने लगा । उसे देखकर हर्षके मारे ये नृत्य करने लगे (वन० ८३ । ११५-११७) । महादेवजीका इनके पास आगमन तथा नृत्यका कारण पूछना (वन० ८३ । १२०-१२१) । इनका महादेवजीसे अपने हर्षका कारण बताना (वन० ८३ । १२२-१२३) । महादेवजीके हाथसे झरती हुई भस्मको देखकर इनका लज्जित होकर उनके चरणोंमें गिरना और महादेवजीकी स्तुति करना (वन० ८३ । १२४—१३१) । इन्हें शिवजीसे वरदान प्राप्त होना (वन० ८३ । १३२-१३४) । इनके वीर्यसे सात पुत्रोंकी उत्पत्ति हुई थी, जो सब-के-सब ऋषि हुए । उनके नाम हैं—वायुवेग, वायुबल, वायुहा, वायुमण्डल, वायुज्वाल, वायुरेता और वायुचक्र (शल्य० ३८ । ३४-३८) । इनके चरित्रका विशेषरूपसे वर्णन (शल्य० ३८ । ३८—५८) ।

मङ्कि-एक प्राचीन मुनि (शान्ति० १७७ । ४) । ऊँटद्वारा इनके बछड़ोंका अपहरण हो जानेपर इन्होंने तृष्णा और कामनाकी गहरी आलोचना की, जो मङ्कि-गीताके नामसे प्रसिद्ध है (शान्ति० १७७ । ९—५२) । अन्तमें ये धन-भोगोंसे विरक्त होकर परमानन्दस्वरूप परब्रह्मको प्राप्त हो गये (शान्ति० १७७ । ५३-५४) ।

मङ्ग-शाकद्वीपका एक जनपद, जिसमें अधिकतर कर्तव्यपालनमें तत्पर रहनेवाले ब्राह्मण निवास करते हैं (भीष्म० ११ । ३६) ।

मचक्रुक-समन्तपञ्चक एवं कुरुक्षेत्रकी सीमाका निर्धारण करनेवाला एक स्थान, जहाँ मचक्रुक नामके यक्ष द्वारपालरूपमें निवास करते हैं । इन यक्षको नमस्कार करनेमात्रसे सहस्र गोदानका फल प्राप्त होता है (वन० ८३ । ९; शल्य० ५३ । २४) ।

मज्जान-स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ७०) ।

मञ्जुला-भारतवर्षकी एक प्रमुख नदी, जिसका जल यहाँके निवासी पीते हैं (भीष्म० ९ । ३४) ।

मणि-(१) धृतराष्ट्रकुलमें उत्पन्न एक नाग, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें दग्ध हो गया (आदि० ५७ । १९) । (२) एक ऋषि, जो ब्रह्माजीकी सभामें रहकर उनकी उपासना करते हैं (सभा० ११ । २४) । (३) चन्द्रमाद्वारा स्कन्दको दिये गये दो पार्षदोंमेंसे एक । दूसरेका नाम सुमणि था (शल्य० ४५ । ३२) ।

मणिकाञ्चन-श्यामगिरिके पास स्थित शाकद्वीपका एक वर्ष (भीष्म० ११ । २६) ।

मणिकुट्टिका-स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । २०) ।

मणिजला-शाकद्वीपकी एक प्रमुख नदी (भीष्म० ११ । ३२) ।

मणिनाग-(१) कश्यपद्वारा कद्रूके गर्भसे उत्पन्न एक नाग (आदि० ३५ । ६) । गिरिव्रजके निकट इसका निवासस्थान था (सभा० २१ । ९) । (२) एक तीर्थ, जहाँ एक रात निवास करनेसे सहस्र गोदानका फल मिलता है और इस तीर्थका प्रसाद भक्षण करनेसे सर्पके काटनेपर उसके विषका प्रभाव नहीं पड़ता (वन० ८४ । १०६) ।

मणिपर्वत-एक पर्वत, जहाँ दुष्ट भौमासुरने सोलह हजार एक सौ अपहृत कन्याओंके रहनेके अन्तःपुरका निर्माण कराया था (सभा० ३८ । २९ के बाद दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ८०५) ।

मणिपूर-यह धर्मज्ञ राजा चित्रवाहनकी राजधानी थी । यहाँ तीर्थयात्राके अवसरपर अर्जुनका आगमन हुआ था और चित्राङ्गदाके साथ विवाह करके वे तीन वर्षतक यहाँ निवास किये थे । अर्जुनद्वारा चित्राङ्गदाके गर्भसे यहीं बभ्रुवाहनका जन्म हुआ था (सभा० २१४ । १३-२७) । अश्वमेधीय अश्वके पीछे जाते हुए अर्जुनका मणिपूरमें पुनः आगमन तथा पिता-पुत्रका घोर संग्राम (आश्व० ७९ अध्याय) ।

मणिपुष्पक-सहदेवके शङ्खका नाम (भीष्म० ३५ । १६) ।

मणिभद्र-एक यक्षविशेष, जो कुबेरकी सभामें रहकर उनकी सेवा करते हैं (सभा० १० । १५) । ये यात्रियों तथा व्यापारियोंके उपास्यदेव हैं (वन० ६४ । १३०; वन० ६५ । २२) । कुण्डधार मेघकी प्रार्थनासे इनका ब्राह्मणको वरदान देना (शान्ति० २७१ । २१-२२) । इनके द्वारा अष्टावक्र मुनिका स्वागत (अनु० १९ । ३३) । मरुत्तका धन लानेके लिये जाते समय युधिष्ठिरने इन्हें खिचड़ी, फलके गूदे तथा जलकी अञ्जलि निवेदन करके इनकी पूजा की थी (आश्व० ६५ । ७) ।

मणिमतीपुरी-यह इल्वल दैत्यकी नगरी थी (वन० ९६ । ४) ।

मणिमन्थ-एक पर्वत, जहाँ श्रीकृष्णने लाखों-करोड़ों वर्षों तक शिवकी आराधना की थी (अनु० १८ । ३३) ।

मणिमान्-(१) एक राजा, जो दनायुके पुत्र वृत्र नामक असुरके अंशसे उत्पन्न हुए थे (आदि० ६७ । ४४) । ये द्रौपदीके स्वयंवरमें पधारे थे (आदि० १८५ । २२) । भीमसेनने पूर्वदिग्विजयके समय इन्हें पराजित किया था (सभा० ३० । ११) । पाण्डवोंकी ओरसे इन्हें रणनिमन्त्रण भेजनेका निश्चय किया गया था (उद्योग० ४ । २०) । इनका भूरिश्रवाके साथ युद्ध और उसके द्वारा इनका वध (द्रोण० २५ । ५३-५५) । द्रोणाचार्यद्वारा इनके मारे जानेकी चर्चा (कर्ण० ६ । १३-१४) । (२) एक नाग, जो वरुणकी सभामें रहकर उनकी उपासना करता है (सभा० ९ । ९) । (३) एक तीर्थ, जहाँ एक रात निवास करनेसे अग्निष्टोम यज्ञका फल प्राप्त होता है (वन० ८२ । १०१) । (४) एक यक्ष या राक्षस, जो कुबेरका सखा था । इसका भीमसेनके साथ युद्ध और उनके द्वारा वध (वन० १६० । ५९-७७) । अगस्त्यजीका अपमान करनेके कारण उनके द्वारा इसे शाप मिलनेकी चर्चा (वन० १६१ । ६०-६२) । (५) एक पर्वत, जो स्वप्नमें श्रीकृष्णके साथ शिवजीके पास जाते हुए अर्जुनको मार्गमें मिला था (द्रोण० ८० । २४) ।

मण्डक-एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ४३) ।

मण्डलक-तक्षककुलमें उत्पन्न एक नाग, जो सर्पसत्रमें दग्ध हो गया (आदि० ५७ । ८) ।

मण्डूक-अश्वकी एक जाति; इस जातिके बहुत-से अश्व अर्जुनने दिग्विजयके समय गन्धर्वनगरसे करके रूपमें प्राप्त किये (सभा० २८ । ६) ।

मतङ्ग-(१) एक प्राचीन राजर्षि, जो शापवश व्याध हो गये थे और जिन्होंने दुर्भिक्षके समय विश्वामित्रकी पत्नीका भरण-पोषण किया था (आदि० ७१ । ३१) । महर्षि विश्वामित्रने पुरोहित बनकर इनके यज्ञका सम्पादन किया था, जिसमें इन्द्र स्वयं सोमपान करनेके लिये पधारे थे (आदि० ७१ । ३३) । (२) एक महर्षि, जिनका आश्रम तीर्थरूपमें माना जाता है (वन० ८४ । १०१) । (३) ये ब्राह्मणीके गर्भसे

ब्राह्मणेतरद्वारा उत्पन्न हुए थे (अनु० २७ । ८)। इनका गर्दभीके साथ संवाद (अनु०२७ । ११-१९)। ब्राह्मणत्व-प्राप्तिके लिये इनकी तपस्या (अनु० २७ । २२-२३)। वर देनेके लिये आये हुए इन्द्रके साथ इनका संवाद (अनु० २७ । २४ से २९ । १२ तक)। इनका इन्द्रसे वर माँगना और इन्द्रका इन्हें वर देना (अनु० २९ । २२—२५)। इन्हें प्राणत्यागके पश्चात् उत्तम स्थानकी प्राप्ति (अनु० २९ । २६)।

मतङ्गकेदार–एक तीर्थ, जहाँ स्नान करनेसे मनुष्य सहस्र गोदानका फल पाता है (वन० ८५ । १७-१८; वन० ८७ । २५)।

मतङ्गाश्रम–श्रम और शोकका विनाश करनेवाले इस आश्रममें प्रवेश करनेसे मनुष्य गवायन यज्ञका फल पाता है (वन० ८४ । १०१)।

मति–दक्ष प्रजापतिकी पुत्री एवं धर्मराजकी पत्नी (आदि० ६६ । १५)।

मतिनार–एक पूरुवंशी नरेश, जो पूरु-पौत्र अनाधृष्टि (ऋचेयु) के पुत्र थे । ये महान् धार्मिक तथा अश्वमेध आदि बड़े-बड़े यज्ञोंके अनुष्ठान करनेवाले थे । इनके तंसु, महान्, अतिरथ एवं द्रुह्यु नामके चार पुत्र थे (आदि० ९४ । १३-१४)। (यहाँ आदिपर्वके ९४ अध्यायमें वर्णित परम्पराके अनुसार राजा मतिनार पूरुसे चौथी पीढ़ीमें आ रहे हैं; परंतु आदिपर्वके ९५ अध्यायके ११ से २६ तकके श्लोकोंमें पूरुवंशकी जिस परम्पराका वर्णन किया गया है, उसमें राजा मतिनार पूरुसे १६ वीं पीढ़ीमें आते हैं।)

मत्कुलिका–स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । १९)।

मत्तमयूर–एक क्षत्रिय-समुदाय, जिसे पश्चिम-दिग्विजयके समय नकुलने जीता था (सभा० ३२ । ५)।

मत्स्य–(१) एक राजा, जो उपरिचर वसुके वीर्यद्वारा मत्स्यके गर्भसे उत्पन्न हुआ था (आदि० ६३ । ५०—६३)। यह यम-सभामें रहकर सूर्यपुत्र यमकी उपासना करता है (सभा० ८ । १०)। (२) एक देश और यहाँके निवासी । वनमें भटकते हुए पाण्डव मत्स्यदेशमें आये थे (आदि० १५५ । २)। यहाँके निवासी जरासन्धके भयसे उत्तर दिशाको छोड़कर दक्षिण भाग गये थे (सभा० १४ । २८)। पूर्व-दिग्विजयके समय भीमसेनने इस देशपर विजय पायी थी (सभा० ३० । ८)। सहदेवने भी दक्षिणदिग्विजयके समय इसे जीता था (सभा० ३१ । ४)। अर्जुनद्वारा अज्ञातवासके लिये चुने हुए देशोंमें यह मत्स्यदेश भी था (विराट० १ । १२-१३)। महाभारतकालमें विराट यहाँके राजा थे (विराट० १ । १७)। मत्स्यनरेश विराटके यहाँ ही पाण्डवोंने अपना अज्ञातवासका समय बिताया। (विराट० ७ अध्याय)। मत्स्यदेशके राजा विराट एक अक्षौहिणी सेना लेकर युधिष्ठिरकी सहायतामें आये थे (उद्योग० १९ । १२)। इसकी गणना भारतके प्रमुख जनपदोंमें है (भीष्म० ९ । ४०)। कुछ मत्स्यदेशीय सैनिक भीष्मद्वारा मारे गये थे (भीष्म० ४९ । ४२)। द्रोणाचार्यद्वारा पाँच सौ मत्स्यदेशीय वीरोंका वध एक साथ हुआ था (द्रोण० १९० । ३१)। कर्णने पहले कभी इस देशको जीता था (कर्ण० ८ । १८)। यहाँके निवासी धर्मके जाननेवाले और सत्यवादी होते थे (कर्ण० ४५ । २८, ३०)। युद्धसे बचे हुए मत्स्यदेशीय वीरोंका अश्वत्थामाद्वारा संहार (सौप्तिक० ८ । १५८-१५९)।

मत्स्यगन्धा–दाशराजकी पोष्य कन्या (आदि० ६३ । ६९, ८६ के बाद दाक्षिणात्य पाठ)। (विशेष देखिये—सत्यवती)

मथुरा–(पुराणानुसार सात मोक्षदायिनी पुरियोंमेंसे एक पुरीका नाम । यह व्रजमें यमुनाके दाहिने किनारेपर है। रामायण (उत्तरकाण्ड) के अनुसार इसे मधु नामक दैत्यने बसाया था, जिसके पुत्र लवणासुरको पराजित करके शत्रुघ्नने इसको विजय किया था। पाली-भाषाके ग्रन्थोंमें इसे मथुरा लिखा है । महाभारतकालमें यहाँ शूरसेनवंशियोंका राज्य था और इसी वंशकी एक शाखामें भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रका यहाँ जन्म हुआ था । शूरसेनवंशियोंके राज्यके अनन्तर अशोकके समयमें उनके आचार्य उपगुप्तने इसे बौद्धधर्मका केन्द्र बनाया था। यह जैनोंका भी तीर्थस्थान है । उनके उन्नीसवें तीर्थंकर मल्लिनाथका यह जन्मस्थान है । मौर्यसाम्राज्यके अनन्तर यह स्थान अनेक यूनानी, पारसी और शक क्षत्रियोंके अधिकारमें रहा । महमूद गजनवीने सन् १०१७ ई० में आक्रमण करके इस नगरको नष्ट-भ्रष्ट कर डाला था । अन्य मुसलमान बादशाहोंने भी समय-समयपर आक्रमण करके इसे तहस-नहस किया था। यहाँ हिंदुओंके अनेक मन्दिर हैं और अनेक कृष्णोपासक वैष्णव-सम्प्रदायके आचार्योंका यह केन्द्र है। मथुराका दूसरा नाम शूरसेनपुर है (सभा० ३८ । दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ८०४, कालम २)। यहीं भगवान् श्रीकृष्णका अवतार हुआ और नवजात बालक श्रीहरिको वसुदेवजीने कंसके भयसे मथुरासे ले जाकर नन्दगोपके घरमें छिपा दिया (सभा० ३८ । पृष्ठ ७९८)। मथुरामें ही श्री-

कृष्णने अंध्रदेशीय मल्ल चाणूरका वध किया था । वहीं बलदेवने मुष्टिकको मारा था । उसी नगरमें श्रीकृष्णने कंसके भाई और सेनापति सुनामाका संहार किया । ऐरावत-कुलमें उत्पन्न कुवलयापीडको नष्ट किया । कंसको मारा, उग्रसेनको मथुराके राज्यपर अभिषिक्त किया और माता-पिताके चरणोंमें वन्दना की (सभा० ३८ । पृष्ठ ८०१) । श्रीकृष्ण शूरसेनपुरी मथुराको छोड़कर द्वारका चले गये थे (सभा० ३८ । पृष्ठ ८०४) । कंसके मारे जानेपर उसकी पत्नीकी प्रेरणासे जरासंधने जब मथुरापर आक्रमण किया, तब अपने मन्त्री हंस और डिम्भकके आत्मघात कर लेनेपर उत्साहशून्य होकर वह लौट गया । इससे मथुरावासी यादव आनन्दपूर्वक वहाँ रहने लगे । तदनन्तर अपनी पुत्रियोंकी प्रेरणासे जब जरासंधने पुनः आक्रमण किया, तब यादव वहाँसे भाग खड़े हुए और रैवतक पर्वतसे सुशोभित कुशस्थलीमें जाकर रहने लगे (सभा० १४ । ३५—५०) । जरासंधने गिरिव्रजसे एक गदा फेंकी थी, जो मथुरामें आकर एक स्थानपर गिरी, वह स्थान गदावसानके नामसे प्रसिद्ध हुआ (सभा० १९ । २३-२४) । मथुराके योद्धा मल्लयुद्धमें निपुण होते हैं (शान्ति० १०१ । ५) । साक्षात् नारायणने ही कंसका वध करनेके लिये मथुरामें श्रीकृष्णरूपसे अवतार लिया था (शान्ति० ३३९ । ८९-९०) ।

मदधार—एक पर्वत, जिसे पूर्व-दिग्विजयके समय भीमसेनने जीता था (सभा० ३० । ९) ।

मदयन्ती—राजा मित्रसह (कल्माषपाद अथवा सौदास) की पत्नी, जिनके गर्भसे वसिष्ठद्वारा अश्मककी उत्पत्ति हुई थी (आदि० १७६ । ४३—४६; आदि० १८१ । २६; शान्ति० २३४ । ३०) । कुण्डलकी याचनाके लिये गये हुए उत्तङ्क मुनिके साथ इनका संवाद (आश्व० ५७ । २१-२८) । उत्तङ्कको कुण्डल देना (आश्व० ५८ । ३) ।

मदासुर—च्यवनद्वारा प्रकट की हुई कृत्याके रूपमें एक विशालकाय असुर (वन० १२४ । १९) ।

मदिरा—वसुदेवजीकी अनेक पत्नियोंमेंसे एक । ये देवकी, भद्रा तथा रोहिणीके साथ पतिदेवकी चितापर आरूढ़ हो भस्म हो गयी थीं (मौसल० ७ । १८) ।

मदिराक्ष (मदिराश्व)—मत्स्यनरेश विराटके भाई, त्रिगर्तोंद्वारा गोहरणके समय इनका कवच धारण करके युद्धके लिये प्रस्थान करना (विराट० ३१ । १२-१३) । गोहरणके समय त्रिगर्तोंसे इनका युद्ध (विराट० ३२ । १९-२१) । ये राजा विराटके चक्र-रक्षक भी थे (विराट० ३३ । ४०) । ये एक उदार रथी, सम्पूर्ण अस्त्रोंके ज्ञाता और मनस्वी वीर थे (उद्योग० १७१ । १५) । द्रोणाचार्यद्वारा इनके मारे जानेकी चर्चा (कर्ण० ६ । ३४) ।

मदिराश्व—एक राजर्षि, जो इक्ष्वाकुकुमार दशाश्वके पुत्र थे । ये परम धर्मात्मा, सत्यवादी, तपस्वी, दानी तथा वेद एवं धनुर्वेदके अभ्यासमें तत्पर रहनेवाले थे (अनु० २ । ७-८) । हिरण्यहस्तको कन्यादान करके देववन्दित लोकोंमें गये थे (शान्ति० २३४ । ३५; अनु० १३७ । २४) ।

मद्र—एक प्राचीन भारतीय जनपद (जो आधुनिक मतके अनुसार रावी और चिनाब अथवा रावी और झेलमके मध्यवर्ती भू-भागमें स्थित था) । भीष्मजीका बूढ़े मन्त्रियों, ब्राह्मणों तथा सेनाके साथ इस देशमें जाना और मद्रराज शल्यसे पाण्डुके लिये माद्रीका वरण करना (आदि० ११२ । २—७) । अर्जुनके जन्मकालमें आकाशवाणी हुई थी कि यह बालक आगे चलकर मद्र आदि देशोंपर विजय पायेगा (आदि० १२२ । ४०) । पाण्डुपुत्र नकुलने इस देशपर प्रेमसे ही विजय पायी थी (सभा० ३२ । १४-१५) । मद्र या मद्रदेशके लोग युधिष्ठिरके लिये भेंट लेकर आये थे (सभा० ५२ । १४) । सती सावित्रीके पिता अश्वपति मद्रदेशके ही नरेश थे (वन० २९३ । १३) । कर्णने मद्र और वाह्लीक आदि देशोंको आचारभ्रष्ट बताकर उनकी निन्दा की थी (कर्ण० अध्याय ४४ से ४५ तक) ।

मद्रक—(१) एक प्राचीन क्षत्रिय राजा, जो क्रोधवशसंज्ञक दैत्यके अंशसे उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७ । ५९-६०) । (२) मद्रदेशीय योद्धा, जो कौरवसेनामें उपस्थित थे (भीष्म० ५१ । ७) ।

मद्रकलिङ्ग—एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ४२) ।

मधु—(१) एक महान् दैत्य, जो कैटभका भाई था । यह भगवान् विष्णुके कानोंकी मैलसे उत्पन्न हुआ था और उन्होंने ही मिट्टीसे उसकी आकृति बनायी थी । इसकी त्वचा मृदु होनेसे इसका नाम मधु रखा गया (सभा० ३८ । २९ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ७८३-७८४) । कैटभसहित यह असुर ब्रह्माजीको मारनेके लिये उद्यत हुआ था (वन० १२ । ३९) । इसके द्वारा विष्णुको अपनी मृत्युका वर देना (वन० २०३ । ३०) । इसकी भगवान् विष्णुसे वर-याचना (वन० २०३ । ३१-३२) । यह तमोगुणसे प्रकट हुआ था । यह असुरोंका पूर्वज था । इसका स्वभाव बड़ा ही उग्र था । यह सदा ही भयानक कर्म करनेवाला था । इस असुरको भगवान्

विष्णुने ब्रह्माजीके हितके लिये मारा था। इसीलिये वे मधुसूदन कहलाते हैं (शान्ति० २०७। १४-१६)। इसकी उत्पत्तिका वर्णन (शान्ति० ३४७। २५-२६)। इसका भगवान् हयग्रीव (विष्णु) द्वारा वध (सभा० ३८। २९ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ७८४; वन० २०३। ३५; शान्ति० ३४७। ६९-७०)। (२) यमकी सभामें रहनेवाला एक राजा (सभा० ८। १६)।

मधुकुम्भा–स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६। १९)।

मधुच्छन्दा–एक वानप्रस्थी ऋषि, जिन्होंने उस (वानप्रस्थ) धर्मके पालनसे उत्तम लोक प्राप्त किया (शान्ति० २४४। १६)। ये विश्वामित्रके ब्रह्मवादी पुत्रोंमेंसे एक थे (अनु० ४। ५०)।

मधुपर्क–(१) देवताओं तथा अतिथियोंके पूजनका एक उपचार, जो विशेष विधिसे अर्पित किया जाता है (वन० ५२। ४१)। (प्रायः दधि, मधु और घृत ही मधुपर्कके उपयोगमें लाये जाते हैं। कुछ लोग मधुके स्थानमें शर्करा डालते हैं।) (२) गरुड़की प्रमुख संतानोंमेंसे एक (उद्योग० १०१। १४)।

मधुमान्–एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९। ५३)।

मधुर–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५। ७१)।

मधुरस्वरा–स्वर्गलोककी एक अप्सरा, जिसने अर्जुनके स्वागतमें नृत्य किया था (वन० ४३। ३०)।

मधुलिका–स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६। १९)।

मधुवटी–कुरुक्षेत्रकी सीमामें स्थित एक तीर्थ। यहाँ जाकर देवीतीर्थमें स्नान करके मानव देवता-पितरोंकी पूजा करे तो देवीकी आज्ञाके अनुसार सहस्र गोदानका फल पाता है (वन० ८३। ९४)।

मधुवन–वानरराज सुग्रीवके अधिकारमें सुरक्षित एक वन, जिसके भीतर बलपूर्वक घुसकर हनुमान्, अङ्गद आदिने वहाँका मधु पी लिया था (वन० २८२। २७-२८)।

मधुवर्ण–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५। ७२)।

मधुविला–कर्दमिल क्षेत्रके निकट बहनेवाली एक प्रसिद्ध नदी, जिसका दूसरा नाम समंगा है (वन० १३५। १)। वृत्रासुरका वध करके श्रीहीन हुए इन्द्र समंगा या मधुविलामें ही नहाकर पापमुक्त हो सके थे (वन० १३५। २)। अपने पिता कहोडकी आज्ञासे समंगामें स्नान करनेसे अष्टावक्रके सारे अङ्ग सीधे हो गये थे। इसीसे वह पुण्यमयी हो गयी। इसमें स्नान करनेवाला मनुष्य सब पापोंसे मुक्त हो जाता है (वन० १३४। ३९-४०)।

मधुसूदन–श्रीकृष्णका एक नाम। मधु नामक असुरको मारनेके कारण ये मधुसूदन कहलाते हैं (वन० २०७। १६)।

मधुस्रव–कुरुक्षेत्रकी सीमाके अन्तर्गत स्थित एक प्राचीन तीर्थ, जो पृथूदकके पास है। इसमें स्नान करनेसे सहस्र गोदानका फल मिलता है (वन० ८३। १५०)।

मनस्यु–महाराज पूरुके पौत्र तथा प्रवीरके पुत्र। इनकी माताका नाम 'शूरसेनी' था। ये चक्रवर्ती सम्राट् थे। इनके द्वारा अपनी पत्नी सौवीरीके गर्भसे तीन पुत्र उत्पन्न हुए—शक्त, संहनन और वाग्मी (आदि० ९४। ६-७)।

मनस्विनी–प्रजापति दक्षकी पुत्री, धर्मराजकी पत्नी और चन्द्रमाकी माता (आदि० ६६। १९)।

मनु–(१) मानव-सृष्टिके प्रवर्तक आदि मनु, जो विराट् अण्डसे प्रकट हुए (आदि० १। ३२)। इनकी पुत्री आरुषी महर्षि च्यवनकी पत्नी थी (आदि० ६६। ४६)। इन्हें ही स्वयम्भूका पुत्र मानकर 'स्वायम्भुव' कहा गया है। इन्होंने धर्मसम्मत विवाहके विषयमें अपना निर्णय दिया है (आदि० ७३। ९)। इन्होंने सोमको चाक्षुषी विद्या प्रदान की थी (आदि० १६९। ४३)। मगध देशको मेघोंके लिये अपरिहार्य कर दिया था, जिससे मेघ सदा समयपर वहाँ जल बरसाते थे (सभा० २१। १०)। ये इन्द्रके विमानपर बैठकर कौरवोंके साथ अर्जुनका युद्ध देखनेके लिये आये थे (विराट० ५६। १०)। इनकी पत्नीका नाम सरस्वती था (उद्योग० ११७। १४)। (पुराणान्तरोंमें शतरूपा नाम आता है।) विन्दुसरोवरके तटपर ये सदा स्थित रहते हैं (भीष्म० ७। ४६)। ये पृथ्वी-दोहनके समय बछड़ा बने थे (द्रोण० ६९। २१)। ये स्कन्दके जन्म-समयमें भी पधारे थे (शल्य० ४५। १०)। इनका सिद्धोंके साथ संवाद, इनके कथनानुसार धर्मका स्वरूप, पापसे शुद्धिके लिये प्रायश्चित्त, अभक्ष्य वस्तुओंका वर्णन तथा दानके अधिकारी एवं अनधिकारीका विवेचन (शान्ति० ३६ अध्याय)। ये मनुष्योंके आदि राजा थे (शान्ति० ६७। २१-२२)। इन्हें प्रजापति मनु भी कहते हैं, इन्होंने बृहस्पतिके प्रश्नोंके उत्तरमें ज्ञान और त्यागकी प्रशंसा करते हुए उन्हें परमात्मतत्त्वका उपदेश दिया तथा उनके अन्य प्रश्नोंका भी विवेचन किया (शान्ति० अध्याय २०१ से २०६ तक)। पाञ्चरात्र आगमके अनुसार ही स्वायम्भुव मनुने धर्म-

शास्त्रका निर्माण एवं धर्मोपदेश किया (शान्ति० ३३५ । ४४-४५) । जिस समय उपमन्यु सर्वालङ्कार तथा परिवारगणोंसे घिरे हुए महादेवजीका दर्शन कर रहे थे, उस समय उन्होंने देखा कि स्वायम्भुव मनु वहाँ पधारे हुए हैं (अनु० १४ । २८०) । पुष्प, धूप, दीप और उपहारके दानके माहात्म्य-प्रसङ्गमें तपस्वी सुवर्ण और मनुका संवाद (अनु० ९८ अध्याय) । (२) कश्यपकी 'प्राधा' नामवाली पत्नीसे उत्पन्न हुई पुत्री (आदि० ६५ । ४५-४६) । (३) विवस्वान्के पुत्र, जो वैवस्वत मनुके नामसे प्रसिद्ध हुए (आदि० ७५ । १२) । इनके वेन, धृष्णु, नरिष्यन्त, नाभाग, इक्ष्वाकु, कारूष, शर्याति, इला, पृषध्र, नाभागारिष्ट–ये दस पुत्र थे (आदि० ७५ । १५-१६) । वैवस्वत मनुका चरित्र तथा मत्स्यावतारकी कथा (वन० १८७ अध्याय) । इन्हें विवस्वान्से योगकी प्राप्ति हुई और इन्होंने वही योग इक्ष्वाकुको प्रदान किया (भीष्म० १२२ । ३८–४२) । त्रेतायुगके आरम्भमें सूर्यने मनुको और मनुने सम्पूर्ण जगत्के कल्याणके लिये अपने पुत्र इक्ष्वाकुको सात्वत धर्मका उपदेश किया (शान्ति० ३४८ । ५१) । महर्षि गौतमसे इन्हें शिवसहस्रनामकी प्राप्ति हुई और इन्होंने समाधिनिष्ठ एवं ज्ञानी नारायण नामक किसी साध्य देवताको यह स्तोत्र प्रदान किया (अनु० १७ । १७७-१७८) । (४) ये तपनामधारी पाञ्चजन्य नामक अग्निके पुत्र थे। इनका एक नाम भानु भी था । इनके तीन पत्नियाँ थीं–सुप्रजा, बृहद्भासा और निशा । प्रथम दोसे छः पुत्र और तीसरीसे एक कन्या तथा सात पुत्र उत्पन्न हुए (वन० २२१ । ४–१५) । (५) प्राचेतस नामसे प्रसिद्ध मनु, जिन्होंने छः व्यक्तियोंको त्याज्य बताया है (शान्ति० ५७ । ४३–४५) । (६) स्वारोचिष नामसे प्रसिद्ध एक मनु, जिन्हें ब्रह्माजीने सात्वत धर्मका उपदेश दिया था । फिर स्वारोचिषने अपने पुत्र शङ्खपदको इसका उपदेश दिया (शान्ति० ३४८ । ३६-३७) । (७) चाक्षुष नामक मनु, जिनके पुत्र भगवान् वरिष्ठके नामसे प्रसिद्ध हैं (अनु० १८ । २०) । (८) सौवर्ण नामक मनु, जिनके समयमें वेदव्यास सप्तर्षि पदपर प्रतिष्ठित होंगे (अनु० १८ । ४३) ।

मनोजव–(१) अनिल नामक वसुके प्रथम पुत्र । इनकी माताका नाम शिवा है (आदि० ६६ । २५) । (२) कुरुक्षेत्रकी सीमामें स्थित एक पवित्र तीर्थ, जो व्यासवनमें स्थित है । इसमें स्नान करनेसे सहस्र गोदानका फल मिलता है (वन० ८३ । ९३) ।

मनोजवा–स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । १६) ।

मनोनुग–क्रौञ्चद्वीपवर्ती वामन पर्वतके पासका एक देश (भीष्म० १२ । २१) ।

मनोरमा–(१) एक अप्सरा, जो कश्यपकी प्राधा नामवाली पत्नीसे उत्पन्न हुई थी (आदि० ६५ । ५०) । इसने अर्जुनके जन्ममहोत्सवमें आकर नृत्य किया था (आदि० १२२ । ६२) । (२) उद्दालक मुनिके आवाहन करनेपर उनके यज्ञमें प्रकट हुई सरस्वती नदीका नाम (शल्य० ३८ । २५) ।

मनोहरा–(१) सोम नामक वसुकी पत्नी, जिसके गर्भसे पहले वर्चाका जन्म हुआ; फिर शिशिर, प्राण तथा रमण नामक तीन पुत्र उत्पन्न हुए (आदि० ६६ । २२) । (२) अलकापुरीकी एक अप्सरा, जिसने अष्टावक्रके स्वागतके लिये कुबेरसभामें नृत्य किया था (अनु० १९ । ४५) ।

मन्थरा–दुन्दुभी नामक गन्धर्वीके अंशसे उत्पन्न हुई एक कुबड़ी दासी, जो कैकेयीकी सेवामें रहती थी (वन० २७६ । १०) । इसका कैकेयीके मनमें भेद उत्पन्न करना (वन० २७७ । १७-१८) ।

मन्थिनी–स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । २८) ।

मन्दग–शाकद्वीपका एक जनपद, जिसमें धर्मात्मा शूद्रोंका निवास है (भीष्म० ११ । ३८) ।

मन्दगा–भारतकी एक प्रमुख नदी, जिसका जल यहाँके निवासी पीते हैं (भीष्म० ९ । ३३) ।

मन्दपाल–एक विद्वान् महर्षि, जो धर्मज्ञोंमें श्रेष्ठ और कठोर व्रतका पालन करनेवाले थे । ये ऊर्ध्वरेता मुनियोंके मार्गका आश्रय ले सदा वेदोंके स्वाध्याय, धर्मपालन और तपस्यामें संलग्न रहते थे । अपनी तपस्या पूर्ण करके शरीरको त्यागकर जब ये पितृलोकमें गये, तब वहाँ इन्हें अपने तप एवं सत्कर्मोंका फल नहीं मिला । इन्होंने देवताओंसे इसका कारण पूछा । देवताओंने बताया कि आपने पितृ-ऋणको नहीं उतारा है; अतः संतान उत्पन्न करके अपनी वंशपरम्पराको अविच्छिन्न बनानेका प्रयत्न कीजिये । यह सुनकर शीघ्र संतान उत्पन्न करनेके लिये इन्होंने शार्ङ्गिक पक्षी होकर जरिता नामवाली शार्ङ्गिकासे सम्बन्ध स्थापित किया । उसके गर्भसे चार ब्रह्मवादी पुत्रोंको जन्म देकर ये मुनि लपिता नामवाली पक्षिणीके पास चले गये । बच्चे अपनी माँके साथ खाण्डववनमें ही रहे । जब अग्निदेवने उस वनको जलाना आरम्भ किया, उस समय इन्होंने उनकी स्तुति की और अपने पुत्रोंकी जीवन-रक्षाके लिये वर माँगा । तब अग्निदेवने 'तथास्तु' कहकर इनकी प्रार्थना

स्वीकार कर ली (आदि० २२८ अध्याय)। मन्दपालका लपितासे अपने बच्चोंकी रक्षाके लिये चिन्ता प्रकट करना। लपिताके ईर्ष्यायुक्त वचन सुनकर मन्दपालका उससे अपने कथनकी यथार्थता बताना और अपने बच्चोंके पास जाना। बच्चोंद्वारा अभिनन्दित न होनेपर इनका जरितासे ज्येष्ठ आदि पुत्रोंका परिचय पूछना। जरिताका उन्हें फटकारना। मन्दपालका स्त्रियोंके सौतियाडाहरूपी दोषका वर्णन करके उनकी अविश्वसनीयता बताना। तत्पश्चात् अपने पास आये हुए पुत्रोंको इनका आश्वासन देना और उनको तथा जरिताको साथ लेकर देशान्तरको प्रस्थान करना (आदि० २३२। २ से आदि० २३३। ४ तक)।

मन्दराचल–एक पर्वत, जिसकी ऊँचाई ग्यारह हजार योजन थी। वह पृथ्वीके भीतर भी उतनी ही गहराई तक धँसा हुआ था। इसका विशेष वर्णन (आदि० १८। १–३)। भगवान् विष्णुकी प्रेरणासे शेषनागके द्वारा समुद्रमन्थनके लिये इसका उत्पाटन (आदि० १८। ६–८)। समुद्रमन्थनके लिये इसे मथानी बनाया गया था (आदि० १८। १३)। समुद्रमन्थनके समय इसके द्वारा जल-जन्तुओं एवं पातालवासी प्राणियोंका संहार (आदि० १८। १६–२१)। यह कुबेरकी सभामें उपस्थित हो उनकी उपासना करता है (सभा० १०। ३१)। कैलासके पास मन्दराचलकी स्थिति है, जिसके ऊपर माणिवर यक्ष और यक्षराज कुबेर निवास करते हैं। वहाँ अट्ठासी हजार गन्धर्व और उनसे चौगुने किन्नर एवं यक्ष रहते हैं (वन० १३९। ५-६)। स्वप्नावस्थामें श्रीकृष्णके साथ कैलास जाते हुए अर्जुनने मार्गमें महामन्दराचलपर पदार्पण किया था, जो अप्सराओंसे व्याप्त और किन्नरोंसे सुशोभित था (द्रोण० ८०। ३३)। भगवान् शंकरने त्रिपुरदाहके समय मन्दराचलको अपना धनुष एवं रथका धुरा बनाया था (द्रोण० २०२। ७६; कर्ण० ३४। २०)। उत्तरदिशाकी यात्रा करते समय अष्टावक्र मुनि इस पर्वतपर गये थे (अनु० १९। ५४)।

मन्दवाहिनी–एक नदी, जिसका जल भारतवासी पीते हैं (भीष्म० ९। ३३)।

मन्दाकिनी–(१) गिरिवर चित्रकूटके पास बहनेवाली एक सर्वपापनाशिनी नदी, जिसमें स्नानपूर्वक देवता-पितरोंकी पूजा करनेसे अश्वमेध यज्ञका फल मिलता है (वन० ८५। ५८-५९)। इसकी गणना भारतकी उन प्रमुख नदियोंमें है, जिनका जल भारतीय प्रजा पीती है (भीष्म० ९। ३६)। चित्रकूटमें मन्दाकिनीके जलमें स्नान करके उपवास करनेसे मनुष्य राजलक्ष्मीसे सेवित होता है (अनु० २५। २९)। (२) (उत्तराखण्डमें गढ़वालकी केदारपर्वतमालासे निकलनेवाली 'मन्दाग्नि' या 'कालीगङ्गा' नामवाली नदी) जिसका जल भारतवासी पीते हैं (भीष्म० ९। ३४)। (३) यक्षराज कुबेरकी कमल-पुष्पोंसे सुशोभित एक बावड़ी, जो गङ्गाजलसे पूर्ण होनेके कारण 'मन्दाकिनी' कहलाती है (अनु० १९। ३२)।

मन्दार–हिरण्यकशिपुका ज्येष्ठ पुत्र, जो शिवजीके वरसे एक अर्बुद वर्षोंतक इन्द्रसे युद्ध करता रहा। उसके अङ्गोंपर भगवान् विष्णुका वह भयंकर चक्र तथा इन्द्रका वज्र भी पुराने तिनकेके समान जीर्ण-शीर्ण-सा हो गया था (अनु० १४। ७४-७५)।

मन्दोदरी–(१) रावणकी पत्नी (वन० २८१। १६)। (२) स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६। १७)

मन्मथकर–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५। ७२)।

मन्युमान्–भानु (मनु) नामक अग्निके द्वितीय पुत्र (वन० २२१। ११)।

मय–एक दानव, जिसने कुछ कालतक खाण्डववनमें निवास किया था। अर्जुनने इसे वहाँ जलनेसे बचाया था; अतः इसने उनके लिये एक दिव्य सभाभवनका निर्माण किया, जिसे दुर्योधन ले लेना चाहता था (आदि० ६१। ४८-४९)। यह खाण्डवदाहके समय तक्षकके निवासस्थानसे निकलकर भागा। श्रीकृष्णने इसे भागते देखा। अग्निदेव मूर्तिमान् होकर गर्जने और इस राक्षसको माँगने लगे। श्रीकृष्णने इसे मारनेके लिये चक्र उठाया। तब यह अर्जुनकी शरणमें गया और उन्होंने इसे अभय दे दिया। यह देख न तो श्रीकृष्णने इसे मारा और न अग्निदेवने जलाया ही (आदि० २२७। ३९–४५)। यह दानवोंका श्रेष्ठ शिल्पी तथा नमुचिका भाई था (आदि० २२७। ४१—४५)। मयासुरका श्रीकृष्ण और अग्निसे अपनी रक्षा हो जानेपर अर्जुनको इस उपकारके बदलेमें अपनी ओरसे कुछ सेवा अर्पित करनेकी इच्छा प्रकट करना। अर्जुनका बदलेमें कोई सेवा लेनेसे इनकार करनेपर मयासुरका अपनेको दानवोंका विश्वकर्मा बताना और उनके लिये प्रसन्नतापूर्वक किसी वस्तुका निर्माण करनेकी इच्छा प्रकट करना (सभा० १। ३–६)। अर्जुनका मयासुरसे श्रीकृष्णकी इच्छाके अनुसार कोई कार्य करनेके लिये कहना और श्रीकृष्णका इसे धर्मराज युधिष्ठिरके लिये एक दिव्यसभाभवनका निर्माण करनेके लिये आदेश देना (सभा० १। ७–१३)। मयासुरका प्रसन्नतापूर्वक उनकी आज्ञाको शिरोधार्य करना, युधिष्ठिरद्वारा इसका सत्कार, इसका पाण्डवोंको दैत्योंके

अद्भुत चरित्र सुनाना और उनके लिये दिव्य सभा बनानेके लिये भूमिको नपवाना (सभा० १ । १४–२१)। मयासुरका भीमसेन और अर्जुनको गदा एवं शङ्ख लाकर देना और पाण्डवोंके लिये अद्भुत सभा-का निर्माण करना (सभा० ३ अध्याय) । सभा-का निर्माण करके मयका अर्जुनको उसे दिखाना और एक मायामय ध्वजका निर्माण करके देना (सभा० ४।दा० पाठ, पृष्ठ ६७२)। दक्षिणसमुद्रके निकट सह्य, मलय और दुर्दुर नामक पर्वतोंके आसपास एक विशाल गुफाके भीतर बने हुए दिव्य भवनमें त्रेतायुगमें मयासुर निवास करता था। वहीं प्रभावती नामवाली एक तपस्विनी तपस्या करती थी, जिसने हनुमान् आदि वानरोंको नाना प्रकारके भोज्य पदार्थ और भाँति-भाँतिके पीने योग्य रस दिये थे (वन० २८२ । ४०–४३)। इसके द्वारा त्रिपुरसंज्ञक तीन पुरोंका निर्माण (कर्ण० ३३ । १७)।

मयदर्शनपर्व–आदिपर्वका एक अवान्तर पर्व (अध्याय २२७ से २३३ तक)।

मयूर–एक विख्यात महान् असुर, जो इस भूतलपर विश्व नामक राजाके रूपमें उत्पन्न हुआ था (आदि० ६५ । ३५-३६)।

मरीचि–(१) ब्रह्माजीके मानस पुत्र। कश्यपके पिता (आदि० ६५ । १०-११; आदि० ७५ । १०)। इनकी उत्पत्तिका वर्णन (अनु० ८५। १०७)। ये अर्जुनके जन्ममहोत्सवमें पधारे थे (आदि० १२२। ५२)। ये इन्द्रकी सभामें विराजते हैं (सभा० ७ । १७)। ब्रह्माजीकी सभामें उपस्थित हो उनकी उपासना करते हैं (सभा० ११ । १८)। स्कन्दके जन्मकालमें उनके पास गये थे (शल्य० ४५ । १०)। शरशय्यापर पड़े हुए भीष्मके पास ये भी गये थे (शान्ति० ४७ । १०)। इन्हें अङ्गिरासे दण्डकी प्राप्ति हुई। इन्होंने उसे भृगुको दिया था (शान्ति० १२२ । ३७)। ये ब्रह्माजीके प्रथम पुत्र हैं, इन्हें विष्णुने खड्ग दिया और इन्होंने उसे अन्य महर्षियोंको दिया (शान्ति० १६६ । ६६)। ये इक्कीस प्रजापतियोंमेंसे एक हैं (शान्ति० ३३४। ३५)। 'चित्रशिखण्डी' कहे जाननेवाले ऋषियोंमें इनकी भी गणना है (शान्ति० ३३५ । २९)। ये आठ प्रकृतियों-में गिने गये हैं (शान्ति० ३४० । ३४)। अग्निकी मरीचियों (किरणों) से मरीचिका प्रादुर्भाव हुआ (अनु० ८५ । १०७)। (२) एक स्वर्गीय अप्सरा, जिसने अर्जुनके जन्ममहोत्सवमें आकर गान-नृत्य किया था (आदि० १२२ । ६२)।

मरुत्त–(१) एक सुप्रसिद्ध सम्राट्, जो प्राचीनकालमें इस पृथ्वीके शासक थे (आदि० १ । २२७)। ये यमराजकी सभामें रहकर सूर्यपुत्र यमकी उपासना करते हैं (सभा० ८ । १६)। पाँच सम्राटोंमेंसे एक हैं (सभा० १५। १६)। ये महाराज अविक्षित्के पुत्र थे। बृहस्पतिजीके साथ स्पर्धा रखने-के कारण इनके भाई संवर्तने इनका यज्ञ कराया था। साक्षात् भगवान् शङ्करने प्रचुर धन-राशिके रूपमें इन्हें हिमालयका एक सुवर्णमय शिखर प्रदान किया था। प्रतिदिन यज्ञकार्य-के अन्तमें इनकी सभामें इन्द्र आदि देवता और बृहस्पति आदि समस्त प्रजापतिगण सभासद्के रूपमें बैठा करते थे। इनके यज्ञमण्डपकी सारी सामग्रियाँ सोनेकी बनी हुई थीं। इनके घरमें मरुद्गण रसोई परोसनेका काम किया करते थे। विश्वेदेव इनकी राजसभाके सभासद् थे। इन्होंने अपनी समस्त प्रजाको नीरोग बना दिया था। इन्होंने देवताओं, ऋषियों और पितरोंको संतुष्ट किया था। ब्राह्मणोंको शय्या, आसन, सवारी और दुस्त्यज स्वर्णराशि-प्रदान की थी। इन्द्र सदा इनका शुभचिन्तन करते थे। इन्होंने युवावस्थामें रहकर प्रजा, मन्त्री, धर्मपत्नी, पुत्र और भाइयोंके साथ एक हजार वर्षोंतक राज्यशासन किया था (द्रोण० ५५ । ३७–४९)। श्रीकृष्णद्वारा नारद-सृंजय-संवादके रूपमें इनके प्रभाव एवं यज्ञका वर्णन (शान्ति० २९ । १९–२४)। इनका दण्डविषयक विधान (शान्ति० ५७ । ७)। इन्हें महाराज मुचुकुन्द-से खड्गकी प्राप्ति हुई और इन्होंने रैवतको खड्ग प्रदान किया (शान्ति० १६६ । ७७)। इनके द्वारा अङ्गिरा-को कन्यादान और स्वर्गकी प्राप्ति (शान्ति० २३४। २८; अनु० १३७।१६)। ये करन्धमके पौत्र थे। बृहस्पतिजीसे अपना यज्ञ करानेके लिये इनकी प्रार्थना और उनके अस्वीकार करनेपर लज्जित एवं दुखी होकर इनका लौटना (आश्व० ६ । ४--१०)। लौटते समय मार्गमें नारदजीसे भेंट और उन्हें अपने शोकका कारण बताना (आश्व० ६ । १५-१६)। नारदजीके बताये अनुसार संवर्तसे इनकी भेंट और उनके पीछे-पीछे जाना (आश्व० ६ । ३०–३३)। संवर्तके साथ वार्तालाप और उनका साथ न छोड़नेके लिये इनका शपथ खाना (आश्व० ७ । ३—२३)। शिवजी-की कृपासे इन्हें धनकी प्राप्ति (आश्व० ८ । ३२ के बाद दाक्षिणात्य पाठ)। इनका धृतराष्ट्रद्वारा लाये हुए इन्द्रके संदेशका उत्तर देना (आश्व० १० । ६-७)। इन्द्रके भयसे भीत होना (आश्व० १० । १६)। यज्ञ समाप्त करके राजधानीको लौटना (आश्व० १० । ३४-३५)। (२) एक महर्षि, जिन्होंने शान्तिदूत बनकर हस्तिनापुर जाते हुए श्रीकृष्णको मार्गमें परिक्रमा की थी (उद्योग० ८३ । २७)। ये इन्द्रसभामें विराजमान होते हैं (सभा० ७ । १७)।

मरुद्गण–देवताओंका एक गण (शल्य० ४५ । ६)।

मरुद्गणतीर्थ–एक तीर्थ, जहाँ पवित्रभावसे स्नान करनेवाला मनुष्य तीर्थरूप हो जाता है (अनु० २५ । ३८)।

मरुभूमि (मरुधन्व)–मारवाड़ प्रदेश (वर्तमान राजस्थान प्रान्त), जिसे नकुलने पश्चिम-दिग्विजयके समय जीता था (सभा० ३२ । ५)। मरुभूमिके शीर्षस्थानमें काम्यकवन है, जहाँ तृणविन्दु सरोवर है (वन० २५८ । १३)। कौरवोंकी सेनाका पड़ाव मरुभूमिमें भी पड़ा था (उद्योग० १९ । ३०)। मरुधन्व या मारवाड़में ही उत्तङ्क मुनि रहते थे, जिनके साथ द्वारका जाते समय श्रीकृष्णकी भेंट हुई थी। श्रीकृष्णने इन्हें विश्वरूपका दर्शन कराया था। उनकी प्यास बुझानेके लिये मरुदेशमें उत्तङ्कमेघ प्रकट होनेका वर प्रदान किया था (आश्व० अध्याय ५३से ५५ तक)।

मर्यादा–(१) एक विदर्भराजकुमारी, जो पूरुवंशी राजा अवाचीनकी पत्नी थी। इसके पुत्रका नाम 'अरिह' था। यह देवातिथिकी पत्नी मर्यादासे भिन्न थी (आदि० ९५ । १८)। (२) विदेहराजकी पुत्री, जो पूरुवंशी महाराज देवातिथिकी पत्नी और अरिहकी माता थी (आदि० ९५ । २३)।

मलज–एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ४५)।

मलद–पूर्व भारतका एक जनपद, जिसे भीमसेनने जीता था (सभा० ३० । ८)। इस जनपदके योद्धा कौरवपक्षमें थे और दुर्योधनको आगे करके युद्धक्षेत्रमें चल रहे थे (द्रोण० ७ । १५-१६)।

मलय–दक्षिण भारतका एक पर्वत, जो कुबेरकी सभामें रहकर उनकी उपासना करता है (सभा० १० । ३२)। पाण्ड्य और चोल देशोंके राजा मलय तथा दुर्दुर पर्वतोंसे सुवर्णमय घटोंमें रखे हुए चन्दनरस एवं चन्दन लेकर युधिष्ठिरको भेंट देनेके लिये आये थे (सभा० ५२ । ३३-३४)। सीताकी खोजके लिये दक्षिण जानेवाले वानरोंने मलयपर्वतको पार किया था (वन० २८२ । ४४)। भारतवर्षके सात कुलपर्वतोंमें मलयकी भी गणना है (भीष्म० ९ । ११)। यहाँ मृत्युने तपस्या की थी (द्रोण० ५४ । २६)। त्रिपुरदाहके समय शङ्करजीने मलयको अपने रथका यूप बनाया (द्रोण० २०२ । ७३)। शुकदेवजीकी ऊर्ध्वगतिके समय उनके आकाशमार्गमें एक मलय नामक पर्वत आया था, जहाँ उर्वशी और विप्रचित्ति–ये दो अप्सराएँ नित्य निवास करती हैं। कैलाससे ऊपर उड़नेपर उन्हें यह पर्वत मिला था; अतः इसे दक्षिणके मलयपर्वतसे भिन्न समझना चाहिये (शान्ति० ३३२ । २१)।

मलयध्वज (पाण्ड्य)–पाण्ड्य देशके एक राजा, जो अश्वत्थामाके साथ युद्ध करके मारे गये थे (कर्ण० २० । १९--४७)।

मल्लराष्ट्र–एक प्राचीन गणतन्त्र राज्य; यहाँके अधिपति 'पार्थिव' को भीमसेनने परास्त किया था (वर्तमान कुशीनारा या कुशीनगर (कसया) ही मल्लराष्ट्रकी राजधानी था। बौद्धग्रन्थोंमें इसका विशेष वर्णन मिलता है।) (सभा० ३० । ३; भीष्म० ९ । ४४)। अर्जुनने अज्ञातवासके लिये जिन देशोंको उपयुक्त समझकर चुना था, उनमें मल्लराष्ट्रकी भी गणना है (विराट० १ । १२)।

मशक–शाकद्वीपका एक जनपद, जिसमें सम्पूर्ण कामनाओंको पूर्ण करनेवाले क्षत्रिय निवास करते हैं (भीष्म० ११ । ३७-३८)।

मसीर–एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ५३)।

महत्तर–पाञ्चजन्य नामक अग्निके पाँच पुत्रोंमेंसे एक, जो काश्यपके अंशसे उत्पन्न हुए थे (वन० २२० । ९)।

महाकर्णि–मगधराज अम्बुवीचका दुष्ट मन्त्री (आदि० २०३ । १९)।

महाकर्णी–स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य०४६।२६)।

महाकाया–स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका(शल्य०४६।२४)।

महाकाल–(१) भगवान् शिवके पार्षद, जो कुबेरकी सभामें विराजमान होते हैं (सभा० १० । ३४)। (२) उज्जयिनीमें शिप्राके तटपर स्थित एक प्राचीन तीर्थ, जहाँ 'महाकाल' नामक ज्योतिर्लिङ्ग स्थित है। वहाँ नियमसे रहकर नियमित भोजन करना चाहिये। वहाँके कोटितीर्थमें स्नान-आचमन करनेसे अश्वमेधयज्ञका फल मिलता है (वन० ८२ । ४९)।

महाकाश–शाकद्वीपका एक वर्ष (भीष्म० ११ । २५)।

महाक्रौञ्च–क्रौञ्चद्वीपका एक पर्वत (भीष्म० १२ । ७)।

महागङ्गा–एक तीर्थ, जिसमें स्नान करके एक पक्षतक निराहार रहनेवाला मनुष्य निष्पाप होकर स्वर्गलोकमें जाता है (अनु० २५ । २२)।

महागौरी–भारतकी एक मुख्य नदी, जिसका जल यहाँके निवासी पीते हैं (भीष्म० ९ । ३३)।

महाचूडा–स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य०४६।५)।

महाजय–नागराज वासुकिद्वारा स्कन्दको दिये गये दो पार्षदोंमेंसे एक। दूसरेका नाम 'जय' था (शल्य० ४५ । ५२)।

महाजवा–स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य०४६।२२)।

महाजानु–एक श्रेष्ठ द्विज, जो प्रमद्वराके सर्पदंशनके समय दयासे द्रवित हो उसे देखनेके लिये आये थे (आदि० ८ । २४)।

महातेजा–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ७०) ।

महादेव–भगवान् शिवका एक नाम (उद्योग० १८८ । ४) । (देखिये शिव)

महाद्युति–एक प्राचीन नरेश (आदि० १ । २३२) ।

महान्–(१) पूरुवंशी राजा मतिनारके पुत्र (आदि० ९४ । १४) । (२) प्रजापति भरत नामक अग्निके पुत्र पावक, जो अत्यन्त महनीय (पूज्य) होनेके कारण महान् कहलाते हैं (वन० २१९ । ८) ।

महानदी–(१) उत्कल प्रदेश (उड़ीसा) में बहनेवाली एक प्रसिद्ध नदी, जहाँ अर्जुन गये थे (आदि० २१४ । ७) । महानदीमें स्नान करके जो देवताओं और पितरोंका तर्पण करता है, वह अक्षय लोकोंको प्राप्त होता और अपने कुलका उद्धार कर देता है (वन० ८४ । ८४) । (२) शाकद्वीपकी एक नदी (भीष्म० ११ । ३२) ।

महानन्दा–एक तीर्थ, जिसका सेवन करनेवाले पुरुषकी स्वर्गस्थ नन्दनवनमें अप्सराएँ सेवा करती हैं (अनु० २५ । ४५) ।

महापगा–भारतकी एक मुख्य नदी, जिसका जल यहाँके निवासी पीते हैं (भीष्म० ९ । २८) ।

महापद्म–घटोत्कचके साथी राक्षसकी सवारीमें आया हुआ गजराज (भीष्म० ६४ । ५७) । यह एक दिग्गज है (द्रोण० १२१ । २५-२६) ।

महापद्मपुर–गङ्गाके दक्षिण तटपर स्थित एक नगर (शान्ति० ३५३ । १) ।

महापारिषदेश्वर–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ६६) ।

महापार्श्व–कैलासपर्वतपर महादेवजीके पूर्वोत्तर भागमें स्थित एक पर्वत (अनु० १९ । २१) ।

महापुमान्–मोदाकी वर्षसे आगे एक पर्वत (भीष्म० ११ । २६) ।

महापुर–एक तीर्थ, जहाँ स्नानकर तीन राततक पवित्रता-पूर्वक उपवास करनेसे मनुष्य चराचर प्राणियों तथा मनुष्योंसे प्राप्त होनेवाले भयको त्याग देता है (अनु० २५ । २६) ।

महाप्रस्थानिकपर्व–महाभारतका एक प्रधान पर्व ।

महाबल–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ७१) ।

महाबला (प्रथम)–स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । ९) ।

महाबला (द्वितीय)–स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । २६) ।

महाबाहु–(१) धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६७ । ९८) । भीमसेनद्वारा इसका वध (द्रोण० १५७ । १९) । (२) धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमें एक (आदि० ६७ । १०५) ।

महाभय–अधर्मकी स्त्री निर्ऋतिके गर्भसे उत्पन्न तीन नैर्ऋत नामवाले राक्षसोंमेंसे एक । शेष दोके नाम भय और मृत्यु हैं (आदि० ६६ । ५४-५५) ।

महाभिष–इक्ष्वाकुवंशमें उत्पन्न एक प्राचीन राजा, जो सत्यवादी और सत्यपराक्रमी थे (आदि० ९६ । १) । इन्होंने सहस्र अश्वमेध एवं सौ राजसूय यज्ञोंद्वारा इन्द्रको संतुष्ट करके स्वर्गलोक प्राप्त किया था (आदि० ९६ । २) । ब्रह्माजीकी सभामें बैठे हुए महाभिषको गङ्गाके अनावृत शरीरकी ओर देखनेके कारण ब्रह्माजीका शाप प्राप्त हुआ (आदि० ९६ । ४—७) । इन्होंने मर्त्य-लोकमें राजा प्रतीपको ही अपना पिता बनानेके योग्य चुना (आदि० ९६ । ९) । ये ही प्रतीपके यहाँ 'शान्तनु' रूपमें उत्पन्न हुए (आदि० ९७ । १७ के बाद दा० पाठ और १९ श्लोकतक) ।

महाभौम–पूरुवंशी महाराज अरिहके पुत्र । इनके द्वारा सुयज्ञाके गर्भसे अयुतनायीका जन्म हुआ था (आदि० ९५ । १९-२०) ।

महामती–महर्षि अङ्गिराकी सातवीं पुत्री (प्रतिपद्युक्त अमावास्या) (वन० २१८ । ७) ।

महामुख–जयद्रथकी सेनाका एक योद्धा, जो द्रौपदीहरणके समय युद्धमें नकुलके द्वारा मारा गया (वन० २७१ । १६-१७) ।

महायशा–स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । २८) ।

महारव–एक यदुवंशी क्षत्रिय, जो रैवतक पर्वतपर होनेवाले उत्सवमें सम्मिलित था (आदि० २१८ । ११) ।

महारौद्र–घटोत्कचका साथी एक राक्षस, जो दुर्योधनद्वारा मारा गया था (भीष्म० ९१ । २०-२१) ।

महालय–एक तीर्थ, जहाँ छठे समयतक उपवासपूर्वक एक मासतक निवास करनेसे मनुष्य सब पापोंसे मुक्त हो सुवर्ण-राशि पाता तथा आगे-पीछेकी दस-दस पीढ़ियोंका उद्धार कर देता है (वन० ८४ । ५४-५५) ।

महावीर–एक प्राचीन क्षत्रिय राजा, जो क्रोधवशसंज्ञक दैत्यके अंशसे उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७ । ६६) ।

महावेगा–स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य०४६।१६) ।

महाशिरा–एक प्राचीन ऋषि, जो युधिष्ठिरकी सभामें विराजते थे (सभा० ४ । १०) ।

महाशोण–शोणभद्र नामक नद, जिसे पार करके श्रीकृष्ण, अर्जुन और भीमसेन मगधमें पहुँचे थे (सभा० २० । २७) ।

महाश्रम–एक तीर्थ, जो सब पापोंसे छुड़ानेवाला है । जो वहाँ एक समय उपवास करके एक रात निवास करता है, उसे शुभ लोकोंकी प्राप्ति होती है (वन० ८४ । ५३-५४) । यहाँ एक मासतक उपवास करनेपर मनुष्य उतने ही समयमें सिद्ध हो जाता है (अनु० २५ । १७-१८) ।

महाश्व–एक प्राचीन राजा, जो यमकी सभामें रहकर सूर्य-पुत्र यमकी उपासना करता है (सभा० ८ । १९) ।

महासेन–स्कन्दका दूसरा नाम (वन० २२५ । २७; शल्य० ४६ । ६०) । ये ब्रह्माजीकी सभामें रहकर उनकी उपासना करते हैं (सभा० ११ । ५२) ।

महास्वना–स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । २६) ।

महाहनु–तक्षककुलमें उत्पन्न हुआ एक नाग, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें जल मरा था (आदि० ५७ । १०) ।

महाह्रद–एक उत्तम तीर्थ, जिसमें स्नान करनेवाला मानव कभी दुर्गतिमें नहीं पड़ता और प्रचुर सुवर्णराशि प्राप्त कर लेता है (वन० ८४ । १४४-१४५) । जो महाह्रदमें स्नान करके शुद्धचित्त हो एक मासतक निराहार रहता है, उसे जमदग्निके समान सद्गति प्राप्त होती है (अनु० २५ । ४८) ।

महिष या महिषासुर–एक असुर, जिसने देवताओंको परास्त करके रुद्रके रथपर आक्रमण किया था (वन० २३१ । ८८) । स्कन्दद्वारा इसका वध (वन० २३१ । ९६; शल्य० ४६ । ७४) । इसे भगवान् महेश्वरद्वारा वर प्राप्त होनेकी चर्चा (अनु० १४ । २१४) ।

महिषक (माहिषक)–(१) एक दक्षिण भारतीय जनपद (वर्तमान मैसूर राज्य) (भीष्म० ९ । ५९) । माहिषक आदि देशोंके धर्म—आचार-व्यवहार दूषित हैं (कर्ण० ४४ । ४३) । (२) एक जाति, जो पहले क्षत्रिय थी, किंतु ब्राह्मणोंकी कृपादृष्टि प्राप्त न होनेसे शूद्र हो गयी (अनु० ३३ । २२-२३) । अर्जुनने अश्वमेधीय अश्वकी रक्षा करते समय इन सबको जीता था (आश्व० ८३ । ११) ।

महिषदा–स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । २८) ।

महिषानना–स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । २५) ।

महिष्मती–महर्षि अङ्गिराकी छठी पुत्री । इसका दूसरा नाम 'अनुमति' भी है (वन० २१८ । ६) ।

मही–एक नदी, जो अग्निकी उत्पत्ति-स्थान बतायी गयी है (वन० २२२ । २३—२६) ।

महेन्द्र–एक पर्वत, यहाँ परशुरामजीका निवास था । क्षत्रिय-संहार करके उन्होंने यहाँ तपस्या की थी (आदि० ६४ । ४; आदि० १२९ । ५३) । पाण्डुपुत्र अर्जुन यहाँ गये थे (आदि० २१४ । १३) । यह कुबेरकी सभामें रहकर उनकी उपासना करता है (सभा० १० । ३०) । इस पर्वतपर जाकर रामतीर्थमें स्नान करनेसे अश्वमेध यज्ञका फल मिलता है (वन० ८५ । १६) । यहाँ पूर्वकालमें ब्रह्माजीने यज्ञ किया था । यह पूर्व दिशामें स्थित है (वन० ८७ । २२—२८) । युधिष्ठिर तीर्थयात्रा करते हुए इस पर्वतपर गये थे (वन० ११४ । ३०) । चतुर्दशी तिथिको परशुरामजीने महेन्द्रपर्वतपर पधारकर युधिष्ठिर आदिको दर्शन दिया था (वन० ११७ । १६) । भारतवर्षके सात कुलपर्वतोंमेंसे एक महेन्द्र पर्वत है (भीष्म० ९ । ११) । सम्पूर्ण पृथ्वी कश्यपजीको देकर उनकी आज्ञासे परशुरामजी महेन्द्र पर्वतपर रहने लगे (द्रोण० ७० । २२-२३; वन० ११७ । १४) ।

महेन्द्रा–भारतकी एक प्रमुख नदी, जिसका जल यहाँके निवासी पीते हैं (भीष्म० ९ । २२) ।

महेश्वर–भगवान् शिवका एक नाम (उद्योग० १११ । ९) ।

महोत्थ–एक पश्चिम भारतीय जनपद, जिसके अधिपति राजर्षि आक्रोशको नकुलने जीता था (सभा० ३२ । ६) ।

महोदर–(१) कश्यपद्वारा कद्रूके गर्भसे उत्पन्न एक नाग (आदि० ३५ । १६) । (२) धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६७ । ९८) । भीमसेनद्वारा इसका वध (द्रोण० १५७ । १९) । (३) एक प्राचीन ऋषि, जिनकी जाँघमें श्रीरामजीद्वारा मारे गये एक राक्षसका मस्तक चिपक गया था, जो औशनस तीर्थमें छूटा । इसी कारण उस तीर्थका नाम 'कपालमोचन' हुआ (शल्य० ३९ । ११—२२) ।

महोदर्य–सायं-प्रातः स्मरण करनेयोग्य एक नरेश (अनु० १६५ । ५२) ।

महौजा–(१) एक क्षत्रिय-नरेश, जो पाँचवें कालेयके अंशसे उत्पन्न हुए थे (आदि० ६७ । ५२) । इनको पाण्डवोंकी ओरसे रण-निमन्त्रण भेजनेका निश्चय किया गया था (उद्योग० ४ । २२) । (२) एक क्षत्रियकुल, जिसमें 'वरयु' नामक कुलाङ्गार राजा उत्पन्न हुआ था (उद्योग० ७४ । १५) ।

माकन्दी–राजा द्रुपदका गङ्गातटवर्ती नगर (आदि० १३७ । ७३) ।

मागध–कौरव-पक्षके मगधदेशीय योद्धा (भीष्म० ५१ । १२) ।

माघ–(बारह महीनोंमेंसे एक, जिस मासकी पूर्णिमाको 'मघा' नक्षत्रका योग हो; उसे 'माघ' कहते हैं । यह पौषके बाद और फाल्गुनके पहले आता है ।) माघ मासकी अमावास्याको प्रयागराजमें तीन करोड़ दस हजार अन्य तीर्थोंका समागम होता है । जो माघके महीनेमें प्रयागमें स्नान करता है, वह सब पापोंसे मुक्त होकर स्वर्गमें जाता है (अनु० २५ । ३६–३८) । जो माघ मासमें ब्राह्मणको तिल दान करता है, वह कभी नरक नहीं देखता है (अनु० ६६ । ८) । जो माघ मासको नियमपूर्वक एक समय भोजन करके बिताता है, वह धनवान् कुलमें जन्म लेकर अपने कुटुम्बीजनोंमें महत्त्वको प्राप्त होता है (अनु० १०६ । ३१) । माघ मासकी द्वादशी तिथिको दिन-रात उपवास करके भगवान् माधवकी पूजा करनेसे उपासकको राजसूय यज्ञका फल प्राप्त होता है और वह अपने कुलका उद्धार कर देता है (अनु० १०९ । ५) । माघ मासके शुक्लपक्षकी अष्टमी तिथिको भीष्मजीने देह-त्यागके लिये भगवान् श्रीकृष्णसे आज्ञा माँगी (अनु० १६७ । २८—४५) ।

माठरवन–दक्षिणका एक तीर्थ, जहाँ सूर्यके पार्श्ववर्ती देवता माठरका विजयस्तम्भ सुशोभित होता है (वन० ८८ । १०) ।

माणिवर–एक यक्ष, जो मन्दराचलमें निवास करते हैं (वन० १३९ । ५)

माण्डव्य–एक प्रसिद्ध ब्रह्मर्षि, जो धैर्यवान्, सब धर्मोंके ज्ञाता, सत्यनिष्ठ और तपस्वी थे (आदि० १०६ । २-३) । (विशेष देखिये अणीमाण्डव्य)

माण्डव्याश्रम–तीर्थस्वरूप एक आश्रम, जहाँ काशिराजकी कन्याने कठोर व्रतका आश्रय लेकर स्नान किया था (उद्योग० १८६ । २८-२९) ।

मातङ्ग–एक मुनि, जिनके वचन प्रमाणरूपमें ग्रहण किये जाते हैं । वे वचन ये हैं—'वीर पुरुषको चाहिये कि वह सदा उद्योग ही करे । किसीके सामने नतमस्तक न हो; क्योंकि उद्योग करना ही पुरुषका कर्तव्य—पुरुषार्थ है । वीर पुरुष असमयमें नष्ट भले ही हो जाय, परंतु कभी शत्रुके सामने सिर न झुकाये !' (उद्योग० १२७ । १९-२०) ।

मातङ्गी–क्रोधवशाकी क्रोधजनित कन्या । इसने हाथियोंको जन्म दिया था (आदि० ६६ । ६१, ६६) ।

मातरिश्वा–गरुड़की प्रमुख संतानोंमेंसे एक (उद्योग० १०१ । १४) ।

मातलि–इन्द्रका सारथि । इसका अर्जुनको स्वर्गलोकमें चलनेके लिये इन्द्रका संदेश सुनाना (वन० ४२ । ११—१४) । इसका अर्जुनको इन्द्रके दिव्य रथपर बिठाकर गन्धमादनपर ले आना और पाण्डवोंको कर्तव्यकी शिक्षा देना (वन० १६५ । १—९) । इन्द्रका रथ लेकर श्रीरामकी सेवामें उपस्थित होना (वन० २९० । १३-१४) । इसका अपनी पुत्री गुणकेशीके निमित्त वर खोजनेके लिये निकलना (उद्योग० ९७ । २०-२१) । मार्गमें नारदजीसे भेंट और उनके साथ पृथ्वीके नीचेके लोकमें जाकर वर खोजना (उद्योग० अध्याय ९८ से १०३ तक) । नागकुमार सुमुखके साथ अपनी कन्याको ब्याहनेका निश्चय करना (उद्योग० १०३ । २५-२६) । आर्यकसे सुमुखको जामाता बनानेकी बात कहकर इन्द्रके पास चलनेके लिये प्रस्ताव करना (उद्योग० १०४ । १८–२१) । सबके वन्दनीय पुरुषके विषयमें इसका इन्द्रके समक्ष प्रश्न उपस्थित करना (अनु० ९६ । २२ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ५७८७) ।

मातृतीर्थ–कुरुक्षेत्रकी सीमामें स्थित एक प्राचीन तीर्थ, जिसमें स्नान करनेसे संतति बढ़ती है और वह पुरुष कभी क्षीण न होनेवाली सम्पत्तिका उपभोग करता है (वन० ८३ । ५८) ।

माद्रवती–अभिमन्युपुत्र राजा परीक्षित्की धर्मपत्नी तथा जनमेजयकी माता (आदि० ९५ । ८५) । पाण्डुकी द्वितीय पत्नी तथा नकुल-सहदेवकी माता माद्रीको भी 'माद्रवती' कहा जाता था (आश्व० ५२ । ५६) ।

माद्री–मद्रदेशके राजाकी पुत्री, मद्रराज शल्यकी बहिन, पाण्डुकी द्वितीय पत्नी तथा नकुल-सहदेवकी माता । ये 'धृति' नामक देवीके अंशसे उत्पन्न हुई थीं (आदि० ६७ । १६०) । साध्वी यशस्विनी माद्रीकी प्रशंसा सुनकर भीष्मका शल्यके यहाँ जाकर पाण्डुके लिये इनका वरण करना, शल्यके कुलधर्मके अनुसार कन्याके शुल्क-रूपमें इन्हें बहुत धन देना, शल्यका अपनी बहिनको अलंकृत करके भीष्मजीके हाथमें सौंप देना और भीष्मजीका माद्रीको साथ लेकर हस्तिनापुरमें आना (आदि० ११२ । १—१७) । शुभ दिन और शुभ मुहूर्तमें पाण्डु-द्वारा माद्रीका विधिपूर्वक पाणिग्रहण (आदि० ११२ । १८) । माद्रीका अपने पतिके साथ वनमें निवास (आदि० ११३ । ६) । शापग्रस्त होनेपर संन्यास लेनेका निश्चय करके पाण्डुका कुन्तीसहित माद्रीको हस्तिनापुरमें जानेकी आज्ञा देना । इनका पतिके साथ रहकर वानप्रस्थ-धर्मके

पालनकी इच्छा प्रकट करना, अन्यथा प्राणत्यागका निश्चय बताना (आदि० ११८ । १—३०) । पुत्र-प्राप्तिके हेतु मुझपर भी कुन्तीदेवी अनुग्रह करें—इस प्रकार इनकी पाण्डुसे प्रार्थना (आदि० १२३ । १—६) । अश्विनी-कुमारोंद्वारा इनके गर्भसे नकुल तथा सहदेवका जन्म (आदि० १२३ । १६) । पाण्डुके निधनपर इनका विलाप (आदि० १२४ । १७ के बाद दा० पाठ) । पाण्डुके साथ सती होनेके लिये अपनेको आज्ञा प्रदानके निमित्त इनकी कुन्तीसे प्रार्थना (आदि० १२४ । २५—२८ दा० पाठसहित) । शतशृङ्गनिवासी ऋषियोंद्वारा इनको आश्वासन तथा सती न होनेके लिये अनुरोध (आदि० १२४ । २८ के बाद) । अपने अन्तिम समयमें इनके द्वारा पाण्डवोंको शिक्षा (आदि० १२४ । २८ के बाद दा० पाठ) । कुन्तीसे आज्ञा लेकर इनका चितारोहण (आदि० १२४ । ३१) । धृतराष्ट्रकी आज्ञासे विदुर आदिद्वारा पाण्डु और माद्रीकी अस्थियोंका राजोचित ढंगसे दाह-संस्कार तथा भाई-बन्धुओंद्वारा इनके लिये जलाञ्जलि-दान (आदि० १२६ अध्याय) । माद्रीका अपने पतिके साथ महेन्द्रभवनमें निवास (स्वर्गा० ४ । २०; स्वर्गा० ५ । १५) ।

माद्रेयजाङ्गल—एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ३९) ।

माधव—मौन, ध्यान और योगसे श्रीकृष्णका बोध अथवा साक्षात्कार होता है, इसलिये उन्हें 'माधव' कहते हैं (उद्योग० ७० । ४) ।

माधवी—(१) राजा ययातिकी पुत्री, जो तपस्विनी और मृगचर्मसमावृत होकर मृगव्रतका पालन कर रही थी । इसका अष्टक आदि पुत्रोंको ययातिका परिचय देना, अपने पुण्योंद्वारा स्वर्ग जानेके लिये इसका ययातिको आश्वासन (आदि० ९३ । १३ के बाद, पृष्ठ २८२) । ययातिका गालवको अपनी कन्या माधवी सौंपना (उद्योग० ११५ । १२) । माधवीका गालवसे अपने मनकी बात कहना (उद्योग० ११६ । १०—१३) । इसके गर्भसे अयोध्यानरेश हर्यश्वद्वारा वसुमान् (वसुमना) की उत्पत्ति (उद्योग० ११६ । १६) । काशिराज दिवोदासके द्वारा इसके गर्भसे प्रतर्दनका जन्म (उद्योग० ११७ । १८) । उशीनरके द्वारा शिबि नामक पुत्रकी उत्पत्ति (उद्योग० ११८ । २०) । विश्वामित्रके द्वारा इसके गर्भसे अष्टकका जन्म (उद्योग० ११९ । १८) । इसके स्वयंवरका वर्णन (उद्योग० १२० । १—५) । इसका स्वयंवरमें तपोवनका वरण करके मृगीरूपसे तप करना (उद्योग० १२० । ५—११) । स्वर्गलोकसे गिरे हुए पिता ययातिके लिये इसका अपने तपके आधे पुण्यको देनेके लिये उद्यत होना (उद्योग० १२० । २५) । (२) स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । ७) ।

मानवर्जक—एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ५०) ।

मानवी—भारतवर्षकी एक प्रमुख नदी, जिसका जल यहाँके निवासी पीते हैं (भीष्म० ९ । ३२) ।

मानस—(१) वासुकिकुलमें उत्पन्न एक नाग, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें दग्ध हो गया (आदि० ५७ । ५) । (२) धृतराष्ट्रकुलमें उत्पन्न एक नाग, जो सर्पसत्रमें भस्म हो गया (आदि० ५७ । १६) । (३) हिमालयपर स्थित एक प्राचीन सरोवर, जहाँ उत्तर-दिग्विजयके अवसरपर अर्जुन पधारे थे (सभा० २८ । ४) । मानससरोवरके आस-पास निवास करनेवाले साधकको युगके अन्तमें पार्षदों तथा पार्वतीसहित इच्छानुसार रूप धारण करनेवाले भगवान् शङ्करका प्रत्यक्ष दर्शन होता है । इस सरोवरके तटपर चैत्र मासमें कल्याणकामी याजक अनेक प्रकारके यज्ञोंद्वारा परिवारसहित पिनाकधारी भगवान् शिवकी आराधना करते हैं । इस सरोवरमें श्रद्धापूर्वक स्नान और आचमन करके पापमुक्त हुआ जितेन्द्रिय पुरुष शुभ लोकोंमें जाता है । इस सरोवरका दूसरा नाम उज्जानक है । यहाँ भगवान् स्कन्द तथा अरुन्धतीसहित महर्षि वसिष्ठने साधना करके सिद्धि और शान्ति प्राप्त की है (वन० १३० । १४–१७) । यहाँके हंसरूपधारी महर्षि शरशय्यापर पड़े हुए भीष्मजीको देखनेके लिये आये थे (भीष्म० ११९ । ९८-९९) । यह सरोवर एक पवित्र तीर्थ है (शान्ति० १५२ । १२-१३) । उपश्रुति देवीने शचीको इसी सरोवरपर कमलनालमें छिपे हुए इन्द्रका दर्शन कराया था । देवताओंने वसिष्ठजीकी शरण ले इस सरोवरके तटपर किसी समय यज्ञ आरम्भ किया था (अनु० १५५ । १६) ।

मानसद्वार—मानसरोवरके पासका एक पर्वत, जो उसका द्वार माना जाता है । इसके मध्यभागमें परशुरामजीने अपना आश्रम बनाया था (वन० १३० । १२) ।

मानुषतीर्थ—कुरुक्षेत्रकी सीमामें स्थित एक लोकविख्यात तीर्थ, जहाँ व्याधोंके बाणोंसे घायल हुए मृग उस सरोवरमें गोते लगाकर मानव-शरीर पा गये थे; इसीलिये उसका नाम मानुषतीर्थ हुआ । वहाँ ब्रह्मचर्य-पालनपूर्वक एकाग्रचित्त हो स्नान करनेवाला मानव पापमुक्त हो स्वर्गलोकमें प्रतिष्ठित होता है (वन० ८३ । ६५-६६) ।

मान्धाता—इक्ष्वाकुवंशीय महाराज युवनाश्वके पुत्र (वन० ४२ । ४१) । युवनाश्वके पेटसे इनका जन्म (वन० १२६ । २७-२८) । 'मान्धाता' नाम पड़नेका कारण

(वन० १२६ । ३०-३१) । इनके चरित्रका वर्णन (वन० १२६ । ३५—४४) । ये उन राजाओंमेंसे थे, जिन्होंने वैष्णव-यज्ञ करके उत्तम लोक प्राप्त कर लिये थे (वन० २५७।५-६) । सृञ्जयको समझाते हुए नारदजीद्वारा इनकी महत्ताका वर्णन (द्रोण० ६२ अध्याय) । श्रीकृष्ण-द्वारा इनके यज्ञ और प्रभावका वर्णन (शान्ति० २९ । ८१—९३) । राजधर्मके विषयमें इन्द्ररूपधारी विष्णुके साथ संवाद (शान्ति० ६४ । १६—३०; शान्ति० ६५ अध्याय) । अङ्गिरापुत्र उतथ्यका इन्हें राजधर्मके विषयमें उपदेश (शान्ति० अध्याय ९० से ९१ तक) । इनका अङ्गनरेश वसुहोमसे दण्डकी उत्पत्ति आदिका प्रसंग पूछना (शान्ति० १२२ । ११—१३) । इन्होंने एक ही दिनमें सारी पृथ्वी जीत ली थी (शान्ति० १२४ । १६) । इनके द्वारा इन्द्रका अतिक्रमण (शान्ति० ३५५ । ३) । बृहस्पतिजीसे गोदानके विषयमें प्रश्न करना (अनु० ७६ । ४) । ये सदा लाखों गोदान करते थे (अनु० ८१ । ५-६) । इनके द्वारा मांस-भक्षण-निषेध (अनु० ११५ । ६१) ।

मारिष–एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ६०) ।

मारिषा–(१) दस प्रचेताओंकी पत्नी, प्राचेतस दक्षकी माता (आदि० ७५ । ५) । (२) भारतवर्षकी एक नदी, जिसका जल यहाँके निवासी पीते हैं (भीष्म० ९ । ३६) ।

मारीच–एक राक्षस (जो ताटका राक्षसीका पुत्र और सुबाहुका भाई था) । विश्वामित्रके यज्ञमें विघ्न डालनेके कारण इसका भाई सुबाहु श्रीरामके हाथों मारा गया और मारीचको भी गहरी चोट खानी पड़ी (सभा० ३८ । २९ के बाद दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ७९४) । यह कपट-मृग बनकर सीताजीका हरण करानेमें कारण हुआ (वन० १४७ । ३४) । इसका रावणको समझाना (वन० २७८ । ६-७) । रावणकी सहायता करना स्वीकार करके अपना श्राद्ध-तर्पण करनेके पश्चात् मृगरूप धारण करके इसका सीताको लुभाना (वन० २७८ । १०) । श्रीरामके अमोघ बाणसे इसकी मृत्यु, मरते समय इसका रामके समान स्वरमें आर्तनाद करके प्राण त्यागना (वन० २७८ । ११—२३) ।

मारुत–एक दक्षिण भारतीय जनपद, धृष्टद्युम्नद्वारा निर्मित क्रौञ्चारुणव्यूहके दाहिने पक्षका आश्रय लेकर यहाँके योद्धा खड़े थे (भीष्म० ५० । ५१) ।

मारुतन्तव्य–विश्वामित्रके ब्रह्मवादी पुत्रोंमेंसे एक (अनु० ४ । ५४) ।

मारुतस्कन्ध–देवताओंका एक व्यूह, जिसकी रक्षाका भार स्कन्दने लिया था (वन० २३१ । ५५) ।

मारुताशन–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ६२) ।

मारुध–एक राजधानी अथवा राजा, जिसे दक्षिण-दिग्विजयके समय सहदेवने जीता था (सभा० ३१ । १४) ।

मार्कण्डेय–(१) एक सुप्रसिद्ध महामुनि, जो युधिष्ठिरकी सभामें विराजमान होते थे (सभा० ४ । १५) । ये ब्रह्माजीकी सभामें रहकर उनकी उपासना करते हैं (सभा० ११ । २२) । इनके द्वारा पाण्डवोंको धर्मका आदेश (वन० २५ । ८—१८) । इन्होंने पयोष्णीके तटपर उसकी महिमा तथा राजा नृगकी महत्ताके विषयमें गाथा गायी थी (वन० ८८ । ५—७) । इनके द्वारा कर्मफल-भोगका विवेचन (वन० १८३ । ६१—९५) । इनका युधिष्ठिरके प्रश्नोंके अनुसार महर्षियों तथा राजर्षियोंके जीवन-सम्बन्धी विविध उपदेशपूर्ण कथाएँ सुनाना (वन० अध्याय १८६ से २३२ तक) । मार्कण्डेयजीने हजार-हजार युगोंके अन्तमें होनेवाले अनेक महाप्रलयोंके दृश्य देखे हैं । संसारमें इनके समान बड़ी आयुवाला दूसरा कोई पुरुष नहीं है । महात्मा ब्रह्माजीको छोड़कर दूसरा कोई इनके समान दीर्घायु नहीं है । जब यह संसार देवता, दानव तथा अन्तरिक्ष आदिसे शून्य हो जाता है, उस प्रलय-कालमें केवल ये ही ब्रह्माजीके पास रहकर उनकी उपासना करते हैं । प्रलयकाल व्यतीत होनेपर ब्रह्माजीके द्वारा रची गयी जीव-सृष्टिको सबसे पहले ये ही अच्छी तरह देख पाते हैं । इन्होंने तत्परतापूर्वक चित्तवृत्तियोंका निरोध करके सर्व-लोकपितामह साक्षात् लोकगुरु ब्रह्माजीकी आराधना की है और घोर तपस्याद्वारा मरीचि आदि प्रजापतियोंको भी जीत लिया है । ये भगवान् नारायणके समीप रहनेवाले भक्तोंमें सबसे श्रेष्ठ हैं । परलोकमें इनकी महिमाका सर्वत्र गान होता है । इन्होंने सर्वव्यापक परब्रह्मकी उपलब्धिके स्थानभूत हृदयकमलकी कर्णिकाका यौगिक कलासे अलौकिक उद्घाटन-कर वैराग्य और अभ्याससे प्राप्त हुई दिव्य दृष्टिद्वारा विश्व-रचयिता भगवान्‌का अनेक बार साक्षात्कार किया है । इस-लिये सबको मारनेवाली मृत्यु तथा शरीरको जर्जर बना देने-वाली जरा इनका स्पर्श नहीं करती (वन० १८८ । २—११) । इनके द्वारा बालमुकुन्दका दर्शन (वन० १८८ । ९२) । इनका बालमुकुन्दके उदरमें प्रवेश और उसमें ब्रह्माण्ड-दर्शन (वन० १८८ । १००—१२५) । उदरसे बाहर निकलनेपर बालमुकुन्दके साथ इनका वार्तालाप (वन० १८८ । १३० से १८९ । ४९ तक) । इनके द्वारा श्रीकृष्णकी महिमाका प्रतिपादन (वन० १८९ । ५३—५७) । इनके द्वारा कलियुगके समयके बर्तावका

वर्णन (वन० १९० । ७--९२) । कल्कि-अवतारका वर्णन (वन० १९० । ९३--९७) । इनका युधिष्ठिरको धर्मोपदेश (वन० १९१ । २३--३०) । इनके द्वारा युधिष्ठिरको विविध धार्मिक विषयोंका उपदेश (वन० २०० अध्याय) । स्कन्दके नामोंका वर्णन तथा स्तवन (वन० २३२ अध्याय) । इनका युधिष्ठिर आदिको श्रीरामका उपाख्यान तथा सती सावित्रीका चरित्र सुनाना (वन० अध्याय २७३ से २९९ तक) । इन्होंने धृतराष्ट्रको त्रिपुर-वधकी कथा सुनायी थी (कर्ण० ३३ । २) । शरशय्या-पर पड़े हुए भीष्मको देखनेके लिये अन्य ऋषियोंके साथ ये भी गये थे (शान्ति० ४७ । ११) । इन्हें नाचिकेतसे शिवसहस्रनामका उपदेश मिला और इन्होंने उपमन्युको इसका उपदेश दिया (अनु० १७ । ७९) । इनका नारदजीसे नाना प्रकारके प्रश्न करना (अनु० २२ । दाक्षिणात्य पाठ) । प्रयाणकालके समय भीष्मजीके पास गये हुए ऋषियोंमें ये भी थे (अनु० २६ । ६) । इन्होंने मांस-भक्षणके दोष बताये हैं (अनु० ११५ । ३७–३९) । इनकी धर्मपत्नीका नाम धूमोर्णा था (अनु० १४६ । ४) । युधिष्ठिरने महाप्रस्थानसे पूर्व अन्य ऋषियों-के साथ मार्कण्डेयजीका भी भगवद्बुद्धिसे पूजन किया था (महाप्रस्थान० १ । १२) ।

महाभारतमें आये हुए मार्कण्डेयजीके नाम–भार्गव, भार्गवसत्तम, भृगुकुलशार्दूल, भृगुनन्दन, ब्रह्मर्षि, विप्रर्षि आदि।

(२) एक प्रसिद्ध तीर्थ, जो गङ्गा और गोमतीके संगमपर है (यह स्थान वाराणसीसे लगभग सोलह मील उत्तर है ।) इसमें जाकर मनुष्य अग्निष्टोम यज्ञका फल पाता और अपने कुलका उद्धार कर देता है (वन० ८४ । ८०-८१) ।

मार्कण्डेयसमास्यापर्व–वनपर्वका एक अवान्तर पर्व (अध्याय १८२ से २३२ तक) ।

मार्गणप्रिया–कश्यपकी प्राधा नामवाली पत्नीसे उत्पन्न हुई पुत्री (आदि० ६५ । ४५) ।

मार्गशीर्ष–(बारह महीनोंमेंसे एक, जिस मासकी पूर्णिमा तिथिको मृगशिरा नक्षत्रका योग हो, उसे मार्गशीर्ष कहते हैं । यह कार्तिकके बाद और पौषके पहले आता है ।) जो मार्गशीर्षमासमें एक समय भोजन करके बिताता है और अपनी शक्तिके अनुसार ब्राह्मणोंको भोजन कराता है, वह रोग और पापोंसे मुक्त हो जाता है (अनु० १०६ । १७-१८) । मार्गशीर्ष मासमें द्वादशी तिथिको दिन-रात उपवास करके भगवान् केशवकी पूजा-अर्चा करनेसे मनुष्य अश्वमेध यज्ञका फल पा लेता है और उसका सारा पाप नष्ट हो जाता है (अनु० १०९ । ३) ।

मार्तिकावत–एक देश, जहाँका राजा शाल्व था (वन० १४ । १६; वन० २० । १५) । परशुरामजीने इस देशके क्षत्रियोंका संहार किया था (द्रोण० ७० । १२) । अर्जुनने कृतवर्माके पुत्रको मार्तिकावत नगरका राजा बनाया था (मौसल० ७ । ६९) ।

मार्दमर्षि–विश्वामित्रके ब्रह्मवादी पुत्रोंमेंसे एक (अनु० ४ । ५७) ।

माल–एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ३९) ।

मालतिका–स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । ४) ।

मालय–गरुड़की प्रमुख संतानोंमेंसे एक (उद्योग० १०१ । १४) ।

मालव–(१) पश्चिम भारतका एक जनपद, जिसे नकुलने पराजित किया था (सभा० ३२ । ७) । यहाँके राजा तथा निवासी युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें पधारे थे (सभा० ३४ । ११) । मालवदेशके शस्त्रधारी क्षत्रियराजकुमारोंने अजातशत्रु युधिष्ठिरको बहुत धन भेंट किया था (सभा० ५२ । १५) । कर्णने इस देशपर विजय पायी थी (वन० २५४ । २०) । यह भारतवर्षका एक प्रमुख जनपद है (भीष्म० ९ । ६०, ६२) । मालवगणोंने भीष्मकी आज्ञाके अनुसार किरीटधारी अर्जुनका सामना किया था (भीष्म० ५९ । ७६) । भगवान् श्रीकृष्णने इस देशके योद्धाओंको जीता था (द्रोण० ११ । १७) । अर्जुनने मालवयोद्धाओंको अपने बाणोंद्वारा गहरी चोट पहुँचायी थी (द्रोण० १९ । १६) । परशुरामजीने मालव देशके क्षत्रियोंका अपने तीखे बाणोंद्वारा संहार किया था (द्रोण० ७० । ११–१३) । राजा युधिष्ठिरने युद्धमें क्रुद्ध हो मालवसैनिकोंको यमलोक भेज दिया (द्रोण० १५७ । २८) । (२) राजा अश्वपतिद्वारा मालवीके गर्भसे उत्पन्न एक क्षत्रिय जाति (वन० २९७ । ५९-६०) ।

मालवा–एक नदी, जो नित्य स्मरणीय है (अनु० १६५ । २५) ।

मालवी–मद्रनरेश महाराज अश्वपतिकी बड़ी रानी और सावित्रीकी माता; जिनके गर्भसे सौ 'मालव' संज्ञक पुत्रोंके उत्पन्न होनेका वरदान प्राप्त हुआ था (वन० २९७ । ५९-६०) । मद्रपतिकी रानी मालवीसे सावित्रीके सौ बलवान् भाई उत्पन्न हुए (वन० २९९ । १३) ।

मालिनी–(१) कण्व मुनिके आश्रमके समीप बहनेवाली एक नदी (किसी-किसीके मतमें सहारनपुर जिलेकी चूका नदी ही प्राचीन मालिनी है, कुछ विद्वान् हिमालय-पर इसकी स्थिति मानते हैं), इसके दोनों तटोंपर कण्व

मुनिका आश्रम फैला हुआ था और यह बीचमें बहती थी (आदि० ७० । २१) । इसीके तटपर शकुन्तलाका जन्म हुआ था (आदि० ७२ । १०) । (२) शिशुकी माता, सप्त शिशुमातृकाओंमेंसे एक (वन० २२८ । १०) । (३) एक राक्षस-कन्या, जो कुबेरकी आज्ञासे महर्षि विश्रवाकी परिचर्यामें तत्पर रहती थी । विश्रवाने इसके गर्भसे विभीषण नामक पुत्रको जन्म दिया था (वन० २७५ । ३—८) । (४) अङ्गदेशकी एक समृद्धिशालिनी नगरी, जो जरासंधद्वारा कर्णको दी गयी थी (शान्ति० ५ । ६) ।

माल्यपिण्डक–एक कश्यपवंशी नाग (उद्योग० १०३ । १३) ।

माल्यवान्–(१) एक पर्वत, जो इलावृतवर्षमें मेरु और मन्दराचलके बीच शैलोदा नदीके दोनों तटोंके निवासियोंको जीतकर आगे बढ़नेपर अर्जुनको मिला था (सभा० २८ । ६ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ७४८) । नीलगिरिके दक्षिण और निषधके उत्तर सुदर्शन नामक एक जामुनका वृक्ष है । जिसके कारण समूचे द्वीपको जम्बूद्वीप कहा जाता है, वहीं माल्यवान् पर्वत है । जम्बूफलके रससे जम्बू नदी बहती है । वह माल्यवान्के शिखरपर पूर्वकी ओर प्रवाहित होती है । माल्यवान् पर्वतपर संवर्तक और कालाग्नि नामक अग्निदेव सदा प्रज्वलित रहते हैं । इस पर्वतका विस्तार पाँच-छः हजार योजन है । वहाँ सुवर्णके समान कान्तिमान् मानव उत्पन्न होते हैं (भीष्म० ७ । २७–२९) । (२) हिमाचल प्रदेशका एक पर्वत, आर्ष्टिषेणके आश्रमसे गन्धमादनकी ओर आगे बढ़नेसे मार्गमें पाण्डवोंको माल्यवान् पर्वत मिला था, जहाँसे गन्धमादन दिखायी देता था (वन० १५८ । ३६-३७) । (३) किष्किन्धाक्षेत्रके अन्तर्गत एक पर्वत, जिसके समीप सुग्रीव और वालीका युद्ध हुआ था (वन० २८० । २६) । (यह तुङ्गभद्राके तटपर स्थित है ।) इसके सुन्दर शिखरपर श्रीरामचन्द्रजीने वर्षाके चार मासतक निवास किया (वन० २८० । ४०) ।

मावेल्ल-सम्राट् उपरिचर वसुके चतुर्थ पुत्र (आदि० ६३ । ३०-३१) । महाबली मावेल्ल युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें पधारे थे (सभा० ३४ । १३-१४) ।

मावेल्लक–एक जनपद, जहाँके योद्धाओंको साथ लेकर त्रिगर्तराज सुशर्मा अर्जुनसे लड़नेके लिये चला था (द्रोण० १७ । २०) । अर्जुनद्वारा मावेल्लक योद्धाओंका संहार (द्रोण० १९ । १६—३६) । द्रोणाचार्यको आगे करके मावेल्लकोंका अर्जुनपर आक्रमण (द्रोण० ९१ । ३८—४४) । अर्जुनद्वारा इनके मारे जानेकी चर्चा (कर्ण० ५ । ४८-४९) ।

मासव्रतोपवास-फल–जो आश्विन मासको एक समय भोजन करके बिताता है, वह पवित्र, नाना प्रकारके वाहनोंसे सम्पन्न तथा अनेक पुत्रोंसे युक्त होता है (अनु० १०६ । २९) । आश्विन मासकी द्वादशी तिथिको दिन-रात उपवास करके पद्मनाभ नामसे भगवान्की पूजा करनेवाला पुरुष सहस्र गोदानका पुण्यफल पाता है (अनु० १०९ । १३) । जो मनुष्य कार्तिक मासमें एक समय भोजन करता है, वह शूरवीर, अनेक भार्याओंसे संयुक्त और कीर्तिमान् होता है (अनु० १०६ । ३०) । कार्तिक मासकी द्वादशी तिथिको दिन-रात उपवास करके भगवान् दामोदरकी पूजा करनेसे स्त्री हो या पुरुष, गोयज्ञका फल पाता है (अनु० १०९ । १४) । जो नियमपूर्वक रहकर चैत्र मासको एक समय भोजन करके बिताता है, वह सुवर्ण, मणि और मोतियोंसे सम्पन्न महान् कुलमें जन्म पाता है (अनु० १०६ । २३) । जो चैत्र मासकी द्वादशी तिथिको दिन-रात उपवास करके विष्णु नामसे भगवान्की पूजा करता है, वह मनुष्य पुण्डरीकयज्ञका फल पाता और देवलोकमें जाता है (अनु० १०९ । ७) । जो ज्येष्ठ मासमें एक ही समय भोजन करता है, वह अनुपम श्रेष्ठ ऐश्वर्य प्राप्त करता है (अनु० १०६ । २५) । जो मानव ज्येष्ठ मासकी द्वादशी तिथिको दिन-रात उपवास करके भगवान् त्रिविक्रमकी पूजा करता है, वह गोमेधयज्ञका फल पाता और अप्सराओंके साथ आनन्द भोगता है (अनु० १०९ । ९) । (शेष महीनोंके फल उन-उनके नामके प्रकरणमें देखें ।)

माहिक–एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ४६) ।

माहिष्मती–एक प्राचीन नगरी, जो राजा नीलकी राजधानी थी । दक्षिण-दिग्विजयके समय सहदेवने इस नगरीपर आक्रमण करके राजा नीलको परास्त किया और उनपर कर लगाया (सभा० ३१ । २१—६०) । यह नगरी इक्ष्वाकुके दसवें पुत्र दशाश्वकी भी राजधानी रह चुकी है (अनु० २ । ६) । माहिष्मती नगरीमें सहस्र भुजधारी परम कान्तिमान् कार्तवीर्य अर्जुन नामवाला एक हैहयवंशी राजा समस्त भूमण्डलका शासन करता था (अनु० १५२ । ३) ।

माहेय–एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ४९) ।

माहेश्वरपद–यह सोमपद नामक तीर्थका एक अवान्तर तीर्थ है । इसमें स्नान करनेसे अश्वमेध यज्ञका फल प्राप्त होता है (वन० ८४ । ११९) ।

माहेश्वरपुर–एक तीर्थ, जिसमें जाकर भगवान् शङ्करकी पूजा और उपवास करनेसे मानव सम्पूर्ण मनोवाञ्छित कामनाओंको प्राप्त कर लेता है (वन० ८४ । १२९) ।

माहेश्वरीधारा–एक तीर्थ, इसकी यात्रा करनेसे अश्वमेध यज्ञका फल प्राप्त होता है और कुलका उद्धार हो जाता है (वन० ८४ । ११७) ।

मित्र–बारह आदित्योंमेंसे एक । इनकी माताका नाम अदिति और पिताका कश्यप था (आदि० ६५ । १५) । ये अन्य आदित्योंके साथ पाण्डुनन्दन अर्जुनके जन्म-कालमें उनका महत्त्व बढ़ाते हुए आकाशमें खड़े थे (आदि० १२२ । ६६-६७) । खाण्डववन-दाहके समय इन्द्रकी ओरसे श्रीकृष्ण और अर्जुनपर आक्रमण करनेके लिये ये भी पधारे थे और जिसके किनारोंपर छुरे लगे हुए थे, ऐसा चक्र लेकर खड़े थे (आदि० २२६ । ३६) । मित्र देवता देवराज इन्द्रकी सभामें विराजमान होते हैं (सभा० ७ । २१) । इन्होंने स्कन्दको सुव्रत और सत्यसंध नामक दो पार्षद प्रदान किये (शल्य० ४५ । ४१-४२) ।

मित्रज्ञ–पाञ्चजन्य नामक अग्निके पुत्र । पाँच देवविनायकोंमेंसे एक (वन० २२० । १२) ।

मित्रदेव–त्रिगर्तराज सुशर्माका भाई, जो अर्जुनद्वारा मारा गया (कर्ण० २७ । ३--२५) ।

मित्रधर्मा–पाञ्चजन्य नामक अग्निके पुत्र । पाँच देवविनायकोंमेंसे एक (वन० २२० । १२) ।

मित्रवर्धन–पाञ्चजन्य नामक अग्निके पुत्र । पाँच देवविनायकोंमेंसे एक (वन० २२० । १२) ।

मित्रवर्मा–त्रिगर्तराज सुशर्माका भाई, जो अर्जुनद्वारा मारा गया (कर्ण० २७ । ३—२३) ।

मित्रवान्–पाञ्चजन्य नामक अग्निके पुत्र । पाँच देवविनायकोंमेंसे एक (वन० २२० । १२) ।

मित्रविन्द–एक देवता; रथन्तर नामक अग्निको दी हुई हवि इनका ही भाग है (वन० २२० । १९) ।

मित्रविन्दा–(अवन्ती-नरेशकी पुत्री तथा विन्द-अनुविन्दकी बहिन) भगवान् श्रीकृष्णकी आठ पटरानियोंमेंसे एक । द्वारकामें इनका महल वैदूर्यमणिके समान कान्तिमान् एवं हरे रंगका था । उसे देखकर यही अनुभव होता था कि ये साक्षात् श्रीहरि ही सुशोभित होते हैं । उस प्रासादकी देवगण भी सराहना करते थे । श्रीकृष्णमहिषी मित्रविन्दाका वह महल अन्य सब महलोंका आभूषण-सा जान पड़ता था (सभा० ३८ । २९ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ८१५) ।

मित्रसह–(देखिये कल्माषपाद) ।

मित्रा–उमादेवीकी अनुगामिनी सखी (वन० २३१ । ४८) ।

मित्रावरुण–सदा साथ रहनेवाले मित्र और वरुण देवता (शल्य० ५४ । १४) । (महर्षि अगस्त्य और वसिष्ठ ये दोनों मित्रावरुणके पुत्र हैं ।)

मिथिला–पूर्वोत्तर भारतका एक प्राचीन जनपद, जहाँ विदेहवंशी क्षत्रियोंका राज्य था । राजा पाण्डुने इस देशपर आक्रमण करके यहाँके क्षत्रिय वीरोंको परास्त किया था (आदि० ११२ । २८) । (आधुनिक तिरहुतका ही प्राचीन नाम मिथिला एवं विदेह है । मिथिला शब्द उस जनपदकी राजधानीके लिये भी प्रयुक्त हुआ है; वेदोंके ब्राह्मण-ग्रन्थों और उपनिषदोंमें भी मिथिला एवं विदेहका सादर उल्लेख हुआ है ।) श्रीकृष्ण, अर्जुन और भीमसेन--इन्द्रप्रस्थसे मगधको जाते समय मिथिलामें भी गये थे (सभा० २० । २८) । मिथिलामें ही सुविख्यात, माता-पिताके भक्त धर्मव्याध रहते थे; जिनके पास कौशिक ब्राह्मणको कर्तव्यकी शिक्षा लेनेके लिये एक सतीने भेजा था (वन० २०६ । ४४ से वन० २१६ । ३२ तक) । कर्णने दिग्विजयके समय मिथिलाको जीता था (वन० २५४ । ८) । जगज्जननी सीता मिथिला या विदेह देशके राजा जनककी पुत्री थीं । उन्हें विधाताने भगवान् श्रीरामकी प्यारी पत्नी होनेके लिये रचा था (वन० २७४ । ९) । मिथिलाकी कन्या होनेके कारण ही यशस्विनी सीता 'मैथिली' कहलाती थीं (वन० २७७ । २) । प्राचीन कालमें मिथिलापुरीके एक राजा धर्मध्वज नामसे प्रसिद्ध थे । उनके ब्रह्मज्ञानकी चर्चा सुनकर संन्यासिनी सुलभाके मनमें उनके दर्शनकी इच्छा हुई । उसने प्रचुर जन-समुदायसे भरी हुई रमणीय मिथिलामें पहुँचकर भिक्षा लेनेके बहाने मिथिला-नरेशका दर्शन किया था (शान्ति० ३२० । ४—१२) । पिताकी आज्ञासे शुकदेवजी मिथिलाके राजा जनकसे धर्मकी निष्ठा और मोक्षका परम आश्रय पूछनेके लिये मिथिलापुरीको गये थे (शान्ति० ३२५ । ६-७) ।

मिञ्जिकामिञ्जिक–शिवजीके वीर्यसे उत्पन्न एक जोड़ा (वन० २३१ । १०) ।

मिश्रक–(१) अश्वोंका एक दल (सभा० ३८ । २९ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ८०३) । (२) द्वारकापुरीकी शोभा बढ़ानेवाला एक दिव्य वन (सभा० ३८ । २९ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ८१२, कालम २) । (३) कुरुक्षेत्रकी सीमाके अन्तर्गत स्थित एक उत्तम तीर्थ, जिसमें किया हुआ स्नान सभी तीर्थोंमें किये गये स्नानके समान फल देनेवाला है (वन० ८३ । ९१-९२) ।

मिश्रकेशी–एक अप्सरा, जो कश्यपकी प्राधा नामवाली पत्नीसे उत्पन्न हुई थी (आदि० ६५ । ४९) । इसके गर्भसे पूरुपुत्र रौद्राश्वके द्वारा अन्वग्भानु आदि दस महाधनुर्धरोंकी उत्पत्ति हुई थी (आदि० ९४ । ८) । इसने अर्जुनके स्वागतमें नृत्य किया था (वन० ४३ । २९) ।

मिश्री–एक नाग, जो बलरामजीके परमधामगमनके समय उनके स्वागतार्थ प्रभासक्षेत्रमें आया था (मौसल० ४ । १५-१६) ।

मुकुट–एक क्षत्रिय-वंश, जिसमें 'विगाहन' नामक कुलाङ्गार नरेश हुआ था (उद्योग० ७४ । १६) ।

मुकुटा–स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । २३) ।

मुखकर्णी–स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । २९) ।

मुखमण्डिका–शिशुग्रहस्वरूपा दितिका नाम (वन० २३० । ३०) ।

मुखर–एक कश्यपवंशी नाग (उद्योग० १०३ । १६) ।

मुखसेचक–धृतराष्ट्रकुलमें उत्पन्न एक नाग, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें दग्ध हो गया था (आदि० ५७ । १६) ।

मुचुकुन्द–एक प्राचीन राजर्षि, जो यमकी सभामें रहकर सूर्यपुत्र यमकी उपासना करते हैं (सभा० ८ । २१) । पूर्वकालमें धनाध्यक्ष कुबेर राजर्षि मुचुकुन्दपर प्रसन्न होकर उन्हें सारी पृथ्वी दे रहे थे; परंतु इन्होंने उसे ग्रहण नहीं किया । वे बोले—'मेरी इच्छा है कि मैं अपने बाहुबलसे उपार्जित राज्यका उपभोग करूँ ।' इससे कुबेर बड़े प्रसन्न और विस्मित हुए । तदनन्तर क्षत्रिय-धर्ममें तत्पर रहनेवाले मुचुकुन्दने अपने बाहुबलसे प्राप्त की हुई इस पृथ्वीका न्यायपूर्वक शासन किया (उद्योग० १३२ । ९–११) । एक बार मुचुकुन्दने अपने बलको जाननेके लिये अलकापति कुबेरपर आक्रमण किया । कुबेरके भेजे हुए राक्षसोंने इनकी सेनाको कुचलना आरम्भ किया । तब इन्होंने पुरोहितका ध्यान आकृष्ट किया । वसिष्ठजीने तपोबलसे राक्षसोंका संहार कर डाला । इसपर कुबेरके साथ इनका वाद-विवाद हुआ । कुबेरने इन्हें राज्य देना चाहा, पर इन्होंने नहीं लिया । अपने बाहुबलसे उपार्जित राज्यका ही उपभोग किया (शान्ति० ७४ । ४—२०) । परशुरामजीसे शरणागत-रक्षाके विषयमें इनका प्रश्न (शान्ति० १४३ । ७) । राजा काम्बोजसे इन्हें खड्गकी प्राप्ति हुई और इन्होंने मरुत्तको दिया (शान्ति० १६६ । ७७) । गोदान-महिमाके विषयमें इनका नाम-निर्देश (अनु० ७६ । २५) । इनके द्वारा मांस-भक्षण-निषेध (अनु० ११५ । ६१) । सायं-प्रातःस्मरणीय राजाओंमें भी इनका नाम आया है (अनु० १६५ । ५४—६०) ।

मुञ्ज–एक प्राचीन ऋषि, जो युधिष्ठिरका विशेष आदर करते थे (वन० २६ । २३) ।

मुञ्जकेतु–एक नरेश, जो युधिष्ठिरकी सभामें बैठते थे (सभा० ४ । २१) ।

मुञ्जकेश–एक क्षत्रिय राजा, जो निचन्द्र नामक असुरके अंशसे उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७ । २५-२६) । पाण्डवोंकी ओरसे इन्हें रण-निमन्त्रण भेजनेका निश्चय किया गया था (उद्योग० ४ । १४) ।

मुञ्जपृष्ठ–हिमालयके शिखरपर एक रुद्रसेवित स्थान (शान्ति० १२२ । ४) ।

मुञ्जवट–(१) कुरुक्षेत्रकी सीमामें स्थित एक स्थाणुतीर्थ, जहाँ एक रात रहनेसे मानव गणपति-पद प्राप्त करता है (वन० ८३ । २२) । (२) गङ्गातटवर्ती महादेवजी-का एक परम उत्तम तीर्थ, जहाँ महादेवजीको प्रणाम करके उनकी परिक्रमा करनेसे गणपति-पदकी प्राप्ति होती है; वहाँ गङ्गाजीमें स्नान करनेसे समस्त पापोंसे छुटकारा मिल जाता है (वन० ८५ । ६७-६८) ।

मुञ्जवान्–हिमालयके पृष्ठभागमें स्थित एक पर्वत, जहाँ उमावल्लभ भगवान् शङ्कर सदा तपस्या किया करते हैं । इसका विशेष वर्णन (आश्व० ८ । १—१२) ।

मुञ्जावट–हिमालयके शिखरका एक स्थान, जहाँ परशुराम-जीने ऋषियोंको अपनी जटा बाँधनेका आदेश दिया था (शान्ति० १२२ । ३) ।

मुण्ड–कौरवदलके मुण्डदेशीय योद्धा (भीष्म० ५६ । ९) ।

मुण्डवेदाङ्ग–धृतराष्ट्रकुलमें उत्पन्न हुआ एक नाग, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें दग्ध हो गया (आदि० ५७ । १७) ।

मुण्डी–स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । १७) ।

मुदावर्त–हैहयवंशमें उत्पन्न एक कुलाङ्गार राजा (उद्योग० ७४ । १३) ।

मुदिता–सह नामक अग्निकी भार्या (वन० २२२ । १) ।

मुद्गर–तक्षककुलमें उत्पन्न हुआ एक नाग, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें दग्ध हो गया (आदि० ५७ । १०) ।

मुद्गरपर्णक–एक कश्यपवंशी नाग (उद्योग० १०३ । १३) ।

मुद्गरपिण्डक–कश्यपद्वारा कद्रूके गर्भसे उत्पन्न एक नाग (आदि० ३५ । ९) ।

मुद्गल (मौद्गल्य)–(१) वेद-विद्याके पारङ्गत एक ब्राह्मण मुनि, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें सदस्य बनाये गये थे (आदि० ५३ । ९) । ये कुरुक्षेत्रमें शिलोञ्छ-वृत्तिसे जीवन-निर्वाह करते थे (वन० २६० । ३) । इनके द्वारा दुर्वासाका स्वागत (वन० २६० । १४—२२) । इनका देवदूतोंसे संवाद तथा स्वर्गमें जानेसे इनकार करना (वन० २६० । ३२ से वन० २६१ ।

४४ तक)। इनका दूसरा नाम मौद्गल्य भी था (वन० २६१ । २४)। ये मौद्गल्य मुनि शरशय्यापर पड़े हुए भीष्मको देखने गये थे (शान्ति० ४७ । ९)। इन्हें शतद्युम्नसे सुवर्णमय भवनकी प्राप्ति (शान्ति० २३४ । ३२; अनु० १३७ । २१)। (२) एक देश, जिसे भगवान् श्रीकृष्णने जीता था (द्रोण० ११ । १६–१८)।

मुनि–(१) दक्ष प्रजापतिकी कन्या एवं कश्यपकी पत्नी (आदि० ६५ । १२) । इनके देवगन्धर्व जातिवाले भीमसेन आदि सोलह पुत्र थे (आदि० ६५ । ४२—४४)। (२) अहर (अहः) नामक वसुके एक पुत्र (आदि० ६६ । २३)। (३) पूरुवंशी महाराज कुरुके द्वारा वाहिनीके गर्भसे उत्पन्न पाँच पुत्रोंमेंसे एक। शेष चार अश्ववान्, अभिष्यन्त, चैत्ररथ और जनमेजय थे। (आदि० ९४ । ५०)।

मुनिदेश–क्रौञ्चद्वीपवर्ती अन्धकारकके बादका एक देश (भीष्म० १२ । २२)।

मुनिवीर्य–एक सनातन विश्वेदेव (अनु० ९१ । ३१)।

मुमुचु–दक्षिण दिशाका आश्रय लेकर रहनेवाले एक ऋषि (अनु० १६५ । ३९)।

मुर (मुरु)–(१) एक प्राचीन देश, जिसपर राजा भगदत्तका शासन था (सभा० १४ । १४)। (२) एक महान् असुर, जो प्राग्ज्योतिषपुरके राजा भौमासुरके राज्यकी सीमाका पालन करनेवाले चार प्रधान असुरोंमेंसे एक था । इसके एक हजार पुत्र थे; जिनमें दस पुत्र भौमासुरके अन्तःपुरके रक्षक थे । इस असुरने तपस्या करके इच्छानुसार वरदान प्राप्त किया था। इसने भौमासुरके राज्यकी सीमापर छः हजार पाश लगा रखे थे, जो मौरवपाशके नामसे विख्यात थे । उनके किनारोंके भागोंमें छुरे लगे हुए थे। भगवान् श्रीकृष्णने उन पाशोंको सुदर्शनचक्रद्वारा काटकर मुरुको उसके वंशजोंसहित मार डाला (सभा० ३८ । २९ के बाद दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ८०५–८०७)।

मुर्मुरा–एक नदी, जो अग्निकी उत्पत्तिका स्थान बतायी गयी है (वन० २२२ । २५)।

मुष्टिक–एक असुर, जो कंसका भृत्य था। बलरामजीद्वारा इसका वध (सभा० ३८ । २९ के बाद दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ८०१)।

मुसल–विश्वामित्रके ब्रह्मवादी पुत्रोंमेंसे एक (अनु० ४ । ५३)।

मूक–(१) तक्षक-कुलमें उत्पन्न एक नाग, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें जल मरा (आदि० ५७ । ९)। (२) एक दानव, जो सूअरका रूप धारण करके अर्जुनको मारनेकी घातमें लगा था (वन० ३८ । ७)। अर्जुनद्वारा इसका वध (वन० ३९ । १६)।

मूल–(सत्ताईस नक्षत्रोंमेंसे एक) जो मूल नक्षत्रमें एकाग्रचित्त हो ब्राह्मणोंको मूल-फलका दान करता है, उसके पितर तृप्त होते हैं और वह अभीष्ट गति पाता है (अनु० ६४ । २४) । मूल नक्षत्रमें श्राद्ध करनेसे आरोग्यकी प्राप्ति होती है (अनु० ८९ । १०)। मार्गशीर्षमासके शुक्ल पक्षकी प्रतिपदाको मूल नक्षत्रसे चन्द्रमाका योग होनेपर चन्द्रसम्बन्धी व्रत आरम्भ करे। देवतासहित मूल नक्षत्रके द्वारा उनके दोनों चरणोंकी भावना करे (अनु० ११० । ३)।

मूषक–एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ५६, ६३)।

मूषकाद (मूषिकाद)–कश्यपद्वारा कद्रूके गर्भसे उत्पन्न एक नाग (आदि० ३५ । १२)। यह वरुणकी सभामें रहकर उनकी उपासना करता है (सभा० ९ । १०)। नारदजीका मातलिको इसका परिचय देना (उद्योग० १०३ । १४)।

मृगधूम–कुरुक्षेत्रकी सीमाके अन्तर्गत एक पुण्य तीर्थ, जहाँ महादेवजीकी पूजा करनेसे अश्वमेध यज्ञका फल मिलता है (वन० ८३ । १०१)।

मृगमन्दा–क्रोधवशाकी क्रोधजनित कन्याओंमेंसे एक। इसीसे रीछोंकी उत्पत्ति हुई (आदि० ६६ । ६०—६२)।

मृगव्याध–ग्यारह रुद्रोंमेंसे एक । ब्रह्माजीके आत्मज, स्थाणुके पुत्र (आदि० ६६ । २)।

मृगशिरा–(सत्ताईस नक्षत्रोंमेंसे एक) मृगशिरा नक्षत्रमें दूध देनेवाली गौका बछड़ेसहित दान करके दाता मृत्युके पश्चात् इस लोकसे सर्वोत्तम स्वर्गलोकमें जाते हैं (अनु० ६४ । ७)। इस नक्षत्रमें श्राद्ध करनेसे तेजकी प्राप्ति होती है (अनु० ८९ । ३)। मार्गशीर्षमासमें चन्द्रव्रतमें मृगशिराको चन्द्रमाके नेत्र समझकर पूजा करनेका विधान है (अनु० ११० । ८)।

मृगस्वप्नोद्भवपर्व–वनपर्वका एक अवान्तर पर्व (अध्याय २५८)।

मृगी–क्रोधवशाकी क्रोधजनित कन्याओंमेंसे एक। संसारके समस्त मृग इसीकी संतानें हैं (आदि० ६६ । ६०–६२)।

मृगतपा–दानवोंके सुविख्यात दस कुलोंमेंसे एक (आदि० ६५ । २८-२९)।

मृत्तिकावती-एक जनपद, जिसे कर्णने जीता था (वन० २५४ । १०) ।

मृत्यु-(१) (पुरुष) अधर्मकी स्त्री निर्ऋतिके गर्भसे उत्पन्न तीन पुत्रोंमेंसे एक । यह सब प्राणियोंका नाशक है । इसके पत्नी या पुत्र कोई नहीं है; क्योंकि यह सबका अन्तक है (आदि० ६६ । ५४-५५) । जापक ब्राह्मणके पास इसका आना (शान्ति० १९९ । ३२) । अर्जुनक नामक व्याध और सर्पके साथ इसका संवाद (अनु० १ । ५०—६८) । सुदर्शनद्वारा मृत्युपर विजयका वर्णन (अनु० २ । ४८–६७) । (२) (स्त्री) ब्रह्माजीके शरीरसे नारीरूपमें इसकी उत्पत्ति (द्रोण० ५३ । १७-१८; शान्ति० २५७ । १५) । ब्रह्माद्वारा संहारकार्यके सौंपे जानेपर इसका रोदन (द्रोण० ५३ । २२-२३; शान्ति० २५७ । २१) । इसकी घोर तपस्या (द्रोण० ५४ । १७–२६; शान्ति० २५८ । १५–२४) । ब्रह्मासे वरकी याचना (द्रोण० ५४ । ३०–३२) । इसका संहारकार्य स्वीकार करना (द्रोण० ५४ । ४४; शान्ति० २५८ । ३७) । इसकी प्रबलताका वर्णन (शान्ति० ३१९ अध्याय) ।

मेकल-एक भारतीय जनपद और वहाँके निवासी जाति-विशेष (भीष्म० ९ । ४१) । इस देशके योद्धा भीष्मकी रक्षामें तत्पर थे (भीष्म० ५१ । १३-१४) । कोसल-नरेश बृहद्बलके साथ मेकल आदि देशोंके सैनिक थे (भीष्म० ८७ । ९) । कर्णने इस देशको जीता था (द्रोण० ४ । ८) । मेकल पहले क्षत्रिय थे; परंतु ब्राह्मणोंके साथ ईर्ष्या करनेसे नीच हो गये (अनु० ३५ । १७-१८) ।

मेघकर्णा-स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । ३०) ।

मेघनाद-स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ६२) ।

मेघपुष्प-भगवान् श्रीकृष्णके रथका एक दिव्य अश्व (विराट० ४५ । २१; उद्योग० ८३ । १९; द्रोण० ७९ । ३८; द्रोण० १४७ । ४७; सौप्तिक० १३ । ३; शान्ति० ५३ । ५१) ।

मेघमाला-स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । ३०) ।

मेघमाली-मेरुद्वारा स्कन्दको दिये गये दो पार्षदोंमेंसे एक । दूसरेका नाम काञ्चन था (शल्य० ४५ । ४७) ।

मेघवासा-एक दैत्य, जो वरुणकी सभामें रहकर उनकी उपासना करता है (सभा० ९ । १४) ।

मेघवाहन-एक राजा, जो जरासंधको मस्तककी मणि मानकर सदा उसके समक्ष नतमस्तक रहता था (सभा० १४ । १३) ।

मेघवाहिनी-स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । १७) ।

मेघवेग-कौरवरक्षका एक वीर, जो अभिमन्युद्वारा मारा गया था (द्रोण० ४८ । १५-१६) ।

मेघसन्धि-मगध देशका राजकुमार, जो सहदेवका पुत्र था और उन्हींके साथ द्रौपदी-स्वयंवरमें गया था (आदि० १८५ । ८) । अश्वमेधीय अश्वकी रक्षाके प्रसङ्गमें अर्जुनके साथ इसका युद्ध और पराजय (आश्व० ८२ अध्याय) ।

मेघस्वना-स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६।८) ।

मेद-ऐरावतकुलमें उत्पन्न एक नाग, जो जनमेजयके सर्प-सत्रमें जलकर भस्म हो गया (आदि० ५७ । ११) ।

मेदिनी-पृथ्वीका एक नाम । भगवान् विष्णुद्वारा मधु और कैटभ दोनों दैत्योंके मारे जानेपर उनकी लाशें जलमें डूबकर एक हो गयीं । जलकी लहरोंसे मथित होकर उन दोनों दैत्योंने मेद छोड़ा, उससे आच्छादित होकर वहाँका जल अदृश्य हो गया । उसीपर भगवान् नारायणने नाना प्रकारके जीवोंकी सृष्टि की । उन दैत्योंके मेदसे सारी वसुधा आच्छादित हो गयी; इसलिये मेदिनीके नामसे प्रसिद्ध हुई (सभा० ३८ । २९ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ७८४) ।

मेधा-दक्ष प्रजापतिकी पुत्री एवं धर्मराजकी पत्नी (आदि० ६६ । १४) ।

मेधातिथि-(१) एक प्राचीन महर्षि, जो इन्द्रकी सभामें विराजमान होते हैं (सभा० ७ । १७) । इनके पुत्र कण्वमुनि पूर्वदिशाके ऋषि हैं (शान्ति० २०८ । २७) । इन्होंने वानप्रस्थका पालन करके स्वर्ग प्राप्त किया है (शान्ति० २४४ । १७) । ये उपरिचर वसुके यज्ञमें सदस्य बने थे (शान्ति० ३३६ । ७) । ये दिव्य महर्षि माने गये हैं । प्रयाणके समय भीष्मजीको देखनेके लिये पधारे थे और युधिष्ठिरद्वारा पूजित हुए थे (अनु० २६ । ३—९) । (२) एक नदी, जो अग्निकी उत्पत्तिका स्थान बतायी गयी है (वन० २२२ । २३) ।

मेधाविक-एक तीर्थ, जहाँ देवताओं और पितरोंका तर्पण करनेसे मनुष्य अश्वमेध यज्ञका फल पाता तथा मेधा प्राप्त कर लेता है (वन० ८५ । ५५) ।

मेधावी-(१) बालधि मुनिका पुत्र, जिसका जन्म पिताकी तपस्यासे हुआ था । पर्वत इसकी आयुके निमित्त थे । मेधायुक्त होनेके कारण इसका नाम मेधावी था । यह बड़ा उद्दण्ड था (वन० १३५ । ४५—४९) । धनुषाक्ष मुनिके द्वारा इसकी आयुके निमित्तभूत पर्वतोंको भैंसोंसे

विदीर्ण करा दिया गया; अतः उसकी मृत्यु हो गयी (वन० १३५ । ५३) । (२) एक ब्राह्मण-बालक, जिसने पिताको ज्ञानका उपदेश दिया (शान्ति० १७५ । ९—३८) । इसके द्वारा पिताको शरीर और संसारकी अनित्यताका उपदेश (शान्ति० ३७७ अध्याय) ।

मेध्या—पश्चिम दिशाका एक पुण्यमय तीर्थ (वन० ८९ । १५) । यह नदी अग्निकी उत्पत्तिका स्थान मानी गयी है (वन० २२२ । २३) । सायं प्रातःस्मरणीय नदियोंमें इसका भी नाम आया है (अनु० १६५ । २६) ।

मेनका—स्वर्गलोककी एक श्रेष्ठ अप्सरा, जिसने गन्धर्वराज विश्वावसुसे गर्भ धारण किया और स्थूलकेश ऋषिके पास अपनी पुत्री प्रमद्वराको जन्म देकर वहीं त्याग दिया (आदि० ८ । ६-७) । इसके गर्भसे विश्वामित्रद्वारा शकुन्तलाकी उत्पत्ति हुई (आदि० ७२ । २—९) । यह छः प्रधान अप्सराओंमें गिनी गयी है (आदि० ७४ । ६८-६९) । अर्जुनके जन्मोत्सवमें इसने गान किया था (आदि० १२२ । ६४) । यह कुबेरकी सभामें उपस्थित होती है (सभा० १० । १०) । इसने अर्जुनके स्वागतके लिये इन्द्रसभामें नृत्य किया था (वन० ४३ । २९) ।

मेना—भारतवर्षकी एक नदी, जिसका जल भारतवासी पीते हैं (भीष्म० ९ । २३) ।

मेरु—सुवर्णमय शिखरोंसे सुशोभित एक दिव्य पर्वत, जो ऊपरसे नीचेतक सोनेका ही माना जाता है, यह तेजका महान् पुञ्ज है और अपने शिखरोंसे सूर्यकी प्रभाको भी तिरस्कृत किये देता है । इसपर देवता और गन्धर्व निवास करते हैं । इसका कोई माप नहीं है । मेरुपर सब ओर भयंकर सर्प भरे पड़े हुए हैं । दिव्य ओषधियाँ इसे प्रकाशित करती रहती हैं । यह महान् पर्वत अपनी ऊँचाईसे स्वर्गलोकको घेरकर खड़ा है । वहाँ किसी समय देवताओंने अमृत-प्राप्तिके लिये परामर्श किया था, इस पर्वतपर भगवान् नारायणने ब्रह्माजीसे कहा था कि देवता और असुर मिलकर महासागरका मन्थन करें, इससे अमृत प्रकट होगा (आदि० १७ । ५—१३) । इसी मेरु पर्वतके पार्श्वभागमें वसिष्ठजीका आश्रम है (आदि० ९९ । ६) । यह दिव्य पर्वत अपने चिन्मय स्वरूपसे कुबेरकी सभामें उपस्थित हो उनकी उपासना करता है (सभा० १० । ३३) । यह पर्वत इलावृतखण्डके मध्यभागमें स्थित है । मेरुके चारों ओर मण्डलाकार इलावृतवर्ष बसा हुआ है । दिव्य सुवर्णमय महामेरु गिरिमें चार प्रकारके रंग दिखायी पड़ते हैं । यहाँतक पहुँचना किसीके लिये भी अत्यन्त कठिन है । इसकी लंबाई एक लाख योजन है । इसके दक्षिण भागमें विशाल जम्बूवृक्ष है; जिसके कारण इस विशाल द्वीपको जम्बूद्वीप कहते हैं (सभा० २८ । ६ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ७४७) । अत्यन्त प्रकाशमान महामेरु पर्वत उत्तर दिशाको उद्भासित करता हुआ खड़ा है । इसपर ब्रह्मवेत्ताओंकी ही पहुँच हो सकती है । इसी पर्वतपर ब्रह्माजीकी सभा है, जहाँ समस्त प्राणियोंकी सृष्टि करते हुए ब्रह्माजी निवास करते हैं । ब्रह्माजीके मानस पुत्रोंका निवासस्थान भी मेरु पर्वत ही है । वसिष्ठ आदि सप्तर्षि भी यहीं उदित और प्रतिष्ठित होते हैं । मेरुका उत्तम शिखर रजोगुणसे रहित है । इसपर आत्मतृप्त देवताओंके साथ पितामह ब्रह्मा रहते हैं । यहाँ ब्रह्मलोकसे भी ऊपर भगवान् नारायणका उत्तम स्थान प्रकाशित होता है । परमात्मा विष्णुका यह धाम सूर्य और अग्निसे भी अधिक तेजस्वी है तथा अपनी ही प्रभासे प्रकाशित होता है । पूर्व दिशामें मेरु पर्वतपर ही भगवान् नारायणका स्थान सुशोभित होता है । यहाँ यत्नशील ज्ञानी महात्माओंकी ही पहुँच हो सकती है । उस नारायणधाममें ब्रह्मर्षियोंकी भी गति नहीं है, फिर महर्षियोंकी तो बात ही क्या है । भक्तिके प्रभावसे ही यत्नशील महात्मा यहाँ भगवान् नारायणको प्राप्त होते हैं । यहाँ जाकर मनुष्य फिर इस लोकमें नहीं लौटते हैं । यह परमेश्वरका नित्य अविनाशी और अविकारी स्थान है । नक्षत्रोंसहित सूर्य और चन्द्रमा प्रतिदिन निश्चल मेरुगिरिकी प्रदक्षिणा करते रहते हैं । अस्ताचलको पहुँचकर संध्याकालकी सीमाको लाँघकर भगवान् सूर्य उत्तर दिशाका आश्रय लेते हैं; फिर मेरुपर्वतका अनुसरण करके उत्तर दिशाकी सीमातक पहुँचकर समस्त प्राणियोंके हितमें तत्पर रहनेवाले सूर्य पुनः पूर्वाभिमुख होकर चलते हैं (वन० १६३ । १२—४२) । माल्यवान् और गन्धमादन—इन दोनों पर्वतोंके बीचमें मण्डलाकार सुवर्णमय मेरुपर्वत है । इसकी ऊँचाई चौरासी हजार योजन है । नीचे भी चौरासी हजार योजनतक पृथ्वीके भीतर घुसा हुआ है । इसके पार्श्व भागमें चार द्वीप हैं—भद्राश्व, केतुमाल, जम्बूद्वीप और उत्तरकुरु । इस पर्वतके शिखरपर ब्रह्मा, रुद्र और इन्द्र एकत्र हो नाना प्रकारके यज्ञोंका अनुष्ठान करते हैं । उस समय तुम्बुरु, नारद, विश्वावसु आदि गन्धर्व यहाँ आकर इसकी स्तुति करते हैं । महात्मा सप्तर्षिगण तथा प्रजापति कश्यप प्रत्येक पर्वके दिन इस पर्वतपर पधारते हैं । दैत्योंसहित शुक्राचार्य मेरु पर्वतके ही शिखरपर निवास करते हैं । यहाँके सब रत्न और रत्नमय पर्वत उन्हींके अधिकारमें है । भगवान् कुबेर उन्हींसे धनका चतुर्थ भाग प्राप्त करके उसका सदुपयोग करते हैं । सुमेरु पर्वतके उत्तर भागमें दिव्य एवं

रमणीय कर्णिकारवन है। वहाँ भगवान् शंकर कनेरकी दिव्य माला धारण करके भगवती उमाके साथ विहार करते हैं। इस पर्वतके शिखरसे दुग्धके समान श्वेत धारवाली पुण्यमयी भागीरथी गङ्गा बड़े वेगसे चन्द्रह्रदमें गिरती हैं। मेरुके पश्चिम भागमें केतुमाल वर्ष है, जहाँ जम्बूखण्ड नामक प्रदेश है। वहाँके निवासियोंकी आयु दस हजार वर्षोंकी होती है। वहाँके पुरुष सुवर्णके समान कान्तिमान् और स्त्रियाँ अप्सराओंके समान सुन्दरी होती हैं। उन्हें कभी रोग-शोक नहीं होते। उनका चित्त सदा प्रसन्न रहता है (भीष्म० ६ । १०–३३)। पर्वतों-द्वारा पृथ्वीदोहनके समय यह मेरु पर्वत दोग्धा (दुहने-वाला) बना था (द्रोण० ६९ । १८)। त्रिपुर-दाहके लिये जाते हुए भगवान् शिवने मेरु पर्वतको अपने रथकी ध्वजाका दण्ड बनाया था (द्रोण० २०२ । ७८)। मेरुने स्कन्दको काञ्चन और मेघमाली नामक दो पार्षद प्रदान किये (शल्य० ४५ । ४८-४९)। इसने पृथुको सुवर्णराशि दी थी (शान्ति० ५९ । १–९)। यह पर्वतों-का राजा बनाया गया था (शान्ति० २२२ । २८)। व्यासजी अपने शिष्योंके साथ मेरु पर्वतपर निवास करते हैं (शान्ति० ३४१ । २२-२३)। स्थूलशिरा और बड़वा-मुखने यहाँ तपस्या की थी (शान्ति० ३४२ । ५९-६०)।

मेरुप्रभ–द्वारकापुरीके दक्षिणवर्ती लतावेष्ट पर्वतको घेरकर सुशोभित होनेवाले तीन वनोंमेंसे एक। शेष दो तालवन और पुष्पकवन थे। यह महान् वन बड़ी शोभा पाता था (सभा० ३८ । २९ के बाद दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ८१३, कालम १)।

मेरुभूत–एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ४८)।

मेरुव्रज–एक नगरी, जो राक्षसराज विरूपाक्षकी राजधानी थी (शान्ति० १७० । १९)।

मेरुसावर्णि (मेरुसावर्ण)–एक ऋषि, जिन्होंने हिमालय पर्वतपर युधिष्ठिरको धर्म और ज्ञानका उपदेश दिया था (सभा० ७८ । १४)। ये अत्यन्त तपस्वी, जितेन्द्रिय और तीनों लोकोंमें विख्यात हैं (अनु० १५० । ४४-४५)।

मेष–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ६४)।

मेषहृत्–गरुडकी प्रमुख संतानोंमेंसे एक (उद्योग० १०१ । १२)।

मैत्र–(१) एक प्रकारके राक्षस, जिनका सामना करनेको तैयार रहनेके लिये युधिष्ठिरके प्रति लोमश मुनिकी प्रेरणा हुई। (२) एक मुहूर्त, जिसमें श्रीकृष्णने हस्तिनापुरकी यात्रा आरम्भ की (उद्योग० ८३ । ६)। (३) अनुराधा नक्षत्र, जिसमें कृतवर्माने दुर्योधनका पक्ष ग्रहण किया (शल्य० ३५ । १४)। (४) कनक या सुवर्ण (अनु० ८५ । ११३)।

मैत्रेय–एक प्राचीन ऋषि, जो युधिष्ठिरकी सभामें विराज-मान होते थे (सभा० ४ । १०)। इनका धृतराष्ट्र तथा दुर्योधनसे पाण्डवोंके प्रति सद्भाव रखनेका अनुरोध (वन० १० । ११–२७)। इनके द्वारा दुर्योधनको शाप (वन० १० । ३४)। हस्तिनापुर जाते समय मार्गमें श्रीकृष्णसे इनकी भेंट (उद्योग० ८३ । ६७ के बाद दाक्षिणात्य पाठ)। शरशय्यापर पड़े हुए भीष्मके पास ये भी गये थे (शान्ति० ४७ । ६)। व्यासजीके साथ इनके धर्मविषयक प्रश्नोत्तर (अनु० अध्याय १२० से १२२ तक)।

मैनसिल–एक पर्वतीय धातु, जो लाल रंगकी होती है (वन० १५८ । ९४)।

मैनाक–(१) कैलास पर्वतसे उत्तर दिशामें स्थित एक पर्वत। इसके समीप ही विन्दुसरोवर है, जहाँ राजा भगीरथने गङ्गावतरणके लिये बहुत वर्षोंतक तपस्या की थी (सभा० ३ । ९—११)। पाण्डवोंने उत्तराखण्डकी यात्राके समय इस पर्वतको लाँघकर आगे पदार्पण किया था (वन० १३९ । १)। विन्दुसरोवरके समीपवर्ती मैनाक पर्वत सुवर्णमय शिखरोंसे सुशोभित है (वन० १४५ । ४४)। पाण्डवोंद्वारा मैनाक आदिका दर्शन (वन० १५८ । १७)। कैलाससे उत्तर इसकी स्थितिका वर्णन (भीष्म० ६ । ४२)। (२) पश्चिम दिशाका एक तीर्थभूत पर्वत, जो वैदूर्यशिखरके पास नर्मदाके तटप्रान्तमें है (वन० ८९ । ११)। यहाँका तीर्थफल (अनु० २५ । ५९)। (३) क्रौञ्चद्वीपमें अन्धकारके बादका एक पर्वत (भीष्म० १२ । १८)।

मैन्द–एक वानरराज, जो किष्किन्धा नामक गुफामें रहता था। जिसे दक्षिण-दिग्विजयके समय सहदेव सात दिनों-तक युद्ध करनेपर भी परास्त न कर सके थे, तब मैन्दने स्वयं ही प्रसन्न होकर सब प्रकारके रत्नोंकी भेंट दी और कहा–'जाओ, बुद्धिमान् युधिष्ठिरके कार्यमें कोई विघ्न नहीं पड़ना चाहिये' (सभा० ३१ । १८)। यह वानर-राज सुग्रीवका मन्त्री था और महामनस्वी, बुद्धिमान् तथा बली था (वन० २८० । २३)। श्रीरामचन्द्रजीका कार्य करनेके लिये जाती हुई विशाल वानर-सेनाके रक्षकोंमें एक यह भी था (वन० २८३ । १९)। मायासे अदृश्य हुए प्राणियोंको भी प्रत्यक्ष दिखा देनेकी शक्तिवाले कुबेर-के भेजे हुए जलसे इसने भी अपने नेत्र धोये थे (वन० २८९ । १०–१३)।

मोक्षधर्मपर्व–शान्तिपर्वका एक अवान्तर पर्व (अध्याय १७४ से ३६५ तक)।

मोदाकी–केसर पर्वतके पास स्थित शाकद्वीपका एक वर्ष (भीष्म० ११ । २६) ।

मोदागिरि–एक देश, जहाँके राजाको भीमसेनने पूर्वदिग्विजयके समय मार गिराया था (सभा० ३० । ३१) ।

मोदापुर–एक नगर, जहाँके राजाको उत्तर-दिग्विजयके अवसरपर अर्जुनने परास्त किया था (सभा० २७ । ११) ।

मोहन–एक जनपद, जिसे कर्णने जीता था (वन० २५४ । १०) ।

मौञ्जायन–एक ऋषि, जो युधिष्ठिरकी सभामें विराजते हैं (सभा० ४ । १३) । हस्तिनापुर जाते समय मार्गमें श्रीकृष्णसे इनकी भेंट (उद्योग० ८३ । ६४ के बाद) ।

मौर्वी–तृणविशेष, जिसकी मेखला बनायी जाती है (द्रोण० १७ । २३) ।

मौसलपर्व–महाभारतका एक प्रधान पर्व ।

म्लेच्छ–एक जाति और जनपद, नन्दिनी गौके फेनसे म्लेच्छ जातिकी सृष्टि हुई । उन म्लेच्छ सैनिकोंने विश्वामित्रकी सेनाको तितर-बितर कर दिया (आदि० १७४ । ३८–४०) । भीमसेनने समुद्रतटवर्ती म्लेच्छों और उनके अधिपतियोंको जीतकर उनसे 'कर' के रूपमें भाँति-भाँतिके रत्न प्राप्त किये थे (सभा० ३० । २५—२७) । समुद्रके द्वीपोंमें निवास करनेवाले म्लेच्छजातीय राजाओंको माद्रीकुमार सहदेवने परास्त किया था (सभा० ३१ । ६६) । नकुलने भी उनपर विजय पायी थी (सभा० ३२ । १६) । समुद्रके टापुओंमें रहनेवाले म्लेच्छोंके साथ राजा भगदत्त युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें पधारे थे (सभा० ३४ । १०) । म्लेच्छोंके स्वामी भगदत्त भेंट लेकर युधिष्ठिरके यहाँ आये थे (सभा० ५१ । १४) । जब प्रलयका पूर्वरूप आरम्भ हो जाता है, उस समय इस पृथ्वीपर बहुत-से म्लेच्छ राजा राज्य करने लगते हैं (वन० १८८ । ३४) । विष्णुयशा कल्कि भूमण्डलमें सर्वत्र फैले हुए म्लेच्छोंका संहार करेंगे (वन० १९० । ९७) । कर्णने अपनी दिग्विजयमें म्लेच्छ राज्योंको जीत लिया था (वन० २५४ । १९–२१) । एक भारतीय जनपदका नाम म्लेच्छ है (भीष्म० ९ । ५७) । म्लेच्छजातीय अङ्ग भीमसेनद्वारा युद्धमें मारा गया (द्रोण० २६ । १७) । नन्दिनी गौसे उत्पन्न हुए म्लेच्छ अर्जुनपर तीखे बाणोंकी वर्षा करते थे; परंतु अर्जुनने दाढ़ीभरे मुखवाले उन सभी म्लेच्छोंका संहार कर डाला (द्रोण० ९३ । ४३—४९) । वीर सात्यकिके द्वारा रणभूमिमें आहत होकर सैकड़ों म्लेच्छ प्राणोंसे हाथ धो बैठे थे (द्रोण० ११९ । ४३) । म्लेच्छोंने पाण्डवसेनापर अत्यन्त क्रोधी गजराज बढ़ाये थे (कर्ण० २२ । १०) । म्लेच्छजातीय अङ्गराज पाण्डुकुमार नकुलद्वारा मारा गया (कर्ण० २२ । १८) । म्लेच्छ सैनिक दुर्योधनकी सहायताके लिये बड़े रोषपूर्वक लड़ रहे थे । अर्जुनके सिवा और किसीके लिये उन्हें जीतना असम्भव था (कर्ण० ७३ । १९—२२) । अर्जुनको अश्वमेधीय अश्वकी रक्षाके समय बहुत-से म्लेच्छ सैनिकोंका सामना करना पड़ा (आश्व० ७३ । २५) । युधिष्ठिरकी यज्ञशालामें ब्राह्मणोंके लेनेके बाद जो धन पड़ा रह गया, उसे म्लेच्छजातिके लोग उठा ले गये (आश्व० ८९ । २६) ।

(य)

यकृल्लोमा–एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ४६) ।

यक्ष–देवयोनि-विशेष या उपदेवता, जो विराट्अण्डसे ब्रह्मा आदि देवताओंकी उत्पत्तिके बाद प्रकट हुए बताये जाते हैं (आदि० १ । ३५) । शुकदेवजीने यक्षोंको महाभारतकी कथा सुनायी थी (आदि० १ । १०८) । यक्षलोग पुलस्त्य मुनिकी संतानें हैं (आदि० ६६ । ७) । कुबेरकी सभामें उपस्थित हो लाखों यक्ष उनकी उपासना करते हैं (सभा० १० । १८) । ब्रह्माजीकी सभामें इनकी उपस्थिति बतायी गयी है (सभा० ११ । ५६) । कुबेरका यक्षोंके राजपदपर अभिषेक किया गया था (वन० १११ । १०-११) । भीमसेनने यक्षों और राक्षसोंको मार भगाया था (वन० १६० । ५७-५८) । सुन्द-उपसुन्दने इन्हें पराजित और पीड़ित किया था (वन० २०८ । ७) ।

यक्ष-ग्रह–एक यक्षसम्बन्धी ग्रह, जिसके बाधा करनेपर मनुष्य पागल हो जाता है (वन० २३० । ५३) ।

यक्षयुद्धपर्व–वनपर्वका एक अवान्तर पर्व (अध्याय १५८ से १६४ तक) ।

यक्षिणी–एक देवी, जिनके प्रसादरूप नैवेद्यके भक्षणसे ब्रह्महत्यासे मुक्ति हो जाती है (वन० ८४ । १०५) ।

यक्षिणीतीर्थ–कुरुक्षेत्रकी सीमामें स्थित एक लोकविख्यात तीर्थ, जहाँ जानेसे और स्नान करनेसे सम्पूर्ण कामनाओंकी पूर्ति होती है । यह कुरुक्षेत्रका विख्यात द्वार है, उसकी परिक्रमा करके तीर्थयात्री मनुष्य एकाग्रचित्त हो पुष्करतीर्थके तुल्य उस तीर्थमें स्नान करके देवताओं और पितरोंकी पूजा करे । इससे वह कृतकृत्य होता और अश्वमेध यज्ञका फल प्राप्त करता है । उत्तम श्रेणीके

महात्मा जमदग्निनन्दन परशुरामने उस तीर्थका निर्माण किया है (वन० ८३ । २३–२५) ।

यक्ष्मा–एक रोग, जिसे क्षय या तपेदिक कहते हैं । चन्द्रमापर कुपित होकर प्रजापति दक्षने उन्हींके लिये इस रोगकी सृष्टि की थी (शल्य० ३५ । ६१-६२) ।

यज्ञवाह–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ७०) ।

यज्ञसेन–पाञ्चाल-नरेश पृषतके पुत्र (आदि० १३० । ४२) । (देखिये द्रुपद) ।

यति–(१) नहुषके प्रथम पुत्र, ययातिके बड़े भाई (आदि० ७५ । ३०) । ये योगका आश्रय लेकर ब्रह्मभूत मुनि हो गये थे (आदि० ७५ । ३१) । (२) विश्वामित्रके ब्रह्मवादी पुत्रोंमेंसे एक (अनु० ४ । ५८) ।

यथावास–एक वानप्रस्थी ऋषि, जो वानप्रस्थ-धर्मका पालन एवं प्रसार करके स्वर्गलोकमें गये थे (शान्ति० २४४ । १७) ।

यदु–(१) राजा ययातिके प्रथम पुत्र, जो देवयानीके गर्भसे उत्पन्न हुए थे (आदि० ७५ । ३५; आदि० ८३ । ९) । इनका अपने पिताको युवावस्था देनेसे अस्वीकार करना (आदि० ७५ । ४३; आदि० ८४ । ५) । ययातिका इनकी संतानको राज्याधिकारसे वञ्चित होनेका शाप देना (आदि० ८४ । ९) । यदुकी ही संतानें यादव कहलायीं (आदि० ९५ । १०) । भगवान् नारायणने अपने मस्तकसे दो केश निकाले, जिनमेंसे एक श्वेत था, एक श्याम । वे दोनों केश यदुकुलकी दो स्त्रियों रोहिणी तथा देवकीके भीतर प्रविष्ट हुए । रोहिणीसे बलदेवजी प्रकट हुए, जो भगवान् नारायणके श्वेत केशरूप थे और देवकीके गर्भसे श्याम केशस्वरूप भगवान् श्रीकृष्णका प्रादुर्भाव हुआ (आदि० १९६ । ३२-३३) । यदु देवयानीके पुत्र और शुक्राचार्यके दौहित्र थे, ये बलवान्, उत्तम पराक्रमसे सम्पन्न एवं यादववंशके प्रवर्तक थे । इनकी बुद्धि बड़ी मन्द थी । इन्होंने घमंडमें आकर समस्त क्षत्रियोंका अपमान किया था । ये पिताके आदेशपर नहीं चलते थे । भाइयों और पिताका अपमान करते थे । उन दिनों भूमण्डलमें यदु ही सबसे अधिक बलवान् थे और समस्त राजाओंको वशमें करके हस्तिनापुरमें निवास करते थे । इनके पिता ययातिने अत्यन्त कुपित हो इन्हें शाप दे दिया और राज्यसे भी उतार दिया । जिन भाइयोंने इनका अनुसरण किया, उनको भी पिताका शाप प्राप्त हुआ (उद्योग० १४९ । ६—११) । इन्हीं यदुके वंशमें देवमीढ़ नामसे विख्यात एक यादव हो गये हैं, जिनके पुत्रका नाम शूर था (द्रोण० १४४ । ६-७) । यदुके पुत्रका नाम क्रोष्टा था (अनु० १४७ । २८) । (२) एक राजकुमार, जो उपरिचर वसुका पुत्र था, वह युद्धमें किसीसे पराजित नहीं होता था (आदि० ६३ । ३१) ।

यम–(१) समस्त प्राणियोंका नियमन करनेवाले यमराज, जो भगवान् सूर्यके पुत्र तथा सबके शुभाशुभ कर्मोंके साक्षी हैं (आदि० ७४ । ३०; आदि० ७५ । २२) । इन्हें शूद्र-योनिमें जन्म लेनेके लिये माण्डव्य ऋषिका शाप (आदि० १०७ । १४–१६) । द्रौपदीके स्वयंवरको देखनेके लिये इनका आगमन (आदि० १८६ । ६) । नैमिषारण्यमें इनके द्वारा देवताओंके यज्ञमें शामित्र-कर्म-सम्पादन (आदि० १९६ । १) । खाण्डवदाहके समय श्रीकृष्ण और अर्जुनसे युद्ध करनेके लिये इन्द्रकी ओरसे ये भी कालदण्ड लेकर आये थे (आदि० २२६ । ३२) । ये एक हजार युग बीतनेपर बिन्दुसरोवरपर यज्ञका अनुष्ठान करते हैं (सभा० ३ । १५) । नारदजीके द्वारा इनकी दिव्य सभाका वर्णन (सभा० ८ अध्याय) । ये ब्रह्माजीकी सभामें विराजमान होते हैं (सभा० ११ । ५१) । इनके द्वारा अर्जुनको दण्डास्त्रका दान (वन० ४१ । २५) । दमयन्ती-स्वयंवरमें इनके द्वारा राजा नलको वर-प्रदान (वन० ५७ । ३७) । सावित्रीको अनेक वर देनेके पश्चात् इनका सत्यवान्को जीवित करना (वन० २९७ । ११—६०) । इन्द्रने इन्हें पितरोंका राजा बनाया था (उद्योग० १६ । १४) । पितरोंद्वारा पृथ्वी-दोहनके समय ये बछड़ा बने थे (द्रोण० ६९ । २६) । त्रिपुरदाहके समय ये भगवान् शिवके बाणके पुङ्खभागमें प्रतिष्ठित हुए थे (द्रोण० २०२ । ७७) । इनके द्वारा स्कन्दको उन्माथ और प्रमाथ नामक दो पार्षदोंका दान (शल्य० ४५ । ३०) । महर्षि गौतमके साथ इनका धर्मविषयक संवाद (शान्ति० १२९ अध्याय) । इनके द्वारा जापक ब्राह्मणको वरदान (शान्ति० १९९ । ३०) । इनको नारायणसे शिवसहस्रनामका उपदेश मिला और इन्होंने नाचिकेतको इसका उपदेश किया (अनु० १७ । १७८-१७९) । इनका अपने दूतोंको शर्मी नामक ब्राह्मणको लानेका आदेश (अनु० ६८ । ६—९) । ब्राह्मणको तिल, जल और अन्नके दानकी महिमा बतलाना (अनु० ६८ । १६—२२) । नाचिकेतके साथ संवादमें गोदानकी महिमा बताना (अनु० ७१ । १८—५६) । इनके द्वारा धर्मके रहस्यका वर्णन (अनु० १३० । १४—३३) । इनके लोकका वर्णन (अनु० १४५ । दा० पाठ, पृष्ठ ५९८० से ५९८५ तक) । ये मुञ्जवान् पर्वतपर शिवजीकी उपासना करते हैं (आश्व० ८ । ४–६) । (२) वरुणद्वारा

स्कन्दको दिये गये दो पार्षदोंमेंसे एक, दूसरेका नाम था अतियम (शल्य० ४५ । ४५)।

यमक–एक देश और जातिके लोग–यहाँके राजा, राजकुमार और निवासी भी युधिष्ठिरके यज्ञमें भेंट लेकर आये थे (सभा० ५२ । १३–१७)।

यमदूत–महर्षि विश्वामित्रके ब्रह्मवादी पुत्रोंमेंसे एक (अनु० ४ । ५१)।

यमुना–(सूर्यपुत्री यमुना, जो परम पावन नदीके रूपमें विराज रही हैं, कलिन्द पर्वतसे प्रकट होनेके कारण इन्हें कालिन्दी कहते हैं। ये यमुनोत्तरीसे निकलकर प्रयागमें आयी हैं, वहाँ गङ्गाजीके साथ इनका संगम हुआ है। भगवान् श्रीकृष्णकी परम पावन लीलास्थली इन्हींके तटपर है; ये आधिदैविकरूपसे भगवान् श्रीकृष्णकी पट्टमहिषी थीं।) यमुनाजीके द्वीपमें पराशरजीने सत्यवतीके गर्भसे व्यासजीको उत्पन्न किया था (आदि० ६० । २)। ये गङ्गाकी सात धाराओंमेंसे एक हैं, जो इनका जल पीते हैं, वे पापमुक्त हो जाते हैं (आदि० १६९ । १९–२१)। जरासंधके मन्त्री और सेनापति हंस तथा डिम्भक यमुनाजीमें कूदकर मर गये थे (सभा० १४ । ४३-४४)। वनगमनके समय पाण्डव लोग यमुनाके जलका सेवन करके आगे बढ़े थे (वन० ५ । २)। सृंजयपुत्र सहदेवने यमुनातटपर लाख स्वर्णमुद्राओंकी दक्षिणा देकर अग्निकी उपासना की थी (वन० ९० । ७) राजा भरतने यमुनाजीके तटपर पैंतीस अश्वमेध यज्ञोंका अनुष्ठान किया था (वन० ९० । ८)। ये आर्चीक पर्वतके पास बहती हैं। ब्रह्मर्षिसेवित पुण्यमयी नदी हैं और पापके भयको दूर भगाती हैं। इनके तटपर मान्धाता और दानिशिरोमणि सहदेवकुमार सोमकने यज्ञ किया था (वन० १२५ । २१–२६)। इनके तटपर नाभागपुत्र राजा अम्बरीषने यज्ञ किया था (वन० १२९ । २)। अगस्त्यजीने यमुना-तटपर घोर तपस्या की थी (वन० १६१ । ५६)। राजा शान्तनुने यमुनातटपर सात बड़े-बड़े यज्ञोंका अनुष्ठान किया था (वन० १६२ । २५)। ये भारतकी उन प्रमुख नदियोंमेंसे हैं, जिनका जल भारतीय प्रजा पीती है (भीष्म० ९ । १५)। भरतने यमुनातटपर एक बार सौ अश्वमेध यज्ञ किये (द्रोण० ६८ । ८)। इन्होंने ही इसी नदीके तटपर तीन सौ अश्वमेध यज्ञ पूर्ण किये थे (शान्ति० २९ । ४६)।

यमुनातीर्थ-सरस्वती-तटवर्ती पुण्य तीर्थ, जहाँ अदितिनन्दन वरुणने राजसूय यज्ञका अनुष्ठान किया था (शल्य० ४९ । ११–१५)।

यमुनाद्वीप–यमुनाजीके बीचका एक द्वीप, जहाँ सत्यवतीने पराशरजीके द्वारा व्यासको उत्पन्न किया था (आदि० ६० । २)।

यमुनाप्रभव–एक तीर्थ, जहाँ स्नान करके मनुष्य अश्वमेध यज्ञका फल पाकर स्वर्गलोकमें प्रतिष्ठित होता है (वन० ८४ । ४४)।

ययाति–एक प्राचीन राजर्षि (आदि० १ । २२९)। महाराज नहुषके द्वितीय पुत्र। इनके बड़े भाई यति योगका आश्रय ले ब्रह्मभूत मुनि हो गये; अतः ये ही भूमण्डलके सम्राट् हुए। इन्होंने इस पृथ्वीका पालन और बहुत-से यज्ञोंका अनुष्ठान किया (आदि० ७५ । ३०–३२)। ये अपराजित, मन और इन्द्रियोंको संयममें रखनेवाले और भक्तिभावसे देवताओं तथा पितरोंका पूजन करनेवाले थे (आदि० ७५ । ३३)। देवयानी और शर्मिष्ठासे इनके पाँच पुत्रोंकी उत्पत्ति, पुत्रोंसे इनकी यौवन-याचना, कनिष्ठ पुत्रकी युवावस्थासे दोनों पत्नियों और विश्वाची अप्सराके साथ इनके विहार तथा कामभोगसे तृप्त न होनेपर इनके द्वारा वैराग्यपूर्ण गाथा-गान आदिकी संक्षिप्त कथा (आदि० ७५ । ३४–५८)। कुएँमें गिरी हुई देवयानीका इनके द्वारा हाथ पकड़कर उद्धार (आदि० ७८ । १४–२३)। देवयानीद्वारा इनसे विवाहके लिये प्रार्थना (आदि० ७८ । २३ के बाद दाक्षिणात्य पाठ)। ब्राह्मणकन्या होनेके कारण इनका देवयानीकी प्रार्थनाको अस्वीकार करना और उसकी अनुमति ले अपने नगरको जाना (आदि० ७८ । २३ के बाद दाक्षिणात्य पाठसहित २४ तक)। सखियोंके साथ विचरण करती हुई देवयानीसे इनकी वनमें भेंट (आदि० ८१ । १—७)। ययाति और देवयानीका संवाद–दोनोंका एक दूसरेसे परिचय पूछना और अपना परिचय देना, देवयानीका इनके साथ विवाहका प्रस्ताव, ययातिका शुक्राचार्यके शापसे भय बताना, देवयानीका धायको भेजकर अपने पिताको बुलवाना और उनसे अपनेको राजा नहुषके हाथमें देनेका अनुरोध करना, शुक्राचार्यका अपनी पुत्रीको राजाके हाथमें देना और उन्हें वर्णसङ्करजनित अधर्मके भयसे मुक्त करना, साथ ही शर्मिष्ठाको अपनी शय्यापर न बुलानेके लिये सावधान करना। ययातिका देवयानीके साथ शास्त्रोक्त रीतिसे विवाह तथा दो हजार सखियोंसहित शर्मिष्ठा एवं देवयानीको साथ लेकर प्रसन्नतापूर्वक इनका अपने नगरको जाना (आदि० ८१ । ८–३८)। ययातिसे देवयानीको पुत्रकी प्राप्ति (आदि० ८२ । ४-५)। ययातिको एकान्तमें देखकर शर्मिष्ठाका

इनके पास जाना और अपने ऋतुकालको सफल बनानेके लिये प्रार्थना करना; इस विषयमें ययाति और शर्मिष्ठाका संवाद । शर्मिष्ठाके कथनकी यथार्थताको स्वीकार करके ययातिका धर्मानुसार उसे अपनी भार्या बनाना और इनके साथ सहवास करके शर्मिष्ठाका एक देवोपम पुत्रको जन्म देना (आदि० ८२ । ११—२७) । ययातिको देवयानीसे यदु और तुर्वसु नामक दो पुत्रोंकी तथा शर्मिष्ठाके गर्भसे द्रुह्यु, अनु तथा पूरु नामक तीन पुत्रोंको जन्म देना (आदि० ८३ । ९-१०) । वनमें शर्मिष्ठाके पुत्रोंको खेलते देख देवयानीका ययातिसे उनके विषयमें पूछना । ये ययातिके ही पुत्र हैं— यह पता लगनेपर देवयानीका इनसे रूठकर पिताके पास जाना और ययातिका भी उसे मनानेके लिये उसके पीछे-पीछे जाना (आदि० ८३ । ११—२७) । पुत्रीके मुखसे ययातिका अपराध सुनकर शुक्राचार्यद्वारा इनको जराग्रस्त होनेका अभिशाप (आदि० ८३ । २८–३१) । ययातिका अपनी सफाई देना और शुक्राचार्यसे जरा-वस्थाकी निवृत्तिके लिये प्रार्थना करना (आदि० ८३ । ३२–३८) । शुक्राचार्यका ययातिको दूसरेसे जवानी लेकर इस बुढ़ापाको उसके शरीरमें डाल देनेकी सुविधा देना और जो पुत्र अपनी युवावस्था दे, उसीके लिये राजा होनेका वर प्रदान करना (आदि० ८३ । ३९–४२) । इनका यदुसे उनकी युवावस्था माँगना और उनके अस्वीकार करनेपर इनका उन्हें उनकी संतानको राज्याधिकारसे वञ्चित होनेका शाप देना (आदि० ८४ । १–९) । इनका तुर्वसुसे युवावस्था माँगना और उनके द्वारा स्वीकार न करनेपर उनको म्लेच्छोंमें राजा होनेका शाप देना (आदि० ८४ । १०–१५) । इनका द्रुह्युसे यौवन माँगना और न देनेपर उन्हें कभी भी उनके मनोरथ सिद्ध न होने, अति दुर्गम देशोंमें रहने तथा राज्याधिकारसे वञ्चित होकर 'भोज' कहलानेका शाप देना (आदि० ८४ । १६–२२) । इनका अनुसे उनकी जवानी माँगना और उनके अस्वीकार करनेपर उन्हें जराग्रस्त होने, युवा होते ही उनकी संतानोंको मरने तथा अग्निहोत्रत्यागी बननेका शाप देना (आदि० ८४ । २३—२६) । इनका पूरुसे उनकी युवावस्था माँगना, पूरुका इनकी आज्ञाको सहर्ष स्वीकार करना तथा उनके आज्ञापालनसे संतुष्ट हो इनका पूरुको वर-दान देना (आदि० ८४ । २७–३४) । इनका सहस्र वर्षोंतक विषयसेवन करनेसे भी उससे तृप्त न होनेपर वैराग्यपूर्ण उद्गार, पूरुको उनकी जवानी लौटाकर वृद्धावस्था ग्रहण करना और पूरुके राज्याभिषेकका विरोध करनेवाली प्रजाओंको इनका ज्येष्ठ पुत्रोंको राज्य न देनेका कारण बताकर पूरुके राज्याभिषेकके लिये उनसे अनुमति लेना । प्रजावर्गकी अनुमति मिल जानेपर पूरुका राज्याभिषेक करके इनका वनमें जाना (आदि० ८५ । १—३३) । इनके पुत्रोंमें यदुसे यादव, तुर्वसुसे यवन (तुर्क), द्रुह्युसे भोज, अनुसे म्लेच्छ जातिके लोग और पूरुसे पौरव हुए (आदि० ८५ । ३४-३५) । तपस्या करके इनके स्वर्गमें जाने, वहाँसे गिरने, आकाशमें ही ठहरने, वसुमान्, अष्टक, प्रतर्दन और शिबिसे मिलकर सत्संगके प्रभावसे पुनः स्वर्गलोक जानेकी संक्षिप्त कथा (आदि० ८६ । १—६) । एक हजार वर्षोंतक इनकी घोर तपस्या और स्वर्गगमन (आदि० ८६ । १२—१७) । इन्द्रके पूछनेपर इनका अपने पुत्र पूरुको दिये हुए उपदेशकी चर्चा करना (आदि० ८७ अध्याय) । आत्मप्रशंसा और अन्य सत्पुरुषोंकी निन्दारूप दोषके कारण पुण्य क्षीण होनेसे इन्द्रकी प्रेरणासे इनका स्वर्गसे नीचे गिरना और सत्पुरुषोंके समीप ही गिरनेके लिये इन्द्रसे वर प्राप्त करना (आदि० ८८ । १—५) । इन्हें आकाशसे गिरते देख राजर्षि अष्टकका इनको आश्वासन देते हुए इनका परिचय पूछना (आदि० ८८ । ६—१३) । ययातिका अष्टकको अपना परिचय देना तथा ययाति और अष्टकका संवाद (आदि० अध्याय ८९ से ९० तक)।ययाति और अष्टकका आश्रम-धर्मसम्बन्धी संवाद (आदि० ९१ अध्याय) । अष्टक-ययाति-संवाद और ययातिद्वारा दूसरोंके दिये हुए पुण्यदानको अस्वीकार करना (आदि० ९२ अध्याय) । इनका वसुमान् और शिबिके पुण्यदानको भी अस्वीकार करना, इनकी पुत्री माधवीका आकर इन्हें प्रणाम करना और अपने अष्टक आदि चारों पुत्रोंको इनका परिचय देना तथा दौहित्रोंके पुण्यको अपना ही पुण्य बताकर ययातिसे उसको ग्रहण करनेके लिये कहना तथा पुत्री और दौहित्रोंने मेरा उद्धार कर दिया—ऐसा कहकर ययातिका उस पुण्यको ग्रहण करना और अष्टक आदि चारों राजाओंके साथ स्वर्गमें जाना, इनके द्वारा शिबिकी श्रेष्ठताका प्रतिपादन और सत्यकी महिमाका वर्णन (आदि० ९३ अध्याय) । इनके दो पत्नियाँ थीं—शुक्राचार्यकी पुत्री देवयानी तथा वृषपर्वाकी पुत्री शर्मिष्ठा । इनके वंशका परिचय देनेवाले एक श्लोकका भाव इस प्रकार है—देवयानीने यदु और तुर्वसु नामवाले दो पुत्रोंको जन्म दिया तथा वृषपर्वाकी पुत्री शर्मिष्ठाने द्रुह्यु, अनु और पूरु—ये तीन पुत्र उत्पन्न किये (आदि० ९५ । ७–९) । ये यमसभामें रहकर सूर्यपुत्र यमकी उपासना करते हैं (सभा० ८ । ८) । इनके द्वारा गुरुदक्षिणा देनेके लिये एक ब्राह्मणको हजार गौओंका दान (वन० १९५ अध्याय) । ये

अर्जुन और कृपाचार्यका युद्ध देखनेके लिये इन्द्रके साथ उन्हींके विमानमें बैठकर आये थे (विराट० ५६ । ९-१०) । गरुड और गालवका राजा ययातिके यहाँ जाकर गुरुको देनेके लिये आठ सौ श्यामकर्ण घोड़ोंकी याचना करना (उद्योग० ११४ अध्याय) । ये सहस्रों यज्ञोंका अनुष्ठान करनेवाले, दाता, दानपति, प्रभावशाली, राजोचित तेजसे प्रकाशित होनेवाले तथा सम्पूर्ण नरेशोंके स्वामी (सम्राट्) थे (उद्योग० ११५ । २) । इनका गालवको गुरुदक्षिणाके हेतु धनकी प्राप्तिके लिये अपनी कन्या माधवीको समर्पित करना (उद्योग० ११५ । ५—१४) । इनके द्वारा अभिमानवश स्वर्गमें देवताओं, मनुष्यों और महर्षियोंकी अवहेलना (उद्योग० १२० । १५-१६) । इनका स्वर्गलोकसे पतन (उद्योग० १२१ । ११) । दौहित्रोंके पुण्यदानसे इनका पुनः स्वर्गारोहण (उद्योग० १२२ । १५) । इनका ब्रह्मासे अपने अधः-पतनका कारण पूछना (उद्योग० १२३ । १२-१३) । सृञ्जयको समझाते हुए नारदजीद्वारा इनके दान-यज्ञ आदि सत्कर्मोंका वर्णन (द्रोण० ६३ अध्याय) । इनके यज्ञ-वैभवका वर्णन (शल्य० ४१ । ३३—३९) । श्रीकृष्णद्वारा नारद-सृञ्जय-संवादके रूपमें इनके यज्ञका वर्णन (शान्ति० २९ । ९४—९९) । इन्हें नहुषसे खड्गकी प्राप्ति हुई और इन्होंने पूरुको वह खड्ग प्रदान किया (शान्ति० १६६ । ७४) । बोध्य ऋषिसे शान्तिके विषयमें इनका प्रश्न (शान्ति० १७८ । ५) । अगस्त्यजीके कमलोंकी चोरी होनेपर इनका शपथ खाना (अनु० ९४ । २७) । इनके द्वारा मांस-भक्षणका निषेध (अनु० ११५ । ५८—६१) ।

ययातिपतन–एक तीर्थ, जहाँ जानेसे तीर्थयात्रीको अश्वमेध यज्ञका फल मिलता है (वन० ८२ । ४८) ।

यवक्रीत–(१) भरद्वाजके पुत्र । वेदोंका ज्ञान प्राप्त करनेके लिये इनकी घोर तपस्या (वन० १३५ । १६) । इन्द्रद्वारा इनका तपस्यासे निवारण (वन० १३५ । ३८) । रैभ्य मुनिके प्रकट किये हुए राक्षसद्वारा इनकी मृत्यु (वन० १३६ । १९) । अर्वावसुके प्रयत्नसे इनका पुनरुज्जीवन (वन० १३८ । २२) । ये शरशय्यापर पड़े हुए भीष्म-जीको देखनेके लिये गये थे (अनु० २६ । ६) । (२) ये अङ्गिराके पुत्र हैं और पूर्व दिशाका आश्रय लेकर रहते हैं (शान्ति० २०८ । २६) ।

यवक्षा–भारतवर्षकी एक प्रमुख नदी, जिसका जल यहाँके निवासी पीते हैं (भीष्म० ९ । ३०) ।

यवन–भारतवर्षकी एक जाति और जनपद—तुर्वसुकी संतान 'यवन' (या तुर्क) कहलायी (आदि० ८५ । ३४) । नन्दिनीने योनि-देशसे यवनोंको प्रकट किया तथा उसके पार्श्वभागसे भी यवन जातिकी उत्पत्ति हुई (आदि० १७४ । ३६-३७) । सहदेवने दिग्विजयके समय इनके नगरको जीता था (सभा० ३१ । ७३) । नकुलने भी यवनोंको परास्त किया था (सभा० ३२ । १७) । कलियुगमें इनके इस देशके राजा होनेकी भविष्यवाणी (वन० १८८ । ३५) । कर्णने दिग्विजयके समय पश्चिममें यवनोंको जीता था (वन० २५४ । १८) । काम्बोजराज सुदक्षिण यवनोंके साथ एक अक्षौहिणी सेना लिये दुर्योधनके पास आया (उद्योग० १९ । २१-२२) । यवन एक भारतीय जनपद है (भीष्म० ९ । ६५) । यवन पहले क्षत्रिय थे; परंतु ब्राह्मणोंसे द्वेष रखनेके कारण शूद्रभावको प्राप्त हो गये (अनु० ३५ । १८) ।

यशस्विनी–स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । १०) ।

यशोदा–नन्द गोपकी पत्नी, जिनकी गोदमें बालकृष्ण पल रहे थे । एक दिन मैया यशोदा शिशु श्रीकृष्णको एक छकड़ेके नीचे सुलाकर यमुनाजीके तटपर चली गयीं। उसी समय श्रीकृष्णके पैरोंसे छू जानेके कारण छकड़ा उलट गया (सभा० ३८ । २९ के बाद, पृष्ठ ७९८) ।

यशोधर–(१) पाण्डव-पक्षीय दुर्मुखका पुत्र (द्रोण० १८४ । ५) । (२) श्रीकृष्णके रुक्मिणी देवीके गर्भसे उत्पन्न पुत्र (अनु० १४ । ३३) ।

यशोधरा–त्रिगर्तराजकी पुत्री, जो पूरुवंशी महाराज हस्तीकी पत्नी और विकुण्ठनकी माता थीं (आदि० ९५ । ३५) ।

याज–काश्यप गोत्रोत्पन्न एक ब्रह्मर्षि, जो यमुना-तटपर निवास करते थे । इनके छोटे भाईका नाम उपयाज था । ये वैदिक-संहिताके अध्ययनमें सदा संलग्न रहनेवाले, सूर्यभक्त, सुयोग्य और श्रेष्ठ ऋषि थे (आदि० १६६ । ८) । उपयाजके द्वारा इनकी हीन मनोवृत्तिका वर्णन (आदि० १६६ । १६) । द्रोणनाशक पुत्रकी प्राप्तिके लिये इनसे द्रुपदकी प्रार्थना (आदि० १६६ । २२—३१) । द्रोण-विनाशक पुत्रेष्टि यज्ञमें सहयोग देनेके लिये इनकी 'उपयाज' को प्रेरणा (आदि० १६६ । ३२) । द्रुपदके अभीष्ट पुत्रके लिये यज्ञमें इनका आहुति देना (आदि० १६६ । ३९) । इनकी आहुतिद्वारा यज्ञ-कुण्डसे धृष्टद्युम्न एवं द्रौपदीका प्राकट्य (आदि० १६६ । ३९—४४) ।

याज्ञवल्क्य–एक श्रेष्ठ ऋषि, जो युधिष्ठिरकी सभामें विराज-मान होते थे (सभा० ४ । १२) । ये इन्द्रकी सभामें भी बैठा करते हैं (सभा० ७ । १२) । ये युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें अध्वर्यु थे (सभा० ३३ । ३५) ।

इनका विदेहराज जनकके पूछनेपर विविध ज्ञानविषयक उपदेश देना (शान्ति० अध्याय ३१० से ३१८ तक)। गन्धर्वराज विश्वावसुके चौबीस प्रश्नोंका इनके द्वारा समाधान (शान्ति० ३१८ । २६—८४) । इन्हें सूर्य-देवसे वेदज्ञानकी प्राप्ति (शान्ति० ३१८ । ६—१२) । इनके सम्मुख सरस्वतीका प्राकट्य (शान्ति० ३१८ । १४) । इन्हें विश्वामित्रका ब्रह्मवादी पुत्र कहा गया है (अनु० ४ । ५१) ।

यातुधानी–राजा वृषादर्भिद्वारा यज्ञसे प्रकट की हुई एक कृत्या (अनु० ९३ । ५३) । तालाबपर गये हुए सप्तर्षियोंसे इसका उनके नामका निर्वचन पूछना (अनु० ९३ । ८०) । शुनःसख-रूपधारी इन्द्रद्वारा इसका वध (अनु० ९३ । १०५) ।

यानसन्धिपर्व–उद्योगपर्वका एक अवान्तर पर्व (अध्याय ४७ से ७१ तक) ।

यामुन–(१) एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ५१) । (२) गङ्गा-यमुनाके मध्यभागमें स्थित एक प्राचीन पर्वत (अनु० ६८ । ३) ।

यायात–एक प्राचीन तीर्थ, जहाँ राजा ययातिने यज्ञ किया था । इसकी विशेष महिमाका वर्णन (शल्य० ४१ । ३२–३९) ।

यायावर–मुनिवृत्तिसे कठोर व्रतका पालन करते हुए सदा इधर-उधर घूमते रहनेवाले गृहस्थ ब्राह्मणोंके एक समूह-विशेषका नाम ! जरत्कारु मुनि यायावर ही थे (आदि० १३ । ११, १८) । यायावरोंके धर्मका वर्णन (अनु० १४२ । दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ५९३२) ।

यास्क–एक प्राचीन ऋषि, जिन्होंने अनेक यज्ञोंमें नारायण-का शिपिविष्ट नामसे गान किया है (शान्ति० ३४२ । ७२) ।

युगन्धर–(१) एक पर्वत या प्रदेश (यहाँके लोग ऊँटनी और गदहीतकके दूधका दही बना लेते हैं; जो शास्त्र-निषिद्ध है ।) (वन० १२९ । ९) । (२) एक पाण्डवपक्षीय योद्धा, जिसने द्रोणाचार्यपर धावा किया और अन्तमें यह द्रोणद्वारा मारा गया (द्रोण० १६ । ३०-३१) ।

युगप–एक देवगन्धर्व, जो अर्जुनके जन्मोत्सवमें पधारे थे (आदि० १२२ । ५६)

युधामन्यु–पाण्डव-पक्षका एक श्रेष्ठ रथी, जो पाञ्चालदेशका राजकुमार था (उद्योग० १७० । ५) । यह अर्जुनका चक्ररक्षक था (भीष्म० १५ । १९) । इसके रथके घोड़ोंका वर्णन (द्रोण० २३ । ३) । कृतवर्माके साथ युद्ध (द्रोण० ९२ । २७-३२) । दुर्योधनके साथ इसका युद्ध (द्रोण० १३० । ३०–४३) । कृपाचार्यद्वारा इसका पराजित होना (कर्ण० ६१ । ५५-५६) । इसके द्वारा कर्णके भाई चित्रसेनका वध (कर्ण० ८३ । ३९) । अश्वत्थामाद्वारा इसका वध (सौप्तिक० ८ । ३८) ।

युधिष्ठिर–महाराज पाण्डुके क्षेत्रज पुत्र (आदि० १ । ११४; आदि० ६३ । ११५-११६) । धर्मराजके द्वारा कुन्तीके गर्भसे इनकी उत्पत्ति तथा इनके उत्पत्तिकालीन ग्रहोंकी स्थिति (आदि० १२२ । ६-७) । इनके जन्म-कालमें आकाशवाणी हुई । उसने बताया कि यह श्रेष्ठ पुरुष धर्मात्माओंमें अग्रगण्य, पराक्रमी एवं सत्यवादी राजा होगा । पाण्डुका यह प्रथम पुत्र 'युधिष्ठिर' नामसे विख्यात हो तीनों लोकोंमें प्रसिद्धि प्राप्त करेगा । यह यशस्वी, तेजस्वी और सदाचारी होगा (आदि० १२२ । ७–१०) । शतशृङ्गनिवासी ऋषियोंद्वारा इनका नाम-करण-संस्कार (आदि० १२३ । १९-२०) । वसुदेवके पुरोहित काश्यपके द्वारा इनके उपनयन दि संस्कार (आदि० १२३ । ३१ के बाद दाक्षिणात्य पाठ) । राजर्षि शुकसे शिक्षा लेकर इनका तोमर चलानेकी कलामें पारंगत होना (आदि० १२३ । ३१ के बाद दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ३६९) । पाण्डुकी चितापर आरोहण करनेसे पूर्व माद्रीने अपने पुत्रोंके मस्तक सूँघे और युधिष्ठिरका हाथ पकड़कर कहा–'पुत्रो ! अब बड़े भैया युधिष्ठिर ही तुम चारों भाइयोंके पिता हैं' (आदि० १२४ ।२८ के बाद दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ३७३) । शतशृङ्गनिवासी मुनि पाण्डवोंको हस्तिना-पुरमें ले जाकर भीष्मजीसे युधिष्ठिरका परिचय कराते हुए बोले–'महाराज पाण्डुको साक्षात् धर्मराजद्वारा यह पुत्र प्राप्त हुआ है। इसका नाम युधिष्ठिर है (आदि० १२५ । २२-२३) । दुर्योधनद्वारा जलविहारका प्रस्ताव और युधिष्ठिरका उसे स्वीकार करना (आदि० १२७ । ३५–३७) । धर्मात्मा युधिष्ठिरका भीमसेनको न देख-कर माता कुन्तीके पास जाकर भीमसेनके विषयमें पूछना और उनके लिये चिन्ता प्रकट करना । भीमसेनके खो जानेके समाचारसे कुन्तीका चिन्तित होकर युधिष्ठिरको उनकी खोजके लिये आदेश देना (आदि० १२८ । ४–१२) । भीमसेनका नागलोकसे आकर अपने बड़े भाई युधि-ष्ठिरको प्रणाम करना और दुर्योधनकी कुचेष्टाको बताना । युधिष्ठिरका भीमसेनको सर्वथा चुप रहनेकी सलाह देना तथा सतत सावधान हो जाना (आदि० १२८ । ३०–३५) । इनका द्रोणाचार्यसे कृपाचार्यकी अनुमति ले सदा हस्तिनापुरमें ही रहकर भिक्षा-ग्रहण (जीवननिर्वाह) करनेके लिये कहना (आदि० १३० । २६) । रथपर बैठकर युद्ध करनेमें इनकी कुशलता (आदि० १३१ ।

६३)। द्रोणाचार्यके द्वारा इनके लक्ष्यवेधकी परीक्षा (आदि० १३१ । ७१-७७)। अर्जुनका युधिष्ठिरको द्रुपदके साथ युद्ध करनेसे रोकना (आदि० १३७ । २६) । धृतराष्ट्रद्वारा इनका युवराज-पदपर अभिषेक (आदि० १३८ । २) । युधिष्ठिरने अपने शील, सदाचार तथा मनोयोगपूर्वक प्रजापालनकी प्रवृत्तिके द्वारा अपने पिता महाराज पाण्डुकी कीर्तिको भी ढक दिया (आदि० १३८ । ३)। प्रजावर्गका युधिष्ठिरको ही राज्य पानेके योग्य बताना (आदि० १४०।२३—२८)। भाइयों-सहित वारणावत जानेके लिये उद्यत हो युधिष्ठिरका माननीय कौरवोंसे अनुमति एवं आशीर्वाद माँगना (आदि० १४२ । ११–१६)। हस्तिनापुरके ब्राह्मणोंका धृतराष्ट्रके विषम बर्तावकी निन्दा करते हुए जहाँ युधिष्ठिर जायँ वहीं घर-बार छोड़कर जानेका निश्चय करना, युधिष्ठिरका पुरवासियोंको समझाना और धृतराष्ट्रकी ही आज्ञामें रहनेके लिये अनुरोध करना (आदि० १४४ । ६—१७) । लाक्षागृहमें कौरवोंके कुचक्रसे बचनेके लिये इनको विदुरका संकेत (आदि० १४४ । १९-२६)। 'मैंने आपकी बात समझ ली' यह युधिष्ठिरका उत्तर तथा कुन्तीके पूछनेपर युधिष्ठिरका विदुरके कथनका उन्हें तात्पर्य बताना (आदि० १४४ । २७–३३)। वारणावतवासियोंसे घिरे हुए धर्मराज युधिष्ठिर देवमण्डलीके बीच साक्षात् इन्द्रके समान सुशोभित हुए (आदि० १४५ । ४)। युधिष्ठिरका भीमसेनसे लाक्षागृहको अग्निदीपक पदार्थोंसे बना हुआ बताकर उसमें सावधानीसे किसी गुप्त स्थानमें रहने और पापी पुरोचन एवं दुर्योधनको चकमा देकर वहाँसे भाग निकलनेके लिये परामर्श देना (आदि० १४५ । १३–३१)। विदुरके भेजे हुए खनकसे युधिष्ठिरकी बातचीत तथा भाइयोंसहित अपनेको संकटमुक्त करनेके लिये उससे कोई उपाय करनेका अनुरोध (आदि० १४६ । १–१५) । जतुगृहको जलानेके लिये इनका अपने भाइयोंको परामर्श (आदि० १४७ । २–४)। विदुरके भेजे हुए नाविकका युधिष्ठिरको विदुरका संदेश सुनाना और माता एवं भाइयोंसहित इन्हें गङ्गाजीके पार उतारना (आदि० १४८ अध्याय) । भीष्म, कौरव तथा पुत्रोंसहित धृतराष्ट्रका युधिष्ठिर आदिको जलाञ्जलि देना, पुरवासियों तथा भीष्मजीका उनके लिये शोक एवं विलाप करना और विदुरका भीष्मजीसे एकान्तमें युधिष्ठिर आदिके जीवित होनेकी बात बताना (आदि० १४९ । १५–१८ के बाद दाक्षिणात्य पाठसहित)। धर्मराज युधिष्ठिरकी प्रेरणासे महाबली भीमसेनका भाइयों और कुन्तीको लेकर शीघ्रताके साथ चलना (आदि० १४९ । २३–२६) । भीमसेनका माता तथा युधिष्ठिर आदिकी दयनीय दशापर विषाद एवं रोष (आदि० १५० । २१–४३)। भीमसेनका हिडिम्बाको अपने ज्येष्ठ भ्राताका परिचय देना (आदि० १५१ । ३१) । हिडिम्बाके मुखसे भीमसेन और हिडिम्बके युद्धकी बात सुनकर युधिष्ठिरका उछलकर खड़ा हो जाना (आदि० १५३ । १३) । हिडिम्बाको मारनेके लिये उद्यत हुए भीमसेनको इनका निषेध (आदि० १५४ । २-३) । कुन्तीसहित युधिष्ठिरसे हिडिम्बाकी भीमसेनके लिये प्रार्थना, कुन्तीका युधिष्ठिरसे इसके लिये सम्मति माँगना और युधिष्ठिरका कुछ शर्तोंके साथ हिडिम्बाके लिये भीमसेनको अपने साथ ले जानेका आदेश (आदि० १५४ । ४–१८ के बाद दाक्षिणात्य पाठसहित)। भीमसेनको बक नामक राक्षसके पास भेजनेके विषयमें युधिष्ठिर और कुन्तीकी बातचीत (आदि० १६१ अध्याय)। पाञ्चालदेश चलनेके लिये युधिष्ठिरको माताकी प्रेरणा और इनकी स्वीकृति (आदि० १६७ । ३–८) । चित्ररथ गन्धर्वकी प्राणरक्षाके लिये इनका अर्जुनको आदेश (आदि० १६९ । ३६-३७) । पाञ्चालयात्राके समय मार्गमें ब्राह्मणोंसे युधिष्ठिरकी बातचीत (आदि० १८३ अध्याय)। श्रीकृष्णका पाण्डवोंको पहचानकर बलरामजीसे युधिष्ठिर आदिका परिचय देना (आदि० १८६ । ९-१०)। कुन्तीका युधिष्ठिरसे अपने कथनकी सत्यतापूर्वक द्रौपदीकी अधर्मसे रक्षाके लिये उपाय पूछना (आदि० १९० । ३–५)। इनका माता कुन्तीको आश्वासन देकर अर्जुनसे द्रौपदीके विषयमें वार्तालाप और द्रौपदी हम सभी भाइयोंकी पत्नी होगी, ऐसा निश्चय (आदि० १९० । ६–१६)। श्रीकृष्ण और बलभद्रजीका कुम्हारके घर जाकर युधिष्ठिरको प्रणाम करना और युधिष्ठिरका उनसे कुशल पूछकर यह जिज्ञासा करना कि आपने कैसे हमें पहचान लिया (आदि० १९० । १८–२२)। द्रुपदके पुरोहितका युधिष्ठिरसे उन लोगोंका परिचय पूछना और द्रुपदकी कामना बताना, युधिष्ठिरका भीमसेनसे पुरोहितका पूजन कराकर उनसे सामयिक वार्तालाप करना और द्रुपदकी कामनाको सफल बताना (आदि० १९२ अध्याय)। पुरोहितके मुँहसे युधिष्ठिरका कथन सुनकर द्रुपदका पाण्डवोंके शील-स्वभावकी परीक्षा करना तथा उन सबको भोजन कराना (आदि० १९३ अध्याय) । इनके द्वारा अपने सभी भाइयोंका परिचय देकर द्रुपदको आश्वासन (आदि० १९४ । ८–१२)। द्रुपदका युधिष्ठिरसे लाक्षागृहसे सकुशल बचकर निकल आनेका समाचार पूछना और युधिष्ठिरका उन्हें सब कुछ बताना (आदि० १९४ । १५–१७)। द्रौपदीका विवाह किसके साथ हो, द्रुपदके यह पूछनेपर—द्रौपदी हम सभी भाइयोंकी महारानी होगी—ऐसा उन्हें उत्तर

देना और इस कार्यको धर्मसंगत बताना। द्रुपदका इनके इस निश्चयको लोकवेदविरुद्ध बताना और पुनः कुन्ती आदिके साथ बैठकर इसपर विचार करनेके लिये प्रेरित करना (आदि० १९४ । २०-३२)। व्यासजीके पूछनेपर द्रौपदीके विवाहके सम्बन्धमें इनका निर्णय (आदि० १९५ । १३-१७)। द्रौपदीके साथ इनका विधिपूर्वक विवाह (आदि० १९७ । ११-१२)। युधिष्ठिरका आधा राज्य पाकर भाइयोंसहित खाण्डवप्रस्थमें प्रवेश (आदि० २०६ । २३-२७)। श्रीकृष्णका विश्वकर्माद्वारा युधिष्ठिरके लिये खाण्डवप्रस्थमें एक दिव्य नगरका निर्माण कराना, युधिष्ठिरका उस नगर एवं भवनमें प्रवेश तथा द्वारकाको जाते हुए श्रीकृष्णसे युधिष्ठिरकी पाण्डवोंपर कृपा बनाये रखने और कर्तव्यकी अनुमति देनेके लिये प्रार्थना (आदि० २०६ । २८-५१ के बाद दाक्षिणात्य पाठसहित)। भाइयोंसहित युधिष्ठिरद्वारा धर्मपूर्वक प्रजाका पालन (आदि० २०७ । ५-८)। इनके पास देवर्षि नारदका शुभागमन (आदि० २०७ । ९ के बाद दाक्षिणात्य पाठसहित)। राजा युधिष्ठिरद्वारा देवर्षि नारदका सत्कार तथा नारदजीका युधिष्ठिर आदिसे द्रौपदीके विषयमें कुछ नियम बनानेके लिये कहकर उन्हें सुन्द और उपसुन्दकी कथा सुनाना (आदि० २०७ । १८ से आदि० २११ अध्यायतक)। नियमभङ्गका प्रायश्चित्त करनेके लिये आज्ञा माँगनेवाले धनंजयको युधिष्ठिरका वनमें जानेसे रोकना (आदि० २१२ । २७-३३)। सुभद्राहरणके लिये इनकी अर्जुनको अनुमति (आदि० २१८ । २५)। सुभद्राके लिये दहेज लेकर आये हुए श्रीकृष्ण-बलराम आदिका युधिष्ठिरसे मिलना तथा युधिष्ठिरद्वारा उन सबका सत्कार (आदि० २२० । ३८-४३)। अभिमन्युके जन्मपर युधिष्ठिरका ब्राह्मणोंको दस हजार गौओंका दान करना (आदि० २२० । ६९)। द्रौपदीका युधिष्ठिरसे प्रतिविन्ध्यनामक पुत्र प्राप्त करना (आदि० ६३ । १२१-१२३; आदि० ९५ । ७५; आदि० २२० । ७९)। इनके द्वारा शिबिराजकुमारी देविकाके गर्भसे यौधेयकी उत्पत्ति (आदि० ९५ । ७६)। युधिष्ठिर और उनके राज्यकी विशेषता (आदि० २२१ । २-१६)। श्रीकृष्णका मयासुरको धर्मराज युधिष्ठिरके लिये एक दिव्य सभाभवन बनानेके लिये आदेश देना (सभा० १ । १०-१३)। श्रीकृष्णके द्वारका जाते समय उनके रथपर दारुकको हटाकर राजा युधिष्ठिरका स्वयं बैठना और घोड़ोंकी बागडोर सँभालना (सभा० २ । १६-१७)। मयासुरका धर्मराज युधिष्ठिरको उनके लिये दिव्य सभाभवन तैयार हो जानेकी सूचना देना (सभा० ३ । ३७)। मयनिर्मित सभाभवनमें इनका प्रवेश (सभा० ४ । १-८)। नारदद्वारा इनको विविध मङ्गलमय उपदेश (सभा० ५ अध्याय)। इनकी दिव्य सभाओंके विषयमें जिज्ञासा और नारदद्वारा उनका वर्णन (सभा० अध्याय ६ से ११ तक)। राजसूय-यज्ञ करनेके लिये इनको नारदद्वारा पाण्डुका संदेश (सभा० १२ अध्याय)। इनका राजसूय-यज्ञविषयक संकल्प और उसके विषयमें भाइयों, मन्त्रियों, मुनियों और श्रीकृष्णसे सलाह लेना (सभा० १३ अध्याय)। श्रीकृष्णकी युधिष्ठिरको राजसूय-यज्ञके लिये सम्मति (सभा० १४ अध्याय)। राजसूय-यज्ञसे पहले जरासंधको मारनेके लिये इनको श्रीकृष्णकी सलाह (सभा० १५ अध्याय)। जरासंधको जीतनेके विषयमें इनके उत्साहहीन होनेपर अर्जुनका इनके प्रति उत्साहपूर्ण उद्गार (सभा० १६ । ३)। श्रीकृष्णका इनके प्रति अर्जुनकी बातका अनुमोदन करते हुए इनके पूछनेपर उन्हें जरासंधकी उत्पत्तिका प्रसंग सुनाना (सभा० १७ । १९)। इनके अनुमोदन करनेपर श्रीकृष्ण, भीमसेन और अर्जुनकी मगधयात्रा (सभा० २० अध्याय)। अर्जुनका युधिष्ठिरसे उत्तरदिशाकी विजयके लिये जानेकी आज्ञा माँगना और युधिष्ठिरका स्वस्तिवाचन कराकर जानेकी आज्ञा देना (सभा० २५ । १-७)। अन्य भाइयोंका भी धर्मराजसे सम्मानित होकर दिग्विजयके लिये यात्रा करना और केवल धर्मराजका खाण्डवप्रस्थमें रह जाना (सभा० २५ । ८-११)। युधिष्ठिरके शासनकी विशेषता, श्रीकृष्णकी आज्ञासे इनका राजसूय-यज्ञकी दीक्षा लेना तथा राजाओं, ब्राह्मणों तथा सगे-सम्बन्धियोंको बुलानेके लिये निमन्त्रण भेजना (सभा० ३३ अध्याय)। इनके यज्ञमें सब देशके राजाओं, कौरवों तथा यादवोंका आगमन और उन सबके भोजन, विश्राम आदिकी सुव्यवस्था (सभा० ३४ अध्याय)। इनके राजसूय-यज्ञका वर्णन (सभा० ३५ अध्याय)। युधिष्ठिरकी यज्ञशालाकी विशेषता और इनके उस धन-वैभव और यज्ञविधिको देखकर देवर्षि नारदको संतोष (सभा० ३६ । ९-१०)। भीष्मका युधिष्ठिरको राजाओंके लिये अर्घ्यप्रदान करनेका आदेश तथा भीष्मसे पूछकर युधिष्ठिरका सबसे पहले श्रीकृष्णको सहदेवद्वारा अर्घ्य-प्रदान कराना (सभा० ३६ । २२-३१)। शिशुपालके विरोध करनेपर इनका उसे समझाना (सभा० ३८ । १-५)। युधिष्ठिरका भीष्मजीसे भगवान् श्रीकृष्णके सम्पूर्ण चरित्रोंको सुननेकी इच्छा प्रकट करना और भीष्मजीका भगवान्के अतीत, वर्तमान और भावी अवतारोंका वर्णन करना (सभा० ३८ । २९ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ७८१-८२६तक)। शिशुपालके द्वारा राजसूय यज्ञमें उपद्रव खड़ा करनेपर इनकी चिन्ता और भीष्मद्वारा इनको आश्वासन (सभा० ४० अध्याय)। युधिष्ठिरका अपने भाइयोंको

शिशुपालका अन्त्येष्टि-संस्कार करनेकी आज्ञा देना और उसके पुत्रको चेदिदेशके राज्यपर अभिषिक्त करना (सभा० ४५ । ३४-३६) । इनके राजसूय यज्ञका विस्तृत वर्णन और उसकी समाप्ति (सभा० ४५ । ३७-३९ तथा दा० पाठ, पृष्ठ ८४१-८४३) । धर्मात्मा युधिष्ठिरका अवभृथ-स्नान, राजाओंका उन्हें बधाई देकर स्वदेश जानेके लिये अनुमति माँगना तथा युधिष्ठिरका उन सबको अपने राज्यकी सीमातक पहुँचा आनेके लिये भाइयोंको आदेश देना (सभा० ४५ । ४०-४५) । श्रीकृष्णका युधिष्ठिरसे विदा माँगना और इनका गद्गद-कण्ठसे उन्हें जानेकी अनुमति देना । उनके जाते समय भाइयोंसहित युधिष्ठिरका पैदल ही उनके पीछे-पीछे जाना, श्रीकृष्णका अपने रथको रोककर युधिष्ठिरको कर्तव्यका उपदेश दे उन्हें लौटाना और स्वयं भी आज्ञा लेकर जाना (सभा० ४५ । ५१-६७) । राजसूय यज्ञके अन्तमें व्यास-जीकी भविष्यवाणीसे इनकी चिन्ता और समत्वपूर्ण वर्ताव करनेकी प्रतिज्ञा (सभा० ४६ अध्याय) । इनके द्वारा प्रतिदिन दस हजार ब्राह्मणोंको सोनेकी थालियोंमें भोजन कराना (सभा० ४९ । १८) । राजसूय यज्ञमें इनको समुद्रद्वारा मधुकी भेंट (सभा० ४९ । २६) । इनके राजसूय यज्ञमें लाख ब्राह्मणोंके भोजन करनेपर शङ्खध्वनि (सभा० ४९ । ३१) । युधिष्ठिरको भेंटमें मिली हुई वस्तुओंका दुर्योधनद्वारा वर्णन (सभा० अध्याय ५१ से ५३ तक) । धृतराष्ट्रकी प्रेरणासे इनके पास विदुरका आना और इनका उनसे वार्तालाप (सभा० ५८ । १६) । इनका पुरोहित और सेवकोंके साथ सपरिवार हस्तिनापुरको जाना (सभा० ५८ । २० के बाद दाक्षिणात्य पाठ) । जूएके अनौचित्यके सम्बन्धमें इनका शकुनिके साथ संवाद (सभा० ५९ अध्याय) । युधिष्ठिरद्वारा द्यूत-क्रीडाका आरम्भ (सभा० ६० । ६-९) । शकुनिके छलसे इनका जूएमें प्रत्येक दाँवपर हारना (सभा० ६१ अध्याय) । धन, राज्य, भाइयों तथा द्रौपदीसहित इनका अपनेको भी हारना (सभा० ६५ अध्याय) । शत्रुओंको मारनेके लिये उद्यत हुए भीमसेनको युधिष्ठिरका शान्त करना (सभा० ७२ अध्याय) । इन्हें धृतराष्ट्रका आश्वासन एवं सारा धन लौटाकर इन्द्रप्रस्थ जानेकी आज्ञा देना (सभा० ७३ । २—१६) । इनका इन्द्रप्रस्थ लौटना (सभा० ७३ । १७-१८) । धृतराष्ट्रकी आज्ञासे पुनः जूएके लिये इनका मार्गमेंसे ही लौटना (सभा० ७६ । ६) । सबके मना करनेपर भी इनका शकुनिके साथ पुनः जूआ खेलना और हारना (सभा० ७६ । २१-२४) । इनका धृतराष्ट्र आदिसे वनगमनके लिये विदा लेना (सभा० ७८ । १-३) । विदुरका युधिष्ठिरसे कुन्तीको अपने ही घरमें सत्कारपूर्वक रखनेकी इच्छा प्रकट करना और उन सभी भाइयोंको सान्त्वना एवं आशीर्वाद प्रदान करना (सभा० ७८ । ५—२३) । कुन्तीका युधिष्ठिरादि पुत्रोंको वनकी ओर जाते देख आर्त-स्वरसे विलाप करना और युधिष्ठिर आदिका उन्हें प्रणाम करके चल देना (सभा० ७९ । १३—३०) । युधिष्ठिरका वस्त्रसे मुख ढककर वनको जाना (सभा० ८० । ४) । इनका अपने साथ आते हुए पुरवासियोंसे लौट जानेका अनुरोध (वन० १ । ३७) । साथ चलने-वाले ब्राह्मणोंसे लौट जानेके लिये इनका अनुरोध (वन० २ । २-४) । इनके द्वारा सूर्यका स्तवन (वन० ३ । ३६—६९) । सूर्यसे इन्हें अक्षयपात्रकी प्राप्ति (वन० ३ । ७२) । इनका किर्मीरको अपना परिचय देना (वन० ११ । २६-२७) । श्रीकृष्णके मुखसे इनका शाल्वोपाख्यान-श्रवण (वन० अध्याय १५ से २२ तक) । इन्हें मार्कण्डेयजीका धर्मविषयक आदेश (वन० २५ । ८—१८) । इनके द्वारा क्रोधकी निन्दा और क्षमाकी प्रशंसा (वन० २९ अध्याय) । द्रौपदीके आक्षेपका समाधान (वन० ३१ अध्याय) । इनका भीमसेनको समझाते हुए धर्मपर ही डटे रहना (वन० ३४ अध्याय) । भीमसेनको समझाना (वन० ३६ । २—२०) । इन्हें व्यासजीसे प्रतिस्मृति विद्याकी प्राप्ति (वन० ३६ । ३८) । इनका व्यासजीकी आज्ञासे भाइयों तथा विप्रोंसहित द्वैतवनसे काम्यकवनमें जाना (वन० ३६ । ४१) । इनके द्वारा अर्जुनको प्रतिस्मृति विद्याका उपदेश (वन० ३७ । १६) । इन्द्रका लोमश-को युधिष्ठिरके लिये संदेश देकर उनके पास भेजना और इनकी रक्षाके लिये उन्हें नियुक्त करना (वन० ४७ । २४—३३) । इनका तेरह वर्षोंतक शान्त रहनेके लिये भीमसेनको उपदेश (वन० ५२ । ३७-३९) । बृहदश्वसे वार्तालाप तथा नलोपाख्यान सुननेकी इच्छा प्रकट करना (वन० ५२ । ४२—५९) । बृहदश्वका इन्हें नलोपाख्यान सुनाना और इनको महर्षि बृहदश्वसे अक्षहृदय तथा अश्वविद्याकी प्राप्ति (वन० अध्याय ५३ से ७९ तक) । द्रौपदीका युधिष्ठिरसे अर्जुनके लिये चिन्ता प्रकट करना (वन० ८० । ११—१५) । युधिष्ठिरके पास देवर्षि नारदका आगमन, इनका नारदजीसे तीर्थयात्रा-फलविषयक प्रश्न, नारदजीद्वारा भीष्म-पुलस्त्य-संवादको प्रस्तुत करना और इन्हें ऋषियोंके साथ तीर्थयात्रा करनेके लिये आदेश देना (वन० अध्याय ८१ से ८५ तक) । इनका धौम्यसे पुण्य तपोवन आश्रम एवं नदी आदिके विषयमें प्रश्न तथा धौम्यद्वारा इनके समक्ष चारों दिशाओंके तीर्थोंका वर्णन (वन० अध्याय ८६ से ९० तक) । युधिष्ठिरके

पास महर्षि लोमशका आगमन और इनसे अर्जुनको पाशुपत आदि दिव्यास्त्र प्राप्त होनेकी बात बताकर इन्द्रका संदेश सुनाना (वन० ९१ अध्याय) । महर्षि लोमशके मुखसे इन्द्र और अर्जुनका संदेश सुनकर युधिष्ठिरका प्रसन्न होना और इनका तीर्थयात्राके लिये उद्यत हो अपने अधिक साथियोंको विदा कर देना (वन० ९२ अध्याय)। ऋषियोंका युधिष्ठिरके पास आकर अपनेको भी तीर्थयात्राके लिये साथ ले चलनेका अनुरोध करना तथा इनका उनकी बात मानकर ऋषियोंको नमस्कार करके तीर्थयात्राके लिये प्रस्थान (वन० ९३ अध्याय) । महर्षि लोमशका देवताओं और धर्मात्मा राजाओंका उदाहरण देकर युधिष्ठिरको अधर्मसे हानि बताना और तीर्थयात्राजनित पुण्यकी महिमा वर्णन करते हुए आश्वासन देना (वन० ९४ अध्याय) । शमठ-का युधिष्ठिरसे अमूर्तरयाके पुत्र राजर्षि गयके यज्ञका वर्णन करना (वन० ९५ । १८—२९) । इनका अगस्त्याश्रम-में पहुँचकर वातापिके विनाशके विषयमें लोमशजीसे पूछना और लोमशजीका इनसे अगस्त्यका चरित्र सुनाना (वन० अध्याय ९६ से ९९ । ३० तक) । युधिष्ठिरका पुनः अग-स्त्यका चरित्र सुननेकी इच्छा प्रकट करना और लोमशका इनसे उनका चरित्र सुनाना (वन० अध्याय १०० से १०५ तक) । युधिष्ठिरके पूछनेपर लोमशजीका भगीरथके आश्रयसे किस प्रकार समुद्रकी पूर्ति हुई—यह प्रसंग सुनाना (वन० अध्याय १०६ से १०९ तक) । युधिष्ठिरके पूछनेपर लोमशजीकी हेमकूटपर घटित होनेवाली अद्भुत बातोंका रहस्य बताना और ऋष्यशृङ्गका चरित्र सुनाना (वन० अध्याय ११० से ११३ तक) । इनका कौशिकी, गङ्गासागर एवं वैतरणी नदी होते हुए महेन्द्र पर्वतपर गमन (वन० ११४ अध्याय) । अकृतव्रणका युधिष्ठिरसे जमदग्निकी उत्पत्तिका प्रसंग सुनाते हुए परशुरामजीके उपाख्यानका वर्णन करना (वन० अध्याय ११५ से ११७ । १५ तक) । महेन्द्र पर्वतपर इन्हें परशुरामका दर्शन तथा इनके द्वारा उनका पूजन (वन० ११७ । १६–१८) । इनका विभिन्न तीर्थोंमें होते हुए प्रभासक्षेत्रमें पहुँचकर तपस्यामें प्रवृत्त होना और यादवोंका भाइयोंसहित इनसे मिलना (वन० ११८ अध्याय) । बलदेवजीका इनके प्रति सहा-नुभूति-सूचक उद्गार (वन० ११९ अध्याय) । इनके द्वारा श्रीकृष्णके कथनका अनुमोदन (वन० १२० । २७) । लोमशद्वारा युधिष्ठिरसे राजा गयके यज्ञकी प्रशंसा, च्यवन-सुकन्याके चरित्रका वर्णन (वन० अध्याय १२१ से १२५ तक) । युधिष्ठिरके पूछनेपर लोमशद्वारा मान्धाताके चरित्रका वर्णन और सोमक तथा जन्तुके उपाख्यानका कथन (वन० अध्याय १२६ से १२७ तक) । लोमशका युधिष्ठिरको विभिन्न तीर्थोंकी महिमाका वर्णन करते हुए अनेकानेक उपाख्यान सुनाना (वन० अध्याय १२८ से १३८ तक) । भाइयोंसहित युधिष्ठिरकी उत्तराखण्ड-यात्रा, लोमशजीद्वारा उसकी दुर्गमताका कथन, गङ्गाजीसे युधिष्ठिरकी रक्षाके लिये प्रार्थना तथा युधिष्ठिरका भीम-सेनको द्रौपदीकी रक्षाके लिये सावधान रहनेके लिये आदेश देना और नकुल-सहदेवके शरीरपर हाथ फेरकर उन्हें सान्त्वना देना (वन० १३९ अध्याय) । युधिष्ठिरका सहदेव एवं द्रौपदीसहित भीमसेनको धौम्य, सारथि, सेवक, रथ, घोड़े तथा अन्यान्य ब्राह्मणोंके साथ लौट जानेकी आज्ञा देना और अपने लौटनेतक गङ्गाद्वारमें प्रतीक्षा करनेको कहना (वन० १४० । १—७) । इनका अर्जुनको न देखनेके कारण भीमसेनसे अपनी मानसिक चिन्ता प्रकट करना एवं गन्धमादन पर्वतपर जानेका दृढ़ निश्चय करना (वन० १४१ अध्याय) । गन्धमादनकी यात्रामें द्रौपदीके मूर्छित होनेपर इनका विलाप (वन० १४४ । १०-१४) । युधिष्ठिरका द्रौपदीको आश्वासन देकर भीमसेनसे यह पूछना कि इस दुर्गम मार्गमें द्रौपदी कैसे चल सकेगी (वन० १४४ । २१-२२) । इनकी आज्ञासे भीमसेनद्वारा घटोत्कचका स्मरण और उसकी सहायतासे द्रौपदीसहित इन सब लोगोंका गन्धमादन पर्वत एवं बदरिकाश्रममें प्रवेश (वन० १४४ । २५ से १४५ अध्यायतक) । भीमसेनके सौगन्धिक पुष्प लानेके लिये चले जानेपर भयंकर उत्पात देखकर इनकी चिन्ता और घटोत्कचके सहारे सभीके साथ इनका सौगन्धिक वनमें पहुँचना (वन० १५५ अध्याय) । इनको आकाशवाणीद्वारा सौगन्धिक वनसे नर-नारायणाश्रम-में लौट जानेका आदेश (वन० १५६ । १३-१६) । अपहरण करते समय जटासुरको इनकी फटकार (वन० १५७ । १२—३०) । इनके द्वारा भीमसेनसे गन्धमादन-की रमणीयताका वर्णन (वन० १५८ । ७७—१०१) । प्रश्नके रूपमें आर्ष्टिषेणका युधिष्ठिरको उपदेश (वन० १५९ अध्याय) । गन्धमादन पर्वतपर राक्षसोंके वध करने-पर इनके द्वारा भीमसेनकी भर्त्सना (वन० १६१ । १०–१२) । इनकी कुबेरसे भेंट तथा उनके द्वारा इन्हें सान्त्वना (वन० १६१ । ४३–४६) । धौम्यका युधिष्ठिर-को मेरु पर्वत तथा उसके शिखरोंपर स्थित ब्रह्मा, विष्णु आदिके स्थानोंका लक्ष्य कराना और सूर्य-चन्द्रमाकी गति एवं प्रभाका वर्णन करना (वन० १६३ अध्याय) । युधिष्ठिर आदिका अर्जुनके लिये उत्कण्ठित होना और इनके समीप अर्जुनका आगमन (वन० १६४ अध्याय) । अर्जुनका युधिष्ठिरके चरणोंमें प्रणाम करके सब भाइयों और द्रौपदीसे मिलना और युधिष्ठिरके पास विनीतभावसे खड़ा होना (वन० १६५ । ४-५) । इनके द्वारा गन्धमादनपर इन्द्रका स्वागत-सत्कार तथा उनको सान्त्वना देकर इन्द्रका लौटना

(वन० १६६ अध्याय)। अर्जुनद्वारा इनके समक्ष अपनी तपस्या, यात्रा तथा स्वर्ग-यात्राके वृत्तान्तका वर्णन (वन० अध्याय १६७ से १७३ तक)। अर्जुनद्वारा यात्राका वृत्तान्त सुनकर इनके द्वारा उनका अभिनन्दन तथा दिव्यास्त्र-दर्शनकी इच्छा (वन० १७४ । ११-१५)। युधिष्ठिर और भीमसेनका वार्तालाप (वन० १७६ । ७—१७)। भाइयोंसहित युधिष्ठिरकी गन्धमादनसे बदरिकाश्रम आदि स्थानोंमें होते हुए द्वैतवनमें प्रवेश (वन० १७७ अध्याय)। युधिष्ठिरको अनिष्ट-दर्शनसे चिन्ता तथा उनके द्वारा भीमसेनकी खोज करते हुए उनके पास पहुँचकर उन्हें अजगरके वशमें पड़ा हुआ देखना (वन० १७९ अध्याय)। इनकी अजगर-रूपधारी नहुषसे बातचीत तथा इनके द्वारा अपने प्रश्नोंका उचित उत्तर पाकर संतुष्ट हुए सर्परूपधारी नहुषका भीमसेनको छोड़ देना और युधिष्ठिरके साथ वार्तालाप करनेके प्रभावसे सर्पयोनिसे मुक्त हो स्वर्गको जाना (वन० अध्याय १८० से १८१ तक)। युधिष्ठिर आदिका पुनः द्वैतवनसे काम्यकवनमें प्रवेश (वन० १८२ । १७-१८)। सत्यभामासहित श्रीकृष्णका युधिष्ठिरके पास आना और इनको तथा भीमसेनको प्रणाम करना (वन० १८३ । ७-८)। इनके द्वारा श्रीकृष्णकी बातोंको सुनकर उनका अनुमोदन करना (वन० १८३ । १६-४०)। इनके पास मार्कण्डेयजीका शुभागमन तथा इनके पूछनेपर मार्कण्डेयजीद्वारा कर्मफलका विवेचन (वन० १८३ । ४१—९५)। इनका मार्कण्डेयजीसे सर्वकारण काल-विषयक जिज्ञासा (वन० १८८ । २-१६)। मार्कण्डेयजीसे कलियुगके प्रभावका वर्णन करनेके लिये प्रश्न (वन० १९० । २-६)। युधिष्ठिरके पूछनेपर मार्कण्डेयजीका इनके लिये धर्मका उपदेश (वन० १९१ । २१—३०)। युधिष्ठिरका उनके बताये धर्मके पालनकी प्रतिज्ञा करना (वन० १९१ । ३१-३२)। पतिव्रता और धर्मव्याधकी कथा सुनकर युधिष्ठिरका संतोष प्रकट करना (वन० २१६ । ३६)। युधिष्ठिरकी अग्निके विषयमें जिज्ञासा और मार्कण्डेयजीद्वारा अग्निवंशका वर्णन (वन० अध्याय २१७ से २२२ तक)। युधिष्ठिरके पूछनेपर मार्कण्डेयजीका इन्हें कार्तिकेयके जन्म-कर्मका वृत्तान्त सुनाना (वन० अध्याय २२३ से २३१ तक)। इनका कार्तिकेयके त्रिलोक-विख्यात नामोंको सुननेकी इच्छा प्रकट करना और मार्कण्डेयजीका इन्हें उन नामोंको सुनाना (वन० २३२ अध्याय)। युधिष्ठिर आदि पाण्डवोंका समाचार सुनकर धृतराष्ट्रका खेद और चिन्तापूर्ण उद्गार (वन० २३६ अध्याय)। इनका भीमसेनको गन्धर्वोंके हाथसे कौरवोंको छुड़ानेका आदेश (वन० २४३ । १—१९)। चित्रसेनका युधिष्ठिरके पास आना, दुर्योधनकी कुचेष्टाको बताना, युधिष्ठिरका कौरवोंको बन्धनसे छुड़ाना, गन्धर्वोंकी प्रशंसा करना और दुर्योधनको प्रेमपूर्वक दुःसाहससे निवृत्त होनेकी सलाह देना (वन० २४६ । १२—२३)। दुःशासनका युधिष्ठिरके पास दूत भेजकर उन्हें दुर्योधनके वैष्णव-यज्ञमें आनेके लिये संदेश कहलाना तथा युधिष्ठिरका दुर्योधनके यज्ञकर्मकी प्रशंसा करके समय-पालनसे पहले आनेमें असमर्थता प्रकट करना (वन० २५६ । ७—१४)। कर्णद्वारा अर्जुन-वधकी प्रतिज्ञा सुनकर इनकी चिन्ता (वन० २५७ । २३-२४)। स्वप्नमें मृगोंसे प्रेरित होकर भाइयोंसहित युधिष्ठिरका काम्यकवनमें गमन (वन० २५८ अध्याय)। युधिष्ठिरकी चिन्ता, व्यासजीका आगमन, युधिष्ठिरद्वारा उनका सत्कार, उनका युधिष्ठिरसे तप और दानकी महिमा बताना और उनके पूछनेपर तपसे भी दानको ही श्रेष्ठ बताना (वन० २५९ अध्याय)। दुर्योधनका दुर्वासाको संतुष्ट करके उनसे युधिष्ठिरका अतिथि होनेके लिये कहना (वन० २६२ । ७—२२)। इनके द्वारा दुर्वासाका अतिथि-सत्कार (वन० २६३ । २-४)। द्रौपदीहरणके अवसरपर इनका त्रिगर्तराजके साथ युद्ध और इनके द्वारा उसका वध, भीमद्वारा बंदी होकर जयद्रथका युधिष्ठिरके सामने उपस्थित होना, उसकी दशा देखकर युधिष्ठिरका हँसना और उसे दासभावसे मुक्त करके छोड़ देनेका आदेश देना तथा जयद्रथको उसके दुष्कर्मके लिये धिक्कारकर जानेके लिये आज्ञा देना (वन० २७२ । १४—२३)। अपनी दुरवस्थासे दुखी हुए युधिष्ठिरका मार्कण्डेय मुनिसे प्रश्न करना और उनका उन्हें श्रीरामोपाख्यान सुनाना, अन्तमें राजा युधिष्ठिरको आश्वासन देना (वन० अध्याय २७३ से २९२ तक)। युधिष्ठिरकी मार्कण्डेयजीसे द्रौपदी जैसी दूसरी किसी पतिव्रता नारीके विषयमें जिज्ञासा और मार्कण्डेयजीका उनके प्रश्नके उत्तरमें सावित्रीका उपाख्यान सुनाना (वन० अध्याय २९३ से २९९ तक)। युधिष्ठिरका नकुलको वृक्षपर चढ़कर पानीका पता लगानेके लिये कहना (वन० ३१२ । ५-६)। नकुलके पानीका पता लगानेपर युधिष्ठिरका उनको तरकसोंमें पानी भर लानेका आदेश (वन० ३१२ । ९)। नकुलके लौटनेमें देर होनेपर युधिष्ठिरका सहदेवको भेजना (वन० ३१२ । १४-१५)। उनके लौटनेमें भी विलम्ब होनेपर इनका अर्जुनको पहलेके गये हुए दोनों भाइयोंको बुलाने और पानी लानेके लिये आदेश देना (वन० ३१२ । २०-२१)। उनके लौटनेमें भी देर होनेपर युधिष्ठिरका भीमसेनको भेजना (वन० ३१२ । ३३—३५)। अन्तमें युधिष्ठिरका जलाशयके तटपर जाना (वन० ३१२ । ४१—४५)। द्वैतवनमें जलके लिये गये हुए चारों

भाइयोंको सरोवरपर पड़ा देखकर विलाप करना (वन० ३१३ । ४—२७)। युधिष्ठिरका सरोवरके जलमें प्रवेश और यक्षका उन्हें अपने प्रश्नोंका उत्तर देकर ही पानी पीने और ले जानेका आदेश देना (वन० ३१३ । २८—३०)। 'तुम कौन हो ?' युधिष्ठिरके यह पूछनेपर यक्षका उन्हें प्रत्यक्ष दर्शन देना और युधिष्ठिरका अपनी बुद्धिके अनुसार उसके प्रश्नोंका उत्तर देनेकी प्रतिज्ञा करना (वन० ३१३ । ३१—३४)। इनका यक्षके प्रश्नोंका उत्तर देना (वन० ३१३ । ४५—१२१)। 'तुम अपने भाइयोंमेंसे जिस एकको चाहो, वह अकेला ही जीवित हो सकता है' यक्षके ऐसा कहनेपर युधिष्ठिरका नकुलके जीवित होनेकी इच्छा प्रकट करना—इस विषयमें यक्ष और युधिष्ठिरका संवाद। इनकी बातसे संतुष्ट हुए यक्षका इनके सभी भाइयोंके जीवित होनेका वर देना (वन० ३१३ । १२२—१३३) यक्षका चारों भाइयों-को जिलाकर धर्मके रूपमें प्रकट हो युधिष्ठिरको वरदान देना (वन० ३१४ अध्याय)। अज्ञातवासके विषयमें अनुमति लेते समय युधिष्ठिरको महर्षि धौम्यका समझाना और भीमसेनका उत्साह देना (वन० ३१५ । १—२६)। युधिष्ठिरका ब्राह्मणको अरणीसहित मन्थनकाष्ठ सौंपना और अपने भाइयोंको एकत्र करके अर्जुनसे कोई उत्तम निवासस्थान चुननेके लिये कहना (विराट० १ । ६—९)। इनका विराटनगरमें अज्ञातवासका एक वर्ष बितानेका निश्चय प्रकट करना और अर्जुनके पूछनेपर विराटनगरमें अपने द्वारा किये जानेवाले भावी कार्यक्रमको बताना (विराट० १ । १५–२८)। इनका भीमसेनसे उनके भावी कार्यक्रमको पूछना (विराट० १ । दाक्षिणात्य पाठसहित २८)। अर्जुनके भावी कार्यक्रमके विषयमें पूछना (विराट० २ । ११–२४)। नकुलके कार्यके विषयमें जिज्ञासा करना (विराट० ३ । २)। सहदेवसे उनका भावी कार्यक्रम पूछना (विराट० ३ । ७)। द्रौपदीके कार्यक्रमके विषयमें पूछना (विराट० ३ । १४–१७)। इनका द्रौपदीको प्रोत्साहन देना (विराट० ३ । २२-२३)। इनका पुरोहित और द्रौपदी-की सेविकाओंको रसोइयोंसहित पाञ्चालदेशमें जानेका आदेश देना तथा इन्द्रसेन आदिको केवल रथ लेकर द्वारका भेजना (विराट० ४ । १–५)। धौम्यका इन्हें राजाके यहाँ रहनेका ढंग बताना (विराट० ४ । ७–५१) इनका धौम्यके प्रति कृतज्ञता प्रकट करना (विराट० ४ । ५२-५३)। इनका द्रौपदीको कंधेपर बिठाकर ले चलनेके लिये अर्जुनको आदेश देना (विराट० ५ । ७)। राजधानीके समीप पहुँचकर इनका अर्जुनको अपने-अपने अस्त्र उतारकर कहीं रख देनेकी आज्ञा देना (विराट० ५ । ९–१२)। इनका नकुलको शमी वृक्षपर चढ़कर सबके धनुष रखनेकी आज्ञा देना और पाँचों भाइयोंके गुप्त नाम निश्चित करना (विराट० ५ । २८–३५)। इनके द्वारा दुर्गादेवीका स्तवन और देवीका प्रत्यक्ष प्रकट होकर इन्हें वर देना (विराट० ६ अध्याय)। युधिष्ठिर-का राजा विराटसे मिलना और उनके यहाँ आदरपूर्वक निवास पाना (विराट० ७ अध्याय)। कीचकद्वारा मारी जानेपर द्रौपदीको इनका संकेतसे आश्वासन देना (विराट० १६ । ४०–४४)। सुशर्माके हाथसे विराटको छुड़ानेके लिये भीमसेनको आदेश (विराट० ३३ । ११–१३)। इनका एक हजार त्रिगर्तोंको युद्धमें मार गिराना (विराट० ३३ । ३३)। सुशर्माको दासभावसे मुक्त करना (विराट० ३३ । ६१)। इनके द्वारा राजा विराटका अभिनन्दन (विराट० ३४ । १४)। इनके द्वारा की गयी बार-बार बृहन्नलाकी प्रशंसासे रुष्ट हुए विराटका युधिष्ठिरके मुखपर पासेसे प्रहार करना और इनकी नाकसे रक्त गिरना (विराट० ६८ । ३७–४७)। उत्तरके कहनेसे विराटका युधिष्ठिरसे क्षमा माँगना और इनका पहलेसे ही किये हुए क्षमादानको सूचित करना (विराट० ६८ । ६१–६५)। अर्जुनका राजा विराटको महाराज युधिष्ठिरका परिचय देना (विराट० ७० अध्याय)। विराटका युधिष्ठिरको राज्य समर्पण करके अर्जुनके साथ उत्तराके विवाहका प्रस्ताव करना (विराट० ७१ । २८–३५)। इनका मत्स्यनरेशकी कन्या और पार्थपुत्र अभिमन्युके सम्बन्धका अनुमोदन करना और मित्रोंके यहाँ निमन्त्रण भेजना (विराट० ७२ । १२-१३)। अभिमन्यु और उत्तराका विवाह हो जानेपर धर्मपुत्र युधिष्ठिरद्वारा ब्राह्मणोंको धन, सहस्रों गौ, नाना प्रकारके रत्न, भाँति-भाँतिके वस्त्र, आभूषण, वाहन और शय्या आदिका दान (विराट० ७२ । ३८–४०)। विराट-सभामें युधिष्ठिर आदिके समक्ष भगवान् श्रीकृष्ण, बलराम, सात्यकि और द्रुपदके भाषण (उद्योग० अध्याय १ से ४ तक)। अर्जुनके साथ युद्ध होनेके समय कर्णका सारथि बननेपर उसके उत्साहको नष्ट करनेके लिये इनकी शल्यसे प्रार्थना (उद्योग० ८ । ४५; उद्योग० १८ । २३)। युधिष्ठिरकी सहायताके लिये आयी हुई सेनाओंका संक्षिप्त विवरण (उद्योग० १९ । १–१५)। संजयसे कौरवपक्ष-का कुशल पूछते हुए इनका सारगर्भित प्रश्न करना (उद्योग० २३ । ६–२८)। इन्द्रप्रस्थ लौटानेपर ही शान्ति सम्भव होगी—संजयसे ऐसा कथन (उद्योग० २६ । २९)। संजयकी बातोंका उत्तर देना (उद्योग० २८ अध्याय)। संजयके विदा होते समय प्रधान-प्रधान कुरुवंशियोंको इनका संदेश (उद्योग० ३० । ३—४९)।

दुर्योधनसे पाँच गाँवकी माँगका संदेश (उद्योग० ३१ । १९) । इनके रथका वर्णन (उद्योग० ५६ । १४) । इनका श्रीकृष्णसे धृतराष्ट्रके लोभकी चर्चा करते और धनकी महत्ता बताते हुए अपना अभिप्राय निवेदन करना (उद्योग० ७२ । ६–७८) । माता कुन्ती और कौरवोंसे कहनेके लिये श्रीकृष्णको संदेश देना (उद्योग० ८३ । ३७–४८) । कुन्तीका श्रीकृष्णसे युधिष्ठिर आदिके कुशल-समाचार पूछना और अपने दुःखोंको याद करके रोना (उद्योग० ९० । ४—८९) । कुन्तीके द्वारा युधिष्ठिरको संदेश (उद्योग० अध्याय १३२ से १३६ तक) । इनका श्रीकृष्णसे कौरवसभाका समाचार पूछना और श्रीकृष्णका इन्हें उत्तर देना (उद्योग० अध्याय १४७ से १५० तक) । प्रधान सेनापति चुननेके लिये इनका प्रस्ताव (उद्योग० १५१ । ८) । कुरुक्षेत्रमें अपनी सेनाका पड़ाव डालना (उद्योग० १५२ । १) । श्रीकृष्णसे अपने कर्तव्यके विषयमें पूछना (उद्योग० १५४ । ५) । अपने सेनापतिका अभिषेक करना (उद्योग० १५७ । ११–१४) । उलूकको दुर्योधनके संदेशका उत्तर देना (उद्योग० १६२ । ५१–५६; उद्योग० १६३ । २५–३०) । इनका अर्जुनसे उनकी शक्ति जाननेके लिये प्रश्न करना (उद्योग० १९४ । ७) । अपनी सेनाको कुरुक्षेत्रके मैदानमें ले जाना (उद्योग० १९६ अध्याय) । अर्जुनको अपनी सेनाकी व्यूहरचना करनेका आदेश देना (भीष्म० १९ । ६) । कौरव-सेनाको देखकर इनका विषाद करना (भीष्म० २१ । ३–५) । अपना अनन्तविजय नामक शङ्ख बजाना (भीष्म० २५ । १६) । भीष्मसे युद्धके लिये आज्ञा माँगना (भीष्म० ४३ । ३७) । द्रोणाचार्यको प्रणाम करके उनसे युद्धके लिये आज्ञा माँगना (भीष्म० ४३ । ५२) । कृपाचार्यका सम्मान करके उनसे भी युद्धके लिये आज्ञा माँगना (भीष्म० ४३ । ६९) । शल्यसे युद्धके लिये आज्ञा माँगना (भीष्म० ४३ । ७८) । युधिष्ठिरका कौरव-वीरोंको अपने पक्षमें आनेके लिये निमन्त्रित करना और आये हुए युयुत्सुको अपने पक्षमें ले लेना (भीष्म० ४३ । ९४–१०१) । प्रथम दिनके युद्धमें शल्यके साथ इनका द्वन्द्व-युद्ध (भीष्म० ४५ । २८–३०) । भीष्म-का पराक्रम देखकर इनकी चिन्ता (भीष्म० ५० । ४–२४) । इनका शल्यके साथ युद्ध (भीष्म० ७१ । १८–२१) । इनके द्वारा अपनी सेनाके वज्रव्यूहका निर्माण (भीष्म० ८१ । २२-२३) । इनका भयंकर कोप और इनके द्वारा श्रुतायुकी पराजय (भीष्म० ८४ । ८–१७) । शिखण्डीको उपालम्भ देना (भीष्म० ८५ । २०–२५) । भीष्मसे भयभीत होकर इनका धनुष-बाण फेंक देना (भीष्म० ८५ । ३१) । भीष्मके साथ युद्ध और इनकी पराजय (भीष्म० ८६ । २–११) । इनपर भगदत्तका आक्रमण (भीष्म० ९५ । ८४) । भीष्मका इन्हें सब ओरसे घेर लेना (भीष्म० १०२ । २७-२८) । इनका शकुनिके साथ युद्ध (भीष्म० १०५ । ११–२३) । शल्यके साथ युद्ध (भीष्म० १०५ । ३०–३३) । इनका करुणापूर्ण शब्दोंमें भीष्मवधके लिये श्रीकृष्णसे सलाह पूछना (भीष्म० १०७ । १३-२४) । भीष्मवधका उपाय उन्हींसे पूछनेके लिये श्रीकृष्णसे कहना (भीष्म० १०७ । ४१–५१) । भीष्मके पास जाकर उनसे उनके वधका उपाय पूछना (भीष्म० १०७ । ६२–७४) । द्रोणाचार्यके साथ इनका द्वन्द्वयुद्ध (भीष्म० ११० । १७; भीष्म० १११ । ५०–५२) । भीष्मके आदेशसे अपनी सेनाको उनपर आक्रमण करनेकी आज्ञा देना (भीष्म० ११५ । १७–२०) । शल्यके साथ द्वन्द्वयुद्ध (भीष्म० ११६ । ४०-४१) । श्रीकृष्णसे वार्तालाप (भीष्म० १२० । ६९–७०) । धृतराष्ट्रद्वारा इनकी वीरताका वर्णन (द्रोण० १० । ७–१२) । द्रोणाचार्यकी अपनेको पकड़नेकी प्रतिज्ञा सुनकर अर्जुनको अपने पास ही रहनेके लिये कहना (द्रोण० १३ । ३–६) । द्रोणाचार्यसे अपनी रक्षाके लिये इनका अर्जुनको आदेश देना (द्रोण० १७ । ४२-४३) । द्रोणाचार्यद्वारा निर्मित गरुडव्यूहको देखकर इनका भयभीत होना (द्रोण० २० । २०-२१) । इनके रथके घोड़ोंका वर्णन (द्रोण० २३ । १०) । शल्यके साथ युद्ध (द्रोण० २५ । १५–१७) । भगदत्तको विशाल रथ-सेनाके द्वारा इनका घेरना (द्रोण० २६ । ३१–३९) । अभिमन्युको व्यूह-भेदनके लिये कहना (द्रोण० ३५ । १४–१७) । जयद्रथका इन्हें व्यूहमें घुसनेसे रोक देना (द्रोण० ४२ । ३–८) । अभिमन्युकी मृत्युके पश्चात् इनका अपने सैनिकोंको सान्त्वना देना (द्रोण० ४९ । ३५) । अभिमन्युकी मृत्युपर इनका करुण-विलाप (द्रोण० ५१ अध्याय) । व्यासजीसे मृत्युकी उत्पत्ति आदिके विषयमें प्रश्न करना (द्रोण० ५२ । १८-१९) । व्यासजीके समझानेसे अभिमन्यु-वधजनित शोकसे रहित होना (द्रोण० ७१ । २५-२६) । अर्जुनसे अभिमन्यु-वधका वृत्तान्त कहना (द्रोण० ७३ । १––१६) । इनकी युद्धकालमें भी दान-पूजन आदिकी नित्य-चर्या (द्रोण० ८२ अध्याय) । जयद्रथ-वधके लिये की गयी अर्जुनकी प्रतिज्ञाको पूर्ण करनेके लिये श्रीकृष्णसे प्रार्थना करना (द्रोण० ८३ । १०—१९) । अर्जुनको विजय-का आशीर्वाद देना (द्रोण० ८४ । ४) । इनका शल्यके साथ युद्ध (द्रोण० ९६ । २९-३०) । कृतवर्मा-पर इनका आक्रमण (द्रोण० ९७ । २) । द्रोणाचार्यके

साथ युद्ध और उनके द्वारा इनकी पराजय (द्रोण० १०६ । १८--४७) । सात्यकिकी रक्षाके लिये सैनिकोंको आदेश देना (द्रोण० ११० । १४—१९) । इनका सात्यकिकी प्रशंसा करते हुए उन्हें अर्जुनकी सहायताके लिये जानेका आदेश (द्रोण० ११० । ४२—१०३) । अपनी रक्षाका समुचित प्रबन्ध बताकर इनका सात्यकिको अर्जुनकी सहायताके लिये जानेका ही आग्रहपूर्ण आदेश (द्रोण० १११ । ४०—५१) । दुर्योधनके साथ युद्ध (द्रोण० १२४ । १५—४७) । इनकी अर्जुन और सात्यकिके लिये चिन्ता तथा भीमसेनको उनका पता लगानेके लिये भेजना (द्रोण० १२६ अध्याय) । भीमसेन और अर्जुनका सिंहनाद सुनकर प्रसन्नतापूर्वक उन्हींके विषयमें विचार करना (द्रोण० १२८ । ३९—५५) । जयद्रथ-वधके बाद श्रीकृष्णकी स्तुति करना (द्रोण० १४९ । ५—३४) । इनके द्वारा भीमसेन और सात्यकिका अभिनन्दन (द्रोण० १४९ । ५४—६०) । दुर्योधनके साथ युद्ध और उसे मूर्च्छित करना (द्रोण० १५३ । २९—३९) । द्रोणाचार्यके साथ युद्ध और उन्हें पराजित करना (द्रोण० १५७ । २७—४३) । द्रोणाचार्यके साथ युद्ध और उन्हें मूर्छित करना (द्रोण० १६२ । ३६—४२) । इनका पैदल सैनिकोंको दीप जलानेका आदेश देना (द्रोण० १६३ । २७) । कृतवर्माके साथ युद्ध और उसके द्वारा परास्त होना (द्रोण० १६५ । २४—७०) । कर्णके पराक्रमसे इनकी घबराहट (द्रोण० १७३ । २५—२८) । घटोत्कच-वधसे शोक-विह्वल होना (द्रोण० १८३ । २७—५०) । धृष्टद्युम्न आदि महारथियोंको द्रोणाचार्यपर आक्रमण करनेका आदेश (द्रोण० १८४ । ३—८) । द्रोणाचार्यसे छलपूर्वक अश्वत्थामाके मरनेकी बात कहना (द्रोण० १९० । ५५) । अर्जुनसे कौरव-सेनाके सिंहनादका कारण पूछना (द्रोण० १९६ । १०—२५) । नारायणास्त्रके प्रभाव-को देखकर इनका खेद प्रकट करना (द्रोण० १९९ । २६—३६) । कर्णसे युद्धके लिये अर्जुनको व्यूह बनाने-का आदेश देना (कर्ण० ११ । २३–२७) । इनके द्वारा दुर्योधनकी पराजय (कर्ण० २८ । ७-८; कर्ण० २९ । ३२) । अपने पक्षके वीरोंको उनके योग्य प्रतिपक्षियोंके साथ लड़नेका आदेश (कर्ण० ४६ । ३४–३६) । कर्णके साथ युद्धमें उसे मूर्च्छित करना (कर्ण० ४९ । २१) । कर्णसे पराजित होकर इनका युद्धस्थलसे हट जाना (कर्ण० ४९ । ४९) । अश्वत्थामासे पराजित होकर इनका युद्धस्थलसे हट जाना (कर्ण० ५५ । ३८) । इनपर कौरव-सैनिकोंका आक्रमण और कर्णके प्रहारसे व्याकुल होकर युद्धस्थलसे हट जाना (कर्ण० ६२ । ३१) । कर्णद्वारा घायल हो भागकर छावनीमें चला जाना (कर्ण० ६३ । ३३-३४) । अर्जुनसे भ्रमवश कर्णके मारे जानेका वृत्तान्त पूछना (कर्ण० ६६ अध्याय) । अर्जुनके प्रति अपमानजनक क्रोधपूर्ण वचन बोलना (कर्ण० ६८ अध्याय) । अर्जुनके अपमानसे दुखी होकर वन जानेके लिये उद्यत होना (कर्ण० ७० । ४३—४७) । अर्जुनके साथ प्रेमपूर्वक मिलना और उन्हें आशीर्वाद देना (कर्ण० ७१ । ३०—३४, ४०) । कर्णकी मृत्युसे प्रसन्न होकर श्रीकृष्ण और अर्जुनकी प्रशंसा करना (कर्ण० ९६ । ४१—४५) । इनके द्वारा शल्यके चक्ररक्षक चन्द्रसेन और द्रुमसेनका वध (शल्य० १२ । ५२-५३) । शल्यके साथ युद्ध (शल्य० १३ अध्याय; १५ अध्याय) । इनके द्वारा शल्यकी पराजय (शल्य० १६ । ६२–६६) । शल्यका वध (शल्य० १७ । ५२) । इनके द्वारा शल्यके छोटे भाईका वध (शल्य० १७ । ६४-६५) । इनके द्वारा कृतवर्माकी पराजय (शल्य० १७ । ८६-८७) । इनका सेनासहित द्वैपायनसरोवरपर जाना (शल्य० ३० । ५३-५४) । जलमें छिपे हुए दुर्योधनको युद्धके लिये ललकारना (शल्य० ३१ । १८—७३) । हममेंसे किसी एकका वध कर देनेपर राज्य तुम्हारा होगा—ऐसा दुर्योधनको वर देना (शल्य० ३२ । २६-२७; शल्य० ३२ । ६१-६२) । भीमसेनको समझाकर अन्यायसे रोकना (शल्य० ५९ । १५—२०) । दुर्योधनको सान्त्वना देते हुए खेद प्रकट करना (शल्य० ५९ । २२—३०) । श्रीकृष्णसे वार्तालाप (शल्य० ६० । ३५—३८) । भीमसेनकी प्रशंसा (शल्य० ६० । ४७-४८) । श्रीकृष्णके प्रति कृतज्ञता प्रकट करना (शल्य० ६२ । २८—३२) । श्रीकृष्णको गान्धारीको समझानेके लिये हस्तिनापुर भेजना (शल्य० ६२ । ४०–४२) । धृष्टद्युम्नके सारथिके मुखसे पाञ्चालों और द्रौपदी-पुत्रोंकी मृत्युका समाचार सुनकर विलाप करना (सौप्तिक० १० । ९—२६) । द्रौपदीको बुलानेके लिये नकुलको भेजना (सौप्तिक० १० । २७) । युद्धस्थलमें जाकर पुत्रोंकी दशा देखकर मूर्च्छित होना (सौप्तिक० १० । २९–३१) । अश्वत्थामासे भीमसेनकी रक्षाके लिये श्रीकृष्णके साथ जाना (सौप्तिक० १३ । ६) । द्रौपदीके आग्रहसे अश्वत्थामाकी मणिको धारण करना (सौप्तिक० १६ । ३५) । अश्वत्थामाद्वारा अपने पुत्रोंके मारे जानेके विषयमें श्रीकृष्णसे प्रश्न (सौप्तिक० १७ । २–५) । भाइयोंसहित इनका धृतराष्ट्रसे मिलना (स्त्री० १२ । ११) । गान्धारीसे क्षमा याचना करना (स्त्री० १५ । २५—२८) । गान्धारीकी दृष्टि पड़नेसे इनके नखका

काला पड़ना (स्त्री० १५ । ३०) । धृतराष्ट्रसे युद्धमें मारे गये लोगोंकी संख्या और गतिका वर्णन करना (स्त्री० २६ । ९-१०, १२—१७) । मरे हुए लोगोंके दाह-संस्कारके लिये आज्ञा देना (स्त्री० २६ । २४—२६) । कुन्तीके मुखसे कर्णको अपना भाई सुनकर उसके लिये विलाप करना (स्त्री० २७ । १५—२५) । स्त्रियोंके मनमें रहस्यकी बात न छिपनेका शाप देना (स्त्री० २७ । २९) । नारदजीसे कर्णके विषयमें शोक प्रकट करते हुए उसे शाप मिलनेका वृत्तान्त पूछना (शान्ति० १ । १३—४४) । इनका चिन्तित होना (शान्ति० ६ । २) । स्त्रियोंको मनमें गुप्त बात न छिपा सकनेका शाप देना (शान्ति० ६ । ११) । अपना आन्तरिक खेद प्रकट करते हुए राज्य छोड़कर वनवासके लिये अर्जुनसे कहना (शान्ति० ७ अध्याय) । राज्य छोड़कर वानप्रस्थ अथवा संन्यास ग्रहण करनेका निश्चय बताना (शान्ति० ९ अध्याय) । भीमसेनकी बातका विरोध करते हुए इनका मुनिवृत्तिकी प्रशंसा करना (शान्ति० १७ अध्याय) । इनके द्वारा अपने मतकी यथार्थताका ही प्रतिपादन (शान्ति० १९ अध्याय) । व्यासजीसे राजर्षि सुद्युम्नके चरित्रके विषयमें जिज्ञासा (शान्ति० २३ । १७) । व्यासजीसे अपने शोककी प्रबलता प्रकट करना (शान्ति० २५ । २-३) । धनके त्यागकी महिमाका प्रतिपादन करना (शान्ति० २६ अध्याय) । शोकका कारण बताते हुए शरीर त्यागनेके लिये उद्यत होना (शान्ति० २७ । १—२६) । श्रीकृष्णसे सृञ्जयपुत्र सुवर्णष्ठीवीके विषयमें पूछना (शान्ति० ३० । १-३) । नारदजीसे सृञ्जयपुत्र सुवर्णष्ठीवीका वृत्तान्त पूछना (शान्ति० ३१ । १) । व्यासजीसे अपने पापका प्रायश्चित्त पूछना (शान्ति० ३३ । १—१२) । व्यासजी और श्रीकृष्णके समझानेसे इनका हस्तिनापुरको प्रस्थान और नगर-प्रवेश (शान्ति० ३७ । ३०—४९) । नगर-प्रवेशके समय पुरवासियों और ब्राह्मणोंद्वारा इनका सत्कार (शान्ति० ३८ । १—२१) । इनका राज्याभिषेक (शान्ति० ४० । १२—१६) । स्वयं धृतराष्ट्रके अधीन रहकर इनके द्वारा भाइयों आदिकी पृथक्-पृथक् कार्योंपर नियुक्ति (शान्ति० ४१ अध्याय) । इनके द्वारा सुहृदों और सगे-सम्बन्धियोंका श्राद्ध (शान्ति० ४२ । ३—८) । इनके द्वारा श्रीकृष्णकी स्तुति (शान्ति० ४३ । २—१६) । इनके द्वारा भाइयोंके लिये महलोंका विभाजन (शान्ति० ४४ अध्याय) । ब्राह्मणों और आश्रितोंको सत्कारपूर्वक दान देना (शान्ति० ४५ । ४—११) । श्रीकृष्णके पास जाकर इनका कृतज्ञता-प्रकाशन (शान्ति० ४५ । १७—१९) । श्रीकृष्णको ध्यानमग्न देखकर उनके ध्यानका कारण पूछना (शान्ति० ४६ । १—१०) । श्रीकृष्णके आज्ञानुसार भीष्मजीके पास चलनेको उद्यत होना (शान्ति० ४६ । २५—३०) । परशुरामजीद्वारा किये गये क्षत्रिय-संहारके विषयमें इनकी जिज्ञासा (शान्ति० ४८ । १०—१५) । सात्यकिद्वारा श्रीकृष्णका संदेश पाकर अर्जुनको रथ तैयार करनेका आदेश देना (शान्ति० ५३ । १४—१७) । भाइयों और श्रीकृष्ण आदिके साथ भीष्मके पास जाना (शान्ति० ५३ । १४—२८) । श्रीकृष्णको ही प्रथमतः भीष्मजीसे वार्तालाप करनेको कहना (शान्ति० ५४ । १२—१४) । भीष्मजीसे आश्वासन पाकर उनके निकट जाना (शान्ति० ५५ । २०-२१) । इनके प्रश्न और उन प्रश्नोंके अनुसार भीष्मजीका इनके समक्ष राजधर्म, आपद्धर्म और मोक्षधर्मके रहस्यका विविध दृष्टान्तोंद्वारा विशद विवेचन करना (शान्तिपर्व अध्याय ५७ से ३६५ तक) । भीष्मद्वारा युधिष्ठिरको इनके प्रश्नोंके अनुसार विविध उपदेश देना (अनु० अध्याय १ से १६५ तक) । भीष्मजीकी आज्ञासे परिवारसहित हस्तिनापुरको प्रस्थान (अनु० १६६ । १५—१७) । भीष्मके अन्त्येष्टि-संस्कारकी सामग्री लेकर युधिष्ठिर आदिका उनके पास जाना (अनु० १६७ । ६—२३) । भीष्मका इनको कर्तव्यका उपदेश देना (अनु० १६७ । ४९—५२) । भीष्मजीको जलाञ्जलि देनेके बाद शोकसे व्याकुल होकर इनका गङ्गाजीके तटपर गिरना (आश्व० १ । ३) । इनकी इस दशामें देखकर श्रीकृष्णका इनसे अधीर न होनेके लिये कहना और धृतराष्ट्रका इन्हें समझाना (आश्व० १ अध्याय) । श्रीकृष्णका इन्हें समझाना (आश्व० २ । २—८) । शोकसे व्यथित होकर वनमें जानेके लिये श्रीकृष्णसे आज्ञा माँगना (आश्व० २ । ११-१२) । व्यासजीका इन्हें समझाना (आश्व० २ । १५—२०) । व्यासजीका इन्हें समझाते हुए अश्वमेध यज्ञ करनेके लिये आज्ञा देना और युधिष्ठिरके धनाभावके कारण असमर्थता प्रकट करनेपर इन्हें हिमालयसे राजा मरुत्तके रखे हुए धनको लानेका सलाह देना (आश्व० ३ । १—२१) । युधिष्ठिरके पूछनेपर व्यासजीका इन्हें राजा मरुत्तका उपाख्यान सुनाना (आश्व० ३ । २२ से १० । ३६ तक) । श्रीकृष्णका युधिष्ठिरको उपदेश देकर इन्हें यज्ञके लिये प्रेरित करना (आश्व० अध्याय ११ से १३ तक) । इनके राज्य-शासनकी श्रेष्ठताका वर्णन (आश्व० १४ । १७ के बाद दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ६१२९—६१३१) । श्रीकृष्णको द्वारका जानेके लिये आज्ञा देना (आश्व० ५२ । ४४—५०) । मरुत्तके छोड़े हुए धनके लानेके विषयमें भाइयोंसे सलाह करना (आश्व० ६३ । ४—९) । भाइयोंसहित धन

लानेके लिये इनका प्रस्थान (आश्व० ६३ । २०–२४)। हिमालयपर पहुँचकर पड़ाव डालना और ब्राह्मणोंके कहनेसे भाइयोंसहित उस रात उपवास करना (आश्व० ६४ । ७—१५) । पार्षदोंसहित भगवान् शंकरकी पूजा करना (आश्व० ६५ । २—१३) । धन खुदवाकर वाहनोंपर लादकर इनका हस्तिनापुर लौटना (आश्व० ६५ । २०-२१) । व्यासजी तथा श्रीकृष्णका युधिष्ठिरको यज्ञके लिये आज्ञा देना (आश्व० ७१ । १५—२६) । अश्वमेध-सम्बन्धी अश्वकी रक्षा कौन करे--इसके विषयमें इनका व्यासजीसे पूछना और उनकी आज्ञाके अनुसार अर्जुनको अश्वकी रक्षाके लिये जानेका आदेश देना (आश्व० ७२। १२—२४) । इनका भीमसेनको राजाओंकी पूजा करनेका आदेश और श्रीकृष्णका युधिष्ठिरसे अर्जुनका संदेश कहना (आश्व० ८६ अध्याय) । अर्जुनको क्यों अधिकतर कष्ट उठाना पड़ता है–इसके विषयमें युधिष्ठिरकी जिज्ञासा और श्रीकृष्णका इसमें अर्जुनकी मोटी पिण्डलियोंको ही कारण बताना (आश्व० ८७ । १—१०) । बभ्रुवाहनका इन्हें प्रणाम करना और इनका उसे सत्कारपूर्वक धन देना (आश्व० ८८ । ६, १०-११) । व्यासजीकी आज्ञाके अनु-सार युधिष्ठिरका अश्वमेध यज्ञकी दीक्षा लेना (आश्व० ८८ । १२–१७) । इनके यज्ञवैभवका वर्णन (आश्व० ८८। १८—४०) । युधिष्ठिरका यज्ञके धूमकी गन्ध सूँघना और यज्ञ पूर्ण होनेपर भगवान् व्यासका इन्हें बधाई देना (आश्व० ८९ । ५–७) । इनका ब्राह्मणोंको दक्षिणा देना और राजाओंको भेंट देकर विदा करना (आश्व० ८९। ७--३८) । यज्ञ पूर्ण करके इनका अपने नगरमें प्रवेश (आश्व० ८९ । ३९–४४) । इनके यज्ञमें एक नेवलेका उञ्छवृत्तिधारी ब्राह्मणके द्वारा किये गये सेरभर सत्तूदानकी महिमाको उस अश्वमेध यज्ञसे भी बढ़कर बतलाना (आश्व० ९० अध्याय) । युधिष्ठिरके पूछनेपर भगवान् श्रीकृष्णका इन्हें धर्मकी महत्ता और दान आदिका माहात्म्य विस्तार-पूर्वक बताना (आश्व० ९२ दाक्षिणात्य पाठ पृष्ठ ६३०७—६३८१) । श्रीकृष्णके द्वारका जाते समय इनका उनके रथपर बैठकर कुछ देरके लिये सारथिका कार्य हाथमें लेना और उन्हें विदा करके उन्हींके भजन-चिन्तनमें लग जाना (आश्व० ९२ । दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ६३८१-६३८२)। भाइयोंसहित युधिष्ठिरका धृतराष्ट्र और गान्धारीकी सेवा करना (आश्रम० १ । ६-७) । इनका अपने भाइयों और मन्त्रियोंको राजा धृतराष्ट्रकी सेवाके लिये प्रेरित करना और उनकी सेवासे मुँह मोड़नेवालेको अपना शत्रु बताना (आश्रम० २ । ३–५) । युधिष्ठिरके द्वारा धृतराष्ट्र और गान्धारीकी सेवा (आश्रम० २ । १७–२०) । धृतराष्ट्रका युधिष्ठिरसे वनमें जानेके लिये अनुमति माँगना और युधिष्ठिर-का दुखी होकर उन्हींको राज्य अर्पित करके स्वयं उनकी सेवामें रहनेकी इच्छा प्रकट करना (आश्रम० ३ । ३०—५५) । मूर्छित हुए धृतराष्ट्रके शरीरपर इनका हाथ फेरना और धृतराष्ट्रका इन्हें हृदयसे लगाकर इनका मस्तक सूँघना (आश्रम० ३ । ६७–७५) । इनका धृतराष्ट्रसे आहार ग्रहण करनेके लिये आग्रह करना (आश्रम० ३ । ८४-८५) । व्यासजीके समझानेसे युधिष्ठिरका धृतराष्ट्रको वनमें जानेके लिये अनुमति देना (आश्रम० ४ अध्याय)। धृतराष्ट्रद्वारा इनको राजनीतिका उपदेश (आश्रम० अध्याय ५ से ७ तक) । धृतराष्ट्रका विदुरके द्वारा श्राद्धके लिये इनसे धन माँगना और इनका प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार करना (आश्रम० ११ । १—७) । भीमसेनके विरोध करनेपर युधिष्ठिरका उन्हें चुप रहनेके लिये कहना (आश्रम० ११ । २५) । इनका धृतराष्ट्र-को यथेष्ट धन देनेकी स्वीकृति प्रदान करना (आश्रम० १२ । ७–१३) । धृतराष्ट्रके वनको प्रस्थान करते समय युधिष्ठिरका फूट-फूटकर रोना और मूर्च्छित होकर गिर जाना (आश्रम० १५ । ६) । इनका कुन्तीको घर लौटनेके लिये कहना और कुन्तीका इन्हें सब भाइयों तथा द्रौपदीपर स्नेह रखनेके लिये कहकर स्वयं वनको ही जानेका निश्चय प्रकट करना (आश्रम० १६ । ७–१७)। इनका कुन्तीसे उनके वनगमनको अनुचित बताकर बार-बार घर लौटनेके लिये ही अनुरोध करना (आश्रम० १६ । १९–२८) । कुन्तीका युधिष्ठिरको उनके अनुरोध-का उत्तर देना (आश्रम० १७ अध्याय) । युधिष्ठिरकी मातासे मिलनेके लिये वनमें जानेकी इच्छा, सहदेव और द्रौपदीका इनके साथ जानेका उत्साह तथा रनिवास और सेनासहित इनका वनको प्रस्थान (आश्रम० २२ अध्याय)। सेनासहित इनकी यात्रा और कुरुक्षेत्रमें पहुँचना (आश्रम० २३ अध्याय) । इनके द्वारा वनमें कुन्ती, गान्धारी और धृतराष्ट्रका दर्शन (आश्रम० २४ अध्याय) । संजयका ऋषियोंको इनका परिचय देना (आश्रम० २५ । ५) । धृतराष्ट्र और युधिष्ठिरकी बातचीत तथा विदुरका युधिष्ठिर-के शरीरमें प्रवेश (आश्रम० २६ अध्याय) । युधिष्ठिर आदिका ऋषियोंके आश्रम देखना, कलश आदि बाँटना और धृतराष्ट्रके पास आकर बैठना (आश्रम० २७ । ५–१५) । महर्षि व्यासद्वारा विदुर और युधिष्ठिरकी धर्म-रूपताका प्रतिपादन (आश्रम० २८ । ११–२२) । धृतराष्ट्र और मातासे विदा लेकर युधिष्ठिर आदिका हस्तिनापुरमें आगमन (आश्रम० ३६ अध्याय) । नारदजीसे धृतराष्ट्र आदिके दावानलमें दग्ध हो जानेका हाल जानकर युधिष्ठिर आदिका शोक (आश्रम० ३७ अध्याय) । नारदजीके सम्मुख युधिष्ठिरका धृतराष्ट्र आदि-

के लौकिक अग्निमें दग्ध हो जानेका वर्णन करते हुए विलाप करना (आश्रम० ३८ अध्याय) । राजा युधिष्ठिर-का धृतराष्ट्र, गान्धारी और कुन्ती—इन तीनोंकी अस्थियोंको गङ्गामें प्रवाहित कराना और उनके श्राद्धकर्म करना (आश्रम० ३९ अध्याय) । युधिष्ठिरका अपशकुन देखना और यादवोंके विनाशका समाचार सुनकर भाइयों-सहित दुःखशोकमें मग्न हो जाना (मौसल० १ । १–११) । युधिष्ठिरका भाइयोंसहित कालपाशको स्वीकार करनेका निश्चय करके युयुत्सुको राज्यकी देख-भालका भार सौंपना और परीक्षित्को अपने राज्यपर अभिषिक्त करके सुभद्रासे हस्तिनापुरमें परीक्षित्को और इन्द्रप्रस्थमें वज्रको रखकर इनकी रक्षाके लिये कहना (महाप्रस्थान० १ । ३–९) । इनके द्वारा वसुदेव, भगवान् श्रीकृष्ण तथा बलराम आदिके लिये जलाञ्जलि-दान एवं श्राद्ध-सम्पादन (महाप्रस्थान० १ । १०–१३) । कृपाचार्यकी पूजा करके उनके शिष्यत्वमें परीक्षित्को सौंपना (महा-प्रस्थान० १ । १४-१५) । प्रजा, मन्त्री आदिको बुला-कर उनके सामने अपने महाप्रस्थानविषयक विचारको प्रकट करना और उनके मना करनेपर भी उनकी अनुमति ले भाइयोंसहित महाप्रस्थानका ही निश्चय करना (महा-प्रस्थान० १ । १६–१९) । भाइयोंसहित अपने आभूषण उतारकर इनका उत्सर्गकालिक इष्टि करवाना और अग्नियोंका जलमें विसर्जन करके महायात्राके लिये प्रस्थित होना (महाप्रस्थान० १ । १९–२२) । युधिष्ठिरकी इच्छाके अनुसार पाँचों भाई पाण्डव, द्रौपदी और एक कुत्ता—इन सबका एक साथ हस्तिनापुरसे निकलना (महाप्रस्थान० १ । २४-२५) । इन सबका पूर्व दिशा-की ओर प्रस्थान, युधिष्ठिरका सबसे आगे होकर चलना (महाप्रस्थान० १ । २९–३१) । अग्निदेवका लाल-सागरके तटपर अर्जुनसे गाण्डीव धनुष और अक्षय तूणीर त्याग देनेके लिये कहना और भाइयोंकी प्रेरणासे अर्जुनका वह सब कुछ जलमें फेंक देना (महाप्रस्थान० १ । ३३–४२) । इनका पूर्वसे दक्षिण और पश्चिम दिशाकी ओर जाना (महाप्रस्थान० १ । ४३–४६) । मार्गमें द्रौपदी, सहदेव, नकुल, अर्जुन, भीमसेनका गिरना तथा युधिष्ठिर-द्वारा प्रत्येकके गिरनेका कारण बताया जाना (महा-प्रस्थान० २ अध्याय) । इनके पास इन्द्रका रथ लेकर आना और इन्हें उसपर बैठनेके लिये कहना (महा-प्रस्थान० ३ । १) । इनका इन्द्रके मुखसे भाइयों और द्रौपदीके स्वर्गमें पहुँचनेका वृत्तान्त सुनकर अपने साथ आये हुए कुत्तेको भी लेकर स्वर्गमें चलनेका निश्चय प्रकट करना (महाप्रस्थान० ३ । २–७) । इन्द्रका कुत्तेके लिये स्वर्गमें स्थान न बताकर इनसे अकेले ही चलनेके लिये कहना; परंतु इनका शरणागत कुत्तेको न त्यागनेका ही अपना निश्चय बताना (महाप्रस्थान० ३ । ८–१६)। कुत्तेके रूपमें आये हुए धर्मके द्वारा युधिष्ठिरका अभिनन्दन तथा इन्द्र और धर्मके साथ इनका सदेह स्वर्गमें जाना (महाप्रस्थान० ३ । १७–२५) । देवर्षि नारदद्वारा इनकी प्रशंसा, इन्द्रके द्वारा उत्तम लोकमें रहनेके लिये प्रेरित होनेपर भी इनका अपने भाइयोंके बिना वहाँ रहनेसे इनकार करना और उनके साथ शुभ या अशुभ किसी भी लोकमें रहनेकी इच्छा प्रकट करना (महाप्रस्थान० ३ । २६–३८) । स्वर्गमें दुर्योधनको श्रीसम्पन्न देख अमर्षमें भरे हुए युधिष्ठिरका सहसा पीछे लौटना और उसके साथ रहनेसे अनिच्छा प्रकट करके अपने भाइयोंके स्थानमें जानेकी उत्सुकता दिखाना (स्वर्गा० १ । ६–१०)। हँसते हुए नारदजीका युधिष्ठिरको स्वर्गमें दुर्योधनकी सम्मानपूर्ण स्थितिका परिचय देना और इन्हें उससे मिलने-के लिये कहना (स्वर्गा० १ । ११–१८) । इनका अपने भाइयों तथा सगे-सम्बन्धियोंको मिले हुए लोकोंके विषयमें जिज्ञासा प्रकट करना और उन सबसे मिलनेकी अभिलाषा व्यक्त करना (स्वर्गा० १ । २०–२६)। देवदूतका युधिष्ठिरको मायामय नरकका दर्शन कराना तथा भाइयोंका करुण-क्रन्दन सुनकर इनका वहीं रहनेका निश्चय करना (स्वर्गा० २ अध्याय) । इन्द्र और धर्मका युधिष्ठिरको सान्त्वना देना तथा इनका मन्दाकिनीमें स्नान करके मानवशरीरका त्याग कर दिव्यलोकमें जाना (स्वर्गा० ३ अध्याय) । युधिष्ठिरका दिव्यलोकमें श्रीकृष्ण-अर्जुन आदि सभी सगे-सम्बन्धियोंका दर्शन करना (स्वर्गा० ४ अध्याय) । इनका धर्मके स्वरूपमें प्रवेश (स्वर्गा० ५ । २२) ।

महाभारतमें आये हुए युधिष्ठिरके नाम—आजमीढ, अजातशत्रु, भारत, भरतशार्दूल, भरतप्रवर्ह, भरतर्षभ, भरतसत्तम, भरतसिंह, भीमपूर्वज, धर्म, धर्मज, धर्मनन्दन, धर्मप्रभव, धर्मपुत्र, धर्मराट्, धर्मराज, धर्मसूनु, धर्मसुत, धर्मतनय, धर्मात्मज, कौन्तेय, कौरव, कौरवश्रेष्ठ, कौरवाग्र्य, कौरवनन्दन, कौरवनाथ, कौरवर्षभ, कौरवसत्तम, कौरववंशवर्धन, कौरवेन्द्र, कौरव्य, कुन्तीनन्दन, कुन्तीपुत्र, कुन्तीसुत, कुरुशार्दूल, कुरुश्रेष्ठ, कुरुश्रेष्ठतम, कुरूद्वह, कुरुकुलश्रेष्ठ, कुरुकुलोद्वह, कुरुमुख्य, कुरुनन्दन, कुरुपाण्डवाग्र्य, कुरुपति, कुरुप्रवीर, कुरुपुङ्गव, कुरुराज, कुरुसत्तम, कुरूत्तम, कुरुवर्धन, कुरुवीर, कुरुवृषभ, मृदंगकेतु, पाण्डव, पाण्डवश्रेष्ठ, पाण्डवाग्र्य, पाण्डवमुख्य, पाण्डवनन्दन, पाण्डवर्षभ, पाण्डवेय, पाण्डुनन्दन, पाण्डुनृपात्मज, पाण्डुपुत्र, पाण्डुसूनु, पाण्डुसुत, पाण्डुवीर, पार्थ, यादवीमातः, यादवीपुत्र आदि ।

युयुत्सु—(१) धृतराष्ट्रद्वारा वैश्यजातीय भार्याके गर्भसे उत्पन्न पुत्र। इसकी 'करण' संज्ञा थी (आदि० ६३। ११८)। इसकी उत्पत्ति (आदि० ११४। ४३)। दुर्योधनकी प्रेरणासे भीमसेनके भोजनमें दिये हुए विषकी इसके द्वारा भीमसेनको सूचना (आदि० १२८। ३७-३८)। यह द्रौपदीके स्वयंवरमें गया था (आदि० १८५। २)। कुरुक्षेत्रके मैदानमें पाण्डवोंके पक्षमें आना (भीष्म० ४३। १००)। यह योद्धाओंमें श्रेष्ठ, धनुर्धरोंमें उत्तम, शौर्यसम्पन्न, सत्यप्रतिज्ञ और महाबली था। वारणावतनगरमें बहुत-से राजा क्रोधमें भरकर युयुत्सुपर चढ़ आये और उसे मार डालना चाहते थे; किंतु इसे परास्त न कर सके (द्रोण० १०। ५८-५९)। इसके रथके घोड़ोंका वर्णन (द्रोण० २३। ३४-३५)। सुबाहुके साथ युद्ध करके उसकी दोनों भुजाएँ काटना (द्रोण० २५। १३-१४)। भगदत्तके हाथीद्वारा इसके रथके घोड़ोंका मारा जाना (द्रोण० २६। ५६)। अभिमन्युवधसे हर्षोन्मत्त हुए कौरवोंको इसका उपालम्भ देना (द्रोण० ७२। ६०–६३)। उलूकके साथ युद्धमें इसका पराजित होना (कर्ण० २५। ११)। श्रीकृष्ण और युधिष्ठिरसे आज्ञा लेकर इसका राजमहिलाओंके साथ हस्तिनापुर लौटना (शल्य० २९। ८६–८८)। विदुरजीके पूछनेपर उन्हें सब समाचार बताना (शल्य० २९। ९१–९५)। युधिष्ठिरद्वारा इसे धृतराष्ट्रकी सेवाका भार सौंपा जाना (शान्ति० ४१। १७–१८)। भीष्मके अन्त्येष्टि-संस्कारके लिये चिता-निर्माण करनेमें पाण्डवोंके साथ यह भी था (अनु० १६८। ११)। मरुत्तका धन लानेके लिये पाण्डवोंके हिमालय जानेपर यह हस्तिनापुरकी रक्षामें नियुक्त था (आश्व० ६३। २४)। पाण्डवलोग जब वनमें धृतराष्ट्रसे मिलने गये थे, उस समय भी नगर-रक्षाका भार इसीपर था (आश्रम० २३। १५)। युयुत्सुको आगे करके पाण्डवोंने धृतराष्ट्रके लिये जलाञ्जलि दी (आश्रम० ३९। १२)। महाप्रस्थानके समय बालक परीक्षित्को राज्यपर अभिषिक्त करके जब युधिष्ठिर जाने लगे, उस समय उन्होंने युयुत्सुको ही राज्यकी रक्षाका भार सौंपा था (महाप्रस्थान० १। ६)।

महाभारतमें आये हुए युयुत्सुके नाम—धार्तराष्ट्र, धृतराष्ट्रज, धृतराष्ट्रसुत, करण, कौरव्य, कौरव, वैश्यापुत्र आदि।

(२) धृतराष्ट्रका गान्धारीके गर्भसे उत्पन्न हुआ पुत्र (शान्ति० ६७। ९३)।

युयुधान—ये सत्यकके पुत्र हैं, इन्हींको सात्यकि कहते हैं (सभा० ४। ३५)। (विशेष देखिये सात्यकि)

युवनाश्व—इक्ष्वाकुवंशके एक सुप्रसिद्ध नरेश, जिन्होंने प्रचुर दक्षिणा देकर बहुत-से यज्ञोंका अनुष्ठान किया था। जिन्होंने एक हजार अश्वमेध यज्ञ किये थे (वन० १२६। ५–६)। ये राजा सुद्युम्नके पुत्र थे (वन० १२६। १०)। तृषित हुए इनके द्वारा अभिमन्त्रित जलका पान (वन० १२६। १५)। इनकी बायीं कुक्षिसे मान्धाताका जन्म (वन० १२६। २७)। इन्हें महाराज रैवतसे खड्गकी प्राप्ति हुई और इन्होंने रघुको वह खड्ग प्रदान किया (शान्ति० १६६। ७८)। इनके द्वारा मांस-भक्षण-निषेध और उससे इन्हें परावर-तत्त्वका ज्ञान (अनु० ११५। ६१)। (२) विष्वगश्वकुमार अद्रिके पुत्र, जो श्रावके पिता थे (वन० २०२। ३)। (३) वृषादर्भके पुत्र, जिन्होंने सब प्रकारके रत्न, अभीष्ट स्त्रियाँ और सुरम्य गृह दान करके स्वर्गका निवास पाया (शान्ति० २३४। १५)।

यूपकेतु—भूरिश्रवाका नामान्तर (सभा० ४४। १९)। (विशेष देखिये भूरिश्रवा)

योग—एक ऋषि, जो तपस्वी, जितेन्द्रिय और तीनों लोकोंमें विख्यात हैं (अनु० १५०। ४५)।

योजनगन्धा—व्यास जननी, सत्यवतीका दूसरा नाम (आदि० ६३। ८२-८३)। (देखिये सत्यवती)

योतिमत्सक—एक राजा, जिनके पास पाण्डवोंकी ओरसे रण-निमन्त्रण भेजनेका निश्चय किया गया था (उद्योग० ४। २०)।

योध्य—एक देश, जिसे दिग्विजयके समय कर्णने जीता था (वन० २५४। ८-९)।

योनितीर्थ—भीमाके उत्तम स्थानमें स्थित एक तीर्थ, जहाँ स्नान करनेसे मनुष्य देवीका पुत्र होता है, उसकी अङ्गकान्ति तपाये हुए 'सुवर्ण-कुण्डल' के समान होती है, उस तीर्थके सेवनसे मनुष्यको सहस्र गोदानका फल मिलता है (वन० ८२। ८४)।

योनिद्वार—उदयगिरिपर स्थित एक तीर्थ, जहाँ जानेसे मनुष्य योनि-संकटसे मुक्त हो जाता है (वन० ८४। ९१)।

यौधेय—(१) युधिष्ठिरके पुत्र, जो युधिष्ठिरके द्वारा शिवि देशके राजा गोवासनकी पुत्री देविकाके गर्भसे उत्पन्न हुए थे (आदि० ९५। ७६)। (२) एक देश तथा जातिके लोग। यहाँके राजा, राजकुमार और निवासी भी युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें भेंट लेकर आये थे (सभा० ५२। १४–१७)।

यौन—एक जाति, इस जातिके लोग पापाचारी तथा चाण्डाल कौवे और गीधकी भाँति आचार-विचारवाले होते हैं (शान्ति० २०७। ४३–४५)।

यौवनाश्व–युवनाश्वके पुत्र मान्धाता (सभा० ५३ । २१)। (विशेष देखिये मान्धाता)

(र)

रक्ताङ्ग–धृतराष्ट्रके कुलमें उत्पन्न एक नाग, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें दग्ध हो गया था (आदि० ५७ । १८)।

रक्षिता–एक अप्सरा, जो प्राधाके गर्भसे कश्यपद्वारा उत्पन्न हुई थी (आदि० ६५ । ५०)।

रक्षोवाह–एक देश । परशुरामजीने यहाँके निवासी क्षत्रियोंका संहार किया था (द्रोण० ७० । १२)।

रघु–एक प्राचीन नरेश, संजयद्वारा की गयी प्राचीन राजाओंकी गणनामें इनका नाम है (आदि० १ । २३२)। विराटके गोग्रहणके समय कौरवोंके साथ होनेवाले अर्जुनके युद्धको देखनेके लिये इन्द्रके विमानमें बैठकर ये भी आये थे (विराट० ५६ । १०)। महाराज युवनाश्वद्वारा इक्ष्वाकुवंशी रघुको खड्गकी प्राप्ति हुई और इन्होंने उसे हरिणाश्वको प्रदान किया (शान्ति० १६६ । ७८)। इन्होंने मांसभक्षणका निषेध किया था, जिससे इन्हें परावर-तत्त्वका ज्ञान प्राप्त हो गया था (अनु० ११५ । ५९–६१)। राजा रघुको प्रणाम करनेवाला क्षत्रिय संग्रामविजयी होता है (अनु० १५० । ८१)। जो सायं-प्रातः इनके नामका कीर्तन करता है, वह धर्मफलका भागी होता है (अनु० १६५ । ५१—६०)।

रज–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ७३)।

रजि–ये आयुद्वारा स्वर्भानुकुमारीके गर्भसे उत्पन्न हुए थे। इनके चार भाई और थे, जिनके नाम हैं—नहुष, वृद्धशर्मा, गय तथा अनेना (आदि० ७५ । २५-२६)।

रणोत्कट–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ६८)।

रता–दक्षकी पुत्री, जो धर्मकी पत्नी हैं । इनके गर्भसे अहः नामक वसुका जन्म हुआ है (आदि० ६६ । १७–२०)।

रति–(१) ये धर्मपुत्र कामदेवकी पत्नी हैं (आदि० ६६ । ३२-३३)। ब्रह्माजीकी सभामें रहकर ये उनकी उपासना करती हैं (सभा० ११ । ४३)। (२) अलकापुरीकी एक अप्सरा, जिसने अष्टावक्रके स्वागतके अवसरपर कुबेर-भवनमें नृत्य किया था (अनु० १९ । ४५)।

रतिगुण–एक देवगन्धर्व, जो कश्यपके द्वारा प्राधाके गर्भसे उत्पन्न हुआ था (आदि० ६५ । ४७)।

रथचित्रा–भारतवर्षकी प्रमुख नदी, जिसका जल यहाँके निवासी पीते हैं (भीष्म० ९ । २६)।

रथध्वान–शंयु-पुत्र वीर नामक अग्निका नामान्तर (वन० २१९ । ९-१०)। (देखिये वीर)

रथन्तर–(१) 'रथन्तर' नामक साम, जो मूर्तिमान् होकर ब्रह्माजीकी सभामें विराजमान होता है (सभा० ११ । ३०)। वसिष्ठ मुनिने 'रथन्तर' सामके द्वारा इन्द्रका मोह दूर करके उन्हें प्रबुद्ध किया था (शान्ति० २८१ । २१–२६; आश्व० ११ । १८-१९)। (२) पाञ्चजन्य नामक अग्निके पुत्र, जिनका दूसरा नाम 'तरसाहर' है। ये पाञ्चजन्यके मुखसे प्रकट हुए थे (वन० २२० । ७)।

रथन्तर्या (**रथन्तरी**)–सम्राट् दुष्यन्तकी माता । शकुन्तलाकी सास । इनके द्वारा शकुन्तलाको आशीर्वाद (आदि० ७४ । १२५ के बाद दा० पाठ)।('रथन्तर्या' यह नाम दाक्षिणात्य पाठके अनुसार है । नीलकण्ठीके अनुसार) इनका नाम 'रथन्तरी' था (आदि ९४ । १७)। ये महाराज ईलिनकी पत्नी थीं । इनके पाँच पुत्र हुए, जिनके नाम इस प्रकार हैं—दुष्यन्त, शूर, भीम, प्रवसु तथा वसु (आदि० ९४ । १६–१८; आदि० ९५ । २८)।

रथप्रभु–शंयु-पुत्र वीर नामक अग्निका नामान्तर (वन० २१९ । ९-१०)। (देखिये वीर)

रथवाहन–विराटके भाई, जो पाण्डवोंकी ओरसे युद्ध कर रहे थे (द्रोण० १५८ । ४२)।

रथसेन–पाण्डवपक्षके एक योद्धा, जिनके रथमें मटरके फूलके समान रंगवाले घोड़े जुते हुए थे । उन घोड़ोंकी रोमराजि श्वेत-लोहित वर्णकी थी (द्रोण० २३ । ६२)।

रथस्था–गङ्गाजीकी सात धाराओंमेंसे एक, जिसका जल पीनेसे मनुष्यके सभी पाप तत्काल नष्ट हो जाते हैं (आदि० १६९ । २०-२१)।

रथाक्ष–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ६३)।

रथातिरथसंख्यानपर्व–शान्तिपर्वका एक अवान्तर पर्व (अध्याय १६५ से १७२ तक)।

रथावर्त–शाकम्भरी देवीके दक्षिणार्ध भागमें स्थित एक तीर्थ। यहाँकी यात्रा करनेवाला श्रद्धालु पुरुष महादेवजीकी कृपासे परमगति प्राप्त कर लेता है (वन० ८४ । २३)।

रन्तिदेव–एक प्राचीन नरेश (आदि० १ । २२६)। ये राजा संकृतिके पुत्र थे। संजयको समझाते हुए नारदजीद्वारा इनके अतिथि-सत्कार और दान आदिका वर्णन (द्रोण० ६७ अध्याय)। श्रीकृष्णद्वारा इनके दान और अतिथि-सत्कार आदिका वर्णन (शान्ति० २९ । १२०–१२९)। वसिष्ठको शीतोष्ण जलका दान करके इनका स्वर्गलोकमें प्रतिष्ठित होना (शान्ति० २३४ । १७)।

फल-मूल और पत्तोंद्वारा ऋषियोंका पूजन करके इनका अभिलषित सिद्धि प्राप्त करना (शान्ति० २९२ । ७) । इन्होंने कभी मांस नहीं खाया था (अनु० ११५ । ६३) । वसिष्ठ मुनिको विधिवत् अर्घ्यदान करनेसे इन्हें श्रेष्ठ लोकोंकी प्राप्ति (अनु० १३७ । ६) । ये सायं-प्रातः स्मरण करनेयोग्य नरेशोंमें गिने गये हैं (अनु० १५० । ५१) ।

रमेणक–तक्षक-कुलमें उत्पन्न एक नाग, जो जनमेजयके सर्प-सत्रमें जल मरा था (आदि० ५७ । ८) ।

रमठ–एक म्लेच्छ जाति, जो मान्धाताके शासनकालमें उनके राज्यमें निवास करती थी (शान्ति० ६५ । १४-१५) ।

रमण–(१) ये सोम नामक वसुके द्वारा मनोहराके गर्भसे उत्पन्न हुए थे (आदि० ६६ । २२) । (२) द्वारकाके समीपवर्ती एक दिव्य वन (सभा० ३८ । २९ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ८१३, कालम १) ।

रमणक–एक वर्ष, जो श्वेतपर्वतके दक्षिण और निषधपर्वत-के उत्तर स्थित है । वहाँ जो मनुष्य जन्म लेते हैं, वे उत्तम कुलसे युक्त और देखनेमें अत्यन्त प्रिय होते हैं । वहाँके सब मनुष्य शत्रुओंसे रहित होते हैं । रमणकवर्षके मनुष्य सदा प्रसन्नचित्त होकर साढ़े ग्यारह हजार वर्षोंतक जीवित रहते हैं (भीष्म० ८ । २–४) ।

रमणचीन–दक्षिण भारतका एक जनपद (भीष्म० ९ । ६६) ।

रम्भा–एक अप्सरा, जो प्राधाके गर्भसे कश्यपद्वारा उत्पन्न हुई थी (आदि० ६५ । ५०) । यह अर्जुनके जन्मोत्सवमें नृत्य करने आयी थी (आदि० १२२ । ६२) । कुबेरकी सभामें रहकर उनकी उपासना करती है (सभा १० । १०) । इसने इन्द्रसभामें अर्जुनके स्वागतार्थ नृत्य किया था (वन० ४३ । २९) । यह नलकूबरकी पत्नी होकर रहती थी, इसीका तिरस्कार करनेके कारण रावणको नलकूबरने यह शाप दे दिया था कि 'तू न चाहनेवाली किसी स्त्रीके साथ बलात्कार नहीं कर सकता; यदि करेगा तो तुझे प्राणोंसे हाथ धोना पड़ेगा' (वन० २८० । ६०) । विश्वामित्रके शापसे इसको पत्थर होना पड़ा था (अनु० ३ । ११) । कुबेरकी सभामें अष्टावक्रके स्वागतमें इसने नृत्य किया था (अनु० १९ । ४४) ।

रम्यक–नीलगिरिको लाँघनेपर रम्यकवर्ष मिलता है । अपनी उत्तर-दिग्विजयके समय अर्जुनने इस वर्षको जीतकर वहाँके निवासियोंपर कर लगाया था (सभा० २८ । ६ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ७४९, कालम १) ।

रम्यग्राम–एक राजधानी अथवा राजा, जिसे दक्षिण-दिग्विजयके समय सहदेवने अपने अधिकारमें कर लिया था (सभा० ३१ । १४) ।

रवि–(१) ये विवस्वान्के बोधक माने गये हैं (आदि० १ । ४२) । (२) सौवीर देशका एक राजकुमार, जो जयद्रथके रथके पीछे हाथमें ध्वजा लेकर चलता था, (वन० २६५ । १०) । अर्जुनद्वारा इसका वध (वन० २७१ । २७) । (३) धृतराष्ट्रका एक पुत्र, जो भीमसेनद्वारा मारा गया (शल्य० २६ । १४-१५) ।

रश्मिवान्–एक सनातन विश्वेदेव (अनु० ९१ । ३६) ।

रसातल–पृथ्वीके नीचेका एक लोक । प्रलयके समय संवर्तक नामक अग्नि पृथ्वीका भेदन करके रसातलतक पहुँच जाती है (वन० १८८ । ६९-७०) । दैत्योंद्वारा उत्पन्न की हुई कृत्या दुर्योधनको साथ ले रसातलमें प्रविष्ट हुई थी (वन० २५१ । २९) । रसातल पृथ्वीका सातवाँ तल है । यहाँ अमृतसे उत्पन्न हुई गोमाता सुरभि निवास करती हैं (उद्योग० १०२ । १) । रसातल-निवासियोंने पूर्वकालमें एक गाथा गायी थी, जो इस प्रकार है—नागलोक, स्वर्गलोक तथा वहाँके विमानमें निवास करना भी वैसा सुखदायक नहीं होता जैसा कि रसातलमें रहनेसे सुख प्राप्त होता है (उद्योग० १०२ । १४-१५) । भगवान् वराहने रसातलमें जाकर देवद्रोही असुरोंको अपने खुरोंसे विदीर्ण कर दिया (शान्ति० २०६ । २६) । हयग्रीवरूपधारी भगवान् श्रीहरिने रसातलमें प्रवेश करके मधु और कैटभके अधिकारमें हुए वेदोंका उद्धार किया (शान्ति० ३४७ । ५४–५८) । राजा वसु केवल एक बार मिथ्याभाषण करनेके दोषसे रसातलको प्राप्त हुए (अनु० ६ । ३४; आश्व० ९१ । २३) । रसातल भगवान् अनन्तका सनातन धाम है । बलदेवजी प्रभासक्षेत्रमें अपने मानव-शरीरका परित्याग करके रसातलमें प्रविष्ट हुए थे (स्वर्गा० ५ । २३) ।

रहस्या–भारतवर्षकी एक नदी, जिसका जल भारतीय प्रजा पीती है (भीष्म० ९ । १९) ।

राका–(१) पूर्णिमा तिथिकी अधिष्ठात्री देवी, जो मूर्तिमती होकर स्कन्दके जन्म-समयमें वहाँ पधारी थी (शल्य० ४५ । १४) । (२) एक राक्षस-कन्या, जो कुबेरकी आज्ञासे महर्षि विश्रवाकी परिचर्यामें रहती थी । विश्रवाने इसके गर्भसे 'खर' नामक पुत्र तथा शूर्पणखा नामकी कन्याको जन्म दिया था (वन० २७५ । ३—८) ।

राक्षस–एक प्रकारका विवाह (आदि० ७३ । ९) । (युद्ध करके मार-काट मचाकर रोती हुई कन्याको उसके रोते हुए भाई-बन्धुओंसे छीन लाना 'राक्षस' विवाह माना गया है ।) यह विवाह क्षत्रियोंके लिये, उनमें भी राजाओंके लिये ही विहित है (आदि० ७३ । ११–१३) ।

राक्षस-ग्रह–एक राक्षस-सम्बन्धी ग्रह, जिसकी बाधा होनेसे मनुष्य विभिन्न प्रकारके रसोंका आस्वादन करने और सुगन्धोंके सूँघनेसे तुरंत उन्मत्त हो जाता है (वन० २३० । ५०) ।

राक्षस-सत्र–पराशरजीने राक्षसोंपर कुपित होकर राक्षस-सत्रका अनुष्ठान करके उसमें राक्षसोंको जलाना आरम्भ किया (आदि० १८० । २-३) । पुलस्त्य आदि महर्षियोंके समझानेसे पराशरद्वारा इस सत्रकी समाप्ति (आदि० १८० । २१) ।

राग-खाण्डव–महाराज दिलीपके यज्ञमें बना हुआ एक प्रकारका मोदक (द्रोण० ६१ । ८) ।

रागा–महर्षि अङ्गिराकी द्वितीय कन्या । इसपर समस्त प्राणियोंका अनुराग प्रकट था, इसीलिये इसका नाम 'रागा' हुआ (वन० २१८ । ४) ।

राजगृह (गिरिव्रज)–एक प्राचीन नगरी, जो मगधकी राजधानी थी । जहाँका राजा दीर्घ, जो बलाभिमानी था, पाण्डुद्वारा मारा गया था (आदि० ११२ । २७) । यह नगरी राजा अम्बुवीचिकी भी राजधानी रह चुकी है (आदि० २०३ । १७) । यहाँका राजा जरासंध था (सभा० २१ अध्याय) । यह एक तीर्थ भी है, यहाँ स्नान करनेसे मनुष्य कक्षीवान्के समान प्रसन्न होता है (वन० ८४ । १०४-१०५) । सहदेवकुमार मेघसंधि भी यहींपर निवास करता था (आश्व० ८२ । २) ।

राजधर्मा–एक बकराज । इसका दूसरा नाम नाडीजङ्घ था । यह कश्यपका पुत्र और ब्रह्माका मित्र था (शान्ति० १६९ । १९-२०) । इसके द्वारा कृतघ्न गौतमका स्वागत (शान्ति० १६९ । २३-२४) । कृतघ्न गौतमका आतिथ्य-सत्कार (शान्ति० १७० । ३—९) । इसका धनके लिये गौतमको अपने मित्र राक्षसराज विरूपाक्षके पास भेजना (शान्ति० १७० । १४—१६) । धन लेकर लौटे हुए गौतमका सत्कार करना (शान्ति० १७१ । २९-३०) । गौतमद्वारा इसका वध (शान्ति० १७२ । ३) । सुरभिके फेनसे राजधर्माका जीवित होना और विरूपाक्षसे मिलना (शान्ति० १७३ । ३—५) । गौतमको जिलानेके लिये इसका इन्द्रसे अनुरोध (शान्ति० १७३ । ११-१२) । इन्द्रद्वारा अमृतके छिड़के जानेपर गौतमका जीवित होना और राजधर्माका धन आदिसहित गौतमको विदा करके अपने घरमें प्रवेश करना (शान्ति० १७३ । १३—१५) ।

राजधर्मानुशासनपर्व–शान्तिपर्वका एक अवान्तर पर्व (अध्याय १ से १३० तक) ।

राजनी–भारतवर्षकी एक नदी, जिसका जल भारतीय प्रजा पीती है (भीष्म० ९ । २१) ।

राजपुर–(१) काम्बोज देशका प्रसिद्ध नगर, जहाँ कर्णने काम्बोजोंपर विजय पायी थी (द्रोण० ४ । ५) । (२) कलिङ्गराज चित्राङ्गदकी राजधानी, जहाँ राज-कन्याके स्वयंवरमें बहुत-से राजा एकत्र हुए थे (शान्ति० ४ । ३) ।

राजसूयपर्व–सभापर्वका एक अवान्तर पर्व (अध्याय ३३ से ३५ तक) ।

राजसूय–एक महायज्ञ, राजा हरिश्चन्द्रद्वारा इसका अनुष्ठान (सभा० १२ । २३) । राजसूयपर्वमें इसका विशेष वर्णन (सभा० अध्याय ३३ से ३५ तक) । युधिष्ठिर-द्वारा इसका अनुष्ठान (सभा० ४५ अध्याय) । युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञकी विशेषता (सभा० ४५ । ३८ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ८४१—८४३) ।

राजसूयारम्भपर्व–सभापर्वका एक अवान्तर पर्व (अध्याय १३ से १९ तक) ।

रात्रिदेवी–रात्रिकी अधिष्ठात्री देवी । शचीने अपनी मनो-कामना-पूर्तिके लिये इनकी आराधना की थी (उद्योग० १३ । २५—२७) । ये मूर्तिमती होकर स्कन्दके अभिषेक-समारोहमें पधारी थीं (शल्य० ४५ । १५) ।

राधा–अधिरथ सूतकी पत्नी, जिसकी गोदमें अधिरथने बालक कर्णको दिया था (आदि० ६७ । १४०; आदि० ११० । २३) । इसके द्वारा कर्णका नामकरण (आदि० ११० । २४; वन० ३०९ । १०; उद्योग० १४१ । ५-६) ।

राम (रामचन्द्र)–अविनाशी महाबाहु भगवान् विष्णुके अवतारस्वरूप दशरथनन्दन श्रीराम । जगत्की प्रसन्नता बढ़ाने और धर्मकी स्थापनाके लिये श्रीहरिने अपने-आपको चार रूपोंमें विभक्त करके चैत्र शुक्ला नवमीको इस भूतलपर अवतार लिया था, श्रीरामको साक्षात् भूतनाथ श्रीहरिका स्वरूप बताया जाता है । इनका विश्वामित्रके यज्ञमें विघ्न डालनेके कारण सुबाहुका वध करना और मारीचको भी चोट पहुँचाना । विश्वामित्रद्वारा इन्हें देवताओंके लिये दुर्जय दिव्यास्त्रोंका दान । जनकके धनुर्यज्ञमें इनके द्वारा शिवजीके धनुषका भञ्जन । सीता-जीके साथ इनका विवाह । पिताकी आज्ञासे इनका चौदह वर्षके लिये वनवास । इनके द्वारा जनस्थानमें रहकर देवताओंके कार्योंका साधन और वहीं जनहितके लिये चौदह हजार राक्षसोंका वध । राक्षसोंके षड्यन्त्रसे इनकी पत्नी सीताका अपहरण । सुग्रीवके साथ इनकी मित्रता । इनके द्वारा वानरराज वालीका वध और सुग्रीवका राज्याभिषेक । इनका समुद्रपर सेतु बाँधकर लङ्कामें प्रवेश और इनके द्वारा रावणका वध । विभीषणका लङ्काके राज-

पदपर अभिषेक और उन्हें अमरत्व-प्रदान। पुनः दल-बलसहित पुष्पकविमानद्वारा अयोध्यामें आकर धर्मपूर्वक राज्यका पालन। इनकी आज्ञासे शत्रुघ्नद्वारा मथुरानिवासी मधुपुत्र लवणासुरका वध। इनके द्वारा दस अश्वमेध यज्ञका अनुष्ठान। इनके राज्यकी विशेषता (सभा० ३८। २९ के बाद, पृष्ठ ७९४ से ७९५ तक)। सरयूके गोप्रतार तीर्थमें सेवकों-वाहनोंके साथ स्नानकर श्रीराम अपने नित्यधामको पधारे थे (वन० ८४। ७०-७१)। लोमशजीका युधिष्ठिरको इनका चरित्र सुनाना (वन० ९९। ४१—७१)। हनुमान्‌जीद्वारा भीमसेनके प्रति इनके संक्षिप्त चरित्रका वर्णन (वन० १४८ अध्याय)। इनके पिताका नाम दशरथ, माताका नाम कौसल्या तथा पत्नीका नाम सीता था (वन० २७४। ६—९)। ये अपने चार भाइयोंमें ज्येष्ठ थे और बुद्धिमान् थे। अपने मनोहर रूप एवं सुन्दर स्वभावसे समस्त प्रजाको आनन्दित करते थे। सबका मन इन्हींमें रमता था। इसके सिवा ये पिताके मनमें भी आनन्द बढ़ानेवाले थे। पिताके मनमें इन्हें युवराजपदपर अभिषिक्त करनेकी इच्छा हुई; अतः इस विषयमें उन्होंने मन्त्रियों और धर्मज्ञ पुरोहितोंसे सलाह ली। सबने एक स्वरसे उनके इस समयोचित प्रस्तावका अनुमोदन किया (वन० २७७। ६–८)। श्रीरामचन्द्रजीके नेत्र सुन्दर और कुछ-कुछ लाल थे। भुजाएँ बड़ी एवं घुटनोंतक लम्बी थीं। ये मतवाले हाथीके समान मस्तानी चालसे चलते थे। इनकी ग्रीवा शङ्खके समान सुन्दर, छाती चौड़ी और सिरपर काले-काले घुँघराले बाल थे। इनकी देह दिव्य दीप्तिसे दमकती रहती थी। युद्धमें इनका पराक्रम देवराज इन्द्रसे कम नहीं था। ये समस्त धर्मोंके पारंगत विद्वान् और बृहस्पतिके समान बुद्धिमान् थे। सम्पूर्ण प्रजाका इनमें अनुराग था। ये सभी विद्याओंमें प्रवीण तथा जितेन्द्रिय थे। इनका अद्भुत रूप देखकर शत्रुओंके भी नेत्र और मन लुभा जाते थे। ये दुष्टोंका दमन करनेमें समर्थ, धर्मात्माओंके संरक्षक, धैर्यवान्, दुर्धर्ष, विजयी तथा अपराजित थे। कौसल्यानन्दन श्रीरामको देखकर पिता दशरथके मनमें बड़ी प्रसन्नता होती थी (वन० २७७। ९—१३)। मन्थराके बहकानेसे कैकेयीका राजा दशरथसे भरतके राज्याभिषेक और श्रीरामके वनवासका वर माँगना (वन० २७७। १६—२६)। पिताके सत्यकी रक्षाके लिये इनका लक्ष्मण और सीताके साथ वन-गमन (वन० २७७। २८-२९)। इनके वियोगमें राजा दशरथका देहत्याग (वन० २७७। ३०)। श्रीराम-लक्ष्मणके वनमें चले जानेसे कैकेयीका अयोध्याके राज्यको निष्कण्टक मानकर उसे भरतके हाथोंमें सौंपना। भरतका कैकेयीको फटकारकर भाई श्रीरामका अनुसरण करना और उन्हें लौटा लानेकी इच्छासे ऋषियों, ब्राह्मणों तथा नगर और जनपदके लोगोंके साथ चित्रकूट जाकर श्रीरामका दर्शन करना (वन० २७७। ३१—३८)। श्रीरामकी आज्ञासे भरतका वहाँसे लौटना और इनकी चरण-पादुकाओंको आगे रखकर नन्दिग्राममें रहते हुए राज्यकी देख-भाल करना (वन० २७७। ३९)। नगर और जनपदके लोगोंके पुनरागमनकी आशङ्कासे इनका घोर वनमें प्रवेश करके शरभंग मुनिके आश्रमपर जाना, वहाँ इनकी शरभंग मुनिसे भेंट और उनका सत्कार करके इनका दण्डकारण्यमें गोदावरीके तटपर जाकर रहना (वन० २७७। ४०-४१)। इनका शूर्पणखाके कारण जनस्थाननिवासी खरके साथ महान् वैर ठन जाना (वन० २७७। ४२)। वहाँ इनके द्वारा तपस्वी मुनियोंकी रक्षाके लिये खर-दूषण आदि चौदह सहस्र राक्षसोंका वध (वन० २७७। ४४)। श्रीरामके भयसे ही गोकर्णतीर्थमें मारीचकी तपस्या (वन० २७७। ५६)। मारीचका रावणको श्रीरामसे भिड़नेका निषेध करना और श्रीरामको ही अपने संन्यासीपनका कारण बताना (वन० २७८। ६—८)। मारीचका मृगरूप धारण करके सीताके सामने जाना, सीताका उसे मार लानेके लिये श्रीरामको प्रेरित करना और सीताका प्रिय करनेके लिये लक्ष्मणको उनकी रक्षामें नियुक्त करके श्रीरामका धनुष-बाण ले उस मृगके पीछे जाना (वन० २७८। १७—२०)। श्रीरामद्वारा मृगरूपधारी मारीचको पहचानकर उसका वध (वन० २७८। २१-२२)। रावणद्वारा इनकी पत्नी सीताका अपहरण (वन० २७८। ४२–४४)। श्रीरामका सीताको अकेली छोड़कर चले आनेके कारण लक्ष्मणको कोसना और आश्रमकी ओर शीघ्रतापूर्वक जाना। मार्गमें पर्वताकार जटायुको गिरा देख उन्हें राक्षस समझकर लक्ष्मणसहित श्रीरामका धनुष खींचकर उनपर धावा करना और उनके द्वारा अपना परिचय देनेपर उनके निकट जा उनकी दुर्दशाको प्रत्यक्ष देखना, 'श्रीसीताको छुड़ानेके लिये युद्ध करते समय मैं रावणके हाथसे मारा गया हूँ और वह दक्षिण दिशाको गया है'—यह संकेतसे बताकर जटायुका श्रीरामके सामने ही प्राण-त्याग करना। इनके द्वारा जटायुका अन्त्येष्टि-संस्कार (वन० २७९। १४—२४)। इनके द्वारा कबन्धकी बायीं भुजाका छेदन (वन० २७९। ३६-३७)। कबन्धका विश्वावसु गन्धर्वके रूपमें परिणत हो श्रीरामको अपना परिचय देना और पंपा सरोवरके निकट ऋष्यमूक पर्वतपर निवास करनेवाले सुग्रीवके साथ मैत्री स्थापित करनेकी सलाह देकर उसका वहाँसे अन्त-

धान हो जाना (वन० २७९ । ४०–४८) । पंपा-सरोवरपर जाकर श्रीरामका सीताके लिये विलाप और लक्ष्मणका उन्हें सान्त्वना देना (वन० २८० । १–६) । इनका पंपा-सरोवरमें स्नान करके पितरोंका तर्पण करना और ऋष्यमूकके पास जा उसके शिखरपर बैठे हुए पाँच वानरोंको देखना (वन० २८० । ८-९) । हनुमान्‌जीसे भेंट और वार्तालापके पश्चात् इनकी सुग्रीवके साथ मित्रता और उनसे अपना कार्य निवेदन करना । सुग्रीवका सीताके गिराये हुए वस्त्रको इन्हें दिखाना (वन० २८० । १०–१२) । श्रीरामका सुग्रीवको वानरराजके पदपर अभिषिक्त करना तथा वालीको मार गिरानेकी प्रतिज्ञा करना । सुग्रीवका भी सीताको ढूँढ़ लानेका विश्वास दिलाना (वन० २८० । १३-१४) । इनके द्वारा वालीका वध (वन० २८० । ३५–३८) । इनका वर्षाके चार मासतक माल्यवान्‌के सुन्दर पृष्ठ-भागपर निवास करना (वन० २८० । ४०) । इनका सुग्रीवपर कोप (वन० २८२ । ५–११) । लक्ष्मणका सुग्रीवको साथ लेकर माल्यवान् पर्वतके शिखरपर श्रीरामके पास आना और उनके द्वारा किये जानेवाले सीताके अनुसंधान-कार्यकी सूचना देना (वन० २८२ । २२) । श्रीहनुमान्‌जीका लंकासे लौटकर श्रीरामको वहाँका वृत्तान्त एवं सीताका कुशल-समाचार सुनाना (वन० २८२ । ३७—७१) । श्रीरामके पास विभिन्न देशोंसे विशाल वानर-सेनाओंसहित वानर-यूथपतियोंका आगमन (वन० २८३ । १—१३) । शुभ-मुहूर्तमें सेनासहित श्रीरामका लंकाको प्रस्थान (वन० २८३ । १४-१५) । श्रीरामका समुद्रसे पार होनेके लिये वानरोंसे उपाय पूछना और समुद्रकी आराधनाका निश्चय करके उसके तटपर धरना देना (वन० २८३ । २३—३२) । स्वप्नमें समुद्रका श्रीरामचन्द्रजीको दर्शन देकर उन्हें नलके द्वारा सेतु बाँधकर उसीसे सेनासहित पार जानेका परामर्श देना (वन० २८३ । ३३—४२) । श्रीरामका नलको आदेश देकर समुद्रपर सौ योजन लम्बा और दस योजन चौड़ा पुल तैयार कराना (वन० २८३ । ४३–४५) । इनके पास सचिवोंसहित विभीषणका आगमन तथा श्रीरामका चरित्र और चेष्टाओंद्वारा उन्हें शुद्ध पाकर उनपर संतुष्ट होना, उन्हें राक्षसोंके राज्यपर अभिषिक्त करना, सलाहकार बनाना और उन्हींकी रायसे महासागरको पार करना (वन० २८३ । ४६–५०) । इनका लंकाकी सीमामें पहुँचकर वहाँके उद्यानोंको नष्ट-भ्रष्ट करना, विभीषणकी कैदमें पड़े हुए शुक और सारणको अपनी सेनाका दर्शन कराकर छोड़ना और अङ्गदको रावणके दरबारमें दूत बनाकर भेजना (वन० २८३ । ५१—५४) । अङ्गदका रावणके पास जाकर श्रीरामका संदेश सुनाना और वहाँसे लौटकर श्रीरामको वहाँकी सारी बातें बताकर इनके द्वारा प्रशंसित होना (वन० २८४ । १—२२) । इनके द्वारा निशाचरोंका संहार (वन० २८४ । ३९) । श्रीराम और रावणकी सेनाओंका द्वन्द्वयुद्ध (वन० २८५ अध्याय) । इन्द्रजित्‌द्वारा किये गये मायामय युद्धमें लक्ष्मणसहित श्रीरामकी मूर्च्छा (वन० २८८ अध्याय) । इनका सचेत होकर कुबेरके भेजे हुए अभिमन्त्रित जलसे प्रमुख वानरोंसहित अपने नेत्र धोना (वन० २८९ । १—१४) । श्रीराम और रावणका युद्ध तथा इनके द्वारा रावणका वध (वन० २९० अध्याय) । सीताके प्रति श्रीरामका संदेह; इनके पास ब्रह्मा, इन्द्र, अग्नि, वायु, यम, वरुण, कुबेर, सप्तर्षिगण तथा स्वर्गीय महाराज दशरथका आगमन, सीताका इनके समक्ष आत्मशुद्धिके लिये शपथ खाना, वायु-अग्नि आदि देवताओंका इनके सामने सीताकी शुद्धिका समर्थन करना, दशरथका इन्हें अयोध्या जाकर राज्य-शासन करनेकी आज्ञा देना, श्रीरामका देवताओंको नमस्कार करके अपनी पत्नी सीतासे मिलना, अविन्ध्यको वरदान और त्रिजटाको धन एवं सम्मान देकर संतुष्ट करना (वन० २९१ । १—४१) । ब्रह्माजीके दिये हुए वरसे श्रीरामका मरे हुए वानरोंको जिलाना, मातलिका इन्हें वर देना और श्रीरामका पुष्पकविमानद्वारा दलबलसहित किष्किन्धामें पधारकर सुग्रीवका राज्याभिषेक करके अङ्गदको युवराज-पदपर प्रतिष्ठित करना तथा अयोध्यामें लौटकर भरतसे मिलना एवं राज्यपर अभिषिक्त होना (वन० २९१ । ४२–६६) । राज्याभिषेकके बाद श्रीरामका सुग्रीव और विभीषणको सादर विदा करना, पुष्पकविमानको कुबेरके पास लौटा देना और गोमतीके तटपर (नैमिषारण्यमें) दस अश्वमेध यज्ञोंका अनुष्ठान करना (वन० २९१ । ६७–७०) । सृंजयको समझाते हुए नारदजीका इनके चरित्रका वर्णन करना (द्रोण० ५९ अध्याय) । श्रीकृष्णद्वारा इनके राज्य आदिका वर्णन (शान्ति० २९ । ५१–६२) । गोदान-महिमाके प्रसंगमें इनका नाम-निर्देश (अनु० ७६ । २६) । इनके द्वारा मांस-भक्षण-निषेध (अनु० ११५ । ६४) । इनके यज्ञमें धन-दानका वर्णन (अनु० १३७ । १४) ।

महाभारतमें आये हुए रामके नाम—अयोध्याधिपति, दशरथपुत्र, दशरथात्मज, दाशरथि, इक्ष्वाकुनन्दन, काकुत्स्थ, कौसल्यानन्दिवर्धन, कौसल्यामातः, कोसलेन्द्र, लक्ष्मणाग्रज, राघव आदि ।

रामक—एक पर्वत, जिसे दक्षिण-दिग्विजयके समय सहदेवने अपने अधिकारमें कर लिया था (सभा० ३१ । ६८)

रामठ–पश्चिम दिशामें निवास करनेवाली एक म्लेच्छ जाति, जिसे नकुलने पश्चिम-दिग्विजयके समय आज्ञामात्रसे ही अपने अधीन कर लिया था (सभा० ३२ । १२)। इस जातिके लोग युधिष्ठिरके राजसूय-यज्ञमें बुलाये गये थे—इसकी चर्चा (वन० ५१ । २५)।

रामणीयक–एक द्वीप, जो नागोंका निवासस्थान है (आदि० २६ । ८)। इसके वन आदिका विशेष वर्णन (आदि० २७ । १—९)।

रामतीर्थ–(१) गोमती नदीका एक तीर्थ, जिसमें स्नान करके मनुष्य अश्वमेध यज्ञका फल पाता और अपने कुलको पवित्र कर देता है (वन० ८४ । ७३)। (२) परशुराम-सेवित महेन्द्रपर्वतपर स्थित एक तीर्थ, जिसमें स्नान करनेसे अश्वमेध यज्ञका फल मिलता है (वन० ८५ । १७)। (३) सरस्वती-तटवर्ती एक तीर्थ; इसका विशेष वर्णन (शल्य० ४९ । ७–११)।

रामह्रद–कुरुक्षेत्रकी सीमाका निर्धारण करनेवाला एक ह्रद (शल्य० ५३ । २४)। इसमें काशिराजकी कन्या अम्बाने स्नान किया था (उद्योग० १८६ । २८)।

रामोपाख्यानपर्व–वनपर्वका एक अवान्तर पर्व (अध्याय २७३ से २९२ तक)।

रावण–एक राक्षसराज, जो अत्यन्त दुरात्मा था और सीताजीको हर ले गया था (वन० १४७ । ३३-३४)। यह विश्रवाका पुत्र था। इसकी माताका नाम पुष्पोत्कटा था। इसीका छोटा भाई कुम्भकर्ण था (वन० २७५ । ७)। इसकी अद्भुत तपस्या और ब्रह्माजीसे इसका वर माँगना (वन० २७५ । १६—२५)। इसे कुबेरका शाप (वन० २७५ । ३४-३५)। मारीचके पास जाकर उसे कपटमृग बननेके लिये बाध्य करना (वन० २७८ । ९)। इसके द्वारा सीताजीका अपहरण (वन० २७८ । ४३)। इसके द्वारा जटायुके पंखोंका काटा जाना (वन० २७९ । ६)। इसे नलकूबरके शापकी चर्चा (वन० २८० । ५७–६१)। इसका सीताजीको अपने अनुकूल होनेके लिये समझाना (वन० २८१ अध्याय)। अङ्गदका रावणको श्रीरामके संदेश सुनाना (वन० २८४ । १०–१६)। इसका कुम्भकर्णको युद्धके लिये जगाना (वन० २८६ । २०)। इन्द्रजित्को युद्धके लिये भेजना (वन० २८८ । २)। सीताजीको मार डालनेके लिये उद्यत होना (वन० २८९ । २७)। श्रीरामद्वारा इसका वध (वन० २९० । ३०)।

महाभारतमें आये हुए रावणके नाम–दशग्रीव, दशकन्धर, दशानन, दशास्य, पौलस्त्य, पौलस्त्यतनय, रक्षःपति, रक्षः, राक्षस, राक्षसाधिप, राक्षसाधिपति, राक्षसश्रेष्ठ, राक्षसमहेश्वर, राक्षसपति, राक्षसपुङ्गव, राक्षसराज, राक्षसेश्वर, राक्षसेन्द्र आदि।

राहु–कश्यपद्वारा सिंहिकाके गर्भसे उत्पन्न (आदि० ६५ । ३१)। इसके द्वारा कपटपूर्वक अमृतका पान और भगवान् विष्णुके द्वारा इसका शिरश्छेदन (आदि० १९ । ४–६)। चन्द्रमा तथा सूर्यके साथ इसका वैर (आदि० १९ । ९)। ब्रह्माजीकी सभामें बैठनेवाले ग्रहोंके साथ इसका भी नाम आया है (सभा० ११ । २९)। धृतराष्ट्रके प्रति संजयद्वारा इसका विशेष वर्णन (भीष्म० १२ । ४०–४३)।

रुक्मरथ–(१)मद्रराज शल्यका पुत्र, जो अपने पिता और भाई रुक्माङ्गदके साथ द्रौपदी-स्वयंवरमें आया था (आदि० १८५ । १४)। इसका श्वेतके साथ युद्ध और उसके बाणोंसे मूर्च्छित होना (भीष्म० ४७ । ४८—५९)। अभिमन्युके साथ इसका युद्ध और उनके द्वारा वध (द्रोण० ४५ । ९–१३)। सहदेवके हाथसे इसके मारे जानेकी चर्चा (कर्ण० ५ । २६)। (२) सुवर्णमय रथपर चलनेके कारण द्रोणाचार्यका एक नाम रुक्मरथ भी था (विराट० ५८ । २)। (३) कौरवपक्षके त्रिगर्तदेशीय राजकुमारोंके एक दलका नाम, जिसने कर्णकी आज्ञासे अर्जुनपर आक्रमण किया था (द्रोण० ११२ । १९—२५)।

रुक्माङ्गद–मद्रराज शल्यका पुत्र, जो अपने पिता और भाई रुक्मरथके साथ द्रौपदी-स्वयंवरमें आया था (आदि० १८५ । १४)।

रुक्मिणी–नारायण-स्वरूप भगवान् श्रीकृष्णको आनन्द प्रदान करनेके लिये भूतलपर विदर्भराज भीष्मकके कुलमें उत्पन्न हुई लक्ष्मी (आदि० ६७ । १५६)। शिशुपाल इन्हें चाहता था, परंतु न पा सका (सभा० ४५ । १५)। इनका लक्ष्मीसे उनके निवासयोग्य स्थान पूछना (अनु० ११ । ४)। इनके पुत्रोंके नाम—चारुदेष्ण, सुचारु, चारुवेश, यशोधर, चारुश्रवा, चारुयशा, प्रद्युम्न, शम्भु (अनु० १४ । ३३-३४)। महर्षि दुर्वासाद्वारा इनका रथमें जोता जाना (अनु० १५९ । २८–३५)। प्रसन्न हुए दुर्वासाद्वारा इन्हें वर-प्राप्ति (अनु० १५९ । ४५–४७)। श्रीकृष्णरहित द्वारका और श्रीकृष्णपत्नियोंको देखकर फूट-फूटकर रोते हुए अर्जुन जब मूर्च्छित होकर पृथ्वीपर गिर पड़े, तब रुक्मिणी आदि रानियाँ वहाँ दौड़ी आयीं और अर्जुनको घेरकर उच्चस्वरसे विलाप करने लगीं। उन्होंने अर्जुनको उठाकर उन्हें सोनेकी चौकीपर बिठाया। उन्हें घेरकर वे चुपचाप बैठ गयीं (मौसल० ५ । १२–१४)। रुक्मिणीने पतिलोककी प्राप्तिके लिये अग्निमें प्रवेश किया था (मौसल० ७ । ७३)। महाबाहु विश्वकर्माने इन्द्रकी प्रेरणासे भगवान् पद्मनाभके लिये जिस

मनोहर प्रासादका निर्माण किया है, उसका विस्तार सब ओरसे एक-एक योजनका है, उसके ऊँचे शिखरपर सुवर्ण मढ़ा गया है, जिससे वह मेरु पर्वतके उत्तुङ्ग शृङ्गकी शोभा धारण कर रहा है। वह प्रासाद महात्मा विश्वकर्माने महारानी रुक्मिणीके रहनेके लिये बनाया है। यह इनका सर्वोत्तम निवास है (सभा० ३८ । २८ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ८१४, कालम २)।

रुक्मी–एक श्रेष्ठ नरेश, जो क्रोधवशसंज्ञक दैत्यके अंशसे उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७ । ६२)। (यह विदर्भदेशीय भोजकट नगरका राजा, भीष्मकका पुत्र और रुक्मिणीका भाई था।) यह भोजकटका निवासी था, सहदेवके दिग्विजयके समय इसने प्रेमपूर्वक उनका शासन स्वीकार किया था (सभा० ३१ । ६२-६३)। कर्णकी दिग्विजयके समय इसका उसे कर देना (वन० २५४ । १४)। पाण्डवोंकी ओरसे इसको रणनिमन्त्रण भेजनेका निश्चय किया गया था (उद्योग० ४ । १६)। इसके पिता दाक्षिणात्य देशके अधिपति और साक्षात् इन्द्रके सखा महामना भीष्मक थे, जिन्हें हिरण्यरोमा भी कहते हैं। रुक्मी सम्पूर्ण दिशाओंमें विख्यात था। इसने गन्धमादननिवासी किंपुरुषप्रवर द्रुमका शिष्य होकर चारों पादोंसे युक्त सम्पूर्ण धनुर्वेदकी शिक्षा प्राप्त की थी। इसे इन्द्रदेवताका तेजस्वी विजय नामक धनुष प्राप्त हुआ था, जो गाण्डीव और शार्ङ्गधनुषके समान ही तेजस्वी था। यह धनुष उसे अपने गुरुदेव द्रुमसे ही प्राप्त हुआ था। इसने पूर्वकालमें श्रीकृष्णद्वारा किये गये अपनी बहन रुक्मिणीके अपहरणको सहन न कर सकनेके कारण यह प्रतिज्ञा की थी कि मैं श्रीकृष्णको मारे बिना अपने नगरको नहीं लौटूँगा। परंतु भगवान् श्रीकृष्णके पास पहुँचकर यह उनसे पराजित हो गया, अतः लज्जावश पुनः कुण्डिनपुरको नहीं लौटा। जहाँ उसकी पराजय हुई, वहीं उसने भोजकट नामक नगर बसाया और उसीमें वह समस्त परिवारके साथ रहने लगा (उद्योग० १५८ । १—१६)। यह एक अक्षौहिणी सेनासे घिरा हुआ पाण्डवोंके पास आया। इसके मनमें श्रीकृष्णका प्रिय करनेकी इच्छा थी। पाण्डवोंको इसकी सूचना मिली और युधिष्ठिरने आगे बढ़कर इसकी अगवानी की। आदर-सत्कारके पश्चात् इसने विश्राम किया। तदनन्तर इसने अर्जुनसे कहा—'यदि तुम डरे हुए हो तो मैं तुम्हारी सहायताके लिये आ पहुँचा हूँ।' अर्जुनने हँसकर इसकी सहायता लेनेसे इनकार कर दिया। तब इसने दुर्योधनके पास जाकर वहाँ भी यही बात कही। वीर मानी दुर्योधनने इसकी सहायताको ठुकरा दिया और यह सकुशल अपने घरको लौट गया (उद्योग० १५८ । १७—३९)। यह कलिङ्गराज चित्राङ्गदकी कन्याके स्वयंवरमें गया था (शान्ति० ४ । ७)।

रुचि–(१) अलकापुरीकी एक अप्सरा, जिसने अष्टावक्रके स्वागतके अवसरपर कुबेर-भवनमें नृत्य किया था (अनु० १९ । ४४)। (२) महर्षि देवशर्माकी पत्नी, जो अनुपम सुन्दरी थी। इन्द्र इसपर आसक्त हो गये थे। (अनु० ४० । १७-१८)। इसकी रक्षाका भार अपने शिष्य विपुलको सौंपकर देवशर्माका यज्ञके लिये बाहर जाना (अनु० ४० । २१—४१)। विपुलका योगद्वारा रुचिके शरीरमें प्रवेश करना (अनु० ४० । ५८–६०)। कामासक्त इन्द्रका रुचिके पास आना और अपना परिचय देना (अनु० ४१ । २—८)। विपुलद्वारा इन्द्रसे रुचिकी रक्षा और देवशर्माके लौटनेपर रुचिको उन्हें सौंपना (अनु० ४१ । २७–२९)। उसका अपनी बहिन प्रभावतीके यहाँ, जो अङ्गराजकी पत्नी थी, जाते समय मार्गमें किसी देवसुन्दरीकी वेणीसे गिरे हुए सुगन्धित पुष्पको अपनी वेणीमें गूँथकर जाना और उस पुष्पको देखकर प्रभावतीका वैसे ही पुष्प मँगवा देनेके लिये इससे अनुरोध करना (अनु० ४२ । ५–१०)। इसका आश्रमपर लौटकर देवशर्मासे वैसे ही पुष्प मँगा देनेके लिये आग्रह करना (अनु० ४२ । ११)। पतिके साथ इसका स्वर्गलोकमें जाना (अनु० ४३ । १७)।

रुचिपर्वा–राजा आकृतिका पुत्र, जिसने भीमसेनकी रक्षाके लिये भगदत्तके हाथीपर आक्रमण किया और भगदत्तद्वारा मारा गया (द्रोण० २६ । ५१–५३)।

रुचिप्रभ–एक राक्षस, जो प्राचीनकालमें इस पृथ्वीका शासक था, परंतु कालके वश होकर इसे छोड़ परलोकवासी हो गया था (शान्ति० २२७ । ५२)।

रुद्र–महादेवजीका एक नाम (उद्योग० ११७ । १०)। (विशेष देखिये शिव)

रुद्रकोटि–यह वह स्थान है, जहाँ शिवजीके दर्शनकी अभिलाषासे करोड़ों मुनि एकत्र हुए थे और उनपर प्रसन्न होकर शिवजीने करोड़ों शिवलिङ्गोंके रूपमें उन्हें दर्शन दिया था। यहाँ स्नान करनेसे अश्वमेध यज्ञका फल मिलता है और कुलका उद्धार हो जाता है (वन० ८२ । ११८—१२४; वन० ८३ । ७७)।

रुद्रपद–एक तीर्थ, जहाँ जाकर शिवजीकी पूजा करनेसे अश्वमेध यज्ञका फल प्राप्त होता है (वन० ८२ । १००)।

रुद्रमार्ग–एक तीर्थ, यहाँ जाकर एक दिन-रात उपवास

करनेसे यात्री इन्द्रलोकमें प्रतिष्ठित होता है (वन० ८३ । १८१-१८२) ।

रुद्ररोमा-स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । ७) ।

रुद्रसूनु-कार्तिकेयका एक नाम और इस नामकी निरुक्ति (वन० २२९ । २७) ।

रुद्रसेन-युधिष्ठिरका सम्बन्धी और सहायक एक राजा (द्रोण० १५८ । ३९) ।

रुद्राणी-पार्वतीजीका एक नाम (उद्योग० ११७ । १०) । (विशेष देखिये पार्वती)

रुद्राणीरुद्र-एक तीर्थ, जहाँ उत्तर दिशाको जाते हुए अष्टावक्र मुनि पधारे थे (अनु० १९ । ३१) ।

रुद्रावर्त-एक तीर्थ, जहाँ स्नान करनसे स्वर्गलोककी प्राप्ति होती है (वन० ८४ । ३७) ।

रुमण्वान्-जमदग्निद्वारा रेणुकाके गर्भसे उत्पन्न ज्येष्ठ पुत्र, इनके चार भाई और थे । जिनके नाम हैं—सुषेण, वसु, विश्वावसु और परशुराम । इन्हें माताका वध करनेके लिये पिताने आज्ञा दी; परंतु इन्होंने उसका पालन नहीं किया, जिससे कुपित होकर महर्षि जमदग्निने इन्हें शाप दे दिया । शापवश ये मृग-पक्षियोंकी भाँति जड-बुद्धि हो गये (वन० ११६ । १०-१२) । परशुरामजीने पिताको प्रसन्न करके इन्हें शापमुक्त कराया (वन० ११६ । १७-१८) ।

रुरु-एक ऋषिकुमार, जो महर्षि च्यवनके पौत्र तथा प्रमतिके पुत्र थे । घृताची नामकी अप्सराके गर्भसे इनका जन्म हुआ था (आदि० ५ । ९; अनु० ३० । ६४) । सर्पदंशनसे मरी हुई अपनी प्रेयसी प्रमद्वराके लिये इनका विलाप करना । उसे अपनी आधी आयु देकर जीवित करना तथा उसके साथ इनका विवाह होना (आदि० ८ । २६ से ९ । १८तक) । इनका सर्पजातिसे द्वेष, डुण्डुभके साथ संवाद एवं इनके प्रति डुण्डुभके द्वारा अहिंसा एवं वर्णधर्मोंका संक्षिप्त उपदेश (आदि० ९ । १९ से ११ अध्यायके अन्ततक) । सर्पसत्रके विषयमें इनकी जिज्ञासा तथा पिताद्वारा उसका समाधान (आदि० १२ अध्याय) ।

रुषंगु-एक ऋषि, जिनके आश्रमपर आर्ष्टिषेण मुनिने घोर तपस्या की थी और विश्वामित्रको यहीं ब्राह्मणत्वकी प्राप्ति हुइ थी । अन्त समयमें ये अपने पुत्रोंद्वारा पृथूदक तीर्थमें आये और वहाँ इन्होंने ऐसी गाथा गायी कि जो सरस्वती-के उत्तर तटपर पृथूदक तीर्थमें जप करते शरीरका परित्याग करता है, उसे फिर मृत्युका कष्ट नहीं भोगना पड़ता (शल्य० ३९ । २४—३४) ।

रुषद्रु-एक प्राचीन राजा, जो यमराजकी सभामें रहकर उनकी उपासना करते हैं (सभा० ८ । १३) ।

रुषर्द्धिक-सुराष्ट्र-वंशी एक कुलाङ्गार राजा (उद्योग० ७४ । १४) ।

रुहा-नागमाता सुरसाकी पुत्री, इसकी दो बहिनें और हैं, जिनके नाम हैं—अनला और वीरुधा । जो वृक्ष फूलसे फल ग्रहण करते हैं, वे सभी इसकी संतान हैं (आदि० ६६ । ७० के बाद दा० पाठ) ।

रूपवाहिक-एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ४३) ।

रूपिण-ये सम्राट् अजमीढ़के द्वारा केशिनीके गर्भसे उत्पन्न हुए थे । इनके दो भाई और थे, जिनके नाम हैं—जह्नु और व्रजन (आदि० ९४ । ३२) ।

रेणुक-एक रसातल-निवासी अत्यन्त शक्तिशाली और सत्त्व एवं पराक्रमसे युक्त नाग, जिसने देवताओंके भेजनेसे दिग्गजोंके पास जाकर धर्मके विषयमें प्रश्न किया (अनु० १३२ । २-६) ।

रेणुका-(१) मुनिवर जमदग्निकी पत्नी एवं परशुरामजीकी माता (वन० ९९ । ४२) । इनके गर्भसे रुमण्वान्, सुषेण, वसु, विश्वावसु और परशुरामका जन्म (वन० ११६ । ४) । इनपर कुपित हुए पिताकी आज्ञासे परशुराम-द्वारा इनका वध (वन० ११६ । १४) । जमदग्निके वरसे इनका पुनरुज्जीवन (वन० ११६ । १७-१८) । महर्षि जमदग्निके चलाये हुए बाणोंको इनका उठा-उठाकर लाना (अनु० ९५ । ७—१५) । एक बार लौटनेमें विलम्ब होनेपर इनका पतिको इसका कारण बताना (अनु० ९५ । १६-१७) । **रेणुका**-(२) एक सिद्धसेवित तीर्थ, जिसमें स्नान करके ब्राह्मण चन्द्रमाके समान निर्मल होता है (वन० ८२ । ८२) । (३) कुरुक्षेत्रकी सीमाके अन्तर्गत एक तीर्थ, जहाँ स्नान आदि करनेसे तीर्थयात्री सब पापोंसे मुक्त हो अग्निष्टोम यज्ञका फल पाता है (वन० ८३ । १५९-१६०) ।

रेवती-(१) बलरामजीकी पत्नी (आदि० २१८ । ७) । (२) अदिति देवीका एक नाम (वन० २३० । २९) । (३) सत्ताईस नक्षत्रोंमेंसे एक (भीष्म० ११ । १८) । कार्तिक मासके रेवती नक्षत्रमें मैत्र नामक मुहूर्त उपस्थित होनेपर श्रीकृष्णने यात्रा आरम्भ की (उद्योग० ८३ । ६-७) । जो रेवती नक्षत्रमें कांस्यके दुग्धपात्रसे युक्त धेनुका दान करता है, वह धेनु परलोकमें सम्पूर्ण भोगोंको लेकर उस दाताकी सेवामें उपस्थित होती है (अनु० ६४ । ३३) । रेवतीमें श्राद्ध करनेवाला पुरुष

सोने चाँदीके सिवा अन्य नाना प्रकारके धन पाता है (अनु० ८९ । १४) । चान्द्रव्रतमें रेवतीको चन्द्रमाका नेत्र मानकर उनके उस अङ्गकी पूजाका विधान है (अनु० ११० । ५) ।

रैभ्य-(१) एक ऋषि, जो युधिष्ठिरकी सभामें विराजमान होते थे (सभा० ४ । १६) । ये भरद्वाज मुनिके सखा थे। इनके दो पुत्र थे-अर्वावसु और परावसु। पुत्रोंसहित रैभ्य बड़े विद्वान् थे—(वन० १३५ । १२-१४) । भरद्वाजका यवक्रीतको रैभ्य मुनिके पास जानेसे रोकना (वन० १३५ । ५७-५८) । इनका यवक्रीतपर कुपित हो अपनी जटाकी आहुतिद्वारा एक कृत्या और एक राक्षस उत्पन्न करना तथा उन्हें यवक्रीतको मार डालनेका आदेश देना (वन० १३६ । ८-१२) । भरद्वाज मुनिका इन्हें अपने ज्येष्ठ पुत्रके हाथसे मारे जानेका शाप देना (वन० १३७ । १५) । अपने पुत्र परावसुद्वारा हिंसक पशुके धोखेमें इनकी मृत्यु (वन० १३८ । ६) । अपने दूसरे पुत्र अर्वावसुके प्रयत्नसे इनका पुनरुजीवन (वन० १३८ । २०—२३) । ये अङ्गिराके पुत्र थे (शान्ति० २०८ । २६-२७) । इनका उपरिचर वसुके यज्ञमें सदस्य होना (शान्ति० ३३६ । ७) । प्रयाणके समय भीष्मजीको देखने आये थे (अनु० २६ । ६)। (२) एक मुनि, जिन्हें वीरणसे सात्वत धर्मका उपदेश प्राप्त हुआ था और जिन्होंने अपने पुत्र दिक्पाल कुक्षिको इस धर्मकी शिक्षा दी थी (शान्ति० ३४८ । ४२-४३) ।

रैवत-(१) रेवतीके ग्रहका नाम (वन० २३० । २९) । (२) एक प्राचीन राजा, जो दक्षिण दिशामें स्थित मन्दराचलके कुञ्जोंमें गन्धर्वोंद्वारा गायी जानेवाली गाथाओंके रूपमें सामगान सुनते-सुनते इतने तन्मय हो गये कि अपनी स्त्री, मन्त्री तथा राज्यसे भी वियुक्त हो वनमें जानेको विवश हुए (उद्योग० १०९ । ९-१०) । इन्हें मरुत्तसे और इनसे युवनाश्वको खड्गकी प्राप्ति हुई (शान्ति० १६६ । ७७-७८) । इनके द्वारा मांस-भक्षणका निषेध (अनु० ११५ । ६३) । ये सायं-प्रातः कीर्तन करनेयोग्य नरेश हैं (अनु० १६५ । ५३)। (३) ग्यारह रुद्रोंमेंसे एक (शान्ति० २०८ । १९) ।

रैवतक-(१) (गुजरातका एक पर्वत, जो आधुनिक जूनागढ़के पास है और 'गिरनार' कहा जाता है। इसीको महाभारतमें 'उज्जयन्त गिरि' कहा गया है। यह प्रभासक्षेत्रसे अधिक दूर नहीं है।) श्रीकृष्ण और अर्जुन प्रभास क्षेत्रमें घूम-फिरकर इसी पर्वतपर चले आये थे (आदि० २१७ । ८) । यहाँ यदुवंशियोंका महान् उत्सव हुआ था (आदि० २१८ । १—१२) । सुभद्राने इसकी परिक्रमा की । इसी उत्सवके अवसरपर यहाँसे अर्जुनद्वारा सुभद्राका अपहरण हुआ (आदि० २१९ । ६-७) । (२) शाकद्वीपका एक पर्वत (भीष्म० ११ । १८) ।

रोचनामुख-एक दैत्य, जो गरुडद्वारा मारा गया था (उद्योग० १०५ । १२) ।

रोचमान-(१) एक क्षत्रिय राजा, जो अश्वग्रीव नामक महान् असुरके अंशसे उत्पन्न हुए थे (आदि० ६७ । १८) । द्रौपदीके स्वयंवरमें इनका शुभागमन हुआ था (आदि० १८५ । १०) । (यह भी सम्भव है कि कोई दूसरे रोचमान वहाँ पधारे हों ।) ये अश्वमेध देशके राजा थे, इन्हें भीमसेनने अपनी दिग्विजयके समय परास्त किया था (सभा० २९ । ८) । इन्हें ही पाण्डवोंकी ओरसे रणनिमन्त्रण भेजनेका विचार किया गया था (उद्योग० ४ । १२) । ये पाण्डवपक्षके महारथी वीर थे (उद्योग० १७२ । १) । इन्हें ताराओंसे चित्रित अन्तरिक्षके समान चितकबरे घोड़ोंने युद्धभूमिमें पहुँचाया था (द्रोण० २० । ४७) । इनका कर्णके साथ युद्ध और उसके द्वारा घायल होना (कर्ण० ५६ । ४५—४७) । (प्रकरण देखनेसे ये पाञ्चालदेशीय, चेदिदेशीय अथवा किसी अन्य देशके निवासी भी सिद्ध होते हैं।) इनका कर्णद्वारा वध (कर्ण० ५६ । ४९) । (२) एक उरगावासी नरेश, जिन्हें अर्जुनने दिग्विजयके समय परास्त किया था (सभा० २७ । १९)। (३) ये रोचमान नामके ही दो भाई थे; द्रोणाचार्यद्वारा इनके मारे जानेकी चर्चा (कर्ण० ६ । २०-२१) ।

रोचमाना-स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । २९) ।

रोमक-एक भारतीय जनपद और वहाँके निवासी, ये युधिष्ठिरके लिये भेंट-सामग्री लेकर आये थे (सभा० ५१ । १७) ।

रोहिणी-(१) क्रोधवशा-कुमारी सुरभिकी पुत्री (गौ) । इसकी विमला और अनला नामकी दो कन्याएँ थीं। इससे गाय-बैलोंकी उत्पत्ति हुई (सभा० ६६ । ६०—६८) । (२) चन्द्रमाकी पत्नी (आदि० १९८ । ५) । प्रजापति दक्षकी नक्षत्रसंज्ञक सत्ताईस कन्याओंमें यह प्रमुख थी और अपने रूप-वैभवसे अन्य सब बहिनोंकी अपेक्षा विशेष बढ़ी-चढ़ी थी; इसीलिये पतिकी हृदयवल्लभा हो गयी थी (शल्य० ३५ । ४५-४८) । इसे असि (खड्ग) का गोत्र कहा गया है (शान्ति० १६६ । ८२) । रोहिणी नक्षत्रमें पके हुए फलके गूदे, अन्न, घी, दूध, पीने योग्य पदार्थ ब्राह्मणको दान करनेसे दाताको ऋणसे छुटकारा मिलता है (अनु० ६४ । ६) । संतानकी

कामनावाले पुरुषको रोहिणी नक्षत्रमें पितरोंका श्राद्ध करना चाहिये (अनु० ८९ । ३) । चान्द्रव्रतमें चन्द्रमाके नक्षत्रमय स्वरूपका चिन्तन करते समय रोहिणीको उनकी पिण्डलियोंमें स्थित मानकर तत्सम्बन्धी मन्त्रसे उक्त अङ्गकी पूजा करे (आदि० ११० । ३) । (३) वसुदेवजीकी भार्या तथा बलरामजीकी माता (आदि० १९६ । ३३; सभा० ३८ । २९ के बाद दाक्षिणात्य पाठ) । ये वसुदेवजीकी मृत्युके पश्चात् उनके शवके साथ ही चितापर दग्ध हो गयीं (मौसल० ७ । १८, २४) । (४) मनु (भानु) नामक अग्निकी तीसरी भार्या निशाके गर्भसे उत्पन्न एक कन्या, जो 'स्विष्टकृत्' मानी गयी है । इसका नाम रोहिणी है । यह किसी अशुभ कर्मके कारण हिरण्यकशिपुकी पत्नी हो गयी थी (वन० २२१ । १५, १८-१९) ।

रोही—भारतवर्षकी एक प्रमुख नदी, जिसका जल यहाँके निवासी पीते हैं (भीष्म० ९ । ३०) ।

रोहीतक (एवं रोहितकारण्य)—एक पर्वत तथा उसके समीपका देश । पश्चिम-दिग्विजयके समय नकुल यहाँ होकर आगे गये थे (सभा० ३२ । ४-५) । इसीके निकटवर्ती वनको 'रोहितकारण्य' कहते हैं; जो कौरवोंकी विशाल सेनासे घिर गया था (उद्योग० १९ । ३०-३१) । (इसीको आजकल रोहतक (पंजाब) कहते हैं ।)

रौद्र—कैलास एवं मन्दराचलपर रहनेवाले एक प्रकारके राक्षस । उत्तराखण्डकी यात्राके समय लोमशजीने युधिष्ठिरको इनसे सावधान रहनेके लिये कहा था (वन० १३९ । १०) ।

रौद्रकर्मा-धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६७ । १०४; आदि० ११६ । १२) । यह भीमसेनद्वारा मारा गया (द्रोण० १२७ । ६२) ।

रौद्राश्व—ये राजा पूरुके द्वारा पौष्टीके गर्भसे उत्पन्न हुए थे । इनके दो भाई और थे, जिनके नाम हैं—प्रवीर और ईश्वर (आदि० ९४ । ५) । इनके द्वारा मिश्रकेशी नामक अप्सराके गर्भसे अन्वग्भानु आदि दस महाधनुर्धर पुत्र उत्पन्न हुए (आदि० ९४ । ८) ।

रौप्या—एक नदी, जिसके समीप ऋचीकनन्दन जमदग्निका प्रसर्पण नामक तीर्थ है (वन० १२९ । ७) ।

रौम्य—गणेश्वरोंका एक दल, जिसे वीरभद्रने अपने रोमकूपोंसे उत्पन्न किया था (शान्ति० २८४ । ३५) ।

(ल)

लक्षणा—एक अप्सरा, जिसने अर्जुनके जन्मोत्सवमें नृत्य किया था (आदि० १२२ । ६२) ।

लक्ष्मण—(१) महाराज दशरथके चार पुत्रोंमेंसे एक, सुमित्राके ज्येष्ठ पुत्र तथा शत्रुघ्नके सहोदर भाई (वन० २७४ । ७-८) । श्रीरामके साथ इनका वन-गमन (वन० २७७ । २९) । सीताके कठोर वचन सुनकर उन्हें अकेली छोड़कर इनका रामके पास जाना (वन० २७८ । ३०-३१) । सीताको छोड़कर आनेके कारण श्रीरामद्वारा इनकी भर्त्सना (वन० २७९ । १३-१४) । इनका श्रीरामके साथ जटायुके पास जाना (वन० २७९ । २०) । श्रीरामके साथ वनमें घूमते हुए इनका कबन्धद्वारा पकड़ा जाना और दुखी होकर विलाप करना (वन० २७९ । ३०-३४) । श्रीरामका आश्वासन पाकर इनका कबन्धका दाहिनी बाँह काटना और उसके पसलीपर प्रहार करके उसे मार डालना (वन० २७९ । ३६-३९) । श्रीरामके कहनेसे किष्किन्धामें सुग्रीवसे उनका संदेश कहना (वन० २८२ । १४) । श्रीरामने विभीषणको इनका मित्र बनाया (वन० २८३ । ४९) । इनका लंकामें राक्षसोंको चुन-चुनकर मार गिराना (वन० २८४ । ४०) । इनके द्वारा कुम्भकर्णका वध (वन० २८७ । १७-१९) । इनका प्रमाथी और वज्रवेगके साथ युद्ध (वन० २८७ । २५) । मेघनादके बाणोंसे लक्ष्मण और श्रीराम दोनों भाइयोंका मूर्छित होना (वन० २८८ अध्याय) । इनके द्वारा मेघनादका वध (वन० २८९ । २३) ।

महाभारतमें आये हुए लक्ष्मणके नाम—इक्ष्वाकुनन्दन, काकुत्स्थ, राघव, रामानुज, सौमित्रि ।

(२) दुर्योधनका महारथी पुत्र । अभिमन्युके साथ इसका युद्ध (भीष्म० ५५ । ८-१३) । अभिमन्युके साथ युद्ध और उनके द्वारा इसका पराजित होना (भीष्म० ७३ । ३२-३७) । क्षत्रदेवके साथ युद्ध (द्रोण० १४ । ४९) । समुद्री प्रान्तोंके अधिपतिके साथ युद्ध (द्रोण० २५ । ३४-३५) । अभिमन्युद्वारा वध (द्रोण० ४६ । १७) । इसके द्वारा अम्बष्ठपुत्रके मारे जानेकी चर्चा (कर्ण० ६ । १०-११) । इसके द्वारा शिखण्डीके पुत्र क्षत्रदेवके वधकी चर्चा (कर्ण० ६ । २६-२७) । व्यासजीके आवाहन करनेपर गङ्गाजीके जलसे प्रकट हुए कौरव-पाण्डव पक्षके लोगोंमें यह भी था (आश्रम० ३२ । ११) ।

लक्ष्मणा—भगवान् श्रीकृष्णकी पटरानियोंमेंसे एक (सभा० ३८ । २९ के बाद दा० पाठ) ।

लक्ष्मी—(१) समुद्रसे प्रकट हुई देवी (आदि० १८ । ३५) । भगवान् विष्णुकी पत्नी (आदि० १९८ । ६) । (इनके दो स्वरूप हैं—विष्णुप्रिया लक्ष्मी और राज्यलक्ष्मी । विष्णुकी प्रेयसी लक्ष्मी सतियोंकी शिरोमणि हैं ।

ये पतिका आश्रय छोड़कर कहीं नहीं जातीं; किंतु राज्य-लक्ष्मी अनेक स्वरूप धारण करके अनेक लोकोंमें और अनेक राजाओंके पास रहती हैं। ये अस्थिर और चञ्चल हैं। जहाँ सद्गुण है, सद्धर्म है, वहाँ इनका वास है और जहाँ इन गुणोंका अभाव है, वहाँसे ये हट जाती हैं। नीचे राज्यलक्ष्मीके विषयमें ही कुछ बातें लिखी जाती हैं–) ये कुबेरकी सभामें विराजमान होती हैं (सभा० १०। १९)। ब्रह्माजीकी सभामें भी इनकी उपस्थिति होती है (सभा० ११। ४१)। द्रौपदीकी अर्जुनके लिये इनसे मङ्गल-कामना (वन० ३७। ३३)। इनका प्रह्लाद-को छोड़कर जाना और पूछनेपर उन्हें इसका कारण बताना (शान्ति० १२४। ५८–६२)। बलिको त्याग-कर इन्द्रके पास आना और उनके साथ इनका संवाद (शान्ति० २२५। ५—२९)। इन्द्र और नारदको इनका दर्शन देना (शान्ति० २२८। १६)। इन्द्रके पूछनेपर असुरोंके सद्गुण और दुर्गुणोंका वर्णन (वन० २२८। २९–८४)। रुक्मिणीके पूछनेपर भृगुपुत्री नारायणप्रिया लक्ष्मीद्वारा अपने निवासयोग्य स्थानोंका वर्णन (अनु० ११। ६–२१)। गौओंके साथ राज्य-लक्ष्मीका संवाद और इनका गोबरमें अपना निवास बनाना (अनु० ८२ अध्याय)। इनके द्वारा धर्मके रहस्यका वर्णन (अनु० १२७। ६-७)। (२) दक्ष प्रजापति-की पुत्री एवं धर्मकी पत्नी (आदि० ६६। १४)।

लङ्का–राक्षसोंकी राजधानी। राजसूय यज्ञके समय सहदेवने लङ्कापतिसे कर लेनेके लिये वहाँ घटोत्कचको भेजा था (सभा० ३१। ७२ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ७६० से ७६४ तक)। युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें लङ्कावासी रसोई परोसनेका काम करते थे (वन० ५१। २३–२६)। यहाँ राक्षसराज रावणकी राजधानी थी; जिसे हनुमान्‌जीने जलाया था (वन० १४८। ९)। ब्रह्माजीने लङ्कापुरी कुबेरको रहनेके लिये दी थी (वन० २७४। १६-१७)। रावणने इसे कुबेरसे छीन लिया था (वन० २६५। ३२-३३)। सीताका अपहरण करके रावणने उन्हें लङ्काकी ही अशोकवाटिकाके निकट रमणीय भवनमें रखा था (वन० २८०। ४१-४२)। महापुरी लङ्का त्रिकूटपर्वत-की कन्दरामें बसी है (वन० २८२। ५६)। श्रीरामने वानर-सैनिकोंद्वारा लङ्काके बगीचोंको नष्ट कराया था (वन० २८३। ५१)। लङ्कापुरीकी सुरक्षाके लिये सुदृढ़ व्यवस्थाका वर्णन (वन० २८४। २–६)। अङ्गद लङ्कामें श्रीरामके दूत बनकर गये थे (वन० २८४। ७)। श्रीरामद्वारा लङ्कापर चढ़ाई (वन० २८४। २३)। रावणके मारे जानेपर लङ्काका राज्य विभीषणके अधिकारमें दिया गया (वन० २९१। ५)।

लङ्घती–एक नदी, जो वरुणकी सभामें रहकर उनकी उपासना करती है (सभा० ९। २३)।

लज्जा–दक्ष प्रजापतिकी पुत्री तथा धर्मकी पत्नी। ब्रह्माजीने धर्मकी पत्नियोंको धर्मका द्वार निश्चित किया है (आदि० ६६। १४-१५)।

लता–एक अप्सरा, जो वर्गाकी सखी थी (आदि० २१५। २०)। ब्राह्मणके शापसे इसका ग्राहयोनिमें जन्म (आदि० २१५। २३)। अर्जुनद्वारा इसका ग्राह-योनि-से उद्धार (आदि० २१६। २१)। यह कुबेरकी सभामें रहकर उनकी सेवामें उपस्थित होती है (सभा० १०। १०-११)।

लतावेष्ट–द्वारकाके दक्षिणभागमें विद्यमान एक पर्वत, जो पाँच रंगका होनेके कारण इन्द्र-ध्वज-सा प्रतीत होता था (सभा० ३८। २९ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ८१३, कालम १)।

लपिता–मन्दपाल ऋषिकी दूसरी भार्या एक शार्ङ्गी, जो जरिताकी सौत थी (आदि० २२। १७)। मन्दपाल ऋषिका लपितासे जरिताके गर्भसे उत्पन्न हुए अपने बच्चों-के विषयमें उत्पन्न हुई चिन्ताका कथन (आदि० २३२। २–६)। लपिताका मन्दपालको फटकारते हुए उनकी उपेक्षा करना (आदि० २३२। ७–१३)।

लपेटिका–एक तीर्थ, यहाँ स्नान करनेसे तीर्थयात्री वाजपेय यज्ञका फल पाता है और देवताओंद्वारा पूजित होता है (वन० ८५। १५)।

लम्पाक–एक देश, यहाँके निवासियोंने कौरवोंकी सेनामें आकर सात्यकिपर धावा किया था, परंतु सात्यकिने इन्हें छिन्न-भिन्न कर डाला था (द्रोण० १२१। ४२-४३)।

लम्बपयोधरा–स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६। २१)।

लम्बनी–स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६। १८)।

लम्बा–स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६। १८)।

लय–एक प्राचीन नरेश, जो यमकी सभामें रहकर सूर्यपुत्र यमकी उपासना करते हैं (सभा० ८। २१)।

ललाटाक्ष–एक देश, यहाँके राजा भेंट लेकर युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें आये थे (सभा० ५१। १७)।

ललाम–घोड़ोंका एक भेद (जिस घोड़ेके ललाटके मध्य-भागमें ताराके समान श्वेत चिह्न हो, उसके उस चिह्नका नाम ललाम है और उस चिह्नसे युक्त अश्वको ललाम कहते हैं।) (द्रोण० २३। १३)।

ललितक–शान्तनुका उत्तम तीर्थ, यहाँ स्नान करनेसे मनुष्य कभी दुर्गतिमें नहीं पड़ता (वन० ८४ । ३४) ।

ललित्थ–एक देश तथा वहाँके निवासी । यहाँके सैनिकोंने सुशर्माके साथ अर्जुनका वध करनेके लिये प्रतिज्ञा की थी (द्रोण० १७ । २०) । ये अर्जुनद्वारा पीडित किये गये थे (द्रोण० १९ । १६) । यहाँके राजाने अभिमन्युपर बाण-वर्षा की थी (द्रोण० ३७ । २६) । पूर्वकालमें कर्णने इस देशपर विजय पायी थी (द्रोण० ९१ । ४०) । अर्जुनद्वारा इनके मारे जानेकी चर्चा (कर्ण० ५ । ४७) ।

लवण–(१) रामणीयक द्वीपमें निवास करनेवाला एक असुर, जिसे नागोंने पहले-पहल इस द्वीपमें आनेपर देखा था (आदि० २७ । २) । (२) मधु नामक राक्षसका पुत्र । श्रीरामकी आज्ञासे शत्रुघ्नद्वारा इसका वध (सभा० ३८ । २९ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ७९५) । चक्रवर्ती राजा मान्धाता लवणासुरके द्वारा प्रयुक्त हुए शिवजीके त्रिशूलसे सेनासहित नष्ट हो गये । अभी वह शूल असुरके हाथमें ही था कि राजाका सर्वनाश हो गया (अनु० १४ । २६७-२६८) ।

लवणाश्व–एक ब्रह्मर्षि, जो अजातशत्रु युधिष्ठिरका विशेष सम्मान करते थे (वन० २६ । २३) ।

लाक्षा-गृह–दुष्ट दुर्योधनकी प्रेरणासे महात्मा पाण्डवोंके विनाशके लिये वारणावतनगरमें लाह आदि आग भड़कानेवाले पदार्थोंद्वारा निर्मित गृह (आदि० १४३ । ८—१०) । पुरोचनद्वारा इस लाक्षागृहकी पाण्डवोंसे चर्चा । पाण्डवोंका इसमें प्रवेश । इसके निर्माणके सम्बन्धमें युधिष्ठिरका भीमसेनसे रहस्य-कथन (आदि० १४५ । ११—१९) । विदुरके भेजे हुए खनकद्वारा इसमें सुरंगका निर्माण (आदि० १४६ । १६) । भीमसेनद्वारा इसका दाह (आदि० १४७ । १०) ।

लाङ्गली–एक श्रेष्ठ नदी, जो वरुणकी सभामें रहकर उनकी उपासना करती है (सभा० ९ । २२) ।

लाट–एक क्षत्रिय जाति, इस जातिके लोग ब्राह्मणोंके साथ ईर्ष्या रखनेके कारण नीच हो गये (अनु० ३५ । १७-१८) ।

लिखित–एक प्राचीन मुनि, जो इन्द्रके सभासद् हैं (सभा० ७ । ११) । ये शङ्खके भाई थे, इन्होंने भाईकी आज्ञासे राजा सुद्युम्नके पास जाकर उनसे चोरीके अपराधका दण्ड माँगा और अपने दोनों हाथ कटवा दिये (शान्ति० २३ । १८—३६) । भाई शङ्खके तपोबलसे पुनः इनके नये हाथ निकल आये (शान्ति० २३ । ४१-४२) ।

लीलाढ्य–विश्वामित्रके ब्रह्मवादी पुत्रोंमेंसे एक (अनु० ४ । ५३) ।

लोकपाल–इन्द्र, अग्नि, यम और वरुण—इन्हें लोकपाल कहा गया है । इनकी दमयन्ती-स्वयंवरमें आते समय मार्गमें राजा नलसे भेंट और उनसे दूत बननेके लिये कहना (वन० ५४ । २८ से ५५ । ५ तक) । इनके द्वारा नलको वर-प्रदान (वन० ५७ । ३५—३८) ।

लोकपालसभाख्यानपर्व–सभापर्वका एक अवान्तर पर्व (अध्याय ५ से १२ तक) ।

लोकोद्धार–एक लोकविख्यात प्राचीन तीर्थ, जहाँ भगवान् विष्णुने कितने ही लोकोंका उद्धार किया था । यहाँ स्नान करनेसे मनुष्य आत्मीय जनोंका उद्धार करता है (वन० ८३ । ४४-४५) ।

लोपामुद्रा–महर्षि अगस्त्यने अपनी पत्नी बनानेके लिये एक सुन्दरी कन्याका निर्माण किया और पुत्रके लिये तपस्या करनेवाले विदर्भराजके हाथमें उसे दे दिया । उस कन्याका उस राजभवनमें बिजलीके समान प्रादुर्भाव हुआ । उसे पाकर राजाको बड़ी प्रसन्नता हुई । उन्होंने ब्राह्मणोंको यह शुभ संवाद सुनाया । ब्राह्मणोंने उस कन्याका नाम 'लोपामुद्रा' रख दिया । धीरे-धीरे वह युवावस्थामें प्रविष्ट हुई । सौ दासियाँ और सौ कन्याएँ उसकी सेवामें रहने लगीं । महात्मा अगस्त्यके भयसे किसी राजकुमारने उसका वरण नहीं किया । वह अपने शील-सदाचारसे पिता तथा स्वजनोंको संतुष्ट रखती थी । उसे युवती हुई देख पिता उसके विवाहके लिये चिन्तित हुए (वन० ९६ । १९–३०) । एक दिन महर्षि अगस्त्यने आकर विदर्भराजसे लोपामुद्राको माँगा । राजा अपनी पुत्रीका विवाह उनके साथ नहीं करना चाहते थे, परंतु महर्षिके शापके डरसे वे उन्हें कन्या देनेसे इनकार भी न कर सके । माता-पिताको संकटमें पड़ा देख लोपामुद्रा उनसे इस प्रकार बोली—'आप मुझे महर्षिकी सेवामें दे दें और अपनी रक्षा करें ।' तब उन राजदम्पतिने अपनी उस कन्याका ब्याह अगस्त्य मुनिके साथ कर दिया । लोपामुद्राने पतिकी आज्ञासे बहुमूल्य वस्त्र और आभूषण उतारकर वल्कल एवं मृगचर्म धारण कर लिये । वह पतिके समान ही व्रत और आचारका पालन करने लगी । महर्षि उसे लेकर गङ्गाद्वारमें आये और घोर तपस्यामें संलग्न हो गये । लोपामुद्रा बड़ी प्रसन्नता और विशेष आदरके साथ पतिकी सेवा करने लगी । दीर्घकालके पश्चात् प्रसन्न हो महर्षिने उसे समागमके लिये अपने समीप बुलाया, लोपामुद्राने पिताके घरके समान राजमहलमें उनके साथ समागमकी इच्छा प्रकट की । तब महर्षिने लोपा-

मुद्राकी इच्छा पूर्ण करनेके निमित्त धन-संग्रहके लिये प्रस्थान किया (वन० ९७ अध्याय)। लोपामुद्रा जो कुछ चाहती थी, महर्षि अगस्त्यने उसे पूर्ण किया, तब लोपामुद्राने उनसे एक अत्यन्त शक्तिशाली पुत्र माँगा। महर्षिने पूछा—'क्या तुम्हारे गर्भसे एक हजार या एक सौ पुत्र उत्पन्न हों, जो दसके ही बराबर हों ? अथवा एक ही पुत्र हो, जो हजारोंको जीतनेवाला हो ?' लोपामुद्राने सहस्रोंकी समानता करनेवाला एक ही श्रेष्ठ पुत्र माँगा। महर्षि गर्भाधान करके वनमें चले गये। वह गर्भ सात वर्षोंतक माताके पेटमें पलता रहा। सात वर्ष बीतनेपर वह अपने तेज और प्रभावसे प्रज्वलित होता हुआ उदरसे बाहर निकला। वही महाविद्वान् 'दृढस्यु' के नामसे विख्यात हुआ (वन० ९९। १८—२५)। इनके पातिव्रत्यकी प्रशंसा (विराट० २१। १४)।

लोमपाद-अङ्गदेशके एक राजा (जो राजा दशरथके मित्र थे)। इनके द्वारा राज्यमें वर्षा होनेके निमित्त ऋष्यशृङ्गको लानेके लिये वेश्याओंकी नियुक्ति (वन० ११०। ५३)। इनके द्वारा 'नाव्याश्रम' का निर्माण (वन० ११३। ९)। इनका अपनी पुत्री शान्ताको ऋष्यशृङ्ग मुनिके साथ ब्याह देना (वन० ११३। ११)। इनपर महर्षि विभाण्डककी कृपा (वन० ११३। २०)। राजर्षि लोमपाद अपनी कन्या शान्ताका ऋष्यशृङ्ग मुनिको दान करके सब प्रकारके प्रचुर भोगोंसे सम्पन्न हो गये (शान्ति० २३४। ३४)।

लोमश-(१) एक प्राचीन दीर्घजीवी महर्षि, जो धर्मपालनसे शुद्ध हृदयवाले हुए थे (वन० ३१। १२)। इनका स्वर्गमें जाकर इन्द्रसे मिलना और वहाँ इन्द्रके अर्धसिंहासनपर अर्जुनको बैठा देख इनके मनमें उनके पुण्यकर्म क्या हैं—यह प्रश्न उठना (वन० ४७। १—५)। इन्द्रके द्वारा इनसे मानसिक प्रश्नका समाधान (वन० ४७। ७—३१)। इनका इन्द्र और अर्जुनका संदेश लेकर काम्यकवनमें युधिष्ठिरके पास आना (वन० ४७। ३३—३५)। इनका युधिष्ठिरको अर्जुनकी दिव्यास्त्र-प्राप्तिकी सूचना देना (वन० ९१। १०—१४)। इनका युधिष्ठिरसे इन्द्रका संदेश कहना (वन० ९१। १७—२५)। इनका युधिष्ठिरसे अर्जुनका संदेश कहना (वन० ९२। १—७)। इनका युधिष्ठिरको आश्वासन (वन० ९४। १७—२२)। इनका युधिष्ठिरको अगस्त्यकी कथा सुनाना (वन० अध्याय ९६ से ९९ तक)। इनके द्वारा युधिष्ठिरके प्रति राम और परशुरामके चरित्रका वर्णन (वन० ९९। ४०—७१)। वृत्रासुरसे त्रस्त देवताओंको महर्षि दधीचके अस्थि-दान एवं वज्रनिर्माणका वर्णन (वन० १०० अध्याय)। इनके द्वारा वृत्रासुरके वध और असुरोंकी भयंकर मन्त्रणाका कथन (वन० १०१ अध्याय)। महर्षि लोमशके द्वारा कालेयोंद्वारा तपस्वियों, मुनियों और ब्रह्मचारियों आदिके संहारका वर्णन और देवताओंद्वारा भगवान्‌की स्तुतिका कथन (वन० १०२ अध्याय)। लोमशजीने युधिष्ठिरको जो प्रमुख विषय सुनाये हैं, उनकी संक्षिप्त सूची इस प्रकार है—भगवान्‌के आदेशसे देवताओंका महर्षि अगस्त्यके आश्रमपर जाकर उनकी स्तुति करना। अगस्त्यजीका विन्ध्य पर्वतको बढ़नेसे रोकना और देवताओंके साथ सागर-तटपर जाना। अगस्त्यजीद्वारा समुद्र-पान और देवताओं-का कालेय दैत्योंका वध करके ब्रह्माजीसे समुद्रको पुनः भरनेका उपाय पूछना। राजा सगरका संतानके लिये तपस्या करना और शिवजी द्वारा वर पाना। सगरके पुत्रोंकी उत्पत्ति, कपिलकी क्रोधाग्निसे उनका भस्म होना, असमंजसका परित्याग, अंशुमान्‌के प्रयत्नसे सगरके यज्ञकी पूर्ति, अंशुमान्‌से दिलीपको और दिलीपसे भगीरथको राज्यकी प्राप्ति। भगीरथका हिमालयपर तपस्याद्वारा गङ्गा और महादेवजीको प्रसन्न करके उनसे वर प्राप्त करना। पृथ्वीपर गङ्गाजीके उतरने और समुद्रको जलसे भरनेका विवरण तथा सगरपुत्रोंका उद्धार। नन्दा और कौशिकीका माहात्म्य, ऋष्यशृङ्ग मुनिका उपाख्यान तथा उनको अपने राज्यमें लानेके लिये राजा लोमपादका प्रयत्न। वेश्याका ऋष्यशृङ्गको लुभाना और विभाण्डक मुनिका आश्रमपर आकर अपने पुत्रकी चिन्ताका कारण पूछना। ऋष्यशृङ्गका पिताको अपनी चिन्ताका कारण बताते हुए ब्रह्मचारी रूपधारी वेश्याके स्वरूप और आचरणका वर्णन। ऋष्यशृङ्गका अङ्गराज लोमपादके यहाँ जाना, राजाका उन्हें अपनी कन्या देना, राजाद्वारा विभाण्डक मुनिका सत्कार तथा उनपर मुनिका प्रसन्न होना (वन० अध्याय १०३से ११३तक)। लोमशद्वारा राजा गयके यज्ञकी प्रशंसा, पयोष्णी, वैदूर्य पर्वत और नर्मदाके माहात्म्य तथा च्यवन-सुकन्याके चरित्रका वर्णन (वन० १२१ अध्याय)। महर्षि लोमशद्वारा च्यवनको सुकन्याकी प्राप्तिके प्रसंगका वर्णन (वन० १२२ अध्याय)। अश्विनीकुमारोंकी कृपासे महर्षि च्यवनको सुन्दर रूप और युवावस्थाकी प्राप्तिका वर्णन (वन० १२३

अध्याय)। शर्यातिके यज्ञमें च्यवनका इन्द्रपर कोप करके वज्रको स्तम्भित करना और उन्हें मारनेके लिये मदासुरको उत्पन्न करना (वन० १२४ अध्याय)। अश्विनीकुमारोंका यज्ञमें भाग स्वीकार कर लेनेपर इन्द्रका संकटमुक्त होना आदि प्रसंगों और अन्यान्य तीर्थोंके महत्त्वका लोमशद्वारा वर्णन (वन० १२५ अध्याय)। राजा मान्धाताकी उत्पत्ति और उनके संक्षिप्त चरित्रका इनके द्वारा वर्णन (वन० १२६ अध्याय)। लोमशजीका युधिष्ठिरको सोमक और जन्तुका उपाख्यान सुनाना—सोमकको सौ पुत्रोंकी प्राप्ति तथा सोमक और पुरोहितका समानरूपसे नरक और पुण्यलोकोंका उपभोग करना (वन० १२७—१२८ अध्याय)। कुरुक्षेत्रके द्वारभूत प्लक्षप्रस्रवण नामक यमुनातीर्थ एवं सरस्वतीतीर्थकी महिमाकी इनके द्वारा वर्णन (वन० १२९ अध्याय)। लोमशजीद्वारा विभिन्न तीर्थोंकी महिमा और राजा उशीनरकी कथाका आरम्भ—राजा उशीनरद्वारा बाजको अपने शरीरका मांस देकर शरणमें आये हुए कबूतरके प्राणोंकी रक्षा करना (वन० १३०—१३१ अध्याय)। महर्षि लोमशका अष्टावक्रके जन्मका वृत्तान्त और उनके राजा जनकके दरबारमें जानेका वर्णन करना (वन० १३२ अध्याय)। अष्टावक्रका द्वारपाल तथा राजा जनकसे वार्तालाप, बन्दी और अष्टावक्रका शास्त्रार्थ, बन्दीकी पराजय तथा समङ्गामें स्नानसे अष्टावक्रके अङ्गोंका सीधा होना—इन प्रसंगोंका इनके द्वारा कथन (वन० १३३—१३४ अध्याय)। लोमशजीद्वारा कर्दमिलक्षेत्र आदि तीर्थोंकी महिमा, रैभ्य एवं भरद्वाजपुत्र यवक्रीत मुनिकी कथा तथा ऋषियोंका अनिष्ट करनेके कारण मेधावीकी मृत्युका वर्णन (वन० १३५ अध्याय)। यवक्रीतका रैभ्यमुनिकी पुत्रवधूके साथ व्यभिचार और रैभ्यमुनिके क्रोधसे उत्पन्न राक्षसके द्वारा उसकी मृत्युके प्रसंगोंका लोमशद्वारा कथन (वन० १३६ अध्याय)। भरद्वाजका पुत्रशोकसे विलाप करना, रैभ्यमुनिको शाप देना एवं स्वयं अग्निमें प्रवेश करना, अर्वावसुकी तपस्याके प्रभावसे परावसुका ब्रह्महत्यासे मुक्त होना और रैभ्य, भरद्वाज तथा यवक्रीत आदिका पुनर्जीवित होना—इन प्रसंगोंको लोमशजीने सुनाया था (वन० १३७—१३८ अध्याय)। पाण्डवोंकी उत्तराखण्ड-यात्राके समय लोमशजीद्वारा उसकी दुर्गमताका कथन (वन० १३९ अध्याय)। लोमशजीका नरकासुरके वध और भगवान् वाराहद्वारा वसुधाके उद्धारकी कथा कहना (वन० १४२ अध्याय)। लोमशजीका युधिष्ठिरको विविध उपदेश देकर देवताओंके परम पवित्र स्थानको पधारना (वन० १७६। २२)। ये शरशय्यापर पड़े हुए भीष्मजीको देखने गये थे (शान्ति० ४७। ७)। इनके द्वारा अन्नदानकी महिमाका कथन (अनु० ६७। १०)। इनके द्वारा धर्मके रहस्यका वर्णन (अनु० १२९ अध्याय)। ये उत्तर दिशाके ऋषि हैं (वन० १६५। ४६)। (२) विडालोपाख्यानमें आया हुआ बिलाव (शान्ति० १३८। २२)। इसका पलित नामक चूहेके साथ संवाद (शान्ति० १३८। ३४—१९८)।

लोमहर्षण—एक मुनि, जो युधिष्ठिरकी सभामें विराजते थे (सभा० ४। १२)।

लोह—एक प्राचीन देश, जिसे उत्तर-दिग्विजयके समय अर्जुनने जीत लिया था (सभा० २७। २५)।

लोहितारणी—भारतवर्षकी एक नदी, जिसका जल भारतवासी पीते हैं (भीष्म० ९। १८)।

लोहमेखला—स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६। १८, २१)।

लोहवक्त्र—स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५। ७५)।

लोहित—(१) एक राजा, जिसे अर्जुनने उत्तर-दिग्विजयके समय अपने अधीन कर लिया था (सभा० २७। १७)। (२) एक नाग, जो वरुणकी सभामें बैठकर वहाँकी शोभा बढ़ाता है (सभा० ९। ८)।

लोहितगङ्गा—एक स्थानविशेष, जहाँ भगवान् श्रीकृष्णने 'विरूपाक्ष' का तथा 'पञ्चजन' नामसे प्रसिद्ध पाँच राक्षसोंका संहार किया था (सभा० ३८। २९ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ८०७)।

लोहिताक्ष—ब्रह्माद्वारा स्कन्दको दिये गये चार पार्षदोंमेंसे एक। तीनके नाम ये—नन्दिसेन, घण्टाकर्ण और कुमुदमाली (शल्य० ४५। २४—२५)।

लोहिताक्षी—स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६। २२, २४)।

लोहितायनि—लालसागरकी कन्या, जो स्कन्दकी धाय है, इसकी कदम्बके वृक्षोंपर पूजा होती है (वन० २३०। ४०—४१)।

लोहित्या-भारतवर्षकी एक नदी, जिसका जल भारतवासी पीते हैं (भीष्म० ९ । ३५)।

लौहित्य-(१) एक प्राचीन देश, भीमसेनने पूर्व दिग्विजयके समय इस देशमें जाकर यहाँके बहुत-से म्लेच्छ राजाओंको जीता और उनसे भाँति-भाँतिके रत्न करके रूपमें वसूल किया (सभा० ३० । २६-२७)। (२) श्रीरामके प्रभावसे प्रकट हुआ एक तीर्थ, यहाँ स्नान करनेसे मनुष्यको बहुत-सी सुवर्ण-राशि प्राप्त होती है (वन० ८५ । २)। कार्तिककी पूर्णिमाको कृत्तिकाका योग होनेपर जो लौहित्य तीर्थमें स्नान करता है, उसे पुण्डरीक यज्ञका फल प्राप्त होता है (अनु० २५ । ४६)। (३) एक महानद, जो वरुण-सभामें रहकर उनकी उपासना करता है (आधुनिक 'ब्रह्मपुत्र' को लौहित्य या 'लोहित्य' कहते हैं) (सभा० ९ । २२)।

(व)

वंक्षु-एक नदी, इसके तटपर उत्पन्न हुए रासभ बड़े सुन्दर और बल आदि गुणोंमें विख्यात होते हैं। बहुत-से म्लेच्छ देशके राजा युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें ऐसे रासभों-को भेंट देनेके लिये लाये थे (सभा० ५१ । १७-२०)।

वंशगुल्म-एक तीर्थ, जो शोण और नर्मदाका उत्पत्ति-स्थान है। यहाँ स्नान करनेसे यात्री अश्वमेध यज्ञका फल प्राप्त करता है (वन० ८५ । ९)।

वंशमूलक-कुरुक्षेत्रकी सीमामें स्थित एक तीर्थ, जहाँ स्नान करनेसे मनुष्य अपने वंशका उद्धार कर देता है (वन० ८३ । ४१-४२)।

वंशा-कश्यपकी 'प्राधा' नामवाली पत्नीसे उत्पन्न हुई पुत्री (आदि० ६५ । ४५-४६)।

वक (बक)-एकचक्रासे दो कोसकी दूरीपर यमुनाके किनारे घने जंगलमें एक गुफाके भीतर रहनेवाला एक बलवान् नरभक्षी राक्षस, जिसका एकचक्रा नगरी और वहाँके जनपदपर शासन चलता था (आदि० १५९ । ३-४)। इसके द्वारा नगरकी रक्षा तथा करके रूपमें इसे दिया जानेवाला दैनिक भोजन (आदि० १५९ । ५-७)। भीमसेनका इसके साथ युद्ध और इसका वध (आदि० १६२ । ५ से १६३ । १ तक)।

वक दाल्भ्य (बक दाल्भ्य)-एक प्राचीन ऋषि, जो युधिष्ठिरकी सभामें विराजमान होते थे (सभा० ४ । ११)। इनका युधिष्ठिरको ब्राह्मणोंका महत्त्व बताना (वन० २६ । ६-२०)। इनके द्वारा इन्द्रके प्रति चिरजीवियोंके दुःख-सुखका वर्णन (वन० १९३ अध्याय)। हस्तिनापुर जाते हुए श्रीकृष्णसे इनका मार्गमें मिलना (उद्योग० ८३ । ६४ के बाद)। इनके द्वारा धृतराष्ट्रके राज्यकी अग्निमें आहुति देनेका प्रसंग (शल्य० ४१ । ५-२७)।

वकनख-विश्वामित्रके ब्रह्मवादी पुत्रोंमेंसे एक (अनु० ४ । ५८)।

वकवधपर्व (बकवधपर्व)-आदिपर्वका एक अवान्तर पर्व (अध्याय० १५६ से १६३ तक)।

वक्र-एक राजा, जिसका दूसरा नाम दन्तवक्र है। इसने द्रौपदीके स्वयंवरमें लक्ष्यवेधके लिये अपना असफल पराक्रम प्रकट किया था (आदि० १८६ । १५)। यह भगवान् श्रीकृष्णके हाथसे मारा गया था (उद्योग० १३० । ४८)। यह कलिङ्गराज चित्राङ्गदकी कन्याके स्वयंवरमें भी उपस्थित हुआ था (शान्ति० ४ । ६)। (विशेष देखिये—दन्तवक्र)।

वक्षोग्रीव-विश्वामित्रके ब्रह्मवादी पुत्रोंमेंसे एक (अनु० ४ । ५३)।

वङ्ग-पूर्व भारतका एक प्रसिद्ध जनपद (आधुनिक बङ्गाल) (आदि० २१४ । ९; भीष्म० ९ । ४६)। तीर्थयात्रा-के अवसरपर अर्जुनका यहाँ आगमन (आदि० २१४।९)। भीमसेनके द्वारा इस देशके राजापर आक्रमण (सभा० ३० । २३)। वंगदेशीय नरेश युधिष्ठिरके यहाँ भेंट लेकर गये थे (सभा० ५२ । १८)। कर्णने दिग्विजय-के समय इस देशको जीता था (वन० २५४ । ८)। बंगनरेशका घटोत्कचके साथ युद्ध और पराजय (भीष्म० ९२ । ६-१२)। किसी समय श्रीकृष्णने वंगदेशको जीता था (द्रोण० ११ । १५)। परशुरामजीने इस देशके क्षत्रियोंका संहार किया था (द्रोण० ७० । १२)। कर्णद्वारा इस देशके जीते जाने और 'करद' बनाये जानेकी चर्चा (कर्ण० ८ । १९)। अश्वमेधीय अश्वकी रक्षाके लिये गये हुए अर्जुनने वंगदेशकी म्लेच्छ सेनाको परास्त किया था (आश्व० ८२ । २९-३०)।

वज्र-(१) इन्द्रका अस्त्र, जो विश्वकर्माके हाथसे महर्षि दधीचकी हड्डियोंद्वारा निर्मित हुआ था (वन० १०० । २४)। इसने इन्द्रकी प्रेरणासे व्याघ्र बनकर

सुवर्णष्ठीवीको मार डाला था (शान्ति० ३१ । २५—३३)। धाताने दधीचकी हड्डियोंका संग्रह करके उनके द्वारा वज्रका निर्माण किया था (शान्ति० ३४२ । ४०—४१)। (२) विश्वामित्रके ब्रह्मवादी पुत्रोंमेंसे एक (अनु० ४ । ५२)। (३) श्रीकृष्णपौत्र अनिरुद्धका पुत्र, जो यादवोंका मौसल-युद्धमें संहार हो जानेपर अर्जुनद्वारा इन्द्रप्रस्थमें शेष यदुवंशियोंका राजा बनाया गया था (मौसल० ७ । ७२)। महाप्रस्थानके समय युधिष्ठिरका सुभद्रासे राजा वज्रकी रक्षाके लिये कहना (महाप्र० १ । ८-९)।

वज्रदत्त-प्राग्ज्योतिषपुरका राजा, जो भगदत्तका पुत्र और युद्धमें बड़ा ही कठोर था (आश्व० ७५ । १)। इसका अर्जुनके साथ युद्धके लिये उद्यत होकर नगरसे निकलना और अश्वमेधीय अश्वको पकड़कर नगरकी ओर चल देना (आश्व० ७५ । २-३)। इसका अर्जुनके साथ युद्ध और पराजय (आश्व० ७५ । ५ से ७६ । २० तक)।

वज्रनाभ-स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ६३)।

वज्रबाहु-एक वानर, जो कुम्भकर्णके मुखका ग्रास बन गया था (वन० २८७ । ६)।

वज्रविष्कम्भ-गरुड़की प्रमुख संतानोंमेंसे एक (उद्योग० १०१ । १०)।

वज्रवेग-दूषणका छोटा भाई, जो रावणकी प्रेरणासे विशाल सेनाके साथ कुम्भकर्णका अनुगामी हुआ था। इसके एक भाईका नाम प्रमाथी था (वन० २८६ । २७)। हनुमान्‌द्वारा इसका वध (वन० २८७ । २६)।

वज्रशीर्ष-प्रजापति भृगुके सात व्यापक पुत्रोंमेंसे एक। इनके छः भाइयोंके नाम हैं—च्यवन, शुचि, और्व, शुक्र, वरेण्य और सवन। ये सभी भृगुके समान गुणवान् थे (अनु० ८५ । १२७-१२९)।

वज्री-एक सनातन विश्वेदेव (अनु० ९१ । ३३)।

वट-अंशद्वारा स्कन्दको दिये गये पाँच अनुचरोंमेंसे एक। उन चारके नाम हैं—परिघ, भीम, दहति और दहन (शल्य० ४५ । ३४)।

वडवा-एक त्रिभुवनविख्यात तीर्थ एवं नदी, जहाँ सायं-संध्याके समय विधिपूर्वक स्नान और आचमन करके अग्निदेवको चरु निवेदन करनेका विधान है। वहाँ पितरोंको दिया हुआ दान अक्षय होता है। इसका 'सप्तचरु' नाम पड़नेका कारण (वन० ८२ । ९२—९९)। वहाँ अग्निके लिये दिया हुआ चरु एक लाख गोदान, सौ राजसूय और एक हजार अश्वमेध यज्ञसे भी अधिक कल्याणकारी है (वन० ८२ । ९९-१००)। वडवा नदीको अग्निका उत्पत्ति-स्थान कहा गया है (वन० २२२ । २४-२५)।

वडवाग्नि-समुद्रके भीतर रहनेवाली एक अग्नि, जिसे वडवामुख भी कहते हैं, इस अग्निके मुखमें समुद्र अपने जलरूपी हविष्यकी आहुति देता रहता है (आदि० २१ । १६)। जब महर्षि और्वने रोषपूर्वक समस्त लोकोंके विनाशका संकल्प कर लिया, तब उनके पितरोंने आकर उन्हें समझाया और उन्हें अपनी क्रोधाग्निको समुद्रमें डाल देनेके लिये कहा। पितरोंके आदेशसे उन्होंने अपनी क्रोधाग्निको समुद्रमें डाल दिया। वही आज भी घोड़ीके मुखकी-सी आकृति बनाकर महासागरका जल पीती रहती है। वडवा (घोड़ी) के समान मुखाकृति होनेके कारण ही इसे वडवाग्नि कहते हैं (आदि० १७९ । २१-२२)। वडवानल और उदानकी एकता (वन० २१९ । २०)। भगवान् शिवका क्रोध ही वडवानल बनकर समुद्रके जलको सोखता रहता है (सौप्तिक० १८ । २१)।

वडवामुख—नारायणके अवतारभूत एक प्राचीन ऋषि, जिन्होंने समुद्रके जलको खारा कर दिया था (शान्ति० ३४२ । ६०)।

वत्स (वत्सभूमि)-(१) एक भारतीय जनपद, जिसे भीमसेनने पूर्व-दिग्विजयके समय जीता था (सभा० ३० । १०)। कर्णने भी इसपर विजय पायी थी (वन० २५४ । ९-१०)। वत्सदेशीय पराक्रमी भूमिपाल पाण्डवोंके सहायक थे और उनकी विजय चाहते थे (उद्योग० ५३ । १-२)। वत्सभूमि सिद्धों और चारणोंद्वारा सेवित है। वहाँ पुण्यात्माओंके आश्रम हैं, उनमें काशिराजकी कन्या अम्बाने विचरण किया था (उद्योग० १८६ । २४)। अम्बा वत्सदेशकी भूमिमें 'अम्बा' नामकी नदी बनकर प्रवाहित हुई, जो केवल बरसातमें ही जलसे भरी रहती है (उद्योग० १८६ । ४०)। वत्सदेशीय योद्धा धृष्टद्युम्नद्वारा निर्मित क्रौञ्चारुण-व्यूहके वामपक्षमें खड़े हुए थे (भीष्म० ५० । ५३)। कर्णद्वारा इस देशके जीते जानेकी चर्चा (कर्ण० ८ । २०)। (२) काशिराज प्रतर्दनका पुत्र, जिसे गोशालामें वत्सों (बछड़ों) ने पाला था। इसीलिये इसका नाम वत्स हुआ (शान्ति० ४९ । ७९)। (३) शर्यातिवंशी नरेश। हैहय और तालजंघके पिता (अनु० ३० । ७)।

वत्सनाभ—एक बुद्धिमान् महर्षि, इनकी कठोर तपस्या और भैंसेका रूप धारण करके धर्मद्वारा वर्षासे इनकी रक्षा (अनु० १२ अध्याय दा० पाठ)। अपनेमें कृतघ्नताका दोष देखकर इनका शरीरको त्याग देनेका विचार करना और धर्मका इन्हें समझा-बुझाकर रोकना तथा इनकी आयुको कई सौ वर्षोंकी बताना (अनु० १२ अध्याय दा० पाठ, पृष्ठ ५४६२-५४६३)।

वत्सल—स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५। ७२)।

वदान्य—एक प्राचीन ऋषि, जिनसे अष्टावक्रने उनकी कन्या माँगी थी। इनका अष्टावक्रको अपनी कन्याके विवाहकी शर्त बताना और उन्हें उत्तर दिशामें भेजना (अनु० १९। २४-२५)। लौटनेपर अष्टावक्रकी यात्राके विषयमें इनका पूछना (अनु० २१। १३-१४)। अष्टावक्रको अपनी कन्या व्याहना (अनु० २१। १७-१८)।

वधूसरा—च्यवन मुनिके आश्रमके समीप बहनेवाली एक नदी, जो भृगुपत्नी पुलोमाके अश्रुबिन्दुओंसे प्रकट हुई थी। यह वधू (पुलोमा) का अनुसरण करती थी, इसलिये ब्रह्माजीने इसका नाम 'वधूसरा' रख दिया (आदि० १२५। ६-८)। यह एक पुण्यमयी नदी है। इसमें स्नान करनेसे परशुरामजीको तेजोमय शरीरकी प्राप्ति हुई (वन० ९९। ६८)।

वध्र—एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९। ५५)।

वध्यश्व—एक राजा, जो यमसभामें रहकर सूर्यपुत्र यमकी उपासना करता है (सभा० ८। १२)।

वनपर्व—महाभारतका एक प्रमुख पर्व ।

वनवासिक—एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९। ५८)।

वनायु—(१) कश्यपपत्नी दनुका एक पुत्र, यह दनुके दस प्रधान पुत्रोंमें है (आदि० ६५। ३०)। (२) उर्वशीके गर्भसे पुरूरवाद्वारा उत्पन्न छः पुत्रोंमेंसे एक। शेष पाँचके नाम हैं—आयु, धीमान्, अमावसु, दृढायु और शतायु (आदि० ७५। २५-२६)। (३) एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९। ५६)।

वनेयु—पूरुपुत्र रौद्राश्वके द्वारा मिश्रकेशी अप्सराके गर्भसे उत्पन्न। इनके नौ भाई और थे, जिनके नाम हैं—ऋचेयु, कक्षेयु, कृकणेयु, स्थण्डिलेयु, जलेयु, तेजेयु, सत्येयु, धर्मेयु और संततेयु (आदि० ९४। ८—११)।

वन्दना—भारतवर्षकी एक नदी, जिसका जल भारतवासी पीते हैं (भीष्म० ९। १८)।

वन्दी (बन्दी)—राजा जनकके दरबारका शास्त्रार्थी पण्डित (वन० १३२। ४)। इसके द्वारा कहोडका जलमें डुबाया जाना (वन० १३२। १५)। इसके साथ अष्टावक्रका शास्त्रार्थ (वन० १३४। ३—२०)। इसकी अष्टावक्रसे शास्त्रार्थमें पराजय (वन० १३४। २१)। इसका राजा जनकको वरुण-पुत्रके रूपमें अपना परिचय देना (वन० १३४। २४)। समुद्रमें प्रवेश करना (वन० १३४। ३७)।

वपु—एक अप्सरा, जिसने अर्जुनके जन्म-समयमें नृत्य किया था (आदि० १२२। ६३)।

वपुष्टमा—काशिराज सुवर्णवर्माकी पुत्री, जो परीक्षित्कुमार जनमेजयकी पतिव्रता पत्नी थी (आदि० ४४। ८—११)। इसके गर्भसे शतानीक और शङ्कुकर्ण नामके दो पुत्र उत्पन्न हुए थे (आदि० ९५। ८६)।

वपुष्मती—स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६। ११)।

वरद—स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५। ६४)।

वरदान—द्वारकाके निकटका एक तीर्थ, जहाँ मुनिवर दुर्वासाने भगवान् श्रीकृष्णको वरदान दिया था। वहाँ स्नान करनेसे मनुष्य सहस्र गोदानका फल पाता है (वन० ८२। ६३-६४)।

वरदासङ्गम—एक तीर्थ, जिसमें स्नान करनेसे सहस्र गोदानका फल मिलता है (वन० ८५। ३५)।

वरयु-महौजा-वंशका एक कुलाङ्गार राजा (उद्योग० ७४। १५)।

वरा—भारतवर्षकी एक नदी, जिसका जल भारतवासी पीते हैं (भीष्म० ९। २६)।

वराङ्गी—ये सोमवंशीय राजा संयातिकी पत्नी थीं। इनके पिताका नाम दृषद्वान् था। इनके गर्भसे संयातिद्वारा अहंयातिका जन्म हुआ था (आदि० ९५। १४)।

वराह—(१) एक प्राचीन ऋषि, जो युधिष्ठिरकी सभामें विराजमान होते थे (सभा० ४। १७)। (२) मगधकी राजधानी गिरिव्रजके समीपका एक पर्वत (सभा० २१। २)। (३) भगवान् विष्णुका एक अवतार। इनके द्वारा एकार्णवके जलमें डूबी हुई पृथ्वीका उद्धार। वराह-अवतारके संक्षिप्त चरित्रका वर्णन, इनके द्वारा हिरण्याक्षका वध (सभा० ३८। २९ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ७८४-७८५)।

वराहक—धृतराष्ट्रकुलोत्पन्न एक नाग, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें जल गया था (आदि० ५७। १८)।

वराहकर्ण—एक यक्ष, जो कुबेरकी सभामें रहकर उनकी सेवा करता है (सभा० १०। १६)।

वराहाश्व—एक दैत्य, दानव या राक्षस (शान्ति० २२७। ५२)।

वरिष्ठ-चाक्षुष मनुके पुत्र (अनु० १८ । २०) । इनके द्वारा गृत्समद ऋषिको शाप (अनु० १८ । २३-२५) ।

वरी-एक सनातन विश्वेदेव (अनु० ९१ । ३३) ।

वरीताक्ष-एक दैत्य, दानव या राक्षस, जो पूर्वकालमें पृथ्वीका शासक था, कालवश इसे छोड़कर चल बसा (शान्ति० २२७ । ५२) ।

वरुण-(१) कश्यपद्वारा अदितिके गर्भसे उत्पन्न द्वादश आदित्योंमेंसे एक (आदि० ६५ । १५) । इनकी ज्येष्ठ पत्नी देवीने इनके वीर्यसे बल नामक एक पुत्रको और सुरा नामवाली कन्याको जन्म दिया था (आदि० ६६ । ५२) । महर्षि वसिष्ठ इनके पुत्ररूपसे उत्पन्न हुए थे (आदि० ९९ । ५) । ये अर्जुनके जन्म-समय-में वहाँ उपस्थित हुए थे (आदि० १२२ । ६६) । ये चौथे लोकपाल हैं, अदितिके पुत्र, जलके स्वामी तथा जलमें हीं निवास करनेवाले हैं । अग्निदेवने इनका स्मरण किया और इन्होंने उन्हें दर्शन दिया । अग्निने इनसे दिव्य धनुष, अक्षय तरकस और कपिध्वज रथ माँगे और वरुणने वे सब वस्तुएँ उन्हें दे दीं (आदि० २२४ । १—६) । इन्होंने पाश और अशनि लेकर श्रीकृष्ण और अर्जुनपर धावा किया था (२२६ । ३२—३७) । नारदजीद्वारा इनकी दिव्यसभाका वर्णन (सभा० ९ अध्याय) । ये ब्रह्माजीकी सभामें रहकर उनकी उपासना करते हैं (सभा० ११ । ५१) । इनके द्वारा अर्जुनको पाशनामक अस्त्रका दान (वन० ४१ । २७—३२) । इनका राजा नलको दमयन्तीके स्वयंवरके अवसरपर वर देना (वन० ५७ । ३८) । इन्होंने अन्य देवताओंके साथ 'विशाखयूप' में तपस्या की थी; अतः वह स्थान परम पवित्र माना गया है (वन० ९० । १६) । ऋचीक मुनिको वरुणदेवने एक हजार श्यामकर्ण घोड़े प्रदान किये थे (वन० ११५ । २७) । राजा जनकके दरबारका शास्त्रार्थी पण्डित वन्दी इन्हींका पुत्र था (वन० १३४ । २४) । इनके द्वारा सीताजीकी शुद्धिका समर्थन (वन० २९१ । २९) । इन्होंने सौ वर्षोंतक गाण्डीव धनुष धारण किया था (विराट० ४३ । ६) । इनकी पत्नीका नाम गौरी था (उद्योग० ११७ । ९) । कभी श्रीकृष्णने इन्हें जीत लिया था (उद्योग० १३०।४९) । इनके द्वारा श्रुतायुधकी माता पर्णाशाको वरदान (द्रोण० ९२ । ४७-४९) । श्रुतायुधको गदा प्रदान कर उसके प्रयोगका नियम बताना (द्रोण० ९२ । ५०-५१) । इनके द्वारा स्कन्दको यम और अतियम नामक दो पार्षद प्रदान (शल्य० ४५ । ४५-४६) । इनका स्कन्दको एक नाग (हाथी) भेंट करना (शल्य० ४६ । ५२, अनु० ८६ । २५) । इनका देवताओंद्वारा जलेश्वर-पदपर अभिषेक (शल्य० ४७ । ९-१०) । इन्होंने सरस्वती नदीके यमुनातीर्थ-में राजसूय यज्ञ किया था (शल्य० ४९ । ११-१२) । इनके द्वारा उतथ्यकी भार्या भद्राका अपहरण (अनु० १५४ । १३) । उतथ्यद्वारा समुद्रका सारा जल पी जानेपर इनका उनकी पत्नी वापस देना (अनु० १५४ । २८) । ये परमधामगमनके समय बलरामजीके स्वागतके लिये आये थे (मौसल० ४ । १६) । अग्निने वरुणको वापस देनेके लिये अर्जुनसे गाण्डीव धनुष और दिव्य तरकस जलमें डलवा दिये थे (महाप्र० १ । ४१-४२) ।

महाभारतमें आये हुए वरुणके नाम-अदितिपुत्र, आदित्य, अम्बुप, अम्बुपति, अम्बुराट्, अम्ब्वीश, अपाम्पति, देवदेव, गोपति, जलाधिप, जलेश्वर, लोकपाल, सलिलराज, सलिलेश, सलिलेश्वर, उदकपति, वारिप, यादसाम्भर्ता, यादसाम्पति आदि ।

(२) एक देवगन्धर्व, जो कश्यपकी पत्नी मुनिके पुत्र थे (आदि० ६५ । ४२) । (३) सागर और सिन्धु नदीके सङ्गममें स्थित एक तीर्थ, जिसमें स्नान करके शुद्धचित्त हो देवताओं, ऋषियों तथा पितरोंके तर्पण करनेका विधान है । ऐसा करनेसे मनुष्य दिव्य द्युतिसे देदीप्यमान हो वरुणलोकको प्राप्त होता है (वन० ८२ । ६८-६९) ।

वरुणद्वीप-एक द्वीपका नाम (सभा० ३८ । २९ के बाद दा० पाठ) ।

वरुणस्रोतस-दक्षिण दिशामें माठरवनके भीतर सुशोभित होनेवाला माठर (सूर्यके पार्श्ववर्ती देवता) का विजयस्तम्भ, जो प्रवेणी नदीके उत्तरवर्ती मार्गमें कण्वके पुण्यमय आश्रममें स्थित है (वन० ८८ । १०-११) ।

वरूथिनी-एक अप्सरा, जिसने इन्द्रकी सभामें अर्जुनके स्वागतार्थ नृत्य किया था (वन० ४३ । २९) ।

वरेण्य-प्रजापति भृगुके सात व्यापक पुत्रोंमेंसे एक । इनके छः भाइयोंके नाम हैं—च्यवन, शुचि, और्व, शुक्र, वज्रशीर्ष और सवन । ये सभी भृगुके समान गुणवान् थे (अनु० ८५ । १२६-१२९) ।

वर्गा-एक अप्सरा, जो कुबेरकी प्रेयसी थी; परंतु किसी ब्राह्मणके शापसे सौभद्र नामक तीर्थमें ग्राह बनकर रहने लगी थी । सखियोंसहित इसके ग्राह होनेका कारण (आदि० २१५ । १५-२१) । अर्जुनद्वारा इसका ग्राहयोनिसे उद्धार (आदि० २१५ । १२) । (इसकी सौरभेयी, समीची, बुदबुदा तथा लता नामकी चार सखियाँ थीं । वे सभी ब्राह्मणके शापसे विभिन्न तीर्थोंमें ग्राह

हो गयी थीं । इसकी प्रार्थनासे अर्जुनने उनका भी उद्धार कर दिया ।) नारदजीद्वारा इसे तथा इसकी सखियोंको दक्षिण समुद्रके समीपवर्ती तीर्थोंमें जानेका आदेश और अर्जुनद्वारा इन सबके उद्धार होनेका आश्वासन (आदि० २१६ । १७) । यह कुबेरकी सभामें धनाध्यक्षकी सेवाके लिये उपस्थित होती है (सभा० १० । १२) ।

वर्चा-(१) सोम नामक वसुके प्रथम पुत्र । इनकी माताका नाम मनोहरा था (आदि० ६६ । २२) । ये ही अभिमन्युके रूपमें प्रकट हुए थे (आदि० ६७ । ११२-११३; स्वर्गा० ५ । १८-१९) । (२) गृत्समदवंशी सुचेता नामक ब्राह्मणके पुत्र, जो विहव्यके पिता थे (अनु० ३० । ६१) ।

वर्णसंकर-अन्य वर्णकी माता और अन्य वर्णके पितासे उत्पन्न संतान । इसके भेदोंका विस्तृत वर्णन (अनु० ४८ अध्याय) ।

वर्धन-अश्विनीकुमारोंद्वारा स्कन्दको दिये गये दो पार्षदोंमेंसे एक । दूसरेका नाम नन्दन था (शल्य० ४५ । ३८) ।

वर्धमान-हस्तिनापुर नगरका एक प्रधान द्वार (आदि० १२५ । ९) ।

वर्मक-एक देश, जहाँके निवासियोंको पूर्व-दिग्विजयके समय भीमसेनने जीता था (सभा० ३० । १३) ।

वल्कल-एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ६२) ।

वल्गुजङ्घ-विश्वामित्रके ब्रह्मवादी पुत्रोंमेंसे एक (अनु० ४ । ५२) ।

वल्लभ-बलाकाश्वका पुत्र, जो साक्षात् धर्मके समान था । इसके पुत्रका नाम कुशिक था (अनु० ४ । ५) ।

वशातल-एक देश तथा वहाँके निवासी क्षत्रिय राजकुमार, जो राजा युधिष्ठिरके लिये भेंट लाये थे (सभा० ५२ । १५-१७) ।

वसा-भारतवर्षकी एक प्रमुख नदी, जिसका जल भारतवासी पीते हैं (भीष्म० ९ । ३१) ।

वसाति (१)-ये सोमवंशी महाराज कुरुके वंशज राजा जनमेजयके अष्टम पुत्र थे (आदि० ९४ । ५७) । (२) एक भारतीय जनपद । यहाँके वीर क्षत्रिय दुर्योधनकी आज्ञासे भीष्मकी रक्षामें नियुक्त हो तत्परतासे उनकी रक्षा करने लगे (भीष्म० ५१ । १४) ।

वसातीय-कौरवपक्षका एक योद्धा, जो अभिमन्युके साथ युद्ध करके उसके द्वारा मारा गया (द्रोण० ४४ । ८—११) ।

वसिष्ठ (वशिष्ठ)-एक प्रसिद्ध ब्रह्मर्षि, जो ब्रह्माजीके मानस पुत्र माने गये हैं । एक समय जब राजा संवरण शत्रुओंसे पराजित हो सिन्धुनामक महानदके तटवर्ती निकुञ्जमें एक सहस्र वर्षोंतक छिपे रहे, उन्हीं दिनों भगवान् वसिष्ठ मुनि उनके पास आये । राजाने उन्हें उत्तम आसनपर बिठाकर कहा—'भगवन् ! हम पुनः राज्यके लिये प्रयत्न कर रहे हैं, आप हमारे पुरोहित हो जाइये ।' तब वसिष्ठजीने 'बहुत अच्छा' कहकर भरतवंशियोंको अपनाया और पूरुवंशी संवरणको समस्त क्षत्रियोंके सम्राट्-पदपर अभिषिक्त कर दिया (आदि० ९४ । ४०-४५) । वसिष्ठजीका एक नाम आपव भी है (आदि० ९८ । २३) । पूर्वकालमें वरुणने इनको पुत्ररूपमें प्राप्त किया था (आदि० ९९ । ५) । गिरिराज मेरुके पार्श्वभागमें इनका पवित्र आश्रम था, जो मृग और पक्षियोंसे भरा रहता था । सभी ऋतुओंमें विकसित होनेवाले फूल उस आश्रमकी शोभा बढ़ाते थे । उस आश्रमके निकटवर्ती वनमें स्वादिष्ट फल-मूल और जलकी सुविधा थी । पुण्यवानोंमें श्रेष्ठ वरुणनन्दन महर्षि वसिष्ठ वहीं तपस्या करते थे (आदि० ९९ । ६-७) । दक्षकन्या सुरभिकी पुत्री नन्दिनी नामक गौ इन्हें होमधेनुके रूपमें प्राप्त हुई थी (आदि० ९९ । ८-९) । एक दिन द्यो नामक वसुने अपनी पत्नीके बहकानेसे इनकी होमधेनुका अपहरण कर लिया (आदि० ९९ । २८) । वसिष्ठजी फल-मूल लेकर जब आश्रमपर लौटे, तब बछड़ेसहित उस गौको न देखकर वनमें उसकी खोज करने लगे । दिव्य दृष्टिसे यथार्थ बातको जानकर इन्होंने रुष्ट हो वसुओंको मनुष्य-योनिमें जन्म लेनेका शाप दे दिया (आदि० ९९ । २९-३३) । वसुओंके प्रार्थना करनेपर इनका सात वसुओंको एक-एक वर्षमें ही शापमुक्त होनेका आशीर्वाद और द्यो नामक वसुके दीर्घकालतक मनुष्य-योनिमें रहने, संतान न उत्पन्न करने तथा धर्मात्मा, सर्वशास्त्रविशारद, पितृहितैषी एवं स्त्री-भोगपरित्यागी होनेका कथन (आदि० ९९ । ३५-४१) । भीष्मने महर्षि वसिष्ठसे छहों अङ्गोंसहित समस्त वेदोंका अध्ययन किया था (आदि० १०० । ३५) । अर्जुनके जन्म-समयमें सप्तर्षिमण्डलके साथ ये भी पधारे थे (आदि० १२२।५१) । राजा संवरणके द्वारा इनका चिन्तन और इनका बारहवें दिन राजाको दर्शन देना (आदि० १७२।१३-१४) । सूर्यकन्या तपतीने राजाका चित्त चुरा लिया है—यह जानकर इनका ऊर्ध्वलोकमें गमन और इनके द्वारा सूर्य भगवान्का स्तवन ! सूर्यद्वारा इनका स्वागत और इन्हें अभीष्ट वस्तु देनेका आश्वासन (आदि० १७२ । १५—२०) । इनका संवरणके

लिये तपतीका वरण, सूर्यदेवका इन्हें संवरणके लिये अपनी कन्याका दान और तपतीको साथ लेकर इनका राजाके समीप आगमन (आदि० १७२ । २०–२८)। इनकी आज्ञासे राजाका तपतीके साथ विधिवत् विवाह करके उसके साथ पर्वतपर विहार करना (आदि० १७२ । ३२—३४) । अर्जुनके पूछनेपर गन्धर्वका उन्हें वसिष्ठजीका परिचय देना—ये ब्रह्माजीके मानसपुत्र हैं, अरुन्धतीदेवीके पति हैं। देवदुर्जय काम और क्रोध नामक दोनों शत्रु इनकी तपस्यासे सदाके लिये पराभूत हो इनके चरण दबाते रहे हैं। इन्द्रियोंको वशमें कर लेनेके कारण ये 'वशिष्ठ' कहलाते हैं (आदि० १७१ । १—६) । विश्वामित्रके अपराधसे मनमें क्रोध धारण करते हुए भी इन उदारबुद्धि महर्षिने कुशिक-वंशका मूलोच्छेद नहीं किया। सौ पुत्रोंके मारे जानेसे संतप्त हो बदला लेनेकी शक्ति रखते हुए भी इन्होंने असमर्थकी भाँति सब कुछ सह लिया, किंतु विश्वामित्रका विनाश करनेके लिये कोई क्रूरतापूर्ण कर्म नहीं किया। ये अपने मरे हुए पुत्रोंको यमलोकसे भी वापस ला सकते थे, फिर भी यमराजकी मर्यादाका उल्लङ्घन करनेको उद्यत नहीं हुए (आदि० १७३ । ७–९) । इन्हींको पुरोहित-रूपमें पाकर इक्ष्वाकुवंशी नरेशोंने इस पृथ्वीपर अधिकार प्राप्त किया था (आदि० १७३ । १०)। इनके आश्रमपर राजा विश्वामित्रका आगमन और नन्दिनीके प्रभावसे इनके द्वारा सेना तथा मन्त्रियोंसहित उनका आतिथ्यसत्कार (आदि० १७४ । ६—११) । विश्वामित्रका इनसे नन्दिनीको माँगना और इनका उन्हें उनका सारा राज्य लेकर भी नन्दिनीको देनेसे इन्कार करना (आदि० १७४ । १६—१८) । विश्वामित्र-द्वारा बलपूर्वक नन्दिनीका अपहरण होता देखकर भी इनका मौन रहना। नन्दिनीकी इनसे कातर प्रार्थना, इनका नन्दिनीको अपनी ही शक्तिसे आश्रमपर रहनेकी आज्ञा देना और इनकी आज्ञा पाते ही नन्दिनीका म्लेच्छोंकी सृष्टि करके उनके द्वारा विश्वामित्रकी सेनाको मार भगाना (आदि० १७४ । २१—४३) । विश्वामित्रका इनके ऊपर नाना प्रकार अस्त्र-शस्त्र और दिव्यास्त्रोंका प्रयोग करना तथा इनका अपनी बाँसकी छड़ीसे ही उनके सारे अस्त्र-शस्त्रोंको भस्मीभूत कर देना (आदि० १७४ । ४३ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ५१५)। शक्तिके शापसे राक्षसभावको प्राप्त हुए कल्माषपादद्वारा विश्वामित्रकी प्रेरणा पाकर इनके पुत्रोंका भक्षण और इनका शोक (आदि० १७५ । १—४३) । महर्षिने विश्वामित्रका विनाश न करके स्वयं ही शरीर त्याग देनेका विचार कर लिया। ये मेरुपर्वतके शिखरसे कूद पड़े; किंतु पत्थरकी शिला भी इनके लिये रूईके ढेरके समान हो गयी । ये धधकते हुए दावानलमें घुस गये; परंतु वह आग इनके लिये शीतल हो गयी। ये गलेमें भारी पत्थर बाँधकर समुद्रके जलमें कूद पड़े; परंतु समुद्रने अपनी लहरोंसे ढकेलकर इन्हें किनारे डाल दिया (आदि० १७५ । ४४-४९) । इन्होंने देखा, वर्षाका समय है। एक नदी नूतन जलसे लबालब भरी है और तटवर्ती वृक्षोंको बहाये लिये जाती है। सोचा इसीके जलमें डूब जाऊँ। अपने शरीरको पाशोंद्वारा अच्छी तरह बाँधकर ये उस महानदीके जलमें कूद पड़े, परंतु उस नदीने इनके बन्धन काटकर इन्हें स्थलमें पहुँचा दिया। उसके द्वारा विपाश (बन्धनरहित) होनेके कारण इन्होंने उसका नाम विपाशा रख दिया। इसके बाद हिमालयसे निकली हुई एक दूसरी भयंकर नदीकी प्रखर धारामें इन्होंने अपने-आपको डाल दिया; परंतु इनके गिरते ही वह शत-शत धाराओंमें फूटकर द्रुत-गतिसे इधर-उधर भाग चली । इसलिये 'शतद्रु' नामसे विख्यात हुई (आदि० १७६ । १—९) । इनका अपनी पुत्रवधू अदृश्यन्तीके गर्भस्थ बालकके मुखसे वेदाध्ययनकी ध्वनि सुनकर और शक्तिके गर्भस्थ बालककी सूचना पाकर अपनी वंशपरम्परा सुरक्षित जान मृत्युके संकल्पसे विरत होना (आदि० १७६ । १२–१६) । राक्षसके भयसे डरी हुई अदृश्यन्तीको आश्वासन दे इनका कल्माषपाद-का शापसे उद्धार करना तथा राजाकी प्रार्थनासे इनका रानी मदयन्तीके गर्भसे अश्मक नामक पुत्रको उत्पन्न करना (आदि० १७६ । १७–४७) । भृगुवंशी और्वकी कथा सुनाकर इनके द्वारा पराशरके जगद्विनाशक संकल्पका निवारण तथा पराशरके राक्षससत्रकी समाप्ति (आदि० १७७ । ११ से आदि० १८० । २१ तक)। ये ब्रह्माजीकी सभामें विराजमान होते हैं (सभा० ११ । १९) । इनके द्वारा श्रीरामका राज्याभिषेक (वन० २९१ । ६६) । शान्तिदूत बनकर हस्तिनापुर जाते हुए श्रीकृष्णकी मार्गमें इनके द्वारा परिक्रमा करना (उद्योग० ८३ । २७) । इनका द्रोणाचार्यके पास आकर उनसे युद्ध बंद करनेको कहना (द्रोण० १९० । ३३—४०) । कुरुक्षेत्रमें वसिष्ठजीके आवाहन करनेपर सरस्वती नदी 'ओघवती' के नामसे प्रकट हुई थी (शल्य० ३८ । २७–२९) । वसिष्ठापवाह तीर्थके प्रसंगमें विश्वामित्रका क्रोध और वसिष्ठजीकी सहनशीलता (शल्य० ४२ अध्याय) । ये शरशय्यापर पड़े हुए भीष्मको देखनेके लिये गये थे (शान्ति० ४७ । ७) । वसिष्ठजी मुचुकुन्दके पुरोहित थे और कुबेर एवं यक्षोंके साथ युद्ध छिड़ जानेपर इन्होंने तपस्यासे मुचुकुन्दके

लिये विजयका मार्ग प्रशस्त किया था (शान्ति० ७४ । ५-६) । इनके द्वारा प्रजाको जीवनदान (शान्ति० २३४ । २७; अनु० १३७ । १३) । वृत्रासुरसे भयभीत इन्द्रको रथन्तर सामद्वारा सचेत करना (शान्ति० २९१ । २१—२६) । ये मूल गोत्रप्रवर्तक चार ऋषियोंमेंसे एक हैं (शान्ति० २९६ । १७) । विदेहराज कराल जनकको विविध ज्ञानोपदेश (शान्ति० अध्याय ३०२ से ३०८ तक) । इक्कीस प्रजापतियोंमें इनकी भी गणना है (शान्ति० ३३४ । ३६) । ये 'चित्रशिखण्डी' नामवाले ऋषियोंमेंसे एक हैं (शान्ति० ३३५ । २८-२९) । इनके द्वारा हिरण्यकशिपुको शाप (शान्ति० ३४२ । ३१) । पुरुषार्थकी श्रेष्ठताके विषयमें इनका ब्रह्माजीके साथ संवाद (अनु० ६ अध्याय) । इनका राजा सौदासको गोदानकी विधि और गौओंका महत्त्व बताना (अनु० ७८ । ५ से ८० अध्यायतक) । परशुरामजीको शुद्धिके उपायके लिये सुवर्णके दान और उसकी उत्पत्तिका प्रसंग बताना (अनु० ८४ । ४४ से ८५ अध्यायतक) । वृषादर्भिसे प्रतिग्रहका दोष बताना (अनु० ९३ । ३९) । अरुन्धतीसे अपनी दुर्बलताका कारण बताना (अनु० ९३ । ६१) । यातुधानीसे अपने नामकी निरुक्ति बताना (अनु० ९३ । ८४) । मृणालकी चोरी होनेपर शपथ खाना (अनु० ९३ । ११४-११५) । अगस्त्यजीके कमलोंकी चोरी होनेपर शपथ खाना (अनु० ९४ । १७) । ब्रह्माजीसे यज्ञके विषयमें प्रश्न करना (अनु० १२६ । ४४-४५) । वायुदेवद्वारा इनके प्रभावका वर्णन (अनु० १५५ । १६—२५) । कुम्भमें देवताओंका वीर्य स्थापित हुआ था; जिससे इनकी उत्पत्ति हुई (अनु० १५८ । १९) । वृत्रासुरसे गृहीत एवं मोहित हुए इन्द्रको सचेत करना (आश्व० ११ । १८-१९) ।

महाभारतमें आये हुए वसिष्ठके नाम–आपव, अरुन्धतीपति, ब्रह्मर्षि, देवर्षि, हैरण्यगर्भ, मैत्रावरुणि, वारुणि इत्यादि ।

वसिष्ठ पर्वत–यहाँ तीर्थयात्राके अवसरपर अर्जुनका आगमन हुआ था (आदि० २१४ । २) ।

वसिष्ठापवाह–सरस्वतीतटवर्ती एक प्राचीन तीर्थ । इसकी उत्पत्तिका वर्णन (शल्य० ४२ अध्याय) ।

वसिष्ठाश्रम–निश्चीरा सङ्गमके समीपका एक तीर्थभूत आश्रम, जो तीनों लोकोंमें विख्यात है । यहाँ स्नान करनेवाला मनुष्य वाजपेय यज्ञका फल पाता है (वन० ८४ । १४०-१४१) ।

वसु–(१) चेदिदेशके राजा उपरिचर वसु (आदि० ६३ । १-२) । (देखिये उपरिचर वसु) (२) धर्मदेवद्वारा दक्षकन्याके गर्भसे आठ पुत्र उत्पन्न हुए, जो वसुगण कहलाते हैं (आदि० ६६ । १७-१८) । (देखिये अष्टवसु) । (३) महाराज ईलिनके द्वारा रथन्तरीके गर्भसे उत्पन्न । इनके चार भाई और थे, जिनके नाम हैं दुष्यन्त, शूर, भीम और प्रवसु (आदि० ९४ । १७-१८) । (४) एक विद्वान् ब्राह्मण मुनि, जिनके पुत्रका नाम पैल था (सम्भव है ये जमदग्निपुत्र वसु ही हों) (सभा० ३३ । ३५) । (५) जमदग्निके एक पुत्र, इनकी माता रेणुका थीं । इनके भाई रुमण्वान्, सुषेण, विश्वावसु तथा परशुराम थे । पिताकी मातृवधसम्बन्धी आज्ञा न माननेसे इन्हें पिताद्वारा शाप प्राप्त हुआ (वन० ११६ । १०–१२) । परशुरामद्वारा इनका शापसे उद्धार हुआ (वन० ११६ । १७) । (६) कृमिकुलका एक कुलाङ्गार राजा (उद्योग० ७४ । १३) । (७) भगवान् शिवका एक नाम (अनु० १७ । १४०) । (८) भगवान् विष्णुका एक नाम (अनु० १४९ । २५) ।

वसुचन्द्र–युधिष्ठिरका सम्बन्धी और सहायक एक राजा, जो इन्द्रके समान पराक्रमी था (द्रोण० १५८ । ४०) ।

वसुदान–(१) एक क्षत्रिय नरेश, जो पांशुराष्ट्रके अधिपति थे और युधिष्ठिरकी सभामें बैठा करते थे (सभा० ४ । २७) । इन्होंने पांशुदेशसे छब्बीस हाथी, दो हजार घोड़े और सब प्रकारकी भेंट-सामग्री लाकर पाण्डवोंको अर्पित की थी (सभा० ५२ । २७-२८) । इन्होंने युधिष्ठिरके साथ-साथ कुरुक्षेत्रको प्रस्थान किया था (उद्योग० १५१ । ६३) । ये अतिरथी वीर थे (उद्योग० १७१ । २७) । युद्धस्थलमें पाण्डवसेनापति धृष्टद्युम्नके पीछे-पीछे गये थे (द्रोण० २३ । ४१) । द्रोणाचार्यके भल्लद्वारा इनका वध हुआ (द्रोण० १९० । ३०) । ये युद्धमें घोर संहार मचाते थे, द्रोणद्वारा इनके मारे जानेकी चर्चा (कर्ण० ६ । ३८) । (२) पाण्डवपक्षीय पाञ्चाल राजकुमार, जो द्रोणाचार्यद्वारा मारा गया (द्रोण० २१ । ५५) ।

वसुदामा–स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । ५) ।

वसुदेव–शूरसेनके पुत्र । देवकीके पति । श्रीकृष्णके पिता । कुन्तीके भ्राता । उग्रसेनके मन्त्री । पाण्डवोंके चूड़ाकरण आदि संस्कारके लिये इनको वृष्णिवंशियोंकी प्रेरणा, इनका पाण्डुपुत्रोंके संस्कार करवानेके लिये काश्यप नामक पुरोहितको शतशृङ्गपर्वतपर भेजना (आदि० १२३ । ३१ के बाद दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ २६९) । उग्रसेनके भाई

देवककी पुत्री देवकीके साथ इनका विवाह। देवकीको मारनेके लिये उद्यत हुए कंसको इनके द्वारा आश्वासन (सभा० २२ । ३६ के बाद दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ७३१)। इनका नवजात शिशु श्रीकृष्णको रातमें व्रज पहुँचाना और वहाँसे नन्द-कन्याको ले आना (सभा० २२ । ३६ के बाद दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ७३२; ७९८)। इनका श्रीकृष्णसे महाभारत-युद्धका वृत्तान्त पूछना (आश्व० ६० । १—४)। सुभद्राको मूर्छित हुई देखकर स्वयं भी मूर्छित होना और पुनः श्रीकृष्णसे अभिमन्युवधका वृत्तान्त पूछना (आश्व० ६१ । ५–१५)। अभिमन्युका श्राद्ध करना (आश्व० ६२ । १)। मौसलकाण्डमें यादवोंका संहार हो जानेपर भगवान् श्रीकृष्णका द्वारकामें अपने पिता वसुदेवके पास आना, इनसे अर्जुनकी प्रतीक्षा करते हुए स्त्रियोंकी रक्षा करनेके लिये कहना और इनके चरणोंपर मस्तक रखकर बलरामजीके साथ तप करनेके विचारसे तुरंत वहाँसे चल देना (मौसल० ४ । ८–१०)। इनका अर्जुनसे वृष्णिवंशियोंके दुःखद संहारकी बात बताना और श्रीकृष्णका संदेश सुनाना (मौसल० ६ अध्याय)। अर्जुनका इनसे अपना श्रीकृष्णविरहजनित दुःख बताना और वृष्णिवंशकी स्त्रियोंको इन्द्रप्रस्थ ले जानेका विचार प्रकट करना (मौसल० ७ । १–६)। इनके द्वारा परमात्मचिन्तनपूर्वक अपने शरीरका त्याग (मौसल० ७ । १५)। अर्जुनद्वारा इनका अन्त्येष्टि-संस्कार तथा इनकी चार पत्नियोंका इनके शवके साथ चितारोहण (मौसल० ७ । १९-२०)। ये स्वर्गमें जाकर विश्वेदेवोंके स्वरूपमें मिल गये (स्वर्गा० ५ । १७)।

महाभारतमें आये हुए वसुदेवके नाम–आनकदुन्दुभि, शौरि, शूरपुत्र, शूरसूनु, शूरसुत, शूरात्मज, यदूद्वह आदि।

वसुधारा–एक तीर्थ, जो सबके द्वारा प्रशंसित है। वहाँ जानेमात्रसे अश्वमेध यज्ञका फल मिलता है। वहाँ स्नान करके शुद्ध और समाहित चित्त हो देवताओं तथा पितरोंका तर्पण करनेसे मनुष्य विष्णुलोकमें प्रतिष्ठित होता है। वहाँ वसुओंका पवित्र सरोवर है। उसमें स्नान और जलपान करनेसे मनुष्य वसु देवताओंका प्रिय होता है (वन० ८२ । ७६–७८)।

वसुप्रभ–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ६३)।

वसुमना (वसुमान्)–(१) एक प्राचीन नरेश, जो अयोध्यानरेश हर्यश्वद्वारा ययातिकन्या माधवीके गर्भसे उत्पन्न हुए थे। इनके पास ही स्वर्गसे गिरे हुए राजा ययाति इनसे मिलकर सत्सङ्गके प्रभावसे स्वर्गलोकमें चले गये (आदि० ८६ । ५-६)। स्वर्गसे गिरते समय राजा ययातिसे इनकी भेंट (आदि० ९३ । १)। इनके द्वारा ययातिको पुण्यदानका आश्वासन (आदि० ९३ । ३–५)। अपनी माता माधवीसे इनका ययातिका परिचय पूछना (आदि० ९३ । १३ के बाद दाक्षिणात्य पाठ)। अष्टक आदि राजाओंके साथ इनका स्वर्गाभिगमन (आदि० ९३ । १६)। ये यमसभामें रहकर सूर्यपुत्र यमकी उपासना करते हैं (सभा० ८ । १३)। इन्होंने तीर्थयात्रा करके पावन यश और प्रचुर धन प्राप्त किया था (वन० ९४ । १७–१०)। विश्वामित्रके पुत्र अष्टकके अश्वमेध यज्ञमें ये पधारे थे (वन० १९८ । १-२)। नारदजीका इनको अपने और शिबिसे भी पहले स्वर्गलोकसे नीचे उतरनेका अधिकारी बताना (वन० १९८ । ११—१५)। ये इन्द्रके रथपर आरूढ़ हो विराटनगरके आकाशमें अर्जुन और कृपाचार्यका युद्ध देखनेके लिये आये थे (विराट० ५६ । ९-१०)। नैमिषारण्यमें वाजपेय यज्ञद्वारा श्रीहरिकी आराधना करते हुए वसुमना आदिके पास ययातिका स्वर्गसे नीचे गिरना (उद्योग० १२१ । १०-११)। ये दानपतिके नामसे विख्यात थे। इन्होंने ययातिको अपना पुण्यफल प्रदान किया (उद्योग० १२२ । ३–५)। ये कोसलदेशके राजा थे। बृहस्पतिजीसे राज्यकी वृद्धि और ह्रासके विषयमें इनका प्रश्न (शान्ति० ६८ । ६-७)। वामदेवजीसे राजधर्मके विषयमें इनका पूछना (शान्ति० ९२ । ४)। (२) एक राजा, जो युधिष्ठिरकी सभामें विराजमान होते थे (सभा० ४ । ३२)। इन्हें पाण्डवोंकी ओरसे रण-निमन्त्रण भेजनेका निश्चय किया गया था (उद्योग० ४ । २१)। (३) एक अग्नि। यदि अग्निहोत्रसम्बन्धी अग्निको कोई रजस्वला स्त्री छू दे तो इन (वसुमान् अग्नि) के लिये अष्टकपाल चरुद्वारा आहुति देनेकी विधि है (वन० २२१ । २७)। ये ब्रह्माजीकी सभामें विराजमान होते हैं (सभा० ११ । ३०)। (४) एक जनकवंशी राजकुमार, जिन्हें एक ऋषिद्वारा धर्मविषयक उपदेश प्राप्त हुआ था (शान्ति० ३०९ अध्याय)।

वसुमित्र–एक क्षत्रिय राजा, जो दनायुके पुत्र विक्षर नामक असुरके अंशसे उत्पन्न हुए थे (आदि० ६७ । ४१)।

वसुश्री–स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । १४)।

वसुषेण–कर्णका एक नाम; जो अधिरथ और राधाद्वारा बाल्यावस्थामें रखा गया था (आदि० ६७ । १४१, १४७; वन० ३०९ । १४)। (विशेष देखिये कर्ण)।

वसुहोम–अङ्गदेशके एक राजा, जिन्होंने मान्धाताको दण्डकी उत्पत्ति आदिका उपदेश दिया था (शान्ति० १२२ । १—५४)।

वस्रप–क्षत्रियोंकी एक जाति। इस जातिके राजकुमार युधिष्ठिरके लिये भेंट लाये थे (सभा० ५२ । १५–१७)।

वस्रा–भारतवर्षकी एक प्रमुख नदी, जिसका जल भारतवासी पीते हैं (भीष्म० ९ । २५)।

वस्वोकसारा–गङ्गाकी सात धाराओंमेंसे एक (भीष्म० ६ । ४८)।

वहि–विपाशामें रहनेवाला एक पिशाच, जो हीकका साथी है—इन्हीं दोनोंकी संतानें 'वाहीक' कही गयी हैं। ये प्रजापतिकी सृष्टि नहीं हैं (कर्ण० ४४ । ४१-४२)।

वहीनर–एक राजा, जो यमसभामें रहकर सूर्यपुत्र यमकी उपासना करते हैं (सभा० ८ । १५)।

वह्नि–एक दैत्य, दानव या राक्षस, जो पूर्वकालमें पृथ्वीका शासक था; परंतु कालवश इसे छोड़कर चल बसा (शान्ति० २२७ । ५२)।

वागिन्द्र–गृत्समदवंशी प्रकाशके पुत्र। इनके पुत्रका नाम प्रमिति था (अनु० ३० । ६३)।

वाग्मी–राजा पूरुके पौत्र मनस्युके द्वारा सौवीरीके गर्भसे उत्पन्न तीन पुत्रोंमेंसे एक। शेष दोके नाम शक्त और संहनन हैं (आदि० ९४ । ५–७)।

वाजपेय–एक यज्ञविशेष (सभा० ५ । १००)।

वाटधान–(१) एक क्षत्रिय राजा, जो क्रोधवशसंज्ञक दैत्यके अंशसे उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७ । ६३)। इसे पाण्डवोंकी ओरसे रण-निमन्त्रण भेजनेका निश्चय किया गया था (उद्योग० ४ । २३)। (२) एक देश तथा वहाँके निवासी। पश्चिम-दिग्विजयके समय नकुलने वाटधान-देशीय क्षत्रियोंको हराया था (सभा० ३२ । ८)। धन-धान्यसे सम्पन्न यह देश कौरवोंकी सेनासे घिर गया था (उद्योग० १९ । ३१)। भारतके प्रमुख जनपदोंमें इसकी भी गणना है (भीष्म० ९ । ४७)। यहाँके सैनिक भीष्मनिर्मित गरुडव्यूहके शिरोभागमें अश्वत्थामाके साथ खड़े किये गये थे (भीष्म० ५६ । ४)। भगवान् श्रीकृष्णने भी पहले कभी इस देशको जीता था (द्रोण० ११ । १७)। यहाँके सैनिक अर्जुनद्वारा मारे गये थे (कर्ण० ७३ । १७)।

वाणी–भारतवर्षकी एक प्रमुख नदी, जिसका जल भारतवासी पीते हैं (भीष्म० ९ । २०)।

वातघ्न–विश्वामित्रके ब्रह्मवादी पुत्रोंमेंसे एक (अनु० ४ । ५४)।

वातज–एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ५४)।

वातवेग (वायुवेग)–(१) धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६७ । १०२; आदि० ११६ । १०)। यह द्रौपदीके स्वयंवरमें गया था (आदि० १८५ । २)। भीमसेनद्वारा इसका वध (कर्ण० ८४ । २–६)। (२) गरुडकी प्रमुख संतानोंमेंसे एक (उद्योग० १०१ । १०)।

वातस्कन्ध–एक महर्षि, जो इन्द्रकी सभामें उपस्थित होकर वज्रधारी इन्द्रकी उपासना करते हैं (सभा० ७ । १४)।

वाताधिप–एक राजा, जिसे दक्षिण-दिग्विजयके अवसरपर सहदेवने अपने वशमें कर लिया था (सभा० ३१ । १५)।

वातापि–दुर्जय मणिमती नगरीके निवासी इल्वल नामक दैत्यका छोटा भाई (वन० ९६ । १—४)। इल्वल मायासे अपने भाई वातापिको बकरा या भेड़ा बना देता था। वातापि भी इच्छानुसार रूप धारण करनेमें समर्थ था; अतः वह क्षणभरमें भेड़ा या बकरा बन जाता था। इल्वल उस भेड़े या बकरेको मारकर राँधता और वह मांस किसी ब्राह्मणको खिला दिया करता था। इल्वलमें यह शक्ति थी कि वह जिस मरे हुए प्राणीको पुकारे, वह जीवित दिखायी देने लगे। वह वातापिको भी पुकारता और वह बलवान् दैत्य उस ब्राह्मणका पेट फाड़कर हँसता हुआ निकल आता था (वन० ९६ । ७—१३)। उसने अगस्त्य-जीके साथ भी यही बर्ताव किया; परंतु अगस्त्यजीने उसे पेटमें ही पचा लिया, वह पुनः निकल नहीं पाया (वन० ९९ । ३९)।

वातापी–दनुका पुत्र, प्रसिद्ध दस दानव-कुलोंमेंसे एक (आदि० ६५ । २८–३०)।

वातिक–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ६७)।

वात्स्य–(१) एक वेदविद्याके पारंगत ऋषि, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें सदस्य बने थे (आदि० ५३ । ९-१०)। शर-शय्यापर पड़े हुए भीष्मजीको देखनेके लिये ये भी गये थे (शान्ति० ४७ । ५)। (२) एक देश, जिसे श्री-कृष्णने जीता था (द्रोण० ११ । १५)(देखिये वत्स)।

वानव–एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ५४)।

वाभ्रवायणि (बाभ्रवायणि)–विश्वामित्रके ब्रह्मवादी पुत्रोंमेंसे एक (अनु० ४ । ५७)।

वामदेव–(१) एक महर्षि, जो इन्द्रकी सभामें विराजते हैं (सभा० ७ । १७)। इनका राजा शलको अपने वाम्य अश्व देना (वन० १९२ । ४३)। अश्वोंके न लौटानेपर इनका राजासे वार्तालाप और अन्तमें कृत्याजन्य राक्षसोंद्वारा राजाको नष्ट करना (वन० १९२ । ४८—५९)। इनकी शलके छोटे भाई राजा दलसे बातचीत और अश्वों-को पुनः प्राप्त करना (वन० १९२ । ६०—७२)। इनके द्वारा शान्तिदूत बनकर हस्तिनापुर जाते हुए श्री-

कृष्णकी परिक्रमा (उद्योग० ८३ । २७-२८) । इनका महाराज वसुमनाको राजधर्मका उपदेश (शान्ति० अध्याय ९२ से ९४ तक) । (२) एक नरेश, जिन्हें उत्तर-दिग्विजयके अवसरपर अर्जुनने अपने अधीन कर लिया था (सभा० २७ । ११) ।

वामन-(१) कश्यपद्वारा कद्रूके गर्भसे उत्पन्न एक नाग (आदि० ३५ । ६; उद्योग० १०३ । १०) । (२) भगवान् विष्णुके अवतार । देवताओंकी प्रार्थनासे भगवान् नारायणका वामनरूपमें माता अदितिके गर्भसे प्रादुर्भाव, ब्रह्मचारी वामनके द्वारा बलिसे तीन पग भूमिकी याचना (सभा० ३८ । २९ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ७८९) । त्रिभुवनको नापते समय इनका अद्भुत रूप धारण करना । इनके चरणके आघातसे गङ्गाका प्राकट्य । इनके द्वारा दानवोंका भीषण संहार (सभा० ३८ । २९ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ७९०) । इनके द्वारा राजा बलिका बन्धन, बलिको सुतललोकमें भेजकर इनके द्वारा इन्द्रको त्रिभुवन-के राज्यका दान (सभा० ३८ । २९ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ७९०-७९१) । (३) कुरुक्षेत्रकी सीमामें स्थित एक त्रिभुवनविख्यात तीर्थ, जहाँ विष्णुपदमें स्नान और वामन देवताका पूजन करनेसे मनुष्य सब पापोंसे शुद्ध हो भगवान् विष्णुके लोकमें जाता है (वन० ८३ । १०३) । (४) एक सर्वपापविनाशक तीर्थ, जहाँकी यात्रा करके भगवान् श्रीहरिका दर्शन करनेसे मनुष्य कभी दुर्गतिमें नहीं पड़ता (वन० ८४ । १३०-१३१) । (५) गरुड़की प्रमुख संतानोंमेंसे एक (उद्योग० १०१ । १०) । (६) क्रौञ्चद्वीपका एक पर्वत (भीष्म० १२ । १८) । (७) चार दिग्गजोंमेंसे एक, शेष तीनोंके नाम हैं—ऐरावत, सुप्रतीक और अञ्जन (भीष्म० १२ । ३३) । यह घटोत्कचके साथी एक राक्षसका वाहन था (भीष्म० ६४ । ५७) ।

वामनिका-स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । २३) ।

वामा-स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । १२, १७) ।

वाम्य-महर्षि वामदेवके अश्वोंका नाम (वन० १९२।४१) ।

वायु-वायुतत्त्वके अभिमानी देवता, जिन्हें मेनकाने विश्वामित्रको लुभाते समय अपनी आवश्यक सहायताके लिये चुना था । इन्द्रने इन्हें उसके साथ भेजा और इन्होंने मेनकाका वस्त्र उड़ाया (आदि० ७२ । १—४) । इनके द्वारा कुन्तीके गर्भसे भीमसेनका जन्म (आदि० १२२ । ११-१४) । ये ब्रह्माजीकी सभामें उपस्थित हो उनकी उपासना करते हैं (सभा० ११ । २०) । इनका शाल्वको मारनेके लिये उद्यत हुए प्रद्युम्नके पास आकर देवताओंका संदेश सुनाना (वन० १९ । २२-२४) । इनके द्वारा दमयन्तीकी शुद्धिका समर्थन (वन० ७६ । ३६-३९) । इनके द्वारा सीताजीकी शुद्धिका समर्थन (वन० २९१ । २७) । त्रिपुरदाहके समय भगवान् शङ्करके बाणके पंख बने थे (द्रोण० २०२ । ७६-७७) । इनके द्वारा स्कन्दको बल और अतिबल नामक दो पार्षद प्रदान (शल्य० ४५ । ४४-४५) । महाराज पुरूरवाके पूछनेपर उन्हें पुरोहित-की आवश्यकता बताना (शान्ति० ७२ । १०-२५) । नारदजीके मुखसे सेमलकी उद्दण्डताकी बात सुनकर इनका उस वृक्षको धमकाना (शान्ति० १५६ । ६-९) । सेमल वृक्षको चेतावनी देना (शान्ति० १५७ । ५-६) । इन्होंने सुपर्णसे सात्वत धर्मकी शिक्षा प्राप्त की और स्वयं भी विघसाशी ऋषियोंको उसका उपदेश दिया (शान्ति० ३४८ । २२-२४) । इनके द्वारा धर्माधर्मके रहस्यका वर्णन (अनु० १२८ अध्याय) । इनका कार्तवीर्य अर्जुनके प्रति ब्राह्मणकी महत्ताका प्रतिपादन (अनु० १५२ । २४ से अनु० १५७ अध्याय तक) । (२) एक प्राचीन ऋषि, जो शरशय्यापर पड़े हुए भीष्मजी-को देखने आये थे (शान्ति० ४७ । ९) ।

वायुचक्र-मङ्कणक मुनिके कलशमें रखे हुए वीर्यसे उत्पन्न एक ऋषि (शल्य० ३८ । ३२—३७) ।

वायुज्वाल-मङ्कणक मुनिके कलशमें रखे हुए वीर्यसे उत्पन्न एक ऋषि (शल्य० ३८ । ३२—३७) ।

वायुबल-मङ्कणक मुनिके कलशमें रखे हुए वीर्यसे उत्पन्न एक ऋषि (शल्य० ३८ । ३२-३७) ।

वायुभक्ष-एक प्राचीन ऋषि, जो युधिष्ठिरकी सभामें विराजमान होते थे (सभा० ४ । १३) । हस्तिनापुर जाते हुए श्रीकृष्णसे मार्गमें इनकी भेंट (उद्योग० ८३ । ६४ के बाद) ।

वायुमण्डल-मङ्कणक मुनिके कलशमें रखे हुए वीर्यसे उत्पन्न एक ऋषि (शल्य० ३८ । ३२—३७) ।

वायुरेता-मङ्कणक मुनिके कलशमें रखे हुए वीर्यसे उत्पन्न एक ऋषि (शल्य० ३८ । ३२—३७) ।

वायुवेग-(१) एक क्षत्रिय राजा, जो क्रोधवशसंज्ञक दैत्यके अंशसे उत्पन्न हुए थे (आदि० ६७ । ६३) । इन्हें पाण्डवोंकी ओरसे रणनिमन्त्रण भेजनेका निश्चय किया गया था (उद्योग० ४ । १७) । (२) मङ्कणक मुनिके कलशमें रखे हुए वीर्यसे उत्पन्न एक ऋषि (शल्य० ३८ । ३२—३७) ।

वायुहा—मङ्कणक मुनिके कलशमें रखे हुए वीर्यसे उत्पन्न एक ऋषि (शल्य० ३८ । ३२—३७)।

वारण—एक प्रदेश, जो कौरवसेनासे घिर गया था (उद्योग० १९ । ३१)।

वारणावत—एक प्राचीन नगर, जहाँ दुर्योधनने पाण्डवोंको मरवानेके लिये पुरोचनकी सहायतासे लाक्षागृहका निर्माण करवाया था (आदि० ६१ । १७)। (आधुनिक मतके अनुसार 'वर्नवा' जो मेरठसे उत्तर-पश्चिम उन्नीस मील दूर है।) पाण्डवोंने यहाँ एक वर्षतक निवास किया था (आदि० ६१ । २१-२२)। धृतराष्ट्रके मन्त्रियों-द्वारा इस नगरकी प्रशंसा तथा वहाँके मेलेकी चर्चा (आदि० १४२ । ३-४)। पाण्डवोंने संधिके समय जिन पाँच गाँवोंको माँगा था, उसमें वारणावत भी था (उद्योग० ३१ । १९-२०)। धृतराष्ट्रपुत्र युयुत्सुने यहाँ बहुत-से राजाओंके साथ छः मासतक अपराजित रहकर युद्ध किया था (द्रोण० १० । ५८-५९)।

वारवत्या—एक नदी, जो वरुणसभामें रहकर वरुणदेवकी उपासना करती है (सभा० ९ । २२)।

वारवास्य—एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ४५)।

वाराणसी—भीष्मजी माताकी आज्ञासे काशिराजकी कन्याओं-के स्वयंवरमें वाराणसीपुरीको गये और वहाँ आये हुए समस्त राजाओंको चुनौती देकर उन्हें युद्धमें परास्त करके काशिराजकी तीनों कन्याओंको हर लाये (आदि० १०२ । ३—५३)। यह एक प्रमुख तीर्थ है। यहाँ जाकर कपिलाह्रदमें स्नान करके भगवान् शङ्करकी पूजा करनेसे राजसूय यज्ञका फल मिलता है (वन० ८४।७८)। वाराणसीका मध्यभाग अविमुक्तक्षेत्र कहलाता है, यहाँ प्राणोत्सर्ग करनेवालेको मोक्ष प्राप्त होता है (वन० ८४। ७९)। (यह सात मोक्षदायिनी पुरियोंमेंसे एक है।) इसे भगवान् श्रीकृष्णने जलाया था (उद्योग० ४८ । ७६)। काशीपुरीमें काशिराजके पुत्रको धृष्टद्युम्नने मारा था (द्रोण० १० । ६०—६२)। इसी पुरीमें महाज्ञानी तुलाधार वैश्य रहते थे (शान्ति० २६१ । ४२-४३)। पूर्वकालमें भगवान् शिवने वाराणसीपुरीमें मुनिवर जैगीषव्यको उनकी सबल साधनासे संतुष्ट हो अणिमा आदि आठ सिद्धियाँ प्रदान की थीं (अनु० १८ । ३७)। तेजस्वी राजा दिवोदासने इन्द्रकी आज्ञासे वाराणसी नामवाली नगरीका निर्माण किया था। यह पुरी ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रोंसे भरी हुई थी। नाना प्रकारके द्रव्योंसे सम्पन्न थी। उसके बाजार-हाट और दूकानें धन-वैभवसे भरपूर थीं। इस नगरीके घेरेका एक छोर गङ्गाजीके उत्तर तटतक और दूसरा छोर गोमतीके दक्षिण किनारेतक फैला हुआ था। यह इन्द्रके अमरावतीपुरीके समान जान पड़ती थी (अनु० ३० । १६—१८)। पूर्वकालमें यहाँ भगवान् शङ्करके दर्शनके लिये संवर्त मुनि प्रतिदिन आया करते थे। यहीं राजा मरुत्तने नारदजीके बताये अनुसार संवर्तको पहचानकर उन्हें अपने पुरोहितके पदपर प्रतिष्ठित किया था (आश्व० ६ । २२ से आश्व० ७ । १८ तक)।

वाराह—कुरुक्षेत्रकी सीमाके अन्तर्गत स्थित एक उत्तम तीर्थ, जहाँ भगवान् विष्णु पहले वाराहरूपसे स्थित हुए थे। वहाँ स्नान करनेसे अग्निष्टोम यज्ञका फल मिलता है (वन० ८३ । १८-१९)।

वारिसेन—एक राजा, जो यमसभामें रहकर सूर्यपुत्र यमकी उपासना करते हैं (सभा० ८ । २०)।

वारुणतीर्थ—दक्षिण भारतमें पाण्ड्यदेशके अन्तर्गत एक तीर्थ (वन० ८८ । १३)।

वारुणह्रद—वरुणदेवताका एक सरोवर, जिसमें महातेजस्वी अग्निदेव प्रकाशित होते हैं (उद्योग० ९८ । १८)।

वारुणी—जो क्षीरसागरके मन्थन करनेपर उत्पन्न हुई थी (उद्योग० १०२ । १२)।

वार्क्षी—कण्डु मुनिकी पुत्री, जो दस प्रचेताओंकी पत्नी हुई थी (आदि० १९५ । १५)।

वार्त—एक राजा, जो यमसभामें रहकर सूर्यपुत्र यमकी उपासना करते हैं (सभा० ८ । १०)।

वार्धक्षेमि—पाण्डवपक्षके एक महारथी योद्धा, जो वृष्णि-वंशी क्षत्रिय थे (उद्योग० १७१ । १७)। इन्होंने द्रौपदीके स्वयंवरमें पदार्पण किया था (आदि० १८५। ९)। इनके घोड़ोंका वर्णन (द्रोण० २३ । ३५)। कृपाचार्यके साथ इनका युद्ध (द्रोण० २५ । ५१-५२)। युद्धमें इनके मारे जानेकी चर्चा (कर्ण० ६ । २८-२९)।

वार्षगण्य—एक प्राचीन ऋषि, जिनसे गन्धर्वराज विश्वा-वसुने कभी जीवात्म-परमात्मतत्त्वका विवेचन सुना था (शान्ति० ३१८ । ५९)।

वार्ष्णेय—(१) एक प्राचीन देश, जहाँके राजा युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें भेंट लेकर आये थे (सभा० ५१ । २४)। (२) राजा नलका सारथि (वन० ६० । १०)। इसका राजा नलके कुमार-कुमारी इन्द्रसेन और इन्द्र-सेनाको कुण्डिनपुर छोड़कर अयोध्या जाना (वन० ६० । २१—२४)। ऋतुपर्णका सारथि होना (वन० ६० । २५)। ऋतुपर्णका इसे बाहुककी सेवामें नियुक्त करना (वन० ६७ । ७)। ऋतुपर्णके साथ विदर्भ

जाते समय मार्गमें इसके भीतर बाहुकके नल होनेका संदेह होना (वन० ७१ । २६–३४) । (३) भगवान् श्रीकृष्णका एक नाम (भीष्म० २७ । ३६) ।

वालखिल्य (बालखिल्य)–ब्रह्माजीके शक्तिशाली पुत्र महर्षि क्रतुसे उत्पन्न हुए ऋषि, जिनकी संख्या साठ हजार है । ये क्रतुके समान ही पवित्र, तीनों लोकोंमें विख्यात, सत्यवादी, व्रतपरायण तथा भगवान् सूर्यके आगे चलनेवाले हैं (आदि० ६६ । ४–९) । कश्यपकी प्रार्थनासे गरुडद्वारा तोड़ी हुई वटशाखाको छोड़कर इन लोगोंका तपके लिये प्रस्थान (आदि० ३० । १८) । देवराज इन्द्रके अपराध और प्रमादसे तथा महात्मा वालखिल्य महर्षियोंके तपके प्रभावसे पक्षिराज गरुडके उत्पन्न होनेकी बृहस्पतिद्वारा चर्चा (आदि० ३० । ४०) । पुत्रकी कामनासे किये जानेवाले महर्षि कश्यपके यज्ञमें सहायताके लिये एक छोटी-सी पलाशकी टहनी लेकर आते हुए अङ्गुष्ठके मध्यभागके बराबर शरीरवाले वालखिल्य ऋषियोंका बलोन्मत्त इन्द्रद्वारा उपहास, अपमान और लङ्घन (आदि० ३१ । ५–१०) । रोषमें भरे हुए वालखिल्योंका देवराजके लिये भयदायक दूसरे इन्द्रकी उत्पत्तिके निमित्त अग्निमें विधिवत् होम करना (आदि० ३१ । ११–१४) । महर्षि कश्यपका अनुनयपूर्वक बालखिल्योंको समझाना, इनके संकल्पके अनुसार होनेवाले पुत्रको पक्षियोंका इन्द्र बनानेके लिये इनकी सम्मति लेना और याचक बनकर आये हुए देवराज इन्द्रपर अनुग्रह करनेके लिये अनुरोध करना । वालखिल्योंका इनके अनुरोधको स्वीकार करना (आदि० ३१ । १६–२३) । ये सूर्य-किरणोंका पान करनेवाले ऋषि हैं और ब्रह्माजीकी सभामें विराजमान होते हैं (सभा० ११ । २०) । इन्होंने सरस्वतीके तटपर यज्ञ किया था (वन० ९० । १०) । द्रोणाचार्यके पास आकर उनसे युद्ध बंद करनेको कहना (द्रोण० १९० । ३३–४०) । ये राजा पृथुके मन्त्री बने थे (शान्ति० ५९ । ११०) । अगस्त्यजीके कमलोंकी चोरी होनेपर इनका शपथ खाना (अनु० ९४ । ३९) । बालखिल्यगण तपस्यासे सिद्ध हुए मुनि हैं । ये सब धर्मोंके ज्ञाता हैं और सूर्यमण्डलमें निवास करते हैं । वहाँ ये उञ्छवृत्तिका आश्रय ले पक्षियोंकी भाँति एक-एक दाना बीनकर उसीसे जीवन-निर्वाह करते हैं । मृगछाला, चीर और वल्कल—ये ही इनके वस्त्र हैं । ये बालखिल्य शीत-उष्ण आदि द्वन्द्वोंसे रहित, सन्मार्गपर चलनेवाले और तपस्याके धनी हैं । इनमेंसे प्रत्येकका शरीर अङ्गूठेके सिरेके बराबर है । इतने लघुकाय होनेपर भी ये अपने-अपने कर्तव्यमें स्थित हो सदा तपस्यामें संलग्न रहते हैं । इनके धर्मका फल महान् है । ये देवताओंका कार्य सिद्ध करनेके लिये उनके समान रूप धारण करते हैं । ये तपस्यासे सम्पूर्ण पापोंको दग्ध करके अपने तेजसे समस्त दिशाओंको प्रकाशित करते हैं (अनु० १४१ । ९९–१०२) । ये प्रतिदिन नाना प्रकारके स्तोत्रोंद्वारा निरन्तर उगते हुए सूर्यकी स्तुति करते हुए सहसा आगे बढ़ते जाते हैं और अपनी सूर्यतुल्य किरणोंसे सम्पूर्ण दिशाओंको प्रकाशित करते रहते हैं । ये सब-के-सब धर्मज्ञ और सत्यवादी हैं । इन्हींमें लोकरक्षाके लिये निर्मल सत्य प्रतिष्ठित है । इन वालखिल्योंके ही तपोबलसे यह सारा जगत् टिका हुआ है । इन्हीं महात्माओंकी तपस्या, सत्य और क्षमाके प्रभावसे सम्पूर्ण भूतोंकी स्थिति बनी हुई है—ऐसा मनीषी पुरुष मानते हैं (अनु० १४२ । ३३ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ५९३३) ।

वालिशिख–कश्यपद्वारा कद्रूके गर्भसे उत्पन्न एक नाग (आदि० ३५ । ८) ।

वाली–(१) वरुणकी सभामें रहकर उनकी उपासना करनेवाला एक दैत्य (सभा० ९ । १४) । (२) एक वानरराज, जो सुग्रीवका भाई और इन्द्रका पुत्र था । भगवान् रामद्वारा इसका वध (सभा० ३८ । २९ के बाद दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ७९५, कालम १; वन० १४७ । २८) । इसकी पत्नीका नाम तारा था (वन० २८० । १८) । वालीका सुग्रीवके साथ युद्ध और श्रीरामद्वारा वध (वन० २८० । ३०—३६) । इसके अङ्गद नामक एक पुत्र था (वन० २८८ । १४) ।

वाल्मीकि–(१) एक महर्षि, जो इन्द्रकी सभामें विराजमान होते हैं) सभा० ७ । १६) । शान्तिदूत बनकर हस्तिनापुर जाते हुए श्रीकृष्णकी इनके द्वारा मार्गमें परिक्रमा (उद्योग० ८३ । २७) । सात्यकिने भूरिश्रवाके वधके पश्चात् महर्षि वाल्मीकिके एक श्लोकका गान किया था (द्रोण० १४३ । ६७-६८) । युधिष्ठिरसे शिवभक्तिके विषयमें अपना अनुभव सुनाना (अनु० १८ । ८–१०) । (२) गरुडकी प्रमुख संतानोंमेंसे एक (उद्योग० १०१ । ११) ।

वाष्कल–हिरण्यकशिपुका पाँचवाँ पुत्र (आदि० ६५ । १८) ।

वासवी–उपरिचर वसुके वीर्यसे अद्रिकाके गर्भसे उत्पन्न । दाशराजद्वारा पालित (आदि० ६३ । ५१–७१) । (देखिये सत्यवती)

वासिष्ठ–(१) वसिष्ठसे सम्बन्ध रखनेवाली वस्तु (आख्यान) (आदि० १७४ । २) । (२) वसिष्ठ-पुत्र शक्ति एवं वसिष्ठके वंशज (आदि० १८० । २०; वन० २६ । ७) । (३) एक तीर्थ, इसमें स्नान करके वासिष्ठी

नदीको लाँघकर जानेवाले क्षत्रिय आदि सभी वर्णोंके लोग- द्विजाति (ब्राह्मण) हो जाते हैं (वन० ८४ । ४८)। (४) एक अग्नि (वन० २२० । १)।

वासिष्ठी-एक नदी (वन० ८४ । ४८)।

वासुकि-एक नागराज, जो आस्तीकके मामा तथा कश्यप और कद्रूके पुत्र थे (आदि० ३५ । ५)। नागोंकी रक्षाके लिये इनके द्वारा अपनी बहिन जरत्कारुको जरत्कारु ऋषिकी सेवामें उनकी पत्नीरूपसे समर्पण (आदि० १४ । ६-७; आदि० ४६ । २०—२३)। समुद्र-मन्थनके समय इनका मन्थनदण्डकी डोरी होना (आदि० १८ । १३)। नागोंद्वारा इनका नागराज-पदपर अभिषेक (आदि० ३६ । २५ के बाद दा० पाठ)। माताके शापसे इनका चिन्तित होना (आदि० ३७ । ३—९; आदि० ४८ । ३—८)। माताके शापसे अपनी रक्षा करनेके उपायपर इनका नागोंके साथ परामर्श (आदि० ३७ । १०—३४)। एलापत्र नागका इनको अपनी बहिनका जरत्कारु ऋषिके साथ विवाह करनेकी सलाह देना (आदि० ३८ । १८-१९)। ब्रह्माजीकी आज्ञासे वासुकिका जरत्कारु मुनिके साथ अपनी बहिनको ब्याहनेके लिये प्रयत्नशील होना (आदि० ३९ अध्याय)। सर्प-यज्ञमें जलते हुए नागोंको देखकर उनकी रक्षाके लिये भयभीत हुए इनका अपनी बहिन जरत्कारुको आस्तीकसे कहनेके लिये प्रेरित करना (आदि० ५३ । २०—२६)। इनके वंशके जले हुए नागोंकी गणना (आदि० ५७ । ५-६)। ये अर्जुनके जन्मसमयमें वहाँ पधारे थे (आदि० १२२ । ७१)। आर्यकके प्रार्थना करनेपर भीमसेनको दिव्य-रसका पान करानेके लिये इनका नागोंको आदेश देना (आदि० १२७ । ६९)। ये वरुण-सभामें उपस्थित होकर उनकी उपासना करते हैं (सभा० ९ । ८)। अर्जुनने कभी इनकी बहिनका चित्त चुराया था (विराट० २ । १४)। ये त्रिपुरदाहके समय भगवान् शङ्करके धनुषकी प्रत्यञ्चा बने थे (द्रोण० २०२ । ७६)। साथ ही उनके रथका कूबर भी बने हुए थे (कर्ण० ३४ । २२)। कर्ण और अर्जुनके द्वैरथ युद्धके समय ये अर्जुन-की ही विजयके समर्थक थे (कर्ण० ८७ । ४३)। इनका नागधन्वातीर्थ निवासस्थान है; वहीं देवताओंने इनका नागराजके पदपर अभिषेक किया था (शल्य० ३७ । ३०—३२)। इनके द्वारा स्कन्दको जय और महाजय नामक दो पार्षद प्रदान (शल्य० ४५ । ५२-५३)। ये सात धरणीधरोंमेंसे एक हैं (अनु० १५० । ४१)। बलरामजीके परमधामगमनके समय ये उनके स्वागतमें आये थे (मौसल० ४ । १५)।

महाभारतमें आये हुए वासुकिके नाम—नागराट्, नागराज, नागेन्द्र, पन्नग, पन्नगराट्, पन्नगराज, पन्नगेश्वर, पन्नगेन्द्र, सर्पराट्, सर्पराज आदि।

वासुकितीर्थ-प्रयागमें (दारागंजके पास गङ्गातटपर) भोगवती नामक उत्तम तीर्थ, जिसमें स्नान करनेसे अश्व-मेध यज्ञका उत्तम फल मिलता है (वन० ८५ । ८६)।

वासुदेव-(१) वसुदेवजीके पुत्र श्रीकृष्ण (सभा० ३८ । २९ के बाद दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ८०५, कालम २)। (देखिये कृष्ण) (२) (पौण्ड्रक) पुण्ड्रदेशका राजा वासुदेव, जो द्रौपदीके स्वयंवरमें उपस्थित हुआ था (आदि० १८५ । १२)। (विशेष देखिये पौण्ड्रक)

वाहिनी-(१) सेनाविशेष । तीन गुल्मका एक गण और तीन गणकी एक वाहिनी होती है (आदि० २ । २१)। (२) ये सोमवंशीय राजा कुरुकी पत्नी थीं। इनके गर्भसे कुरुद्वारा अश्ववान् आदि पाँच पुत्र हुए थे (आदि० ९४ । ५०-५१)। (३) भारतवर्षकी एक प्रमुख नदी, जिसका जल भारतवासी पीते हैं (भीष्म० ९ । ३४)।

विंश-सूर्यवंशी इक्ष्वाकुके ज्येष्ठ पुत्र, जो धनुर्धर वीरोंके आदर्श थे। इनके पुत्रका नाम था विविंश (आश्व० ४ । ४-५)।

विकट (विकटानन)-धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६७ । ९६; आदि० ११६ । ५)। यह द्रौपदीके स्वयंवरमें गया था (आदि० १८५ । ३)। भीमसेनको घायल करनेवाले धृतराष्ट्रके चौदह पुत्रोंमें एक यह भी था (कर्ण० ५१ । ७—९)। भीमसेनद्वारा इसका वध (कर्ण० ५१ । १६)।

विकर्ण-(१) धृतराष्ट्रका एक महारथी पुत्र। ग्यारह महा-रथियोंमेंसे एक (आदि० ६३ । ११९)। धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६७ । ९४; आदि० ११६ । ४)। द्रुपदपर चढ़ाई करनेवाले दुर्योधन आदि द्रोण-शिष्योंमें यह भी था (आदि० १३७ । १९—२१)। यह द्रौपदीके स्वयंवरमें भी गया था (आदि० १८५ । १)। द्रुपदनगरसे आते हुए पाण्डवोंकी अगवानीके लिये इसका जाना (आदि० २०१ । १३)। भरी सभामें द्रौपदीके प्रश्नपर मौन हुए राजाओंके बीच इसका न्याय-पूर्ण निर्णय (सभा० ६८ । ११)। कर्णद्वारा इसे फट-कार (सभा० ६८ । ३०)। विराटकी गौओंके हरणके समय अर्जुनपर आक्रमण (विराट० ५४ । ९)। अर्जुनसे पराजित होकर भागना (विराट० ५४ । १०)। अर्जुनसे युद्ध और घायल होकर रथसे नीचे गिरना (विराट० ६१ । ४२)। गजराजद्वारा अर्जुनपर आक्रमण और हारकर भागना (विराट० ६५ । ६—१०)।

प्रथम दिनके संग्राममें सुतसोमके साथ इसका द्वन्द्वयुद्ध (भीष्म० ४५ । ५८-५९) । सहदेवके साथ संग्राम (भीष्म० ७१ । २१-२२) । अभिमन्युद्वारा पराजय (भीष्म० ७८ । २१-२२; भीष्म० ८४ । ४०—४२)। घटोत्कचद्वारा पराजय (भीष्म० ९२ । ३६) । नकुलके साथ द्वन्द्व-युद्ध (भीष्म० ११० । ११-१२; भीष्म० १११ । ३४—३६) । भीमसेनके साथ युद्ध (भीष्म० ११३ अध्याय) । शिखण्डीके साथ युद्ध (द्रोण० २५ । ३६-३७) । भीमसेनके साथ युद्ध (द्रोण० ९६ । ३१) । नकुलके साथ युद्ध (द्रोण० १०६ । १२) । नकुलद्वारा इसकी पराजय (द्रोण० १०७ । ३०) । भीमसेनद्वारा इसका वध और इसके लिये उनका शोक प्रकट करना (द्रोण० १३७ । २९-३५) । इसके मारे जानेकी चर्चा (कर्ण० ५ । ८-९) ।

महाभारतमें आये हुए विकर्णके नाम—भरतर्षभ, भरतसत्तम, धार्तराष्ट्र, धृतराष्ट्रज, दुर्योधनावर, कुरुप्रवीर, कुरुवर्धन आदि ।

(२) एक भारतीय जनपद । यहाँके सैनिक दुर्योधनके साथ रहकर शकुनिकी सेनाका संरक्षण कर रहे थे (भीष्म० ५१ । १५) । (३) एक ऐश्वर्यशाली शिवभक्त ऋषि, जिन्होंने शिवजीको प्रसन्न करके मनोवाञ्छित सिद्धि प्राप्त की थी (अनु० १४ । ९९) ।

विकल्प—एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ५९) ।

विकाथिनी—स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । १८) ।

विकुञ्ज—एक भारतीय जनपद । यहाँके सैनिक भीष्मद्वारा निर्मित गरुडव्यूहके बायें पंखके स्थानपर राजा बृहद्बलके साथ खड़े थे (भीष्म० ५६ । ९) ।

विकुण्ठन—ये सोमवंशीय महाराज हस्तीके द्वारा त्रिगर्तराजकी पुत्री यशोधराके गर्भसे उत्पन्न हुए थे । इनकी पत्नी दशार्णकुलकी कन्या सुदेवा थी, जिसके गर्भसे अजमीढ़ नामक पुत्र उत्पन्न हुआ था (आदि० ९५ । ३५-३६) ।

विकृत—अन्य नाम और रूप धारण करके आया हुआ काम, जिसका राजा इक्ष्वाकुके साथ संवाद हुआ था (शान्ति० १९९ । ८८—११७) ।

विक्रम (बलवर्धन)—धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६७ । ९८; आदि० ११६ । ७) ।

विक्षर—कश्यपपत्नी दनायुके गर्भसे उत्पन्न असुरोंमें श्रेष्ठ चार पुत्रोंमेंसे एक । शेष तीनके नाम हैं—बल, वीर और वृत्र (आदि० ६५ । ३३) । यही पृथ्वीपर राजा वसुमित्रके रूपमें उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७ । ४१) ।

विगाहन—मुकुटवंशका एक कुलाङ्गार राजा (उद्योग० ७४ । १६) ।

विग्रह—समुद्रद्वारा स्कन्दको दिये गये दो पार्षदोंमेंसे एक । दूसरेका नाम संग्रह था (शल्य० ४५ । ५०) ।

विचख्नु—एक प्राचीन नरेश, जिन्होंने हिंसाकी निन्दा और अहिंसाधर्मकी प्रशंसा की थी । इन्होंने यह स्पष्ट घोषणा की थी कि सुरा, आसव, मधु, मांस और मछली तथा तिल एवं चावलकी खिचड़ी—इन सब वस्तुओंको धूर्तोंने यज्ञमें प्रचलित कर दिया है । वेदोंमें इनके उपयोगका विधान नहीं है । उन धूर्तोंने अभिमान, मोह और लोभके वशीभूत होकर उन वस्तुओंके प्रति अपनी यह लोलुपता ही प्रकट की है । ब्राह्मण तो सम्पूर्ण यज्ञोंमें भगवान् विष्णुका ही आदरभाव मानते हैं और खीर तथा फूल आदिसे ही उनकी पूजाका विधान है (शान्ति० २६५ । ३—१२) ।

विचित्र—एक क्षत्रिय राजा, जो क्रोधवशसंज्ञक दैत्यके अंशसे उत्पन्न हुए थे (आदि० ६७ । ६१) ।

विचित्रवीर्य—शान्तनुद्वारा सत्यवतीके गर्भसे उत्पन्न एक राजा, जो चित्राङ्गदके छोटे भाई थे (आदि० ९५ । ४९-५०; आदि० १०१ । ३) । धृतराष्ट्र तथा पाण्डु इनके क्षेत्रज पुत्र थे (आदि० १ । ९४-९५) । भीष्मद्वारा इनका राज्याभिषेक (आदि० १०१ । १२) । भीष्मकी आज्ञाके अनुसार इनका राज्यशासन (आदि० १०१ । १३) । काशिराजपुत्री अम्बिका तथा अम्बालिकासे इनका विधिपूर्वक विवाह (आदि० ९५ । ५१; आदि० १०२ । ६५) । असंयमपूर्ण जीवन होनेके कारण राजयक्ष्माके द्वारा इनकी असामयिक मृत्यु (आदि० १०२ । ७०-७१) । भीष्मद्वारा इनका अन्त्येष्टि-संस्कार (आदि० १०२ । ७३) । इनकी पत्नी अम्बिकाके गर्भसे व्यासद्वारा धृतराष्ट्रका जन्म (आदि० १०५ । १३—१५) । इनकी द्वितीय पत्नी अम्बालिकाके गर्भसे व्यासद्वारा पाण्डुकी उत्पत्ति (आदि० १०५ । १७—२१) । इनकी पत्नीकी दासीसे व्यासद्वारा विदुरका जन्म (आदि० १०५ । २४—२८) ।

विजय—(१) एक प्राचीन राजा (आदि० १ । २३३) । (२) भगवान् शङ्करके त्रिशूलका नाम । यह विजय नामक त्रिशूल स्कन्दकी भद्रवट-यात्राके समय यमराजके पीछे-पीछे गया था । यह तीन शिखरोंसे सुशोभित और सिन्दूर आदिसे सुसज्जित था (वन० २३१ । ३७-३८) । (३) अज्ञातवासके समय युधिष्ठिरद्वारा नियत किया गया अर्जुनका एक गुप्त नाम (विराट० ५ । ३५) । (४) अर्जुनके प्रसिद्ध दस नामोंमेंसे एक । इस नामकी व्याख्या

(विराट० ४४ । ९, १४) । (५) देवराज इन्द्रका एक दिव्य धनुष, जो गाण्डीवके समान तेजस्वी था और श्रीकृष्णके शार्ङ्गधनुषकी समानता करता था । देवताओंके तीन ही धनुष दिव्य माने गये हैं–विजय, गाण्डीव और शार्ङ्ग । ये क्रमशः इन्द्र, वरुण और भगवान् विष्णुके धनुष हैं । गन्धमादननिवासी किम्पुरुषप्रवर द्रुमको इन्द्रसे यह दिव्य धनुष प्राप्त हुआ था । फिर इसे इन्हींके शिष्य महातेजस्वी रुक्मीने उन्हींसे प्राप्त किया (उद्योग० १५८ । ३—९) । (६) एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ४५) । (७) धृतराष्ट्रका एक पुत्र, जिसने जय और दुर्जयके साथ मिलकर नील, काश्य तथा जयत्सेन–इन तीनोंसे युद्ध किया था (द्रोण० २५ । ४५) । इसका सात्यकिके साथ युद्ध (द्रोण० ११६ । ६-७) । शकुनिके अर्जुनपर धावा करनेके समय यह भी उसके साथ था (द्रोण० १५६ । १२०-१२३) । (८) कर्णके दिव्य धनुषका नाम, जो समस्त आयुधोंमें श्रेष्ठ था । इसे इन्द्रका प्रिय चाहनेवाले विश्वकर्माने उन्हींके लिये बनाया था । देवेन्द्रने इसी धनुषसे कितने ही दैत्यसमूहोंपर विजय पायी थी । इसकी टङ्कार सुनकर दैत्योंको दसों दिशाओंको पहचाननेमें भ्रम हो जाता था । इसी अपने परम प्रिय धनुषको इन्द्रने परशुरामजीको दिया था और परशुरामजीने यह दिव्य उत्तम धनुष कर्णको दे दिया था । यह घोर धनुष गाण्डीवसे श्रेष्ठ था। इसीके द्वारा परशुरामजीने इस पृथ्वीपर इक्कीस बार विजय पायी थी (कर्ण० ३१ । ४२-४६) । (९) भगवान् शिवका एक नाम (अनु० १७ । ५१) । (१०) भगवान् विष्णुका एक नाम (अनु० १४९ । २९) ।

विजया–(१) ये दशार्हराजकी पुत्री तथा सम्राट् सुमन्यु-की पत्नी थीं । इनके गर्भसे सुहोत्रका जन्म हुआ था (आदि० ९५ । ३३) । (२) यह मद्रदेशके राजा द्युतिमान्‌की पुत्री थी । इसने स्वयंवरमें पाण्डुपुत्र सहदेव-को वरण किया । सहदेवके द्वारा इसके गर्भसे सुहोत्र नामक पुत्र उत्पन्न हुआ (आदि० ९५ । ८०) । (३) दुर्गा देवीका एक नाम (विराट० ६ । १६) ।

विटभूत–एक दैत्य, जो वरुणकी सभामें रहकर उनकी उपासना करता है (सभा० ९ । ६५) ।

वितण्डा–वाद-विशेष (जिस बहस या वादविवादका उद्देश्य अपने पक्षकी स्थापना या परपक्षका खण्डन न होकर व्यर्थकी बकवादमात्र हो, उसका नाम वितण्डा है ।) (सभा० ३६ । ४) ।

वितत्य–गृत्समदवंशी विहव्यके पुत्र, जो सत्यके पिता थे (अनु० ३० । ६२) ।

वितर्क–ये महाराज कुरुके वंशज धृतराष्ट्रके पुत्र थे (आदि० ९४ । ५८) ।

वितद्रु–एक यादव, जिसकी गणना यदुवंशियोंके सात प्रधान मन्त्रियोंमें है (सभा० १४ । ६० के बाद) ।

वितस्ता–काश्मीर एवं पञ्चनद प्रदेशकी झेलम नदी, जो वरुणकी सभामें रहकर उनकी उपासना करती है (सभा० ९ । १९) । इसमें स्नान करके देवताओं और पितरोंका तर्पण करनेसे मनुष्यको वाजपेय यज्ञका फल प्राप्त होता है । काश्मीरमें नागराज तक्षकका वितस्ता नामसे प्रसिद्ध भवन है, जो सब पापोंका नाश करनेवाला है । वहाँ स्नान करनेसे मनुष्य वाजपेय यज्ञके फल और उत्तम गतिका भागी होता है (वन० ८२ । ८९—९१) । इसके प्रवाहमें ब्राह्मणोंके चार सौ श्यामकर्ण घोड़े बह गये थे (उद्योग० ११९ । ८) । इसका जल भारतवासी पीते हैं (भीष्म० ९ । १६) । मनुष्य उपवास करके तरङ्गमालिनी वितस्तामें सात दिनोंतक स्नान करे तो वह मुनिके समान निर्मल हो जाता है (अनु० २५ । ७) । पार्वतीजीने जिन नदियोंसे सलाह लेकर भगवान् शङ्करके प्रति स्त्री-धर्मका वर्णन किया था, उनमें वितस्ता भी थी (अनु० १४६ । १८) ।

वित्तदा–स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । २८) ।

विदण्ड–एक राजा, जो अपने पुत्र दण्डके साथ द्रौपदी-स्वयंवरमें पधारे थे (आदि० १८५ । १२) ।

विदभ–एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ६४) ।

विदर्भ–(१) एक प्राचीन देश, जिसे सहदेवने अपनी दक्षिण-दिग्विजयके समय विदर्भदेशीय भोजकट नगरमें जाकर वहाँके राजा भीष्मकको परास्त किया था (सभा० ३१ । ११-१२) । यहाँके राजा भीष्मको महर्षि दमनकी कृपासे दम, दान्त और दमन नामक पुत्र तथा दमयन्ती नाम्नी कन्याकी प्राप्ति हुई थी (वन० ५३ । ५—९) । विदर्भराजकी कन्या दमयन्तीके स्वयंवरका समाचार सुन-कर उसमें सम्मिलित होनेके लिये इन्द्र, अग्नि, वरुण और यम—ये चार देवता अपने सेवकों और वाहनके साथ विदर्भ देशमें पधारे (वन० ५४ । २०-२६) । विदर्भ देशमें उत्पन्न होनेके कारण ही दमयन्ती वैदर्भी कहलाती थी (वन० ५५ । १२, २२; वन० ५६ । ५; वन० ६८ । ३२) । नल-सारथि वार्ष्णेयने राजकुमार इन्द्रसेन तथा कुमारी इन्द्रसेनाको रथपर बिठाकर विदर्भ देशको प्रस्थान किया (वन० ६० । २१-२२) । राजा नलका दमयन्तीको विदर्भका मार्ग बताना

(वन० ६१ । २३)। दमयन्तीके पिता विदर्भराज भीम महारथी, पृथ्वीपालक तथा चारों वर्णोंके रक्षक थे, वे विदर्भ देशकी जनताका अच्छी तरह पालन करते थे (वन० ६४ । ४४-४७)। दमयन्ती अपनी मौसीसे विदा ले चेदिदेशसे विदर्भ देशमें अपने पिताके यहाँ जा पहुँची (वन० ६९ । २१—२४)। राजा ऋतुपर्ण बाहुकरूपधारी नलके साथ विदर्भ देशको गये (वन० ७१ । २; वन० ७२ । १९, ४२; वन० ७३ । १)। नलके प्रकट होनेपर विदर्भ देशमें महान् उत्सव मनाया गया (वन० ७७ । ५-८)। रुक्मिणी विदर्भनरेशकी पुत्री थीं, भगवान् श्रीकृष्णने उनका अपहरण किया। बहिनका वह अपहरण रुक्मीके लिये असह्य हो उठा; उसने यह प्रतिज्ञा कर ली कि कृष्णको मारे बिना विदर्भ देशकी राजधानीमें नहीं लौटूँगा, परंतु श्रीकृष्णका सामना होनेपर वह विशाल चतुरङ्गिणी सेनासहित पराजित हो गया। अतः अपनी प्रतिज्ञाकी रक्षा करता हुआ वह पुनः कुण्डिनपुरकी ओर नहीं लौटा। जहाँ उसकी पराजय हुई, वहीं भोजकट नामक श्रेष्ठ नगर बसाकर उसीमें रहने लगा। उन दिनों भोजकट ही विदर्भकी राजधानीके रूपमें प्रख्यात हुआ (उद्योग० १५८ । १०—१६)।

(२) एक प्राचीन राजा, जिनके पुत्र राजा निमि अगस्त्य मुनिको अपनी कन्या और राज्यका दान करके पुत्र, पशु और बान्धवोंसहित स्वर्गमें चले गये (अनु० १३७ । ११)।

विदिशा—एक नदी, जो वरुणसभामें उपस्थित होकर वरुणदेवकी उपासना करती है (सभा० ९ । १८)। इसकी गणना भारतकी प्रमुख नदियोंमें है (भीष्म० ९ । २८)।

विदुर—व्यासके द्वारा अम्बिकाकी दासीके गर्भसे उत्पन्न (आदि० १ । ९४-९६)। अणीमाण्डव्यके शापसे धर्मराजने ही शूद्रयोनिमें विदुर होकर जन्म लिया था (आदि० ६३ । ९३—९७; आदि० १०५ । २९)। ये राजा धृतराष्ट्र तथा पाण्डुके भाई थे (आदि० १०५ । २८)। भीष्मद्वारा इनका संवर्धन एवं पालन-पोषण (आदि० १०८ । १७-१८)। इनकी धर्मनिष्ठा तथा अध्ययन (आदि० १०८ । १९—२२)। शूद्राके गर्भसे ब्राह्मणद्वारा उत्पन्न होनेके कारण इनको राज्यकी प्राप्ति नहीं हुई (आदि० १०८ । २५)। इनको पाण्डुद्वारा धनकी भेंट (आदि० ११२ । २)। राजा देवकके घरमें स्थित तथा ब्राह्मणद्वारा शूद्राके गर्भसे उत्पन्न हुई कन्याके साथ भीष्मद्वारा इनका विवाह (आदि० ११३ । १२-१३)। दुर्योधनके जन्मकालमें होनेवाले अमङ्गलोंको देखकर उसे त्याग देनेके लिये इनकी धृतराष्ट्रको सलाह (आदि० ११५ । ३४—४०)। इनके द्वारा आत्माके कल्याणके लिये सम्पूर्ण जगत्‌को त्याग देनेका उपदेश (आदि० ११४ । ३९)। पाण्डुका राजोचित ढंगसे अस्थि-संस्कार करनेके लिये इनको धृतराष्ट्रका आदेश (आदि० १२६ । १—३)। इनके द्वारा पाण्डुका अस्थिदाह तथा उनके लिये जलाञ्जलि-दान (आदि० १२६ । २७-२८)। भीमसेनके नागलोकमें जानेपर चिन्तित हुई कुन्तीको इनकी आश्वासन (आदि० १२८ । १७-१८)। इनके द्वारा राजकुमारोंके अस्त्रकौशल-प्रदर्शनके समय धृतराष्ट्रसे कुमारोंकी कलाओंका वर्णन (आदि० १३३ । ३५)। पाण्डवोंको लाक्षागृहमें सावधान रहने एवं कौरवोंके कुचक्रसे बचनेके लिये इनका सांकेतिक भाषामें युधिष्ठिरको संकेत (आदि० १४४ । १९—२६)। इनका लाक्षागृहमें सुरंग बनानेके लिये पाण्डवोंके पास खनकका भेजना (आदि० १४६ । १)। पाण्डवोंको गङ्गा पार उतारनेके लिये नाविक भेजना (आदि० १४८ । २)। लाक्षागृहमें पाण्डवोंकी मृत्युके समाचारसे दुःखी हुए भीष्मका इनके द्वारा उनके जीवित रहनेका रहस्य बतलाकर आश्वासन (आदि० १४९ । १८ के बाद)। द्रुपद-नगरसे पाण्डवोंको बुलाने एवं उनका आधा राज्य दे देनेके सम्बन्धमें धृतराष्ट्रके प्रति कहे हुए द्रोण तथा भीष्मके वचनोंका इनके द्वारा समर्थन (आदि० २०४ । १—३०)। धृतराष्ट्रके आदेशसे द्रुपद-नगरमें जाकर इनका पाण्डवोंको हस्तिनापुरमें ले आना (आदि० २०५ । ४ से २०६ । ११ तक)। द्रुपद-नगरमें इनका कुन्तीको आश्वासन देना (आदि० २०६ । ९ के बाद)। ये युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें गये थे (सभा० ३३ । ५)। वहाँ इन्हें धनके व्यय करनेका कार्य सौंपा गया था (सभा० ३५ । ९)। इनके द्वारा कौरवोंकी पाण्डवोंके साथ द्यूतक्रीड़ाका विरोध (सभा० ४९ । ५४)। इनकी धृतराष्ट्रसे बातचीत (सभा० ५७ अध्याय)। इनका युधिष्ठिरके साथ वार्तालाप (सभा० ५८ । ५—१६)। द्यूतक्रीड़ाके अवसरपर धृतराष्ट्रको इनकी चेतावनी (सभा० ६२ अध्याय)। इनका आत्माके उद्धारके लिये समस्त भूमण्डलको त्याग देनेका उपदेश (सभा० ६२ । ११)। इनके द्वारा द्यूतक्रीड़ाके प्रस्तावका घोर विरोध (सभा० ६३ अध्याय)। जूएके अवसरपर दुर्योधनको इनकी फटकार और इनका उसे चेतावनी देना (सभा० ६४ अध्याय)। द्रौपदीको सभाभवनमें पकड़कर लानेके सम्बन्धमें दुर्योधनके आदेश देनेपर इनका पुनः दुर्योधनको फटकारना और कटु वचनकी तीव्र निन्दा (सभा० ६६ अध्याय)। इनका प्रह्लादका उदाहरण देकर सभासदोंको द्रौपदीके प्रश्नका उत्तर देनेके लिये प्रेरित करना (सभा० ६८ । ५९—८८)। इनकी

धृतराष्ट्र-पुत्रोंको चेतावनी (सभा० ७१ । १६—१९)। इनका युधिष्ठिरसे कुन्तीको अपने यहाँ रखनेका प्रस्ताव (सभा० ७८ । ५-६)। पाण्डवोंको धर्मपूर्वक रहनेके लिये इनका उपदेश (सभा० ७८ । ९—२३)। प्रजाजनोंके शोकके विषयमें इनके द्वारा धृतराष्ट्रके प्रश्नोंका उत्तर (सभा० ८० । ३५ के बाद दा० पाठ)। इनका धृतराष्ट्रकी हितकी सलाह देना (वन० ४ । ४-१७)। धृतराष्ट्रद्वारा इनका त्याग (वन० ४ । ३१)। इनका काम्यकवनमें जाकर पाण्डवोंसे मिलना और उन्हें धर्मयुक्त सलाह देना (वन० ५ । १२-२१)। इनके द्वारा धृतराष्ट्रको क्षमादान (वन० ६ । २१-२४)। इनका धृतराष्ट्रको किर्मीरवधकी कथा सुनाना (वन० ११ अध्याय)। धृतराष्ट्रको नीतिपूर्ण उपदेश (विदुरनीति) (उद्योग० ३३ । १३ से ४० अध्याय तक)। कुमार सनत्सुजातसे धृतराष्ट्रको उपदेश देनेके लिये इनकी प्रार्थना (उद्योग० ४१ । १०-१२)। इनके द्वारा दमकी महिमाका वर्णन (उद्योग० ६३ । ९-२४)। कौटुम्बिक कलह और लोभसे हानि बताते हुए धृतराष्ट्रको संधिके लिये समझाना (उद्योग० ६४ अध्याय)। धृतराष्ट्रको श्रीकृष्णकी बात माननेके लिये समझाना (उद्योग० ८७ अध्याय)। इनके द्वारा अपने घरपर श्रीकृष्णका आतिथ्य-सत्कार (उद्योग० ८९ । २३-२४)। श्रीकृष्णका पूजन करके उन्हें भोजन कराना (उद्योग० ९१ । ३८-३९)। धृतराष्ट्र-पुत्रोंकी दुर्भावना बताकर श्रीकृष्णको उनके कौरवसभामें जानेका अनौचित्य बतलाना (उद्योग० ९२ अध्याय)। दुर्योधनको समझाना (उद्योग० १२५ । १९-२१)। धृतराष्ट्रकी आज्ञासे गान्धारीको उनके पास लाना (उद्योग० १२९ । ६)। धृतराष्ट्र और गान्धारीकी आज्ञासे दुर्योधनको बुला लाना (उद्योग० १२९ । १६)। दुर्योधन आदिकी श्रीकृष्णको कैद करनेके दुःसाहसकी बात बताकर इनका धृतराष्ट्रको चेतावनी (उद्योग० १३० । १८ से २२ के बाद तक)। दुर्योधनको समझाना (उद्योग० १३० । ४१-५३)। युद्धके भावी परिणामपर विचार करके इनका कुन्तीसे अपना दुःख प्रकट करना (उद्योग० १४४ । २-९)। शोकाकुल धृतराष्ट्रको आश्वासन देना (शल्य० १ । ५५)। इनके द्वारा राजमहिलाओंके साथ हस्तिनापुर लौटे हुए युयुत्सुकी प्रशंसा (शल्य० २९ । ९७-१००)। कालकी प्रबलता बताकर धृतराष्ट्रको समझाना (स्त्री० २ अध्याय)। शरीरकी अनित्यता बताकर धृतराष्ट्रका शोक निवारण करना (स्त्री० ३ अध्याय)। दुःखमय संसारके गहन स्वरूपका वर्णन करना एवं उससे छूटनेका उपाय बताना (स्त्री० ४ अध्याय)। गहन वनके दृष्टान्तसे संसारके भयंकर स्वरूपका वर्णन करना (स्त्री० ५ अध्याय)। संसाररूपी वनके रूपकका इनके द्वारा स्पष्टीकरण (स्त्री० ६ अध्याय)। संसारचक्रका वर्णन करना तथा रथके रूपकसे संयम और ज्ञान आदिको मुक्तिका उपाय बताना (स्त्री० ७ अध्याय)। शोक-निवारणके लिये धृतराष्ट्रको उपदेश देना (स्त्री० ९। १०)। युधिष्ठिरद्वारा मन्त्रणा आदि कार्योंपर इनकी नियुक्ति (शान्ति० ४१ । १०)। युधिष्ठिरके प्रश्नके उत्तरमें इनका त्रिवर्गमें धर्मकी प्रधानता बताना (शान्ति० १६७ । ५-९)। भीष्मके दाहसंस्कारके लिये इनका युधिष्ठिरके साथ जाना (अनु० १६७ । ९-१०)। इन्होंने भीष्मजीकी चिताके निर्माणमें योग दिया और रेशमी वस्त्रों तथा मालाओंसे आच्छादित करके उनके शवको चितापर सुलाया (अनु० १६८ । ११-१२)। श्रीकृष्ण और अर्जुनका इन्द्रप्रस्थसे हस्तिनापुरमें आकर इनसे मिलना (आश्व० ५२ । ३१)। बन्धु-बान्धवोंसहित कौरवराज दुर्योधनके मारे जानेपर विदुर और संजय धर्मराज युधिष्ठिरके आश्रयमें आ गये (आश्व० ६०। ३४)। बलराम और श्रीकृष्णके हस्तिनापुरमें आनेपर राजा धृतराष्ट्र तथा महामना विदुरजीने खड़े हो आगे बढ़कर उनका विधिवत् स्वागत-सत्कार किया (आश्व० ६६ । ६)। जब पाण्डवलोग हिमालयसे धन लेकर हस्तिनापुरके समीप आ गये, उस समय विदुरजीने पाण्डवोंका प्रिय करनेकी इच्छासे देवमन्दिरोंमें विविध प्रकारसे पूजा करनेकी आज्ञा दी (आश्व० ७० । १४-१७)। पाण्डवोंने नगरमें आकर धृतराष्ट्र और गन्धारीसे मिलनेके बाद विदुरजीका भी समादर किया (आश्व० ७१ । ५-७)। विदुरजी सदा राजा धृतराष्ट्रकी सेवामें लगे रहते थे (आश्रम० १ । १२)। अजातशत्रु युधिष्ठिरके धैर्य और शुद्ध व्यवहारसे राजा धृतराष्ट्र, गान्धारी और विदुर बहुत प्रसन्न रहते थे (आश्रम० २ । २८-२९)। धृतराष्ट्र और युधिष्ठिरके मिलनका करुण-दृश्य देखकर विदुर आदि रो पड़े थे (आश्रम० ३ । ७६)। युधिष्ठिरने विदुर आदिकी आज्ञाके अनुसार कार्य करनेका निश्चय किया (आश्रम० ४ । २०-२१)। युधिष्ठिरको विदुरने सभी आवश्यक बातोंका उपदेश कर दिया था (आश्रम० ७ । २१)। विदुरजीके वनमें चले जानेपर मुझे कौन कर्तव्यका उपदेश देगा—यह युधिष्ठिरकी चिन्ता (आश्रम० ८ । २)। धृतराष्ट्रका विदुरके द्वारा युधिष्ठिरसे श्राद्धके लिये धन माँगना (आश्रम० ११ । १-५)। राजा युधिष्ठिरका विदुरजीके द्वारा धृतराष्ट्रको यथेष्ट धन देनेकी स्वीकृति कहलाना (आश्रम० १२ । ४-५; ७—१३)। विदुरका धृतराष्ट्रको युधिष्ठिर-

का उदारतापूर्ण उत्तर सुनाना (आश्रम० १३ अध्याय)। इनका धृतराष्ट्रके साथ वनको प्रस्थान (आश्रम० १५ । ८) । वनके मार्गमें धृतराष्ट्र आदिका गङ्गातटपर निवास और विदुरका उनके लिये कुशकी शय्या बिछाना (आश्रम० १८ । १६–२०) । विदुरकी सम्मतिसे धृतराष्ट्रका भागीरथीके पावन तटपर निवास (आश्रम० १९ । १) । कुरुक्षेत्रमें पहुँचकर धर्म और अर्थके ज्ञाता, उत्तम बुद्धि वाले विदुरजी वल्कल और चीर वस्त्र धारण किये गन्धारी तथा धृतराष्ट्रकी सेवा करने लगे । वे मनको वशमें करके अपने दुर्बल शरीरसे घोर तपस्यामें संलग्न रहते थे (आश्रम० १९ । १८) । वनमें युधिष्ठिरने धृतराष्ट्रसे विदुरजीका पता पूछा (आश्रम० २६ । १५) । धृतराष्ट्रने उत्तर दिया—विदुर सकुशल हैं । वे बड़ी कठोर तपस्यामें लगे हैं । निरन्तर उपवास करते और वायु पीकर रहते हैं; इसलिये अत्यन्त दुर्बल हो गये हैं । उनके सारे शरीरमें व्याप्त हुई नस-नाड़ियाँ स्पष्ट दिखायी देती हैं । इस सूने वनमें ब्राह्मणोंको कभी-कभी कहीं उनके दर्शन हो जाया करते हैं (आश्रम० २६ । १६-१७) । इसी समय मुखमें पत्थरका टुकड़ा लिये जटाधारी कृशकाय विदुरजी दूरसे आते दिखायी दिये । उनके सारे शरीरमें मैल जमी हुई थी । वे दिगम्बर थे । वनमें उड़ती हुई धूलोंसे नहा गये थे । उस आश्रमकी ओर देखकर वे सहसा पीछेकी ओर लौट पड़े (आश्रम० २६ । १८-१९) । राजा युधिष्ठिर अकेले ही उनके पीछे-पीछे दौड़े । वे कभी दिखायी देते और कभी अदृश्य हो जाते थे । जब वे घोर वनमें प्रवेश करने लगे, तब राजा युधिष्ठिरने अपना परिचय देकर उन्हें पुकारा, विदुरजी वनके भीतर एकान्त प्रदेशमें किसी वृक्षका सहारा लेकर खड़े हो गये । उनके शरीरका ढाँचामात्र रह गया था । इतनेहीसे उनके जीवित रहनेकी सूचना मिलती थी । युधिष्ठिर उन्हें पहचानकर अपना नाम बताकर उनके आगे खड़े हो गये । महात्मा विदुर युधिष्ठिरकी ओर एकटक देखने लगे । वे अपनी दृष्टिको उनकी दृष्टिसे जोड़कर एकाग्र हो गये । अपने प्राणोंको उनके प्राणोंमें और इन्द्रियोंको उनकी इन्द्रियोंमें स्थापित करके उनके भीतर समा गये । तेजसे प्रज्वलित होते हुए विदुरने योगबलका आश्रय लेकर धर्मराज युधिष्ठिरके शरीरमें प्रवेश किया । उनका शरीर पूर्ववत् वृक्षके सहारे खड़ा था । आँखें अब भी उसी तरह निर्निमेष थीं, परंतु अब उनके शरीरसें चेतना नहीं रह गयी थी, युधिष्ठिरने विदुरके शरीरका दाह-संस्कार करनेका विचार किया; परंतु आकाशवाणीने उन्हें ऐसा करनेसे रोक दिया । साथ ही यह बताया कि विदुरजीको सांतानिक नामक लोकोंकी प्राप्ति होगी (आश्रम० २६ । २०–३३) । व्यासजीद्वारा धर्म, विदुर और युधिष्ठिरकी एकताका प्रतिपादन (आश्रम० २८ । १६–२२) । विदुरने स्वर्गमें जाकर धर्मके स्वरूपमें प्रवेश किया (स्वर्गा० ५ । २२) ।

महाभारतमें आये हुए विदुरके नाम—आजमीढ़, भारत, भरतर्षभ, कौरव, क्षत्ता, कुरुनन्दन आदि ।

विदुरागमनराज्यलम्भपर्व—आदिपर्वका एक अवान्तर पर्व (अध्याय १९९ से २१७ तक) ।

विदुला—एक प्राचीन क्षत्रिय महिला, जिसने रणभूमिसे भागकर आये हुए अपने पुत्रको कड़ी फटकार दी थी (उद्योग० १३३ अध्याय) । इसका अपने पुत्रको युद्धके लिये उत्साहित करना (उद्योग० १३४ अध्याय) । इसके द्वारा पुत्रके प्रति शत्रुवशीकरणके उपायोंका निर्देश (उद्योग० १३५ । २५–४०) । इसका पुत्रको आश्वासनगर्भित उपदेश देना (उद्योग० १३६ । १–१२) ।

विदूर—ये महाराज कुरुके द्वारा दशार्हकुलकी कन्या शुभाङ्गीके गर्भसे उत्पन्न हुए थे । इन्होंने मधुवंशकी कन्या सम्प्रियाके साथ विवाह किया, जिसके गर्भसे अनश्वा नामक पुत्र उत्पन्न हुआ (आदि० ९५ । ३९-४०) ।

विदूरथ—(१) एक वृष्णिवंशी क्षत्रिय, जो द्रौपदीके स्वयंवरमें गये थे (आदि० १८५ । १९) । ये रैवतक पर्वतपर होनेवाले उत्सवमें सम्मिलित होकर उसकी शोभा बढ़ा रहे थे (आदि० २१८ । १०) । इनकी गणना यदुवंशियोंके सात प्रधान मन्त्रियोंमें है (सभा० १४ । ६० के बाद) । मृत्युके पश्चात् ये विश्वेदेवोंके स्वरूपमें मिल गये थे (स्वर्गा० ५ । १६) । (२) एक पूरुवंशी नरेश, जिसके पुत्रको ऋक्षवान् पर्वतपर रीछोंने पालकर बड़ा किया था (यह परशुरामके क्षत्रिय-संहारसे बच गया था) (शान्ति० ४९ । ७५) ।

विदेह—(१) राजा निमि, जो देह गिर जाने या देहाभिमानसे रहित होनेके कारण 'विदेह' कहलाते थे, इनके वंशमें होनेवाले सभी राजा विदेह कहलाये । इन्हींके नामपर मिथिलाको 'विदेह' कहा जाता है । राजा पाण्डुने अपनी दिग्विजय-यात्राके समय मिथिलापर चढ़ाई की और विदेहवंशी क्षत्रियोंको युद्धमें परास्त किया (आदि० ११२ । २८) । इस वंशमें हयग्रीव नामका कुलाङ्गार राजा उत्पन्न हुआ था (उद्योग० ७४ । १५–१७) । (२) पूर्वोत्तर भारतका एक जनपद (मिथिला), जहाँ विदेहवंशी क्षत्रियोंका राज्य था । भीमसेनने पूर्वदिग्विजयके समय इस देशको जीता था (सभा० २९ ।

४-५)। परशुरामजीके आश्रमका द्वार विदेह देशसे उत्तर था (वन० १३० । १३)। सीता विदेहराज जनककी पुत्री थीं (वन० २७४ । ९)। इस देशके सैनिकोंने अर्जुनपर आक्रमण किया था (भीष्म० ११७ । ३२-३४)। कर्णने इस देशके क्षत्रिय वीरोंको परास्त किया था (द्रोण० ४ । ६)। परशुरामजीने इस देशके क्षत्रियोंका अपने तीखे बाणोंद्वारा संहार किया था (द्रोण० ७० । ११-१३)। कर्णने विदेहोंका महान् संहार किया था (कर्ण० ३ । १९)। कर्णने विदेह देशको जीतकर इसे 'कर' देनेवाला बना दिया (कर्ण० ८ ।१८-२०; कर्ण० ९ । ३३)। विदेह देशके राजा जनकने महर्षि पञ्चशिखसे जरा और मृत्युको लाँघनेका उपाय पूछा और उन्होंने इनको उपदेश दिया (शान्ति० ३१९ अध्याय)। शुकदेवजीने विदेहराज जनकसे प्रवृत्ति-निवृत्ति धर्मके विषयमें प्रश्न किया और उन्होंने इसका उत्तर दिया (शान्ति० ३२६ । १०-५१)। विदेहराज जनककी पुत्रीने एक श्लोकका गान इस प्रकार किया है—'स्त्रीके लिये कोई यज्ञ आदि कर्म, श्राद्ध एवं उपवास करना आवश्यक नहीं है, उसका धर्म है अपने पतिकी सेवा। उसीसे स्त्रियाँ स्वर्गलोकपर विजय पा लेती हैं' (अनु० ४६ । १२-१३)।

विद्या—उमादेवीकी अनुगामिनी एक सहचरी (वन० २३१। ४८)।

विद्यातीर्थ—एक तीर्थ, जहाँ जाकर स्नान करनेसे मनुष्य जहाँ-कहीं भी विद्या प्राप्त कर लेता है (वन० ८४। ५२)।

विद्याधर—एक देवयोनिविशेष या उपदेवता, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें मन्त्राकृष्ट हुए देवराज इन्द्रके पीछे-पीछे आ रहे थे (आदि० ५६ । ८-९)।

विद्युज्जिह्व—घटोत्कचका साथी एक राक्षस, जिसका दुर्योधन-द्वारा वध हुआ था (भीष्म० ९१ । २०-२१)।

विद्युज्जिह्वा—स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । ८)।

विद्युता—अलकापुरीकी एक अप्सरा, जिसने अष्टावक्र मुनिके स्वागतके अवसरपर कुबेर-भवनमें नृत्य किया था (अनु० १९ । ४५)।

विद्युताक्ष—स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ६२)।

विद्युत्पर्णा—एक अप्सरा, जो कश्यपकी 'प्राधा' नामवाली पत्नीके गर्भसे उत्पन्न हुई थी (आदि० ६५। ४९)। इसने अर्जुनके जन्मकालिक महोत्सवमें नृत्य किया था (आदि० १२२ । ६२)।

विद्युत्प्रभ—(१) एक दानव, जिसे रुद्रदेवकी कृपासे एक लाख वर्षोंतक तीनों लोकोंका आधिपत्य, नित्य-पार्षद-पद, एक करोड़ पुत्र और कुशद्वीपका राज्य—ये सब वरदान रूपमें मिले थे (अनु० १४ । ८२-८४)। (२) एक तपस्वी महर्षि, जिन्होंने पापसे छूटनेके विषयमें इन्द्रसे प्रश्न किया (अनु० १२५ । ४५-४६)। इन्द्रके उत्तर दे चुकनेपर इनका स्वयं इन्द्रको सूक्ष्म धर्मका उपदेश देना (अनु० १२५ । ५१—५७)।

विद्युत्प्रभा—उत्तर दिशाकी दस अप्सराएँ (उद्योग० १११ । २१)।

विद्युद्वर्चा—एक सनातन विश्वेदेव (अनु० ९१ । ३३)।

विद्युन्माली—तारकासुरके तीन पुत्रोंमेंसे एक, जो लोहमय पुरका अधिपति था। इसके दो भाइयोंका नाम तारक्ष और कमलाक्ष था (द्रोण० २०२ । ६४-६५; कर्ण० ३३ । ४-५)। भाइयोंसहित इसकी तपस्या और ब्रह्मा-द्वारा वरदान-प्राप्ति (कर्ण० ३३ । ६—१६)। शिवजीके अस्त्रसे इसका पुरसहित दग्ध होना (कर्ण० ३४। ११४-११५)।

विद्योता—अलकापुरीकी एक अप्सरा, जिसने अष्टावक्र मुनिके स्वागतके अवसरपर कुबेर-भवनमें नृत्य किया था (अनु० १९ । ४५)।

विधाता—(१) विधाता और धाताने उत्तङ्कको नागलोकमें दो स्त्रियोंके रूपमें दर्शन दिया था (आदि० ३। १६६)। ये ब्रह्माजीके पुत्र हैं, इनके दूसरे भाईका नाम धाता है। ये दोनों भाई मनुके साथ रहते हैं (आदि० ६६ । ५०)। कमलोंमें निवास करनेवाली लक्ष्मी देवी इन दोनोंकी बहिन हैं (आदि० ६६ । ५१)। धाता-विधाता विराटनगरके आकाशमें गोग्रहणके समय कृपाचार्य और अर्जुनका युद्ध देखने आये थे (विराट० ५६ । ११-१२)। इनके द्वारा स्कन्दको सुव्रत और सुकर्मा नामक दो पार्षदोंका दान (शल्य० ४५ । ४२-४३)। (२) एक ऋषि, जो इन्द्रसभामें रहकर वज्रधारी इन्द्रकी उपासना करते हैं (सभा० ७ । १४)। विधाता—ब्रह्मा, इन्होंने ब्राह्मण-वेशमें आकर राजर्षि शिबिकी परीक्षा ली (वन० १९८ । १७—२५)। (विशेष देखिये ब्रह्मा)

विनता—दक्षकी पुत्री, कश्यपकी पत्नी तथा गरुड और अरुणकी माता। पतिके वर माँगनेके लिये कहनेपर इनके द्वारा उनसे कद्रू-पुत्रोंकी अपेक्षा अधिक बलशाली दो पुत्रोंकी याचना (आदि० १६ । ५—९)। कद्रूके पुत्रोंको उत्पन्न हुआ देख इनका लज्जित होना एवं अपने एक अण्डेको फोड़ना (आदि० १६ । १६-१७)। अपना शरीर अधूरा रह जानेके कारण अरुणका इनको

पाँच सौ वर्षोंतक सौतकी दासी होनेका शाप देना एवं उससे छूटनेका उपाय बतलाना (आदि० १६ । १८—२२) । सौत कद्रूद्वारा इनका छला जाना तथा पाँच सौ वर्षोंतक उसकी दासी होना (आदि० २० । २ से आदि० २३ । ४ तक) । इनका गरुडको अमृत लानेका आदेश (आदि० २७ । १३–१५) । इनकी गरुडको ब्राह्मण-की हिंसासे बचनेके लिये चेतावनी (आदि० २८ । २—१४) । स्वर्गसे अमृत लाकर गरुडका इन्हें दासीपनसे छुटकारा दिलाना (आदि० ३४ । ८—२०) । तार्क्ष्य, अरिष्टनेमि, गरुड, अरुण तथा वारुणि—ये विनताके पुत्र हैं (आदि० ६५ । ३९-४०) । इन्होंने स्कन्दको अपना पिण्डदाता पुत्र माना और सदा उनके साथ रहनेकी इच्छा प्रकट की (वन० २३० । १२) ।

विनदी–भारतवर्षकी एक प्रमुख नदी; जिसका जल यहाँके निवासी पीते हैं (भीष्म० ९ । २७) ।

विनशन–(१) एक तीर्थ, जहाँ सरस्वती अदृश्य भावसे बहती है (वन० ८२ । १११) । इसकी विशेष महिमा (शल्य० ३७ । १) । (२) समस्त पापोंसे छुटकारा दिलानेवाला एक तीर्थ; जिसके सेवनसे मनुष्य वाजपेय यज्ञका फल पाता और सोमलोकको जाता है (वन० ८४ । ११२) ।

विनायक–एक प्रकारके गण देवता, जिनके नामका शुद्ध भावसे कीर्तन करनेसे मनुष्य सब पापोंसे छूट जाता है (अनु० १५० । २५—२९) ।

विनाशन–काला नामक कश्यप-पत्नीके गर्भसे उत्पन्न एक दानव । कालाके पुत्र अस्त्र-शस्त्रोंके प्रहारमें कुशल तथा साक्षात् कालके समान भयंकर थे (आदि० ६५ । ३४-३५) ।

विन्द–(१) धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि ६७ । ९४; आदि० ११६ । ३) । इसका भीमसेनके साथ युद्ध और उनके द्वारा वध (द्रोण० १२७ । ३४—६६) । (२) अवन्तीका राजकुमार, जो अनुविन्दका भाई था । दक्षिण-दिग्विजयके अवसरपर सहदेवने इसे परास्त किया था (सभा० ३१ । १०) । इसका एक अक्षौहिणी सेना लेकर दुर्योधनकी सहायताके लिये आना (उद्योग० १९ । २४-२५) । भीष्मद्वारा इसकी श्रेष्ठ रथियोंमें गणना (उद्योग० १६६ । ६) । दुर्योधनकी सेनाके दस प्रधान अधिनायकोंमेंसे एक यह भी था (भीष्म० १६ । १५–१७) । यह भगदत्तके समान तेजस्वी था और हाथीकी पीठपर बैठकर केतुमान्के पीछे चल रहा था (भीष्म० १७ । ३७) । प्रथम दिनके युद्धमें कुन्तिभोजके साथ इसका द्वन्द्व-युद्ध (भीष्म० ४५ । ७२—७६) । विराटकुमार श्वेतके चंगुलमें फँसे हुए मद्रराज शल्यकी इसने सहायता की (भीष्म० ४७ । ४८-४९) । अपने भाई अनुविन्दके साथ इसका इरावान्-पर आक्रमण करना (भीष्म० ८१ । २७) । इसका इरावान्के साथ युद्ध तथा उनके द्वारा पराजित होना (भीष्म० ८३ । १२—२२) । इसका धृष्टद्युम्न और युधिष्ठिरके साथ युद्ध (भीष्म० ८६ । ३३-३६) । भीमसेन और अर्जुनके साथ युद्ध (भीष्म० अध्याय ११३ से ११४ तक) । विराटके साथ युद्ध (द्रोण० २५ । २०-२१) । भीमसेनके साथ युद्ध (द्रोण० ९५ । ३५-३६) । विराटपर इसका धावा (द्रोण० ९५ । ४३) । विराटके साथ युद्ध (द्रोण० ९६ । ४–६) । अर्जुनके साथ युद्ध और उनके द्वारा इसका वध (द्रोण० ९९ । १७—२५) । इसके मारे जानेकी चर्चा (कर्ण० ५ । १०) । (३) एक केकय-राजकुमार, जो कौरवपक्षका योद्धा था । इसका सात्यकिके साथ युद्ध और उनके द्वारा वध (कर्ण० १३ । ६—३५) ।

विन्ध्य–मध्यभारतका एक प्रसिद्ध पर्वत, जहाँ सुन्द और उपसुन्दने तपस्या की थी (आदि० २०८ । ७) । सुन्दकी उग्र तपस्यासे संतप्त होनेके कारण इस पर्वतसे धुआँ निकलने लगा था (आदि० २०८ । १०) । यह कुबेर-सभामें उपस्थित हो धनाध्यक्षकी उपासना करता है (सभा० १० । ३१) । इसका सूर्यका मार्ग रोकनेके लिये बढ़ना (वन० १०४ । ६) । अगस्त्यजीद्वारा इसकी वृद्धिका निवारण (वन० १०४ । १३-१४) । इस उत्तम पर्वतपर दुर्गा देवीका सनातन निवास-स्थान है (विराट० ६ । १७) । यह सात कुलपर्वतोंमेंसे एक है (भीष्म० ९ । ११) । त्रिपुरदाहके समय यह शिव-जीके रथका पार्श्ववर्ती ध्वज बनाया गया था (द्रोण० २०२ । ७१) । इसने उनके रथमें आधार-काष्ठका स्थान ग्रहण किया था (कर्ण० ३४ । २२) । इसके द्वारा स्कन्दको उच्छृङ्ग और अतिशृङ्ग नामक दो पार्षदोंका दान (शल्य० ४५ । ४९-५०) । जो हिंसाका त्याग करके सत्यप्रतिज्ञ होकर विन्ध्याचलमें अपने शरीरको कष्ट दे विनीत भावसे तपस्याका आश्रय लेकर रहता है, उसे एक महीनेमें सिद्धि प्राप्त हो जाती है (अनु० २५ । ४९) ।

विन्ध्यचुलिक–एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ६२) ।

विपाट–कर्णका एक भाई, जो अर्जुनद्वारा मारा गया (द्रोण० ३२ । ६२-६३) ।

विपाठ–बाणविशेष (इसकी आकृति खनतीकी भाँति होती है । यह दूसरे बाणोंसे बड़ा होता है) (आदि० १३८ । ६) ।

विपापा–भारतवर्षकी एक प्रमुख नदी, जिसका जल भारतीय प्रजा पीती है (**भीष्म० ९ । १५**) ।

विपाप्मा–एक सनातन विश्वेदेव (**अनु० ९१ । ३०**) ।

विपाशा–पञ्चनद प्रदेशकी एक नदी, जो वसिष्ठजीको पाशमुक्त करनेके कारण 'विपाशा' नामसे प्रसिद्ध हुई (**आदि० १७६ । २–६**) । यह वरुणकी सभामें रहकर उनकी उपासना करती है (**सभा० ९ । १९**) । इसका जल भारतीय प्रजा पीती है (**भीष्म० ९ । १५**) । 'बहि' और 'हीक' नामक पिशाच इसमें निवास करते हैं (**कर्ण० ४४ । ४१-४२**) । जो विपाशा नदीमें पितरोंका तर्पण करता है और क्रोधको जीतकर ब्रह्मचर्यका पालन करते हुए तीन रात वहाँ निवास करता है, वह जन्म-मृत्युके बन्धनसे मुक्त हो जाता है (**अनु० २५ । २४**) ।

विपुल–(१) सौवीर देशका राजा, जो संग्राम-भूमिमें अर्जुनके हाथसे मारा गया था (**आदि० १३८ । २२**) । (२) मगधराजधानी गिरिव्रजके समीपका एक पर्वत (**सभा० २१ । २**) । (३) एक भृगुवंशी ऋषि, जो महर्षि देवशर्माके शिष्य थे (**अनु० ४० । २१-२२**) । इनका अपने गुरुसे इन्द्रका रूप एवं लक्षण पूछना (**अनु० ४० । २६**) । इन्द्रसे रक्षा करनेके लिये गुरुपत्नीके शरीरमें इनका प्रवेश (**अनु० ४० । ५७-५८**) । इन्द्रको फटकारना (**अनु० ४१ । २०–२६**) । गुरुसे इनको वरकी प्राप्ति (**अनु० ४१ । ३५**) । गुरुकी आज्ञासे दिव्य पुष्प लाना (**अनु० ४२ । १६**) । मार्गमें अपनी दुर्गतिकी बात सुनकर दुखी होना (**अनु० ४२ । २९**) । गुरुसे स्त्री-पुरुषके जोड़े और छः पुरुषोंके विषयमें प्रश्न (**अनु० ४३ । ३**) ।

विपृथु–(१) एक वृष्णिवंशी क्षत्रिय, जो द्रौपदीके स्वयंवरमें गया था (**आदि० १८५ । १८**) । यह रैवतक पर्वतपर होनेवाले महोत्सवमें सम्मिलित हुआ था (**आदि० २१८ । १०**) । सुभद्रा और अर्जुनके विवाहोपलक्ष्यमें दहेज लेकर जानेवाले लोगोंमें यह भी था (**आदि० २२० । ३२**) । यह युधिष्ठिरकी सभामें रहकर उनकी सेवामें उपस्थित होता था (**सभा० ४ । ३०**) । (२) एक प्राचीन नरेश, जो सप्तर्षियोंके बाद भूमण्डलके सम्राट् हुए थे (**शान्ति० २९४ । २०**) ।

विप्रचित्ति–दनुके सर्वत्र विख्यात चौंतीस पुत्रोंमेंसे एक, जो महायशस्वी राजा था; यह अपने भाइयोंमें सबसे बड़ा था (**आदि० ६५ । २२**) । यही इस भूतलपर 'जरासंध'के रूपमें उत्पन्न हुआ था (**आदि० ६७ । ४**) । यह वरुणकी सभामें रहकर उनकी उपासना करता है (**सभा० ९ । १२**) । जब वामनरूपधारी श्रीहरि त्रिलोकीको नापने लगे, उस समय विप्रचित्ति आदि दानव अपने-अपने आयुध लेकर उन्हें चारों ओरसे घेरकर खड़े हो गये (**सभा० ३८ । २९ के बाद दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ७९०**) । पूर्वकालमें इसे भगवान् श्रीहरिने (इन्द्ररूपसे) क्रियात्मक उपायोंद्वारा मारा था (**शल्य० ३१ । १२-१३**) । इसको तथा अन्य प्रमुख दैत्य-दानवोंको मारकर इन्द्र देवराजके पदपर प्रतिष्ठित हुए थे (**शान्ति० ९८ । ५०**) ।

विभाण्ड–एक प्राचीन ऋषि, जो शरशय्यापर पड़े हुए भीष्मजीको देखने आये थे (**शान्ति० ४७ । ११**) ।

विभाण्डक–कश्यप-कुलमें उत्पन्न एक ऋषि, जो इन्द्रकी सभामें रहकर उनकी उपासना करते हैं (**सभा० ७ । १८ दा० पाठ**) । ये ऋष्यश्रृङ्गके पिता थे (**वन० ११० । २३**) । इनका अन्तःकरण तपस्यासे पवित्र हो गया था । ये प्रजापतिके समान तपस्वी और अमोघवीर्य महात्मा थे । इनका रूप-सौन्दर्य महात्माओंके समान था । ये बहुत बड़े सरोवरमें प्रविष्ट होकर तपस्या करते रहे । इन्होंने दीर्घकालतक महान् क्लेश सहन किया था (**वन० ११० । ३२–३४**) । एक दिन जलमें स्नान करते समय उर्वशी अप्सराको देखकर इनका वीर्य स्खलित हो गया । उसी समय प्याससे व्याकुल होकर एक मृगी वहाँ आयी और पानीके साथ उस वीर्यको भी पी गयी । इससे उसके गर्भ रह गया । उसीके पेटसे महर्षि ऋष्यश्रृङ्गका जन्म हुआ (**वन० ११० । ३५–३९**) । विभाण्डक मुनिके नेत्र हरे-पीले रंगके थे । सिरसे लेकर पैरोंके नखोंतक रोमावलियोंसे भरे हुए थे । ये स्वाध्यायशील, सदाचारी और समाधिनिष्ठ महर्षि थे । एक दिन जब ये बाहरसे आश्रमपर आये तो अपने पुत्रको चिन्तामग्न देखकर उससे पूछने लगे–'बेटा ! बताओ, आज यहाँ कौन आया था (**वन० १११ । २०–३०**) । ऋष्यश्रृङ्गने पिताको अपनी चिन्ताका कारण बताते हुए ब्रह्मचारी-रूपधारी वेश्याके स्वरूप और आचरणका वर्णन किया (**वन० ११२ अध्याय**) । विभाण्डकने अपने पुत्रको बताया कि इस प्रकार अद्भुत रूप धारण करके राक्षस ही इस वनमें विचरा करते हैं तथा ऋषि-मुनियोंकी तपस्यामें सदा विघ्न डालनेकी चेष्टा करते रहते हैं । अतः तपस्वीको चाहिये कि वह उनकी ओर आँख उठाकर देखे ही नहीं । इस प्रकार पुत्रको उससे मिलने-जुलनेके लिये मना करके मुनि स्वयं उस वेश्याकी खोज करने लगे । तीन दिनोंतक खोजनेपर भी जब वे उसका पता न पा सके, तब आश्रमपर लौट आये (**वन० ११३ । १–५**) । तदनन्तर जब वे फल लानेके लिये वनमें गये,

तब वह वेश्या उनके पुत्रको लुभाकर अपने साथ ले गयी और राजा लोमपादने उन्हें अपने अन्तःपुरमें ठहराया। आश्रमपर लौटनेपर अपने पुत्रको न देखकर विभाण्डक मुनि अत्यन्त कुपित हो उठे। इन्हें राजा लोमपादपर संदेह हुआ। तब वे चम्पा नगरीकी ओर चल दिये। मार्गमें इनका बड़ा सत्कार हुआ। अङ्गदेशका सारा वैभव इनके पुत्र ऋष्यश्रृङ्गका ही बताया गया। राजाके यहाँ पहुँचकर इन्होंने वहाँ अपने पुत्र और पुत्रवधूको देखा। इससे इनका क्रोध शान्त हो गया और इन्होंने राजा लोमपादपर बड़ी कृपा की। शान्ताके गर्भसे पुत्र उत्पन्न हो जानेके बाद ऋष्यश्रृङ्गको वनमें ही आ जानेकी आज्ञा देकर ये आश्रमको लौट गये (वन० ११३। ६–२१)। अदृश्य देवतासे इनका प्रश्न करना (शान्ति० २२२अ० दा० पाठ, पृष्ठ ४९९९, कालम १)। सनत्कुमारजीसे प्रश्न (शान्ति० २२२ दा० पाठ, पृष्ठ ४९९९-कालम २)।

विभावसु-(१) विवस्वान् अथवा सूर्य (आदि० १। ४२)। (२) एक क्रोधी महर्षि, जो अपने भाई सुप्रतीक मुनिके शापसे कछुआ हो गये थे (आदि० २९। १५ –२३)। (३) एक ऋषि, जो युधिष्ठिरका विशेष आदर करते थे (वन० २६। २४)।

विभीषण-(१) एक यक्ष, जो कुबेरकी सभामें उपस्थित होकर उनकी सेवा करते हैं (सभा० १०। १७)। (२)राक्षस-राज लङ्कापति विभीषण, जो कुबेरकी सभामें रहकर अपने भाई धनाध्यक्ष कुबेरकी उपासना करते हैं (सभा० १०। ३१)। ये विश्रवा मुनिके पुत्र, रावण और कुम्भकर्णके भाई थे। इनकी माताका नाम मालिनी था। इनके द्वारा युधिष्ठिरको अनेक प्रकारकी बहुमूल्य वस्तुओंकी भेंट(सभा० ३१। ७२ के बाद दा० पाठ)। सहदेवने इनके पास घटोत्कचको अपना दूत बनाकर भेजा था (सभा० ३१। ७२ के बाद दा० पाठ और ७३ वाँ श्लोक, पृष्ठ ७५९)। इनकी आज्ञासे घटोत्कचका इनके दरबारमें उपस्थित होना (सभा० ३१। ७३ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ७६०)। राक्षस-राज विभीषणका महल अपनी उज्ज्वल आभासे कैलासके समान जान पड़ता था। उसका फाटक तपाये हुए सोने-से तैयार किया गया था। चहारदीवारीसे घिरा हुआ वह राजमन्दिर अनेक गोपुरोंसे सुशोभित था। उसमें बहुत-सी अट्टालिकाएँ तथा महल बने हुए थे। भाँति-भाँतिके रत्न उस भवनकी शोभा बढ़ाते थे। सोने, चाँदी और स्फटिक मणिके खम्भे नेत्र और मनको बरबस अपनी ओर खींच लेते थे। उन खम्भोंमें हीरे और वैदूर्य जड़े हुए थे। सुनहले रंगकी विविध ध्वजा-पताकाओंसे उस भव्य भवनकी विचित्र शोभा होती थी। विचित्र मालाओं-से अलंकृत तथा विशुद्ध स्वर्णमय वेदिकाओंसे विभूषित वह राजभवन बड़ा रमणीय दिखायी देता था। वहाँ कानोंमें मृदङ्गकी मधुर ध्वनि सुनायी पड़ती थी। वीणाके तार झंकृत हो रहे थे और उसकी लयपर गीत गाया जा रहा था। सैकड़ों वाद्योंके साथ दिव्य दुन्दुभियोंका मधुर घोष गूँज रहा था। महात्मा विभीषण सोनेके सिंहासनपर बैठे थे। वह सिंहासन सूर्यके समान प्रका-शित हो रहा था। उसमें मोती तथा मणि आदि रत्न जड़े हुए थे। दिव्य आभूषणोंसे राक्षसराज विभीषणकी विचित्र शोभा हो रही थी। उनका रूप दिव्य था। वे दिव्य माला, दिव्य वस्त्र और दिव्य गन्धसे विभूषित थे। उनके समीप अनेक सचिव बैठे थे। बहुत-से सुन्दर यक्ष अपनी स्त्रियोंके साथ मङ्गलयुक्त वाणीद्वारा राजा विभीषण-का विधिपूर्वक पूजन करते थे। दो सुन्दरी नारियाँ उन्हें चँवर और व्यजन डुला रही थीं। राक्षसराज विभीषण कुबेर और वरुणके समान राजलक्ष्मीसे सम्पन्न एवं अद्भुत दिखायी देते थे। इनके अङ्गोंसे दिव्य प्रभा छिटक रही थी। वे धर्मनिष्ठ थे और मन-ही-मन इक्ष्वाकु वंशशिरोमणि भगवान् श्रीरामचन्द्रका स्मरण करते थे। घटोत्कचने दोनों हाथ जोड़कर इन्हें प्रणाम किया (सभा० ३१। ७३ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ७६१)। घटोत्कचके मुखसे युधिष्ठिर आदिका पूर्ण परिचय सुनकर विभीषणने प्रसन्नतापूर्वक सहदेवके लिये हाथीकी पीठपर बिछाने योग्य विचित्र कालीन, हाथीदाँत और सुवर्णके बने हुए पलंग, बहुमूल्य आभूषण, सुन्दर मूँगे, भाँति-भाँतिके मणि, रत्न, सोनेके बर्तन, कलश, घड़े, विचित्र कड़ाहे, हजारों जलपात्र, चाँदीके बर्तन, चौदह सुवर्ण-मय ताड़, सुवर्णमय कमलपुष्प, मणिजटित शिबिकाएँ, बहुमूल्य मुकुट, सुनहले कुण्डल, सोनेके बने हुए पुष्प, हार, चन्द्रमाके समान उज्ज्वल शतावर्त शङ्ख, श्रेष्ठ चन्दन तथा और भी भाँति-भाँतिके बहुमूल्य पदार्थ भेंट किये (सभा० ३१। ७३ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ७६२—७६४)। ये राक्षसराज रावणके छोटे भाई थे (वन० १४८। १३)। इनके पिता महर्षि विश्रवा थे और माताका नाम मालिनी था (वन० २७५। ८)। इनका श्रीरामकी शरणमें जाना (वन० २८३।४६)। श्रीरामने इन्हें लङ्काका राजा, लक्ष्मणका सखा और अपना सचिव बनाया (वन० २८३। ४९)। इनका प्रहस्तके साथ युद्ध (वन० २८५। १४)। इनके द्वारा प्रहस्तका वध (वन० २८६। ४)। इनका कुबेरका भेजा हुआ जल श्रीरामको देना (वन० २८९। ९–११)। श्री-रामद्वारा लङ्काका राज्य पाना (वन० २९१। ७)। अयोध्याके राज्यपर अभिषिक्त होनेके बाद श्रीरामचन्द्रजीने

पुलस्त्यकुलनन्दन विभीषणको अपने घर लौटनेकी आज्ञा दी और कर्तव्यकी शिक्षा दे इन्हें बड़े दुःखसे बिदा किया (वन० २९१ । ६७-६८)।

विभीषणा–स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । २२)।

विभु–शकुनिका भाई। अपने चार भाइयोंके साथ इसका भीमसेनपर आक्रमण और उनके द्वारा वध (द्रोण० १५७ । २३-२६)।

विभूति–विश्वामित्रके ब्रह्मवादी पुत्रोंमेंसे एक (अनु० ४ । ५७)।

विभूरसि–अद्भुत नामक अग्निके पुत्र (वन० २२२ । २६)।

विमल तीर्थ–एक उत्तम तीर्थ, जिसमें सोने और चाँदीके रंगकी मछलियाँ दिखायी देती हैं। इसमें स्नान करनेसे मनुष्य शीघ्र ही इन्द्रलोकको प्राप्त होता है और सब पापोंसे शुद्ध हो परमगतिको प्राप्त कर लेता है (वन० ८२ । ८७-८८)।

विमलपिण्डक–कश्यपद्वारा कद्रूके गर्भसे उत्पन्न एक नाग (आदि० ३५ । ८)।

विमला–सुरभिपुत्री रोहिणीकी दो कन्याओंमेंसे एक। दूसरीका नाम अनला था (आदि० ६६ । ६७-६८)।

विमलाशोकतीर्थ–एक तीर्थ, जहाँ जाकर ब्रह्मचर्य-पालनपूर्वक एक रात निवास करनेसे मनुष्य स्वर्गलोकमें प्रतिष्ठित होता है (वन० ८४ । ६९-७०)।

विमलोदका–हिमालयपर ब्रह्माके यज्ञमें प्रकट हुई सरस्वतीका नाम (शल्य० ३८ । २९)।

विमुख–एक ऋषि, जो इन्द्रकी सभामें विराजते हैं (सभा० ७ । १७ के बाद दा० पाठ)।

विमुच–दक्षिणदिशानिवासी एक प्राचीन ऋषि (शान्ति० २०८ । २८)।

विमोचन–कुरुक्षेत्रकी सीमाके अन्तर्गत स्थित एक तीर्थ, जहाँ स्नान और आचमन करके क्रोध और इन्द्रियोंको वशमें रखनेवाला मनुष्य प्रतिग्रहजनित पापसे मुक्त हो जाता है (वन० ८३ । १६१)।

वियम–राक्षस शतश्रृङ्गके तीन पुत्रोंमेंसे एक। इसका अम्बरीषके सेनापति सुदेवके साथ युद्ध करके उसे मारना और स्वयं भी उसके द्वारा मारा जाना (शान्ति० ९८ । ११ के बाद दा० पाठ)।

विरज–द्वारकाका एक प्रासाद, जो निर्मल एवं रजोगुणके प्रभावसे शून्य था। यह भवन श्रीकृष्णका उपस्थानगृह (खास रहनेका स्थान) था (सभा० ३८ । २९ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ८१५, कालम २)।

विरजा–(१) कश्यपद्वारा कद्रूके गर्भसे उत्पन्न एक नाग (आदि० ३५ । १३; उद्योग० १०३ । १६)। (२) धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ११६ । १४)। भाइयोंसहित इसका भीमसेनके साथ युद्ध और उनके द्वारा वध (द्रोण० १५७ । १७–१९)। (३) भगवान् नारायणके तेजसे उत्पन्न एक मानस पुत्र, जिन्होंने पृथ्वीपर राज्य करनेकी इच्छा न करके संन्यास लेनेका ही निश्चय किया। इनके पुत्रका नाम कीर्तिमान् था (शान्ति० ५९ । ८८–९०)। (४) कविके आठ पुत्रोंमेंसे एक। इनके सात भाइयोंके नाम हैं—कवि, काव्य, धिष्णु, शुक्राचार्य, भृगु, काशी और उग्र। ये आठों प्रजापति हैं (अनु० ८५ । १३२–१३४)।

विरस–एक कश्यपवंशी नाग (उद्योग० १०३ । १६)।

विराज–ये भरतवंशी महाराज कुरुके पौत्र एवं अविक्षित्के पुत्र थे (आदि० ९४ । ५२)।

विराट–मत्स्यदेशके शत्रुदमन नरेश, जो मरुद्गणोंके अंशसे उत्पन्न हुए थे (आदि० ६७ । ८२)। ये अपने पुत्र उत्तर एवं शङ्खके साथ द्रौपदीके स्वयंवरमें पधारे थे (आदि० १८५ । ८)। राजसूय-दिग्विजयके समय सहदेवद्वारा इनकी पराजय (सभा० ३१ । २)। ये युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें पधारे थे (सभा० ४४ । २१)। इन्होंने राजा युधिष्ठिरको सुवर्ण-मालाओंसे विभूषित दो हजार मतवाले हाथी उपहारके रूपमें दिये (सभा० ५२ । २६)। युधिष्ठिरको विशेष अधिकार देकर अपने यहाँ ससम्मान रहनेकी व्यवस्था करना (विराट० ७ । १६-१७)। इनका भीमसेनको अपने यहाँ पाकशालाध्यक्ष बनाना (विराट० ८ । ११-१२)। इनकी प्यारी रानीका नाम सुदेष्णा था (विराट० ९ । ६)। सहदेवको अपने यहाँ गोशालाध्यक्षके पदपर रखना (विराट० १० । १५)। बृहन्नला नामधारी अर्जुनके नपुंसकत्वकी परीक्षा कराकर उन्हें अन्तःपुरमें स्थापित करना (विराट० ११ । १०-११)। इनकी पुत्रीका नाम उत्तरा था, जिसे अर्जुनने गीत, वाद्य एवं नृत्यकलाकी शिक्षा दी थी (विराट० ११ । १२-१३)। नकुलको अश्वशालाध्यक्षके पदपर नियुक्त करना (विराट० १२ । ९)। द्रौपदीके उलाहना देने और फटकारनेपर उसे उत्तर देना (विराट० १६ । ३५)। विराटकी पहली रानी कोशलदेशकी राजकुमारी सुरथा थीं। वे श्वेतकी माता थीं। उनके मरनेपर राजाने सूतपुत्री केकयकुमारी सुदेष्णासे विवाह किया। सुदेष्णाके ज्येष्ठ पुत्रका नाम शङ्ख था और

छोटेका उत्तर । इन दोनोंसे छोटी एक उत्तरा नामकी कन्या थी (विराट० १६ । ५१ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ १८९३) । कहीं-कहीं इनके दस भाइयोंका उल्लेख मिलता है (विराट० १६ । ५१ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ १८९४) । उपकीचकोंको द्रौपदीको जलानेकी अनुमति दे देना (विराट० २३ । ८) । कीचक तथा उपकीचकोंके दाह-संस्कारके लिये आदेश देना (विराट० २४ । ६-७) । सुदेष्णाद्वारा द्रौपदीको राजमहलसे निकल जानेके लिये संदेश कहलाना (विराट० २४ । ९-१०) । इनके भाइयोंके नाम शतानीक और मदिराक्ष थे । शतानीकका दूसरा नाम सूर्यदत्त था । ये सेनापति थे । मदिराक्षको 'विशालाक्ष' भी कहा जाता था । ये दोनों महारथी थे (विराट० ३१ । ११-१२, १५, २०, २४; विराट० ३२ । १९) । इनके सुदेष्णासे उत्पन्न ज्येष्ठ पुत्रका नाम शङ्ख था (विराट० ३१ । १६) । गोहरणके समय पाण्डवों तथा अपनी सेनाके साथ युद्धके लिये प्रस्थान (विराट० ३१ । ३२) । गोहरणके समय सुशर्माके साथ इनका द्वन्द्व-युद्ध (विराट० ३२ । २३ --३०) । सुशर्माद्वारा इनका जीते-जी पकड़ा जाना (विराट० ३३ । ७-८) । सुशर्माके रथसे कूदकर उसकी गदा ले उसीकी ओर इनका दौड़ना (विराट० ३३ । ४२) । युद्धसे छुटकारा पानेपर पाण्डवोंका इनके द्वारा सम्मान (विराट० ३४ । ४—१३) । नगरमें विजय-घोषणाके लिये दूत भेजना (विराट० ३४ । १७) । इनकी उत्तरके लिये चिन्ता (विराट० ६८ । १०—१४) । इनके द्वारा युधिष्ठिरका तिरस्कार (विराट० ६८ । ४६) । युधिष्ठिरसे इनकी क्षमा-प्रार्थना (विराट० ६८ । ६२) । उत्तरसे युद्धका समाचार पूछना (विराट० ६८ । ६८—७६) । पाण्डवोंका सत्कार तथा अर्जुनके साथ उत्तराका विवाह करनेके लिये युधिष्ठिरके सामने इनका प्रस्ताव (विराट० ७१ । ३२-३४) । ये अपनी सेनाके साथ युधिष्ठिरकी सहायताके लिये आये (उद्योग० १९ । १२) । युधिष्ठिरकी सेनाके सात प्रमुख सेनापतियोंमें एक ये भी थे (उद्योग० १५७ । ११—१४) । उलूकसे दुर्योधनके संदेशका उत्तर देना (उद्योग० १६३ । ४१) । प्रथम दिनके संग्राममें भगदत्तके साथ इनका द्वन्द्वयुद्ध (भीष्म० ४५ । ४९-५१) । भीष्मपर आक्रमण (भीष्म० ७३ । १) द्रोणाचार्यके साथ युद्ध और शङ्खके मारे जानेपर इनका पलायन (भीष्म० ८२ । १४—२४) । अश्वत्थामाके साथ इनका द्वन्द्वयुद्ध (भीष्म० ११० । १६; भीष्म० १११ । २२—२७) । जयद्रथके साथ द्वन्द्व-युद्ध (भीष्म० ११६ । ४२-४४) । धृतराष्ट्रद्वारा इनकी वीरताका वर्णन (द्रोण० १० । ७१) । इनके घोड़ोंका वर्णन (द्रोण० २३ । १४) । विन्द-अनुविन्दके साथ युद्ध (द्रोण० २५ । २०-२१; द्रोण० ९४ । ४-६) । शल्यके साथ युद्धमें मूर्च्छित होना (द्रोण० १६७ । ३४) । द्रोणाचार्यद्वारा इनका वध (द्रोण० १८६ । ४३) । इनके मारे जानेकी चर्चा (कर्ण० ६ । ६) । इनके शवका दाह-संस्कार (स्त्री० २६ । ३३) । युधिष्ठिरद्वारा इनका श्राद्ध सम्पन्न होना (शान्ति० ४२ । ४) । स्वर्गमें जाकर ये मरुद्‌गणोंमें मिल गये (स्वर्गा० ५ । १५) ।

महाभारतमें आये हुए विराटके नाम--मत्स्य, मत्स्यपति, मत्स्यराट्, मत्स्यराज आदि ।

विराटनगर–मत्स्यदेशकी राजधानी, इसपर त्रिगर्तों तथा कौरवोंने चढ़ाई की थी (विराट० ३० । २३) ।

विराटपर्व–महाभारतका एक प्रमुख पर्व ।

विराध–एक क्रूरकर्मा राक्षस, जो शापग्रस्त गन्धर्व था । भगवान् श्रीरामद्वारा इसका वध (सभा० ३८ । २९ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ७९४) ।

विराव–इल्वलद्वारा अगस्त्यजीको दिये गये रथमें जुते हुए एक घोड़ेका नाम । दूसरेका नाम सुराव था (वन० ९९ । १७) ।

विरावी–धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६७ । १०४; आदि० ११६ । १३) ।

विरूप–(१) एक असुर, जो श्रीकृष्णद्वारा मारा गया था (सभा० ३८ । २९ के बाद, पृष्ठ ८२५, कालम १) । (२) अन्य नाम और रूप धारण करके आया हुआ क्रोध, जिसका राजा इक्ष्वाकुके साथ संवाद हुआ था (शान्ति० १९९ । ८८—११७) । (३) अङ्गिराके आठ पुत्रोंमेंसे एक । इनके सात भाइयोंके नाम हैं—बृहस्पति, उतथ्य, पयस्य, शान्ति, घोर, संवर्त और सुधन्वा । ये सभी वारुण तथा आग्नेय कहलाते हैं (अनु० ८५ । १३०-१३१) ।

विरूपक–एक दैत्य, दानव या राक्षस, जो प्राचीनकालमें पृथ्वीका शासक था, परंतु कालवश इसे छोड़कर चल बसा (शान्ति० २२७ । ५१) ।

विरूपाक्ष–(१) दनुके सुविख्यात चौंतीस पुत्रोंमेंसे एक । इसके पिताका नाम कश्यप था (आदि० ६५ । २१—२६) । यही राजा चित्रवर्मा होकर उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७ । २२-२३) । (२) नरकासुरका अनुयायी एक असुर, जो औदकाके अन्तर्गत लोहितगङ्गाके बीच श्रीकृष्णद्वारा मारा गया था (सभा० ३८ । २९ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ८०७, कालम २) । (३) एक राक्षस, जिसके साथ वानरराज सुग्रीवने युद्ध किया था

(वन० २८५ । ९)। (४) एक राक्षस, जो घटोत्कचका सारथि था (द्रोण० १७५ । १५)। (५) एक राक्षस-राज, जो राजधर्मा बकका मित्र था (शान्ति० १७० । १५)। इसके द्वारा गौतम ब्राह्मणका स्वागत (शान्ति० १७० । २१)। इसका गौतमके साथ वार्तालाप और उसे धन देना (शान्ति० १७१ । २—२२)। राजधर्माके विषयमें चिन्तित होकर अपने पुत्रको उसका पता लगानेके लिये भेजना (शान्ति० १७२ । ५—११)। गौतमको मार डालनेका आदेश (शान्ति० १७२ । १७–१९)। राजधर्माके लिये चिता तैयार करना (शान्ति० १७३ । १-२)। (६) ग्यारह रुद्रोंमेंसे एक (शान्ति० २०८ । १९)।

विरूपाश्व–एक राजा, जिन्होंने अपने जीवनमें कभी मांस नहीं खाया था (अनु० ११५ । ६५)।

विरोचन–(१) प्रह्लादजीके तीन पुत्रोंमेंसे ज्येष्ठ पुत्र। ये बलिके पिता थे (आदि० ६५ । १९-२०; सभा० ३८ । २९ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ७८९)। केशिनीके निमित्त सुधन्वासे इनका संवाद (उद्योग० ३५ । १४–२१)। दैत्योंद्वारा पृथ्वीदोहनके समय ये बछड़ा बने थे (द्रोण० ६९ । २०)। इन्द्रद्वारा इनके मारे जानेकी चर्चा (शान्ति० ९८ । ४९–५०)। भूतलके प्राचीन शासकोंमें इनका भी नाम लिया जाता है (शान्ति० २२७ । ५०)। (२) धृतराष्ट्रका एक पुत्र, जो द्रौपदी-स्वयंवरमें गया था (आदि० १८५ । २)। (इसे दुर्विरोचन भी कहते हैं। विशेष देखिये—दुर्विरोचन)

विरोचना–स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । ३०)।

विरोहण–तक्षक-कुलमें उत्पन्न एक नाग, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें जल मरा (आदि० ५७ । ९)।

विवर्धन–एक नरेश, जो धर्मराज युधिष्ठिरकी सभामें उपस्थित होकर उनकी उपासना करते थे (सभा० ४ । २१)।

विवस्वान्–(१) बारह आदित्योंमेंसे एक लोकेश्वर सूर्य (आदि० ६५ । १५)। ये कश्यपके द्वारा अदितिके गर्भसे उत्पन्न हुए हैं (आदि० ७५ । ११)। वैवस्वत यमके पिता हैं (आदि० ७५ । १२)। विवस्वान्के पुत्र मनु हैं (आदि० ९५ । ७)। ये कर्णके पिता हैं (आदि० ११० । १७–२०)। इनकी पुत्रीका नाम तपती था (आदि० १७१ । २६)। इनके एक सौ आठ नामोंका वर्णन (वन० ३ । १६–२८)। इन्होंने पृथ्वीपर निवास करके अपने समस्त शत्रुओंको दग्ध कर दिया था (वन० ३१५ । १९)। इन्होंने वेदोक्त विधिके अनुसार यज्ञ करके आचार्य कश्यपको दक्षिणारूपसे एक दिशाका दान कर दिया था, इसीलिये उसे दक्षिण दिशा कहते हैं (उद्योग० १०९ । १)। भगवान् श्रीहरिने इन्हें पूर्वकालमें अविनाशी कर्मयोगका उपदेश दिया था। फिर इन्होंने अपने पुत्र वैवस्वत मनुको इसकी शिक्षा दी (भीष्म० २८ । १)। ये इक्कीस प्रजापतियोंमेंसे एक हैं (शान्ति० ३३४ । ३६)। इन्होंने अदितिके सवितासे भी बड़े पुत्रसे नारायणके मुखसे प्रकट हुए सात्वत धर्मका उपदेश ग्रहण किया और त्रेतायुगके आरम्भमें वैवस्वत मनुको इसकी शिक्षा दी (शान्ति० ३४८ । ५०-५१)। नासत्य और दस्र—ये दोनों अश्विनीकुमार इनके औरस पुत्र हैं और अश्वरूप-धारिणी इनकी पत्नी संज्ञादेवीकी नाकसे प्रकट हुए हैं (अनु० १५० । १७-१८)। (२) एक दैत्य, जिसका गरुडद्वारा वध हुआ (उद्योग० १०५ । १२)। (३) एक सनातन विश्वेदेव (अनु० ९१ । ३१)।

विवह–एक अत्यन्त वेगशाली वायु, जो रुक्षभावसे वेगपूर्वक महान् शब्दके साथ बहकर बड़े-बड़े वृक्षोंको तोड़ देता और उखाड़ फेंकता है। इसके द्वारा संगठित हुए प्रलय-कालीन मेघ बलाहक संज्ञा धारण करते हैं। इस वायुका संचरण भयानक उत्पात लानेवाला होता है। यह आकाशमें अपने साथ मेघोंकी घटाएँ लिये चलता है (शान्ति० ३२८ । ४४-४५)।

विविंश–सूर्यवंशी विंशके पुत्र, जिनके खनीनेत्र आदि पंद्रह पुत्र थे (आश्व० ४ । ५–७)।

विविंशति–धृतराष्ट्रका एक महारथी पुत्र (आदि० ६३ । ११९-१२०; आदि० ६७ । ९४; आदि० ११६ । ४)। यह द्रौपदीके स्वयंवरमें गया था (आदि० १८५ । १)। द्वैतवनमें गन्धर्वोंद्वारा बंदी होना (वन० २४२ । ८)। विराटनगरमें अर्जुनसे पराजित होकर इसका भागना (विराट० ६१ । ४३–४५)। भीमसेनके साथ युद्ध (द्रोण० १४ । २७–३०)। सुतसोमके साथ युद्ध (द्रोण० २५ । २४-२५)। भीमसेनके साथ युद्ध (द्रोण० ९६ । ३१)। इसके मारे जानेकी चर्चा (कर्ण० ५ । ७)।

विवित्सु–धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६७ । ९६; आदि० ११६ । ५)। भीमसेनके साथ युद्ध (भीष्म० ६४ । २८–३९)। भीमसेनद्वारा इसका वध (कर्ण० ५१ । १२)।

विविन्ध्य–एक दानव, जो शाल्वका अनुयायी था। इसका रुक्मिणीनन्दन चारुदेष्णके साथ युद्ध और उनके द्वारा वध (वन० १६ । २२–२६)।

विशल्या-(१) एक नदी, जो वरुणसभामें रहकर वरुणदेवकी उपासना करती है (सभा० ९ । २०) । लोकविख्यात विशल्या नदीमें स्नान करनेसे मनुष्य अग्निष्टोम यज्ञका फल प्राप्त करता है और स्वर्गलोकमें जाता है (वन० ८४ । ११४) । (२) शरीरमें चुभे हुए बाणोंको निकालनेकी एक ओषधि (वन० २८९ । ६) ।

विशाख-(१) कुमार कार्तिकेयके तीन छोटे भाइयोंमेंसे एक, शेष दोके नाम शाख और नैगमेय हैं (आदि० ६६ । २४) । जब कुमार कार्तिकेय पिताका गौरव प्रदान करनेके लिये भगवान् शिवकी ओर चले, उस समय शिव, पार्वती, अग्नि और गङ्गा—ये चारों एक ही समय सोचने लगे—क्या यह मेरा पुत्र मेरे पास आयेगा ? उनके मनोभावको समझकर कुमारने योगबलसे अपने चार स्वरूप बना लिये । एक तो कुमार स्कन्द स्वयं ही थे । दूसरे शाख, तीसरे विशाख और चौथे नैगमेय हुए । स्कन्द शिवके, शाख अग्निके, विशाख पार्वतीके और नैगमेय गङ्गाजीके समीप गये । इस तरह इनके द्वारा इन सबको पिता-माताका गौरव प्राप्त हुआ । इन चारोंके रूप एक-से हैं । ये सब एक ही माता-पितासे सम्बन्ध रखनेके कारण परस्पर भाई हैं और एक ही स्वरूपसे प्रकट होनेके कारण परस्पर अभिन्न भी हैं (शल्य० ४४ । ३४—४१) । (२) कुमारका दूसरा रूप । एक समय इन्द्रने कुमार स्कन्दपर वज्रका प्रहार किया, उस वज्रने उनकी दायीं पसलीपर गहरी चोट पहुँचायी, इस चोटसे उनके शरीरसे एक नूतन रूप प्रकट हुआ, जिसकी युवावस्था थी । उसने सुवर्णमय कवच धारण कर रखा था । उसके एक हाथमें शक्ति थी और कानोंमें कुण्डल झलमला रहे थे । वज्रके प्रविष्ट होनेसे उसकी उत्पत्ति हुई थी, इसलिये वह विशाख नामसे प्रसिद्ध हुआ (वन० २२७ । १५–१७) । (३) एक ऋषि, जो इन्द्रसभामें रहकर वज्रधारी इन्द्रकी उपासना करते हैं (सभा० ७ । १४) ।

विशाखयूप-एक पुण्यप्रद स्थान । यहाँ इन्द्र, वरुण आदि बहुत-से देवताओंने तप किया था (वन० ९० । १५) ।

विशाखा-सत्ताईस नक्षत्रोंमेंसे एक । जो इस नक्षत्रमें गाड़ी ढोनेवाले बैल, दूध देनेवाली गाय, धान्य, वस्त्र और प्रासङ्गसहित शकट दान करता है, वह देवताओं और पितरोंको तृप्त कर देता है तथा मृत्युके पश्चात् अक्षय सुखका भागी होता है । वह जीते-जी कभी संकटमें नहीं पड़ता और मृत्युके पश्चात् स्वर्गलोकमें जाता है (अनु० ६४ । २०) । विशाखामें श्राद्ध करनेवाला मनुष्य यदि पुत्र चाहता हो तो वह बहुसंख्यक पुत्रोंसे सम्पन्न होता है (अनु० ८९ । ८) । चान्द्रव्रतमें विशाखाका दोनों भुजाओंमें स्थापन करके पूजन करनेका विधान है (अनु० ११० । ६) ।

विशालक-एक यक्ष, जो कुबेरकी सभामें रहकर उनकी सेवा करता है (सभा० १० । १६) ।

विशाला-(१) ये सोमवंशी महाराज अजमीढकी पत्नी थीं (आदि० ९५ । ३७) । (२) गय देशमें राजा गयके यज्ञमें प्रकट हुई सरस्वतीका नाम (शल्य० ३८ । २०-२१) ।

विशालापुरी-श्रीहरिकी पुण्यमयी पुरी, जो बदरीवनके निकट स्थित है । यह नर-नारायणका आश्रम है । इसे बदरिकाश्रम कहते हैं (वन० ९० । २४-२५) । विशालामें तर्पण करनेसे मनुष्य ब्रह्मरूप हो जाता है (अनु० २५ । ४४) । (विशेष देखिये बदरिका या बदरी)

विशालाक्ष-(१) धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६७ । १०१; आदि० ११६ । १०) । भीमसेनके साथ इसका युद्ध और उनके द्वारा वध (भीष्म ८८ । १५–२६) । (२) विराटका छोटा भाई, जिसे मदिराक्ष भी कहते हैं (विराट० ३२ । १९) । (३) गरुडकी प्रमुख संतानोंमेंसे एक (उद्योग० १०१ । ९) ।

विशालाक्षी-स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । ३) ।

विशिरा-स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । २९) ।

विशुण्डी-एक कश्यपवंशी नाग (उद्योग० १०३ । १६) ।

विशोक-(१) भीमसेनका सारथि (सभा० ३३ । ३०) । भीमसेनद्वारा युद्धमें दृढ़ रहनेका इसे आदेश (भीष्म० ६४ । १४) । धृष्टद्युम्नके पूछनेपर युद्धस्थलमें भीमसेनका पता बताना (भीष्म० ७७ । २१–२५) । भगदत्तके प्रहारसे मूर्च्छित होना (भीष्म० ९५ । ७६) । भीमसेनके साथ वार्तालाप (कर्ण० ७६ अध्याय) । (२) एक केकय-राजकुमार, जो कर्णद्वारा मारा गया था (द्रोण० ८२ । ३) ।

विशोका-(१) श्रीकृष्णकी एक पत्नी (सभा० ३८ । २९ के बाद दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ८२०, कालम १) । (२) स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । ५) ।

विश्रवा-एक मुनि, जो कुबेरके पिता हैं (सभा० १० । २) । कुबेरसे रुष्ट हुए पुलस्त्यने स्वयं अपने आपको दूसरे रूपमें प्रकट किया । पुलस्त्यके आधे शरीरसे जो

दूसरा द्विज प्रकट हुआ, उसका नाम 'विश्रवा' हुआ (वन० २७४ । १३-१४) । कुबेरने पिता विश्रवाकी सेवाके लिये तीन सुन्दरी राक्षस—कन्याओंको नियुक्त किया था; जिनके नाम थे--पुष्पोत्कटा, राका तथा मालिनी (वन० २७५ । ३-५) । इनके द्वारा पुष्पोत्कटासे रावण और कुम्भकर्णका, राकासे खर और शूर्पणखाका तथा मालिनीसे विभीषणका जन्म हुआ (वन० २७५ । ७-८) ।

विश्रवा-आश्रम–आनर्तदेशकी सीमाके अन्तर्गत स्थित एक तीर्थ, यहाँ नरवाहन कुबेरका जन्म हुआ था (वन० ८९ । ५) ।

विश्व–एक क्षत्रिय राजा, जो मयूर नामक असुरके अंशसे उत्पन्न हुए थे (आदि० ६७ । ३६) ।

विश्वकर्मा (त्वष्टा)–देवताओंके शिल्पी । आठवें वसु प्रभासके पुत्र । बृहस्पतिकी ब्रह्मवादिनी बहिन, जो योगमें तत्पर हो सम्पूर्ण जगत्‌में अनासक्तभावसे विचरती रहीं, इनकी माता थीं (आदि० ६६ । २६–२८) । इन्द्रप्रस्थ नगरके निर्माणके लिये इनको इन्द्रका आदेश तथा इनके द्वारा उस नगरका निर्माण (आदि० २०६ । २५ के बाद दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ५९३-५९४) । ब्रह्माजीके आदेशसे इनके द्वारा तिलोत्तमाका निर्माण (आदि० २१० ११–१८) । ये एक महर्षिके रूपमें इन्द्रकी सभामें विराजमान होते हैं (सभा० ७ । १४) । इन्होंने यमसभाका निर्माण किया है (सभा० ८ । ३४) । इन्होंने वरुणसभाको जलके भीतर रहकर बनाया है (सभा० ९ । २) । ये ब्रह्माजीकी सभामें रहकर उनकी सेवा करते हैं (सभा० ११ । ३१) । इन्होंने ब्रह्माजीके वनमें यज्ञ किया था (वन० ११४ । १७) । इनके द्वारा ही पुष्पक विमानका निर्माण हुआ है (वन० १६१ । ३७) । नल नामक वानर इनका पुत्र था (वन० २८३ । ४१) । अर्जुनके रथका ध्वज क्या था, विश्वकर्माकी बनायी हुई दिव्य माया थी (विराट० ४६ । ३-४) । इन्द्रके प्रति द्रोहबुद्धि होनेसे इन्होंने तीन शिरवाले एक पुत्रको उत्पन्न किया, जिसका नाम था विश्वरूप (उद्योग० ९ । ३-४) । विश्वरूपके मारे जानेपर इन्द्रसे बदला लेनेके लिये इन्होंने वृत्रासुरको उत्पन्न किया (उद्योग० ९ । ४५–४८) । इन्होंने इन्द्रके लिये विजयनामक धनुष बनाया था (कर्ण० ३१ । ४२) । त्रिपुरदाहके समय भगवान् शिवके लिये दिव्य रथका निर्माण इन्होंने ही किया था (कर्ण० ३४ । १६-१७) । (विशेष देखिये त्वष्टा)

विश्वकृत्–एक सनातन विश्वेदेव (अनु० ९१ । ३६) ।

विश्वजित्–(१) बृहस्पतिके तृतीय पुत्र । ये समस्त विश्वको बुद्धिको अपने वशमें करके स्थित हैं; इसीलिये अध्यात्मशास्त्रके विद्वानोंने इन्हें विश्वजित् कहा है (वन० २१९ । १६) । (२) एक दैत्य, दानव या राक्षस, जो पूर्वकालमें पृथ्वीका शासक था, परंतु कालवश इसे छोड़कर चल बसा (शान्ति० २२७ । ५३) ।

विश्वदंष्ट्र–एक दैत्य, दानव या राक्षस, जो पूर्वकालमें पृथ्वीका शासक था, परंतु कालवश इसे छोड़कर चल बसा (शान्ति० २२७ । ५२) ।

विश्वपति–मनु नामक अग्निके द्वितीय पुत्र । ये वेदोंमें सम्पूर्ण विश्वके पति कहे गये हैं । इनके प्रभावसे हविष्यकी आहुतिक्रिया सम्पन्न होती है; अतः ये स्विष्टकृत् (उत्तम अभीष्टकी पूर्ति करनेवाले) कहे जाते हैं (वन० २२१ । १७-१८) ।

विश्वभुक्–(१) पाण्डवोंके रूपमें उत्पन्न होनेवाले पाँच इन्द्रोंमेंसे एक, शेष चारके नाम भूतधामा, शिबि, शान्ति और तेजस्वी था (आदि० १९६ । २९) । (२) बृहस्पतिके चौथे पुत्र । ये समस्त प्राणियोंके उदरमें स्थित हो उनके खाये हुए पदार्थोंको पचाते हैं । पाकयज्ञोंमें इन्हींकी पूजा होती है । इनकी पत्नी गोमती नदी है (वन० २१९ । १७–१९) ।

विश्वरुचि–एक गन्धर्वराज, जो पृथ्वीदोहनके समय दोग्धा बने थे (द्रोण० ६९ । २५) ।

विश्वरूप–(१) एक राक्षस, जो वरुणकी सभामें रहकर उनकी उपासना करता है (सभा० ९ । १४) । (२) त्रिशिरा, जो त्वष्टाके पुत्र तथा देवताओंके पुरोहित थे । ये असुरोंके भानजे लगते थे; अतः देवताओंको प्रत्यक्ष और असुरोंको परोक्षरूपसे यज्ञोंका भाग दिया करते थे (उद्योग० ९ । ३-४; शान्ति० ३४२ । २८) । इनको लुभानेके लिये अप्सराओंका आना, इनका उनके प्रति आसक्त होना और अप्सराको इन्द्रमें अनुरक्त जान इन्द्र आदि देवताओंके अभावके लिये संकल्प करके मन्त्रोंका जप करना (शान्ति० ३४२ । ३२–३४) । ये अपने एक मुखसे संसारके सारे क्रियानिष्ठ ब्राह्मणोंद्वारा यज्ञोंमें होमे गये सोमरसको पी लेते थे, दूसरेसे अन्न खाते और तीसरेसे इन्द्रादि देवताओंके तेजको पी लेते थे (शान्ति० ३४२ । ३४) । इन्द्रद्वारा इनका वध (शान्ति० ३४२ । ४१) । (विशेष देखिये त्रिशिरा)

विश्वा–दक्ष प्रजापतिकी एक पुत्री (आदि० ६५ । १२) ।

विश्वाची–एक अप्सरा, जिसकी गणना छः प्रधान अप्सराओंमें है (आदि० ७४ । ६८) । इसके साथ राजा ययातिका विहार (आदि० ७५ । ४८; आदि० ८५ । ९) । इसने अर्जुनके जन्मकालिक महोत्सवमें गान किया था

(आदि० १२२ । ६९)। यह कुबेरकी सभामें आकर उनकी सेवामें उपस्थित रहती है (सभा० १० । ११)।

विश्वामित्र–(१) एक तपस्वी महर्षि, जिन्होंने अपनी तपस्यासे इन्द्रको संतप्त कर दिया था (आदि० ७१ । २०)। इन्होंने मतङ्ग ऋषिका यज्ञ कराया तथा महर्षि वसिष्ठका उनके प्यारे पुत्रोंसे सदाके लिये वियोग करा दिया और क्षत्रिय होकर भी ये तपोबलसे ब्राह्मणभावको प्राप्त हो गये । अपने शौच-स्नानकी सुविधाके लिये इनके द्वारा कौशिकी नदीका निर्माण किया गया और इन्हींके द्वारा त्रिशङ्कुको स्वर्गलाभ हुआ (आदि० ७१ । २७—३९)। इन्होंने मेनकाके गर्भसे शकुन्तलाको जन्म दिया (आदि० ७२ । १—९)। ये अर्जुनके जन्म-समयमें पधारे थे (आदि० १२२ । ५१)। ये कान्यकुब्ज देशके अधिपति कुशिककुमार महाराज गाधिके पुत्र थे (आदि० १७४ । ३-४)। वसिष्ठके आश्रमपर इनका आगमन (आदि० १७४ । ६)। नन्दिनी (धेनु) के प्रतापसे मुनिवर वसिष्ठद्वारा इनका भव्य स्वागत (आदि० १७४ । ८—१२)। नन्दिनीके लिये इनकी वसिष्ठसे याचना (आदि० १७४ । १६)। इनके द्वारा वसिष्ठकी कामधेनुका अपहरण (आदि० १७४ । २२)। नन्दिनीद्वारा इनकी समस्त सेनाओंकी पराजय (आदि० १७४ । ३२–४३)। इनके द्वारा वसिष्ठपर विभिन्न अस्त्रोंका प्रहार (आदि० १७४ । ४३ के बाद दा० पाठ)। वसिष्ठके ब्रह्मतेजसे पराजित होकर इनके द्वारा क्षात्रबलको धिक्कार (आदि० १७४ । ४४-४५)। उग्र तपस्याके बलसे इनको ब्राह्मणत्वका लाभ (आदि० १७४ । ४८)। इनकी प्रेरणासे शापग्रस्त कल्माषपादके शरीरमें किङ्कर नामक राक्षसका आवेश (आदि० १७५ । २१)। इनकी प्रेरणासे राक्षसभावापन्न कल्माषपादद्वारा वसिष्ठके समस्त पुत्रोंका संहार (आदि० १७५ । ४१)। ये कौशिकीके तटपर ब्राह्मणत्वको प्राप्त हुए (वन० ८७ । १३)। इन्होंने उत्पलावनमें अपने पुत्रके साथ यज्ञ किया (वन० ८७ । १५)। कान्यकुब्ज देशमें इन्द्रके साथ सोमपान किया। वहीं ये क्षत्रियत्वसे ऊपर उठ गये और अपनेको ब्राह्मण घोषित किया (वन० ८७ । १७)। इन्होंने कौशिकीके तटपर तपस्या की थी (वन० ११० । २०)। इनके द्वारा स्कन्दके तेरह संस्कार सम्पन्न हुए (वन० २२६ । १३)। इनका ऋषि-पत्नियोंको निरपराध घोषित करना (वन० २२६ । १६)। ये वसिष्ठरूपधारी धर्मका भोजन सिरपर रखकर सौ वर्षों तक उनकी प्रतीक्षामें खड़े रहे (उद्योग० १०६ । ८—२१)। इन्होंने गालवके हठसे गुरु-दक्षिणामें उनसे आठ सौ श्यामकर्ण घोड़े माँगे (उद्योग० १०६ । २७)। गालवसे गुरु-दक्षिणाके लिये तकाजा किया (उद्योग० ११३ । २०-२१)। गालवसे छः सौ घोड़े और माधवीको गुरुदक्षिणारूपमें ग्रहण करना (उद्योग० ११९ । १७)। माधवीके गर्भसे अष्टक नामक पुत्रकी प्राप्ति (उद्योग० ११९ । १८)। इनका द्रोणाचार्यके पास आकर युद्ध बंद करनेको कहना (द्रोण० १९० । ३५—४०)। इनकी ब्राह्मणत्व-प्राप्तिकी कथाका वर्णन (शल्य० ४० । १२—३०)। इनके द्वारा सरस्वती नदीको शाप (शल्य० ४२ । ३८-३९)। इनके जन्मका प्रसङ्ग (शान्ति० ४९ । ३०)। भूखसे व्याकुल होकर इनका एक चाण्डालके घरमें कुत्तेकी जाँघकी चोरीके लिये घुसना (शान्ति० १४१ । ४३)। चाण्डालके साथ संवाद (शान्ति० १४१ । ४५—९१)। मांस पकाकर देवताओं और पितरोंको संतुष्ट करनेपर उन्हींकी कृपासे इन्हें पवित्र भोजनकी प्राप्ति (शान्ति० १४१ । ९९)। ये उत्तर दिशाके ऋषि हैं (शान्ति० २०८ । ३३-३४)। युधिष्ठिरद्वारा इनके प्रभावका वर्णन (अनु० ३ अध्याय)। इनके जन्मकी कथा तथा इनके पुत्रोंके नाम (अनु० ४ अध्याय)। शिव-महिमाके विषयमें इनका युधिष्ठिरसे अपना अनुभव बताना (अनु० १८ । १६)। ये शरशय्यापर पड़े हुए भीष्मको देखनेके लिये गये थे (अनु० २६ । ५)। वृषादर्भिसे प्रतिग्रहके दोष बताना (अनु० ९३ । ४३)। अरुन्धतीसे अपनी दुर्बलताका कारण बताना (अनु० ९३ । ६३)। यातुधानीसे अपने नामका अभिप्राय बताना (अनु० ९३ । ९२)। मृणालकी चोरीके विषयमें शपथ खाना (अनु० ९३ । १२४—१२६)। अगस्त्यजीके कमलोंकी चोरी होनेपर शपथ खाना (अनु० ९४ । ३३)। इनके द्वारा धर्मके रहस्यका वर्णन (अनु० १२६ । ३५-३७)। साम्बके पेटसे वृष्णि-अन्धकवंशविनाशक मूसल पैदा होनेका शाप देनेवाले ऋषियोंमें ये भी थे (मौसल० १ । १५—२१)। (२) कुरुक्षेत्रकी सीमाके अन्तर्गत स्थित एक तीर्थ, जहाँ स्नान करनेसे ब्राह्मणत्वकी प्राप्ति होती है (वन० ८३ । १३९)।

विश्वामित्रा–भारतवर्षकी एक प्रमुख नदी, जिसका जल भारतवासी पीते हैं (भीष्म० ९ । २६)।

विश्वामित्राश्रम–कौशिकी नदीके पटपर अवस्थित विश्वामित्र मुनिका आश्रम (वन० ११० । २२)।

विश्वायु–एक सनातन विश्वेदेव (अनु० ९१ । ३४)।

विश्वावसु–(१) गन्धर्वराज। इनके द्वारा मेनकाके गर्भसे प्रमद्वराकी उत्पत्तिकी कथा (आदि० ८ । ६–१३)। ये

देवगन्धर्व हैं। इनके पिताका नाम कश्यप और माताका प्राधा है (आदि० ६५ । ४७) । ये अर्जुनके जन्म-समयमें पधारे थे (आदि० १२२ । ५२) । इन्होंने सोमसे चाक्षुषी विद्या सीखी और स्वयं चित्ररथको सिखायी (आदि० १६९ । ४३) । ये द्रौपदीका स्वयंवर देखने आये थे (आदि० १८६ । ७) । ये इन्द्रसभामें रहकर देवराजकी उपासना करते हैं (सभा० ७ । २२) । कुबेरसभामें उपस्थित हो धनाध्यक्ष कुबेरकी सेवा करते हैं (सभा० १० । २५) । इनका जमदग्निकी यज्ञ-दीक्षामें श्लोक-गान (वन० ९० । १८) । ये शापवश कबन्ध नामक राक्षस हो गये थे और भगवान् श्रीरामद्वारा इनका उद्धार हुआ था (वन० २७९ । ३१—४३) । राजा दिलीपके यज्ञमें ये वीणा बजाया करते थे (द्रोण० ६१ । ७; शान्ति० २९ । ७५-७६) । महर्षि याज्ञवल्क्यसे चौबीस प्रश्न करना और उनका समाधान हो जानेपर स्वर्ग लौट जाना (शान्ति० ३१८ । २६—८४) ।

महाभारतमें आये हुए विश्वावसुके नाम--गन्धर्व, गन्धर्वराज, गन्धर्वेन्द्र, काश्यप आदि ।

(२) जमदग्निके पाँच पुत्रोंमेंसे एक। इनकी माता रेणुकार्थी। शेष चार भाइयोंके नाम हैं—रुमण्वान्, सुषेण, वसु और परशुराम। पिताकी मातृवधसम्बन्धी आज्ञा न माननेसे इन्हें पिताद्वारा शाप प्राप्त हुआ (वन० ११६ । १०-१२) । परशुराम-द्वारा इनका शापसे उद्धार हुआ (वन० ११६ । १७) ।

विश्वेदेव-(१) देवताओंका एक गण, जो इसी नामसे प्रसिद्ध है। सनातन विश्वेदेवोंके नाम (अनु० ९१ । ३०—३७) । (२) एक सनातन विश्वेदेव (अनु० ९१ । ३३) ।

विष्कर—एक दैत्य, दानव या राक्षस, जो पूर्वकालमें पृथ्वीका शासक था परंतु कालवश इसे छोड़कर चल बसा (शान्ति० २२७ । ५३) ।

विष्णु—(१) ये वसुदेवजीके द्वारा देवकीके गर्भसे श्रीकृष्णरूपसे अवतीर्ण हुए (आदि० ६३ । ९९—१०४) । बारह आदित्योंमें सबसे कनिष्ठ, किंतु गुणोंमें सबसे श्रेष्ठ (आदि० ६५ । १६) । इन्होंने वरदानतीर्थमें दुर्वासाको दर्शन दिया (वन० ८२ । ७५) । देवताओंद्वारा इनका स्तवन (वन० १०२ । २०—२६) । इनका समुद्र सोखनेके लिये अगस्त्यके पास देवताओंको भेजना (वन० १०३ । ११) । ये कृतयुगमें श्वेत, त्रेतामें लाल, द्वापरमें पीत तथा कलियुगमें कृष्ण वर्णके हो जाते हैं (वन० १४९ । १७—३४) । उत्तङ्कद्वारा इनकी स्तुति (वन० २०१ । १४—२४) । इन्होंने पृथ्वीके उद्धारके लिये जो यज्ञ-वाराह रूप धारण किया था, वह सौ योजन लम्बा और दस योजन चौड़ा था (वन० २७२ । ५१—५५) । इनके नृसिंह-अवतारका वर्णन (वन० २७२ । ५६—६१) । इनके वामन अवतारका वर्णन (वन० २७२ । ६२—७०) । ये ही यदुकुलमें श्रीकृष्णरूपसे अवतीर्ण हुए, इनकी महिमाका वर्णन (वन० २७२ । ७१—७७) । देवताओंद्वारा इनकी स्तुति (उद्योग० १० । ६–८) । सुमुख नागकी रक्षाके लिये गरुडका गर्व नाश करना (उद्योग० १०५ । १९--३१) । क्षीरसागरके उत्तर तटपर इनके निवास-स्थान, स्वरूप और महिमा आदिका वर्णन (भीष्म० ८ । १५–१८) । ब्रह्माद्वारा इनका स्तवन (भीष्म० ६५ । ४७--७५) । त्रिपुर-दाहके समय भगवान् शिवने इन्हें अपना बाण बनाया (द्रोण० २०२ । ७७; कर्ण० ३४ । ४९) । इनके द्वारा स्कन्दको चक्र, विक्रम और संक्रम नामक तीन पार्षदोंका दान (शल्य० ४५ । ३७) । इनके द्वारा स्कन्दको वैजयन्ती माला और दो निर्मल वस्त्रका दान (शल्य० ४६ । ४९) । इनका पृथ्वीको आश्वासन (स्त्री० ८ । २५--२९) । इन्होंने एक मानस पुत्र उत्पन्न किया, जिसका नाम विरजा था (शान्ति० ५९ । ८७-८८) । इन्द्ररूपधारी विष्णु और मान्धाताका संवाद (शान्ति० ६५ अध्याय) । भगवान् शिवने इन्हें दण्ड नामक अस्त्र समर्पित किया और इन्होंने उसे अङ्गिराको दिया (शान्ति० १२२ । ३६-३७) । भगवान् रुद्रद्वारा इन्हें खड्गकी प्राप्ति हुई और इन्होंने उसे मरीचिको प्रदान किया (शान्ति० १६६ । ६६) । इनका वाराह अवतार धारण करके देवताओंके दुःखका नाश करना (शान्ति० २०९ । १६—३०) । नारदको आश्वासन देना (शान्ति० २०९ । ३६ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ४९५७) । वामनरूपसे इन्होंने तीन पगोंमें ही पृथ्वीको नाप लिया था (शान्ति० २२७ । ७-८) । प्रत्येक मासकी द्वादशी तिथिको भगवान् विष्णुकी पूजाका विशेष माहात्म्य (अनु० १०९ अध्याय) । इन्द्रको धर्मोपदेश (अनु० १२६ । ११—१६) । इनके द्वारा धर्मके माहात्म्यका वर्णन (अनु० १३४ । ८--१४) । इनके सहस्र नामोंका वर्णन (अनु० १४९ अध्याय) । (विशेष देखिये नारायण) (२) भानु (मनु) अग्निके तीसरे पुत्र । इनका दूसरा नाम 'धृतिमान्' है । ये अङ्गिरागोत्रिय माने गये हैं । दर्श-पौर्णमास नामक यज्ञोंमें इन्हींमें हविष्यका समर्पण होता है (वन० २२१ । १२) ।

विष्णुधर्मा—गरुडकी प्रमुख संतानोंमेंसे एक (उद्योग० १०१ । १३) ।

विष्णुपदतीर्थ—एक तीर्थ, जिसमें स्नान करके वामन भगवान्‌की पूजा करनेवाला मनुष्य विष्णुलोकमें जाता है (वन० ८३ । १०३-१०४) । यह प्रभासतीर्थके बाद

पड़ता है और विपाशा नदीके तटपर स्थित है (वन० १३० । ८-९) । स्वप्नमें शिवजीके पास श्रीकृष्णसहित जाते हुए अर्जुनको विष्णुपदतीर्थ मिला था (द्रोण० ८० । ३५-३६) ।

विष्णुयशा—युगान्तके समय कालकी प्रेरणासे सम्भल नामक ग्राममें किसी ब्राह्मणके यहाँ एक महान् शक्तिशाली बालक प्रकट होगा, जिसका नाम होगा 'विष्णुयशा' कल्की । वह महान् बुद्धि एवं पराक्रमसे सम्पन्न, महात्मा, सदाचारी तथा प्रजावर्गका हितैषी होगा (वह बालक ही भगवान्‌का कल्की अवतार कहलायेगा) । मनके द्वारा चिन्तन करते ही उसके पास इच्छानुसार वाहन, अस्त्र-शस्त्र, योद्धा और कवच उपस्थित हो जायँगे । वह धर्मविजयी चक्रवर्ती राजा होगा । वह उदारबुद्धि, तेजस्वी ब्राह्मण दुःखसे व्याप्त हुए इस जगत्‌को आनन्द प्रदान करेगा । कलियुगका अन्त करनेके लिये ही उसका प्रादुर्भाव होगा । वही सम्पूर्ण कलियुगका संहार करके नूतन सत्ययुगका प्रवर्तक होगा । वह ब्राह्मणोंसे घिरा हुआ सर्वत्र विचरेगा और भूमण्डलमें सर्वत्र फैले हुए नीच स्वभाववाले सम्पूर्ण म्लेच्छोंका संहार कर डालेगा (वन० १९० । ९३—९७) । उस समय चोर, डाकुओं एवं म्लेच्छोंका विनाश करके भगवान् कल्की अश्वमेध नामक महायज्ञका अनुष्ठान करेंगे और उसमें यह सारी पृथ्वी विधिपूर्वक ब्राह्मणोंको दे डालेंगे । उनका यश तथा कर्म सभी परम पावन है । ये ब्रह्माजीकी चलायी हुई मङ्गलमयी मर्यादाओंकी स्थापना करके (तपस्याके लिये) रमणीय वनमें प्रवेश करेंगे । फिर इस जगत्‌के निवासी मनुष्य उनके शील-स्वभावका अनुकरण करेंगे । द्विजश्रेष्ठ कल्की सदा दस्युवधमें तत्पर रहकर समस्त भूतलपर विचरते रहेंगे और अपने द्वारा जीते हुए देशोंमें काले मृगचर्म, शक्ति, त्रिशूल तथा अन्य अस्त्र-शस्त्रोंकी स्थापना करते हुए श्रेष्ठ ब्राह्मणोंद्वारा अपनी स्तुति सुनेंगे और स्वयं भी उन ब्राह्मण-शिरोमणियोंको यथोचित सम्मान देंगे । दस्युओंके नष्ट हो जानेपर अधर्मका भी नाश हो जायगा और धर्मकी वृद्धि होने लगेगी । इस प्रकार सत्ययुग आ जानेपर सब मनुष्य सत्यधर्मपरायण होंगे (वन० १९१ । १—७) ।

विष्वक्सेन—एक प्राचीन ऋषि, जो इन्द्रकी सभामें विराजते हैं (सभा० ७ । १८ के बाद दा० पाठ) ।

विष्वगश्व—(१) एक प्राचीन नरेश, ये इक्ष्वाकुवंशी महाराज पृथुके पुत्र थे । इनके पुत्रका नाम अद्रि था (आदि० १ । २३२; वन० २०२ । ३) । गोदान-महिमाके विषयमें इनकी ख्याति (अनु० ७६ । २५—२७) । मांस-भक्षणका निषेध करनेसे इन्हें परावर-तत्त्वका ज्ञान हो गया था (अनु० ११५ । ५८—६०) । (२) एक पुरुवंशीय राजा, जिसे अर्जुनने उत्तर-दिग्विजयके समय परास्त किया था (सभा० २७ । १४) ।

विहङ्ग—ऐरावत-कुलमें उत्पन्न एक नाग, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें जल मरा था (आदि० ५७ । १२) ।

विहव्य—गृत्समदवंशी वर्चाके पुत्र, जो वितत्यके पिता थे (अनु० ३० । ६१) ।

वीटा—जौके आकारकी बनी हुई काठकी मोटी गुल्ली, जो डंडेके सहारे खेलनेके काममें आती है । पाण्डवों और कौरवोंके खेलते समय वह वीटा कुएँमें गिर पड़ी थी, जिसे द्रोणाचार्यने सींकके बाणोंद्वारा निकाल दिया था (आदि० १३० । १७—२४) ।

वीतहव्य—शर्यातिवंशी वत्सके पुत्र, जिनका दूसरा नाम हैहय था (अनु० ३० । ५—७) । इनके पुत्रोंद्वारा काशी-नरेश हर्यश्वका वध (अनु० ३० । १०-११) । इनके उन पुत्रोंने सुदेवको भी मार डाला (अनु० ३० । १३-१४) । उन्हीं पुत्रोंद्वारा दिवोदासकी भी पराजय हुई (अनु० ३० । २१-२२) । काशीनरेश प्रतर्दनद्वारा इनके पुत्रोंका वध (अनु० ३० । ३८—४३) । इनका भागकर भृगुकी शरणमें जाना (अनु० ३० । ४५) । भृगुद्वारा इन्हें ब्राह्मणत्व प्रदान (अनु० ३० । ५७-५८) ।

वीति—एक अग्नि । जब दक्षिणाग्निका गार्हपत्य और आहवनीय—इन दो अग्नियोंसे संसर्ग हो जाय, तब मिट्टीके आठ पुरवोंमें संस्कारपूर्वक तैयार किये हुए पुरोडाशद्वारा इस अग्निमें आहुति देनी चाहिये (वन० २२१ । २५) ।

वीतिहोत्र—(१) एक प्राचीन नरेश (आदि० १ । २३३) । (२) एक देश, जहाँके निवासी क्षत्रियोंका परशुरामजीने संहार किया था (द्रोण० ७० । १२-१३) ।

वीर—(१) कश्यपपत्नी दनायुके गर्भसे उत्पन्न एक असुर (आदि० ६५ । ३३) । (२) धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६७ । १०३) । (३) भरद्वाज नामक अग्निके द्वारा वीराके गर्भसे उत्पन्न । इन्हींको रथप्रभु, रथध्वान और कुम्भरेता भी कहते हैं । सोम देवताके साथ द्वितीय आज्यभाग इन्हींको प्राप्त होता है । इनके द्वारा सरयू नामक पत्नीके गर्भसे सिद्धि नामक पुत्र उत्पन्न हुआ (वन० २१९ । ९—११) । (४) पाञ्चजन्य नामक अग्निके पुत्र, इनकी गणना विनायकोंमें है (वन० २२० । १३-१४) । (५) एक राजा जो कलिङ्गराज चित्राङ्गदकी कन्याके स्वयंवरमें उपस्थित हुआ था (शान्ति० ४ । ७) ।

वीरक-एक देश, जिसके धर्म और आचार-विचार दूषित हैं। अतः यह त्याग देने योग्य है (कर्ण० ४४ । ४३)।

वीरकरा-भारतवर्षकी एक प्रमुख नदी, जिसका जल भारतवासी पीते हैं (भीष्म० ९ । २६)।

वीरकेतु-पाञ्चालराज द्रुपदका एक पुत्र। इसका द्रोणाचार्यके साथ युद्ध और उनके द्वारा वध (द्रोण० १२२। ३३—४१)।

वीरण-एक प्रजापति, जिन्हें सनत्कुमारजीद्वारा सात्वतधर्मकी प्राप्ति हुई थी और इन्होंने रैभ्यमुनिको इस धर्मका उपदेश दिया था (शान्ति० ३४८ । ४१-४२)।

वीरणक-धृतराष्ट्रकुलमें उत्पन्न एक नाग, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें जल गया था (आदि० ५७ । १८)।

वीरद्युम्न-एक प्राचीन नरेश, जिनके पुत्रका नाम भूरिद्युम्न था। जो वनमें खो गया था, जिनका अपने पुत्रकी खोजमें महर्षि तनुके पास जाकर आशाके विषयमें पूछना (शान्ति० १२७ । १४—२०)। आशाके विषयमें इन्हें तनु मुनिका उपदेश (शान्ति० १२८ अध्याय)।

वीरधन्वा-कौरवपक्षका एक त्रिगर्तदेशीय योद्धा, जो धृष्टकेतुका सामना करनेके लिये आगे बढ़ा था (द्रोण० १०६ । १०)। इसका धृष्टकेतुके साथ युद्ध और उनके द्वारा वध (द्रोण० १०७ । ९—१८)।

वीरधर्मा-एक राजा, जिसे पाण्डवोंकी ओरसे रणनिमन्त्रण भेजनेका निश्चय किया गया था (उद्योग० ४ । १६)।

वीरप्रमोक्ष-एक तीर्थ, जहाँ जानेसे मनुष्य सम्पूर्ण पापोंसे छुटकारा पा जाता है (वन० ८४ । ५१)।

वीरबाहु-(१) धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६७ । १०३; आदि० ११६ । १२)। प्रथम दिनके युद्धमें उत्तरके साथ इसका द्वन्द्व-युद्ध (भीष्म० ४५ । ७७-७८)। भीमसेनके साथ इसका युद्ध और उनके द्वारा वध (भीष्म० ६४ । ३५-३६)। (२) चेदिदेशके राजा, जिनका विवाह दशार्णराज सुदामाकी पुत्रीसे हुआ था, जो दमयन्तीकी मौसी थी। वनमें राजा नल जब दमयन्तीको अकेली छोड़कर चले गये, उस समय दमयन्तीको उन्हींके राजमहलमें आश्रय मिला था। (वन० ६९ । १३—१५)।

वीरभद्र-एक शिवपार्षद, जो शंकरजीका मूर्तिमान् क्रोध ही था (शान्ति० २८४ । २९—३४)। इसका अपने रोमकूपोंसे रौम्यनामवाले गणेश्वरोंको प्रकट करना (शान्ति० २८४ । ३५)। इसके द्वारा दक्षयज्ञ-विध्वंस (शान्ति० २८४ । ३६-५०)। इसका दक्ष आदिके पूछनेपर अपना परिचय देना (शान्ति० २८४ । ५१-५५)।

वीरमती-भारतवर्षकी एक नदी, जिसका जल भारतवासी पीते हैं (भीष्म० ९ । २५)।

वीरसेन-निषधदेशके राजा जो नलके पिता थे। ये धर्म और अर्थके तत्त्वज्ञ थे (वन० ५२ । ५५)। दमयन्तीद्वारा इनका परिचय दिया जाना (वन० ६४ । ४८)। इन्होंने अपने जीवनमें कभी मांस नहीं खाया था (अनु० ११५ । ६५)।

वीरा-(१) शंयुके पुत्र भरद्वाज नामक अग्निकी भार्या। इनके गर्भसे वीर नामक पुत्र उत्पन्न हुआ (वन० २१९ । ९)। (२) भारतवर्षकी एक नदी, जिसका जल भारतवासी पीते हैं (भीष्म० ९ । २२)।

वीराश्रम-वीराश्रमनिवासी कुमार कार्तिकेयके निकट जाकर मनुष्य अश्वमेध यज्ञका फल पाता है (वन० ८४ । १४५)।

वीरिणी-ये प्राचेतस दक्षकी पत्नी थीं। इनके गर्भसे एक हजार पुत्र तथा पचास कन्याएँ उत्पन्न हुई थीं (आदि० ७५ । ६-८)।

वीरुधा-नागमाता सुरसाकी तीन पुत्रियोंमेंसे एक। इसकी दो बहिनोंका नाम था अनला और रुहा। यह लता, गुल्म, वल्ली आदिकी जननी हुई (आदि० ६६ । ७० के बाद, दा० पाठ)।

वीर्यवती-स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । ८)।

वीर्यवान्-एक सनातन विश्वेदेव (अनु० ९१ । ३१)।

वृक-(१) एक राजा, जो द्रौपदीस्वयंवरमें उपस्थित था (आदि० १८५ । १०)। यह कौरवोंकी ओरसे लड़ रहा था और किसी पर्वतीय नरेशद्वारा मारा गया था (कर्ण० २५ । १६-१७)। (२) पाण्डवपक्षका एक योद्धा, जिसका द्रोणाचार्यद्वारा वध हुआ था (द्रोण० २१ । १६)। (३) एक प्राचीन नरेश, जिसने अपने जीवनमें कभी मांस नहीं खाया था (अनु० ११५ । ६३)।

वृक्षवासी-एक यक्ष, जो कुबेरकी सभामें रहकर उनकी सेवा करता है (सभा० १० । १८)।

वृजिनीवान्-ये मनुवंशी क्रोष्टाके पुत्र थे। इनके पुत्रका नाम उषङ्गु था (अनु० १४७ । २८-२९)।

वृत्त-कश्यपद्वारा कद्रूके गर्भसे उत्पन्न एक नाग (आदि० ३५ । १०; उद्योग० १०३ । १४)।

वृत्र (वृत्रासुर)-कश्यपपत्नी दनायुके गर्भसे उत्पन्न एक असुर (आदि० ६५ । ३३) । यह राजा मणिमान्-के रूपमें इस पृथ्वीपर उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७ । ४४) । इस महान् असुरके मस्तकपर प्रहार करनेसे वज्रके दस बड़े और सौ छोटे टुकड़े हो गये थे (आदि० १६९ । ५०) । वृत्रासुरकी देवताओंपर चढ़ाई (वन० १०० । ४) । त्वष्टाकी अभिचाराग्निसे इसकी उत्पत्ति (उद्योग० ९ । ४८) । इसका इन्द्रको अपना ग्रास बना लेना (उद्योग० ९ । ५२) । महर्षियोंके समझानेसे इन्द्रके साथ शर्तपूर्वक संधि करना (उद्योग० १० । २७—३१) । इसका शुक्राचार्यके प्रश्नोंका उत्तर देना (शान्ति० २७९ । १३—३१) । सनत्कुमारजीके उपदेशका समर्थन करते हुए इसका परमधामको प्राप्त करना (शान्ति० २८० । ५७—५९) । इन्द्रके साथ इसका युद्ध (शान्ति० २८१ । १३—२१) । इन्द्रके वज्र-प्रहारसे इसके मारे जानेका वर्णन, जब वृत्रासुर ज्वरसे पीड़ित होकर जँभाई लेने लगा, उसी समय इन्द्रने वज्रका प्रहार किया और वह प्राण त्यागकर विष्णुलोकको चला गया (वन० १०१ । १५; उद्योग० १० । ३०; शान्ति० २८२ । ९; शान्ति० २८३ । ५९-६०) । इसके पञ्च-भूतोंको ग्रस्त करते हुए इन्द्रके शरीरमें प्रवेश करने और इन्द्रद्वारा मारे जानेका वर्णन (आश्व० ११ । ७—१९) ।

महाभारतमें आये हुए वृत्रासुरके नाम-असुर, असुर-श्रेष्ठ, असुरेन्द्र, दैत्य, दैत्यपति, दैत्येन्द्र, दानव, दानवेन्द्र, दितिज, सुरारि, त्वाष्ट्र, विश्वात्मा आदि ।

वृद्धकन्या-महर्षि कुणिगर्गकी पुत्री, जो बालब्रह्मचारिणी थी । इसकी घोर तपस्या (शल्य० ५२ । ५—१०) । नारदजीके कहनेसे इसका शृङ्गवान्के साथ आधा पुण्य प्रदान करनेकी प्रतिज्ञापूर्वक अपना विवाह करना (शल्य० ५२ । १२—१७) । महर्षि शृङ्गवान्के साथ एक रात रहकर और उन्हें अपनी तपस्याका आधा पुण्य प्रदान करके इसका स्वर्गगमन (शल्य० ५२ । १८—२१) । जाते समय उसने अपने स्थानको तीर्थ घोषित किया और उसका फल इस प्रकार बताया—'जो अपने चित्तको एकाग्र कर इस तीर्थमें स्नान और देवतर्पण करके एक रात निवास करेगा, उसे अट्ठावन वर्षोंतक विधिपूर्वक ब्रह्मचर्य पालन करनेका फल प्राप्त होगा' (शल्य० ५२ । २१-२२) ।

वृद्धक्षत्र-(१) ये सिन्धुराज जयद्रथके पिता थे (वन० २६४ । ६) । जयद्रथके जन्म-समयमें आकाशवाणीद्वारा उसकी मृत्युका समाचार सुनकर इनका चिन्तित होना और अपने जाति-भाइयोंको बुलाकर उनके सामने 'मेरे पुत्रका सिर जो पृथ्वीपर गिरायेगा, उसके मस्तकके सैकड़ों टुकड़े हो जायँगे ।' यों जयद्रथको वरदान देना । पुनः अपने पुत्रको राजसिंहासनपर बैठाकर स्वयं तपके लिये प्रस्थान करना (द्रोण० १४६ । १०६-११३) । अर्जुनके बाणद्वारा जयद्रथके मस्तकका इनकी गोदमें गिरना और मस्तकका इनकी गोदसे पृथ्वीपर गिरनेसे इनकी मृत्यु (द्रोण० १४६ । १२२—१३०) । (२) एक पूरुवंशी राजा, जो पाण्डवपक्षका योद्धा था । इसका अश्वत्थामाके साथ युद्ध और उसके द्वारा वध (द्रोण० २०० । ७३-८४) ।

वृद्धक्षेम-त्रिगर्तदेशके राजा, जो सुशर्माके पिता थे (आदि० १८५ । ९) ।

वृद्धगार्ग्य-एक तपस्वी महर्षि, जिन्होंने पितरोंसे नीलवृषभ छोड़ने, वर्षा-ऋतुमें दीपदान करने और अमावास्याको तिलमिश्रित जलद्वारा तर्पण करनेसे प्राप्त होनेवाले फलके विषयमें प्रश्न किया और पितरोंने इन्हें उसका वर्णन सुनाया (अनु० १२५ । ७७—८३) ।

वृद्धशर्मा-आयुके द्वारा स्वर्भानुकुमारीके गर्भसे उत्पन्न पाँच पुत्रोंमेंसे एक, शेष चारके नाम हैं—नहुष, रजि, गय और अनेना (आदि० ७५ । २५-२६) ।

वृद्धिका-वृक्षोंपर गिरे हुए शिवजीके वीर्यसे उत्पन्न हुई नारियाँ, जो मनुष्यका मांस भक्षण करनेवाली हैं । संतान-की इच्छा रखनेवाले लोगोंको इनके सामने मस्तक झुकाना चाहिये (वन० २३१ । १६) ।

वृन्दारक-(१) धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ११६ । ८) । भाइयोंके साथ इसका भीमसेनपर आक्र-मण और उनके द्वारा वध (द्रोण० १२७ । ३३—६१) । (२) कौरवपक्षका एक योद्धा, जो अभिमन्युद्वारा मारा गया (द्रोण० ४७ । १२) ।

वृष-(१) स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ६४) । (२) एक दैत्य, दानव या राक्षस, जो पूर्वकालमें पृथ्वीका शासक था; परंतु कालवश इसे छोड़कर चल बसा (शान्ति० २२७ । ५१) ।

वृषक-(१) गान्धारराज सुबलका पुत्र, जो द्रौपदी-स्वयंवरमें गया था (आदि० १८५ । ५-६) । यह युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें भी उपस्थित था (सभा० ३४ । ७) । दुर्योधनकी सेनामें भीष्मद्वारा यह दुर्धर्ष रथी बताया गया है (उद्योग० १६८ । १) । अर्जुनके साथ युद्ध करते समय यह उनके हाथसे मारा गया (द्रोण० ३० । २—११) । व्यासजीके आह्वान करने-पर गङ्गाजलसे इसका प्रकट होना (आश्रम० ३२ । १२) । (२) एक राजकुमार, जो कलिङ्ग (कलिङ्गराजकुमार)

का भाई था । इसके मारे जानेकी चर्चा (कर्ण० ५ । ३३) ।

वृषका-भारतवर्षकी एक प्रमुख नदी, जिसका जल भारतवासी पीते हैं (भीष्म० ९ । ३५) ।

वृषक्राथ-कौरवपक्षका एक योद्धा, जो द्रोणाचार्यद्वारा निर्मित गरुडव्यूहके हृदयस्थानमें स्थित था (द्रोण० २० । १३) ।

वृषदंश-मन्दराचलके निकटका एक पर्वत, जो स्वप्नमें श्रीकृष्णसहित शिवजीके पास जाते हुए अर्जुनको मार्गमें मिला था (द्रोण० ८० । ३३) ।

वृषदर्भ-(१) एक प्राचीन राजर्षि, जो यम-सभामें रहकर विवस्वान्-पुत्र यमकी उपासना करते हैं (सभा० ८ । २६)। अपने राज्यकालमें इनका अपना एक गुप्त नियम था कि 'ब्राह्मणको सोने और चाँदीका ही दान दिया जाय' (वन० १९६ । ३) । राजा सेन्दुकके कहनेसे एक ब्राह्मणका इनके पास आकर एक हजार घोड़े माँगना और इनका उस ब्राह्मणको कोड़ोंसे पीटना (वन० १९६ । ४-८) । ब्राह्मणके इस मारका रहस्य पूछनेपर उसे बताना और अपने राज्यकी एक दिनकी आयका उसके लिये दान करना (वन० १९६ । ९-१३) । (२) काशि या काशी जनपदके राजा उशीनर, जिन्होंने शरणागत कपोतकी रक्षा की थी (अनु० ३२ अध्याय) ।

वृषध्वज-प्रवीरवंशका एक कुलाङ्गार राजा (उद्योग० ७४ । १६) ।

वृषपर्वा-(१) एक दानव, जो कश्यपद्वारा दनुके गर्भसे उत्पन्न हुआ था (आदि० ६५ । २४) । यह दीर्घप्रज्ञ नामक राजाके रूपमें पृथ्वीपर उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७ । १५-१६) । दैत्योंके पुरोहित शुक्राचार्य इसीके नगरमें रहते थे (आदि० ७६ । १३-१४) । इसकी कन्याका नाम शर्मिष्ठा था (आदि० ७८ । ६) । शुक्राचार्यसे अपने नगरमें रहनेके लिये इसकी करुण प्रार्थना (आदि० ८० । ७-८) । इसके प्रति इसकी पुत्री शर्मिष्ठाको आजीवन अपनी दासी बनानेके लिये देवयानीका अनुरोध (आदि० ८० । १६) । शर्मिष्ठाको बुलानेके लिये इसका धात्रीको भेजना (आदि० ८० । १७ के बाद, दा० पाठ) । (२) एक प्राचीन राजर्षि, जिनके आश्रमपर जानेके लिये आकाशवाणीद्वारा पाण्डवोंको आदेश मिला था (वन० १५६ । १५) । इनके द्वारा पाण्डवोंका स्वागत (वन० १५८ । २०-२३) । इनका पाण्डवोंको उपदेश देना (वन० १५८ । २६-२७) । पाण्डवोंके प्रस्थान करते समय इन्होंने उन्हें ब्राह्मणोंको सौंप दिया और स्वयं पाण्डवोंको आशीर्वाद दे मार्ग बताकर लौट आये (वन० १५८ । २८-२९) । पाण्डवोंका पुनः लौटकर वृषपर्वाके आश्रमपर आना और सत्कृत होना (वन० १७७ । ६-८) ।

वृषप्रस्थगिरि-एक तीर्थ, जहाँ तीर्थयात्राके समय पाण्डवोंने निवास किया था (वन० ९५ । ३) ।

वृषभ-(१) मगध-राजधानी गिरिव्रजके समीपका एक पर्वत (सभा० २१ । २) । (२) गान्धारराज सुबलका पुत्र, जो शकुनिका छोटा भाई था । इसने अपने अन्य पाँच भाइयोंके साथ इरावान्पर धावा किया था, जिसमें पाँच तो इरावान्द्वारा मारे गये; केवल यही बचा था (भीष्म० ९० । ३३-४७) ।

वृषभा-भारतवर्षकी एक नदी, जिसका जल भारतवासी पीते हैं (भीष्म० ९ । ३२) ।

वृषभेक्षण-भगवान् श्रीकृष्णका एक नाम । इस नामकी निरुक्ति (उद्योग० ७० । ७) ।

वृषसेन-(१) एक प्राचीन राजा, जो यमसभामें रहकर वैवस्वत यमकी उपासना करते हैं (सभा० ८ । १३) । (२) युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें आया हुआ एक अभिमानी नरेश (सभा० ४४ । २१-२२) । (३) कर्णका एक पुत्र, जो दुर्योधनकी सेनाका एक श्रेष्ठ रथी था (उद्योग० १६७ । २३) । शतानीक आदि द्रौपदीपुत्रोंके साथ इसका युद्ध (द्रोण० १६ । १--१०) । इसका पाण्ड्यके साथ युद्ध (द्रोण० २५ । ५७) । अभिमन्युद्वारा इसका पराजित होना (द्रोण० ४४ । ५-७) । इसके ध्वजका वर्णन (द्रोण० १०५ । १६-१८) । अर्जुनके साथ इसका युद्ध (द्रोण० १४५ । ४२-५८) । द्रुपदके साथ इसका संग्राम (द्रोण० १६५ । १३) । इसके द्वारा द्रुपदकी पराजय (द्रोण० १६८ । १९-२६) । सात्यकिद्वारा इसकी पराजय (द्रोण० १७० । ३७-३९) । द्रोणाचार्यके मारे जानेपर इसका युद्धस्थलसे भागना (द्रोण० १९३ । १६) । सात्यकिद्वारा इसकी पराजय (द्रोण० २०० । ५१-५३; कर्ण० ४८ । ४३-४५) । इसका नकुलके साथ युद्ध (कर्ण० ६१ । ३६-३९) । शतानीकके साथ इसकी मुठभेड़ (कर्ण० ७५ । ९-१०) । इसका नकुलके साथ घोर संग्राम और इसके द्वारा नकुलकी पराजय (कर्ण० ८४ । १९-३५) । अर्जुनके साथ इसका युद्ध और उनके द्वारा वध (कर्ण० ८५ । ३५-३८) । व्यासजीके आवाहन करनेपर गङ्गाजलसे निकलनेवाले वीरोंमें यह भी था (आश्रम० ३२ । १०) ।

वृषा-भारतवर्षकी एक नदी, जिसका जल यहाँके निवासी पीते हैं (भीष्म० ९ । ३५) ।

वृषाकपि-(१) भगवान् विष्णुका एक नाम । इस नामकी निरुक्ति (शान्ति० ३४२ । ८९) । (२) एक ऋषि, जो अन्य ऋषियोंके साथ देवताओंके यज्ञमें उपस्थित हुए थे (अनु० ६६ । २३) । (३) ग्यारह रुद्रोंमेंसे एक (अनु० १५० । १२-१३) ।

वृषाण्ड-एक दैत्य, दानव या राक्षस, जो इस पृथ्वीका प्राचीन शासक था; किंतु कालसे पीड़ित हो इसे छोड़कर चल दिया (शान्ति० २२७ । ५३) ।

वृषादर्भि-(१) काशिराज वृषदर्भके पुत्र युवनाश्व, जो सब प्रकारके रत्न, अभीष्ट स्त्री और सुरम्य गृह दान करके स्वर्गलोकमें निवास करते हैं (शान्ति० २३४ । २५; अनु० १३७ । १०) । (२) वृषदर्भ (प्रथम) के पुत्र राजा वृषादर्भि; इनका सप्तर्षियोंको दान देनेके लिये उद्यत होना (अनु० ९३ । २७—३०) । सप्तर्षियोंपर कुपित होकर इनके द्वारा कृत्या प्रकट करना (अनु० ९३ । ५२-५३) । सप्तर्षियोंको मारनेके लिये कृत्याको भेजना (अनु० ९३ । ५५-५६) ।

वृषामित्र-एक ऋषि, जो युधिष्ठिरका विशेष आदर करते थे (वन० २६ । २४) ।

वृष्णि-एक यदुवंशी क्षत्रिय, इनके वंशज वृष्णि कहलाये (आदि० २१७ । १८) । (इसी वंशमें भगवान् श्रीकृष्ण प्रकट हुए थे ।)

वेगवान्-(१) धृतराष्ट्र-कुलमें उत्पन्न एक नाग, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें जल मरा था (आदि० ५७ । १७) । (२) एक दानव, जो दनुका विख्यात पुत्र था (आदि० ६५ । २४) । यह इस पृथ्वीपर केकयराज-कुमारके रूपमें उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७ । १०-११) । (३) एक दैत्य, जो शाल्वका अनुयायी था । जाम्बवतीपुत्र साम्बके साथ इसका युद्ध और उनके द्वारा वध (वन० १६ । १७–२०) ।

वेगवाहिनी-एक नदी, जो वरुण-सभामें रहकर वरुणदेवकी उपासना करती है (सभा० ९ । १८) ।

वेणा-एक नदी, जो वरुणसभामें रहकर उनकी उपासना करती है (सभा० ९ । १८) । दक्षिण-दिग्विजयके अवसरपर सहदेवने वेणातटवर्ती प्रदेशके स्वामीको पराजित किया था (सभा० ३१ । १२) । वेणानदीके तटपर जाकर तीन रात उपवास करनेवाला मनुष्य मोर और हंसोंसे जुता हुआ विमान प्राप्त करता है । यह समस्त पापोंका नाश करनेवाली है (वन० ८५ । ३२; वन० ८८ । ३) । अग्निको उत्पन्न करनेवाली नदियोंमें इसकी भी गणना है (वन० २२२ । २४–२६) । यह भारतवर्षकी एक प्रमुख नदी है, जिसका जल यहाँकी प्रजा पीती है (भीष्म० ९ । २०, २७) । इसका नाम सायं-प्रातः स्मरण करनेयोग्य है (अनु० १६५ । २०) ।

वेणासङ्गम-एक तीर्थ, जहाँ स्नान करनेसे अश्वमेध यज्ञका फल प्राप्त होता है (वन० ८५ । ३४) ।

वेणिका-शाकद्वीपकी एक पवित्र जलवाली नदी (भीष्म० ११ । ३२) ।

वेणी-कौरव्य-कुलमें उत्पन्न एक नाग, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें दग्ध हो गया था (आदि० ५७ । १२-१३) ।

वेणीस्कन्द-कौरव्यकुलमें उत्पन्न एक नाग, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें दग्ध हो गया था (आदि० ५७ । १२-१३) ।

वेणुजङ्घ-एक प्राचीन ऋषि, जो युधिष्ठिरकी सभामें विराजमान होते थे (सभा० ४ । १८) ।

वेणुदारि-एक यादव, जिसने बभ्रु (अक्रूरजी) की भार्याका अपहरण किया था (सभा० ३८ । २९ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ८२५, कालम १) ।

वेणुदारिसुत-एक यादव, जिसे दिग्विजयके अवसरपर कर्णने परास्त किया था (वन० २५४ । १५-१६) ।

वेणुप-एक भारतीय जनपद (उद्योग० १४० । २६) ।

वेणुमण्डल-कुशद्वीपके सात वर्षोंमेंसे दूसरा वर्ष । इन सातों वर्षोंमें देवता, गन्धर्व और मनुष्य आनन्दपूर्वक निवास करते हैं । इनमें किसीकी भी मृत्यु नहीं होती तथा यहाँ लुटेरे और म्लेच्छ जातिके लोग नहीं हैं (भीष्म० १२ । १२—१५) ।

वेणुमन्त-एक श्वेतवर्णका पर्वत, जो उत्तर भागमें मन्दराचलके सदृश विद्यमान था (सभा० ३८ । २९ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ८१३, कालम १) ।

वेणुवीणाधरा-स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । २१) ।

वेतसवन-एक प्राचीन तीर्थ, जहाँ मृत्युने तपस्या की थी (द्रोण० ५४ । २३) ।

वेतसिका-ब्रह्माजीद्वारा सेवित एक तीर्थ, जहाँ जानेसे मनुष्य अश्वमेध यज्ञका फल पाता और शुक्राचार्यके लोकमें जाता है (वन० ८४ । ५६) ।

वेतालजननी-स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । १३) ।

वेत्रकीयगृह–एकचक्रा नगरीके समीपवर्ती एक स्थानविशेष, जहाँ उस प्रदेशका राजा निवास करता था (आदि० १५९ । ९) ।

वेत्रकीयवन–एक वन, जहाँ भीमसेनने बकासुरको मारा था (वन० ११ । ३०-३१) ।

वेत्रवती–भारतवर्षकी एक प्रमुख नदी, जिसका जल भारतवासी पीते हैं (भीष्म० ९ । १६, १९) ।

वेत्रिक–एक भारतीय जनपद । दुर्योधनने यहाँके सैनिकोंको भीष्मकी रक्षाके लिये भेजा था (भीष्म० ५१ । ७) ।

वेद–(१) ये आयोदधौम्य मुनिके एक शिष्य थे (आदि० ३ । ७८) । इनकी गुरुभक्तिका वर्णन (आदि० ३ । ७९) । इनको गुरुका आशीर्वाद प्राप्त होना (आदि० ३ । ८०) । इनके गार्हस्थ्यधर्मका वर्णन (आदि० ३ । ८१) । इनका जनमेजयका उपाध्याय होना (आदि० ३ । ८२) । परदेश जाते समय अपने शिष्य उत्तङ्कको घरकी सँभाल रखनेके लिये इनका आदेश (आदि० ३ । ८४) । इनका परदेशसे लौटनेपर उत्तङ्कके कार्य-विधानपर प्रसन्न होना और उन्हें आशीर्वाद देकर घर जानेके लिये आज्ञा देना (आदि० ३ । ८८-८९) । गुरु-दक्षिणाके लिये उत्तङ्कके आग्रह करनेपर उन्हें गुरुपत्नीके पास गुरुदक्षिणाकी वस्तु पूछनेके लिये भेजना (आदि० ३ । ९०—९४) । (२) भारतीय आर्योंके सर्वप्रधान और सर्वमान्य धार्मिक ग्रन्थ, जो अप्रतिम ज्ञानके भंडार हैं । इनकी संख्या चार है—ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद । ये सभी मूर्तिमान् हो ब्रह्माजीकी सभामें उपस्थित रहते हैं (सभा० ११ । ३२) ।

वेदवती–भारतवर्षकी एक प्रमुख नदी, जिसका जल भारतवासी पीते हैं (भीष्म० ९ । १७) ।

वेदशिरा–एक प्राचीन ऋषि, जो उपरिचरवसुके यज्ञमें सदस्य बने थे (शान्ति० ३३६ । ८) ।

वेदस्मृता–भारतवर्षकी एक प्रमुख नदी, जिसका जल यहाँके निवासी पीते हैं (भीष्म० ९ । १७) ।

वेदाश्वा–भारतवर्षकी एक प्रमुख नदी, जिसका जल भारतवासी पीते हैं (भीष्म० ९ । २८) ।

वेदी–ब्रह्माकी भार्या (उद्योग० ११७ । १०) ।

वेदीतीर्थ–(१) कुरुक्षेत्रकी सीमामें स्थित एक तीर्थ, जिसमें स्नान करके मनुष्य सहस्र गोदानका फल पाता है (वन० ८३ । ९९) । (२) एक परम दुर्गम तीर्थ, (जो सम्भवतः सिन्धुके उद्गमस्थानके निकट है ।) यहाँकी यात्रा करनेसे मनुष्य अश्वमेध यज्ञका फल पाता और स्वर्गलोकमें जाता है (वन० ८४ । ४७) ।

वेन–(१) वैवस्वत मनुके प्रथम दस पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ७५ । १५-१७) । (२) मृत्युकी मानसी कन्या सुनीथाके गर्भसे उत्पन्न एक राजा (शान्ति० ५९ । ९३) । ऋषियोंके शापसे इनकी मृत्यु (शान्ति० ५९ । ९४) । ऋषियोंद्वारा इनकी दाहिनी जाँघके मन्थनसे निषादों एवं विन्ध्यगिरिनिवासी लाखों म्लेच्छोंकी उत्पत्ति हुई (शान्ति० ५९ । ९५-९७) । दाहिने हाथके मन्थनसे पृथु उत्पन्न हुए (शान्ति० ५९ । ९८) । ये यमसभामें रहकर सूर्यपुत्र यमकी उपासना करते हैं (सभा० ८ । १५) ।

वेहत–एक पुष्टिकरी ओषधि (वन० १९७ । १७) ।

वैकर्तन–अपने शरीरसे कवचके कतर डालनेके कारण कर्णका नाम वैकर्तन हो गया (आदि० ११० । ३१) । (विशेष देखिये कर्ण)

वैकुण्ठ–पाँचों भूतोंको मिलानेमें जिसकी शक्ति कभी कुण्ठित नहीं होती, वे भगवान् वैकुण्ठ कहलाते हैं (शान्ति० ३४२ । ८०) ।

वैजयन्त–(१) इन्द्रके ध्वजका नाम (वन० ४२ । ८) । (२) क्षीरसागरके मध्यभागमें स्थित एक पर्वत, जहाँ अध्यात्मगतिका चिन्तन करनेके लिये ब्रह्माजी प्रतिदिन आते हैं (शान्ति० ३५० । ९-१०) ।

वैजयन्ती–(१) ऐरावतके दो घण्टोंका नाम, जिन्हें इन्द्रने स्कन्दको अर्पण किया था । उनमेंसे एक विशाखने ले लिया और दूसरा स्कन्दके पास रहा (वन० २३१ । १८-१९) ।

वैदूर्यपर्वत–शूर्पारक क्षेत्रमें गोकर्णतीर्थके पास स्थित एक पर्वत, जो शिवस्वरूप माना जाता है । इसीपर अगस्त्यजीका आश्रम है । वैदूर्यपर्वतका दर्शन करके नर्मदामें उतरनेसे मनुष्य देवताओं तथा पुण्यात्मा राजाओंके समान पवित्र लोकोंको प्राप्त करता है । यह पर्वत त्रेता और द्वापरकी संधिमें प्रकट हुआ था (वन० ८८ । १८; वन० १२१ । १९-२०) ।

वैतरणी–(१) भागीरथी गङ्गा ही जब पितृलोकमें बहती हैं, तब उनका नाम वैतरणी होता है । वहाँ पापियोंके लिये इनके पार जाना अत्यन्त कठिन होता है (आदि० १६९ । २२) । (२) एक नदी, जो वरुणकी सभामें रहकर उनकी उपासना करती है (सभा० ९ । २०) । यह सब पापोंको छुड़ानेवाली है, इसमें विरजतीर्थमें स्नान करनेसे मनुष्य चन्द्रमाके समान प्रकाशित होता है (वन० ८५ । ६) । यह भारतकी उन प्रसिद्ध नदियोंमेंसे है, जिसका जल भारतवासी पीते हैं (भीष्म० ९ । ३४) ।

वैताली-स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ६७) ।

वैदर्भी-राजा सगरकी एक पत्नी, जिनसे साठ हजार पुत्रोंकी उत्पत्ति हुई थी (वन० १०६ । १७-२३) ।

वैदेह-एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ५७) । (विशेष देखिये विदेह) ।

वैनतेय-गरुड़की प्रमुख संतानोंमेंसे एक (उद्योग० १०१ । १०) ।

वैमानिक-एक तीर्थ, जहाँ स्नान करनेसे मनुष्य अप्सराओंके दिव्य लोकमें जाता है और इच्छानुसार विचरता है (अनु० २५ । २३) ।

वैमित्रा-सात शिशुमाताओंमेंसे एक । शेष छःके नाम हैं—काकी, हलिमा, मालिनी, बृहता, आर्या और पलाला (वन० २२८ । १०) ।

वैराज-सात पितरोंमेंसे एक । शेष छःके नाम हैं—अग्निष्वात्त, सोमपा, गार्हपत्य, एकशृङ्ग, चतुर्वेद और कल । ये ब्रह्माजीकी सभामें रहकर उनकी उपासना करते हैं (सभा० ११ । ४६) ।

वैराट-धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक, जो भीमसेनद्वारा मारा गया था (भीष्म० ९६ । २६) ।

वैराम-एक प्राचीन जातिका नाम, इस जातिके लोग नाना प्रकारके रत्न और भाँति-भाँतिकी भेंट-सामग्री लेकर युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें आये थे (सभा० ५१ । १२) ।

वैवस्वत तीर्थ-एक पुण्यमय तीर्थ, यहाँ स्नान करनेसे मनुष्य स्वयं तीर्थरूप हो जाता है (अनु० २५ । ३९) ।

वैवस्वत मनु-चौदह मनुओंमें ये सातवें मनु हैं (आदि० ७५ । १) । (विशेष देखिये मनु) ।

वैवाहिकपर्व-(१) आदिपर्वका एक अवान्तर पर्व (अध्याय १९२ से १९८ तक) । (२) विराटपर्वका एक अवान्तर पर्व (अध्याय ७० से ७२ तक) ।

वैशम्पायन-महर्षि वेदव्यासके शिष्य, जिन्होंने महाराज जनमेजयको महाभारतकी कथा सुनायी थी (आदि० १ । २०-२१, ९८) । जनमेजयको महाभारतकी कथा सुनानेके लिये इनको गुरुदेव व्यासकी प्रेरणा प्राप्त होना (आदि० ६० । २२) । इनके द्वारा महाभारत-ग्रन्थकी महिमाका विस्तारपूर्वक वर्णन (आदि० ६२ । १२—५३) । ये अज्ञानवश किसी समय ब्राह्मणका वध करनेके कारण बालवधके पापसे लिप्त हो गये थे तो भी स्वर्ग चले गये (अनु० ६ । ३७) ।

वैशाख-(बारह महीनोंमेंसे एक, जिस मासकी पूर्णिमाको विशाखा नक्षत्रका योग होता है, उसे वैशाख कहते हैं । यह चैत्रके बाद और ज्येष्ठके पहले आता है ।) जो स्त्री या पुरुष इन्द्रिय-संयमपूर्वक एक समय भोजन करके वैशाख मासको बिताता है, वह सजातीय बन्धु-बान्धवोंमें श्रेष्ठताको प्राप्त होता है (अनु० १०६ । २४) । वैशाख मासकी द्वादशी तिथिको उपवासपूर्वक भगवान् मधुसूदनका पूजन करनेवाला पुरुष अग्निष्टोम यज्ञका फल पाता और सोमलोकमें जाता है (अनु० १०९ । ६) ।

वैशालाक्ष-ब्रह्माका नीति-शास्त्र, जो विशालाक्ष भगवान् शिवद्वारा संक्षिप्त किये जानेके कारण वैशालाक्ष कहलाता है (शान्ति० ५९ । ८२) ।

वैश्रवण-कुबेरका एक नाम (आदि० १९८ । ६) । (देखिये कुबेर)

वैश्वानर-(१) एक महर्षि, जो इन्द्रकी सभामें विराजमान होते हैं (सभा० ७ । १८) । (२) भानु (मनु) नामक अग्निके प्रथम पुत्र । चातुर्मास्य यज्ञोंमें हविष्यद्वारा पर्जन्यसहित इनकी पूजा की जाती है (वन० २२१ । १६) ।

वैष्णवधर्मपर्व-आश्वमेधिकपर्वका एक अवान्तर पर्व, जो दाक्षिणात्य पाठसे लिया गया है (अध्याय ९२ । दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ६३०७ से ६३७८ तक) ।

वैहायस-नर-नारायणाश्रमके समीपवर्ती एक कुण्ड (शान्ति० १२७ । ३) ।

व्यश्व-एक राजा, जो यम-सभामें रहकर वैवस्वत यमकी उपासना करते हैं (सभा० ८ । १२) ।

व्याघ्रकेतु-पाण्डवपक्षका एक पाञ्चाल योद्धा, जो कर्णद्वारा घायल किया गया था (कर्ण० ५६ । ४४-४८) ।

व्याघ्रदत्त-(१) पाण्डवपक्षका एक राजा, जिसकी गणना श्रेष्ठ रथियोंमें की गयी थी (उद्योग० १७१ । १९) । द्रोणाचार्यके साथ इसका युद्ध और उनके द्वारा वध (द्रोण० १६ । ३२-३७) । इसके घोड़ोंकी चर्चा—गदहेके समान मलिन और अरुण वर्णवाले तथा पृष्ठ भागमें चूहेके समान श्याम-मलिन कान्तिवाले विनीत घोड़े व्याघ्रदत्तको युद्ध-मैदानमें ले गये थे (द्रोण० २३ । ५४) । विकर्णद्वारा इसके मारे जानेकी चर्चा (कर्ण० ६ । १६-१७) । (२) मगध देशका एक राजकुमार, जो कौरवपक्षका योद्धा था । इसका सात्यकिके साथ युद्ध (द्रोण० १०६ । १४) । सात्यकिके साथ संग्राम करते हुए इसका उनके द्वारा वध (द्रोण० १०७ । ३१-३३) ।

व्याघ्रपाद-एक प्राचीन ऋषि, जो उपमन्युके पिता थे (अनु० १४ । ४५) ।

व्याघ्राक्ष-स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ५९) ।

व्यास-एक महर्षि, जिनको नमस्कार कर लेनेके पश्चात् जय (महाभारत एवं इतिहास-पुराण आदि) के पाठका विधान है। इन्हें कृष्णद्वैपायन कहते हैं (आदि० १। मङ्गला-चरण)। राजर्षि जनमेजयके सर्पसत्रमें वैशम्पायनद्वारा श्रीकृष्णद्वैपायनकथित महाभारतकी विचित्र, विविध एवं पुण्य-मयी कथाएँ सुनायी गयी थीं (आदि० १। ९-११)। इनकी बनायी हुई महाभारतसंहिता सब शास्त्रोंके अभिप्रायके अनुकूल वेदार्थोंसे भूषित तथा चारों वेदोंके भावोंसे संयुक्त है (आदि० १। १७-२१)। हिमालयकी पवित्र तलहटीमें पर्वतीय गुफाके भीतर स्नान आदिसे पवित्र हो कुशासनपर बैठकर ध्यानयोगमें स्थित हो इन्होंने धर्मपूर्वक महाभारत इतिहासके स्वरूपका विचार करते हुए ज्ञानदृष्टिद्वारा आदिसे अन्ततक सब कुछ प्रत्यक्षकी भाँति देखा (आदि० १। २८ के बाद दा० पाठ; २९—४९)। इन्होंने तपस्या एवं ब्रह्मचर्यकी शक्तिसे सनातन वेदका विस्तार करके लोकपावन पवित्र इतिहासकी रचना की (आदि० १। ५४)। ये पराशरमुनिके पुत्र और द्वैपायन नामसे प्रसिद्ध हैं। उत्तम व्रतधारी, निग्रहानुग्रहसमर्थ एवं सर्वज्ञ हैं। इन्होंने महाभारत-की रचना करके यह विचार किया कि अब मैं शिष्योंको इस ग्रन्थका अध्ययन कैसे कराऊँ। इनके इस विचारको जानकर लोकगुरु भगवान् ब्रह्मा लोककल्याणकी कामनासे स्वयं इनके आश्रमपर पधारे। इन्होंने ब्रह्माजीको प्रणाम करके उन्हें श्रेष्ठ आसनपर बैठाया। उनकी परिक्रमा की और उनके आसनके पास ही ये हाथ जोड़कर खड़े हो गये; फिर ब्रह्माजी-की आज्ञासे बैठकर प्रसन्नतापूर्वक बोले--'भगवन्! मैंने एक महाकाव्यकी रचना की है। इसमें सम्पूर्ण वेदोंका गुप्त-तम रहस्य तथा अन्य सब शास्त्रोंका सार संकलित हुआ है; परंतु इसके लिये कोई लेखक नहीं मिलता।' ब्रह्माजीने इनके काव्यकी प्रशंसा करके इन्हें गणेश-स्मरणकी आज्ञा दी और स्वयं अपने धामको चले गये (आदि० १। ५५-७४)। इन्होंने गणेशजीका स्मरण किया और वे आ गये। व्यासजीने उनसे लेखक बननेकी प्रार्थना की। उन्होंने कहा, 'यदि लिखते समय मेरी लेखनी क्षणभर भी न रुके तो मैं लेखक हो सकता हूँ।' व्यासजीने कहा—'ऐसा ही होगा; किंतु आप भी बिना समझे एक अक्षर भी न लिखें।' कहते हैं, इन्होंने महाभारतमें आठ हजार आठ सौ श्लोक ऐसे रचे हैं, जिनका अर्थ ये तथा शुकदेवजी ही ठीक-ठीक समझते हैं। गणेशजी सर्वज्ञ होनेपर भी जब क्षण-भर ऐसे श्लोकोंपर विचार करने लगते तबतक व्यासजी और भी बहुत-से श्लोकोंकी रचना कर डालते थे (आदि० १। ७५-८३)। इन्होंने माता सत्यवती तथा परम ज्ञानी गङ्गा-पुत्र भीष्मकी आज्ञासे विचित्रवीर्यकी पत्नियोंके गर्भसे तीन अग्नियोंके समान तीन तेजस्वी पुत्र उत्पन्न किये, जिनके नाम थे—धृतराष्ट्र, पाण्डु और विदुर। इन सबके परलोकवासी हो जानेके बाद व्यासजीने मनुष्यलोकमें महाभारतका प्रवचन किया। जनमेजय तथा सहस्रों ब्राह्मणोंके प्रश्न करनेपर उन्होंने अपने शिष्य वैशम्पायनको आज्ञा दी थी कि तुम इन्हें महा-भारतकी कथा सुनाओ (आदि० १। ८४-९९)। इन्होंने उपाख्यानोंसहित जो आद्यभारत या महाभारत बनाया था, वह एक लाख श्लोकोंका है। फिर इन्होंने उपाख्यानभागको छोड़कर चौबीस हजार श्लोकोंकी एक संहिता बनायी, जिसे विद्वान् पुरुष 'भारत' कहते हैं। इन्होंने सबसे पहले अपने पुत्र शुकदेवको महाभारत ग्रन्थका अध्ययन कराया। फिर दूसरे-दूसरे सुयोग्य शिष्योंको इसका उपदेश दिया। तत्पश्चात् भगवान् व्यासने साठ लाख श्लोकोंकी दूसरी संहिता बनायी। उसके तीस लाख श्लोक देवलोकमें समादृत हो रहे हैं। पितृलोकमें पंद्रह लाख तथा गन्धर्व-लोकमें चौदह लाख श्लोकोंका पाठ होता है। शेष रहे एक लाख श्लोक। उन्हींको आद्य भारत या महाभारत कहते हैं। मनुष्यलोकमें ये ही प्रतिष्ठित हैं। देवताओंको देवर्षि नारदने, पितरोंको असित देवलने, गन्धर्वोंको शुकदेवजीने और मनुष्योंको वैशम्पायनजीने महाभारत-संहिता सुनायी थी (आदि० १। १०१-१०९)। पुत्र और शिष्योंसहित भगवान् वेदव्यास जनमेजयके सर्पयज्ञमें सदस्य बने थे (आदि० ५३। ७-१०)। आस्तीकने जनमेजयके यज्ञको सत्यवतीनन्दन व्यासके यज्ञके समान बताया (आदि० ५५। ७)। यज्ञकर्मसे अवकाश मिलनेपर व्यासदेवजी अति विचित्र महाभारतकी कथा सुनाया करते थे (आदि० ५९। ५)। इन्हें 'सत्यवती' अथवा 'काली'ने कन्यावस्थामें ही पराशर मुनिसे यमुना-जीके द्वीपमें उत्पन्न किया था। ये पाण्डवोंके पितामह थे। इन्होंने जन्म लेते ही अपनी इच्छासे शरीरको बढ़ा लिया था। इनको स्वतः ही अङ्गों और इतिहासोंसहित सम्पूर्ण वेदोंका तथा परमात्मतत्त्वका ज्ञान प्राप्त हो गया था। ये वेदवेत्ताओंमें श्रेष्ठ हैं। इन्होंने एक ही वेदको चार भागोंमें विभक्त किया है। ब्रह्मर्षि व्यासजी परब्रह्म और अपरब्रह्मके ज्ञाता, कवि (त्रिकालदर्शी), सत्यव्रतपरायण तथा परम पवित्र हैं। इन्होंने ही शान्तनुकी संतानपरम्पराका विस्तार करनेके लिये धृतराष्ट्र, पाण्डु तथा विदुरको जन्म दिया था। ये जनमेजयके यज्ञमण्डपमें पधारे। राजा जनमेजयने सेवकों-सहित उठकर इनकी अगवानी की। इन्हें सोनेके सिंहासनपर बिठाकर इनका पूजन किया और कुशलप्रश्नके पश्चात् इनसे महाभारत-युद्धका वृत्तान्त पूछा। तब इन्होंने अपने पास बैठे हुए शिष्य वैशम्पायनको वह सारा प्रसंग सुनाने-की आज्ञा दी (आदि० ६०। १—२२)। वैशम्पायनने गुरुदेव व्यासको नमस्कार करके कथा प्रारम्भ की

(आदि० ६१ । १-२)। व्यासजीके कहे हुए इस पञ्चम वेदरूप महाभारतको 'कार्ष्णवेद' कहते हैं। जो इसका श्रवण कराता है, उसे अभीष्ट अर्थकी प्राप्ति होती है। यह जय नामक इतिहास है। इसकी महिमाका विस्तृत वर्णन (आदि० ६२। १८-४१) । मुनिवर व्यास प्रतिदिन प्रातःकाल उठकर स्नान-संध्या आदिसे शुद्ध हो महाभारतकी रचना करते थे । इन्होंने तपस्या और नियमका आश्रय ले तीन वर्षोंमें इस ग्रन्थको पूरा किया था (आदि० ६२ । ४१-४२)। माता सत्यवतीने पराशरजीके संयोगसे तत्काल ही यमुनाके द्वीपमें इनको जन्म दिया था; इसीलिये ये पाराशर्य और द्वैपायन कहलाये । इन्होंने मातासे आज्ञा लेकर तपस्यामें ही मन लगाया और मातासे कहा, आवश्यकता पड़नेपर तुम मेरा स्मरण करना, मैं अवश्य दर्शन दूँगा (आदि० ६३ । ८४-८५)। वेदोंका व्यास (विस्तार) करनेके कारण ये वेदव्यास नामसे विख्यात हुए (आदि० ६३। ८८)। इन्होंने ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद और पञ्चम वेद महाभारतका अध्ययन सुमन्तु, जैमिनि, पैल, शुकदेव तथा वैशम्पायनको कराया (आदि० ६३। ८९-९०) । इनके द्वारा अम्बिका और अम्बालिकाके गर्भसे राजा धृतराष्ट्र और महाबली पाण्डुका जन्म हुआ और इन्हींसे ही शूद्रजातीय स्त्रीके गर्भसे विदुरजी उत्पन्न हुए; जो धर्म-अर्थके ज्ञानमें निपुण, बुद्धिमान्, मेधावी और निष्पाप थे (आदि० ६३। ११३-११४)। सत्यवतीद्वारा व्यासका आवाहन और व्यासजीका माताकी आज्ञासे विचित्रवीर्यकी पत्नियोंके गर्भसे संतानोत्पादन करनेकी स्वीकृति देना (आदि० १०४। २४-४९)। इनके द्वारा विचित्रवीर्यके क्षेत्रसे धृतराष्ट्र, पाण्डु और विदुरकी उत्पत्ति तथा माताके पूछनेपर इनका उन पुत्रों-के भावी गुणों और लक्षणोंका वर्णन (आदि० १०५ अध्याय) । इनका गान्धारीको सौ पुत्र होनेका वरदान देना (आदि० ११४। ८)। इनके द्वारा गान्धारीके लिये उसके गर्भसे गिरे हुए मांसपिण्डसे सौ पुत्र होनेकी व्यवस्था (आदि० ११४। १७-२४)। इनका मांस-पिण्डके एक सौ एकवें भागसे गान्धारीके लिये एक पुत्री होनेका आश्वासन देना और उसे भी घृतपूर्ण घटमें स्थापित करना (आदि० ११५ । १६-१८)। वनमें व्यासजीका कुन्तीसहित पाण्डवोंको दर्शन और आश्वासन देना (आदि० १५५। ५—१९)। इनका पाण्डवोंको पुनः दर्शन देकर द्रौपदीके पूर्वजन्मका वृत्तान्त सुनाना और उसके इन सबकी पत्नी होनेकी बात बताकर इन्हें पाञ्चालकी राजधानीमें जानेके लिये आदेश देना (आदि० १६८ अध्याय)। जिसे देवलोक-में अलकनन्दा कहते हैं, वही इस लोकमें आकर गङ्गा नाम धारण करती है—यह कृष्णद्वैपायनका मत है (आदि० १६९। २२)। द्रुपदकी राजधानीकी ओर जाते हुए पाण्डवोंसे मार्गमें इनकी भेंट और परस्पर स्वागत-सत्कारके बाद वार्तालाप (आदि० १८४। २-३)। व्यासजीके समक्ष द्रौपदीका पाँच पुरुषोंसे विवाह होनेके विषयमें द्रुपद, धृष्टद्युम्न और युधिष्ठिरका अपने-अपने विचार व्यक्त करना तथा असत्यसे डरी हुई कुन्तीको इनका आश्वासन देना (आदि० १९५ अध्याय)। इनका द्रुपदको पाण्डवों तथा द्रौपदीके पूर्वजन्मकी कथा सुनाकर उन्हें दिव्य दृष्टि देना (आदि० १९६। १-३८)। द्रौपदी स्वर्गकी लक्ष्मी है और पाँचों पाण्डवोंकी पत्नी नियत की गयी है—इस बातका द्रुपदको निश्चय कराना (आदि० १९६ । ५१-५३)। श्रीकृष्णद्वैपायन व्यास युधिष्ठिरकी सभामें विराजमान होते थे (सभा० ४ । ११)। इनका अर्जुनको उत्तर, भीमसेनको पूर्व, सहदेवको दक्षिण और नकुलको पश्चिम दिशामें दिग्विजयके लिये जानेका आदेश (सभा० २५। ४ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ७४२)। इनका युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें ब्रह्माका कार्य सँभालना (सभा० ३३। ३४)। राजसूय यज्ञके अन्तमें युधिष्ठिरके प्रति भविष्यवाणी सुनाना (सभा० ४६। १-१७)। इन्होंने राजसूय यज्ञके अन्तमें युधिष्ठिरका अभिषेक किया (सभा० ५३। १०)। इनका धृतराष्ट्र-से दुर्योधनके अन्यायको रोकनेके लिये अनुरोध (वन० ७। २३ से वन० ८ अध्यायतक) । इनके द्वारा सुरभि और इन्द्रके उपाख्यानका वर्णन तथा पाण्डवोंके प्रति दया दिखाना (वन० ९ अध्याय)। धृतराष्ट्रको मैत्रेयके आगमनकी सूचना देकर इनका प्रस्थान (वन० १०। ४-६)। इनका द्वैतवनमें पाण्डवोंके पास जाना और युधिष्ठिरको प्रतिस्मृति विद्याका दान करना (वन० ३६। २४-३८)। कुरुक्षेत्रकी सीमाके अन्तर्गत एक मिश्रकतीर्थ है, जहाँ महात्मा व्यासने द्विजोंके लिये सभी तीर्थोंका सम्मिश्रण किया है। आगे चलकर व्यासवन है और इससे भी आगे व्यासस्थली नामक एक स्थान है, जहाँ बुद्धिमान् व्यासने पुत्रशोकसे संतप्त हो शरीर त्याग देनेका विचार किया था (वन० ८३। ९१-९७)। पाण्डवोंसे दान-धर्मके प्रतिपादनके प्रसंगमें मुद्गल ऋषिकी कथा सुनाना (वन० अध्याय २६० से २६१ तक)। धृतराष्ट्रसे श्रीकृष्ण और अर्जुनकी महिमा बतानेके लिये संजयको आदेश (उद्योग० ६७। १०)। इनका धृतराष्ट्र-को समझाना(उद्योग०६९।११-१५)। इनके द्वारा संजयको दिव्य-दृष्टि-दान (भीष्म० २। १०)। धृतराष्ट्रसे भयंकर उत्पातोंका वर्णन करना (भीष्म० २। १६ से भीष्म० ३।

४५ तक)। विजयसूचक लक्षणोंका वर्णन करना (भीष्म० ३ । ६५-८५)। इनका युधिष्ठिरको मृत्युकी अनिवार्यता बताना (द्रोण० ५२ । ११)। युधिष्ठिरको नारद-अकम्पन-संवाद सुनाना (द्रोण० ५२ । २० से ५४ अध्यायतक)। षोडशराजकीयोपाख्यान प्रारम्भ करना (द्रोण० अध्याय ५५ से द्रोण० ७१ । २२ तक)। युधिष्ठिरका शोक-निवारण करके अन्तर्धान होना (द्रोण० ७१ । २३)। घटोत्कच-वधसे दुखी युधिष्ठिरको समझाना (द्रोण० १८३ । ५८—६७)। अश्वत्थामासे शिव और श्रीकृष्णकी महिमा बताना (द्रोण० २०१ । ५६—९६)। अर्जुनसे भगवान् शिवकी महिमा बताना (द्रोण० २०२ अध्याय)। वधके लिये उद्यत सात्यकिके हाथसे संजयको मुक्त कराना (शल्य० २९ । ३९)। इनके द्वारा धृतराष्ट्रको सान्त्वना (शल्य० ६३ । ७७)। अर्जुन और अश्वत्थामाके ब्रह्मास्त्रको शान्त करनेके लिये इनका प्रकट होना (सौप्तिक० १४ । ११)। अश्वत्थामासे अपनी मणि देकर शान्त हो जानेके लिये कहना (सौप्तिक० १५ । १९—२७)। श्रीकृष्णद्वारा अश्वत्थामाको दिये गये शापका समर्थन करना (सौप्तिक० १६ । १७-१८)। शोकसे मूर्च्छित धृतराष्ट्रको समझाना (स्त्री० ८ । १३—४९)। पाण्डवोंको शाप देनेके लिये उद्यत गान्धारीको समझाना (स्त्री० १४ । ७—१३)। युद्धके पश्चात् युधिष्ठिरके पास आना (शान्ति० १ । ४)। युधिष्ठिरसे शङ्ख और लिखितका चरित्र सुनाते हुए सुद्युम्नके राजदण्डकी महत्ताका प्रतिपादन करना (शान्ति० २३ अध्याय)। राजा हयग्रीवका चरित्र सुनाते हुए युधिष्ठिरको राजोचित कर्तव्य-पालनके लिये समझाना (शान्ति० २४ अध्याय)। राजा सेनजित्के उद्गारोंका उल्लेख करते हुए युधिष्ठिरको आश्वासन देना (शान्ति० २५ अध्याय)। शरीर त्यागनेके लिये उद्यत युधिष्ठिरको रोककर समझाना (शान्ति० २७ । २८—३३)। अश्मा मुनि और जनकके संवादरूपमें प्रारब्धकी प्रबलता बतलाकर युधिष्ठिरको समझाना-बुझाना (शान्ति० २८ अध्याय)। अनेक युक्तियोंद्वारा युधिष्ठिरको समझाना (शान्ति० ३२ अध्याय)। कालकी प्रबलता बताकर देवासुर-संग्रामके उदाहरणसे युधिष्ठिरको प्रायश्चित्त करनेकी आवश्यकता बताना (शान्ति० ३३ । १४—४८)। युधिष्ठिरसे प्रायश्चित्तका वर्णन करना (शान्ति० अध्याय ३४ से ३५ तक)। स्वायम्भुव मनुद्वारा कथित धर्मका उपदेश करना (शान्ति० ३६ अध्याय)। युधिष्ठिरको भीष्मके पास चलनेके लिये कहना (शान्ति० ३७ । ६—१६)। शरशय्यापर पड़े हुए भीष्मजीको देखनेके लिये इनका पदार्पण करना (शान्ति० ४५ । ५)। व्यासजीका अपने पुत्र शुकदेवको कालका स्वरूप बताना (शान्ति० २३१ । ११—३२)। शुकदेवको सृष्टिक्रम तथा युगधर्मका उपदेश देना (शान्ति० २३२ अध्याय)। इनका ब्राह्मप्रलय और महाप्रलयका वर्णन करना (शान्ति० २३३ अध्याय)। ब्राह्मणोंके कर्तव्य और दानकी प्रशंसा करना (शान्ति० २३४ अध्याय)। सर्ग, काल, धारणा, वेद, कर्ता, कार्य और क्रिया फलके विषयमें इनका शुकदेवको उपदेश करना (शान्ति० अध्याय २३५ से २३९ तक)। शुकदेवको मोक्ष-धर्मविषयक विभिन्न प्रश्नोंका उत्तर देना (शान्ति० अध्याय २४० से २५५ तक)। अपने पुत्र शुकदेवको वैराग्य और धर्मपूर्ण उपदेश देते हुए चेतावनी देना (शान्ति० ३२१ । ४—९३)। इनकी पुत्र-प्राप्तिके लिये तपस्या और शङ्करजीसे वर-प्राप्ति (शान्ति० ३२३ । १२—२९)। घृताची अप्सराके दर्शनसे मोहित होनेके कारण अरणी-काष्ठपर इनके वीर्यका पतन और उससे शुकदेवजीकी उत्पत्ति (शान्ति० ३२४ । ४—१०)। शुकदेवको जनकके पास भेजना (शान्ति० ३२५ । ६—११)। शिष्योंको वरदान देना (शान्ति० ३२७ । ३७—५२)। नारदजीके पूछनेपर अपनी उदासीका कारण बताना (शान्ति० ३२८ । १६—१९)। शुकदेवको अनध्यायका कारण बताते हुए प्रवह आदि सात वायुओंका परिचय देना (शान्ति० ३२८ । २८—५७)। पुत्र-मोहवश शुकदेवजीको जानेसे रोकना (शान्ति० ३३१ । ६३)। पुत्र-विरहजनित शोकसे व्यासजीकी व्याकुलता (शान्ति० ३३३ । १९—३१)। व्यासजीका अपने शिष्योंको ब्रह्मादि देवताओंको दिये गये नारायणके उपदेशको सुनाना (शान्ति० ३४० । ९०—११०)। नारदके मुखसे इन्हें सात्वतधर्मकी उपलब्धि और इनके द्वारा धर्मराज युधिष्ठिरको इस धर्मका उपदेश (शान्ति० ३४८ । ६४-६५)। सरस्वतीपुत्र अपान्तरतमाके रूपमें इनकी उत्पत्ति और महिमा (शान्ति० ३४९ । ३९—५८)। युधिष्ठिरसे शिवमहिमाके विषयमें इनका अपना अनुभव बताना (अनु० १८ । १-३)। भीष्मजीके समक्ष इनके द्वारा ब्रह्महत्याके समान पापोंका निरूपण (अनु० २४ । ५—१२)। व्यासजीका शुकदेवसे गौओंकी, गोलोककी और गोदानकी महिमाका वर्णन (अनु० ८१ । १२—४६)। एक कीटको क्रमशः ब्राह्मणत्व प्राप्त कराकर उसका उद्धार करना (अनु० अध्याय ११७ से ११९ तक)। मैत्रेयके प्रश्नोंके उत्तरमें उनके साथ व्यासजीका संवाद (अनु० अध्याय १२० से १२२ तक)। भीष्मसे युधिष्ठिरको हस्तिनापुर जानेकी आज्ञा देनेको कहना (अनु० १६६ । ६-७)। इनका शोकाकुल युधिष्ठिरको समझाना (आश्व०

२ । १५-२०) । युधिष्ठिरको अश्वमेधयज्ञ करनेकी सलाह देना (आश्व० ३ । ८-१०) । व्यासजीका युधिष्ठिरको धन-प्राप्तिका उपाय बताना (आश्व० ३ । २०-२१) । युधिष्ठिरको मरुत्तका वृत्तान्त सुनाना (आश्व० अध्याय ४ से १० तक) । पतिशोकसे दुखी उत्तराको आश्वासन देना (आश्व० ६२ । ११-१२) । पुत्रशोकसे दुखी अर्जुनको समझाना (आश्व० ६२ । १४-१७) । युधिष्ठिरको अश्वमेध यज्ञकी आज्ञा देकर अन्तर्धान होना (आश्व० ६२ । २०) । इनका अर्जुनको अश्वमेधीय अश्वकी रक्षाके लिये, भीमसेन और नकुलको राज्य-पालनके लिये तथा सहदेवको कुटुम्बसम्बन्धी कार्योंकी देख-रेखके लिये नियुक्त करना (आश्व० ७२ । १४-२०) । इनके द्वारा शास्त्रीय विधिके अनुसार अश्वमेधीय अश्वका उत्सर्ग (आश्व० ७३ । ३) । युधिष्ठिरद्वारा इनको समस्त पृथ्वीका दान तथा इनके द्वारा पृथ्वीको उन्हें लौटाकर उसके निष्क्रयरूपसे ब्राह्मणोंके लिये सुवर्ण देनेका आदेश (आश्व० ८९ । ८—१८) । इनके समझानेसे युधिष्ठिरका धृतराष्ट्रको वनमें जानेके लिये अनुमति देना (आश्रम० ४ अध्याय) । इनका वनमें धृतराष्ट्रके पास आना और उनका कुशल-समाचार पूछते हुए विदुर और युधिष्ठिरकी धर्मरूपताका प्रतिपादन करके उनसे अभीष्ट वस्तु माँगनेके लिये कहना (आश्रम० २८ अध्याय) । इनका अपना तपोबल दिखानेके लिये कहकर धृतराष्ट्रको मनोवाञ्छित वर माँगनेके लिये आज्ञा देना तथा गान्धारी और कुन्तीका इनसे अपने मरे हुए पुत्रों एवं सम्बन्धियोंके दर्शन करानेका अनुरोध करना (आश्रम० २९ अध्याय) । कुन्तीका इन्हें कर्णके जन्मका गुप्त रहस्य बताना और व्यासजीका उन्हें सान्त्वना देना (आश्रम० ३० अध्याय) । इनके द्वारा धृतराष्ट्र आदिके पूर्वजन्मका परिचय तथा इनकी आज्ञासे सबका गङ्गातटपर जाना (आश्रम० ३१ अध्याय) । इनके प्रभावसे कुरुक्षेत्रमें मारे गये कौरव-पाण्डव वीरोंका गङ्गाके जलसे प्रकट होना (आश्रम० ३२ अध्याय) । इनका आज्ञासे विधवा क्षत्राणियोंका गङ्गाजीमें गोता लगाकर अपने-अपने पतिके लोकको प्राप्त करना (आश्रम० ३३ । १८-२२) । इनकी कृपासे जनमेजयको अपने पिताका दर्शन प्राप्त होना (आश्रम० ३५ । ४—११) । इनका धृतराष्ट्रको पाण्डवोंको विदा करनेके लिये आदेश देना (आश्रम० ३६ । ५—१२) । यदुकुल संहारके पश्चात् अर्जुनका इनके आश्रमपर आना और उनके साथ इनका वार्तालाप (मौसल० ८ अध्याय) । व्यासनिर्मित महाभारतके श्रवण एवं पठनकी महिमा (स्वर्गा० ५ । ३५-६८) ।

महाभारतमें आये हुए व्यासजीके नाम-कृष्ण, कृष्णद्वैपायन, द्वैपायन सत्यवतीसुत, सत्यवत्यात्मज, पाराशर्य, पराशरात्मज, बादरायण, वेदव्यास आदि ।

व्यासवन-कुरुक्षेत्रकी सीमामें स्थित एक वन, जहाँ मनोजव तीर्थमें स्नान करके मनुष्य सहस्र गोदानका फल पाता है (वन० ८३ । ९३) ।

व्यासस्थली-कुरुक्षेत्रकी सीमाके अन्तर्गत एक प्राचीन तीर्थ, जहाँ व्यासने पुत्रशोकसे संतप्त हो शरीर त्याग देनेका विचार कर लिया था । उस समय उन्हें देवताओंने पुनः उठाया था । इस स्थलमें जानेसे सहस्र गोदानका फल मिलता है (वन० ८३ । ९६-९८) ।

व्युषिताश्व-एक पूरुवंशी धर्मात्मा नरेश (आदि० १२० । ७) । इनके द्वारा विविध यज्ञोंका अनुष्ठान (आदि० १२० । ८—१६) । राजा कक्षीवान्‌की पुत्री भद्रा इनकी प्यारी पत्नी थी, जो अपने समयकी अप्रतिम सुन्दरी थी । उसके प्रति अत्यधिक कामासक्त हो जानेके कारण यक्ष्मासे इनकी असामयिक मृत्यु हो गयी (आदि० १२० । १८-१९) । भद्राके विलाप करनेपर आकाशवाणीद्वारा इनका उसे आश्वासन देना तथा इनके शवद्वारा उसके गर्भसे सात पुत्रोंकी उत्पत्ति (आदि० १२० । ३३-३६) ।

व्यूक-एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ६१) ।

व्यूढोरु (व्यूढोरस्क)-धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६७ । १०५; आदि० ११६ । १४) । भीमसेनद्वारा इसका वध (भीष्म० ९६ । २३) ।

व्यूह-युद्धके समय चतुरङ्गिणी सेनाके विभिन्न अङ्गोंको संगठित करके विशेष प्रकारसे खड़ी करनेकी रीतिको व्यूह कहते हैं । दूसरे शब्दमें यही मोर्चाबंदी है । महाभारत-कालमें अनेक प्रकारकी व्यूह रचना होती थी । महाभारतमें वर्णित कुछ व्यूहोंके नाम इस प्रकार हैं—अर्द्धचन्द्रव्यूह (भीष्म० अध्याय ५६) । क्रौञ्चव्यूह (भीष्म० अध्याय ५०) । गरुड़व्यूह (भीष्म० अध्याय ५६) । चक्रव्यूह (द्रोण० अध्याय ३४) । मकरव्यूह (भीष्म० अध्याय ६९) । मण्डलव्यूह (भीष्म० अध्याय ८१) । मण्डलार्द्धव्यूह (द्रोण० अध्याय २०) । वज्रव्यूह (भीष्म० अध्याय ८१) । शकटव्यूह (द्रोण० अध्याय ७) । श्येनव्यूह (भीष्म० अध्याय ६९) । सर्वतोभद्र (भीष्म० अध्याय ९९) । सुपर्णव्यूह (द्रोण अध्याय २०) । सूचीमुखव्यूह (भीष्म० अध्याय ७७) ।

व्योमारि-एक सनातन विश्वेदेव (अनु० ९१ । ३५) ।

व्रजन-सम्राट् अजमीढ़के द्वारा केशिनीके गर्भसे उत्पन्न तीन पुत्रोंमेंसे एक । शेष दोके नाम हैं—जह्नु और रूपिण (आदि० ९४ । ३१-३२) ।

व्रीहिद्रौणिकपर्व-वनपर्वका एक अवान्तर पर्व (अध्याय २५९ से २६१ तक)।

(श)

शंयु-ये बृहस्पतिके प्रथम पुत्र हैं। इनके लिये प्रधान आहुतियोंके देते समय सर्वप्रथम घीकी आहुति दी जाती है। चातुर्मास्यसम्बन्धी यज्ञोंमें तथा अश्वमेध यज्ञमें इनका पूजन होता है। ये सर्वप्रथम उत्पन्न होनेवाले और सर्वसमर्थ हैं तथा अनेक वर्णकी ज्वालाओंसे प्रज्वलित होते हैं। इनकी पत्नीका नाम सत्या था। वह धर्मकी पुत्री थी। उसके गर्भसे इनके द्वारा एक अग्निस्वरूप पुत्र तथा उत्तम व्रतका पालन करनेवाली तीन कन्याएँ हुईं (वन० २१९। २-४)।

शक-एक भारतीय जनपद और जाति। शक जातिके लोग वशिष्ठकी नन्दिनी गायके थनसे प्रकट हुए (आदि० १७४। ३६)। भीमसेनने पूर्व-दिग्विजयके समय शकोंको परास्त किया था (सभा० ३०। १४)। नकुलने भी इनपर विजय पायी थी (सभा० ३२। १७)। शक देश और जातिके राजा राजसूय यज्ञमें युधिष्ठिरके लिये भेंट लाये थे (सभा० ५१। ३२)। कलियुगमें शक आदि जातियोंके लोगोंके राजा होनेका उल्लेख (वन० १८८। ३५)। शक देशके राजाके पास पाण्डवोंकी ओरसे रण-निमन्त्रण भेजनेका विचार किया गया था (उद्योग० ४। १५)। ये काम्बोजराज सुदक्षिणके साथ दुर्योधनकी सेनामें सम्मिलित हुए थे (उद्योग० १९। २१)। शक एक भारतीय जनपदका नाम है (भीष्म० ९। ५१)। भगवान् श्रीकृष्णने शक देशपर विजय पायी थी (द्रोण० ११। १८)। सात्यकिने बहुतसे शक सैनिकोंका संहार किया था (द्रोण० ११९। ४५, ५३)। कर्णने भी शक देशको जीता था (कर्ण० ८। १८)। शक पहले क्षत्रिय थे, परंतु ब्राह्मणोंके दर्शनसे वञ्चित होनेके कारण (अपने धर्म-कर्मसे भ्रष्ट हो) शूद्र भावको प्राप्त हो गये (अनु० ३३। २१)।

शकुनि-(१) धृतराष्ट्र-कुलमें उत्पन्न एक नाग, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें दग्ध हो गया था (आदि० ५७। १६)। (२) गान्धारराज सुबलका पुत्र, दुर्योधनका मामा, इसीकी सहायतासे दुर्योधनने युधिष्ठिरको जूएमें ठग लिया था (आदि० ६१। ५०)। देवताओंके कोपसे यह धर्मविरोधी हुआ (आदि० ६३। १११-११२)। यह द्वापरके अंशसे उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७। ७८; आश्रम० ३१। १०)। इसके द्वारा गान्धारीके विवाह-कार्यका सम्पादन (आदि० १०९। १५-१६)। यह द्रौपदीके स्वयंवरमें गया था (आदि० १८५। २)। पाण्डवोंको जड़-मूलसहित नष्ट कर देनेके लिये इसका द्रुपदनगरमें कौरवोंको परामर्श देना (आदि० १९९। ७ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ५७३-५७४)। युधिष्ठिरके राजसूय-यज्ञमें इसका पदार्पण (सभा० ३४। ६)। यह सबके विदा होनेपर भी उस दिव्य सभाभवनमें दुर्योधनके साथ ठहरा रहा (सभा० ४५। ६८)। पाण्डवोंपर विजय प्राप्त करनेके सम्बन्धमें इसकी दुर्योधनसे बातचीत (सभा० ४८ अध्याय)। युधिष्ठिरकी सम्पत्ति (ऐश्वर्य) को हड़पनेके लिये इसके द्वारा धृतराष्ट्रको द्यूतक्रीड़ाका परामर्श देना (सभा० ४९ अध्याय)। जूएके अनौचित्यके सम्बन्धमें इसके साथ युधिष्ठिरका संवाद (सभा० ५९ अध्याय)। जूएमें छल करके इसका युधिष्ठिरको हराना (सभा० अध्याय ६० से ६१ तक)। इसके साथ जूआ खेलकर युधिष्ठिरका अपना सब कुछ हार जाना (सभा० अध्याय ६५)। पुनर्द्यूतमें इसका युधिष्ठिरको जूएकी शर्त सुनाना और एक ही दाँवमें अपनी विजय घोषित करना (सभा० ७६। ९-२४)। पाण्डव प्रतिज्ञा तोड़कर वनसे नहीं लौटेंगे, यह कहकर इसका दुर्योधनकी आशंकाको दूर करना (वन० ७। ७-१०)। द्वैतवनमें पाण्डवोंके पास चलनेके लिये इसका घोषयात्राके प्रस्तावका समर्थन करना (वन० २३८। २१, २३)। धृतराष्ट्रको घोषयात्राकी अनुमतिके लिये समझाना (वन० २३९। १८-२१)। इसका घोषयात्रामें दुर्योधनके साथ जाना और गन्धर्वोंसे युद्ध करके घायल होना (वन० २४१। १७—२७)। दुर्योधनको पाण्डवोंका राज्य लौटा देनेके लिये समझाना (वन० २५१। १-८)। प्रथम दिनके संग्राममें प्रतिविन्ध्यके साथ द्वन्द्वयुद्ध (भीष्म० ४५। ६३-६५)। इसके पाँच भाइयोंका इरावान्द्वारा वध (भीष्म० ९०। २५-४७)। इसका युधिष्ठिर, नकुल और सहदेवपर आक्रमण और उनके द्वारा इसकी पराजय (भीष्म० १०५। ८-२३)। सहदेवके साथ युद्ध (द्रोण० १४। २२-२५)। इसके द्वारा मायाओंका प्रयोग तथा अर्जुनद्वारा उन मायाओंका नाश होनेपर इसका पलायन (द्रोण० ३०। १५—२८)। अभिमन्युके साथ युद्ध (द्रोण० ३७। ५)। नकुल-सहदेवके साथ युद्ध (द्रोण० ९६। २१-२५)। सात्यकिके साथ युद्ध (द्रोण० १२०। ११)। भीमसेनद्वारा इसके सात रथियों और पाँच भाइयोंका संहार (द्रोण० १५७। २२-२६)। नकुलद्वारा इसकी पराजय (द्रोण० १६९। १६)। इसका दुर्योधनकी आज्ञासे पाण्डव-सेनापर आक्रमण (द्रोण० १७०। ६६)। अर्जुनद्वारा इसकी पराजय (द्रोण० १६१। २५-३९)। द्रोणाचार्यके मारे जानेपर इसका युद्ध-

स्थलसे भागना (द्रोण० १९२ । ९) । इसके द्वारा सुतसोमकी पराजय (कर्ण० २५ । ४०-४१) । सात्यकिद्वारा इसका पराजित होना (कर्ण० ६१ । ४८-४९)। भीमसेनद्वारा पृथ्वीपर गिराया जाना (कर्ण० ७७ । ६९-७०) । इसके द्वारा भाईसहित कुलिन्द-राजकुमारका वध (कर्ण० ८५ । ७-१९) । पाण्डव घुड़सवारोंका इसके ऊपर आक्रमण, इसका भागना; पुनः धृष्टद्युम्नकी सेनापर आक्रमण करना तथा पाण्डव सैनिकोंसे घिरकर घायल होना (शल्य० २३ । ४१-८७) । सहदेवद्वारा इसका वध (शल्य० २८ । ६१) । व्यासजीके प्रभावसे यह भी गङ्गाजीके जलसे प्रकट हो अपने सगे-सम्बन्धियोंसे मिला था (आश्रम० ३२ । ९) । मृत्युके पश्चात् यह द्वापरमें मिल गया (स्वर्गा० ५ । २१) ।

महाभारतमें आये हुए शकुनिके नाम–गान्धार, गान्धारपति, गान्धारराज, गान्धारराजपुत्र, गान्धारराजसुत, कितव, पर्वतीय, सौबल, सौबलक, सौबलेय, सुबलज, सुबलपुत्र, सुबलसुत, सुबलात्मज आदि ।

शकुनिका–स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । १५) ।

शकुनिग्रह–रौद्ररूपधारिणी विनता (वन० २३० । २६) ।

शकुन्त–विश्वामित्रके ब्रह्मवादी पुत्रोंमेंसे एक (अनु० ४ । ५०) ।

शकुन्तला–महर्षि कण्वकी पोषित पुत्री, जो सम्राट् दुष्यन्तकी धर्मपत्नी और भरतकी माता हुई । इनके यहाँ राजा दुष्यन्तका आगमन । इनके द्वारा उनका स्वागत तथा अपने जन्म-प्रसंगका वर्णन (आदि० ७१ अध्याय) । ये विश्वामित्रके द्वारा मेनका नामक अप्सराके गर्भसे हिमालयके शिखरपर मालिनी नदीके किनारे उत्पन्न हुई थीं । कण्व इनके पालक पिता थे । इनकी उत्पत्तिकी कथा (आदि० ७२ । १—१०) । शकुन्तों (पक्षियों) द्वारा रक्षित होनेके कारण इनका नाम 'शकुन्तला' हुआ (आदि० ७२ । ११–१६) । दुष्यन्तके प्रार्थना करनेपर इनके द्वारा स्त्री-स्वातन्त्र्यका निषेध, अपनी पितृभक्ति एवं ब्राह्मणके प्रभावका वर्णन (आदि० ७३ । ५ से ६ के पूर्वतक) । दुष्यन्तके द्वारा विवाहोंके आठ भेद बतलाकर इनके प्रति गान्धर्व-विवाहका समर्थन (आदि० ७३ । ८–१४) । दुष्यन्तके साथ इनके विवाहकी शर्त (आदि० ७३ । १५–१७) । दुष्यन्तके साथ इनका गान्धर्व विवाह (आदि० ७३ । १९-२०) । कण्वके प्रति इनके द्वारा अपने गुप्त विवाहके वृत्तान्तका निवेदन (आदि० ७३ । २४ के बाद) । कण्वद्वारा इनके विवाहका समर्थन तथा आशीर्वाद (आदि० ७३ । ३२ के बाद) । इनके गर्भसे दुष्यन्तद्वारा भरतका जन्म (आदि० ७४ । २) । कण्वद्वारा इनके प्रति पातिव्रत्य धर्मका उपदेश और उसकी महिमाका वर्णन (आदि० ७४ । ९-१०) । पिताकी आज्ञा पाकर इनका पति-गृह-गमन (आदि० ७४ । १०–१४) । इनका राजा दुष्यन्तसे अपने पुत्रको ग्रहण करने और युवराज-पदपर अभिषिक्त करनेके लिये कहना तथा अपने साथ उनके सम्बन्ध और प्रतिज्ञाका स्मरण दिलाना (आदि० ७४ । १६–१८) । दुष्यन्तके अस्वीकार करनेपर इनका लज्जा एवं रोषपूर्ण उपालम्भ, धर्मकी श्रेष्ठता और परमात्मा एवं सूर्य आदि देवताओंको पुण्य-पापका साक्षी बतलाकर दुष्यन्तसे अपने साथ न्यायपूर्वक व्यवहार करनेके लिये अनुरोध, पतिव्रता पत्नी और पुत्र-पौत्रोंकी महिमा बतलाकर दुष्यन्तको उनके साथ अपने पूर्व सम्बन्धका स्मरण दिलाना (आदि० ७४ । २१–६७) । दुष्यन्तके प्रति इनके द्वारा अपने जन्मकी श्रेष्ठताका प्रतिपादन (आदि० ७४ । ६९-७०) । इनके द्वारा दुष्यन्तके प्रति पुनः अपने जन्म-कर्मकी महत्ता बतलाते हुए सत्यधर्मकी श्रेष्ठताका कथन तथा निराश होकर जानेका उपक्रम (आदि० ७४ । ८४ से १०८ के बाद तक) । आकाशवाणीद्वारा इनके कथनकी सत्यता घोषित होनेपर दुष्यन्तद्वारा अङ्गीकार (आदि० ७४ । १०९—१२५) । दुष्यन्तद्वारा इनका पटरानीके पदपर अभिषेक (आदि० ७४ । १२५ के बाद) ।

शक्त–राजा पूरुके प्रपौत्र एवं मनस्युके पुत्र, जो 'सौवीरी'के गर्भसे उत्पन्न हुए थे । इनके दो भाई और थे, जिनके नाम हैं--संहनन और वाग्मी । ये सभी शूरवीर और महारथी थे (आदि० ९४ । ७) ।

शक्ति–महर्षि वसिष्ठके कुलकी वृद्धि करनेवाले महामनस्वी पुत्र, जो अपने सौ भाइयोंमें सबसे ज्येष्ठ और श्रेष्ठ मुनि थे (इनकी माता अरुन्धती थीं) (आदि० १७५ । ६) । कल्माषपादद्वारा इनपर प्रहार और इनके द्वारा कल्माषपादको राक्षस होनेका शाप (आदि० १७५ । ११–१३) । राक्षसभावापन्न कल्माषपादद्वारा इनका भक्षण (आदि० १७५ । ४०) । इनके द्वारा स्थापित अदृश्यन्तीके गर्भसे पराशरका जन्म (आदि० १७७ । १) । ये वसिष्ठके पुत्र थे, इनके पुत्र पराशर थे और पराशरके पुत्र व्यास इनके पौत्र लगते थे (शान्ति० ३४९ । ६-७) । ये उत्तर दिशाके ऋषि थे, इनका नामान्तर वासिष्ठ (अनु० १६५ । ४४) ।

शक्र (इन्द्र)–बारह आदित्योंमेंसे एक (आदि० ६५ । १५) ।

शक्रकुमारिका-एक सिद्धसेवित प्राचीन तीर्थ, जहाँ स्नान करनेसे शीघ्र स्वर्गकी प्राप्ति होती है (वन० ८२ । ८१) ।

शक्रदेव-एक कलिङ्गराजकुमार, जो कौरवपक्षीय योद्धा था, भीमसेनके साथ इसका युद्ध और उनके द्वारा वध (भीष्म० ५४ । २४-२५) ।

शक्रवापी-गिरिव्रजके समीपस्थ गौतमके आश्रमके निकटवर्ती वनमें रहनेवाला एक नाग (सभा० २१ । ९) ।

शक्रावर्त-एक तीर्थ, जिसमें देवताओं और पितरोंका तर्पण करनेवाला मनुष्य पुण्यलोकमें प्रतिष्ठित होता है (वन० ८४ । २९) ।

शङ्कर-एक सनातन विश्वेदेव (अनु० ९१ । ३५) ।

शङ्कु-एक यदुवंशी क्षत्रिय, जो द्रौपदीके स्वयंवरमें उपस्थित था (आदि० १८५ । १९) । सुभद्रा और अर्जुनके विवाहके उपलक्ष्यमें अन्य बहुत-से वृष्णिवंशियोंके साथ यह भी दहेज लेकर खाण्डवप्रस्थमें आया था (आदि० २२० । ३१-३३) । यह एक महारथी वीर था (सभा० १४ । ५९) ।

शङ्कुकर्ण-(१) धृतराष्ट्रके कुलमें उत्पन्न एक नाग, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें दग्ध हो गया था (आदि० ५७ । १५) । (२) भगवान् शिवका एक दिव्य पार्षद, जो कुबेरकी सभामें उपस्थित होता है (सभा० १० । ३४-३५) । (३) पार्वतीद्वारा स्कन्दको दिये गये दो पार्षदोंमेंसे एक, दूसरेका नाम पुष्पदन्त था (शल्य० ४५ । ५१) । (४) स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ५६) ।

शङ्कुकर्णेश्वर-भगवान् शिवकी एक मूर्ति, जिसकी पूजा करनेसे अश्वमेध यज्ञसे दसगुने फलकी प्राप्ति होती है (वन० ८२ । ७०) ।

शङ्ख-(१) कश्यपद्वारा कद्रूके गर्भसे उत्पन्न एक नाग (आदि० ३५ । ८) । नारदजीने मातलिको इनका परिचय दिया था (उद्योग० १०३ । १२) । बलरामजीके परमधाम पधारते समय उनके स्वागतार्थ ये भी आये थे (मौसल० ४ । १७) । (२) राजा विराटके पुत्र, जो अपने पिता और भाईके साथ द्रौपदी-स्वयंवरमें पधारे थे (उत्तर एवं उत्तराके भ्राता) (आदि० १८५ । ८) । त्रिगर्तोंद्वारा गोहरणके समय उनके साथ युद्धके लिये इनका जाना (विराट० ३१ । १६) प्रथम दिनके संग्राममें भूरिश्रवाके साथ इनका द्वन्द्व-युद्ध (भीष्म० ४५ । ३५-३७) । शल्यके साथ युद्ध (भीष्म० ४९ । २६-४०) द्रोणाचार्यके साथ युद्ध और उनके द्वारा इनका वध (भीष्म० ८२ । २१-२३) । इनके मारे जानेकी चर्चा (कर्ण० ६ । ३७) । मृत्युके पश्चात् ये विश्वेदेवोंमें मिल गये थे (स्वर्गा० ५ । १७-१८) । (३) एक ऋषि, जो महर्षि लिखितके भ्राता थे । ये इन्द्रकी सभामें रहकर देवराज इन्द्रकी उपासना करते हैं (सभा० ७ । ११) । बिना पूछे अपने आश्रमका फल तोड़नेके कारण इनका अपने भाई लिखितको दण्ड ग्रहण करनेके लिये राजा सुद्युम्नके पास भेजना (शान्ति० २३ । २०-२७) । अपने भाई लिखितपर इनकी कृपा (शान्ति० २३ । ३८-४२) । इनके द्वारा लिखितकी शंकाका समाधान (शान्ति० २३ । ४३-४४) । ये तिलका दान करके दिव्यलोकको प्राप्त हुए हैं (अनु० ६६ । १२) । (४) एक दैत्य, जो वरुणकी सभामें रहकर उनकी उपासना करता है (सभा० ९ । १३) । (५) श्रेष्ठ निधियोंमें प्रमुख शङ्ख, जो कुबेर-सभामें रहकर धनाध्यक्ष कुबेरकी उपासना करता है (सभा० १० । ३९) । पाञ्चालराज ब्रह्मदत्तने उत्तम ब्राह्मणोंको शङ्ख निधिका दान किया था, इससे उन्हें उत्तम गति प्राप्त हुई थी (शान्ति० २३४ । २९; अनु० १३७ । १७) । (६) पाँच भाई केकयराजकुमारोंमेंसे एक, ये पाण्डवपक्षके उदार रथी थे (उद्योग० १७१ । १५) ।

शङ्खतीर्थ-सरस्वती-तटवर्ती एक प्राचीन तीर्थ । इसका विशेष वर्णन (शल्य० ३७ । १९-२६) ।

शङ्खनख-एक नाग, जो वरुणकी सभामें रहकर उनकी उपासना करता है (सभा० ९ । ८ के बाद दाक्षिणात्य पाठ) ।

शङ्खपद-स्वारोचिष मनुके पुत्र, जिन्हें पिताद्वारा नारायण-प्रतिपादित सात्वत धर्मका उपदेश प्राप्त हुआ था । इन्होंने अपने पुत्र दिक्पाल सुवर्णाभको इस धर्मकी शिक्षा दी थी (शान्ति० ३४८ । ३७-३८) ।

शङ्खपिण्ड-कश्यपद्वारा कद्रूके गर्भसे उत्पन्न एक नाग (आदि० ३५ । २३) ।

शङ्खमुख-कश्यपद्वारा कद्रूके गर्भसे उत्पन्न एक नाग (आदि० ३५ । ११) ।

शङ्खमेखल-एक ऋषि, जो सर्पदंशनसे मरी हुई प्रमद्वराको देखनेके लिये स्थूलकेशके आश्रमके निकटवर्ती वनमें पधारे थे (आदि० ८ । २४) ।

शङ्खलिका-स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । १५) ।

शङ्खशिरा-कश्यपद्वारा कद्रूके गर्भसे उत्पन्न एक नाग (आदि० ३५ । १२) । इसीका शङ्खशीर्ष नामसे भी वर्णन आया है (उद्योग० १०३ । १५) ।

शङ्खश्रवा-स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । २६)

शङ्खिनी-कुरुक्षेत्रकी सीमाके अन्तर्गत एक तीर्थ, जहाँ देवी-तीर्थमें स्नान करनेसे उत्तम रूपकी प्राप्ति होती है (वन० ८३ । ५१) ।

शची-देवराज इन्द्रकी पत्नी, जिनके अंशसे द्रौपदीका प्राकट्य हुआ था (आदि० ६७ । १५७) । ये इन्द्र-सभामें देवराज इन्द्रके साथ उत्तम सिंहासनपर समासीन होती हैं (सभा० ७ । ४) । ब्रह्मसभामें भी उपस्थित हो देवेश्वर ब्रह्माजीकी उपासना करती हैं (सभा० ११ । ४२) । ये देवेन्द्रकी महारानी हैं; इन्होंने इन्द्र-भवनमें आयी हुई सत्यभामाको देवमाता अदितिकी सेवामें पहुँचाया था (सभा० ३८ । २९के बाद दा०पाठ, पृष्ठ८११) । (इन्हें पुलोमा नामक असुरकी पुत्री कहा गया है) । इनका नहुषके भयसे बृहस्पतिकी शरणमें जाना (उद्योग० ११ । २०-२३) । नहुषको पति बनानेसे इन्कार करना (उद्योग० १२ । १५) । नहुषसे कुछ कालकी अवधि माँगना (उद्योग० १३ । ४-६) । इनके द्वारा उप-श्रुतिकी उपासना (उद्योग० १३ । २६-२७) । उपश्रुतिकी सहायतासे इनकी इन्द्रसे भेंट (उद्योग० १४ । ११-१२) । नहुषसे सप्तर्षियोंद्वारा ढोयी जानेवाली शिविकापर आनेकी माँग करना (उद्योग० १५ । ९-१४) । ये स्कन्दके जन्म-समयमें उनके पास गयी थीं (शल्य० ४५ । १३) । इनके नहुषके भयसे मुक्त होनेकी कथा (शान्ति० ३४२ । ४७-५०) ।

शठ-एक दानव, जो कश्यपपत्नी दनुके गर्भसे उत्पन्न हुआ था (आदि० ६५ । २९) ।

शतकुम्भा-एक तीर्थभूत नदी, जहाँकी यात्रा करनेसे मनुष्य स्वर्गलोकमें प्रतिष्ठित होता है (वन० ८४ । १०-११) । यह अग्निकी उत्पत्तिका स्थान है (वन० २२२ । २२-२६) । यह उन भारतीय नदियोंमेंसे एक है, जिनका जल भारतवासी पीते हैं (भीष्म० ९ । १९) ।

शतघण्टा-स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । ११) ।

शतचन्द्र-कौरवपक्षका एक महारथी योद्धा, शकुनिका भाई । भीमसेनद्वारा इसका वध (द्रोण० १५७ । २३) ।

शतज्योति-सुभ्राट्के तीन पुत्रोंमेंसे एक, जिनके एक लाख पुत्र हुए थे (आदि० १ । ४४-४५) ।

शतद्युम्न-एक प्राचीन नरेश, जिन्होंने मुद्गल (मौद्गल्य) ब्राह्मणको सोनेका गृह प्रदान किया और उसके पुण्यसे स्वर्ग प्राप्त कर लिया (शान्ति० २३४ । ३२; अनु० १३७ । २१) ।

शतद्रु (शतद्रू)-हिमालय पर्वतसे निकली हुई एक नदी, जिसका आधुनिक नाम सतलज है । एक समय पुत्रोंके शोकसे व्याकुल होकर वसिष्ठजी आत्महत्याके लिये इस नदीमें कूद पड़े थे, उस समय उन्हें अग्निके समान तेजस्वी जान यह नदी सैकड़ों धाराओंमें फूटकर इधर-उधर भाग चली । शतधा विद्रुत होनेसे इसका नाम 'शतद्रु' हुआ (आदि० १७६ । ८-९) । यह वरुणकी सभामें रहकर उनकी उपासना करती है (सभा० ९ । १९) । यह भारतकी एक प्रमुख नदी है, इसका जल भारतवासी पीते हैं (भीष्म० ९ । १५) । महादेवजीके पूछनेपर स्त्रीधर्मका वर्णन करते समय पार्वती-जीने इसके विषयमें जिन पुण्यमयी प्रमुख नदियोंसे सलाह ली थी, उनमें शतद्रू भी थी (अनु० १४६ । १८) । यह सायं-प्रातःस्मरणीय नदी है (अनु० १६५ । १८) ।

शतधन्वा-एक क्षत्रिय, जिसे भगवान् श्रीकृष्णने परास्त किया था (वन० १२ । ३०) । यह कलिङ्गराज चित्राङ्गदकी कन्याके स्वयंवरमें गया था (शान्ति० ४ । ७) ।

शतपत्रवन-द्वारकाके पश्चिम भागमें स्थित सुकक्ष पर्वतको सब ओरसे घेरकर सुशोभित होनेवाला एक वन (सभा० ३८ । २९ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ८१३) ।

शतपर्वा-शुक्रकी भार्या (उद्योग० ११७ । १३) ।

शतबला-भारतवर्षकी एक नदी, जिसका जल यहाँके लोग पीते हैं (भीष्म० ९ । २०) ।

शतभिषा-एक नक्षत्र, जिसके योगमें अगुरु और चन्दन-सहित सुगन्धित पदार्थोंका दान करनेवाला पुरुष परलोकमें अप्सराओंके समुदाय तथा अक्षयलोकको पाता है (अनु० ६४ । ३०) । चन्द्रव्रतमें शतभिषाको चन्द्रदेवका 'हास' मानकर उसी भावसे उसकी पूजा करनी चाहिये (अनु० ११० । ८) ।

शतमुख-एक महान् असुर, जिसने सौसे अधिक वर्षोंतक अपने मांसकी आहुति दी थी (अनु० १४ । ८४-८५) । इससे संतुष्ट हो भगवान् शङ्करका इसे वर देना (अनु० १४ । ८५-८७) ।

शतयूप-केकयदेशके एक मनीषी राजर्षि, जो पुत्रको राज्य देकर कुरुक्षेत्रके वनमें तपस्या करनेके लिये आये थे । इनके आश्रमपर ही धृतराष्ट्र आदि ठहरे थे । इन्होंने धृतराष्ट्रसे वनवासकी विधि बतायी थी (आश्रम० १९ । ८—१३) । इनके पितामहका नाम सहस्रचित्य था (आश्रम० २० । ६) । इन्होंने नारदजीसे धृतराष्ट्रको मिलनेवाली गति पूछी थी (आश्रम० २० । २३-२८) ।

शतरथ-एक प्राचीन नरेश (आदि० १ । २३३) । ये यमसभामें रहकर सूर्यपुत्र यमकी उपासना करते हैं (सभा० ८ । २६) ।

शतरुद्र-वेदका शतरुद्रिय-प्रकरण, जिसमें रुद्रदेवके सौ नामोंका उल्लेख है (अनु० १५० । १४) ।

शतलोचन-स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ६०) ।

शतशीर्षा-नागराज वासुकिकी पत्नी (उद्योग० ११७ । १७) ।

शतशृङ्ग-(१) एक पर्वत, जहाँ गन्धमादन, इन्द्रद्युम्न और हंसकूटको लाँघकर राजा पाण्डुने पदार्पण किया था, वहाँ वे तपस्वी-जीवन बिताते हुए भारी तपस्यामें संलग्न हो गये (आदि० ११८ । ५०) । यहीं पाँचों पाण्डवोंका जन्म हुआ था । शतशृङ्गनिवासी ऋषि-मुनि अर्जुनके जन्मसे बहुत प्रसन्न हुए थे । इन सब भाइयोंका नामकरण-संस्कार भी यहीं हुआ था (आदि० १२२, १२३ अध्याय) । राजा पाण्डुकी मृत्यु और उनके साथ माद्रीके चितारोहणकी घटना भी यहीं घटित हुई थी (आदि० १२४ अध्याय) । स्वप्नावस्थामें श्रीकृष्णके साथ कैलास जाते हुए अर्जुनको मार्गमें शतशृङ्ग पर्वत मिला था (द्रोण० ८० । ३२) । सुलभाके पूर्वजोंके यज्ञमें देवराज इन्द्रके सहयोगसे द्रोण, शतशृङ्ग और चक्रद्वार नामक पर्वत ईंटोंकी जगह चुने गये थे (शान्ति० ३२० । १८५) । (२) एक राक्षस, जिसके 'संयम,' 'वियम' और महाबली 'सुयम' नामक तीन पुत्र थे (शान्ति० ९८ । ११ के बाद दा०पाठ, पृष्ठ ४६४७) ।

शतसहस्र-कुरुक्षेत्रकी सीमामें स्थित एक लोकविख्यात तीर्थ, जहाँ स्नान करनेसे सहस्र गोदानका फल मिलता है । वहाँ किये गये दान और उपवासका महत्त्व अन्यत्रसे सहस्रगुना अधिक है (वन० ८३ । १५७–१५९) ।

शतसाहस्रक-गोमतीके रामतीर्थके अन्तर्गत एक तीर्थ, जिसमें स्नान करके नियम-पालनपूर्वक नियमित भोजन करनेवाला मनुष्य सहस्र गोदानका फल पाता है (वन० ८४ । ७४-७५) ।

शतानन्द-एक दिव्य महर्षि, जो भीष्मजीको देखनेके लिये पधारे थे (अनु० २६ । ८) ।

शतानन्दा-स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । ११) ।

शतानीक-(१) नकुलद्वारा द्रौपदीके गर्भसे उत्पन्न (आदि० ६३ । १२३; आदि० ९५ । ७५) । यह विश्वेदेवके अंशसे उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७ । १२७-१२८) । कौरवकुलके महामना राजर्षि शतानीकके नामपर नकुलने अपने इस पुत्रका नाम (शतानीक) रखा था (आदि० २२० । ८४) । इसके द्वारा जयत्सेनकी पराजय (भीष्म० ७९ । ४२–४५) । दुष्कर्णकी पराजय (भीष्म० ७९ । ४६—५२) । इसका वृषसेनके साथ युद्ध (द्रोण० १६ । ७-८) । इसके घोड़ोंका वर्णन (द्रोण० २३ । ३०) । इसके द्वारा भूतकर्माका वध (द्रोण० २५ । २३) । चित्रसेनकी पराजय (द्रोण० १६८ । १२) । धृतराष्ट्रपुत्र श्रुतकर्माके साथ इसका घोर युद्ध (कर्ण० २५ । १३–१६) । अश्वत्थामाके साथ इसका युद्ध (कर्ण० ५५ । १४–१७) । इसके द्वारा कलिङ्गराजकुमारका वध (कर्ण० ८५ । २१) । अश्वत्थामाद्वारा इसका वध (सौप्तिक० ८ । ५७-५८) ।

महाभारतमें आये हुए शतानीकके नाम-नकुलदायाद, नकुलसुत, नकुलात्मज और नाकुलि आदि ।

(२) परीक्षित् पुत्र जनमेजयकी पत्नी वपुष्टमाके गर्भसे उत्पन्न राजकुमार । इसकी पत्नी विदेहराजकुमारी थी और इसके पुत्रका नाम था अश्वमेधदत्त (आदि० ९५ । ८६) । (३) कुरुकुलके एक प्राचीन राजर्षि, जिनके नामपर नकुलने अपने पुत्रका नाम रखा था (वन० २२० । ८४) । (४) (सूर्यदत्त) मत्स्यनरेश विराटके भाई और सेनापति, जिन्होंने गोहरणके समय सोनेका कवच धारण करके त्रिगर्तोंके साथ युद्धके लिये प्रस्थान किया (विराट० ३१ । ११-१२) । इनका दूसरा नाम सूर्यदत्त था (विराट० ३१ । १५) । त्रिगर्तोंके साथ इनका घोर सग्राम (विराट० ३३ । १९–२१) । इन्हें भीष्मने धराशायी एवं घायल किया था (भीष्म० ११८ । २७) । ये पाण्डवोंके प्रमुख सहायक थे (द्रोण० १५८ । ४१) । शल्यद्वारा इनका वध (द्रोण० १६७ । ३०) । (५) विराटका छोटा भाई । द्रोणाचार्यद्वारा इसका वध (द्रोण० २१ । २८) ।

शतायु-(१) पुरूरवाके द्वारा उर्वशीके गर्भसे उत्पन्न छः पुत्रोंमेंसे एक । शेष पाँचके नाम हैं–आयु, धीमान्, अमावसु, दृढायु और वनायु (आदि० ७५ । २४-२५) । (२) एक कौरवपक्षीय योद्धा, जो भीष्मनिर्मित क्रौञ्चव्यूहके जघन प्रदेशमें स्थित था (भीष्म० ७५ । २२) । इसके मारे जानेकी चर्चा (शल्य० २ । १९) ।

शतोदरी-स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । १५) ।

शतोलूखलमेखला-स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । १०) ।

शत्रुघ्न-महाराज दशरथके पुत्र, श्रीरामके भ्राता । इनकी माताका नाम सुमित्रा था (वन० २७४ । ७-८) । इन्होंने श्रीरामकी आज्ञासे मधुके पुत्र लवण नामक राक्षसका वध किया था (सभा० ३८ । २९ के बाद, दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ७९५) । वनसे लौटनेपर बड़े भाई श्रीरामसे इनका मिलन (वन० २९१ । ६३) ।

शत्रुञ्जय–(१) सौवीरदेशका एक राजकुमार, जो जयद्रथके रथके पीछे हाथमें ध्वजा लेकर चलता था (वन० २६५ । १०) । द्रौपदी-हरणके समय अर्जुनद्वारा इसका वध (वन० २७१ । २७) । (२) धृतराष्ट्रका पुत्र, इसे दुर्योधनने भीष्मजीकी रक्षाका कार्य सौंपा था (भीष्म० ५१ । ८) । भाइयोंसहित इसने पाँच केकयराजकुमारोंपर आक्रमण किया था (भीष्म० ७९ । ५६) । भीमसेनद्वारा इसका वध (द्रोण० १३७ । २९-३०) । (३) कौरवपक्षका योद्धा, कर्णका भाई, जिसका अर्जुनने वध किया था (द्रोण० ३२ । ६१) । (४) कौरवपक्षका योद्धा, जो अभिमन्युद्वारा मारा गया था (द्रोण० ४८ । १३-१६) । (५) द्रुपदका एक पुत्र, जिसे अश्वत्थामाने मार गिराया था (द्रोण० १५६ । १८१) । (६) सौवीरदेशके नरेश, जिन्हें भारद्वाज कणिकने राजधर्म एवं कूटनीतिका उपदेश किया था (शान्ति० १४० अध्याय) ।

शत्रुञ्जया–स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । ६) ।

शत्रुतपन–शत्रुसंतापी एक दानव, जो कश्यपपत्नी दनुके गर्भसे उत्पन्न हुआ था (आदि० ६५ । २९) ।

शत्रुन्तप–दुर्योधनकी सेनाका एक राजा, कौरवोंद्वारा विराटकी गौओंके अपहरणके समय अर्जुनद्वारा इसका वध (विराट० ५४ । ११–१३) ।

शत्रुसह–धृतराष्ट्रका एक पुत्र, जो अर्जुनसे कर्णकी रक्षाके लिये युद्धमें उनके सम्मुख गया था (विराट० ५४ । ७) । भाइयोंसहित इसने पाँच केकयराजकुमारोंपर आक्रमण किया था (भीष्म० ७९ । ५६) । भीमसेनद्वारा इसका वध (द्रोण० १३७ । २९-३०) ।

शनैश्चर–एक ग्रह, जो ब्रह्माजीकी सभामें रहकर उनकी उपासना करते हैं (सभा० ११ । २९) । ये महातेजस्वी और तीक्ष्ण स्वभाववाले ग्रह हैं । ये जब रोहिणी नक्षत्रको पीड़ित करते हैं, तब जगत्के लिये पीड़ादायक होते हैं (उद्योग० १४३ । ८) । ऐसा योग आनेपर संसारके लिये महान् भयकी प्राप्ति सूचित होती है (भीष्म० २ । ३२) । ये भावी युगमें मनुके पदपर प्रतिष्ठित होनेवाले हैं (शान्ति० ३४९ । ५५) । नित्य स्मरणीय देवताओंमें शनैश्चर ग्रहका भी नाम है (अनु० १६५ । १७) ।

शबर–एक म्लेच्छ जाति, जो वसिष्ठजीकी नन्दिनी नामक गायके गोबर और मूत्रसे उत्पन्न हुई थी (आदि० १७४ । ३६-३७) । शबर दक्षिण भारतका एक जनपद है (भीष्म० ५० । ५३) । सात्यकिने कौरव-सेनाका संहार करते समय सहस्रों शबरोंकी लाशोंसे धरतीको पाट दिया था (द्रोण० ११९ । ४६) । वसिष्ठजीकी आज्ञासे नन्दिनीने शबरोंकी सृष्टि की (शल्य० ४० । २१) । ये मान्धाताके राज्यमें निवास करते थे और चोरी-डकैतीसे जीविका चलाते थे (शान्ति० ६५ । १३–१५) । दक्षिण भारतमें जन्म लेनेवाले शबर आदि म्लेच्छ माने गये हैं (शान्ति० २०७ । ४२) । भगवान् शंकर किरातों और शबरोंका भी रूप ग्रहण कर लेते हैं (अनु० १४ । १४१-१४२) । शबर पहले क्षत्रिय थे, परंतु ब्राह्मणोंके अमर्षसे शूद्रत्वको प्राप्त हो गये (अनु० ३५ । १७-१८) । बहुत-से क्षत्रिय परशुरामजीके भयसे गुफाओंमें छिपे रहकर स्वधर्मको भी छोड़ बैठे । ब्राह्मणोंका उन्हें दर्शन नहीं हुआ, जिससे वे पुनः अपने धर्मको न जान सके और शबर आदिके सहवाससे वैसे ही बन गये (आश्व० २९ । १५-१६) ।

शबल–कश्यपद्वारा कद्रूके गर्भसे उत्पन्न एक नाग (आदि० ३५ । ७) ।

शबलाक्ष–एक दिव्य महर्षि, जो भीष्मको देखनेके लिये आये थे (अनु० २६ । ७) ।

शबलाश्व–ये महाराज कुरुके पौत्र तथा (अश्ववान्) अविक्षित्के पुत्र थे । इनके सात भाई और थे, जिनके नाम हैं—परीक्षित्, आदिराज, विराज, शाल्मलि, उच्चैःश्रवा, भङ्गकार और जितारि (आदि० ९४ । ५२-५३) ।

शम–(१) 'अहः' नामक वसुके चार पुत्रोंमेंसे एक, शेष तीनके नाम हैं—ज्योति, शान्त और मुनि (आदि० ६६ । २३) । (२) धर्मके तीन श्रेष्ठ पुत्रोंमेंसे एक, शेष दोके नाम हैं—काम और हर्ष, इनकी भार्याका नाम 'प्राप्ति' है (आदि० ६६ । ३२-३३) ।

शमठ–एक विद्वान् ब्राह्मण, जिन्होंने युधिष्ठिरको अमूर्तरयाके पुत्र राजा गयके यज्ञका वृत्तान्त सुनाया था (वन० ९५ । १७—२९) ।

शमीक–(१) एक ऋषि, जो गौओंके रहनेके स्थानमें बैठते थे और गौओंका दूध पीते समय बछड़ोंके मुखसे जो फेन निकलता था, उसीको खा-पीकर तपस्या करते थे । ये मौनव्रतका पालन करनेवाले थे । इनके पास भूखे-प्यासे परीक्षित्का आगमन और उनके द्वारा इनके कंधेपर मरे हुए सर्पके रखे जानेका वृत्तान्त (आदि० ४० । १७–२१) । इनके पुत्रका नाम 'शृङ्गी' ऋषि था (आदि० ४० । २५) । इनका अपने पुत्रको फटकारना और राजाकी महत्ता एवं आवश्यकता बतलाना (आदि० ४१ । २०—३३) । क्रोधकी निन्दा एवं क्षमाकी प्रशंसा करते हुए इनका अपने पुत्रको संयममें रहकर क्रोधको मिटानेके लिये आदेश देना (आदि० ४२ । ३—१२) । इनका गौरमुख नामक शीलवान् शिष्यको संदेश देकर राजा परीक्षित्के पास भेजना (आदि०

४२ । १३-१४)। ये इन्द्रकी सभामें रहकर उनकी उपासना करते हैं (सभा० ७ । १६) । व्यासजीने जनमेजयको स्वर्गीय राजा परीक्षित्का दर्शन कराते समय पुत्रसहित शमीक मुनिको भी वहाँ उपस्थित किया था (आश्व० ३५ । ६) । (२) (समीक) एक वृष्णि-वंशी वीर, जो द्रौपदीके स्वयंवरमें गया था (आदि० १८५ । १९) । यह द्वारकाके सात महारथियोंमेंसे एक था (सभा० १४ । ५८) । धृतराष्ट्रका इसके बल-पराक्रमसे शंकित होना (द्रोण० ११ । २८) ।

शम्पाक-एक परम शान्त, जीवन्मुक्त, त्यागी ब्राह्मण (शान्ति० १७६ । २-३) । त्यागकी महिमाके विषयमें इनके द्वारा भीष्मको उपदेश (शान्ति० १७६।४–२२)।

शम्बर-(१) एक दानव, कश्यप और दनुके विख्यात चौंतीस पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६५ । २२) । इन्द्र-द्वारा इसकी पराजय (आदि० १३७ । ४३; वन० १६८ । ८१) । साम्बने बाल्यावस्थामें ही इसकी सेनाको नष्ट-भ्रष्ट कर दिया था (वन० १२० । १३) । इन्द्र-द्वारा इसके वधकी चर्चा (उद्योग० १६ । १४; शान्ति० ९८ । ५०) । इन्द्रके पूछनेपर इसके द्वारा ब्राह्मणकी महिमाका वर्णन (अनु० ३६ । ४–१८) । (२) एक असुर, जिसे भगवान् श्रीकृष्णने (अपनी विभूति-स्वरूप प्रद्युम्नके द्वारा) मरवा डाला था (सभा० ३८ । २९ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ८२५) । स्वयं श्रीकृष्णने भी शम्बर नामक असुरको परास्त किया था (उद्योग० ६८ । ४) । यह भूतलके प्राचीन शासकोंमेंसे था (शान्ति० २२७ । ४९) । रुक्मिणीनन्दन प्रद्युम्नके द्वारा इसका वध हुआ था (अनु० १४ । २८) ।

शम्बूक-(१) स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५।७६)। (२) स्वधर्मको छोड़कर परधर्मको अपनानेवाला एक शूद्र । सुना जाता है कि सत्यपराक्रमी श्रीरामचन्द्रजीके द्वारा परधर्मापहारी शम्बूक नामक शूद्रके मारे जानेपर उस धर्मके प्रभावसे एक मरा हुआ ब्राह्मण बालक जी उठा था (शान्ति० १५३ । ६७) ।

शम्भु-(१) एक प्राचीन राजा (आदि० १ । २३४) । इन्होंने जीवनमें कभी मांस नहीं खाया था (अनु० ११५ । ६६) । (२) एक अग्नि, जिन्हें वेदोंके पारंगत विद्वान् ब्राह्मण अत्यन्त देदीप्यमान तथा तेजःपुञ्जसे सम्पन्न बताते हैं (वन० २२१ । ५) । (३) श्रीकृष्णके पुत्र, जो रुक्मिणी देवीके गर्भसे उत्पन्न हुए थे (अनु० १४ । ३३) । (४) ग्यारह रुद्रोंमेंसे एक (अनु० १५० । १२-१३) ।

शम्यानिपात-भूमि या दूरीका माप, शम्या कहते हैं डंडेको । एक बलवान् पुरुष डंडेको खूब जोर लगाकर फेंके तो वह जहाँ गिरे उतनी दूरीके स्थानको एक शम्यानिपात कहते हैं (वन० ८४ । ९) ।

शम्यापात-भूमि या दूरीका माप (शान्ति० २९ । ९५) । (देखिये शम्यानिपात)

शरण-वासुकि-वंशमें उत्पन्न एक नाग, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें भस्म हो गया था (आदि० ५७ । ६) ।

शरद्वान्-एक गौतमगोत्रीय महर्षि (आदि० ६३ । १०७)। ये महर्षि गौतमके पुत्र थे और शरकण्डोंके साथ उत्पन्न हुए थे । ये स्वयं भी गौतम कहलाते थे । इनकी बुद्धि जितनी धनुर्वेदमें लगती थी, उतनी वेदोंके अध्ययनमें नहीं लगती थी (आदि० १२९ । २-३) । जैसे अन्य ब्रह्मचारी तपस्यापूर्वक वेदोंका ज्ञान प्राप्त करते हैं, उसी प्रकार इन्होंने तपस्यामें संलग्न होकर सम्पूर्ण अस्त्र-शस्त्र प्राप्त किये । ये धनुर्वेदमें पारङ्गत तो थे ही, इनकी तपस्या भी बड़ी भारी थी । इससे इन्होंने देवराज इन्द्रको चिन्तामें डाल दिया था, तब देवराजने जानपदी नामवाली एक देवकन्याको इनके पास भेजा और यह आदेश दिया कि तुम शरद्वान्की तपस्यामें विघ्न डालो । जानपदी शरद्वान्के रमणीय आश्रमपर जाकर इन्हें लुभाने लगी । उस अप्रतिम सुन्दरी अप्सराको देखकर इनके नेत्र प्रसन्नतासे खिल उठे और हाथोंसे धनुष एवं बाण छूटकर पृथ्वीपर गिर पड़े । उसकी ओर देखनेसे इनके शरीरमें कम्प हो आया । शरद्वान् ज्ञानमें बहुत बढ़े-चढ़े थे और इनमें तपस्याकी भी प्रबल शक्ति थी, अतः ये महाप्राज्ञ मुनि अत्यन्त धीरतापूर्वक अपनी मर्यादामें स्थित रहे । किंतु इनके मनमें सहसा जो विकार आ गया था, इससे इनका वीर्य स्खलित हो गया; परंतु इस बातका इन्हें भान नहीं हुआ । ये धनुष-बाण, काला मृगचर्म, वह आश्रम और वह अप्सरा—सबको वहीं छोड़कर वहाँसे चल दिये । इनका वह वीर्य शरकण्डेके समुदायपर गिरकर दो भागोंमें विभक्त हो गया । उससे एक पुत्र और एक कन्याकी उत्पत्ति हुई, जिन्हें राजा शान्तनुने कृपापूर्वक पाला और उनका नाम कृप एवं कृपी रख दिया । शरद्वान्-को तपोबलसे ये बातें ज्ञात हो गयीं और इन्होंने गुप्तरूपसे आकर पुत्रको गोत्र आदिका परिचय दे, उसे चार प्रकारके धनुर्वेद, नाना प्रकारके शास्त्र तथा उन सबके गूढ़ रहस्यका भी पूर्णरूपसे उपदेश दिया (आदि० १२९ । ४—२२) ।

शरभ-(१) तक्षक-कुलमें उत्पन्न एक नाग, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें जल मरा था (आदि० ५७ । ९) । (२) ऐरावत-कुलमें उत्पन्न एक नाग, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें दग्ध हो गया था (आदि० ५७ । ११) ।

(३) कश्यप और दनुके विख्यात चौंतीस पुत्रोंमेंसे एक दानव (आदि० ६५ । २६) । (४) एक ऋषि, जो यमराजकी सभामें रहकर उनकी उपासना करते हैं (सभा० ८ । १४) । (५) चेदिराज धृष्टकेतुका अनुज, जो पाण्डवोंकी सहायतामें आया था (उद्योग० ५० । ४७) । अश्वमेधीय अश्वकी रक्षामें गये हुए अर्जुनके साथ इसने पहले युद्ध किया; परंतु पीछे उस अश्वका विधिपूर्वक पूजन किया (आश्व० ८३ । ३) । (६) शकुनिका भाई । भीमसेनद्वारा इसका वध (द्रोण० १५७ । २४—२६) । (७) प्राचीन कालका एक बलवान्, वनवासी और समस्त प्राणियोंका हिंसक पशु, जिसके आठ पैर और ऊपरकी ओर नेत्र होते थे । वह रक्त पीनेवाला जानवर माना गया है । इससे सिंह भी डरते थे (शान्ति० ११७ । १२-१३ तथा दा० पाठ) ।

शरभङ्ग—एक प्राचीन ऋषि, जिनका उत्तराखण्डमें विख्यात आश्रम था (वन० ९० । ९) । दक्षिणमें दण्डकारण्यके आस-पास भी इनका एक आश्रम था । श्रीरामने इनके आश्रमपर पहुँचकर इनका सत्कार किया था (वन० २७७ । ४०-४१) ।

शरभङ्ग-आश्रम—एक तीर्थ, जहाँ जानेवाला मनुष्य कभी दुर्गतिमें नहीं पड़ता और अपने कुलको पवित्र कर देता है (वन० ८५ । ४२) ।

शरस्तम्ब—एक प्राचीन तीर्थ, जिसके झरनेमें स्नान करनेवाला स्वर्गमें अप्सराओंद्वारा सेवित होता है (अनु० २५ । २८) ।

शरावती—भारतवर्षकी एक नदी, जिसका जल यहाँके लोग पीते हैं (भीष्म० ९ । २०) ।

शरासन—(देखिये चित्रशरासन) ।

शरु—एक देवगन्धर्व, जो अर्जुनके जन्मकालिक महोत्सवमें उपस्थित था (आदि० १२२ । ५८) ।

शर्मक—पूर्वोत्तर भारतका एक जनपद, जो 'वर्मक' प्रदेशके आस-पास था । इसे भीमसेनने दिग्विजयके समय यहाँके शासकोंको समझा-बुझाकर ही जीत लिया था (सभा० ३० । १३) ।

शर्मिष्ठा—दानवराज वृषपर्वाकी पुत्री, जिसने अनजानमें सरोवरके तटपर देवयानीका वस्त्र पहन लिया था (आदि० ७८ । ६) । देवयानीका इसको फटकारना (आदि० ७८ । ८) । इसके द्वारा देवयानीका तिरस्कार तथा कुएँमें गिराया जाना (आदि० ७८ । ९—१३) । पिताकी आज्ञासे जाति भाइयोंकी रक्षाके लिये इसका अपनी एक हजार दासियोंके साथ देवयानीकी आजीवन दासी बनकर रहनेके लिये प्रतिज्ञा करना (आदि० ८० ।१७—२२)। इसके प्रति देवयानीका कटाक्ष और इसके द्वारा उसको समुचित उत्तर (आदि० ८० । २३-२४) । एक सहस्र दासियोंसहित शर्मिष्ठाका देवयानीकी सेवामें उपस्थित होकर उसके साथ वन-विहारके लिये जाना और वहाँ आमोद-प्रमोदमें मग्न होना (आदि० ८१ । २—४) । राजा ययातिका उस स्थानपर जल पीनेकी इच्छासे आना और शर्मिष्ठाद्वारा सेवित देवयानीसे उन दोनोंका परिचय पूछना । देवयानीका दानवराज वृषपर्वाकी पुत्री शर्मिष्ठाको अपनी दासी बताना (आदि० ८१ । ५—१०) । शुक्राचार्यका ययातिको अपनी पुत्रीका समर्पण करते समय कुमारी शर्मिष्ठाको भी समर्पित करना और उसे अपनी शय्यापर बुलानेसे मना करना (आदि० ८१ । ३४-३५) । एक दिन अपनेको रजस्वलावस्थामें पाकर शर्मिष्ठा चिन्तामग्न हो गयी । स्नान करके शुद्ध हो समस्त आभूषणोंसे विभूषित हुई शर्मिष्ठा सुन्दर पुष्पोंके गुच्छोंसे भरी अशोकशाखाका आश्रय लिये खड़ी थी । उसने दर्पणमें अपना मुँह देखा और इसके मनमें पतिके दर्शनकी लालसा जाग उठी । इसने अशोकवृक्षसे प्रार्थना की कि तुम मुझे भी प्रियतमका दर्शन कराकर अपने ही समान अशोक (शोकरहित) कर दो । फिर इसने राजा ययातिको ही पति बनानेका निश्चय किया, राजाको एकान्तमें पाकर इसने नम्रतापूर्वक उनके सामने अपना मनोभाव प्रकट किया । इस विषयको लेकर इन दोनोंमें कुछ देरतक संवाद हुआ, अन्तमें राजाने इसके साथ समागम किया । शर्मिष्ठाके गर्भ रह गया और इसने समय आनेपर एक देवोपम कुमारको जन्म दिया (आदि० ८२ । ५—२७) । इसके पुत्र होनेकी बात सुनकर देवयानीका इससे उस विषयमें पूछ-ताछ करना और शर्मिष्ठाका एक श्रेष्ठ ऋषिसे अपनेको संतान-प्राप्त होनेकी बात बताकर उसे संतुष्ट कर देना (आदि० ८३ । १—८) । इसके गर्भसे ययातिके द्वारा क्रमशः द्रुह्यु, अनु तथा पूरु—इन तीन कुमारोंकी उत्पत्ति (आदि० ८३ । १०; आदि० ७५ । ३५) । शर्मिष्ठाके पुत्रोंसे उनके पिता-माताका यथार्थ परिचय जानकर देवयानीका शर्मिष्ठाको फटकारना और शर्मिष्ठाका उसे मुँहतोड़ उत्तर देना (आदि० ८३ । १८—२२ दा० पाठसहित) ।

शर्मी—यामुन पर्वतकी तलहटीमें बसे हुए 'पर्णशाला' नामक गाँवका एक अगस्त्यगोत्रीय, शमपरायण, अध्यापक ब्राह्मण, जिसे बुलानेके लिये यमराजने दूत भेजा था (अनु० ६८ । ३—७) । इसी नाम और गुणवाला एक दूसरा ब्राह्मण भी उस गाँवमें था, जिसे लानेका

यमराजने निषेध कर दिया था (अनु० ६८ । ७-८)। यमदूत उसी ब्राह्मणको ले गये, जिसे यमराजने मना किया था। यमराजने उसकी पूजा करके उसे घर जानेकी आज्ञा दी; साथ ही उसके पूछनेपर महान् पुण्यदायक कर्मके प्रसंगमें तिलदान, अन्नदान और जलदानकी विशेष महिमा बतायी (अनु० ६८ । १०-२२)। यमदूतने पहले लाये हुएको उसके घर पहुँचा दिया और दूसरेको साथ लाकर यमराजको इसकी सूचना दी। यमराजने उसकी भी पूजा करके उसे विदा किया और उसके लिये भी पूर्वोक्त सारा उपदेश दिया, वहाँसे लौटनेपर शर्मीने यमराजके बताये अनुसार सारा कार्य किया (अनु० ६८। २४-२६)।

शर्याति-एक प्राचीन नरेश (आदि० १ । २२६)। ये वैवस्वत मनुके पुत्र थे (आदि० ७५ । १६; अनु० ३० । ६)। राजा शर्याति यमसभामें रहकर वैवस्वत यमकी उपासना करते हैं (सभा० ८ । १४)। इनके द्वारा च्यवन ऋषिको अपनी कन्या सुकन्याका दान (वन० १२२ । २६)। महर्षि च्यवनद्वारा इनके यज्ञका सम्पादन और उसमें अश्विनीकुमारोंका सोमपान (वन० १२४, १२५ अध्याय) । इनके वंशमें दो विख्यात राजा हुए थे—हैहय और तालजङ्घ (अनु० ३० । ६-७)।

शर्यातिवन-एक पवित्र वनस्थली, जो स्वप्नमें श्रीकृष्णसहित शिवजीके पास जाते हुए अर्जुनको मार्गमें मिली थी (द्रोण० ८० । ३२)।

शल-(१) वासुकि-वंशमें उत्पन्न एक नाग, जो जनमेजयके सर्पयज्ञमें दग्ध हो गया था (आदि० ५७ । ५)। (२) धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ११६ । ४)। इसका भीमसेनपर आक्रमण करना (द्रोण० १२७ । ३४; कर्ण० ५१ । ८-९) । इसका भीमसेनके साथ युद्ध और उनके द्वारा वध (कर्ण० ८४ । ३—६)। (३) कुरुवंशी राजा सोमदत्तके पुत्र और भूरिश्रवाके भ्राता, जो द्रौपदीके स्वयंवरमें गये थे (आदि० १८५ । १५)। ये युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें गये थे (सभा० ३४ । ८)। दुर्योधनकी सेनाके एक विशिष्ट योद्धा थे (उद्योग० ५५ । ६३) । भीष्मद्वारा निर्मित महान् व्यूहमें वाम भागमें स्थित हो ये सारी सेनाकी रक्षा करते हुए चल रहे थे (भीष्म० ५१ । ५७) । इन्होंने अभिमन्युपर धावा किया था (द्रोण० ३७ । ५—२४)। इनके ध्वजका वर्णन (द्रोण० १०५ । २४-२५)। द्रौपदीकुमारोंके साथ इनका युद्ध (द्रोण० १०१ । १५)। श्रुतकर्माद्वारा इनका वध (द्रोण० १०८ । १०) । व्यासजीके आवाहन करनेपर मरे हुए अन्य कौरव वीरोंके साथ ये भी गङ्गाजीसे प्रकट हुए थे (आश्रम० ३२ । १०)। मृत्युके पश्चात् विश्वेदेवोंमें मिल गये (स्वर्गा० ५ । १६-१८) । (४) इक्ष्वाकुवंशी राजा परीक्षित्के पुत्र, इनकी माता मण्डूकराजकी कन्या सुशोभना थी। इनके दो भाई और थे, जिनका नाम था दल और बल। पिताद्वारा इनका राज्याभिषेक (वन० १९२ । ३८)। इनका महर्षि वामदेवसे वाम्य अश्वोंकी याचना करना और पुनः लौटा देनेके शर्तपर इन्हें उन अश्वोंकी प्राप्ति (वन० १९२ । ४३) । अश्वोंको लौटानेके विषयमें इनका महर्षि वामदेवसे संवाद (वन० १९२ । ४८-५६) । अश्वोंके न लौटानेपर महर्षि वामदेवद्वारा उत्पन्न किये गये राक्षसोंके प्रहारसे इनका वध (वन० १९२।५७-५९)।

शलकर-तक्षक-कुलमें उत्पन्न एक नाग, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें जल मरा था (आदि० ५७ । ९)।

शलभ-(१) दनुके विख्यात चौंतीस पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६५ । २६)। यह बाह्लीकराज प्रह्लादके रूपमें पृथ्वीपर उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७ । ३०-३१)। (२) पाण्डवपक्षका एक महारथी योद्धा, जो कर्णद्वारा मारा गया (कर्ण० ५६ । ४९-५०)।

शलभी-स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६। २६)।

शल्य-बाह्लीक (एवं मद्र) देशके श्रेष्ठ राजा, जिनके रूपमें हिरण्यकशिपुका पुत्र एवं प्रह्लादका अनुज संह्लाद ही इस भूतलपर उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७ । ६) । इनके द्वारा भीष्मका सत्कार और पाण्डुके लिये उनको माद्रीका समर्पण (आदि० ११२ । ३—१६) । मद्रराज शल्य अपने पुत्र वीर रुक्माङ्गद तथा रुक्मरथके साथ द्रौपदीके स्वयंवरमें पधारे थे (आदि० १८५ । १३-१४) । द्रौपदीके स्वयंवरमें मत्स्यवेधके लिये धनुषको चढ़ा न सके (आदि० १८६ । २८)। द्रौपदीके स्वयंवरमें भीमसेनद्वारा इनकी पराजय (आदि० १८९ । २३—२९)। नकुलने पश्चिम-दिग्विजयके समय मामा शल्यको प्रेमसे ही वशमें कर लिया। इन्होंने राजधानीमें आनेपर नकुलका विशेष सत्कार किया (सभा० ३२ । १४-१६)। ये युधिष्ठिरके राजसूय-यज्ञमें पधारे थे (सभा० ३४ । ७)। शिशुपालने इन्हें श्रीकृष्णसे श्रेष्ठ बताया (सभा० ३७ । १४)। इन्होंने अभिषेकके समय युधिष्ठिरको अच्छी मूँठवाली तलवार दी तथा छींकेपर रखा हुआ सुवर्णभूषित कलश प्रदान किया (सभा० ५३ । ९)। द्यूतके लिये हस्तिनापुरमें आनेपर राजा युधिष्ठिर वहाँ पहलेसे ही पधारे

हुए राजा शल्यसे मिले थे (सभा० ५८ । २४-२५)। पाण्डवोंकी ओरसे इन्हें रण-निमन्त्रण भेजनेका निश्चय किया गया (उद्योग० ४ । ८)। मार्गमें दुर्योधनके सत्कारसे प्रसन्न होकर उसके पक्षमें रहनेके लिये इनका उसे वर देना (उद्योग० ८ । १८ के बाद दा० पाठ)। युधिष्ठिरके पास जाना, पाण्डवोंसे मिलना, वहाँका सत्कार ग्रहण करके युधिष्ठिरसे बातचीत करना और उन्हें कर्णका उत्साह नष्ट करनेके लिये वर देना (उद्योग० ८ । २४—४८)। इनका युधिष्ठिरको इन्द्रविजय नामक उपाख्यान सुनाना (उद्योग० अध्याय ९ से १८ । २० तक)। कुन्तीकुमारोंसे विदा लेकर दुर्योधनके पास लौटना (उद्योग० १८ । २५)। इनका एक अक्षौहिणी सेना लेकर दुर्योधनके पास आना (उद्योग० १९ । १६-१७)। दुर्योधनका धृतराष्ट्रके समक्ष इनके पराक्रमका वर्णन करना (उद्योग० ५५ । ४३)। दुर्योधनका इनको एक अक्षौहिणी सेनाका नायक नियत करके इनका विधिवत् अभिषेक करना (उद्योग० १५५ । ३२-३३)। युधिष्ठिरको युद्धकी आज्ञा देकर उनकी शुभ कामना करना (भीष्म० ४३ । ७९—८७)। प्रथम दिनके संग्राममें युधिष्ठिरके साथ द्वन्द्वयुद्ध (भीष्म० ४५ । २८-३०)। इनके द्वारा विराटकुमार उत्तरका वध (भीष्म० ४७ । ३५—३९)। इनके द्वारा विराटकुमार शङ्खकी पराजय (भीष्म० ४९ । ३९)। इनका धृष्टद्युम्नके साथ युद्ध (भीष्म० ६२ । ८—१४)। भीमसेनद्वारा इनकी पराजय (भीष्म० ६४ । २७)। इनका युधिष्ठिरके साथ युद्ध (भीष्म० ७१ । २०-२१)। नकुल और सहदेवका इनपर आक्रमण (भीष्म० ८१ । २६)। सहदेवद्वारा इनकी पराजय (भीष्म० ८३ । ५१-५३)। शिखण्डीपर इनका आक्रमण (भीष्म० ८५ । २७)। इनका पाण्डवोंके साथ युद्धमें युधिष्ठिरको घायल करना (भीष्म० १०५ । ३०-३३)। भीमसेन और अर्जुनके साथ युद्ध (भीष्म० ११३, ११४ अध्याय)। युधिष्ठिरके साथ द्वन्द्वयुद्ध (भीष्म० ११६ । ४०-४१)। नकुलके साथ युद्ध (द्रोण० १४ । ३१-३२)। अभिमन्युके साथ युद्ध (द्रोण० १४ । ७८—८२)। भीमसेनके साथ गदायुद्ध और इनकी पराजय (द्रोण० १५ । ८—३२)। युधिष्ठिरके साथ युद्ध (द्रोण० २५ । १५-१७)। अभिमन्युके साथ युद्ध और उसके प्रहारसे मूर्च्छित होना (द्रोण० ३७ । २४—३४; द्रोण० ३८ । ३)। अभिमन्युद्वारा पराजित होना (द्रोण० ४८ । १४-१५)। युधिष्ठिरके साथ युद्ध (द्रोण० ९६ । २९-३०)। अर्जुनको बाण मारना (द्रोण० १०४ । २७-२८)। इनके ध्वजका वर्णन (द्रोण० १०५ । १८-२०)। ये जयद्रथके संरक्षकोंमें थे। इनका अर्जुनके साथ युद्ध (द्रोण० १४५ । ९, ५४)। अर्जुनका इन्हें बाण मारना (द्रोण० १४६ । ५४)। इनके द्वारा विराटके भाई शतानीकका वध और विराटकी पराजय (द्रोण० १६७ । ३०—३४)। द्रोणाचार्यके मारे जानेपर युद्धस्थलसे भागना (द्रोण० १९३ । ११)। इनपर श्रुतकीर्तिका आक्रमण (कर्ण० १३ । १०)। कर्णका दुर्योधनसे इनके बल-पराक्रम एवं अश्वविज्ञानकी प्रशंसा करके इनको अपना सारथि बनानेके लिये प्रस्ताव करना (कर्ण० ३१ । ५८—६९)। कर्णका सारथ्य करनेके लिये दुर्योधनके कहनेपर इनका कुपित होकर उसे रोषपूर्ण उत्तर देना और रूठकर चल देना; फिर श्रीकृष्णके समान अपनी प्रशंसा सुनकर उसके प्रस्तावको स्वीकार कर लेना (कर्ण० ३२ अध्याय)। दुर्योधनका इन्हें त्रिपुर-विजयकी कथा सुनाना (कर्ण० ३३, ३४ अध्याय)। इनका दुर्योधनके साथ वार्तालाप और कर्णका सारथि बननेके लिये अपनी स्वीकृति देना (कर्ण० ३५ अध्याय)। कर्णसे पाण्डवोंकी प्रशंसा करना (कर्ण० ३६ । २७—३२)। कर्णको फटकार-कर अर्जुनकी प्रशंसा करना (कर्ण० ३७ । ३३—४०)। कर्णके प्रति आक्षेपपूर्ण वचन (कर्ण० ३९ अध्याय)। कर्णका शल्यको फटकारना और मारनेकी धमकी देना (कर्ण० ४० अध्याय)। कर्णको कौवे और हंसका उपाख्यान सुनाकर फटकारना (कर्ण० ४१ अध्याय)। इनका कर्णको उत्तर देना (कर्ण० ४५ । ४०—४६)। इनके द्वारा कर्णसे अर्जुनकी प्रशंसा तथा पाण्डव-पक्षके प्रमुख वीरोंका वर्णन (कर्ण० ४६ । ४१—८६)। भीमसेनको अर्जुनकी प्रतिज्ञाका स्मरण कराकर कर्णकी जीभ काटनेसे रोकना (कर्ण० ५० । ४७ के बाद दा० पाठ)। कर्णको नकुल, सहदेव तथा युधिष्ठिरके वधसे रोकना (कर्ण० ६३ । २१—२९)। कर्णसे अर्जुनके पराक्रमका वणन करके उन्हें मारनेके लिये कहना (कर्ण० ७९ । १९-४८)। भीम-सेनके भयसे डरे हुए कर्णको समझाना (कर्ण० ८४ । ८—१७)। कर्णकी बातका उत्तर देना (कर्ण० ८७ । १०३)। कर्णवधसे दुःखित हुए दुर्योधनको सान्त्वना देना (कर्ण० ९२ । १०-१४)। दुर्योधनसे रणभूमिका संक्षिप्त वर्णन करना (कर्ण० ९४ । २—२३)। दुर्योधन-की प्रार्थनासे सेनापति-पद स्वीकार करना (शल्य० ६ । २८)। इनके वीरोचित उद्गार (शल्य० ७ । १३—२०)। इनका अद्भुत पराक्रम (शल्य० ११ । २०—३२)। भीमसेनद्वारा इनकी पराजय (शल्य० ११ । ६०—६२)। भीमसेनके साथ गदायुद्ध (शल्य० १२ । १२—२७)। युधिष्ठिरके साथ युद्ध (शल्य० १२ । ४७—

६३)। इनका अद्भुत पराक्रम (शल्य० १२ अध्याय)। इनका पाण्डववीरोंके साथ युद्ध (शल्य० १५ । १०—४३)। युधिष्ठिरद्वारा इनकी पराजय (शल्य० १६ । ६३-६६)। युधिष्ठिरद्वारा इनका वध (शल्य० १७ । ५२)। व्यासजीके आवाहन करनेपर युद्धमें मरे हुए कौरव-पाण्डववीरोंके साथ ये भी गङ्गाजीके जलसे प्रकट हुए थे (आश्रम० ३२ । १०)।

महाभारतमें आये हुए शल्यके नाम—आर्तायनि, बाह्लीक-पुङ्गव, मद्राधिप, मद्राधिपति, मद्रज, मद्रजनाधिप, मद्र-जनेश्वर, मद्रक, मद्रकाधम, मद्रकाधिप, मद्रकेश्वर, मद्रप, मद्रपति, मद्रराट्, मद्रराज, मद्रेश, मद्रेश्वर, सौवीर आदि।

शल्यपर्व—महाभारतका एक प्रमुख पर्व।

शशक—एक जाति, इस जातिके राजाको कर्णने दिग्विजयके समय परास्त किया था (वन० २५४ । २१)।

शशबिन्दु—एक प्राचीन राजा (आदि० १ । २२८)। ये यमसभामें रहकर सूर्यपुत्र यमकी उपासना करते हैं (सभा० ८ । १७)। ये चित्ररथके पुत्र थे। सृंजयको समझाते हुए नारदजीद्वारा इनके चरित्र एवं दान आदिका वर्णन (द्रोण० ६५ अध्याय)। श्रीकृष्णद्वारा इनके प्रभावका वर्णन (शान्ति० २९ । १०५-११०)। इनके दस हजार स्त्रियाँ थीं और इसमेंसे प्रत्येकके गर्भसे एक-एक हजार पुत्र हुए थे। इस प्रकार इनके कुल एक करोड़ पुत्र थे (शान्ति० २०८ । ११-१२)। यमने इन्हें श्राद्धकर्मोंका उपदेश दिया था (अनु० ८९ । १—१५)। इनके द्वारा मांसभक्षणका निषेध (अनु० ११५ । ६०)। ये सायं-प्रातःस्मरणीय नरेश हैं (अनु० १६५ । ५१)।

शशयान—एक दुर्लभ तीर्थ, जहाँ सरस्वतीके जलमें प्रति-वर्ष कार्तिकी पूर्णिमाको शशके रूपमें छिपे हुए पुष्करका दर्शन होता है। वहाँ स्नान करनेसे मनुष्य चन्द्रमाके समान प्रकाशित होता और सहस्र गोदानका फल पाता है (वन० ८२ । ११४-११६)।

शशलोमा—एक राजा, जिसने कुरुक्षेत्रके तपोवनमें तप करके स्वर्ग प्राप्त किया था (आश्रम० २० । १४-१५)।

शशाद—महाराज इक्ष्वाकुके परम धर्मात्मा पुत्र, जो पिताके बाद अयोध्याके राजा हुए थे (वन० २०२ । १)। इनके पुत्रका नाम ककुत्स्थ था (वन० २०२ । २)।

शशिक—एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ४६)।

शशोलूकमुखी—स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । २२)।

शाक—शाकद्वीपका एक वृक्ष, जिसके नामपर उस द्वीपका नाम प्रसिद्ध हुआ है (भीष्म० ११ । २८)।

शाकद्वीप—भूमण्डलके सात महाद्वीपोंमेंसे एक। धृतराष्ट्रके प्रति संजयद्वारा इसका वर्णन (भीष्म० ११ अध्याय)।

शाकम्भरी—एक देवीसम्बन्धी तीर्थ यहाँ शाकम्भरीके समीप जाकर मनुष्य ब्रह्मचर्य-पालनपूर्वक एकाग्र और पवित्र हो तीन राततक केवल शाक खाकर रहे तो बारह वर्षोंतक शाकाहार करनेका पुण्य प्राप्त होता है (वन० ८४ । १३-१७)।

शाकल—एक नगरी, जो मद्रदेशकी राजधानी थी (आधुनिक मतके अनुसार वर्तमान स्यालकोट ही शाकल है।) (सभा० ३२ । १४)।

शाकलद्वीप—एक देश, जहाँके राजा प्रतिविन्ध्यको अर्जुनने जीता था (सभा० २६ । ६)।

शाकल्य—एक शिवभक्त ऋषि, जिन्होंने नौ सौ वर्षोंतक मनोमय यज्ञ (ध्यानद्वारा भगवान् शिवका आराधन) किया था (अनु० १४ । १००)।

शाकवक्त्र—स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ७६)।

शाख—अनल नामक वसुके पुत्र। कुमार कार्तिकेयके छोटे भाई। इनके दो छोटे भाई और थे, जिनके नाम थे-विशाख और नैगमेय। (किसी-किसीके मतमें ये तीनों कुमार कार्तिकेयके ही नाम हैं तथा किन्हींके मतमें कुमार कार्तिकेयके पुत्रोंके ये तीनों नाम हैं। कल्पभेदसे सभी ठीक हो सकते हैं।) वास्तवमें शाख, विशाख और नैगमेय—कुमार कार्तिकेयके ही रूपान्तर हैं; स्वयं कुमार ही इनके रूपमें प्रकट हुए हैं (शल्य० ४४ । ३७)।

शाण्डिली—(१) दक्षकी पुत्री तथा धर्मकी पत्नी। इनके गर्भसे अनल नामक वसुका जन्म हुआ था (आदि० ६६ । १७-२०)। (२) ऋषभ पर्वतपर रहनेवाली एक तपस्विनी, जिनकी निन्दासे गरुड़के पंख गिर गये थे। पुनः इनके द्वारा गरुड़को वरदान प्राप्त हुआ था (उद्योग० ११३ । १२—१७)। (३) देवलोकमें रहनेवाली एक पतिव्रता देवी, जो सम्पूर्ण तत्त्वोंको जानने-वाली और मनस्विनी थीं। इनके द्वारा केकयराजकुमारी सुमनाको पातिव्रत्यका उपदेश (अनु० १२३ । ८—२०)।

शाण्डिल्य—एक महातपस्वी प्राचीन ऋषि, जो युधिष्ठिरकी सभामें विराजमान होते थे (सभा० ४ । १७)। इनकी पुत्रीकी तपस्याका वर्णन (शल्य० ५४ । ५-८)। ये शरशय्यापर पड़े हुए भीष्मजीको देखने गये थे (शान्ति० ४७ । ६)। इन्होंने

बैलगाड़ीके दानको सुवर्ण-जल आदि सभी श्रेष्ठ वस्तुओंके दानके समान बताया है (अनु० ६५ । १९) । राजा सुमन्युने भक्ष्य-भोज्य-पदार्थोंके पर्वतों-जैसे कितने ही ढेर लगाकर उन्हें शाण्डिल्यको दान कर दिया था। इससे स्वर्ग-लोकमें स्थान प्राप्त कर लिया (अनु० १३७ । २२) ।

शान्त–'अहः' नामक वसुके चार पुत्रोंमेंसे एक । शेष तीनके नाम हैं–शम, ज्योति और मुनि (आदि० ६६ । २३) ।

शान्तनु–महाराज प्रतीपके द्वितीय पुत्र । देवापिके अनुज तथा बाह्लीकके अग्रज । इनकी माताका नाम सुनन्दा था (आदि० ९४ । ६१; आदि० ९५ । ४४) । इनके बड़े भाई देवापिके बाल्यावस्थामें ही राज्य छोड़कर वन चले जानेके कारण ये ही राजा हुए थे (आदि० ९४ । ६२; आदि० ९५ । ४५) । ये जिसे अपने दोनों हाथोंसे छू देते, वह सुख-शान्तिका अनुभव करता और बूढ़ेसे जवान हो जाता था; इसीलिये इनका नाम शान्तनु हुआ (आदि० ९५ । ४६) । ये पूर्वजन्ममें राजा महाभिष थे । इनके स्वर्गसे मर्त्यलोकमें आनेका इतिहास (आदि० ९६ । १–९) । गङ्गाको पत्नी रूपमें स्वीकार करनेके लिये इनको पिताका आदेश (आदि० ९७ । २१–२३) । गङ्गाके अनुपम रूपसे आकृष्ट हो उनसे अपनी पत्नी होनेके लिये इनकी याचना (आदि० ९७ । ३१-३२) । गङ्गाके साथ इनके विवाहकी शर्त (आदि० ९८ । ३) । इनके द्वारा गङ्गाको फटकार (आदि० ९८ । १६) । इनको वसिष्ठद्वारा वसुओंको प्राप्त हुए शापका वृत्तान्त बतलाकर गङ्गाका अन्तर्धान होना (आदि० ९९ । ५–४६) । इनका सम्राट्पदपर अभिषेक (आदि० १०० । ७) । इनके राज्यकी विशेषता (आदि० १०० । ८—२०) । गङ्गाजीका इनको बालक भीष्मका परिचय देना (आदि० १०० । ३३) । सत्यवतीके रूपसे मोहित होकर उसकी प्राप्तिके लिये निषादराजसे इनकी याचना (आदि० १०० । ५०-५१) । सत्यवतीके पुत्रको ही सम्राट्के पदपर अभिषिक्त करनेके लिये निषादराजका इनके प्रति प्रस्ताव (आदि० १०० । ५४–५६) । इनका निषादके प्रस्तावको अस्वीकार करना (आदि० १०० । ५७-५८) । इनका इकलौते पुत्रको नहींके समान बतलाकर संतानकी महिमाका वर्णन करना (आदि० १०० । ६६–७०) । इनकी वंशोच्छेदकी चिन्ता (आदि० १०० । ७०-७१) । इनको भीष्मद्वारा सत्यवतीका समर्पण (आदि० १०० । १००) । इनके द्वारा भीष्मको स्वच्छन्द-मृत्युका वरदान (आदि० १०० । १०२) । सत्यवतीके साथ इनका विधिपूर्वक विवाह (आदि० १०१ । १) । इनके द्वारा सत्यवतीके गर्भसे चित्राङ्गद एवं विचित्रवीर्यका जन्म (आदि० १०१ । २-३) । इनका स्वर्गवास (आदि० १०१ । ४) । इनका अपने जीवनकालमें वनमें अनाथकी तरह पड़े हुए बालक कृप एवं कृपीको घर लाकर उनका पालन-पोषण एवं समस्त संस्कार कराना (आदि० १२९ । १८) । ये यमसभामें रहकर सूर्यपुत्र यमकी उपासना करते हैं (सभा० ८ । २५) । ये आर्चीकपर्वतपर तपस्या करके नित्यधामको प्राप्त हुए थे (वन० १२५ । १९) । इन्होंने भीष्मसे पिण्ड लेनेके लिये अपना हाथ बढ़ाया था (अनु० ८४ । १५) । ये सायं-प्रातः स्मरण करने योग्य राजाओंमें गिने गये हैं (अनु० १६५ । ५८) ।

महाभारतमें आये हुए शान्तनुके नाम–भारत, भारत-गोप्ता, भरतसत्तम, कौरव्य, कुरुसत्तम, प्रातीप आदि ।

शान्तमय–एक प्राचीन राजा (आदि० १ । २३६) ।

शान्ता–राजा लोमपादकी गोद ली हुई पुत्री, जिसे राजाने महर्षि ऋष्यशृङ्गके साथ ब्याह दिया था (वन० ११० । २६; वन० ११३ । ११) । अपने पति ऋष्यशृङ्गके साथ आश्रमपर आना और उनकी सेवामें संलग्न होना (वन० ११३ । २२–२४) । महर्षि ऋष्यशृङ्गको शान्ताका दान करनेसे राजा लोमपाद सभी प्रकारके प्रचुर भोगोंसे सम्पन्न हो गये (शान्ति० २३४ । ३४) ।

शान्ति–(१) भूतपूर्व चौथे इन्द्रका नाम (आदि० १९६ । २९) । (२) एक प्राचीन ऋषि, जो राजा उपरिचरके यज्ञके सदस्य बने थे (शान्ति० ३३६ । ८) । इनके पिताका नाम अङ्गिरा था । ये अग्निवंशमें उत्पन्न होनेसे आग्नेय कहलाये (अनु० ८५ । १३०–१३१) ।

शान्तिपर्व–महाभारतका एक प्रमुख पर्व ।

शामित्र–यज्ञके अन्तर्गत एक कर्मविशेष (आदि० १९६ । १) ।

शारद्वती–एक अप्सरा, जिसने अर्जुनके जन्म-कालिक महोत्सवमें गान किया था (आदि० १२२ । ६४) ।

शार्ङ्ग–भगवान् श्रीकृष्णका दिव्य धनुष (सभा० २ । १४; सभा० ३८ । २९ के बाद दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ८२१; वन० २० । १९) । कौरव-सभामें विश्वरूप धारण किये हुए श्रीकृष्णकी एक भुजामें यह देदीप्यमान होता था (उद्योग० १३१ । १०) । इन्द्रके विजय नामक धनुषकी इसके साथ तुलना (उद्योग० १५८ । ४) । यह तीन दिव्य धनुषोंमेंसे एक है । इसे भगवान् विष्णुका तेजस्वी धनुष बताया गया है (उद्योग० १५८ । ५) । लोकपितामह ब्रह्माने इसका निर्माण करके इसे श्रीहरिको

समर्पित किया था (अनु० १४१ । ८ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ५९१५) ।

शार्ङ्गकोपाख्यान-शार्ङ्गक पक्षियोंकी कथा (आदि० अध्याय २२८ से २३२ तक) ।

शार्ङ्गरव-एक ऋषि, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें अध्वर्यु बने थे (आदि० ५३ । ६) ।

शार्दूली-क्रोधवशाकी पुत्री, जिसने सिंहों, बाघों और चीतोंको जन्म दिया (आदि० ६६ । ६१, ६५) ।

शालकटङ्कट-राक्षस अलम्बुषका नामान्तर (द्रोण० १०९ । २२—३१) । (देखिये अलम्बुष)

शालिक-एक दिव्य महर्षि, जो हस्तिनापुर जाते समय मार्गमें श्रीकृष्णसे मिले थे (उद्योग० ८३ । ६४ के बाद दाक्षिणात्य पाठ) ।

शालिपिण्ड-कश्यपद्वारा कद्रूके गर्भसे उत्पन्न एक नाग (आदि० ३५ । १४) ।

शालिशिरा-एक देवगन्धर्व, जो कश्यपपत्नी मुनिके गर्भसे उत्पन्न हुए थे (आदि० ६५ । ४४) । ये अर्जुनके जन्मकालिक महोत्सवमें उपस्थित हुए थे (आदि० १२२ । ५६) ।

शालिसूर्य-कुरुक्षेत्रकी सीमाके अन्तर्गत स्थित एक तीर्थ, जो शालिहोत्रका स्थान है । यहाँ स्नानसे सहस्र गोदानका फल मिलता है (वन० ८३ । १०७) ।

शालिहोत्र-एक मुनि, जिनके आश्रममें व्यासजी ठहरे थे । इनके आश्रमके पास एक सरोवर तथा पवित्र वृक्ष था । वह वृक्ष सर्दी, गर्मी तथा वर्षाको अच्छी तरह सहनेवाला था । वहाँ केवल जल पी लेनेसे भूख-प्यास दूर हो जाती थी । उस सरोवर और वृक्षका निर्माण शालिहोत्र मुनिने अपनी तपस्याद्वारा किया था (आदि० १५४ । १५ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ४६३) । इनके आश्रममें हिडिम्बाके साथ पाण्डवोंका आगमन । इनके द्वारा भूखसे पीड़ित हुए पाण्डवोंको भोजन-दान (आदि० १५४ । १८ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ४६४) । ये अश्वविद्याके आचार्य थे और घोड़ोंकी जाति तथा उनके विषयकी तात्त्विक बातें जानते थे (वन० ७१ । २७) । इनका शालिसूर्य नामसे प्रसिद्ध एक तीर्थ है, जहाँ स्नान करनेसे सहस्र गोदानका फल मिलता है (वन० ८३ । १०७) ।

शालूकिनी-कुरुक्षेत्रकी सीमामें स्थित एक तीर्थ, जहाँ जाकर दशाश्वमेध तीर्थमें स्नान करनेसे मनुष्य दस अश्वमेध यज्ञोंका फल पाता है (वन० ८३ । १३) ।

शाल्मलि-सोमवंशी महाराज कुरुके पौत्र तथा (अश्ववान्) अविक्षित्के पुत्र । इनके अन्य सात भाइयोंके नाम हैं—परीक्षित्, आदिराज, विराज, शबलाश्व, उच्चैःश्रवा, भङ्गकार और जितारि (आदि० ९४ । ५२-५३) ।

शाल्मलिद्वीप-सुप्रसिद्ध जम्बू आदि सात द्वीपोंमेंसे एक (भीष्म० ११ । ३) । इस द्वीपमें उस शाल्मलि (सेमल) वृक्षकी पूजा की जाती है, जिसके नामपर इसका नामकरण हुआ है (भीष्म० १२ । ६) ।

शाल्व-(१) एक क्षत्रियनरेश, जो वृषपर्वाके छोटे भाई अजकके अंशसे उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७ । १६-१७) । काशिराजकी पुत्री अम्बाके स्वयंवरमें भीष्मद्वारा इसकी पराजय (आदि० १०२ । ३४—४९) । यह सौभ नामक विमानका अधिपति था और अम्बाने मन-ही-मन इसे अपना पति चुन लिया था (आदि० १०२ । ६१-६२) । यह द्रौपदीके स्वयंवरमें गया था (आदि० १८६ । १५) । युधिष्ठिरके राजसूययज्ञमें भी आया था (सभा० ३४ । ९) । श्रीकृष्णद्वारा इसके मारे जानेकी चर्चा (वन० १२ । ३२) । इसके वधकी संक्षिप्त कथा (वन० १४ अध्याय) । इसका द्वारकापर आक्रमण, साम्ब, प्रद्युम्न आदिके साथ युद्ध तथा श्रीकृष्णद्वारा वध होनेकी विस्तृत कथा (वन० अध्याय १५ से २२ तक) । भीष्मसे आज्ञा लेकर आयी हुई अम्बाका इसके द्वारा परित्याग (उद्योग० १७५ । २४) । (२) व्युषिताश्वपत्नी भद्राने अपने मृत पतिके शवके साथ शयन करके तीन 'शाल्व' और चार 'मद्र' उत्पन्न किये थे (यहाँ 'शाल्व' और 'मद्र' का अर्थ है उन-उन देशोंके शासक) (आदि० १२० । ३२—३६) । शाल्वदेशके लोग जरासंधके डरसे दक्षिण दिशाको भाग गये थे । (सभा० १४ । २६) । प्राचीनकालमें शाल्वदेशपर द्युमत्सेन नामक एक धर्मात्मा क्षत्रिय नरेश शासन करते थे (जिनके पुत्र सत्यवान्का सावित्रीके साथ विवाह हुआ था) (वन० २९४ । ७) । कौरवसेनाके संरक्षकोंमें शाल्वदेशके योद्धाओंका भी नाम आया है (उद्योग० १६० । १०२-१०३) । शाल्व एक भारतीय जनपद है (भीष्म० ९ । ३९) । शाल्व योद्धाओंने अर्जुनपर आक्रमण किया था (भीष्म० ११७ । ३४-३५) । पाण्डवपक्षीय शाल्वदेशीय योद्धाओंने द्रोणाचार्यपर आक्रमण किया था (द्रोण० १५४ । १०-११) । शाल्व आदि देशोंके बड़भागी मनुष्य सनातन धर्मको जानते हैं (कर्ण० ४५ । १४-१५) । (३) पाण्डवपक्षका एक योद्धा, जिसे कौरवपक्षीय भीमरथने मारा था (यह भीमरथ धृतराष्ट्रपुत्रसे भिन्न था) (द्रोण० २५ । २६) । (४) एक म्लेच्छगणोंका राजा, जिसने पाण्डवोंकी विशाल सेनाका सामना

करनेके लिये उसपर आक्रमण किया था (शल्य० २० । १) । इसका हाथी पर्वतके समान विशालकाय, मदकी धारा बहानेवाला, मदोन्मत्त तथा ऐरावतके समान शक्तिशाली था । वह महाभद्र नामक गजराजके कुलमें उत्पन्न हुआ था । धृतराष्ट्रपुत्र दुर्योधनने सदा ही उसका आदर किया था । गजशास्त्रके ज्ञाता पुरुषोंने उसे अच्छी तरह सजाया था । वह युद्धके अवसरोंपर सदा ही सवारीके उपयोगमें लाया जाता था (शल्य० २० । २-३) । उस हाथीपर आरूढ़ हुए राजा शाल्वका पाण्डवोंपर आक्रमण और अपने पराक्रमसे पाण्डवसेनाको खदेड़ना। इसके हाथीका धृष्टद्युम्नपर आक्रमण करके उनके रथको घोड़ों और सारथिसहित कुचल डालना तथा धृष्टद्युम्नद्वारा उस गजराजका वध और सात्यकिद्वारा शाल्वके सिरका उच्छेद (शल्य० २० । ४—२६) ।

शाल्वसेनि–एक दक्षिण भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ६१) ।

शाल्वायन–एक प्राचीन राजा, जो जरासंधके भयसे अपने भाइयों तथा सेवकोंके साथ दक्षिण दिशाको भाग गया था (सभा० १४ । २७) ।

शाल्वेय (शाल्वेयक)–शाल्वदेश तथा वहाँके निवासी (वन० २६४ । ६; विराट० ३० । २; उद्योग० ५४ । १८; उद्योग० १६३ । १०) ।

शिंशुमा–गान्धारराजकी पुत्री, इसका दूसरा नाम सुकेशी भी था । भगवान् श्रीकृष्णकी रानी (सभा० ३८ । २९ के बाद दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ८२०) । (विशेष देखिये सुकेशी)

शिक्षक–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ७६) ।

शिखण्ड–छत्रक (भुईंफोड़), जो वृत्रासुरके रक्तसे उत्पन्न हुआ है । यह ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्योंके लिये अभक्ष्य है (शान्ति० २८२ । ६०) ।

शिखण्डिनी–राजा द्रुपदकी कन्या, जो आगे चलकर पुरुषरूपमें परिणत हो गयी थी । पुरुषरूपमें इसका नाम 'शिखण्डी' था (उद्योग० १८८ । ४—१४; उद्योग० १९१ । १) । (विशेष देखिये शिखण्डी)

शिखण्डी–राजा द्रुपदका पुत्र, जो पहले शिखण्डिनी नामवाली कन्याके रूपमें उत्पन्न होकर पीछे पुत्ररूपमें परिणत हो गया था। स्थूणाकर्ण नामक यक्षने इसका प्रिय करनेकी इच्छासे इसे पुरुष बना दिया था (आदि० ६३ । १२५) । यह राक्षसके अंशसे उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७ । १२६) । उपप्लव्य नगरमें अभिमन्युके विवाहोत्सवमें सम्मिलित हुआ था (विराट० ७२ । १७) । इसने उलूकको दुर्योधनके संदेशका उत्तर दिया था (उद्योग० १६३ । ४३–४५) । इसका द्रुपदके यहाँ उनकी मनस्विनी रानीके गर्भसे पुत्रीरूपमें जन्म । माता-पिता द्वारा इसके पुत्रीभावको छिपाकर पुत्र होनेकी घोषणा तथा इसके पुत्रोचित संस्कारोंका सम्पादन (उद्योग० १८८ । ९—१९) । इसे लेखन और शिल्पकलाकी शिक्षाका प्राप्त होना । माता-पिताका परस्पर सलाह करके इसका दशार्णराजकी कन्याके साथ विवाह कर देना (उद्योग० १८९ । १—१३) । दशार्णराजकी कन्याका शिखण्डीके स्त्रीत्वका पता लगनेपर अपनी धायों और सखियोंको इसकी सूचना देना और धायोंका दशार्णराजतक यह समाचार पहुँचाना । दशार्णराजका कुपित होना । शिखण्डीका राजकुलमें पुरुषकी भाँति घूमना-फिरना तथा दशार्णराजका दूत भेजकर कन्याको पुत्र बताकर धोखा देनेके अपराधमें द्रुपदको जड़मूलसहित उखाड़ फेंकनेकी धमकी देना (उद्योग० १८९ । १३–२३) । हिरण्यवर्माके भयसे घबराये हुए द्रुपदका अपनी महारानीसे संकटसे बचनेका उपाय पूछना । द्रुपदपत्नीका कन्याको पुत्र घोषित करनेका उद्देश्य बताना । राजाके द्वारा नगरकी रक्षाकी व्यवस्था और देवाराधन । शिखण्डीका वनमें प्राण त्याग देनेकी इच्छासे वनमें जाना, स्थूणाकर्ण यक्षके भवनमें तपस्या करना, यक्षका इसे वर माँगनेके लिये प्रेरित करना तथा शिखण्डिनीका अपने माता-पितापर आये हुए संकटके निवारणके लिये पुरुषरूपमें परिणत हो जानेके लिये इच्छा प्रकट करना (उद्योग० १९१ अध्याय) । स्थूणाकर्णका पुनः लौटानेकी शर्तपर कुछ कालके लिये इसे अपना पुरुषत्व प्रदान करना । शिखण्डीका नगरमें आकर पिता तथा राजा हिरण्यवर्माको अपने पुरुषत्वका विश्वास दिलाकर संतुष्ट करना (उद्योग० १९२ । १—३२) । शिखण्डीका पुरुषत्व लौटानेके लिये यक्षके पास जाना और यक्षका अपनेको स्त्रीरूपमें ही रहनेका शाप प्राप्त हुआ बताकर इसे लौटा देना (उद्योग० १९२ । ५३–५७) । द्रोणाचार्यसे अस्त्रशिक्षाकी प्राप्ति (उद्योग० १९२ । ६०–६१) । प्रथम दिनके संग्राममें अश्वत्थामाके साथ द्वन्द्वयुद्ध (भीष्म० ४५ । ४६–४८) । द्रोणाचार्यके भयसे इसका युद्धसे हट जाना (भीष्म० ६९ । ३१) । अश्वत्थामाके साथ युद्ध और उनसे पराजित होना (भीष्म० ८२ । २६–३८) । शल्यके अस्त्रको दिव्यास्त्रद्वारा विदीर्ण करना (भीष्म० ८५ । २९–३०) । भीष्मको उत्तर देना और उनको मारनेके लिये प्रयत्न करना (भीष्म० १०८ । ४५–५०)। अर्जुनके प्रोत्साहनसे इसका भीष्मपर आक्रमण (भीष्म० ११० । १—३) । भीष्मपर धावा (भीष्म० ११४ । ४०) । अर्जुनके प्रोत्साहनसे भीष्मपर आक्रमण (भीष्म०

११७ । १-७) । अर्जुनसे सुरक्षित होकर भीष्मपर धावा करना (भीष्म० ११८ । ४३) । भीष्मपर प्रहार (भीष्म० ११९ । ४३-४४) । धृतराष्ट्रद्वारा इसकी वीरताका वर्णन (द्रोण० १० । ४५-४६) । भूरिश्रवाके साथ इसका युद्ध (द्रोण० १४ । ४३-४५) । इसके रथके घोड़ोंका वर्णन (द्रोण० २३ । १९-२०) । विकर्णके साथ युद्ध (द्रोण० २५ । ३६-३७) । बाह्लीकके साथ युद्ध (द्रोण० ९६ । ७—१०) । कृतवर्माके साथ युद्ध और उसके द्वारा इसकी पराजय (द्रोण० ११४ । ८२-९७) । कृपाचार्यद्वारा पराजय (द्रोण० १६९ । २२-३२) । कृतवर्माके साथ युद्धमें इसका मूर्च्छित होना (कर्ण० २६ । २६-३७) । कृपाचार्यसे पराजित होकर भागना (कर्ण०५४।१—२३)। कर्णद्वारा इसकी पराजय (कर्ण० ६१ । ७-२३) । प्रभद्रकोंकी सेना साथ लेकर इसका कृतवर्मा और महारथी कृपाचार्यके साथ युद्ध (शल्य०१५।७) । द्रोणपुत्र अश्वत्थामाको आगे बढ़नेसे रोकना (शल्य० १६ । ६) । अश्वत्थामाद्वारा इसका वध (सौप्तिक० ८ । ६५) ।

महाभारतमें आये हुए शिखण्डीके नाम-भीष्महन्ता, भीष्मनिहन्ता, शिखण्डिनी, द्रौपदेय, द्रुपदात्मज, पाञ्चाल्य, याज्ञसेनि आदि ।

शिखावर्त-एक यक्ष, जो कुबेरकी सभामें आकर उनकी सेवामें उपस्थित होता है (सभा० १० । १७) ।

शिखावान्-एक ऋषि, जो युधिष्ठिरकी सभामें विराजते थे (सभा० ४ । १४) ।

शिखी-कश्यपकुलमें उत्पन्न एक नाग (उद्योग० १०३।१२)।

शितिकण्ठ-एक नाग, जो बलरामजीके परमधाम-गमनके समय उनके स्वागतमें आया था (मौसल० ४ । १६) ।

शितिकेश-स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ६१) ।

शिनि-देवमीढके वंशज एक प्रधान यादव । इन्होंने अकेले ही समस्त राजाओंको परास्त करके वसुदेवके लिये देवकी-को जीता था (द्रोण० १४४ । ६-१०) । इनका सोमदत्तके साथ युद्ध । उन्हें पटककर लात मारना तथा उनकी चुटिया पकड़ना (द्रोण० १४४ । १२-१३) ।

शिपिविष्ट-भगवान् श्रीकृष्णका एक नाम । इसकी व्याख्या (शान्ति० ३४२ । ७१) ।

शिबि-(१) एक दैत्य, जो हिरण्यकशिपुका पुत्र था (आदि० ६५ । १८) । यह द्रुम नामक राजाके रूपमें पृथ्वीपर उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७ । ८) । (२) एक प्राचीन राजर्षि, जिनका संग प्राप्त करके ययाति स्वर्गको गये थे (आदि० ८६ । ६) । इनका ययातिसे अपनेको मिलनेवाले पुण्यलोकोंके विषयमें पूछना, ययातिका उत्तर देना । इनका ययातिको अपने पुण्यलोक देना और उनका अस्वीकार करना (आदि० ९३ । ६-९) । अष्टक आदि राजर्षियोंके साथ इनका स्वर्गलोकको गमन (आदि० ९३।१६ के बाद दा०पाठ)। स्वर्गके मार्गमें अष्टकके पूछनेपर ययातिद्वारा इनकी श्रेष्ठता तथा इनके दानकी महिमाका वर्णन (आदि० ९३ । १८-१९) । ये यमसभामें रहकर सूर्यपुत्र यमकी उपासना करते हैं (सभा० ८ । १०) । नारदजीद्वारा सुहोत्रके मार्ग रोकनेपर इनकी श्रेष्ठताका वर्णन (वन० १९४ । ५) । इनकी श्रेष्ठताकी परीक्षाके लिये देवताओंकी मन्त्रणा (वन० १९७ । १) । इनकी शरणागतरक्षाके विषयमें बाजरूपधारी इन्द्रसे वार्ता (वन० १९७ । ११—१९) । इनका अपने शरीरका मांस काटकर बाजके लिये तराजूके पलड़ेपर रखना और पूरा न पड़नेपर स्वयं भी उसपर चढ़ जाना (वन० १९७ । २१-२३) । कपोतरूपधारी अग्निद्वारा इन्हें वर-प्रदान (वन०१९७ । २६-२८) । देवर्षि नारदद्वारा इनकी महत्ताका प्रतिपादन । ब्राह्मणके लिये इनके द्वारा अपने पुत्रके वधका वृत्तान्त (वन० १९८ अध्याय) । विराटनगरमें गोहरणके समय कृपाचार्य और अर्जुनका युद्ध देखनेके लिये इन्द्रके साथ विमानपर बैठकर आये थे (विराट० ५६ । ९-१०) । ये ययाति-की पुत्री माधवीके गर्भसे उशीनरनरेशद्वारा उत्पन्न हुए थे (उद्योग० ११८ । १—२०) । इनका ययातिको अपना पुण्यफल देना (उद्योग० १२२ । ८-११) । इन्हें भारतवर्ष बहुत ही प्रिय रहा है (भीष्म० ९ । ७-९) । सृंजयको समझाते समय नारदजीद्वारा इनके यज्ञ और दानकी महत्ताका वर्णन (द्रोण० ५८ अध्याय) । श्रीकृष्णद्वारा नारद-सृंजय-संवादके उल्लेखपूर्वक इनके दान-यज्ञका वर्णन (शान्ति० २९ । ३९-४४) । यदुवंशियों-से इन्हें खड्गकी प्राप्ति (शान्ति० १६६ । ८०) । इनका ब्राह्मणके लिये अपने औरस पुत्रका दान तथा उससे इन्हें स्वर्गकी प्राप्ति (शान्ति० २३४ । १९; अनु० १३७ । ४) । अगस्त्यजीके कमलोंकी चोरी होनेपर शपथ खाना (अनु० ९४ । २६) । इनके द्वारा मांसभक्षण-निषेध (अनु० ११५ । ६१) । (३) एक देश तथा वहाँके निवासी । महाराज शान्तनुकी माता सुनन्दा यहींकी राजकुमारी थीं (आदि० ९५ । ४४) । युधिष्ठिरके श्वशुर गोवासन यहींके राजा थे (आदि० ९५ । ७६) । इस देशको पश्चिम-दिग्विजयके अवसरपर नकुलने जीता था (सभा० ३२ । ७) । यहाँके निवासी राजा युधिष्ठिरके राजसूययज्ञमें भेंट लेकर आये थे (सभा० ५२ । १४) । इस देशके राजा उशीनर थे (वन० १३१ । २१) ।

यह देश किसी समय जयद्रथके अधिकारमें था (वन० २६७ । ११) । अर्जुनने जयद्रथके साथ आये हुए शिबिदेशके सैनिकोंका संहार कर डाला (वन० २७१ । २८) । इस देशके महारथी अपनी सेनाके साथ दुर्योधन-की सहायतामें थे (उद्योग० १९५ । ७-८) । शिबि-देशको कभी कर्णने जीता था (द्रोण० ९१ । ३८–४०) । इस देशके लोग पहले कम समझवाले होते थे (कर्ण० ४५ । ३४-३५) । (४) उशीनर देश या कुलमें उत्पन्न एक राजा, जो द्रौपदीके स्वयंवरमें आया था (आदि० १८५ । १६) । यह पाण्डवपक्षका एक योद्धा था और द्रोणाचार्यके साथ लड़ा था (द्रोण० ८ । २५) । द्रोणा-चार्यद्वारा इसका वध (द्रोण० १५५ । १९) । (५) भूतपूर्व पाँच इन्द्रोंमेंसे एक, जो पर्वतकी कन्दरामें अवरुद्ध थे; इन सबको मानवलोकमें जन्म लेनेके लिये भगवान् शिवका आदेश (आदि० १९६ । १९–३०) ।

शिरीषक–एक कश्यपवंशी नाग (उद्योग० १०३ । १४) ।

शिरीषी–विश्वामित्रके ब्रह्मवादी पुत्रोंमेंसे एक (अनु० ४ । ५९) ।

शिलायूप–विश्वामित्रके ब्रह्मवादी पुत्रोंमेंसे एक (अनु० ४ । ५४) ।

शिली–तक्षक-कुलमें उत्पन्न एक नाग, जो जनमेजयके यज्ञमें जल मरा था (आदि० ५७ । ९) ।

शिव–(१) सच्चिदानन्दघन परमात्मा, जो 'ईशान' कहे गये हैं । ये ही त्रिदेव ब्रह्मा, विष्णु और शिव हैं (आदि० १ । २२) । ब्राह्मकल्पके आदिमें जो महान् दिव्य अण्ड प्रकट हुआ था, जिसमें सत्यस्वरूप, ज्योतिर्मय सनातन ब्रह्म अन्तर्यामीरूपसे प्रविष्ट हुआ है, उससे ब्रह्मा तथा स्थाणु नामवाले शिवका भी प्रादुर्भाव हुआ है (आदि० १ । ३०–३२) । इन्होंने ब्रह्माजीकी प्रार्थनासे त्रिलोकी-की रक्षाके लिये कालकूट नामक विषको कण्ठमें धारण कर लिया, तभीसे ये कण्ठमें नील चिह्नके कारण 'नीलकण्ठ' कहलाने लगे (आदि० १८ । ४१–४३) । स्थाणु नामसे ये ही परम तेजस्वी ग्यारह रुद्रोंके पिता हैं (आदि० ६६ । १) । अश्वत्थामा इनके अंशसे उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७ । ७२-७३) । इन्होंने गान्धारीको सौ पुत्र होनेका वरदान दिया था (आदि० १०९ । १०) । इन्होंने एक तपस्विनी ऋषिकन्याको पाँच पति प्राप्त होने-का वर दिया था, जो दूसरे जन्ममें द्रौपदी हुई थी (आदि० १६८ । ६—१५) । इनके द्वारा पाँच इन्द्रोंका हिमालयकी गुफामें अवरोध और उन्हें मनुष्य-लोकमें पाण्डवोंके रूपमें जन्म लेनेके लिये आदेश (आदि० १९६ । १६—३०) । तिलोत्तमाके रूपको देखनेके लिये इनके चतुर्मुख होनेकी उत्प्रेक्षा (आदि० २१० । २२–२८) । इनके द्वारा प्रभञ्जनको उसके कुलमें एक-एक संतान होनेका वरदान (आदि० २१४ । २०-२१) । बारह वर्षोंतक निरन्तर अग्निमें आहुति देनेके लिये इनका श्वेतकिको आदेश (आदि० २२२ । ४१–४८) । इनकी ब्राह्मणसे यज्ञ करानेके लिये राजा श्वेतकिको सामग्री जुटानेकी आज्ञा (आदि० २२२ । ५१–५३) । उनके यज्ञका सम्पादन करनेके लिये इनका दुर्वासाको आदेश (आदि० २२२ । ५७-५८) । एक हजार युग बीतनेपर बिन्दुसरपर यज्ञ करते हैं (सभा० ३ । १५) । ये पार्वतीदेवी तथा अपने गणोंके साथ कुबेरकी सभामें विराजमान होते हैं (सभा० १० । २१–२४) । जरासंधने उग्र तपस्याके द्वारा इनकी आराधना करके एक विशेष प्रकारकी शक्ति प्राप्त कर ली थी, इसीसे सब राजा उसमें परास्त हो गये थे (सभा० १४ । ६४-६५) । बाणासुरको इनका वरदान। इनके द्वारा बाणासुरकी राजधानी-की रक्षा तथा बाणासुरकी रक्षाके लिये इनका श्रीकृष्णके साथ भयानक युद्ध (सभा० ३८ । २९ के बाद दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ८२१–८२३) । ये भगवान् श्रीहरिके ललाटसे प्रकट हुए थे (वन० १२ । ४०) । अर्जुनकी उग्र तपस्याके विषयमें महर्षियोंका पिनाकपाणि महादेवजीके साथ वार्तालाप और इनका उन्हें आश्वासन देकर विदा करना (वन० ३८ । २८–३५) । इनका किरातवेष धारण करके धनुष-बाण ले नाना वेषधारी भूतों, सहस्रों स्त्रियों और भगवती उमाके साथ वनमें अर्जुनके समीप जाना और उन्हें मारनेकी घातमें लगे हुए मूक नामक वाराहरूपधारी दानवको अर्जुनके साथ ही बाण मारना । फिर अर्जुनके साथ इनका विवाद और युद्ध । इनपर अर्जुनके बाणोंका विफल होना । इनके साथ उनका मल्लयुद्ध । पराजित हुए अर्जुनका भगवान् शिवकी शरणमें जाकर इनकी पार्थिव मूर्तिका पूजन करना और अपनी चढ़ायी हुई मालाको किरातके सिरपर विद्यमान देख इन्हें पहचानकर अर्जुनका इनके चरणोंमें पड़ जाना । भगवान् शिवका संतुष्ट होकर उन्हें पाशुपतास्त्र देनेके लिये कहना । अर्जुनद्वारा इनका स्तवन । इनका अर्जुनको हृदयसे लगाना और उन्हें वरदान देकर पाशुपतास्त्रके धारण और प्रयोगका नियम बताते हुए उन्हें उस अस्त्रका उपदेश देना । उस प्रज्वलित अस्त्रका अर्जुनके पार्श्वभागमें स्थित दिखायी देना । इनके स्पर्शसे अर्जुनके अशुभका नष्ट होना तथा अर्जुनको स्वर्गलोकमें जानेकी आज्ञा दे उन्हें उनके अस्त्र गाण्डीव आदिको लौटाकर उमासहित भगवान् शिवका आकाशमार्गसे प्रस्थान (वन० अध्याय ३९ से ४० तक) । इनका मङ्कणक मुनिका नृत्य रोकनेके लिये

अपनी अँगुलीसे भस्म प्रकट करना (वन० ८३। ११७—१२५)। इनके द्वारा मङ्कणकको वरदान (वन० ८३। १३२—१३४)। इनके द्वारा राजा सगरको संतान-प्राप्तिके लिये वरदान (वन० १०६। १५-१६)। इनका राजा भगीरथको वर देना (वन० १०९। १-२)। गङ्गाको सिरपर धारण करना (वन० १०९। ९)। इनके वीर्यसे मिञ्जिकामिञ्जिक नामक जोड़ेकी उत्पत्ति (वन० २३१। ७०)। इनकी भद्रवट यात्रा (वन० २३१। ३८—५४)। देवासुरसंग्राममें महिषासुरके वधके लिये इनका स्कन्दको याद करना (वन० २३१। ९०)। इनके द्वारा जयद्रथको वरप्रदान (वन० २७२। २८)। इनके द्वारा नरसखा नारायणकी महिमाका वर्णन (वन० २७२। ३१—७७)। इनका भीष्मके वधके लिये अम्बाको वरदान देना (उद्योग० १८७। १२—१५)। इनका द्रुपदको एक कन्या उत्पन्न होनेका वर देना (उद्योग० १८८। ४-५)। भगवान् शिव मेरुपर्वतपर उमाके साथ रहते हैं। ये एक लाख वर्षोंतक गङ्गाजीको अपने सिरपर ही धारण किये रहे (भीष्म० ६। २५—३१)। शाकद्वीपमें इनकी आराधना की जाती है (भीष्म० ११। २८)। कुपित ब्रह्माको शान्त करनेके लिये इनका उनके पास जाना (द्रोण० ५२। ४३)। क्रोध शान्त करनेके लिये ब्रह्मासे इनकी प्रार्थना और इन दोनोंका परस्पर वार्तालाप (द्रोण० ५३। १—१४)। पुण्यजनोंद्वारा पृथ्वी-दोहनके समय ये बछड़ा बने थे (द्रोण० ६९। २४)। इनका नर-नारायणस्वरूप श्रीकृष्ण और अर्जुनका स्वागत करना और उनको अभीष्ट वर देनेको कहना (अर्जुनका स्वप्न) (द्रोण० ८०। ५१-५२)। अर्जुनको पाशुपतास्त्रका दान (अर्जुनका स्वप्न) (द्रोण० ८१। २१-२२)। ब्रह्मासहित देवताओंकी प्रार्थनापर प्रसन्न होकर इन्द्रको कवच प्रदान करना (द्रोण० ९४। ६१—६३)। सोमदत्तको पुत्र होनेका वर देना और अपनेको श्रीकृष्णसे भिन्न बताना (द्रोण० १४४। १६—१८)। नारायणद्वारा भगवान् शिवकी आराधना, स्तुति और इनसे वर-प्राप्तिकी कथा (द्रोण० २०१। ५६—९६)। व्यासजीका अर्जुनको भगवान् शिवकी महिमा बताना और त्रिपुर-वधके समय उनके रथ आदि सामग्रीका उल्लेख करना (द्रोण० २०२ अध्याय)। त्रिपुरोंसे भयभीत देवताओंको अभयदान देना (कर्ण० ३३। ६३)। देवताओंका आधा बल लेकर त्रिपुर-वधके लिये उद्यत होना (कर्ण० ३४। १४)। इनके विचित्र रथ आदिका वर्णन (कर्ण० ३४। १६—५७)। इनके द्वारा वृषभके खुरोंका चीरा जाना और घोड़ोंका स्तन काटना (कर्ण० ३४। १०५)। इनके द्वारा त्रिपुरोंका वध (कर्ण० ३४। ११४)। इनका परशुरामको वरदान देना (कर्ण० ३४। १४६-१४७)। कर्ण और अर्जुनके द्वैरथ युद्धमें इन्द्रके पूछनेपर अर्जुनकी विजय बतलाना (कर्ण० ८७। ६९—८५)। मङ्कणक मुनिपर कृपा (शल्य० ३८। ५२—५८)। स्कन्दको पार्षदरूपमें एक महान् असुर प्रदान करना (शल्य० ४५। २६)। स्कन्दको पताका और असुर-सेना देना (शल्य० ४६। ४६—४८)। अरुन्धतीकी परीक्षा लेना और उन्हें वर देना (शल्य० ४८। ३८—५४)। रातमें आक्रमण करते हुए अश्वत्थामाके अस्त्रोंको निगल जाना (सौप्तिक० ६। ११—१७)। अश्वत्थामाके आत्मसमर्पणसे प्रसन्न होकर उसके शरीरमें प्रवेश करना और उसे एक खड्ग प्रदान करना (सौप्तिक० ७। ६६)। इनका कुपित होकर अपने लिङ्गको काट डालना (सौप्तिक० १७। २१)। इनके कोपसे देवता, यज्ञ और जगत्‌की दुरवस्था (सौप्तिक० १८। ४—१९)। इनकी कृपासे सबका स्वस्थ होना (सौप्तिक० १८। २०—२३)। ये गजासुरके चर्मको वस्त्रकी भाँति धारण करते हैं। सर्वस्व-समर्पण नामक यज्ञमें अपने-आपको भी होमकर देवताओंके भी देवता हो गये हैं (शान्ति० २०। १२)। परशुरामजीने इनसे अनेक प्रकारके अस्त्र और अत्यन्त तेजस्वी कुठार प्राप्त किये थे (शान्ति० ४९। ३३)। इन्होंने ब्रह्माजीके दण्डनीति-शास्त्रको सबसे पहले स्वयं ही ग्रहण करके संक्षिप्त किया। इनसे इन्द्रने उसको ग्रहण किया (शान्ति० ५९। ८०—८२)। एक मरे हुए ब्राह्मण-बालकको जीवन तथा गीध एवं गीदड़को भी भूख मिटनेका वर देना (शान्ति० १५३। ११४-११५)। ब्रह्मासे खड्ग प्राप्त करके दानवोंको परास्त करना (शान्ति० १६६। ५४—६३)। फिर भगवान् शिवका उसे भगवान् विष्णुके हाथमें देना (शान्ति० १६६। ६६)। कुपित हुए ब्रह्माजीके क्रोधको शान्त करना (शान्ति० २५७। ६—१२)। वृत्रासुरको मारनेके लिये इन्द्रको प्रोत्साहन और अपने अंशसे उनमें प्रवेश करना (शान्ति० २८१। ३४—३८)। दक्ष-यज्ञके विषयमें पार्वतीजीसे वार्तालाप और दक्ष-यज्ञका नाश (शान्ति० २८३। २३—४४)। पार्वतीको सान्त्वना देना (शान्ति० २८४। २४—२८)। अपने शरीरसे वीरभद्रको प्रकट करना (शान्ति० २८४। २९)। दक्षके शरणागत होनेपर हवनकुण्डसे प्रकट हो उनपर कृपा करना (शान्ति० २८४। ५८—६०)। सहस्रनामद्वारा दक्षके स्तुति करनेपर उनको वरदान देकर अन्तर्धान होना (शान्ति० २८४। १८२—१९१)।

उशनापर इनका कोप करना और उन्हें शिश्नद्वारसे बाहर निकालना (शान्ति० २८९ । १४—३४) । शुक्राचार्यको अभयदान देना (शान्ति० २८९ । ३६) । आसुरभावको नष्ट करना (शान्ति० २९४ । १६-१७) । व्यासजीको पुत्र-प्राप्तिके लिये वर देना (शान्ति० ३२३ । २७-२९) । व्यासपुत्र शुकदेवका उपनयन-संस्कार करना (शान्ति० ३२४ । १९) । पुत्रशोकमें व्याकुल व्यासजीको समझाना (शान्ति० ३३३ । ३४—३८) । नारायणके साथ युद्ध करना (शान्ति० ३४२ । ११०—११६) । वैजयन्त पर्वतपर ब्रह्मासे परमपुरुषके विषयमें इनका प्रश्न (शान्ति० ३५० । २३-२४) । शिवके माहात्म्यका विशेष वर्णन (अनु० १४ अध्याय) । तण्डि मुनिको वर प्रदान करना (अनु० १६ । ६९-७१) । इनके सहस्रनामका वर्णन (अनु० १७ अध्याय) । दक्षने इनको एक वृषभ प्रदान किया, जो इनका वाहन और ध्वज हुआ (अनु० ७७ । २७-२८) । वरुण-रूपसे इनके यज्ञका वर्णन (अनु० ८५ । ८८—११६) । इनके धर्मसम्बन्धी रहस्यका वर्णन (अनु० १३३ अध्याय) । तीसरा नेत्र प्रकट करके हिमालयको दग्ध करके पुनः उसे प्रकृतिस्थ करना (अनु० १४० । ३३—३८) । पार्वतीजीके साथ संवाद (अनु० १४० । ४२ के बादसे अनु० १४५ अध्यायतक) । पार्वतीजीसे स्त्री-धर्मका वर्णन करनेके लिये कहना (अनु० १४६ । २—१२) । इनके द्वारा श्रीकृष्णकी वंशपरम्परा तथा माहात्म्यका कथन (अनु० १४७ अध्याय) । इनके द्वारा दक्ष-यज्ञ-विध्वंस (अनु० १६० । ११—२४) । इनका त्रिपुरोंको दग्ध करना (अनु० १६० । २५—३१) । पाँच शिखावाले बालकका रूप धारण करके इनका पार्वतीकी गोदमें आना (अनु० १६० । ३२) । ये मुञ्जवान् नामक पर्वतपर सदा तपस्या करते हैं (आश्व० ८ । १) । इनकी नाममयी स्तुति (आश्व० ८ । १२—३२) ।

महाभारतमें आये हुए शिवके नाम—अज, अम्बिकाभर्ता, अनङ्गाङ्गहर, अनन्त, अन्धकघाती, अन्धकनिपाती, अथर्वा, बहुरूप, भगघ्न, भव, भवघ्न, भीम, शङ्कर, शर्व, शिपिविष्ट, श्मशानवासी, श्रीकण्ठ, शुक्र, शूलभृत्, शूलधर, शूलधृक्, शूलहस्त, शूलाङ्क, शूलपाणि, शूली, दक्षक्रतुहर, धन्वी, ध्रुव, धूर्जटि, दिग्वासा, दिव्यगोवृषभ-ध्वज, एकाक्ष, गणाध्यक्ष, गणेश, गौरीश, गौरीहृदय-वल्लभ, गिरीश, गिरिश, गोवृषाङ्क, गोवृषध्वज, गोवृषो-त्तमवाहन, हर, हर्यक्ष, जटाधर, जटिल, जटी, कामाङ्ग-नाश, कपाली, कापालि, कपर्दी, खट्वाङ्गधारी, कृत्तिवासा, कुमारपिता, ललाटाक्ष, लेलिहान, महादेव, महागणपति, महायोगी, महेश, महेश्वर, महिषघ्न, मखघ्न, मीढ्वा, मृगव्याध, मुनीन्द्र, नन्दीश्वर, निशाचरपति, नीलग्रीव, नीलकण्ठ, नीललोहित, पशुभर्ता, पशुपति, पिनाकधृक्, पिनाकगोप्ता, पिनाकहस्त, पिनाकपाणि, पिनाकी, पिङ्गल, प्रजापतिमखघ्न, रुद्र, ऋषभकेतु, सर्व, सर्वयोगेश्वरेश्वर, स्थाणु, त्रिशूलहस्त, त्रिशूलपाणि, त्रिलोचन, त्रिनयन, त्रिनेत्र, त्रिपुरघाती, त्रिपुरघ्न, त्रिपुरहर्ता, त्रिपुरमर्दन, त्रिपुरनाशन, त्रिपुरान्तक, त्रिपुरान्तकर, त्रिपुरार्दन, त्रिपुरविघ्न, त्र्यक्ष, त्र्यम्बक, उग्र, उग्रेश, उमापति, विशालाक्ष, विलोहित, विरूपाक्ष, वृषभध्वज, वृषभाङ्क, वृषभवाहन, वृषध्वज, वृषकेतन, वृषाङ्क, वृषवाहन, याम्य, यति, योगेश्वर आदि । (२) एक अग्नि, जो शक्तिकी आराधनामें लगे रहते हैं । ये समस्त दुःखातुर मनुष्योंका शिव (कल्याण) करते हैं; इसीसे इन्हें शिव कहते हैं (वन० २२१ । २) ।

शिवा—(१) अनिल नामक वसुकी भार्या । इनके दो पुत्र थे—मनोजव तथा अविज्ञातगति (आदि० ६६ । २५) । (२) अङ्गिराकी भार्या, जो शील, रूप और सद्गुणोंसे सम्पन्न थीं (वन० २२५ । १) । (३) भारतवर्षकी एक नदी, जिसका जल यहाँके निवासी पीते हैं (भीष्म० ९ । २५) ।

शिवोद्भेद—एक तीर्थ, जहाँ सरस्वतीका दर्शन होता है । उसमें स्नान करके मनुष्य सहस्र गोदानका फल पाता है (वन० ८२ । ११२-११३) ।

शिशिर—सोमनामक वसुद्वारा मनोहराके गर्भसे उत्पन्न चार पुत्रोंमेंसे एक । शेष तीनके नाम हैं—वर्चा, प्राण और रमण (आदि० ६६ । २२) ।

शिशु—भगवान् स्कन्दकी कृपासे सप्तमातृकाओंके पुत्र, जो अद्भुत पराक्रमी, अत्यन्त दारुण और भयङ्कर थे । इनकी आँखें रक्तवर्णकी थीं । मातृकाओंसहित इन्हें 'वीराष्टक' कहा जाता है (वन० २२८ । ११-१२) ।

शिशुपाल—चेदिदेशका एक प्रसिद्ध राजा, जिसके रूपमें हिरण्यकशिपु दैत्य ही इस भूतलपर उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७ । ५) । द्रौपदीके स्वयंवरमें इसका आगमन (आदि० १८५ । २३) । यह दमघोषका पुत्र था । द्रौपदी-स्वयंवरमें धनुषपर हाथ लगाते ही यह घुटनोंके बल पृथ्वीपर गिर पड़ा था (आदि० १८६ । २५) । यह कलिङ्गराजकी कन्याके स्वयंवरमें भी गया था (शान्ति० ४ । ६) । युधिष्ठिरके मयनिर्मित सभाभवनमें यह भी विराजमान होता था (सभा० ४ । २९) । यह जरासंधका आश्रय लेकर उसका प्रधान सेनापति हो गया था (सभा० १४ । १०-११) । भीमसेन अपनी

दिग्विजययात्रामें इसके द्वारा सम्मानित हुए थे (सभा० २९। ११-१२) । यह युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें आया था (सभा० ३४ । १४) । राजसूय यज्ञमें अग्रपूजाके समय श्रीकृष्णके प्रति इसके आक्षेपपूर्ण वचन (सभा० ३७ अध्याय) । युधिष्ठिरका इसे समझाना और भीष्मका इसके आक्षेपोंका उत्तर देना (सभा० ३८। १—२९)। श्रीकृष्णकी अग्रपूजाके कारण राजसूय यज्ञमें उपद्रव मचानेके लिये इसका प्रयत्न (सभा० ३९ । ११-१२) । इसके द्वारा भीष्मकी निन्दा (सभा० ४१ अध्याय) । इसकी बातोंसे भीमसेनका कुपित होना (सभा० ४२ । १—१२) । भीष्मजीके द्वारा इसके जन्मकालिक वृत्तान्तका वर्णन । इसके जन्म-समयकी आकाशवाणी, इसकी मृत्युके निमित्तका उद्घोष तथा श्रीकृष्णकी गोदमें आनेपर इसकी दो भुजाओं तथा एक आँखका विलीन होना आदि (सभा० ४३ अध्याय) । इसका भीष्मको फटकारना (सभा० ४४ । ६—३२) । श्रीकृष्णकी अनुपस्थितिमें इसके द्वारा द्वारकाका दाह (सभा० ४५ । ७) । इसके द्वारा वसुदेवजीके यज्ञीय अश्वका अपहरण (सभा० ४५ । ९) । इसका बभ्रुकी पत्नीका हरण करना (सभा० ४५ । १०) । विशाला-नरेश (अपने मामा) की पुत्रीका अपहरण (सभा० ४५। ११) ।श्रीकृष्णद्वारा इसका शिरश्छेदन (वध) (सभा० ४५ । २५) । परमात्मा श्रीकृष्णमें इसके तेजका समावेश (सभा० ४५। २६-२७) । श्रीकृष्णका अर्जुनके प्रति इसके वधका कारण बताना (द्रोण० १८१ । २१-२२) ।

महाभारतमें आये हुए शिशुपालके नाम—चैद्य, चेदिप, चेदिपति, चेदिपुङ्गव, चेदिराट्, चेदिराज, चेदिवृष, श्रौतश्रवस, दमघोषसुत, दमघोषात्मज आदि ।

शिशुपालवधपर्व—सभापर्वके अन्तर्गत एक अवान्तर पर्व (अध्याय ४० से ४५ तक) ।

शिशुमारमुखी—स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । २२) ।

शिशुरोमा—तक्षककुलमें उत्पन्न एक नाग, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें जल गया (आदि० ५७ । १०) ।

शीघ्रा—भारतवर्षकी एक प्रमुख नदी, जिसका जल यहाँके निवासी पीते हैं (भीष्म० ९ । २९) ।

शीतपूतना—भयङ्कर आकारवाली एक पिशाची, जो मानवी स्त्रियोंके गर्भका हरण करनेवाली है (वन० २३० । २८)।

शीताशी—शाकद्वीपकी एक पवित्र जलवाली नदी (भीष्म० ११ । ३२) ।

शीलवान्-एक दिव्य महर्षि, जो हस्तिनापुर जाते समय मार्गमें श्रीकृष्णसे मिले थे (उद्योग० ८३ । ६४ के बाद दाक्षिणात्य पाठ) ।

शुक-(१) शर्यातिवंशज पृषतके पुत्र, जो अपने पराक्रमसे शत्रुओंको संतप्त करनेवाले थे । इन्होंने सारी पृथ्वीको जीतकर अपने अधिकारमें कर लिया था और अश्वमेध-जैसे सौ बड़े-बड़े यज्ञोंका अनुष्ठान किया था, देवता तथा पितरोंकी आराधना की थी । तदनन्तर राज्य त्यागकर ये शतशृङ्ग पर्वतपर आ गये और शाक एवं फल-मूलका आहार करते हुए तपस्या करने लगे । इन्होंने ही श्रेष्ठ उपकरणों तथा शिक्षाके द्वारा पाण्डवोंकी योग्यता बढ़ायी, इनके कृपाप्रसादसे सभी पाण्डव धनुर्वेदमें पारंगत हो गये थे । इन्होंने अर्जुनको नाना प्रकारके अस्त्र-शस्त्र प्रदान किये थे (आदि० १२३ । ३१ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ३६९) ।(२) रावणका मन्त्री, जो वानरका रूप धारण करके श्रीरामकी सेनामें आनेपर विभीषणद्वारा बंदी बना लिया गया था (वन० २८३ । ५२) । राक्षसरूपमें प्रकट होनेपर श्रीरामने अपनी सेनाका दर्शन कराकर इसे मुक्त कर दिया था (वन० २८३ । ५३) । (३) गान्धारराज सुबलका एक पुत्र, शकुनिका भाई, इरावान्द्वारा इसका वध (भीष्म० ९० । २६—३२) ।

शुकदेव—व्यासजीके पुत्र तथा शिष्य । व्यासजीने पहले इन्हींको महाभारत ग्रन्थका अध्ययन कराया था (आदि० १ । १०४) । शुकदेवजीने गन्धर्व, यक्ष तथा राक्षसोंको चौदह लाख श्लोकोंसे युक्त महाभारतकी कथा सुनायी थी (आदि० १ । १०६-१०८; स्वर्गा० ५ । ५५-५६) । इन्होंने सम्पूर्ण वेदों तथा महाभारतकी भी इन्हें शिक्षा दी थी (आदि० ६३ । ८९) । ये युधिष्ठिरकी सभामें विराजमान होते थे (सभा० ४ । ११) । धर्मपालनसे ही इनका हृदय शुद्ध हुआ है (वन० ३१ । १२) । व्यासजीसे इनके अनेक प्रश्न (शान्ति० २३१ । ९) । शुकदेवजीके प्रश्नके अनुसार व्यासजीके द्वारा ज्ञानके साधन और उसकी महिमा, योगसे परमात्माकी प्राप्ति, कर्म और ज्ञानके अन्तर, ब्रह्मप्राप्तिके उपाय, ब्रह्मचर्य-आश्रम, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ और संन्यास-आश्रम, संन्यासके आचरण, परमात्माकी श्रेष्ठता, उसके दर्शनके उपाय, ज्ञानोपदेशके पात्रके निर्णय, महाभूतादि तत्त्वोंके विवेचन, बुद्धिकी श्रेष्ठता, प्रकृति-पुरुष-विवेक, ज्ञानके साधन, ज्ञानीके लक्षण, परमात्म-प्राप्तिके साधन, संसारनदी, ज्ञानसे ब्रह्मकी प्राप्ति, ब्रह्मवेत्ताके लक्षण, शरीरमें पञ्चभूतोंके कार्य और गुणोंकी पहचान, परमात्मसाक्षात्कारके प्रकार, कामवृक्ष, उसे काटकर मोक्षप्राप्ति, शरीरनगर तथा पञ्चभूत, मन और बुद्धिके गुण आदिका वर्णन (शान्ति० २३९ । २ से २५५ अध्यायतक) ।

पिताके आदेशसे मोक्षतत्त्वके उपदेशके लिये इनका गुरुके पास जाना (शान्ति० ३२१ । ९४) । अरणिकाष्ठसे व्यासजीके वीर्यद्वारा इनकी उत्पत्तिकी चर्चा (शान्ति० ३२४ । ९-१०) । शिवजीद्वारा इनका उपनयन संस्कार (शान्ति० ३२४ । १९) । पिताकी आज्ञासे मिथिलामें जाना और वहाँ स्वागत-सत्कारके बाद इनका ध्यानस्थित होना (शान्ति० ३२५ अध्याय) । राजा जनकद्वारा इनका पूजन (शान्ति० ३२६ । ३-५) । इनका राजाको अपने आगमनका कारण बताना (शान्ति० ३२६ । १०-१३) । राजा जनकसे ज्ञान-विज्ञानविषयक प्रश्न (शान्ति० ३२६ । २०-२१) । मिथिलासे लौटकर इनका पिताके पास आना (शान्ति० ३२७ । ३१) । व्यासजीका इन्हें अनध्यायका कारण बताते हुए प्रवह आदि सात वायुओंका परिचय देना (शान्ति० ३२८ । २८—५६) । इनका नारदजीसे कल्याण-प्राप्तिका उपाय पूछना (शान्ति० ३२९ । ४) । सूर्यलोकमें जानेका निश्चय करके नारदजी और व्यासजीसे आज्ञा माँगना (शान्ति० ३३१ । ४९-६२) । इनकी ऊर्ध्वगतिका वर्णन (शान्ति० ३३२ अध्याय) । इनकी परम पद-प्राप्ति (शान्ति० ३३३ । १-१८) । अपने पिता व्यासजीसे इनका विविध प्रश्न करना (अनु० ८१ । ८-११) ।

महाभारतमें आये हुए शुकदेवजीके नाम-आरणेय, अरणीसुत, द्वैपायनात्मज, वैयासकि, व्यासात्मज आदि ।

शुकी-ताम्राकी पुत्री । इसने शुकों (तोतों) को उत्पन्न किया (आदि० ६६ । ५६, ५९) ।

शुक्तिमती-(१) एक नदी, जो राजा उपरिचरवसुकी राजधानीके समीप बहती थी । कोलाहलपर्वतने कामवश इस दिव्यरूपधारिणी नदीका अवरोध कर लिया था; परंतु राजा उपरिचरवसुके पादप्रहारसे पर्वतमें दरार पड़ गयी और उसी मार्गसे यह नदी पुनः बहने लगी । इसके गर्भसे कोलाहलपर्वतद्वारा जुड़वीं संतान उत्पन्न हुई, जिन्हें शुक्तिमतीने राजा उपरिचरवसुको समर्पित कर दिया । राजाने पुत्रको अपना सेनापति बनाया और पुत्रीको, जिसका नाम गिरिका था, अपनी पत्नी बना लिया (आदि० ६३ । ३४-४१) । इसकी गणना भारतकी प्रमुख नदियोंमें है (भीष्म० ९ । ३५) । (२) एक नगरी, जो चेदिनरेश धृष्टकेतुकी राजधानी थी (वन० २२ । ५०) ।

शुक्तिमान्-एक पर्वत, जिसे पूर्व-दिग्विजयके अवसरपर भीमसेनने जीता था (सभा० ३० । ५) । यह भारतवर्षके सात कुलपर्वतोंमेंसे एक है (भीष्म० ९ । ११) ।

शुक्र-एक राक्षस (अनु० १४ । २१४) ।

शुक्राचार्य-महर्षि भृगुके पुत्र, जो असुरोंके उपाध्याय थे, इनका दूसरा नाम उशना था । इनके चार पुत्र हुए, जो दैत्योंके पुरोहित थे (आदि० ६५ । ३६) । (कहीं-कहीं इन्हें भृगुका पौत्र भी कहा गया है ।) ये महर्षि भृगुके पौत्र और कविके पुत्र थे । ये ही ग्रह होकर तीनों लोकोंके जीवनकी रक्षाके लिये वृष्टि, अनावृष्टि, भय एवं अभय उत्पन्न करते हैं । ब्रह्माजीकी प्रेरणासे समस्त लोकोंका चक्कर लगाते रहते हैं । महाबुद्धिमान् शुक्र ही योगके आचार्य तथा दैत्योंके गुरु हुए । ये ही बृहस्पतिके रूपमें प्रकट हो देवताओंके भी गुरु हुए (आदि० ६६ । ४२-४३) । दैत्योंके द्वारा इनका पुरोहितके पदपर वरण तथा बृहस्पतिके साथ इनकी स्पर्धा (आदि० ७६ । ६-७) । इनके द्वारा मृतसंजीवनी विद्याके बलसे मरे हुए दानवोंका जीवित होना (आदि० ७६ । ८) । इनकी पुत्रीका नाम देवयानी था (आदि० ७६ । १५) । कचका दानवराज वृषपर्वाके नगरमें जाकर शुक्राचार्यसे अपनेको शिष्यरूपसे ग्रहण करनेके लिये प्रार्थना करना और इनकी सेवामें रहकर एक सहस्र वर्षतक ब्रह्मचर्यपालनके लिये अनुमति माँगना तथा इनका कचको स्वागतपूर्वक ग्रहण करना (आदि० ७६ । १८-१९) । इनका कचके लिये चिन्तित हुई देवयानीको आश्वासन देकर संजीवनी-विद्याका प्रयोग करके कचको पुकारना और उस विद्याके बलसे कचका कुत्तोंके शरीरको विदीर्ण करके निकल आना (आदि० ७६ । ३१—३४) । इनके द्वारा कचको दोबारा जीवनदान (आदि० ७६ । ४१-४२) । तीसरी बार दानवोंने कचको मारकर आगमें जलाया और उनकी जली हुई लाशका चूर्ण बनाकर मदिरामें मिला दिया, फिर वही मदिरा उन्होंने ब्राह्मण शुक्राचार्यको पिला दी (आदि० ७६ । ४३) । देवयानीका पुनः कचको जीवित करनेके लिये इनसे अनुरोध, शुक्राचार्यका कचको जिलानेसे विरत होना तथा देवयानीके प्राणत्याग करनेके लिये उद्यत होनेपर इनका असुरोंपर क्रोध करके संजीवनी विद्याके द्वारा कचको पुकारना, कचका अपनेको इनके उदरमें स्थित बताना और इनके पूछनेपर मदिराके साथ इनके पेटमें पहुँचनेका वृत्तान्त निवेदन करना । इनका कचको जीवित करनेसे अपने वधकी आशंका बताना । देवयानीका पिता और कच दोनोंमेंसे किसीके भी नाशसे अपनी मृत्यु बताना । तब इनका कचको सिद्ध बताकर उन्हें संजीवनी विद्याका उपदेश करना । कचका इनके पेटसे निकलकर विद्याके बलसे पुनः इन्हें जीवित कर देना

और प्रणाम करके इन्हें अपना पिता तथा माता मानना तथा कभी भी इनसे द्रोह न करनेकी प्रतिज्ञा करना (आदि० ७६ । ४४—६४) । इनका मदिरा-पानको ब्रह्महत्याके समान बतलाकर उसे ब्राह्मणोंके लिये सर्वथा निषिद्ध घोषित करना (आदि० ७६ । ६७-६८) । देवयानीके प्रति इनके द्वारा अपने प्रभावका वर्णन (आदि० ७८ । ३७—४०) । शर्मिष्ठाद्वारा पीड़ित हुई देवयानीको इनका आश्वासन देना, सहनशीलताकी प्रशंसा करते हुए क्रोधका वेग रोकनेवालोंको परम श्रेष्ठ बतलाना (आदि० ७९ । १–७) । अधर्मका फल अवश्य प्राप्त होता है—इसे दृष्टान्तपूर्वक वृषपर्वाको समझाना (आदि० ८० । १–६) । इनके द्वारा देवयानीको प्रसन्न करनेके लिये वृषपर्वाको आदेश (आदि० ८० । ९–१२) । ययातिके साथ अपने विवाहके लिये इनसे देवयानीकी प्रार्थना (आदि० ८१ । ३०) । ययातिसे अपनी पुत्रीको ग्रहण करनेके लिये कहना (आदि० ८१ । ३१) । धर्म-लोपके भयसे भीत हुए ययातिको इनका आश्वासन देना (आदि० ८१ । ३३) । देवयानीके साथ विवाह करने एवं शर्मिष्ठाके साथ दारोचित व्यवहार न करनेके लिये ययातिको इनकी आज्ञा (आदि० ८१ । ३४-३५) । इनके द्वारा ययातिको जराग्रस्त होनेका शाप (आदि० ८३ । ३१) । फिर उनके प्रार्थना करने-पर इनका ययातिको अपनी वृद्धावस्था दूसरेसे बदल सकनेकी सुविधा देना (आदि० ८३ । ३९) । ये देव-राज इन्द्रकी सभामें विराजमान होते हैं (सभा० ७ । २२) । ग्रहरूपसे ब्रह्माजीकी सभामें भी उपस्थित होते हैं (सभा० ११ । २९) । ये मेरुपर्वतके शिखरपर दैत्योंके साथ निवास करते हैं । सारे रत्न और रत्नमय पर्वत इन्हींके अधिकारमें हैं । भगवान् कुबेर इन्हींसे धनका चतुर्थ भाग प्राप्त करके उसे उपयोगमें लाते हैं (भीष्म० ६ । २२-२३) । ये शरशय्यापर पड़े हुए भीष्मजीको देखनेके लिये गये थे (शान्ति० ४७ । ८) । महाराज पृथुके पुरोहित बने थे (शान्ति० ५९ । ११०) । इन्द्रको श्रेयःप्राप्तिके लिये प्रह्लादके पास भेजना (शान्ति० १२४ । २७) । ये वानप्रस्थ-धर्मका पालन करके स्वर्ग-को प्राप्त हुए हैं (शान्ति० २४४ । १७-१८) । वृत्रासुरसे देवताओंद्वारा पराजित होनेपर भी दुखी न होनेका कारण पूछना (शान्ति० २७९ । १५) । सनत्कुमारजीसे वृत्रासुरको भगवान् विष्णुका माहात्म्य बतानेके लिये कहना (शान्ति० २८० । ५) । योगबल-से कुबेरके धनका अपहरण करना (शान्ति० २८९ । ९) । भयके कारण सूर्यके उदरमें लीन होना (शान्ति० २८९ । १९-२०) । शिवजीके लिंगसे निर्गत होनेके कारण इनका शुक्र नाम पड़ना और पार्वतीजीका इन्हें अपना पुत्र स्वीकार करना (शान्ति० २८९ । ३२–३५) । इनके द्वारा महादेवजीको शाप (शान्ति० ३४२ । २६) । इन्हें तण्डिसे शिवसहस्रनामका उपदेश प्राप्त हुआ था और इन्होंने गौतमको उसका उपदेश दिया (अनु० १७ । १७७) । ये भृगुके सात पुत्रोंमें-से एक हैं (अनु० ८५ । १२९) । बलिके पूछनेपर उन्हें पुष्पादि-दानका महत्त्व बताना (अनु० ९८ । १६–६४) ।

महाभारतमें आये हुए शुक्राचार्यके नाम-भार्गव, भार्गवदायाद, भृगुश्रेष्ठ, भृगूद्वह, भृगुकुलोद्वह, भृगुनन्दन, भृगुसूनु, कविपुत्र, कविसुत, काव्य, उशना आदि ।

शुक्र-पाण्डवपक्षका एक पाञ्चालदेशीय योद्धा (द्रोण० २३ । ५९) । कर्णद्वारा इसका घायल होना (कर्ण० ५६ । ४५) ।

शुचि-(१) एक राजा, जो यमसभामें रहकर सूर्यपुत्र यमकी उपासना करते हैं (सभा० ८ । १४) । (२) एक वणिक्, व्यापारीदलका स्वामी, इसकी वनमें दमयन्ती-से भेंट और बातचीत (वन० ६४ । १२७–१३१) । (३) एक अग्नि, जिनमें हवाके चलनेसे अग्नियोंके परस्पर सम्पर्क हो जानेपर अष्टाकपाल पुरोडाशद्वारा आहुति डाली जाती है (वन० २२१ । २४) । (४) विश्वामित्रके ब्रह्मवादी पुत्रोंमेंसे एक (अनु० ४ । ५४) । (५) महर्षि भृगुके पुत्र (अनु० ८५ । १२८) ।

शुचिका-एक अप्सरा, जिसने अर्जुनके जन्म-महोत्सवमें नृत्य किया था (आदि० १२२ । ६२) ।

शुचिव्रत-एक प्राचीन राजा (आदि० १ । २३६) ।

शुचिश्रवा-भगवान् श्रीकृष्णका नाम । इस नामकी निरुक्ति (शान्ति० ३४२ । ९१) ।

शुचिस्मिता-एक अप्सरा, जो कुबेरकी सभामें रहकर उनकी सेवा करती है (सभा० १० । १०) ।

शुण्डिक-पूर्व-भारतका एक जनपद, जिसे कर्णने जीता था (वन० २५४ । ८) ।

शुनःशेप-ऋचीक (अजीगर्त) का एक महातपस्वी पुत्र, जिसे राजा हरिश्चन्द्रके यज्ञमें यज्ञपशु बनाकर लाया गया था । विश्वामित्रने देवताओंको संतुष्ट करके इसे छुड़ा लिया था; इसलिये यह विश्वामित्रके पुत्रभावको प्राप्त हो गया । देवताओंके देनेसे इसका नाम 'देवरात' हुआ और यह विश्वामित्रका ज्येष्ठ पुत्र माना गया (अनु० ३ । ६–८) ।

शुनःसख-संन्यासीके वेषमें कुत्तेके साथ विचरनेवाले

इन्द्रका नाम। इनका सप्तर्षियोंके पास जाना (अनु० ९३। ५९)। कृत्याका वध करके सप्तर्षियोंकी रक्षा करना (अनु० ९३। १०५)। सप्तर्षियोंके मृणाल चुराना (अनु० ९३। १०९)। सप्तर्षियोंके सामने शपथ खाना (अनु० ९३। १३२)। सप्तर्षियोंको अपना परिचय देना (अनु० ९३। १३४-१३९)। अगस्त्यजीके कमलोंकी चोरी होनेपर शपथ खाना (अनु० ९४। ४०)।

शुनक-(१) एक महर्षि, जो रुरुके पुत्र थे। इनका जन्म प्रमद्वराके गर्भसे हुआ था। शुनक वेदोंके पारङ्गत विद्वान् और धर्मात्मा थे। इन्हें शौनकका पितामह कहा गया है (आदि० ५। १०)। ये युधिष्ठिरकी सभामें विराजते थे (सभा० ४। १०)। श्रीकृष्णके दूत बनकर हस्तिनापुर जाते समय मार्गमें इन्होंने उनका अभिनन्दन किया था (उद्योग० ८३। ६४ के बाद दाक्षिणात्य पाठ)। कहीं-कहीं शौनकको शुनकका पुत्र बताया गया है (अनु० ३० । ६५)। (२) एक राजर्षि, जो चन्द्रहन्तानामक असुरके अंशसे उत्पन्न हुए थे (आदि० ६७। ३८)। चन्द्रतीर्थमें इन्हें परमधामकी प्राप्ति हुई थी (वन० १२५। १८-१९)। महाराज हरिणाश्वसे इन्हें खड्गकी प्राप्ति हुई और इन्होंने वह खड्ग उशीनरको प्रदान किया था (शान्ति० १६६। ७९)।

शुभवक्त्रा-स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६। ७)।

शुभाङ्गद-एक राजा, जो द्रौपदीके स्वयंवरमें पधारे थे (आदि० १८५। २२)।

शुभाङ्गी-एक दशार्हकुलकी कन्या, जो सोमवंशी महाराज कुरुकी पत्नी थी। इसके गर्भसे विदूर नामक पुत्र उत्पन्न हुआ था (आदि० ९५। ३९)।

शूकर-एक देश, जहाँके राजा कृतिने युधिष्ठिरको राजसूय यज्ञमें सैकड़ों गजरत्न भेंट किये थे (सभा० ५२। २५)।

शूद्र-चौथे वर्ण या जातिके लोग, इन्हें नकुलने दिग्विजयके समय जीतकर अपने अधीन कर लिया था (सभा० ३२। १०)। एक दक्षिण भारतीय जनपदका भी यह नाम है (भीष्म० ९। ६७)। भगवान्‌की शरणमें जानेसे पापयोनिके जीव तथा शूद्र भी परमगतिको प्राप्त होते हैं (भीष्म० ३३। ३२)। शूद्र जनपदके लोग दुर्योधनको आगे करके कर्णके पृष्ठभागमें रहकर धृतराष्ट्र-पुत्रोंके साथ-साथ युद्धक्षेत्रमें गये थे (द्रोण० ७। १५-१६)।

शून्यपाल-दिव्पलोकके एक ऋषि, जो पाण्डवोंके दूत बनकर हस्तिनापुरको जाते हुए श्रीकृष्णसे मार्गमें मिले थे (उद्योग० ८३। ६४ के बाद दाक्षिणात्य पाठ)।

ये एक वानप्रस्थी ऋषि थे और वानप्रस्थधर्मका पालन करनेसे स्वर्गको प्राप्त हो गये (शान्ति० २४४। १८)।

शूर-(१) एक प्राचीन नरेश (आदि० १। २३२)। (२) महाराज ईलिनके द्वारा रथन्तरीके गर्भसे उत्पन्न पाँच पुत्रोंमेंसे एक। शेष चारके नाम हैं—दुष्यन्त, भीम, प्रवसु और वसु (आदि० ९४। १७-१८)। (३) सौवीरदेशका एक राजकुमार (वन० २६५। १०)। द्रौपदीहरणके समय अर्जुनद्वारा इसका वध (वन० २७१। २७)।

शूरसेन (शूर)-(१) वसुदेवजीके पिता। यदुवंशके एक श्रेष्ठ पुरुष। इनकी पुत्रीका नाम था पृथा (आदि० ६७। १२९; आदि० १०९। १)। इनके द्वारा अपनी पुत्री पृथाका अपने मित्र राजा कुन्तिभोजको गोद देना (आदि० ६७। १३१; आदि० १०९। २; आदि० ११०। ३)। ये यदुवंशी देवमीढके पुत्र थे। इनके पुत्रका नाम वसुदेव हुआ (द्रोण० १४४। ६-७)। कहीं-कहीं इन्हें चित्ररथका पुत्र कहा गया है। सम्भव है, देवमीढका ही दूसरा नाम 'चित्ररथ' हो (अनु० १४७। २९-३२)। (२) एक जनपद और वहाँके निवासी (आधुनिक मथुरामण्डल या व्रजमण्डल)। इस देशके लोग जरासंधके भयसे अपने भाइयों और सेवकोंके साथ दक्षिण दिशामें भाग गये थे (सभा० १४। २६-२८)। सहदेवने दक्षिणदिग्विजयके समय इन्द्रप्रस्थसे चलकर सबसे पहले शूरसेननिवासियोंपर ही पूर्णरूपसे विजय पायी थी (सभा० ३१। १-२)। इस देशके लोग राजसूय यज्ञमें युधिष्ठिरके लिये भेंट लाये थे (सभा० ५२। १३)। पाण्डवलोग पाञ्चालसे दक्षिण यकृल्लोम तथा शूरसेन देशोंके बीचसे होकर मत्स्य देशको गये थे (विराट० ५। ४)। यह एक भारतीय जनपद है (भीष्म० ९। २९, ५२)। इस देशके शूरवीर सैनिक अपना शरीर निछावर करनेको उद्यत हो विशाल रथसमुदायके द्वारा पितामह भीष्मकी रक्षा करते थे (भीष्म० १८। १२-१४)। इस देशके सैनिकोंने कृतवर्मा और काम्बोज-नरेशके साथ आकर अर्जुनको आगे बढ़नेसे रोका था (द्रोण० ९१। ३७-३८)। शूरसेनदेशीय योद्धाओंने अर्जुनपर बाणोंकी वर्षा की (द्रोण० ९३। २)। सात्यकिको आगे बढ़नेसे रोका था (द्रोण० १४१। ९)। युधिष्ठिरने शूरसेनोंका संहार करके भूतलपर रक्तोंकी कीच मचा दी (द्रोण० १५७। २९)। भीमसेनने शूरसेन देशके रणदुर्मद क्षत्रियोंको काट-काटकर वहाँकी रणभूमि-को पाट दिया, जिससे वहाँ खूनकी कीच मच गयी (द्रोण० १६१। ४-५)। शूरसेननिवासी यज्ञ करते हैं (कर्ण० ४५। २८)। पाण्डवपक्षके शूरसेनदेशीय

वीरोंके साथ कृपाचार्य, कृतवर्मा और शकुनिने युद्ध किया था (कर्ण० ४७ । १६-१८)। (३) एक राजा, जो कौरवपक्षका सहायक था । यह भीष्मनिर्मित क्रौञ्चव्यूहके ग्रीवाभागमें दुर्योधनके साथ खड़ा था (भीष्म० ७५।१८)।

शूरसेनपुर-इसीको ही मथुरा कहते हैं (सभा० ३८ । २९ के बाद दा० पाठ) । (विशेष देखिये—मथुरा)

शूरसेनी-राजा पूरुके पुत्र प्रवीरकी पत्नी, जिसके गर्भसे मनस्यु नामक पुत्र उत्पन्न हुआ था (आदि० ९४।६)।

शूर्पणखा-रावणकी बहिन, श्रीरामने लक्ष्मणके द्वारा इसकी नाक कटवा दी थी (सभा० ३८ । २९ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ७९४, कालम २) । यह विश्रवाके द्वारा राका-के गर्भसे उत्पन्न हुई थी । इसका सहोदर भाई खर था (वन० २७५ । ८) । खर और शूर्पणखा—ये दोनों भाई-बहन तपस्यामें लगे हुए रावण आदि भाइयोंकी प्रसन्न मनसे परिचर्या एवं रक्षा करते थे (वन० २७५ । १९) । इसकी नाक कटवानेके कारण जनस्थाननिवासी खरका श्रीरामसे वैर हो गया था (वन० २७७ । ४२)। खर आदि राक्षसोंके मारे जानेपर यह लंकामें अपने भाई राजा रावणके पास गयी और उसके चरणोंमें गिर पड़ी (वन० २७७ । ४५-४६) । इसने रावणसे राक्षस संहारका सारा वृत्तान्त कहा (वन० २७७ । ५२) ।

शूर्पारक-एक पश्चिमभारतीय जनपद, जिसे दक्षिण-दिग्विजय-के अवसरपर सहदेवने जीता था (सभा० ३१ । ६५)। यहाँ परशुरामसेवित शूर्पारक तीर्थ है, उसमें जाकर राम-तीर्थमें स्नान करनेसे मनुष्यको प्रचुर सुवर्ण-राशिकी प्राप्ति होती है (वन० ८५ । ४३) । इस शूर्पारक-क्षेत्रमें महात्मा जमदग्निकी वेदी है, वहीं रमणीय पाषाणतीर्थ और पुनश्चन्द्रा नामक तीर्थविशेष हैं (वन० ८८ । १२)। युधिष्ठिरने इस पुण्यमय तीर्थका दर्शन किया (वन० ११८ । ८) । समुद्रने परशुरामजीके लिये जगह खाली करके शूर्पारक देशका निर्माण किया था, जिसे अपरान्त-भूमि भी कहते हैं (शान्ति० ४९ । ६६-६७) । शूर्पारक-क्षेत्रके जलमें स्नान करके एक पक्षतक निराहार रहनेवाला मनुष्य दूसरे जन्ममें राजकुमार होता है (अनु० २५ । ५०) ।

शृगाल-स्त्रीराज्यके स्वामी, जो कलिंगराज चित्राङ्गदकी कन्याके स्वयंवरमें पधारे थे (शान्ति० ४ । ७) ।

शृङ्ग-शंकरजीका वाद्यविशेष (वन० ८८ । ८) ।

शृङ्गवान्-(१) हिरण्यकवर्षका एक पर्वत, यहाँ उत्तर-दिग्विजयके समय अर्जुन गये थे और इसे लाँघकर उत्तर-कुरुवर्षमें चले गये थे (सभा० २८ । ६ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ७५०) । इसकी गणना छः वर्षपर्वतोंमें है । यह सब धातुओंसे सम्पन्न एवं विचित्र शोभा धारण करनेवाला है । यहाँ सिद्ध और चारण निवास करते हैं (भीष्म० ६ । ५) । धृतराष्ट्रके प्रति संजयद्वारा इसका विशेष वर्णन (भीष्म० ८ । ८-९) । सायं-प्रातःस्मरणीय पर्वतोंमें भी इसका नाम है (अनु० १६५ । ३२) । (२) एक प्राचीन ऋषि, जो गालवके पुत्र थे । इन्होंने शर्तके साथ वृद्धकन्याका पाणिग्रहण किया था (शल्य० ५२ । १५—१७) । एक रात इनके साथ निवास करके वृद्धकन्याके चले जानेपर ये उसके रूपका चिन्तन करते हुए अत्यन्त दुखी हो गये और शरीर त्यागकर इन्होंने भी उसीके पथका अनुसरण किया (शल्य० ५२ । १९-२४) ।

शृङ्गवेर-कौरव्यकुलमें उत्पन्न एक नाग, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें भस्म हो गया (आदि० ५७ । १३) ।

शृङ्गवेरपुर-एक तीर्थ, जहाँ पूर्वकालमें वनवासके समय दशरथनन्दन श्रीरामने गङ्गाजीको पार किया था । उस तीर्थमें स्नान करनेसे मनुष्य सब पापोंसे मुक्त हो जाता है (वन० ८५ । ६५-६६) । (यहीं निषादराज गुहकी राजधानी थी । सम्भवतः प्रतापगढ़ जिलेका सिंगरौरा नामक गाँव ही प्राचीन शृङ्गवेरपुर है ।)

शृङ्गी-शमीक ऋषिका तरुण पुत्र, जो महान् तपस्वी, दुःसह तेजसे सम्पन्न और महान् व्रतधारी था । उसमें क्रोधकी मात्रा बहुत थी (आदि० ४० । २५-२६) । आचार्य-की सेवासे लौटते समय अपने मित्र कृशके द्वारा राजा परीक्षित्के अपराधका समाचार सुनकर इसके द्वारा उन्हें तक्षकके डसनेसे मरनेका शाप (आदि० ४० । २९ से आदि० ४१ । १४ तक; आदि० ५० । ४-११) । परीक्षित्को शाप देनेके कारण पिताद्वारा इसकी भर्त्सना तथा राजाकी महत्ता एवं आवश्यकताका प्रतिपादन (आदि० ४१ । २०—३३) । व्यासजीके आवाहन करनेपर स्वर्गसे परीक्षित्के साथ शृङ्गी और इसके पिता शमीक भी जनमेजयके यज्ञमें आये थे (आश्रम० ३५ । ८) ।

शेषनाग-नागराज अनन्त, (ये साक्षात् भगवान् नारायणके स्वरूप हैं और उनके लिये शय्यारूप होकर उन्हें धारण करते हैं ।) इनके द्वारा मन्दराचलका उखाड़ा जाना (आदि० १८ । ८) । नागोंमें सर्वप्रथम ये ही प्रकट हुए थे (आदि० ३५ । २-५) । नागोंके पारस्परिक द्वेषसे ऊबकर इनका पुष्कर आदि क्षेत्रोंमें तपस्या करना (आदि० ३६ । ३-५)। धर्ममें अटल निष्ठा रहनेके लिये ब्रह्माजीसे इनकी वर-याचना (आदि० ३६ । १७) । ब्रह्माजीके द्वारा इनको वरदान एवं पृथ्वी धारण करनेकी आज्ञा (आदि० ३६ । १८-१९) । पृथ्वीको स्थिरभावसे

धारण करनेके लिये ब्रह्माजीका आश्वासन (आदि० ३६ । २०)। इनकी माता कद्रू और पिता कश्यप हैं (आदि० ६५ । ४१) । इनके अंशसे बलरामजी अवतीर्ण हुए थे (आदि ६७ । १५२) । भगवान् नारायण शेषको शय्या बनाकर इनपर शयन करते हैं (वन०२७२ । ३८–४०) । त्रिपुरदाहके समय ये शिवजीके रथके अक्ष बने थे (द्रोण० २०२ । ७२) ।

शैखावत्य–एक महातपस्वी प्राचीन ऋषि, जिन्होंने शाल्वसे परित्यक्त हो आश्रममें आकर रोती हुई अम्बासे बातचीत की थी । ये कठोर व्रतका पालन करनेवाले तपोवृद्ध ब्रह्मर्षि थे । शास्त्र और आरण्यक आदि ग्रन्थोंकी शिक्षा देनेवाले सद्गुरु थे (उद्योग० १७५ । ३८–४०) ।

शैब्य–(१) एक प्राचीन राजा (आदि० १ । २२५) । इनके पुत्रका नाम सृञ्जय था, जिसकी पर्वत और नारद-जीसे मित्रता थी (द्रोण० ५५ । ५) । (२) शिबि देशके नरेश, जो युधिष्ठिरके श्वशुर थे। इनका नाम गोवासन था (आदि० ९५ । ७६) । ये युधिष्ठिरकी सभामें विराजमान होते थे (सभा० ४ । २५) । ये तथा काशिराज दोनों युधिष्ठिरके बड़े प्रेमी थे और उपप्लव्य नगरमें एक अक्षौहिणी सेनाके साथ आकर अभिमन्युके विवाहमें सम्मिलित हुए थे (विराट० ७२ । १६) । इनको कृतवर्माके साथ युद्ध करनेका काम दिया गया था (उद्योग० १६४ । ६) । दुर्योधनने नरश्रेष्ठ शैब्यकी पाण्डव-सेनाके महान् धनुर्धरोंमें गणना की थी (भीष्म० २५ । ५) । ये काशिराजके साथ रहकर तीस हजार रथियोंके द्वारा धृष्टद्युम्ननिर्मित क्रौञ्चव्यूहकी रक्षा करते थे (भीष्म० ५० । ५६-५७) । ये उशीनरके पौत्र कहे गये हैं । धृतराष्ट्रद्वारा इनकी वीरताका वर्णन (द्रोण० १० । ६४—७०) । नीलकमलके समान रंगवाले, सुवर्णमय आभूषणोंसे विभूषित, विचित्र मालाओंवाले अश्व, विचित्र रथसे युक्त राजा शैब्यको युद्धस्थलमें ले गये थे (द्रोण० २३ । ६१) । (३) भगवान् श्रीकृष्णके रथका एक अश्व (आदि० अध्याय २१९; वन० अध्याय २०, २२, १८३; विराट० अध्याय ४५; उद्योग० अध्याय ८, १३१; द्रोण० अध्याय ७९, १४७ । ५७; सौप्तिक० अध्याय १३; शान्ति० अध्याय ३६, ४६, ५३) । (४) एक वृष्णिवंशीय क्षत्रिय वीर, जिसने अर्जुनसे धनुर्वेदकी शिक्षा प्राप्त की थी । यह युधिष्ठिरकी सभामें विराजमान होता था (सभा० ४ । ३४-३५) । (५) एक क्षत्रिय नरेश, जिन्हें श्रीकृष्णने पराजित किया था (सभा० ३८ । २९ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ८२४) । (६) एक कौरवपक्षीय प्रमुख योद्धा, जो भीष्मनिर्मित सर्वतोभद्र नामक व्यूहके मुहानेपर खड़ा था (भीष्म० ९९ । २) ।

शैब्या–(१) राजा सगरकी एक पत्नी, जिनसे वंश प्रवर्तक एक ही पुत्र उत्पन्न हुआ था। उस पुत्रका नाम असमंजस् था (वन० १०६ । २०; वन० १०७ । ३९) । (२) शाल्व देशके प्राचीन राजा द्युमत्सेनकी रानी, जिन्होंने अपने पुत्र सत्यवान् और वधू सावित्रीके रातको आश्रममें न लौटनेपर पतिके साथ विभिन्न आश्रमोंमें जाकर उनका पता लगाया था (वन० २९८ । २) । (३) भारतवर्षकी एक प्रमुख नदी, जिसका जल यहाँके निवासी पीते हैं (भीष्म० ९ । २४) । (४) भगवान् श्रीकृष्णकी एक पटरानी, जिन्होंने श्रीकृष्णके परमधाम पधारनेपर पतिलोककी प्राप्तिके लिये अग्निमें प्रवेश किया था (मौसल० ७ । ७३) ।

शैरीषक–एक देश, जिसे पश्चिम-दिग्विजयके समय नकुलने जीता था (सभा० ३२ । ६) ।

शैलकम्पी–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ६३) ।

शैलाभ–एक सनातन विश्वेदेव (अनु० ९१ । ३२) ।

शैलालय–एक राजा, जो भगदत्तके पितामह थे और कुरु-क्षेत्रके तपोवनमें तपस्या करके इन्द्रलोकमें गये थे (आश्रम० २० । १०) ।

शैलूष–एक गन्धर्व, जो कुबेरकी सभामें रहकर उनकी उपासना करता है (सभा० १० । २६) ।

शैलोदा–मेरु और मन्दराचलकी मध्यवर्तिनी एक नदी, इसके तटपर बसे हुए म्लेच्छ जातियोंको अर्जुनने जीता था (सभा० २८ । ६ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ७४८) । इसके दोनों तटोंपर बाँसोंकी छायामें रहनेवाले खस आदि म्लेच्छोंने राजसूय यज्ञमें युधिष्ठिरको पिपीलक नामक सुवर्ण भेंट किया था (सभा० ५२ । २–४) ।

शैवाल–एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ५४) ।

शैशव–एक देश, जहाँके क्षत्रिय नरेश भेंट लेकर आये और युधिष्ठिरके राजद्वारपर खड़े थे (सभा० ५२ । १८) ।

शोण–एक नदी, जो वरुणकी सभामें रहकर उनकी उपासना करती है (सभा० ९ । २१) । भगवान् श्रीकृष्णने इन्द्रप्रस्थसे राजगृह जाते समय मार्गमें इसे पार किया था (सभा० २० । २७) । शोण और ज्योतिरथ्यके संगममें स्नान करके पवित्र और जितेन्द्रिय पुरुष पितरोंका तर्पण करे तो उसे अग्निष्टोमयज्ञका फल प्राप्त होता है । इसका उत्पत्तिस्थान वंशगुल्मतीर्थ है । वहाँ स्नान करनेसे अश्वमेधयज्ञका फल प्राप्त होता है (वन० ८५ । ८-९) । यह अग्निकी उत्पत्तिका स्थान मानी गयी है (वन० २२२ । २५) । इसकी गणना भारतवर्षकी प्रमुख नदियोंमें है (भीष्म० ९ । २९) ।

शोणितपुर-बाणासुरकी राजधानी। शिव, कार्तिकेय, भद्र-काली देवी और अग्नि आदि देवता इस नगरीकी रक्षा करते थे। भगवान् श्रीकृष्णने इन सबको जीतकर उत्तर द्वारमें प्रवेश किया। वहाँ शङ्करजीको भी युद्धके द्वारा परास्त करके वे इस श्रेष्ठ नगरमें गये। वहाँ उन्होंने बाणासुरकी भुजाओंको काटकर उसे पराजित किया तथा अनिरुद्ध और ऊषाको बन्धनमुक्त किया (सभा० ३८। २९के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ८२१)।

शोणितोद-एक यक्ष, जो कुबेरकी सभामें रहकर उनकी सेवामें उपस्थित होता है (सभा० १०। १७)।

शोभना-स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६। ६)।

शौण्डिक-एक जाति, इस जातिके लोग पहले क्षत्रिय थे; किंतु ब्राह्मणोंके अमर्षसे नीच हो गये (अनु० ३५। १७-१८)।

शौनक-(१) भृगुवंशमें उत्पन्न एक महर्षि, जो नैमिषा-रण्यवासी तथा वहाँके आश्रमके कुलपति थे। इनके द्वादशवार्षिक यज्ञमें उग्रश्रवाका आना और महाभारतकी कथा सुनाना (आदि० १। १९)। ये भृगुवंशी शुनकके पुत्र हैं (अनु० ३०। ६५)।

महाभारतमें आये हुए शौनकके नाम-भार्गव, भार्गवोत्तम, भृगुशार्दूल, भृगूद्वह, भृगुकुलोद्वह, भृगुनन्दन आदि। (२) युधिष्ठिरके वनगमनके समय उनके साथ चलनेवाले एक विप्र। इनके द्वारा युधिष्ठिरके प्रति विवेकी-अविवेकीकी गतिका वर्णन (वन० २। ६४-८१)। इनके द्वारा युधिष्ठिरको तप करनेका आदेश (वन० २। ८२-८४)

शौरि-शूरके पुत्र वसुदेव (द्रोण० १४४। ७)। (देखिये वसुदेव)

श्याम-शाकद्वीपका एक महान् पर्वत, जो मेघके समान श्याम तथा बहुत ऊँचा है। वहाँ रहनेसे वहाँकी प्रजा श्यामताको प्राप्त हुई है (भीष्म० ११। १९-२०)।

श्यामायन-विश्वामित्रके ब्रह्मवादी पुत्रोंमेंसे एक (अनु० ४। ५५)।

श्यामाश्रम-एक प्राचीन तीर्थ, जहाँ स्नान, निवास और एक पक्षतक उपवास करनेसे अन्तर्धानरूप फलकी प्राप्ति होती है (अनु० २५। ३०)।

श्येन-(१) पक्षियोंकी एक जाति, जो ताम्राकुमारी श्येनीकी संतान है (आदि० ६६। ५६-५७)। (२) एक प्राचीन ऋषि, जो इन्द्रकी सभामें विराजमान होते हैं (सभा० ७। ११)।

श्येनचित्र-एक प्राचीन नरेश, जिन्होंने अपने जीवनमें कभी मांस नहीं खाया था (अनु० ११५। ६३)।

श्येनजित्-(१) इक्ष्वाकुवंशीय राजा दलका पुत्र, जो पिताका अत्यन्त प्यारा था (वन० १९२। ६३)। (२) एक महारथी राजा, जो भीमसेनके मामा थे (उद्योग० १४१। २७)।

श्येनी-ताम्राकी पुत्री, इसने बाज-पक्षियोंको जन्म दिया था (आदि० ६६। ५६-५७)। यह गरुड़के बड़े भाई अरुणकी भार्या थी। इसके गर्भसे दो महाबली पुत्र उत्पन्न हुए, जिनका नाम था सम्पाती और जटायु (आदि० ६६। ६९-७०)।

श्रद्धा-(१) दक्षप्रजापतिकी पुत्री और धर्मकी पत्नी। ब्रह्माजीने धर्मकी दसों पत्नियोंको धर्मका द्वार निश्चित किया है (आदि० ६६। १३-१५)। (२) यह सूर्यकी पुत्री है, अतः इसे वैवस्वती, सावित्री तथा प्रसवित्री कहते हैं (शान्ति० २६४। ८)। (विशेष देखिये सावित्री)

श्रवण-सत्ताईस नक्षत्रोंमेंसे एक। श्रवण नक्षत्र आनेपर जो मनुष्य वस्त्रवेष्टित कम्बल दान करता है, वह श्वेत विमानके द्वारा खुले हुए स्वर्गमें जाता है (अनु० ६४। २८)। श्रवण नक्षत्रमें श्राद्धका दान करनेवाला मानव मृत्युके पश्चात् सद्गतिको प्राप्त होता है (अनु० ८९। ११)। चन्द्रव्रत करनेवाले साधकको श्रवण-नक्षत्रमें चन्द्रमाके कानकी भावना करके उसकी पूजा करनी चाहिये (अनु० ११०। ७)।

श्रवा-गृत्समदवंशी महर्षि संतके पुत्र, जो तमके पिता हैं (अनु० ३०। ६३)।

श्राद्धपर्व-स्त्रीपर्वके अन्तर्गत एक अवान्तर पर्व (अध्याय २६ से २७ तक)।

श्राव-ये इक्ष्वाकुवंशी महाराज युवनाश्वके पुत्र थे। इनके पुत्रका नाम श्रावस्त था (वन० २०२। ३-४)।

श्रावण-(बारह महीनोंमेंसे एक। जिस मासकी पूर्णिमाको श्रवण नक्षत्रका योग होता है, उसे श्रावण कहते हैं। यह आषाढ़के बाद और भाद्रपदके पहले आता है।) जो मन और इन्द्रियोंको संयममें रखकर श्रावण मासको प्रतिदिन एक समय भोजन करके बिताता है, वह विभिन्न तीर्थोंमें स्नान करनेके पुण्य-फलको पाता और अपने कुटुम्बीजनोंकी वृद्धि करता है (अनु० १०६। २७)। श्रावणमासकी द्वादशी तिथिको दिन-रात उपवास करके जो भगवान् श्रीधरकी आराधना करता है, वह पाँच महायज्ञोंका फल पाता है और विमानपर बैठकर सुख भोगता है (अनु० १०९। ११)।

श्रावस्त-ये इक्ष्वाकुवंशी महाराज श्रावके पुत्र थे। इनके

पुत्रका नाम बृहदश्व था। राजा श्रावस्तने श्रावस्तीपुरी बसायी थी (वन० २०२। ४)।

श्रावस्तीपुरी-यह इक्ष्वाकुवंशी राजा श्रावस्तकी राजधानी थी, जिसे राजाने स्वयं बसाया था (वन० २०२। ४)।

श्री-(१) भगवान् विष्णुकी पत्नी, लक्ष्मी। (देखिये लक्ष्मी) (२) धर्मकी एक पत्नीका नाम (आदि० ६६। १४)।

श्रीकण्ठ-महादेव, भगवान् शंकरके कण्ठमें श्रीनारायणके हाथसे अङ्कित चिह्न होनेके कारण वे श्रीकण्ठ कहलाते हैं (शान्ति० ३४२। १३४)।

श्रीकुञ्ज-कुरुक्षेत्रकी सीमाके अन्तर्गत सरस्वतीका एक तीर्थ, इसमें स्नान करनेसे अग्निष्टोमयज्ञका फल मिलता है (वन० ८३। १०८)।

श्रीकुण्ड-एक त्रिभुवनविख्यात कुण्ड। यहाँ जाकर ब्रह्माजीको नमस्कार करनेसे सहस्र गोदानका फल प्राप्त होता है (वन० ८२। ८६)।

श्रीतीर्थ-कुरुक्षेत्रकी सीमाके अन्तर्गत स्थित एक तीर्थ, जहाँ जाकर स्नान एवं देवता-पितरोंकी पूजा करनेसे मनुष्य उत्तम सम्पत्ति पाता है (वन० ८३। ४६)।

श्रीपर्वत-एक तीर्थभूत पर्वत। वहाँ जाकर नदीके तटपर स्नान करनेके पश्चात् भगवान् शंकरकी पूजा करनेसे मनुष्य अश्वमेधयज्ञका फल पाता है (वन० ८५। १८)।

श्रीमती-स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६। ३)।

श्रीमद्भगवद्गीतापर्व-भीष्मपर्वका एक अवान्तर पर्व (अध्याय १३ से ४२ तक)।

श्रीमान्-दत्तात्रेयकुमार निमिके कान्तिमान् पुत्र, जिन्होंने एक सहस्र वर्षोंतक कठोर तपस्या करके अन्तकालमें काल-धर्मके अधीन हो अपने प्राण त्याग दिये थे (अनु० ९१। ५-६)।

श्रीवत्स-भगवान् नारायणके वक्षःस्थलमें भगवान् शंकरके त्रिशूलसे बना हुआ चिह्न (शान्ति० ३४२। १३४)।

श्रीवह-कश्यपद्वारा कद्रूके गर्भसे उत्पन्न एक नाग (आदि० ३५। १२)।

श्रुतकर्मा (श्रुतसेन)-(१) सहदेवके द्वारा द्रौपदीके गर्भसे उत्पन्न (आदि० ९५। ७५)। प्रथम दिनके संग्राममें सुदर्शनके साथ द्वन्द्व-युद्ध (भीष्म० ४५। ६६-६८)। दुर्मुखद्वारा इसकी पराजय (भीष्म० ७९। ३५-३८)। इसके घोड़ोंका वर्णन (द्रोण० २३। ३१)। चित्रसेनपुत्रके साथ इसका युद्ध (द्रोण० २५। २७-२८)। इसके द्वारा महामनस्वी शलका वध (द्रोण० १०८। १०)। इसके द्वारा अभिसारनरेश चित्रसेनका वध (कर्ण० १४। १-१४)। इसके द्वारा अश्वत्थामापर प्रहार (कर्ण० ५५। १३-१९)। देवावृधकुमारका वध (कर्ण० ८८। १८)। अश्वत्थामाद्वारा इसका वध (सौप्तिक० ८। ६०)। (२) (श्रुतकीर्ति)-अर्जुन-का द्रौपदीके गर्भसे उत्पन्न हुआ पुत्र। इसके श्रुतकर्मा नाम पड़नेका कारण (आदि० १२०। ८३; वन० २३५। १०)। (विशेष देखिये-श्रुतकीर्ति।) (३) धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक। इसका शतानीकके साथ युद्ध (कर्ण० २५। १३-१६)।

श्रुतकीर्ति-द्रौपदीके गर्भसे अर्जुनद्वारा उत्पन्न (आदि० ६३। १२३; आदि० ९५। ७५)। विश्वेदेवके अंशसे इसका जन्म हुआ था (आदि० ६७। १२७-१२८)। इसका जयत्सेनके साथ युद्ध (भीष्म० ७९। ४१)। इसके घोड़ोंका वर्णन (द्रोण० २३। ३२)। दुःशासन-पुत्रके साथ युद्ध (द्रोण० २५। ३२-३३)। अश्वत्थामा-द्वारा इसका वध (सौप्तिक० ८। ६१-६२)।

श्रुतञ्जय-त्रिगर्तराज सुशर्माका भाई। अर्जुनद्वारा इसका वध (कर्ण० २७। १२)।

श्रुतध्वज-विराटके भाई। जो पाण्डवोंके रक्षक और सहायक थे (द्रोण० १५८। ४१)।

श्रुतर्वा-(१) एक प्राचीन नरेश। इनके पास अगस्त्यजी धन माँगने गये थे (वन० ९८। १)। इनका अगस्त्य-जीके धन माँगनेपर उनके सामने अपने आय-व्ययका विवरण रखना (वन० ९८। ५)। इनका अगस्त्यजीके साथ अन्य राजाओंके पास जाना (वन० ९८। ७)। अगस्त्यजीकी आज्ञा लेकर इनका अपनी राजधानीको लौटना (वन० ९९। १८)। (२) धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक। इसका अपने दस भाइयोंके साथ भीमसेन-पर आक्रमण और उनके द्वारा वध (शल्य० २६। ६-३२)।

श्रुतश्रवा-(१) एक ऋषि। इनके पुत्रका नाम सोमश्रवा था। सोमश्रवाको अपना पुरोहित बनानेके लिये जनमेजय-की इनसे प्रार्थना (आदि० ३। १३-१५)। इनका अपने पुत्रके जन्म-प्रसंग तथा उदारतापूर्ण स्वभाव आदि-का वर्णन करते हुए उनकी प्रार्थना स्वीकार करना (आदि० ३। १६-१९)। ये जनमेजयके सर्पसत्रमें सदस्य बने थे (आदि० ५३। ९-१०)। तपस्या करके सिद्धि प्राप्त करनेवाले ऋषियोंमें इनका भी नाम है (शान्ति० २९२। १६-१७)। (२) एक राजर्षि,

जो यम-सभामें रहकर सूर्यपुत्र यमकी उपासना करते हैं (सभा० ८ । ९) । (३) चेदिराज दमघोषकी भार्या । श्रीकृष्णकी पितृष्वसा (बुआ) और शिशुपालकी माता । इनके द्वारा अपने पुत्र (शिशुपाल) की जीवन-रक्षाके लिये श्रीकृष्णसे प्रार्थना (सभा० ४३ । १—२०) । शिशुपालके सौ अपराध क्षमा कर दूँगा-ऐसा कहकर श्रीकृष्णद्वारा इनको आश्वासन (सभा० ४३ । २४) ।

श्रुतश्री–एक दैत्य, जिसका गरुड़द्वारा वध हुआ था (उद्योग० १०५ । १२) ।

श्रुतसेन–(१) महाराज जनमेजयके भ्राता, जिन्होंने अपने अन्य भाइयोंके साथ देवताओंकी कुतिया सरमाके पुत्र सारमेयको पीटा था (आदि० ३ । १) । (२) तक्षक नागके छोटे भाई (आदि० ३ । १४१-१४२) । (३) (श्रुतकर्मा) द्रौपदीके गर्भसे सहदेवद्वारा उत्पन्न (आदि० ६३ । १२४) । यह विश्वेदेवके अंशसे उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७ । १२७) । इसके श्रुतसेन नाम पड़नेका कारण (आदि० २२० । ८५) । (विशेष देखिये–श्रुतकर्मा ।) (४) एक दैत्य । जिसका गरुड़द्वारा वध हुआ था (उद्योग० १०५ । १२) । (५) कौरवपक्षका एक योद्धा, जिसे अर्जुनने बाण मारा था (कर्ण० २७ । १०-११) ।

श्रुतानीक–विराटके भाई, जो पाण्डवोंके रक्षक और सहायक थे (द्रोण० १५८ । ४१) ।

श्रुतान्त (चित्राङ्ग)–धृतराष्ट्रका पुत्र । इसने अन्य भाइयोंके साथ रहकर भीमसेनपर धावा किया और उन्हींके हाथसे मारा गया (शल्य० २६ । ४—११) ।

श्रुतायु (श्रुतायुध)–(१) कलिङ्ग देशके राजा, जो युधिष्ठिरकी सभामें विराजते थे (सभा० ४ । २६) । इन्होंने राजसूय यज्ञमें युधिष्ठिरको मणि-रत्न भेंट किये थे (सभा० ५१ । ७ के बाद दा० पाठ) । ये द्रौपदीके स्वयंवरमें पधारे थे (आदि० १८५ । १३) । पाण्डवोंकी ओरसे इन्हें रणनिमन्त्रण भेजनेका निश्चय हुआ था (उद्योग० ४ । २४) । ये कलिङ्गराज कौरवपक्षकी एक अक्षौहिणी सेनाके अधिनायक थे (भीष्म० १६ । १६) । भीमसेनके साथ युद्ध और उनके द्वारा घायल होना (भीष्म० ५४ । ६७—७५) । इनके दो चक्ररक्षक–सत्यदेव और सत्य–भीमसेनद्वारा मारे गये (भीष्म० ५४ । ७६) । इनका अर्जुनके साथ युद्ध (द्रोण० ९२ । ३६-४४) । ये पर्णाशाके गर्भसे वरुणद्वारा उत्पन्न हुए थे । इन्हें वरुणद्वारा गदाकी प्राप्ति हुई थी (द्रोण० ९२ । ४५-५१) । इनका अपनी ही गदाद्वारा वध (द्रोण० ९२ । ५४) । (२) एक क्षत्रिय राजा, जो क्रोधवशसंज्ञक दैत्यके अंशसे उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७ । ६४) । यह महारथी वीर था और द्रौपदीके स्वयंवरमें आया था (आदि० १८५ । २१) । महाबली श्रुतायु राजा युधिष्ठिरकी सभाका भी एक सदस्य था (सभा० ४ । २८) । पाण्डवोंकी ओरसे इसको रण-निमन्त्रण भेजनेका निश्चय किया गया था (उद्योग० ४ । २३) । प्रथम दिनके संग्राममें इरावान्‌के साथ इसका युद्ध (भीष्म० ४५ । ६९—७१) । यह अम्बष्ठ देशका राजा था और भीष्मकी रक्षा करते हुए इसने अर्जुनका सामना किया था (भीष्म० ५९ । ७५-७६) । यह भीष्म-निर्मित क्रौञ्चव्यूहके जघनभागमें खड़ा था (भीष्म० ७५ । २२) । यह युद्धमें युधिष्ठिरद्वारा पराजित हुआ था (भीष्म० ८४ । १—१७) । इसका अर्जुनपर आक्रमण और उनके द्वारा वध (द्रोण० ९३ । ६०—६९) । (३) एक कौरवपक्षीय योद्धा, जो अच्युतायुका भाई था । इसने अपने भाई अच्युतायुके साथ रहकर कौरव सेनाके दक्षिण भागकी रक्षा की थी (भीष्म० ५१ । १८) । इन दोनों भाइयोंका अर्जुनके साथ युद्ध और उनके द्वारा इनका वध (द्रोण० ९३ । ७—२४) ।

श्रुतावती–एक तपस्विनी कन्या, जो घृताची अप्सराको देखकर भरद्वाजजीके स्खलित हुए वीर्यसे उत्पन्न हुई थी । इसने घोर तपस्या करके इन्द्रको पतिरूपमें प्राप्त किया था (शल्य० ४८ अध्याय) ।

श्रुताह्व–पाण्डवपक्षका राजा, अश्वत्थामाद्वारा इसका वध (द्रोण० १५६ । १८२) ।

श्रुति–एक प्राचीन नरेश (आदि० १ । २३८) ।

श्रेणिमान्–एक राजर्षिप्रवर, जो कालेयसंज्ञक दैत्योंमें चौथे दैत्यके अंशसे उत्पन्न हुए थे (आदि० ६७ । ५१) । ये द्रौपदीस्वयंवरमें भी पधारे थे (आदि० १८५ । ६१) । ये कुमारदेशके राजा थे । इन्हें पूर्व-दिग्विजयके अवसरपर भीमसेनने परास्त किया था (सभा० ३० । १) । दक्षिण-दिग्विजयके समय सहदेवने भी इन्हें जीता था (सभा० ३१ । ५) । पाण्डवोंकी ओरसे इन्हें रणनिमन्त्रण भेजनेका निश्चय किया गया था (उद्योग० ४ । २१) । सेनाके प्रयाण करते समय ये युधिष्ठिरको घेरकर उनके पीछे चल रहे थे (उद्योग० १५१ । ६३-६४) । पाण्डवसेनामें इनकी गणना अतिरथी वीरोंमें थी

(उद्योग० १७१ । २७)। इनके रथके घोड़ोंका वर्णन (द्रोण० २३ । ३७)। इनके मारे जानेकी चर्चा (कर्ण० ६ । ३५)।

श्वाविल्लोमापह—कुरुक्षेत्रकी सीमाके अन्तर्गत एक तीर्थ (वन० ८३ । ६१)।

श्वासा—दक्ष प्रजापतिकी पुत्री और धर्मकी पत्नी । इनके गर्भसे अनिलनामक वसुका जन्म हुआ था (आदि० ६६ । १७—१९)।

श्वेत—(१) एक प्राचीन धर्मनिष्ठ राजर्षि (आदि० १ । २३३)। इन्होंने अपने मरे हुए पुत्रको पुनः जीवित कर दिया था (शान्ति० १५३ । ६८)। इन्होंने कभी मांस नहीं खाया (अनु० ११५ । ६६)। ये सायं-प्रातः-स्मरणीय राजर्षि हैं (अनु० १५० । ५२)। (२) एक राजा, जिसकी गणना भगवान् श्रीकृष्णने भारत-वर्षके प्रमुख वीरोंमें की है (सभा० १४ । ६१ के बाद दा० पाठ)। (३) उत्तराखण्डका एक पर्वत, जिसे लाँघकर पाण्डवलोग आगे गये थे (वन० १३९ । १)। (४) विराटके पुत्र, जो उनकी बड़ी रानी कोसलराजकुमारी सुरथाके गर्भसे उत्पन्न हुए थे (विराट० १६ । ५१ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ १८९३, कालम २)। ये राजा युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें आये थे और शिशुपालने इनके नामका उल्लेख किया था (सभा० ४४ । २०)। इनका विचित्र पराक्रम (भीष्म० ४७ । ४४—६२)। भीष्मके साथ इनका अद्भुत युद्ध और उनके द्वारा इनका वध (भीष्म० ४८ अध्याय)। (५) एक वर्षका नाम । नीलपर्वतसे उत्तर श्वेत वर्ष है और उससे उत्तर हिरण्यक वर्ष है (भीष्म० ६ । ३७)। (६) स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ६४)।

श्वेतकि—सदा यज्ञमें निरत रहनेवाले एक भूपाल (आदि० २२२ । १७)। इनके द्वारा विविध यज्ञोंका अनुष्ठान (आदि० २२२ । १९)। दीर्घकालतक इनके यज्ञमें आहुति देनेके कारण खिन्न हुए ऋत्विजोंद्वारा इनका परित्याग एवं दूसरे ऋत्विजोंको बुलाकर अपने चालू किये गये यज्ञको पूरा करना (आदि० २२२ । २१-३३)। यज्ञ-सम्पादनके लिये इनके द्वारा घोर तपस्या और भगवान् शिवकी आराधना (आदि० २२२ । ३६-३९)। बारह वर्षोंतक अग्निमें निरन्तर आहुति देनेके लिये इनको शिवका आदेश (आदि० २२२ । ४७)। भगवान् शिवका प्रसन्न होकर अपने ही अंशभूत दुर्वासाको इनका यज्ञ सम्पादित करनेके लिये आदेश (आदि० २२२ । ५८)। दुर्वासाद्वारा इनके शतवर्षीय यज्ञका सम्पादन (आदि० २२२ । ५९)। इनके यज्ञमें बारह वर्षोंतक निरन्तर घृतपान करनेसे अग्निदेवको अजीर्णताका कष्ट होना (आदि० २२२ । ६३-६७)।

श्वेतकेतु—एक ऋषि, जो जनमेजयके सर्पसत्रके सदस्य बने थे (आदि० ५३ । ७)। ये गौतमकुलमें उत्पन्न महर्षि उद्दालकके पुत्र हैं। इन्द्रकी सभामें रहकर उनकी उपासना करते हैं (सभा० ७ । १२)। ये अष्टावक्रके मामा थे। इनका अष्टावक्रको अपने पिताकी गोदसे खींचना (वन० १३२ । १८)। अष्टावक्रके साथ राजा जनकके यज्ञमें जाना (वन० १३२ । २३)। हस्तिनापुर जाते समय श्रीकृष्णसे मार्गमें इनकी भेंट (उद्योग० ८३ । ६४ के बाद दा० पाठ)। कपटव्यवहारके कारण पिताद्वारा इनका परित्याग (शान्ति० ५७ । १०)। महर्षि देवलके पास उनकी कन्याके लिये जाना, सुवर्चलाके साथ इनका विवाह, पत्नीके साथ इनके विभिन्न आध्यात्मिक प्रश्नोत्तर, गृहस्थधर्मका पालन करते हुए इन्हें परमगतिकी प्राप्ति (शान्ति० २२०। दाक्षिणात्य पाठ)। ये उत्तर दिशाके ऋषि हैं (अनु० १६५ । ४५)।

श्वेतद्वीप—भगवान् नारायणका अनिर्वचनीय धाम-क्षीर-सागरके उत्तर भागका श्वेत नामसे विख्यात विशाल द्वीप, जिसकी ऊँचाई मेरुपर्वतसे बत्तीस हजार योजन है। वहाँके निवासी इन्द्रियोंसे रहित, निराहार तथा ज्ञानसम्पन्न होते हैं। उनके अङ्गोंसे उत्तम सुगन्ध निकलती रहती है। वे निष्पाप एवं श्वेतवर्णके होते हैं । उनका शरीर और उसकी हड्डियाँ वज्रके समान सुदृढ़ होती हैं। वे मान-अपमानसे परे तथा दिव्यरूप और बलसे सम्पन्न होते हैं। मस्तक छत्रकी भाँति एवं स्वर मेघगर्जन-जैसा गम्भीर होता है। उनके बराबर-बराबर चार भुजाएँ, मुँहमें साठ सफेद दाँत और आठ दाढ़ें होती हैं। वे दिव्यकान्तिमान् होते हैं तथा कालको भी चाट जाते हैं। वे अनन्त गुणोंके भंडार परमेश्वरको अपने हृदयमें धारण किये रहते हैं (शान्ति० ३३५ । ८—१२ दा० पाठसहित)। श्वेतद्वीपके प्रभावका विशेष वर्णन (शान्ति० ३३६ । २७-५९)।

श्वेतभद्र—एक गुह्यक, जो कुबेरकी सभामें आकर उनकी सेवामें उपस्थित होता है (सभा० १० । १५)।

श्वेतवक्त्र—स्कन्दका एक सैनिक(शल्य० ४५ । ७३)।

श्वेतवाहन—अर्जुनका एक नाम (आदि० १९९ । १०)। (विशेष देखिये—अर्जुन)।

श्वेतसिद्ध—स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ६८)।

श्वेता—(१) क्रोधवशाकी पुत्री, इसने शीघ्रगामी दिग्गज

श्वेतको उत्पन्न किया था (आदि० ६६ । ६१, ६६) । (२) स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । २२)।

श्वैत्य-प्राचीन राजा सृंजयका नाम (द्रोण० ५५ । ५०)। (विशेष देखिये—सृञ्जय)।

(ष)

षष्टिह्रद-एक तीर्थ, जहाँ स्नान करनेपर अन्नदानसे भी अधिक फल प्राप्त होता है (अनु० २५ । ३६) ।

षष्ठी देवी-ब्रह्माजीकी सभामें उनकी उपासनाके लिये बैठनेवाली एक देवी (सभा० ११ । ४१) ।

(स)

संकोच-एक राक्षस, जो प्राचीन कालमें इस पृथ्वीका शासक था; किंतु कालके अधीन हो इसे छोड़कर चल बसा (शान्ति० २२७ । ५२) ।

संकृति-एक प्राचीन नरेश (आदि० १ । २३४) । ये राजा रन्तिदेवके पिता थे (वन० २९४ । १७; द्रोण० ६७ । १) ।

संक्रम-भगवान् विष्णुद्वारा स्कन्दको दिये गये तीन पार्षदोंमेंसे एक । शेष दोके नाम थे-चक्र और विक्रम (शल्य० ४५ । ३७) ।

संग्रह-समुद्रद्वारा स्कन्दको दिये गये दो पार्षदोंमेंसे एक । दूसरेका नाम था विग्रह (शल्य० ४५ । ५०) ।

संग्रामजित्-कर्णका एक भाई । विराटकी गौओंके अपहरणके समय युद्धमें अर्जुनद्वारा इसका वध हुआ था (विराट० ५४ । १८) ।

संचारक-स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ७४) ।

संज्ञा-त्वष्टाकी पुत्री और भगवान् सूर्यकी धर्मपत्नी । ये परम सौभाग्यवती हैं । इन्होंने अश्विनीका रूप धारण करके दोनों अश्विनीकुमारोंको अन्तरिक्षमें जन्म दिया था (आदि० ६६ । ३५) । नासत्य और दस्र दोनों अश्विनीकुमार अश्वरूपधारिणी संज्ञाकी नासिकासे उत्पन्न हुए थे । इनका प्रादुर्भाव भगवान् सूर्यके वीर्यसे हुआ था (अनु० १५० । १७-१८) ।

संतर्जन-स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ५८) ।

संतानिका-स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । ९)।

संध्या-(१) एक नदी, जो वरुण-सभामें रहकर वरुणदेवकी उपासना करती है (सभा० ९ । २३) । (२) सायंकालिक संध्याकी अधिष्ठात्री । ये महर्षि पुलस्त्यकी पत्नी थीं (उद्योग० ११७ । १६) । (मूलगत नाम 'प्रतीच्या') ।

संनतेयु-पूरुके तीसरे पुत्र महामनस्वी रौद्राश्वके द्वारा मिश्रकेशी अप्सराके गर्भसे उत्पन्न महाधनुर्धर पुत्र । इनके अन्य भाइयोंके नाम—ऋचेयु, कक्षेयु, कृकणेयु, स्थण्डिलेयु, वनेयु, जलेयु, तेजेयु, सत्येयु तथा धर्मेयु थे (आदि० ९४ । ८-११) ।

संन्यस्तपाद-एक देश, जहाँके राजा और राजकुमार जरासंधके भयसे पीड़ित हो उत्तर दिशाको छोड़कर दक्षिण दिशाका आश्रय ले चुके थे (सभा० १४ । २८)।

संयम-राक्षस शतशृङ्गका प्रथम पुत्र, जो अम्बरीषके सेनापति सुदेवद्वारा मारा गया था (शान्ति० ९८ । ११ के बाद दा० पाठ) ।

संयमन-(१) यमकी राजधानी संयमनीपुरी, जो दक्षिणदिशामें स्थित है (वन० १६३ । ८-९) । (२) सोमदत्तका दूसरा नाम (भीष्म० ६१ । ३३) ।

संयमनीपुरी-यमकी राजधानी या पुरी, इसका दूसरा नाम 'संयमन' भी है (वन० १६३ । ८९; द्रोण० ७२ । ४४; द्रोण० ११९ । २४; द्रोण० १४२ । १०) । जहाँ कोई भी झूठ नहीं बोलता, सदा सत्य ही बोला जाता है, जहाँ निर्बल मनुष्य भी बलवान्से अपने प्रति किये गये अन्यायका बदला लेते हैं; मनुष्योंको संयममें रखनेवाली यमराजकी वही पुरी 'संयमनी' नामसे प्रसिद्ध है (अनु० १०२ । १६) ।

संयाति-(१) राजा नहुषके तीसरे पुत्र । ययातिके छोटे भाई । इनके अन्य भाइयोंके नाम थे—यति, ययाति, आयाति, अयति और ध्रुव (आदि० ७५ । ३०-३१) । (२) ये महाराज पूरुके प्रपौत्र एवं प्राचिन्वानके पुत्र थे । यदुकुलकी कन्या अश्मकी इनकी माता थी (आदि० ९५ । १३) । इनके द्वारा दृषद्वान्की पुत्री वराङ्गीके गर्भसे 'अहंयाति' नामक पुत्रका जन्म हुआ था (आदि० ९५ । १४) ।

संवरण-सोमवंशी अजमीढके पौत्र तथा ऋक्षके पुत्र (आदि० ९४ । ३१-३४) । पाञ्चाल-नरेशके द्वारा इनपर आक्रमण और इनकी पराजय (आदि० ९४ । ३७-३८) । शत्रुके भयसे राज्य छोड़कर इनका सिन्धुतटपर निवास (आदि० ९४ । ३९-४०) । इनके द्वारा राज्य प्राप्तिके लिये पुरोहितके रूपमें वसिष्ठका वरण (आदि० ९४ । ४२-४४) । वसिष्ठकी सहायतासे इनको अपने राज्यकी प्राप्ति तथा इनके द्वारा विविध यज्ञोंका सम्पादन (आदि० ९४ । ४५-४७) । इनके द्वारा सूर्यकन्या तपतीके गर्भसे 'कुरु'का जन्म (आदि० ९४ । ४८) । इनकी सूर्यदेवके प्रति भक्ति एवं आराधना (आदि० १७० । १२-१४) । राजा संवरणके गुण—रूपमें इस पृथ्वीपर इनके समान कोई नहीं था । ये

कृतज्ञ और धर्मज्ञ थे। अपनी दिव्य कान्तिसे सूर्यकी भाँति प्रकाशित होते थे। प्रजा इनकी उपासना करती थी। उत्तम गुणसम्पन्न और श्रेष्ठ आचार-विचारसे युक्त थे (आदि० १७० । १५—१९)। इनके साथ तपतीके विवाहके लिये सूर्यदेवका संकल्प (आदि० १७० । २०)। एक दिन ये पर्वतके समीपवर्ती उपवनमें शिकार खेलनेके लिये गये। वहाँ थकावटके कारण इनके घोड़ेकी मृत्यु हो गयी। फिर ये अकेले पैदल ही घूमने लगे। घूमते-घूमते उपवनमें इन्हें एक विशाललोचना दिव्य कन्या दिखायी दी (वह सूर्यकन्या तपती थी) (आदि० १७० । २१-२३)। तपतीके रूप-सौन्दर्यको देखकर इनका मोह (आदि० १७० । २४-३४)। इनका उस कन्यासे परिचय पूछना । उसका अदृश्य होना तथा उसके वियोगसे इनकी मूर्च्छा (आदि० १७० । ३६-४४)। तपतीद्वारा इनको आश्वासन (आदि० १७१ । ४-५) । गान्धर्व विवाहद्वारा अपनी पत्नी बननेके लिये इनकी तपतीसे प्रार्थना (आदि० १७१ । ७-१९)। तपतीकी प्राप्तिके लिये इनके द्वारा सूर्यकी आराधना और वसिष्ठजीका स्मरण (आदि० १७२ । १२-१३)। वसिष्ठकी कृपा एवं प्रयत्नसे इनको तपतीकी प्राप्ति (आदि० १७२ । १४-३२) । तपतीके साथ इनका विधिपूर्वक विवाह (आदि० १७२ । ३३)। तपतीके साथ इनका विहार (आदि० १७२ । ३७)। इनके राज्यमें बारह वर्षतक अनावृष्टि (आदि० १७२ । ३८) । ये सायं-प्रातःस्मरणीय नरेश हैं (अनु० १६५ । ५४)।

महाभारतमें आये हुए संवरणके नाम-आजमीढ, आर्क्ष, पौरव, पौरवनन्दन, ऋक्षपुत्र आदि।

संवर्त--महर्षि अङ्गिराके तृतीय पुत्र । शेष दोके नाम बृहस्पति और उतथ्य हैं (आदि० ६६ । ५)। ये इन्द्र-सभामें रहकर देवराजकी उपासना करते हैं (सभा० ७ । १९)। ब्रह्माजीकी सभामें उपस्थित हो उनकी उपासना करते हैं (सभा० ११ । १२) । इन्होंने प्लक्षावतरणतीर्थमें राजा मरुत्तका यज्ञ कराया था (वन० १२९ । १३-१७)। बृहस्पतिजीके साथ स्पर्धा रखनेके कारण इन्होंने महाराज मरुत्तका यज्ञ कराया था (द्रोण० ५५ । ३८)। बृहस्पतिजीके इनकार करनेपर इन्होंने मरुत्तका यज्ञ कराया (शान्ति० २९ । २०-२१)। ये शरशय्यापर पड़े हुए भीष्मको देखनेके लिये गये थे (शान्ति० ४७ । ९)। महाप्रयाणके समय भीष्मजीके पास गये थे (अनु० २६ । ५)। ये अङ्गिराके आठ पुत्रोंमेंसे एक थे, शेषके नाम थे-बृहस्पति, उतथ्य, पयस्य, शान्ति, घोर, विरूप और सुधन्वा (अनु० ८५ । ३०-३१)। इनका मरुत्तको अपना साथ छोड़ देनेके लिये बाध्य करना (आश्व० ६ । ३१-३३) । मरुत्तसे अपने पक्षमें रहनेकी प्रतिज्ञा कराकर उन्हें उनका यज्ञ करानेकी स्वीकृति देना (आश्व० ७ । २४-२७) । मरुत्तको सुवर्णकी प्राप्तिके लिये शिवजीकी नाममयी स्तुतिका उपदेश करना (आश्व० ८ । १३-३२ तक दाक्षिणात्य पाठसहित)। अग्निदेवको जला डालनेकी धमकी देना (आश्व० ९ । १९)। इन्द्रके वज्रका स्तम्भन करना (आश्व० १० । १७)। इन्द्रको मरुत्तकी यज्ञशालामें बुलाना (आश्व० १० । २०)। इन्द्रको ही आवश्यक कार्यका उपदेश देने तथा देवोंका भाग निश्चित करनेके लिये कहना (आश्व० १० । २५)।

संवर्तक-(१) कश्यप और कद्रूसे उत्पन्न एक प्रमुख नाग (आदि० ३५ । १०) । (२) माल्यवान् पर्वतपर सदा प्रज्वलित रहनेवाले अग्निदेवका नाम (भीष्म० ७ । २७-२८)।

संवर्तवापी-एक दुर्लभ तीर्थ, जहाँ स्नान करनेसे मनुष्य सुन्दर रूपका भागी होता है (वन० ८५ । ३१)।

संवह-जो देवताओंके आकाशमार्गसे जानेवाले विमानोंको स्वयं ही वहन करती है, वह पर्वतोंका मान मर्दन करनेवाली चतुर्थ वायु संवह नामसे प्रसिद्ध है। इसका विशेष वर्णन (शान्ति० ३२८ । ४१-४३)।

संवृत्त-एक कश्यपवंशी नाग (उद्योग० १०३ । १४)।

संवृत्ति-ब्रह्माजीकी सभामें रहकर उनकी उपासना करनेवाली एक देवी (सभा० ११ । ४३)।

संवेद्य-एक तीर्थ, जहाँ प्रातः-संध्याके समय स्नान करनेसे विद्या प्राप्त होती है (वन० ८५ । १)।

संशप्तकवधपर्व-द्रोणपर्वका एक अवान्तर पर्व (द्रोण० अध्याय १७ से ३२ तक)।

संश्रुत्य-विश्वामित्रके ब्रह्मवादी पुत्रोंमेंसे एक (अनु० ४ । ५५)।

संस्थान-एक देश, जहाँके सैनिकोंको भीष्मकी रक्षाका आदेश दिया गया था (भीष्म० ५१ । ७)।

संहतापन-ऐरावतकुलका एक नाग, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें जल मरा था (आदि० ५७ । ११-१२)।

संहनन-राजा पूरुके प्रपौत्र एवं मनस्युके पुत्र । माताका नाम सौवीरी। ये शूरवीर एवं महारथी थे (आदि० ९४ । ५-७)।

संह्राद (संह्लाद)-हिरण्यकशिपुका द्वितीय पुत्र, प्रह्लादका छोटा भाई। इनके शेष भाइयोंके नाम—प्रह्लाद, अनुह्लाद, शिवि तथा बाष्कलि थे (आदि० ६५ । १७-१८)।

बाह्लीकदेशके सुप्रसिद्ध राजा शल्य इसीके अंशसे उत्पन्न हुए थे (आदि० ६७ । ६) । यह वरुणकी सभामें रहकर उनकी उपासना करता था (सभा० ९ । १२) ।

सकृद्ग्रह–एक दक्षिण भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ६६) ।

सगर–एक प्राचीन नरेश (आदि० १ । २३४) । ये यमसभामें रहकर सूर्यपुत्र यमकी उपासना करते हैं । (सभा० ८ । १९) । ये इक्ष्वाकुवंशके प्रतापी राजा थे । इनकी दो रानियाँ थीं—वैदर्भी और शैब्या । इनकी संतान-प्राप्तिके लिये तपस्या और इन्हें एक पत्नीसे साठ हजार तथा दूसरीसे एक ही वंशधर पुत्र होनेका वरदान (वन० ४७ । १९; वन० १०६ । ७—१६) । इनकी एक रानी वैदर्भीके गर्भसे एक तुम्बी उत्पन्न हुई । राजा उसे फेंकना चाहते थे, किंतु आकाशवाणीके मना करनेपर रुक गये तथा उसके निर्देशके अनुसार इन्होंने उस तुम्बीके एक-एक बीजको निकालकर साठ हजार घृतपूर्ण कलशोंमें रक्खा और उनकी रक्षाके लिये धायें नियुक्त कर दीं । तदनन्तर दीर्घकालके पश्चात् इनके साठ हजार पुत्र उन घड़ोंमेंसे निकल आये (वन० १०६ । १८ से वन० १०७ । ४ तक) । इनकी अश्वमेध यज्ञकी दीक्षा (वन० १०७ । ११) । इनके साठ हजार पुत्रोंका कपिलकी क्रोधाग्निमें भस्म होना (वन० १०७ । ३३) । इनके द्वारा अपने पुत्र असमंजस्का त्याग (वन० १०७ । ३९–४३; शान्ति० ५७ । ८) । इनका अंशुमान्को राज्य देकर स्वर्ग-गमन (वन० १०७ । ६४) । ये अर्जुन और कृपाचार्यका युद्ध देखनेके लिये इन्द्रके विमानपर बैठकर विराटनगरके पास आये थे (विराट० ५६ । १०) । श्रीकृष्णद्वारा इनके दान, यज्ञ आदिका वर्णन (शान्ति० २९ । १३०–१३६) । महर्षि अरिष्टनेमिसे इनका मोक्षविषयक प्रश्न (शान्ति० २८८ । ३) । इन्होंने जीवनमें कभी मांस नहीं खाया था (अनु० ११५ । ६६) । ये सायं-प्रातःस्मरणीय राजर्षि हैं (अनु० १६५ । ४९) ।

सङ्कर–एक मिश्रित जाति । भिन्न-भिन्न वर्णके माता-पितासे उत्पन्न होनेवाली संतानें 'संकरजातिके' अन्तर्गत मानी गयी हैं । भारतवर्षमें इस जातिके लोग भी रहते हैं (भीष्म० ९ । १३-१४) ।

सङ्कर्षण–बलदेव (सभा० २२ । ३६ के बाद दा० पाठ) । (देखिये बलराम) । इनकी उत्पत्ति और महिमाका वर्णन (शान्ति० २०७ । १–१२) ।

सञ्जय–(१) गवल्गण नामक सूतके पुत्र, जो मुनियोंके समान ज्ञानी और धर्मात्मा थे । ये धृतराष्ट्रके मन्त्री थे (आदि० ६३ । ९७) । धृतराष्ट्रके द्वारा इनको अपनी विजय-विषयक निराशाका अनुभव सुनाना (आदि० १ । १५०–२१८) । इनके द्वारा धृतराष्ट्रको आश्वासन (आदि० १ । २२२–२५१) । ये युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें गये थे । इन्हें राजाओंकी सेवा और सत्कारके कार्यमें नियुक्त किया गया था (सभा० ३५ । ६) । इनका धृतराष्ट्रको फटकारना (सभा० ८१ । ५–१८) । इनका धृतराष्ट्रके आदेशसे विदुरको बुलानेके लिये काम्यकवनमें जाना और विदुरसे संदेश कहना (वन० ६ । ५—१७) । इनके द्वारा संताप करते हुए धृतराष्ट्रकी बातोंका समर्थन (वन० ४९ । १–१३) । इनका धृतराष्ट्रसे दुर्योधनके वधके लिये श्रीकृष्णादिके द्वारा काम्यकवनमें की हुई प्रतिज्ञाका वर्णन करना (वन० ५१ । १५—४४) । धृतराष्ट्रके भेजनेसे युधिष्ठिरके पास जाकर उनकी कुशल पूछना (उद्योग० २३ । १–५) । युधिष्ठिरके प्रश्नोंका उत्तर देना (उद्योग० २४ अध्याय) । पाण्डवोंकी सभामें धृतराष्ट्रका संदेश सुनाना (उद्योग० २५ अध्याय) । युधिष्ठिरको युद्धमें दोषकी सम्भावना दिखाकर शान्त रहनेके लिये कहना (उद्योग० २७ अध्याय) । युधिष्ठिरके पाससे हस्तिनापुर लौटकर धृतराष्ट्रसे उनका कुशल-समाचार कहना और धृतराष्ट्रके कार्योंकी निन्दा करना (उद्योग० ३२ । ११–३०) । कौरव-सभामें आगमन (उद्योग० ४७ । १४) । कौरवसभामें अर्जुनका संदेश सुनाना (उद्योग० ४८ अध्याय) । धृतराष्ट्रसे युधिष्ठिरके प्रधान सहायकोंका वर्णन करना (उद्योग० ५० अध्याय) । धृतराष्ट्रको उनके दोष बताते हुए दुर्योधनपर शासन करनेकी सलाह देना (उद्योग० ५४ अध्याय) । दुर्योधनसे पाण्डवोंके रथ और अश्वोंका वर्णन करना (उद्योग० ५६ । ७—१७) । पाण्डवोंकी युद्धके लिये तैयारीका वर्णन (उद्योग० ५७ । २—२५) । धृष्टद्युम्नकी शक्ति एवं संदेशका कथन (उद्योग० ५७ । ४७—६२) । धृतराष्ट्रके पूछनेपर अन्तःपुरमें कहे हुए श्रीकृष्ण और अर्जुनके संदेश सुनाना (उद्योग० ५९ अध्याय) । धृतराष्ट्रको अर्जुनका संदेश सुनाना (उद्योग० ६६ । ३—१५) । धृतराष्ट्रसे श्रीकृष्णकी महिमाका वर्णन करना (उद्योग० अध्याय ६८ से ७० तक) । धृतराष्ट्रसे कर्ण और श्रीकृष्णके वार्तालापका वृत्तान्त बताना (उद्योग० १४३ अध्याय) । धृतराष्ट्रको कुरुक्षेत्रमें सेनाका पड़ाव पड़नेके बादका समाचार सुनाना आरम्भ करना (उद्योग० १५९ । ८) । व्यासजीकी कृपासे इन्हें दिव्यदृष्टिकी प्राप्ति (भीष्म० २ । १०) । धृतराष्ट्रके पूछनेपर भूमिके गुणोंका वर्णन करना (भीष्म० ४ । १० से भीष्म० ५ । १२ तक) । सुदर्शन द्वीपका वर्णन

करना (भीष्म० ५ । १३) । धृतराष्ट्रसे भीष्मजीकी मृत्युका समाचार सुनाना (भीष्म० १३ अध्याय)। (यहाँसे सौप्तिकपर्वके ९ वें अध्यायतक संजयने धृतराष्ट्रसे युद्धका समाचार सुनाया है।) धृतराष्ट्रको उपालम्भ देना (द्रोण० ८६ अध्याय)। धृतराष्ट्रसे कर्णद्वारा अर्जुनके ऊपर शक्ति न छोड़े जानेका कारण बताना (द्रोण० १८२ अध्याय) । कौरवपक्षके मारे गये प्रमुख वीरोंका परिचय देना (कर्ण० ५ अध्याय)। पाण्डवपक्षके मारे गये प्रमुख वीरोंका परिचय देना (कर्ण० ६ अध्याय)। कौरवपक्षके जीवित योद्धाओंका वर्णन (कर्ण० ७ अध्याय) । सात्यकिद्वारा जीते-जी इनका बंदी बनाया जाना (शल्य० २५ । ५७-५८)। व्यासजीके अनुग्रहसे सात्यकिकी कैदसे छुटकारा पाना (शल्य० २९ । ३९)। इनकी दिव्यदृष्टिका चला जाना (सौप्तिक० ९ । ६२)। धृतराष्ट्रको सान्त्वना देना (स्त्री० १ । २३–४३)। धृतराष्ट्रसे स्वजनोंका मृतक कर्म करनेको कहना (स्त्री० ९ । ५–७) । युधिष्ठिरद्वारा इन्हें कृताकृत कार्योंकी जाँच तथा आय-व्ययके निरीक्षणका कार्य सौंपा जाना (शान्ति० ४१ । ११)। धृतराष्ट्र और गान्धारीके साथ इनका वनगमन (आश्रम० १५ । ८)। यात्राके प्रथम दिन गङ्गातटपर धृतराष्ट्रके लिये शय्या बिछाना (आश्रम० १८ । १९)। वनवासी महर्षियोंसे पाण्डवों तथा उनकी पत्नियोंका परिचय देना (आश्रम० २५ अध्याय)। ये वनमें छठे समय अर्थात् दो दिन उपवास करके तीसरे दिन आहार ग्रहण करते थे (आश्रम० ३७ । १३)। ये सदा धृतराष्ट्रके पीछे चलते और ऊँची-नीची भूमिमें उन्हें सहारा देकर ले चलते थे (आश्रम० ३७ । १६-१७) । वनमें दावानल प्रज्वलित हो जानेपर धृतराष्ट्रने सञ्जयको दूर भाग जानेके लिये कहा। सञ्जयने इस तरह दावानलमें जलकर होनेवाली मृत्युको राजाके लिये अनिष्ट बतायी, किंतु उससे बचानेका कोई उपाय न देखकर अपना कर्तव्य पूछा। राजाने कहा कि गृहत्यागियोंके लिये यह मृत्यु अनिष्टकारक नहीं, उत्तम है, तुम भाग जाओ। तब सञ्जयने राजाकी परिक्रमा की और उन्हें ध्यान लगानेके लिये कहा । राजा धृतराष्ट्र, गान्धारी और कुन्ती तीनों दग्ध हो गये, किंतु ये दावानलसे मुक्त हो गये। फिर गङ्गातटपर तपस्वी जनोंको राजाके दग्ध होनेका समाचार बताकर ये हिमालयको चले गये (आश्रम० ३७ । १९—३४) । (२) सौवीर देशका एक राजकुमार, जो हाथमें ध्वज लेकर जयद्रथके पीछे चलता था (वन० २६५ । १०)। द्रौपदी-हरणके समय अर्जुनद्वारा इसका वध (वन० २७१ । २७)। (३) सौवीर देशका एक राजकुमार, जिसकी माता विदुला थी। एक दिन रणभूमिसे भागकर आनेपर माताने इसे कड़ी फटकार दी और युद्धके लिये प्रोत्साहन दिया (उद्योग० अध्याय १३३ से १३६ । १२ तक)। माताके उपदेशसे युद्धके लिये उद्यत हो उसकी आज्ञाका यथावत् रूपसे पालन किया (उद्योग० १३६ । १३—१६)।

सञ्जयन्ती–दक्षिण भारतकी एक नगरी, जिसे सहदेवने दक्षिण-दिग्विजयके समय दूतोंद्वारा संदेश देकर ही अपने अधिकारमें करके वहाँसे कर वसूल किया था (सभा० ३१ । ७०)।

सञ्जययानपर्व–उद्योगपर्वका एक अवान्तर पर्व (अध्याय २० से ३२ तक)।

सञ्जीवनमणि–एक प्रकारकी मणि, जो नागोंके जीवनकी आधारभूत है । बभ्रुवाहनद्वारा आहत अर्जुनके अचेत हो जानेपर उलूपीने इसका स्मरण करके हस्तगत किया था। यह मणि सदा मरे हुए नागराजोंको जीवित किया करती थी। उलूपीकी आज्ञासे बभ्रुवाहनने इसे लेकर अर्जुनकी छातीपर रखा, जिससे अर्जुन जीवित हो उठे (आश्व० ८० । ४२—५२)।

सञ्जीवनी–एक विद्या, जिसके द्वारा मृत व्यक्तिको भी जीवन-दान दिया जा सकता है। शुक्राचार्यने इसी विद्याके बलसे देवासुर-संग्राममें मारे गये दानवोंको जिलाया था (आदि० ७६ । ८) । इसीके बलसे उन्होंने दानवोंद्वारा मारे गये कचको तीन बार जिला दिया था। शुक्राचार्यने कचको भी इस विद्याका उपदेश दिया था (आदि० ७६ । २८—६१) ।

सणु–एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ४३)।

सतत–कुरुक्षेत्रकी सीमाके अन्तर्गत एक विष्णु-सम्बन्धी तीर्थ, जहाँ श्रीहरि सदा निवास करते हैं (वन० ८३ । १०)। वहाँ स्नान और भगवान् श्रीहरिको नमस्कार करनेसे मनुष्य अश्वमेध-यज्ञका फल पाता तथा भगवान् विष्णुके लोकमें जाता है (वन० ८३ । १०-११)।

सत्य–(१) एक ऋषि, जो युधिष्ठिरकी सभामें विराजते थे (सभा० ४ । १०) । (२) एक अग्नि, जो निश्च्यवन नामक अग्निके पुत्र हैं। वे निष्पाप तथा कालधर्मके प्रवर्तक हैं। वेदनासे पीड़ित प्राणियोंको कष्टसे निष्कृति (छुटकारा) दिलानेके कारण इनका दूसरा नाम निष्कृति है। ये ही प्राणियोंद्वारा सेवित गृह और उद्यान आदिमें शोभाकी सृष्टि करते हैं । इनके पुत्रका नाम स्वन है (वन० २१९ । १३–१५)। (३) कलिङ्गसेनाका एक योद्धा, जो कलिङ्गराज श्रुतायुका चक्ररक्षक था। भीमसेनद्वारा इसका वध (भीष्म० ५४ । ७६)। (४) विदर्भनिवासी एक धर्मात्मा तपस्वी ब्राह्मण

(शान्ति० २७२ । ६)। इनके अहिंसापूर्ण यज्ञका वर्णन (शान्ति० २७२ । १०—२०)। (५) भगवान् श्रीकृष्णका एक नाम और इसकी निरुक्ति (शान्ति० ३४२ । ७५-७६)। (६) वीतहव्यवंशी वितत्यके पुत्र। इनके पुत्रका नाम संत था (अनु० ३० । ६२)।

सत्यक-एक यदुवंशी क्षत्रिय, जो सात्यकिके पिता थे (आदि० ६३ । १०५)। ये रैवतक पर्वतपर होनेवाले उत्सवमें सम्मिलित थे (आदि० २१८ । ११)। इनके द्वारा अभिमन्युका श्राद्ध किया गया (आश्व० ६२ । ६)।

सत्यकर्मा-त्रिगर्तराज सुशर्माका भाई, जिसने अर्जुनको मारनेके लिये प्रतिज्ञा की थी। यह एक संशप्तक योद्धा था (द्रोण० १७ । १७-१८)। अर्जुनद्वारा इसका वध (शल्य० २७ । ३९-४०)।

सत्यजित्-राजा द्रुपदके भाई, जिसे साथ ले द्रुपदने अर्जुनपर धावा किया था (आदि० १३७ । ४२)। अर्जुनके साथ इनका युद्ध (आदि० १३ । ४६)। अर्जुनसे पराजित होकर इनके द्वारा युद्ध-भूमिका त्याग (आदि० १३७ । ५३)। अर्जुनद्वारा इन्हें युधिष्ठिरकी रक्षाका भार सौंपा जाना (द्रोण० १७ । ४४-४५)। द्रोणाचार्यद्वारा इनका वध (द्रोण० २१ । २१)। इनके मारे जानेकी चर्चा (कर्ण० ६ । ४)।

सत्यदेव-कलिङ्गसेनाका एक योद्धा, जो कलिङ्गराज श्रुतायुका चक्ररक्षक था। भीमसेनद्वारा इसका वध (भीष्म० ५४ । ७६)।

सत्यधर्मा-एक सोमकवंशी राजकुमार, जो युधिष्ठिरके सहायक थे (उद्योग० १४१ । २५)।

सत्यधृति-(१) पाण्डवपक्षके महारथी योद्धा, जिन्हें भीष्मजीने रथियोंमें श्रेष्ठ माना था (उद्योग० १७१ । १८)। ये द्रौपदीके स्वयंवरमें भी पधारे थे (आदि० १८५ । १०)। ये सुचित्तके पुत्र थे। इन्होंने युद्धमें हिडिम्बाकुमार घटोत्कचकी सहायता की थी (भीष्म० ९३ । १३)। इनके घोड़ोंका रंग लाल था, परंतु उनके पैर काले रंगके थे। ये सभी सुवर्णमय विचित्र कवचोंसे सुसज्जित थे। कुमार सत्यधृति अस्त्रोंके ज्ञान, धनुर्वेद तथा ब्राह्मवेदमें भी पारंगत थे (द्रोण० २३ । ३६, ३९)। द्रोणाचार्यद्वारा इनके मारे जानेकी चर्चा (कर्ण० ६ । ३४)। (२) राजा क्षेमकके पुत्र पाण्डव-पक्षका योद्धा, इसके घोड़ोंका वर्णन (द्रोण० २३ । ५८)।

सत्यपाल-एक ऋषि, जो राजा युधिष्ठिरकी सभामें विराजते थे (सभा० ४ । १४)।

सत्यभामा-भगवान् श्रीकृष्णकी पटरानी, भगवान् श्रीकृष्णने नरकासुरको मारकर इनके साथ नरकासुरके घरका निरीक्षण किया। फिर वे इन्हें साथ लेकर इन्द्रलोकमें गये। वहाँ शचीदेवीने इन्हें देवमाता अदितिसे मिलाया था। माता अदितिने इन्हें यह वर दिया था कि 'जबतक श्रीकृष्ण मानवशरीरमें रहेंगे तबतक तू भी वृद्धावस्थाको प्राप्त न होगी, दिव्य सुगन्ध एवं उत्तम गुणोंसे सुशोभित होगी।' सत्यभामा शचीके साथ स्वर्गमें घूम-फिरकर उनकी अनुमति ले भगवान् श्रीकृष्णके साथ पुनः द्वारका आ गयीं। द्वारकामें इन्हें रहनेके लिये श्वेत रंगका प्रासाद (महल) प्राप्त हुआ था, उसमें विचित्र मणियोंके सोपान लगे थे, उसमें प्रवेश करनेपर ग्रीष्म ऋतुमें भी शीतलताका अनुभव होता था। यह महल एक सुन्दर उद्यानमें बनाया गया था। इसमें चारों ओर ऊँची ध्वजाएँ फहराती थीं, ये सभाभवनमें भगवान्‌का वैभव एवं नवागता रानियोंको देखने गयी थीं (सभा० ३८ । २९ के बाद, दा० पाठ, पृष्ठ ८०८, ८११, ८१२, ८१५, ८२०)। इनका काम्यकवनमें श्रीकृष्णके साथ आकर द्रौपदीसे मिलना (वन० १८३ । ११)। इनका द्रौपदीसे पतिको अपने अनुकूल बनाये रखनेका उपाय पूछना (वन० २३३ । ४—८)। इनका द्रौपदीको आश्वासन देकर द्वारकाको प्रस्थान करना (वन० २३५ । ४—१८)। ये सत्राजित्‌की पुत्री थीं, भगवान् श्रीकृष्णके परमधाम-गमनके पश्चात् जब अर्जुन द्वारकामें आये थे, उस समय उनके पास आकर रुक्मिणी आदि रानियोंके साथ इन्होंने विलाप किया था (मौसल० ५ । १३)। श्रीकृष्णप्रिया सत्यभामा तपस्याका निश्चय करके वनमें चली गयी थीं (मौसल० ७ । ७४)।

सत्ययुग-चारों युगोंमें प्रथम युग (विशेष देखिये कृतयुग)।

सत्यरथ--त्रिगर्तराज सुशर्माका भाई, जो अपने पाँच रथी बन्धुओंमें प्रधान था (उद्योग० १६६ । ११)। इसने अर्जुनको मारनेके लिये प्रतिज्ञा की थी (द्रोण० १७ । १७-१८)। (यह एक संशप्तक योद्धा था।)

सत्यवती--(१) उपरिचर वसुके वीर्यद्वारा ब्रह्माजीके शापसे मत्स्यभावको प्राप्त हुई 'अद्रिका' नामक अप्सराके गर्भसे उत्पन्न एक राजकन्या। मल्लाहोंने मछलीका पेट चीरकर एक कन्या और पुरुष निकाला, जब राजाको इसकी सूचना दी गयी, तब राजाने उन दोनों बालकोंमेंसे पुत्रको स्वयं ग्रहण कर लिया, वही 'मत्स्य' नामक धर्मात्मा राजा हुआ, उनमें जो कन्या थी, उसके शरीरसे मछलीकी गन्ध आती थी, अतः राजाने उसे मल्लाहको सौंप दिया और कहा—'यह तेरी पुत्री होकर रहे। सत्व,

सत्य एवं सद्गुणसे सम्पन्न होनेके कारण वह 'सत्यवती' नामसे प्रसिद्ध हुई, मछेरोंके आश्रयमें रहने और मछलीकी सी गन्ध होनेके कारण वह कुछ काल 'मत्स्यगन्धा' कहलायी। यह पिताकी सेवाके लिये यमुनाजीमें नाव चलाया करती थी (आदि० ६३ । ५०–६९)। यह अतिशय रूप-सौन्दर्यसे सुशोभित थी। एक दिन पराशर मुनिने इसे देखा और इसके साथ समागमकी इच्छा प्रकट की। इस-की इच्छाके अनुसार अन्धकारके लिये उन्होंने कुहरेकी सृष्टि कर दी। इसके कन्यात्वके अक्षुण्ण रहने और शरीर-से उत्तम सुगन्ध प्रकट होनेका भी महर्षिने इसे वर दे दिया। फिर इसने महर्षिके साथ समागम किया। शरीरसे उत्तम गन्ध निकलनेसे इसका 'गन्धवती' नाम प्रसिद्ध हुआ। इस पृथ्वीपर एक योजन दूरके मनुष्य भी इसकी सुगन्ध-का अनुभव करते थे, इस कारण इसका दूसरा नाम 'योजनगन्धा' हो गया (आदि० ६३ । ७०–८३)। सत्यवतीने पराशरजीके सम्पर्कसे तत्काल ही एक शिशुको जन्म दिया। यमुनाजीके द्वीपमें अत्यन्त शक्तिशाली परा-शरनन्दन व्यास प्रकट हुए। उन्होंने मातासे कहा—'आव-श्यकता पड़नेपर तुम मेरा स्मरण करना, मैं अवश्य दर्शन दूँगा।' इतना कहकर उन्होंने माताकी आज्ञासे तपस्यामें ही मन लगाया (आदि० ६३ । ८४-८५)। पिताके पूछनेपर इसका अपने शरीरकी उत्तम गन्धमें महर्षि परा-शरकी कृपाको कारण बताना (आदि० ६३ । ८६ के बाद दा० पाठ)। इसका एक नाम 'गन्धकाली' भी था। इसका शान्तनुके साथ विवाह और उनके द्वारा इसके गर्भसे चित्राङ्गद और विचित्रवीर्यका जन्म हुआ (आदि० ९५। ४८–५०; आदि० १०१ । ३)। वंशकी रक्षाके लिये विवाह करने तथा अम्बिका आदिके गर्भसे पुत्रोत्पादनके लिये इसका भीष्मसे अनुरोध (आदि० १०३ । १०–११)। भीष्मके प्रति इसका अपने गर्भसे व्यासजीके जन्मका वृत्तान्त सुनाना (आदि० १०४ । ५–१४)। विचित्रवीर्यकी स्त्रियोंसे संतानोत्पादनके हेतु व्यासजीको बुलाने-के सम्बन्धमें इसका भीष्मसे परामर्श (आदि० १०४ । १८-१९)। भीष्मकी अनुमति प्राप्त होनेपर कुरुवंशकी रक्षाके लिये इसके द्वारा व्यासजीका स्मरण (आदि० १०४ । २३-२४)। विचित्रवीर्यकी पत्नियोंसे पुत्रोत्पादन-के लिये इसके द्वारा व्यासको आदेश (आदि० १०४ । ३५–३८)। इसका रानी अम्बिकाको समझा-बुझाकर अनुकूल करके पुत्रोत्पादनके निमित्त व्यासकी प्रतीक्षा करनेके लिये आज्ञा देना (आदि० १०४ । ४९ से आदि० १०५ । २ तक)। इसका अम्बालिकाको तैयार करना और उसके गर्भसे पुत्रोत्पादनके लिये व्यासजीको बुलाना (आदि० १०५ । १३-१४)। व्यासजीका पाण्डुके शोकसे व्याकुल हुई माता सत्यवतीको आश्वासन देना तथा आनेवाले भयंकर समयका परिणाम बतलाकर तपोवनमें तपस्याके लिये जानेकी सम्मति प्रदान करना (आदि० १२७ । ५–८)। अपने दोनों पुत्रवधुओं (अम्बिका एवं अम्बालिका) के साथ इसका तपोवनमें जाना और तपस्याद्वारा परमपद प्राप्त करना (आदि० १२७ । १३)।

महाभारतमें आये हुए सत्यवतीके नाम—दाशेयी, गन्धकाली, गन्धवती, काली, सत्या, वासवी तथा योजन-गन्धा आदि।

(२) केकयकुलकी कन्या, इक्ष्वाकुवंशी महाराज त्रिशङ्कुकी पत्नी और राजा हरिश्चन्द्रकी माता (सभा० १२ । १० के बाद दा० पाठ)। (३) महाराज गाधिकी पुत्री, जिसका विवाह राजाने एक हजार श्यामकर्ण घोड़े लेकर ऋचीक मुनिके साथ किया था (वन० ११५ । २६–२९)। (४) नारदजीकी भार्या (उद्योग० ११७ । १५)।

सत्यवर्मा—त्रिगर्तराज सुशर्माका भाई (संशप्तकयोद्धा), जिसने अर्जुनको मारनेके लिये प्रतिज्ञा की थी (द्रोण० १७ । १७-१८)।

सत्यवाक्—एक देवगन्धर्व, जो कश्यपकी पत्नी 'मुनि'का पुत्र था (आदि० ६५ । ४३)।

सत्यवान्—(१) शाल्वनरेश द्युमत्सेनके पुत्र, जो नगरमें जन्म लेकर भी तपोवनमें पालित, पोषित और संवर्धित हुए थे (वन० २९४ । १०)। मद्रराज अश्वपतिकी कन्या सावित्रीके साथ इनका विवाह (वन० २९५ । १५)। इनका समिधाके लिये वनमें जानेको उद्यत होना। सावित्रीका इनसे अपनेको भी साथ ले चलनेका अनुरोध। इनका उसे माता-पिताकी आज्ञा लेकर चलनेके लिये स्वीकृति देना (वन० २९६ । १८–२३)। इनका वनमें फल चुनकर टोकरीमें रखना, फिर लकड़ी चीरना, श्रमसे इनके सिरमें दर्द होना, सावित्रीसे अपनी अस्वस्थता और असमर्थताका वर्णन करना, यमराजका सावित्रीसे सत्यवान्‌की आयुके समाप्त होने और इन्हें बाँधकर ले जानेके लिये अपने आगमनकी बात बताना तथा सत्यवान्‌के शरीरमें पाशमें बँधे हुए अङ्गुष्ठमात्र परिमाणवाले जीवको बलपूर्वक खींचकर निकालना (वन० २९६ । १–१७)। इनका पुनः जीवित होना और सावित्रीसे वार्तालाप करना, माता-पिताके दर्शनके लिये इनकी चिन्ता (वन० २९७ । ६४–१०२)। सावित्रीके साथ इनका आश्रमकी ओर प्रस्थान (वन० २९७ । १०७–११)। इनका पत्नीके साथ आश्रममें पहुँचना (वन० २९८ । २१)।

इनका ऋषियोंके पूछनेपर विलम्बसे आश्रममें आनेका कारण बताना (वन० २९८ । ३०-३२) । इनका युवराजपदपर अभिषेक (वन० २९९ । ११) । पिताके साथ राज्यपालनके विषयमें वार्तालाप (शान्ति० २६७ अध्याय) । लोगोंके पूछनेपर कन्यादानके विषयमें इनका निर्णय देना (अनु० ४४ । ५१-५६) । (२) कौरव-पक्षके एक सेनापति, जो महारथी वीर थे (उद्योग० १६७ । ३०) ।

सत्यव्रत-(१) एक प्राचीन नरेश (आदि० १ । २३६) । (२) (सत्यसेन, सत्यसंध, संध) धृतराष्ट्रका एक महारथी पुत्र (आदि० ६३ । ११९-१२०) । (विशेष देखिये—सत्यसंध) (३) त्रिगर्तराज सुशर्माका भाई (एक संशप्तक योद्धा) । इसका अर्जुनको मारनेके लिये प्रतिज्ञा करना (द्रोण० १७ । १७-१८) ।

सत्यश्रवा-कौरवपक्षका एक योद्धा, जो अभिमन्युद्वारा मारा गया था (द्रोण० ४५ । ३) ।

सत्यसंध (सत्यव्रत, सत्यसेन अथवा संध)-(१) धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक । यह ग्यारह महारथियोंमेंसे एक था (आदि० ६३ । ११९-१२०, आदि० ६७ । १००; आदि० ११६ । ९) । यह अपने भाइयोंके साथ शल्यकी रक्षामें तत्पर था (भीष्म० ६२ । १७) । अभिमन्युने इसे बाण मारकर घायल कर दिया था (भीष्म० ६२ । २८-२९) । अभिमन्युके साथ इसका युद्ध (भीष्म० ७३ । २४-२६) । सात्यकिने इसे बाण मारे थे (द्रोण० ११६ । ७-८) । इसका एक नाम सत्यसेन भी है । यह और सुषेण युद्धमें चित्रसेनके साथ खड़े थे । (कर्ण० ७ । १७) । भीमसेनद्वारा इसका वध (कर्ण० ८४ । २-६) । (२) मित्रद्वारा स्कन्दको दिये गये दो पार्षदोंमेंसे एक, दूसरेका नाम 'सुव्रत' था (शल्य० ४५ । ४१) । (३) एक महान् व्रतधारी प्राचीन नरेश । जिन्होंने अपने प्राणोंद्वारा एक ब्राह्मणके प्राणोंकी रक्षा की थी और ऐसा करके वे स्वर्गमें गये थे (शान्ति० २३४ । १६) ।

सत्यसेन (सत्यसंध या संध)—(१) धृतराष्ट्रका एक पुत्र (आदि० ६७ । १००; आदि० ११६ । ९) (विशेष देखिये—सत्यसंध) । (२) त्रिगर्तराज सुशर्माका भाई, जिसका अर्जुनके साथ युद्ध और उनके द्वारा वध हुआ था (कर्ण० २७ । ३-२२) । (३) कर्णका पुत्र, जो अपने पिताका चक्ररक्षक था (कर्ण० ४८ । १८) ।

सत्या-(१) भगवान् श्रीकृष्णकी एक पटरानी । ये श्रीजीके साथ श्रीकृष्णका दर्शन करनेके लिये सभाभवनमें गयी थीं (सभा० ३८ । २९ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ८२०) । (२) शंयु नामक अग्निकी पत्नी । जिसके रूप और गुणोंकी कहीं तुलना नहीं थी । इसके गर्भसे एक भरद्वाज नामक पुत्र और तीन कन्याएँ हुई थीं (वन० २१९ । ४-५) ।

सत्येयु-पूरुके तीसरे पुत्र । रौद्राश्वके द्वारा मिश्रकेशी नामक अप्सराके गर्भसे उत्पन्न एक महा धनुर्धर पुत्र (आदि० ९४ । ८-१२) ।

सत्येषु-(१) त्रिगर्तराज सुशर्माका भाई (एक संशप्तक योद्धा) । इसका अर्जुनको मारनेके लिये प्रतिज्ञा करना और अर्जुनके द्वारा इसका वध (द्रोण० १७ । १७-१८; शल्य० २७ । ४०-४१) । (२) एक राक्षस, जो प्राचीन कालमें इस पृथ्वीका शासक था; किंतु कालसे पीड़ित हो पृथ्वीको छोड़कर चला गया (शान्ति० २२७ । ५१) ।

सत्राजित्-एक प्रमुख यादव । प्रसेनजित्के भाई । सत्राजित् और प्रसेनजित्—ये दोनों जुड़वें बन्धु थे । इनके पास स्यमन्तकमणि थी, जिससे प्रचुर मात्रामें सुवर्ण झरता रहता था (सभा० १४ । ६० के बाद दा० पाठ) । कृतवर्माने मणिके लोभसे सत्राजित्का वध करवाया था—इसका सात्यकिने श्रीकृष्णको स्मरण दिलाया था (मौसल० ३ । २३) । इनकी पुत्रीका नाम सत्यभामा था (मौसल० ५ । १३) ।

सदश्व-एक राजा, जो यमसभामें रहकर सूर्यपुत्र यमकी उपासना करते हैं (सभा० ८ । १२) ।

सदःसुवाक् (सहस्रवाक्)-धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६७ । १००; आदि० ११६ । ९) ।

सदस्योर्मि-एक राजा, जो यमसभामें रहकर सूर्यपुत्र यमकी उपासना करते हैं (सभा० ८ । ११) ।

सदाकान्ता-एक पवित्र नदी, जिसका जल भारतवासी पीते हैं (भीष्म० ९ । २५) ।

सदानीरा-एक पवित्र नदी, जो वरुणकी सभामें रहकर उनकी उपासना करती है (सभा० १० । २७) । इसका जल भारतवासी पीते हैं (भीष्म० ९ । २४) । (कुछ लोगोंका मत है कि करतोया नदीका ही नाम 'सदानीरा' या 'सदानीरवहा' है । करतोया जलपाईगुड़ीके जंगलोंसे निकलकर रंगपुर होती हुई बोगड़ा जिलेके दक्षिण हलहलिया नदीमें मिलती है । दूसरे मतके अनुसार सरयूकी सहायक नदी 'राप्ती' ही सदानीरा है । ग्रन्थान्तरोंमें इसके अचिरवती तथा इरावती नाम भी मिलते हैं ।)

सनत्कुमार-एक ऋषि, जो भूतलपर प्रद्युम्नके रूपमें अवतीर्ण हुए थे (आदि० ६७ । १५२) । इन्होंने

ब्रह्मलोकसे आकर राजा पुरूरवाको समझाया था (आदि० ७५ । २१-२२) । महातपस्वी योगाचार्य भगवान् सनत्कुमार ब्रह्मसभामें रहकर उनकी उपासना करते हैं (सभा० ११ । २३) । कनखलके पास महानदी गङ्गाके तटपर इन्हें सिद्धि प्राप्त हुई थी (वन० १३५ । ५) । इनके द्वारा गौतम और अत्रिके विवादका निर्णय (वन० १८५ । २७-३१) । ये शरशय्यापर पड़े हुए भीष्मजीके पास उन्हें देखनेके लिये आये थे (शान्ति० ४७ । ८) । विभाण्डक आदि ऋषियोंको इनका उपदेश (शान्ति० २२२ अ० दा० पाठ)। वृत्रासुरको आध्यात्मिक उपदेश (शान्ति० २८० । ७—५६) । इन्होंने गन्धर्वराज विश्वावसुको किसी समय उपदेश किया था (शान्ति० ३१८ । ६१) । इनका ऋषियोंको उपदेश(शान्ति० ३२९ । ५–७) । ये ब्रह्माजीके मानसपुत्र हैं । इन्हें स्वयं विज्ञान प्राप्त है और ये निवृत्ति-धर्ममें स्थित हैं । ये प्रमुख योगवेत्ता, सांख्यज्ञान-विशारद, धर्मशास्त्रोंके आचार्य तथा मोक्षधर्मके प्रवर्तक हैं (शान्ति० ३४ । ७२–७४) । इन्होंने ब्रह्माजीसे सात्वतधर्मका उपदेश ग्रहण किया और इनसे वीरण प्रजापतिको इस धर्मका उपदेश प्राप्त हुआ (शान्ति० ३४८ । ४०-४१) । प्रद्युम्न स्वर्गमें जानेपर इन्हींके स्वरूपमें प्रविष्ट हो गये थे (स्वर्गा० ५ । १३) ।

सनत्सुजात (या सनत्कुमार)–एक सनातन ऋषि, जो विदुरजीके स्मरण करनेसे प्रकट हुए थे (उद्योग० ४१ । ८) । इनके द्वारा धृतराष्ट्रको उपदेश (उद्योग० अध्याय ४२ से ४६ तक) ।

सनत्सुजातपर्व–उद्योगपर्वका एक अवान्तर पर्व (अध्याय ४१ से ४६ तक) ।

सनातन–(१) एक महर्षि, जो राजा युधिष्ठिरकी सभामें विराजते थे (सभा० ४ । १६) । (२) ब्रह्माजीके एक मानसपुत्र (शान्ति० ३४० । ७२) ।

सनीय–दक्षिण भारतका एक जनपद (भीष्म० ९ । ६३) ।

सन्त–वीतहव्यवंशी सत्यके पुत्र । इनके पुत्रका नाम श्रवा था (अनु० ३० । ६२-६३) ।

सन्नतेयु–पूरुके तीसरे पुत्र रौद्राश्वके द्वारा मिश्रकेशी अप्सराके गर्भसे उत्पन्न एक महाधनुर्धर पुत्र (आदि० ९४ । ८–११) ।

सन्निहती तीर्थ–कुरुक्षेत्रकी सीमाके अन्तर्गत एक प्राचीन तीर्थ । जहाँ ब्रह्मा आदि देवता और तपोधन ब्रह्मर्षि प्रतिमास महान् पुण्यसे सम्पन्न होकर जाते हैं । सूर्यग्रहणके समय इसमें स्नान करनेसे सौ अश्वमेध यज्ञोंका फल प्राप्त होता है । इसमें पृथ्वी और आकाशके सम्पूर्ण तीर्थ अमावास्याको आते हैं । तीर्थसंघातसे युक्त होनेके कारण इसे सन्निहती कहते हैं । यहाँ श्राद्ध करनेकी विशेष महिमा है (वन० ८३ । १९०–१९९) ।

सन्निहित–एक अग्नि, जो देहधारियोंके प्राणोंका आश्रय लेकर उनके शरीरको कार्यमें प्रवृत्त करते हैं । ये मनुके तीसरे पुत्र हैं । इनके द्वारा शब्द और रूपको ग्रहण करनेमें सफलता मिलती है (वन० २२१ । १९) ।

सप्तकृत्–एक सनातन विश्वेदेव (अनु० ९१ । ३६) ।

सप्तगङ्ग–एक प्राचीन तीर्थ । इसमें विधिपूर्वक देवता-पितरोंका तर्पण करनेवाला मनुष्य पुण्यलोकमें प्रतिष्ठित होता है (वन० ८४ । २९) । इस तीर्थमें पितरोंका तर्पण करने-वाला मनुष्य यदि जन्म लेता है तो अमृतभोजी देवता होता है (अनु० २५ । १६) ।

सप्तगोदावर–शूर्पारक क्षेत्रके समीपवर्ती एक प्राचीन तीर्थ, जहाँ स्नान करके नियमपूर्वक नियमित भोजन करनेवाला पुरुष महान् पुण्य लाभ करता और देवलोकमें जाता है (वन० ८५ । ४४) ।

सप्तचरु–यहाँ सभी देवताओं तथा प्राणियोंने भगवान् केशवको प्रसन्न करनेके लिये ऋग्वेदकी सात-सात ऋचाओंसे सात-सात आहुतियाँ दी थीं, इसीसे इसका नाम सप्तचरु पड़ा । वहाँ अग्निके लिये दिया हुआ चरु एक लाख गोदान, सौ राजसूय यज्ञ और सहस्र अश्वमेध यज्ञसे भी अधिक कल्याणकारी है (वन० ८२ । ९६–९९) ।

सप्तराव–गरुड़की प्रमुख संतानोंमेंसे एक (उद्योग० १०१ । ११) ।

सप्तर्षिकुण्ड–कुरुक्षेत्रकी सीमाके अन्तर्गत ब्रह्मोदुम्बर तीर्थमें स्थित एक कुण्ड । जिसमें स्नान करनेसे महान् पुण्यकी प्राप्ति होती है (वन० ८३ । ७२) ।

सप्तसारस्वत–कुरुक्षेत्रकी सीमाके अन्तर्गत एक प्राचीन तीर्थ, जहाँ मंकणक मुनिको सिद्धि प्राप्त हुई थी (वन० ८३ । ११५-११६) । यह सरस्वती तीर्थमें सबसे श्रेष्ठ है । यहाँ बलरामजी अपनी तीर्थयात्राके अवसरपर पधारे थे (शल्य० ३७ । ६१) । इस तीर्थकी उत्पत्ति और महिमाका विशेषरूपसे वर्णन (शल्य० ३८ । ३–३२) ।

सभापति–कौरवपक्षका एक राजकुमार, जिसका अर्जुनद्वारा वध हुआ था (कर्ण० ८९ । ६४)

सभापर्व–महाभारतका एक प्रमुख पर्व ।

सम–धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६७ । ९६; आदि० ११६ । ९) । इसका भीमसेनके साथ युद्ध (भीष्म० ६४ । २९) । इसका भीमसेनके साथ युद्ध और उनके द्वारा वध (कर्ण० ५१ । ७–१६) ।

समङ्ग–(१) दुर्योधनका एक ग्वाला, जिसने धृतराष्ट्रको उनकी गौओंके समीप आनेकी सूचना दी थी (वन० २३९ । २) । (२) एक दक्षिणभारतका जनपद (भीष्म० ९ । ६०) । (३) एक प्राचीन ऋषि । नारदजीके पूछनेपर इनका अपनी शोकरहित स्थितिका वर्णन करना (शान्ति० २८६ । ५–२१) ।

समङ्गा–एक नदी, जिसमें पिताकी आज्ञासे स्नान करनेके कारण अष्टावक्रके अङ्ग सीधे हो गये थे। तभीसे यह नदी पुण्यमयी हो गयी । इसमें स्नान करनेवाला मनुष्य सब पापोंसे मुक्त हो जाता है (वन० १३४ । ३९-४०) । इसका दूसरा नाम मधुविला भी है (वन० १३५ । १-२) ।

समन्तपञ्चक–एक क्षेत्र । यहाँ परशुरामजीने रक्तके पाँच सरोवर बना दिये थे और उन्हींमें रक्ताञ्जलिद्वारा अपने पितरोंका तर्पण किया था (आदि० २ । ४-५; वन० ११७ । ९-१०) । परशुरामजीके पितरोंके वरदानसे यह प्रसिद्ध तीर्थ हो गया (आदि० २ । ८–११) । द्वापर और कलियुगकी संधिमें कौरवों और पाण्डवोंका महाभारतयुद्ध यहीं हुआ था । इसी कारण, **'समेतानाम् अन्तो यस्मिन् तत् समन्तम्'** इस व्युत्पत्तिके अनुसार इसका नाम समन्तपञ्चक पड़ गया (आदि० २ । १३–१५) । बलरामजीकी सलाहसे पाण्डव तथा दुर्योधनका इस क्षेत्रमें युद्धके लिये जाना (शल्य० ५५ । ५–१८) । इसी क्षेत्रमें दुर्योधनका निधन (शल्य० ३९ । ४०) ।

समन्तर–एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ५०) ।

समयपालनपर्व–विराटपर्वका एक अवान्तर पर्व (अध्याय १३) ।

समरथ–राजा विराटके भाई, जो पाण्डवोंके प्रधान सहायक थे (द्रोण० १५८ । ४२) ।

समवेगवश–एक दक्षिणभारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ६१) ।

समसौरभ–एक वेदविद्याके पारङ्गत ब्राह्मण, जो जनमेजयके सर्पसत्रके सदस्य बने थे (आदि० ५३ । ९) ।

समा–पुष्करद्वीपके आगे बसी हुई लोगोंकी एक चौकोर बस्ती या आबादी, जिसमें तैंतीस मण्डल हैं । यहाँ वामन, ऐरावत, सुप्रतीक और अञ्जन—ये चार दिग्गज रहते हैं । इनके मुखसे मुक्त होकर बहनेवाली वायुद्वारा वहाँकी प्रजा जीवन धारण करती है (भीष्म० १२ । ३२–३८) ।

समितिञ्जय–द्वारकावासी यादवोंके अन्तर्गत सात महारथियोंमेंसे एक (सभा० १४ । ५८) ।

समीक–द्वारकावासी यादवोंके अन्तर्गत सात महारथियोंमेंसे एक (सभा० १४ । ५८) ।

समीची–एक अप्सरा, जो वर्गाकी सखी थी (आदि० २१५ । २०) । ब्राह्मणके शापसे इसका ग्राह-योनिमें जन्म (आदि० २१५ । २३) । अर्जुनद्वारा इसका ग्राहयोनिसे उद्धार (आदि० २१६ । २१) । यह वरुणकी सभामें रहकर उनकी उपासना करती है (सभा० १० । ११) ।

समुद्रवेग–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ६३) ।

समुद्रसेन–एक क्षत्रियनरेश, जो सातवें कालेयसंज्ञक दैत्यके अंशसे उत्पन्न हुए थे । ये धर्म और अर्थतत्त्वके ज्ञाता थे । समुद्रपर्यन्त सारी पृथ्वीपर इनकी ख्याति थी (आदि० ६७ । ५४) । भीमसेनने पूर्व-दिग्विजयके समय चन्द्रसेनसहित इन्हें जीता था (सभा० ३० । २४) । ये पराक्रमी थे । पाण्डवोंकी ओरसे पुत्रसहित इन्हें रण-निमन्त्रण भेजनेका निश्चय किया गया था (उद्योग० ४ । २२) । इनके द्वारा चित्रसेनके वधकी चर्चा (कर्ण० ६ । १५-१६) ।

समुद्रोन्मादन–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ६८) ।

समूह–एक सनातन विश्वेदेव (अनु० ९१ । ३०) ।

समृद्ध–धृतराष्ट्रकुलमें उत्पन्न एक नाग, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें भस्म हो गया (आदि० ५७ । १८) ।

समेडी–स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । १३) ।

सम्पाति–(१) विनतानन्दन अरुणके प्रथम पुत्र । इनकी माताका नाम श्येनी और इनके छोटे भाईका नाम जटायु था (आदि० ६६ । ७०-७१) । इन्होंने हनुमान्‌जी आदि वानरोंको सीताके सम्बन्धमें यह समाचार दिया था कि वे रावणपुरी लङ्कामें विद्यमान हैं (वन० १४८ । ५) । इनका आमरण अनशनके लिये बैठकर बातचीतके प्रसङ्गमें जटायुकी चर्चा करनेवाले वानरोंसे जटायुका समाचार पूछना, अपनेको उनका भाई बताना तथा जटायुके साथ सूर्यमण्डलके समीपतक उड़कर जानेसे अपने पङ्खोंके जलने और पर्वतशिखरपर गिरनेका वृत्तान्त सुनाना, फिर वानरोंके मुखसे सीता-हरण एवं जटायु-मरणका समाचार सुनकर भाईके लिये दुखी होना तथा लङ्कामें सीताजीके होनेकी निश्चित सम्भावना बताकर वानरोंको वहाँ जानेके लिये प्रेरित करना (वन० २८२ । ४६–५७) । (२) कौरवपक्षीय योद्धा, जो द्रोणनिर्मित गरुडव्यूहके हृदय-स्थानमें विशाल सेनाके साथ खड़े थे (द्रोण० २० । १२) ।

सम्प्रिया–मधुवंशकी कन्या तथा महाराज विदूरकी पत्नी । इसके गर्भसे अनश्वाका जन्म हुआ था (आदि० ९५ । ४०) ।

सम्भल-एक ग्राम, जहाँ युगान्तके समय कालकी प्रेरणासे किसी ब्राह्मणके घरमें भगवान्के अवतार विष्णुयशा कल्किका प्रादुर्भाव होगा (**वन० १९० । ९४**) । (कुछ लोगोंकी धारणाके अनुसार मुरादाबाद जिलेका सम्भल नामक कसबा ही वह ग्राम है, जहाँ कल्किका अवतार होगा ।)

सम्भवपर्व-आदिपर्वके एक अवान्तर पर्वका नाम (**अध्याय ६५ से १३९ तक**) ।

सरकतीर्थ-कुरुक्षेत्रकी सीमाके अन्तर्गत स्थित एक लोकविख्यात तीर्थ, जहाँ कृष्णपक्षकी चतुर्दशीको भगवान् शङ्करका दर्शन करनेसे मनुष्य सब कामनाओंको प्राप्त कर लेता और स्वर्गलोकमें जाता है । वहाँ रुद्रकोटि, कूप और कुण्डोंमें कुल मिलाकर तीन करोड़ तीर्थ हैं । इसके पूर्वभागमें महात्मा नारदका अम्वाजन नामक विख्यात तीर्थ है (**वन० ८३ । ७५-८१**) ।

सरमा-देवलोककी कुतिया, जो सारमेयोंकी जननी थी (**आदि० ३ । १**) । यह पीटे गये पुत्रके दुःखसे दुखी हो सर्पसत्रमें आयी थी (**आदि० ३ । ७**) । इसके द्वारा जनमेजयको शाप (**आदि० ३ । ९**) । देवताओंकी कुतियाके शापसे जनमेजयको बड़ी घबराहट हुई (**आदि० ३ । १०**) । यह ब्रह्माजीकी सभामें रहकर उनकी उपासना करती है (**सभा० ११ । ४०**) । देवताओंकी कुतिया देवजातीय सरमा स्कन्दका एक ग्रह है; अतः यह भी नारियोंके गर्भस्थ बालकोंका अपहरण करती है (**वन० २३० । ३४**) ।

सरयू-(१) हिमालयके स्वर्णशिखरसे निकली हुई गङ्गाकी सात धाराओंमेंसे एक । जो इसका जल पीते हैं, उनके पाप तत्काल नष्ट हो जाते हैं (**आदि० १६९ । २०-२१**) । यह वरुणकी सभामें रहकर उनकी उपासना करती है (**सभा० ८ । २२**) । इन्द्रप्रस्थसे गिरिव्रजको जाते हुए श्रीकृष्ण, अर्जुन और भीमसेनने मार्गमें इसे पार किया था (**सभा० २० । २८**) । गोप्रतार नामक तीर्थ सरयूके ही जलमें है, जहाँ गोता लगाकर भगवान् श्रीरामने दलबलसहित परमधामको प्रस्थान किया था (**वन० ८४ । ७०-७१**) । यह नदी अग्निकी उत्पत्तिका स्थान है (**वन० २२२ । २२**) । यह उन पवित्र नदियोंमेंसे है, जिनका जल भारतवर्षकी प्रजा पीती है (**भीष्म० ९ । १९**) । वसिष्ठजी कैलासकी ओर जाती हुई गङ्गाको मानसरोवरमें ले आये, वहाँ आते ही गङ्गाजीने उस सरोवरका बाँध तोड़ दिया । गङ्गासे सरोवरका भेदन होनेपर जो स्रोत निकला, वही सरयूके नामसे प्रसिद्ध हुआ (**अनु० १५५ । २३-२४**) । यह सायं-प्रातःस्मरणीय नदियोंमेंसे है (**अनु० १६५ । २१**) । (२) वीर नामक अग्निकी पत्नी, जिससे उन्होंने सिद्धि नामक पुत्रको जन्म दिया था (**वन० २१९ । ११**) ।

सरस्वती-(१) एक देवी, जिनकी प्रत्येक पर्वके आरम्भमें वन्दना की गयी है (**आदि० १ । मङ्गलाचरण**) । ये इन्द्रसभामें विराजमान होती हैं (**सभा० ७ । १९**) । इनके द्वारा तार्क्ष्यमुनिको उनके प्रश्नके अनुसार गोदान, अग्निहोत्र आदि विविध विषयोंका उपदेश किया गया (**वन० १८५ अध्याय**) । ये त्रिपुरदाहके समय शिवजीके रथके आगे बढ़नेका मार्ग थीं (**कर्ण० ३४ । ३७**) । दण्डनीतिस्वरूपा सरस्वती ब्रह्माजीकी कन्या हैं (**शान्ति० १२१ । २४**) । महर्षि याज्ञवल्क्यके चिन्तन करनेपर स्वर और व्यञ्जन वर्णोंसे विभूषित वाग्देवी सरस्वती ॐकारको आगे करके उनके सामने प्रकट हुई थीं (**शान्ति० ३१८ । १४**) । (२) एक नदी, जिसके तटपर राजा मतिनारने यज्ञ किया था । यज्ञ समाप्त होनेपर नदीकी अधिष्ठात्री देवी सरस्वतीने उनके पास आकर उन्हें पतिरूपमें वरण किया । मतिनारने इसके गर्भसे तंसु नामक पुत्रको उत्पन्न किया (**आदि० ९५ । २६-२७**) । यह गङ्गाकी सात धाराओंमेंसे एक है और प्लक्षकी जड़से प्रकट हुई है । इसका जल पीनेसे सारे पाप तत्काल नष्ट हो जाते हैं (**आदि० १६ । १९-२१**) । यह वरुणकी सभामें रहकर उनकी उपासना करती है (**सभा० ९ । १९**) । पाण्डवोंका वनयात्राके समय इसे पार करना (**वन० ५ । २**) । श्रीकृष्णद्वारा सरस्वतीतटपर किये गये यज्ञानुष्ठानकी चर्चा (**वन० १२ । १४**) । काम्यकवनका भूभाग सरस्वतीके तटपर है (**वन० ३६ । ४१**) । यह नदी तीर्थस्वरूपा है । उसमें जाकर देवताओं और पितरोंका तर्पण करनेसे यात्री सारस्वत लोकोंमें जाता और आनन्दका भागी होता है (**वन० ८४ । ६६**) । तीर्थोंकी पंक्तिसे सुशोभित यह नदी बड़ी पुण्यदायिनी है (**वन० ९० । ३**) । दधीचका आश्रम सरस्वती नदीके उस पार था (**वन० १०० । १३**) । लोमशद्वारा इसके माहात्म्यका वर्णन (**वन० १२९ । २०-२१**) । यह विनशनतीर्थमें लुप्त होकर चमसोद्भेदमें पुनः प्रकट हुई (**वन० १३० । ३-५**) । अग्निकी उत्पत्तिकी स्थानभूता नदियोंमें इसकी गणना है (**वन० २२२ । २२**) । ये गङ्गाकी सात धाराओंमेंसे एक हैं (**भीष्म० ६ । ४८**) । सरस्वती उन पवित्र नदियोंमें है, जिसका जल भारतवासी पीते हैं (**भीष्म० ९ । १४**) । सरस्वती-तटवर्ती तीर्थोंकी महिमाका विशेष वर्णन (**शल्य० अध्याय ३५ से ५४ तक**) । यह ब्रह्मसरसे प्रकट हुई है । इसके द्वारा वशिष्ठका बहाया जाना (**शल्य० ४२ । २९**) ।

विश्वामित्रद्वारा इसे शापकी प्राप्ति (शल्य० ४२ । ३८-३९)। ऋषियोंके प्रयत्नसे शाप-मुक्ति (शल्य० ४३ । १६)। महर्षि दधीचके वीर्यको धारण करके पुत्र पैदा होनेपर उन्हें सौंपना (शल्य० ५१ । १३-१४)। महर्षिद्वारा इसे वरदान-प्राप्ति (शल्य० ५१ । १७-२४)। बलराम-जीद्वारा इसकी महिमाका वर्णन (शल्य० ५४ । ३८-३९)। अर्जुनने सात्यकिके पुत्रको इसके तटवर्ती प्रदेश-का अधिकारी बनाया (मौसल० ८ । ७१)। श्रीकृष्णकी सोलह हजार पत्नियोंने सरस्वती नदीमें कूदकर अपने प्राण दे दिये (स्वर्गा० ५ । २५)। (३) मनुकी पत्नीका नाम (उद्योग० ११७ । १४)।

सरस्वती-अरुणा-सङ्गम—कुरुक्षेत्रकी सीमाके अन्तर्गत एक लोकविख्यात पवित्र तीर्थ, जहाँ स्नान करके तीन रात उप-वास करनेपर ब्रह्महत्यासे छुटकारा मिल जाता है। वह अग्निष्टोम और अतिरात्र यज्ञोंसे मिलनेवाले फलको भी पा लेता और अपने कुलकी सात पीढ़ियोंको पवित्र कर देता है (वन० ८३ । १५१-१५३)।

सरस्वतीसङ्गम—एक परम पुण्यमय लोकविख्यात तीर्थ, जहाँ ब्रह्मा आदि देवता तथा तपोधन महर्षि भगवान् केशवकी उपासना करते हैं। वहाँ चैत्र शुक्ला चतुर्दशीको विशेष यात्रा होती है। वहाँ स्नानसे प्रचुर सुवर्णकी प्राप्ति होती है और पापरहित शुद्धचित्त हुआ मनुष्य ब्रह्मलोकमें जाता है (वन० ८२ । १२५-१२७)।

सरस्वती-सागरसङ्गम—पश्चिम समुद्रके तटपर जहाँ सरस्वती और समुद्रका संगम हुआ है, वह तीर्थ; वहाँ जाकर स्नान करके देवेश्वर महादेवजीकी आराधना करनेसे चन्द्रमाको अपनी खोयी हुई कान्ति पुनः प्राप्त हुई थी (शल्य० ३५ । ७७)। (यहीं सोमनाथ एवं प्रभास-क्षेत्र है।)

सरिद्द्वीप—गरुड़की प्रमुख संतानोंमेंसे एक (उद्योग० १०१ । ११)।

सर्प—ग्यारह रुद्रोंमेंसे एक, ब्रह्माजीके पौत्र एवं स्थाणुके पुत्र (आदि० ६६ । २)।

सर्पदेवी—कुरुक्षेत्रकी सीमाके अन्तर्गत एक तीर्थ, जहाँ जाकर उत्तम नागतीर्थका सेवन करनेसे मनुष्य अग्निष्टोमका फल पाता और नागलोकमें जाता है (वन० ८३ । १४-१५)।

सर्पमाली—एक दिव्य महर्षि, जो हस्तिनापुर जाते समय श्रीकृष्णसे मार्गमें मिले थे (उद्योग० ८३ । ६४ के बाद दाक्षिणात्य पाठ)।

सर्पान्त—गरुड़की प्रमुख संतानोंकी परम्परामें उत्पन्न एक पक्षी (उद्योग० १०१ । १२)।

सर्पिर्माली—एक ऋषि, जो युधिष्ठिरकी सभामें विराजते थे (सभा० ४ । १०)।

सर्व—भगवान् श्रीकृष्णका एक नाम और उसकी निरुक्ति (उद्योग० ७० । १२)।

सर्वकर्मा—सौदासका एक पुत्र, जो परशुरामजीद्वारा किये गये क्षत्रिय संहारके समय पराशरमुनिद्वारा रक्षित हुआ था। पृथ्वी-द्वारा कश्यपजीको इसका पता दिया गया (शान्ति० ४९ । ७६-७७)।

सर्वकामदुघा—सुरभिकी धेनुस्वरूपा कन्या, जो उत्तरको धारण करनेवाली है (उद्योग० १०२ । १०)।

सर्वग—भीमसेनके द्वारा बलन्धराके गर्भसे उत्पन्न हुआ पुत्र (आदि० ९५ । ७७)।

सर्वतोभद्र—जलेश्वर वरुण देवताका समृद्धिशाली निवास-स्थान (उद्योग० ९८ । १०)।

सर्वदमन—शकुन्तलाका वीर पुत्र भरत (आदि० ७४ । ८)। (विशेष देखिये—भरत)

सर्वदेवतीर्थ—कुरुक्षेत्रकी सीमाके अन्तर्गत स्थित एक तीर्थ, जिसमें स्नान करनेसे मानव सहस्र गोदानका फल पाता है (वन० ८३ । ८८-८९)।

सर्वदेवह्रद—एक तीर्थ, जिसमें स्नान करनेसे सहस्र गोदान-का फल मिलता है (वन० ८५ । ३९)।

सर्वपापप्रमोचन कूप—समस्त पापोंको दूर करनेवाला एक कूप, जो नारायणस्थानमें है। उसमें सदा चारों समुद्र निवास करते हैं। उस तीर्थमें स्नान करनेसे मनुष्य कभी दुर्गतिमें नहीं पड़ता (वन० ८४ । १२६-१२७)।

सर्वर्तुक—रैवतक पर्वतके समीप शोभा पानेवाला एक वन (सभा० ३८ । २९ के बाद दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ८१३)।

सर्वसारङ्ग—धृतराष्ट्र-कुलमें उत्पन्न एक नाग, जो जनमेजय-के सर्पसत्रमें जल मरा था (आदि० ५७ । १८)।

सर्वसेन—काशीके एक राजा, जिनकी पुत्री सुनन्दाके साथ सम्राट् भरतने विवाह किया था। सुनन्दाके गर्भसे जो इनका दौहित्र उत्पन्न हुआ, उसका नाम भुमन्यु था (आदि० ९५ । ३२)।

सर्वा—एक पवित्र नदी, जिसका जल भारतवासी पीते हैं (भीष्म० ९ । ३६)।

सलिलह्रद—एक तीर्थ, जिसमें ब्रह्मचर्यपालनपूर्वक गोता लगाने-से अश्वमेधयज्ञका फल मिलता है (अनु० २५ । १४)।

सवन—महर्षि भृगुके सात पुत्रोंमेंसे एक (इनकी 'वारुण' संज्ञा है।) (अनु० ८५ । १२९)।

सविता–बारह आदित्योंमेंसे एक। इनकी माता अदिति और पिता कश्यप हैं (आदि० ६५ । १५)।

सव्यसाची–अर्जुनका एक नाम और इसकी निरुक्ति (विराट० ४४ । १९)।

सह–(१) धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ११६ । २)। यह द्रौपदीके स्वयंवरमें गया था (आदि० १८५ । १)। इसके द्वारा भीमसेनपर आक्रमण (कर्ण० ५१ । ८)। (२) एक प्रभावशाली अग्नि, जो समुद्रमें छिप गये थे (वन० २२२ । ७)। देवताओंके खोज करनेपर इनका अथर्वाको अग्निके पदपर प्रतिष्ठित करके अन्यत्र गमन (वन० २२२ । ८—१०)। इनके द्वारा मछलियोंको शाप और अपने शरीरका त्याग (वन० २२२ । १०—१२)। इनके शरीरके अवयवोंसे विविध धातुओंकी उत्पत्ति (वन० २२२ । १४—१६)। समुद्रमें छिपे हुए इनका अग्निद्वारा पुनः प्राकट्य (वन० २२२ । २०)।

सहज–चेदि तथा मत्स्यदेशका एक कुलाङ्गार नरेश (उद्योग० ७४ । १६)।

सहजन्या–छः श्रेष्ठ अप्सराओंमेंसे एक (आदि० ७४ । ६८)। यह दस विख्यात अप्सराओंमेंसे एक है। इसने अर्जुनके जन्म-महोत्सवमें पधारकर वहाँ गान किया था (आदि० १२२ । ६४)। यह कुबेरकी सभामें उनकी सेवाके लिये उपस्थित होती है (सभा० १० । ११)। इसने अर्जुनके स्वागतार्थ इन्द्र-भवनकी सभामें नृत्य किया था (वन० ४३ । ३०)।

सहदेव–(१) पाण्डुके क्षेत्रज पुत्र, अश्विनीकुमारोंके द्वारा माद्रीके गर्भसे उत्पन्न दो पुत्रोंमेंसे एक। ये दोनों भाई जुड़वें उत्पन्न हुए थे। दोनों ही सुन्दर तथा गुरुजनोंकी सेवामें तत्पर रहनेवाले थे। (आदि० १ । ११४; आदि० ६३ । ११७; आदि० ९५ । ६३)। अनुपम रूपशाली तथा परम मनोहर नकुल-सहदेव अश्विनीकुमारोंके अंशसे उत्पन्न हुए थे (आदि० ६७ । १११-११२)। इनकी उत्पत्ति तथा शतशृङ्गनिवासी ऋषियोंद्वारा इनका नामकरणसंस्कार (आदि० १२३ । १७—२१)। वसुदेवके पुरोहित काश्यपद्वारा इनके उपनयन आदि संस्कार तथा राजर्षि शुकद्वारा इनका अस्त्रविद्याका अध्ययन और ढाल-तलवार चलानेकी कलामें निपुणता प्राप्त करना (आदि० १२३ । ३१ के बाद दा० पाठ)। पाण्डुकी मृत्युके पश्चात् माद्रीका अपने पुत्रों (नकुल-सहदेव)को कुन्तीके हाथोंमें सौंपकर पतिके साथ चितापर आरूढ़ होना (आदि० १२४ अध्याय)। शतशृङ्गनिवासी ऋषियोंका सहदेव आदि पाँचों पाण्डवोंको कुन्तीसहित हस्तिनापुर ले जाना और उन्हें भीष्म आदिके हाथोंमें सौंपना। द्रोणाचार्यका पाण्डवोंको नाना प्रकारके दिव्य एवं मानव अस्त्र-शस्त्रोंकी शिक्षा देना (आदि० १३१ । ९)। द्रुपदपर आक्रमण करते समय अर्जुनका माद्रीकुमार नकुल और सहदेवको अपना चक्ररक्षक बनाना (आदि० १३७ । २७)। द्रोणद्वारा सुशिक्षित किये गये सहदेव अपने भाइयोंके अधीन (अनुकूल) रहते थे (आदि० १३८ । १८)। धृतराष्ट्रके आदेशसे कुन्तीसहित पाण्डवोंकी वारणावत-यात्रा, वहाँ उनका स्वागत और लाक्षागृहमें निवास (आदि० अध्याय १४२ से १४५ तक)। लाक्षागृहका दाह और पाण्डवोंका सुरंगके रास्ते निकलना, भीमसेनका नकुल-सहदेवको गोदमें लेकर चलना (आदि० १४७ अध्याय)। पाण्डवोंको व्यासजीका दर्शन और उनका एकचक्रानगरीमें प्रवेश (आदि० १५५ अध्याय)। पाण्डवोंकी पाञ्चाल-यात्रा (आदि० १६९ अध्याय)। इनका द्रुपदकी राजधानीमें जाकर कुम्हारके यहाँ रहना (आदि० १८४ अध्याय)। पाँचों पाण्डवोंका द्रौपदीके साथ विवाहका विचार (आदि० १९० अध्याय)। पाँचों पाण्डवोंका कुन्तीसहित द्रुपदके घरमें जाकर सम्मानित होना (आदि० १९३ अध्याय)। द्रौपदीके साथ इनका विधिपूर्वक विवाह (आदि० १९७ । १३)। विदुरके साथ पाण्डवोंका हस्तिनापुरमें आना और आधा राज्य पाकर 'इन्द्रप्रस्थ' नगरका निर्माण करना। पाँचों भाइयोंका द्रौपदीके विषयमें नियम-निर्धारण (आदि० २११ अध्याय)। सहदेवद्वारा द्रौपदीके गर्भसे श्रुतसेन (श्रुतकर्मा)का जन्म (आदि० २२० । ८०; आदि० ९५ । ७५)। इनका मद्रराज द्युतिमान्की पुत्री विजयासे विवाह तथा इनके द्वारा उसके गर्भसे सुहोत्रका जन्म (आदि० ९५ । ८०)। इनके द्वारा दक्षिण दिशाके नरेशोंपर विजय (सभा० ३१ अध्याय)। इनके द्वारा मत्स्यनरेश विराट्की पराजय (सभा० ३१ । २)। दन्तवक्त्रकी पराजय (सभा० ३१ । ३)। माहिष्मतीनरेश नीलके साथ इनका घोर युद्ध (सभा० ३१ । २१)। इनके द्वारा अग्निकी स्तुति (सभा० ३१ । ४१)। अग्निकी कृपासे इनको राजा नीलद्वारा करकी प्राप्ति (सभा० ३१ । ५९)। लङ्कासे कर लानेके लिये इनका घटोत्कचको दूत बनाकर राक्षसराज विभीषणके पास भेजना। घटोत्कचसे विभीषणकी बातचीत। विभीषणका बहुत-से सुवर्ण, मणि, रत्न आदि उपहार देकर दूतको विदा करना। उन भेंट-सामग्रियोंको पहुँचानेके लिये अठासी हजार राक्षस आये थे (सभा० ३१ । ७२ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ७५९ से ७६४ तक)। अन्य मन्त्रियोंसहित सहदेवको यज्ञका आवश्यक उपकरण

एवं खाद्यान्न जुटानेके लिये राजा युधिष्ठिरकी आज्ञा (**सभा० ३३ । २७–३१**) । राजसूययज्ञके समय ये युधिष्ठिरके मन्त्री थे (**सभा० ३३ । ४०**) । इनके द्वारा राजसूय-यज्ञमें श्रीकृष्णकी अग्रपूजा (**सभा० ३६ । ३०**) । श्रीकृष्णकी अग्रपूजाके अवसरपर इनकी विरोधी राजाओंको चुनौती (**सभा० ३९ । १–५**) । राजसूय-यज्ञके बाद ये आचार्य द्रोण और अश्वत्थामाको पहुँचानेके लिये उनके साथ गये थे (**सभा० ४५ । ४८**) । युधिष्ठिरके द्वारा ये जुएके दाँवपर रखे और हारे गये थे (**सभा० ६५ । १५**) । इनकी शकुनिको मारनेकी प्रतिज्ञा (**सभा० ७७ । २९–४२**) । इस दुर्दिनमें कोई मुझे पहचान न ले—यही सोचकर सहदेव अपने मुँहमें मिट्टी लपेटकर वनकी ओर गये थे (**सभा० ८० । १७**) । इनकी अर्जुनके लिये चिन्ता (**वन० ८० । २७–३०**) । इनका जटासुरकी पकड़से छूटकर भीमसेनको पुकारना (**वन० १५७ । ११**) । इनका शिष्योंसहित दुर्वासाको बुलानेके लिये नदीतटपर जाना और खोजना (**वन० २६३ । ३७-३८**) । द्रौपदीद्वारा जयद्रथसे इनके पराक्रम और ज्ञान आदि सद्गुणोंका वर्णन (**वन० २७० । १५–१९**) । द्रौपदी-हरणके समय अपने घोड़ोंके मारे जानेपर युधिष्ठिरका सहदेवके रथपर आना तथा धौम्य एवं द्रौपदीको भी सहदेवद्वारा उसी रथपर चढ़वाना (**वन० २७१ । १५–३४**) । द्वैतवनमें जल लानेके लिये जाना और सरोवरपर गिरना (**वन० ३१२ । १९**) । इनका विराटनगरमें तन्तिपाल नामसे रहनेकी बात बताना (**विराट० ३ । ९**) । राजा विराटके यहाँ अरिष्टनेमि नामक वैश्यके रूपमें अपना परिचय देकर उनसे अपनेको रखनेके लिये प्रार्थना करना और उनके द्वारा गोशालाध्यक्षके पदपर नियुक्त होना (**विराट० १० । ५–१६**) । ये ग्वालेका वेष धारण करके पाण्डवोंको दूध, दही, घी दिया करते थे (**विराट० १३ । ९**) । द्रौपदीका भीमसेनसे सहदेवकी वर्तमान दुःखमयी परिस्थिति बताकर उनके लिये शोक प्रकट करना (**विराट० १९ । ३३–४१**) । विराटकी गौओंके अपहरणके समय इनका त्रिगर्तोंके साथ युद्ध (**विराट० ३३ । ३४**) । संजयद्वारा धृतराष्ट्रसे इनकी वीरताका वर्णन (**उद्योग० ५० । ३१–३३**) । शान्ति-दूत बनकर जानेके लिये उद्यत हुए श्रीकृष्णसे युद्धकी ही योजना बनानेकी सम्मति देना (**उद्योग० ८१ । १–४**) । इनका विराटको सेनापति बनानेका प्रस्ताव (**उद्योग० १५१ । १०**) । उलूकसे दुर्योधनके संदेशका उत्तर देते हुए पुत्रसहित शकुनिको मार डालनेकी घोषणा करना (**उद्योग० १६२ । ३१–३६**) । उलूकसे दुर्योधनके संदेशका उत्तर देना (**उद्योग० १६३ । ३९-४०**) । कवच उतारकर पैदल ही कौरवसेनाकी ओर जाते हुए युधिष्ठिरसे प्रश्न करना (**भीष्म० ४३ । १९**) । प्रथम दिनके संग्राममें दुर्मुखके साथ द्वन्द्व-युद्ध (**भीष्म० ४५ । २५–२७**) । विकर्णके साथ युद्ध (**भीष्म० ७१ । २१**) । इनके द्वारा शल्यकी पराजय (**भीष्म० ८३ । ५३**) । कौरवों-की अश्वसेनाका संहार (**भीष्म० ८९ । ३२–३४**) । इनके द्वारा घुड़सवारोंकी सेनाका संहार एवं पलायन (**भीष्म० १०५ । १६–२३**) । इनका कृपाचार्यके साथ द्वन्द्व-युद्ध (**भीष्म० ११० । १२-१३; भीष्म० १११ । २८–३३**) । धृतराष्ट्रद्वारा इनकी वीरताका वर्णन (**द्रोण० १० । ३१-३२**) । शकुनिके साथ इनका युद्ध (**द्रोण० १४ । २२–२५**) । इनके रथके घोड़ोंका वर्णन (**द्रोण० २३ । ९**) । शकुनिके साथ युद्ध (**द्रोण० ९६ । २१–२५**) । दुर्मुखके साथ युद्ध (**द्रोण० १०६ । १३**) । इनके द्वारा दुर्मुखकी पराजय (**द्रोण० १०७ । २१–२४**) । त्रिगर्त-राजकुमार निरमित्रका वध (**द्रोण० १०७ । २५–२६**) । कर्णके साथ युद्धमें इनकी पराजय (**द्रोण० १६७ । १५**) । दुःशासनके साथ युद्ध और उसे परास्त करना (**द्रोण० १८८ । २–९**) । इनका धृष्टद्युम्नकी रक्षामें जाना (**द्रोण० १८९ । ७**) । धृष्टद्युम्नको मारनेके लिये झपटते हुए सात्यकिको अनुनय-विनयसे शान्त करना (**द्रोण० १९८ । ५३–५९**) । इनके द्वारा पुण्ड्रराजकी पराजय (**कर्ण० २२ । १४-१५**) । दुःशासनकी पराजय (**कर्ण० २३ अध्याय**) । दुर्योधनके साथ युद्धमें इनका घायल होना (**कर्ण० ५६ । ७–१८**) । इनके द्वारा उलूककी पराजय (**कर्ण० ६१ । ४४**) । कर्णद्वारा इनकी पराजय (**कर्ण० ६३ । ३३**) । इनके द्वारा शल्यके पुत्रका वध (**शल्य० ११ । ४३**) । शल्यके साथ युद्ध (**शल्य० १३ अध्याय; शल्य० १५ अध्याय**) । इनके द्वारा शकुनिपुत्र उलूकका वध (**शल्य० २८ । ३२–३३**) । इनके द्वारा शकुनिका वध (**शल्य० २८ । ४६–६१**) । युधिष्ठिरको ममता और आसक्तिसे रहित होकर राज्य करनेकी सलाह देना (**शान्ति० १३ अध्याय**) युधिष्ठिरद्वारा इन्हें सभी अवस्थाओंमें अपनी रक्षाका कार्य सौंपना (**शान्ति० ४१ । १५**) । युधिष्ठिरद्वारा इनके लिये दिये गये दुर्मुखके महलमें इनका प्रवेश (**शान्ति० ४४ । १२-१३**) । युधिष्ठिरके पूछनेपर इनका त्रिवर्गमें अर्थकी प्रधानता बताना (**शान्ति० १६७ । २२–२७**) । इनके द्वारा शकुनिके मारे जानेकी श्रीकृष्णद्वारा चर्चा (**आश्व० ६० । २५**) । अभिमन्युके बालककी रक्षासे युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेवके भी जीवनकी रक्षा होगी—ऐसा कुन्तीका श्रीकृष्णके प्रति कथन (**आश्व०

६६ । १९) । अश्वमेध-यज्ञके अवसरपर व्यासजी और युधिष्ठिरके द्वारा इन्हें कुटुम्ब-पालन-सम्बन्धी समस्त कार्योंकी देखभालका काम सौंपा जाना । (आश्व० ७२ । २०–२६)। वनको जाती हुई कुन्तीका इन्हें युधिष्ठिरको सौंपना और इनपर सदा प्रसन्न रहनेके लिये आदेश देना (आश्रम० १६ । १०) । नकुल और सहदेव गुरुजनोंकी आज्ञाके पालनमें लगे रहनेवाले थे, इन्हें भूखका कष्ट न उठाना पड़े, इसके लिये कुन्तीने युधिष्ठिरको युद्धके निमित्त उत्साह दिलाया था (आश्रम० १७ । ८) । माताके दर्शनके लिये युधिष्ठिरके वन-गमन-विषयक विचारको जानकर इनका हर्ष प्रकट करना और स्वयं भी उनके साथ जानेकी उत्सुकता दिखाना (आश्रम० २२ । ९–१३) । वनमें माताको दूरसे ही देखकर इनका दौड़ना और पास पहुँचकर उनके दोनों चरण पकड़कर फूट-फूटकर रोना, नेत्रोंसे आँसू बहाती हुई कुन्तीका भी इन्हें हाथोंसे उठाकर छातीसे लगा लेना और गान्धारीको इनके आगमनकी सूचना देना (आश्रम० २४ । ८–१०) । संजयका ऋषियोंसे सहदेव तथा इनकी पत्नीका परिचय देना (आश्रम० २५ । ८–१३) । इनका अपने नेत्रोंमें आँसू भरकर युधिष्ठिरके समक्ष वनमें रहनेकी इच्छा प्रकट करना, माताको छोड़कर घर जानेसे अरुचि दिखाना और माता-पिताकी सेवा करते हुए तपस्यासे शरीरको सुखा डालनेका विचार व्यक्त करना । इनकी बात सुनकर कुन्तीका इन्हें छातीसे लगा लेना और अपनी बात माननेके लिये कहकर घर जानेकी आज्ञा देना (आश्रम० ३६ । ३६–४३) । माद्रीकुमार सहदेव भी जो माता कुन्तीको विशेष प्रिय रहे हैं, उन्हें आगमें जलनेसे बचा न सके—ऐसा कहकर युधिष्ठिरका विलाप (आश्रम० ३८ । १८-१९) । युधिष्ठिर, भीमसेन, अर्जुन, नकुल, सहदेव और द्रौपदी—ये छः व्यक्ति एक ही हृदय रखते थे (मौसल० १७ । ३)। इनका युधिष्ठिरके महाप्रस्थानविषयक निश्चयका अनुमोदन (महाप्र० १ । ५)। इनकी भाइयोंके साथ महाप्रस्थान-यात्रा (महाप्र० १ । २२–२५) । उस यात्रामें ये नकुलके पीछे और द्रौपदीके आगे चलते थे (महाप्र० १ । ३१-३२)। महागिरि मेरुके पास द्रौपदीके पतनके पश्चात् मार्गमें सहदेवका भी धराशायी होना और भीमसेनके पूछनेपर युधिष्ठिरका इनके पतनका कारण बताना (महाप्र० २ । २–११) ।

महाभारतमें आये हुए सहदेवके नाम—आश्विनेय, अश्विनीसुत, अश्विसुत, भरतशार्दूल, भरतश्रेष्ठ, भरतर्षभ, भरतसत्तम, कौरव्य, कुरुनन्दन, माद्रीपुत्र, माद्रवतीसुत, माद्रेय, माद्रीनन्दन, माद्रीनन्दनक, माद्रीनन्दकर, माद्रीतनुज, नकुलानुज, पाण्डव, पाण्डुनन्दन, पाण्डुपुत्र, पाण्डुसुत, तन्तिपाल, यम, यमज, माद्रीसुत आदि । (२) एक महर्षि, जो इन्द्रकी सभामें विराजते थे (सभा० ७ । १६) । (३) एक प्राचीन राजा, जो यम-सभामें रहकर सूर्यपुत्र यमकी उपासना करते हैं (सभा० ८ । १७) । आचार्य नीलकण्ठके मतानुसार ये सुप्रसिद्ध राजा सृञ्जयके पुत्र थे । इन्होंने यमुनाके अग्निशिर नामक तीर्थमें एक लाख स्वर्ण-मुद्राओंकी दक्षिणा देकर विशाल यज्ञका अनुष्ठान किया था (वन० ९० । ५–७) । (४) जरासंधका पुत्र । इसके दो छोटी बहिनें थीं, जो कंसको ब्याही गयी थीं । उनके नाम थे—अस्ति और प्राप्ति (सभा० १४ । ३१) । यह द्रौपदीके स्वयंवरमें आया था (आदि० १८५ । ८) । जरासंधका इसके राज्याभिषेककी आज्ञा देना (सभा० २२ । ३१) । पिताके मारे जानेपर इसका भेंट लेकर भगवान् श्रीकृष्णकी शरणमें जाना । श्रीकृष्णका इसे अभयदान देकर पिताके राज्यपर अभिषिक्त करना और इसको अपना अभिन्न सुहृद् बना लेना । भीम और अर्जुनद्वारा भी इसका सत्कार होना (सभा० २४ । ४२-४३ दाक्षिणात्य पाठसहित) । एक अक्षौहिणी सेनाके साथ इसका युधिष्ठिरकी सहायताके लिये आना (उद्योग० १९ । ८) । संजयद्वारा इसकी वीरताका वर्णन (उद्योग० ५० । ४८) । युधिष्ठिरकी सेनाके सात सेनापतियोंमेंसे एक मगधराज सहदेव भी था, जिसका युधिष्ठिरने उक्त पदपर अभिषेक किया था (उद्योग० १५७ । ११–१४) । इसके घोड़ोंका वर्णन (द्रोण० २३ । ४८) । द्रोणाचार्यद्वारा इसका वध (द्रोण० १२५ । ४५) ।

महाभारतमें आये हुए सहदेवके नाम—जरासंधसुत, जरासंधात्मज, जारसंधि और मागध ।

सहभोजन—गरुडकी प्रमुख संतानोंकी परम्परामें उत्पन्न एक पक्षी (उद्योग० १०१ । १२) ।

सहस्रचित्य—एक प्राचीन नरेश, जिन्होंने एक ब्राह्मणके लिये अपने प्राणोंका बलिदान करके स्वर्ग प्राप्त किया था (अनु० १३७ । २०) । ये तेजस्वी नरेश केकयदेशकी प्रजाका पालन करते थे तथा राजर्षि शतयूपके पितामह थे । ये अपने परम धर्मात्मा ज्येष्ठ पुत्रको राज्यका भार सौंपकर वनमें तपस्याके लिये चले गये और अपनी उद्दीप्त तपस्या पूरी करके इन्द्रलोकको प्राप्त हुए । तपस्यासे इनके सारे पाप भस्म हो गये थे (आश्रम० २० । ६–९) ।

सहस्रजित्—एक महायशस्वी राजर्षि, जिन्होंने ब्राह्मणके लिये अपने प्यारे प्राणोंका त्याग करके उत्तम लोक प्राप्त किया था (शान्ति० २३४ । ३१) ।

सहस्रज्योति—सुभ्राट्‌के तीन पुत्रोंमेंसे एक। इनके दस लाख पुत्र थे (आदि० १। ४६)।

सहस्रपाद—एक प्राचीन ऋषि, जो शापवश डुण्डुभ नामक सर्प हो गये थे। इनका रुरुसे अपना परिचय देना (आदि० १०। ७)। इनकी आत्मकथा तथा इनके द्वारा रुरुको अहिंसाका उपदेश (आदि० ११ अध्याय)। रुरुद्वारा सर्पसत्रके विषयमें जिज्ञासा करनेपर 'तुम ब्राह्मणोंके मुखसे आस्तीकका चरित्र सुनोगे।' ऐसा रुरुसे कहकर इनका अन्तर्धान होना (आदि० १२। ३)। ये युधिष्ठिरका विशेष सम्मान करते थे (वन० २६। २२)।

सहस्रबाहु-स्कन्धका एक सैनिक (शल्य० ४५। ५९)।

सहस्रवाक् (सदःसुवाक्)—धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६७। १००; आदि० ११६। ९)।

सहा-एक अप्सरा, जिसने अर्जुनके स्वागतमें इन्द्रभवनमें नृत्य किया था (वन० ४३। ३०)।

सहोढ-एक प्रकारके पुत्र, जो अबन्धुदायाद कहलाते हैं (आदि० ११९। ३४)। (जो कन्यावस्थामें ही गर्भवती होकर ब्याही गयी हो, उसके गर्भसे उत्पन्न हुआ पुत्र सहोढ कहलाता है।)

सह्य-लवणसमुद्र-तटवर्ती एक पर्वत, जो सीताकी खोजमें गये हुए हनुमान् आदि वानरोंके मार्गमें दिखायी दिया था (वन० २८२। ४३)। इस पर्वतपर देवराज नहुषने अप्सराओं तथा देवकन्याओंके साथ विहार किया था (उद्योग० ११। १२-१३)। यह भारतवर्षके सात कुलपर्वतोंमें है (भीष्म० ९। ११)।

सांयमनि-सोमदत्तपुत्र शलका नामान्तर (भीष्म० ६१। ११)।

सागरक-'सागर' जनपदके निवासी क्षत्रिय नरेश, जो युधिष्ठिरके राजसूययज्ञमें भेंट लेकर आये थे (सभा० ५२। १८)।

सागरोदक-समुद्रका तीर्थस्वरूप जल, जिसमें स्नान करके मनुष्य विमानपर बैठकर स्वर्गमें जाता है (अनु० २५। ९)।

साङ्काश्य-एक प्राचीन नरेश, जो यमसभामें रहकर सूर्यपुत्र यमकी उपासना करते हैं (सभा० ८। १०)।

साङ्कृति-(१) एक राजा, जो यमसभामें रहकर सूर्य-पुत्र यमकी उपासना करते हैं (सभा० ८। १०)। (२) अत्रिवंशमें उत्पन्न एक ऋषि, जिन्होंने शिष्योंको निर्गुण ब्रह्मका उपदेश देकर उत्तम लोकोंको प्राप्त किया था (शान्ति० २३४। २२)। ये वानप्रस्थ धर्मका पालन एवं प्रसार करके स्वर्गको प्राप्त हुए (शान्ति० २४४। १७)।

सात्यकि—वृष्णिवंशी शिनिकुमार सत्यकके पुत्र (आदि० ६३। १०५)। ये वृष्णिकुलभूषण, सत्यप्रतिज्ञ और शत्रु-मर्दन वीर थे तथा मरुत् देवताओंके अंशसे उत्पन्न हुए थे (आदि० ६७। ७९)। ये द्रौपदीके स्वयंवरमें पधारे थे (आदि० १८५। १८)। अर्जुन और सुभद्राके लिये दहेज लेकर इन्द्रप्रस्थमें आये थे (आदि० २२०। ३१)। सात्यकिका मुख्य नाम युयुधान था। ये युधिष्ठिरकी सभामें बैठते थे और इन्होंने वहाँ अर्जुनसे धनुर्वेदकी शिक्षा प्राप्त की थी (सभा० ४। ३४-३६)। वृष्णिवंशी यादवोंके सात अतिरथी वीरोंमें इनकी गणना की गयी है (सभा० १४। ५७-५८)। युधिष्ठिरके अभिषेकके समय इन्होंने उनके ऊपर छत्र लगा रखा था (सभा० ५३। १३)। प्रभासक्षेत्रमें पाण्डवोंका दुःख देखकर इनके शौर्यपूर्ण उद्गार (वन० १२०। १-२२)। ये उपप्लव्यनगरमें अभिमन्यु-के विवाहोत्सवमें सम्मिलित हुए थे (विराट० ७२। २१)। बलरामजीके कथनकी आलोचना करते हुए इनके वीरोचित उद्गार (उद्योग० ३ अध्याय)। इनका विशाल चतुर-ङ्गिणी सेनाके साथ युधिष्ठिरके पास आना (उद्योग० १९। १)। संजयद्वारा इनकी वीरताका वर्णन (उद्योग० ५०। ३९)। शान्तिदूत बनकर कौरवोंके यहाँ जानेके लिये उद्यत हुए श्रीकृष्णसे इनका युद्धके लिये ही अपनी सम्मति प्रकट करना (उद्योग० ८१। ५-७)। श्रीकृष्णका सात्यकिको अपने रथपर अस्त्र-शस्त्र आदि रखनेको कहना तथा इन्हें रथपर बिठाकर साथ ले जाना (उद्योग० ८३। १२-२२)। दुर्योधनके षड्यन्त्रका भंडाफोड़ करना (उद्योग० १३०। १४-१७)। प्रथम दिनके संग्राममें कृतवर्माके साथ द्वन्द्वयुद्ध (भीष्म० ४५। १२-१३)। कलिङ्गसेनाको परास्त करनेके बाद भीमसेनका अभिनन्दन करना (भीष्म० ५४। १२१-१२२)। भीष्मके बाणोंसे आच्छादित हुए अर्जुनकी सहायतामें पहुँचना (भीष्म० ५९। ७८)। भूरिश्रवाके साथ इनका युद्ध (भीष्म० ६४। १-२)। भीष्मद्वारा सारथिके मारे जानेपर इनके घोड़ोंका रथ लेकर भागना (भीष्म० ७३। २८-२९)। भूरिश्रवाके साथ इनका युद्ध और उसके द्वारा इनके दस पुत्रोंका वध (भीष्म० ७४। १-२७)। इनके द्वारा अलम्बुषकी पराजय (भीष्म० ८२। ४५)। अश्वत्थामा-को मूर्छित कर देना (भीष्म० १०१। ४७)। भीष्मके साथ इनका युद्ध (भीष्म० १०४। २९-३६)। दुर्यो-धनके साथ द्वन्द्वयुद्ध (भीष्म० ११०। १४; भीष्म० १११। १४-१८)। अलम्बुषके साथ युद्ध (भीष्म० १११। १-६)। इनका भगदत्तके साथ युद्ध (भीष्म० १११। ७-१३)। अश्वत्थामाके साथ द्वन्द्वयुद्ध (भीष्म० ११६। ९-१२)। धृतराष्ट्रद्वारा इनकी वीरताका वर्णन (द्रोण० १०। ३३-३९)। कृतवर्माके साथ युद्ध (द्रोण०

१४ । ३५-३६; द्रोण० २५ । ८-९)। क्षेमधूर्ति और बृहन्तके साथ युद्ध (द्रोण० २५ । ४७-४८)। भगदत्तके हाथीद्वारा इनके रथका फेंका जाना (द्रोण० २६ । ४३-४४)। कर्णके साथ युद्ध (द्रोण० ३२ । ६७-७०)। श्रीकृष्ण और अर्जुनके साथ इनकी रणयात्रा (द्रोण० ८४ । २१)। अर्जुनके आदेशसे युधिष्ठिरकी रक्षामें जाना (द्रोण० ८४ । ३५)। दुःशासनके साथ युद्ध (द्रोण० ९६ । १४-१७)। इनके द्वारा द्रोणाचार्यके प्रहारसे धृष्टद्युम्नकी रक्षा (द्रोण० ९७ । ३२)। द्रोणाचार्यके साथ अद्भुत संग्राम और उनके लगातार सौ धनुषोंको काटना (द्रोण० ९८ अध्याय)। इनका व्याघ्रदत्तके साथ युद्ध (द्रोण० १०६ । १४)। इनके द्वारा व्याघ्रदत्तका वध (द्रोण० १०७ । ३२)। द्रोणाचार्यद्वारा इनका घायल होना (द्रोण० ११० । २-१३)। युधिष्ठिरके द्वारा अर्जुनकी सहायताके लिये जानेका आदेश मिलनेपर उनको उत्तर देना (द्रोण० १११ । ३-३९)। अर्जुनके पास जानेकी तैयारी और प्रस्थान (द्रोण० ११२ । ४-५३)। भीमसेनको युधिष्ठिरकी रक्षाके लिये लौटाना (द्रोण० ११२ । ७१-७६)। इनके द्वारा कौरवसेनाका संहार (द्रोण० ११३ । ६-२०)। द्रोणाचार्यसे युद्ध करके उन्हें छोड़कर आगे बढ़ना (द्रोण० ११३ । २१-३४)। कृतवर्माके साथ युद्ध और उसे घायल करके आगे बढ़ना (द्रोण० ११३ । ४६-६०)। इनके द्वारा कृतवर्माकी पराजय (द्रोण० ११५ । १०-११)। जलसंधका वध (द्रोण० ११५ । ५२-५३)। दुर्योधनकी पराजय (द्रोण० ११६ । २४-२५)। इनके द्वारा कृतवर्माकी पराजय (द्रोण० ११६ । ४१)। द्रोणाचार्यकी पराजय (द्रोण० ११७ । ३०)। सुदर्शनका वध (द्रोण० ११८ । १५)। सारथिके साथ संवाद और कौरवसेनाको खदेड़ना (द्रोण० ११९ अध्याय)। भाइयोंसहित दुर्योधनको परास्त करना (द्रोण० १२० । ४२-४४)। इनके द्वारा म्लेच्छसेनासहित दुःशासनकी पराजय (द्रोण० १२१ । २९-४६)। दुःशासनकी पराजय (द्रोण० १२३ । ३१-३४)। राजा अलम्बुषका वध (द्रोण० १४० । १८)। अद्भुत पराक्रम प्रकट करते हुए अर्जुनके पास इनका पहुँचना (द्रोण० १४१ । ११)। भूरिश्रवाके साथ युद्धमें पराजित होकर उसके द्वारा इनकी चुटियाका पकड़ा जाना (द्रोण० १४२ । ५१-६३)। इनके द्वारा आमरण अनशन करके बैठे हुए भूरिश्रवाका वध (द्रोण० १४३ । ५४)। इनका कौरवोंको उनके आक्षेपका उत्तर देना (द्रोण० १४३ । ६०-६८)। कर्णके साथ युद्धमें उसे पराजित करना (द्रोण० १४७ । ६४-६५)। इनका सोमदत्तके साथ युद्ध और सोमदत्तकी पराजय (द्रोण० १५६ । २९; द्रोण० १५७ । १०-११)। इनके द्वारा सोमदत्तका वध (द्रोण० १६२ । ३३)। भूरिका वध (द्रोण० १६६ । १२)। कर्ण और वृषसेनके साथ युद्ध और वृषसेनको परास्त करना (द्रोण० १७० । ३०-४३)। इनके द्वारा दुर्योधनकी पराजय (द्रोण० १७१ । २३)। श्रीकृष्णसे कर्णके अर्जुनपर शक्ति न छोड़नेका कारण पूछना (द्रोण० १८२ । ३४)। दुर्योधनके साथ संवाद और युद्ध (द्रोण० १८९ । २२-४८)। अर्जुनद्वारा इनकी शूरवीरताकी प्रशंसा (द्रोण० १९१ । ४५-५३)। द्रोणाचार्यके वधरूपी धृष्टद्युम्नके कुकृत्यकी इनके द्वारा निन्दा (द्रोण० १९८ । ८-२४)। धृष्टद्युम्नको मारनेके लिये गदा लेकर कूद पड़ना तथा भीमसेन और सहदेवद्वारा इनका ऐसा करनेसे रोका जाना (द्रोण० १९८ । ४६-५९)। कौरवपक्षीय छः महारथियोंको एक साथ भगाना (द्रोण० २०० । ५३)। अश्वत्थामाके साथ युद्ध और मूर्छित होना (द्रोण० २०० । ५६-६९)। इनके द्वारा केकयराजकुमार अनुविन्दका वध (कर्ण० १३ । ११)। विन्दका वध (कर्ण० १३ । ३५)। वंगराजका वध (कर्ण० २२ । १३)। कर्णके साथ युद्ध (कर्ण० ३० अध्याय)। वृषसेनके साथ युद्ध और उसे परास्त करना (कर्ण० ४८ । ४० के बादसे दा० पा० ४५ श्लोकतक)। शकुनिको पराजित करना (कर्ण० ६१ । ४८-४९)। इनके द्वारा कर्णपुत्र प्रसेनका वध (कर्ण० ८२ । ६)। इनका शल्यके साथ युद्ध (शल्य० १३ अध्याय; शल्य० १५ अध्याय)। इनके द्वारा कृतवर्माकी पराजय (शल्य० १७ । ७७-७८)। म्लेच्छराज शाल्वका वध (शल्य० २० । २६)। क्षेमधूर्तिका वध (शल्य० २१ । ८)। कृतवर्माकी पराजय (शल्य० २१ । २९-३०)। संजयका जीवित पकड़ा जाना (शल्य० २५ । ५७-५८)। इनका संजयको मारनेके लिये उद्यत होना और व्यासजीकी आज्ञासे उसे छोड़ देना (शल्य० २९ । ३८-३९)। श्रीकृष्णकी आज्ञासे युधिष्ठिरके पास जाना और उनका संदेश सुनाना (शान्ति० ५३ । १२-१३)। श्रीकृष्णके साथ हस्तिनापुरसे द्वारकाको प्रस्थान (आश्व० ५२ । ५७-५८)। श्रीकृष्णके साथ रैवतक पर्वतपर होनेवाले महोत्सवमें सम्मिलित होना (आश्व० ५९ । ३-४)। महोत्सवसे लौटकर अपने भवनमें जाना (आश्व० ५९ । १७)। इनके द्वारा अभिमन्युका श्राद्ध (आश्व० ६२ । ६)। युधिष्ठिरके अश्वमेधयज्ञमें हस्तिनापुर आना (आश्व० ६६ । ३)। इनके द्वारा सुरापान करके मदमत्त होकर कृतवर्माका सोते हुए बालकोंके वधकी चर्चा करते हुए उपहास

(मौसल० ३ । १६-१८)। प्रद्युम्नद्वारा इनके कथनका अनुमोदन तथा कृतवर्माद्वारा भूरिश्रवाके वधकी बात कहकर इनका तिरस्कार (मौसल० ३ । १९-२१)। इनका भगवान् श्रीकृष्णको कृतवर्माद्वारा स्यमन्तकमणिके अपहरण और सत्राजित्के वधका स्मरण दिलाना और सत्यभामाको रोती देख क्रोधपूर्वक उठकर तलवारसे कृतवर्माका सिर काट लेना (मौसल० ३ । २२-२८)। इन्हें दूसरे लोगोंका भी वध करते देख श्रीकृष्णका इन्हें रोकनेके लिये दौड़ना, भोजों और अन्धकोंका एक मत होकर इन्हें चारों ओरसे घेरकर जूठे बर्तनोंसे मारना। इन्हें बचानेके लिये प्रद्युम्नका बीचमें कूद पड़ना। प्रद्युम्न-सहित सात्यकिका भोजों और अन्धकोंके साथ जूझना और श्रीकृष्णके देखते-देखते बहुसंख्यक विपक्षियोंद्वारा मारा जाना (मौसल० ३ । २९-३३)। अर्जुनने इनके प्रिय पुत्र यौयुधानिको सरस्वतीके तटवर्ती देशका अधिकारी एवं निवासी बनाया तथा वृद्धों और बालकोंको उसके साथ कर दिया (मौसल० ७ । ७१)। स्वर्गमें पहुँचकर इनका मरुद्गणोंमें प्रवेश (स्वर्गा० ४ । १७-१८)।

महाभारतमें आये हुए सात्यकिके नाम—आनर्त, शैनेय, शैनेयनन्दन, शौरि, शिनिपौत्र, शिनिपुत्र, शिनिसुत, शिनिनप्ता, शिनिप्रवर, शिनिप्रवीर, शिनिपुङ्गव, शिनिवीर, शिनिवृषभ, दाशार्ह, माधव, माधवाग्र्य, माधवसिंह, माधवोत्तम, मधूद्वह, सात्वत, सात्वतश्रेष्ठ, सात्वताग्र्य, सात्वतमुख्य, सात्वतप्रवर, सात्वतर्षभ, सात्यक, वार्ष्णेय, वृष्णि, वृष्णिशार्दूल, वृष्णिकुलोद्वह, वृष्णिप्रवीर, वृष्णिपुङ्गव, वृष्णिसिंह, वृष्णिवर, वृष्णिवीर, वृष्ण्यन्धकप्रवीर, वृष्ण्यन्धकव्याघ्र, यादव, यदूद्वह, यदूत्तम, यदुवीर, यदुव्याघ्र और युयुधान आदि।

सात्वत—(१) यदुकुलमें उत्पन्न एक श्रेष्ठ महापुरुष, जिनके वंशमें उत्पन्न मनुष्य सात्वत कहे गये हैं। सात्यकि भी सात्वतकुलके ही एक रत्न थे (सभा० २ । ३०)। (२) भगवान् श्रीकृष्णका एक नाम तथा इसकी निरुक्ति (शान्ति० ३४२ । ७७-७८)।

साद्यस्क—एक प्रकारका राजर्षि-यज्ञ, जो एक ही दिनमें समाप्त होनेवाला होता है (वन० २४० । १६)।

साध्य—एक गणदेवता, विराट-अण्डसे इनके प्रकट होनेका कथन (आदि० १ । ३५)। अमृतके लिये गरुड और देवताओंमें युद्ध होते समय ये लोग पक्षिराजसे पराजित हो भाग गये थे (आदि० ३२ । १६)। विश्वामित्रके प्रभावसे इनके भयभीत रहनेकी चर्चा (आदि० ७१ । ३९)। अर्जुनके जन्म-समयमें साध्यगण वहाँ पधारे थे (आदि० १२२ । ७०)। द्रौपदीका स्वयंवर देखनेके लिये ये लोग विमानोंद्वारा द्रुपदनगरके आकाशमें स्थित थे (आदि० १८६ । ६)। नैमिषारण्यक्षेत्रमें देवताओंद्वारा आयोजित यज्ञमें ये सब लोग पधारे थे (आदि० १९६ । ३)। खाण्डवदाहके समय श्रीकृष्ण और अर्जुनके साथ युद्धके लिये ये नाना प्रकारके अस्त्र-शस्त्र लेकर आये थे (आदि० २२६ । ३८)। साध्यगण इन्द्रकी सभामें विराजमान होते हैं (सभा० ७ । २२)। ये ब्रह्माजीकी सभामें भी उनकी आराधनाके लिये उपस्थित होते हैं (सभा० ११।४४)। स्कन्द और तारकासुरके युद्धके समय इन्होंने भी दानवोंके साथ युद्ध किया था (वन० २३१ । ७३)। दत्तात्रेयजीसे उनकी उदार वाणी सुननेके लिये इनकी प्रार्थना (उद्योग० ३६ । ३)। कर्ण और अर्जुनके युद्धमें इन्होंने अर्जुनकी ही विजयका समर्थन किया था (कर्ण० ८७ । ४६)। स्कन्दके जन्मकालमें ये लोग उन्हें देखनेके लिये आये थे (शल्य० ४४ । २९)। स्कन्दके अभिषेकके समय भी इनकी उपस्थिति थी (शल्य० ४५ । ६)। इन्होंने स्कन्दको सेनापति अर्पित किये थे (शल्य० ४५ । ५३)। ये लोग राजा मरुत्तके यज्ञमें रसोई परोसनेका काम करते थे (शान्ति० २९ । २२)। साध्यगण धर्मके पुत्र कहे गये हैं (शान्ति० २०७ । २३)। हंसरूपधारी ब्रह्मासे मोक्षविषयक इनका प्रश्न करना (शान्ति० २९९ अध्याय)। ये लोग मुञ्जवान् पर्वतपर भगवान् शिवकी आराधना करते हैं (आश्व० ८ । १—४)।

सान्दीपनि—भगवान् श्रीकृष्ण और बलरामजीके विद्यागुरु, जिनके यहाँ वे दोनों भाई अध्ययनके लिये गये थे। इन्होंने उन्हें छहों अङ्गोंसहित सम्पूर्ण वेद, चित्रकला, गणित, गान्धर्ववेद तथा वैद्यक भी पढ़ाये थे। गजशिक्षा तथा अश्वशिक्षाका भी ज्ञान कराया था। ये धनुर्वेदके श्रेष्ठ आचार्य थे। इन्होंने श्रीकृष्ण-बलरामको दस अङ्गोंसहित सुप्रतिष्ठित एवं रहस्यसहित सम्पूर्ण धनुर्वेदका ज्ञान प्राप्त कराया। इसके बाद सान्दीपनिजीने गुरुदक्षिणाके रूपमें इन दोनों भाइयोंसे अपने मरे हुए पुत्रको माँगा और उसे जीवित करके ला देनेकी आज्ञा दी। तब उन दोनों भाइयोंने गुरुदक्षिणाके रूपमें इन्हें बहुत-सा धन-ऐश्वर्य देकर इनके मरे हुए पुत्रको भी जीवित करके दे दिया (सभा० ३८ । २९ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ८०२)।

सामुद्रकतीर्थ—एक पवित्र तीर्थ, जो अरुन्धतीवटके समीप है। इसमें स्नान करके ब्रह्मचर्यपालनपूर्वक एकाग्रचित्त हो तीन रात उपवास करनेसे अश्वमेधयज्ञ तथा सहस्र

गोदानका फल मिलता है और मनुष्य अपने कुलका उद्धार कर देता है (वन० ८४ । ४१-४२) ।

सामुद्रनिष्कुट–एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ४९) ।

साम्ब–(१) भगवान् श्रीकृष्णद्वारा जाम्बवतीके गर्भसे उत्पन्न एक यादव वीर । ये द्रौपदीके स्वयंवरमें पधारे थे (आदि० १८५ । १७) । अर्जुन और सुभद्राके लिये दहेज लेकर आये थे (आदि० २२० । ३१) । इन्होंने अर्जुनसे धनुर्वेदकी शिक्षा प्राप्त की थी और ये युधिष्ठिरकी सभामें विराजते थे (सभा० ४ । ३४-३५) । द्वारकाके सात अतिरथी वीरोंमें एक ये भी थे (सभा० १४ । ५७) । युधिष्ठिरके राजसूययज्ञमें भी उपस्थित थे (सभा० ३४ । १६) । इनका शाल्वके सेनापति एवं मन्त्री क्षेमवृद्धिके साथ युद्ध और इनके द्वारा उसकी पराजय (वन० १६ । ९-१६) । वेगवान् नामक दैत्यके साथ युद्ध और इनके द्वारा उसका वध (वन० १६ । १७-२०) । प्रभासक्षेत्रमें इकट्ठे हुए वृष्णिवंशियों तथा पाण्डवोंके बीच सात्यकिद्वारा बलरामके प्रति इनके पराक्रमका वर्णन (वन० १२० । १३-१४) । ये उपप्लव्यनगरमें अभिमन्युके विवाहोत्सवमें आये थे (विराट० ७२ । २२) । इनका युधिष्ठिरके अश्वमेधयज्ञके अवसरपर श्रीकृष्णके साथ हस्तिनापुरमें आगमन (आश्व० ६६ । ३) । सारण आदि वीरोंका साम्बको स्त्रीवेषमें विभूषित करके ऋषियोंके पास ले जाना और उनसे पूछना कि यह बभ्रुकी पत्नी है, आपलोग बताइये कि इसके गर्भसे क्या उत्पन्न होगा ? (मौसल० १ । १६-१७) । ऋषियोंने कहा—भगवान् श्रीकृष्णका यह पुत्र साम्ब एक भयंकर लोहेका मूसल उत्पन्न करेगा, जो वृष्णि और अन्धकवंशके विनाशका कारण होगा (मौसल० १ । १९) । दूसरे दिन सबेरा होते ही इनके पेटसे मूसलकी उत्पत्ति (मौसल० १ । २५) । मौसल-युद्धमें इनका मारा जाना (मौसल० ३ । ४४) । मृत्युके पश्चात् ये विश्वेदेवोंमें प्रविष्ट हो गये (स्वर्गा० ५ । १६—१८) । (२) एक सदाचारी तथा अर्थज्ञानमें निपुण ब्राह्मण, जिन्होंने धृतराष्ट्रके वनगमनके लिये आज्ञा माँगनेपर प्रजाकी ओरसे उन्हें सान्त्वनापूर्ण उत्तर दिया था (आश्रम० १० । १३—५०) ।

सारण–(१) एक यदुवंशी क्षत्रिय, जो वसुदेवके द्वारा देवकीके गर्भसे उत्पन्न हुए थे । भगवान् श्रीकृष्ण और सुभद्राके भ्राता थे (आदि० २१८ । १७) । ये अर्जुन और सुभद्राके लिये दहेज लेकर इन्द्रप्रस्थमें आये थे (आदि० २२० । ३२) । युधिष्ठिरकी सभामें विराजते थे (सभा० ४ । ३०) । ये राजसूययज्ञमें सम्मिलित हुए थे (सभा० ३४ । १५) । युधिष्ठिरके अश्वमेधयज्ञमें भी श्रीकृष्णके साथ आये थे (आश्व० ६६ । ४) । साम्बको स्त्री बनाकर ऋषियोंके सम्मुख ले जानेवाले यदुकुमारोंमें ये प्रधान थे (मौसल० १ । १५) । (२) रावणका मन्त्री, जो वानररूपमें श्रीरामकी सेनामें घुस आनेपर विभीषणद्वारा बन्दी बना लिया गया था । श्रीरामद्वारा इसका छुटकारा (वन० २८३ । ५२-५३) ।

सारमेय–कश्यपपत्नी सरमाका पुत्र सारमेय (कुत्ता) (आदि० ३ । १) । जनमेजयके भाइयोंके पीटनेपर माताके आगे इसका रोना (आदि० ३ । ४) ।

सारस–गरुडकी प्रमुख संतानोंमेंसे एक (उद्योग० १०१ । ११) ।

सारस्वत–(१) एक प्राचीन ऋषि, जो अलम्बुषा अप्सराको देखकर स्खलित हुए दधीचके वीर्य और सरस्वती नदीके गर्भसे उत्पन्न हुए थे (शल्य० ५१ । ७—११) । इनका स्थान सारस्वततीर्थके नामसे प्रसिद्ध हुआ । कहीं-कहीं इनके स्थानका 'तुङ्गकारण्य' नामसे उल्लेख मिलता है (वन० ८५ । ४६) । बारह वर्षके अवर्षणके बाद इन्होंने ऋषियोंको शिष्य बनाकर वेद पढ़ाया था (शल्य० ५१ । ३) । (२) एक महर्षि, जो अत्रिके पुत्र हैं और पश्चिम दिशामें निवास करते हैं (शान्ति० २०८ । ३१) ।

सारिक–युधिष्ठिरकी सभामें विराजमान होनेवाले एक ऋषि (सभा० ४ । १३) ।

सारिमेजय–एक राजा, जो द्रौपदी-स्वयंवरमें पधारे थे (आदि० १८५ । १९) ।

सारिसृक्क–एक शार्ङ्गिक, जो पक्षिरूपधारी मन्दपाल ऋषिके द्वारा जरिताके गर्भसे उत्पन्न हुआ था (आदि० २२८ । १७) । अपने बड़े भाई जारितारिसे अपनी रक्षाके लिये कहना (आदि० २३१ । ३) । इसके द्वारा अग्निकी स्तुति (आदि० २३१ । ९—११) । अग्निदेवकी कृपासे खाण्डववनमें अग्निदाहसे इसकी रक्षा (आदि० २३१ । २१) ।

सार्थ–व्यापारियोंका एक दल (वन० ६४ । १११) । जंगली हाथियोंद्वारा इसका विनाश (वन० ६५ । १५) ।

सार्वभौम–(१) सोमवंशी राजा अहंयातिके द्वारा कृतवीर्यकुमारी भानुमतीके गर्भसे उत्पन्न (आदि० ९५ । १५) । इनकी भार्याका नाम सुनन्दा था, जो केकयदेशकी कन्या

थी। उसके गर्भसे जयत्सेन नामक पुत्र उत्पन्न हुआ (आदि० ९५ । १६)। (२) दिग्गजकुलमें उत्पन्न एक हाथी (द्रोण० १२१ । २६)।

सालकटङ्कटी–राक्षसी हिडिम्बाका नामान्तर (आदि० १५४ । १० के बाद दा० पाठ)। (विशेष देखिये हिडिम्बा)

सालङ्कायन–विश्वामित्रके ब्रह्मवादी पुत्रोंमेंसे एक (अनु० ४ । ५२)।

सावर्ण–(१) एक महर्षि, जो राजा युधिष्ठिरकी सभामें विराजते थे (सभा० ४ । १५)। (२) एक भावी मनु, जिनके मन्वन्तरकालमें पराशरपुत्र व्यासजी सप्तर्षिके पदपर प्रतिष्ठित होंगे (अनु० १८ । ४२-४३)।

सावर्णि–(१) एक ऋषि, जो इन्द्रसभामें विराजमान होते हैं (सभा० ७ । १०–१२)। सत्ययुगमें इन्होंने छः हजार वर्षोंतक तपस्या की थी, तब भगवान् शंकरने प्रत्यक्ष दर्शन देकर इन्हें विख्यात ग्रन्थकार और अजर-अमर होनेका वर दिया (अनु० १४ । १०३-१०४)। (२) एक भावी मनु, जिनके द्वारा बाँधी गयी मर्यादाका भगवान् सूर्य उल्लङ्घन नहीं करते हैं (उद्योग० १०९ । ११)।

सावित्र–(१) ग्यारह रुद्रोंमेंसे एक (शान्ति० २०८ । २०)। (२) सुमेरुपर्वतका एक शिखर, जिसका दूसरा नाम ज्योतिष्क था। यह सब प्रकारके रत्नोंसे विभूषित, अप्रमेय, समस्त लोकोंके लिये अगम्य और तीनों लोकोंद्वारा पूजित था। यहाँ पहले भगवान् शंकर और देवी उमा विराजमान होती थीं, बहुत-से देवता और ऋषि उनकी उपासना करते थे। गङ्गाजी दिव्यरूप धारण करके यहाँ महादेवजीकी आराधना करती थीं (शान्ति० २८३ । ५–१८)। (३) आठ वसुओंमेंसे एक (अनु० १५० । १६-१७)।

सावित्री–(१) सूर्यदेवताकी पुत्री एवं ब्रह्माजीकी पत्नी। ये तपतीकी बड़ी बहिन हैं (आदि० १७० । ७)। ब्रह्माजीकी सभामें विराजमान होती हैं (सभा० ११ । ३४)। ये गायत्री-मन्त्रकी अधिष्ठात्री देवी हैं। इन्होंने अग्निहोत्रसे प्रकट होकर अपने आराधक राजा अश्वपतिको प्रत्यक्ष दर्शन एवं वर दिया था (वन० २९३ । ८–१८)। त्रिपुरदाहके लिये यात्रा करते हुए भगवान् शंकरने इन्हें अपने रथके घोड़ोंकी बागडोर बनाया था (द्रोण० २०२ । ७५)। उनके संवत्सरमय धनुषकी प्रत्यञ्चा भी ये ही बनी थीं (कर्ण० ३४ । ३६)। एक जापक ब्राह्मणद्वारा किये गये गायत्री-जपसे संतुष्ट होकर इन्होंने उसे प्रत्यक्ष दर्शन एवं इच्छानुसार वर दिया (शान्ति० १९९ । ५—१६)। विदर्भनिवासी धर्मात्मा तपस्वी सत्यनामक ब्राह्मणके यज्ञमें इनका पदार्पण और पुनः यज्ञाग्निमें प्रवेश (शान्ति० २७२ । ११-१२)। इनके द्वारा अन्नदानकी महिमाका कथन (अनु० ६७ । ८-९)। (२) उमादेवीकी अनुगामिनी एक सहचरी (वन० २३१ । ४९)। (३) मद्रनरेश अश्वपतिकी कन्या, जो सावित्री देवीके दिये हुए वरदानके अनुसार उन्हें प्राप्त हुई थी (वन० २९३ । २३-२४)। इसके अद्भुत रूप-सौन्दर्य और तेज आदिका वर्णन (वन० २९३ । २५—२७)। इसका पिताकी आज्ञासे स्वयं ही अपना पति चुननेके लिये प्रस्थान (वन० २९३ । ३२—३८)। इसका पिताके घर लौटना और उनके पूछनेपर शाल्वनरेशके वनवासी पुत्र सत्यवान्‌को पतिरूपमें वरण करनेकी बात बताना। नारदजीद्वारा उसके अल्पायु होनेकी बात सुनकर भी इसका सत्यवान्‌के साथ ही विवाह करनेका दृढ निश्चय (वन० २९४ । २–२७)। सावित्रीका सत्यवान्‌के साथ विवाह तथा इसका अपनी सेवाओंद्वारा सबको संतुष्ट करना (वन० २९५ अध्याय)। सावित्रीकी व्रतचर्या तथा सत्यवान्‌के साथ इसका वनमें जाना (वन० २९६ अध्याय)। यमराजके साथ इसका वार्तालाप और उनसे इसको वर एवं मरे हुए पतिको पुनर्जीवनकी प्राप्ति (वन० २९७ । ११–६०)। सत्यवान्‌के साथ इसका वार्तालाप (वन० २९७ । ६५—१०२)। पतिको साथ लेकर इसका आश्रमकी ओर प्रस्थान (वन० २९७ । १०७)। आश्रममें पहुँचकर इसका ऋषियोंके समक्ष वनका सारा वृत्तान्त बतलाना (वन० २९८ । ३७–४२)। इसके श्वशुरको राज्यकी प्राप्ति तथा पतिका युवराजपदपर अभिषेक। इसको सौ पुत्रों तथा सौ भाइयोंकी प्राप्ति (वन० २९९ अध्याय)। इसके पातिव्रत्यकी प्रशंसा (विराट० २१ । १५)। (४) एक धर्मपरायणा राजपत्नी, जिसने दो दिव्य कुण्डलोंका दान करके उत्तम लोक प्राप्त किया था (शान्ति० २३४ । २४)। (सम्भव है यह सत्यवान्‌की पत्नी रही हो।)

साश्व–एक प्राचीन नरेश, जो यम-सभामें रहकर सूर्यपुत्र यमकी उपासना करते हैं (सभा० ८ । १७)।

साहस्रक–कुरुक्षेत्रकी सीमाके अन्तर्गत स्थित एक लोकविख्यात तीर्थ, जहाँ स्नान करनेसे सहस्र गोदानका फल प्राप्त होता है और वहाँ किये हुए दान तथा उपवासका महत्त्व अन्यत्रसे सहस्रगुना अधिक होता है (वन० ८३ । १५८-१५९)।

सिंहकेतु–पाण्डवपक्षका एक योद्धा, जो कर्णद्वारा मारा गया (कर्ण० ५६ । ४९)।

सिंहचन्द्र–युधिष्ठिरका सम्बन्धी और सहायक राजा (द्रोण० १५८ । ४०)।

सिंहपुर–उत्तरभारतका एक प्राचीन पर्वतीय नगर, जो राजा चित्रायुधके द्वारा सुरक्षित एवं सुरम्य था। इसे अर्जुनने उत्तरदिग्विजयके समय जीतकर अपने अधिकारमें कर लिया था (सभा० २७ । २०)।

सिंहल–एक देश और जाति । नन्दिनीके पार्श्वभागसे सिंहलनामक म्लेच्छ जातियोंकी सृष्टि हुई थी (आदि० १७४ । ३७)। सिंहलदेशके नरेश युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें पधारे थे (सभा० ३४ । १२) । इस देशके क्षत्रियोंने राजा युधिष्ठिरको समुद्रका सारभूत वैदूर्य, मोतियोंके ढेर तथा हाथियोंके सैकड़ों झूल अर्पित किये । सिंहल-देशीय वीर मणियुक्त वस्त्र पहने हुए थे। इनके शरीरका रंग काला और आँखोंके कोने लाल दिखायी देते थे (सभा० ५२ । ३५-३६) । सिंहलदेशके सैनिक द्रोणद्वारा निर्मित गरुडव्यूहके भीतर उसके ग्रीवाभागमें खड़े थे (द्रोण० २० । ६)।

सिंहसेन–(१) एक पाञ्चालदेशीय पाण्डवपक्षका योद्धा, इसका द्रोणाचार्यके साथ युद्ध और उनके द्वारा मारा जाना (द्रोण० १६ । ३२–३७)। (२) एक पाण्डव-पक्षीय पाञ्चाल योद्धा । इसके रथके घोड़ोंका वर्णन (द्रोण० २३ । ५०)। इसका कर्णके साथ युद्ध और उसके द्वारा घायल होना (कर्ण० ५६ । ४४–४८)।

सिंहिका–दक्ष प्रजापतिकी पुत्री और कश्यप ऋषिकी पत्नी (आदि० ६५ । १२)। इसके गर्भसे चार पुत्र उत्पन्न हुए थे, जिनके नाम हैं—राहु, चन्द्र, चन्द्रहर्ता और चन्द्रप्रमर्दन (आदि० ६५ । ३१)।

सिकत–एक प्राचीन महर्षि, जिन्होंने द्रोणाचार्यके पास जाकर उनसे युद्ध बंद करनेको कहा था (द्रोण० १९० । ३४–४०)। इन्हें स्वाध्यायद्वारा स्वर्गकी प्राप्ति हुई थी (शान्ति० २६ । ७)।

सिकताक्ष–एक तीर्थ, जिसका दर्शन युधिष्ठिरने किया था (वन० १२५ । १२)।

सित–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ६९)।

सिद्ध–(१) एक देवगन्धर्व, जो कश्यपके द्वारा 'प्राधा'से उत्पन्न हुआ था (आदि० ६५ । ४६)। (२) एक प्रकारके देवगण, जो हिमालय पर्वतपर कण्वके आश्रमके निकटवर्ती तपोवनमें विचरते थे (आदि० ७० । १५)। ये यमसभामें रहकर सूर्यपुत्र यमकी उपासना करते हैं (सभा० ८ । २९)। (३) एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ५७)।

सिद्धग्रह–सिद्धरूपी ग्रह, तिरस्कृत किये हुए सिद्ध पुरुषोंके शापसे यदि पागलपन आदि दोष प्राप्त हों तो उन्हें 'सिद्ध-रूपी ग्रहकी बाधा' समझना चाहिये (वन० २३० । ४९)।

सिद्धपात्र–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ६६)।

सिद्धार्थ–(१) एक राजा, जो 'क्रोधवश' संज्ञक दैत्यके अंशसे उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७ । ६०)। (२) स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ६४)।

सिद्धि–(१) एक देवी, जो कुन्तीके रूपमें इस भूतलपर प्रकट हुई थीं (आदि० ६७ । १६०)। ये दैत्योंके साथ युद्धके लिये जाते हुए स्कन्दके सैनिकोंके आगे-आगे चलती थीं (शल्य० ४६ । ६४)। (२) वीर नामक अग्निके पुत्र, इनकी माताका नाम सरयू था । इन्होंने अपनी प्रभासे सूर्यको भी आच्छादित कर लिया । सूर्यके आच्छादित हो जानेपर इन्होंने अग्निदेवतासम्बन्धी यज्ञका अनुष्ठान किया था । आह्वान-मन्त्रमें इन्हींकी स्तुति की जाती है (वन० २१८ । ११)।

सिनीवाक्–एक महर्षि, जो राजा युधिष्ठिरकी सभामें विराजते थे (सभा० ४ । १४)।

सिनीवाली–महर्षि अङ्गिराकी तृतीय पुत्री (चतुर्दशीयुक्ता अमावस्या), इनका दूसरा नाम है—'दृश्यादृश्या'; क्योंकि ये अत्यन्त कृश होनेके कारण कभी दिखायी देती हैं, कभी नहीं । भगवान् रुद्र इन्हें अपने ललाटपर धारण करते हैं । अतः इनको रुद्रसुता भी कहते हैं (वन० २१८ । ५) । त्रिपुरदाहके समय भगवान् शंकरने इन्हें अपने रथके घोड़ोंके लिये जोता बनाया था (कर्ण० ३४ । ३२-३३)। ये स्कन्दके जन्म-समयमें उन्हें देखनेके लिये आयी थीं (शल्य० ४५ । १३)।

सिन्धु–(१) एक महानद, जिसके तटवर्ती निकुञ्जमें शत्रुओंसे पराजित राजा संवरणने आश्रय लिया था (आदि० ९४ । ४०)। (यह पंजाबके पश्चिम भागमें है ।) यह वरुणकी सभामें रहकर उनकी उपासना करता है (सभा० ९ । १९)। इसे मार्कण्डेयजीने भगवान् बालमुकुन्दके उदरमें देखा था (वन० १८८ । १०३)। यह अग्निकी उत्पत्तिका स्थान है (वन० २२२ । २२)। गङ्गाकी सात धाराओंमेंसे एक है (भीष्म० ६ । ४८)। इस पवित्र नदका जल भारतवासी पीते हैं (भीष्म० ९ । २१)। इस महानदमें स्नान करके शीलवान् पुरुष मृत्युके पश्चात् स्वर्गमें जाता है (अनु० २५ । ८)। स्त्रीधर्मका वर्णन करते समय अन्य नदियोंके साथ इसका भी शिव-पार्वतीके समीप आगमन हुआ था (अनु० १४६ । १८)। यह सायं-प्रातः स्मरणीय नद है (अनु० १६५ । १९)। (२) एक जनपद, जिसका स्वामी जयद्रथ

था, यह द्रौपदीके स्वयंवरमें आया था (आदि० १८५। २१)। एक बार सिन्धुदेशका राजा जयद्रथ शाल्व देशमें विवाहकी इच्छासे जाते समय काम्यक वनमें पाण्डवोंके आश्रमके पास जा पहुँचा था (वन० २६४। ६-७; वन० २६७। १७-१९)।

सिन्धुद्वीप-एक प्राचीन राजर्षि, जिन्होंने पृथूदक तीर्थमें तपस्या करके ब्राह्मणत्व प्राप्त किया था (शल्य० ३९। ३७)। ये राजा जह्नुके पुत्र थे, इनके पुत्रका नाम बलाकाश्व था (अनु० ४। ४)।

सिन्धुपुलिंद एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९। ४०)।

सिन्धुप्रभव-एक तीर्थ, जो सिन्धुनदका उद्गमस्थान है। यह सिद्धों और गन्धर्वोंद्वारा सेवित है। यहाँ जाकर पाँच रात उपवास करनेसे प्रचुर सुवर्णराशिकी प्राप्ति होती है (वन० ८४। ४६)।

सिन्धुसौवीर-पश्चिमोत्तर भारतका एक जनपद (भीष्म० ९। ५३)। सिन्धुसौवीरदेशके लोग धर्मको नहीं जानते हैं (कर्ण० ४०। ४२-४३)।

सिन्धूत्तम-वसुधारामें एक प्रसिद्ध तीर्थ, जो सब पापोंका नाश करनेवाला है। इसमें स्नान करनेसे प्रचुर सुवर्णराशिकी प्राप्ति होती है (वन० ८२। ७९)।

सीतवन-कुरुक्षेत्रकी सीमाके अन्तर्गत एक वन, जहाँ महान् तीर्थ है। एक बार वहाँ जाने या उसका दर्शन करनेमात्रसे ही वह तीर्थ पवित्र कर देता है। वहाँ केशोंको धो लेनेमात्रसे मनुष्य पवित्र हो जाता है (वन० ८३। ५९-६०)।

सीता-(१) महाराज जनककी पुत्री। राजा जनकके यहाँ धनुषयज्ञमें शिवजीके धनुषको तोड़नेपर श्रीरामजीके साथ श्रीसीताका विवाह हुआ। इनको साथ लेकर श्रीराम अयोध्यापुरीमें गये और वहाँ आनन्दपूर्वक रहने लगे। श्रीरामके वनवासके समय परम रूपवती धर्मपत्नी सीता भी उनके साथ गयी थीं। अवतारके पूर्व विष्णुरूपमें रहते समय उनके साथ जो लक्ष्मी रहा करती हैं, वे ही अवतारकालमें सीताके रूपमें अवतीर्ण हो पतिदेवका अनुसरण करती थीं। रावणद्वारा इनका हरण होनेपर श्रीरामने रावणको मारकर इन्हें प्राप्त किया और इनके साथ अयोध्यामें आकर धर्मपूर्वक राज्यका पालन करने लगे (सभा० ३८। २९ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ७९४-७९५)। (वनपर्वमें पुनः इनकी कथा आयी है यथा-) जनकनन्दिनी सीताका श्रीरामके साथ वनगमन (वन० २७७। २९)। इनका श्रीरामको कपटमृग वधके लिये कहना (वन० २७८। १८)। इनका लक्ष्मणके प्रति संदेहपूर्ण कठोर वचन (वन० २७८। २७-२९)। रावणद्वारा अपहरण (वन० २७८। ४३)। अशोकवाटिकामें त्रिजटाद्वारा इन्हें आश्वासन (वन० २८०। ५५-७२)। इनका रावणके साथ संवाद (वन० २८१ अध्याय)। इनका हनुमान्‌जीको पहिचानके लिये चूड़ामणि देना (वन० २८२। ६८-६९)। रावणवधके पश्चात् अविन्ध्य और विभीषणने सीताजीको श्रीरामके पास ले आकर समर्पित किया। श्रीरामने इनके चरित्रपर संदेह करके इन्हें त्याग दिया। सीताको इससे बड़ी व्यथा हुई। इन्होंने अपनी शुद्धिके लिये शपथ खायी और देवताओंद्वारा भी इनकी शुद्धिका समर्थन किया गया है। इससे श्रीरामचन्द्रजी प्रसन्नतापूर्वक सीताजीसे मिले। सीताको आगे करके पुष्पक-विमानपर आरूढ़ हो ऊपर-ही-ऊपर समुद्रके पार गये। सीताको वनकी शोभा दिखाते और किष्किन्धा होते हुए अयोध्यापुरीमें गये। इनका दर्शन करके भरत-शत्रुघ्नको बड़ा हर्ष प्राप्त हुआ (वन० २९१। ३९-६५)। इनके पातिव्रत्यकी प्रशंसा (विराट० २१। १२-१३)। (२) एक नदी, जिसे मार्कण्डेयजीने भगवान् बालमुकुन्दके उदरमें देखा था (वन० १८८। १०२)। यह गङ्गाकी सात धाराओंमेंसे एक है (भीष्म० ६। ४७-४८)। इसमें प्रायः नाव भी डूब जाती है (शान्ति० ८२। ४५)।

सुकक्ष-द्वारकाके पश्चिम भागमें विद्यमान एक रजतमय पर्वत (सभा० ३८। २९ के बाद दा० पाठ पृष्ठ, ८१३, कालम १)।

सुकुन्दक-एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९। ५३)।

सुकन्या-(१) राजा शर्यातिकी सुन्दरी पुत्री (वन० १२२। ६)। इसका वनमें एकान्तभ्रमण। च्यवनको इसके दर्शनसे प्रसन्नता। इसके द्वारा बाँबीके ढेरमें छिपे हुए मुनिवर च्यवनकी आँखोंका फोड़ा जाना (वन० १२२। ६-१४)। मुनिके कोपसे सेना और पिताको पीड़ित देख इसका अपनेद्वारा दो चमकीली वस्तुओंके बेधे जानेकी बात बताना (वन० १२२। २०-२१)। मुनिके माँगनेपर पिताद्वारा इसका उन्हें समर्पण (वन० १२२। २४-२६)। इसके द्वारा पतिकी परिचर्या एवं आराधना (वन० १२२। २८-२९)। मोहित अश्विनीकुमारोंकी बातोंका इसके द्वारा विरोध (वन० १२३। २-१४)। इसका पतिसे सलाह लेकर अश्विनीकुमारोंसे उन्हें रूपयौवनसम्पन्न बनानेकी प्रार्थना करना (वन० १२३। १४-१६)। इसका अश्विनीकुमारोंके बीच अपने पतिको पहचानकर इन्हें ही स्वीकार करना (वन० १२३। २१)। इसके पातिव्रत्यकी प्रशंसा (विराट० २१। १०)। (२) मातरिश्वाकी पत्नी,

जिसके गर्भसे मङ्कणक मुनिका जन्म हुआ था (शल्य० ३८ । ५९) ।

सुकर्मा–विधाताद्वारा स्कन्दको दिये गये दो पार्षदोंमेंसे एक, दूसरेका नाम सुव्रत था (शल्य० ४५ । ४२) ।

सुकुट्ट–एक भारतीय जनपद तथा वहाँके निवासी (सभा० १४ । १६) ।

सुकुण्डल–धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६७ । ९८) ।

सुकुमार–(१) तक्षककुलमें उत्पन्न एक नाग, जो सर्पसत्रमें दग्ध हो गया था (आदि० ५७ । ९) । (२) पुलिन्दोंके महान् नगर (या राजधानी) के शासक एक राजकुमार या नरेश, जो सम्भवतः राजा सुमित्रके पुत्र थे । सुकुमार और सुमित्र दोनोंको भीमसेनने पूर्व-दिग्विजयके समय जीत लिया था (सभा० २९ । १०) । द्रौपदी-स्वयंवरमें भी पुलिन्दराज सुकुमार अपने पिता सुमित्र (या सुचित्र) के साथ पधारे थे (आदि० १८५ । १०) । पुलिन्द नगरके राजा सुकुमार और सुमित्रको सहदेवने भी दक्षिण-दिग्विजयके समय जीता था (सभा० ३१ । ४) । ये युधिष्ठिरकी सेनाके एक उदार रथी थे (उद्योग० १७१ । १५) । (३) शाकद्वीपके जलधारगिरिके पासका एक वर्ष (भीष्म० ११ । २५) ।

सुकुमारी–(१) शाकद्वीपकी एक पवित्र जलवाली नदी (भीष्म० ११ । ३२) । (२) राजा सृञ्जयकी पुत्री और नारदकी पत्नी (द्रोण० ५५ । ७–१३; शान्ति० ३० । १४–३०) ।

सुकुसुमा–स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । २४) ।

सुकेतु–(१) एक राजा, जो अपने पुत्र सुनामा एवं सुवर्चाके साथ द्रौपदीके स्वयंवरमें आये थे (आदि० १८५ । ९) । (२) शिशुपालका एक पुत्र, जो द्रोणाचार्यके हाथसे मारा गया था, इसकी चर्चा (कर्ण० ६ । ३३) । (३) पाण्डवपक्षका एक महाबली राजा, जो चित्रकेतुका पुत्र था । इसका कृपाचार्यके साथ युद्ध और उनके द्वारा वध हुआ था (कर्ण० ५४ । २१–३९) ।

सुकेशी–(१) गान्धारराजकी कुलीन कन्या, जो भगवान् श्रीकृष्णकी प्रेयसी थीं । भगवान्ने उन्हें द्वारकाके उस महलमें ठहराया था, जिसका दरवाजा जाम्बूनद सुवर्णके समान उद्दीप्त होता था, जो देखनेमें प्रज्वलित अग्नि-सा जान पड़ता था, विशालतामें जिसकी उपमा समुद्रसे दी जाती थी और जो मेरु नामसे विख्यात था (सभा० ३८ । २९ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ८१५) । (२) अलकापुरीकी एक अप्सरा, जिसने अष्टावक्रके स्वागत-समारोहमें कुबेर-भवनमें नृत्य किया था (अनु० १९ । ४५) ।

सुक्रतु–एक प्राचीन नरेश, जिनके नामका उल्लेख संजयने प्राचीन राजाओंकी गणनामें किया है (आदि० १ । २३५) ।

सुक्षत्र–पाण्डवपक्षके एक योद्धा, जो कोसलनरेशके पुत्र थे । इनके रथके घोड़ोंका वर्णन (द्रोण० २३ । ५७) ।

सुखदा–स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । २८) ।

सुगणा–स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । २७) ।

सुगन्धा–(१) एक अप्सरा, जिसने अर्जुनके जन्म-महोत्सवमें नृत्य किया था (आदि० १२२ । ६३) । (२) एक तीर्थ, जहाँ जाकर मानव स्वर्गलोकमें प्रतिष्ठित होता है और सब पापोंसे मुक्त हो स्वर्गलोकमें पूजित होता है (वन० ८४ । १०; ८४ । ३६) ।

सुगोता–एक सनातन विश्वेदेव (अनु० ९१ । ३७) ।

सुग्रीव–(१) वानरोंके एक राजा, जो भगवान् सूर्यके पुत्र थे । पूर्वकालमें सभी वानरयूथपति इनकी सेवामें रहते थे (वन० १४७ । २८-२९) । श्रीरामकी इनके साथ मित्रता और इनके भाई वालीके वधका संक्षिप्त वृत्तान्त (सभा० ३८ । २९ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ७९४) । भगवान् श्रीरामका इनके पास जाना, इनके साथ उनकी मैत्री । इनका श्रीरामको सीताजीके वस्त्र दिखाना, श्रीरामका इन्हें वानरसम्राट्के पदपर अभिषिक्त करना तथा सुग्रीवका सीताजीकी खोजके लिये प्रतिज्ञा करना (वन० २८० । ९–१४) । इनका अपने भाई वालीके साथ युद्ध (वन० २८० । ३०–३६) । श्रीरामसे सीताकी खोजके विषयमें इनका अपना कार्य बताना (वन० २८२ । २२) । कुम्भकर्णद्वारा इनका अपहरण (वन० २८७ । ११) । श्रीरामके साथ पुष्पक-विमानद्वारा इनका अयोध्याको आना (वन० २९१ । ६०) । राज्याभिषेकके बाद श्रीरामका इन्हें कर्तव्यकी शिक्षा दे बड़े दुःखसे विदा करना (वन० २९२ । ६७-६८) । (२) भगवान् श्रीकृष्णके रथके एक अश्वका नाम (द्रोण० १४७ । ४७) ।

सुघोष–नकुलके शङ्खका नाम (भीष्म० २५ । १६) ।

सुचक्र–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ५९) ।

सुचन्द्र–(१) एक असुर, जो सिंहिकाके गर्भसे उत्पन्न हुआ था (आदि० ६५ । ३१) । (२) एक देवगन्धर्व, जो कश्यपद्वारा प्राधाके गर्भसे उत्पन्न हुआ था (आदि० ६६ । ४६–४८) । यह अर्जुनके जन्मकालिक महोत्सवमें सम्मिलित हुआ था (आदि० १२२ । ५८) ।

सुचारु–(१) धृतराष्ट्रका एक पुत्र । इसने अन्य सात

भाइयोंके साथ होकर अभिमन्युपर आक्रमण किया था (भीष्म० ७९ । २२-२३) । (विशेष देखिये चारु, चारुचित्र) । (२) श्रीकृष्णके द्वारा रुक्मिणीदेवीके गर्भसे उत्पन्न एक पुत्र (अनु० १४ । ३३) ।

सुचित्र-(१) धृतराष्ट्रकुलमें उत्पन्न एक नाग, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें दग्ध हो गया था (आदि० ५७ । १८) । (२) द्रौपदी-स्वयंवरमें गया हुआ एक राजा, इसके साथ सुकुमारका भी नाम आया है । अतः यह पुलिन्दराज सुकुमारका पिता सुमित्र जान पड़ता है (सम्भव है सुमित्रकी जगह सुचित्र पाठ हो गया हो । अथवा सुमित्रका ही दूसरा नाम सुचित्र हो) (आदि० १८५ । १०) । (३) धृतराष्ट्रका एक पुत्र, जिसने अपने भाइयों-के साथ रहकर अभिमन्युपर आक्रमण किया था (भीष्म० ७९ । २२-२३) (विशेष देखिये चित्र) । (४) पाण्डवपक्षका एक महावीर महारथी, जो चित्रवर्माका पिता था । रणभूमिमें विचरते हुए इन दोनों वीरोंको द्रोणाचार्यने मारा था, इसकी चर्चा (कर्ण० ६ । २७-२८) ।

सुचेता-वीतहव्यवंशी गृत्समदके पुत्र, इनके पुत्रका नाम वर्चा था (अनु० ३० । ६१) ।

सुजात-धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक, जिसने भाइयोंके साथ भीमसेनपर आक्रमण किया और उनके द्वारा युद्धमें मारा गया (शल्य० २६ । ५-१८) ।

सुजाता-महर्षि उद्दालककी पुत्री, जिसका कहोड ऋषिके साथ विवाह हुआ था (वन० १३२ । ९) । इसका पतिसे धनके लिये आग्रह करना (वन० १३२ । १४) । अपने पुत्र अष्टावक्रसे पतिकी मृत्युका वृत्तान्त बताना (वन० १३२ । २०) ।

सुजानु-एक दिव्य महर्षि, जो हस्तिनापुर जाते समय मार्गमें श्रीकृष्णसे मिले थे (उद्योग० ८३ । ६४ के बाद दा० पाठ) ।

सुतनु-आहुक (उग्रसेन) की पुत्री । इसका विवाह भगवान् श्रीकृष्णने अक्रूरके साथ कराया था (सभा० १४ । ३३) ।

सुतसोम-द्रौपदीके गर्भसे भीमसेनद्वारा उत्पन्न पुत्र (आदि० ६३ । १२३; आदि० ९५ । ७५) । इसकी उत्पत्ति विश्वेदेवोंके अंशसे हुई थी (आदि० ६७ । १२७-१२८) । इसका सुतसोम नाम पड़नेका कारण (आदि० २२० । ७९, ८२; द्रोण० २३ । २८-२९) । प्रथम दिनके संग्राममें विकर्णके साथ द्वन्द्वयुद्ध (भीष्म० ४५ । ५८-५९) । दुर्मुखसे श्रुतकर्माकी रक्षा करना (भीष्म० ७९ । ३९) । इसके रथके घोड़ोंका वर्णन (द्रोण० २३ । २८) । विविंशतिके साथ युद्ध (द्रोण० २५ । २४-२५) । शकुनिके साथ युद्ध और पराजय (कर्ण० २५ । १८-४०) । अश्वत्थामाके साथ युद्ध (कर्ण० ५५ । १४-१६) । रातमें अश्वत्थामाद्वारा इसका वध (सौप्तिक० ८ । ५५-५६) ।

सुतीर्थ-कुरुक्षेत्रकी सीमाके अन्तर्गत स्थित एक प्राचीन तीर्थ, जहाँ देवतालोग पितरोंके साथ सदा विद्यमान रहते हैं । वहाँ देवता-पितरोंके पूजनमें तत्पर हो स्नान करनेसे अश्वमेध यज्ञका फल मिलता है और यात्री पितृलोकमें जाता है (वन० ८३ । ५४-५५) ।

सुतेजन-युधिष्ठिरका एक सम्बन्धी और सहायक राजा (द्रोण० १५८ । ४०) ।

सुदक्षिण-(१) काम्बोज देश (काबुल) के राजा या राजकुमार, जो द्रौपदीके स्वयंवरमें पधारे थे (आदि० १८५ । १५) । ये एक अक्षौहिणी सेनाके साथ दुर्योधनकी सहायताके लिये आये थे (उद्योग० १९ । २१) । इन्हें दुर्योधनके पक्षका एक रथी वीर माना गया था (उद्योग० १६६ । १) । प्रथम दिनके संग्राममें श्रुतकर्माके साथ इनका द्वन्द्व-युद्ध (भीष्म० ४५ । ६६-६८) । अभिमन्युके साथ इनका द्वन्द्वयुद्ध (भीष्म० ११० । १५; भीष्म० १११ । १८-२१) । अर्जुनके साथ युद्ध और उनके द्वारा इनका वध (द्रोण० ९२ । ६१-७१) । इनके छोटे भाईने भी अर्जुनपर धावा किया और यह उनके हाथसे मारा गया (कर्ण० ५६ । ११०-१११) । (२) पाण्डवपक्षका योद्धा, जिसे द्रोणाचार्यने आहत करके रथकी बैठकसे नीचे गिरा दिया था (द्रोण० २१ । ५६) ।

सुदत्ता-भगवान् श्रीकृष्णकी एक पटरानी, द्वारकामें इन्हें रहनेके लिये केतुमान् नामक प्रासाद प्राप्त हुआ था । उसका विशेष वर्णन (सभा० ३८ । २९ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ८१५) ।

सुदर्शन (चक्र)—(१) भगवान् नारायण एवं श्रीकृष्णके चक्रका नाम, इसके तेजस्वी एवं प्रभावशाली दिव्य रूपका वर्णन (आदि० १९ । २०-२९) । अग्निदेव-ने भगवान् श्रीकृष्णको यह चक्र प्रदान किया और इसके प्रभावका स्वयं वर्णन किया (आदि० २२४ । २३-२७) । श्रीकृष्णने इस अस्त्रसे शिशुपालका मस्तक काटा था (सभा० ४५ । २१-२५) । इसके द्वारा सौभ विमानका विध्वंस और शाल्वका संहार (वन० २२ । २९-३७) । श्रीकृष्णका अर्जुनको अपने दिये हुए चक्रसे शत्रुका मस्तक काटनेके लिये प्रेरित करना (कर्ण० ८९ । ४५-४६) । (२) देवराज इन्द्रके रथका नाम (या विशेषण) (विराट० ५६ । ३) । (३) देवताओंके लिये आदरणीय

एक नरेश, जो राजा नग्नजित्‌द्वारा बन्दी बनाये गये थे। भगवान् श्रीकृष्णने नग्नजित्‌के समस्त पुत्रोंको पराजित करके इन्हें बन्धनमुक्त किया था (उद्योग० ४८ । ७५)। (४) एक द्वीप; (जो जम्बूद्वीपका ही नामान्तर है) संजयद्वारा धृतराष्ट्रसे इसका वर्णन (भीष्म० ५ । १३ से ६ अध्यायतक)। (५) जम्बूद्वीपके जामुन वृक्षका नाम, इस वृक्षकी ऊँचाई ग्यारह हजार योजन है। इसके फलोंकी लम्बाई ढाई हजार अरत्नि मानी गयी है (भीष्म० ७ । १९–२२)। (६) कौरवपक्षका एक राजा, जो सात्यकिद्वारा मारा गया था (द्रोण० ११८ । १४-१५)। (७) मालवनरेश, पाण्डवपक्षका एक योद्धा, अश्वत्थामाद्वारा इसका वध (द्रोण० २०० । ७३–८३)। (८) धृतराष्ट्रका एक पुत्र, जिसने भीमसेनपर आक्रमण किया और फिर उन्हींके द्वारा मारा गया (शल्य० २७ । ३१–५०)। (९) अग्निदेवके पुत्र, इनकी माता इक्ष्वाकुवंशी दुर्योधनकी पुत्री सुदर्शना थी (अनु० २ । ३५-३६)। महाराज ओघवान्‌की पुत्री ओघवतीके साथ इनका विवाह (अनु० २ । ३८-३९) । अतिथि-सत्कारद्वारा मृत्यु आदिपर इनकी विजय (अनु० २ । ४०–९८)।

सुदर्शना–माहिष्मती-नरेश नील (या दुर्योधन) की अनुपम सुन्दरी पुत्री, जो प्रतिदिन पिताके अग्निहोत्र-गृहमें अग्निको प्रज्वलित करनेके लिये उपस्थित होती थी (सभा० ३१ । २८)। इसके ऊपर अग्निदेवकी आसक्ति (सभा० ३१ । ३०-३१)। पिताद्वारा इसका अग्निदेवकी सेवामें समर्पण (सभा० ३१ । ३३)। यह राजा दुर्योधन (नील) द्वारा नर्मदा नदीके गर्भसे उत्पन्न हुई थी। इसका अग्निदेवके साथ विवाह (अनु० २ । ३४)। अग्निके द्वारा इसे सुदर्शन नामक पुत्रकी प्राप्ति (अनु० २ । ३६)।

सुदामा–(१) दशार्णके एक महामना नरेश, जिनके दो पुत्रियाँ थीं, एकका विवाह विदर्भ-नरेश भीमसे और दूसरीका चेदिराज वीरबाहुके साथ हुआ था (वन० ९६ । १४-१५)। (२) उत्तरभारतका एक जनपद (भीष्म० ९ । ५५)। इसे और यहाँके राजाको अर्जुनने जीता था (सभा० २७ । ११)। (३) पाण्डवपक्षका एक योद्धा, इसके रथके घोड़ोंका वर्णन (द्रोण० २३ । ४९)। (४) स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । १०)।

सुदास–कोसलदेशके एक राजा, जो सायं-प्रातः स्मरण-कीर्तन करनेके योग्य हैं (अनु० १६५ । ५७)।

सुदिन–कुरुक्षेत्रकी सीमाके अन्तर्गत एक लोकविख्यात तीर्थ, जिसमें स्नान करके मनुष्य सूर्यलोकमें जाता है (वन० ८३ । १००)।

सुदिवा–एक वानप्रस्थी ऋषि, जो वानप्रस्थ-धर्मका पालन करते हुए स्वर्गलोकको प्राप्त हुए (शान्ति० २४४ । १७-१८)।

सुदृष्ट–एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ५१)।

सुदेव–(१) विदर्भनरेशद्वारा दमयन्तीकी खोजमें नियुक्त किये गये ब्राह्मणोंमेंसे एक, जिन्होंने चेदिराजके महलमें दमयन्तीको पहचानकर उससे वार्तालाप किया (वन० ६८ । २–३०)। इनका चेदिनरेशकी माताको दमयन्तीका परिचय देना (वन० ६९ । १–९)। दमयन्तीको देखकर प्रसन्न हुए राजा भीमद्वारा इन्हें पुरस्कार-प्राप्ति (वन० ६९ । २७)। दमयन्तीका इन्हें अयोध्यानरेश ऋतुपर्णके पास स्वयंवरका संदेश देकर भेजना और इनका अयोध्या जाकर राजा ऋतुपर्णसे स्वयंवरके लिये दमयन्तीका संदेश कहना (वन० ७० । २२–२७)। (२) महाराज अम्बरीषका एक शान्त स्वभाववाला सेनापति, जिसे राजासे पूर्व ही स्वर्गलोककी प्राप्ति हो चुकी थी। उसे इन्द्रके पास देखकर राजाका चकित होकर उसके विषयमें इन्द्रसे पूछना (शान्ति० ९८ । ३–११)। राजाकी आज्ञासे राक्षसोंसे लड़नेके लिये इसका प्रस्थान (शान्ति० ९८ । ११ के बाद दा० पाठ)। शत्रुको प्रबल देखकर इसका शिवजीकी शरणमें जाना और उन्हें प्रसन्न करना (शान्ति० ९८ । ११ के बाद दा० पाठ)। शिवजीद्वारा इसे वरदान-प्राप्ति (शान्ति० ९८ । ११ के बाद दा० पाठ)। इसके द्वारा राक्षसोंका संहार और स्वयं भी वियमद्वारा मारा जाना तथा मरते-मरते वियमको भी मार डालना (शान्ति० ९८ । ११ के बाद दा० पाठ)। (३) काशिराज हर्यश्वके पुत्र, जो देवताके समान तेजस्वी और दूसरे धर्मराजके समान न्यायप्रिय थे। पिताके पश्चात् ये काशिराजके पदपर अभिषिक्त हुए। इसी बीच वीतहव्यके पुत्रोंने इनपर आक्रमण करके इन्हें धराशायी कर दिया। तत्पश्चात् इनके पुत्र दिवोदास पिताके राज्यपर अभिषिक्त हुए (अनु० ३० । १३–१५)।

सुदेवा–(१) अङ्गराजकी पुत्री, जो महाराज अरिहकी पत्नी थी। इसके गर्भसे ऋक्षनामक पुत्रका जन्म हुआ था (आदि० ९५ । २४)। (२) दशार्हकुलकी कन्या, जो पूरुवंशी महाराज विकुण्ठनकी पत्नी थी। इसके गर्भसे अजमीढका जन्म हुआ था (आदि० ९५ । ३६)।

सुदेष्ण–(१) देवराज इन्द्र द्वारकामें आकर जिन प्रधान-प्रधान यादवोंसे मिले थे, उनमेंसे एक ये भी थे (सभा० ३८ । २९ के बाद दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ८०६)। (२) एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ४६)।

सुदेष्णा–मत्स्यराज विराटकी भार्या, केकयराजकी कन्या। इनका दूसरा नाम चित्रा भी था (विराट० ९ । ६)। इनके पास अज्ञातवासके लिये सैरन्ध्रीवेशमें द्रौपदीका आना और बातचीत करनेके बाद इनका द्रौपदीकी शर्तोंको स्वीकार करते हुए उसे अपने यहाँ आश्रय देना (विराट० ९ । ८–३६)। सैरन्ध्रीके विषयमें इनसे कामासक्त कीचककी बातचीत और उसके प्रार्थना करनेपर इनका उसे अपनी सम्मति देना (विराट० १४ । ६–१०)। द्रौपदीको कीचकके घर भेजना (विराट० १५ अध्याय)। कीचक-

के मारनेपर रोती हुई द्रौपदीका इनके पास आना और इनका उसके रोनेका कारण पूछना तथा आश्वासन देना (विराट० १६ । ४८–५०) । विराटका इनके द्वारा द्रौपदीको चली जानेके लिये कहलवाना (विराट० २४ । ८–१०) । द्रौपदीको राजमहलसे चली जानेके लिये इनके द्वारा राजाका संदेश सुनाया जाना (विराट० २४ । २७-२८) । द्रौपदीके तेरह दिन और रहनेके लिये प्रार्थना करनेपर सुदेष्णाका उसे इच्छानुसार रहनेकी आज्ञा देना और अपने पति-पुत्रकी रक्षाके लिये उसकी शरणमें जाना (विराट० २४ । २९-३० दा० पाठसहित) । उत्तराके विवाहोत्सवमें उपप्लव्यनगरमें इनका द्रौपदीके पास जाना (विराट० ७२ । ३०) ।

सुद्युम्न–एक प्राचीन राजर्षि, जो यम-सभामें रहकर सूर्यपुत्र यमकी उपासना करते हैं (सभा० ८ । १६) । अपने भाई महर्षि शङ्खके भेजनेसे न्यायके लिये लिखितका इनके पास आना और इनके द्वारा चोरीके दण्डरूपमें लिखितका हाथ कटवाया जाना (शान्ति० २३ । २९–३६) । दण्डरूप धर्मके पालनसे इन्हें परम सिद्धिकी प्राप्ति (शान्ति० २३ । ४५) । महर्षि लिखितको धर्मतः दण्ड देनेसे इन्हें परम उत्तम लोकोंकी प्राप्ति (अनु० १३७ । १९) ।

सुधन्वा–(१) महर्षि अङ्गिराके पुत्र । केशिनीके लिये प्रह्लाद-पुत्र विरोचनके साथ इनका संवाद होनेपर प्रह्लादके पास निर्णयके लिये जाना तथा उनका निर्णय देना (सभा० ६८ । ६५–८७; उद्योग० ३५ । १४–३६) । इनका विरोचनको जीवनदान देना (उद्योग० ३५ । ३७-३८) । शर-शय्यापर पड़े हुए भीष्मको देखनेके लिये जाना (अनु० २६ । ७) । ये महर्षि अङ्गिराके आठवें पुत्र थे (अनु० ८५ । ३०-३१) । इन्होंने स्कन्दको एक शकट और विशाल कूबरसे युक्त रथ प्रदान किया था (अनु० ८६ । २४) । (२) एक संशप्तक योद्धा, जो अर्जुनद्वारा मारा गया (द्रोण० १८ । ४२) । (३) पाण्डवपक्षका एक पाञ्चाल योद्धा, जो द्रुपदका पुत्र था, इसके घोड़ोंका वर्णन (द्रोण० २३ । ५५) । यह वीरकेतुका भाई था । वीरकेतुके मारे जानेपर दुखी हो भाइयोंसहित इसने आचार्य द्रोणपर आक्रमण किया था (द्रोण० १२२ । ४४) । द्रोणाचार्यने इसे रथहीन करके मार गिराया (द्रोण० १२२ । ४५–४९) । (४) एक प्राचीन नरेश, जिन्हें मान्धाताने जीत लिया था (द्रोण० ६२ । १०-११) ।

सुधर्मा–(१) एक यादवोंकी सभा, जहाँ जाकर सैनिकोंने सुभद्राहरणका समाचार सुनाया था (आदि० २१९ । १०) । इस सभाको दाशार्ही कहते थे । इसकी लंबाई-चौड़ाई एक-एक योजन थी । इसमें बैठे हुए भगवान् श्रीकृष्णके पास देवराज इन्द्र आये और भौमासुरको मारकर अदितिके कुण्डल लानेके लिये उनसे प्रार्थना की । इस कार्यको सम्पन्न करके भगवान् जब स्वर्गसे लौटे, तब उनको और उनकी नवागत रानियोंको देखनेके लिये यशोदा, देवकी, रोहिणी आदि श्रीकृष्णकी आठों पट-रानियाँ और एकानङ्गा नामवाली यशोदापुत्री—ये सब उस सभामें आयीं (सभा० ३८ । २९ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ८०६–८२०) । अर्जुनका इस सभामें प्रवेश (मौसल० ७ । ७) । (२) एक वृष्णिवंशी राजकुमार, जो युधिष्ठिरकी सभामें बैठता था । इसने अर्जुनसे धनुर्वेद-की शिक्षा ली थी (सभा० ४ । २८–३५) । (३) दशार्णदेशके एक राजा, जिनके पराक्रमसे संतुष्ट हो महाबली भीमसेनने उन्हें अपना सेनापति बना लिया था (सभा० २९ । ५-६) । (४) इन्द्रसारथि मातलिकी पत्नी (उद्योग० ९७ । १९) । (५) एक संशप्तक योद्धा, जिसका अर्जुनके साथ युद्ध हुआ था (द्रोण० १८ । २०) ।

सुधामा–कुशद्वीपका एक सुवर्णमय पर्वत, जो मूँगोंसे भरा हुआ और दुर्गम है (भीष्म० १२ । १०) ।

सुनक्षत्रा–स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । ९) ।

सुनन्दा–(१) केकयराजकुमारी, जो कुरुवंशी राजा सार्वभौमकी पत्नी थीं । इनके गर्भसे जयत्सेनका जन्म हुआ था (आदि० ९५ । १६) । (२) काशिराज सर्वसेनकी पुत्री, जो दुष्यन्तपुत्र सम्राट् भरतकी पत्नी थीं । इनके गर्भसे भुमन्यु नामक पुत्रका जन्म हुआ था (आदि० ९५ । ३२) । (३) शिबिदेशकी राजकन्या, जो महाराज प्रतीपकी पत्नी थीं । इनके गर्भसे देवापि, शान्तनु तथा बाह्लीकका जन्म हुआ था (आदि० ९५ । ४४) । (४) चेदिनरेश सुबाहुकी बहिन । राजमाताने दमयन्तीको इसीके साथ रहनेके लिये आज्ञा दी थी (वन० ६५ । ७३–७६) । विदर्भ-निवासी सुदेव ब्राह्मणके साथ एकान्तमें दमयन्तीको बात करते देखकर इसका राज-माताको इसकी सूचना देना (वन० ६८ । ३३-३४) । ब्राह्मण सुदेवके कहनेसे इसके द्वारा दमयन्तीके ललाटमें स्थित प्राकृतिक टीकेकी मैलका धोया जाना और पहचाननेके बाद रोना तथा दमयन्तीको हृदयसे लगाना (वन० ६९ । १०–१२) । इसके पिताका नाम वीरबाहु था और यह दमयन्तीकी मौसेरी बहिन थी (वन० ६९ । १४-१५) ।

सुनय–एक दक्षिण भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ६४) ।

सुनसा–एक पवित्र नदी, जिसका जल भारतवासी पीते हैं (भीष्म० ९ । ३१) ।

सुनाभ–(पद्मनाभ)–(१) धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ११६ । ५) । भीमसेनके साथ इसका युद्ध और उनके द्वारा वध (भीष्म० ८८ । १२ के बाद दा० पाठसहित १३) । (२) वरुणका मन्त्री, जो अपने पुत्रों और पौत्रोंसहित गौ और पुष्कर नामक तीर्थोंके साथ वरुणदेवकी उपासना करता है (सभा० ९ । २८-२९) । (३) एक दिव्य पर्वत, जो धनाधीश कुबेरकी सभामें रहकर उनकी सेवा करता है (सभा० १० । ३२-३३) ।

सुनामा–(१) राजा सुकेतुका एक पुत्र, जो द्रौपदीके स्वयंवरमें अपने पिता और भाईके साथ आया था (आदि० १८५ । ९) । (२) उग्रसेनका पुत्र, कंसका भाई । इसे श्रीकृष्ण तथा बलरामजीने मारा था (सभा० १४ । ३४) । यह कंसका सेनापति भी था, कंसके समान ही बलवान् था और उसके घुड़सवारोंकी सेनाका सरदार बनाया गया था (सभा० ३८ । २९ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ८०१–८०३) । (३) अपने वंशका विस्तार करनेवाला गरुड़का एक पुत्र (उद्योग० १०१ । २)।(४) स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ५९)।

सुनीथ–(१) एक मन्त्र, जिसका दिन अथवा रातमें स्मरण करनेपर सर्पोंसे भय नहीं होता (आदि० ५८ । २३–२६) । (२) एक महर्षि, जो इन्द्रकी सभामें विराजते हैं (सभा० ७ । १६) । (३) दो भिन्न-भिन्न प्राचीन राजा, जो यमकी सभामें रहकर सूर्य-पुत्र यमकी उपासना करते हैं (सभा० ८ । ११, १५) । (४) शिशुपालका दूसरा नाम (सभा० ३९ । ११) । (विशेष देखिये शिशुपाल) । (५) एक जनपद और वहाँके नरेश, जो यह चाहते थे कि युधिष्ठिरके अभिषेक और श्रीकृष्णकी अग्रपूजाके कार्यमें बाधा पड़ जाय (सभा० ३९ । १४-१५) । (६) एक वृष्णिवंशी कुमार, जिसे प्रद्युम्नद्वारा धनुर्वेदकी शिक्षा प्राप्त हुई थी (वन० १८३ । २८) ।

सुनीथा–मृत्युकी मानसी कन्या, जो अपने रूप और गुणके लिये तीनों लोकोंमें विख्यात थी । इसीने (राजर्षि अङ्गके द्वारा) वेनको जन्म दिया था (शान्ति० ५९ । ९३) ।

सुनेत्र–(१) सोमवंशी महाराज कुरुके वंशज धृतराष्ट्रके बारह पुत्रोंमेंसे एक, जो लोकविख्यात था (आदि० ९४ । ५९-६०) । (२) अपने वंशका विस्तार करनेवाला गरुड़का एक पुत्र (उद्योग० १०१ । २) ।

सुन्द–निकुम्भ दैत्यका पुत्र और उपसुन्दका भाई । ये दोनों भाई भयङ्कर और क्रूर हृदयके थे (आदि० २०८ । २-३) । इन दोनों भाइयोंके पारस्परिक प्रेमका वर्णन (आदि० २०८ । ४–६) । त्रिभुवनपर विजय पानेके लिये विन्ध्यपर्वतपर इन दोनोंकी उग्र तपस्या (आदि० २०८ । ७) । इनकी तपस्यामें देवताका विघ्न डालना (आदि० २०८ । ११) । इन दोनोंको अपने भाईके अतिरिक्त किसी दूसरेसे न मरनेका ब्रह्माजीद्वारा वरदान (आदि० २०८ । २४-२५) । त्रिभुवनमें इन दोनोंके अत्याचार (आदि० २०९ अध्याय) । तिलोत्तमाके कारण इन दोनों भाइयोंकी एक दूसरेके हाथसे गदा-युद्धमें मृत्यु (आदि० २११ । १९) ।

सुन्दरिका–एक तीर्थ, जहाँ जानेसे मनुष्य सुन्दर रूपका भागी होता है । सुन्दरिकाकुण्डमें स्नान करनेसे रूप और तेजकी प्राप्ति होती है (वन० ८४ । ५६; अनु० २५ । २१) ।

सुपर्ण–(१) एक देवगन्धर्व, जो कश्यपकी पत्नी मुनिका पुत्र था (आदि० ६५ । ४२) । (२) एक देवगन्धर्व, जो कश्यपद्वारा प्राधाके गर्भसे उत्पन्न हुआ था (आदि० ६५ । ४७) । (३) मयूर नामक असुरका छोटा भाई, जो राजा कालकीर्तिके रूपमें पृथ्वीपर उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७ । ३६-३७) । (४) गरुड़का एक नाम (उद्योग० १०१ । १) । (विशेष देखिये गरुड़) । (५) एक ऋषि, जिन्होंने इन्द्रियसंयम और मनोनिग्रहपूर्वक भलीभाँति तपस्या करके भगवान् पुरुषोत्तमसे सात्वतधर्मको प्राप्त किया और इनसे वायुदेवने इस धर्मका उपदेश ग्रहण किया (शान्ति० ३४८ । २०–२२) । (६) भगवान् विष्णुका एक नाम (अनु० १४९ । ३४) ।

सुपर्वा–राजा भगदत्तका नामान्तर (द्रोण० २६ । ५२-५३) (विशेष देखिये भगदत्त) ।

सुपार्श्व–(१) एक क्षत्रिय राजा, जो कुपट नामक असुरके अंशसे उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७ । २८-२९) । पाण्डवोंकी ओरसे इसे रण निमन्त्रण भेजनेका निश्चय हुआ था (उद्योग० ४ । १४) । (२) एक देश, जिसके राजा क्रथको भीमसेनने पूर्वदिग्विजयके समय जीता था (सभा० ३० । ७-८) ।

सुपुण्या–भारतवर्षकी एक प्रमुख नदी, जिसका जल यहाँके निवासी पीते हैं (भीष्म० ९ । ३६) ।

सुप्रजा–भानु नामक अग्निकी दो पत्नियोंमेंसे एक । दूसरीका नाम बृहद्भासा था । इन दोनोंने छः पुत्रोंको जन्म दिया था (वन० २२१ । ९) ।

सुप्रतर्दन–एक प्राचीन नरेश, जो अर्जुन और कृपाचार्यका युद्ध देखनेके लिये इन्द्रके विमानमें बैठकर आये थे (विराट० ५६ । ९-१०) ।

सुप्रतिम–एक प्राचीन नरेश, जिनकी गणना संजयने प्राचीन नरेशोंमें की है (आदि० १ । २३५) ।

सुप्रतिष्ठा–स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । २९) ।

सुप्रतीक–(१) एक प्राचीन नरेश (आदि० १ । २३५) । (२) एक महर्षि, जो विभावसुके भाई और बड़े तपस्वी थे । ये भाईसे धन बाँटनेका आग्रह करते थे । इन्हें भाईसे हाथीकी योनिमें जन्म लेनेका शाप प्राप्त होना तथा इनका भी भाईको कछुआ होनेका शाप देना (आदि० २९ । १६–२४) । (३) एक दिग्गज, जिसके वंशमें नागराज ऐरावत, वामन, कुमुद और अञ्जनकी उत्पत्ति हुई है (उद्योग० ९९ । १५) । इसके अप्रमेय रूपका विशेष वर्णन (भीष्म० १२ । ३३–३५) । (४) भगदत्तके गजराजका नाम । इसका अद्भुत पराक्रम (भीष्म० ९५ । २४–८६, द्रोण० २६ । १९–६८) । अर्जुनद्वारा इसका वध (द्रोण० २९ । ४३) ।

सुप्रभा–(१) भगवान् श्रीकृष्णकी एक पटरानी । द्वारकामें इनके रहनेके लिये पद्मकूट नामक प्रासाद प्राप्त हुआ था । इसका विशेष वर्णन (सभा० ३८ । २९ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ८१५) । (२) पुष्करमें बहनेवाली

सरस्वतीका नाम, जो ब्रह्माजीके आवाहन करनेसे प्रकट हुई थी (शल्य० ३८ । १३-१४) । (३) स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । १०) । (४) वदान्य ऋषिकी कन्या (अनु० १९ । १२) । इसका अष्टावक्रके साथ विवाह (अनु० २१ । १८) ।

सुप्रयोगा–एक पवित्र नदी, जो अग्निकी उत्पत्तिका स्थान है (वन० १२२ । २५) । इसका जल भारतवासी पीते हैं (भीष्म० ९ । २१) ।

सुप्रवृद्ध–सौवीरदेशका एक राजकुमार, जो हाथमें ध्वज लेकर जयद्रथके पीछे चलता था (वन० २६५ । १०) । अर्जुनद्वारा इसका वध (वन० २७१ । २७) ।

सुप्रसाद–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ७१) ।

सुप्रसादा–स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । १३) ।

सुप्रिया–एक अप्सरा, जो दक्ष-कन्या प्राधाके गर्भसे महर्षि कश्यपद्वारा उत्पन्न हुई थी (आदि० ६५ । ५१) । इसने अर्जुनके जन्ममहोत्सवमें जाकर नृत्य किया था (आदि० १२२ । ६३) ।

सुबल–(१) एक प्राचीन नरेश (आदि० १ । २३६) । (२) गान्धार देशके एक राजा, जो प्रह्लादशिष्य नग्नजित्के अंशसे उत्पन्न हुए थे । इनकी संतति देवताओंके धर्मका नाश करनेवाली हुई । इनका पुत्र शकुनि 'सौबल' नामसे विख्यात हुआ । इनकी पुत्री गान्धारी नामसे प्रसिद्ध थी, जो दुर्योधनकी माता थी । ये दोनों भाई-बहन अर्थशास्त्र-के ज्ञानमें निपुण थे (आदि० ६३ । १११-११२) । भीष्मने जब धृतराष्ट्रके लिये गान्धारीका वरण करनेके निमित्त गान्धारराजके पास अपना दूत भेजा था, तब 'धृतराष्ट्र अंधे हैं' इस बातको लेकर राजा सुबलके मनमें बड़ा विचार हुआ था, परंतु उनके कुलप्रसिद्धि तथा आचार-विचारके विषयमें बुद्धिपूर्वक सोच-समझकर इन्होंने अपनी कन्या गान्धारीका वाग्दान कर दिया (आदि० १०९ । ११-१२) । युधिष्ठिरके राजसूय-यज्ञमें गान्धार-राज सुबल अपने महाबली पुत्र शकुनि, अचल और वृषकके साथ पधारे थे (सभा० ३४ । ६-७) । राजसूय-यज्ञकी समाप्तिके बाद जब पुत्रोंसहित सुबल अपने राज्यको पधारने लगे, तब नकुलने साथ जाकर इन्हें अपने राज्यकी सीमातक पहुँचाया था (सभा० ४५ । ४९) । (३) एक इक्ष्वाकुवंशी राजा, जिनका पुत्र जयद्रथका साथी था (वन० २६५ । ८-९) । (४) अपने वंशका विस्तार करनेवाला गरुड़का एक पुत्र (उद्योग० १०१ । ३) ।

सुबाहु–(१) कश्यप और कद्रूकी परम्परामें उत्पन्न एक प्रमुख नाग (आदि० ३५ । १४; उद्योग० १०३ । १६) । (२) एक अप्सरा, जो दक्षकन्या प्राधाके गर्भसे महर्षि कश्यपद्वारा उत्पन्न हुई थी (आदि० ६५ । ५०) । यह अर्जुनके जन्मकालमें नृत्य करने आयी थी (आदि० १२२ । ६३) । (३) एक क्षत्रिय राजा, जो हर नामक दानवके अंशसे उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७ । २३-२४) । पाण्डवोंकी ओरसे इसे रण-निमन्त्रण भेजनेका निश्चय हुआ था (उद्योग० ४ । १४) । (४) एक राजा, जो क्रोधवश संज्ञक दैत्यके अंशसे उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७ । ६०) । (५) धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६७ । ९४; आदि० ११६ । ३) । भीमसेनद्वारा इसका वध (भीष्म० ९६ । २६-२७) । (६) काशीके एक राजा, जो युद्धमें पीठ दिखानेवाले नहीं थे । भीमसेनने पूर्व-दिग्विजयके समय इन्हें बलपूर्वक परास्त कर दिया (सभा० ३० । ६-७) । 'सुचित्र' नामसे इनके द्रौपदीके स्वयंवरमें जानेका भी उल्लेख हुआ है । वहाँ इनके साथ इनका पुत्र सुकुमार भी था (आदि० १८५ । १०) । (७) एक राक्षस, जो ताटका नामक राक्षसीका पुत्र तथा मारीचका भाई था । भगवान् श्रीरामद्वारा इसका वध (सभा० ३८ । २९ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ७९४) । (८) चेदिदेशके एक राजा, जो वीरबाहुके पुत्र और सुनन्दाके भाई थे (ये दमयन्तीके मौसेरे भाई थे) (वन० ६५ । ४५) । (९) कुलिन्दोंका एक राजा, इसका राज्य और नगर हिमालयके बहुत निकट था । वहाँ अनेक प्रकारकी आश्चर्यजनक वस्तुएँ दिखायी देती थीं । वहाँ हाथी-घोड़ोंकी बहुतायत थी । किरात, तङ्गण एवं कुलिन्द आदि जातियोंके लोग वहाँ निवास करते थे । वह प्रदेश देवताओंसे भी सेवित था । सुबाहुने राज्यकी सीमापर जाकर पाण्डवोंको बड़े आदर-सत्कारके साथ अपनाया, इससे पूजित हो वे सब लोग वहाँ सुखसे रहे । दूसरे दिन पाण्डवोंने इसके यहाँ अपने सेवकों तथा द्रौपदीके सामानोंको सौंपकर आगेको प्रस्थान किया था (वन० १४० । २४–२८) । यह महाभारतयुद्धमें पाण्डवपक्षकी ओरसे आया था । जयद्रथ-वधकी प्रतिज्ञाको सफल बनानेके लिये श्रीकृष्णसे युधिष्ठिरने जब प्रार्थना की थी, उस दिन उनके शिबिरमें सुबाहु भी उपस्थित था (द्रोण० ८३ । ४–६) । (१०) एक संशप्तक योद्धा । अर्जुनके साथ इसका युद्ध (द्रोण० १८ । १७–२०) । युयुत्सुके साथ युद्ध और उनके द्वारा इसकी दोनों भुजाओंका काटा जाना (द्रोण० २५ । १३-१४) । (११) स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ७३) । (१२) एक प्राचीन नरेश, जिन्होंने अपने जीवनमें कभी मांस नहीं खाया था (अनु० ११५ । ६६) ।

सुबेल–लङ्कापुरीके पासका एक पर्वत (वन० २८४ । २१)

सुभग–शकुनिका भाई, जो भीमसेनद्वारा मारा गया (द्रोण० १५७ । २६) ।

सुभगा–(१) 'प्राधा' नामवाली कश्यपकी पत्नीसे उत्पन्न एक कन्या (आदि० ६५ । ४६) । (२) स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । १८) ।

सुभद्रा–(१) वसुदेवजीकी पुत्री (आदि० २१८ । १४–१८) । भगवान् श्रीकृष्ण और सारणकी सगी बहन

(आदि० २१८ । १७-१८) । ये अपने पिताकी बड़ी लाड़ली थीं (आदि० २१८ । १७) । अर्जुनका इनके प्रति अनुराग और श्रीकृष्णके समक्ष इन्हें अपनी रानी बनानेका मनोभाव प्रकट करना (आदि० २१८ । १९) । श्रीकृष्णकी सलाहसे रैवतक पर्वतके उत्सवपर परिक्रमाके समय अर्जुनद्वारा इनका अपहरण (आदि० २१९ । ६-८) । अर्जुनके साथ इनका विधिपूर्वक विवाह (आदि० २२० । १३) । अर्जुनकी प्रेरणासे गोपीवेशमें इनका द्रौपदीके पास आगमन तथा इनके लिये द्वारकासे दहेजका आना (आदि० २२० अध्याय) । इनके गर्भसे अभिमन्युका जन्म (आदि० २२० । ६५-६६; आदि० ९५ । ७८) । पाण्डवोंके वनवास होनेपर वनसे अभिमन्युसहित ये श्रीकृष्णके साथ द्वारका चली गयी थीं (वन० २२ । ३-४) । उपप्लव्यनगरमें अभिमन्युके विवाहोत्सवमें इनका आना (विराट० ७२ । २२) । पुत्रशोकसे दुखी होनेपर इन्हें श्रीकृष्णद्वारा आश्वासन (द्रोण० ७७ । १२-२६) । श्रीकृष्णके समक्ष अभिमन्युके लिये इनका विलाप (द्रोण० ७८ । २-३५) । श्रीकृष्णके साथ हस्तिनापुरसे द्वारकाको प्रस्थान (आश्व० ५२ । ५५) । वसुदेवजीके सामने श्रीकृष्णसे अभिमन्यु-वधका वृत्तान्त कहनेके लिये कहकर मूर्छित होना (आश्व० ६१ । ४) । युधिष्ठिरके अश्वमेधयज्ञमें सम्मिलित होनेके लिये द्वारकासे हस्तिनापुर आना (आश्व० ६६ । ४) । उत्तराके मृत पुत्रको जिलानेके लिये इनकी श्रीकृष्णसे प्रार्थना (आश्व० ६७ अध्याय) । परीक्षित्के जीवित होनेसे इनकी प्रसन्नता (आश्व० ७० । ६-७) । इनका उलूपी और चित्राङ्गदासे मिलना तथा उन दोनोंको उपहार देना (आश्व० ८८ । ३-४) । ये कुन्ती और गान्धारी दोनों सासुओंकी समान भावसे सेवा करती थीं (आश्रम० १ । ९) । ये अभिमन्युके लिये चिन्तित रहनेके कारण सदा अप्रसन्न एवं हर्षशून्य रहा करती थीं । केवल परीक्षित्को देखकर जीवन धारण करती थीं (आश्रम० २१ । १५-१६) । संजयका ऋषियोंके समक्ष इनका परिचय देना (आश्रम० २५ । १०) । गान्धारीका व्यासजीके समक्ष इन्हें पुत्रशोकसे संतप्त बताना (आश्रम० २९ । ४२) । युधिष्ठिरका दुःखसे आर्त होकर सुभद्राको परीक्षित् एवं वज्रका पालन करनेके लिये कहना (महाप्रस्था० १ । ७-९) । (२) सुरभिकी एक धेनुरूपा पुत्री, जो पश्चिमदिशाको धारण करनेवाली है (उद्योग० १०२ । ९) ।

सुभद्राहरणपर्व-आदिपर्वका एक अवान्तर पर्व (आदि० अध्याय २१८ से २१९ तक) ।

सुभा-महर्षि अङ्गिराकी पत्नी । इनके गर्भसे बृहत्कीर्ति आदि सात पुत्र हुए थे (वन० २१८ । १-२) ।

सुभीम-तप नामधारी पाञ्चजन्य नामक अग्निके पुत्र, जो यज्ञमें विघ्न डालनेवाले पंद्रह उत्तर देवों (विनायकों) मेंसे एक हैं (वन० २२० । ११) ।

सुभूमिक-सरस्वती-तटवर्ती एक प्राचीन तीर्थ, इसका विशेष वर्णन (शल्य० ३७ । २-८) ।

सुभ्राज-सूर्यद्वारा स्कन्दको दिये गये दो पार्षदोंमेंसे एक । दूसरेका नाम भास्वर था (शल्य० ४५ । ३१) ।

सुभ्रू-स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । ८) ।

सुमङ्गला-स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । १२) ।

सुमणि-चन्द्रमाद्वारा स्कन्दको दिये गये दो पार्षदोंमेंसे एक । दूसरेका नाम मणि था (शल्य० ४५ । ३२) ।

सुमण्डल-एक राजा, जिसे अर्जुनने उत्तर-दिग्विजयके समय सेनासहित जीत लिया था (सभा० २६ । ४) ।

सुमति-(१) एक राक्षस, जो वरुणकी सभामें रहकर उनकी उपासना करता है (सभा० ९ । १३) । (२) एक दिव्य महर्षि, जो शरशय्यापर पड़े हुए भीष्मजीको देखनेके लिये आये थे (अनु० २६ । ४) ।

सुमन-इन्द्रकी सभामें विराजमान होनेवाले एक देवता (सभा० ७ । २२) ।

सुमना-(१) एक किरातोंका राजा, जो युधिष्ठिरकी सभामें बैठा करता था (सभा० ४ । २५) । (२) एक प्राचीन नरेश, जो यमसभामें रहकर सूर्यपुत्र यमकी उपासना करते हैं (सभा० ८ । १२) । (३) एक असुर, जो वरुणकी सभामें रहकर उनकी उपासना करता है (सभा० ९ । १३) । (४) । देवलोक-निवासिनी केकयराजकी पुत्री, जिसने शाण्डिलीदेवीसे उनकी साधनाके विषयमें प्रश्न किया था (अनु० १२३ । ३-६) ।

सुमनाख्य-कश्यप और कद्रूसे उत्पन्न एक प्रमुख नाग (आदि० ३५ । ८) ।

सुमनोमुख-एक कश्यपवंशी नाग (उद्योग० १०३ । १२) ।

सुमन्तु-एक ऋषि, जो महर्षि व्यासके शिष्य थे । व्यासजीने इन्हें सम्पूर्ण वेदों तथा महाभारतका अध्ययन कराया था (आदि० ६३ । ८९) । ये युधिष्ठिरकी सभामें विराजते थे (सभा० ४ । ११) । ये शरशय्यापर पड़े हुए भीष्मजीको देखनेके लिये गये थे । (शान्ति० ४७ । ५) ।

सुमन्त्र-अयोध्यानरेश महाराज दशरथके सारथि (विराट० १२ । ८ के बाद दाक्षिणात्य पाठ) ।

सुमन्यु-एक प्राचीन नरेश, जिन्होंने मुनिवर शाण्डिल्यको भक्ष्य-भोज्य पदार्थोंकी कितनी ही पर्वतोपम राशियाँ दानमें दी थीं (अनु० १३७ । २२) (किसी-किसी प्रतिके अनुसार ये राजा भुमन्यु थे) ।

सुमल्लिक-एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ५५) ।

सुमह-परशुरामजीके सारथि (विराट० १२ । ८ के बाद दा० पाठ) ।

सुमित्र–(१) एक प्राचीन नरेश (आदि० १ । २३६)। (२) एक राजा, जो क्रोधवशसंज्ञक दैत्यके अंशसे उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७ । ६३) । यह सौवीर देशका राजा था । इसे लोग दत्तामित्रके नामसे भी जानते थे । अर्जुनने अपने बाणोंद्वारा इसका दमन किया था । (आदि० १३८ । २३) । यह युधिष्ठिरकी सभामें विराजता था (सभा० ४ । २५) । (३) एक ऋषि, जो युधिष्ठिरकी सभामें विराजते थे (सभा० ४ । १०)। (४) कुलिन्दनगरके शासक राजा सुमित्र, जिसका पुत्र सुकुमार था । इसे भीमसेनने पूर्व-दिग्विजयके समय जीता था (सभा० २९ । १०) । सहदेवने भी सुमित्र और सुकुमारपर विजय पायी (सभा० ३१ । ४) । (५) तप नामधारी पाञ्चजन्यनामक अग्निके पुत्र, जो यज्ञमें विघ्न डालनेवाले पंद्रह उत्तरदेवों (विनायकों) मेंसे एक हैं (वन० २२० । १२) । (६) अभिमन्युका सारथि (द्रोण० ३५ । ३१) । इसकी अभिमन्युके साथ युद्धसम्बन्धी कर्तव्यपर विचार करनेकी प्रार्थना (द्रोण० ३६ । ३-४) । अभिमन्युके आदेशसे इसने द्रोणाचार्यकी ओर (चक्रव्यूहके लिये) रथ बढ़ाया था (द्रोण० ३६ । ९-१०) । (७) एक हैहयवंशी नरेश, इनका एक मृगके पीछे दौड़ना (शान्ति० १२५ । ९–१९) । मृगको खोजते हुए इनका ऋषियोंके आश्रमपर पहुँचना और उनसे आशाके विषयमें प्रश्न करना (शान्ति० १२६ । ८–१९) । ऋषभका इन्हें वीरद्युम्न और तनु नामक मुनिका वृत्तान्त सुनाना (शान्ति० १२७ अध्याय) । ऋषभ ऋषिके उपदेशसे इनके द्वारा आशाका परित्याग (शान्ति० १२८ । २५) ।

सुमित्रा–(१) भगवान् श्रीकृष्णकी एक रानी (सभा० ३८ । २९ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ८२०) । (२) महाराज दशरथकी एक पटरानी । लक्ष्मण और शत्रुघ्नकी माता (वन० २७४ । ८) । ये भरतजीके साथ श्रीरामको लौटा लानेके लिये चित्रकूट गयी थीं (वन० २७७ । ३६) ।

सुमीढ–महाराज सुहोत्रद्वारा ऐक्ष्वाकीके गर्भसे उत्पन्न तीन पुत्रोंमेंसे एक । इनके शेष दो भाई अजमीढ और पुरुमीढ थे (आदि० ९४ । ३०) ।

सुमुख–(१) कश्यप और कद्रूकी परम्परामें उत्पन्न एक प्रमुख नाग (आदि० ३५ । १४) । यह ऐरावतकुलमें उत्पन्न आर्यकका पौत्र, वामनका दौहित्र और चिकुरका पुत्र था (उद्योग० १०३ । २४-२५) । मातलिकन्या गुणकेशीके साथ इसके विवाहका प्रस्ताव । भगवान् विष्णुके आदेशसे इन्द्रका इसे दीर्घायु बनाना । गुणकेशीसे विवाह करके इसका घरको जाना (उद्योग० १०४ । २७–२९) । भगवान् विष्णुने इसे पैरके अँगूठेसे उठाकर गरुड़की छातीपर रख दिया था, तभीसे गरुड़ इसे सदा साथ लिये रहते हैं (उद्योग० १०५ । ३१) । (२) एक राजा, जिसने राजा युधिष्ठिरके पास भेंटकी प्रमुख वस्तुएँ भेजी थीं (सभा० ५१ । ७ के बाद दा० पाठ) । (३) अपने वंशका विस्तार करनेवाला गरुड़का एक पुत्र (उद्योग० १०१ । २) । (४) गरुड़की प्रमुख संतानोंकी परम्परामें उत्पन्न एक पक्षी (उद्योग० १०१ । १२) ।

सुमुखी–(१) कर्णके सर्पमुख बाणमें प्रविष्ट अश्वसेन नामक नागकी माता । मुखसे पुत्रकी रक्षा करनेके कारण इसे सुमुखी कहते हैं (कर्ण० ९० । ४२) । (२) अलकापुरीकी अप्सरा, जिसने अष्टावक्रके स्वागत-समारोहमें कुबेर-भवनमें नृत्य किया था (अनु० १९ । ४५) ।

सुमेरु–एक पर्वत (देखिये मेरु) ।

सुयजु–सम्राट् भरतके पौत्र एवं भुमन्युके पुत्र, इनकी माताका नाम 'पुष्करिणी' था (आदि० ९४ । २४) ।

सुयज्ञा—प्रसेनजित्की पुत्री, पुरुवंशीय महाराज महाभौमकी पत्नी तथा अयुतनायीकी माता (आदि० ९५ । २०) ।

सुयशा—बाहुदराजकी पुत्री, जिसके साथ अनश्वाके पुत्र परीक्षित्ने विवाह किया था । इसके गर्भसे भीमसेनका जन्म हुआ (आदि० ९५ । ४१-४२) ।

सुयम—राक्षस शतशृङ्गका तीसरा पुत्र, जो अम्बरीषके सेनापति सुदेवद्वारा मारा गया था (शान्ति० ९८ । ११ के बाद दा० पाठ) ।

सुरकृत्—विश्वामित्रके ब्रह्मवादी पुत्रोंमेंसे एक (अनु० ४ । ५७) ।

सुरजा—एक अप्सरा, जो दक्षकन्या 'प्राधा' के गर्भसे कश्यपद्वारा उत्पन्न हुई थी (आदि० ६५ । ५०) । यह अर्जुनके जन्मकालमें नृत्य करने आयी थी (आदि० १२२ । ६३) ।

सुरता—एक अप्सरा, जो दक्षकन्या 'प्राधा' के गर्भसे कश्यपद्वारा उत्पन्न हुई थी (आदि० ६५ । ५०) । यह अर्जुनके जन्मकालमें नृत्य करने आयी थी (आदि० १२२ । ६३) ।

सुरथ—(१) एक राजा, जो क्रोधवशसंज्ञक दैत्यके अंशसे उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७ । ६२) । (२) एक प्राचीन नरेश, जो यमसभामें रहकर सूर्यपुत्र यमकी उपासना करते हैं (सभा० ८ । ११) । (३) एक राजा, जो शिबिदेशके राजकुमार कोटिकास्यके पिता थे (वन० २६५ । ६) । (४) त्रिगर्तदेशका एक राजा, जो जयद्रथका अनुगामी था । द्रौपदीहरणके समय इसका नकुलके साथ युद्ध और उनके द्वारा वध (वन० २७१ । १८–२२) । (५) एक संशप्तक योद्धा, जिसका अर्जुनके साथ युद्ध हुआ था (द्रोण० १८ । २०–२३) । (६) द्रुपदका पुत्र, जो अश्वत्थामाद्वारा निहत हुआ था (द्रोण० १५६ । १८०) । (७) पाण्डवपक्षका एक पाञ्चाल महारथी, जो अश्वत्थामाके साथ युद्ध करते समय उसके हाथों मारा गया (शल्य० १४ । ३७–४३) । (८) जयद्रथका पुत्र, जो दुःशलाके गर्भसे उत्पन्न हुआ था । इसने अश्वमेधीय अश्वके साथ अर्जुनके सिन्धुदेशमें पहुँचने-

का समाचार सुनकर पिताकी मृत्युका स्मरण करके भयभीत हो प्राण त्याग दिया (आश्व० ७८ । २८–३०) ।

सुरथा—राजा शिबिकी माता (वन० १९७ । २५) ।

सुरथाकार—कुशद्वीपका तीसरा वर्ष (भीष्म० १२ । १३) ।

सुरप्रवीर—तपनामधारी पाञ्चजन्य नामक अग्निके पुत्र, जो यज्ञमें विघ्न डालनेवाले पंद्रह उत्तरदेवों (विनायकों) मेंसे एक हैं (वन० २२० । १३) ।

सुरभि (सुरभी)—(१) कामधेनु नामक गौ । इनका समुद्रसे प्राकट्य हुआ (आदि० १८ । ३६ के बाद दा० पाठ) । इन्हें दक्षकी कन्या माना गया है । देवी सुरभिने कश्यपजीके सहवाससे एक गौको जन्म दिया, जिसका नाम नन्दिनी था । महर्षि वसिष्ठने नन्दिनीको अपनी होमधेनुके रूपमें प्राप्त किया था (आदि० ९८ । ८-९) । ये ब्रह्माजीकी सभामें रहकर उनकी उपासना करती हैं (सभा० ११ । ४०) । इनका अपने पुत्र बैलके लिये इन्द्रसे दुःख प्रकट करना (वन० ९ । ९–१४) । नारदजीद्वारा मातलिसे इनकी तथा इनकी संतानोंका वर्णन (उद्योग० १०२ अध्याय) । इनके फेनसे बकराज राजधर्माको जीवनकी प्राप्ति (शान्ति० १७२ । ३–५) । प्रजापतिके सुरभि-गन्धयुक्त श्वाससे इनकी उत्पत्तिका वर्णन (अनु० ७७ । १७) । इनकी तपस्या और ब्रह्माजीसे इन्हें अमरत्व एवं गोलोकमें निवासकी प्राप्ति (अनु० ८३ । २९–३९) । इनके निवासभूत गोलोककी दिव्यताका वर्णन (अनु० ८३ । ३७–४४) । इनका कार्तिकेयको एक लाख गौओंकी भेंट देना (अनु० ८६ । २३) । अगस्त्यजीके कमलोंकी चोरी होनेपर इनका शपथ खाना (अनु० ९४ । ४१) । (२) क्रोधवशाकी क्रोधजनित कन्या, इसने दो कन्याओंको उत्पन्न किया । जिनके नाम थे—रोहिणी तथा गन्धर्वी (आदि० ६६ । ६१, ६७) ।

सुरभिमान्—एक अग्नि, जिनके लिये मृत्युसूचक विलाप सुनायी देने अथवा कुक्कुर आदिके द्वारा अग्निहोत्रकी अग्निका स्पर्श हो जानेपर 'अष्टाकपाल' पुरोडाश देनेका विधान है (वन० २२१ । २८) ।

सुरभीपत्तन—एक दक्षिणभारतीय जनपद, जिसे सहदेवने दक्षिण-दिग्विजयके अवसरपर दूतोंद्वारा ही अपने अधीन कर लिया (सभा० ३१ । ६८) ।

सुरवीथी—इन्द्रलोकमें प्रसिद्ध नक्षत्रमार्ग (वन० ४३ । १२) ।

सुरस—एक कश्यपवंशी नाग (उद्योग० १०३ । १६) ।

सुरसा—(१) क्रोधवशाकी क्रोधजनित कन्या, नाग तथा पन्नग जातिके सर्पोंकी माता । इनकी तीन पुत्रियाँ थीं, जिनके नाम इस प्रकार हैं—अनला, रुहा एवं वीरुधा (आदि० ६६ । ६१, ७०) । ये ब्रह्माजीकी सभामें उपस्थित होकर उनकी उपासना करती हैं (सभा० ११ । ३९) । (२) एक अप्सरा, जिसने अर्जुनके जन्म-महोत्सवमें नृत्य किया था (आदि० १२२ । ६३) ।

सुरहन्ता—तप नामधारी पाञ्चजन्य नामक अग्निके पुत्र, जो यज्ञमें विघ्न डालनेवाले पंद्रह उत्तरदेवों (विनायकों) मेंसे एक हैं (वन० २२० । १३) ।

सुरा—एक देवी, जो समुद्र (वरुणालय) से प्रकट हुई (आदि० १८ । ३५) । ये वरुणके द्वारा उनकी ज्येष्ठ पत्नी 'देवी' के गर्भसे उत्पन्न हुई थीं और देवताओंको आनन्दित करनेवाली थीं (इनको वारुणी भी कहते हैं) (आदि० ६६ । ५२) । ये ब्रह्माजीकी सभामें रहकर उनकी उपासना करती हैं (सभा० ११ । ४२) ।

सुरारि—एक राजा, जिसे पाण्डवोंकी ओरसे रण-निमन्त्रण भेजनेका विचार किया गया था (उद्योग० ४ । १५) ।

सुराव—इल्वलद्वारा अगस्त्यजीको दिये गये रथके एक घोड़ेका नाम (वन० ९९ । १७) ।

सुराष्ट्र—(१) दक्षिण-पश्चिम भारतका एक जनपद, जहाँके राजा कौशिकाचार्य आकृतिको माद्रीकुमार सहदेवने पराजित किया था (सभा० ३१ । ६१) । दक्षिण दिशाके तीर्थोंके वर्णन-प्रसंगमें सुराष्ट्र देशके अन्तर्गत चमसोद्भेद, प्रभासक्षेत्र, पिण्डारक एवं उज्जयन्त (रैवतक) पर्वत आदि पुण्य-स्थानोंका उल्लेख हुआ है (वन० ८८ । १९–२१) । (२) एक क्षत्रियवंश, जिसमें रुषर्धिक नामक कुलाङ्गार राजा प्रकट हुआ था (उद्योग० ७४ । १४) ।

सुरुच—अपने वंशका विस्तार करनेवाला गरुड़का एक पुत्र (उद्योग० १०१ । ३) ।

सुरूपा—सुरभिकी एक धेनुस्वरूपा पुत्री, जो पूर्वदिशाको धारण करनेवाली है (उद्योग० १०२ । ८) ।

सुरेणु—ऋषभद्वीपमें बहनेवाली सरस्वती नदीका नाम (शल्य० ३८ । २६) ।

सुरेश—(१) तप नामधारी पाञ्चजन्य नामक अग्निके पुत्र, जो यज्ञमें विघ्न डालनेवाले पंद्रह उत्तरदेवों (विनायकों) मेंसे एक हैं (वन० २२० । १३) । (२) एक सनातन विश्वेदेव (अनु० ९१ । ३५) ।

सुरेश्वर—ग्यारह रुद्रोंमेंसे एक (शान्ति० २०८ । १९) ।

सुरोचना—स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । २९) ।

सुरोद—सुराका समुद्र, जो दधिमण्डोदसागरके बाद पड़ता है (भीष्म० १२ । २) ।

सुरोमा—तक्षककुलोत्पन्न एक सर्प, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें दग्ध हो गया था (आदि० ५७ । १०) ।

सुलभा—एक संन्यासिनी कुमारी, जो योगधर्मके अनुष्ठानद्वारा सिद्धि प्राप्त करके अकेली ही इस पृथ्वीपर विचरण करती थी (शान्ति० ३२० । ७) । इसने त्रिदण्डी संन्यासियोंके मुखसे मोक्ष-तत्त्वकी जानकारीके विषयमें मिथिलापति राजा जनककी प्रशंसा सुनी । सुनकर इसके मनमें उनके दर्शनका संकल्प हुआ । इसने योगशक्तिसे अपना पहला शरीर छोड़कर दूसरा परम सुन्दर

रूप धारण कर लिया। फिर यह पलभरमें विदेह देशकी राजधानी मिथिलामें जा पहुँची। वहाँ इसने भिक्षा लेनेके बहाने मिथिलेश्वरका दर्शन किया। राजाने इसका स्वागत-पूजन करके अन्न देकर संतुष्ट किया। तदनन्तर यह योग-शक्तिसे उनकी बुद्धिमें प्रविष्ट हो गयी और उनके मनको बाँध लिया। फिर एक ही शरीरमें रहकर राजा और सुलभाका परस्पर संवाद आरम्भ हुआ। राजाद्वारा अयोग्य एवं असङ्गत वचनोंद्वारा इसका तिरस्कार (शान्ति० ३२० । ८–७५)। राजाके वचनोंसे विचलित न होकर इसने विद्वत्तापूर्ण भाषणद्वारा उन्हें उत्तर दिया और अपना परिचय देते हुए कहा—मैं राजर्षिप्रधानके कुलमें उत्पन्न हुई हूँ। क्षत्रियकन्या हूँ। मैंने अखण्ड ब्रह्मचर्यका पालन किया है। मेरा नाम सुलभा है। मैं सदा स्वधर्ममें स्थित रहती हूँ (शान्ति० ३२० । ७६–१९२)।

सुलोचन–धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६७ । ९४; आदि० ११६ । ४)। इसने दुर्योधनके साथ रहकर राजा द्रुपदपर आक्रमण किया था (आदि० १३७ । ६)। भीमसेनद्वारा इसका वध (भीष्म० ६४ । ३७-३८)।

सुवक्त्र–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ७३)।

सुवर्चला–(१) महर्षि देवलकी पुत्री। इसका पितासे अपने लिये वरका लक्षण कहना। स्वयंवरमें इसके द्वारा ऋषिकुमारोंका प्रत्याख्यान। श्वेतकेतु और इसकी बात-चीत तथा इसके द्वारा श्वेतकेतुका वरण। श्वेतकेतुके साथ इसका विवाह। पतिके साथ इसके अध्यात्मसम्बन्धी प्रश्नोत्तर। गृहस्थ-धर्मका पालन करते हुए इसे परमगतिकी प्राप्ति (शान्ति० २२०। दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ४९८८ से ४९९५ तक)। (२) सूर्यकी पत्नी (अनु० १४६ । ५)।

सुवर्चा–(१) धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६७ । १०२; आदि० ११६ । १०)। यह द्रौपदीके स्वयंवरमें गया था (आदि० १८५ । ३)। भीमसेन-द्वारा इसका वध (कर्ण० ८४ । ५-६)। (२) राजा सुकेतुका एक पुत्र, जो अपने पिता तथा भाई सुनामाके साथ द्रौपदीके स्वयंवरमें गया था (आदि० १८५ । ९)। (३) तप नामधारी पाञ्चजन्य नामक अग्निके पुत्र, जो यज्ञमें विघ्न डालनेवाले पंद्रह उत्तरदेवों (विनायकों) मेंसे एक हैं (वन० २२० । १३)। (३) एक सत्यवादी ब्राह्मण ऋषि, जिन्होंने रातके समय सत्यवान् और सावित्रीके न लौटनेसे चिन्तित हुए महाराज द्युमत्सेनको आश्वासन दिया था (वन० २९८ । १०)। (४) अपने वंशका विस्तार करनेवाला गरुड़का एक पुत्र (उद्योग० १०१ । २)। (५) कौरवपक्षका एक योद्धा, जो अभिमन्युद्वारा मारा गया था (द्रोण० ४८ । १५-१६)। (६) हिमवान्द्वारा स्कन्दको दिये गये दो पार्षदोंमेंसे एक। दूसरेका नाम अतिवर्चा था (शल्य० ४५ । ४६)। (७) सूर्यवंशी राजा खनीनेत्रके पुत्र। प्रजाओंद्वारा इनके पिता खनीनेत्रको हटाकर इनका राजपदपर अभिषेक (आश्व० ४ । ९)। इनका करन्धम नाम पड़नेका कारण (आश्व० ४ । १५-१६)। इनके त्रेतायुगके आरम्भमें एक कान्तिमान् पुत्र हुआ, जो 'कारन्धम' कहलाया। इसीका नाम अविक्षित् था (आश्व० ४ । १८)।

सुवर्ण–(१) एक ब्रह्मचारी तथा विख्यात गुणवान् देवगन्धर्व, जो अर्जुनके जन्मोत्सवमें आया था (आदि० १२२ । ५८)। (२) एक तपस्वी ब्राह्मण, जिनकी कान्ति सुवर्णके समान थी। इन्होंने मनुसे पुष्पादि-दानके विषयमें प्रश्न किया था (अनु० ९८ । ३–९)।

सुवर्णचूड–गरुडकी प्रमुख संतानोंमेंसे एक (उद्योग० १०१ । ९)।

सुवर्णतीर्थ–एक पुण्यमय तीर्थ, जहाँ पूर्वकालमें भगवान् विष्णुने रुद्रदेवकी प्रसन्नताके लिये उनकी आराधना की और उनसे अनेक देवदुर्लभ उत्तम वर प्राप्त किये। इस तीर्थमें जाकर भगवान् शङ्करकी पूजा करनेसे अश्वमेधयज्ञके फल और गणपतिपदकी प्राप्ति होती है (वन० ८४ । १८—२२)।

सुवर्णवर्मा–काशीके राजा, जो वपुष्टमाके पिता थे। जनमेजयके मन्त्रियोंने इनके पास जाकर उनके लिये राजकुमारी वपुष्टमाका वरण किया था (आदि० ४४ । ८)। इनके द्वारा अपनी पुत्रीका राजा जनमेजयके साथ विवाह (आदि० ४४ । ९)।

सुवर्णशिरा–पश्चिम-दिशामें रहकर सामगान करनेवाले एक महर्षि। इनके केश पिङ्गलवर्णके हैं। इनका प्रभाव अप्रमेय और मूर्ति अदृश्य है (उद्योग० ११० । १२)।

सुवर्णष्ठीवी–राजा सृंजयका पुत्र। इसका सुवर्णष्ठीवी नाम पड़नेका कारण (द्रोण० ५५ । २३ के बाद दा० पाठ-सहित २४)। लुटेरोंद्वारा इसका हरण और वध (द्रोण० ५५ । ३०-३१)। नारदजीके वरदानसे पुनरुज्जीवन (द्रोण० ७१ । ८-९)। इनके जन्म, मरण और पुनरु-ज्जीवनके वृत्तान्तका पुनर्वर्णन (शान्ति० ३१ अध्याय)।

सुवर्णा–इक्ष्वाकुकुलकी कन्या। पूरुवंशीय महाराज सुहोत्रकी पत्नी। हस्ती नामक राजाकी माता (आदि० ९५ । ३४)।

सुवर्णाभ–स्वारोचिष मनुके पौत्र एवं शङ्खपदके पुत्र, जो दिक्पाल थे। इन्हें पिताने सात्वतधर्मका उपदेश दिया (शान्ति० ३४८ । ३८)।

सुवर्मा–धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६७ । ९७; आदि० ११६ । ६)। भीमसेनद्वारा इसका वध (द्रोण० १२७ । ६६)।

सुवस्त्रा–एक पवित्र नदी, जिसका जल भारतवासी पीते हैं (भीष्म० ९ । २५)।

सुवाक्–एक ऋषि, जो अजातशत्रु युधिष्ठिरका बहुत आदर करते थे (वन० २६ । २४)।

सुवामा–एक पवित्र नदी, जिसका जल भारतवासी पीते हैं (भीष्म० ९ । २८)।

सुवास्तुक–एक राजा, जिसे पाण्डवोंकी ओरसे रणनिमन्त्रण भेजनेका निश्चय किया गया था (उद्योग० ४ । १३)।

सुवाह–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ६६)।

सुविशाला–स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६।२८)।

सुवीर–(१) एक राजा, जो क्रोधवशसंज्ञक दैत्यके अंशसे उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७ । ६०)।(२) एक क्षत्रियकुल, जिसमें अजविन्दु नामक कुलाङ्गार राजा उत्पन्न हुआ था (उद्योग० ७४ । १४)।(३) राजा द्युतिमान्के धर्मात्मा पुत्र, जो सम्पूर्ण लोकोंमें विख्यात थे। ये इन्द्रके समान पराक्रमी थे। इनके पुत्रका नाम दुर्जय था (अनु० २ । १०–१२)।

सुवेणा–एक नदी, जिसे मार्कण्डेयजीने बालमुकुन्दके उदरमें देखा था (वन० १८८ । १०४)।

सुव्रत–(१) एक अनन्तकीर्ति अमित तेजस्वी महात्मा, जिनका पवित्र आश्रम उत्तराखण्डमें है (वन० ९० । १२–१३)। (२) मित्रद्वारा स्कन्दको दिये गये दो पार्षदोंमेंसे एक। दूसरेका नाम सत्यसंध था (शल्य० ४५ । ४१)। (३) विधाताद्वारा स्कन्दको दिये गये दो पार्षदोंमेंसे एक। दूसरेका नाम सुकर्मा था (शल्य० ४५ । ४२)।

सुशर्मा–(१) वृद्धक्षेमका पुत्र एवं त्रिगर्तदेशका राजा, जो द्रौपदीके स्वयंवरमें गया था (आदि० १८५ । ९)। इसका दुर्योधनको मत्स्यदेशपर आक्रमण करनेकी सलाह देना (विराट० ३० । १–१३)। इसके द्वारा विराटनगरपर चढ़ाई (विराट० ३० । २६)। गोहरणके समय इसका युद्धमें राजा विराटको बंदी बनाना (विराट० ३३ । ७–९)। भीमसेनद्वारा जीते-जी इसका पकड़ा जाना (विराट० ३३ । २५–४८)। युधिष्ठिरकी कृपासे इसका (दासभावसे) छुटकारा (विराट० ३३ । ५८–६१)। पाण्डवोंकी ओरसे इसे रणनिमन्त्रण भेजनेका निश्चय किया गया था (उद्योग० ४ । २०)। प्रथम दिनके संग्राममें चेकितानके साथ इसका द्वन्द्वयुद्ध (भीष्म० ४५ । ६०–६२)। अर्जुनद्वारा पराजित होकर युद्धसे हट जाना (भीष्म० ८२ । १)। अर्जुनके साथ युद्ध (भीष्म० ८४ । ५३; भीष्म० १०२ । १०–१८)। अर्जुन और भीमसेनके साथ युद्ध (भीष्म० ११४ अध्याय)। धृष्टद्युम्नके साथ युद्ध (द्रोण० १४ । ३७–३९)। अर्जुनको मारनेके लिये भाइयोंसहित इसकी प्रतिज्ञा (द्रोण० १७ । ११–१८)। भाइयों और संशप्तकसेनासहित इसका शपथ खाना (द्रोण० १७ । २९–३६)। द्रोणाचार्यके मारे जानेपर युद्धस्थलसे भागना (द्रोण० १९३ । १८)। अर्जुनके साथ युद्ध करते समय संशप्तकोंद्वारा इसका अर्जुनको रथ और सारथिसहित पकड़वा लेना (कर्ण० ५३ । १३–१६)। अर्जुनद्वारा इसका मारा जाना (शल्य० २७ । ४६)।

महाभारतमें आये हुए सुशर्माके नाम–प्रस्थलाधिप, प्रस्थलाधिपति, रुक्मरथ, त्रैगर्त, त्रिगर्त, त्रिगर्ताधिपति, त्रिगर्तराट् और त्रिगर्तराज आदि।

(२) पाण्डवपक्षका एक पाञ्चालयोद्धा। चित्रसेनके साथ इसका द्वन्द्वयुद्ध (भीष्म० ११६ । २७–२९)। इसका भीष्मद्वारा पीड़ित होना तथा अर्जुनद्वारा इसकी रक्षा (भीष्म० ११८ । ४१-४२)। कर्णके साथ इसका युद्ध और उसके द्वारा वध (कर्ण० ५६ । ४४–४८)।

सुशोभना–मण्डूकराजकी कन्या। इसका इक्ष्वाकुवंशी राजा परीक्षित्के साथ मिलन और विवाह (शल्य० १९२ । ९–१२)। इसका अपनी शर्तके अनुसार बावलीमें लुप्त होना (शल्य० १९२ । २२)। पुनः इसकी राजासे भेंट (शल्य० १९२ । ३५)। इसके गर्भसे शल, दल, बल नामक तीन पुत्रोंकी उत्पत्ति (शल्य० १९२ । ३८)।

सुश्रवा–विदर्भराजकुमारी, पूरुवंशीय राजा जयत्सेनकी पत्नी, अवाचीनकी माता (आदि० ९५ । १७)।

सुश्रुत–विश्वामित्रके ब्रह्मवादी पुत्रोंमेंसे एक (अनु० ४ । ५५)।

सुषेण–(१) धृतराष्ट्रके कुलमें उत्पन्न एक नाग, जो जनमेजयके सर्प-सत्रमें दग्ध हो गया था (आदि० ५७ । १६)। (२) धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६७ । ९७; आदि० ११६ । ७)। भीमसेनद्वारा इसका वध (भीष्म० ६४ । ३४; द्रोण० १२७ । ६०)। (धृतराष्ट्रपुत्र 'सुषेण' का वध दो स्थलोंमें आया है; अतः अनुमान होता है कि उनके दो पुत्र इस एक ही नामसे प्रसिद्ध थे। उनका पृथक्-पृथक् और भी नाम रहा होगा, पर उस नामसे उनकी प्रसिद्धि नहीं थी।) (३) पूरुवंशीय महाराज अविक्षित्के पौत्र एवं परीक्षित्के पुत्र (आदि० ९४ । ५२–५५)। (४) जमदग्निपुत्र। माता रेणुका। मातृ-वधकी आज्ञा न माननेसे इन्हें पिताका शाप (वन० ११६ । १२)। परशुरामद्वारा शापसे इनका उद्धार (वन० ११६ । १७)। (५) वानरराज वालीके श्वशुर। ताराके पिता। इनका सहस्र कोटि (दस अरब) वानर-सेनाके साथ श्रीरामके पास उपस्थित होना (वन० २८३ । २)। (६) कर्णका पुत्र तथा चक्ररक्षक। नकुलके साथ इसका युद्ध (कर्ण० ४८ । १८, ३४–४०)। उत्तमौजाद्वारा इसका वध (कर्ण० ७५ । १३)। (७) कर्णका पुत्र। नकुलद्वारा इसका वध (शल्य० १० । ४९–५०)। (कर्णपुत्र 'सुषेण'का वध दो स्थानोंपर आया है; अतः यह अनुमान होता है कि कर्णके दो पुत्र इसी नामसे प्रसिद्ध थे।)

सुसंकुल–उत्तरभारतका एक जनपद; इसे और यहाँके राजाको अर्जुनने जीता था (सभा० २७ । ११)।

सुसामा–धनञ्जयगोत्रीय एक श्रेष्ठ ब्राह्मण, जो युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें सामगान करते थे (सभा० ३३ । ३४)।

सुस्थल–एक भारतीय जनपद और वहाँके निवासी (**सभा० १४ । १६**) ।

सुस्वर–गरुड़की प्रमुख संतानोंकी परम्परामें उत्पन्न एक पक्षी (**उद्योग० १०१ । १४**) ।

सुहनु–एक दानव, जो वरुणकी सभामें रहकर उनकी उपासना करता है (**सभा० ९ । १३**) ।

सुहवि–सम्राट् भरतके पौत्र एवं भुमन्युके पुत्र । इनकी माताका नाम 'पुष्करिणी' था (**आदि० ९४ । २४**) ।

सुहस्त–धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (**आदि० ६७ । १०२; आदि० ११६ । १०**) । भीमसेनद्वारा इसका वध (**द्रोण० १५७ । १९**) ।

सुहोत्र–(१) एक प्राचीन नरेश (**आदि० १ । २२६**) । ये सम्राट् भरतके पौत्र एवं भुमन्युके ज्येष्ठ पुत्र थे । इनकी माताका नाम 'पुष्करिणी' था (**आदि० ९४ । २४**) । इन्हें ही भूमण्डलका राज्य प्राप्त हुआ और इन्होंने राजसूय तथा अश्वमेध आदि अनेक यज्ञ किये थे । इनके राज्यकी विशेषता (**आदि० ९४ । २५–२९**) । इनके द्वारा इक्ष्वाकुकुलनन्दिनी सुवर्णाके गर्भसे अजमीढ़, सुमीढ़ तथा पुरुमीढ़की उत्पत्ति (**आदि० ९४ । ३०**) । इनकी दानशीलता और पराक्रम आदि गुणोंका विशेष वर्णन (**द्रोण० ५६ अध्याय**) । ये अतिथि-सत्कारके प्रेमी थे । इनके राज्यमें इन्द्रने एक वर्षतक सुवर्णकी वर्षा की थी । नदियाँ अपने जलके साथ सुवर्ण बहाया करती थीं । इन्द्रने बहुत-से सोनेके कछुए, केकड़े, नाकें, मगर और सूँस आदि उन नदियोंमें गिराये थे । राजाने सारी सुवर्ण-राशि ब्राह्मणोंमें बाँट दी थी (**शान्ति० २९ । २५–२९**) । (२) मद्रराज द्युतिमान्‌की पुत्री विजयाके गर्भसे पाण्डुकुमार सहदेवद्वारा उत्पन्न (**आदि० ९५ । ८०**) । (३) एक ऋषि, जो अजातशत्रु युधिष्ठिरका आदर करते थे (**वन० २६ । २४**) । (४) एक कुरुवंशी नरेश, इनका राजा उशीनरवंशी शिविके मार्गको रोकना । नारदजीके कहनेपर इनका शिविको मार्ग देना (**वन० १९४ । २, ७**) । (५) एक राक्षस, जो प्राचीनकालमें इस भूतलका शासक था, परंतु कालवश इसे छोड़कर चल बसा (**शान्ति० २२७ । ५१**) ।

सुहोता–सम्राट् भरतके पौत्र एवं भुमन्युके पुत्र । इनकी माताका नाम 'पुष्करिणी' था (**आदि० ९४ । २४**) ।

सुह्म–(१) पूर्व-भारतका एक प्राचीन जनपद, जिसपर महाराज पाण्डुने विजय पायी थी (**आदि० ११२ । २९**) । भीमसेनने भी पूर्व-दिग्विजयके समय इस जनपदको जीता था (**सभा० ३० । १६**) । (२) उत्तरभारतका एक पर्वतीय प्रदेश, जिसे अर्जुनने उत्तर-दिग्विजयके समय जीता था (**सभा० २७ । २१**) ।

सूक्ष्म–एक विख्यात दानव, जो कश्यपद्वारा दनुके गर्भसे उत्पन्न हुआ था (**आदि० ६५ । २५**) । यही इस भूतलपर राजा बृहद्रथके रूपमें उत्पन्न हुआ था (**आदि० ६७ । १८-१९**) ।

सूचीवक्त्र–स्कन्दका एक सैनिक (**शल्य० ४५ । ७२**) ।

सूत–एक ऋषि, जो शरशय्यापर पड़े हुए भीष्मजीको देखनेके लिये आये थे (**शान्ति० ४७ । १२**) । ये विश्वामित्रके ब्रह्मवादी पुत्र हैं (**अनु० ४ । ५७**) ।

सूपकर्ता–भाँति-भाँतिके व्यञ्जन बनानेवाला रसोइया (**विराट० २ । ९**) ।

सूर्य–(१) भगवान् सूर्य या सविता । दिवःपुत्र आदि बारह नाम विवस्वान् (सूर्य) के ही बोधक माने गये हैं । इनमें अन्तिम नाम रवि है । रविको 'मह्य' कहा गया है । उनके पुत्र देवभ्राट् हैं (**आदि० १ । ४२-४३**) । छलसे अमृतपान करते हुए राहुके गुप्त भेदका इनके द्वारा उद्घाटन हुआ (**आदि० १९ । ५**) । इसीसे इनके प्रति राहुकी शत्रुता हो गयी (**आदि० १९ । ९**) । राहुसे पीड़ित हो इनका जगत्‌के विनाशके लिये संकल्प हुआ (**आदि० २४ । १०**) । फिर देवताओंकी प्रेरणासे अरुणने इनका सारथ्य ग्रहण किया (**आदि० २४ । २०**) । कश्यपके द्वारा अदितिके गर्भसे प्रकट बारह आदित्य इन्हींके स्वरूप हैं (**आदि० ६५ । १४-१५**) । इनकी भार्या त्वष्टाकी परम सौभाग्यवती पुत्री 'संज्ञा' देवी हैं (**आदि० ६६ । ३५**) । इनके द्वारा कुन्तीके गर्भसे कर्णका जन्म (**आदि० ११० । १८**) । वसिष्ठजीद्वारा इनकी स्तुति (**आदि० १७२ । १८ के बाद दा० पाठ**) । वसिष्ठकी प्रार्थनापर इनके द्वारा अपनी पुत्री तपतीका संवरणके लिये समर्पण (**आदि० १७२ । २६**) । धौम्यद्वारा युधिष्ठिरको सूर्यदेवके एक सौ आठ नामोंका उपदेश, युधिष्ठिरद्वारा इनकी पूजा, उपासना और पूर्वोक्त नामोंका जप एवं स्तुति, इससे संतुष्ट होकर इनका उन्हें दर्शन एवं अन्नपात्र देना तथा चौदहवें वर्षमें राज्य प्राप्त होनेका आशीर्वाद प्रदान करना (**वन० ३ । १५—७४**) । धौम्यद्वारा इनकी गतिका वर्णन (**वन० १६३ । २८—४२**) । कर्णको स्वप्नमें दर्शन देकर इनका इन्द्रको कवच-कुण्डल न देनेका आदेश देना (**वन० ३०० । १०—२०; वन० ३०१ अध्याय**) । कर्णसे इन्द्रकी शक्ति लेकर ही कवच-कुण्डल देनेकी सम्मति देना (**वन० ३०२ । ११—१७**) । कुन्तीके आवाहनपर प्रकट होना और उनके साथ वार्तालाप करना (**वन० ३०६ । ८–२८**) । कुन्तीके उदरमें इनके द्वारा गर्भस्थापन (**वन० ३०७ । २८**) । द्रौपदीद्वारा भगवान् सूर्यकी उपासना और इनका द्रौपदीकी रक्षाके लिये अदृश्यरूपसे एक राक्षसको नियुक्त कर देना (**विराट०**

१५ । १९-२०)। जिधर सूर्यका उदय हो वही पूर्व दिशा है। पूर्व दिशा ही सूर्यमार्गका द्वार है (उद्योग० १०८। ३-५)। ये दूसरोंका अहित करनेवाले कृतघ्न असुरोंका क्रोधपूर्वक विनाश करते हैं (उद्योग० १०८।१६)। पूर्वकालमें भगवान् सूर्यने वेदोक्त विधिसे यज्ञ करके आचार्य कश्यपको दक्षिणारूपमें जिस दिशाका दान किया था, उसे दक्षिण दिशा कहते हैं (उद्योग० १०९ । १)। जिसमें दिनके पश्चात् सूर्यदेव अपनी किरणोंका विसर्जन करते हैं, वही पश्चिम दिशा है (उद्योग० ११० । २)। कर्णके प्रति कुन्तीके कथनका सूर्यद्वारा समर्थन (उद्योग० १४६ । १-२)। इनके विस्तार आदिका वर्णन (भीष्म० १२ । ४४-४५)। कर्ण और अर्जुनके द्वैरथयुद्धमें कर्णकी विजयके लिये इन्द्रसे इनका विवाद (कर्ण० ८७।५७-५९)। इनके द्वारा स्कन्दको पार्षद प्रदान (शल्य० ४५।३१)। महादेवजीने इन्हें तेजस्वी ग्रहोंका अधिपति बनाया (शान्ति० ११२ । ३१)। इन्होंने याज्ञवल्क्यको वेद-ज्ञानका वरदान दिया (शान्ति० ३१८ । ६-१२)। महापद्मनामक नागसे इनका उञ्छ एवं शिलवृत्तिकी महिमाका वर्णन करना (शान्ति० ३६३ अध्याय)। कार्तिकेयको सुन्दर कान्तिकी भेंट देना (अनु० ८६। २३)। महर्षि जमदग्निसे क्षमा-प्रार्थना करके उनकी शरणमें आना (अनु० ९५ । २० से ९६ । ७ तक)। जमदग्नि ऋषिको छाता और जूता देना (अनु० ९६ । १४-१५)। देवासुर-संग्राममें राहुद्वारा सूर्य और चन्द्रमाके घायल होनेसे सब ओर अन्धकार छा गया । देवतालोग असुरोंद्वारा मारे जाने लगे । उस समय देवताओंकी प्रार्थनासे अत्रिमुनिने चन्द्रमाका स्वरूप धारण किया और सूर्यदेवको तेजस्वी बनाया था (अनु० १५६ । २-१०)। कुन्तीने व्यासजीके समक्ष अपने गर्भसे सूर्यदेवताद्वारा कर्णकी उत्पत्तिका प्रसङ्ग सुनाया था (आश्रम० ३० अध्याय)। (२) एक विख्यात दानव, जो कश्यपद्वारा कद्रूके गर्भसे उत्पन्न हुआ था (आदि० ६५ । २६) । यह राजा दरदके रूपमें पृथ्वीपर पैदा हुआ था (आदि० ६७ । ५८)।

सूर्यतीर्थ–कुरुक्षेत्रकी सीमाके अन्तर्गत एक प्राचीन तीर्थ, जहाँ स्नान और देवता-पितरोंका अर्चन करके उपवास करनेवाला पुरुष अग्निष्टोम यज्ञका फल पाता और सूर्यलोकमें जाता है (वन० ८३ । ४८-४९)।

सूर्यदत्त–विराटके भाई (उद्योग० ५७ । ६) । इनका एक नाम शतानीक भी था (विराट० ३१ । ११-१२)। इन्होंने गोहरणके समय कवच धारण करके युद्धके लिये प्रस्थान किया था (विराट० ३१ । १५) । इन्होंने त्रिगर्तोंकी सेनापर आगेसे आक्रमण किया था और सौ त्रिगर्तोंको मारकर ये उनकी सेनामें घुस गये थे । (विराट० ३२ । १९-२१) । ये उदार रथी थे (उद्योग० १७१ । १५-१६)। द्रोणद्वारा इनके मारे जानेकी चर्चा (कर्ण० ६ । ३४)।

सूर्यध्वज–एक राजा, जो द्रौपदी-स्वयंवरमें उपस्थित था (आदि० १८५ । १०)।

सूर्यनेत्र–गरुड़की प्रमुख संतानोंकी परम्परामें उत्पन्न एक पक्षी (उद्योग० १०१ । १३)।

सूर्यमास–कौरवपक्षका योद्धा, जो अभिमन्युद्वारा मारा गया था (द्रोण० ४८ । १५-१६)।

सूर्यवर्चा–एक देवगन्धर्व, जो कश्यपद्वारा मुनिके गर्भसे उत्पन्न हुआ था (आदि० ६५ । ४२)। यह अर्जुनके जन्मोत्सव-में आया था (आदि० १२२ । ५५)।

सूर्यवर्मा–त्रिगर्तदेशका राजा, जो अश्वमेधीय अश्वके पीछे गये हुए अर्जुनके साथ युद्धमें परास्त हुआ था (आश्व० ७४ । ९-१३)। इसके भाईका नाम केतुवर्मा था, जो अर्जुनद्वारा मारा गया था (आश्व० ७४ । १४-१५)।

सूर्यश्री–एक सनातन विश्वेदेव (अनु० ९१ । ३३)।

सूर्यसावित्र–एक सनातन विश्वेदेव (अनु० ९१ । ३४)।

सूर्याक्ष–एक राजा, जो क्रथननामक असुरके अंशसे उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७ । ५७)।

सृंजय–(१) एक प्राचीन नरेश (आदि० १ । २२५)। ये यमसभामें रहकर सूर्यपुत्र यमकी उपासना करते हैं (सभा० ८ । १५)। श्वितिके पुत्र, जिनके पर्वत और नारद ये दोनों ऋषि मित्र थे (द्रोण० ५५ । ५)। इनका नारदको अपनी कन्या देना स्वीकार करना (द्रोण० ५५ । १३) । पुत्रकी कामनासे ब्राह्मणोंकी आराधना करना (द्रोण० ५५ । १८-१९)। नारदजीसे पुत्रप्राप्तिका वर माँगना (द्रोण० ५५। २२-२३)। इन्हें सुवर्णष्ठीवी नामक पुत्रकी प्राप्ति (द्रोण० ५५ । २४)। लुटेरोंद्वारा मारे जानेपर इनका पुत्रके शोकसे विलाप करना (द्रोण० ५५। ३३-३४)। इन्हें नारदजीका षोडशराजकीयोपाख्यान सुनाकर समझाना (द्रोण० ५५। ३६ से द्रोण० ७१। ३ तक)। नारदजीके समझानेसे इनका शोकरहित होना (द्रोण० ७१ । ४-५)। नारदजीके प्रभावसे इनके पुत्रका जीवित प्रकट होना (द्रोण० ७१ । ८)। भगवान् श्रीकृष्णका युधिष्ठिरको समझानेके लिये नारद-सृंजय-संवादको प्रस्तुत करके षोडशराजकीयोपाख्यान सुनाना (शान्ति० २९ अध्याय)। सृंजयका पर्वत मुनिसे पुत्र-प्राप्तिके लिये वर माँगना (शान्ति० ३१ । १५)।

इन्हें सुवर्णष्ठीवी नामक पुत्रकी प्राप्ति (शान्ति० ३१ । २३)। पुत्रकी मृत्युपर इनका विलाप (शान्ति० ३१ । ३७)। नारदजीकी कृपासे पुनः इनके पुत्रका जीवित होना (शान्ति० ३१ । ४२)। इन्होंने जीवनमें कभी मांस नहीं खाया था (अनु० ११५ । ६३)। (२) एक दक्षिणभारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ६३)।

सृष्टि–एक देवी, जो ब्रह्माकी सभामें रहकर उनकी उपासना करती हैं (सभा० ११ । ४७)।

सेक–एक देश, जिसे दक्षिण-दिग्विजयके अवसरपर सहदेवने जीता था (सभा० ३१ । ९)।

सेदुक–एक प्राचीन नरेश, जो नीतिके मार्गपर चलनेवाले तथा अस्त्र और उपास्त्रोंकी विद्यामें निपुण थे (वन० १९६ । २)। इन्होंने अपने पास आये हुए गुरुदक्षिणा-याचक ब्राह्मणको राजा वृषदर्भके पास भेज दिया था (वन० १९६ । ४–६)।

सेनजित्–(१) एक राजा, जिसे पाण्डवोंकी ओरसे रण-निमन्त्रण भेजनेका निश्चय किया गया था (उद्योग० ४ । १३)। (२) एक प्राचीन राजा। व्यासजीद्वारा इनके शोकयुक्त उद्गारोंका वर्णन (शान्ति० २५ । १४–२८)। पुत्रशोकसे दुखी हुए सेनजित्का एक ब्राह्मणके साथ संवाद (शान्ति० १७४ अध्याय)।

सेनानी (सेनापति)–धृतराष्ट्रका एक पुत्र (देखिये सेनापति)।

सेनापति (सेनानी)–धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६७ । ९७; आदि० ११६ । ९)। भीमसेनद्वारा इसका वध (भीष्म० ६४ । ३२)।

सेनामुख–सेनाविशेष। पत्तिकी तिगुनी संख्याको सेनामुख कहते हैं (आदि० २ । २०)।

सेनाविन्दु–(१) एक क्षत्रिय राजा, जो 'तुहुण्ड' नामक दैत्यके अंशसे उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७ । १९-२०)। यह द्रौपदीके स्वयंवरमें गया था (आदि० १८५ । ९)। अर्जुनने उत्तर-दिग्विजयके अवसरपर उलूकराजके साथ इसपर आक्रमण करके इसे राज्यच्युत किया था (सभा० २७ । १०)। पाण्डवोंकी ओरसे इसे रण-निमन्त्रण भेजनेका निश्चय किया गया था (उद्योग० ४ । १३)। इसका दूसरा नाम क्रोधहन्ता था। यह श्रीकृष्ण एवं भीमसेनके समान पराक्रमी माना जाता था (उद्योग० १७१ । २०-२१)। इसके रथके घोड़ोंका वर्णन (द्रोण० २३ । २५-२६)। इसके मरनेकी चर्चा (कर्ण० ६ । ३२)। (२) पाण्डवदलका एक पाञ्चाल योद्धा। कर्णद्वारा इसका वध (कर्ण० ४८ । १५)।

सेनोद्योगपर्व–उद्योगपर्वका एक अवान्तर पर्व (अध्याय १ से १९ तक)।

सेयन–विश्वामित्रके ब्रह्मवादी पुत्रोंमेंसे एक (अनु० ४ । ५८)।

सैन्धव–सिन्धदेशके निवासी या स्वामी (वन० ५१ । २५)।

सैन्धवायन–विश्वामित्रके ब्रह्मवादी पुत्रोंमेंसे एक (अनु० ४ । ५१)।

सैन्धवारण्य–एक प्राचीन तीर्थ (वन० ८९ । १५)।

सैन्यनिर्याणपर्व–उद्योगपर्वका एक अवान्तर पर्व (अध्याय १५१ से १५९ तक)।

सैरन्ध्री–विराटनगरमें अज्ञातवासके समय द्रौपदीका गुप्त नाम तथा सैरन्ध्रीके कार्य एवं स्वरूपका वर्णन (विराट० ३ । १८-१९) (विशेष देखिये द्रौपदी)।

सैसिरिन्ध्र–एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ५७)।

सोदर्यवान्–जरासंधका ध्वजा-पताकासे मण्डित दिव्य रथ, जिसे इन्द्रने उसके मारे जानेके बाद जोतकर अपने अधिकारमें कर लिया था। उसमें दो महारथी योद्धा एक साथ बैठकर युद्ध कर सकते थे। इसमें बारंबार शत्रुओंपर आघात करनेकी सुविधा थी। यह दर्शनीय तथा दुर्जय था। इसी रथपर आरूढ़ होकर इन्द्रने निन्यानबे दानवोंका वध किया था। इसके ध्वज आदिकी विशेषताका वर्णन (सभा० २४ । १२–२२)। यह रथ इन्द्रसे उपरिचर वसुको, वसुसे राजा बृहद्रथको और बृहद्रथसे जरासंधको प्राप्त हुआ था (सभा० २४ । ४८)।

सोम–(१) चन्द्रमा। इनके सत्ताईस स्त्रियाँ थीं (आदि० ६६ । १६)। सप्तर्षियोंद्वारा पृथ्वी-दोहनके समय ये बछड़ा बने थे (द्रोण० ६९ । २३)। (विशेष देखिये चन्द्रमा।) (२) भानु नामक अग्निकी तीसरी पत्नी निशाके गर्भसे उत्पन्न दो पुत्रोंमेंसे एक। इनके दूसरे भाईका नाम अग्नि है। इनकी बहिनका नाम रोहिणी है। इनके वैश्वानर आदि पाँच भाई और हैं (वन० २२१ । १५)।

सोमक–(१) सोमकवंशी क्षत्रियोंका समुदाय (आदि० १२२ । ४०)। (२) एक प्राचीन राजा, जो यम-सभामें रहकर सूर्यपुत्र यमकी उपासना करते हैं (सभा० ८ । ८)। ये पाञ्चालदेशके प्रसिद्ध दानी राजा थे। इनके पिताका नाम सहदेव था (वन० १२५ । २६)। सौ पुत्रोंकी प्राप्तिके लिये, अपने इकलौते पुत्रकी बलि देकर, इनके द्वारा यज्ञका सम्पादन और पुत्रोंकी प्राप्ति (वन० १२८ । २–७)। इनका अपने पुरोहितके साथ समान रूपसे नरक और पुण्य लोकोंका भोग भोगकर

छूटना (वन० १२८ । ११-१८)। इन्होंने गोदान करके स्वर्ग प्राप्त किया था (अनु० ७६ । २५-२७)। इन्होंने जीवनमें कभी मांस नहीं खाया था (अनु० ११५ । ६३)।

सोमकीर्ति-धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (आदि० ६७ । ९९; आदि० ११६ । ८)।

सोमगिरि-एक पर्वत, जो सायं-प्रातः स्मरण करने योग्य है (अनु० १६५ । ३२)।

सोमतीर्थ-(१) कुरुक्षेत्रकी सीमाके अन्तर्गत एक प्राचीन तीर्थ, जो जयन्तीमें है । वहाँ स्नान करनेसे मनुष्यको राजसूय यज्ञका फल प्राप्त होता है (वन० ८३ । १९)। (२) कुरुक्षेत्रकी सीमाके अन्तर्गत एक प्राचीन तीर्थ, जिसमें स्नान करनेसे सोमलोककी प्राप्ति होती है (वन० ८३ । ११४-११५, १८५)।

सोमदत्त-कुरुवंशी महाराज प्रतीपके पौत्र एवं बाह्लीकके पुत्र । इनके भूरि, भूरिश्रवा तथा शल नामके तीन पुत्र थे । ये अपने तीनों पुत्रोंके साथ द्रौपदीके स्वयंवरमें पधारे थे (आदि० १८५ । १४-१५)। युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें भी इनका शुभागमन हुआ था (सभा० ३४ । ८)। देवकीके स्वयंवरके समय शिनिके साथ इनका बाहुयुद्ध तथा शिनिका इन्हें पटककर लात मारना एवं इनकी चुटिया पकड़ना (द्रोण० १४४ । ११-१३)। शिनिके छोड़ देनेपर इनकी तपस्या और बदला लेनेके लिये वर एवं पुत्रकी प्राप्ति (द्रोण० १४४ । १५-१९)। सात्यकिके साथ युद्धमें इनका पराजित होना (द्रोण० १५६ । २१-२९)। सात्यकि एवं भीमसेनके प्रहारसे मूर्छित होना (द्रोण० १५७ । १०-११)। सात्यकिद्वारा इनका वध (द्रोण० १६२ । ३३)। इनके शरीरका दाह-संस्कार (स्त्री० २६ । ३३)। धृतराष्ट्रद्वारा इनका श्राद्ध (आश्रम० ११ । १७)। व्यासजीके आवाहन करनेपर कुरुक्षेत्रमें मरे हुए कौरव वीरोंके साथ ये भी गङ्गाजलसे प्रकट हुए थे (आश्रम० ३२ । १२)।

महाभारतमें आये हुए सोमदत्तके नाम-बाह्लीक, बाह्लीकात्मज, कौरव, कौरवेय, कौरव्य, कुरुपुङ्गव आदि।

सोमधेय-एक पूर्वभारतीय जनपद, जहाँके निवासियोंको भीमसेनने पराजित किया था (सभा० ३० । १०)।

सोमप-(१) स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ७०)। (२) एक सनातन विश्वेदेव (अनु० ९१ । ३४)।

सोमपद-एक तीर्थ, जहाँ माहेश्वर पदमें स्नान करनेसे अश्वमेध यज्ञका फल मिलता है (वन० ८४ । ११९)।

सोमपा-सात पितरोंमेंसे एक । इनकी चार मूर्त पितरोंमें गणना है । इनके तृप्त होनेसे सोम देवताकी तृप्ति होती है (सभा० ११ । ४७-४८)। ये सभी पितर ब्रह्माजीकी सभामें उपस्थित हो प्रसन्नतापूर्वक उनकी उपासना करते हैं (सभा० ११ । ४९)।

सोमवर्चा-(१) एक सनातन विश्वेदेव (अनु० ९१ । ३३)। (२) एक सनातन विश्वेदेव (अनु० ९१ । ३६)।

सोमश्रवा-एक तपस्यापरायण ऋषि, जो श्रुतश्रवाके पुत्र थे । इनको पुरोहित बनानेके लिये जनमेजयकी इनके पितासे प्रार्थना (आदि० ३ । १३-१५)। ये सर्पिणीके गर्भसे उत्पन्न, तपस्वी और स्वाध्यायशील थे । ब्राह्मणको अभीष्ट वस्तु देनेका इनका गुप्त नियम था । जनमेजय इनके नियमको स्वीकार करके इन्हें अपने साथ ले गये (आदि० ३ । १६-२०)।

सोमा-एक अप्सरा, जिसने अर्जुनके जन्मोत्सवमें आकर नृत्य किया था (आदि० १२२ । ६१)।

सोमाश्रम-एक तीर्थ, जिसकी यात्रा करनेसे मनुष्य इस भूतलपर पूजित होता है (वन० ८४ । १५७)।

सोमाश्रयायण-गङ्गातटवर्ती एक प्राचीन तीर्थ । एकचक्रासे पाञ्चाल जाते समय यहाँ पाण्डवोंका आगमन हुआ था । यहाँ स्त्रियोंके साथ चित्ररथ (गन्धर्व) जलक्रीड़ा करता था, जो अर्जुनसे पराजित हुआ (आदि० १६९ । ३-३३)।

सौगन्धिक-कुबेरका एक कानन, जिसकी सुगन्धका भार लेकर समीरण कुबेरसभामें धनाध्यक्षकी सेवा करता है (सभा० १० । ७)।

सौगन्धिकवन-एक तीर्थभूत वन, जहाँ ब्रह्मा आदि देवता, तपोधन ऋषि, सिद्ध, चारण, गन्धर्व, किन्नर और बड़े-बड़े नाग निवास करते हैं । वहाँ प्रवेश करते ही मानव सब पापोंसे मुक्त हो जाता है (वन० ८४ । ४-६)।

सौति-रोमहर्षण-पुत्र उग्रश्रवा, जिन्होंने नैमिषारण्यवासी शौनक आदि ऋषियोंको महाभारत श्रवण कराया था (आदि० १ । ५)।

सौदास-एक इक्ष्वाकुवंशी राजा (देखिये कल्माषपाद)।

सौप्तिक-महाभारतका एक प्रमुख पर्व ।

सौभ-राजा शाल्वका आकाशचारी विमान, जिसे सौभनगर भी कहा जाता था । भगवान् श्रीकृष्णने चक्रद्वारा इसका विध्वंस किया था (वन० २२ । ३३-३४)।

सौभद्र-दक्षिण समुद्रके निकटका एक तीर्थ । पाँच नारी-तीर्थोंमेंसे एक (आदि० २१५ । १-३)। वहाँ तीर्थयात्राके लिये अर्जुनका आगमन और शापवश ग्राह बनकर रहने-वाली वर्गा (अप्सरा) का उनके द्वारा उद्धार (आदि०

२१५ । ८–१४) । युधिष्ठिरका यहाँ आगमन और अर्जुनके पराक्रमको सुनकर प्रसन्नताका अनुभव करना (वन० ११८ । ४–७) ।

सौभपति–शाल्वराज (आदि० १०२ । ६१) । (देखिये शाल्व)

सौभर–पाञ्चजन्य नामक पितरोंके लिये उत्पन्न किये हुए पाँच पुत्रोंमेंसे एक । इनकी उत्पत्ति वर्चाके अंशसे हुई थी (वन० २२० । ६–९) ।

सौमदत्ति–सोमदत्तपुत्र भूरिश्रवा (विशेष देखिये भूरिश्रवा) ।

सौम्याक्षद्वीप–एक द्वीपका नाम (सभा० ३८ । २९ के बाद दा० पाठ) ।

सौरभेयी–एक अप्सरा, जो वर्गाकी सखी है (आदि० २१५ । २०) । यह ब्राह्मणके शापसे 'ग्राह' भावको प्राप्त हुई थी (आदि० २१५ । २३) । अर्जुनद्वारा इसका ग्राह-योनिसे उद्धार हुआ (आदि० २१६ । २१) । यह कुबेरकी सभामें उनकी सेवाके लिये उपस्थित होती है (सभा० १० । ११) ।

सौवीर–सिन्धु अथवा उससे लगा हुआ देश, जहाँका राजा विपुल अर्जुनके हाथसे मारा गया था (आदि० १३८ । २०–२२) ।

सौवीरी–राजा पूरुके पौत्र एवं प्रवीरके पुत्र मनस्युकी पत्नी (आदि० ९४ । ५–७) ।

सौशल्य–एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ४०) ।

सौश्रुति–त्रिगर्तराज सुशर्माका भाई, जिसका अर्जुनके साथ युद्ध और उनके द्वारा इसका वध (कर्ण० २७ । ३–२२) ।

सौहृद–एक दक्षिणभारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ५९) ।

स्कन्द–देव-सेनापति कुमार कार्तिकेय, जो खाण्डव-वनके युद्धमें शक्ति लेकर श्रीकृष्ण और अर्जुनसे युद्ध करनेके लिये आये थे (आदि० २२६ । ३३) । इनका प्राकट्य और स्कन्द नाम पड़नेका कारण (वन० २२५ । १६–१८) । इनका क्रौञ्च-पर्वतको विदीर्ण करना (वन० २२५ । ३३) । इनका मातृकाओंको माता स्वीकार करना (वन० २२६ । २४) । इनके शरीरसे विशाखकी उत्पत्ति (वन० २२७ । १६-१७) । पराजित हुए देवताओंसहित इन्द्रको इनका अभयदान देना (वन० २२७ । १८) । इनके पार्षदोंका वर्णन (वन० २२८ अध्याय) । इनका इन्द्रके साथ वार्तालाप, इन्द्रद्वारा देव-सेनापति-पदपर अभिषेक; देव-सेनाके साथ इनका विवाह (वन० २२९ अध्याय) । कृत्तिकाओंको माता स्वीकार करना (वन० २३० । ६) । मातृगणोंको माता स्वीकार करना (वन० २३० । १५) । माताओंको पीडाकारक ग्रह बननेका आदेश (वन० २३० । २२) । इनके द्वारा स्वाहा देवीका सत्कार (वन० २३१ । ५-६) । रुद्रदेवके साथ इनकी भद्रवट-यात्रा (वन० २३१ । ५४) । मारुतका स्कन्दकी रक्षाका भार स्वीकार करना (वन० २३१ । ५६) । इनके द्वारा महिषासुरका वध (वन० २३१ । ९६) । इनके प्रसिद्ध नामोंका वर्णन (वन० २३२ । ३–९) । इनकी उत्पत्तिकी कथा (शल्य० ४४ अध्याय) । इनका अभिषेक और इनके महापार्षदोंके नाम-रूप आदिका वर्णन (शल्य० ४५ अध्याय) । इनके द्वारा तारकासुर, महिषासुर, त्रिपाद और ह्रदोदरका वध (शल्य० ४६ । ७३–७५) । इनके द्वारा बाणासुरकी पराजय और क्रौञ्च-पर्वतका विदारण (शल्य० ४६ । ८३-८४) । इनके द्वारा तारकके पुत्र और उसके छोटे भाईका वध (शल्य० ४६ । ९०-९१) । भगवान् शंकरने इन्हें भूतोंका श्रेष्ठ राजा बनाया (शान्ति० १२२ । ३२) । हिमालयपर शक्ति गाड़ना और उसे उखाड़नेकी घोषणा करना (शान्ति० ३२७ । ९–११) । इनकी उत्पत्तिका वर्णन तथा इनके विभिन्न नामोंका कारण (अनु० ८५ । ६८–८२) । इनके द्वारा तारकासुरके वधका पुनर्वर्णन (अनु० ८५ । १६४) । इनकी उत्पत्तिके प्रसङ्गका पुनः उल्लेख (अनु० ८६ । ५–१४) । इनके देव-सेनापति-पदपर अभिषेकका दुबारा वर्णन (अनु० ८६ । २८) । इनके द्वारा तारकासुरके वधकी पुनः चर्चा (अनु० ८६ । २९) । इनका धर्म-सम्बन्धी रहस्य (अनु० १३४ । १–७) ।

स्कन्दग्रह–मातृकागण और पुरुषग्रहोंका समुदाय (वन० २३० । ४३-४४) ।

स्कन्दापस्मार–स्कन्दके शरीरसे उत्पन्न हुआ प्रसव-ग्रह (वन० २३० । २६) ।

स्कन्ध–धृतराष्ट्रके कुलमें उत्पन्न एक नाग, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें दग्ध हो गया (आदि० ५७ । १८) ।

स्कन्धाक्ष–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ६०) ।

स्तनकुण्ड–एक तीर्थ, जहाँ स्नान करनेसे वाजपेययज्ञका फल मिलता है (वन० ८४ । १५२) ।

स्तनपोषिक–एक दक्षिणभारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ६८) ।

स्तनवाल–एक दक्षिणभारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ६३) ।

स्तम्बमित्र–एक शार्ङ्गक, जो मन्दपाल ऋषिके द्वारा जरिता (पक्षिणी) के गर्भसे उत्पन्न हुआ था (आदि०

२२८ । १७)। अपने बड़े भाई जरितारिसे अपनी रक्षाके लिये कहना (आदि० २३१ । ४)। इसके द्वारा अग्निकी स्तुति (आदि० २३१ । १२–१४)। अग्निदेवकी कृपासे खाण्डववनदाहके समय इसकी रक्षा (आदि० २३१ । २१)।

स्तुभ–भानु नामक अग्निके छः पुत्रोंमेंसे एक (वन० २२१ । १४)।

स्त्रीपर्व–महाभारतका एक प्रधान पर्व।

स्त्रीराज्य–प्राचीन कालका एक राज्य, जहाँके नरेश युधिष्ठिरके राजसूय-यज्ञमें आये थे (वन० ५१ । २५)।

स्त्रीविलापपर्व–स्त्रीपर्वका एक अवान्तर पर्व (अध्याय १६ से २५ तक)।

स्थण्डिलेयु–पूरुके तीसरे पुत्र रौद्राश्वके द्वारा मिश्रकेशी नामक अप्सराके गर्भसे उत्पन्न एक महाधनुर्धर पुत्र (आदि० ९४ । ८–१०)।

स्थाणु–(१) ब्रह्माजीके मानसपुत्र, जो मरीचि आदि छः पुत्रोंसे भिन्न थे। ग्यारहों रुद्र इन्हींके पुत्र थे (आदि० ६६ । १–३)। (२) ब्रह्माजीके पौत्र एवं स्थाणुके पुत्र, जो ग्यारह रुद्रोंमेंसे एक हैं (आदि० ६६ । ३)। (३) एक महर्षि, जो इन्द्रकी सभामें विराजते थे (सभा० ७ । १७)।

स्थाणुवट–कुरुक्षेत्रकी सीमामें स्थित एक प्राचीन तीर्थ, वहाँ स्नान करके रातभर निवास करनेवाला मनुष्य रुद्रलोकमें जाता है (वन० ८३ । १७८-१७९)।

स्थाणुस्थान–महात्मा स्थाणुका मुञ्जवट नामक स्थान, जहाँ एक रात रहनेसे गणपति-पदकी प्राप्ति होती है (वन० ८३ । २२)। सरस्वतीके पूर्वतटपर जो वसिष्ठजीका आश्रम है, यहीं भगवान् स्थाणुने तप, सरस्वतीका पूजन और यज्ञ करके तीर्थकी स्थापना की थी, इसलिये यह स्थान स्थाणुतीर्थके नामसे प्रसिद्ध हुआ। यहीं देवताओंने स्कन्दका सेनापतिके पदपर अभिषेक किया था (शल्य० ४२ । ४–७)।

स्थिर–मेरुद्वारा स्कन्दको दिये गये दो पार्षदोंमेंसे एक। दूसरेका नाम अतिस्थिर था (शल्य० ४५ । ४८)।

स्थूण–विश्वामित्रके ब्रह्मवादी पुत्रोंमेंसे एक (अनु० ४ । ५१)।

स्थूणकर्ण–एक ऋषि, जो अजातशत्रु युधिष्ठिरका आदर करते थे (वन० २६ । २३)।

स्थूणाकर्ण–एक यक्ष, जिसने शिखण्डीको अपना पुरुषत्व दिया था। इसका शिखण्डिनीका मनोरथ पूर्ण करनेकी प्रतिज्ञा करना (उद्योग० १९१ । २४-२५)। इसके द्वारा शिखण्डिनीको पुरुषत्वका दान (उद्योग० १९२ । ९)। इसके लिये स्त्री ही बने रहनेके निमित्त कुबेरका शाप (उद्योग० १९२ । ४५–४७)। कुबेरद्वारा शापका अन्त बतलाया जाना (उद्योग० १९२ । ५०)।

स्थूलकेश–एक प्राचीन ऋषि, जो सम्पूर्ण प्राणियोंके हितमें लगे रहते थे (आदि० ८ । ५)। इनके द्वारा जंगलमें अनाथ पड़ी हुई 'प्रमद्वरा' का पालन-पोषण, नामकरण एवं महर्षि रुरुको वाग्दान (आदि० ८ । ९—१६)।

स्थूलवालुका–एक पवित्र नदी, जिसका जल भारतवासी पीते हैं (भीष्म० ९ । १५)।

स्थूलशिरा–एक ऋषि, जो राजा युधिष्ठिरकी सभामें विराजते थे (सभा० ४ । ११)। राजा युधिष्ठिरका इनके रमणीय आश्रमपर जाना (वन० १३५ । ८)। इनका हस्तिनापुरमें दूत बनकर जाते हुए श्रीकृष्णसे मार्गमें भेंट करना (उद्योग० ८३ । ६४ के बाद दा० पाठ)। ये पूर्वकालमें मेरुके पूर्वोत्तर भागमें तपस्या करते थे। इनकी वायुपर प्रसन्नता और वृक्षोंपर रुष्ट होकर उन्हें शाप देना (शान्ति० ३४२ । ५९)। ये शरशय्यापर पड़े हुए भीष्मजीको देखनेके लिये आये थे (अनु० २६ । ५)।

स्थूलाक्ष–एक दिव्य महर्षि, जो शरशय्यापर पड़े हुए भीष्मजीको देखनेके लिये आये थे (अनु० २६ । ७)।

स्मृति–स्मरणकी अधिष्ठात्री देवी, जो कुमार महासेनकी सेनाके आगे-आगे चलती थीं (शल्य० ४६ । ६४)।

स्यमन्तक–एक दिव्य मणि, जो भगवान् सूर्यने सत्राजित्को दी थी। सत्राजित् और प्रसेनजित्के यहाँ जो स्यमन्तकमणि थी, उससे प्रचुरमात्रामें सुवर्ण झरता रहता था (सभा० १४ । ६० के बाद दा० पाठ)। (कृतवर्माके षड्यन्त्रसे यह मणि चुरायी गयी और सत्राजित् मार डाले गये) सात्यकिने इस घटनाका भगवान् श्रीकृष्णको स्मरण कराया था (मौसल० ३ । २३)।

स्यूमरश्मि–एक प्राचीन ऋषि, जो गायके भीतर प्रविष्ट हुए थे। इनका कपिलके साथ संवाद तथा इनके द्वारा यज्ञकी अवश्यकर्तव्यताका निरूपण (शान्ति० २६८ अध्याय)। प्रवृत्ति-निवृत्ति मार्गके विषयमें स्यूमरश्मि और कपिलका संवाद (शान्ति० २६९ अध्याय)। इनके संवादमें–चारों आश्रमोंमें उत्तम साधनोंके द्वारा ब्रह्मकी प्राप्तिका कथन (शान्ति० २७० अध्याय)।

स्रज–एक सनातन विश्वेदेव (अनु० ९१ । ३३)।

स्रक्ष–एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ४५)।

स्वन–सत्यके पुत्र। ये रोगकारक अग्नि हैं। इनसे पीड़ित

होकर लोग वेदनासे स्वयं कराह उठते हैं। स्वन (चीत्कार) करनेमें कारण होनेसे इनका नाम 'स्वन' हुआ (वन० २१९। १५)।

स्वयंजात–विवाहिता पत्नीसे अपने द्वारा उत्पन्न पुत्र (बन्धु-दायाद) (आदि० ११९। ३३)।

स्वयंप्रभा–एक अप्सरा, जिन्होंने अर्जुनके स्वागतमें इन्द्र-भवनमें नृत्य किया था (वन० ४३। २९)।

स्वयंवर–(१) आदिपर्वका एक अवान्तर पर्व (अध्याय १८३ से १९१ तक)। (२) राजाओंकी एक सभा, जिसमें राजकन्याएँ स्वयं अपने लिये वरका वरण करती हैं (वन० ५४। ८)।

स्वराष्ट्र–एक भारतीय जनपद (भीष्म० ९। ४८)।

स्वरूप–एक दैत्य, जो वरुणकी सभामें रहकर उनकी उपासना करता है (सभा० ९। १४)।

स्वर्ग–पुण्य कर्मोंसे प्राप्त होनेवाला देवलोक, जिसमें इन्द्रलोक प्रधान है। राजा ययाति स्वर्गलोकमें जाकर देवभवनमें निवास करते थे। वहाँ देवताओं, साध्यगणों, मरुद्गणों तथा वसुओंने उनका बड़ा सत्कार किया था। वहाँ इन्द्रके साथ बातचीत करनेका उन्हें अवसर मिला था (आदि० ८७। १–३)। स्वर्गलोकमें जो रमणीय इन्द्रपुरी है, वह सौ योजन विस्तृत और एक हजार दरवाजोंसे सुशोभित है। वहाँ ययातिने एक हजार वर्षोंतक निवास किया था। वहीं नन्दनवन है, जहाँ इच्छानुसार रूप धारण करके अप्सराओंके साथ विहार करते हुए वे दस लाख वर्षोंतक रहे (आदि० ८९। १६, १९)। साधु पुरुष स्वर्गलोकके सात बड़े दरवाजे बतलाते हैं, जिनके द्वारा प्राणी इसमें प्रवेश करते हैं—तप, दान, शम, दम, लज्जा, सरलता और समस्त प्राणियोंके प्रति दया (आदि० ९०। २२)। स्वर्गमें जो इन्द्रकी सभा है, उसकी लंबाई डेढ़ सौ और चौड़ाई सौ योजनकी है। वह आकाशमें विचरनेवाली और इच्छाके अनुसार मन्द या तीव्र गतिसे चलनेवाली है। उसकी ऊँचाई भी पाँच योजन है। उसमें बुढ़ापा, शोक और थकावटका प्रवेश नहीं है। वहाँ भय नहीं है। वह मङ्गलमयी और दिव्य शोभासे सम्पन्न है। उसमें ठहरनेके लिये सुन्दर-सुन्दर महल और बैठनेके लिये उत्तमोत्तम सिंहासन बने हुए हैं। वह रमणीय सभा दिव्य वृक्षोंसे सुशोभित है। वहाँ इन्द्राणी शची और स्वर्गलोककी लक्ष्मीके साथ देवराज इन्द्र सर्वश्रेष्ठ सिंहासनपर विराजमान होते हैं। गन्धर्व और अप्सराएँ नृत्य, वाद्य एवं गीतोंद्वारा उनका मनो-रञ्जन करती हैं (सभा० ७ अध्याय)। स्वर्गमें राजसूय यज्ञके प्रभावसे राजा हरिश्चन्द्रको सर्वोत्तम सम्पत्ति प्राप्त हुई थी। उसे देखकर राजा पाण्डु चकित हो गये थे और उन्होंने नारदजीके द्वारा युधिष्ठिरके पास राजसूय यज्ञ करनेके लिये संदेश भेजा था (सभा० १२। २३–२६)। सत्यभामाने श्रीकृष्णके साथ स्वर्गमें जाकर वहाँका वैभव देखा था और वहाँ उन्हें देवमाता अदिति-का आशीर्वाद प्राप्त हुआ था (सभा० ३८। २९ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ८११-८१२)। अर्जुनने स्वर्गलोक-को जाते समय ऊपर जाकर सहस्रों अद्भुत विमान देखे। वहाँ न सूर्य प्रकाशित होते हैं न चन्द्रमा। अग्निकी प्रभा भी वहाँ काम नहीं देती है। स्वर्गके निवासी अपने पुण्य कर्मोंसे प्राप्त हुई अपनी ही प्रभासे प्रकाशित होते हैं। स्वर्गद्वारपर अर्जुनको सुन्दर विजयी गजराज ऐरावत खड़ा दिखायी दिया, जिसके चार दाँत बाहर निकले थे (वन० ४२। ४०)। सिद्धों और चारणोंसे सेवित रमणीय अमरावतीपुरी सभी ऋतुओंके फूलों और पुण्यमय वृक्षोंसे सुशोभित है। अप्सराओंसे सेवित नन्दनवनकी शोभा अद्भुत है, जो तपस्या और अग्निहोत्रसे दूर रहे हैं, जिन्होंने युद्धमें पीठ दिखा दी है, वैसे लोग पुण्यात्माओंके उस लोकका दर्शन नहीं कर सकते हैं। जो यज्ञ, व्रत, वेदाध्ययन, तीर्थस्नान और दान आदि सत्कर्मोंसे वञ्चित हैं, शराबी, गुरुपत्नीगामी, मांसाहारी तथा दुरात्मा हैं, वे भी उस दिव्यलोकका दर्शन नहीं पा सकते। देवताओं, सिद्धों और महर्षियोंने वहाँ अर्जुनका स्वागत-सत्कार किया। अप्सराओंने नृत्य और गीतोंद्वारा उनका मनोरञ्जन किया (वन० ४३ अध्याय)। जिसे स्वर्लोक कहते हैं, वह यहाँसे बहुत ऊपर है। वहाँ पहुँचनेके लिये ऊपरको जाया जाता है; इसलिये उसका एक नाम ऊर्ध्वग भी है। वहाँ जानेके लिये जो मार्ग है, वह बहुत उत्तम है। वहाँके लोग सदा विमानोंपर विचरा करते हैं। जिन्होंने तपस्या नहीं की है, बड़े-बड़े यज्ञोंद्वारा यजन नहीं किया है तथा जो असत्यवादी एवं नास्तिक हैं, वे उस लोकमें नहीं जा पाते हैं। धर्मात्मा, मनको वशमें रखनेवाले, शम-दमसे सम्पन्न, ईर्ष्यारहित, दान-धर्मपरायण तथा युद्धकलामें प्रसिद्ध शूरवीर मनुष्य ही वहाँ सब धर्मोंमें श्रेष्ठ इन्द्रियसंयम और मनोनिग्रहरूपी योगको अपनाकर सत्पुरुषोंद्वारा सेवित पुण्यवानोंके लोकोंमें जाते हैं। वहाँ देवता, साध्य, विश्वेदेव, महर्षिगण, याम, धाम, गन्धर्व तथा अप्सरा–इन सब देवसमूहोंके अलग-अलग अनेक प्रकाशमान लोक हैं, जो इच्छानुसार प्राप्त होनेवाले भोगोंसे सम्पन्न, तेजस्वी तथा मङ्गलकारी हैं। स्वर्गमें तैंतीस हजार योजनका सुवर्णमय एक बहुत ऊँचा पर्वत है, जो मेरुगिरिके नामसे विख्यात है। वहीं देवताओंके

नन्दन आदि पवित्र उद्यान तथा पुण्यात्मा पुरुषोंके विहारस्थल हैं। वहाँ किसीको भूख-प्यास नहीं लगती, मनमें कभी ग्लानि नहीं होती, गर्मी और जाड़ेका कष्ट भी नहीं होता और न कोई भय ही होता है। वहाँ कोई वस्तु ऐसी नहीं है, जो घृणा करनेयोग्य एवं अशुभ हो। वहाँ सब ओर मनोरम सुगन्ध, सुखदायक स्पर्श तथा कानों और मनको प्रिय लगनेवाले मधुर शब्द सुननेमें आते हैं। स्वर्गलोकमें न शोक होता है, न बुढ़ापा। वहाँ थकावट तथा करुणाजनक विलाप भी श्रवणगोचर नहीं होते। स्वर्गलोक ऐसा ही है। अपने सत्कर्मोंके फलरूप ही उसकी प्राप्ति होती है। मनुष्य वहाँ अपने किये हुए पुण्यकर्मोंसे ही रह पाते हैं। स्वर्गवासियोंके शरीरमें तैजस तत्त्वकी प्रधानता होती है। वे शरीर पुण्यकर्मोंसे ही उपलब्ध होते हैं। माता-पिताके रजोवीर्यसे उनकी उत्पत्ति नहीं होती है। उन शरीरोंमें कभी पसीना नहीं निकलता, दुर्गन्ध नहीं आती तथा मल-मूत्रका भी अभाव होता है। उनके कपड़ोंमें कभी मैल नहीं बैठती है। स्वर्गवासियोंकी जो दिव्य (दिव्य कुसुमोंकी) मालाएँ होती हैं, वे कभी कुम्हलाती नहीं हैं। उनसे निरन्तर दिव्य सुगन्ध फैलती रहती है तथा वे देखनेमें भी बड़ी मनोरम होती हैं। स्वर्गके सभी निवासी ऐसे ही विमानोंसे सम्पन्न होते हैं। जो अपने सत्कर्मोंद्वारा स्वर्गलोकपर विजय पा चुके हैं, वे वहाँ बड़े सुखसे जीवन बिताते हैं। उनमें किसीके प्रति ईर्ष्या नहीं होती, वे कभी शोक तथा थकावटका अनुभव नहीं करते एवं मोह तथा मात्सर्य (द्वेषभाव) से सदा दूर रहते हैं। अपने किये हुए सत्कर्मोंका जो फल होता है, वही स्वर्गमें भोगा जाता है। वहाँ कोई नवीन कर्म नहीं किया जाता। अपना पुण्यरूप मूलधन गँवानेसे ही वहाँके भोग प्राप्त होते हैं (वन० २६१। २—१६, २८)। युधिष्ठिरके द्वारा स्वर्गलोकका दर्शन (स्वर्गा० ४ अध्याय)।

स्वर्गतीर्थ-एक तीर्थ, जो नैमिषारण्यमें है। यहाँ एक मासतक पितरोंको जलाञ्जलि देनेसे पुरुषमेध यज्ञका फल प्राप्त होता है (अनु० २५। ३३)।

स्वर्गद्वार-कुरुक्षेत्रकी सीमामें स्थित एक प्राचीन तीर्थ, जिसके सेवनसे मनुष्य स्वर्गलोक पाता और ब्रह्मलोकमें जाता है (वन० ८३। १६७)।

स्वर्गमार्गतीर्थ-एक तीर्थ, जहाँ स्नान करनेसे मनुष्य ब्रह्मलोकमें जाता है (अनु० २५। ६१)।

स्वर्गारोहणपर्व-महाभारतका एक प्रमुख पर्व।

स्वर्णग्रीव-स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५। ७५)।

स्वर्णविन्दु-एक तीर्थ, जिसमें स्नान करनेसे मनुष्य स्वर्गमें जाता है (अनु० २५। ९)।

स्वर्भानवी-स्वर्भानुकी पुत्री, पुरूरवाके पुत्र आयुकी पत्नी। नहुष आदि पाँच पुत्रोंकी माता (आदि० ७५। २६)।

स्वर्भानु-एक विख्यात दानव, जो दनुके गर्भसे कश्यपद्वारा उत्पन्न हुआ था (आदि० ६५। २४)। यह महान् असुर उग्रसेनके रूपमें पृथ्वीपर उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७। १२-१३)। यह प्राचीनकालमें पृथ्वीका शासक था; परंतु कालवश इसे छोड़कर चल बसा (शान्ति० २२७। ५०)।

स्वस्तिक-(१) गिरिव्रजनिवासी एक नाग (सभा० २१। ९)। यह वरुण सभामें रहकर उनकी उपासना करता है (सभा० ९। ९)। (२) स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५। ६५)।

स्वस्तिपुरतीर्थ-कुरुक्षेत्रकी सीमामें स्थित एक प्राचीन तीर्थ, जिसकी परिक्रमा करनेसे सहस्र गोदानका फल मिलता है (वन० ८३। १७४)।

स्वस्तिमती-स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका(शल्य०४६। १२)।

स्वस्त्यात्रेय-एक प्राचीन महर्षि, जो इन्द्रकी सभामें विराजते हैं (सभा० ७। १० के बाद दा० पाठ)। ये दक्षिण दिशामें निवास करनेवाले ऋषि हैं (शान्ति० २०८। २८)।

स्वाती-सत्ताईस नक्षत्रोंमेंसे एक, जो इस नक्षत्रमें अपनी अधिक-से-अधिक प्रिय वस्तुका दान करता है, वह मनुष्य शुभलोकोंमें जाता है तथा महान् यशका भागी होता है (अनु० ६४। १८)। इस नक्षत्रके योगमें पितरोंकी पूजा करनेवाला वाणिज्यसे जीवन निर्वाह करता है (अनु० ८९। ७)। चान्द्रव्रतमें स्वाती नक्षत्रमें चन्द्रमाके दाँतों-की भावना करके उनकी पूजा करनेका विधान है (अनु० ११०। ७)।

स्वायम्भुवमनु-इनके द्वारा ऋषियोंको धर्मका उपदेश (शान्ति० ३६ अध्याय)। प्रजाओंका इन्हें राजा स्वीकार करना (शान्ति० ६८। २३—२९)। इनका राजा होकर शत्रुओंका दमन करना (शान्ति० ६८। ३१-३२)।

स्वारोचिष-एक मनु, जिन्हें ब्रह्माजीने सात्वत-धर्मका उपदेश दिया था। इन्होंने अपने पुत्र शङ्खपदको इस धर्मकी शिक्षा दी थी (शान्ति० ३४८। ३६-३७)।

स्वाहा-(१) अग्निकी पत्नी (आदि० १९८। ५)। ये ब्रह्माजीकी सभामें उनकी सेवाके लिये उपस्थित होती हैं (सभा० ११। ४२)। इनका मुनि-पत्नियोंके रूपमें अग्निके साथ समागम (वन० २२५। ७)। गरुडी-रूप धारण करना (वन० २२५। ९)। इनका छः बार समागम करके अग्निके वीर्यको सरकंडोंमें गिराना (वन० २२५। १५)। इनका अग्निदेवके साथ सदा रहनेके लिये स्कन्दके सम्मुख अपना अभिप्राय प्रकट करना (वन० २३१। ३-४)। स्कन्दके अभिषेकके समय स्वाहा देवी भी उपस्थित थीं (शल्य० ४५। १३)। (२) बृहस्पतिकी पुत्री, जो अधिक क्रोधवाली है। यह सम्पूर्ण भूतोंमें निवास करती है। इसका पुत्र 'काम' नामक अग्नि है (वन० २१९। २२-२३)।

स्विष्टकृत-(१) प्रत्येक गृह्य कर्ममें अग्निके लिये सदा घीकी ऐसी धारा दी जाती है, जिसका प्रवाह उत्तराभि-

मुख हो; इसीलिये वह अभीष्ट-साधक होती है, अतएव इस उत्कृष्ट अग्निका नाम 'स्विष्टकृत्' है। इसे बृहस्पतिका छठा पुत्र समझना चाहिये (वन० २१९ । २१)। (२) मनुके द्वितीय पुत्र विश्वपति नामक अग्नि, मनुकी कन्या रोहिणी भी स्विष्टकृत् मानी गयी है। इन्हींके प्रभावसे हविष्यकी सुन्दरतासे आहुति-क्रिया सम्पन्न होती है; अतः वे 'स्विष्टकृत्' कहलाते हैं (वन० २२१ । १७-१८)।

(ह)

हंस-(१) एक श्रेष्ठ पक्षी, कश्यपपत्नी ताम्रा देवीकी पुत्री धृतराष्ट्रीसे हंस उत्पन्न हुए थे (आदि० ६६ । ५६-५८)। सुवर्णमय पंखसे भूषित एक हंसने नल और दमयन्तीके पास एक दूसरेके संदेशको पहुँचाकर उनमें अनुराग उत्पन्न किया था (वन० ५३ । १९-३२)। सप्तर्षियोंने हंसरूप धारण करके भीष्मके निकट आकर उन्हें दक्षिणायनमें प्राणत्याग करनेसे रोका था (भीष्म० ११९ । १०२)। एक हंस और काकका उपाख्यान (कर्ण० ४१ । १४—७०)। (२) जरासंधका एक मन्त्री, जो डिम्भकका भाई था। इसे किसी भी अस्त्र-शस्त्रसे मारे न जानेका देवताओंद्वारा वर प्राप्त था (सभा० १४ । ३७)। यह अपने भाई डिम्भककी मृत्युका समाचार सुनकर यमुनाजीमें कूद पड़ा और मर गया (सभा० १४ । ४२)। जरासंधको सलाह देनेके लिये ये ही दोनों भाई नीति-निपुण मन्त्री थे (सभा० १९ । २६)। भीमसेनके साथ युद्धका निश्चय हो जानेपर इसने अपने इन दोनों स्वर्गीय मन्त्रियों—कौशिक और चित्रसेनका—हंस और डिम्भकका स्मरण किया था (सभा० २२ । ३२)। (३) जरासंधकी सेनाका एक राजा, जो सत्रहवीं बारके युद्धमें बलरामजीद्वारा मारा गया था (सभा० १४ । ४०)।

हंसकायन-क्षत्रियोंकी एक जाति, इस जातिके उत्तम कुलोत्पन्न क्षत्रिय भेंट लेकर युधिष्ठिरके राजसूययज्ञमें आये थे (सभा० ५२ । १४)।

हंसकूट-एक पर्वत, यहाँ पत्नियोंसहित पाण्डुका आगमन हुआ था। इसे लाँघकर वे शतशृङ्ग पर्वतपर पहुँचे थे (आदि० ११८ । ५०)। इस पर्वतका शिखर श्रीकृष्णने द्वारकापुरमें स्थापित किया था, जो साठ ताड़के बराबर ऊँचा और आधा योजन चौड़ा था (सभा० ३८ । २९ के बाद दा० पा०, पृष्ठ ८१६)।

हंसचूड़-एक यक्ष, जो कुबेरकी सेवाके लिये उनकी सभामें उपस्थित रहता है (सभा० १० । १७)।

हंसज-स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ६८)।

हंसपथ-एक देश, जहाँके निवासी सैनिक द्रोणनिर्मित गरुड़-व्यूहके ग्रीवाभागमें खड़े थे (द्रोण० २० । ७)।

हंसप्रपतनतीर्थ-प्रयागमें स्थित एक त्रिलोकविख्यात तीर्थ, जो गङ्गाके तटपर अवस्थित है (वन० ८५ । ८७)।

हंसवक्त्र-स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ७५)।

हंसिका-सुरभिकी पुत्री, जो दक्षिण दिशाको धारण करनेवाली है (उद्योग० १०२ । ७-८)।

हंसी-राजर्षि भगीरथकी एक यशस्विनी कन्या, जिसका हाथ उन्होंने कौत्स ऋषिके हाथमें दिया था (अनु० १३७ । २६)।

हनुमान्-(केसरीकी पत्नी अञ्जना देवीके गर्भसे वायुद्वारा उत्पन्न महावीर मारुति) इनका कदलीवनमें भीमसेनका मार्ग रोककर लेटना (वन० १४६ । ६६-६७)। इनका भीमसेनके साथ संवाद (वन० अध्याय १४७ से १५० तक)। इनका भीमसेनको संक्षिप्तमें श्रीराम-चरित्र सुनाना (वन० १४८ अध्याय)। इनके द्वारा चारों युगोंके धर्मोंका वर्णन (वन० १४९ अध्याय)। इनका भीमसेनको अपना विशाल रूप दिखाना (वन० १५० । ३-४)। इनके द्वारा चारों वर्णोंके धर्मका प्रतिपादन (वन० १५० । ३०—३६)। इनके द्वारा राजधर्मका वर्णन (वन० १५० । ३७—४९)। इनका भीमसेनके सिंहनादको अपनी गर्जनासे बढ़ाने तथा अर्जुनकी ध्वजापर स्थित होकर अपनी भीषण गर्जनाद्वारा शत्रुओंको डरानेकी बात कहकर भीमसेनको आश्वासन दे अन्तर्धान होना (वन० १५१ । १६—१९)। इनका लंकासे लौटकर श्रीरामसे सीताका समाचार बताना (वन० २८२ । १७—५७)। इनके द्वारा धूम्राक्षका वध (वन० २८६ । १४)। इनके द्वारा वज्रवेगका वध (वन० २८७ । २६)। इनका दूत बनकर भरतके पास जाना और लौटकर श्रीरामको इसकी सूचना देना (वन० २९१ । ६१-६२)।

हन्यमान-एक दक्षिणभारतीय जनपद (भीष्म० ९ । ६९)।

हयग्रीव-(१) नरकासुरके राज्यकी रक्षा करनेवाले चार असुरोंमेंसे एक, श्रीकृष्णद्वारा ही इसका वध होनेवाला था (सभा० ३८ । २९ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ८०५)। श्रीकृष्णद्वारा हयग्रीवके मारे जानेकी चर्चा (उद्योग० १३० । ५०)। (२) विदेह-वंशका एक कुलाङ्गार राजा (उद्योग० ७४ । १५)। (३) एक प्राचीन राजर्षि, जो शत्रुओंपर विजय पा चुके थे, किंतु पीछे असहाय होनेके कारण मारे गये। इन्होंने युद्धसे उत्तम कीर्ति पायी और अब स्वर्गमें आनन्द भोगते हैं। इनका विशेष वर्णन (शान्ति० २४ । २३—३४)।

हयज्ञान-अश्वसंचालनकी एक विद्या, जिससे घोड़ोंकी गति बहुत अधिक बढ़ जाती है तथा उनके गुण-दोष भी जाने जाते हैं (वन० ७७ । १७)।

हयशिरा (हयग्रीव)—भगवान्‌का एक अवतार। इनका विशेष वर्णन (शान्ति० ३४७ अध्याय)।

हर-(१) एक विख्यात दानव, जो दनुके गर्भसे कश्यपद्वारा उत्पन्न हुआ था (आदि० ६५ । २५)। यह राजा सुबाहुके रूपमें पृथ्वीपर पैदा हुआ था (आदि० ६७ । २३-२४)। (२) महादेवजी, ये स्कन्दके अभिषेकमें पधारे थे (शल्य० ४५ । १०)। 'हर'

ग्यारह रुद्रोंमेंसे एक हैं (शान्ति० २०८ । १९) ।

हरणाहरणपर्व-आदिपर्वका एक अवान्तर पर्व (अध्याय २२०) ।

हरि-(१) रावणकी सेवामें रहनेवाले पिशाच तथा अधम राक्षसोंका एक दल, जिसने वानरोंकी सेनापर धावा किया था (वन० २८५ । १-२) । (२) गरुड़के महाबली तथा यशस्वी वंशजोंमेंसे एक (उद्योग० १०१ । १३) । (३) घोड़ोंका एक भेद, जिसके गर्दनके बड़े-बड़े बाल और शरीरके रोयें सुनहरे रंगके हों, जो रंगमें रेशमी पीताम्बरके समान जान पड़ता हो, वह घोड़ा हरि कहलाता है (द्रोण० २३ । १३) । (४) राजा अकम्पनका पुत्र, जो बलमें भगवान् नारायणके समान, अस्त्रविद्यामें पारङ्गत, मेधावी, श्रीसम्पन्न तथा युद्धमें इन्द्रके तुल्य पराक्रमी था । यह युद्धक्षेत्रमें शत्रुओंके हाथ मारा गया था (द्रोण० ५२ । २७-२९) । इसकी मृत्युका वर्णन (शान्ति० २५६ । ८) । (५) एक असुर, जो तारकाक्षका महाबली वीर पुत्र था । इसने तपस्याद्वारा ब्रह्माको प्रसन्न करके उनसे वरदान पाकर तीनों पुरोंमें मृत-संजीवनी बावलीका निर्माण किया था (कर्ण० ३३ । २७-३०) । (६) पाण्डवपक्षका एक योद्धा, जो कर्णद्वारा मारा गया था (कर्ण० ५६ । ४९-५०) । (७) स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ६१) । (८) श्रीकृष्णका एक नाम तथा इस नामकी निरुक्ति (शान्ति० ३४२ । ६८) ।

हरिण-(१) ऐरावतकुलोत्पन्न एक नाग, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें दग्ध हो गया था (आदि० ५७ । ११-१२) । (२) बिडालोपाख्यानमें आये हुए नेवलेका नाम (शान्ति० १३८ । ३१) ।

हरिणाश्व-एक प्राचीन नरेश, जिन्हें महाराज रघुसे खड्गकी प्राप्ति हुई थी और उन्होंने वह खड्ग शुनकको प्रदान किया था (शान्ति० १६६ । ७८-७९) ।

हरिताल-एक पर्वतीय धातु, जो संध्याकालीन बादलोंके समान लाल रंगकी होती है (वन० १५८ । ९४) ।

हरिद्रक-कश्यपवंशमें उत्पन्न एक प्रमुख नागराज (आदि० ३५ । १२) ।

हरिपिण्डा-स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (शल्य० ४६ । २४) ।

हरिमेधा-एक प्राचीन राजर्षि, जिनके यज्ञके समान जनमेजयका यज्ञ बताया गया है (आदि० ५५ । ३) । इनकी कन्याका नाम ध्वजवन्ती था, जो पश्चिम दिशामें निवास करती थी (उद्योग० ११० १३) ।

हरिबभ्रु-एक जितात्मा एवं जितेन्द्रिय मुनि, जो युधिष्ठिरकी सभामें विराजते थे (सभा० ४ । १६) ।

हरिवर्ष-हेमकूटपर्वतके उत्तरमें विद्यमान एक वर्ष, जहाँ उत्तरदिग्विजयके अवसरपर अर्जुन गये थे और उसे अपने अधीन करके बहुत-सा रत्न प्राप्त किये थे (सभा० २८ । ६ के बाद दा० पाठ) ।

हरिश्चन्द्र-इक्ष्वाकुवंशी राजा त्रिशङ्कुके पुत्र । इनकी माताका नाम सत्यवती था (सभा० १२ । १० के बाद दा० पाठ) । ये इन्द्रसभामें सम्मानपूर्वक विराजते हैं (सभा० ७ । १३) । ये बड़े बलवान् और समस्त भूपालोंके सम्राट् थे । भूमण्डलके सभी नरेश इनकी आज्ञाका पालन करनेके लिये सिर झुकाये खड़े रहते थे । इन्होंने अपने एकमात्र जैत्र नामक रथपर चढ़कर अपने शस्त्रोंके प्रतापसे सातों द्वीपोंपर विजय प्राप्त कर ली थी । इन्होंने राजसूय नामक यज्ञका अनुष्ठान किया था । इन्होंने याचकोंके माँगनेपर उनकी माँगसे पाँचगुना अधिक धन दान किया था । ब्राह्मणोंको धन-रत्न देकर संतुष्ट किया था । इसीलिये ये अन्य राजाओंकी अपेक्षा अधिक तेजस्वी और यशस्वी हुए हैं तथा अधिक सम्मानपूर्वक इन्द्रसभामें विराजमान होते हैं (सभा० १२ । ११-१८) । इनकी सम्पत्तिको देखकर चकित हो स्वर्गीय राजा पाण्डुने नारदजीद्वारा युधिष्ठिरके पास राजसूययज्ञ करनेका संदेश भेजा था (सभा० १२ । २३-२६) । इनके द्वारा मांस-भक्षणका निषेध (अनु० ११५ । ६१) । ये सायं-प्रातःस्मरणीय नरेश हैं (अनु० १६५ । ५२) ।

हरिश्रावा-भारतवर्षकी एक नदी, जिसका जल भारतवासी पीते हैं (भीष्म० ९ । २८) ।

हरी-क्रोधवशाकी पुत्री, जिसने वेगवान् घोड़ों एवं वानरोंको जन्म दिया तथा गायके समान पूँछवाले लंगूर भी इसीके पुत्र कहे गये हैं (आदि० ६६ । ६०, ६४) ।

हर्यश्व-(१) अयोध्याके राजा, जो महापराक्रमी, चतुरङ्गिणी सेनासे सम्पन्न, कोष-धन-धान्य तथा सैनिक शक्तिसे समृद्ध थे । प्रजा इन्हें बहुत प्रिय थी । ब्राह्मणोंपर इनका प्रेम था । ये प्रजावर्गके हित एवं संतानकी कामना रखते थे और शान्तभावसे तपस्यामें संलग्न रहते थे (उद्योग० ११५ । १८-१९) । इनके पास ययातिकन्यासहित गालवका आगमन (उद्योग० ११५ । २०-२१) । गालवको शुल्करूपमें दो सौ श्यामकर्ण घोड़े देकर इनका ययातिकन्या माधवीको एक संतान पैदा करनेके लिये पत्नी बनाना तथा माधवीके गर्भसे वसुमना नामक पुत्रकी प्राप्ति (उद्योग० ११६ । १६-१७) । पुत्रोत्पत्तिके बाद पुनः माधवीको गालव मुनिको वापस देना (उद्योग० ११६ । २०) । इन्होंने जीवनमें कभी मांस नहीं खाया था (अनु० ११५ । ६७) । (२) काशिराज सुदेवके पिता, जो वीतहव्यके पुत्रोंद्वारा मारे गये थे (अनु० ३० । १०-११) ।

हर्ष-धर्मके तीन श्रेष्ठ पुत्रोंमेंसे एक, शेष दोके नाम शम और काम हैं । हर्षकी पत्नीका नाम नन्दा है (आदि० ६६ । ३२-३३) ।

हलधर-बलरामजीका एक नाम (देखिये बलदेव) ।

हलिक-कश्यपवंशमें उत्पन्न एक प्रमुख नागराज (आदि० ३५ । १५) ।

हलिमा–शिशुकी सप्त मातृकाओंमेंसे एक (वन० २२८ । १०)।

हलीमक–वासुकिकुलोत्पन्न एक नाग, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें जल मरा था (आदि० ५७ । ५)।

हवन–ग्यारह रुद्रोंमेंसे एक (अनु० १५० । १३)।

हविघ्न–एक प्राचीन नरेश, जिनका नाम सायं-प्रातः स्मरणीय है (अनु० १६५ । ५८)।

हविर्धामा–मनुवंशी अन्तर्धामाके पुत्र । इनका पुत्र प्राचीन-बर्हिके नामसे उत्पन्न होगा (अनु० १४७ । २४)।

हविःश्रवा–सोमवंशीय महाराज कुरुके वंशज धृतराष्ट्रके पुत्र (आदि० ९४ । ५९)।

हविष्मती–महर्षि अङ्गिराकी पाँचवीं कन्या, जिसके सान्निध्यमें हविष्यद्वारा देवताओंका यजन किया जाता है (वन० २१८ । ६)।

हविष्मान्–एक प्राचीन महर्षि, जो इन्द्रसभामें रहकर इन्द्रकी उपासना करते हैं (सभा० ७ । १३)।

हसन–स्कन्दका एक सैनिक (शल्य० ४५ । ६७)।

हस्तिकश्यप–एक प्राचीन ऋषि, जो पर्वतपर तप करते समय श्रीकृष्णके पास गये थे (अनु० १३९ । ११)। ये उत्तर दिशाके निवासी हैं (अनु० १६५ । ४६)।

हस्तिपद–कश्यपवंशमें उत्पन्न एक प्रमुख नागराज (आदि० ३५ । ९)।

हस्तिपिण्ड–कश्यपवंशमें उत्पन्न एक प्रमुख नागराज (आदि० ३५ । १४)।

हस्तिभद्र–कश्यपवंशमें उत्पन्न एक नाग (उद्योग० १०३ । १३)।

हस्तिसोमा–भारतवर्षकी एक नदी, जिसका जल भारतवासी पीते हैं (भीष्म० ९ । १९)।

हस्ती–(१) सोमवंशीय महाराज कुरुके वंशज धृतराष्ट्रके पुत्र (आदि० ९४ । ५८)। (२) चन्द्रवंशी राजा सुहोत्रके पुत्र । इनकी माता इक्ष्वाकुकुलकी कन्या सुवर्णा थी। इनकी भार्या त्रिगर्तराजकी पुत्री यशोधरा थी, जिसके गर्भसे विकुण्ठन नामक पुत्र उत्पन्न हुआ था। हस्तिनापुर नगर इन्होंने ही बसाया था (आदि० ९५ । ३४-३५)।

हाटक–हिमालयके उत्तरभागवर्ती एक देश, जो गुह्यकोंका निवासस्थान है। उत्तरदिग्विजयके अवसरपर अर्जुन यहाँ गये और गुह्यकोंको समझा-बुझाकर अपने अधीन कर लिया (सभा० २८ । ३-४)।

हार–एक देश, यहाँके नरेशको नकुलने पश्चिम-दिग्विजयके समय आज्ञामात्रसे ही अपने अधीन कर लिया था (सभा० ३२ । १२-१३)। इस देशके नरेश युधिष्ठिरके राजसूय-यज्ञमें भेंट लेकर आये थे (सभा० ५१ । ५४)।

हारीत–एक प्राचीन ऋषि, जो युधिष्ठिरका विशेष सम्मान करते थे (वन० २६ । २३)। ये शरशय्यापर पड़े हुए भीष्मको देखनेके लिये आये थे (शान्ति० ४७ । ७)। इनके द्वारा संन्यास-आश्रमका वर्णन (शान्ति० २७८ अध्याय)।

हार्दिक्य–(१) अश्वपति नामक दैत्यके अंशसे उत्पन्न एक क्षत्रिय नरेश (आदि० ६७ । १५)। इसे पाण्डवोंकी ओरसे रणनिमन्त्रण भेजनेका निश्चय किया गया था (उद्योग० ४ । १२)। (२) यदुकुलमें उत्पन्न हृदिकका पुत्र कृतवर्मा, जो रैवतक पर्वतपर होनेवाले उत्सवमें विद्यमान था (आदि० २१८ । ११-१२)।

हासिनी–अलकापुरीकी एक अप्सरा, जिसने अष्टावक्र ऋषिके स्वागतके अवसरपर कुबेरभवनमें नृत्य किया था (अनु० १९ । ४५)।

हास्तिनपुर(हस्तिनापुर)–गङ्गातटपर बसी हुई एक नगरी, जिसे सुहोत्रके पुत्र राजा हस्तीने बसाया था; इसीलिये इसका नाम 'हास्तिनपुर' हुआ (आदि० ९५ । ३४)। यह कौरवोंकी रमणीय राजधानी थी। यहाँ किसी समय राजा शान्तनु राज्य करते थे (आदि० १०० । १२)। अभिमन्यु-पुत्र परीक्षित्को यहींका राजा बनाया गया था (महाप्र० १ । ८)। (आधुनिक मतके अनुसार मेरठसे २२ मील उत्तर-पूर्व और बिजनौरसे दक्षिण-पश्चिम गङ्गाके दाहिने तटपर इसकी स्थिति मानी गयी है।)

हाहा–एक श्रेष्ठ गन्धर्व, जो महर्षि कश्यपद्वारा प्राधाके गर्भसे उत्पन्न हुए थे (आदि० ६५ । ५१; वन० ४३ । १४)। ये अर्जुनके जन्म-महोत्सवमें पधारे थे (आदि० १२२ । ५९)। ये कुबेरकी सभामें रहकर उनकी उपासना करते हैं (सभा० १० । २५–२७)। इन्होंने इन्द्रलोककी सभामें अर्जुनका स्वागत किया था (वन० ४३ । १४)।

हिंगुल–एक पर्वतीय धातु, जो संध्याकालीन बादलोंके समान लाल रंगकी होती है (वन० १५८ । ९४)।

हिडिम्ब–शालके वृक्षपर रहनेवाला एक क्रूर नर-मांसभक्षी राक्षस, जिसका मुख बड़ा विकराल था (आदि० १५१ । १–३)। सोये हुए पाण्डवोंको देखकर इसका हर्ष तथा अपनी बहिन हिडिम्बाको उनका पता लगाने और उन्हें मार लानेके लिये इसका आदेश (आदि० १५१ । ७–१४)। हिडिम्बापर इसका क्रोध (आदि० १५२ । १६–१९)। वधकी इच्छासे इसका पाण्डवों तथा हिडिम्बापर आक्रमण (आदि० १५२ । २०)। भीमसेनके साथ इसका विवाद और युद्ध (आदि० १५२ । २२–४२)। भीमसेनद्वारा इसका वध (आदि० १५३ । ३०–३२)।

हिडिम्बवधपर्व–आदिपर्वका एक अवान्तर पर्व (अध्याय १५१ से १५५ तक)।

हिडिम्बवन–एक वन, जिसमें हिडिम्ब नामक राक्षस निवास करता था (वन० १२ । ९३)।

हिडिम्बा–राक्षसराज हिडिम्बकी बहिन, भीमसेनकी पत्नी तथा घटोत्कचकी माता (आदि० ६१ । २५) । सोये हुए पाण्डवोंको मारकर लानेके लिये इसको हिडिम्बका आदेश (आदि० १५१ । ७–१४) । भीमसेनके रूपसे मोहित होकर उनसे अपना पति होनेके लिये इसकी प्रार्थना (आदि० १५१ । १७–२९) । इसपर हिडिम्बका क्रोध तथा इसका भय (आदि० १५२ । १६–१९) । वधकी इच्छासे इसपर हिडिम्बका आक्रमण (आदि० १५२ । २०) । इसका कुन्ती आदिसे अपना मनोभाव प्रकट करना (आदि० १५३ । ५–१२) । भीमसेनको पतिरूपमें प्राप्त करनेके लिये इसकी कुन्तीसे प्रार्थना (आदि० १५४ । ४–१५ के बादतक) । युधिष्ठिरका शर्तके साथ हिडिम्बाको भीमसेनकी सेवामें रहनेके लिये आदेश देना (आदि० १५४ । १६–१८ के बादतक) । भीमसेनका एक शर्तके साथ उसके साथ जानेके लिये उद्यत होना (आदि० १५४ । १९-२०) । इसका भीमसेनको साथ लेकर आकाशमें उड़ जाना और परम सुन्दर रूप धारणकर रमणीय प्रदेशोंमें उनके साथ विहार करना (आदि० १५४ । २१–३०) । इसके गर्भसे भीमसेनद्वारा घटोत्कचका जन्म (आदि० १५४ । ३१) । इसका पाण्डवोंसे मिलकर अपने अभीष्ट स्थानको जाना (आदि० १५४ । ४०) ।

हिमवान्–भारतकी उत्तर-सीमापर स्थित एक विशाल पर्वतराज, जो शरीरसे पर्वत होते हुए भी 'आत्मा' से देवता है । यहाँ हिमवान्का अर्थ हिमालय पर्वत और उसके अधिष्ठाता देवता समझना चाहिये । वालखिल्य मुनि यहाँ तपस्या करनेके लिये आये थे (आदि० ३० । १८) । शेषनाग संयम-नियम तथा एकान्तवासके लिये हिमालय पर्वतपर आये थे (आदि० ३६ । ३-४) । व्यासजी गान्धारीके बालकोंकी रक्षाकी व्यवस्था करके हिमालयपर तपस्याके लिये चले गये थे (आदि० ११४ । २४) । राजा पाण्डु कालकूट और हिमालयपर्वतको लाँघते हुए गन्धमादनपर्वतपर चले गये थे (आदि० ११८ । ४८) । क्षत्रियलोग भृगुवंशी ब्राह्मणोंके गर्भस्थ बालकोंकी भी हत्या करते हुए सारी पृथ्वीपर विचरने लगे । यह देख भयके मारे भृगुवंशियोंकी पत्नियोंने दुर्गम हिमालयपर्वतका आश्रय लिया (आदि० १७७ । २०-२१) । पराशरने समस्त राक्षसोंके विनाशके उद्देश्यसे किये जानेवाले सत्रके लिये जो अग्नि संचित की थी, उसे उत्तर-दिशामें हिमालयके आसपास एक विशाल वनमें छोड़ दिया (आदि० १८० । २२) । इन्द्रपुत्र अर्जुनने भी हिमालयकी यात्रा की थी (आदि० २१४ । १) । हिमवान् कुबेर-सभामें रहकर धनके स्वामी महामना भगवान् कुबेरकी उपासना करते हैं (सभा० १० । ३१–३४) । देवर्षि नारदजीने ब्रह्माजीकी सभाका दर्शन पानेके उद्देश्यसे सूर्यके बताये अनुसार हिमालयके शिखरपर एक हजार वर्षोंमें पूर्ण होनेवाले महान् व्रतका अनुष्ठान किया था (सभा० ११ । ८-९) । अर्जुनने संग्राममें हिमवान्को जीतकर धवलगिरिपर आकर वहीं अपनी सेनाका पड़ाव डाला (सभा० २७ । २९) । भीमसेनने हिमालयके पास जाकर सारे जलोद्भव देशपर थोड़े ही समयमें अधिकार प्राप्त कर लिया । (सभा० ३० । ४) । हिमालयपर्वतपर मेरु-सावर्णिने युधिष्ठिरको धर्म और ज्ञानका उपदेश किया था (सभा० ७८ । १४) । राजा भगीरथने तपस्याके लिये हिमालयपर्वतको प्रस्थान किया । गिरिराज हिमालय विविध वस्तुओंसे विभूषित तथा नाना प्रकारके शिखरोंसे अलंकृत है । इसकी रमणीय शोभाका विस्तृत वर्णन (वन० १०८ । ३–११) । कुलिन्दराज सुबाहुका विशाल राज्य हिमालयपर्वतके निकट था । पाण्डवोंने रातमें वहाँ रहकर दूसरे दिन सबेरे हिमालयकी ओर प्रस्थान किया (वन० १४० । २४–२७) । पाण्डवलोग सत्रहवें दिन हिमालयके एक पावन पृष्ठभागपर जा पहुँचे । हिमालयके उस पावन प्रदेशमें वृषपर्वाका पवित्र आश्रम था । वहाँ जाकर उन्होंने वृषपर्वाको प्रणाम किया (वन० १५८ । १८–२१) । भीमसेन हिमालयपर्वतके सुन्दर प्रदेशोंका अवलोकन करते हुए वनमें शिकार खेलने लगे । इसी अवस्थामें उन्हें एक अजगरने पकड़ लिया (वन० १७८ अध्याय) । मार्कण्डेयजीने भगवान् बालमुकुन्दके उदरमें हिमवान् तथा हेमकूट आदि पर्वतोंको देखा था (वन० १८८ । ११२) । हिमवान् पर्वतपर प्रावारकर्ण नामसे प्रसिद्ध एक उल्लू निवास करता है, जो मार्कण्डेयजीसे भी पहलेका उत्पन्न हुआ है (वन० १९९ । ४) । कर्णने हिमालयपर्वतपर आरूढ़ हो हिमवत्प्रदेशके समस्त भूपालोंको जीतकर उन सबसे कर वसूल किया (वन० २५४ । ४–६) । उत्तरमें हिमवान्के शिखरपर भगवान् महेश्वर भगवती उमाके साथ नित्य निवास करते हैं (उद्योग० १११ । ५) । हिमवान् पूर्वसे पश्चिम दिशाकी ओर फैले हुए छः वर्षपर्वतोंमेंसे एक है (भीष्म० ६ । ३–५) । अर्जुनने स्वप्नमें भगवान् श्रीकृष्णके साथ कैलासकी यात्रा करते समय पवित्र हिमवान् पर्वतका शिखर देखा था (द्रोण० ८० । २३-२४) । त्रिपुरदाहके समय हिमवान् और विन्ध्य भगवान् रुद्रके रथमें आधारकाष्ठ बने थे (कर्ण० ३४ । २२) । गङ्गाने अपने गर्भको देवपूजित हिमवान् पर्वतके सुरम्य शिखरपर छोड़ दिया था, जिससे स्कन्द प्रकट हुए थे (कर्ण० ४४ । ९) । कुमारकार्तिकेयका अभिषेक करनेके लिये गिरिराज हिमालयके अधिष्ठाता देवता हिमवान् भी पधारे थे (शल्य० ४५ । १४–१८) । इन्होंने कुमारको सुवर्चा और अतिवर्चा नामक दो पार्षद प्रदान किये थे (शल्य० ४५ । ४६-४७) । भगवान् श्रीकृष्णने हिमालयकी घाटीमें रहकर बड़ी भारी तपस्याके द्वारा रुक्मिणीदेवीके गर्भसे प्रद्युम्नको जन्म दिया (सौप्तिक० १२ । ३०-३१) । पर्वतोंमें श्रेष्ठ हिमवान्ने राजा पृथुको अक्षय धन समर्पित किया था (शान्ति० ५९ । ११८) ।

हिमालयके सुरम्य शिखरपर, जिसका विस्तार सौ योजनका है, भगवान् ब्रह्माजीने एक यज्ञ किया था (शान्ति० १६६ । ३२–३७) । पूर्वकालमें प्रजापति दक्षने हिमालयके पार्श्ववर्ती गङ्गाद्वारके शुभ प्रदेशमें एक यज्ञका आयोजन किया था (शान्ति० २८४ । ३) । राजा जनकका उपदेश सुनकर शुकदेवजीने हिमालयपर्वतको प्रस्थान किया । इस पर्वतपर सिद्ध और चारण निवास करते हैं । एक समय देवर्षि नारदजी इसका दर्शन करनेके लिये वहाँ पधारे थे । वहाँ सब ओर अप्सराएँ विचरती हैं । विविध प्राणियोंकी शान्त मधुर ध्वनिसे वहाँका सारा प्रान्त व्याप्त रहता है । सहस्रों किन्नर, भ्रमर, खञ्जरीट, चकोर, मोर और कोकिल अपना कलरव फैलाते रहते हैं । पक्षिराज गरुड़ हिमवान्पर नित्य निवास करते हैं । चारों लोकपाल, देवता और ऋषि जगत्के हितकी कामनासे वहाँ सदा आते रहते हैं । भगवान् श्रीकृष्णने पुत्रके लिये यहीं तप किया था । यहीं कुमारकार्तिकेयने बाल्यावस्थामें देवताओंपर आक्षेप किया और तीनों लोकोंका अपमान करके अपनी शक्ति गाड़ दी और यह बात कही—जो मुझसे भी अधिक बलवान्, ब्राह्मणभक्त और पराक्रमी हो, वह इस शक्तिको उखाड़ दे अथवा हिला दे । भगवान् विष्णुने कुमारके सम्मानकी रक्षाके लिये उस शक्तिको केवल हिला दिया, उखाड़ा नहीं । हिरण्यकशिपुके पुत्र प्रह्लादने उसे उखाड़नेकी चेष्टा की; किंतु वे चीत्कार करके मूर्च्छित हो हिमालयके शिखरपर गिर पड़े । गिरिराज हिमालयके पार्श्वभागमें उत्तर दिशाकी ओर भगवान् शिवने दुर्धर्ष तपस्या की है । भगवान् शङ्करके उस आश्रमको प्रज्वलित अग्निने चारों ओरसे घेर रक्खा है । उस पर्वतशिखरका नाम आदित्यगिरि है । उसपर अजितात्मा पुरुष नहीं चढ़ सकते । उसका विस्तार दस योजन है । वह आगकी लपटोंसे घिरा हुआ है । शक्तिशाली भगवान् अग्निदेव वहाँ स्वयं विराजमान हैं । गिरिराज हिमवान्की पूर्वदिशाका आश्रय लेकर पर्वतके एकान्त तटप्रान्तमें किसी समय महर्षि व्यास अपने शिष्य महाभाग सुमन्तु, जैमिनि, पैल तथा वैशम्पायनको वेद पढ़ाया करते थे (शान्ति० ३२७ । २—२७) । शुकदेवजीके ऊर्ध्वलोकमें गमन करते समय गिरिराज हिमालय विदीर्ण होता-सा प्रतीत होता था । उन्होंने अपने मार्गमें पर्वतके दो दिव्य शिखर देखे, जो एक दूसरेसे सटे हुए थे । उनमेंसे एक हिमालयका शिखर था और दूसरा मेरुका । शुकदेवजी उन्हें देखकर भी रुके नहीं । उनके निकट आते ही वे दोनों पर्वतशिखर सहसा विदीर्ण होकर दो भागोंमें बँट गये (शान्ति० ३३३ । ५—१०) हिमवान्की पुत्रीका नाम उमा है । उसे रुद्रदेवने पत्नीरूपमें प्राप्त करनेकी इच्छा की । इसी बीचमें महर्षि भृगुने आकर हिमवान्से उस कन्याको अपने लिये माँगा । हिमवान्ने कहा, 'इसके लिये देख-सुनकर रुद्रदेवको वर निश्चित कर लिया गया है ।' यह सुनकर भृगुने हिमवान्को शाप दे दिया कि तुम रत्नोंके भण्डार नहीं रहोगे (शान्ति० ३४२ । ६२) । भगवान् नारायण और शङ्करके युद्धसे हिमालयपर्वत विदीर्ण होने लगा था (शान्ति० ३४२ । १२२) । हिमवान् पर्वतपर देवर्षि नारदका अपना आश्रम है (शान्ति० ३४६ । ३) । भगवान् श्रीकृष्णने हिमालयपर्वतपर पहुँचकर महात्मा उपमन्युका दिव्य आश्रम देखा था (अनु० १४ । ४३–४५) । हिमालयपर्वतपर महात्मा राजा मरुत्तके यज्ञमें ब्राह्मणोंने बहुत-सा धन वहीं छोड़ दिया था (आश्व० ३ । २०-२१) । धृतराष्ट्र और गान्धारीके दावानलमें दग्ध हो जानेके पश्चात् संजय हिमालयपर चले गये (आश्रम० ३७ । ३३-३४) । महाप्रस्थानके समय योगयुक्त पाण्डवोंने मार्गमें महापर्वत हिमालयका दर्शन किया और उसे लाँघकर जब वे आगे बढ़े, तब उन्हें बालूका समुद्र दिखायी दिया (महाप्र० २ । १-२) ।

हिरण्मय–(१) एक प्राचीन ऋषि, जो इन्द्रसभामें विराजते हैं (सभा० ७ । १८) । (२) सुदर्शन या जम्बूद्वीपका एक वर्ष, जो नीलपर्वतसे दक्षिण और निषधपर्वतसे उत्तर है (भीष्म० ८ । ५—८) ।

हिरण्यकवर्ष–जम्बूद्वीपका एक खण्ड, जो श्वेतपर्वतसे आगे है (सभा० २८ । ६ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ७४९) ।

हिरण्यकशिपु–(१) दितिका एक विख्यात पुत्र, जो महामनस्वी था । इसके पाँच पुत्र थे (आदि० ६५ । १७-१८) । यही इस भूतलपर राजा शिशुपालके रूपमें प्रकट हुआ था (आदि० ६७ । ५) । यह देवताओंका शत्रु तथा समस्त दैत्योंका राजा था । इसे अपने बलका बड़ा घमंड था । यह तीनों लोकोंके लिये कण्टकरूपमें था । दैत्यकुलका आदि पुरुष यही था । इसने वनमें जाकर बड़ी तपस्या की, इससे ब्रह्माजी बहुत संतुष्ट हुए (आदि० ३८ । २९ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ७८५) । इसके माँगनेपर ब्रह्माजीका इसे अस्त्र-शस्त्रादिसे अवध्य होनेका वरदान देना । त्रिभुवनमें इसके उत्पात तथा भगवान् नृसिंहद्वारा इसका वध (सभा० ३८ । २९ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ७८५ से ७८९ तक) । प्राचीन कालमें यह समस्त भूतलका शासक था (शान्ति० २२७ । ५३) । (२) एक दानव, जिसने पूर्वकालमें मेरुपर्वतको हिला दिया था । भगवान् शङ्करसे एक अर्बुद वर्षोंके लिये सम्पूर्ण देवताओंका ऐश्वर्य प्राप्त किया । इसके पुत्रका नाम मन्दार था (अनु० १४ । ७३-७४) ।

हिरण्यगर्भ–भगवान् श्रीकृष्णका एक नाम और इसकी निरुक्ति (शान्ति० ३४२ । ९६) ।

हिरण्यधनु–एक निषादराज, जो एकलव्यका पिता था (आदि० १३१ । ३१)।

हिरण्यनाभ–संजयपुत्र सुवर्णष्ठीवी जब मृत्युके पश्चात् नारदजीकी कृपासे जीवित हुआ, तब उसका यही नाम रक्खा गया था । इसकी आयु एक हजार वर्षोंकी थी (शान्ति० १२९ । १४९)।

हिरण्यपुर–पुलोमा और कालकाकी प्रार्थनासे उनके पुत्रोंके लिये ब्रह्माजीद्वारा निर्मित एक विमानोपम आकाशचारी दिव्य नगर, जो पौलोम और कालकेय नामक दानवोंका निवासस्थान था एवं उन्हींके द्वारा सुरक्षित था (वन० १७३ । ९–१३)। अर्जुनद्वारा इसका संहार (वन० १७३ । ३०)। नारदजीद्वारा मातलिको इस नगरका परिचय (उद्योग० १०० अध्याय)।

हिरण्यबाहु–वासुकि-वंशोद्भव एक नाग, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें दग्ध हो गया था (आदि० ५७ । ६)।

हिरण्यबिन्दु–हिमालयके निकटका एक तीर्थ, जहाँ तीर्थ-यात्राके अवसरपर अर्जुनका आगमन हुआ था (आदि० २१४ । ४)। जो मन और इन्द्रियोंको संयममें रखते हुए हिरण्यबिन्दुतीर्थमें स्नान करके वहाँके प्रमुख देवता भगवान् कुशेशयको प्रणाम करता है, उसके सारे पाप धुल जाते हैं (अनु० २५ । १०-११)। कालिञ्जर पर्वतपर स्थित एक महान् तीर्थ (वन० ८७ । २१)।

हिरण्यरेता–अग्निका नाम (आदि० ५५ । १०)।

हिरण्यरोमा–दाक्षिणात्य देशोंके अधिपति विदर्भराज भीष्मकका दूसरा नाम (उद्योग० १५८ । १)।

हिरण्यवर्मा–दशार्णदेशके राजा, जिन्होंने अपनी कन्याका विवाह शिखण्डीके साथ किया था (उद्योग० १८९ । १०)। शिखण्डीके स्त्रीत्वकी जानकारीसे कुपित होकर इनका द्रुपदको संदेश (उद्योग० १८९ । २१–२३)। मित्र राजाओंकी मन्त्रणासे इनका द्रुपदपर चढ़ाई करनेका निश्चय एवं संदेश (उद्योग० १९० । ९-१०)। राजा द्रुपदकी राजधानीके पास आकर इनका पुरोहितद्वारा संदेश देना (उद्योग० १९२ । २०-२१)। युवतियों-द्वारा शिखण्डीकी परीक्षा कराकर प्रसन्न होना और द्रुपद तथा शिखण्डीका सम्मान करके घर लौटना (उद्योग० १९२ । २८–३२)।

हिरण्यशृंग–कैलासपर्वतसे उत्तर मैनाकपर्वतके समीपस्थ एक मणिमय विशाल पर्वत (सभा० ३ । १०; भीष्म० ६ । ४२)।

हिरण्यसर–पश्चिमदिशाका एक प्राचीन तीर्थ, यहाँ चन्द्रमाने स्नान करके पापसे छुटकारा पाया था, तभीसे इसका नाम 'प्रभास' हुआ (शान्ति० ३४२ । ५७)।

हिरण्यहस्त–एक प्राचीन ऋषि, जिन्हें राजा मदिराश्वसे उनकी सुन्दरी कन्याका दान प्राप्त हुआ था (शान्ति० २३४ । ३५)।

हिरण्याक्ष–विश्वामित्रके ब्रह्मवादी पुत्रोंमेंसे एक (अनु० ४ । ५७)।

हिरण्वती–कुरुक्षेत्रमें बहनेवाली एक पवित्र नदी, जो स्वच्छ एवं विशुद्ध जलसे भरी रहती है, इसमें कंकड़-पत्थर और कीचड़का नामतक नहीं है । इसीके तटपर भगवान् श्रीकृष्णने पाण्डव-सेनाका पड़ाव डाला था (उद्योग० १५२ । ७-८)। यह भारतवर्षकी प्रमुख नदियोंमें है। जिसका जल भारतवासी पीते हैं (भीष्म० ९ । २५)।

हीक–विपाशामें रहनेवाला एक राक्षस, जो वहि नामक निशाचरका साथी था । इन्हीं दोनोंकी संतानें वाहीक कहलाती हैं (कर्ण० ४४ । ४१-४२)।

हुण्ड–एक जनपद, जहाँके सैनिकोंके साथ नकुल-सहदेव क्रौञ्चारुणव्यूहके बायें पंखके स्थानमें स्थित थे (भीष्म० ५० । ५२-५३)।

हुतहव्यवह–'धर' नामक वसुके दो पुत्रोंमेंसे एक, दूसरेका नाम द्रविण था (आदि० ६६ । २१)।

हूण–एक जाति, जिसकी उत्पत्ति 'नन्दिनी गौ' के फेनसे हुई (आदि० १७४ । ३८)। हूणोंका जहाँ निवास है, उस भूभागको हूण देश कहा गया है । इस देश और जातिके जो पश्चिमदेशीय राजा थे, उन सबको नकुलने दूतोंद्वारा ही वशमें कर लिया था (सभा० ३२ । १२)। हूण देश और जातिके भूपाल युधिष्ठिरके राजसूय-यज्ञमें भेंट लेकर आये थे (सभा० ५१ । २४)।

हूहू–एक श्रेष्ठ गन्धर्व, जो महर्षि कश्यपद्वारा प्राधाके गर्भसे उत्पन्न हुए थे (आदि० ६५ । ५१; वन० ४३ । १४)। ये अर्जुनके जन्म-महोत्सवमें पधारे थे (आदि० १२२ । ५९)। ये कुबेरकी सभामें रहकर उनकी उपासना करते हैं (सभा० १० । २५–२७)। इन्होंने इन्द्रलोककी सभामें अर्जुनका स्वागत किया था (वन० ४३ । १४)।

हृदिक–एक भोजवंशी यादव, जो कृतवर्माके पिता थे (आदि० ६३ । १०५)।

हृद्य–एक प्राचीन ऋषि, जो इन्द्रसभामें विराजते हैं (सभा० ७ । १३)।

हृषीकेश–भगवान् श्रीकृष्णका एक नाम और इसकी निरुक्ति (शान्ति० ३४२ । ६७)।

हेमकूट–(१) उत्तर दिशाका एक पर्वत, जहाँ अर्जुनने अपनी सेनाका पड़ाव डाला था और वहाँसे वे हरिवर्षमें गये थे (सभा० २८ । ६ के बाद दा० पाठ)। (२) नन्दाके तटपर दुर्गम पर्वत, जहाँ राजा युधिष्ठिर

भी आये थे, इसे ऋषभकूट भी कहते हैं। उन्होंने वहाँ बहुत-सी अद्भुत बातें देखीं। यहाँ बिना वायुके ही बादल उत्पन्न होते और ओले बरसाते थे। वेदोंके स्वाध्यायकी ध्वनि सुनायी देती, पर कोई दिखायी नहीं देता था इत्यादि। इसके कारणका वर्णन (वन० ११०।२–१८)।

हेमगुह–कश्यपवंशमें उत्पन्न एक प्रमुख नागराज (आदि० ३५।९)।

हेमनेत्र–एक यक्ष, जो कुबेरकी सभामें रहकर उनकी उपासना करता है (सभा० १०।१७)।

हेममाली–द्रुपदका एक पुत्र, जो अश्वत्थामाद्वारा मारा गया था (द्रोण० १५६।१८२)।

हेमवर्ण–राजा रोचमानके पुत्र, जो पाण्डवपक्षके योद्धा थे। इनके घोड़ोंका वर्णन (द्रोण० २३।६७)।

हेमा–भारतवर्षकी एक नदी, जिसका जल यहाँके निवासी पीते हैं (भीष्म० ९।२३)।

हेरम्बक–एक दक्षिणभारतीय जनपद तथा वहाँके निवासी, इनको सहदेवने दक्षिण-दिग्विजयके अवसरपर परास्त किया था (सभा० ३१।१३)।

हैमवत–एक वर्षका नाम, जो हिमवान् (हिमालय) से उत्तर है (भीष्म० ६।७)। मेरुसे मिथिला जाते समय श्रीशुकदेवजीने इस वर्षको पार किया था और फिर वे भारतवर्षमें आये थे (शान्ति० ३२५।१४)।

हैमवती–(१) हिमालयसे निकली हुई एक नदी। 'शतद्रु'के लिये 'हैमवती' शब्दका प्रयोग हुआ है (आदि० १७६। ८-९)। (२) विश्वामित्रकी प्यारी पत्नी (उद्योग० ११७।१३)। (३) भगवान् श्रीकृष्णकी एक पत्नी, जिन्होंने पतिके दाह-संस्कारके समय चितारोहण किया था (मौसल० ७।७३)।

हैरण्यवती–हिरण्मय वर्षकी एक नदी (भीष्म० ८। ५)।

हैहय–(१) क्षत्रियोंका एक कुल, जिसका संहार परशुरामजीने किया था। कार्तवीर्य अर्जुन हैहयवंशी क्षत्रियोंका अधिपति था, जो परशुरामजीके हाथसे मारा गया (सभा० ३८। २९ के बाद दा० पाठ, पृष्ठ ७९२)। राजा सगरने इस वंशके क्षत्रियोंको जीता था (वन० १०६। ८)। राजा परपुरञ्जय हैहयवंशी क्षत्रियोंकी वंश-परम्पराको बढ़ानेवाला था; इसने अनजानमें एक मुनिको बाण मार दिया। फिर कुछ हैहय उसे साथ ले मुनिवर कश्यपनन्दन अरिष्टनेमाके पास गये। उन्होंने उस मुनिको जीवित दिखाकर यह बताया कि सद्धर्माचरणके प्रभावसे हमलोगोंपर मृत्युका वश नहीं चलता (वन० १८४।३–२२)। इस वंशमें मुदावर्त नामका एक कुलाङ्गार नरेश हुआ था (उद्योग० ७४।१३)। ब्राह्मणोंने अपनी कुशमयी ध्वजा फहराते हुए किसी समय हैहयवंशी क्षत्रियोंपर आक्रमण किया था (उद्योग० १५६।४)। गुणावतीसे उत्तर और खाण्डव-वनसे दक्षिण पर्वतके निकटवर्ती प्रदेशमें लाखों हैहयवंशी क्षत्रिय वीर परशुरामजीके द्वारा रणभूमिमें मारे गये थे (द्रोण० ७०।८-९)। कृतवीर्यका बलवान् पुत्र अर्जुन हैहयवंशका राजा हुआ (शान्ति० ४९।३५)। राजा सुमित्र हैहयवंशी नरेश था (शान्ति० १२६।८)। (२) शर्यातिके वंशमें उत्पन्न एक राजा, जिसके नामपर हैहयवंशकी परम्परा प्रचलित हुई। हैहय वत्सके पुत्र थे। इनका दूसरा नाम वीतहव्य था। इनके दस स्त्रियाँ थीं। उनसे सौ वीर पुत्र उत्पन्न हुए थे (अनु० ३०।७-८)। (विशेष देखिये वीतहव्य)।

होत्रवाहन–एक प्राचीन राजर्षि, जो युधिष्ठिरका विशेष सम्मान करते थे (वन० २६।२४-२५)। ये काशिराजकी पुत्री अम्बाके नाना थे, इनका अम्बाको परशुरामजीके पास जानेकी सम्मति देना (उद्योग० १७६।२८–३४)। इन्होंने अकृतव्रणसे अम्बाका परिचय दिया था (उद्योग० १७६।४४–५६)।

ह्रदप्रवेशपर्व–शल्यपर्वका एक अवान्तर पर्व (अध्याय २९)।

ह्रदोदर–एक राक्षस, जिसका स्कन्दद्वारा वध हुआ था (शल्य० ४६।७५)।

ह्राद–एक नाग, जो बलरामजीके परमधामगमनके समय स्वागतमें आये थे (मौसल० ४।१६)।

ह्री–एक देवी, जो ब्रह्माकी सभामें रहकर उनकी उपासना करती हैं (सभा० ११।४२)। अर्जुनके इन्द्रलोक जाते समय उनकी मङ्गल-कामनाके लिये द्रौपदीने ह्री देवीका स्मरण किया था (वन० ३७।३३)। स्कन्दके अभिषेकमें ये भी पधारी थीं (शल्य० ४५।१३)।

ह्रीनिषेव–एक दैत्य या राजर्षि, जो प्राचीन कालमें पृथिवीका शासक था; परंतु कालवश उसे छोड़कर चल बसा (शान्ति० २२७।५१)।

ह्रीमान्–एक सनातन विश्वेदेव (अनु० ९१। ३१)।

गीताप्रेसद्वारा प्रकाशित 'महाभारत' के विभिन्न संस्करण

'महाभारत'के लिये माँग देनेवाले सज्जन कभी-कभी अपनी आवश्यकता स्पष्ट नहीं लिखते, जिसके कारण या तो उनकी मँगायी हुई वस्तु देरसे पहुँचती है या गलत वस्तु चली जाती है, जिससे बड़ी कठिनाई उपस्थित हो जाती है। गीताप्रेसके द्वारा अबतक 'महाभारत'के निम्नलिखित ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं, जिनकी माँग देते समय सम्बन्धित विभागको स्पष्ट पत्र लिखना चाहिये।

—व्यवस्थापक

(१) 'कल्याण' विभागद्वारा प्रकाशित

'कल्याण'के १७ वें वर्षका संक्षिप्त महाभारताङ्क पूरी फाइल (बारह महीनोंके अङ्क), दो जिल्दोंमें, सजिल्द, पृष्ठ-संख्या १९१८, तिरंगे चित्र १२, इकरंगे लाइन ९७५, मूल्य दोनों जिल्दोंका डाकखर्चसहित १०)।

इसमें मूल श्लोक नहीं है। केवल हिंदीभाषामें संक्षिप्त महाभारत है।

इसका आर्डर व्यवस्थापक—'कल्याण' पो० गीताप्रेस (गोरखपुर) को देना चाहिये।

(२) 'मासिक महाभारत' विभागद्वारा प्रकाशित

१—नवम्बर १९५५ से अक्टूबर १९५८ तक लगातार तीन सालतक छत्तीस अङ्कोंमें लगभग एक लाख श्लोकोंका सम्पूर्ण महाभारत ग्रन्थ, मूल और उसकी हिंदी-टीकासहित तथा महाभारत-सम्बन्धी अनेक खोजपूर्ण लेख एवं महाभारतमें आये हुए नामोंकी वर्णानुक्रमणिका (संक्षिप्त परिचयसहित) प्रकाशित की गयी है। कुल छत्तीस अङ्कोंकी पृष्ठ-संख्या ७५९०, चित्र-संख्या तिरंगे ८५, सादे २४३, लाइन ५६४, कुल ८९२। मूल्य तीनों वर्षके फाइलोंका प्रतिवर्षके २०) की दरसे कुल ६०) डाकखर्चसहित। सजिल्द—एक-एक वर्षके तीन-तीन जिल्द—कुल नौ जिल्दोंका ११।) जोड़कर ७१।) डाकखर्चसहित।

२—जनवरी १९५९ से दिसम्बर १९५९ तक 'मासिक महाभारत'का चौथा वर्ष चल रहा है जिसमें हरिवंशपुराण तथा जैमिनीय-अश्वमेध—पूरा हिंदी-टीकासहित देनेकी बात है। प्रतिमास १४४ पृष्ठ, १ तिरंगा तथा ४ सादे चित्र, वार्षिक चन्दा १५) डाकखर्चसहित।

इनका आर्डर व्यवस्थापक—'मासिक महाभारत' पो० गीताप्रेस (गोरखपुर) को देना चाहिये।

(३) गीताप्रेस, पुस्तक-विभागद्वारा प्रकाशित

१—सचित्र महाभारत (सरल हिंदी-अनुवादसहित) सम्पूर्ण ग्रन्थ छः खण्डोंमें सजिल्द, पृष्ठ-संख्या ६६२०, चित्र बहुरंगे ७९, सादे २२५, लाइन ५६४, कुल ८६८, मूल्य ६५)। इसके प्रत्येक खण्ड सजिल्द अलग-अलग भी मिलते हैं। इसमें कमीशन पंद्रह प्रतिशत काटकर नेट दाम ५५।), रेल-खर्च ग्राहकका लगता है। आर्डर देते समय अपना रेलवे स्टेशन साफ-साफ लिखना चाहिये।

२—महाभारत—मूलमात्र, सम्पूर्ण ग्रन्थ चार भागोंमें, सजिल्द, कुल पृष्ठ-संख्या २७७६, चित्र बहुरंगे १४, सादे ४, कुल १८, मूल्य २२॥)। इसमें केवल मूल संस्कृत श्लोक हैं। टीका नहीं। इसका भी रेल-खर्च ग्राहकका लगता है।

इनका आर्डर व्यवस्थापक—गीताप्रेस, पो० गीताप्रेस (गोरखपुर) को देना चाहिये।